राजस्थानी-हिन्दी
शब्द कोश

[प्रथम खंड]

[अ से न]

सम्पादक :

आ० बदरीप्रसाद साकरिया
प्रो० भूपतिराम साकरिया

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

सम्पादक आचार्य बदरीप्रसाद साकरिया
प्रो० भूपतिराम साकरिया

भूमिका

प्रेरणा स्रोत और कार्य

छः दशक पूर्व मेरे जन्म स्थान वालोतरा में होली के असभ्य व अत्योच्छृंखल हुड़दंग में राव आदि के भद्दे स्वांग वनते थे और अश्लील गीत गाये जाते थे। परिणामस्वरूप गाँव में अनेक झगड़े-टंटे हो जाते थे। कुछ सहयोगी-साथियों के साथ यह निश्चित किया गया कि इन निर्लज्ज सवारियों और अश्लील गीतों को सर्वथा वंद कर वेद भगवान की सवारी निकाल कर, उसके साथ स्थान स्थान पर राजस्थानी भाषा में और राजस्थानी तर्जों में ही समाजसुधार के गायन गाये जायं तथा तत्संवंधी प्रवचन राजस्थानी भाषा में किये जायं।

सुधार-गीत वनाते समय राजस्थानी भाषा की अनूठी लक्षणा और व्यंजना शक्ति का अनुभव हुआ और इन गीतों के ऐसे विशिष्ट शब्दों का कोश वनाने के संकल्प के साथ हिन्दी में उनके अर्थ लिखने का कार्य आरम्भ किया। एक ही दिन में दो सौ शब्दों का संकलन कर लिया। यही प्रेरणा का प्रथम सोपान था। कुछ पारिवारिक संस्कारों और कुछ सुधारवादी वृत्ति तथा साहित्यिक रुचि ने उपर्युक्त प्रवृत्ति में इतना रस वढ़ाया कि थोड़े ही समय में निजी संग्रह के ग्रंथों में से मैंने अकेले ने लगभग दस हजार शब्दों का संकलन तथा रफ (Rough) संपादन कर लिया पर गाँव में विद्यापोसक मंडल, कन्या-पाठशाला (मारवाड़ में प्रथम), सरस्वती पुस्तकालय आदि की स्थापना और उनका सुचारू रूप से संचालन इस प्रवृत्ति को और आगे वढ़ाने में कुछ वाधक ही रहे।

कुछ समय पश्चात् मेरे परम मित्र स्व० रामयश गुप्त 'नैणसी री ख्यात' की हस्तलिखित प्रति गूंगा गाँव से लाये और कहा कि इसका संपादन करना है। प्रतिलिपि तैयार की गई। इस ग्रंथ का सम्पादन करते समय शब्दों के अर्थ देने के लिये राजस्थानी भाषा के शब्द कोश की नितांत आवश्यकता का अनुभव हुआ। ख्यात के शब्दों का एक अलग कोश भी आवश्यक था। लंवे समय तक ख्यात की अन्य प्रतियों के अभाव में काम मंद गति से ही चलता रहा।

सन् १९३२ में जोधपुर निवास के समय राज्य के भूतपूर्व प्राइम मिनिस्टर सर शुकदेव प्रसाद काक ने, जो डिंगल का एक अद्वितीय कोश स्व० पं० रामकरणजी आसोपा के देखरेख में निजी खर्चे से वनवा रहे थे, मेरी भी सहायता

सम्पादक और व्यवस्थापक के रूप में नियुक्ति की। काम को गति देने के लिये वहाँ छः सात चारण बंधुओं को भी नियुक्त किया गया, जिनमें श्री देवकर्ण और किशोरदानजी 'घूमरजी' मुख्य थे। सर शुकदेव प्रसाद के देहान्त तक सारा कार्य सुचारू रूप से चला, पर बाद में उनके ही पुत्र श्री धर्म नारायण काक ने उसे अनावश्यक समझ कर बंद कर दिया। तब तक यहाँ डिंगळ के मानक ग्रंथों (राम रासो, रघुवर जस प्रकाश, क्रिसन रुकमणी री वेली आदि) और डिंगळ गीतों में से लक्षाधिक शब्द[1] छांट कर उदाहरणों के साथ चिट बद्ध कर उनका अनुक्रमण कर लिया गया था।

कार्य बंद होने पर सारी सामग्री एक छोटे कमरे में पड़ी रही, जहाँ दीमकों और चूहों ने काफी सामग्री को अपना भोज्य बनाया। कुछ वहाँ से उड़ा ली गई[2] और शेष सहस्रों रुपये की अमूल्य सामग्री श्री धर्मनारायण काक ने सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्युट को केवल इस शर्त पर दे दी कि ग्रंथ के छपने पर, आभार स्वीकार करते हुए उनके पिता का एक बड़ा चित्र उसमें दिया जाय। इंस्टीट्युट के अधिकारियों के बार बार कहने पर मुझे जोधपुर जाना पड़ा। श्री धर्मनारायण काक ने अपने पू० पिताजी सर शुकदेव प्रसाद काक के एक बड़े फोटो और उपर्युक्त शर्त के साथ मुझे अवशिष्ट सारी सामग्री दी, जिसे लेकर मैं बीकानेर आया और इंस्टीट्युट को दे दी। उस अद्वितीय कोश के चिटों के कॉलम्स बड़ी विद्वता से बनाये गये थे[3]। यदि वह संपूर्ण हो जाता तो राजस्थानी का विश्व कोश बनता।

---

१. अनेक ग्रंथों में से एक एक शब्द अनेक बार आने से तथा एक शब्द के अनेक अर्थ होने के कारण चिटों में लिये शब्दों की संख्या बहुत बड़ी है। यह संख्या इन सब के एकीकरण में कम हो जाती है।

२. यहाँ हमने जिन अनेकों हस्तलिखित ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवाई थीं, वे अनेक वर्षों के पश्चात्, जोधपुर के एक सभ्रान्त व्यक्ति के यहाँ, लिपिकारों के दैनिक काम पर मेरे हस्ताक्षरों सहित साश्चार्य देखने को मिलीं।

३. **शब्द-चिट के कॉलम इस प्रकार थे—**

१. मूल शब्द।
२. व्युत्पत्ति।
३. व्याकरण।
४. हिन्दी में अर्थ।
५. उदाहरण।
६. उदाहरण का हिन्दी अनुवाद।
७. उदाहरण का अंग्रेजी अनुवाद।
८. विरुद्ध शब्द।
९. विरुद्ध शब्द का अंग्रेजी पर्याय।
१०. विशेष विवरण (सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि।
११. विशेष विवरण का अंग्रेजी अनुवाद।

सन् १९४७-४८ में स्व० नाथूदानजी महियारिया, उदयपुर की **वीर सतसई** जो जोधपुर सरकार द्वारा प्रकाशित की जा रही थी, उसकी टीका व संपादन करने के लिये मुझे व श्री सीताराम लालस को नियुक्त किया गया। काम सुचारू रूप से संपादित हुआ, कारणवश महियारियाजी को जोधपुर छोड़ना पड़ा और वे फिर लौट कर न आ सके। वीर सतसई का संपादन करते समय राजस्थानी शब्दकोश की नितांत आवश्यकता का हम दोनों संपादकों ने अनुभव किया व उसके निर्माण की योजना का भी विचार किया[4]।

इसी बीच सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीटयुट, बीकानेर में राजस्थान भारती (शोध पत्रिका) व राजस्थानी शब्द कोश के कार्य के लिये शोध सहायक के पद पर मेरी नियुक्ति हो गई। दो तीन वर्षों के पश्चात् मैं शोध-पत्रिका का सम्पादक नियुक्त किया गया। शोध-पत्रिका के कारण इंस्टीट्युट की प्रतिष्ठा तो बहुत बढ़ी पर धनाभाव और समुचित व्यवस्था के अभाव में कोश कार्य आगे नहीं बढ़ सका। कोश व पत्रिका सम्पादन के लिये मैं अकेला था। इतना होते हुये भी लगभग साठ सहस्र शब्दों का सम्पादन हो चुका था। इसी समय सरकारी नियमानुसार मुझे साठ वर्ष की अवस्था पर रिटायर कर दिया गया। जितना भी काम हो चुका था उसे प्रकाशित करवाया जा सकता था, पर इंस्टीट्युट वह भी न कर सका। दो एक वर्षों पूर्व समाचार मिला था कि कोश की बहुत सारी सामग्री इंस्टीट्युट से गायब हो गई है।

रिटायर होने के बाद मुझे खानगी रूप से कहा गया कि मैं बीकानेर में ही रहूँ और कार्य जारी रक्खूं, परन्तु मेरे चिरंजीव प्रो० भूपतिराम ने अकेला वहाँ रहना ठीक नहीं समझ करके मुझे वल्लभविद्यानगर (गुजरात) बुला लिया।

बालोतरा, जोधपुर वगैरह में कोश की जो सामग्री ऐसी ही पड़ी थी उसका जीर्णोद्धार और परिवर्द्धन करने का काम यहाँ आकर पुनः शुरू किया। हमारी स्वयं की हस्तलिखित ग्रंथों की सामग्री जो बड़ेरों की संग्रह की हुई तो थी ही, पर अनेक अन्य प्रकाशित ग्रंथों को क्रय करना पड़ा तथा मानक हस्तलिखित

---

४. वीर सतसई जोधपुर सरकार द्वारा प्रकाशित नहीं हुई। अपने पुत्र मोहनसिंह का नाम संपादक के रूप में देकर उन्होंने खुद ने प्रकाशित की। भूमिका में हम दोनों में से किसी के नाम तक का उल्लेख नहीं किया। मानदेय (Honorarium) तो अदृश्य ही हो गया।

ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ करवानी पड़ीं। इस प्रकार यहाँ आने पर कोश-कार्य एक नये ढंग से प्रारम्भ करना पड़ा।

अत्यन्त विनम्रता पूर्वक कहा जा सकता है कि यह कोश जिस ढंग से तैयार किया गया है वह एक अनूठा और पहिला मौलिक प्रकार है। इस कोश में बोलचाल और प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य के शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि शोधार्थी हो या अध्यापक, विद्यार्थी हो या विद्वान्—सर्व-साधारण के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। शब्दों के अर्थ प्रामाणिकता से व प्रसंगों के गहरे अध्ययन के पश्चात् लिखे गये हैं। अतएव साहस के साथ कहा जा सकता है कि मातृभाषा राजस्थानी का ऐसा कोश अद्यावधि प्रकाशित नहीं हो सका है।

यहाँ जानकारी के लिये नीचे एक ऐसी विषय सूची दी जा रही है जो शब्दों के चयन में सहायक रही है :—

१. **मनुष्य**। संबंध-रिश्ते।
२. **जातियाँ** और उनके धंधे।
३. **परिधान** (ऊनी, रेशमी, सूती), आभूषण, शृंगारादि।
४. **भोजन** (साग-तरकारी, रोटी-बाटी इत्यादि भोज्य पदार्थ) व बरतन।
५. **खेल**, मनोरंजन, उत्सव, त्यौहार, मेले, पर्व।
६. **धार्मिक**—तीर्थ, देवी-देवता, धर्म, व्रत, उपवास, भक्ति, पूजा, सम्प्रदाय, साधु-संन्यासी, मठ-मंदिर।
७. **शरीर**—अंग, उपांग, स्वास्थ्य, रोग, क्रियाएँ—खाना-पीना, आना-जाना, हँसना-रोना, विचार-विनिमय, दौड़ना-भागना, जीना-मरना इत्यादि शरीर धर्म।
८. **स्थान**—मकान-दुकान, किला-महल, रावला, गली-बाजार, मार्ग आदि और इनसे संबंधित निर्माण इत्यादि।
९. **वनस्पति**—वृक्ष, पौधे, लता, फूल, कंद, मूल, बीज।
वर्षा, जल, वायु, ऋतु, जलाशय। (नदी, सागर, झील, निवाण इत्यादि)।
१०. **खगोल**—आकाश, नक्षत्र, ज्योतिष।
११. **भूगोल**—देश, गाँव, नगर, पहाड़, नदी और पृथ्वी।
१२. **गणित**—पट्टी-पहाड़ा, आना पाई।
१३. **संस्कार**—जन्म, झड़ूलिया (चौलकर्म), उपनयन, विवाह, मृत्यु (अग्नि संस्कार, प्रेतकर्म, श्राद्ध इत्यादि)।

१४. **खेती**—खेत, धान्य, हल, वेलगाड़ी, कुँआ, कोष, कृषक, पाणेती और इनसे संवंधित।

१५. **भाषा, शिक्षा**—१. राजस्थानी, हिन्दी, महाजनी, अपभ्रंश इत्यादि से संवंधित।

२. शिक्षा के अनेक अंग—विद्याएँ, शास्त्र, कलाएँ विद्यार्थी, अध्यापक, अध्ययन और अध्यापन।

३. व्याकरण।

१६. **साहित्य**—गद्य, कविता, छंद, गीत, रस, अलंकार, साहित्य के प्रकार, लोक साहित्य इत्यादि। लेखन सामग्री, पुस्तकें इत्यादि।

१७. **पशु-पक्षी-कीटादि**—

(i) पालतू पशु—१. गाय, भैंस, आदि दुधारू (धीणो) से संवंधित दूध, दही, छाछ, मक्खन, घी, चमड़ा, विलौने का सामान।

२. ऊँट, घोड़ा, हाथी, वैल—सवारी के पशु और उनकी सजावट का सामान।

(ii) इतर—पशु-पक्षी, कीट-पतंगे। समुद्री जीव।

(iii) इन सबसे संवंधित घास, चारा, दाना, चुग्गा इत्यादि।

१८. **व्यापार**—दुकानदारी, सट्टा, दलाली, आढत, लेन-देन, चिट्ठी-पत्री, हुंडी, दस्तावेज, (खत), वहीखाता, व्याज-काटा इत्यादि।

१९. **राज दरवार**—महल, पासवान, नाजर, रणवास। राज परिवार, राजा, जागीरदार, छुटभाई, जागीरी, गोला लवाजमा, विरुद, ताजीम, पुरस्कार।

२०. **शासन**—लगान, जकात, नेग, अधिकारी।

२१. **युद्ध**—सेना, शस्त्र-अस्त्र, योद्धा, जूझार, जौहर, युद्ध-क्षेत्र।

२२. **चलन**—सिक्के, तोल, माप, नाप।

२३. **भूगर्भ**—खानें, खनिज पदार्थ, धातुएँ।

२४. **विविध**—(१) गुण-अवगुण, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक।

(२) शारीरिक शक्तियाँ।

(३) मानसिक शक्तियाँ।

(४) रंग, रंगोली।

संक्षिप्त में प्रयत्न यह रहा है कि कोश को सर्वांगपूर्ण वनाने के लिये कोई विषय अछूता नहीं रहे।

कोश संबंधी विशेषताएँ—

इस कोश की अनेक विशेषताओं में से अन्यतम विशेषता यह है कि राजस्थानी शब्दों के हिन्दी पर्याय, अर्थ और व्याख्याओं के अनन्तर काले अक्षरों में राजस्थानी पर्याय, अर्थ भी अधिकांश स्थलों पर दिये गये हैं, यथा—(१) **देवनागरी** *(ना०)* संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि। **बाळबोध**। २. **छत**-*(अव्य०)* होते हुए। **होताथकां**। इस प्रकार यह कोश केवल राजस्थानी-हिन्दी कोश न रह कर एक प्रकार का राजस्थानी-हिन्दी-राजस्थानी शब्द कोश बन गया है।

हम यह मानते हैं कि यदि हिन्दी को सही मानों में राजभाषा बनना है तो देश की भाषा-भगिनिओं के अनेक शब्दों से अपने शब्द भंडार को भरना होगा। इसी दृष्टि से अनेक स्थानों पर मूल राजस्थानी शब्दों की व्याख्या करते समय वाक्य रचना में उनका हिन्दी व्याकरणानुसार प्रयोग किया गया है। यथा—(१) धमोळी-*(ना०)* २. धमोली का विशिष्ट भोजन ३. धमोली के लिये संबंधियों द्वारा भेजी जाने वाली मिष्ठान्न आदि की सौगात। ४. स्त्रियों द्वारा धमोली भोजन करने की क्रिया। पृष्ठ १०३ पर आनापाण *(न०)* २. आने और पाणों के पहाड़े।

राजस्थानी भाषा में अपनाये गये कुछ अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में भी दिया गया है, जिससे कि विदेशी भाषा के शब्द के तत्सम रूप से परिचित हुआ जा सके।

शब्दों के अर्थ देते समय सामान्यतः यह ध्यान रखा गया है कि प्रथम वह अर्थ दिया ! जो अधिक प्रचलित हो। इसके बाद क्रमशः कम प्रचलित अर्थों को रखा गया है। प्रचलित और व्यवहृत सभी अर्थों को देने का प्रयत्न किया गया है, फिर वे चाहे प्राचीन काव्य में प्रयुक्त हुए हों अथवा आधुनिक साहित्य में। इसी प्रकार कतिपय शब्दों के कुछ प्रचलित मुहावरे भी यथा स्थान दिये गये हैं। राजस्थानी भाषा की व्यंजना शक्ति का विद्वद्गण इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि अकेले 'हाथ' शब्द से बने तीन सौ मुहावरे हमारे संग्रह में हैं।

अक्षरादि क्रम में भी थोड़ा परिवर्तन हमने वैज्ञानिक दृष्टि से उचित समझा है। अनुस्वार वाले शब्द मात्राओं के पहिले न देकर अपनी अपनी मात्राओं के बाद दिये गये हैं। यथा—इस कोश में पृ० ६८० पर 'ना' का अन्तिम शब्द 'नाहेसर रो मगरो' है इसके पश्चात् अनुस्वार युक्त 'नां' का प्रारम्भ होता है। यथा—नां, नांई, नांखणो आदि।

'ड' और 'ड़' तथा 'ल' और 'ळ' क्रमशः ट वर्ग और अंतस्थ वर्ग के हैं, अतएव इनको अलग क्रम से न रख कर एक ही क्रम में रखा गया है, यथा—

पृ० ६७ पर 'आडो' शब्द है। उसके तुरन्त बाद 'आड़ो' आया है और फिर 'आडो अड़ि', आडो अवळो' आये हैं। इसी प्रकार पृ० २६४ पर 'खड' और 'खड़' हैं। पृ० २७१ पर 'खळ' 'खलक' 'खळकाट', 'खळकरणो, और 'खलकत' दर्शनीय हैं।

एक और परिवर्तन शब्दों के लिंग-भेद-सूचक संकेतों में किया गया है। हिन्दी और संस्कृत कोशों में प्रयुक्त पुल्लिग और स्त्रीलिंग के स्थान पर 'नर' और 'नारी' का प्रयोग उनके संक्षिप्त रूप 'न' और 'ना' में किया गया है।

राजस्थान और राजस्थानी

एक समय था जब राजस्थानी भाषा का ध्वज देश के विशाल भूभाग के साहित्याकाश में लहरा रहा था और आज दशा यह है कि प्रांतीय भाषाओं की कक्षा में भी उसे स्थान नहीं मिल सका है। मातृभाषा की इस दयनीय स्थिति से हृदय क्षोभ से भर जाता है, पर संतोष इतना ही है कि आज परिस्थिति ने अेक करवट बदली है और इसकी साहित्य-सेवी संतान अब माँ-भारती के विभिन्न अंगों और उपांगों को सबल बनाने में संलग्न है।

जब राजस्थान दुहरी गुलामी (अंग्रेजों और राजाओं) की मार से पीड़ित था, सर्व प्रकार की चेतना (शैक्षणिक, सामाजिक व राजनैतिक) के अभाव में राजस्थानी को हिन्दी की एक बोली मान लिया गया। इस प्रकार राजस्थानी भाषा अपने ही घर में अपने न्याययुक्त आसन से च्युत कर दी गई—एक विशाल राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हो राजस्थान वासियों ने भी इस असत्य को सत्य मान लिया। प्रसिद्ध भाषाविद डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डॉ० ग्रियर्सन और डॉ० तैस्सितोरी जैसे प्रसिद्ध देश-विदेश के विद्वान् राजस्थानी को सर्वथा स्वतन्त्र भाषा स्वीकार करते हैं। डॉ० चाटुर्ज्या का भाषा-वंश-वृक्ष दर्शनीय है :—

कोश संबंधी विशेषताएँ—

इस कोश की अनेक विशेषताओं में से अन्यत्तम विशेषता यह है कि राजस्थानी शब्दों के हिन्दी पर्याय, अर्थ और व्याख्याओं के अनन्तर काले अक्षरों में राजस्थानी पर्याय, अर्थ भी अधिकांश स्थलों पर दिये गये हैं, यथा—(१) **देवनागरी** *(ना०)* संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि। **बाळबोध**। २. छत-*(अव्य०)* होते हुए। **होतायकां**। इस प्रकार यह कोश केवल राजस्थानी-हिन्दी कोश न रह कर एक प्रकार का राजस्थानी-हिन्दी-राजस्थानी शब्द कोश बन गया है।

हम यह मानते हैं कि यदि हिन्दी को सही मानों में राजभाषा बनना है तो देश की भाषा-भगिनिओं के अनेक शब्दों से अपने शब्द भंडार को भरना होगा। इसी दृष्टि से अनेक स्थानों पर मूल राजस्थानी शब्दों की व्याख्या करते समय वाक्य रचना में उनका हिन्दी व्याकरणानुसार प्रयोग किया गया है। यथा—(१) धमोळी-*(ना०)* २. धमोली का विशिष्ट भोजन ३. धमोली के लिये संबंधियों द्वारा भेजी जाने वाली मिष्ठान्न आदि की सौगात। ४. स्त्रियों द्वारा धमोली भोजन करने की क्रिया। पृष्ठ १०३ पर आनापाण *(न०)* २. आने और पाणों के पहाड़े।

राजस्थानी भाषा में अपनाये गये कुछ अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में भी दिया गया है, जिससे कि विदेशी भाषा के शब्द के तत्सम रूप से परिचित हुआ जा सके।

शब्दों के अर्थ देते समय सामान्यतः यह ध्यान रखा गया है कि प्रथम वह अर्थ दिया ! जो अधिक प्रचलित हो। इसके बाद क्रमशः कम प्रचलित अर्थों को रखा गया है। प्रचलित और व्यवहृत सभी अर्थों को देने का प्रयत्न किया गया है, फिर वे चाहे प्राचीन काव्य में प्रयुक्त हुए हों अथवा आधुनिक साहित्य में। इसी प्रकार कतिपय शब्दों के कुछ प्रचलित मुहावरे भी यथा स्थान दिये गये हैं। राजस्थानी भाषा की व्यंजना शक्ति का विद्वद्गण इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि अकेले 'हाथ' शब्द से बने तीन सौ मुहावरे हमारे संग्रह में हैं।

अक्षरादि क्रम में भी थोड़ा परिवर्तन हमने वैज्ञानिक दृष्टि से उचित समझा है। अनुस्वार वाले शब्द मात्राओं के पहिले न देकर अपनी अपनी मात्राओं के बाद दिये गये हैं। यथा—इस कोश में पृ० ६८० पर 'ना' का अन्तिम शब्द 'नाहेसर रो मगरो' है इसके पश्चात् अनुस्वार युक्त 'नां' का प्रारम्भ होता है। यथा—नां, नांई, नांखणो आदि।

'ड' और 'ड़' तथा 'ल' और 'ळ' क्रमशः ट वर्ग और अंतस्थ वर्ग के हैं, अतएव इनको अलग क्रम से न रख कर एक ही क्रम में रखा गया है, यथा—

पृ० ६७ पर 'आडो' शब्द है। उसके तुरन्त बाद 'आड़ो' आया है और फिर 'आडो अड़ि', आडो अवळो' आये हैं। इसी प्रकार पृ० २६४ पर 'खड' और 'खड़' हैं। पृ० २७१ पर 'खळ' 'खलक' 'खळकट', 'खळकणो, और 'खलकत' दर्शनीय हैं।

एक और परिवर्तन शब्दों के लिंग-भेद-सूचक संकेतों में किया गया है। हिन्दी और संस्कृत कोशों में प्रयुक्त पुल्लिग और स्त्रीलिंग के स्थान पर 'नर' और 'नारी' का प्रयोग उनके संक्षिप्त रूप 'न' और 'ना' में किया गया है।

राजस्थान और राजस्थानी

एक समय था जब राजस्थानी भाषा का ध्वज देश के विशाल भूभाग के साहित्याकाश में लहरा रहा था और आज दशा यह है कि प्रांतीय भाषाओं की कक्षा में भी उसे स्थान नहीं मिल सका है। मातृभाषा की इस दयनीय स्थिति से हृदय क्षोभ से भर जाता है, पर संतोष इतना ही है कि आज परिस्थिति ने अेक करवट बदली है और इसकी साहित्य-सेवी संतान अब माँ-भारती के विभिन्न अंगों और उपांगों को सबल बनाने में संलग्न है।

जब राजस्थान दुहरी गुलामी (अंग्रेजों और राजाओं) की मार से पीड़ित था, सर्व प्रकार की चेतना (शैक्षणिक, सामाजिक व राजनैतिक) के अभाव में राजस्थानी को हिन्दी की एक बोली मान लिया गया। इस प्रकार राजस्थानी भाषा अपने ही घर में अपने न्याययुक्त आसन से च्युत कर दी गई— एक विशाल राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हो राजस्थान वासियों ने भी इस असत्य को सत्य मान लिया। प्रसिद्ध भाषाविद डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डॉ० ग्रियर्सन और डॉ० तैस्सितोरी जैसे प्रसिद्ध देश-विदेश के विद्वान् राजस्थानी को सर्वथा स्वतन्त्र भाषा स्वीकार करते हैं। डॉ० चाटुर्ज्या का भाषा-वंश-वृक्ष दर्शनीय है :—

कोश संबंधी विशेषताएँ—

इस कोश की अनेक विशेषताओं में से अन्यत्तम विशेषता यह है कि राजस्थानी शब्दों के हिन्दी पर्याय, अर्थ और व्याख्याओं के अनन्तर काले अक्षरों में राजस्थानी पर्याय, अर्थ भी अधिकांश स्थलों पर दिये गये हैं, यथा—(१) **देवनागरी** *(ना०)* संस्कृत, राजस्थानी, हिन्दी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि। **बाळबोध**। २. छत–*(अव्य०)* होते हुए। **होताथकां**। इस प्रकार यह कोश केवल राजस्थानी–हिन्दी कोश न रह कर एक प्रकार का राजस्थानी–हिन्दी–राजस्थानी शब्द कोश बन गया है।

हम यह मानते हैं कि यदि हिन्दी को सही मानों में राजभाषा बनना है तो देश की भाषा–भगिनिओं के अनेक शब्दों से अपने शब्द भंडार को भरना होगा। इसी दृष्टि से अनेक स्थानों पर मूल राजस्थानी शब्दों की व्याख्या करते समय वाक्य रचना में उनका हिन्दी व्याकरणानुसार प्रयोग किया गया है। यथा—(१) धमोळी–*(ना०)* २. धमोली का विशिष्ट भोजन ३. धमोली के लिये संबंधियों द्वारा भेजी जाने वाली मिष्ठान्न आदि की सौगात। ४. स्त्रियों द्वारा धमोली भोजन करने की क्रिया। पृष्ठ १०३ पर आनापाण *(न०)* २. आने और पाणों के पहाड़े।

राजस्थानी भाषा में अपनाये गये कुछ अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में भी दिया गया है, जिससे कि विदेशी भाषा के शब्द के तत्सम रूप से परिचित हुआ जा सके।

शब्दों के अर्थ देते समय सामान्यत: यह ध्यान रखा गया है कि प्रथम वह अर्थ दिया ! जो अधिक प्रचलित हो। इसके बाद क्रमश: कम प्रचलित अर्थों को रखा गया है। प्रचलित और व्यवहृत सभी अर्थों को देने का प्रयत्न किया गया है, फिर वे चाहे प्राचीन काव्य में प्रयुक्त हुए हों अथवा आधुनिक साहित्य में। इसी प्रकार कतिपय शब्दों के कुछ प्रचलित मुहावरे भी यथा स्थान दिये गये हैं। राजस्थानी भाषा की व्यंजना शक्ति का विद्वद्गण इसी से अनुमान लगा सकते हैं कि अकेले 'हाथ' शब्द से बने तीन सौ मुहावरे हमारे संग्रह में हैं।

अक्षरादि क्रम में भी थोड़ा परिवर्तन हमने वैज्ञानिक दृष्टि से उचित समझा है। अनुस्वार वाले शब्द मात्राओं के पहिले न देकर अपनी अपनी मात्राओं के बाद दिये गये हैं। यथा—इस कोश में पृ० ६८० पर 'ना' का अन्तिम शब्द 'नाहेसर रो मगरो' है इसके पश्चात् अनुस्वार युक्त 'नां' का प्रारम्भ होता है। यथा—नां, नांई, नांखणो आदि।

'ड' और 'ड़' तथा 'ल' और 'ळ' क्रमश: ट वर्ग और अंतस्थ वर्ग के हैं, अतएव इनको अलग क्रम से न रख कर एक ही क्रम में रखा गया है, यथा—

पृ० ६७ पर 'आडो' शब्द है। उसके तुरन्त बाद 'आड़ो' आया है और फिर 'आडो अड़ि', आडो अवळो' आये हैं। इसी प्रकार पृ० २६४ पर 'खड' और 'खड़' हैं। पृ० २७१ पर 'खळ' 'खलक' 'खळकट', 'खळकणो, और 'खलकत' दर्शनीय हैं।

एक और परिवर्तन शब्दों के लिंग-भेद-सूचक संकेतों में किया गया है। हिन्दी और संस्कृत कोशों में प्रयुक्त पुल्लिग और स्त्रीलिंग के स्थान पर 'नर' और 'नारी' का प्रयोग उनके संक्षिप्त रूप 'न' और 'ना' में किया गया है।

राजस्थान और राजस्थानी

एक समय था जब राजस्थानी भाषा का ध्वज देश के विशाल भूभाग के साहित्याकाश में लहरा रहा था और आज दशा यह है कि प्रांतीय भाषाओं की कक्षा में भी उसे स्थान नहीं मिल सका है। मातृभाषा की इस दयनीय स्थिति से हृदय क्षोभ से भर जाता है, पर संतोष इतना ही है कि आज परिस्थिति ने अेक करवट बदली है और इसकी साहित्य-सेवी संतान अब माँ-भारती के विभिन्न अंगों और उपांगों को सबल बनाने में संलग्न है।

जब राजस्थान दुहरी गुलामी (अंग्रेजों और राजाओं) की मार से पीड़ित था, सर्व प्रकार की चेतना (शैक्षणिक, सामाजिक व राजनैतिक) के अभाव में राजस्थानी को हिन्दी की एक बोली मान लिया गया। इस प्रकार राजस्थानी भाषा अपने ही घर में अपने न्याययुक्त आसन से च्युत कर दी गई—एक विशाल राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत हो राजस्थान वासियों ने भी इस असत्य को सत्य मान लिया। प्रसिद्ध भाषाविद डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डॉ० ग्रियर्सन और डॉ० तैस्सितोरी जैसे प्रसिद्ध देश-विदेश के विद्वान् राजस्थानी को सर्वथा स्वतन्त्र भाषा स्वीकार करते हैं। डॉ० चाटुर्ज्या का भाषा-वंश-वृक्ष दर्शनीय है :—

डॉ० तैस्सितोरी ने नागर अपभ्रंश और डिंगळ तथा गुजराती के बीच में पुरानी पश्चिमी राजस्थानी (जूनी गुजराती) को माना है, जिसे सारे गुजराती विद्वान् सहर्ष स्वीकार करते हैं तथा इसी से आधुनिक गुजराती और आधुनिक राजस्थानी का उद्‌भव हुआ है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी का कोई सीधा सम्बन्ध राजस्थानी से नहीं है।

राजस्थान में प्रयुक्त डिंगळ और पिंगळ भाषाओं के सम्बन्ध में भी थोड़ा विचार करने की आवश्यकता है। पिंगळ के भाषाकीय स्वरूप को देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में यह एक शैली विशेष और तत्पश्चात् एक स्वतन्त्र भाषा के रूप में निखरी होगी। कुछ भी हो, आज ये दोनों पृथक शैलियाँ न होकर स्वतन्त्र भाषायें हैं। डिंगळ निश्चय ही पिंगळ से प्राचीन है, अतएव डिंगल के अनुकरण पर नामाभिधान होना सुसंगत लगता है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी और अनेक देशी तथा विदेशी विद्वानों का यही मत है। वास्तव में व्रज मिश्रित राजस्थानी से उत्पन्न एक नई भाषा का नाम पिंगळ पड़ा। वैसे कृष्ण भक्ति के कारण राजस्थान व्रज भाषा का भी प्रेमी रहा है। व्रजभाषा के अनेक प्रसिद्ध और श्रेष्ठ कवि राजस्थान के भी रहे हैं।

राजस्थानी का प्राचीन नाम मरुभाषा है। भारतीय भाषा भगिनियों में अति प्राचीन और समृद्ध मरुभाषा का उद्‌गम वि० सं० ८३५ से भी बहुत पूर्व का है। वि० सं० ८३५ में भूतपूर्व मारवाड़ राज्यान्तर्गत जालोर नगर में **मुनि उद्योतन सूरि** रचित **कुवलयमाला** में वर्णित १८ भाषाओं में मरु भाषा का उल्लेख इस बात का पुष्ट प्रमाण है कि इस भाषा का साहित्य इससे भी पूर्व का रहा है—

'अप्पा-तुप्पा' भणिरे अह पेच्छइ मारुए तत्तो
'न उरे भल्लउ' भणिरे अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे
'अम्ह काउं तुम्ह' भणिरे अह पेच्छइ लाडे
भाइ य इ भइणी तुब्भे भणिरे अह मालवे दिट्ठे

(कुवलयमाला)

इसका प्राणवान व सशक्त वीर रसीय साहित्य कालानुसार अतिशयोक्ति-पूर्ण होते हुये भी बेजोड़ तथा भारतीय साहित्य की एक अमूल्य धरोहर है, जिसे राजस्थान वासियों ने अपने रक्तदान से सींचित व पल्लवित किया था। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टेगौर तो इस काव्य के कुछ ओजस्वी अंशों को सुनकर इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने मुक्तकंठ से इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

अनेक सम्प्रदायों (रामसनेही, जसनाथी, विश्नोई, दादूपंथ, निरंजनी आदि) के प्रवर्त्तक सिद्ध-महात्मा और मीरां, पृथ्वीराज आदि शताधिक भक्तों की रसप्लावित धारा ने इस प्रदेश को ही नहीं, देश के समूचे भक्तिकाल को सविशेष

प्रभावित किया है। इसका लोक साहित्य तो हमारी अगाध संचित निधि है, जो राजस्थान के सांस्कृतिक जीवन को सही परिप्रेक्ष्य में प्रतिविम्वित करने का मुकुर है।

विधाओं में वैविध्य और राशि में विपुलता के होते हुये भी देश के स्वतन्त्रता-युद्ध में और स्वातंत्र्य-सूर्य के उदित होने के पश्चात् भी राजनैतिक चेतना के अभाव में देश के संविधान में इसे मान्यता नहीं दी गई। राजस्थान के राष्ट्र प्रेम और राजभाषा के प्रति उसकी आसक्ति को एक विशिष्ट गुण के स्थान पर कमजोरी माना गया और राजस्थानी को एक वोली के रूप में संतुष्ट होना पड़ा।

आज जब राजस्थान के तप:पूत इस ओर जाग्रत हुये हैं, सरकारी मान्यता के अभाव में भी इस भाषा के आधुनिक साहित्य के निर्माण में अपनी उत्कट इच्छा, अदम्य साहस और प्रतिभा के त्रिवेणी संगम से अपूर्व योगदान दे रहे हैं। कच्छप-चाल से ही सही, पर विविध विधाओं में जो अधुनातन विचारों से प्रेरित साहित्य निर्मित किया जा रहा है, वह कम प्रशंसनीय नहीं है। इधर राजस्थानी साहित्य संगम की स्थापना, केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा राजस्थानी भाषा को अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष साहित्यिक मान्यता प्रदान करना तथा राजस्थान सरकार द्वारा एक विषय (ऐच्छिक ही सही) के रूप में विविध स्तरों पर विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान देना, इसकी उपर्युक्त धीमी गति को त्वरित करने में सहायक वने हैं।

भाषा की एकरूपता को लेकर जाने-अनजाने एक आंतरिक कलह और द्वेषवृत्ति को वाह्य तत्वों द्वारा उकसाया जा रहा है। आधुनिक काल में साहित्य निर्माण की दृष्टि से एकरूपता की नितांत आवश्यकता को सभी स्वीकार करते हैं और इसके लिये सद्प्रयत्न भी हुये हैं तथा एकरूपता के लक्ष्य पर पहुँचा जा रहा है, पर इसको लेकर चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। हमारे समक्ष गुजराती तथा अन्य भाषाओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं। स्वयं हिन्दी में व्रज, अवधी, पहाड़ी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी आदि अनेक वोलियाँ हैं। फिर राजस्थानी की वोलियों से ही चिंतित होने की वात समझ में नहीं आ रही है।

यह ठीक है कि राजस्थानी में आधुनिक कोश का अभाव अब तक खटकता था, पर इस भाषा में कोशों का अभाव कभी न रहा। **डिंगळ नांम माळा, नागराज डिंगळ कोश, हमीर नांममाळा, नांममाळा, अवधान माळा, डिंगळ कोश, अनेकारथी कोश, एकाक्षरी नांम माळा** आदि अनेक कोश विद्यमान हैं।

व्याकरण को समझने के लिये इस कोश में प्रयुक्त संकेतों की एक अलग

कोश के प्रकाशक श्री मूलचंदजी गुप्ता साधुवाद के पात्र हैं। कोश के जैसे बृहत् प्रकाशन के लिये जब बड़े बड़े प्रकाशक कतराते हैं तब मातृभाषा की सेवा करने के लिए श्री गुप्ता के साहस की जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम होगी। यहाँ इसी प्रकाशन संस्था के प्रतिनिधि श्री कुंभसिंह राटौड़ को भुलाया नहीं जा सकता।

कोश का द्वितीय भाग भी प्रकाशनाधीन है और कुछ ही मासोपरांत वह भी विद्या-व्यसंगियों के हाथ में होगा।

मातृभूमि से दूर इस अन्तिम अवस्था में, मैं अपनी जिस साध को पूरी कर सका हूं, वह मातृभूमि की रज की कृपा और आशीर्वाद का प्रताप है, नहीं तो किसी संस्था या सरकारी सहायता के बिना शब्द कोश जैसे महत्वपूर्ण और व्यय साध्य कार्य का पूर्ण होना असम्भव था। राजस्थान छोड़ने के बाद इसकी आशा ही छोड़ दी थी।

इस कार्य में मेरे पुत्र चि० प्रो० भूपतिराम का सहयोग नहीं होता तो इस रूप में आज भी इसका तैयार होना कटिन था। दो युगों से गुजरात में रहते हुये और हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन करते रहने पर भी मातृभूमि और मातृ-भाषा के प्रति यह उसकी असीम भक्ति का परिचायक है। **आधुनिक राजस्थानी साहित्य और महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ : व्यक्तित्व और कृतित्व** आदि उसके मौलिक ग्रंथ तथा अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियाँ इसकी साक्षी हैं।

अध्यापन कार्य की अनेक-विध प्रवृत्तियों, एन. सी. सी., विश्व-विद्यालय की सेनेट का सदस्य आदि अनेक स्थानिक गति-विधियों में भाग लेते हुये जो अमूल्य सहयोग (शब्द संकलन, अर्थ-विचार, प्रेस कापी बनाने, प्रूफ संशोधन तथा पत्र-व्यवहार आदि) रहा है, उसको तो उसने मात्र सेवा और कर्त्तव्य समझ कर ही किया है, परन्तु उसका मूल्य आंका नहीं जा सकता। शतशः आशीर्वाद।

डॉ० नरेन्द्र भानावत ने दो एक वर्ष पूर्व कोश को प्रकाशित करने की तत्परता बतलाई थी और सुकवि मुकनसिंह बीदावत ने मेरे आवास आदि की व्यवस्था करने की जिम्मेवारी उठाने का सहज भाव से जो निमन्त्रण दिया था, उसके लिये उनका आभारी हूँ।

[handwritten signature]

संकेत

(अनु०)	अनुकरण
(अव्य०)	अव्यय
(आ क्रि०)	आज्ञासूचक क्रिया
(उदा०)	उदाहरण
(उप०)	उपसर्ग
(ए०व०)	एक वचन
(का०)	काव्य
(क्रि०)	क्रिया
(क्रि०भ०)	क्रिया भविष्यत् काल
(क्रि०भ०का०)	क्रिया भविष्यत् काल
(क्रि०भू०)	क्रिया भूतकाल
(क्रि०भू०का०)	क्रिया भूतकाल
(क्रि०वि०)	क्रिया विशेषण
(जैन०)	जैन धर्म सम्बन्धी
(जैस०जैसल०)	जैसलमेरी
(ज्यो०)	ज्योतिष शास्त्र
(तृ०पु०)	तृतीय पुरुष
(दे०)	देखिये
(द्वि० पु०)	द्वितीय पुरुष
(न०)	नर जाति संज्ञा
(न०व०व०)	नर जाति बहुवचन
(ना०)	नारी जाति संज्ञा
(ना०व०व०)	नारी जाति बहुवचन
(प्र० या प्रत्य०)	प्रत्यय
(प्र पु०)	प्रथम पुरुष
(ब० व०)	बहुवचन
(ब० वा०)	बहुवाची प्रयोग
(भ०क्रि०)	भविष्यत् क्रिया
(भू०)	भूतकाल
(भू०कृ०)	भूतकाल कृदन्त
(भू०क्रि०)	भूतकाल क्रिया
(वव्य०)	वर्ण व्यतिक्रम
(वि०)	विशेषण

(वि०न०)	विशेषण नर जाति
(वि०ना०)	विशेषण नारी जाति
(विभ०)	विभक्ति
(वि०वि०)	विशेष विवरण
(वि०सर्व०)	विशेषण सर्वनाम
(व्या०)	व्याकरण
(शिला०)	शिलालेख
(सर्व०)	सर्वनाम
(सं०)	अर्थ संख्या

अ

अ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का पहला स्वर-वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

अ—१. शब्दों के पहले लगने वाला एक उपसर्ग, जिसका अर्थ—निषेध, अभाव, थोड़ा, अधिक्षेप इत्यादि होता है, जैसे—अकंटक, अबोलो, अथाग, अखार इत्यादि में। स्वर से आरंभ होने वाले शब्दों के पहले आने पर इसका रूप 'अण' हो जाता है। २. संस्कृत परिवार की भाषाओं की वर्णमालाओं के व्यंजन वर्णों की स्वर मात्राओं में स्वरूप रहित प्रथम मात्रा। *(न०)* ३. शिव। ४. ब्रह्मा। ५. विष्णु।

अइयो—*(अव्य०)* ओ, अरे, हे आदि संबोधन सूचक शब्द।

अउब—*(वि०)* अपूर्व। अद्भुत। **अनोखो।**

अउबगति—*(ना०)* १. अपूर्व गति। २. अद्भुत गति। *(क्रि० वि०)* अद्भुत गति से।

अउबभत—*(ना०)* १. अपूर्व भाँति। २. अद्भुत भाँति। *(क्रि० वि०)* अद्भुत भाँति से।

अउर—दे० और।

अउळग—*(न०)* १. उल्लंघन। २. सेवा। चाकरी। ३. याद। स्मृति। **ओळग।**

अऊत—*(वि०)* १. अपुत्रक। निःसंतान। **निपूतो।** २. निर्वंश। ३. **कुपूत।**

अऊती—*(वि०)* निःसंतान। **निपूती।**

अक—*(न०)* १. दुःख। २. पाप। ३. आक। **आकड़ो।**

अकच—*(वि०)* केश रहित। **गंजो।**

अकज—*(न०)* १. नाश। २. बुरा काम। अकाज। *(वि०)* खराब। *(अव्य०)* बिना मतलब के। व्यर्थ। **अणहूतो। अणूंतो।**

अकज्ज—दे० अकज।

अकठ—*(वि०)* जिसके थन कठिन न हों और आसानी से दोहे जा सकें (वह गाय, भैंस आदि)।

अकड़—*(ना०)* १. ऐंठ। मरोड़। २. अभिमान ३. अनम्रता। ४. हठ। ५. धृष्टता। ढिठाई। *(वि०)* १. कड़ा। सख्त। २. नहीं झुकने वाला।

अकड़णो—*(क्रि०)* १. ऐंठ जाना। अकड़ जाना। २. ठिठुरना। ३. हठ करना। ४. घमंड करना। ५. धृष्टता करना। ६. झगड़ा करना। ७. कड़ा होना।

अकड़पणो—दे० अकड़।

अकड़ाई—दे० अकड़।

अकड़ाट—दे० अकड़।

अकड़ाणो—*(क्रि०)* १. घमंड करना। अकड़ना। २. शरीर (की संधि) में वायु से पीड़ा होना। ३. शरीर के किसी अंग का अकड़ जाना।

अकड़ावणो—दे० अकड़ाणो।

अकड़ीजणो—*(क्रि०)* १. सर्दी या वायु से शरीर (के किसी अंग) का ऐंठ जाना। अकड़ जाना। २. ठिठुरना। ३. तनना। ४. जिद करना। ५. घमंड करना।

अकडोडियो—*(न०)* आक का फल। **आकड़-डोडो।**

अकढ—*(वि०)* १. नहीं निकाला हुआ। २. नहीं उबाला हुआ (दूध)।

अकढियो—दे० अकढ।
अकतो—दे० अगतो।
अकथ—(वि०) १. नहीं कहने योग्य। २. जो नहीं कही गई हो।
अकथ-कथ—(ना०) १. अकथनीय बात। २. अकथनीय घटना। ३. जिसका वर्णन नहीं किया जा सके उसकी चर्चा। ४. ईश्वर के अकथनीय गुणों का वर्णन।
अकथनीय—(वि०) जिसका वर्णन नहीं हो सके। अवर्णनीय।
अकन कँवारी—(वि०) १. आजीवन क्वारी। २. अखंड क्वारी। (ना०) १. अक्षतयोनि। २. ब्रह्मचारिणी।
अकन कँवारो—(वि०) १. वह जिसका कौमार्य खंडित नहीं हुआ हो। अखंड क्वारा। २. आजीवन क्वारा। वांढो। ३ अक्षत वीर्य।
अकन कुँवारो—दे० अकन कँवारो।
अकबर—(न०) एक मुगल बादशाह (१५५६-१६०५ ई०) का नाम।
अकबंध—(वि०) १. विना खोला हुआ। २ विना तोड़ा हुआ। ३. पूरा। समस्त। ४. ज्यों का त्यों। ५. मीलबंध। साबुत। आखो।
अकरण—(वि०) १. जिसको कोई कर न सके। जो किया नहीं जा सके। २. जो करने योग्य नहीं। ३. अघटनीय। ४. असंभावीय।
अकरण-करण—(न०) १. ईश्वर। २. नहीं किये जा सकने वाले को करने वाला।
अकरणीय—(वि०) नहीं करने योग्य।
अकरम—(न०) १. अकर्म। २. कुकर्म। खोटो काम।
अकरमी—(वि०) १. अकर्मी। पापी। २. बुरा काम करने वाला। कुकर्मी।
अकरमो—(वि०) निकम्मा। १. निकामो। २. निवरो। दे० अकरमी।
अकराळ—(वि०) १. भयंकर। विकराल। २. जो भयंकर न हो।
अकरार—दे० अक्रूर।
अकर्ता—(वि०) १. बिना काम वाला। २. आलसी। (न०) पाप।
अकर्तव्य—(वि०) नहीं करने योग्य। अनुचित। (न०) दुराचरण।
अकर्ता—(वि०) १. न करने वाला। २. मानसिक। जो कर्मों से अलिप्त।
अकर्म—दे० अकरम।
अकर्मण्य—(वि०) निकम्मा। निकामो।
अकर्मी—(वि०) १. बिना काम का। २ आलसी। ३. निकम्मा। निकामो। ४. कुकर्मी। बेकार। निवरो। दे० अकर्मी। अकरमो।
अकर्मी—दे० अकरमी।
अकल—(ना०) बुद्धि। अक्ल। समझ।
अकळ—(वि०) १. जो समझा नहीं जा सके। २. समर्थ। शक्तिमान। ३. सीमा रहित। असीम। ४. समस्त। संपूर्ण। समूचा। ५. व्याकुल। (नि०) १. परब्रह्म। २. ईश्वर। ३. शिव।
अकलकरो—(न०) अकरकरा। एक औषधि।
अकलमंद—(वि०) १. अक्लमंद। बुद्धिमान। समझदार। २. मंद अक्ल का। बेसमझ।
अकलवान—(वि) अक्लमंद। समझदार।
अळक-विकळ—(वि०) आकुल-व्याकुल। घबराया हुआ।
अकळंक—(वि०) १. कलंक रहित। निष्कलंक। २. निर्दोष। (न०) ईश्वर।
अकळाणो—दे० अकळावणो।
अकळामण—(ना०) १. घबराहट। व्याकुलता। बेचैनी। २. असूझण। ३. ऊब।
अकळावणो—(क्रि०) १. अकुलाना। घबराना। २. उकताना। ऊबना। ऊबणो।
अकलीम—(न०) १. राज्य। २. देश।
अकळीस—(न०) ईश्वर।

अकल्पनीय—*(वि०)* जिसकी कल्पना नहीं की जा सके। अकळ।

अकल्पित—*(वि०)* १. जिसकी कल्पना भी न की गई हो। २. कल्पना रहित।

अकल्याण—*(न०)* अशुभ। अमंगल। **खोटो**। **मूंडो**।

अकस—*(ना०)* १. ईर्ष्या। २. शत्रुता। *(वि०)* कस रहित। सार हीन।

अकसर—*(अव्य०)* १. प्रायः। बहुधा। २. बार-बार।

अकसीर—*(वि०)* १. निश्चित रूप से प्रभावी। २. **अचूक गुणकारी**। ३. सब रोगों के लिए अचूक (दवा)। रामबाण (दवा)।

अकस्मात—*(क्रि० वि०)* १. अचानक। सहसा। २. दैव योग से।

अकंटक—*(वि०)* १. निष्कंटक। २. निर्विघ्न।

अकाज—*(न०)* १. बुरा काम। कुकर्म। २. बिना काम। ३. अनर्थ। ४. दुर्घटना। ५. विघ्न। ६. हानि। नुकसान। ७. कार्याभाव।

अकाट्य—*(वि०)* १. जो काटा नहीं जा सके। २. जिसका खंडन नहीं हो सके।

अकाथ—*(वि०)* १. अशक्त। निर्बल। **निबळो**। २. अकथ्य। ३. वृथा। **बिरथा**।

अकादमी—*(ना०)* १. विद्या मन्दिर। २. विद्वत् परिषद्।

अकाम—*(वि०)* १. कामना रहित। इच्छा रहित। *(क्रि० वि०)* **अकारण**। व्यर्थ। *(न०)* १. हानि। नुकसान। २. विघ्न। ३. खराब काम। **खोटो काम**। ४. नाश।

अकामी—*(वि०)* कामना रहित। निस्पृह।

अकाय—*(न०)* १. कामदेव। *(वि०)* १. अशरीरी। देह रहित। २. निराकार। ३. अजन्मा।

अकार—*(न०)* १. 'अ' वर्ण। २. आकार। आकृति। *(वि०)* **बेकार**। **बेकाम**।

अकारज—दे० अकाज।

अकारण—*(वि०)* बिना कारण। निष्प्रयोजन।

अकारथ—*(क्रि० वि०)* व्यर्थ। **फिजूल**।

अकारो—*(वि०)* १. प्रचंड। तेज। करारा। २. अप्रिय। नापसंद। ३. कठोर। कठिन। ४. अधिक। ५. व्यर्थ। ६. **जबरदस्त**।

अकार्य—दे० अकर्म।

अकाळ—*(न०)* १. दुष्काल। अकाल। काळ। *(वि०)* असमय। **कुसमय**।

अकाळणी—*(ना०)* मृत्यु। **मौत**।

अकाळ मिरतू—दे० अकाळ मौत।

अकाल मृत्यु—दे० अकाळ मौत।

अकाळ मौत—*(ना०)* १. असामयिक मृत्यु। २. बचपन व युवावस्था की मृत्यु। ३. डूबने, जलने या गिरने आदि अकस्मातों से होने वाली मृत्यु।

अकास—*(न०)* १. आकाश। २. शून्य स्थान। *(वि०)* शून्य।

अकास गंगा—*(ना०)* उत्तर-दक्षिण में विस्तृत बहुत घने तारों का समूह। आकाश गंगा।

अकास-दीवो—*(न०)* आकाश दीप।

अकास-वाणी—*(ना०)* १. आकाश वाणी। देववाणी। २. रेडियो स्टेशन।

अकास-वेल—*(ना०)* आकाश वल्ली। अमर वेल।

अकासी विरत—*(ना०)* १. वर्षा द्वारा खेती से प्राप्त होने वाले आजीविका के साधन। २. भिक्षा वृत्ति। ३. पराश्रित और अनिश्चित आमदनी के साधन।

अकीक—*(न०)* एक प्रकार का चिकना कीमती पत्थर।

अकीध—दे० अकीधो।

अकीधो—*(क्रि० वि०)* नहीं किया। *(वि०)* नहीं किया हुआ।

अक्षय तृतीया—दे० आखा तीज ।
अक्षय वट—दे० अखै वड़ ।
अक्षर—(न०) १. वह वर्ण जो शब्द के साथ जुड़ा हुआ हो । (व्या०) २. अकारादि वर्ण । आखर । ३. आत्मा । ४. सत्य । ५. ब्रह्म । ६. मोक्ष । ७. विधि का लेख । (वि०) १. नित्य । २. अविनाशी ।
अक्षरमेळ—(न०) वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम की समानता वाला वृत्त । अक्षरवृत्त । वर्णिक छंद । आखरमेळ । (का०) ।
अक्षि—(ना०) आँख ।
अक्षुण्ण—(वि०) विना टूटा हुआ । अखंडित ।
अक्षोट—(न०) अखरोट ।
अक्षोणी—दे० अक्षौहिणी ।
अक्षौहिणी—(ना०) प्राचीन युग में सेना का एक परिमाण जिसमें १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ और हाथी रहते थे ।
अक्स—(न०) १. प्रतिबिंब । २. चित्र ।
अक्सर—(क्रि० वि०) प्रायः । बहुधा । घणोकरनै ।
अखज—(वि०) नहीं खाने योग्य । अखाद्य । (न०) १. नहीं खाने योग्य पदार्थ । २. मांसाहार ।
अखड़—(वि०) १. विना जोता हुआ । (खेत) । जो खड़ा नहीं गया हो । परती । पड़त । पड़तल । अणखड़ ।
अखड़ी—(वि०) विना खड़ी या जोती हुई (जमीन) । परती । पड़तल ।
अखड़ैत—(वि०) १. अखाड़ा बाज । २. मल्ल । ३. वीर । ४. जबरदस्त । ५. रणजीत ।
अखण—(न०) १. मुँह । मूंढो । २. कथन ।
अखणो—(क्रि०) कहना ।
अखत—(न०) १. पूजा के काम में आने वाले विना टूटे चावल । अक्षत । २. चावल । ३. यावनी भाषा । ४. म्लेच्छ वाणी । ५. नमाज । (वि०) १. जो टूटा न हो । २. जिसके कोई घाव न लगा हो । अक्षत ।
अखतरो—(न०) १. प्रयोग । २. आजमाइश । अजमास ।
अखत्यार—(न०) इख्तियार । अधिकार ।
अखत्र—(वि०) १. अखंडित । अक्षत । २. अजस्र । निरंतर । (न०) अक्षत चावल ।
अखबार—(न०) समाचार पत्र । छापो ।
अखम—(वि०) १. लाचार । विवश । २. अशक्त । ३. अंधा । आँधो । ४. क्षमा रहित । ५. क्षमता रहित । ६. असह्य । ७. असमर्थ ।
अखर—(न०) अक्षर । आखर । दे० अक्षर ।
अखरणो—(क्रि०) अखरना । बुरा लगना ।
अखरावट—(ना०) बार-बार कह करके किसी बात को पक्का करना । खरावट । दे० अखरावळ ।
अखरावणो—(क्रि०) १. बार-बार कह कर बात को पक्का करना । २. सामने वाले से बार-बार कहलवाकर बात को पक्का करना ।
अखरावळ—(ना०) १. अक्षरावली । अक्षर पँक्ति । २. वर्णानुक्रम । अखरावट । ३. अनुक्रमणिका । ४. एक प्रकार की कविता जिसके चरण (पँक्ति) वर्णमाला के अक्षर क्रम के अनुसार आरंभ होते हैं । अक्षरौटी । अखरावट । ५. लिखावट । ६. साक्षी के रूप में की जाने वाली लिखा पढ़ी । साक्षी पत्र । ७. जमानतनामा ।
अखरावळी—(ना०) १. अक्षरावली । अक्षर पँक्ति । २. वर्ण माला ।
अखरै—(अव्य०) १. अंकों में लिखने के

साथ संख्या का अक्षरों में लिखा जाना । २. हुंडी, चैक आदि में रुपयों की संख्या का शब्दों द्वारा उल्लेख करने का पारिभाषिक शब्द । जैसे—रु० १०५) अखरै रुपिया एक सौ पाँच । ३. अक्षरों में । अक्षरों द्वारा व्यक्त । (वि०) खरा । पक्का निश्चय ।

अखरो—(वि०) १. कृत्रिम । बनावटी । खोटो । २. झूठा । कूड़ो । ३. कठिन । मुश्किल ।

अखरोट—(न०) एक मेवा ।

अखंग—(वि०) जिसके दाग न लगाया गया हो (पशु) । २. जिसके दाग (तप्त चिन्ह) न लगा हुआ हो (पशु) । ३. अक्षय ।

अखंड—(वि०) १. खंडित नहीं । पूरा । २. समस्त । आखो । ३. अविरल । निरंतर ।

अखंडळ—(न०) आखंडल । इंद्र ।

अखंडित—(वि०) जिसके टुकड़े न हुए हों । पूरा । आखो । साबतो ।

अखाड़मल—(न०) १. योद्धा । २. पहलवान ।

अखाड़सिध—दे० अखाड़मल ।

अखाड़ो—(न०) १. साधुओं का मठ । २. अखाड़े के साधुओं की मंडली व जमात । २. ख्याल-तमाशों में अभिनय करने वालों का (गोलाकार स्थान) व उसके आजू-बाजू गायक मंडली के गोलाकार रूप में बैठने का घेरा व स्थान । ४. नृत्य सभा । ५. नाट्य शाला । ६. व्यायाम शाला । ७. कुश्ती बाजों का स्थान । दंगल । ८. नशा बाजों के एकत्रित होने का स्थान । ९. जूआ खेलने वालों का अड्डा । १०. युद्ध भूमि । ११. युद्ध । १२. खेल । १३. तमाशा । १४. चमत्कारपूर्ण कार्य ।

अखातो—(वि०) १. भूखा । दीन । गरीब ।

अखार—(वि०) १. क्षार रहित । २. मिलावट रहित । ३. क्रोध रहित । ४. शत्रुता रहित ।

अखियात—(वि०) १. प्रसिद्ध । आख्यात । २. आश्चर्यजनक । ३. स्तुत्य । ४. चिर स्थायी । (न०) यश । कीर्त्ति ।

अखिर—दे० आखिर ।

अखिल—(वि०) १. संपूर्ण । समग्र । २. सर्वांगपूर्ण ।

अखिलपति—(न०) परमेश्वर ।

अखिलेश—(न०) परमेश्वर ।

अखी—(वि०) १. जिसका क्षय न हो । अक्षय्य । २. न मरने वाला । अमर । ३. कीर्त्तिमान । यशस्वी ।

अखी अमावस—(ना०) आखातीज के पहले की अमावस । वैशाख मास की अमावस्या ।

अखीर—(न०) अंत । आखिर । (क्रि० वि०) आखिर में । अंत में ।

अखी रहो—(अव्य०) गुरुजनों की ओर से दिया जाने वाला आशीर्वचन । 'अमर रहो', 'यशस्वी बनो' इत्यादि आशीर्वादार्थक पद ।

अखूट—(वि०) नहीं खूटने वाला । अपरिमित । अपार ।

अखूंत—(न०) १. शस्त्र । २. कवच । ३. वीर पुरुष । (वि०) उतावला ।

अखूंतो—(वि०) १. उतावला । २. बेचैन ।

अखेलो—(वि०) १. जो सबके लिए सुगम नहीं ऐसा खेल (युद्ध) खेलने वाला । २. अद्भुत । ३. व्याकुल । दुखी । ४. मरणासन्न । ५. असाध्य रोग वाला । (न०) १. असाध्य रोगावस्था । २. असाध्य रोगी ।

अखेलो खेल—(न०) १. जिसे सर्वसाधारण नहीं खेल सकता ऐसा खेल । युद्ध । २. अद्‌भुत कार्य । ३. विचित्र खेल ।

अखै—दे० अक्षय।

अखैमाळ—(ना०) अक्षमाला। रुद्राक्ष माला।

अखैवड़—(न०) १. कभी क्षय नहीं होने वाला प्रयाग का अक्षय वट। २. गया का अक्षय वट।

अखैसाही—दे० अखैसाही रुपियो।

अखैसाही नाणो—दे० अखैसाही रुपियो।

अखैसाही रुपियो—(न०) जैसलमेर के रावल अखैराज द्वारा प्रवर्तित चाँदी का रुपया। अखैशाही रुपया।

अखोण—(ना०) अक्षौहिणी सेना।

अखोणी—दे० अखोण।

अख्खर—दे० अक्षर।

अख्यात—दे० अखियात।

अग—(न०) १. पर्वत। २. सूर्य। ३. अग्नि। ४. सर्प। ५. यश। (वि०) अचल। स्थावर। (क्रि० वि०) १. आगे। २. सामने।

अगचळियो—(वि०) जबरदस्त।

अगजीत—(वि०) १. आगे रह कर जीतने वाला। २. जीतने वालों में अग्रणी।

अगड-(न०) १. पर्वत। २. रोक। प्रतिबंध। ३. अर्गला। आगळ। ४. हाथी को बाँधने का स्थान। ५. वह दीवार जो दो हाथियों को बाँधने की जगहों के बीच में बनाई हुई होती है। अगढ। (वि०) १. असम्बद्ध। २. ऊपर उठा हुआ।

अगड़—(वि०) १. अनघड़। २. अगम्य। (ना०) अकड़।

अगड़-बगड़—(वि०) असम्बद्ध।

अगढ—दे० अगड सं० ५

अगढाळ—(न०) १. एक ओर ढलुवाँ खपरेलों की छत (छान) वाला कमरा। २. एक ओर ढलुवाँ खपरेलों की छत। एक ओर ढलुवाँ छान। एकढाळियो।

अगढाळियो—दे० अगढाळ।

अगण—(न०) १. छंद शास्त्र के अशुभ गण। २. अग्नि। (क्रि० वि०) आगे। अगाड़ी।

अगणित—(वि०) अगणित। असंख्य।

अगणो—(वि०) १. प्रथम। पहलो। २. तीसरा। तीजो।

अगत—दे० अगति।

अगति—(ना०) दुर्गति। खोटी गत।

अगतियो—(वि०) १. मरने के बाद जिसकी गति नहीं हुई हो। प्रेतयोनि प्राप्त। २. नरकगामी। ३. अधोगामी।

अगतो—(न०) १. छुट्टी। तातील। अवकाश। २. छुट्टी का दिन। ३. पर्व दिन। ४. मजदूरी के काम करने वालों के अवकाश का दिन। अंझा। ५. जीवहिंसा के अवकाश का दिन।

अगथि—(न०) अगस्त्य।

अगथियो—(न०) अगस्त वृक्ष।

अगद—(ना०) १. दवा। (वि०) नीरोग। स्वस्थ।

अगदराज—(न०) १. अमृत। २. औषधि। दवा।

अगन—(ना०) अग्नि। आग।

अगनग—(न०) ज्वालामुखी पर्वत।

अगन-जंत्र—(न०) १. तोप। २. बंदूक।

अगन-झाळ—(ना०) अग्नि ज्वाला। झाळ।

अगन-सिनान—(ना०) जीवित जलना।

अगनाण—दे० अग्यान।

अगनी—(ना०) १. अग्नि। २. प्रकाश। ३. अग्नि देवता। ४. पित्त। ५. जठराग्नि।

अगनी कूण—(ना०) आग्नेय दिशा।

अगनी कूंट—दे० अगनी कूण।

अगनो—दे० अगणो।

अगम—(वि०) १. अगम्य। दुर्गम। २. बुद्धि से परे। ३. स्थावर। ४. समझ में न आने वाला। ५. अथाह। (न०)

१. ईश्वर । २. वृक्ष । ३. पर्वत । ४. भविष्य । ५. दूरदर्शिता ।

अगम चेती—(वि०) दूरदर्शी । आगम सोचू । आगम सोची ।

अगम-निगम—(न०) १. आगम-निगम । वेद और शास्त्र । २. वेद । ३. वेद भी जिसे नहीं जानता वह । ४. ब्रह्मज्ञान । ५. ब्रह्मज्ञान की चर्चा । ६. योग विद्या । योग शास्त्र । ७. भूत और भविष्य ।

अगमबुद्धि—(ना०) आगम बुद्धि । दूर-दर्शिता । (वि०) दूरदर्शी ।

अगमभाखी—(वि०) १. भविष्य वक्ता । २. योग सिद्धि द्वारा भविष्य कथन करने वाला ।

अगमवाणी—(ना०) आगम वाणी । गूढ़ गिरा । २. रहस्य वाणी ।

अगम्या—(ना०) वह स्त्री जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध है, जैसे—माता, कन्या, गुरुपत्नी इत्यादि ।

अगर—(न०) १. सुगंध वाला एक वृक्ष । २. एक औषधि । (क्रि० वि०) १. यदि । जो । २. आगे ।

अगरवत्ती—(ना०) अगर आदि सुगंधिदार वस्तुओं की बनाई हुई वत्ती जो सुगंध के लिए जलाई जाती है । धूपवत्ती ।

अगरवाळ—(न०) एक वैश्य जाति । अग्रवाल ।

अगरवाळण—(ना०) अग्रवाल जाति की स्त्री ।

अगरवाळी—दे० अगरवाळण ।

अगरांटो—(वि०) बिना बिछौने की खाट पर सोया हुआ ।

अगरेल—(न०) १. अगर का तेल । २. अगर वृक्ष ।

अगल-बगल—(क्रि० वि०) १. आस-पास । २. इधर-उधर ।

अगलूणो—(वि०) १. अगला । पहले का । २. व्यतीत काल का । ३. आगे का । आगे वाले समय का । ४. सामने का ।

अगलो—(वि०) १. पहले का । भूत काल का । २. अगला । आगलो । भविष्य काल का । ३. सामने का । आगे का ।

अगवाई—(ना०) अतिथि का सामने जाकर किया जाने वालास्वागत ।

अगवाणी—(वि०) १. मुख्य । प्रधान । २. आगे रहनेवाला । आगे चलनेवाला । (ना०) अतिथि का सामने जाकर किया जाने वाला स्वागत ।

अगस्त—(न०) १. ईसवी सन का आठवां महीना । ऑगस्ट । २. एक ऋषि का नाम । अगस्त्य ऋषि । ३. एक तारा ।

अगहन—(न०) मार्गशीर्ष मास ।

अगंज—(वि०) १. जिसका नाश नहीं किया जा सके । २. जिस पर विजय नहीं पाई जा सके ।

अगंजी—(वि०) १. जिसका नाश नहीं किया जा सके । २. जिस पर विजय नहीं पाई जा सके । अजेय । (न०) गढ़ । किला ।

अगंड—(न०) कवंध । रुण्ड ।

अगा—(क्रि० वि०) १. पहले । पूर्व । २. सामने । सम्मुख ।

अगाउ—(वि०) १. पहले का । पूर्व समय का । २. आगे वाला । (क्रि० वि०) १. पहले । पेश्तर । २. आगे ।

अगाउ थी—(अव्य०) पहले से । आगे से ।

अगाउ लग—(अव्य०) आगे तक ।

अगाऊ,—दे० अगाउ ।

अगाड़ी—(क्रि०वि०) १. आगे । सामने । २. पहले । ३. भविष्य में । (ना०) १. घोड़े के अगले पैर का बन्धन । २. प्रथम आक्रमण ।

अगाड़ी-पछाड़ी—(ना० ब० व०) घोड़े के आगे और पीछे के पाँवों में बाँधने की दो रस्सियाँ । (अव्य०) आगे और पीछे ।

अगात—(वि०) निराकार। अशरीरी।

अगाध—(वि०) १. अधिक। अत्यन्त। २. गहरा। ऊंडो।

अगार—(न०) १. कोष। खजाना। आगार। २. घर।

अगा लग—(क्रि० वि०) १. आगे तक। २. लगातार। आगूलगू।

अगाळी—(ना०) बरछी।

अगास—(न०) आकाश।

अगासी—(ना०) १. छत पर बना छोटा छप्पर। २. छत पर की खुली जगह।

अगाह—(वि०) १. अगाध। अथाह। २. गहरा। ऊंडो। ३. जो पकड़ा न जा सके। ४. अग्राह्य। (क्रि० वि०) १. आगे। २. सम्मुख।

अगाहट—(न०) जमीन का दान।

अगां—(वि०) १. आगे का। २. पहला। (न०) १. बीता हुआ समय। २. आने वाला समय। (क्रि० वि०) बीते हुए समय में। २. आने वाले समय में। ३. सामने।

अगिन—(ना०) अग्नि।

अगिनाण—(ना०) १. अग्नि ज्वाला। २. अज्ञान।

अगियाण— दे० अज्ञान।

अगिवाण—(वि०) १. अगुआ। मुखिया। २. मार्ग दर्शक।

अगुओ—(वि०) १. अगुआ। मुखिया। २. मार्ग दर्शक।

अगुण—(न०) १. निर्गुण। गुणरहित। २. औगुन। दोष। बुराई।

अगुवाणि,—दे० अगिवाणी।

अगुवो—दे० अगुओ।

अगूढ—(वि०) १. जो गूढ़ न हो। स्पष्ट। २. सरल।

अगूण—(न०) पूर्व दिशा।

अगेत—दे० आगतरी।

अगेती—दे० आगतरी।

अगेस—(क्रि० वि०) आगे।

अगेह—(वि०) घर रहित। बिना घर का।

अगै—(क्रि० वि०) १. पूर्व काल में। अतीत में। २. आगे। ३. सम्मुख। ४. पहले। ५. भविष्य में।

अगोचर—(वि०) १. जो इन्द्रियों से न जाना जा सके। इन्द्रियातीत। २. अव्यक्त। (न०) १. परब्रह्म। परमात्मा। २. विष्णु।

अग्गि—(क्रि० वि०) आगे। (ना०) आग।

अग्नान—दे० अज्ञान।

अग्नानी—दे० अज्ञानी।

अग्नि—(ना०) वैश्वानर। आग।

अग्निकुंड—(न०) यज्ञकुंड। दे० अनल कुंड (वि० वि०)

अग्निज्वाला—(ना०) आग की लपट। झाळ।

अग्निदाह—(न०) शव को जलाना। अग्नि संस्कार। दाग।

अग्नि परीक्षा—(ना०) १. अग्नि के द्वारा परीक्षा करने की क्रिया। २. बहुत कठिन परीक्षा।

अग्नि पुराण—(न०) अठारह पुराणों में से एक।

अग्निपूजक—(न०) पारसी।

अग्निबाण—(न०) अग्न्यास्त्र।

अग्नि संस्कार—(न०) शव को जलाने की क्रिया। दाहक्रिया।

अग्निहोत्र—(न०) वेदमंत्रों द्वारा अग्नि में आहुति देने की क्रिया।

अग्निहोत्री—(वि०) अग्निहोत्र करनेवाला।

अग्य—दे० अज्ञ।

अग्या—दे० आज्ञा।

अग्यात—दे० अज्ञात।

अग्यान—दे० अज्ञान।

अग्यानी—दे० अज्ञानी।

अग्र—*(वि०)* १. अगला। २. पहला। ३. श्रेष्ठ। ४. प्रधान। *(क्रि० वि०)* १. आगे। २. सामने। *(न०)* १. आगे का भाग। २. सिरा। **सिरो**।

अग्रगामी—*(वि०)* आगे चलने वाला। *(न०)* १. प्रधान। २. नेता।

अग्रगाव—*(न०)* पर्वत।

अग्रज—*(न०)* १. बड़ा भाई। मोटोभाई। २. ब्राह्मण।

अग्रजा—*(ना०)* बड़ी बहन। मोटी बहन।

अग्रणी—*(वि०)* अगुआ।

अग्रदास—*(न०)* रामानन्दी सम्प्रदाय के गलता (जयपुर) निवासी एक प्रसिद्ध रामभक्त कवि जो नाभादास के गुरु और कुंडलिया रामायण आदि कई भक्ति ग्रंथों के रचयिता थे।

अग्रसर—*(वि०)* १. अगुआ। २. मुख्य। प्रधान।

अग्राज—*(ना०)* गर्जन। दहाड़।

अग्राजणो—*(क्रि०)* दहाड़ना। गरजना।

अग्राह—दे० अग्राह्य।

अग्राह्य—*(वि०)* ग्रहण करने योग्य नहीं।

अग्रिम—*(वि०)* १. पेशगी। २. पहला। ३. अगला।

अग्रे—*(क्रि० वि०)* १. पहले। २. आगे। ३. आगे से।

अघ—*(न०)* १. पाप। २. दुख।

अघअवतार—*(वि०)* पापी।

अघट—*(वि०)* १. नहीं होने योग्य। २. अयोग्य। ३. अनुपयुक्त। ४. कठिन। ५. जो संभव न हो। ६. नहीं घटने या कम होने वाला। ७. सदा एक जैसा।

अघटित—*(वि०)* जो कभी न हुआ हो।

अघडंडी—*(न०)* यमराज। **जमराज**।

अघमंजण—*(वि०)* पापों को धोने वाला। पापों का नाश करने वाला। *(न०)* १. विष्णु। २. गंगा।

अघमोचण—*(वि०)* पापों का नाश करने वाला। *(न०)* १. विष्णु। २. गंगा। ३. शिव।

अघरणी—*(ना०)* १. पहला गर्भ। २. गर्भ धारण करने के आठवें महीने किया जाने वाला संस्कार। सीमंतोन्नयन संस्कार। सीमंत।

अघराण—दे० अघ्राण।

अघरायण—*(वि०)* १. असह्य। २. कठिन। ३. भयंकर। दे० अघ्राण।

अघवारण—*(वि०)* पापों का नाश करने वाला। *(न०)* ईश्वर।

अघहारी—*(वि०)* पापों का नाश करने वाला। *(न०)* ईश्वर।

अघाट—*(वि०)* १. बिना रूप का। अरूप। २. जो कम नहीं। अन्यून। ३. अनंत। अपार। *(न०)* १. समस्त स्वत्वों वाला हस्तलेख। सभी हकों वाला दस्तावेज। २. दानपत्र। ३. शिलालेख। ४. माफी की जमीन जिसे उसका मालिक बेच न सके। ५. दान में प्राप्त भूमि या गाँव।

अघाणो—*(क्रि०)* अघाना। तृप्त होना। **धापणो**।

अघात—*(ना०)* १. आघात। चोट *(वि०)* प्रहार रहित।

अघायो—*(वि०)* १. आघात रहित। अक्षत। २. स्वस्थ। ३. अघाया हुआ। तृप्त। **धापियोड़ो**।

अघावणो—दे० अघाणो।

अघासुर—*(न०)* एक राक्षस का नाम।

अघोर—*(वि०)* १. भयंकर। २. घोर। ३. मन भावन। ४. प्रिय। ५. पूर्ण। ६. बहुत। *(न०)* १. शिव का एक रूप। २. अघोर पंथ।

अघोरपंथ—*(न०)* अघोरियों का संप्रदाय।

अघोरपंथी—*(न०)* अघोरपंथ का अनुयायी। अघोरी।

अघोरी—(न०) १. अघोर पंथी। औघड़। (वि०) २. अधिक खानेवाला। २. भक्ष्या भक्ष्य का विचार नहीं करने वाला। ३. अत्यन्त गंदा। घिनौना। ४. अधिक नींद लेने वाला। अति निद्रालु। ५. सुस्त। अहदी। **आळसी। ऐदी।**

अघोष—(वि०) १. आवाज रहित। नीरव। शान्त। (न०) राजस्थानी वर्ण-माला के व्यंजन वर्गो के पहले दूसरे वर्ण यथा—क ख, च छ, ट ठ, त थ, और प फ,—ये अघोष व्यंजन कहलाते हैं। (व्या०)

अघ्राण—(ना०) १. सुगंधि। सौरभ। आघ्राण। २. दुर्गंधि। (वि०) गंध रहित।

अघ्रायण—दे० अघ्राण। दे० अघरायण।

अच—(न०) हाथ। आच।

अचकन—(न०) एक प्रकार का लम्बा कोट।

अचगळ—(वि०) १. दानी। २. उदार। ३. वीर।

अचड़—(वि०) १. निश्चल। अचल। २. श्रेष्ठ। ३. वीर। (न०) १. यश। कीर्त्ति। २. चरित्र। ३. श्रेष्ठ कार्य। ४. चेष्टा। ५. कृपा। ६. युद्ध।

अचड़ांकरण—(वि०) १. उत्तम काम करने वाला। २. शरण देनेवाला। ३. शरणागत की रक्षा के लिये युद्ध करने वाला। ४. योद्धा।

अचड़ांबोल—(न०) १. श्रेष्ठ पुरुषों का वचन। २. प्रमाण कथन। प्रमाण वाक्य।

अचणो—(क्रि०) १. आचमन करना। २. पीना। ३. खाना। ४. कहना।

अचपड़ा—(न०) बच्चों को होने वाली एक प्रकार की हलकी चेचक। अछवड़ा।

अचपळाई—(ना०) १. चपलता। २. उद्धतपना। उजड्डता। ३. उत्पात।

अचपळो—(वि०) १. चंचल। चपल। २. उद्धत। ३. उत्पाती। **ऊधमी।**

अचरज—(न०) आश्चर्य। **अचंभो।**

अचल—दे० अचळ।

अचळ—(वि०) १. अचल। निश्चल। २. दृढ़ (न०) १. पृथ्वी। २. पर्वत। ३. ध्रुव। ४. सूर्य। ५. सात की संख्या का सूचक शब्द।

अचळगढ़—(न०) १. आबू पर्वत का एक तीर्थस्थान, जहां अचलेश्वर महदेव का प्रख्यात मंदिर है। २. आबू पर्वत का एक ऐतिहासिक स्थान, जहां पहले दुर्ग और नगर बसा हुआ था।

अचळा—(ना०) पृथ्वी।

अचलेश्वर—(न०) आबू पर्वत पर अचल-गढ़ में स्थित इतिहास प्रसिद्ध शिवमंदिर के महादेव। २. शिव।

अचवन—(न०) आचमन।

अचंभ—(न०) अचरज। अचंभा। (वि०) १. आश्चर्यजनक। २. चकित।

अचंभणो—(न०) अचंभा करना। आश्चर्य करना। **अचंभोकरणो।**

अचंभम—दे० अचंभ्रम।

अचंभो—(न०) आश्चर्य। अचंभा।

अचंभ्रम—(न०) आश्चर्य। अचरज।

अचागळ—वि०) १. उदार। दातार। २. वीर। बहादुर। ३. अचल। अडिग।

अचागळो—दे० अचागळ।

अचाचूक—(क्रि० वि०) अचानक।

अचार—(न०) अंबिया, कैर, गूंदा इत्यादि फल या तरकारियों का मिर्च-मसाले डाल कर बनाया हुआ एक स्वादिष्ट व्यंजन। अथाना। **अथाणो।**

अचारज—(न०) १. आचार्य। २. एक अल्ल। उपगोत्र। ३. एक ब्राह्मण जाति। **कारटियो।**

अचाळ—(वि०) १. अचल। अटल।

२. प्रचंड। ३. भयंकर। ४. तेज। ५. अधिक।

अचावणी—*(वि०)* १. नहीं चाहने वाली। २. नहीं चाही गई। ३. अरुचिकर।

अचाही—*(वि०)* निस्पृह। निष्कामी।

अचिंत –*(क्रि० वि०)* एकाएक। अकस्मात।

अचिंत्य—*(वि०)* १. जिसका चिंतन न हो सके। २. जिस पर विचार नहीं किया जा सके। कल्पनातीत।

अचिंत्यो—*(क्रि० वि०)* १. बिना सोचा हुआ। २. अकस्मात।

अचींती—*(क्रि० वि०)* १. जो ख्याल में न हो। २. एकाएक।

अचींतो,—दे० अचिंत्यो।

अचुतानंद—*(न०)* अच्युतानंद।

अचुंड—*(वि०)* १. डरावना। भयावना। २. अद्भुत। ३. निर्भय।

अचूक—*(वि०)* १. नहीं चूकने वाला। २. जो अपना प्रभाव अवश्य दिखाये। अमोघ। असरकारक। ३. ठीक। पक्का। भ्रम रहित। *(क्रि०वि०)* १. निश्चय ही। २. चूके बिना। ३. अवश्य ही। ४. एकदम।

अचूको—*(वि०)* १. नही चूकने वाला। २. दृढ़ निश्चयी। *(क्रि०वि०)* १. निश्चय ही। २. अवश्य ही।

अचूंको—*(वि०)* १. निडर। निःशंक।

अचूंड—दे० अचुंड।

अचेत—*(वि०)* बेसुध। मूर्च्छित। बेहोश। बेभान। २. असावधान। बेखबर। ३. नासमझ। ४. जड़।

अचेतो—*(वि०)* १. अचेत। बेहोश। २. असावधान।

अचैन—*(न०)* १. दुख। कष्ट। २. व्याकुलता। ३. बेचैन।

अचोट—*(न०)* किला।

अच्छर—*(ना०)* १. अप्सरा। *(ना०)* अक्षर। **आखर।**

अच्छरा— *(ना०)* अप्सरा।

अच्छाई—*(ना०)* अच्छापन।

अच्छु—*(अव्य)* अस्तु। अच्छा। अच्छा जी। खैर। आछो।

अच्छेर—दे० अछेर।

अच्छेरो—दे० अछेरो।

अच्छो—*(वि०)* अच्छा। भला। चोखो।

अच्युत—*(वि०)* १. न गिरा हुआ। २. दृढ़। ३. अटल। ४. शाश्वत। *(न०)* १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

अच्युतानंद—*(न०)* ३. अखंड आनंद। २. अखंड आनंद भोगने वाला। ईश्वर। परब्रह्म।

अछइ—*(क्रि०)* 'होना' क्रिया का वर्तमान रूप। 'है' और 'छै' क्रियाओं का काव्य रूप। दे० अछै।

अछक—*(वि०)* १. अतृप्त। २. उन्मत्त। ३. अपार।

अछत—*(ना०)* १. अभाव। कमी। आवश्यकता। माँग। ३. अभिलाषा। *(वि०)* १. प्रच्छन्न। छिपा हुआ। २. बिना छत्र का। ३. बिना स्वामी का।

अछतो—*(वि०)* १. अभाव वाला। २. गुप्त। छिपा हुआ। ३. साधन हीन। *(न०)* अभाव। कमी।

अछन—*(अव्य)* १. प्रकट। जाहिर। २. पास। निकट। *(वि०)* अक्षुण्ण। *(न०)* लाड़। प्यार।

अछन-अछन—*(अव्य०)* १. प्रीति और सम्मान सूचक एवं शुभकांक्षार्थ एक द्विरुक्ति पद। गुरुजन, मित्र अथवा सगे-संबंधी के प्रति अति स्नेह, सम्मान, स्वागत, दीर्घायु और नैरोग्य आदि मंगल भावनाओं का सूचक एक पद। २. लाड़-प्यार।

अछबड़ा—*(न०)* १. चेचक का एक प्रकार। छोटी चेचक। २. बच्चों को होने वाली एक प्रकार की हल की चेचक। **अचपड़ा।**

अछर—(ना०) १. अप्सरा। (न०) २. अक्षर।

अछरा—(ना०) अप्सरा।

अछराण—(ना० ब० व०) अप्सराओं का समूह।

अछरां-वर—(न०) स्वर्ग में अप्सराओं द्वारा वरण किया जाने वाला वीरगति को प्राप्त युद्धवीर।

अछरी—(ना०) अप्सरा।

अछरीक—(वि०) १. अप्सराओं को प्रिय। २. मौजी। लहरी। ३. वीर। ४. संतुष्ट। तृप्त। ५. बहुत। अधिक।

अछळ—(वि०) छल रहित।

अछंग—(वि०) श्रेष्ठ। उत्तम।

अछंट—(वि०) १. अलग। दूर। २. नहीं छँटा हुआ। पृथक्करण नहीं किया हुआ। (क्रि०वि०) १. अचानक। अकस्मात। २. सबके साथ में।

अछंड—(वि०) नहीं छोड़ा हुआ। पकड़ा हुआ।

अछाड़—(वि०) घायल।

अछानो—(वि०) १. प्रकट। प्रसिद्ध। २. छिपा हुआ। गुप्त।

अछायो—(वि०) १. नहीं छाया हुआ। खुला। २ अशोभित। ३. अतृप्त। ४. आच्छादित। ५. परिपूर्ण। ६. अप्रसिद्ध। ७. अनाच्छादित।

अछूत—(वि०) १. विना छुआ हुआ। २. पवित्र। ३. अस्पृश्य। ४. हरिजन जाति का। (न०) अन्त्यज। हरिजन। अछेप।

अछूतो—(वि०) १. नहीं छुआ हुआ। २. काम में नहीं लाया हुआ। कोरा। नया। **कोरो। नवो।**

अछेक—(वि०) जिसके छेक नहीं लगा हो। बिना चीरा हुआ।

अछेद- (वि०) अछेद्य।

अछेप—(न०) अन्त्यज। अछूत। हरिजन।

अछेर—(वि०) आधा सेर।(न०) आधासेर का तौल। **अधसेरो। अधसेरियो। अछेरो।**

अछेरो—(न०) १. आधासेर का तौल। **अधसेरो।** २. आश्चर्य। (वि०) अच्छा। उत्तम।

अछेव—(वि०) जिसका अंत न पाया जाय।

अछेह—(वि०) १. जिसका छेह नहीं। अनंत। २. छेह नहीं देने वाला। गंभीर। ३. सीमा रहित। असीम। ४. क्रोध रहित। ५. अधिक। ६. निरन्तर।

अछेही—(वि०) १. छेह नही देने वाला। गंभीर। २. क्रोध रहित।

अछेहो—(वि०) १. छेह नहीं देने वाला। गंभीर। क्रोध रहित। ३. सीमा रहित। असीम। ४. जिसका छेह नहीं। अनंत। ५. अधिक। ६. निरन्तर। ७. अच्छा।

अछै—(क्रि०) 'छै' क्रिया का काव्य रूप। 'होणो,' 'होवणो,' 'हुणो,' 'हुवणो,' (हिन्दी 'होना') क्रियाओं के वर्तमान रूप 'छै' या 'है' के अर्थ में प्रयुक्त राजस्थानी गद्य-पद्य का एक प्राचीन रूप। 'छै' क्रिया इसीका संक्षिप्त रूप है। **अछइ। छै। है।**

अछोभ—(वि०) क्षोभ रहित।

अछोर—(वि०) छोर रहित। अनंत।

अछोह—(वि०) १. क्षोभ रहित। २. क्रोध रहित। शान्त।

अछोही—(वि०) अक्रोधी। शान्त। **धीमो। धीरो।**

अज—(वि०) १. अजन्मा। स्वयंभू। (न०) १. ब्रह्मा। २. शिव। ३. विष्णु। ४. कामदेव। ५. बकरा। **छांग।** ६. बकरी। **छाळी।** ७ मेढ़ा। **घेटो।** ७. दशरथ के पिता का नाम। ६ आज।

अजक—(वि०) १. बेचैन। अशान्त। २. चंचल। ३. सावधान। (न०)

१. अशान्ति । २. आतुरता । ३. उतावलापन ।

अजको—*(वि०)* १. वेचैन । अशान्त । २. चंचल । ३. सावधान । ४. आतुर । ५. वीर ।

अजगर—*(न०)* एक जाति का मोटा और बड़ा सांप ।

अजड़—*(वि०)* १. अविवेकी । २. अनम्र । **अक्खड़** । ३. बिना तमीज का । बेतमीज । ४. मूर्ख । जड़ । ५. जो रथ, बैलगाड़ी और हल इत्यादि में जुतने के योग्य तैयार नहीं किया गया हो । (बैल) । **अजड़ो** । **जड़ो** ।

अजड़ो,—दे० अजड़ सं० ५.

अजण—*(न०)* पाण्डु पुत्र अर्जुन । *(वि०)* १. निर्जन । २. अजन्मा ।

अजन,—दे० अजण ।

अजनबी—*(वि०)* अपरिचित । **असेंधो** ।

अजपा—*(न०)* १. मन में किया जाने वाला जाप । २. उच्चरित न होने वाला मंत्र । *(वि०)* न जपा हुआ ।

अजपा-जाप,—दे० अजंपा-जाप ।

अजब—*(वि०)* आश्चर्यजनक । अद्भुत ।

अजभख—*(न०)* बबूल और बेरी के वृक्ष जिनकी पत्तियों को बकरियां बड़ी रुचि से चरती हैं । अजाभक्ष ।

अजमाणो—दे० अजमावणो ।

अजमाव—दे० अजमास ।

अजमावणों—*(क्रि०)* आजमाना । परीक्षा करना । **परखणो** । **जांचणो** ।

अजमास—*(ना०)* आजमाइश । परीक्षा । जांच ।

अजमेर—*(न०)* राजस्थान का एक प्रसिद्ध नगर जिसे अजयपाल ने ११ वीं सदी में पुष्कर और नागपर्वत के पास बसाया था ।

अजमेरी—*(वि०)* १. अजमेर सम्बन्धी । २. अजमेर का निवासी । ३. अजमेर की बनी हुई ।

अजमो—*(न०)* अजवाइन ।

अजमोद—*(ना०)* अजवाइन के जैसी एक औषधि । अजमोदा ।

अजय—*(न०)* पराजय । हार । *(वि०)* जो हराया न जा सके ।

अजयमेरु—दे० अजमेर ।

अजया—*(ना०)* १. बकरी । **छाळी** । २. दुर्गा । ३. भांग ।

अजर—*(वि०)* १. जरा रहित । जो वृद्ध न हो । २. जो हजम न हो सके । ३. वीर । बलवान् । *(न०)* १. देवता । २. परब्रह्म ।

अजरट—*(वि०)* बलवान । जबरदस्त ।

अजराइल—दे० अजरायल ।

अजराग—*(वि०)* बलवान । जबरदस्त ।

अजराट—दे० अजरट ।

अजरामर—*(व०)* सदा अजर और अमर रहने वाला । अविनाशी ।

अजरायल—*(व०)* १. सदा एकसा रहने वाला । चिरस्थायी । २. जो हराया नहीं जा सके । जिस पर विजय नहीं पाई जा सके ३. नहीं हारने वाला । ४. जबरदस्त । बलवान । पराक्रमी । ५. निडर । ६. चंचल । **अजराळ** ।

अजराळ—दे० अजरायल ।

अजरेल—दे० अजरायल ।

अजरो—*(वि०)* १. उत्पाती । २. अशान्त । ३. चंचल । ४. झगड़ालू । ५. वीर । बहादुर ।

अजवाण—*(ना०)* अजवाइन । **अजमो** ।

अजवाळणो—*(क्रि०)* १. प्रकाशित करना । २. उज्वल करना । ३. प्रतिष्ठा । बढ़ाना । यशस्वी बनाना । ४. प्रसिद्ध करना ।

अजवाळीरात—*(ना०)* चाँदनी रात । **चानणीरात** ।

अजवाळो—(न०) उजाला। प्रकाश। **चानणो।**

अजवाळोपख—(न०) १. चान्द्रमास का सुदि पक्ष। शुक्लपक्ष। **सुदपख।** २. किसी बात या काम का उज्वल पक्ष या श्रेष्ठ पहलू।

अजस्त्र—(न०) अपयश। अपकीर्ति। **बदनामी। कुजस।**

अजसु—(वि०) लगातार चलने वाला। निरंतर।

अजस्सिव—(न०) ब्रह्मा और शिव।

अजहद—वि०) बहुत अधिक।

अजंपा-जाप—(न०) १. मन में जपा जाने वाला जाप। अजपा जाप। २. गायत्री मंत्र का मन में किया जाने वाला जप। ३. परब्रह्म का ध्यान। ४ पीरदान लालस के एक डिंगल ग्रन्थ का नाम।

अजंपो—(न०) १. बेचैनी। अशान्ति। **हायतोबा।** २. उतावलापन। ३. बखेड़ाबाजी।

अजा—(ना०) १. बकरी। **छाळी।** २. दुर्गा।

अजागळ—(न०) अजगर। (वि०) विजयी।

अजाग्रत—(वि०) १. जगा हुआ नहीं। २. असावधान। गाफिल।

अजाचक—(वि०) १. नहीं माँगने वाला। याजक वृत्ति की जाति का होने पर भी जिसने याचना करना छोड़ दिया हो। ३. एक ही किसी उदार व्यक्ति का याचक। ४. एक के सिवाय अन्य से नहीं माँगने वाला।

अजाची—दे० अजाचक।

अजाजूथ—(न०) १. भेड़-बकरियों का झुंड। २. गोटाला। झमेला।

अजाण—(वि०) १. अनजान। अनभिज्ञ। नावाकिफ। २. अप्रत्यक्ष। ३. अज्ञानी। मूर्ख।

अजाणचक—(क्रि० वि०) अचानक। एकाएक।

अजाणपण—(ना०) १. अज्ञानता। मूर्खता। २. नासमझी। ३. बेखबरी। ४. असावधानी।

अजाणवो—(वि०) १. अनजान। २. अज्ञानी। मूर्ख।

अजाणियो—(वि०) अनजान। अपरिचित। **असेंधो।** अज्ञात।

अजाणी—वि०) अपरिचित। **असेंधो।**

अजाणुओ—(वि०) १. अपरिचित। २. अनभिज्ञ। मूर्ख। अजाण।

अजाणूं—(वि०) १. अपरिचित। २. अनभिज्ञ। मूर्ख। **अजाण।**

अजाणै—(अव्य०) १. नहीं जानते हुए। २. बेसमझी से।

अजाण्यो—दे० अजाणियो।

अजात—(वि०) १. नहीं जन्मा हुआ। अजन्मा। २. गर्भस्थ। ३. बिना जाति का। ४. नीच जाति का। **कुजात।**

अजातळ—(न०) १. कलंक। २. दोपारोपण। ३. विपत्ति। **आफत।** ४. **खोटी जिम्मेदारी।** ५. बोझा।

अजातशत्रु—(वि०) जिसका कोई शत्रु न हो।

अजाती—(वि०) १. जिसकी जाति नहीं। २. विजातीय।

अजाथर—दे० अजाथळ।

अजाथळ—दे० अजातळ।

अजान—दे० अजाण।

अजानबाहु—(वि०) आजानुबाहु।

अजामिल—(न०) एक प्रसिद्ध विष्णुभक्त।

अजामेल—दे० अजामिल।

अजायबघर—(न०) अद्भुत वस्तुओं का संग्रहालय। संग्रहालय। म्युजियम।

अजायबी—(ना०) आश्चर्य। **अचंभो। नवाई।**

अजायो—*(वि०)* अजन्मा । *(न०)* ईश्वर ।

अजाँ—*(अव्य०)* १. अब तक । अभी तक । २. अभी ।

अजाँताँई—*(अव्य०)* अभी तक ।

अजाँ लग—*(अव्य०)* अभी तक ।

अजिण—*(न०)* १. मृग, व्याघ्र इत्यादि का चमड़ा । अजिन । २. कृष्णमृग-चर्म । ३. व्याघ्रचर्म ।

अजित—*(वि०)* अजेय ।

अजिन—दे० अजिण ।

अजिया—*(ना०)* वकरी ।**छागी । छाळी ।**

अजिर—*(न०)* आँगन । **आँगणो ।**

अजी—*(अव्य०)*एक सम्मानसूचक संबोधन । आदरार्थी संबोधन ।

अजीत—दे० अजित ।

अजीब—*(वि०)* १. आश्चर्यजनक २. विलक्षण । ३. अद्‌भुत ।

अजीरण—*(न०)* अजीर्ण । अपच । बद-हजमी । **अपचो ।**

अजीर्ण—दे० अजीरण ।

अजीव—*(वि०)* निर्जीव ।

अजु—*(अव्य)* १. जो । २. और जो ।

अजुआळणो—दे० अजवाळणो ।

अजुआळी—*(ना०)* चाँदनी । **चानणी ।**

अजुआळो—दे० अजवाळो ।

अजुआळोपख—दे० अजवाळोपख ।

अजुगत—*(वि०)* १. अयोग्य । २. अघटित । ३. असंगत । ४. अयुक्त । *(ना०)* अयुक्ति ।

अजू—*(अव्य०)* १. अब भी । २. अभी तक । **हालतांई ।**

अजे—*(क्रि० वि०)* १. अब तक २. अभी तक ।

अजेज—*(क्रि० वि०)* १. अविलंब । शीघ्र । २. अभी भी ।

अजेय—*(वि०)* १. जो जीता नहीं जा सके । २. जिसे हराया नहीं जा सके ।

अजेव—*(वि०)* जो जीता नहीं जा सके । अजेय ।

अजेस—*(क्रि० वि०)* अभी तक । अब तक । **अजे ।**

अजै—दे० अजय ।

अजैपाळियो—*(न०)* जमालगोटा ।

अजै-विजै—*(वि०)* समान । बराबर ।

अजोखो—*(वि०)* १. विना जोखम का । २. विना तोला हुआ । ३. भय रहित ।

अजोग—*(वि०)* १. अयोग्य । नालायक । २. निकम्मा । निकम्मो । ३. अनुचित । ४. बुरा । खोटो । *(न०)* १. कुसमय । २. संकट ।

अजोगती—*(वि० ना०)* १. अनुचित । २. अयोग्य । ३. अनहोनी ।

अजोगतो—*(वि०)* अनुचित । २. अयुक्त । ३. अयोग्य । ४. अनहोना ।

अजोगो—*(वि०)* अयोग्य । नालायक ।

अजोड़—*(वि०)* अद्वितीय । **बेजोड़ ।** २. अतुल्य । ३. अनुपम । ४. बिना जोड़ी का । **बेमेल । कुजोड़ ।** ५. बिना जोड़ का । संधि रहित । **साँध बिनारो ।**

अजोड़ो—दे० अजोड़ ।

अजोणी—दे० अयोनि ।

अजोणीनाथ—*(न०)* महादेव । शंकर ।

अजोध्या—*(ना०)* श्रीराम की जन्मभूमि । अयोध्या । अवध ।

अजोध्यानाथ—*(न०)* श्री रामचन्द्र ।

अजोनी—दे० अजोणी ।

अजोरो—*(वि०)* निर्बल । **निजोरो । निरबळ ।**

अजोसा—दे० अयोसा ।

अज्ज—*(न०)* १. आर्य । २. अज । ब्रह्मा । ३. आज । ४. बकरा । *(वि०)* अजन्मा ।

अज्जण—*(न०)* अर्जुन ।

अज्जा—*(ना०)* १. देवी । दुर्गा । २. बकरी ।

अज्ञ—(वि०) १. मूर्ख । मूढ । २. अनजान।
अज्ञा—(ना०) आज्ञा ।
अज्ञात—(वि०) १. अविदित । २. गुप्त । ३. अगोचर ।
अज्ञान—(न०) १. ज्ञानहीनता । ज्ञानाभाव । **अजाण** । २. जानकारी का अभाव । ३. मिथ्या ज्ञान । ४. अविद्या । माया । ५. अबुध । **अबूझ** ।
अज्ञानी—(वि०) १. ज्ञान शून्य । २. मूर्ख । ३. मिथ्या ज्ञानी । ४. माया-अविद्या में बंधा हुआ । ५. **अबुध** । **अबूझ** ।
अटक—(ना०) १. रोक । रुकावट । अवरोध । २. उलझन । ३. हिचक । ४. **संकोच** । शंका । ५. **मनाई** । ६. दिक्कत । कठिनाई । ७. उपनाम । अल्ल । ८. धंधे या गांव के नाम पर रखा जाने वाला किसी जाति या पुरुष का उपनाम । ९. जाति । १०. वंश । ११. प्रतिज्ञा । **प्रण** ।
अटकण—(न०) १. अटकन । टेउका । **टेवको** । २. सहारा ।
अटकणियो—(न०) अटकन । **टेवको** । २. सहारा । (वि०) १. अटकने वाला । २. रुकने वाला ।
अटकणी—(ना०) १. अर्गला । सिटकनी । चटकनी । **आगळ** । २. रोक ।
अटकणो—(क्रि०) १. अटकना । रुकना । थमना । २. उरझना । फँसना । (न०) टेउका । **टेवको** ।
अटकळ—(ना०) १. युक्ति । उपाय । **उपाव** । २. अनुमान । अंदाज । ३. उद्भावना । कल्पना ।
अटकळणो—(क्रि०) १. अनुमान करना । २. उपाय सोचना । ३. कल्पना करना ।
अटकळपच्चू—(न०) अनुमान । अंदाज । (अव्य०) अनुमान से ।
अटकाणो—(क्रि०) १. रोकना । २. उलझाना । ३. देर कराना ।
अटकायत—(ना०) १. रुकावट । रोक । २. हिरासत । **काचीकैद** ।
अटकाव—(न०) १. रोक । बाधा । २. विघ्न । ३. परहेज । ४. मृत्यु आदि के कारण मंगल कार्यों में शामिल होने का निषेध । ५. रजोदर्शन । **अभड़ाव** । **मैलोमाथो** ।
अटकावणो,—दे० अटकाणो ।
अटको—(न०) जगदीशपुरी के जगन्नाथ जी के भोग का भात ।
अटण—(न०) १. पैर । पांव । **पग** । २. यात्रा । प्रवास । अटन ।
अटणो—(क्रि०) १. चलना । **चालणो** । २. घूमना । फिरना । ३. यात्रा करना । ४. मारा-मारा फिरना ।
अटपटी—(वि०ना०) १. बेढंगी । २. विचित्र । **अनोखी** ।
अटपटो—(वि०) १. अटपटा । पेचीदा । २. कठिन । ३. बेढंगा । **कुढंगो** । ४. विचित्र । **अनोखो** ।
अटर-पटर—(अव्य०) १. परचूरण । २. बिखरी हुई चीजें । ३. फुटकर सामान । ५. सामान । (वि०) अव्यवस्थित ।
अटरम-सटरम,—दे० अटर-पटर ।
अटळ—(वि०) नहीं टलने वाला । अटल ।
अटवाटी,—दे० अठवाटी ।
अटवाटी-खटवाटी—दे० अठवाटी-खटवाटी ।
अटवी—(ना०) वन । जंगल । **रोही** ।
अटंको—(वि०) १. बलवान । २. निःशंक । निडर ।
अटंग—(वि०) १. नहीं छुआ हुआ । २. काम में नहीं लाया हुआ । ३. अभी बना हुआ । नया । ४. नये का विशेषण, जैसे—नवो अटंग । (अव्य०) १. सर्वथा । बिलकुल । २. अभी का ।

अटा—*(ना०)* १. अटारी। २. महल। ३. गवाक्ष। **झरोखो।**

अटाटोप—*(वि०)* १. घटाटोप २. छाया हुआ।

अटामण—*(न०)* साग, तीवन आदि में झोल को गाढ़ा बनाने के लिये मिलाया जाने वाला बेसन। २. पलेथन। **पळेथण।**

अटारी,—दे० अटा।

अटाळ—*(वि०)* बदमाश। **आंटाळ।** *(न०)* ढेर। राशि।

अटाळो—*(न०)* १. टूटा-फूटा सामान। २. फालतू सामान। **कबाड़ो।** ३. फालतू सामान का ढेर।

अटूट—*(वि०)* १. नहीं टूटने वाला। दृढ़। मजबूत। २. अजस्र। ३. अविच्छेद।

अटेर—*(ना०)* १. अदीनता। अदैन्य। २. नाखुशामद। *(वि०)* खुशामद नहीं करने वाला।

अटेरण—*(न०)* एक उपकरण जिसपर सूत को लपेटकर अंटी बनाई जाती है। अटेरन। **अटेरणो। फाळकियो।**

अटेरणियो—*(न०)* अटेरन। *(वि०)* अटेरने वाला।

अटेरणो—*(क्रि०)* १. अटेरन पर सूत को लपेट कर अंटी बनाना। २. खूब खाना। ३. खा जाना। *(न०)* अटेरन।

अट्ठ—*(वि०)* आठ। *(न०)* आठ की संख्या, '८' **आठो।**

अट्ठाइस—*(वि०)* बीस और आठ। *(न०)* बीस और आठ की संख्या, '२८.' **अठाइस।**

अट्ठाइसो—*(न०)* १. अठाइसवाँ वर्ष। २. दो हजार आठ सौ की संख्या, '२८००' *(वि०)* दो हजार आठ सौ।

अट्ठावन—*(वि०)* पचास और आठ। *(न०)* पचास और आठ की संख्या, '५८'

अठ—दे० अट्ठ।

अठजाम—*(ना०)* आठों प्रहर। अष्टयाम। *(वि०)* आठ मास में जन्मा हुआ। अठमासा। **अठमासियो।**

अठड़ोतरसो—*(न०)* पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ आठ (१०८) की संख्या।

अठन्नी—*(ना०)* आठ आनों या आधे रुपये का सिक्का।

अठपहलू—*(वि०)* आठ पहलवाला।

अठमासियो—*(वि०)* १. आठ मास में उत्पन्न होने वाला (बच्चा)। २. आठ महीनों का। अठमासा।

अठवाटी—*(ना०)* मरणान्त दुराग्रह।

अठवाटी-खटवाटी,—दे० अठवाटी।

अठवाड़ो—*(न०)* एक वार से उसी वार तक का समय। आठ दिनों का समय। **अठवाड़ा। वारोवार।**

अठाइस—दे० अट्ठाइस।

अठाइसो—दे० अट्ठाइसो।

अठाई—*(ना०)* १. जैनों का आठ दिनों का उपवास। दे० अट्ठाइस।

अठाऊं—*(क्रि०वि०)* यहां से। **अठैसूं।**

अठाण—*(न०)* स्थान। *(वि)* १. स्थान रहित। बेघर। २. अकुलीन। ३. जबरदस्त।

अठाणुओ—*(न०)* अट्ठावनवाँ वर्ष।

अठाणू—*(वि०)* अठानवे। *(न०)* अठानवे की संख्या, '९८'

अठातक—*(क्रि०वि०)* यहां तक। **अठैतक।**

अठातांई—*(क्रि०वि०)* यहाँ तक। **अठैतांई।**

अठाम—*(वि०)* स्थान रहित। घर रहित। *(न०)* १. कुठौर **कुठाम।** २. बेमौका।

अठालग—*(क्रि०वि०)* यहाँ तक।

अठावन—दे० अट्ठावन।

अठासूं—दे० अठाऊं।

अठी—*(क्रि०वि०)* १. इधर। यहां। **अठै।**

अठी-उठी—*(क्रि०वि)* इधर-उधर। **अठै-ओठै।**

अठीकानी—(क्रि०वि०) इधर।
अठीनली—(वि०) इधर की। यहां की। अठैरी।
अठीनलो—(वि०) इधर का। यहां का। अठैरो।
अठीनै—क्रि०वि०) इस ओर। इधर। ईनै।
अठीरी—(ना०वि०) इधर की। अठैरी।
अठीरो—(वि०) इधर का। इस ओर का। अठैरो।
अठीली—दे० अठीरी।
अठीलो—दे० अठीरो।
अठीव्हेनै—(क्रि०वि०) इधर होकर के।
अठेल—(वि०) १. पीछे नहीं हटनेवाला। २. वीर। जोरावर। बहादुर। ४. अपार। बहुत।
अठेलमो—(वि०) १. बहुत अधिक। २. आवश्यकता से अधिक। ३. परिपूर्ण। ४. पीछे नहीं हटने वाला। अविचल।
अठेलवों—दे० अठेलमो।
अठै—(क्रि०वि०) यहाँ।
अठैतक—दे० अठातक।
अठैताणी—दे० अठातांई।
अठैतांई—दे० अठातांई।
अठैद्वारका—(अव्य०) यहाँ ही मुकाम। यहीं पड़ाव।
अठैधाम—दे० अठै द्वारका।
अठैराख्या—(अव्य०) हुंडी का एक पारिभाषिक शब्द, जिसका अर्थ है—अमुक स्थान से अमुक व्यक्ति ने रुपये लेकर हुंडी लिख दी है।
अठैलग—दे० अठालग।
अठैसारू—(अव्य०) १. यहाँ लायक। २. हमारे योग्य।
अठैसूं—दे० अठासूं।
अठैहिज—(क्रि०वि०) यहीं।
अठोतरसो—(वि०) एक सौ आठ। (न०) एक सौ आठ की संख्या, '१०८'
अठोर—(वि०) १. दृढ़। मजबूत। २. अस्वस्थ। ३. निर्बल।
अड़—(ना०) १. हठ। दुराग्रह। २. लड़ाई।
अड़क—(वि०) १. विना बोये उगा हुआ (नाज)। २. गँवार। उद्दंड। ३. हठी। दुराग्रही। (ना०) हठ। दुराग्रह।
अड़कणो—(क्रि०) १. भिड़ना। २. छूना। ३. अड़ना। ४. हठकरना। अड़ करणो। अड़ करणी।
अड़कबोलो—(वि०) १. अप्रिय बोलने वाला। गंवारूपन से बात करने वाला। २. अशिष्टभाषी।
अड़क्रमौत—(ना०) १. अकारण मरना। मूर्खता करके मरना। बेमौत। व्यर्थ में मरना। २. अकाल मृत्यु।
अड़कियो,—दे० अड़क।
अड़कीलो—(वि०) हठी। दुराग्रही।
अड़खंजो—(न०) १. विविध प्रकार का बहुत सा सामान। २. भारी आयोजन धूम-धाम। समारोह। ३. कृत्रिम आयोजन। बनावटी धूमधाम। ४. फैलाव। विस्तार। ५. प्रपंच। ६. ढोंग। आडंबर।
अडग—(वि०) १. नहीं डिगनेवाला। अडिग। दृढ़। २. वीर।
अड़चण—(ना०) १. रोक। रुकावट। बाधा। २. कठिनाई। ३. रजोदर्शन।
अड़चल—(ना०) १. बीमारी। २. दुख। तकलीफ। ३. पीड़ा। दर्द। ४. रुकावट।
अड़णो—(क्रि०) १. अड़ना। भिड़ना। २. युद्ध करने के लिये पाँव रोपना। ३. पाँव रोपकर युद्ध करना। ४. अकड़ना। ५. छुआ जाना। स्पर्श होना। ६. छूना। स्पर्श करना। ७. अटकना। फँसना। ८ हठ करना।
अड़ताळी—दे० अड़ताळीस।
अड़ताळीस—(वि०) चालीस और आठ। (न०) अड़तालीस की संख्या, '४८'

अठीकानी—(क्रिoविo) इधर ।
अठीनली—(विo) इधर की । यहां की । **अठैरी** ।
अठीनलो—(विo) इधर का । यहां का । **अठैरो** ।
अठीनै—क्रिoविo) इस ओर । इधर । ईनै ।
अठीरी—(नाoविo) इधर की । **अठैरी** ।
अठीरो—(विo) इधर का । इस ओर का । **अठैरो** ।
अठीली—देo अठीरी ।
अठीलो—देo अठीरो ।
अठीव्हेनै—(क्रिoविo) इधर होकर के ।
अठेल—(विo) १. पीछे नहीं हटनेवाला । २. वीर । जोरावर । वहादुर । ४. अपार । वहुत ।
अठेलमो—(विo) १. वहुत अधिक । २. आवश्यकता से अधिक । ३. परिपूर्ण । ४. पीछे नहीं हटने वाला । अविचल ।
अठेलवों—देo अठेलमो ।
अठै—(क्रिoविo) यहाँ ।
अठैतक—देo अठातक ।
अठैताणी—देo अठाताँई ।
अठैताँई—देo अठाताँई ।
अठैद्वारका—(अव्यo) यहाँ ही मुकाम । यहीं पड़ाव ।
अठैधाम—देo अठै द्वारका ।
अठैराख्या—(अव्यo) हुंडी का एक पारिभाषिक शब्द, जिसका अर्थ है—अमुक स्थान से अमुक व्यक्ति ने रुपये लेकर हुंडी लिख दी है ।
अठैलग—देo अठालग ।
अठैसारू—(अव्यo) १. यहाँ लायक । २. हमारे योग्य ।
अठैसूं—देo अठासूं ।
अठैहिज—(क्रिoविo) यहीं ।
अठोतरसो—(विo) एक सौ आठ । (नo) एक सौ आठ की संख्या, '१०८'

अठोर—(विo) १. दृढ़ । मजवूत । २. अस्वस्थ । ३. निर्वल ।
अड़—(नाo) १. हठ । दुराग्रह । २. लड़ाई ।
अड़क—(विo) १. विना वोये उगा हुआ (नाज) । २. गँवार । उद्दंड । ३. हठी । दुराग्रही । (नाo) हठ । दुराग्रह ।
अड़कणो—(क्रिo) १. भिड़ना । २. छूना । ३. अड़ना । ४. हठकरना । **अड़ करणो** । **अड़ करणी** ।
अड़कबोलो—(विo) १. अप्रिय बोलने वाला । गंवारूपन से वात करने वाला । २. अशिष्टभाषी ।
अड़क्रमौत—(नाo) १. अकारण मरना । मूर्खता करके मरना । वेमौत । व्यर्थ में मरना । २. अकाल मृत्यु ।
अड़कियो,—देo अड़क ।
अड़कीलो—(विo) हठी । दुराग्रही ।
अड़खंजो—(नo) १. विविध प्रकार का वहुत सा सामान । २. भारी आयोजन धूम-धाम । समारोह । ३. कृत्रिम आयोजन । बनावटी धूमधाम । ४. फैलाव । विस्तार । ५. प्रपंच । ६. ढोंग । आडंवर ।
अडग—(विo) १. नहीं डिगनेवाला । अडिग । दृढ़ । २. वीर ।
अड़चण—(नाo) १. रोक । रुकावट । वाधा । २. कठिनाई । ३. रजोदर्शन ।
अड़चल—(नाo) १. वीमारी । २. दुख । तकलीफ । ३. पीड़ा । दर्द । ४. रुकावट ।
अड़णो—(क्रिo) १. अड़ना । भिड़ना । २. युद्ध करने के लिये पाँव रोंपना । ३. पाँव रोपकर युद्ध करना । ४. अकड़ना । ५. छुआ जाना । स्पर्श होना । ६. छूना । स्पर्श करना । ७. अटकना । फँसना । ८ हठ करना ।
अड़ताळी—देo अड़ताळीस ।
अड़ताळीस—(विo) चालीस और (नo) अड़तालीस की संख्या, '४

उसके शत्रु से) किया जाने वाला युद्ध । २. भयंकर युद्ध ।

अड़संग्रामी—अड़संग्राम करने वाला । पराया युद्ध लड़ने वाला ।

अड़साणी—*(वि०)* हठी । जिद्दी । *(न०)* महाराना अड़सी का पुत्र ।

अड़साल—*(वि०)* १. शत्रु के लिये शल्य रूप । अरिशल्य । २. वीर । ३. हठी ।

अड़सालो—दे० अड़साल ।

अड़ंगो—*(न०)* १. अड़चन । २. विघ्न । ३. हस्तक्षेप । ४. पाखंड । *(वि०)* अनम्र ।

अड़ाकी—*(वि०)* अड़ियल ।

अड़ाखड़ी—*(ना०)* १. दुर्वृत्ति । २. दुष्टता । ३. छेड़ छाड़ । ४. ईर्ष्या । ५. द्वेप । ६. वैमनस्य । ७. टंटा-फिसाद । **खोड़ीलाई** ।

अड़ाजीत—*(वि०)* १. वीर । वहादुर । २. शक्तिशाली । ३. हठी ।

अडाण—*(न०)* मकान बनाते समय छत को पाटने की पत्थर की पट्टियों को ऊपर चढ़ाने के लिये वल्लियों के सहारे बनाया हुग्रा चढ़ुवाँ (या ढलुवाँ) मार्ग ।

अडाणो—*(व०)* १. रहन । गिरवी । २. एक रागिनी ।

अड़ाभीड़—*(वि०)* ग्रस्त्र-शस्त्र सज्जित । **कड़ाभीड़** । *(ना०)* १. भीड़ । २. धक्कम-धक्का ।

अडायटो—*(न०)* १. प्रायः ढाई पट्टी का ओढ़ने का एक सूती वस्त्र । २. एक विशेप प्रकार की धोती का कपड़ा ।

अडारै—*(वि०)* दस और आठ । *(न०)* अठारह की संख्या, '१८'

अडारो—*(न०)* १. अपच के कारण पेट में होने वाला भारीपन । अफारा । **आफरो** । २. अपच । **अपचो** ।

अड़ाव—*(न०)* १. रोक । प्रतिवंध । २. रजस्वला काल । ३. स्वजन की मृत्यु पर पाली जानेवाली शोक प्रथा । **सोग** ।

अडिग—दे० अडग ।

अड़ियल—*(वि०)* जिद्दी । हठी । **हठीलो** ।

अड़िये-भिड़िये—*(अव्य०)* १. संकट उत्पन्न होने पर । २. किसी काम की रुकावट या उसके अटक जाने पर । ३. आवश्यकता के समय । ४. अत्यावश्यक होने पर ।

अड़िये-वड़िये—दे० अड़िये-भिड़िये ।

अड़ी—*(ना०)* १. युद्ध । २. रुकावट । ३. हठ । दुराग्रह । ४. साँचा । ठप्पा । **संचो** ।

अड़ीखम—दे० अड़ीखंभ ।

अड़ीखंभ—*(वि०)* १. स्तम्भ के समान अटल । अडिग । २. विपत्ति में धीरज रखने वाला । ३. दूसरे के दुख को अपने ऊपर लेने वाला । ४. जवरदस्त । ५. शूरवीर ६. हट्टा-कट्टा ।

अडीठ—दे० अदीठ ।

अड़ी-भिड़ी—*(ना०)* १. विपति काल । संकटकाल २. रुकावट में पड़ा हुआ काम । ३. अत्यावश्यक काम ।

अड़ीलो—*(वि०)* १. हठीला । २. पीछे पाँव नहीं देने वाला । ३. विघ्नकारी ।

अड़ींग—*(वि०)* **जबरदस्त** ।

अडूड़—*(वि०)* १. आरूढ़ । सन्नद्ध । २. दृढ़ । स्थिर । ३. अधिक । ४. अच्छा । श्रेष्ठ (सुकाल के लिये) ५. जवरदस्त । ६. भयानक । **विकराल** ।

अड़ैगड़ै—*(अव्य०)* १. लगभग । करीव-करीब । २. करीव । निकट ।

अड़ै-धड़ै—*(वि०)* १. वेहिसाव । वेहद । २. अव्यवस्थित ।

अड़ो—*(न०)* युद्ध । २. हठ । ३. कोष्ठ-वद्धता । कब्जी । ४. अफारा । आफरो ।

अड़ोग्रड़—*(अव्य०)* १. अति समीप में ।

बिल्कुल पास। (न०) अति सामीप्य। अत्यन्त निकटता।

अडोल—(वि०) १. अटल। अडिग। २. धैर्यवान।

अडोळ—(वि०) कुरूप। कुढंगो।

अडोलणो—(क्रि०) १. अटल रहना। अडिग रहना। (वि०) अडिग रहने वाला।

अडोळो—दे० अंडोळो।

अड़ोस-पड़ोस—(न०) १. आसपास। २. आसपास का घर, स्थान आदि।

अड़ोसी-पड़ोसी—(न०) आसपास में रहने वाला।

अढळक—(वि०) अत्यधिक। अपरिमित। २. उदार।

अढंगो—(वि०) १. बिना ढंग का। बेढंगा। कुढंगो। २. अनोखा। ३. विकट ४. बदसूरत।

अढाई—(वि०) दो और आधा। (न०) ढाई की संख्या, '२।' या '२½'

अढार—(वि०) १. अठारह। २. समस्त। समष्टि, जैसे—अढ़ार गिर। अढार दीप इत्यादि।

अढारकबाण—दे० अढारटंकी।

अढारगिर—(न०) १. सभी पर्वत। पर्वत समष्टि। २. आबू पर्वत।

अढारजोत—(ना०) अनेक दीपकों वाला दीप स्तम्भ।

अढारटंक—(वि०) मजबूत। दृढ़। (न०) १. बड़ा धनुष। २. अठारह बार।

अढारटंकी—(०) बड़ा धनुष।

अढारदानी—दे० अढार जोत।

अढारदीप—(न०) १. समस्त द्वीप समूह। २. दे० अढारजोत।

अढार दीवट—दे० अढार जोत।

अढारभार—(न०) १. किसी एक वस्तु का समष्टि रूप में परिमाण। २. अठारह भार परिमाण। ३. अष्टादश भार वनस्पति।

अढारभार वनस्पति—(ना०) पेड़, पौधे, लता, क्षुप और फल-फूल इत्यादि वनस्पति वर्ग का एक समष्टि परिमाण। अष्टादश भार परिमाण की वनस्पति-सृष्टि। (अढार भार वनस्पति में चार भार अपुष्प, आठ भार फल सहित तथा सपुष्प और छः भार लताएँ मानी गई हैं। एक भार वनस्पति का संख्या-परिमाण १२३००१६०८ बारह करोड़ तीस लाख और सोलह सौ आठ माना गया है)। समस्त उद्‌भिज वर्ग। २. समस्त प्रकार की सघन वनस्पति।

अढार वरण—(न०) १. चारों वर्णों की समस्त जातियाँ। २. विश्व की समस्त मानव जातियाँ। ३. चारण, भाट इत्यादि गुण गायक याचक जातियाँ।

अढारै—दे० अडारै।

अढाळो—(वि०) १. बिना ढंग का। कुढाळो। २. प्रतिकूल।

अढियो—(न०) ढाई का पहाड़ा। **अढीरो गुढियो। अढी-गुणिया। अढिया रो गुणियो।**

अढी—दे० अढाई।

अढीआना—(न० ब० व०) ढाई आने। अंग्रेजी शासन के दस पैसे। अंग्रेजी दस पैसों का एक मानक।

अढीगुणा—(वि० ब० व०) ढाई गुना।

अढीरुपिया—(न० ब० व०) १. अंग्रेजी शासन काल के दो रुपये और आठ आने। एक सौ साठ पैसों का मुद्रा-मानक। २. वर्तमान स्वराज्य सरकार का दो-सौ पचास पैसों का मुद्रा-मानक।

अढी सौ—(वि० ब० व०) ढाई सौ। दो सौ पचास।

अढीहजार—(वि० ब० व०) ढाई हजार। पच्चीस सौ। दो हजार पाँच सौ।

अण—(अव्य०) एक उपसर्ग जो 'नहीं' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। निषेध सूचक

उपसर्ग। *(सर्व०)* इस। *(क्रि० वि०)* विना। बगैर।

अणआमय—*(वि०)* १. निरोग। २. निर्दोष। निष्पाप। ३. माया रहित। ४. उत्तम।

अण आवड़त—*(ना०)* १. किसी वस्तु, काम या बात के न समझ सकने का भाव। २. बुद्धि हीनता। ३. जड़ता। ४. अनभिज्ञता। ५. किसी के न आने का भाव। ६. अप्राप्ति। अनुपलब्धि। ७. अकौशल। ८. मन नहीं लगना। मनोरंजन का अभाव। ९. अस्फुरण।

अणइच्छा—दे० अण इंछा।

अणइंछा—*(ना०)* १. अनिच्छा। २. अरुचि।

अणक—*(वि०)* १. नीच। अधम। २. कुत्सित। खराब।

अणक-चोट—*(न०)* सचेत नहीं करके किया गया प्रहार। नीच घात।

अण कचोट—*(वि०)* १. शोक रहित। बेरंज। २. मनस्ताप रहित।

अणकमाऊ—*(वि०)* १. नहीं कमाने वाला। धंधा नहीं करने वाला। २. निठल्ला। निकम्मा। निकमो।

अणकल—*(वि०)* १. जो समझा न जा सके। २. जो हराया न जा सके। ३. वीर। ४. शक्तिशाली। ५. निर्भय। ६. अंकुशरहित। ७. अधीर ८. निष्कलंक।

अणकळ—*(वि०)* १. अनजाना। अपरिचित। नहीं जाना हुआ। २. जिस पर विचार नहीं किया गया हो। ३. जो समझ में नहीं आ सके।

अणकारी—*(वि०)* १. अनहोनी। २. अलौकिक। ३. तीक्ष्ण। ४. अवश। विवश। बेवश। ५. जबरदस्त। ६. बेतरकीब। उपायरहित।

अणकीलो—*(वि०)* १. शीघ्र नाराज होने वाला। २. शीघ्र चिढने वाला। ३. द्वेषी। ४. अभिमानी।

अणकूंत—*(वि०)* १. बिना आँका हुआ। बिना जांचा हुआ। २. अंदाजन। ३. बेसमझ। मूर्ख।

अणख—*(न०)* १. क्रोध। २. क्षोभ। ३. ईर्ष्या। ४. द्वेष। ५. ग्लानि। ६. झुंझलाहट।

अणखड़—*(वि०)* बिना जोता हुआ (खेत)। पड़त। अखड़।

अणखणाट—*(ना०)* १. झुंझलाहट। २. बेचैनी। ३. नाराजगी। ४. उदासीनता।

अणखणो—*(क्रि०)* १. झुंझलाना। २. क्रोध करना। ३. द्वेष करना। ४. अच्छा नहीं लगना। *(वि०)* अच्छा नहीं लगने वाला। नहीं भाने वाला।

अणखलो—*(न०* सिवाना (मारवाड़) के कुंभटगढ़ किले का एक नाम।

अणखाधी—*(क्रि० वि०)*१. यों ही। मुफ्त में। २. अकारण। ३. बिना मतलब के। ४. बिना लिये-दिये।

अणखाधी-रो—दे० अणखाधी।

अणखार—दे० अखार।

अणखावणो—*(वि०)* १. अप्रिय। असुहावना। २. अरुचिकर।

अणखी—*(क्रि०)* १. क्रोधी। २. द्वेषी।

अणखीलो—दे० अणकीलो।

अणखूट—*(वि०)* १. बहुत। अपार। अखूट। २. समाप्ति काल के पूर्व। बेवक्त। असमय।

अणखोट—*(वि०)* १. निर्दोष। २. शुद्ध। चोखो।

अणगम—*(वि०)* १. अरुचिकर। २. अप्रिय। असुहावना। ३. अज्ञानी। बिना गम वाला। ४. अगम्य। *(न०)* १. अज्ञान। २. शत्रु। वैरी। ३. अरुचि।

अणगमो—*(न०)* १. अरुचि। २. अनिच्छा। ३. मन का नहीं लगना।

अणगळ—*(वि०)* बिना छाना हुआ। **अळगण।**

अणगाळ—*(वि०)* १. अकलंकित। अलांछित। *(ना०)* प्रशंसा।

अणगिणत—*(वि०)* अगणित। असंख्य। **असंख।**

अणगिणती—दे० अणगिणत।

अणगेम—*(वि०)* १. निष्कलंक। २. निष्पाप। पाप रहित। **निपापो।**

अणघटतो—*(वि०)* अनहोता।

अणघड—*(वि०)* १. असभ्य। २. अपढ़। अशिक्षित। ३. बेडौल। बेढंगा। **कुढंगो।** ४. नहीं घड़ा हुआ। अनिर्मित।

अणघड़ी—*(वि०)* बिना घड़ी हुई। अनिर्मित। *(क्रि० वि०)* अभी। इसी समय। **अवार। हमार।**

अणचळ—दे० अचल।

अणचायो—दे० अणचाह्यो।

अणचाहत—*(वि०)* नहीं चाहने वाला।

अणचाहो—दे० अणचाह्यो।

अणचाह्यो—*(वि०)* १. बिना मर्जी का। नापसन्द। बिना चाहा हुआ। २. हानिकारक।

अणचींत—*(क्रि० वि०)* अचानक।

अणचींती—*(क्रि० वि०)* १. अचानक। २. बिना विचारे।

अणचींतो—*(क्रि० वि०)* १. अचानक। २. बिना विचारा हुआ।

अणचूक—*(वि०)* नहीं चूकने वाला। *(क्रि० वि०)* बिना चूके। **अचूक।** दे० अचूक।

अणचेत—*(वि०)* अचेत। बेहोश।

अणछाणियो—*(वि०)* बिना छाना हुआ। **अणगळ।**

अणछाण्यो—दे० अणछाणियो।

अणछेह—*(वि०)* जिसका अन्त नहीं। अनन्त। **अपार। अछेह।**

अणजाण—*(वि०)* १. अनजान। अपरिचित। २. **नासमझ। मूर्ख।** *(न०)* अज्ञान।

अणजाणियो—*(वि०)* १. अपरिचित। **असेंधो।**

अणजाण्यो—दे० अणजाणियो।

अणजीत—*(वि०)* १. नहीं जीता हुआ। हारा हुआ। २. जिसको कोई नहीं जीत सके। अपराजित।

अणजुगती—*(वि०)* १. युक्ति संगत नहीं। २. अनुचित।

अणजोगती—*(वि०)* १. अनहोनी। २. अनुचित। ३. अयोग्य।

अणटूट—*(वि०)* १. बिना टूटा हुआ। साबुत। २. नहीं टूटने वाला।

अणडर—*(वि०)* निडर। निर्भय।

अणडीठ—*(वि०)* १. बिना देखा हुआ। २. अन्धा।

अणडोल—*(वि०)* स्थिर।

अणत—*(न०)* १. अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखने वाले के बाहु में बाँधा जाने वाला चौदह गांठों का एक अचित सूत्र। दे० अनन्त सं. १३। २. स्त्रियों के बाहु में पहनने का एक कड़ा। ३. अनन्त चतुर्दशी का व्रत। ४. अनन्त भगवान। ५. विष्णु। *(वि०)* अनत। दूसरा। **दूजो।**

अणतचवदस—दे० अनंत चतुर्दशी।

अणतचौदस—दे० अनंत चतुर्दशी।

अणतियो—*(न०)* अनंत चतुर्दशी का व्रत रखनेवाला व्यक्ति।

अणतोट—दे० अणटूट।

अणतोल—*(वि०)* १. बिना तोला हुआ। २. जो तोला नहीं जा सके। ३. अपरिमाण। बहुत अधिक। ४. अपार।

५. भारी वजनी। ६. जिसकी शक्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सके।

अरगतोलियो—दे० अरगतोल।

अरगतोल्यो—दे० अरगतोल।

अरगथाग—(वि०) १. गहरा। गम्भीर। ऊंडो। २. अथाह। ३. बहुत अधिक।

अरगथाघ—दे० अरगथाग।

अरगथाह—दे० अरगथाग।

अरगदगियो—(वि०) १. वह जिसके दाग (तप्त या दग्ध चिन्ह) नहीं लगा हो (पशु)। २. जो दाग लगाकर चिन्हित नहीं किया गया हो। दाग रहित। ३. निष्कलंक।

अरगदागल—दे० अरगदागियो।

अरगदाद—(वि०) १. अन्यायी। २. अवश। ३. दाद नहीं देने वाला। वश में नहीं होने वाला। (न०) अन्याय। गैर इन्साफ।

अरगदीठ—(वि०) १. बिना देखा। अन-देखा। २. अदृष्ट।

अरगदीठो—दे० अरगदीठ।

अरगधाये—(क्रि० वि०) इस ओर। अठीनै। इनै।

अरगधारियो—(वि०) बिना सोचा हुआ। अचींतो। (क्रि० वि०) एकाएक। अचानक।

अरगधीर—दे० अधीर।

अरगनम—(वि०) १. अनम्र। २. हठी। जिद्दी।

अरगनामी—(वि०) १. बिना नाम वाला। २. किसी के आगे नहीं झुकने वाला। अनम्र। ३. हठी। ४. जो किसी को अपने आगे नहीं झुका सका। निर्बल। ५. जिसने किसी को अपने आगे नहीं झुकाया। ६. उदार।

अरगपटाँ—(वि०) वह जिसके पास जागीरी (का पट्टा) न हो। बिना जागीरी वाला।

अरगपढ—(वि०) १. बिना पढ़ा। **अपढ़।** २. अशिक्षित। ३. मूर्ख। **कुपढ।**

अरगपढियो—दे० अरगपढ।

अरगपारग—(वि०) १. अशक्त। अरगी-पारगी वाला।

अरगपार—(वि०) १. अपार। असीम। २. **अगणित।** (क्रि०वि०) १. इस किनारे। २. इस ओर।

अरगफेर—(वि०) १. पीछे नहीं मुड़ने वाला। २. अपरिवर्तित। ३. वह जिसमें फर्क नहीं आये।

अरगबरग—(ना०) अनबन। **खटपट। बिगाड़।**

अरगबरगाव—दे० अरगबरग।

अरगबाध—(वि०) बेरोक-टोक।

अरगबीह—(वि०) निर्भय। निडर। **अरगडर।**

अरगबूझ—(वि०) ना समझ। अबोध। **अबूझ।**

अरगबोल—दे० अरगबोलो।

अरगबोला—(न०ब०व०) १. अनबन। मन-मुटाव। **अबोला।** २. आपस में बातचीत बंद रहना।

अरगबोलो—(न०) मौन। खामोशी। (वि०) १. चुप। खामोश। मौन। २. मूक। **गूंगो।**

अरगभरिगयो—दे० अरगपढ।

अरगभय—(वि०)निडर। अभय। **अरगभै।**

अरगभल—(न०) १. अहित। **खराब।** भूंडो। २. हानि।

अरगभंग—(वि०) १. नहीं टूटने वाला। २. नहीं हारने वाला। ३. पूर्ण। अखंड। ४. वीर।

अरगभंग नर—(न०) १. नहीं झुकने वाला वीर नर। २. पराजित नहीं होनेवाला वीर पुरुष।

अरगभावतो—(वि०) १. अरुचिकर। अप्रिय। २. पेट भरा हुआ होने से जो भावे नहीं।

अणभै—(न०) अनुभव। (वि०) निडर। अभय।

अणमण—(ना०) १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. अनबन। अणबण।

अणमणो—(वि०) अनमना। उदास।

अणमानेतण—(ना०) पति द्वारा असम्मानित या उपेक्षित पत्नी। स्नेहाभाव और सम्मानाभाव वाली पत्नी। (वि०) उपेक्षिता।

अणमानेती—दे० अणमानेतण।

अणमाप—(वि०) १. जो मापने में नहीं आये। २. असीम। अपार। अमाप।

अणमापै—(क्रिवि०) १. बिना माप किये। २. बिना विचार किये। ३. बहुत अधिकता से।

अणमाव—(वि०) १. नहीं समाने वाला। २. नहीं समाया जा सके। ३. अधिक। बहुत। घणो। जादा।

अणमावतो—दे० अणमाव।

अणमोट—(न०) निर्भिमान। (वि०) निर्भिमान।

अणमोल—(वि०) १. अनमोल। अमूल्य। अमोल। २. बहुमूल्य।

अणमौत—(क्रिवि०) १. बिना मौत आये। बेमौत। कुमौत।

अणराय—(ना०) १. कुविचार। २. विचारों की उथल-पुथल। संकल्प-विकल्प। ३. राय से मेल नहीं खाना। ४. उलटी राय।

अणरेस—(वि०) जिसको को कोई जीत नहीं सके। अजेय।

अणरेह—(वि०) बिना रेखा या आकार का। निराकार।

अणवट—(न०) स्त्री के पाँव का एक गहना।

अणवढ—(वि०) बिना काटा हुआ। (ना०) मित्रता।

अणवणत—(ना०) अनबन। मनमुटाव।

अणवर—(उ०जा०) विवाह काल में वर राजा के साथ में रहने वाला उसका मित्र या कोई अन्य पुरुष। इसी प्रकार दुलहिन के साथ रहनेवाली उसकी सहेली।

अणवंछित—(वि०) अवांछित। (न०) शत्रु।

अणविढ—(न०) मित्र।

अणविसवास—(न०) अविश्वास। बेएतबारी।

अणविसवासी—(वि०) अविश्वासी। बेएतबार।

अणवींध—(वि०) बिना बींधा हुआ।

अणसमझ—(वि०) बेसमझ। मूर्ख।

अणसंक—(वि०) नि:शंक। निडर।

अणसार—(वि०) १. सार रहित। असार। नि:सार। २. बेसम्हाल। बेपता। ३. इशारा। संकेत।

अणसुणी—(वि०) बिना सुनी हुई। अनसुनी।

अणसूत—(वि०) सूत्र में नहीं। अव्यवस्थित। (न०) १. अव्यवस्था। २ परंपरा का भंग। ३. विरुद्धाचरण।

अणसैंधो—(वि०) अपरिचित। असैंधो।

अणसोम—(वि०) १. अशान्त। २. क्रूर।

अणहद—(वि०) खूब। असीम।

अणहद नाद—दे० अनाहत नाद।

अणहलनयर—दे० अणहलवाड़ो-पाटण।

अणहलपुर—दे० अणहलवाड़ो-पाटण।

अणहलपुरो—(वि०) १. अणहलपुरे का निवासी। २. अणहलपुर के शासकों का विरुद या विशेषण।

अणहलवाड़ो—दे० अणहलवाड़ो-पाटण।

अणहलवाड़ो-पाटण—(न०) अणहल गड़रिये के नाम पर वनराज चावड़ा द्वारा वि० सं० ८०१ वैशाख शुक्ल ३ को खात मुहूर्त्त करके गुजरात की राजधानी के

रूप में सरस्वती (क्वारिका) के तट पर वसाया गया उत्तर गुजरात का इतिहास प्रसिद्ध नगर जो अब केवल पाटण नाम से प्रसिद्ध है।

अणहाल—*(वि०)* वेहाल।

अणहित—*(न०)* १. अहित। २. हानि।

अणहूंत—*(वि०)* अनहोनी। असंभव। अणूंत।

अणहूंती—*(वि०)* अनहोनी। असम्भव। २. अनुचित। ३. व्यर्थ। अणूंती।

अणहूंतो—*(वि०)* १. अनहोना। असंभव। अणूंतो। २. अयोग्य। अजोग। ३. अनुचित। ४. व्यर्थ। ५. नहीं करने योग्य।

अणहोणी—*(वि०)* न होने वाली। नामुमकिन। *(ना०)* न होनेवाली वात या घटना।

अणांक—*(वि०)* १. निभर्य। निशंक। २. वीर। वहादुर। *(न०)* गर्व। अभिमान।

अणांकल—*(वि०)* १. चिन्ह रहित। वेनिशान। २. वेदाग। ३. निष्कलंक। निर्दोप।

अणांकव—*(न०)* निर्दोप। निरपराव।

अणांत—दे० अनंत।

अणांद—दे० आणंद।

अणाणो—*(क्रि०)* मंगवाना। लाने के लिये कहना।

अणाद—दे० अनाद।

अणादर—*(न०)* अनादर। निरादर।

अणामय—दे० अण आमय।

अणाय—*(क्रि०वि०)* १. ला करके। मंगवा करके।

अणारत—*(न०)* सुख। *(य०)* सुखी।

अणाल—*(न०)* असत्य। झूठ। कूड़। *(वि०)* शुष्क।

अणाळ—*(वि०)* नोकदार। पैनी। *(ना०)* कटारी।

अणावड़त—दे० अण आवड़त।

अणावड़ो—*(न०)* कुटुम्ब से अधिक समय तक दूर रहने कारण उत्पन्न होने वाली मिलने की तीव्र इच्छा। प्रियजन और कुटुम्बियों से मिलने की उत्कंठा। २. मन नहीं लगना।

अणिमा—*(ना०)* आठ सिद्धियों में से प्रथम। अति सूक्ष्म रूप धारण करने की सिद्धि।

अणिमादिक—*(ना० व० व०)* योग की अणिमा इत्यादि आठ सिद्धियाँ।

अणियारो— दे० उणियारो।

अणियाळ—*(ना०)* कटारी। *(वि०)* १. नोकदार। अनीवाली। पैनी। २. अनीपानी वाली। वीरांगना। ३. सुन्दर नेत्रों वाली। पैने नेत्रों वाली।

अणियाळा—*(न० व० व०)* नेत्र।

अणियाळी—दे० अणियाळ।

अणियाळो—*(न०)* १. भाला। २. हरिण। ३. ऊंट *(वि०)* १. नोकदार। पैना। अणीदार। अनी-पानी वाला। ३. वीर। सूरमो।

अणियाँ-भँवर—*(न०)* १. सेनापति। २. योद्धा।

अणी—*(ना०)* १. सेना। २. शस्त्र की नोक। ३. कटारी। ४. तलवार। ५. लेखनी की नोक। ६. सीमा। *(वि०)* श्रेष्ठ। *(सर्व०)* १. इस। २. इन।

अणीक—*(ना०)* १. सेना। २. युद्ध।

अणीपति—*(न०)* सेनापति।

अणीपळ—*(अव्य)* अभी। इसी समय।

अणी-पाणी—*(ना०)* १. साहस। हिम्मत। २. शक्ति। पराक्रम। ३. ओज। तेज। प्रताप। कान्ति। ४. शोर्य। वीरता ५. शक्ति और प्रतिष्ठा। ६. स्वाभिमान। ७. सामर्थ्य। हैसियत। ८. हौसला। उत्साह। ९. वुद्धिमता। १०. योग्यता। ११. मान-मर्यादा।

अणीमेळ—(न०) सेनाओं का आमने-सामने आना। दो सेनाओं का मुकाबिला।
अणी-रो-भंवर—दे० अणियाँ भँवर।
अणीवाळो—दे० अणियाळो।
अणीसुध—(वि०) १. सच्चा वीर। २. शुद्ध आचरण वाला। ३. संपूर्ण दोष रहित। ४. अपने स्वरूप के अनुसार सभी प्रकार से सही रूप में तैयार की गई (कोई वस्तु)।
अणु—(न०) सूक्ष्मकण। (वि०) अति-सूक्ष्म।
अणुबम—(न०) अणुओं के विश्लेषण-संश्लेषण से बना एक महा विनाशक शस्त्र। एटम बॉम्ब।
अणुमात्र—(वि०) बहुत थोड़ा।
अणुराव—(न०) १. प्रेम। अनुराग। आसक्ति। २. संकल्प-विकल्प। ३. उच्चाट। ४. उपेक्षा। ५. अनुकरण।
अणुवाद—(न०) १. अणुओं का विज्ञान। २. एक आध्यात्मिक दर्शन।
अणुसार—(वि०) अनुसार। समान। सदृश। माफक।
अणूत—(ना०) १. खोटी जिद। २. किसी को हानि पहुँचाने की जिद्द। ३. बद-माशी। ४. बेईमानी। ५. न होने योग्य काम या बात।
अणूताई—(ना०) १. नहीं करने योग्य काम या बात। २. अशिष्ट व्यवहार। अशिष्टता। ३. शरारत। बदमाशी।
अणूतो—दे० अणहूंतो।
अणूंतो—दे० अणहूंतो।
अणूरो—(न०) १. संशय। २. मनस्ताप।
अणेसो—(न०) १. कहने-सुनने पर भी नहीं मानना। २. आँख की लाज। सामने होने की शर्म। ३. लिहाज। ४. संकोच। ५. अंदेशा। आशंका। अंदेसो। ६. भरोसो। ७. दुख। ८. निराकांक्षा।
अणोखो—दे० अनोखो।
अणोपती—(वि० ना०) १. बिना फबती। २. अनुचित। बेठीक।
अणोपतो—(वि०) १. बिना बफता। २. अनुचित। बेठीक।
अणोवम—(वि०) अनुपम।
अत—(वि०) अति। अधिक।
अतएव—(अव्य०) १. इसलिये। इसी कारण से।
अतकत—(ना०) ज्यादती। अत्याचार। (वि०) अतिकृत। अत्याचारी।
अतखंभ—(न०) भाला।
अतगत—दे० अतकत।
अतग—दे० अथग।
अत चपळ—(न०) मन।
अतण—दे० अतन।
अतन—(वि०) बिना शरीर का। (न०) कामदेव।
अतवार—(न०) एतबार। भरोसा।
अतमल—(वि०) प्रबल वीर।
अतमलो—दे० अतमल।
अतर—(न०) १. इत्र। अंतर। २. समुद्र।
अतरदान—(ना०) इत्रदान। अंतरदान।
अतरा—(वि० ब० व०) इतने। इत्ता। इत्तरा। अत्ता।
अतराज—(वि०) आपत्ति। एतराज। (वि०) अप्रसन्न। नाराज।
अतरा माँहै—(क्रि० वि०) इतने में। इत्ते में।
अतरा में—दे० अतरा माँहै।
अतरी—(वि० ना०) इतनी। इत्ती। इतरी। अत्ती।
अतरै—(क्रि० वि०) १. इतने में। २. तब तक। ३. इसके बाद। इत्तै। इतरै। इतरै में। अत्तै में।
अतरो—(वि०) इतना। इत्तो। इतरो। अत्तो।

अतल—(न०) सात पातालों में से एक। (वि०) तल रहित। अथाह। अथाग।

अतलस—(न०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अतलाग—(ना०) १. अति स्नेह। २. पूर्ण लगाव। ३. याद। स्मृति।

अतळूंज—(ना०) भोजनांश का श्वास-नली में चले जाने से गले में होने वाली उलझन।

अतळो—(वि०) १. बुरा। खोटा। २. अविश्वासी। ३. बिना पैंदे का। ४. वह जिसका तल नहीं दीखे।

अतवेध—(न०) युद्ध। जुध।

अतंक—(न०) १. आतंक। रोब। दब-दबा। २. भय।

अतंग—(वि०) १. जो तंग नहीं। कसा हुआ नहीं। ढीला। २. संकीर्ण नहीं। विस्तृत। ३. स्पष्ट।

अतंत—(वि०) १. अत्यन्त। अधिक। २. तत्वहीन। ३. तंत्र रहित।

अता—(वि० ब० व०) इतने

अतारां—(क्रि० वि०) १. इतने में। २. इस समय। अभी। अबार। हमार। हमारू।

अतारू—(क्रि० वि०) अभी। दे० अतेरू।

अताळ—(वि०) १. अत्यन्त। बहुत। २. तेज २. बेताल। (क्रि० वि०) शीघ्र। जल्दी। वेगो। उतावळ।

अताळो—(वि०) १. उतावला। तेज। फुर-तीलो। २. जोशीला।

अति—(वि०) १. अत्यन्त। बहुत। (ना०) १. अधिकता। २. ज्यादती। अत्या-चार।

अतिक्रम—(न०) १. मर्यादा का उल्लंघन। सीमा से आगे बढ़ना। २. नियम भंग। आगे निकल जाना।

अतिचार—(न०) १. मर्यादा का उल्लघन। औचित्य भंग।

अतिचारी—(वि०) अति करने वाला।

अतिथि—(न०) १. मेहमान। पाहुना। पांवणो। २. अचानक आया हुआ मेहमान। ३. एक स्थान पर एक रात से अधिक नहीं ठहरने वाला संन्यासी।

अतिरिक्त—(वि०) १. बाद में जोड़ा या बढ़ाया हुआ। २. आवश्यकता से अधिक। (क्रि० वि०) अलावा। सिवा। को छोड़-कर।

अतिरेक—(न०) १. अतिशयता। बहु-लता। २. मर्यादा के बाहर होना। ३. व्यर्थ की वृद्धि।

अति बरसण—(न०) अत्यधिक वर्षा। अतिवृष्टि।

अतिवृष्टि—दे० अति बरसण।

अतिशय—(वि०) आवश्यकता से अधिक। अत्यधिक।

अतिशयोक्ति—(ना०) १. बढ़ा-चढ़ा कर दिखाना या कहना। २. इसी तथ्य का एक अर्थालंकार।

अतिसार—(न०) आँव युक्त पतले दस्त होने का रोग। (वि०) खूब। बहुत।

अतीत—(वि०) १. बीता हुआ। २. निर्लेप। (न०) १. भूतकाल। २. संन्यासी। ३. अतिथि। (क्रि० वि०) दूर। परे। अलग।

अतीथ—दे० अतिथि।

अतीव—(ब०) बहुत अधिक।

अतुकांत—(वि०) १. बिना तुक का। २. अन्त्यानुप्रास विहीन। (ना०) तुक विना की कविता।

अतुल—(वि०) १. जिसे तोला न जा सके। बहुत अधिक। २. तुलना रहित। बेजोड़। ३. असमान।

अतुळी—(वि०) १. जो तोला नहीं जा सके। अतुल्य। २. अपरिमित। ३. जिसकी तुलना नहीं की जा सके।

अतुळीबळ—*(वि०)* अतुलित शक्तिशाली। अतुल बल वाला।

अतू—दे० अत्तू।

अतूट—दे० अटूट

अतूठ—*(वि०)* १. अतुष्ट। अप्रसन्न। २. असंतुष्ट।

अतूठो—दे० अतूठ।

अतृप्त—*(वि०)* १. जो तृप्त न हो। असंतुष्ट। २. वासनाओं से पीड़ित। ३. ३. भूखा। भूखो।

अतेरू—*(वि०)* जो तैरना न जानता हो।

अतोट—*(न०)* वज्र।

अतोताई—*(वि० ना०)* १. अति उतावली। अधीर। व्यग्र। २. ओछे स्वभाव की। ३. झगड़ालू। कलहप्रिया।

अतोतायो—*(वि०)* १. उतावला। २. ओछे स्वभाव का। ३. झगड़ालू।

अतोल—*(वि०)* १. जो तोला न जा सके। २. अतुल। ३. अपार। *(न०)* पर्वत।

अत्तार—*(न०)* इत्र वनाने तथा वेचने वाला।

अत्ती—*(वि० ना०)* इतनी। इतरी।

अत्तू—*(न०)* १. खत (ऋणपत्र) के रुपयों की व्याज रहित वसूली। ऋणपत्र की समस्त वसूली। २. खत या खाते की मयाद वढ़ाने के लिये उसके खतम होने के पूर्व जमा की जाने वाली रकम। लखेवणो।

अत्तो—*(वि०)* इतना। इतरो।

अत्थ—*(न०)* अर्थ। धन। सम्पत्ति। आथ।

अत्यधिक—*(वि०)* वहुत अधिक। हद से ज्यादा।

अत्यंत—*(वि०)* वहुत अधिक। मर्यादा से वाहर।

अत्याचार—*(न०)* १. जुल्म। ज्यादती। २. पाप। ३. अधर्माचरण। ४. वलात्कार।

अत्याचारी—*(वि०)* १. अत्याचार करने वाला। जुल्मी। जालिम। २. पापी। वलात्कारी।

अत्यावश्यक—*(वि०)* अति आवश्यक। वहुत जरूरी।

अत्युक्ति—*(ना०)* १. वहुत वढ़ा-चढ़ाकर किया जाने वाला वर्णन। २. एक अर्थालंकार। अतिशयोक्ति।

अत्युत्तम—*(वि०)* अति उत्तम। श्रेष्ठ।

अत्रपत—दे० अतृप्त।

अत्रि—*(न०)* सप्तऋषियों में से एक ऋषि।

अत्रिप्त—दे० अतृप्त।

अथ—*(अव्य)* १. ग्रन्थ लिखना आरम्भ करने के पूर्व ग्रन्थ के नाम के पहले लिखा जाने वाला प्रारम्भतार्थक शब्द, जैसे—'अथ श्रीहरिरस गुण लिख्यते।' २. ग्रन्थ समाप्ति पर लिखा जाने वाला 'इति' शब्द का विपरीतार्थ शब्द। ३. ग्रन्थ के प्रारंभ में लिखा जाने वाला मंगलार्थक शब्द। ४. आरंभ सूचक मांगलिक शब्द। ५. आरंभ। प्रारंभ। शुरू। *(न०)* १. धन। सम्पत्ति। अर्थ। आथ। २. अस्त। ३. मृत्यु। *(क्रि० वि०)* अनन्तर।

अथक—*(वि०)* १. नहीं थकने वाला। २. नहीं थका हुआ। ३. बिना थके हुए।

अथग—*(वि०)* जिसका थग नहीं। अत्यधिक। २. अथाह।

अथगणो—*(क्रि०)* १. रुकना। ठहरना। थगणो। २. नहीं रुकना ३. ढेर लगाना। थग लगाणो। ४. ढेर उठाना।

अथघ—दे० अथग।

अथड़ा-अथड़ी—*(अव्य० व० व०)* १. वार-वार लगने वाली टक्करें। टक्करों। पर टक्करें। २. लड़ाई। झगड़ा। ३. हाथापाई।

अथड़ाणो—*(क्रि०)* १. टकराना। २. तकरार होना। ३. हाथापाई होना।

४. लड़ना ५. भिड़ना । भिड़णो ।
अथड़ावणो—दे० अथड़ाणो ।
अथमणो—(क्रि०) १. अस्त होना । २. नष्ट होना (न०) पश्चिम दिशा ।
अथर—(वि०) अस्थिर ।
अथर्व—(न०) एक वेद का नाम ।
अथवा—(अव्य०) एक वियोजक अव्यय । या । वा । किम्वा । कै ।
अथाग—दे० अथाघ ।
अथाघ—(वि०) १. जिसकी थाह न लग सके । अथाह । २. अत्यधिक । ३. अपार । ४. गंभीर । गहरो ।
अथाणो—(न०) १. अचार । अथाना । २. कचूमर ।
अथाह—दे० अथाघ ।
अथिर—(वि०) अस्थिर । चलायमान ।
अथी—(ना०) धन सम्पत्ति ।
अथोग—(वि०) अथाह ।
अथोड़—(वि०) थोड़ा नहीं । पर्याप्त ।
अद—(न०) १. मान । प्रतिष्ठा । आदर । २. मूल्य । मोल । ३. पर्वत । ३. भोजन ।
अदग—(वि०) १. बेदाग । निष्कलंक । २. निरपराध ।
अदत—(वि०) कृपण । कंजूस ।
अदतार—(वि०) कृपण । कंजूस ।
अदत्ता—(वि०) कुमारी (कन्या) । क्वांरी ।
अदद—(न०) १. संख्या । २. गिनती । तादाद ।
अदन—(न०) भोजन ।
अदनो—(वि०) १. साधारण । मामूली । २. तुच्छ । ३. नीच ।
अदब—(न०) १. विवेक । २. मर्यादा । ३. प्रतिष्ठा । आदर । ४. शिष्टाचार । सभ्य व्यवहार । ४. ढंग । तरीका । ५. लिहाज ।
अदबुदजी—दे० अदभुतजी ।
अदबै—(क्रि०वि०) १. अपेक्षाकृत । २. संभवतया । ३. थोड़ा बहुत । थोड़ोघणो ।
अदभुज—(न०) उद्भिज । वृक्ष । पेड़-पौधा ।
अदभुत—दे० अद्भुत ।
अदभुतजी—(न०) एक लोक देवता ।
अदम—(वि०) १. जिसका दमन नहीं हो सके । अदम्य । २. दमन रहित । स्वतंत्र । (न०) किसी चीज, के बात या काम के न होने की अवस्था । अभाव । जैसे—अदम-सबूत । अदम हाजरी इत्यादि ।
अदमकार्रवाई—(ना०) कार्यवाई न हो सकना । अदम पैरवी ।
अदम पैरवी—(ना०) मुकदमे की पैरवी का नहीं हो सकना । कार्यवाही का अभाव ।
अदमसबूत—(न०) प्रमाणाभाव ।
अदमहाजरी—(ना०) गैर हाजरी । अनुपस्थिति ।
अदम्य—(वि०) जिसका दमन न हो सके । प्रबल ।
अदर—(न०) बाण । तीर ।
अदरक—(न०) ताजा, हरी सोंठ । अदरख । आदो ।
अदरस—(वि०) अदृश्य । लुप्त । अदर्श ।
अदरसण—(न०) अदर्शन । अविद्यमानता । (वि०) अदृश्य ।
अदरा—(न०) आर्द्रा । नक्षत्र ।
अदर्शन—दे० अदरसण ।
अदल—(न०) न्याय । इंसाफ । (वि०) पक्का । सच्चा ।
अदल-इंसाफ—(न०) पक्का इंसाफ । पक्षपात रहित न्याय ।
अदल न्याव—दे० अदल-इंसाफ ।
अदल-बदल—(न०) परिवर्तन । उलट-पलट ।
अदला बदली—(ना०) १. अदला-बदली । परिवर्तन । २. हेरफेर । ३. आदान-प्रदान ।
अदव—(वि०) कृपण । कंजूस ।

अदोड़ी—*(न०)* मरे हुए गाय, बैल का साफ किया हुआ आधा चमड़ा। अधोड़ी।
अदोळी—दे० अबोळी।
अद्ध—*(वि०)* आधा।
अद्धो—*(वि०)* आधा। *(ना०)* आधी बोतल।
अद्भुत—*(वि०)* १. चकित कर देनेवाला। २. विचित्र। *(न०)* आश्चर्य।
अद्यावधि—*(क्रि०वि०)* १. आजतक। २. अभीतक।
अद्रक—*(न०)* १. हरी, ताजी सोंठ। अदरक। आदो। २. भय।
अद्रि—*(न०)* १. पर्वत। २. वृक्ष।
अद्रिजा—*(ना०)* पार्वती। गिरिजा।
अद्वितीय—*(वि०)* जिसके समान दूसरा न हो। अनुपम। *(न०)* परब्रह्म।
अद्वैत—*(वि०)* द्वैत रहित। भेदरहित।
अद्वैतवाद—*(न०)* जीव और ईश्वर की तथा जड़ और चेतन की एकता का वैदिक सिद्धान्त। वह सिद्धान्त जिसके अनुसार यह संसार मिथ्या है और सकल विश्व की उत्पत्ति ब्रह्म से ही है। जीव और ब्रह्म की एकता का तथा जगत मिथ्या और ब्रह्म सत्य का वेदान्तमत।
अध—*(वि०)* आधा। *(अव्य०)* नीचे। तले। हैठै।
अधआनो—*(न०)* दो पैसों का सिक्का। अधन्ना। (स्वराज्य पहले का)।
अधकचरियो—*(वि०)* १. पूरा कुटा-पीसा नहीं। दरदरो। २. अधूरा।
अधकचरो—दे० अधकचरियो।
अधकच्चो—दे० अधकाचो।
अधकण—दे० अधकर।
अधकपाळी—*(ना०)* आधे सिर की पीड़ा। आधासीसी। सूर्यावर्त।
अधकर—*(वि०)* पूरे की तुलना में परिमाण में आधा। आधो।
अधकंठ—*(ना०)* गले की रक्षार्थ पहनी जाने वाली लोहे की एक जाली। कंठत्राण।
अधकाचो—*(वि०)* अधकच्चा। अपरिपक्व।
अधकायो—*(वि०)* जिसमें आधी दूसरी धातु मिली हो (सोना या चांदी)। अधखायो।
अधकालो—*(वि०)* १. आधापागल। अर्द्ध विक्षिप्त। २. मूर्ख।
अधकिचरियो—दे० अधकचरियो।
अधकिचरो—दे० अधकचरो।
अधकेरो—*(वि)* १. तुलना में अधिक। २. आधे के आसपास।
अधकोस—*(न०)* आधाकोस। एकमील। अधगाऊ।
अधखड़—*(वि०)* १. प्रौढ़। अधेड़। २. आधा जोता हुआ। आधा खड़ा हुआ (खेत)।
अधखायो—*(वि०)* आधा खाया हुआ। थोड़ा खाया हुआ। आधा पेट। दे० अधकायो।
अधखिण—*(न०)* १. आधा क्षण। *(वि०)* २. आधा खोदा हुआ।
अधखुलो—*(वि०)* आधा खुला हुआ।
अधगहलो—दे० अधकालो।
अधगाळै—*(अव्य०)* अधबिच में। बीच में। आधे गाळै।
अधगावळो—*(वि०)* १. अशक्त। कमजोर। २. अंगहीन।
अधगैलो—दे० अधगहलो।
अधघड़ी—*(ना०)* १. आधी घड़ी। २. थोड़ी वार।
अधड़—*(न०)* १. शत्रु। २. राहु।
अधन्नी—*(ना०)* आध आने का सिक्का। आधानी।
अधन्नो—*(न०)* आध आने का सिक्का। आधो आनो। आधानो।

अधपाव—*(न०)* आधे पाव का तौल। *(वि०)* जो तौल में आधा पाव हो।

अधफर—*(न०)* १. पर्वत या टीबे का मध्य भाग। २. मध्यान्तर। आधी दूरी। ३. आकाश। अंतरिक्ष। ४. मरण-शोच वालों के बैठने की चटाई या बिछावन। अधप्रस्तर।

अधबळियो—*(वि०)* अधजला।

अधविच—*(न०)* मध्य। बीच। अधबीच।

अध बिचलो—*(वि)* १. बीच का। २. आधी दूरी का।

अधबीच—*(न०)* किसी विस्तार या लम्बाई का मध्य भाग। *(क्रि० वि०)* बीच में।

अधबूढ—*(वि०)* प्रौढ़। अधेड़।

अधबेगड़ो—*(न०)* १. एक हिंसक पशु। *(वि०)* वर्णसंकर।

अधम—*(वि०)* १. नीच। २. दुष्ट। ३. पापी।

अधम-उधारण—*(न०)* अधमों का उद्धार करने वाला। प्रभु। ईश्वर। परमात्मा।

अधमण—*(न०)* आधे मन का तौल। *(वि०)* जो तौल में आधा मन हो।

अधमणियो—*(न०)* आधे मन का तौल।

अधमणीको—*(न०)* आधे मन का तौल।

अधमता—*(ना०)* नीचता। **नीचपणो**।

अधमरियो—*(वि०)* १. मृतप्राय:। मृत्यु के पास पहुंचा हुआ। अधमरा। २. अत्यन्त निर्बल। **अधमरो**।

अधमरो—दे० अधमरियो।

अधमाई—*(ना०)* १. अधमता। नीचता। २. कुटिलता। ३. अपवित्रता।

अधमीच—दे० अधमरियो।

अधमीची—*(वि०)* आधी मीची हुई (आंखें)। अर्द्ध उन्मीलित।

अधमुओ—दे० अधमरियो।

अधमुवो—दे० अधमुओ।

अधर—*(न०)* १. ओंठ। होंठ। २. नीचे का होंठ। ३. बिना आधार का स्थान या वस्तु। ४. आकाश। *(वि०)* १. न इधर का न उधर का। बीच का। २. बिना आधार का। ३. जो धरती पर न हो। ४. लटकता हुआ। *(क्रि० वि०)* बीच में।

अधरज—*(ना०)* होठों की लाली।

अधरत—*(ना०)* आधी रात।

अधरतियो—*(वि०)* १. आधी रात से संबंधित। २. आधी रात में सम्पन्न होने वाला।

अधरपान—*(न०)* होठों का गहरा चुंबन।

अधरबंब—*(वि०)* अधर में लटका हुआ। *(क्रि० वि०)* १. न नीचे न ऊपर। २. न इधर न उधर।

अधरबिंब—*(न०)* बिम्बफल के समान लाल होंठ।

अधरम—*(न०)* १. अधर्म। पाप। कुकर्म। २. अकर्तव्य कर्म। ३. श्रुति-स्मृति विरुद्ध कर्म या आचरण।

अधरमी—*(वि०)* अधर्मी। पापी। दुराचारी। कुकर्मी।

अधरयण—*(ना०)* आधी रात।

अधर रस—*(न०)* १. अधर में से टपकने वाला रस। अधरामृत। २. अधर चुंबन का आनंद।

अधरसुधा—दे० अधरामृत।

अधराजियो—*(न०)* १. राजा। अधिराज। २. सामंत। ३. बड़ा जागीरदार। ४. आधे राज्य का स्वामी।

अधराणो—दे० अधवराणो।

अधरात—*(ना०)* आधी रात।

अधरामृत—*(न०)* १. प्रिय के होंठों को चूमने से मिलने वाला मिठास या आनन्द। २. अधर रस रूपी अमृत।

अधरैण—*(ना०)* आधी रात। **अधरयण**।

अधर्म—दे० अधरम ।
अधर्मी—दे० अधरमी ।
अधवच—दे० अधविच ।
अधवचलो—दे० अध विचलो ।
अधवचाळै—दे० अधविचाळै ।
अधवधरो—(वि०) १. अपूर्ण । २. अधूरा । ३. अपरिपक्व । ४. कम बुद्धिवाला । कच्ची समझ वाला । ५. नासमझ ।
अधवराणो—(वि०) १. जो आधा पुराना हो गया हो । न नया न बिलकुल पुराना । जो पूरा पुराना नहीं हुआ । २. अर्द्ध व्यवहृत ।
अधवाली—(ना०) आधी पायली का माप । (वि०) आधी पायली के माप का । आधी पायली जितना ।
अधवावरियो—(वि०) १. आधा काम में लिया हुआ । २. आधा खर्चा हुआ ।
अधविच—(न०) बीच । मध्य । अधबीच । (क्रि० वि०) बीच में ।
अधविचलो—(वि०) १. बीच का । २. आधी दूरी का ।
अधविचाळै—(अव्य०) १. बीच में । अधविच में । (वि०) बीच में रुका हुआ । ३. बीच में लटका हुआ ।
अधबीच—(न०) किसी विस्तार या लंबाई का मध्य भाग ।
अधबीटो—(वि०) १. अर्द्ध वेष्टित । २. अधूरा किया हुआ । अधूरा छोड़ा हुआ । असमाप्त । अपूर्ण ।
अधसीजो—(वि०) १. आधा सिका हुआ । २. आधा सीजा हुआ । ३. आधा पका हुआ । ४. अपक्व ।
अधसूको—(वि०) आधा सूखा और आधा गीला । जिसमें थोड़ी नमी है । जो पूरा शुष्क नहीं हुआ है ।
अधसेर—(न०) आधा सेर का तौल । (वि०) जो तौल में आधा सेर हो ।
अधसेरी—(ना०) आधे सेर का तौल ।
अधसेरो—(न०) आधे सेर का तौल ।
अधंतर—(न०) १. आकाश । २. आधी दूरी । ३. मध्य । (वि०) १. ऊंचा । २. नीचा ।
अधानो—(न०) १. आधा आना । २. आधे आने का सिक्का । ब्रिटिश काल के दो पैसे का सिक्का । अधन्ना ।
अधायो—(वि०) १. अतृप्त । २. भूखा ।
अधार—(न०) आधार । सहारा ।
अधारी—(ना०) साधुओं के हाथ के सहारे का काठ का बना हुआ टेका ।
अधार्मिक—(वि०) १. जो धर्मानुसार न हो । २. धर्म रहित । ३. धर्म के विरुद्ध ।
अधि—(उप०) शब्द के पहले आने पर 'मुख्य', 'श्रेष्ठ', 'अधिक', 'ऊपर' इत्यादि अर्थ बताने वाला उपसर्ग ।
अधिक—(वि०) १. ज्यादा । विशेष । बहुत । २. फालतू । अतिरिक्त । (न०) एक काव्यालंकार ।
अधिकतम—(वि०) सबसे अधिक । मैक्सिमम ।
अधिकतर—(क्रि० वि०) १. दूसरे की अपेक्षा अधिक । तुलना में अधिक । २. आधे से अधिक । ३. प्रायः । अकसर । बहुत बार ।
अधिकता—(ना०) बहुतायत । आधिक्य ।
अधिक मास—(न०)मलमास । लौंद का महीना । पुरुषोत्तम मास ।
अधिकरण—(न०) १. आधार । सहारा । २. क्रिया के आधार का बोधक सातवाँ कारक (व्या०) ३. प्रकरण । ४. न्यायालय । ५. विभाग । महकमा ।
अधिकाई—(ना०)१. अधिकता । विशेषता । २. विलक्षणता । ३. महिमा । गौरव ।
अधिकाणी—(क्रि० वि०) ज्यादातर । बहुधा । घणो करनै ।

अधिकार—(न०) १. स्वत्व । हक । २. उत्तरदायित्व । जिम्मेदारी । ३. कब्जा । आधिपत्य । ४. वश । इख़्तियार । ५. उचित दावा । ६. विषय का पूर्ण ज्ञान । ७. उच्च योग्यता । ८. पद । ९. शक्ति । १०. प्रकरण । ११. सत्ता । हुकूमत । १२. वाक्य में शब्द का संबंध ।

अधिकारी—(वि०) १. हकदार । २. योग्य । पात्र । ३. समर्थ । (न०) १. अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति । २. योग्य व्यक्ति । ३. अफसर ।

अधिकांश—(न०) १. अधिक अंश । बड़ा हिस्सा । २. आधे से अधिक भाग । (वि०) बहुत सा । (क्रि० वि०) १. बहुधा । ज्यादातर । २. प्रायः । अकसर ।

अधिकृत—(वि०) १. अधिकार से युक्त । २. अधिकार में आया हुआ । ३. अधिकार में किया हुआ । ४. जिसे किसी कार्य करने का स्वत्व प्रदान किया गया हो । ५. सत्ता प्राप्त ।

अधिकेरो—(वि०) १. अधिक । २. तुलना में अधिक । ३. जाति, गुण, परिमाण इत्यादि की तुलना में अधिक ।

अधिको—(वि०) १. अधिक । २. विशेषता युक्त ।

अधिदेव—(न०) १. इष्टदेव । २. मुख्य अधिष्ठाता देव । ३. रक्षक देव । ४. परमेश्वर ।

अधिनायक—(न०) १. मुख्य नायक । मुखिया । सरदार । २. तानाशाह ।

अधिपति—(न०) १. राजा । २. प्रधान अधिकारी ३. स्वामी । मालिक ।

अधिमास—(न०) मलमास ।

अधियार—(दे०) अधियाळ ।

अधियाळ—(वि०) आधा । (न०) १. आधा भाग । २. आधे हिस्से का मालिक । ३. जोत में आधा हिस्सेदार ।

अधियाव—(दे०) अधियाळ ।

अधियो—(दे०) अद्धियो । पूरी बोतल (के माप) से आधे परिमाण की बोतल ।

अधिराज—(न०) सम्राट । महाराजा ।

अधिवर्ष—(न०) २९ फरवरी वाला वर्ष । लीप-ईयर ।

अधिवास—(न०) १. रहने की जगह । २. दूसरे के यहां रहना । ३. दूसरे देश में जाकर रहना ।

अधिवासी—(वि०) १. दूसरे देश में बसा हुआ । २. निवासी ।

अधिवेशन—(न०) १. जलसा, सभा, सम्मेलन आदि की बैठक । २. इकट्ठा होकर बैठना । ३. सम्मेलन । सभा । जलसा ।

अधिष्ठाता—(न०) १. व्यवस्था या प्रबन्ध करने वाला । २. देखभाल करने वाला । ३. प्रमुख । ४. मालिक । ५. ईश्वर ।

अधिष्ठान—(न०) १. रहने का स्थान । वास-स्थान । २. नगर । जनपद । ३. पड़ाव । ४. संस्था और उसके कार्यकर्त्ताओं इत्यादि का समूह । ५. शासन तथा उसकी व्यवस्था, नियम इत्यादि ।

अधिष्ठायक—(दे०) अधिष्ठाता ।

अधीश—(दे०) अधीस ।

अधीश्वर—(दे०) अधीसर ।

अधीस—(न०) १. अधीश । ईश्वर । २. राजा ।

अधीसर—(न०) १. अधीश्वर । ईश्वर । २. राजा ।

अधूरो—(वि०) १. अपूर्ण । अधूरा । २. शेष रहा हुआ । शेष । बाकी ।

अधेड़—(वि०) प्रौढ़ । जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो ।

अधेली—(ना०) आधे रुपये का सिक्का । अठन्नी । आठानी ।

अधेलो—(न०) आधे पैसे का सिक्का । धेला ।

अधैखिण—(क्रि०वि०) आधे क्षण में।

अधो-अध—(वि०) बराबर आधा। आधा। आधो-आध।

अधोक्षज—दे० अधोखज।

अधोखज—(न०) अधोक्षज। विष्णु। परब्रह्म।

अधोगत—(ना०) अधोगति। अवनति। पतन। (वि०) अवनत। पतित।

अधोगति—(ना०) पतन। दुर्दशा।

अधोड़ी—(ना०) १. खेती में आधा भाग। २. आधे भाग की खेती। ३. मरे हुए गाय-बैल का साफ किया हुआ आधा चमड़ा।

अधोतर—(न०) १. अधोवस्त्र। धोती। २. मोटा कपड़ा।

अधोफर—दे० अधफर।

अधोळी—(ना०) १. घी, दूध, तैल इत्यादि लेने का और माप का लम्बी डंडीवाला एक पात्र। २. आधे पाव या आधे सेर का ऐसा माप। ३. खेती में आधा भाग।

अधोलोक—(न०) १.नागलोक। २.पाताल।

अधोवस्त्र—(न०) कमर के नीचे पहना जाने वाला कपड़ा धोती, लुंगी इत्यादि।

अधोवायु—(न०) अपान वायु। पाद। गोज।

अध्यक्ष—(न०) १. स्वामी। मालिक। २. सभापति।

अध्ययन—(न०) १ पठन-पाठन। २. पढ़ना ३. अभ्यास।

अध्यवसाय—(न०) १. अनथक प्रयत्न। २. उत्साहपूर्वक परिश्रम।

अध्यवसायी—(वि०) लगन से काम करने वाला।

अध्यातम—(न०) आत्मा-परमात्मा से संबंधित चिन्तन या दर्शन। ब्रह्मविचार।

अध्यातमविद्या—(ना०) आत्मा-परमात्मा से सम्बन्धित शास्त्र। ब्रह्मविद्या।

अध्यापक—(न०) १. पढ़ाने वाला। शिक्षक। २. गुरु।

अध्यापन—(न०) १. अध्यापक का काम। पढ़ाना। २. पठन।

अध्यापिका—(ना०) शिक्षिका।

अध्याय—(न०) ग्रन्थ का परिच्छेद। प्रकरण।

अध्यास—(न०) १. मिथ्याज्ञान। २. भ्रम। धोखा।

अध्याहार—(न०) १. अस्पष्ट आशय ढूंढ निकालना। निष्कर्ष निकालना। २. छान-बीन। जांच पड़ताल। २. ऊहापोह। तर्कवितर्क।

अध्रम—दे० अधर्म।

अध्रमी—दे० अधर्मी।

अध्रियामणी—(ना०) १. कटारी। २. तलवार। ३. वीरांगना। (वि०) १. विनाशकारी। २. जाज्वल्यमान। प्रज्वलित। ३. डरावनी। भयंकर।

अध्रियामणो—(वि०) भयंकर। डरावना। २. पराक्रमी। वीर।

अन—(अव्य०) निषेध, विरोध, अभाव आदि के अर्थ में प्रयुक्त एक उपसर्ग। (क्रि०वि०) बिना। बगैर। (वि०) अन्य। दूसरा (न०) अन्न।

अनअन्न—(क्रि०वि०) १. अन्योन्य। आपस में। परस्पर। २. एक-दूसरे के संबंध में। (वि०) एक-दूसरे के साथ दिया-लिया जाने वाला।

अन अवसर—(न०) कुसमय। असमय।

अनइ—(क्रि०वि०) और।

अनइच्छा—(ना०) इच्छा का अभाव। अनिच्छा। अरुचि।

अनकार—(वि०) १. वीर। २. कृपण। ३. कायर। (न०) १. बिना प्रयोजन। २. इनकार।

अनकारो—(वि०) जबरदस्त।

अनकोट—(न०) अन्नकूट।

अनड़नड़—(वि०) उद्दंडों को वश करने वाला।

अनड़ग्राडो—(वि०) अरावली पर्वत। आडावळो।

अनड़पंख—(न०) एक बहुत बड़ा और बलवान पक्षी। भारंड। अनलपंख। इसके संबंध में ऐसी किंवदंती है कि यह सदैव आकाश में ही उड़ता रहता है। हाथियों के झुंड के ऊपर आकाश में ही अंडा देता है और भूमि पर पहुँचने से पहले ही वह फूट जाता है बच्चा अंडे से निकल कर अपनी चोंच या पंजों में हाथी को पकड़कर ऊपर उड़ जाता है। जिस प्रकार गरुड़ सर्पों का शत्रु माना जाता है उसी प्रकार यह हाथियों का शत्रु माना जाता है। कवि-प्रसिद्धि में भी ऐसे उल्लेख मिलते हैं, यथा—'घर जहर देखिया गुरड़ वंख, पेखिया पटाझर अनड़पंख।' यह केवल कवि-प्रसिद्धि (कवि समय की ही बात मानी जाती (ना०) १. अनाड़ीपन। २. मूर्खता।

अनडीठ—(वि०) अदृष्ट। बिना देखा। अदीठ।

अनडुह—(न०) बैल। बळद।

अनडू—(न०) बैल। बळद।

अनढू—(न०) गढ़। किलो। दुर्ग।

अनत—(वि०) १. अनंत। २. दूसरा। ३. नहीं झुकने वाला। ३. असीम। (न०) १. विष्णु। २. अनंत भगवान्। ३. ईश्वर। ४. महादेव। (क्रि० वि०) अन्यत्र।

अनतद्वार—(न०) १. विष्णु लोक। स्वर्ग।

अनता—(ना०) पृथ्वी।

अनथ—वि०) १. वह जिसके नाथ नहीं डाली जा सकी हो। २. जो किसी के वश में नहीं हो सका हो। ३. उन्मुक्त। ४. उद्दंड। ५. निरंकुश। ६. बिना नथ का।

अनथ-नथ—(वि०) १. वश में नहीं होने वालों को वश में करने वाला। पराजित

नहीं होने वालों को पराजित करने वाला। २. गर्विष्टों का गर्व नष्ट करने वाला।

अनथाँ-नथ—दे० अनथ-नथ।

अनथाँ-नथी—दे० अनथ-नथ।

अनदान—दे० अन्नदान।

अनदाता—दे० अन्नदाता।

अनधिकार—(वि०) १. बिना अधिकार का। अधिकार रहित। २. अपात्र। (न०) अधिकार के न रहने की स्थिति। अधिकार का अभाव। (क्रि० वि०) बिना अधिकार के।

अनधिकारी—(वि०) १. जिसे अधिकार न हो। अपात्र। २. अयोग्य।

अनधू—दे० अनडू।

अनध्याय—(न०) वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का निषेध हो। पढ़ाई नहीं करने का दिन। पढ़ने की छुट्टी। अगतो।

अनन्य—(वि०) एक निष्ठ।

अनन्य भाव—(न०) एक निष्ठ भक्ति या लगन।

अनपच—(न०) अजीर्ण। बदहजमी। अपचो।

अनपाणी—दे०अनजळ या अन्नजल।

अनपूरणा—दे० अन्नपूर्णा।

अनवन—दे० अणवण।

अनवंध—दे० अनमंध।

अनवंधी—दे० अनमंध।

अनवाध—दे० अणबाध।

अनवाँध—(वि०) बिना बँधा हुआ। खुलो। खुलियोड़ो।

अनवूझ—दे० अणवूझ।

अनवोल—(वि०) न बोलने वाला। बेजवान। गूंगो।

अनवोला—दे० अणबोला।

अनभल—(न०) अहित।

अनभिज्ञ—(वि०) १. अनजान २. मूर्ख।

अनभ्यास—(न०) १. अभ्यास नहीं होना। २. आदत नहीं होना।

अनम—दे० अनमी।

अनम-जायो—(न०) १. नहीं झुकने वाले का पुत्र। २. वीर पिता का वीर पुत्र। ३. वीर परंपरा को कायम रखने वाला वीर पुत्र।

अनमद—(न०) अन्न का नशा। अन्नमद। वि०) १. मद रहित। २. गर्व रहित।

अनमनो—(वि०) १. अन्यमनस्क। अनमान २. उदास। ३. अस्वस्थ।

अनमंध—(वि०) १. बंधन में नहीं आने वाला। २. नहीं झुकने वाला। ३. आत्मसमर्पण नहीं करने वाला। ४. अजय। ५. अपार।

अनमंधी—दे० अनमंध।

अनमांग्यो—असंख्य। (न०) १. अजयवीर। २. शत्रु। (वि०) बिना माँगा हुआ।

अनमिख—(वि०) अनिमेष।

अनमिळ—(वि०) बेमेल। बेजोड़। (न०) शत्रु।

अनमित—(वि०) अपार। असंख्य।

अनमी—(वि०) १. अनम्र। २. नही झुकने वाला वीर।

अनमीकंध—(वि०) जबरदस्त। बलवान।

अनमीखंध—दे० अनमिकंध।

अनमेख—दे० अनमिख।

अनमेळ—(न०) १. शत्रुता। वैर। २. शत्रु। वैरी।

अनमोल—(वि०) १. अमूल्य। २. बहुमूल्य ३. श्रेष्ठ।

अनम्म—दे० अनम।

अनम्र—दे० अनम।

अनय—(न०) १. अन्याय। अनीति। २. आफत।

अनरगळ—दे० अनर्गल ।
अनरथ—दे० अनर्थ ।
अनरस—(न०) १. वैमनस्य । शत्रुता २. फूट । मनोमालिन्य । ३. विरसता । उदासीनता । ४. शुष्कता । रसहीनता । ५. दुख । रंज । ६. दूसरा रस । अन्य-रस । ७. अन्नरस ।
अनरीति—(ना०) १. कुरीति । २. नियम विरुद्ध आचरण । अनुचित बरताव ।
अनरूप—(वि०) १. कुरूप । २. असमान ।
अनर्गल—(वि०) १. अनियंत्रित । बेध-ड़क । २. व्यर्थ । अंडबंड । ३. ऊट-पटांग ।
अनर्घ—(वि०) १. बहुमूल्य । २. सस्ता ।
अनर्थ—(न०) १. विपरीत अर्थ । अनिष्ट कार्य । ३. बिगाड़ । उपद्रव । ४. जुल्म । अत्याचार । ५. बहुत बुरी बात । ६. अवैध रीति से प्राप्त धन । ७. हानि ।
अनर्थक—(वि०) निरर्थक । व्यर्थ ।
अनर्थकारी—(वि०) १. उल्टा अर्थ निकालनेवाला । २. अनिष्टकारी । ३. हानिकारक ।
अनल—(न०) अग्नि ।
अनळ—(ना०) १. अग्नि । २. पवन । अनिल ।
अनळकुंड—(न०) १. अग्निकुंड । यज्ञ-कुंड । २. आबू पर्वत के वसिष्टाश्रम के तीर्थस्थान का इतिहास-प्रसिद्ध यज्ञकुंड, जिसमें वसिष्ट महर्षि ने यज्ञ करके, चार वीर पुरुषों को क्षत्रीकुल में दीक्षित किया था, जो अग्निकुलोत्पन्न क्षत्री कहलाते हैं । मान्यता ऐसी है कि वसिष्ट ऋषि ने उन्हें अग्नि में से उत्पन्न किया था, अर्थात् अग्निदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें उत्पन्न किया था ।
अनळझळ—(ना०) अग्निज्वाला ।
अनळझाळ—(ना०) अग्निज्वाला ।
अनळधक—(ना०) अग्निज्वाला ।
अनळपंख—दे० अनड़पंख ।
अनळपंखचर—(न०) हाथी ।
अनळपड़—(न०) पर्वत ।
अनळपुड़—(न०) पर्वत ।
अनळहक—(अव्य०) एक अरबी वाक्य जिस का अर्थ—'मैं खुदा हूं' है । 'अहं ब्रह्मास्मि' का पर्याय पद ।
अनळा—दे० अन्नळा ।
अनवार—(वि०) दूसरा । (क्रि० वि०) दूसरी बार । (न०) अन्नजल ।
अनवी—(वि०) १. नहीं नमने वाला । वीर । २. अनम्र । ३. हठी । ४. उद्दंड । ५. अद्भुत कार्य करने वाला । (न०) ख्यातों में प्रसिद्ध महारोट (मारोठ, मार-वाड़) के रावत उद्धरण दहिये की महा-वीरता का विशेषण ।
अनशन—(न०) १. किसी बात के विरोध में किया जानेवाला अन्न त्याग । २. अन-शन करके किया जाने वाला धरना । ३. अन्नत्याग । ४. उपवास । निराहार व्रत ।
अनहद—(वि०) १. सीमा रहित । २. बेशुमार । ३. अत्यधिक ।
अनहदनाद—(न०) १. दोनों कान बंद करने के पश्चात् ध्यान मग्न होने पर कानों में होने वाली ध्वनि । शब्द योग का अनहद-नाद । २. समाधिस्थ योगी के ब्रह्मरंध्र में होने वाला एक संगीत जिससे वह मस्त होकर ब्रह्म में लीन हो जाता है । अनाहत-नाद ।
अनंक—(वि०) चिन्ह रहित ।
अनंख—(वि०) इच्छा रहित ।
अनंग—(वि०) अंग रहित । (न०) १. कामदेव । २. श्रीकृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न ।
अनंगार—(न०) १. कोयला २. अनंगारि । महादेव ।

अनंगारि—*(न०)* १. महादेव।

अनंगी—*(न०)* १. कामदेव। २. ईश्वर। *(वि)* विना अंग का।

अनंगी कँवार—*(न०)* १. कामदेव। २. प्रद्युम्न।

अनंगेश—*(न०)* महादेव।

अनंत—*(वि०)* १. अंत रहित। अपार। असीम। २. वहुत। अधिक ३. चिरस्थायी। अविनाशी। *(न०)* १. पीपल का वृक्ष। २. ईश्वर। ३. विष्णु। ४. अनंत भगवान्। ५. भादौं शुक्ल १४ का व्रत। ६. शिव। ७. शेषनाग। ८. शेषनाग के अवतार, लक्ष्मण। ९. वलराम। १०. देवता। ११. आकाश। १२. भुजा का एक गहना। १३. विशेष प्रकार की चौदह ग्रंथियों का एक सूत्र जिसे भादों शुदी १४ के दिन अनंत भगवान् के नैमित्तिक व्रत की दीक्षा लेकर भुजा में बांधा जाता है।

अनंत चतुर्दशी—*(ना०)* भादौं शुक्ल चौदस, जिस दिन अनंत व्रत किया जाता है। **भादरवा सुदी चवदस**।

अनंतमूळ—*(न०)* एक औषधि।

अनंतर—*(क्रि०वि०)* १. इसके वाद में। २. लगातार। *(वि०)* अंतर रहित। निकट।

अनंतरूप—*(न०)* विष्णु।

अनंता—*(ना०)* १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. माया। ४. एक औषधि।

अनंद—दे० आनंद।

अनंदी—दे० आनंदी।

अनंद्री—*(न०)* देवता।

अनाक—*(क्रि०वि०)* नाहक। व्यर्थ।

अनाकानी—*(ना०)* आनाकानी। टालमटूली।

अनाकार—*(वि०)* अनाकार। निराकार।

अनागत—*(वि०)* १. अनुपस्थित। अभी तक नहीं आया हुआ। २. होनहार।

अनागार—*(वि०)* विना घरवाला। *(न०)* साधु। संन्यासी।

अनाघात—*(वि०)* १. अकारण। व्यर्थ। २. आघात रहित। ३. सुरक्षित।

अनाचार—*(न०)* १. अत्याचार। दुराचार। २. अघटित घटना।

अनाचारी—*(वि०)* अत्याचारी। दुराचारी।

अनाज—*(न०)* अन्न। नाज। **धान**।

अनाड़—*(वि०)* १. वीर। २. उद्दंड। *(न०)* १. अड़चन। २. विगाड़। ३. पर्वत।

अनाड़ी—*(वि०)* १. गंवार। २. मूर्ख। ३. हठी। जिद्दी।

अनाड़ीपणो—*(न०)* १. मूर्खता। २. गंवारूपना। हठ। **जिद**।

अनाड़ो—*(वि०)* १. उद्दंड। २. वीर।

अनातम—*(वि०)* अनात्म। जड़।

अनाथ—*(वि०)* १. जिसके माता-पिता नहीं रहे हों (वह वालक)। २. जिसका पालन-पोषण करने वाला नहीं हो। ३. स्वामी रहित। ४. दीन। ५. विना नाथ का। निरंकुश।

अनाथाँ-नाथ—*(न०)* अनाथों का नाथ। ईश्वर।

अनाद—दे० अनादि।

अनादर—*(न०)* अपमान। तिरस्कार।

अनादि—*(वि०)* आदि रहित। *(क्रि०वि०)* अनादिकाल से।

अनाधार—*(वि०)* आधार रहित।

अनाप—*(वि०)* १. नाप रहित। वेनाप। २. वहुत।

अनाप-सनाप—*(वि०)* १. आवश्यकता से अधिक। अत्यधिक। २. परिमाण से अधिक।

अनाम—*(वि०)* विना नाम का। **ननामो**।

अनामत—*(ना०)* अमामत। थाती। धरोहर। **थ्रडाणो**।

अनरगळ—दे० अनर्गल ।

अनरथ—दे० अनर्थ ।

अनरस—(न०) १. वैमनस्य । नाखुशी । २. रूठ । मनोमालिन्य । ३. विरसता । उदासीनता । ४. शुष्कता । रसहीनता । ५. दुःख । रंज । ६. दूसरा रस । अन्य-रस । ७. अनरसा ।

अनरीति—(ना०) १. कुरीति । २. नियम विरुद्ध आचरण । अनुचित बरताव ।

अनरूप—(वि०) १. कुरूप । २. असमान ।

अनर्गल—(वि०) १. अनियंत्रित । बेध-ड़क । २. व्यर्थ । अंडबंड । ३. ऊट-पटांग ।

अनर्घ—(वि०) १. बहुमूल्य । २. सस्ता ।

अनर्थ—(न०) १. विपरीत अर्थ । अनिष्ट कार्य । ३. बिगाड़ । उपद्रव । ४. जुल्म । अत्याचार । ५. बहुत बुरी बात । ६. अवैध रीति से प्राप्त धन । ७. हानि ।

अनर्थक—(वि०) निरर्थक । व्यर्थ ।

अनर्थकारी—(वि०) १. उल्टा अर्थ निकालनेवाला । २. अनिष्टकारी । ३. हानिकारक ।

अनल—(न०) अग्नि ।

अनळ—(ना०) १. अग्नि । २. पवन । अनिल ।

अनळकुंड—(न०) १. अग्निकुंड । यज्ञ-कुंड । २. आबू पर्वत के वसिष्टाश्रम के तीर्थस्थान का इतिहास-प्रसिद्ध यज्ञकुंड, जिसमें वसिष्ट महर्षि ने यज्ञ करके, चार वीर पुरुषों को क्षत्रीकुल में दीक्षित किया था, जो अग्निकुलोत्पन्न क्षत्री कहलाते हैं । मान्यता ऐसी है कि वसिष्ट ऋषि ने उन्हें अग्नि में से उत्पन्न किया था, अर्थात् अग्निदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें उत्पन्न किया था ।

अनळझळ—(ना०) अग्निज्वाला ।

अनळझाळ—(ना०) अग्निज्वाला ।

अनळधक—(ना०) अग्निज्वाला ।

अनळपंख—दे० अनड़पंख ।

अनळपंखचर—(न०) हाथी ।

अनळपड़—(न०) पर्वत ।

अनळपुड़—(न०) पर्वत ।

अनळहक—(अव्य०) एक अरबी वाक्य जिस का अर्थ—'मैं खुदा हूं' है । 'अहं ब्रह्मास्मि' का पर्याय पद ।

अनळा—दे० अन्नळा ।

अनवार—(वि०) दूसरा । (क्रि० वि०) दूसरी बार । (न०) अन्नजल ।

अनवी—(वि०) १. नहीं नमने वाला । वीर । २. अनम्र । ३. हठी । ४. उद्दंड । ५. अद्भुत कार्य करने वाला । (न०) ख्यातों में प्रसिद्ध महारोट (मारोठ, मार-वाड़) के रावत उद्धरण दहिये की महा-वीरता का विशेषण ।

अनशन—(न०) १. किसी बात के विरोध में किया जानेवाला अन्न त्याग । २. अन-शन करके किया जाने वाला धरना । ३. अन्नत्याग । ४. उपवास । निराहार व्रत ।

अनहद—(वि०) १. सीमा रहित । २. बेशुमार । ३. अत्यधिक ।

अनहदनाद—(न०) १. दोनों कान बंद करने के पश्चात् ध्यान मग्न होने पर कानों में होने वाली ध्वनि । शब्द योग का अनहद-नाद । २. समाधिस्थ योगी के ब्रह्मरंध्र में होने वाला एक संगीत जिससे वह मस्त होकर ब्रह्म में लीन हो जाता है । अनाहत-नाद ।

अनंक—(वि०) चिन्ह रहित ।

अनंख—(वि०) इच्छा रहित ।

अनंग—(वि०) अंग रहित । (न०) १. कामदेव । २. श्रीकृष्ण का पुत्र प्रद्युम्न ।

अनंगार—(न०) १. कोयला २. अनंगारि । महादेव ।

अनंगारि—*(न०)* १. महादेव ।

अनंगी—*(न०)* १. कामदेव । २. ईश्वर । *(वि)* बिना अंग का ।

अनंगी कँवार—*(न०)* १. कामदेव । २. प्रद्युम्न ।

अनंगेश—*(न०)* महादेव ।

अनंत—*(वि०)* १. अंत रहित । अपार । असीम । २. बहुत । अधिक ३. चिर-स्थायी । अविनाशी । *(न०)* १. पीपल का वृक्ष । २. ईश्वर । ३. विष्णु । ४. अनंत भगवान् । ५. भादौं शुक्ल १४ का व्रत । ६. शिव । ७. शेषनाग । ८. शेषनाग के अवतार, लक्ष्मण । ९. बलराम । १०. देवता । ११. आकाश । १२. भुजा का एक गहना । १३. विशेष प्रकार की चौदह ग्रंथियों का एक सूत्र जिसे भादों शुदी १४ के दिन अनंत भगवान् के नैमित्तिक व्रत की दीक्षा लेकर भुजा में बांधा जाता है ।

अनंत चतुर्दशी—*(ना०)* भादौं शुक्ल चौदस, जिस दिन अनंत व्रत किया जाता है । **भादरवा सुदी चवदस ।**

अनंतमूळ—*(न०)* एक औषधि ।

अनंतर—*(क्रि०वि०)* १. इसके बाद में । २. लगातार । *(वि०)* अंतर रहित । निकट ।

अनंतरूप—*(न०)* विष्णु ।

अनंता—*(ना०)* १. पृथ्वी । २. पार्वती । ३. माया । ४. एक औषधि ।

अनंद—दे० आनंद ।

अनंदी—दे० आनंदी ।

अनंद्री—*(न०)* देवता ।

अनाक—*(क्रि०वि०)* नाहक । व्यर्थ ।

अनाकानी—*(ना०)* आनाकानी । टालमटूली ।

अनाकार—*(वि०)* अनाकार । निराकार ।

अनागत—*(वि०)* १. अनुपस्थित । अभी तक नहीं आया हुआ । २. होनहार ।

अनागार—*(वि०)* बिना घरवाला । *(न०)* साधु । संन्यासी ।

अनाघात—*(वि०)* १. अकारण । व्यर्थ । २. आघात रहित । ३. सुरक्षित ।

अनाचार—*(न०)* १. अत्याचार । दुरा-चार । २. अघटित घटना ।

अनाचारी—*(वि०)* अत्याचारी । दुराचारी ।

अनाज—*(न०)* अन्न । नाज । धान ।

अनाड़—*(वि०)* १. वीर । २. उद्दंड । *(न०)* १. अड़चन । २. बिगाड़ । ३. पर्वत ।

अनाड़ी—*(वि०)* १. गंवार । २. मूर्ख । ३. हठी । जिद्दी ।

अनाड़ीपणो—*(न०)* १. मूर्खता । २. गंवारू पना । हठ । जिद ।

अनाड़ो—*(वि०)* १. उद्दंड । २. वीर ।

अनातम—*(वि०)* अनात्म । जड़ ।

अनाथ—*(वि०)* १. जिसके माता-पिता नहीं रहे हों (वह बालक) । २. जिसका पालन-पोषण करने वाला नहीं हो । ३. स्वामी रहित । ४. दीन । ५. बिना नाथ का । निरंकुश ।

अनाथाँ-नाथ—*(न०)* अनाथों का नाथ । ईश्वर ।

अनाद—दे० अनादि ।

अनादर—*(न०)* अपमान । तिरस्कार ।

अनादि—*(वि०)* आदि रहित । *(क्रि०वि०)* अनादिकाल से ।

अनाधार—*(वि०)* आधार रहित ।

अनाप—*(वि०)* १. नाप रहित । बेनाप । २. बहुत ।

अनाप-सनाप—*(वि०)* १. आवश्यकता से अधिक । अत्यधिक । २. परिमाण से अधिक ।

अनाम—*(वि०)* बिना नाम का । **ननामो ।**

अनामत—*(ना०)* अमामत । थाती । धरोहर । **अडाणी ।**

अनागती—(वि०) अनागत पर रखा हुआ। अनागती।
अनामिका—(ना०) कनिष्ठिका के पास की अंगुली।
अनामी—(वि०) बिना नाम का। अप्रसिद्ध।
अनायास—(क्रि०वि०) १. बिना प्रयास के २. सहसा। अचानक।
अनार—(न०) दाड़िम फल।
अनारदाणा—(न०न०व०) दाड़िम के बीज। अनार दाने।
अनार्य—(वि०) १. जो आर्य न हो। २. दुष्ट। (न०) १. आर्येतर जाति। २. आर्येतर जाति का व्यक्ति।
अनावश्यक—(वि०) बेजरूरी। फालतू।
अनावृष्टि—(ना०) बरसात का न होना। वर्षाभाव। सूखा।
अनासती—(अव्य०) १. नास्ति नहीं। विद्यमानता। २. जिसका ख्याल ही न हो। ३. अचानक। एकदम। (वि०) बुरा।
अनासुरत—दे० अनासुरती।
अनासुरती—(वि०) १. जो सुनने में नहीं आया हो। अनानुश्रुत। २. जिसका खयाल ही न हो। ३. जो सहज ही में बन जाये। (क्रि० वि०) अचानक। अकस्मात।
अनाह—(वि०) अनाथ।
अनाहक—(क्रि० वि०) नाहक। व्यर्थ में।
अनाहत—दे० अनहद नाद।
अनाहतनाद—दे० अनहद नाद।
अनाहार—(वि०) निराहार।
अनि—(वि०) अन्य। दूसरा। और।
अनिच्छा—(ना०) १. इच्छा का अभाव। २. अरुचि।
अनिठ—(वि०) जो निठे नहीं। जो समाप्त न हो। अपार।
अनित्य—(वि०) १. अस्थायी। २. असत्य। ३. नश्वर।
अनिद्रा—(न०) नींद नहीं आने का रोग।
अनियम—(वि०) १. नियम का अभाव। बेकायदगी। २. अव्यवस्था।
अनियाई—(वि०) अन्यायी। अत्याचारी।
अनियाव—(न०) अन्याय। अत्याचार।
अनिल—(न०) पवन। वायु।
अनिलकुमार—(न०) हनुमान।
अनिवार—(क्रि०वि०) १. दूसरी बार। २. फिर कभी। दे० अनिवार्य।
अनिवार्य—(वि०) १. अवश्यम्भावी। २. अटल।
अनिश्चित—(वि०) जिसका निश्चय न किया गया हो।
अनिष्ट—(वि०) १. अवांछित। २. अशुभ। (न०) १. अमंगल। २. विपत्ति। ३. हानि।
अनिंद्य—(वि०) १. निंदा नहीं करने योग्य। २. निर्दोष। ३. सुन्दर।
अनी—(ना०) सेना। फौज।
अनीक—(ना०) १. सेना। फौज। २. युद्ध। ३. वीर।
अनीच—(वि०) १. जो नीच न हो। अनिकृष्ट। अच्छा। २. जो नीचा न हो। ऊंचा।
अनीठ—(वि०) १. जो कठिन न हो। सरल। सुगम। २. जो समाप्त न हो। बहुत। (क्रि०वि०) सरलता से।
अनीत—दे० अनीति।
अनीति—(ना०) १. अन्याय। बेइंसाफ। २. दुराचरण। ३. पाप। ४. अत्याचार।
अनीतो—(वि०) १. नीति विरुद्ध चलने वाला। अन्यायी। २. जुल्मी। दुराचारी। ३. बदमाश। ४. पापी।
अनीश्वर—(वि०) १. ईश्वर रहित। २. नास्तिक।
अनिश्वरवाद—(न०) ईश्वर को नहीं मानने का सिद्धान्त।

अनीश्वरवादी—*(न०)* नास्तिक।
अनीस—*(न०)* १. बंधन। रोक। २. अनीश।
अनीह—*(वि०)* १. निष्काम। २. निर्लोभी।
अनींद—*(वि०)* जाग्रत।
अनु—*(अव्य०)* समीपता, सादृश्यता। पीछे, बाद में, साथ-साथ, लगा हुआ, कई वार, प्रत्येक इत्यादि अर्थ में प्रयुक्त एक उपसर्ग।
अनुकरण—*(न०)* १. कुछ देख करके उसी प्रकार करना। नकल। देखादेखी। २. पीछे-पीछे चलना।
अनुकंपा—*(ना०)* १. दया। २. सहानुभूति।
अनुकूळ—*(वि०)* १. अनुकूल। अनुसार। २. हितकर। ३. प्रसन्न। ४. समर्थक। हिमायती।
अनुकूळता—*(ना०)* १. अनुकूल होने का भाव। २. पक्ष में होने की स्थिति।
अनुक्रम—*(न०)* १. क्रम। सिलसिला। २. पद्धति। ३. परंपरा। ४. व्यवस्था। ५. नियम।
अनुक्रमणिका—*(ना०)* अक्षरादि क्रम से वनाई हुई सूची।
अनुक्रमणो—*(क्रि०)* १. अनुक्रम से चलना। २. पीछे-पीछे चलना।
अनुग—*(न०)* सेवक। दास। *(वि०)* १. अनुगामी। २. अनुयायी।
अनुगमन—*(न०)* १. अनुसरण। अनुकरण। २. पति के पीछे सती होना। सहमरण।
अनुगामी—*(वि०)* अनुगमन करनेवाला। अनुयायी।
अनुग्या—*(ना०)* आज्ञा। अनुज्ञा।
अनुग्रह—*(ना०)* १. कृपा। दया। २. आभार। ३. उपकार। पाड़।
अनुचर—*(न०)* सेवक। दास। चाकर। नौकर।
अनुचित—*(वि०)* अयोग्य। अजोग।
अनुज—*(न०)* छोटा भाई।
अनुजा—*(ना०)* छोटी बहन।
अनुजीवी—*(वि०)* आश्रित। *(न०)* सेवक। चाकर।
अनुताप—*(न०)* १. मानसिक संताप। २. दुख। ३. पश्चाताप। पछतावो।
अनुत्तम—*(वि०)* १. जो उत्तम न हो। २. सबसे उत्तम।
अनुत्तर—*(वि०)* निरुत्तर।
अनुत्तीर्ण—*(वि०)* उत्तीर्ण नहीं। परीक्षा या जांच में असफल। नापास। फेल।
अनुदात्त—*(न०)* स्वर के तीन भेदों में का एक (उदात्त, अनुदात्त और स्वरित)। लघुस्वर। *(वि०)* १. नीचा (स्वर)। २. लघु (उच्चारण)। ३. लघु। तुच्छ।
अनुदान—*(न०)* संस्था की ओर से सहायता के रूप में दिया जाने वाला धन। ग्रान्ट।
अनुद्यमी—*(वि०)* १. उद्यम रहित। २. आलसी।
अनुनय—*(ना०)* १. विनय। २. खुशामद।
अनुनासिक—*(वि०)* १. नासिका संबंधी। २. जिसका उच्चारण नासिका और मुख से हो। सानुनासिक। *(न०)* अनुनासिक वर्ण, यथा—ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।
अनुपम—*(वि०)* १. उपमारहित। अतुल्य। अद्वितीय। २. सर्वोत्तम।
अनुपयुक्त—*(वि०)* १. जो उपयुक्त न हो। अनुपयोगी। २. अयोग्य।
अनुपयोगी—*(वि०)* अनुपयुक्त।
अनुपस्थित—*(वि०)* गैर हाजिर।
अनुपस्थिति—*(ना०)* गैर हाजिरी।
अनुपान—*(न०)* औषधि के अंगभूत रूप में उसके साथ या बाद में खाई जाने वाली वस्तु।
अनुप्रास—*(न०)* एक शब्दालंकार। वर्ण-मैत्री।
अनुबंध—*(न०)* १. पारस्परिक बंधन। २. समझौता। एग्रीमेन्ट। ३. आगे पीछे

अन्याय—(न०) १. न्याय विरुद्ध कार्य। २. अधर्म। ३. अनीति। ४. अत्याचार।
अन्यायी—(वि०) १. अन्याय करने वाला। २. अत्याचारी।
अन्याव—दे० अन्याय।
अन्वय—(न०) १. पद्य के शब्दों को वाक्य रचना के अनुसार पहले कर्त्ता, फिर कर्म तदनंतर क्रिया का रखना (व्या०)। २. पदों का एक दूसरे से संबंध (व्या०)। ३. ठीक और संगत अर्थ। ४. परस्पर संबंध। ५. कार्य-कारण का सम्बन्ध। ६. संयोग। मेल।
अन्वेषण—(न०) अनुसंधान। खोज।
अप—(उप०) अलग, अनुचित, नीचे, पीछे, रहित, विरुद्ध इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होने वाला एक उपसर्ग। (न०) पानी।
अपकज—(क्रि० वि०) स्वकार्यार्थ। अपने लिये। (न०) बुरा काम।
अपकर्म—(न०) बुरा काम। कुकर्म।
अपकंठ—(न०) बालक।
अपकाज—दे० अपकार।
अपकाजी—(वि०) आपस्वार्थी। मतलबी।
अपकाय—(न०) पीने के जीव।
अपकार—(न०) १. कुकर्म। २. हानि ३. अनिष्ट। ४. अहित। बुराई। ५. विरोध। ६. अत्याचार। ७. अनादर।
अपकारी—(वि०) १. अपकार करने वाला। २. विरोध करने वाला। अनिष्ट करने वाला।
अपकीरत—(ना०)अपकीर्ति। अपयश। अपजस। निंदा। बदनामी।
अपकीरती—दे० अपकीरत।
अपकीर्ति—दे० अपकीरत।
अपक्ष—दे० अपख।
अपख—(वि०) १. पक्ष रहित। अपक्ष। २. असहाय। ३. बिना पाँख वाला।
अपगत—(ना०) १. अपगति। बुरी गति। २. बुरे मार्ग पर जाना। ३. नाश। (वि०) १. भागा हुआ। २. हटा हुआ।
अपगा—(ना०) नदी।
अपगो—(वि०) १. लंगड़ा। खोड़ो। २. अविश्वासी। निपगो।
अपघात—(न०) १. आत्महत्या। आप-घात। २. हत्या। हिंसा। ३. विश्वास-घात।
अपघाती—(वि०) १. आत्महत्यारा। आपघाती। २. विश्वासघाती। ३. हिंसक। हत्यारा।
अपच—दे० अपचो।
अपचाल—(ना०) १. बुरी चाल। कुचाल। २. खोटाई। बदमाशी।
अपचो—(न०) अजीर्ण। बदहजमी।
अपछर—(ना०) अप्सरा।
अपछरा—(ना०) अप्सरा।
अपजस—(न०) अपयश। बदनामी। अपकीर्ति।
अपजीव—(न०) १. प्राण। २. आत्मा।
अपजोग—(न०) १. फलित ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की वह स्थिति जो अमंगलकारी समझी जाती है। अपयोग। कुजोग। २. बुरा समय। कुसमय। ३. असगुन।
अपजोर—(न०) १. अपना जोर। २. आत्मशक्ति। ३. अपने बल का घमंड। ४. अभिमान।
अपजोरी—(क्रि० वि०) १. अपने जोर से। २. अभिमान से। (न०) अभिमान।
अपजोरो—(वि०) १. अपनी शक्ति पर निर्भर रहने वाला। २. किसी के वश में नहीं रहने वाला। स्वच्छंद। स्वेच्छा-चारी। ३. किसी के अधिकार को नहीं मानने वाला। ४. अपनी शक्ति का गर्व करने वाला।
अपट—(वि०) १. बहुत अधिक। अपार। २. जबरदस्त।
अपटाँ-पूर—(न०) १. दोनों किनारों तक

भरी हुई और खूब जोर से वहनेवाली। (नदी)। २. पूर्ण भरा हुआ (तालाव)। ३. अत्यधिक।

अपठ—(वि०) नहीं पढ़ा हुआ। अशिक्षित।

अपड़—(ना०) १. पकड़ने की क्रिया। पकड़। २. ग्रहण करने की शक्ति। ३. समझ। बुद्धि। (वि०) १. जो गिरे नहीं। २. जो हराया नहीं जा सके। ३. वीर।

अपड़णो—(क्रि०) १. आगे वढ़े हुए के वरावर पहुंचना। २. थामना। ग्रहण करना। पकड़ना। पकड़णो। ३. कावू में लेना। ४. गिरफ्तार करना। ५. ढूंढ़ निकालना। ६. अवरुद्ध करना। गति को वंद करना। ७. समझना। ८. गलती को ढूंढ़ निकालना।

अपड़ाणो—दे० अपड़ावणो।

अपड़ावणो—(क्रि०) १. पकड़वाना। २. थामना। ३. पकड़ा जाना।

अपड़ीजणो—(क्रि०) पकड़ा जाना।

अपढ—(वि०) १. अनपढ़। २. मूर्ख।

अपणाइत—(ना०) अपनापन। अपनत्व। आत्मीयता।

अपणाणो—(क्रि०) १, अपनाना। अपना वनाना। २. प्यार से आकर्षित करना। ३. अपने अधिकार में करना।

अपणात—दे० अपणाइत।

अपणायत—दे० अपणाइत।

अपणावणो—दे० अपणाणो।

अपणी—(सर्व० वि०) अपनी।

अपणूं—दे० अपणो।

अपणो—(क्रि०) १. अर्पण करना। २. देना। (सर्व०) अपना। स्वयं का। (न०) आत्मीय। स्वजन।

अपत—(वि०) १. कृतघ्न। २. अविश्वासी। ३. दुष्ट। ४. नीच। अधम। ५. पत्तों से रहित। अपत्र। ६. निर्लज्ज। ७. अप्रतिष्ठित।

अपतरो—(वि०) १. अप्रतिष्ठित। २. अविश्वासी। ३. कुपात्र। ४. स्वच्छन्द। ५. निर्लज्ज।

अपतियारो—(वि०) अविश्वासी। (न०) अविश्वास।

अपतियो—(वि०) १. अविश्वासी। २. अप्रतिष्ठित। ३. स्वार्थी।

अपती—(वि०) १. अविश्वस्त। २. कामचोर। ३. नीच। अधम। ४. कृतघ्न। ५. दुराचारी। ६. पति विहीना।

अपथ—(न०) १. कुमार्ग। २. अपथ्य। कुपथ।

अपथियो—(वि०) १. कुमार्गी। कुपथगामी। २. अपथ्य करने वाला।

अपदत—(न०) कुपात्र को दिया हुआ दान। (वि०) १. कुपात्र को दिया हुआ। २. अपना दिया हुआ। स्वदत्त।

अपदेव—(न०) भूत, प्रेतादि आन-देव।

अपधंस—(न०) अपध्वंश। नाश।

अपनाम—(न०) वदनाम। वदनामी।

अपभ्रंश—(ना०) १. भारत की एक प्राचीन भाषा। २. प्राकृत भाषाओं के वाद की भाषा। ३. शब्द का वह रूप जो मूल से विगड़ कर वना हो। ४. मूल धातु से विगड़ कर वना हुआ शब्द। ५. पतन। ६. विकृति। विगाड़।

अपमपर—दे० अपंपर।

अपमल—(वि) १. आतमवली। २. जोरावर। ३. स्वतन्त्र। ४. उद्दंड। आपमलो।

अपमलो—दे० अपमल।

अपमान—(न०) अनादर। तिरस्कार।

अपमानित—(वि०) जिसका अपमान हुआ हो। अनादृत।

अपमार्ग—(न०) कुमार्ग।

अपमृत्यु—(ना०) १. अकाल मृत्यु। २. अनहोनी मौत। कुमौत।

अपयश—दे० अपजस ।

अपर—(वि०) १. अन्य । दूसरा । २. और कोई । ३. जिसके बाद में कुछ न हो । ४. जो बाद में न हो । पहला । ५. अगला । ६. जो पराया न हो । ७. अतिरिक्त । ७. पीछे का । ६. अपार ।

अपरचो—(न०) १. अपरिचय । असैंध । २. जानकारी का अभाव । ३. संशय । ४. अविश्वास ।

अपरतो—(न०) १. अविश्वास । २. संशय । ३. भिन्नता । ४. परायापन । ५. दुराव ।

अपरबळ—(न०) अपार शक्ति । (वि०) प्रचण्ड शक्तिशाली । बलवान ।

अपरबळी—(वि०) प्रचण्ड शक्तिशाली । महाबलवान ।

अपरम—दे० अप्रम ।

अपरमप्रम—(न०) परब्रह्म । २. ईश्वर । ३. अप्रमेय ।

अपरलोक—(न०) परलोक । स्वर्ग ।

अ परस—(वि०) १. न छूने योग्य । अस्पर्श्य । २. बिना छुआ हुआ ।

अप रस—(न०) १. अमैत्री । शत्रुता । २. बिगड़ा हुआ रस ।

अपरंच—(अव्य०) १. इस मजमून के बाद । २. इसके आगे लिखना है कि । इसके पश्चात् । पश्चात् लेख यह है कि । ३. विशेष में । फिर भी । ४. फिर यह । उपरांत । उपरंच ।

अपरंपर—(न०) १. परब्रह्म । २. ईश्वर । (वि०) १. अपरंपार । अत्यधिक । अपार । पुष्कल ।

अपरंपार—(वि०) अत्यधिक । अपरम्पार ।

अपरा—(ना०) १. लौकिक विद्या । २. पदार्थ विद्या । ३. पश्चिम दिशा ।

अपराजित—(वि०) १. न हारा हुआ । २. जो हराया न जा सके ।

अपराजिता—(ना०) १. दुर्गा । २. कोयल ।

अपराध—(न०) १. भूल । गलती । २. दोष कसूर । ३. पाप ।

अपराधी—(वि०) १. अपराध करने वाला । दोषी । कसूरवार । २. पापी ।

अपराधीन—(वि०) जो पराधीन न हो । स्वतन्त्र । स्वाधीन ।

अपरिग्रह—(न०) १. आवश्यकता से अधिक धन का परित्याग । २. संग्रह न करना । ३. दान न लेना ।

अपरिचय—(न०) परिचय या जान पहिचान का अभाव । असैंध । अपरचो ।

अपरेल—(न०) ईसवी सन का चौथा महीना । एप्रिल ।

अपरोक—(वि०) १. अपरिहार्य । २. नहीं रुकने वाला । ३. नहीं चूकने वाला । (न०) अवरोध । रुकावट ।

अपरोक्ष—(वि०) प्रत्यक्ष ।

अपर्णा—(ना०) १. पार्वती । २. दुर्गा ।

अपल—(वि०) १. अपार । बहुत । २. बेरोक । ३. नही मानने वाला । ४. वश में नहीं होने वाला ।

अपलक्षण—(न०) कुलक्षण । कुलखण ।

अपलखण—दे० अपलक्षण ।

अपलखणो—(वि०) कुलक्षण वाला । कुलखणो ।

अपलच्छण—दे० अपलक्षण ।

अपलाणियो—(वि०) जिस पर पलान नहीं कसा गया हो । बिना पलान कसा हुआ (ऊंट, घोड़ा आदि) ।

अपलाणियोड़ो—दे० अपलाणियो ।

अपलाणो—दे० अपलाणियो ।

अपवर्ग—(न०) १. मोक्ष । निर्वाण । २. त्याग । ३. दान ।

अपवर्जन—(न०) १. त्याग । २. दान । ३. मोक्ष ।

अपवाद—(न०) १. सामान्य नियम में विरोध जैसी वस्तु या उसका उदाहरण ।

२. सर्वसाधारण नियम के विरुद्ध बात या घटना । ३. विरुद्ध बात । ४. निंदा । बदनामी । ५. खंडन । ६. अस्वीकार । ७. दोष ।

अपवित्र—*(वि०)* १. अशुद्ध । मलिन । २. पाप युक्त । अधार्मिक । ३. न छूने योग्य ।

अपशकुन—*(न०)* अशुभ शकुन । अपसुकन ।

अपशब्द—*(न०)* १. गाली । २. दुर्वचन । ३. अशुद्ध शब्द ।

अपसर—*(ना०)* अप्सरा ।

अपसरा—*(ना०)* अप्सरा ।

अपसवण—*(न०)* अपशकुन । बुरा सगुन । अपसुगन ।

अपसु—*(न०)* अपशु । गदहा ।

अपसुकन—दे० अपसुगन ।

अपसुगन—*(न०)* अपशकुन ।

अपसौण—दे० अपसवण ।

अपहड़—*(वि०)* १. उदार । दातार । २. अपने ही साहस और सामर्थ्य पर दान, मान, सहायता और युद्धादि श्रेष्ठ कार्यों का करने वाला । ३. अत्यधिक । खूब ।

अपहरण—*(न०)* जबरदस्ती छीनने या उठा ले जाने की क्रिया ।

अपंग—*(वि०)* १. अंगहीन । २. लूला । लंगड़ा । ३. असमर्थ ।

अपंथ—*(न०)* १. कुपंथ । कुमार्ग । २. पंथ रहित ।

अपंपर—दे० अपरंपर ।

अपाण—*(न०)* १. बल । शक्ति । २. बिना हाथों वाला । ३. अशक्त ।

अपाणा—*(सर्व० ब० व०)* अपने ।

अपाणी—*(सर्व०)* अपनी ।

अपाणो—*(सर्व०)* आत्मीय । अपना ।

अपात्र—*(वि०)* १. गुणहीन । २. अयोग्य । *(न०)* कुपात्र ।

अपादान—*(न०)* १. किसी से अलगाव या पृथक्करण । २. एक कारक । ३. पाँचवीं विभक्ति का अर्थ ।

अपादान कारक—*(न०)* जिससे विश्लेष या अलगाव होता है, उस संज्ञा शब्द का वाक्य में रूप अथवा कारक *(व्या०)* । व्याकरण में पाँचवाँ कारक ।

अपान—*(न०)* पाँच प्राणों (प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान) में से एक जो गुदा द्वारा निकलता है । पाद । गोज ।

अपान वायु—*(न०)* गुदा-मार्ग से निकलने वाली हवा । अधो वायु । पाद । गोज ।

अपार—*(वि०)* १. जिसका पार न हो । अनंत । २. अत्यधिक ।

अपारण—दे० अपार ।

अपाल—*(वि०)* १. बहुत । अपल । २. नहीं रुकने वाला । ३. नहीं रोकने वाला ।

अपाळ—*(वि०)* जिसका कोई पालन करने वाला न हो ।

अपाळो—*(वि०)* जो पैदल नहीं चल रहा हो । जो सवारी किया हुआ हो ।

अपावन—*(वि०)* अपवित्र ।

अपील—*(वि०)* १. जिसमें सिंचाई न की जाती हो (खेत) २. सिंचाई के अयोग्य । ३. जो पीले रंग का न हो ।

अपीधो—*(वि०)* १. बिना पिया हुआ । २. प्यासा । ३. बिना नशा किया हुआ ।

अपील—*(ना०)* १. नीचे की कोर्ट के फैसले के विरुद्ध ऊपर की कोर्ट में की जाने वाली प्रार्थना । पुनर्विचारार्थ प्रार्थना । २. अनुरोध । ३. निवेदन ।

अपुत्र—*(वि०)* १. पुत्र रहित । संतान रहित ।

अपूज—*(वि०)* १. अप्रतिष्ठित । २. अपूजित । ३. जिसकी पूजा-अर्चना नहीं होती हो (देवमूर्ति) । ४. जिसकी पूजा या सम्हाल की कोई व्यवस्था न हो । ५. नहीं पूजा जाने वाला ।

अप्रमेय—(वि०) १. जो मापा-नापा न जा सके। अमाप। १. असीम। अनंत। ३. असिद्ध। अप्रमाणित। ४. अज्ञेय।

अप्रवाण—दे० अप्रमाण।

अप्रवीत—(वि०) अपवित्र। अशुद्ध।

अप्रशस्त—(वि०) १. निंद्य। २. जिसकी कीर्ति न हो। ३. अशिष्ट। ४. हलका। ओछा। तुच्छ। ५. अयोग्य।

अप्रसन्न—(वि०) १. नाराज। नाखुश। २. उदास। म्लान। ३. दुखी।

अप्रसिद्ध—(वि०) जो प्रसिद्ध नहीं। अविख्यात।

अप्राकृत—(वि०) १. अलौकिक। २. अस्वाभाविक। ३. असाधारण। ४. अनघड़ नहीं। संस्कृत।

अप्राप्त—(वि०) १. न मिलने वाला। अलभ्य। २. दुर्लभ।

अप्रामाणिक—(वि०) १. प्रमाण रहित। २. अविश्वसनीय। ३. जो प्रमाण के द्वारा सिद्ध न हो।

अप्रिय—(वि०) जो प्रिय न हो। अरुचिकर।

अप्रीति—(ना०) १. प्रीति का न होना। २. विरोध। ३. शत्रुता।

अप्सरा—(ना०) १. स्वर्ग की चिरतरुण गायिका। २. अनुपम सुन्दर तरुणी। परी। ३. देवांगना। ४. इन्द्र की सभा में नृत्य करने वाली स्त्री।

अफर—(वि०) १. नही फिरने वाला। नहीं मुड़ने वाला। २. पीठ नहीं दिखाने वाला। ३. अपनी बात पर दृढ़ रहने वाला। दृढ़ प्रतिज्ञ। (ना०) १. शत्रुता। २. गर्व। ३. ज्यादती। ४. बेवकूफी। ५. सेना।

अफरणो—(क्रि०) १. पेट का फूलना। २. पीठ नहीं दिखाना।

अफरी—दे० अफर।

अफळ—(वि०) निष्फल। फल हीन। (न०) बुरा परिणाम। कुफल।

अफळावणो—(क्रि०) टकराना। भिड़ाना।

अफवा—(ना०) उड़ती खबर। अफवाह।

अफसर—(न०) १. अधिकारी। ऑफीसर। २. हाकिम। ३. मुखिया। प्रधान।

अफसोस—(न०) १. शोक। २. खेद।

अफंड—(न०) १. उत्पात। शरारत। ऊधम। २. टंटा। झगड़ा। ३. उपद्रव। ४. फतूर। ५. आडम्बर। पाखंड। ढकोसला। ६. कपट। छल।

अफंडी—(वि०) १. उत्पाती। शरारती। ऊधमी। २. झगड़ालू। ३. उपद्रवी। ४. पाखंडी। ५. कपटी। छलिया।

अफारो—(न०) १. अपच, वायु इत्यादि के कारण पेट का फूलना। अफारा। अफरो। आफरो २. अंदरूनी क्रोध। ३. जोश। (वि०) १. जोशीला। २. वीर। बहादुर। ३. क्रुद्ध। ४. अधिक।

अफाळणो—(क्रि०) १. पछाड़ना। भिड़ाना। २. टक्कर देना। ३. पटकना। ४. लड़ना।

अफाळा—(न० ब० व०) १. कष्ट। दुख। २. चक्कर। ३. निष्फल प्रयत्न।

अफाळा खाणो—(मुहा०) १. निष्फल प्रयत्न करना। २. कष्ट पाना। ३. भटकना।

अफिर—दे० अफर।

अफीण—(न०) अफीम। अमल।

अफीणियो—दे० अफीणी।

अफीणी—(वि०) अफीमची। अमली।

अफीम—दे० अफीण।

अफीमची—(वि०) अफीम खाने की आदत वाला। अमली।

अफेर—दे० अफर।

अब—(क्रि० वि०) १. इस समय। हमैं। प्रस्तुत क्षण में। २. इसके बाद।

अबक—(वि०) नहीं कहने लायक। २. व्यर्थ। ३. अनिष्ट।

अबकलै—(क्रि० वि०) इसबार। हमकै। अबकै।

अबकाई—(ना०) १. तकलीफ। कष्ट। २. कठिनता। ३. अड़चन। ४. रोग की कष्ट साध्य या असाध्य अवस्था। ५. स्त्रियों का ऋतुकाल। ६. बेबशी।

अबकाळै—दे० अबकलै।

अबकी—(क्रि० वि०) १. इस बार। २. अगली बार। दूसरी बार। फिर। हमकी। हमकै। बीजी वेळा। दूजी वेळा।

अबकै—दे० अबकी।

अबको—दे० अबखो।

अबखाई—दे० अबकाई।

अबखी—(वि० ना०) १. कठिन। मुश्किल। २. कष्टदायक। ३. दुर्गम।

अबखी वेळा—(ना०) संकट काल।

अबखो—(वि०) १. कठिन २. कष्टदायक। ३. दुर्गम। ४. बेबश।

अबज—(न०) सौ करोड़ की संख्या। अरब।

अबडो—दे० अबडो।

अबताणी—(क्रि० वि०) अभी तक। हालताँई।

अबदाळ—(न०) फकीर। २. औलिया। अबलियो। अबदाली। ३. सिद्ध पुरुष। महात्मा। ४. सत्तर प्रकार के औलियाओं में से एक (इस्लाम)।

अबदाळी—दे० अबदाळ।

अबरक—(न०) अभ्रक। भोडल। जळपू। जळपोस।

अबरकै—(क्रि० वि०) १. इस बार। हमकै। अबकळै। २. दूसरी बार। बीजोवेळा।

अबरी—(ना०) एक प्रकार का चित्रित कागज जो पुस्तकों के पुट्ठों पर चिपकाया जाता है। मार्बल पेपर।

अबळ—(वि०) निर्बल। अशक्त। (ना०) अबला। स्त्री।

अबलक—(वि०) १. सफेद और लाल या सफेद और काले रंग का (घोड़ा)। २. चितकबरा। (न०) अबलक घोड़ा।

अबळखा—(ना०) १. अभिलाषा। २. खाने की अभिलाषा ३. गर्भिणी की अमुक वस्तु खाने की इच्छा। दोहद।

अबळा—(ना०) १. अबला। स्त्री। २. गरीबिनी। ३. निर्बला।

अबळाखा—दे० अबळखा।

अबळी—(वि० ना०) अशक्त। निर्बला।

अबळो—(न०) निर्बल। अबल।

अबाध—(वि०) १. बाधा रहित। २. निर्विघ्न। ३. असीम। अपार।

अबार—(क्रि० वि०) इस समय। अभी। हमार। हमारूं। अबारूं।

अबारताँई—दे० अबताणी।

अबारूं—दे० अबार।

अबाँह—(वि०) १. असहाय। २. बगैर कौल।

अबीढो—दे० अबीढो।

अबीर—(ना०) एक रंगीन बुकनी।

अबीर-गुलाल—(ना०) अबीर और गुलाल।

अबीह—(वि०) १. निडर। निर्भय। २. जबरदस्त।

अबीहो—दे० अबीह।

अबुध—(वि०) १. ना समझ। अज्ञानी।

अबूझ—(वि०) नासमझ। अज्ञ। मूर्ख।

अबेढी—दे० अबेढी।

अबेढो—दे० अबेढो।

अबै—(क्रि० वि०) १. अभी। अबार। हमार। अब। हमै।

अबोट—(वि०) १. बिना छुआ हुआ। अछूता। २. पवित्र। ३. अखंड। साबुत।

अबोटियो—(न०) सेवा-पूजा या रसोई

करते समय धोती की जगह पहना जाने वाला रेशम या ऊन का वस्त्र।

अबोटी—(न.) १. वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिर में श्री बाल कृष्ण का पुजारी। २. मन्दिरों में सेवा-पूजा का धन्धा करने वाला व्यक्ति (प्रायः भोजक)। ३. किसी को स्पर्श नहीं किया हुआ स्नपित व्यक्ति।

अबोध—(वि०) अनजान। मूर्ख।

अबोल—(वि०) १. चुपचाप। शान्त। २. बगैर कौल।

अबोलणा—(न० ब० व०) १. वैमनस्य। मनमुटाव। २. शत्रुता।

अबोलणो—(वि०) नहीं बोलने वाला। मूक। (क्रि०) नहीं बोलना। (न०) १. मनमुटाव। २. शत्रुता।

अबोला—दे० अबोलणा।

अबोलो—(क्रि० वि०) चुपचाप। बिना बोले हुए। (वि०) मौन। शान्त।

अभ—(न०) आकाश।

अभक्त—(वि०) १. जो भक्त न हो। भक्ति नहीं करने वाला। २. श्रद्धाहीन।

अभक्ष—(वि०) नहीं खाने योग्य। अभक्ष्य।

अभख—(वि०) १. अभक्ष्य। नहीं खाने योग्य। २. नहीं कहने योग्य।

अभगत—दे० अभक्त।

अभड़ावणो—(क्रि०) स्पर्श करना या कराना। छुआना।

अभड़ीजणो—(क्रि०) १. स्पर्श होना। छुआजाना। ३. स्त्री का ऋतुमती होना।

अभड़ीजियोड़ी—(वि०) रजस्वला।

अभड़ीजियोड़ो—(वि०) १. अस्पृश्य से जिसका स्पर्श हो गया हो। २. जिसे अस्पृश्य-अशौच लगा हुआ हो।

अभण—(वि०) अपढ़। ठोठ।

अभनमो—दे० अभिनमो।

अभनवो—दे० अभिनमो।

अभय—दे० अभै।

अभयधाम—दे० अभैधाम।

अभयपद—दे० अभैपद।

अभया—(ना०) १. हर्रे। २. दुर्गा।

अभयारण्य—दे० अभ्यारण।

अभर—(वि०) १. जो भरा न जा सके। २. जो भरा हुआ न हो। खाली। ३. जिसे भरने की आवश्यकता न हो। ४. भरा हुआ। पूर्ण। ५. सम्पन्न। ६. संतुष्ट।

अभरण—(वि०) दीन। गरीब।

अभर-भरण—दे० अभरण-भरण।

अभरण-भरण—(वि०) १. निर्धन को धनी बनाने वाला। २. सभी प्रकार की इच्छापूर्ति करने वाला। (न०) १. सर्व-शक्तिमान्। २. दीनानाथ। ईश्वर।

अभरंग—(न०) 'अरभंग' का विपर्यस्त शब्द दे० अरभंग।

अभरां-भरण—दे० अभरण-भरण।

अभरी—(वि०) १. बड़ा धनवान। खूब संपत्तिवाला। २. धन-धान्य से पूर्ण। वैभवशाली। ३. सफल जीवन। ४. सम्पन्न। ५. धनान्ध। ६. मिलावट वाला। खोटा। ७. खाली।

अभरो—(वि०) १. खोटा। मिलावट वाला २. खाली। ३. धनान्ध।

अभरोसो—(न०) १. अविश्वास। २. संदेह।

अभल—(वि०) बुरा। खराब।

अभळाखा—दे० अबळखा।

अभवी—(वि०) असंसारी।

अभंग—(वि०) १. युद्ध से नहीं भागने वाला। २. हराया नहीं जा सकने वाला। ३. अटल। ४. अखंड। अटूट। ५. वीर। ६. निडर। (न०) एक प्रकार का मराठी छंद।

अभंगनाथ—(न०) युद्ध से नहीं भागने वालों में अतिबलवान योद्धा। २. युद्ध

में पीछे पाँव नहीं देने वाला वीर । ३. बलवान विजयी वीर ।

अभाग—(न०) अभाग्य । दुर्भाग्य ।

अभागण—(वि० ना०) १. अभागिनी । २. विधवा ।

अभागणी—दे० अभागण ।

अभागियो—दे० अभागो ।

अभागो—(वि०) अभागा । दुर्भागी । भाग्यहीन ।

अभाग्यो—दे० अभागो ।

अभायो—(वि०) १. अप्रिय । अरुचिकर । नापसंद । (न०) जूठन ।

अभाळ—(वि०) १. जिसकी देख रेख नहीं । जिसकी सार-सम्हाल नहीं । २ जिसकी खोज तलाश नहीं ।

अभाव—(न०) १. अविद्यमानता । २. कमी । न्यूनता । ३. असत्ता । ४. हानि । ५. बुरा भाव । दुर्भाव । ६. अप्रियता । ७. अश्रद्धा ।

अभावणो—(वि०) अरुचिकर । अप्रिय । (क्रि०) अप्रिय लगना ।

अभावो—(वि०) अप्रिय । अरुचिकर ।

अभि—(उप०) सामने, पास, तरफ, अधिक, श्रेष्ठ इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त एक उपसर्ग ।

अभिक्रमण—(न०) आक्रमण ।

अभिगमण—(न०) १. पास जाना । अभिगमन । २. सम्भोग ।

अभिचार—(न०) मंत्र तंत्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि कार्य ।

अभिजित—(न०) १. एक नक्षत्र । २. दिवस का आठवां मुहूर्त । (वि०) विजयी ।

अभिज्ञ—(वि०) १. अनुभवी । २. जानकार । ३. निपुण ।

अभिधा—(ना०) १. शब्द की वाच्यार्थ शक्ति । सीधा सादा अर्थ बताने वाली शक्ति । २. शब्द का मूल अर्थ और उस अर्थ की बोधक शक्ति ।

अभिधान—(न०) १. नाम । संज्ञा । २. पद का नाम । ३. शब्द ।

अभिधानमाळा—(ना०) १. नाम कोश । २. शब्द कोश ।

अभिनमो—(वि०) १. अभिनव । नवीन । २. अद्वितीय । ३. सदृश । समान । ४. द्वितीय । दूसरा । ५. वीर । (न०) १. पुत्र । २. पौत्र । ३. प्रपौत्र । ४. वंशज ।

अभिनय—(न०) हाव भाव द्वारा किसी विषय का वास्तविक अनुकरण करके दिखाना । एक्टिंग । २. नाटक का खेल ।

अभिनव—(वि०) नवीन । नया ।

अभिन्न—(वि०) जो भिन्न हो । जुदा नहीं । सम्बद्ध ।

अभिप्राय—(न०) १. आशय । तात्पर्य । २. उद्देश्य । ३. इरादा ।

अभिमान—(न०) अहंकार । गर्व । घमंड ।

अभिमानी—(वि०) अहंकारी । घमंडी ।

अभियुक्त—(न०) अपराधी । मुलजिम । आरोपी ।

अभियोग—(न०) १. अपराध । २. मुकदमा । ३. आरोप । मामलो ।

अभिराम—(वि०) १. आल्हादकारी । आनंददायक । २. मनोहर ।

अभिरुचि—(ना०) अतिशय रुचि । चाह । इच्छा । पसंद ।

अभिळाखा—दे० अभिलाषा ।

अभिलाषा—(ना०) इच्छा । आकांक्षा ।

अभिलासा—दे० अभिलाषा ।

अभिलेख—(न०) महत्वपूर्ण लेख । दस्तावेज । रेकार्ड ।

अभिवादन—(न०) वंदन । नमस्कार ।

अभिषेक—(न०) १. वेद मन्त्रों के साथ जल छिड़कना या स्नान करवाना । २. विधि पूर्वक सिंहासन या राजगद्दी पर बैठाने की क्रिया । ३. यज्ञादि के बाद का शान्ति स्नान ।

अभिसार—(न०) १. मिलन। २. भिड़ंत। ३. नायक नायिका का पूर्व निश्चित स्थान पर मिलना। संकेतानुसार प्रेमियों का मिलन।

अभी—(क्रि० वि०) १. इसी समय। २. तुरन्त। हमार।

अभीच—(वि०) १. निडर। निर्भय। २. वीर।

अभीढो—दे० अवीढो।

अभीत—(वि०) निडर। निर्भय।

अभीर—(वि०) असहाय। (न०) अहीर। ग्वाला। ग्वाळियो।

अभूखरा—(न०) आभूषण। (वि०) भूषण रहित।

अभूत—(वि०) १. जो पहले न हुआ हो। अपूर्व। २. अद्भुत।

अभूतपूर्व—(वि०) जो पहले न हुआ हो। अनोखा।

अभूनो—(वि०) १. आश्चर्य चकित। २. पागल। ३. मूढ़।

अभूमो—(वि०) १. अनजान। २. अपरिचित। ३. मूर्ख।

अभेड़ो—(वि०) १. टेढ़ा। २. विकट। ३. कठिन।

अभेद—(वि०) १. भेद रहित। रहस्य रहित। २. एक जैसा। ३. अभिन्न। (न०) १. अभिन्नता। एक रूपता। २. एक शब्दालंकार।

अभेळणो—(क्रि०) १. न मिलाना। २. आक्रमण नहीं करना। ३. न लूटना।

अभेळियो—(वि०) विना मिलावट का। निखालिस। शुद्ध।

अभेव—दे० अभेद।

अभै—(वि०) १. अभय। निडर। २. न डरनेवाला। (न०) निर्भयता।

अभैदान—(न०) भय से रक्षा का आश्वासन। रक्षा का वचन।

अभैधाम—(न०) १. अभय धाम। ईश्वर शरणागति। २. मोक्ष।

अभैपद—(न०) १. अभयपद। २. मोक्ष।

अभैपुरा—(न०) २ १ठौड़ों की तेरह शाखाओं में से एक।

अभोग—(न०) १. भजन पद या कविता की वह अंतिम कड़ी जिसमें कवि का नाम आता हैं। आभोग। (वि०) जिसका भोग या उपयोग न किया गया हो।

अभोगत—(वि०) १. नहीं जोता हुआ। (खेत)। २. काम में नहीं लाया हुआ। अभुक्त। अव्यवहृत। ३. नया।

अभ्यागत—(न०) १. मेहमान। पाहुना। अतिथि। २. भिखारी। भिक्षुक। ३. साधु संन्यासी। (वि०) दीन। गरीब।

अभ्यामरद—(न०) युद्ध।

अभ्यारण—(न०) वह रक्षित वन जिसमें पशुओं का शिकार नहीं किया जाता है। अभयारण्य।

अभ्यास—(न०) १. निरन्तर अनुशीलन। २. हमेशा की जाने वाली क्रिया। ३. स्वभाव। मुहावरा। टेव। ४. पुनरावृत्ति। ५. परिश्रम। ६. पढ़ाई। शिक्षा।

अभ्यास करणो—(मुहा०) १. अभ्यास करना। २. निरन्तर पढ़ना।

अभ्यासणो—(क्रि०) १. अभ्यास करना। २. पढ़ते रहना।

अभ्यासी—(वि०) १. निरन्तर अभ्यास करने वाला। २. अभ्यस्त।

अभ्र—(न०) १. बादल। २. आकाश।

अभ्रक—(न०) १. भोडल। अबरक। जळपू। जळपोस।

अभ्रम—(वि०) भ्रम रहित।

अम—(सर्व०) १. हम। २. हमारा। ३. मेरा।

अम-कज—(अव्य०) १. हमारे लिये। मेरे लिए।

अमख—(न०) आमिष । मांस ।

अमचूर—(ना०) कच्चे आम के सुखाये हुए टुकड़े या चूर्ण ।

अमणो—(वि०) १. बिना मन का । अमनस्क । २. विचार रहित ।

अमतणो—(सर्व०) १. हमारा । २. मेरा ।

अमन—(वि०) १. बिना मन का । २. मनातीत । (न०) १. मन का अभाव । २. परमात्मा । ३. शान्ति । ४. सुख ।

अमन-चमन—(न०) सुखशांति । मौज ।

अमर—(न०) १. देवता । २. पारा । (वि०) १. नहीं मरने वाला । २. जिसका कभी नाश न हो ।

अमर-कांचळी—(ना०) शत्रु पक्ष में लड़ने वाले बहनोई की सुरक्षा का (नहीं मारने का) भाई की ओर से बहन को दिया जाने वाला अभय-वचन । सौभाग्य खंडित नहीं करने का बहन को दिया हुआ वचन । २. सौभाग्य-वरदान ।

अमरकोट—(न०) धाट प्रान्त (थर पारकर) का इतिहास प्रसिद्ध एक नगर । यह नगर और प्रदेश किसी समय मारवाड़ राज्य का एक भाग था किन्तु अब पाकिस्तान का भाग बना हुआ है ।

अमरकोश—(न०) अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत का एक प्रसिद्ध शब्दकोश ।

अमरख—(न०) १. अमर्ष । क्रोध । २. जोश । ३. ग्लानि ।

अमरगिर—(न०) आमेर (जयपुर) का पर्वत ।

अमरण—(न०) मृत्यु नहीं होना ।

अमरत—(न०) अमृत । सुधा ।

अमरतवान—दे० अम्रतवाण ।

अमरता—(ना०) अमरत्व । अमरपना ।

अमरती—(ना०) एक मिठाई । इमरती ।

अमरनाथ—(न०) काश्मीर का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जहां बर्फ के शिवलिंग के दर्शन होते हैं ।

अमरनामो—(न०) १. वीरता, दान या उपकार आदि सत्कर्मों से जिसका नाम अमर हो गया हो । २. यश । कीर्ति ।

अमरपटो—(न०) अमरता का लेख या वरदान ।

अमरपद—(न०) मोक्ष ।

अमरपुरी—(ना०) १. देवलोक । २. स्वर्ग ।

अमरलोक—(न०) १. देवलोक । २. स्वर्ग ।

अमरवेल—(ना०) १. अमरवेलि । २. आकाश बेलि ।

अमरस—(न०) १. आम्ररस । २. अमर्ष । क्रोध ।

अमरसुहाग—(न०) सदा अमर रहने वाला सौभाग्य ।

अमरसुहागण—(ना०) १. जीवन भर सौभाग्यशालिनी बनी रहने वाली स्त्री । २. वेश्या ।

अमराई—(ना०) आमों का बाग । आम्रवन ।

अमराणो—(न०) १. धाट प्रदेश के अमर कोट नगर का लोकगीत और काव्य प्रसिद्ध नाम । २. अमरकोट जिला ।

अमरापुर—(न०) स्वर्ग । देवलोक ।

अमरापुरी—दे० अमरापुर ।

अमराव—दे० उमराव ।

अमरावती—(ना०) १. द्वारिका । द्वारकापुरी । २. अमरापुरी । इन्द्रपुरी ।

अमरीख— दे० अंबरीष ।

अमरूद—(न०) जामफल ।

अमरेस—(न०) १. अमरेश । इन्द्र । नागोर के प्रसिद्ध वीर अमरसिंह राठौड़ का काव्य नाम ।

अमळ—(वि०) निर्मल । मल रहित ।

अमल—(न०) १. अफीम । २. शासन । अधिकार । ३. व्यवहार । ४. प्रभाव । असर ५. अधिकार-समय ।

अमल उतरणो—(मुहा०) १. अफीम का नशा उतरना । २. अधिकार छिनना ।

अमल करणो—(मुहा०) १. अधिकार करना। २. प्रभाव जमाना।

अमल गळणो—(मुहा०) १. अफीम की गोष्ठी में कसूंबा तैयार होना। २. अफीम की गोष्ठी होना।

अमलदार—(न०) १. अफीमची। २. अधिकारी।

अमलदारी—(ना०) १. अधिकार। शासन। २. अधिकारी का काम या पद।

अमल-पाणी—(न०) १. नाश्ता। कलेवा। झारो। २. अफीम लेने के बाद किया जाने वाला नाश्ता।

अमल पाणी करणो—(मुहा०) १. नाश्ता करना। २. अफीम लेना और उसके ऊपर कुछ खाना। ३. यात्रा की थकान दूर करने के लिये विश्राम करना तथा अफीम लेना।

अमल-रो-कोट—(न०) बहुत अफीम खाने वाला। बड़ा अफीमची।

अमल-रो-पोतो—(न०) अफीम रखने की खलेची।

अमल होणो—(मुहा०) अधिकार होना।

अमलाँ चाक—(वि०) १. अफीम के नशे में चूर। २. अत्यधिक नशा।

अमली—(वि०) १. अफीमची। २. नशेबाज। ३. मस्त।

अमलीमाण—(वि०) १. नशे में मस्त रहनेवाला। २. अधिकारों का उपभोग करनेवाला। ३. अधिकार और ऐश्वर्य पूर्ण। ४. धनाढ्य। ५. मौजी। ६. दानी। दातार। ७. विजयी। ८. वीर। ९. अभिमानी।

अमलो—(न०ब०व०) १. राज्य कर्मचारी गण। अमला। २. भीड़।

अमंख—(न०) आमिष। मांस।

अमंखचर—दे० अमिखचर।

अमंगण—(वि०) अयाचक।

अमंगत—(वि०) अयाचक।

अमंगळ—(वि०) अशुभ। अनिष्ट। (न०) दुर्भाग्य।

अमंत्र—(न०) १. खोटी सलाह। कुमंत्र। असीख। २. कुमित्र। शत्रु। (वि०) खोटी सलाह देनेवाला।

अमंत्रद—(वि०) खोटी सलाह देनेवाला। (न०) शत्रु।

अमा—(ना०) अमावस्या।

अमाई—(वि०) १. न समा सके उतना। अधिक। २. भय उत्पादक।

अमात—(वि०) १. मातृहीन। २. मात्रा रहित।

अमात्य—(न०) १. राजा का मंत्री। २. मंत्री।

अमान—(वि०) अपार। अपरिमाण। (न०) अनादर। अप्रतिष्ठा।

अमानत—दे० अनामत।

अमानती—(वि०) अमानत पर रखा हुआ। अनामती।

अमानी—(वि०) १. मान रहित। २. अप्रतिष्ठित। ३. अभिमान रहित। दे० इमानी।

अमानेतण—(ना०) प्रेम और सम्मान से वंचित पत्नी।

अमाप—(वि०) १. बिना माप का। २. अपार। बहुत।

अमाम—(वि०) १. बहुत। अधिक। २. श्रेष्ठ। ३. ममता रहित। ४. इच्छा रहित। (ना०) १. अधैर्य। २. अममत्व। ३. तृप्ति। संतोष।

अमामीदार—(वि०) १. सम्पन्न। धनवान २. साधन-सम्पन्न।

अमामो—(वि०) १. बहुत। अधिक। २. उदार। ३. ममत्ववाला। ४. शान्त। धीर। गंभीर। ५. संतुष्ट। तृप्त।

अमायो—(वि०) जो समा न सके।

अमार—दे० अबार ।

अमाळो—(सर्व०) १. मेरा । २. हमारा ।

अमाव—दे० अमायो ।

अमावट—(न०) आम का पापड़ । आम-रस की चपाती । आम के सूखे हुए रस की जमी हुई परत ।

अमावड़—(वि०) १. असीम । बहुत अधिक । २. जबरदस्त ।

अमावतो—(वि०) १. नहीं समा सके जितना । २. नहीं समा सकने वाला । ३. बहुत । अधिक ।

अमावस—(ना०) कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि । आमावस्या ।

अमास्ती—(सर्व०) १. मैं । २. हम ।

अमिख—(न०) आमिष । मांस ।

अमिखचर—(न०) १. मांस भक्षी पक्षी । २. गिद्ध । ३. पलचर ।

अमिट—(वि०) १. नहीं मिटने वाला । २. स्थायी । ३. नित्य ।

अमित—(वि०) १. अपरिमित । अपार ।

अमित्र—(न०) शत्रु ।

अमिय—(न०) अमृत ।

अमित—(न०) अमित्र । शत्रु ।

अमी—(न०) १. अमृत । २. थूक ।

अमीढ—(वि०) अतुल्य । तुलना रहित ।

अमीढो—(वि०) जिसकी तुलना नहीं की जा सके । अतुल्य ।

अमीणी—(सर्व०) १. मेरी । २. हमारी ।

अमीणो—(सर्व०) १. मेरा । २. हमारा ।

अमीत—(न०) शत्रु । वैरी ।

अमीन—(न०) १. बाहर का काम करने वाला अदालत का कर्मचारी । २. जमीन की नाप-जोख करनेवाला माल-विभाग का कर्मचारी ।

अमी नजर—(ना०) १. अमृत दृष्टि । २. दया दृष्टि । ३. कृपा ।

अमीर—(वि०) १. धनवान । रईस । २. कोमल अंगों वाला । सुकुमार । नाजुक । (न०) १. मुसलमान सरदारों की एक उपाधि । २. मुसलमान शासक । सरदार । ३. अफगानिस्तान के बादशाह की एक उपाधि ।

अमीरपणो—(न०) १. धनवान होने के लक्षण । धनाढ्यता । २. धनवान होने का अभिमान । धनवानी । ३. उदारता । २. नजाकत ।

अमीरल—(न०ब०व०) १. अमीरलोग । २. सरदार लोग ।

अमीरस—(न०) १. अमृत । सुधा । २. थूक । अमी ।

अमीराई—दे० अमीरात ।

अमीरात—(ना०) १. धनवानपना । धनाढ्यता । २. अमीरी । रईसी । ३. नाजुक पना । नजाकत ।

अमीरी—दे० अमीरात ।

अमुक—(वि०) १. निर्दिष्ट (व्यक्ति या वस्तु) । २. अज्ञात । ३. फलाँ । फलाणो ।

अमूझण—(ना०) १. घबराहट । २. दम-घुट । घुटन । ३. मूर्च्छा ।

अमूझणी—दे० अमूझण ।

अमूझणो—(क्रि०) १. अमूझन होना । घबराहट होना । २. मूर्च्छित होना । ३. श्वासावरोध होना । दम घुटना ।

अमूझाणो—दे० अमूझणो ।

अमूझावणो—दे० अमूझणो ।

अमूझो—(न०) १. उमस । २. दमघुटन । श्वासावरोध ।

अमूमन—(अव्य०) साधारणतया । प्रायः ।

अमूळ—(वि०) १. मूल रहित । विना जड़ का । निर्मूल । २. कारण रहित ।

अमूल—(वि०) १. अमूल्य । अनबोल । २. बहुमूल्य । ३. बिना मूल्य का ।

अमूल्य—दे० अमूल ।

अमृत—(न०) १. जिसके पीने से अमर हो जाय ऐसा एक कल्पित रस । २. देवलोक

का एक कल्पित पेय जिसके पीने से बूढ़ापा और मृत्यु पास नहीं आती। सुधा। ३. बहुत स्वादिष्ट अथवा गुणकारी पदार्थ। ४. क्षीर। *(वि०)* १. नहीं मरा हुआ। २. कभी नहीं मरने वाला। अविनाशी।

अमृतधुनि—दे० अमृत ध्वनि।

अमृतध्वनि—*(ना०)* श्रीबालकृष्ण के नृत्य की ध्वनि। २. एक प्रकार का छंद।

अमृतधारा—*(ना०)* १. अमृत की धारा। २. जीभ के मूल में तालू से टपकनेवाला रस। (योग)। ३. एक औषधि।

अमृतबान—दे० अम्रतबाण।

अमृता—*(ना०)* हर्रे। हरीतकी। हरड़े।

अमेळ—*(न०)* १. विरोध। शत्रुता। *(वि०)* बिना मिलावट का।

अमोघ—*(वि०)* १. अत्यन्त। अपार। २. अव्यर्थ। अचूक।

अमोड़ो—*(वि०)* १. नहीं मुड़ने वाला। २. जिसको पीछे नहीं हटाया जा सके। अचल। *(क्रि०वि०)* जल्दी। अविलंब।

अमोरणो *(क्रि०)* १. किसी वस्तु के गुण, प्रकार या परिणाम की सजातीय वस्तु से पूर्ति करना। २. स्नान के लिये गरम पानी में (अनुकूल ताप का बनाने के लिये) ठंडा पानी मिलाना। ३. मिश्रित करना। मिलाना।

अमोरो—*(न०)* और मिलाकर की जाने वाली वृद्धि। बढ़ती। इजाफा।

अमोल—*(वि०)* १. अमूल्य। अनमोल। २. बहुमूल्य। ३. बिना मूल्य।

अमोलक—*(वि०)* १. अमूल्य। २. बहुमूल्य। कीमती।

अम्रत—दे० अमृत।

अम्रतबाण—*(न०)* घी, तेल, अचार आदि रखने का चीनी मिट्टी का एक पात्र। मृत्तिका भाजन।

अम्ह—*(सर्व०)* १. हम। २. हमारा। ३. हमारी। ४. मैं। ५. मेरा। ६. मेरी।

अम्हतणी—*(सर्व०)* १. हमारी। २. मेरी।

अम्हतणो—*(सर्व०)* १. हमारा। २. मेरा।

अम्ह थी—*(सर्व०)* १. हमारे से। २. मेरे से।

अम्हसूं—दे० अम्हथी।

अम्हां—*(सर्व०ब०व०)* १. हम। २. हमें। हमको। ३. हमारे। ४. हमारा।

अम्हीणी—*(सर्व०)* १. मेरी। २. हमारी।

अम्हीणो—*(सर्व०)* १. मेरा। २. हमारा।

अम्हे—*(सर्व०ब०व०)* हम।

अय—*(न०)* १. शस्त्र। २. लोहा।

अयबळ—*(न०)* शस्त्र बल।

अयाचक—दे० अजाचक।

अयाची—दे० अजाची।

अयाण—*(वि०)* अजान। अज्ञान। मूर्ख।

अयाळ—*(न०)* घोड़े या सिंह की गरदन के ऊपरि भाग के लंबे बाल।

अयास—*(न०)* १. आकाश। २. चिन्ह। लक्षण।

अयोग—दे० अजोग।

अयोग्य—*(वि०)* १. जो योग्य न हो। २. असमर्थ। ३. अपात्र। ४. अनुपयुक्त। ५. कुपात्र। नालायक।

अयोनि—*(वि०)* १. जो योनि द्वारा न जन्मा हो। २. अजन्मा। *(न०)* १. ब्रह्मा। २. शिव। ३. विष्णु।

अयोसा—*(न०)* योषा (नारी) नहीं। नर। मनुष्य। अयोषा।

अर—*(न०)* अरि। शत्रु। *(अव्य)* १. और। २. पुनः।

अरक—*(न०)* १. सूर्य। अर्क। २. आक का पौधा। ३. भभके से खींचा हुआ रस। २. तांबा।

अरकाद—*(न०)* सूर्य, चन्द्र इत्यादि ग्रह।

अरग—*(ना०)* तलवार।

अरगजो—(न०) शरीर मे लेपन करने का एक सुगंधित द्रव्य । अरगजा ।

अरगती—(ना०) धातु को रगड़ कर उसे छीलने का एक औजार । रेती । कानस । अतरड़ी ।

अरगतो—व० वड़ी अरगती । वड़ी कानस । रेता ।

अरगनी—(ना०) कपड़े लटकाने-रखने की रस्सी, तार आदि साधन ।

अरगळा—(ना०) अर्गला । आगळ ।

अरगंज—(वि०) शत्रु का नाश करने वाला । (ना०) रावळ मल्लिनाथ के पुत्र राठौड़ वीर जगमाल की प्रसिद्ध तलवार का नाम ।

अरगंजरण—दे० अरिगंजरण ।

अरगाहरण—दे० अरिगाहरण ।

अरघरणो—(क्रि०) १. अर्घ्य देना । २. पूजा करना ।

अरघियो—दे० अरघो ।

अरघो—(न०) अर्घ देने का तांबे का एक पात्र । अर्घा ।

अरचरणो—(क्रि०) पूजा करना । अर्चना ।

अरचा—(ना०) अर्चन । पूजा ।

अरज—(ना०) १. अर्ज । प्रार्थना । २. चौड़ाई ।

अरजक—(न०) शत्रु ।

अरजदार—(वि०) अर्जदार । फरियादी ।

अरजवेगी—(वि०) अर्ज गुजारने वाला ।

अरजळ—(ना०) १. कष्ट । तकलीफ । २. व्याकुलता । ३. बेहोशी । (वि०) १. बेहोश । २. व्याकुल । ३. घायल ।

अरजाऊ—(वि०) अर्ज करने वाला । अर्जदार ।

अरजी—(ना०) अर्जी । प्रार्थना पत्र ।

अरजी दावो—(न०) १. दीवानी अदालत में किये जाने वाले दावे की अर्जी । अर्जीदावा ।

अरजुण—(न०) १. पाण्डु पुत्र अर्जुन । २. सोना । ३. चांदी । ४. बांस ५. अर्जुन वृक्ष ।

अरट—(न०) रहँट ।

अरटियो—(न०) १. सूत कातने का चरखा । रहँटिया । २. एक डिंगल छंद ।

अरड़णो—(क्रि०) १. जोर से रोना । चिल्लाकर रोना । २. ऊंट का बलबलाना । ३. धक्का मारकर घुँसना ।

अरड़ाटो—(न०) १. चिल्लाकर रोने की आवाज । रोने की चिल्लाहट । २. ऊंट की बलबलाहट । ३. धक्का ।

अरड़ींग—(वि०) १. जबरदस्त । २. शत्रुंजयी ।

अरडुओ—दे० अरड़ूसो ।

अरड़ूसो—(न०) एक पौधा । अडूसा ।

अरडो—(न०) १. धक्का । टक्कर । २. फैला हुआ । चौड़ा । उरड़ो ।

अरण—(न०) १. अरण्य । जंगल । २. अरुण । सूर्य ।

अरणव—(न०) १. समुद्र । २. सूर्य ।

अरणी—(ना०) १. एक पौधा । २. अग्नि मंथनात्मक वृक्ष । ३. उसकी लकड़ी । अरणि ।

अरणी-छठ—(ना०) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की छठ को किया जाने वाला स्त्रियों का एक व्रत । अरणि षष्ठी या अरण्यषष्ठी ।

अरणो—(न०) १. अरणि-वन । २. अरण्य । जंगल । ३. जोधपुर के निकट एक तीर्थ स्थान जहाँ कुंड में स्नान करने का महात्म्य है । अरणोजी ।

अरणोजी—दे० अरणो सं० ३

अरणो-झरणो—(न०) मारवाड़ के छप्पन के पहाड़ों में एक तीर्थ स्थान जहाँ एक झरने के नीचे जलकुंड में स्नान करने का महात्म्य है । अरणि-निर्झर ।

अरणोद—(न०) १. आबू पर्वत पर सनसैट के नीचे के पर्वत में एक तीर्थ स्थान

जहां एक खंडित सूर्य मंदिर, जिसकी सूर्य मूर्त्ति पर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य का प्रकाश पड़ता है। **अरणोदजीरो मंदिर**। २. मेवाड़ का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान 'अरणोंद-गोतमजी'। ३. अरुणोदय। सूर्योदय। उषाकाल।

अरण्य—*(न०)* १. जंगल। वन। २. दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

अरण्य कांड—*(न०)* रामायण का तीसरा काण्ड।

अरत्त—*(वि०)* १. विरक्त। २. जो लाल रंग का न हो।

अरथ—*(न०)* १. धन। सम्पत्ति। २. शब्द का अभिप्राय। अर्थ। मतलब। ३. मनोरथ। ४. अभिप्राय। प्रयोजन। ५. निमित्ति। इष्ट। काम। *(क्रि० वि०)* लिये। निमित्त।

अरथ आणो—*(मुहा०)* १. काम में सहायक होना। २. उपयोग में आना।

अरथ-गरथ—*(न०)* १. धन और घर। २. धनमाल। ३. घर-बार।

अरथाकळ—*(अव्य०)* दे० अर्थाकळ।

अरथाणो—*(क्रि०)* १. अर्थ करके समझाना। २. अर्थ को विवरण विवेचन और उदाहरणों इत्यादि से स्पष्ट करना। ३. दुहराना। ४. स्मरण कराना। याद दिलाना। दे० अरथ आणो।

अरथात—*(अव्य०)* १. अर्थ यह है कि। २. अभिप्राय यह है कि। अर्थात्। यानी।

अरथावणो—दे० अरथाणो।

अरथी—*(वि०)* १. लोभी। अर्थी। २. याचक। ३. जरूरत वाला। ४. धनवान। *(ना०)* मुर्दे को श्मशान ले जाने की रथी। सीढी।

अरदली—*(वि०)* हुकुम बजाने वाला। चाकर। अर्दली।

अरदास—*(ना०)* १. अर्जदास्त। प्रार्थना। २. सिख सम्प्रदाय की गुरु प्रार्थना।

अरध—*(वि०)* १. अर्द्ध। आधा। *(क्रि० वि०)* नीचे।

अरधगोखो—*(न०)* डिंगल का एक छंद।

अरध भाख—*(न०)* डिंगल का एक छंद।

अरध भाखड़ी—*(ना०)* डिंगल का एक छंद।

अरध सावझड़ो—*(न०)* डिंगल का एक छन्द।

अरधाळी—*(ना०)* छंद की एक पंक्ति के दो भागों में का एक भाग। अर्द्धाली।

अरधांग—*(न०)* अर्द्धांग नामक एक वात रोग। पक्षाघात। २. आधा अंग। *(ना०)* अर्द्धांगिनी।

अरधांगणी—*(ना०)* दे० अरधाँगी।

अरधांगी—*(ना०)* अर्द्धांगिनी। पत्नी।

अरधूंस—*(न०)* १. एकाएक आपड़ना। आक्रमण। २. सेना।

अरधो—*(वि०)* आधा। आधो।

अरपण—दे० अर्पण।

अरपणो—*(क्रि०)* १. अर्पण करना। भेंट करना। २. देना। सौंपना।

अरब—*(न०)* १. सौ करोड़ की संख्या। २. एक देश का नाम।

अरबी—*(वि०)* १. अरब देश का। *(ना०)* अरबी भाषा।

अरबुद—*(न०)* अर्बुद। आबू।

अरबुदियो—*(न०)* आबू पर्वत।

अरभक—*(न०)* नवजात बालक। अर्भक।

अरभंग—*(न०)* १. रावल मल्लिनाथ के वीर पुत्र जगमाल के नगाड़े का नाम। अभरंग (विपर्यासनाम)। २. शत्रु का नाश करने वाला।

अरमान—*(न०)* इच्छा। अभिलाषा।

अरमोड़ो—*(वि०)* शत्रु को पीछे हटाने वाला।

अरर—*(अव्य०)* शोक, दुख, दर्द इत्यादि के कारण मुंह से निकलनेवाला एक शब्द।

अरराट—*(न०)* १. घोर शब्द। २. चिल्लाहट। ३. पीड़ा की चीस। ४. रुदन।

अरळ—*(न०)* १. खोटा इलजाम। दोपारोपण। आरोप। २. रोक। अवरोध। ३. मुसीबत। संकट। ४. उत्तरदायित्व। ५. राज्य भार। ६. अर्गला। **आगळ**। ७. शत्रु।

अरवजियो—*(न०)* एक वृक्ष।

अरवा—*(न०)* घोड़ा।

अरविंद—*(न०)* कमल।

अरस—*(न०)* १. आकाश। २ अर्श। ववासीर। ३. दुख। ४. अमैत्री। शत्रुता। *(वि०)* नीरस।

अरस-परस—*(क्रि० वि०)* १. आपस में। परस्पर। २. प्रत्यक्ष। *(न०)* १. साक्षात्कार। २. दर्शन और स्पर्श।

अरसाल—*(वि०)* शत्रु के लिए शल्य रूप *(न०)* किला।

अरसिक—*(वि०)* जो रसिक न हो।

अरसो—*(न०)* समय। काल। अर्मा।

अरहट—*(न०)* रहॅट। **अरट**।

अरहटणो—*(वि०)* शत्रु को भगानेवाला। *(क्रि०)* युद्ध करना। २. शत्रु को भगाना।

अरहर—*(ना०)* १. तुअर। २. तुअर की दाल। ३. उसका पौधा। दे० अरिहर।

अरंग—*(न०)* अप्रीति।

अरा—*(न० ब० व०)* बैलगाड़ी के पहिये की वे पटरियाँ जो पहिए के अंत: केन्द्र से चारों ओर फैली रहती हैं।

अराई—दे० आहरी।

अराजकता—*(ना०)* १. अशांति। २. विप्लव। ३. उपद्रव। ४. शासन व्यवस्था का अभाव।

अराजी—*(ना०)* खेत की जमीन।

अराट—*(न०)* शत्रु राज्य।

अराड़ो—*(वि०)* १. बहुत। २. तेज। *(न०)* शान्ति।

अराण—*(न०)* युद्ध। **आराण**।

अरात—*(न०)* १. शत्रु। २. दिन।

अराति—*(न०)* १. शत्रु। २. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मत्सर नामक विकार।

अराधणो—*(क्रि०)* आराधना करना।

आराधना—दे० आराधणो।

अरावो—*(न०)* १. छोटी तोप। २. तोपगाड़ी। ३. आरावों से सज्जित सेना। ४. सेना।

अरावो—*(न०)* १. बड़ी अराई। गेंडुरा। २. सांप का गोलाकार कुंडली लगाकर बैठना।

अराह—*(न०)* १. कुमार्ग। २. अधर्म।

अराहो—दे० अरावो।

अरि—*(न०)* १. शत्रु। २. विरोधी। ३. काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मत्सर ये छः विकार।

अरि-अंधार—*(न०)* सूर्य।

अरि-करि—*(न०)* सिंह।

अरि गंजण—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला।

अरिगाहण—दे० अरिगंजण।

अरिगाहणो—*(क्रि०)* शत्रु का नाश करना। *(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला।

अरिघड़—*(ना०)* शत्रु सेना।

अरिघड़ा—दे० अरिघड़।

अरिथड़—*(न०)* शत्रु सेना।

अरिथाट—*(न०)* शत्रु सेना।

अरिदळ—*(न०)* शत्रु सेना।

अरिपाल—*(न०)* १. शत्रु को रोकने वाला। २. प्रत्याक्रमण। ३. युद्ध।

अरिभंजण—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला।

अरियण—*(न० ब० व०)* अरिजन। शत्रुगण।

अरियाण—दे० अरियण ।

अरिवर—*(न०)* बड़ा शत्रु ।

अरिसाथ—*(न०)* शत्रुदल ।

अरिसाल—*(न०)* १. शत्रु के लिये शल्य रूप । २. किला । **अरसाल ।**

अरिहण—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला ।

अरिहर—*(वि०)* शत्रु का हरण करने वाला ।

अरिहंत—*(वि०)* शत्रु का नाश करने वाला । *(न०)* अरिहत । जिन । अर्हत

अरिहंतो—*(वि०)* अरिहंत ।

अरी—*(न०)* अरि । शत्रु । *(अव्य०)* १. स्त्रियों के लिये संबोधन । २. ही । निश्चय । ३. 'अरो' नर जाति का नारी रूप निश्चय ही, यहाँ, इधर इत्यादि अर्थों में । उरी ।

अरीझ—*(वि०)*नाराज । *(ना०)* नाराजगी । अप्रसन्नता ।

अरीठो—*(न०)* रीठे का वृक्ष और उसका फल । **आरेठो ।**

अरीढ—*(वि०)* पीठ नहीं दिखाने वाला ।

अरीत—*(वि०)* १. बिना रीतिका । *(क्रि०वि०)* बिना रीति के । *(ना०)* कुरीति । अरीति ।

अरीश—*(न०)* बड़ा शत्रु ।

अरीस—*(ना०)* १. क्रोवाभाव । शान्ति । २. अरीश ।

अरुचि—*(ना०)* १. रुचि का अभाव । अनिच्छा । २. घृणा ।

अरुण—*(न०)* १. सूर्य । २. सूर्य का सारथी । ३. लाल रंग । ४. लाली । *(वि०)* रक्त । लाल । **रातो ।**

अरुणाई—*(ना०)* लाली । ललाई ।

अरुणोद—*(न०)* अरुणोदय ।

अरुणोदय—*(न०)* १. सूर्योदय । २. उषा-काल ।

अरूठ—*(वि०)* १. जबरदस्त । २. अरुष्ट । प्रसन्न । राजी ।

अरूड़—*(वि०)* १. अत्यधिक । २. श्रेष्ठ । बढ़िया । ३. जो रूड़ो नहीं । असुन्दर । ४. कुरूप ।

अरूड़ो—दे० अरूड़ ।

अरूप—*(वि०)* जो रूपवान नहीं । २. जिसका कोई रूप नहीं । निराकार । ३. कुरूप । *(न०)* ईश्वर । परब्रह्म ।

अरूपी—*(वि०)* निराकार । *(न०)* ईश्वर ।

अरूबरू—*(अव्य०)* सामने । रोबरू । प्रत्यक्ष ।

अरे—*(अव्य०)* १. अपने से उतरते दरजे के व्यक्ति के लिये संबोधन का उद्गार । २. आश्चर्य, दुख, क्रोध, चिंता इत्यादि सूचक उद्गार ।

अरेस—*(न०)* १. शत्रु । २. युद्ध । ३. शत्रु-संहार । ४. आकाश । अरस । *(वि०)* १. सुरक्षित । २. हानि रहित । ३. अहिंसा । अरेप । ४. निष्कलंक ।

अरेह—*(न०)* १. शत्रु । २. युद्ध । ३. शत्रु संहार । ४. पुत्र । *(वि०)* १. बिना टूटा हुआ । दुरुस्त । **साजो ।** २. ठीक । ३. पवित्र ।

अरेहण—*(वि०)* १. शत्रु-संहारक । २.वीर । बहादुर । *(न०)* १. शत्रु समूह । २. युद्ध । ३. विघ्न । कलह । ४. पुत्र । ५. वंशज ।

अरो—*(न०)* बैलगाड़ी के पहिये का एक उपकरण । दे० 'उरो' अव्यय अर्थ ।

अरोग—*(वि०)* रोग रहित । नीरोग । *(न०)* १. कुशल । कुशलक्षेम । **कुसळखेम ।** २. सुख ।

अरोगणो—*(क्रि०)* १. भोजन करना । २. पीना । पान करना ।

अरोगी—*(ना०)* चिता । आरोगी । *(वि०)* नीरोगी ।

अरोड़—*(वि०)* १. नहीं रुकने वाला । २. जबरदस्त । ३. बहुत । अधिक । *(न०)* नहीं रुकना । बेरोक ।

अरोड़णी—*(क्रि०)* १. नहीं रोकना । जाने देना । २. रोकना । **रोड़णो** ।

अरोड़ो—दे० अरोड़ ।

अरोहक—*(वि०)* आरोहक । सवार । **असवार** ।

अरोहण—*(न०)* १. ऊपर की ओर जाना । चढ़ना । सवार होना । आरोहण ।

अरोहणो—*(क्रि०)* आरोहणो । चढ़ना । सवार होना ।

अर्थ—दे० अरथ ।

अर्थपिशाच—*(वि०)* धनलोलुप । बड़ा कंजूस ।

अर्थशास्त्र—*(न०)* अर्थनीति संबंधी वह शास्त्र जिसमें धनोपार्जन, रक्षण एवं वृद्धि का विधान हो ।

अर्थाकळ—*(अव्य०)* १. अर्थ के रूप में । २. भावार्थ के रूप में । *(न०)* १. रूपक । २. अर्थालंकार । ३. अर्थविशिष्टता । ४. अर्थकला ।

अर्थात्—*(अव्य०)* अर्थ यह है कि । अभिप्राय यह है कि । यानी । **अरथात** ।

अर्थालंकार—*(न०)* अर्थ के चमत्कार से संबंधित अलंकार ।

अर्ध—*(वि०)* १. आधा । अधूरा ।

अर्धमागधी—*(ना०)* प्राकृत भाषा का एक स्वरूप ।

अर्धाळी—*(ना०)* चौपाई की दो पंक्तियाँ । आधी चौपाई ।

अर्धांग—*(न०)* १. आधा अंग । २. पक्षाघात । लकवा ।

अर्धांगिनी—*(ना०)* पत्नी । अर्द्धांगिनी ।

अर्पण—*(न०)* १. प्रदान । २. समर्पण । भेंट । नजर ।

अर्पणो—*(क्रि०)* अर्पण करना । **अरपणो** ।

अर्बुद—*(न०)* आबू पर्वत । २. बादल । ३. अर्बुद गांठ का रोग ।

अर्बुदगिर—*(न०)* अर्बुदगिरि । आबू पर्वत ।

अर्वाचीन—*(वि०)* १. आधुनिक । २. नया ।

अर्श—*(न०)* बवासीर । **मस्सो** ।

अल—*(वि०)* व्यर्थ । फजूल ।

अळ—*(ना०)* १. पृथ्वी । २. विष । *(वि०)* व्यर्थ ।

अलका—*(न०)* अलकापुरी । कुबेर की पुरी ।

अलकावळि—*(ना०)* केशों की लटियें । अलकावलि ।

अलख—*(वि०)* १. जो दिखाई न दे । २. जो देखा न जा सके । ३. जो जाना न जा सके । *(न०)* ईश्वर परब्रह्म ।

अलख जगाणो—*(मुहा०)* अलख के नाम पर भीख मांगना ।

अलख निरंजण—*(न०)* ईश्वर ।

अलख पुरस—दे० अलख पुरुष ।

अलख पुरुष—*(न०)* परब्रह्म । ईश्वर ।

अळखामणो—*(वि०)* १. अप्रिय । अरुचिकर । २. अस्वभाविक । ३. असह्य । ४. अशिष्ट । ५. उद्दण्ड ।

अळखावणो—दे० अळखामणो ।

अलग—*(क्रि०वि०)* १. जुदा । पृथक् । २. दूर ।

अळगण—दे० अणगळ ।

अळगी—*(क्रि०वि०)* १. जुदी । पृथक् । २. दूर । *(ना०)* १. रजोदर्शन । २. रजोदर्शन का एकान्त वास । *(वि०)* १. निराली । २. एकान्त ।

अळगो—*(क्रि०वि०)* १. जुदा । पृथक् । २. दूर । *(वि०)* १. निराला । २. एकांत ।

अळगोजो—*(न०)* एक प्रकार की बांसुरी ।

अळगो-थळगो—*(वि०)* १. अलग-अलग । भिन्न प्रकार का । २. अकेला । ३. एकान्त ।

अलज—(वि०) निर्लज्ज ।

अळजो—(वि०) उद्विग्न । चिंतित ।

अलजो—(वि०) निर्लज्ज । अलज ।

अलज्ज—(वि०) निर्लज्ज ।

अलटो—(न०) १. बदनामी । २. लांछन । कलंक । ३. झूठा आरोप । झूठा कलंक ।

अलड़-वलड़—(क्रि० वि०) अंटसंट । अविचार पूर्वक ।

अळतो—(न०) १. अलक्तक । महावर । २. मेंहदी ।

अळथो—(वि०) व्यर्थ । निकम्मा ।

अलद्ध—(न०) १. अप्राप्ति (वि०) अप्राप्त ।

अलप—दे० अल्प ।

अलपताई—(ना०) १. न्यूनता । कमी । अल्पता । १. ओछापना । ३. चंचलता । ४. शैतानी ।

अलपतो—(वि०) १. चंचल । १. शैतान । ३. ओछा । हलका ।

अलवत—(अव्य०) १. अलवत्ता । निस्सन्देह । २. परंतु । ३. हाँ । ४. कम से कम ।

अलवेलियो—दे० अलवेलो ।

अलवेलो—(वि०) १. छैला । २. मौजी । ३. मस्त । ४. उदार । ५. खाऊ-खरचू ।

अलमस्त—(वि०) १. मतवाला । २. बेफिक्र ।

अलमारी—(ना०) काठ, लोहे आदि का खानेदार कपाट ।

अलल—(न०) १. घोड़ा । २. भाला । (वि०) १. अपार । बहुत । २. बहुत से । ३. आला दर्जे का ।

अलल-टप्पू—(वि०)१. ऊटपटांग । २. विना ठिकाने का । ३. विना अंदाज । ४. अंदाजन ।

अलल-हिसाव—(क्रि० वि०) १ लेन-देन के अंतर्गत बकाया रकम के पेटे में । २. चुकता हिसाव किये विना । विना हिसाव किये । ३. विना सोचे-समझे । यों ही । (वि०) बहुत ज्यादा ।

अळवदो—दे० अळवध ।

अळवध—(ना०) आपत्ति । संकट । अलवर्च ।

अळवधो—दे० अळवध ।

अळवळाट—(ना०) १. व्यर्थ का विलंब । २. विलंब करने के इरादे से की जाने वाली व्यर्थ की बातें । फालतू बातें । ३. बकवाद । ४. यों ही इधर-उधर देखना-फिरना ।

अळवाड़ो—(न०) झंझट । झमेला ।

अळवाणो—(वि०) विना जूते पहने हुए । नंगे पाँव । उळवाणो ।

अळवी—(वि०) १. दुसह । असह्य । २. कठिन । मुश्किल । ३. उलटी । विरुद्ध । ४. महँगी । ५. झगड़ालू ।

अलवेलियो—(न०) एक लोक गीत । दे० अलवेलो ।

अलवेल्लो—दे० अलवेलो ।

अलवेसर—(वि०) १. सदा प्रसन्न रहने वाला । २. सदा आनंदोत्सव मनाने वाला । मौजी । अलवेला । ३. उदारमना । उदाराशय । ४. असहायों का सहायक । ५. शृंगरित । अलंकृत । (न०) १. आनंदी पुरुप । २. अद्वितीय पुरुप । परमेश्वर । ईश्वर ।

अलवेसरी—(वि०) १. सदा प्रसन्न रहने वाली । २. सदा आनंदोत्सव मनाने वाली । ३. उदारमना । ४. असहायों की सहायक । (ना०) १. अद्वितीय नारी । २. सती स्त्री । ३. शक्ति । दुर्गा । ४. हिंगुलाज की अलि-वल्लभेश्वरी । हिंगलाज देवी ।

अळवो—(वि०)१. अविश्वासी । २. असह्य । ३. कठिन । ४ उलटा । ५. झगड़ालू ।

अलवो—(वि०) १. मौजी । अलवेला । २. मूक गूंगो ।

अळसाक—(न०) आलस्य । सुस्ती ।

अळसाणो—(क्रि०) १. काम की होड में सहयोगी को पीछे रख देना। काम में हरा देना। आलसाना। **अळाणो**। २. अलसाना। आलस करना। (न०) स्थगित। मुलतवी। **आळाणो**।

अळसियो—(न०) १. मिट्टी में पैदा होने वाला लंबा बरसाती कीड़ा। २. पेट में उत्पन्न होने वाला एक लंबा कीड़ा। केंचुआ। गिजाई।

अळसी—(ना०) अलसी। तीसी।

अळसूंट—दे० अतलूंज।

अळसेट—(ना०) १. बाधा। विघ्न। अड़चन। २. एतराज। आपत्ति। मुसीबत। (वि०) १. नियम विरुद्ध। २. अनुचित। ३. अनुपयुक्त। ४. रुका हुआ।

अळसेड़ो—(न०) १. कचरा। फूस। २. झगड़ा। टंटा।

अळही—दे० अळवी।

अलंकार—(न०) १. गहना। आभूषण। २. शृंगार। सुन्दर वेश-भूषा। ३. काव्य में शब्द या अर्थ का चमत्कार अथवा अनूठापन दिखाने वाले विविध तत्व। ४. शब्द तथा अर्थ की वह योजना जिससे काव्य की शोभा बढ़े। ५. शब्द अथवा अर्थ की चमत्कार वाली रचना। ६. शब्द तथा अर्थ की चमत्कृति। ७. बहत्तर कलाओं में की एक कला।

अलंग—(क्रि०वि०) १. दूर। २. ऊपर। (ना०) १. ओर। तरफ। २. दूरी। ३. मकान की ऊंचाई। ४. ऊंचाई। ५. घोड़ी की प्रसवदशा। **ठाण**।

अळा—(ना०) १. अग्नि। १. अलाव। ३. पृथ्वी।

अळाईयां—(ना०ब०व०) ग्रीष्म ऋतु की गरमी से शरीर मे उठने वाली पिटिकाएं। अम्होरी। अम्होरियां। गरमी दाने। **घळायां**।

अलाणो—दे० अपलाणो।

अळाणो—दे० अळसाणो।

अलाप—दे० आलाप।

अलापणो—दे० आलापणो।

अला-बला—(ना०) १. प्रेत बाधा। इल्लत। २. संकट। आफतें। बलाएं।

अलाम—(वि०) १. दुष्ट। बदमाश। २. नालायक। ३. वर्णसंकर। ४. चोर। ५. नीच।

अलायदो—(वि०) जुदा। अलग। अलहदा।

अलाय-बलाय—दे० अला-बला।

अलाव—(न०) १. आँवाँ। २. अग्निकुंड। ३. आग का ढेर। ४. तापने की धूनी।

अळावणो—दे० अळसाणो।

अलावा—(क्रि०वि०) अतिरिक्त। सिवाय। छोड़कर।

अलाह—(न०) १. अलाभ। हानि। २. अल्ला। खुदा। (वि०) लाभ रहित।

अलिअळ—(ना०) १. अलि-अवलि। भ्रमर पंक्ति। २. भ्रमर। भौंरा।

अलिय—(वि०) १. अलीक। २. अप्रतिष्ठित।

अलियळ—(वि०) १. मौजी। मन-मौजी। शौकीन। २. स्वतन्त्र। स्वच्छंद। ३. उदार। ४. दानी। (न०) १. अलि-कुल। भ्रमर समूह। २. भौंरा।

अलियावळ—(ना०) भ्रमर पँक्ति।

अळियो—(वि०) 'सळियो' का उलटा। १. झगड़ा खोर। **अळीवाळो**। २. अशिष्ट। अभद्र। ३. अव्यवस्थित। ४. केंचुआ। सूत सा लम्बा एक बरसाती कीड़ा। ५. नाज के अंदर का कंकड़ ढेला इत्यादि कचरा। ६. खेत में फसल के साथ उगने वाला घास।

अळी—(ना०) १. टंटा। फिसाद। २. झगड़ा। कलह। उपद्रव। (वि०) १. बुरी। खोटी। २. असत्य।

अलीक—(न०) १. कुमार्ग। २. मर्यादा-उल्लंघन। अमर्यादा। (वि०) १. मर्यादा रहित। २. कुपथगामी। ३. मिथ्या। ४. अप्रिय।

अळी-गळी—(क्रि० वि०) १. गली गली में। २. इधर-उधर।

अलीरा—(वि०) १. अखाद्य। २. अग्राह्य। ३. अनुचित। नाजायज। ४, अनुपयुक्त।

अलीध—(वि०) नहीं लिया हुआ। नहीं ग्रहण किया हुआ। (क्रि० वि०) १. बिना लिये ही २. लेने से पहले (क्रि० भू०) नहीं लिया।

अलीन—(वि०) १. अध्यानस्थ। ध्यान से रहित। २. अतन्मय। ३. विरत। अलग। ४. अनुचित। बेजा।

अलीबंध—(न०) ढाल कसने (बांधने) का कसना।

अलीमन—(न०) मुसलमान।

अळीयळ—(न०) अलियळ।

अलील—(वि०) १. बीमार। २. सूखा। हरा नहीं। ३. अनील।

अळुझाड़—(न०) १. रस्सी-धागे आदि में पड़ी हुई उलझन। २. टंटा-झगड़ा। ३. पेचीदा काम। ४. पेचीदापन। ५. उलझन। दिक्कत। ६. बिना सार-सम्हाल के बिखरा हुआ सामान। ७. अटाला। अटाळो।

अळुझाड़ो—दे० अळुझाड़।

अळूझणो—(क्रि०) उलझना। फँसना।

अळूझाणो—(क्रि०) उलझाना। फँसाना।

अलूरणी—(वि०) १. जिसमें नमक न हो। अलोनी। २. नीरस। ३. फीकी। ४. नापसन्द।

अलूरणो—(वि०) १. नमक रहित। अलोना। २. नीरस। ३. फीका।

अलेख—(वि०) १. लेख रहित। २. जिसका कोई लेखा नहीं। असंख्य। ३. जो लिखने के योग्य नहीं। (न०) अलख।

अलेखूं—(वि०) १. असंख्य। बेहिसाब। २. अत्यधिक।

अलेखै—(क्रि० वि०) व्यर्थ।

अलेप—(वि०) अलिप्त। निर्लिप्त।

अलेल—(वि०) अपार।

अलोइजणो—(क्रि०) मिश्रित होना।

अलोवणो—(क्रि०) गीली वस्तुओं को परस्पर मिलाने के लिये हाथ से हिलाना या मंथन करना। मिश्रित करना।

अलोवीजणो—दे० अलोइजणो।

अलोक—(वि०) अलौकिक। २. अद्भुत।

अलोच—(वि०) लोच रहित। कड़ा। कठिन। काठो। दे० आलोच।

अलोज—दे० आलोज।

अलोप—(वि०) अदृश्य। अंतर्द्धान। लुप्त।

अलोल—(वि०) नहीं हिलनेवाला। स्थिर। अचंचल।

अलोलक—(न०) स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

अलोवणो—(क्रि०) द्रव पदार्थ में चूर्ण आदि को हिला-चलाकर एक-मेक करना। मिलाना।

अलौकिक—(वि०) १. लोकोत्तर। २. असामान्य। अद्भुत। ३. अपूर्व। ४. अति मानुषी। ५. दिव्य।

अल्प—(वि०) १. थोड़ा। कम। २. छोटा।

अल्पजीवी—(वि०) कुछ समय तक जीने वाला। अल्पायु।

अल्पज्ञ—(वि०) बहुत कम जानने वाला। नासमझ।

अल्पप्राण—(न०) वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पांचवा अक्षर तथा य, र, ल, व वर्ण।

अल्पभाषी—(वि०) कम बोलने वाला।

अल्पभोजी—(वि०) थोड़ा खाने वाला।

अल्पविराम—(न०) वाक्य में किंचित ठहराव के स्थान पर प्रयुक्त एक विराम चिन्ह (,)। कामा।

अल्पायु—(वि०) कम आयु का ।

अल्पाहार—(न०) १. साधारण से कम भोजन । २. कलेवा । नाश्ता । **झारो** । **सिरावण** ।

अल्ल—(ना०)१. उपगोत्र । २. कुल नाम । ३. वंश की शाखा ।

अल्ला—(न०) परमेश्वर । खुदा ।

अल्हड़—(वि०) १. अल्प वयस्क । २. अनुभव हीन । ३. भोला । ४. मौजी । ५. अनाड़ी ।

अव—(उप०) दूषण, हीनता, अनादर, नीचाई, कमी, अभाव, निश्चय, व्याप्ति एवं विशिष्टता आदि का भाव प्रकट करने वाला एक उपसर्ग ।

अवकाश—(न०) १. फुरसत । खाली समय । २. छुट्टी । **रजा** । ३. विश्राम । ४. आकाश । ५. मौका । अवसर ।

अवकृपा—(ना०) नाराजी । अप्रसन्नता ।

अवक्कीवाण—(ना०) १. आश्चर्यजनक कथन । २. नहीं कहने योग्य कथन । ३. टेढ़ी बोली । ४. समझ में नहीं आने योग्य कथन । ५. जोर की चिल्लाहट ।

अवक्र—(वि०) जो टेढ़ा न हो । सीधा ।

अवक्रपा—दे० अवकृपा ।

अवखल्लणो— १. टेकवाला । २. अक्कड़ । ३. अरुचिकर ।

अवखाणो—दे० ओखाणो ।

अवगणणा—(ना०) १. अवगणना । उपेक्षा । २. अनादर ।

अवगणणो—(क्रि०) १. अवगणना करना । उपेक्षा करना । २. अनादर करना । ३. हेय समझना ।

अवगत—(वि०) १. जाना हुआ । ज्ञात । २. जो जाना न जा सके । ३. अवगति प्राप्त । (ना०) १. याद । स्मरण । **ओगत** । २. अवगति । ३ कुसमय ।

अवगति—(ना०) १. बुरी गति । कुदशा । २. भूत प्रेत की गति । ३. नरक में जाना । ४. जानकारी । ५. धारणाशक्ति । बुद्धि । (वि०) जिसकी गति जानी नहीं जा सके ।

अवगाढ—(वि०) १. शूरवीर । पराक्रमी । २. अशक्त । निर्बल । ३. गर्व रहित । ४. निमग्न । (न०) युद्ध ।

अवगात—(वि०) १. निर्बल । अशक्त । २. वीना । ३. निष्कलंक ।

अवगाळ—(ना०) १. कलंक । लांछन । **ओगाळ** । २. बदनामी । अपयश । ३. शर्म । **लाज** ।

अवगाह—(न०) १. स्नान । २. संकट का स्थान । ३. कठिनाई । ४. भीतर प्रवेश । ५. हाथी का मस्तक । ६. युद्ध । (वि०) जुदा । अलग । (क्रि० वि०) दूर ।

अवगाहणो—(क्रि० वि०) १. स्नान करना । २. युद्ध करना । ३. प्रवेश करना । ४. थाह लेना । ५. सोचना-विचारना । ६. गहरे विचार में पड़ना । ७. चिंतित होना । ८. हल-चल मचाना । ९. मारना । नाश करना ।

अवगुण—(न०) १. दुर्गुण । २. दोष । ३. हानि । ४. अपकार ।

अवगुणी—(वि०) १. दुर्गुणी । २. कुकर्मी । ३. कृतघ्न । कृतघणी ।

अवग्या—दे० अवज्ञा ।

अवघट—(वि०) १. विकट । दुर्गम । कठिन । **ओघट** । २. ऊबड़-खाबड़ ।

अवचळ—दे० अविचळ ।

अवछळ—(वि०) १. सुन्दर । २. पवित्र । ३. कपट रहित । निश्छल ।

अवछाड़—(वि०) १. सहायक । २. रक्षक । ३. कपड़े का ढक्कन । **ओछाड़** ।

अवछाह—(न०) उत्साह । **ओछाह** ।

अवजोग—(न०) १. अपयोग । दुर्योग । २. अशुभ मुहूर्त ।

अवज्ञा—*(ना०)* १. अनादर। तिरस्कार। २. उपेक्षा। अवहेलना। ३. लापरवाही।
अवझड़—दे० औझड़।
अवझाड़—*(ना०)* प्रहार। चोट। **औझाड़**।
अवझाड़णो—*(क्रि०)* १. प्रहार करना। २. काटना। ३. मारना। **औझाड़णो**।
अवट—*(वि०)* १. बिना मार्ग। ऊजड़। २. जिसमें वट न हो। ३. जो समाप्त न हो। *(न०)* १. विरुद्धाचरण। २. कुमार्ग। ३. विकटमार्ग। ४. खड्डा। ५. युद्ध। ६. निर्भिमान।
अवटणो—*(क्रि०)* १. औटना। उबलना। २. गुस्से होना। ३. मन में घुटना। **कुढणो**। ४. युद्ध करना।
अवटावणो—*(क्रि०)* १. हैरान करना। २. औटाना। उबालना। ३. हराना। ४. उलटना। ५. पूरा करना। निष्पन्न करना।
अवटीजणो—दे० अवटणो।
अवडी—*(वि०)* १. इतनी। २. बहुत। ३. इस प्रकार की। ऐसी।
अवडो—*(वि०)* १. इतना। २. बहुत। अधिक। इस प्रकार का।
अवढ—*(वि०)* १. वह (जंगल और जिसके वृक्षों की लकड़ी) जिसके काटने की मनाई हो। रक्षित। रखत। २. विकट। दुर्गम।
अवतरणो—*(क्रि०)* १. अवतार लेना। २. उत्पन्न होना। जन्म लेना। ३. उतरना।
अवतार—*(न०)* १. प्रादुर्भाव। २. जन्म। ३. ईश्वर का प्राणी रूप में प्राकट्य। शरीर धारी के रूप में ईश्वर का धरती पर उतरना।
अवतारणो—*(क्रि०)* १. उतारना। २. घुमाना। फिराना।
अवतारी—*(वि०)* १. अवतार लेने वाला। २. अलौकिक ईश्वरीय गुणों से युक्त। ३. दिव्य शक्ति सम्पन्न। ४. अलौकिक। ५. विरुद्धाचरण वाला (व्यंग्य में)।
अवथणो—*(क्रि०)* १. बिगड़ना। २. नाश होना। ३. अस्त होना। ४. हारना। ५. अवस्थित होना। विद्यमान होना। ६. होना। बनना।
अवदशा—*(ना०)* बुरी दशा। गिरी हालत।
अवदात—*(वि०)* १. उज्ज्वल। २. श्वेत। ३. शुद्ध। पवित्र। *(न०)* १. श्रेष्ठता। श्रेष्ठ चरित्र।
अवदाळ—*(वि०)* उदार।
अवदिशा—*(ना०)* विरुद्ध दिशा।
अवदीक—*(न०)* युद्ध।
अवदीत—दे० अवदात।
अवध—*(न०)* १. अयोध्या। २. अवधि। सीमा। ३. मयाद। ४. आयु। *(वि०)* वध नहीं करने योग्य।
अवधार—*(न०)* १. उद्धार। २. रक्षा। ३. निर्णय। ४. निश्चय।
अवधारणो—*(क्रि०)* १. उद्धार करना। २. रक्षा करना। ३. धारण करना। ४. स्वीकार करना। ५. निश्चय करना।
अवधि—*(ना०)* १. निश्चित समय। **मियाद**। २. सीमित समय। ३. सीमा। **हद**।
अवधू—*(न०)* १. योगी। २. संन्यासी। साधु। *(वि०)* १. मस्त। २. उच्छृंखल।
अवधूत—*(न०)* १. संसार से विरक्त। त्यागी। २. योगी। ३. नाथपंथी साधु। ४. संन्यासी। *(वि०)* मस्त।
अवधूताणी—*(ना०)* संन्यासिनी।
अवधेश—*(न०)* १. अवधपति। २. श्री रामचन्द्र।
अवधेश्वर—*(न०)* श्री रामचन्द्र।
अवध्वंस—*(न०)* १. नाश। संहार।
अवनत—*(वि०)* १. झुका हुआ। २. दुर्दशा-ग्रस्त। ३. पतित। गिरा हुआ। ४. नम्र।

अवनति—(ना०) १. पतन । ह्रास । २. दुर्दशा ।

अवनाड़—(वि०) १. अनम्र । २. योद्धा । वीर ।

अवनाड़ो—दे० अवनाड़ ।

अवनी—(ना०) पृथ्वी ।

अवनीप—(न०) राजा ।

अवप—(न०) अवपु । कामदेव । अनंग ।

अवबेल—(वि०) निराश्रय । निःसहाय ।

अवमान—(न०) अपमान । निरादर ।

अवमानणो—(क्रि०) १. अपमान करना । २. उलटा समझना । ३. आज्ञा का पालन नहीं करना ।

अवयव—(न०) १. शरीर का अंग । २. वस्तु का पूरक अंश । हिस्सा ।

अवर—(वि०) १. तुच्छ । २. न्यून । कम । ३. अधीनस्थ । ४. दूसरा । अन्य । (अव्य०) और ।

अवरजण—(न०) स्वीकार । अवर्जन ।

अवर जण—(न०) १. अन्य व्यक्ति । २. शत्रु । (वि०) पराया । अवर जन ।

अवरजणो—(क्रि०) १. इन्कार नहीं करना । २. स्वीकार करना । ३. निछावर करना ।

अवरण—(वि०) १. बिना वर्ण का । २. बिना रंग का । अवर्ण ।

अवरण-व्रण—(न०) परब्रह्म । ईश्वर ।

अवरथा—(वि०) वृथा । निरर्थक । फजूल ।

अवरपण—(न०) १. अनात्मीयता । २. परायापन । ३. भिन्नता । अलगाव । अळगापणो ।

अवरपणो—दे० अवरपण ।

अवरसण—(न०) १. अवर्षण । अनावृष्टि । २. दुष्काल । अकाळ ।

अवरसणो—दे० अवरसण ।

अवरंग—(न०) १. औरंगजेब बादशाह । २. बदरंग ।

अवरंगशाह—(न०) औरंगशाह । औरंगजेब बादशाह ।

अवराधणो—दे० आराधणो ।

अवराधन—दे० आराधना ।

अवरापण—(वि०) क्वारा । दे० अवरपण ।

अवराँ—(अव्य०) १. दूसरों ने । २. दूसरों को । औरों को । दूजाँनै ।

अवरी—(वि०) १. अविवाहिता । क्वारी । कुँआरी । २. वह जिसने युद्ध नहीं किया हो (सेना) । (ना०) १. अप्सरा । २. एक नाग कन्या ।

अवरेख—(न०) १. अनुमान । २. विचार । ३. निश्चय । ४. अवलोकन ।

अवरेखणो—(क्रि०) १. अनुमान करना । २. विचार करना । ३. निश्चय करना । ४. देखना । अवलोकन करना ।

अवरेण—(अव्य०) १. दूसरों के द्वारा । औरों से । २. शत्रुओं के द्वारा । (वि. ब. व.) दूसरे । दूजा ।

अवरेव—दे० उरेव ।

अवरो—(वि०) १. क्वारा । कुँआरो । २. दूसरा । दूजो ।

अवरोखणो—(क्रि०) १. रोष करना । क्रोध करना । २. प्रसन्न होना ।

अवरोध—(न०) १. रुकावट । २. अड़चन । बाधा ।

अवरोधक—(वि०) १. रोकने वाला । रोकणियो । २. बाधा डालने वाला ।

अवरोधणो—(क्रि०) १. रोकना । २. रुकावट डालना । बाधा डालना ।

अवरोह—(न०) १. उतार । २. पतन । गिराव । ३. ऊपर के स्वरों से नीचे के स्वरों पर आना । आलाप का नीचे आना (संगीत) । 'आरोह' का उलटा स्वर ।

अवल—(वि०) १. पहला । प्रथम । २. उत्तम । श्रेष्ठ । ३. असल ।

अवळण—(न०) १. नहीं लौटना। २. सुधी नहीं लेना। ३. बेखबर।

अवळणा— (ना०) असुधि। बेखबर।

अवळणो—(क्रि०) १. नहीं लौटना। वापिस नहीं आना। २. नहीं मुड़ना।

अवलंब—(न०) सहारा। आश्रय। आसरो।

अवलंबणो—(क्रि०) १. सहारा लेना। आधार लेना। २. आधार रखना।

अवळाई—(ना०) १. टेढाई। २. चक्कर। घूम। ३. बदमाशी।

अवलियो—(न०) औलिया। पहुँचा हुआ फकीर। २. सिद्ध पुरुष।

अवळी—(वि०) १. विपरीत। विरुद्ध। २. टेढ़ी। (ना०) पंक्ति। अवलि।

अवळीमाण—दे० अमलीमाण।

अवळू—दे० ओळू।

अवळूड़ी—एक लोक गीत। दे० ओळू।

अवळै—(क्रि० वि०) शरण में।

अवळो—(वि०) १. विपरीत। विरुद्ध। २. टेढ़ा। ३. चक्कर वाला। घूमवाला।

अवळो आवणो—(मुहा०) प्रसव के समय भ्रूण का आड़ा हो जाना। आडोआणो।

अवळो करणो—(मुहा०) उलटा करना। ऊँधो करणो।

अवळो वहणो—(मुहा०) १. विरुद्धाचरण करना। कुमार्ग पर चलना।

अवळो व्हेणो—(मुहा०) विरुद्ध हो जाना।

अवळो-सवळो—(वि०) १. उलटा-सुलटा। २. जैसा-तैसा।

अवश—(वि०) १. बेवश। मजबूर। लाचार। २. परतंत्र।

अवश्य—(क्रि० वि०) १. जिस पर कोई वश न हो। निश्चित। जरूर। २. अनिवार्य।

अवस—(क्रि० वि०) अवश्य। जरूर। (वि०) १. जो वश में नहीं किया जा सके। २. अवश। विवश।

अवसर—(न०) १. महफिल। २. नृत्य। ३. मौका। समय। ४. बार। दफा। ५. वारी। पारी। ६. मृतक भोज। औसर। मौसर। ७. कोई विशेष आयोजन। आयोजन।

अवसर चूकणो—(मुहा०) अनुकूल परिस्थित या मौके का हाथ से गँवा देना।

अवसाऊ—(वि०) आवश्यकीय। जरूरी। (क्रि० वि०) एकाएक। अचानक।

अवसाण—(न०) १. मृत्यु। मरण। २. मौका। अवसर। ३. विराम। ४. ढंग। ५. चेत। होश। ६. युद्ध। ७. अहसान।

अवसाण-सिद्ध—(वि०) १. मृत्यु को सार्थक बनाने वाला। २. मृत्यु को सिद्ध करने वाला। ३. समय पर काम सिद्ध करने वाला। ४. समय का लाभ उठाने वाला। ५. युद्ध में वीरगति प्राप्त करने वाला। ६. विजयी।

अवसाद—(न०) १. विषाद। २. थकावट। ३. नाश। ४. मृत्यु।

अवसाप—(न०) १. यश। कीर्ति। २. वैभव। ३. बड़प्पन। ४. उदारता। ५. वदान्यता। औसाप। ६. सामर्थ्य। ७. शौर्य। ८. शक्ति। बल। ९. उपकार।

अवस्था—(ना०) १. आयु। उम्र। २. दशा। हालत। ३. आयुष्य के चार अंश—बाल्य, कौमार, यौवन और जरा। ४. वेदान्त के अनुसार चार अवस्थाएँ—जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति और तुर्य। ५. बुढ़ापा। वृद्धावस्था।

अवस्थान—(न०) १. स्थान। २. टिकाव। ३. स्थिति।

अवहार—(वि०) १. बंधनमुक्त। २. शिथिल। (न०) १. युद्ध विराम। विराम। २. शिथिलता।

अवहेलना—(ना०) अवज्ञा। तिरस्कार।

अवंक—*(वि०)* सीधा ।

अवंको—*(वि०)* १. सीधा । टेढ़ा नहीं । २. सरल ।

अवंगी—*(वि०)* १. वह जहाँ किसी का आवागमन न हो (स्थान) । एकान्त । २. जहाँ कोई जा न सके । दुर्गम । ३. कठिन । ४. सुविधा रहित । *(ना०)* १. एकांत जगह । २. भयावनी जगह ।

अवंगो—*(वि०)* १. दुर्गम । २. कठिन । ३. झंझटवाला । ४. कष्ट साध्य । ५. एकान्त । ६. भयावना (स्थान) ।

अवंती—*(ना०)* १. मालवा की प्राचीन, ऐतिहासिक राजधानी का एक नाम । उज्जयिनी । उज्जैन । २. मालवा का प्राचीन नाम । मालव ।

अवाई—*(ना०)* १. आने की क्रिया । आगमन । २. संदेश ।

अवाऊ—दे० अवसाऊ ।

अवाक—*(वि०)* १. मौन । चुप । २. चकित । अचंभित । ३. जिसमें चेप न हो । **चीकासहोरा** । ४. सत्त्व रहित । **सतहीण** ।

अवाकी—*(वि०)* १. मौन रहने वाला । नहीं बोलने वाला । **मौनी** । २. मूक । **गूंगो** । ३. नहीं बोलने योग्य । ४. लज्जित । ५. चकित । ६. अप्रामाणिक ।

अवाकी वाण—दे० अवक्की वाण ।

अवाचा—*(न०)* १. प्रतिज्ञा पालन की मुक्ति । की हुई प्रतिज्ञा के प्रतिबंध की छुट्टी । २. प्रतिज्ञा का रद होना । **वाचा-अवाचा** ।

अवाची—*(ना०)* दक्षिण दिशा ।

अवाच्य—*(वि०)* १. अवर्ण्य । अकथ्य । २. जो पढ़ा न जा सके ।

अवाज—*(ना०)* १. आवाज । ध्वनि । बोली । २. पुकार । ३. स्वर । सुर ।

अवाड़ो—*(न०)* पशुओं के लिये बनाया हुआ पानी पीने का थाला या खेली । उवारा । **खेळी** । **हवाड़ो** ।

अवादान—दे० आवादान ।

अवादानी—*(ना०)* १. आमदनी । २. आवादी ।

अवादो—*(न०)* १. वादा । वायदा । २. मियाद । ३. वादा खिलाफी । ४. स्वाद रहित । **अस्वादो** । **असवादो** । ५. कई दिन पहले का बना हुआ (खाद्य पदार्थ इत्यादि) **बासी** ।

अवार—*(ना०)* १. देर विलंब । *(क्रि०वि०)* तुरंत । अभी । । **अवार** ।

अवार-नवार—*(क्रि०वि०)* १. वेर-अवेर । २. कभी-कभी । **कदै-कदै** ।

अवावर—*(वि०)* बहुत समय से काम में नहीं लाया हुआ । अव्यवहृत ।

अवावर खातो—*(न०)* अव्यवस्था । बद-इंतजामी । **गड़बड़खातो** । गड़बड़ ।

अवावरखानो—*(न०)* वह स्थान जहाँ बहुत समय से अव्यवस्थित ढंग से और अव्य-वहृत वस्तुएं पड़ी हों । २. अव्यवहृत वस्तुओं का ढेर ।

अवास—*(न०)* १. उपवास । व्रत । २. आवास । घर । *(वि०)* १. बिना घर का । आवास रहित । २. गंध रहित ।

अवाह—*(न०)* आँवाँ । भट्टा । *(वि०)* प्रहार रहित ।

अवांग—*(वि०)* वाँगा हुआ नहीं । तेल दिया हुआ नहीं (पहिले की धुरी में) ।

अवांछनीय—*(वि०)* १. जो इष्ट न हो । २. नहीं चाहा हुआ । ३. अनुचित ।

अवांतर—*(वि०)* १. अंतर्गत । २. मध्य-वर्ती । ३. गौण । अतिरिक्त ।

अविग्रट—दे० अविग्राट ।

अविग्राट—*(न०)* १. युद्ध । २. सेना । ३. तलवार । *(वि०)* १. जबरदस्त । वीर । २. उद्दंड । ३. दृढ़ । मजबूत । ४. भयंकर ।

अविकल—(वि०) १. जो विकल न हो। अव्याकुल। २. क्रमबद्ध। व्यवस्थित। ३. ज्यों का त्यों। ४. पूरा। सम्पूर्ण।

अविकारी—(वि०) १. विकार रहित। निर्विकार। २. रोग रहित। नीरोग। ३. जिसके रूप में कभी विकार या परिवर्तन नहीं होता ऐसा (शब्द) अव्यय। (व्या०)

अविगत—(वि०) १. अज्ञात। २. अज्ञेय। ३. अनिर्वचनीय। ४. विवरण रहित। (न०) परब्रह्म।

अविचळ—(वि०) १. स्थिर। ध्रुव। २. दृढ़। धीर। निडर।

अविचार—(न०) १. बुरा विचार। २. अविवेक।

अविचारी—(वि०) अविवेकी। नासमझ।

अविणास—(न०) अविनाश। नाशरहित।

अविणासी—(वि०) १. जिसका नाश न हो। अविनाशी। २. नित्य। शाश्वत। (न०) परब्रह्म।

अविद्या—(ना०) १. विद्या का अभाव। २. मूर्खता। ३. अज्ञान। ४. माया का एक भेद। ५. माया।

अविधान—(न०) १. अभिधान। नाम। २. अव्यवस्था। ३. अनियम। ४. विधान के विरुद्ध।

अविनय—(ना०) १. उद्दंडता। २. धृष्टता।

अविनाश—दे० अविणास।

अविनाशी—दे० अविणासी।

अवियट—दे० अविआट।

अवियाट—दे० अविआट।

अवियार—(न०) अविचार।

अविरळ—(वि०) १. विरल नहीं। सामान्य। २. घट्ट। ३. घना। ४. सटा हुआ। ५. सतत। लगातार।

अविराम—(क्रि० वि०) विराम रहित। बिना रुके।

अविवेक—(न०) विवेक हीनता। नासमझी। बेवकूफी।

अविवेकी—(वि०) १. विवेकहीन। नासमझ। बेवकूफ। २. अविचारी।

अविश्वास—(न०) विश्वास का अभाव।

अविश्वासी—(वि०) १. जिसका कोई विश्वास न करे। २. जो किसी पर विश्वास न करे। विश्वास न करने वाला।

अविहट—दे० अविआट।

अविहड़—दे० अविआट।

अवीढो—(वि०) १. वीर। योद्धा। २. अद्भुत। अनोखा। ३. कठिन। दुरूह। विषम। ४. जबरदस्त। ५. भयंकर।

अवींध—(वि०) १. बिना बींधा हुआ। अविद्ध। अणवींध।

अवूठणो—(न०) अवर्षण। अवरसण। (क्रि०) वर्षा न होना।

अवेखणो—(क्रि०) देखना। जोवणो।

अवेढी—(वि०) १. कठिन। २. विकट। भीषण। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ४. निर्जन। ५. भयावना। ६. अद्भुत। ७. जबरदस्त। ८. चिन्ह रहित। ९. घाव रहित।

अवेढो—दे० अवेढी।

अवेर—(ना०) १. हिफाजत। सम्हाल। सुरक्षा। २. सुव्यवस्था। ३. विवेकपन का उपयोग और उसका फल। ४. मितव्ययिता। ५. सुघड़ता। निपुणता। ६. देरी। विलंब।

अवेरणो—(क्रि०) १. सम्हाल करके रखना। सम्हालना। २. संग्रह करना। ३. सुव्यवस्थित करना या रखना। ४. वस्तु को वापिस लौटाना या सम्हलाना।

अवेरो—(न०) १. काम करते समय होने वाला बरतन, औजार आदि वस्तुओं का

बिखराव। २ बिखरी हुई वस्तुएँ। ३. नित्य व्यवहार की वे वस्तुएँ जिन्हें काम करने के बाद यथास्थान रखना है।

अवेळा—(ना०) १. विलंब। देर। २. असमय। कुसमय। (क्रि० वि०) शीघ्र। झट। बेगो।

अवेर—(न०) १. अवयव। २. भेद। रहस्य।

अवेस—(क्रि० वि०) अवश्य। जरूर। (वि०) वेश रहित। (न०) आवेश।

अवेसास—(न०) अविश्वास।

अवैं—(सर्व०) १. उसने। २ उन्होंने।

अवोचरण—(न०) पर्दानशीन औरतों के ओढ़ने या साड़ी के ऊपर ओढ़ने का एक वस्त्र।

अवोड़ो—दे० औंड़ो।

अव्यक्त—(वि०) १. अप्रकट। २. अगम्य। ३. नहीं कहा हुआ। (न०) ईश्वर।

अव्यय—(वि०) १ व्यय रहित। २. विकार रहित। अविकारी। ३. सदा एक रूप। (न०) सभी लिंगों, वचनों, कारकों इत्यादि में अपरिवर्तित रहने वाला शब्द। (व्या०)

अव्यवस्था—(ना०) कुव्यवस्था। व्यवस्था का अभाव। बदइंतजामी।

अव्यवहारू—(वि०) जो व्यवहार में न आ सके। व्यवहार के उपयुक्त नहीं।

अशकुन—(न०) बुरा शकुन।

अशक्त—(वि०) निर्बल।

अशक्ति—(ना०) निर्बलता। कमजोरी।

अशरण—(वि०) १. निराधार। २. अनाथ।

अशरण-शरण—(वि०) निराधार को शरण देने वाला। (न०) ईश्वर।

अशांत—(वि०) १. बेचैन। २. क्षुब्ध।

अशांति—(न०) १. बेचैनी। २. अस्थिरता। ३. क्षुब्धता।

अशिक्षित—(वि०) अनपढ़।

अशिव—(वि०) १. अमंगलकारी। २. बीभत्स। (न०) अमंगल।

अशिष्ट—(वि०) १. उजड्ड। गँवार। २. अभद्र।

अशुद्ध—(वि०) १ अपवित्र। २. सदोष। ३. भूलयुक्त। गलत। खोटी। खोटो।

अशुद्धि—(ना०) १. अपवित्रता। २. भूल। गलती। खोट।

अशुभ—(वि०) १. अमंगल। २. पाप। अपराध। ३. खोटो।

अशेष—(वि०) १. न बचा हुआ। समाप्त। २. पूरा। ३. अनंत। अपार।

अशोक—(वि०) शोक रहित। (न०) एक अति प्रसिद्ध प्राचीन मगध सम्राट। २. एक प्रसिद्ध मांगलिक वृक्ष।

अशौच—(न०) १. अपवित्रता। २. वह अशुद्धि जो परिवार में जनन या मृत्यु पर मानी जाती है। सूतक।

अश्रद्धा—(ना०) १. श्रद्धा का अभाव। २. घृणा। सूग। ३. अनास्था।

अश्रु—(न०) आँसू।

अश्रुत—(वि०) नहीं सुना हुआ।

अश्लील—(वि०) १. कामाचार संबंधी। २. कुत्सित। ३. गंदो। भद्दा। फूहड़।

अश्व—(न०) घोड़ा।

अश्वमेध—(न०) प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध यज्ञ।

आषाढ—(न०) असाढ़ मास।

अष्ट—(वि०) आठ। (न०) आठ की संख्या। '८'

अष्ट कल्याणी—(वि०) १. आठ श्वेत शुभ चिन्हों वाला (घोड़ा)। चारों पाँव, ललाट, छाती, कंधा तथा पूंछ जिसके सफेद हों वह (घोड़ा)। अष्टमंगळी। २. खाने-पीने में पवित्रता-अपवित्रता, छुआछूत, शुद्धाशुद्ध तथा सफाई इत्यादि का जहाँ विचार तथा व्यवस्था न हो। अठ कल्याणी।

अष्टकुळ—(न०) १. सर्पों के आठ कुल। २. पर्वतों के आठ कुल।

अष्टछाप—(न०) आठ सर्वोत्तम पुष्टिमार्गी कवियों का वर्ग।

अष्टधातु—(ना०) सोना, चाँदी, तांबा, राँगा, जस्ता सीसा, लोहा और पारा।

अष्ट नायिका—(ना०) काव्य शास्त्र में वर्णित अवस्था भेद की तीन—मुग्धा, मध्या और प्रौढा नायिकाओं के अतिरिक्त आठ प्रकार की नायिकाएँ—स्वाधीन-पतिका, खंडिता, अभिसारिका, कलहांत-रिता, विप्रलब्धा, प्रोषितभर्तृका, वासक-सज्जा और विरहोत्कंठा।

अष्टपद—(न०) १. सिंह। २. मकड़ी। ३. सोना। सुवर्ण।

अष्ट पहर—(ना०ब०व०) दिन-रात के आठ पहर। आठपहर का समय। आठों पहर।

अष्टभुजा—(वि०) आठ भुजाओं वाली। (ना०) दुर्गा।

अष्टमंगळी—दे० अष्ट कल्याणी।

अष्ट मंगळीक—दे० अष्ट मंगळी।

अष्टमी—दे० आठम।

अष्टसिद्धि—(ना०) आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व और वशित्व।

अष्ट सौभाग्य—(न०ब०व०) सौभाग्यवती स्त्री के आठ चिन्ह—(१) मांग में सिंदूर, (२) ललाट पर कुंकुम की टीकी (बिंदी), (३) आँख में काजल, (४) नाक में वाली (नथ), (५) कानों में कुंडल, टोटी, झेला इत्यादि, (६) गले में हार (पोतमाला), (७) हाथों में चूड़ा, (८) पाँवों में झाँझर, कड़ले इत्यादि।

अष्टाध्यायी—(ना०) पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय है।

अष्टावक्र—(न०) एक प्रसिद्ध ऋषि। (वि०) शरीर के आठों ही अंगों में बाँका-टेढा। कूबड़ो।

अस—(न०) अश्व। घोड़ा। (वि०) ऐसा।

असई—(वि०) असती। कुलटा।

असखेधो—(न०) १. झगड़ा। २. बोल-चाल। विवाद। ३. छल कपट। ४. छेड़-छाड़।

असखेल—(ना०) हँसी-मजाक। दिल्लगी। मसखरी।

असगंध—(न०) अश्वगंधा नाम की एक झाड़ी तथा औषधि। आसगंध। आगंध।

असगुन—(न०) अशकुन। अपसुकन।

असगो—(वि०) १. जो सगा न हो। २. जिससे रिश्ता न हो। (न०) शत्रु।

असज्ज—(वि०) १. असाध्य। २. तैयार नहीं। सजा हुआ नहीं। ३. टूटा-फूटा।

असज्जन—(वि०) १. जो सज्जन नहीं। दुष्ट। २. शत्रु।

असज्झ—दे० असज्ज।

असट—दे० अष्ट।

असड़ी—(वि०) ऐसी। इस प्रकार की। ऐड़ी।

असड़ो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का। ऐड़ो।

असण—(न०) १. भोजन। अशन। २. बिजली। ३. वज्र। ४. बाण। ५. ओला।

असणी—(ना०) बिजली। अशनि। खिवण।

असत—(वि०) १. असत्य। मिथ्या। २. अधर्मी। अन्यायी। ३. कायर। ४. बुरा। खराब। ५. सड़ा हुआ। ६. सत्व-हीन। ७ अशक्त। ८. अस्त। तिरोहित।

असत धान—(न०) १. हलकी किस्म का अनाज। २. नहीं खाने योग्य सड़ा-गला अनाज। ३. अग्राह्य अनाज। ४. अधर्म की कमाई का दाना।

असताई—(वि०) १. कायर। डरपोक। बीकण। २. सत्वहीन। ३. शक्तिहीन। ४. झूठा।

असती—(वि०) १. कंजूस । २. कायर । ३. दुराचारी । पापी । ४. विधर्मी । ५. अन्यायी । ६. झूठा । ७. अशक्त । (ना०) १. पतिव्रता धर्म को नहीं पालन करने वाली स्त्री । २. कुलटा । ३. व्यभिचारिणी । बिगड़ियोड़ी ।

असत्य—(वि०) मिथ्या । झूठ । असत ।

असथळ—(न०) साधुओं के रहने का स्थान । असथल । मठ ।

असथान—(न०) स्थान । जगह ।

असद—(वि०) १. असत्य । २. खराब । ३. खोटा ।

असन—दे० असण ।

असनान—(ना०) स्नान । नहान ।

असनाळ—(ना०) १. घोड़े पर कसी जाने वाली बंदूक । २. घोड़े के खुर की नाल ।

असप—(न०) अश्व । घोड़ा । अस्प ।

असपत—दे० असपति ।

असपताल—(ना०) १. औषधालय । दवाखाना । २. चिकित्सालय । हॉस्पिटल ।

असपति—(न०) १. राजा । २. बादशाह । ३ अश्वपति । घोड़ों का स्वामी ।

असफळ—(वि०) असफल । विफल ।

असबाब—(न०) सामान ।

असभ्य—(वि०) अशिष्ट । गँवार ।

असभ्यता—(ना०) अशिष्टता । गँवारपन ।

असम—(वि०) १. जो एकसा न हो । २. ऊबड़-खाबड़ । ३. असमान । असदृश्य । ४. अतुल्य ।

असमझ—(ना०) १. मूर्खता । २. अजानता । (वि०) मूर्ख । बेवकूफ ।

असमत्थ—(वि०) १. असमर्थ । अशक्त । २. अयोग्य ।

असमय—(न०) १. खराब समय । कुसमय । बेवक्त ।

असमर—(ना०) तलवार ।

असमर-झल—(वि०) खड्गधारी ।

असमरथ—दे० असमर्थ ।

असमर्थ—(वि०) १. सामर्थ्यहीन । अशक्त । २. अयोग्य ।

असमंजस—(ना०) १. अनिश्चय की मानसिक स्थिति । २. दुविधा ।

असमंध—(न०)१. शत्रुता । २. असम्बन्ध ।

असमाण—(न०) आसमान । आकाश । (वि०) असमान । अतुल्य ।

असमाथ—दे० असमत्थ ।

असमाध—(न०) १. उपद्रव । २. रोग । ३. पीड़ा । ४. मृत्यु ।

असमाधणो—(क्रि०) मरना । अवसान होना ।

असमाधियो—(वि०) १. मरणासन्न । २. रोगी । ३. बेचैन । ४. मरा हुआ । (भू०क्रि०) मर गया ।

असमान—(वि०) १. जो बराबर न हो । अतुल्य (न०) आकाश । आसमान ।

असमाप्त—(वि०) जो पूरा न हुआ हो । अपूर्ण । अधूरो ।

असमेध—दे० अश्वमेध ।

असम्मत—(वि०) १. असहमत । २. जो राजी न हो ।

असर—(ना०) १. प्रभाव । २. तासीर । गुण । ३. परिणाम । दे० असुर ।

असरचो—(न०) १. भ्रम मूलक बात । २. विवाद । ३. गलत फहमी । भ्रम । ४. झगड़ा । टंटा । ५. कलह । ६. मनोमालिन्य । ७. अविश्वास ।

असरण—दे० अशरण ।

असरण-सरण—दे० अशरण-शरण ।

असरणो—(क्रि०) १. काम नहीं चलना । २. काम नहीं बनना । (वि०) शरणरहित । आश्रय रहित ।

असरधा—दे० अश्रद्धा ।

असराफ—(वि०) १. अशराफ । शरीफ । २. सज्जन ।

असराळ—(वि०) १. भयंकर । २. जबर-दस्त । (क्रि०वि०) निरंतर । असरार । (न०) असुर समूह ।

असल—(वि०) जो बनावटी न हो । सच्चा । खरा । २. शुद्ध । खालिस । ३. कुलीन । ४. खास । मुख्य । (न०) १. मूलधन । २. जड़ । बुनियाद ।

असळाक—(ना०) १. आलस्य । २.मजाक । ३. छेड़छाड़ ।

असळाकणो—(क्रि०) आलस से अंग मोड़ना । २. छेड़छाड़ करना ।

असलियत—(ना०) वास्तविकता ।

असली—दे० असल ।

असलील—दे० अश्लील ।

असव—दे० अश्व ।

असवादो—(वि०) १. बिना स्वाद का । स्वाद रहित । २. बिगड़े हुए स्वाद का ।

असवार—(न०) सवार ।

असवारी—(ना०) १. सवारी । २. शोभा-यात्रा । जुलूस । ३. आक्रमण ।

असह—(न०) शत्रु । (वि०) नहीं सहने योग्य । असह्य ।

असहण—(न०) शत्रु ।

असहयोग—(न०) सहयोग न देने का भाव । साथ न देना ।

असहाय—(वि०) जिसका कोई सहायक न हो । निःसहाय ।

असहाँ—(सर्व०) १. हमको । २. हमारा । ३. मुझको । (अव्य०) असहायजनों को ।

असही—(न०) शत्रु । (वि०) १. जो शुद्ध न हो । २. असह्य । ३. नहीं सहन करने वाला ।

असहो—(न०) शत्रु । (वि०) असह्य ।

असंक—(वि०) १. शंका रहित । भ्रम रहित । २. निर्भय । निडर ।

असंख—(वि०) असंख्य । अगणित ।

असंख प्रवाड़ै जैतवादी—(वि०) असंख्य युद्धों में विजय प्राप्त करने वाला । (न०) चित्तौड़ के राणा रायमल के अत्यन्त बलशाली और असंख्य युद्धों में (कभी नहीं हार करके) विजय प्राप्त करने वाले पुत्र पृथ्वीराज का विरुद ।

असंख्यात—(वि०) अगणित ।

असंग—(वि०) १. संग रहित । अकेला । २. निर्लिप्त ३. विरक्त ।

असंगत—(वि०) १. असंबद्ध । २. अलग । ३. अनुचित ।

असंगी—(वि०) विरक्त ।

असंत—(वि०) असाधु । दुष्ट । दुर्जन ।

असंतोष—(न०) १. संतोष का अभाव । २. अतृप्ति । ३. अप्रसन्नता ।

असंध—(वि०) १. बिना संधा हुआ । २. टूटा हुआ । ३. संधि रहित । बिना साँध का । ४. बिना टूटा हुआ । साबुत । (न०) कवच ।

असंधो—दे० असंध । दे० असँधो ।

असंप—दे० कुसंप ।

असंपड़—(वि०) १. नहीं प्राप्त होने वाला । २. बिना स्नान किया हुआ ।

असंभ—(वि०) १. असंभव । २. वीर । ३. अद्वितीय । ४. भयंकर । ५. बहुत । (न०) १. स्वयंभू । अजन्मा । २. शिव । ३. युद्ध ।

असंभम—दे० असंभव ।

असंभव—(वि०) जो संभव न हो । अन-होना । नामुमकिन ।

असंभ्रम—(वि०) १. बिना जल्दबाजी के । बिना हलचल । शांत । बिना घबराहट । २. बिना चक्कर खाये । सीधा । (न०) १. अव्याकुलता । शांति । चैन ।२. निड-रता । ३. संशय,रहित अवस्था । असंशय ।

असाइत—(न०) १५वीं शती का एक कवि जिसने 'हंसाउळी' काव्य की रचना की थी ।

असाढ—(न०) आषाढ मास।
असाता—दे० असांयत।
असाध—(न०) असाधु। असज्जन। (वि०) १. असाध्य। २. जो साधा न जा सके।
असाधारण—(वि) जो साधारण न हो। असामान्य।
असाधु—(वि०) असज्जन। दुष्ट।
असाध्य—(वि०) १. ठीक न होने वाला (रोग)। २. न हो सकने वाला। ३. जो सिद्ध न हो सके। ४. कठिन। दुष्कर।
असामी—दे० आसामी।
असार—(न०) १. आसार। चाल चलन। रहन सहन। २. वातावरण। ३. ढंग। ४. लक्षण। ५. दीवार की चौड़ाई। (वि०) सार रहित। निःसार।
असाल्तन—(अव्य०) स्वयं। खुद। आप।
असाळियो—(न०) एक वनौषधि। अहालिम। चंद्रसूर।
असावधान—(वि०) बेपरवाह। गाफिल।
असावधानी—(ना०) बेपरवाही।
असावरी—दे० आसावरी।
असांयत—(ना०) अशांति। बेचैनी।
असि—(ना०) १. तलवार। २ घोड़ा।
असित—(वि०) १. काला। २. नीला।
असिद्ध—(वि०) १. जो सिद्ध न हो। अप्रामाणिक। २. अधपका। कच्चा। ३. अपूर्ण।
असिधावक—(न०) १. सिकलीगर। २. तलवार से प्रहार करने वाला। ३. अश्वारोही। घुड़सवार।
असिधावण—दे० असिधावक।
असिमर—दे० असमर।
असिया—(न०ब०व०) घोड़े।
असियो—(न०) १. अस्सीवां वर्ष। २. घोड़ा।
असिवर—दे० असमर।
असी—(ना०) १. घोड़ी। अश्वी। २. अस्सी की संख्या। '८०' (वि०) १. सत्तर और दस। २. गेगी। दस प्रकार की।
असीम—(वि०) १. सीमा रहित। २. अनंत। अपार।
असीस—(ना०) आशिष। (वि०) विना सिर का।
असीसणो—(क्रि०) आशिष देना।
असीगणो—दे० आसींगणो।
असु—(न०) घोड़ा।
असुख—(न०) १. शत्रुता। २. अप्रीति। ३. दुख। कष्ट। ४. रोग।
असगुन—(न०) अपशकुन।
असुध—(वि०) सुधि रहित। अचेतन। (ना०) विस्मृति। दे० अशुद्ध।
असुभ—दे० अशुभ।
असुभकारियो—(न०)१. वनिया। वणिक। वाणियो। (वि०) अशुभकारी।
असुर—(न०) १. राक्षस। २. मुसलमान। ३. विधर्मी। ४. शत्रु। ५. वादशाह।
असुरगुरु—(न०) शुक्राचार्य।
असुराण—(न०ब०व०) १. असुर समूह। २. यवनसमूह। ३. शत्रुसमूह। ४. बादशाह।
असुरायण—दे० असुराण।
असुरारि—(न०) १. देवता। २. विष्णु।
असूझ (वि०) बिना सूझ का। अबुध। बेअक्ल।
असूधो—(वि०) १. असरल। टेढ़ा। २. कपटी। ३. अशांत। ४. अपवित्र। ५. अशिष्ट।
असूंस—(ना०) गाढ़ी नींद। (वि०) बेखबर।
असेत—(वि०) १. श्वेत वर्ण का नहीं। अश्वेत। २. काला।
असेर—दे० आसेर।
असेस—दे० अशेष।

असेंधो—(वि०) अपरिचित।
असै—(ना०) असती। कुलटा।
असोभ—(वि०) १. शोभा रहित। २. कुरूप। ३. अनगढ़। अणघड़।
असोभतो—दे० असोभ।
अस्टपद—दे० अष्टपद।
अस्ट पहोर—दे० अष्ट पहर।
अस्टभुजा—दे० अष्टभुजा।
अस्त—(न०) १. लोप। तिरोभाव। २. अवसान। मृत्यु। ३. पतन (वि०) १. अदृश्य। २. तिरोहित। छिपा हुआ।
अस्तवल—(ना०) घुड़साल।
अस्तर—(न०) १. सिले हुए कपड़े के अंदर का कपड़ा २. अस्त्र।
अस्त-व्यस्त—(वि०) १. इधर-उधर बिखरा हुआ। २. अव्यवस्थित।
अस्ताचळ—(न०) जिसकी ओट में सूर्य अस्त होता है वह पर्वत। अस्ताचल।
अस्तित्व—(न०) १. होने या स्थित होने की अवस्था। २. विद्यमानता। ३. सत्ता।
अस्तु—(अव्य०) १. खैर। २. भला। अच्छा। अच्छु। ३. ऐसा ही हो।
अस्तुति—(ना०) स्तुति। प्रार्थना।
अस्तेय—(न०) न चुराना।
अस्त्र—(न०) फेंक कर मारने का हथियार। जैसे—बाण, गोला, आदि।
अस्त्री—(ना०) स्त्री।
अस्थळ—(न०) साधुओं के रहने का स्थान। मठ। द्वारा। २. स्थल।
अस्थिर—(वि०) चलायमान।
अस्यो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का।
अस्व—(न०) अश्व। घोड़ा।
अस्वपति—(न०) १. सम्राट। अश्वपति। २. बादशाह। ३. घोड़े का मालिक।
अस्वस्थ—(वि०) बीमार। रोगी।
अस्वा—(ना०) घोड़ी।
अस्वीकार—(न०) इनकार। नामंजूरी।
अस्स—(न०) अश्व। घोड़ा।
अस्सी—(वि०) सत्तर और दस। (न०) अस्सी का अंक, '८०',
अह—(अव्य) १. जो। यदि। २. आश्चर्य, खेद आदि व्यक्त करने वाला एक शब्द। (सर्व०) यह। ओ। (न०) १. सर्प। २. दिन। ३. सूर्य। ४. हाथी।
अहड़ी—(वि०) ऐसी।
अहड़ो—(वि०) ऐसा।
अहद—(ना०) १. प्रतिज्ञा। २. हठ। जिद।
अहदी—(वि०) १. आलसी। २. अकर्मण्य। ३. हठीला। ४. अधिक नशा करनेवाला। ५. युद्ध में अपने स्थान से नहीं हटने वाला। न०) १. बादशाह का हाजरिया। २. बादशाही समय का वे सिपाही जिनसे किसी विशेष समय पर ही काम लिया जाता था और शेष समय निठल्ले होकर पड़े रहते थे। ३. तलब का हुक्म बजानेवाला शाही नौकर।
अहनाण—(न०) १. चिन्ह। निशान। सहनाण। २. पता। ठिकाना। ३. लक्षण।
अहनाणी—(ना०) १. निशानी। पहचान। सहनाणी। २. स्मृति चिन्ह।
अहमाण—(न०) १. अभिमान। २. वीरता।
अहमान—दे० अहमाण।
अहमानियो—(वि०) १. अभिमानी। २. स्वाभिमानी। ३. वीर। ४. अहम्मन्य। ५. अभिनंदनीय।
अहमानी—दे० अहमानियो।
अहमेव—(न०) अभिमान।
अहर—(न०) १. नीचे वाला होंठ। अधर। २. दिन। (वि०) १. व्यर्थ। बेकार। २. निर्बल। ३. क्रूर।
अहरण—(ना०) अहरन। निहाई। ऐरण।
अहराव—(न०) शेषनाग।
अहरू—(न०) साँप। सर्प। अैरू।

अहरू-जांभरू—(न०) सर्प, बिच्छु आदि विषैले जन्तु । ऐरूजांजरू ।

अहल—(ना०) १. अत्यन्त हलका धक्का । साधारण टक्कर । अहिल । गेल । २. कष्ट । दुख । ३. पीड़ा ।

अहळ—(अव्य०) व्यर्थ । योंही । फालतू ।

अहलके—(अव्य) १. इस बार । २. इस वर्ष । ऐलके । ऊण । ऐस ।

अहल्लाण—दे० अहनाण ।

अहळी—दे० अहळ ।

अहळै—(अव्य०) १. योंही २. स्वाभाविक तौर से । ३. जैसे भी । ४. अकारण । मुफ्त में ।

अहळो—दे० अहळ ।

अहलोक—(न०) १. इहलोक । २. अहि-लोक । नागलोक । ३. पाताल ।

अहव—दे० आहव ।

अहवान—(न०) पति की जीवितावस्था का स्त्री का मांगलिक ऐश्वर्य । सौभाग्य । अहिवात । सुहाग ।

अहवानियो—दे० अहमानियो ।

अहवाल—(न०) हाल । वृत्तान्त ।

अहवाळणो—(क्रि०) १. उज्वल करना । २. प्रकाशित करना । ३. पवित्र करना । ४. प्रतिष्ठा बढ़ाना ।

अहवी—(वि०) ऐसी ।

अहवो—(वि०) ऐसा ।

अहमाण—(न०) अहसान । उपकार ।

अहसान—दे० अहसाण ।

अहं—(सर्व०) मैं । अहम् । २. अहंकार । अभिमान ।

अहंकार—(न०) १. अभिमान । २ अहम् का भाव ।

अहंकारी—(वि०) अभिमानी ।

अहंड—(वि०) लंगडा ।

अहंम—दे० आहम ।

अहंमणो—दे० आहंमणो ।

अहंसी—दे० आहंसी ।

अहाड़—(न०) राजस्थान के मेवाड़ प्रान्त के एक प्राचीन नगर आघाट का आधु-निक नाम ।

अहाड़ो—(न०) मेवाड़ के गहलोत वंश का क्षत्री ।

अहातो—(न०) चारदीवारी । अहाता । वाड़ो ।

अहार—(न०) आहार । भोजन ।

अहि—(न०) १. सर्प । २. सूर्य ।

अहिकार—(न०) १. अधिकार । २. अहं-कार । ३. क्रोध ।

अहिछत्र—(न०) मारवाड़ के नागौर नगर का एक नाम ।

अहिणी—(ना०) नागिन । सर्पिणी ।

अहित—(न०) १. अपकार । २. बुराई । ३. बिगाड़ । ४. शत्रु । अहितु ।

अहिनाह—(न०) १. शेषनाग । २. महादेव ।

अहिपुर—(न०) १. नागोर । २. नागपुर ।

अहिफीण—(न०) अहिफेन । अफीम । अमल ।

अहिमकर—(न०) सूर्य ।

अहिमाण—(न०) अभिमान ।

अहिराणी—(ना०) १. शेषनाग की पत्नी । २. सर्पिणी । ३. अहीरनी । ग्वालिन ।

अहिरामण—(न०) रावण का साथी नागलोक का स्वामी ।

अहिराव—(न०) शेषनाग ।

अहिरिप—(न०) १. गरुड़ । २. मोर ।

अहिलोळ—(न०) समुद्र ।

अहिवात—दे० अहवात ।

अहिवारण—(न०) १. कालीनाग को नाथने वाले श्रीकृष्ण । २. नाग-दमन । ३. सर्प के विष को उतारने का मंत्र ।

अहिहाण—(न०) १. अभिधान । शब्दकोश । २. कथन ।

अहीणो—(न०) घर की गाय भैंस का दूध देना बंद हो जाने की स्थिति ।

अहीश—(न०) १. शेषनाग । २. शेषावतार लक्ष्मण ।

अहुटणो—दे० आहुटणो ।

अहुठ—(वि०) तीन और आधा । साढ़े तीन । हूंठो ।

अहेड़ी—दे० आहेड़ी ।

अहेस—दे० अहीश ।

अहेसुर—(न०) अहीश्वर । शेषनाग ।

अहोटणो—(क्रि०) १. उठाना । २. वजन को उठाना । ३. हटाना । ४. मारना ।

अहोड़ो—(न०) १. गुरुजनों की बात का अशिष्ट व नकारात्मक उत्तर । २. अवज्ञा-पूर्ण उत्तर । ३. अशिष्ट कथन । ४. अशिष्ट संबोधन ।

अहोनिस—(क्रि०वि०) १. अहर्निश । रात-दिन । २. निरंतर । सदा ।

अहोभाग—(न०) अहोभाग्य । सौभाग्य ।

अंक—(न०) १. भाग्य । प्रारब्ध । २. उप-कार । अहसान । ३. गोद । ४. नाटक का एक अंश । ५. संख्या का चिन्ह । ६. संख्या । आंक । ७. नौ की संख्या । ८. पत्र-पत्रिकाओं का समयावधि में प्रकाशित नंबर । ९. धब्बा । दाग ।

अंकगणित—(ना०) १. वह विद्या जिसमें संख्याओं के जोड़ने, घटाने, गुणा, भाग इत्यादि के करने की रीति बतलाई जाती है । २. हिसाब-लेखा करने की विद्या ।

अंकड़ो—(न०) १. लोहे का एक प्रकार का कांटा । अंकोड़ा । २. हुक । (वि०) बांका । टेढ़ा ।

अंकपळाई—(ना०) अंकों के माध्यम से लिखने या बातचीत करने की विद्या । अंकपल्लवी । अंकलिपि ।

अंकमाळ—(न०) आलिंगन । गले लगाना ।

अंकाई—(ना०) १. आंकने या तोलने का काम । २. आंकने की मजदूरी ।

अंकाणो—दे० अंकावणो ।

अंकाळो—(न०) आक की लकड़ी का छिलका जिसकी रस्सी बटी जाती है ।

अंकावणो—(क्रि०) १ तुलवाना । २. किसी वस्तु के परिमाण का अनुमान करवाना । ३. अंकित करवाना । चिन्ह लगवाना । दगवाना ।

अंकित—(वि०) १. चिन्हित । २. लिखित । ३. वर्णित । ४. अनुमानित ।

अंकुर—(न०) १. अँखुआ । २. कोंपल । ३. भरते घाव में उठने वाले छोटे-छोटे दाने ।

अंकुश—दे० अंकुस ।

अंकुस—(न०) १. प्रतिबंध । रोक । २. भय । डर । ३. हाथी को वश में रखने व हांकने का लोहे का बना हुआ एक कांटा ।

अंकुसमुख—(न०) रथ ।

अंके—(अव्य०) १. अंकों में । २. अंकों में इस प्रकार है । (न०) अंकों में लिखी जाने वाली संख्या ।

अंकोड़ो—(न०) १. लम्बे बांस में बंधा हुआ हँसिया । २. जंजीर की कड़ी । ३. हुक । अंकुड़ा ।

अंग—(न०) १. शरीर । २. शरीर या वस्तु का कोई भाग । अवयव । ३. अंश । भाग । ४. स्वभाव । ५. पक्ष । (सर्व०) आप । स्वयम् ।

अंग-उधार—(न०) १. बिना एवजाना लिये दिया जाने वाला ऋण । हाथ-उधार । २. बंधक रखे बिना लिया हुआ ऋण ।

अंग-खंभ—(न०) हाथी ।

अंगज—(न०) १. पुत्र । दीकरो । २. केश । ३. पसीना । परसेवो । ४. जूं । ५. काम-देव ।

अंगजा—(ना०) पुत्री । दीकरी ।

अंगजाई—दे० अंगजा ।

अंगजात—दे० अंगज।

अंगजाया—दे० अंगजा।

अंग टूटणो—(मुहा०) शरीर में दर्द होना। कळतर होणी।

अंगड़ाई—(ना०) अंगों को ऐंठाना (प्रायः जम्हाई लेने के साथ)।

अंगड़ाणो—(क्रि०) अंगड़ाई लेना। अंगड़ाना।

अंगण—(ना०) १. अंगना। स्त्री। २. आंगन। ३. चौक।

अंगणा—(ना०) अंगना। स्त्री।

अंग तोड़णो—(मुहा०) खूब परिश्रम करना।

अंगत्राण—(न०) कवच।

अंगद—(न०) १. प्रसिद्ध वानर बाली के पुत्र का नाम। २. बाजूबंद।

अंगदार—(वि०) १. अपने स्वभाव के विरुद्ध आचरण को सहन नहीं करने वाला। २. किसी के परामर्श को नहीं मानने वाला। ३. हठीला ४. एकंगो। ५. नखरों वाला।

अंगना—(ना०) स्त्री।

अंगबळ—(न०) १. स्वबल। २. स्वावलंबन। ३. स्वाभिमान। ४. घृत। घी।

अंग मरोड़णो—(मुहा०) १. आलस खाना। २. अंग को ऐंठाना।

अंग मोड़णो—(मुहा०) करवट बदलना।

अंगमाठ—(वि०) १. सुस्त। आलसी। २. मस्त। ३. अभिमानी। ४. बलाभिमानी। ५. बलिष्ठ।

अंगरखी—(ना०) पुरानी ढब का कसों से बाँधा जाने वाला बाँहों और धड़ में पहनने का एक वस्त्र।

अंगरखो—दे० अंगरखी।

अंग-रखो—(वि०) १. हठी। जिद्दी। २. स्वेच्छाचारी। ३. एक स्वभाव का। एकंगो।

अंगरळी—(ना०) १. मैथुन। संभोग। २. मौज। आनंद।

अंगरस—(न०) १. वीर्य। २. संभोग। ३. रक्त। लोही।

अंगरंग—(न०) संभोग। अंगसंग।

अंगराग—(न०) १. उबटन। २. महावर। ३. शरीर की सजावट। ४. शरीर के सजावट की सामग्री।

अंगरेज—(न०) इंगलैंड का निवासी। अंग्रेज।

अंगरेजी—(ना०) अंगरेजों की भाषा। इंगलैंड की भाषा। अंग्रेजी।

अंगळ—(ना०) १. छेड़छाड़। २. मजाक। ३. ताना। चुटीली बात।

अंग लागणो—(मुहा०) १. जँचना। २. हृदय में बैठना। ३. चिपटना।

अंग-लीलंग—(न०) हंस।

अंगवढ़ी—(ना०) १. परिश्रम द्वारा दी जाने वाली पारस्परिक सहायता। २. शारीरिक परिश्रम।

अंग वारो—दे० अंगवढ़ी।

अंगसंग—(न०) संभोग। अंगरंग।

अंगहीण—(वि०) बिना अंग का। खंडितांग।

अंगार—(न०) अंगारा। अंगारो।

अंगारक—(न०) १. अंगारा। २. उपलों के अंगारों में सेकी जाने वाली बाटी। बटक। रोटो। दड़ियो।

अंगारां-लाग—(न०) दाह संस्कार।

अंगारो—(न०) १. दहकता हुआ कोयला। अंगारा। चिनगारी।

अंगिया—(ना०) १. चोली। कंचुकी। कांचळी। २. तीर्थंकर की मूर्ति के गले के नीचे के समस्त आगे के अंग में धारण कराई जाने वाली सोने या चाँदी की खोल। आंगी।

अंगी—(वि०) देहधारी। (न०) नाटक का प्रधान नायक। दे० अंगिया सं. २।

अंगीकार—(न०) स्वीकार । **मंजूर** ।

अंगीठी—(ना०) आग जलाने का एक पात्र । **बोरसी** ।

अंगीठो—(न०) विशेष प्रकार की एक अंगीठी । **अंगेठो** ।

अंगुली—(ना०) उंगली । **आँगळी** ।

अंगूठी—(ना०) मुद्रिका । १. **मूंदड़ी** । **बींटी** । २. दरजी की अंगुली में पहनने की एक टोपी । अंगोरी । अंगुश्ताना ।

अंगूठो—दे० अंगोठो ।

अंगूर—(न०) द्राक्षा । हरी दाख । **लीली** दाख ।

अंगे—(अव्य०) १. किसी अंग या अंश में । २. यथार्थ में । ३. नितान्त । बिलकुल ।

अंगेई—(अव्य०) १. किसी अंग या अंश में भी । २. यथार्थ में भी । ३. बिल्कुल ही ।

अंगेजणो—(क्रि०) १. स्वीकार करना । २. ग्रहण करना । ३. सहना ।

अंगेठी—दे० अंगीठी ।

अंगेठो—दे० अंगीठो ।

अंगोअंग—(अव्य०) १. अंग-प्रत्यंग । २. अंग-प्रत्यंग में । सम्पूर्ण अंगों में । अंग-अंग में । ३. अंग से अंग सटाकर । ४. दिमाग में । समझ में । ५. विचार में ।

अंगोछो—(न०) १. शरीर पोंछने का मोटा कपड़ा । तौलिया । **गमछो** । २. रुमाल । ३. उपवस्त्र ।

अंगोठी—(ना०) १. स्त्रियों के पांव की अंगुली में पहनने का छल्ला । **पोलरी** । २. अंगूठी । ३. दरजी की अंगोरी । अंगुली त्राण । अंगुश्ताना ।

अंगोठो—(न०) १. हाथ या पांव की सबसे मोटी व पहली अंगुली । २. स्त्रियों के पाँव के अंगूठे का छल्ला । **अंगोठी** ।

अंगोठो दिखाणो—(मुहा०) १. कुछ नहीं देना । २. इन्कार कर देना ।

अंगोठो लगाणो—(मुहा०) हस्ताक्षर की जगह अंगूठे का चिन्ह लगाना ।

अंगोभव—(न०) पुत्र । **बेटो** ।

अंगोभ्रम—(न०) १. पुत्र । **बेटो** । २. पौत्र । **पोतो** । **पोतरो** । ३. वंशज । (वि०) समान । सदृश ।

अंगोळ—(ना०) १. स्नान । २. दूल्हे को स्नान कराते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

अंगोळियो—(न०) १. मर्दन-मालिश तथा स्नान कराने वाला व्यक्ति । २. नाई । ३. स्नान करने का पानी का बड़ा पात्र । ४. स्नान करने के लिए बैठने का पाटा । ५. स्नानघर ।

अंगोळी—(ना०) स्नान । **सिनान** ।

अंग्रेज—दे० अंगरेज ।

अंग्रेजी—दे० अंगरेजी ।

अंघ्रि—(न०) पैर । चरण । **पग** ।

अंघोर—(ना०) १. रोगी की अर्द्ध चेतन अवस्था । २. रुग्णावस्था की नींद ।

अंचळ—दे० अंचल ।

अंचल—(न०) १. ओढ़ने या साड़ी का आगे की ओर रहने वाला छोर । आंचल । **पल्लो** । **अंचळो** ।

अंचळबंध—(न०) दुल्हा-दुल्हिन के उपवस्त्र और ओढ़नी का गठबंधन । गठजोड़ा । **अंचळो** ।

अंचळो—(न०) १. आँचल । २. गठजोड़ा । ३. कफनी । अंचला ।

अंछ्या—(ना०) इच्छा ।

अंजण—(न०) १. अंजन । सुरमा । २. काजल । रेल का एँजिन ।

अंजन—दे० अंजण ।

अंजना—दे० अंजनी ।

अंजनी—(ना०) हनुमान जी की माता का नाम ।

अंजळ—(न०) १. अन्न-जल । दाना-पानी । **दाणो-पाणी** । २. भाग्य ।

अंजळी—*(ना०)* हथेली का एक सम्पुट। अंजलि। **लप**।

अंजस—*(न०)* १. आत्मीय जनों के सुकृत्यों से होनेवाला गर्व। २. अपनी प्रतिष्ठा का गर्व। ३. स्वाभिमान। ४. गर्व। ५. प्रसन्नता।

अंजसणो—*(क्रि०)* १. गर्व करना। २. प्रसन्न होना।

अंजाम—*(न०)* १. परिणाम। **नतीजो**। **फळ**। २. अंत। समाप्ति।

अंजीर—*(न०)* १. गूलर के समान एक फल। २. इस फल का वृक्ष।

अंट—*(न०)* १. नोक। २. कलम की नोक। ३. निब। ४. अंटी। टेंट। ५. भाग्य।

अंटस—*(ना०)* वैर। शत्रुता। **दुसमणी**।

अंट-संट—*(वि०)* १. विषयच्युत। २. क्रम-रहित। बेढंग। *(न०)* व्यर्थ की बात-चीत। **बकवाद**। प्रलाप। *(क्रि० वि०)* बिना सोचे विचारे। कुछ का कुछ।

ाणो—दे० अंटावणो।

अंटावणो—*(क्रि०)* मालिक की मौजूदगी में उसकी आँख बचाकर उसकी किसी वस्तु को चुरा लेना।

अंटी—*(ना०)* धोती की गिरह। टेंट। **खुंटी**।

अंड—*(न०)* १. अंडकोश। २. अंडा।

अंडकोश—*(न०)* फोता। आँड। **पोत-वाळिया**।

अंडज—*(वि०)* अंडे से उत्पन्न (पक्षी आदि)।

अंडजा—*(ना०)* कस्तूरी।

अंडबंड—*(वि०)* १. असम्बद्ध। बे सिर पैर का। २. अनुचित।

अंडाकार—*(वि०)* अंडे के समान आकार वाला।

अंडी—*(ना०)* एक प्रकार का मोटा रेशमी कपड़ा। **अरंडी**।

अंडो—*(न०)* अंडा। **ईंडो**।

अंडोळो—*(वि०)* आभूषण रहित।

अंढो—*(न०)* दिन का पिछला पहर। ढलता दिन।

अंत:करण—*(न०)* १. हृदय। २. मन। ३. विवेक।

अंत:पुर—*(न०)* रनिवास। जनाना घर।

अंत—*(न०)* १. मृत्यु। अवसान। २. समाप्ति। **अखीर**। ३. छोर। ४. परिणाम। *(वि०)* निकृष्ट।

अंतक—*(न०)* १. यमराज। २. काल। मृत्यु। ३. शत्रु। ४. नष्ट करने वाला।

अंतकरण—दे० अंत:करण।

अंतकराय—*(न०)* यमराज। **जमराणो**।

अंतकाळ—*(न०)* मृत्यु काल। मौत।

अंतक्रिया—*(ना०)* मरणोपरान्त किया जाने वाला संस्कार। अंत्येष्टिक्रिया।

अंतजथा—*(ना०)* डिंगल गीत रचना का एक नियम।

अंत विगड़णो—*(मुहा०)* मृत्यु समय दुर-वस्था होना। मौत बिगड़ना।

अंतमेळ—*(न०)* राजस्थानी दोहे (दूहे) का एक भेद। **वडो दूहो**।

अंतर—*(न०)* १. भेद। फर्क। २. दूरी। फासला। ३. अंत:करण। हृदय। ४. अतर। इत्र। ५. समय। काल। *(क्रि० वि०)* भीतर। अंदर।

अंतरगति—*(ना०)* मन का भाव।

अंतरछाल—*(ना०)* पेड़-पौधों के तने, शाखा और जड़ के ऊपर की छाल के नीचे की पतली छाल।

अंतरजामी—*(वि०)* मन की बात जानने वाला। अंतर्यामी। *(न०)* ईश्वर।

अंतरदशा—*(ना०)* १. मन की अवस्था। २. बड़ी दशा (गज दशा) के अंदर चलने वाली छोटी दशा। (ज्योतिष)।

अंतरदान—*(ना०)* इत्रदान। **अंतरदानी**।

अंधाधुंध—*(न०)* १. घोर अंधकार । २. अन्याय । ३. अव्यवस्था । **धींगा धींगी ।** *(वि०)* १. बेहिसाब । अत्यधिक । २. अंधकार से परिपूर्ण । अंधकार मय । *(क्रि० वि०)* १. बिना सोचे-समझे । अविचारपूर्वक । २. धींगामस्ती से ।

अंधापो—*(न०)* अंधापन । अंधावस्था ।

अंधार—*(न०)* अंधकार ।

अंधारियोपख—*(न०)* कृष्णपक्ष । **वदि पख ।**

अंधारी—*(ना०)* १. अंधेरा । २. आंधी । ३. कृष्णपक्ष की अंधेरी रात । ४. गश या चक्कर के कारण आँखों से नहीं सूझने की स्थिति । ५. हाथी के कुंभस्थल पर रखा जाने वाला आवरण ।

अंधारो—*(न०)* १. अंधेरा । २. अज्ञान । ३. अत्यंत कष्टदायी समय ।

अंधारो पख—*(न०)* कृष्ण पक्ष । वदि-पक्ष ।

अंधियारो—*(न०)* अंधेरा । **अंधारो ।**

अंधेर—*(न०)* १. अन्याय । २. कुप्रबंध । ३. अव्यवस्था । ४. अराजकता ।

अंधेर खातो—दे० अंधेर ।

अंधेर नगरी—*(ना०)* १. वह नगरी जहां कुप्रबंध और अन्याय का बोलबाला हो । ऐसी जगह या स्थिति जहाँ नियम, न्याय, व्यवस्था आदि कुछ न हो । २. मूर्खों की नगरी ।

अंधेरो—*(न०)* १. अज्ञान । २. अंधेरा । **अंधारो ।** ३. अत्यंत विपत्तिकाल ।

अंधो—*(वि०)* नेत्रहीन । अंधा । **आंधो ।**

अंधोटो—*(न०)* वह पट्टी या ढक्कन जो घोड़े, बैल आदि की आंखों पर बाँधा जाता है ।

अंब—*(ना०)* १. अम्बा देवी । दुर्गा । २. पार्वती । ३. माता । ४. शीतलादेवी । *(न०)* ५. आम्रफल । आम । ६. आम का वृक्ष । ६. आकाश । ८. जल । ९. वस्त्र ।

अंवक—*(ना०)* आँख ।

अंवनयर—*(न०)* जयपुर के पास अंबनगर नाम का एक ऐतिहासिक प्राचीन नगर । आधुनिक आमेर ।

अंव पुरण—*(न०)* शीतला का वाहन । अंब-प्रवहण । गदहा । **गधो ।**

अंवर—*(न०)* १. आकाश । २. वस्त्र । ३. बादल । ४. एक विशिष्ट मछली की आँतों से निकलने वाला एक सुगंधित पौष्टिक द्रव्य ।

अंवराळ—*(न०)* १. आकाश । २. मेघ पंक्ति ।

अंवरीष—*(न०)* विष्णु भगवान के अनन्य भक्त एक सूर्यवंशी राजा का नाम ।

अंव वाहण—दे० अंब पुरण ।

अंवहर—*(न०)* १. आकाश । २. बादल ।

अंवा—*(ना०)* १. दुर्गा । २. पार्वती । ३. माता ।

अंबाजी—*(ना०)* १. आबू पर्वत का एक तीर्थ स्थान । अर्बुदा देवी । २. आबू के निकट ईडर और दाँता राज्यों की प्रसिद्ध कुलदेवी तथा धाम (नगर) ।

अंवाड़ी—*(ना०)* हाथी का हौदा । अमारी ।

अंवापति—*(न०)* महादेव । शिव ।

अंवा पोहण—दे० अंब पुरण ।

अंवार—*(न०)* ढेर । राशि । **ढिगलो ।**

अंवारत—*(ना०)* इमारत । मकान ।

अंवु—*(न०)* पानी ।

अंवुआळ—*(न०)* १. प्रसिद्ध धर्मवीर पाबूजी राठौड़ का विरुद । कान्तिमान पुरुष पाबूजी । २. कान्तिमान पुरुष ।

अंवुओ—*(वि०)* गहरे हरे रंग का । आम के पत्ते के समान हरे रंग वाला ।

अंवुध—*(न०)* अंबुधि । समुद्र ।

अंवुवो—दे० अंबुओ ।

अंवोड़ो—*(न०)* स्त्री का वेणी गुच्छ । **जूड़ो ।**

अंबोळ—*(ना०)* १. अमचूर । २. आम की खटाई ।

अंभ—*(न०)* १. जल । २. बादल ।

अंभोज—*(न०)* कमल ।

अंभोरुह—*(न०)* कमल ।

अंभोरू—*(न०)* कमल ।

अँवळाई—*(ना०)* १. चक्कर । वक्रमार्ग । लंबा मार्ग । २. कुटिलता । ३. प्रतिकूलता ।

अँवळी—*(वि०)* १. टेढ़ी । २. उलटी । ३. प्रतिकूल ।

अँवळीमाण—दे० अमलीमाण ।

अँवळो—*(वि०)* १. टेढ़ा । २. उलटा । ३. प्रतिकूल । *(न०)* दुख ।

अँवळो आवणो—*(मुहा०)* प्रसव समय भ्रूण का आडा हो जाना ।

अँवळो करणो—*(मुहा०)* १. उलटा करना । २. विरुद्धाचरण करना ।

अँवळो होणो—*(मुहा०)* विरुद्ध होना ।

अँवार—*(न०)* काटी हुई झड़बेरी की कंटीली टहनियों का ढेर । दे० अवार ।

अंश—*(न०)* १. भाग । हिस्सा । २. शक्ति । पराक्रम । ३. पुत्र । ४. वंशज । ५. वीर्य । ६. कला ।

अंशावतार—*(न०)* ईश्वर का आंशिक गुणों वाला अवतार ।

अंस—दे० अंश ।

अंसधारी—*(वि०)* १. दैविक शक्तिवाला । २. अवतारी । ३. वंशज ।

अंसी—*(न०)* १. पुत्र । २. वंशज ।

अंसुक—*(न०)* १. एक रेशमी वस्त्र । २. महीन वस्त्र । अंशुक ।

आ

आ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का दूसरा स्वर वर्ण । नागरी लिपि में 'अ' का दीर्घ स्वर ।

आ—*(अव्य०)* तक, पर्यंत, आदि से अंत तक, सर्वत्र व्यापक, कुछ, थोड़ा, सीमा का अतिक्रमण इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त । तथा अतिरिक्त, लगभग, वस्तुतः के अर्थों में प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग । *(ना०)* १. माता । माँ । २. लक्ष्मी । *(न०)* ३. महादेव । ४. ब्रह्मा । *(सर्व०ना०)* यह ।

आइठाण—*(न०)* १. चिह्न । २. स्थान । ३. रगड़ से हो गई हुई हथेली आदि की निर्जीव मोटी चमड़ी ।

आइड़ो—*(न०)* वर्णमाला के 'अ' वर्ण का नाम ।

आइणी—दे० आँईणी ।

आइणो—दे० आँईणो ।

आइत—*(न०)* कर । महसूल । चुंगी । *(वि०)* १. शरणागत । २. आया हुआ । आयोड़ो ।

आइती—*(ना०)* महाजनी पाठशाला में पढ़ाया जाने वाला व्याकरण के पाठ का एक अपभ्रंश रूप ।

आइनो—*(न०)* आईना । दर्पण ।

आइस—*(ना०)* १. आदेश । आज्ञा । *(न०)* २. योगी । ३. संन्यासी । *(भ०क्रि०)* आऊंगा ।

आइंदा—*(ना०)* भविष्यकाल । *(क्रि०वि०)* भविष्य में । आगे । *(वि०)* आने वाला (समय) ।

आई—*(ना०)* १. दुर्गा देवी । २. माता । माँ । ३. करणी देवी । ४. घाय । उप-

माता। ५. बिलाड़ा (मारवाड़) की सीरवी जाति की कुलदेवी।
आईणी—दे० आँईणी।
आईणो—दे० आँईणो।
आईपंथ—*(न०)* बिलाड़ा की आई द्वारा चलाया हुआ पंथ।
आईपंथी—*(न०)* आईपंथ का अनुयायी।
आईवाळो—दे० आहीवाळो।
आउखाण—*(न०)* मरे हुए पशु का पूरा चमड़ा। **आवखाण**।
आउखी—*(वि०ना०)* पूरी। समस्त।
आउखो—*(वि०)* समस्त। पूरा। *(न०)* १. जीवन। २. आयुष। उम्र।
आउगाळ—*(न०)* १. वर्षा ऋतु का आगमन। २. वर्षागम के चिन्ह। ३. वर्षागम के बादल। ४. अच्छा समय। सुकाल। ५. सस्तापन। **सस्तीवाड़ो**।
आउगाळो—दे० आउगाळ।
आउठ—*(वि०)* १. साढ़े तीन। हूंठ। **हूंठो**। २. आठ।
आउदो—दे० आसूधो।
आउद—*(न०)* आयुध। शस्त्रास्त्र।
आउधो—दे० आसूधो।
आऊं छूं—*(क्रि०)* आता हूं। **आवूं हूं**।
आऊंना—*(भ०क्रि०)* आऊंगा। **आसूं**।
आऊंली—*(भ०क्रि०)* आऊंगी। **आसूं**।
आक—दे० आकड़ो।
आकड़ो—*(न०)* अर्क। आक का पौधा।
आकर—*(ना०)* १. खान। २. खजाना। भंडार। ३. भेद। रहस्य। ४. पाताल।
आकरखण—*(ना०)* १. आकर्षण। खिंचाव। २. अपनी ओर खींचने की शक्ति या क्रिया। ३. मोह।
आकरखणो—*(क्रि०)* १. आकर्षित करना। खींचना। २ मोहित करना।
आकरसण—दे० आकरखण।
आकरसणो—दे० आकरखणो।
आकरी—*(वि०)* दे० आकरो।
आकरी रुत—*(ना०)* १. ग्रीष्म ऋतु। **ऊनाळो**। २. दुष्काल। **दुकाळ**।
आकरो—*(वि०)* १. कड़ा। सख्त। २. कठिन। मुश्किल। ३. कुरकुरा। करारा। ४. महंगा। ५. तगड़ा। ६. उग्र। ७. तेज। ८. खरा।
आकळ—*(वि०)* आकुल। व्याकुल।
आकळ-बाकळ—*(वि०)* आकुल-व्याकुल। घबराया हुआ।
आकळी—*(ना०)* पानी के बहते रहने से नदी, नाले आदि में पड़ने वाला खड्डा।
आकळो—*(वि०)* आकुल। अधीर। **उतावळो**।
आकाय—*(न०)* १. शक्ति। बल। २. साहस। हिम्मत। ३. शौर्य। वीरता। ४. बलवान। जबरदस्त।
आकार—*(न०)* १. आकृति। स्वरूप। २. 'आ' अक्षर। ३. पाताल। ४. शरीर।
आकारणो—*(क्रि०)* आकार बनाना। रेखाचित्र बनाना।
आकारांत—*(वि०)* अंत में 'आ' वाला (शब्द)।
आकारीठ—*(न०)* १. संग्राम। युद्ध। २. शस्त्र प्रहार की ध्वनि। ३. प्रहारों पर प्रहार। ४. घमासान युद्ध। ५. संहार। *(वि०)* १. जबरदस्त। बलवान। २. भीषण। भयंकर। ३. क्रोधी। *(क्रि०वि०)* १. अत्यधिक तीव्र गति से। २. खूब जोर से।
आकारीठो—*(न०)* घमासान युद्ध। घोर संग्राम।
आकास—*(न०)* आकाश। आसमान। **आभो**।
आकास गंगा—*(ना०)* अत्यंत छोटे-छोटे तारों का विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर दक्षिण में फैला हुआ दिखाई देता है।

आकासदीवो—(न०) मकान की छत पर खड़े किये गये बाँस के सिरे पर बंधा हुआ कंडील।

आकासवाणी—(ना०) १. देव वाणी। २. रेडियो संदेश। ३. रेडियो।

आकासवेल—(ना०) अमरवेल।

आकासी—(ना०) धूप आदि से बचने के लिये तानी हुई चाँदनी।

आकासी विरत—(ना०) दे० अकासी-विरत।

आकिल—(वि०) अक्लमंद। समझदार।

आकीन—(न०) १. यकीन। भरोसा। २. श्रद्धा। आस्था।

आकीनदार—(वि०) भरोसापात्र।

आकीन वाळो—(वि०) भरोसापात्र।

आकुळ—(वि०) १. आकुल। व्याकुल। २. व्यग्र। ३. विह्वल।

आकुळणो—(क्रि०) व्याकुल होना। घबराहट होना। घबराना।

आकुळता—(ना०) घबराहट। आकुलता। व्याकुलता।

आकूत—(ना०) १. करामात। चमत्कार। २. बुद्धि। ३. माणिक। पद्मराग। याकूत रत्न।

आकूती—(ना०) घी और चीनी मिली हुई मंग की बुकनी।

आकृति—(ना०) १. आकार। बनावट। २. मूर्त्ति। ३. रूप। ४ मुख का भाव।

आकृती—दे० आकृति।

आक्रम—(न०) पराक्रम। शूरता।

आक्रमण—(न०) १. हमला। चढ़ाई। २. प्रहार। ३. आक्षेप।

आक्रोश—(न०) क्रोधपूर्वक कोसना।

आक्षेप—(न०) १. दोष लगाना। २. निंदा करना। ३. ताना। ४. फेंकना।

आखड़णो—(क्रि०) १. ठोकर खाना। २. लड़ना। झगड़ना।

आखड़ी—(ना)० १. प्रतिज्ञा। प्रण। २. प्रतिज्ञा द्वारा लिया हुआ व्रत। मनौती।

आखणक—(न०) सूअर। शूकर।

आखणो—(क्रि०) कहना। वर्णन करना।

आखती-पाखती—दे० आगती-पागती।

आखतो—दे० आगतो।

आखर—(न०) १. अक्षर। वर्ण। २. प्रतिज्ञा। ३. दस्तावेज। हस्तलेख। (क्रि०वि०) आखिर। अंत में।

आखर मेळ—दे० अक्षर मेळ।

आखरी—(वि०) अंतिम। पिछला।

आखळी—(ना०) खान के पास का वह स्थान जहाँ पत्थर तोड़कर इकट्ठे किये जाते हैं और मोटे रूप में सँवारे जाकर बेचे जाते हैं।

आखलो—(न०) १. बिना कसी किया हुआ जवान बैल। २. साँड।

आखंडळ—(न०) इन्द्र। (वि०) सब। समस्त। सगळो।

आखंडळी—(ना०) १. इन्द्राणी। (न०) २. इन्द्र।

आखा—(न०ब०व०) १. बिना टूटे चावल। अक्षत (देव पूजार्थ)। २. अनबीध बारीक मोती जिन्हें अक्षत की जगह काम में लाया जाता है। ३. भिक्षुक को (अंजलि में भर कर) दिया जाने वाला अनाज।

आखाड़मल—(वि०) १. बलवान। वीर। २. युद्ध वीर। ३. मल्ल।

आखाड़सिध—(वि०) १. युद्ध कुशल। २. युद्ध में पीछे नहीं हटने वाला।

आखाड़ो—दे० अखाड़ो।

आखाण—दे० आख्यान।

आखातीज—(ना०) अक्षय तृतीया। वैशाख शुक्ल ३ और उस दिन का पर्व। अखैतीज।

आखात्रीज—दे० आखातीज।

आखाबीज—*(ना०)* अक्षय तृतीया का पहला दिन। अक्षय द्वितीया। **अखैबीज**।

आखारी—*(ना०)* १. कुएँ से सिंचाई करते समय बैलों की अमुक समय के बाद की जाने वाली बदली। २. बारी। पारी। *(वि०)* १. विकट। कठिन। २. दुर्गम। ३. भीषण। भयंकर।

आखिर—*(क्रि०वि०)* अंत में। अंततोगत्वा। *(वि०)* अंतिम। *(न०)* अंत।

आखिरकार—*(क्रि०वि०)* अंत में।

आखी—*(वि०ना०)* १. अखंड। २. पूर्ण। पूरी। ३. समस्त। सब।

आखीर—दे० आखिर।

आखू—*(न०)* चूहा। **ऊंदरो**। २. कंजूस। ३. चोर। ४. सूअर।

आखेट—*(ना०)* मृगया। शिकार।

आखेटक—*(न०)* शिकारी।

आखेटी—*(न०)* शिकारी।

आखेप—दे० आक्षेप।

आखो—*(वि०)* १. अखंड। २. पूरा। पूर्ण। ३. समस्त। ४. कसी नहीं किया हुआ। बधिया नहीं किया हुआ (बैल, घोड़ा, आदि)।

आख्यात—*(वि०)* १. विख्यात। प्रसिद्ध। २. आश्चर्यजनक। **अखियात**।

आख्यान—*(न०)* १. वर्णन। २. कथा। कहानी।

आग—*(ना०)* अग्नि। **वासदे**। २. ताप। जलन। ३. क्रोध। ४. कामाग्नि। ५. डाह। ईर्षा।

आगड़—*(ना०)* चूल्हे के आगे का पाली बनाकर घेरा हुआ भाग जिसमें चूल्हे की राख इकट्ठी होती है। **देऊळी**। **वेउंडी**।

आगड़दी—*(क्रि०वि०)* आगे।

आगड़ो—*(न०)* १. किसी वस्तु की गांठ या पर्व वाला भाग। २. माप का निशान। ३. किसी वस्तु की बारबार रगड़ से होने वाला निशान। ४. चिन्ह। निशान। ५. अनुमान।

आगण—*(न०)* अगहन। मार्गशीर्ष मास।

आगत—*(वि०)* १. आया हुआ। २. उपस्थित।

आगतरी—*(ना०)* १. वह बोआई जो ठीक समय पर या कुछ पहले की गई हो। २. पहली वर्षा में की गई बुवाई। ३. वह खेती जो पहली वर्षा से तैयार हो रही हो।

आगतरो—*(न०)* उचित समय पर या पहली वर्षा के होते ही हाथ में लिया हुआ खेती का काम।

आगत-स्वागत—दे० आगता-स्वागता।

आगता-स्वागता—*(ना०)* १. आगत-स्वागत। आवभगत। खातिरी। २. अतिथि का आदर-सत्कार।

आगती-पागती—*(क्रि०वि०)* १. आस-पास। २. इधर-उधर। **अड़ैगड़ै**।

आगतो—*(वि०)* १. क्रोधित। २. उतावला। ३. नाराज। ४. दुखी। बेचैन।

आगना—दे० आग्ना।

आगबंध—*(न०)* घोड़े की जीन का आगे का बंधन।

आगबोट—*(न०)* आग की शक्ति से चलने वाला जहाज।

आगम—*(न०)* १. भविष्यकाल। २. भविष्य की जानकारी। ३. होने वाली घटनाओं की जानकारी। ४. भवितव्यता। होनहार। ५. आगम। परब्रह्म। ६. आय। आमदनी। ७. आगमन। ८. प्रारंभ। शुरू। ९. आदि। १०. प्रथम। ११. उत्पत्ति। १२. शब्द साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय *(व्या०)* १३. वेद। १४. जैन शास्त्र।

आगमच—*(वि०)* पहले। *(अव्य०)* पहले से। **आगूंच**।

आगम ज्ञानी—*(न०)* १. वेदवेत्ता। वेदज्ञ। २. शास्त्रवेत्ता। ३. भविष्यवेत्ता।

आगमण—दे० आगमन।

आगम दिस्टी—दे० आगम दृष्टि।

आगम दृष्टि—*(ना०)* दूरदर्शिता।

आगमन—*(न०)* १. आवन। आना। आमद। २. प्राप्ति।

आगम-निगम—*(न०)* १. वेदशास्त्र। २. शास्त्र।

आगमनी—*(ना०)* सेना का आगे का भाग। हरावल।

आगम भाखी—*(वि०)* भविष्यवक्ता।

आगमवक्ता—*(वि०)* भविष्यवक्ता।

आगम वाणी—*(ना०)* भविष्य वाणी।

आगमस—दे० आगमच।

आगमसोचू—*(वि०)* दूरदर्शी।

आगर—*(न०)* १. खान। २. खजाना। ३. घर। ४. ढेर। समूह। ५. नमक जमाने का क्यारा। ६. नमक की खान। ७. छप्पर। *(वि०)* १. बहुत अधिक। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. चतुर। दक्ष।

आगराई—*(वि०)* आगरे का (अफीम)।

आगरो—*(न०)* भारत का एक प्रसिद्ध शहर। आगरा। *(वि०)* १. अत्यधिक। २. राशि। ढेर।

आगळ—*(ना०)* १. अर्गला। व्योंडा। भोगळ। २. सिटकनी। ३. रोक। बाधा। *(वि०)* १. रक्षक। २. बाधक। *(क्रि०वि०)* सामने। आगे।

आगळ कूंची—*(ना०)* बाहर से भीतर की अर्गला को खोलने का एक उपकरण। २. उपाय। ३. जानकारी। ४. भेद। रहस्य।

आगलड़ो—*(वि०)* १. आगे वाला। २. आगे का।

आगळ सींगो—*(वि०)* वह जिसके सींग आगे की ओर झुके-बड़े हों (बैल)।

आगळियार—*(न०)* १. सेवक। चाकर। २. मुखिया। अग्रणी। *(वि०)* १. आगे रहने वाला। *(क्रि० वि०)* आगे।

आगळी—*(ना०)* अर्गला। व्योंडा। आगळ।

आगली—*(वि०)* १. बढ़कर। विशेष। २. अग्रणी। *(क्रि० वि०)* अगाड़ी।

आगली-पाछली—*(वि०)* १. आगे-पीछे की-। पुरानी या गई गुजरी (बात)।

आगलो—*(वि०)* १. पूर्व का। पहले का। २. सामने का। आगे का। ३. सामने वाले पक्ष का। ४. आगामी। आने वाला। ५ अग्रणी।

आगळो—*(न०)* बड़ी अर्गला। व्योंडा। भोगळ। *(वि०)* १. अग्रणी। २. बढ़कर।

आगलो-पाछलो—*(वि०)* १. आगे और पीछे का। २. पहले-पीछे का। ३. नया-पुराना।

आगवो—*(वि०)* १. कुल। समस्त। २. अगुआ। मुखिया।

आग-व्रजाग—*(न०)* वज्राग्नि। बिजली की आग। २. क्रोधाग्नि।

आगंतुक—*(वि०)* १. आया हुआ। २. आने वाला। *(न०)* अतिथि। मेहमान।

आगंध—*(न०)* अश्वगंधा। आसगंध।

आगाज—*(ना०)* आग्राज। गर्जन। आगर्जन। २. रोष। क्रोध।

आगा-पीछो—*(न०)* अगला और पिछला भाग। २. कुरते का अगला और पीछे का भाग। ३. दुविधा। ४. परिणाम। *(वि०)* अगला-पिछला।

आगामी—*(वि०)* १. आगे का। २. आने वाला। २. भविष्य में आने या होने वाला।

आगार—*(न०)* १. घर। २. स्थान। ३. कोठार। ४. खजानो। कोष।

आगास—*(न०)* आकाश। आभो।

आगाशी—(ना०) १. घर के ऊपर के कमरे के आगे का छज्जा। २. चंदोवा। चांदनी।

आगाहट—(न०) १. राज्य की ओर से देव-स्थान को अर्पण की हुई भूमि। गवहार। २. चारण, भाट, ब्राह्मण, साधु आदि को दान में दी हुई भूमि या गांव। ३. दान।

आगियो—(न०) १. जुगनूं। खद्योत। २. चिनगारी। ३. पतंगा। फतिंगा। ४. ज्वार की फसल का एक रोग। ५. पशुओं का एक रोग।

आगीं—(ना०) आग। अग्नि। (क्रि०वि०) १. आगे। २. दूर।

आगीनै—(क्रि०वि०) १. आगे को। २. सामने। आगे।

आगी-पाछी—(ना०) १. इधर की उधर और उधर की इधर। २. परस्पर भिड़ाने कराने की बातें। ३. पीठ पीछे की निंदा। चुगली। ४. बुराई। निंदा।

आगीवाण—(वि०) अगुआ। मुखिया।

आगू—(वि०) १. अगुआ। पथ प्रदर्शक। (वि०) अगला। (क्रि०वि०) १. पहले। २. पहले से। ३. भविष्य में।

आगूकथ—(ना०) भविष्य वाणी।

आगूनै—(क्रि०वि०) आगे।

आगूलग—दे० आगै लगै।

आगूंच—(क्रि० वि०) पहले। पहले से। पेशगी। अग्रिम।

आगेवाणी—दे० आगीवाण।

आगै—(क्रि० वि०) १. सामने। सम्मुख। २. अगाड़ी। ३. इसके बाद। और। ४. दूर। ५. पहले। बीते समय में।

आगै-पाछै—(क्रि० वि०) १. आगे और पीछे। २. इधर-उधर। ३. एक के बाद दूसरा। ४. एक-एक करके।

आगै-पीछै—दे० आगै-पाछै।

आगै-लग—दे० आगै लगै।

आगै-लगै—(क्रि० वि०) १. लगातार। निरंतर। २. अंत तक। ३. आदि से। शुरू से। (वि०) क्रमानुसार। सिलसिलेवार। (न०) सिलसिला। क्रम।

आगै-लारै—(अव्य०) १. परिवार या रिश्ते में। २. पहले या बाद में। ३. कभी आगे, कभी पीछे। दे० आगै-पाछै।

आगैवान—दे० आगीवाण।

आगोतर—(न०) अगला जन्म। मरने के बाद होने वाला जन्म।

आगो-पाछो—(न०) इधर-उधर करने की क्रिया या भाव। (क्रि० वि०) इधर-उधर।

आगो-पीछो—दे० आगा-पीछो।

आगोर—(ना०) तालाब के पास की वह जमीन जिसकी वर्षा का पानी उस जला-शय में आता है।

आगोलग—दे० आगै लगै।

आग्ना—(ना०) आज्ञा। हुक्म।

आग्नेय—(वि०) १. अग्नि सम्बन्धी। २. अग्नि का।

आग्नेय दिशा—(ना०) अग्निकोण।

आग्नेयास्त्र—(न०) आग फेंकने या उगलने वाला अस्त्र।

आग्या—(ना०) आज्ञा। हुक्म।

आग्याकारी—दे० आज्ञाकारी।

आग्यापत्र—दे० आज्ञापत्र।

आग्यापाळक—दे० आज्ञापालक।

आग्यापाळण—दे० आज्ञापालन।

आग्या भंग—दे० आज्ञा भंग।

आग्रह—(न०) १. अनुरोध। २. हठ। जिद। ३. बल। जोर। ४. तत्परता। मुस्तैदी।

आग्राज—(ना०) १. गर्जन। दहाड़। २. गंभीर ध्वनि।

आग्राजणो—(क्रि०)१. गरजना। दहाड़ना। २. गंभीर ध्वनि करना।
आघ—(न०) १. आदर। मान। २. स्वागत सत्कार। ३. अघ। पाप।
आघड़ी—(क्रि० वि०) दूर। अलग।
आघड़ो—(क्रि० वि०) दूर। अलग।
आघण—(न०) मार्गशीर्ष मास। अगहन। आग्रहायण।
आघरणी—(ना०) सीमंतोन्नयन संस्कार। दे० अघरणी।
आघाट—दे० आगाहट।
आघात—(न०) १. चोट। प्रहार। २. आक्रमण। (वि०) बुलंद। जोर की।
आघी—(क्रि०वि०) दूर। आघेरो।
आघेरी—(क्रि०वि०) दूर। आघी।
आघेरो—(क्रि०वि०) दूर। आघो।
आघो—(क्रि०वि०) दूर। फासले पर। आघेरो।
आघो-कढ—दे० आघो धकेल।
आघो-कढियो—दे० आघो धकेल।
आघो-धकेल—(वि०) विना निष्ठा के जैसा-तैसा किया हुआ। लगन और इच्छा के अभाव में किया हुआ (काम)।
आघो-पाछो—(क्रि०वि०) १. आगे पीछे। २. सब प्रकार से।
आघ्राण—(ना०) १. सुगंध। २. तृप्ति।
आघ्राण-गुंज—(न०) भ्रमर। भौंरा।
आच—(न०) १. हाथ। २. समुद्र।
आचगळो—दे० आचागळो।
आचज—(न०) क्षत्री।
आच-प्रभव—(न०) क्षत्री।
आचमण—दे० आचमन।
आचमणो—दे० आचवणो।
आचमन—(न०) १. दहिने हाथ की हथेली में जल लेकर मंत्र पढ़ते हुए पीना। २. चुल्लू। चळू।
आचमनी—(ना०) आचमन करने की छोटी चमची।
आचरज—(न०) आश्चर्य। अचरज।
आचरण—(न०) व्यवहार। चाल चलन। वर्ताव।
आचरणो—(क्रि०) आचरण करना। व्यवहार करना। रीत्यानुसार कार्य संपन्न करना। २. रीति करना। ३. व्यवहार में लाना। ४. स्पर्श करना।
आचवणो—(क्रि०) आचमन करना। चळू करणो।
आचंत—(वि०) १. अत्यंत। २. अच्छा। (क्रि०) है।
आचागळ—(वि०) १. आजानबाहु। २. अचल। अडिग। ३. वीर ४. उदार।
आचागळो—दे० आचागळ।
आचार—(न०) १. चरित्र। २. व्यवहार। ३. पारम्परिक नियम। ४. दान। ५. त्याग। ६. इनाम। उपहार। ७. रीति-रस्म। ८. कर्त्तव्य। ९. पवित्रता। शुद्धि।
आचार करणो—(मुहा०) १. दान देना। २. नेग चुकाना। ३. रीति संपन्न करना।
आचारज—(न०) १. आचार्य। गुरु। २. पंडित। विद्वान। ३. ब्राह्मणों की एक जाति। ४. एक उपाधि। ५. मृत्यो-परांत क्रिया कर्म कराने वाला व्यक्ति। कट्टिहा। महाब्राह्मण। कारटियो।
आचारजी—(वि०) सवर्णों के अतिरिक्त उपभोग में नहीं लाने दी जाने वाली (हुक्का, चिलम, थाली आदि)। २. आचार से संबंध रखने वाली। ३. आचार्य से संबंध रखने वाली। ४. आचार्य की।
आचारवान—(वि०) शुद्ध आचरण वाला।
आचार-विचार—(न०) १. सामाजिक तथा धार्मिक रूढ़ व्यवहार। २. रहन

सहन । ३. व्यवहार और विचार । ४. धार्मिक रीति-रिवाज और मान्यताएँ ।

आचार-वेदी—(न०) भारतवर्ष ।

आचारहीण—(वि०) आचारभ्रष्ट । आचारहीन ।

आचारी—(वि०) १. चरित्रवान । आचारवान । (न०) रामानुजी वैष्णव । दे० 'आचारजी' सं० १ और २ ।

आचारी-चिलम—(ना०) वह चिलम जो सवर्णों के अतिरिक्त (निम्न वर्ण वालों को) पीने को नहीं दी जाती । मात्र सवर्णों में परस्पर पीने की चिलम ।

आचार्य—(न०) १ महा विद्यालय का प्रधान अध्यापक । २. किसी विषय का निष्णात पंडित । ३. उपनयन संस्कार के समय गायत्री मंत्र का उपदेश देने वाला । ४. धर्म-सम्प्रदाय का संस्थापक । ५. धर्माध्यक्ष । ६. वेद शास्त्रादि सिखाने वाला । ७. धर्मगुरु । ८ पुरोहित । ९. एक उपाधि ।

आचार्या (ना०) १. महा विद्यालय की प्रधान अध्यापिका । २. विदुषी स्त्री । ३. पंडिता ।

आचार्याणी—(ना०) आचार्य की पत्नी ।

आचिरजा—(ना०) १. पूजागीत । चिरजा । २. वह पूजा-स्तुति जिसको प्रथम आचार्य गाता है तदुपरान्त अन्य पूजार्थी उसका अनुवर्तन करते हैं ।

आच्छादन—(ना०) १. ढक्कन । २. आव-

आछटणो—(क्रि०) १. झटकना । २. झटका देना । प्रहार करना । ३. पछाड़ना । ४. झपटना ।

आछन्न—दे० आसन्न ।

आछंट—दे० आछट ।

आछंटणो—दे० आछटणो ।

आछादित—दे० आच्छादित ।

आछापणो—(ना०) १. अच्छापन । २. भलाई ।

आछी—(वि०) १. अच्छी । २. झीनी । पतली । (ना०) चारणों की एक देवी ।

आछेरो—(वि०) १. तुलना में अच्छा । २. अच्छा ।

आछो—(वि०) १. अच्छा । १. पतला । झीना । ३. स्वस्थ । (अव्य०) अस्तु । खैर । अच्छु । २. कोई बात नहीं । ३. भला । सुद्रो ।

आछोड़ी—(वि०) १. अच्छी । भली । आछी । २. सुंदर । ३. महीन । (ना०) १. बालू । २. पीसी हुई चीनी । बूरा । शक्कर ।

आछोड़ो—(वि०) अच्छा । भला । २. महीन । बारीक ।

आज—(न०) १. वर्तमान दिन । २. वर्तमान काल । (क्रिविo) १. इस समय । चल रहा दिन । २. इन दिनों में । वर्तमान काल में । ३. अब । इस समय ।

आजकल—(क्रिवि०) इस समय । इन दिनों में ।

आजमास—(ना०) आजमाइश। परीक्षण। जाँच।

आजाजीत—(वि०) जिसको जीता नहीं जा सके। अजीत।

आजाणो—दे० 'आणो' के क्रिया अर्थ।

आजाद—(वि०) १. स्वतन्त्र। २. मुक्त। छूटा हुआ। ३. बेपरवाह। ४. निडर।

आजादगी—(ना०) स्वतन्त्रता।

आजादी—(ना०) स्वतन्त्रता।

आजानुबाहु—(वि०) १. घुटनों तक लम्बे हाथों वाला। २. शूरवीर।

आजावणो—दे० आवणो।

आजी—(न०) १. घृत। घी। २. युद्ध।

आजीवन—(वि०) जीवन पर्यंत। जिंदगी-भर।

आजीविका—(ना०) १. वृत्ति। रोजगार। २. रोजी। गुजरान।

आजूणी—(वि०) १. आज की। २. अभी की।

आजूणो—(वि०) १. आज का। २. इस समय का। अभी का।

आजूबाजू—(क्रि०वि०) आस-पास।

आजो—(न०) १. बल। शक्ति। २. साहस। ३. भरोसा। ४. सहारा। ५. सहायता।

आजोको—दे० आजूणो।

आज्ञा—(ना०) आदेश। हुक्म। परवानगी।

आज्ञाकारी—(वि०) आज्ञा मानने वाला। (न०) सेवक।

आज्ञापत्र—(न०) हुक्म नामा।

आज्ञापालक—(वि०) आज्ञाकारी।

आज्ञापालन—(न०) आज्ञा के अनुसार काम करना।

आज्ञाभंग—(न०) आज्ञा का न मानना।

आझाळ—(वि०) १. क्रोधी। २. वीर। ३. तेजस्वी (न०) क्रोध। २. ज्वाला।

आझाळो—(वि०) १. अति क्रोधी। २. वीर। ३. प्रतापी। (न०) परकार। परकाल।

आझो—दे० आजो।

आट-पाट—(ना०) १. बाढ़ (नदी के पानी की) २. ध्वंस। नाश।

आटानाटा—(न०) १. शत्रुता। २. झगड़ा। टंटा।

आटो—(न०) आटा। चून। पिसान।

आटो-लूण—(न०) १. आटा और नमक। २. बिसात। हैसियत। ३. बुद्धि। समझ।

आटो-साटो—(न०) साटो सं० २, ३

आठ—(वि०) पाँच और तीन। चार का दूना। (न०) आठ का अंक। '८'

आठ आनी—दे० अठन्नी।

आठड़ो—दे० आठ।

आठ पहोर—(न०) १. आठों पहर। दिन रात। हर समय। २. रात और दिन के आठ पहर।

आठम—(ना०) पक्ष का आठवाँ दिन। अष्टमी। आठें।

आठमासियो—(वि०) आठवें मास में जन्मा हुआ। अठमासियो।

आठमों—(वि०) जो क्रम में सात के बाद आता हो। आठवाँ।

आठवळ—दे० आठूंवळाँ।

आठवाट—(न०) नाश। नष्ट। (क्रि०वि०) इधर-उधर।

आठवों—दे० आठमों।

आठानी—दे० अठन्नी।

आठी—(ना०) १. वेणी को लम्बी करने के लिये उसमें गूंथी जाने वाली काले रंग की ऊनी मोटी डोरी। २. अटेरन पर लपेटी हुई सूत की आँटी। लच्छी।

आठूंगाँठ—(अव्य०) १. सभी प्रकार। सब तरह से। २. पूरा का पूरा। ३. सभी अंगों से।

आठूंपहर—(क्रि०वि०) आठों पहर। हर समय। रातदिन।

आठूंवळाँ—(क्रि०वि०) आठों दिशाओं में। सब तरफ।
आठें—दे० आठम।
आठो—(न०) आठ का अंक। '८'। २. विक्रम संवत् का आठवाँ वर्ष।
आड—(ना०) १. शैव धर्मावलंबियों का तिलक। त्रिपुण्ड्र। २. स्त्रियों का एक शिरोभूषण। ३. स्त्रियों के गले में पहनने का एक आभूषण। ४. कपास ओडने का स्थान। ५. एक जल-पक्षी। ६. ओट। परदा। ७. रोक। अवरोध। ८. फलसे को बंद करने की एक लंबी और मोटी लकड़ी। ९. पानी से भरा हुआ खड्डा।
आड-टेढ—(ना०) थोड़ी देर के लिये लेट कर किया जाने वाला आराम।
आडग—दे० आडगी। (न०) २. जामा। ३. दूल्हे का जामा।
आडगी—(ना०) १. ढाल। २. परदा।
आडणो—(क्रि०) १. माँडना। रचना। बनाना। २. किसी वस्तु का पूर्व रूप (नमूना) तैयार करना। ३. निर्माण की जाने वाली वस्तु के यथारूप बन जाने की जाँच करने के लिये उसके सभी भागों को जोड़ कर देखना। वस्तु का कच्चा रूप तैयार करना। ४. जुए में किसी वस्तु को बाजी (शर्त) पर लगाना।
आडत—(ना०) १. कमीशन लेकर माल को खरीद-फरोख्त करने या कराने का धंधा। आढ़त। दलाली। २. खरीद-फरोख्त कराने का पारिश्रमिक।
आड़तियो—(न०) १. कमीशन लेकर खरीद-फरोख्त करने या कराने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। २. चोरी का माल खरीदने वाला व्यक्ति। (चोरों की भाषा में) ३. मित्र।
आड-पलाण—(न०) ऊंट पर कसे पलान पर दोनों पांव एक ओर रखकर की जाने वाली सवारी।
आडबंध—(न०) १. साधुओं की लंगोटी कसने की कमर में बाँधी जाने वाली मोटी रस्सी। कटिबंध। मेखला। २. साधुओं का लंगोट। ३. बालदिये-भाट, बनजारों और भीलों आदि के साफे पर बाँधी जाने वाली एक सफेद या लाल रंग के कपड़े की पट्टी।
आड बनोळो—दे० आड बंदोळो।
आडबळो—दे० आडावळा।
आड बंदोळो—(न०) पाणिग्रहण के पूर्व कन्या को घोड़ी पर बिठाकर वर के घर पर बंदोला लेने को ले जाने की शोभा यात्रा।
आड वाहर—(ना०) वह बाहर या पीछा जो दाहिने-बाएँ से आड़ा आकर किया जाता है। लुटेरे या आक्रमणकारियों का बाएँ-दाएँ किया जाने वाला पीछा। तिरछी वाहर।
आड वाहरू—(वि०) आडी वाहर करने वाला।
आड़ंग—१. (न०) वर्षा के आगमन की सूचना देने वाली गरमी। उमस। २. ताप। गरमी।
आड़ंगिया—(न० ब० व०) वर्षा ऋतु की उमस में अम्हौरियों में उठने वाली चुभन।
आड़ंगिया खाणो—(मुहा०) उमस के कारण अम्हौरियों में चुभन उठना।
आड़ंगियो—(न०) अग्निकण। चिनगारी। चिणग।
आडंबर—(न०) १. उत्सव। धूमधाम। २. ढोंग। पाखंड। ढूंग। दिखावा। ३. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। ४. महंत, गुरु, तथा राजा के ऊपर रखा जाने वाला छत्र। बड़ा छाता। ५. आच्छादन। छाजन। ६. तंबू। ७. गंभीर शब्द। ८. हाथी की चिंघाड़। ९. तुरही का

शब्द । १०. युद्ध में बजाया जाने वाला वड़ा ढ़ोल । ११. ललकार ।

आडंवरी—*(वि०)* आडंवर वाला । ढ़ोंगी । पाखंडी । ढूंगी ।

आड़ा गवड़ावणो—*(मुहा०)* १. शोक मनाना । २. मरसिया कहना या गाना । ३. मृत्युगीत गाना या गवाना ।

आडायत—*(वि०)* १. आड़ा आने वाला । २. रोकने वाला । ३. सेना से अकेला लोहा लेने वाला । ४. आक्रमण को रोकने वाला ।

आडा रजपूत—*(न०)* १. वह राजपूत जाति जिसमें विधवाएँ पुर्नविवाह करती हैं । २. पुर्नविवाहिता राजपूतानियों से उत्पन्न राजपूत समुदाय ।

आडावळो—*(न०)* स्वनाम एक पर्वत । अरावली पर्वत ।

आडिया—*(न०)* वच्चों द्वारा नाक (की रेंट) को अँगरखे की वाँह के अग्र भाग से पोंछने की क्रिया ।

आडी—*(ना०)* १. पहेली । प्रहेलिका । २. किंवाड़ । कपाट । ३. वाधा । अवरोध । *(वि०)* टेढ़ी । वांकी । २. विरुद्ध ।

आडी ओळ—*(ना०)* १. वस्ती के सभी लोग । गाँव के सभी स्त्री-पुरुष । २. मोहल्ले के सभी स्त्री-पुरुष । ३. अमुक विस्तार के सभी गली मुहल्ले । ४. खेतों की पंक्ति । *(वि०)* सभी । समस्त ।

आडी टाँग—*(ना०)* १. विघ्न । वाधा । २. उलझन ।

आडी देणी—*(मुहा०)* १. किसी के काम में रुकावट डालना । २. द्वार वंद करना ।

आडी माळ—*(ना०)* १. आस-पास के एक के एक सभी खेतों में की गई वुवाई । २. एक ही प्रकार के नाज की वुवाई किये हुए खेतों की पंक्ति ।

आडी वेळा—दे० आडै समय ।

आडै कट—*(न०)* १. सभी प्राणी । २. सभी लोग । *(वि०)* १. समस्त । सभी । २. वेरोक-टोक ।

आडै छाज—*(न०)* नाज को छाज के द्वारा साफ करने की एक विधि ।

आडै टीले वाळा—*(न०)* साढ़ी वारह जातियों को माँगने वाली एक साधु-जमात जो अपनी ललाट पर चंदन की एक मोटी उर्ध्व रेखा खींची रखते हैं, जो सिरे पर मुड़ी हुई (टेढ़ी) होती है ।

आडै समय—*(न०)* विपत्तिकाल । *(अव्य०)* विपत्ति में । दुख पड़ने पर ।

आडो—*(न०)* १. दरवाजा । द्वार । २. कपाट । किंवाड़ । ३. अवरोध । वाधा । *(वि०)* १. टेढ़ा । २. विरुद्ध । *(क्रि० वि०)* अवरोध रूप में । वीच में ।

आड़ो—*(न०)* १. दुराग्रह । हठ । जिद । २. क्रोध । ३. रोष । रोस ।

आडो अड़ि—*(क्रि० वि०)* १. आड़ा आकर । २. सामने से आकर । ३. सबसे अड़कर । रुकावट डालकर ।

आडो अवळो—*(क्रि० वि०)* १. इधर-उधर । यहाँ वहाँ । २. कोने खाँचे में । *(वि०)* १. अनुचित । खोटा । वुरा । २. अशिष्ट । ३. विरुद्ध ।

आड़ो आणो—*(मुहा०)* १. सहायता करना । २. रुकावट डालना । ३. प्रसव के समय भ्रूण का आडा हो जाना ।

आडो आवणो—दे० आडो आणो ।

आडो खोलणो—*(मुहा०)* वंद किंवाड़ को खुला करना । द्वार खोलना ।

आडो धंस—*(न०)* आड़ा मार्ग ।

आडो देणो—*(मुहा०)* द्वार वंद करना ।

आडो फरणो—*(मुहा०)* १. विरुद्ध होना । २. रोकना ।

आडो वोलणो—*(मुहा०)* १. विरुद्ध वोलना । २. किसी की वात के वीच में वोलना ।

आडो मारग—(न०) १. मुख्य मार्ग में मिलने वाला (उसमें से निकलने वाला) किसी दूसरी ओर का मार्ग। शाखा मार्ग। २. मार्ग को काट कर जाने वाला मार्ग। ३. विरुद्धाचरण।

आडो रजपूत—(न०) उस राजपूत जाति का व्यक्ति जिसमें पुनर्विवाह होता है।

आडो लेणो—(मुहा०) जिद करना।

आडो वाळणो—(मुहा०) द्वार बंद करना।

आडो वैर—(न०) एक पक्ष की सहायता करने से दूसरे पक्ष से बन जाने वाली शत्रुता। उधारी शत्रुता। २. व्यर्थ की शत्रुता। फालतू दुश्मनी।

आडो व्हेणो—दे० आडो होणो।

आडो होणो—(मुहा०) १. लेट करके आराम करना। लेटना। सोना। २. रुकावट डालना।

आण—(ना०) १. सौगंद। शपथ। २. दुहाई। ३. आज्ञा। ४. घोषणा। ढंढेरो। (वि०) अन्य। और। दूसरा।

आण-काण—(ना०) मान-मर्यादा।

आण-जाण—दे० आवण-जावण।

आणण—(न०) आनन। मुख। मूंढो।

आणण पंच—(न०) पंचानन। सिंह।

आणणो—(क्रि०) १. लाना। २. ले आना। लाणो। लावणो।

आण-दुवाई—(ना०) दे० आण दुहाई।

आण-दुहाई—(ना०) १. शपथ। सौगंद। २. शासनाधिकार। हुकूमत। ३. दुहाई।

आणनै—(अव्य०) ला करके। लायनै।

आण भराणा अंक—१. सुकृत समाप्त हो गये। २. अनीति-अत्याचार के परिणाम भुगतने का समय आ गया। ३. होनहार आ पहुँचा।

आण भराणो—(मुहा०) १. हो गया। बन गया। २. पापोदय हो गया।

आण-माण—(न०) १. आन-मान। प्रतिष्ठा। २. ठाट-बाट। शान। ३. अभिमान।

आणंद—(न०) १. आनंद। हर्ष। मोह। २. ईश्वर। शंकर। ३. विष्णु।

आणंदकंद—(न०) १. श्रीकृष्ण। २. ईश्वर। अनंदकंद।

आणंदकारी—(वि०) आनंद देनेवाला।

आणंदघण—(न०) १. श्रीकृष्ण। आनंद-घन। २. आनंद से भरपूर।

आणंदणो—(क्रि०) १. आनन्द करना। २. आनन्दित होना। प्रसन्न होना।

आणंद-मंगळ—(न०) १. आनंदोत्सव। २. सुख-चैन।

आणंद-वधाई—(ना०) १. किसी उत्सव की बधाई। २. मंगल अवसर। ३. मंगल उत्सव।

आणंदियउ—(क्रि० भू०) १. आनंद हुआ। २. आनंदित हुआ। ३. आनंद मनाया।

आणंदी—(वि०) १. हरदम प्रसन्न रहने वाला। आनंद में रहने वाला। आनंदी।

आणायत—(न०) 'आणो' लेने या कराने के लिये जाने वाला जमाई।

आणियोड़ो—(भू० कृ०) लाया हुआ। लायोड़ो।

आणी—(प्रत्य०) एक प्रत्यय जो पुरुष के नाम के अंत में लगकर पुत्र के अर्थ का बोध कराता है, जैसे—अमरचंद रामचंदाणी (अमरचंद रामचंद का पुत्र)। (क्रि० भू०) १. ले आया। २. ले आई।

आणो—(न०) १. विवाहोपरान्त वधु का पहली बार ससुराल को आना। द्विरागमन। गौना। हलाणो। मुकळावो। २. वधु को उसके पीहर से ससुराल में और बेटी को उसकी ससुराल से पीहर में लाने का भाव। ३. 'आणो' कराने के समय पुत्री को दिये जाने वाले वस्त्राभूषण।

आणो कराणो—(मुहा०) १. नव विवाहिता पुत्री को प्रथम वार ससुराल भेजना। २. पुत्री को ससुराल भेजना। ३. वधु को पीहर भेजना।

आणो-टाणो—(न०) १. पर्व। उत्सव। २. विवाहादि मांगलिक अवसर।

आणो-मुकळावो—(न०) द्विरागमन। गौना।

आणो लाणो—(मुहा०) पत्नी को पीहर से अपने घर लाना। वर का वधु को उसके पीहर से ससुराल में लाना।

आतताई—(न०) धन-माल लूटने, स्त्रियों को हरण करने और घरों में आग लगाने इत्यादि दुष्कर्म करने वाला व्यक्ति। आततायी।

आतप—(न०) १. सूर्य प्रकाश। धूप। २. सूर्य के प्रकाश की गरमी। उष्णता। गरमी।

आतपत्र—(न०) छाता। छत्री। छतरड़ो।

आतपवारण—दे० आतपत्र।

आतम—(न०) १. आत्मा। २. परमात्मा। ब्रह्म। ३. जीव। (वि०) निजी। स्वकीय। (अव्य) निज। स्वयम्।

आतमग्यान—दे० आत्मज्ञान।

आतमग्यानी—(न०) आत्मा तथा परमात्मा के संबंध में जानकारी रखने वाला। आत्मज्ञानी।

आतमघात—(ना०) आत्मघात। आत्महत्या।

आतमज—(न०) आत्मज। पुत्र।

आतमजा—(ना०) आत्मजा। पुत्री।

आतमजोणी—(न०) १. आत्मयोनि। ब्रह्मा। २. शिव। ३. विष्णु। ४. कामदेव।

आतमज्ञान—(न०) आत्मा और परमात्मा के संबंध की जानकारी। ब्रह्म का साक्षात्कार। आत्मज्ञान।

आतमदेव—(न०) प्राण।

आतमबळ—(न०) अपना और अपनी आत्मा का बल। आत्मबल। अपनाबल।

आतमराम—(न०) १. परमात्मा। ब्रह्म। २. जीव।

आतमसुख—(न०) एक प्रकार का रूईदार अंगरखा।

आतमहत्या—(ना०) आत्म-हत्या। आत्मघात।

आतमा—(ना०) १. अन्तःकरण के व्यापारों का ज्ञान कराने वाली सत्ता। आत्मा। २. जीवात्मा। ३. मन। ४. हृदय।

आतमाराम—दे० आतमराम।

आतळै—(क्रि० वि०) जबरदस्ती से।

आतस—(ना०) १. अग्नि। आतश। २. गरमी। ३. क्रोध। ४. जोश। ५. काम पीड़ा। ६. एक रोग। उपदंश। आतशक।

आतसबाजी—(ना०) बारूद के खिलौनों को जलाने का दृश्य या क्रिया। आतशबाजी।

आतस-झाळ—(ना०) १. अग्नि ज्वाला। २. कामाग्नि। काम ज्वाला।

आतसपीड़—(ना०) १. काम पीड़ा। २. गरमी से होने वाली पीड़ा।

आतस-पीड़ू—(वि०) काम पीड़ित।

आतस-पीड़ो—दे० आतसपीड़।

आतसाँ—(न०ब०व०) बादशाही जमाने में मनाया जाने वाला एक बादशाही जलसा। दे० आतस।

आतंक—(न०) १. रोब। दब दबा। २. प्रताप। तेज। ३. भय। ४. शंका। ५. उपद्रव।

आताळ—(न०) १. संकट। दुख। २. तेज गति।

आताळो—(वि०) १. उतवाला। २. आतुर।

आतिम—दे० आतम ।

आतिश—दे० आतस ।

आती—(ना०) दुख । कष्ट । (वि०) १. तंग । सँकड़ा । २. हैरान । तंग ।

आतुर—(वि०) १. व्याकुल । २. अधीर । ३. उतावला । ४. दुखी ।

आतुरता—(ना०) १. व्याकुलता । २. अधीरता । ३. उतावल ।

आतो—(वि०) १. तंग । सँकरा । २. गर्म । क्रोधित । ३. हैरान ।

आत्म—दे० आतम ।

आत्मज—दे० आतमज ।

आत्मज्ञान—दे० आतम ज्ञान ।

आत्मज्ञानी—दे० आतमग्यानी ।

आत्मबल—दे० आतमबळ ।

आत्मयोनि—दे० आतमजोणी ।

आत्मराम—दे० आतमराम ।

आत्महत्या—दे० आतमहत्या ।

आत्मा—दे० आतमा ।

आत्मीय—(वि०) १. निजी । २. घनिष्ठ । (न०) १. बहुत नजदीक का रिश्तेदार । २. मित्र । ३. स्नेही ।

आथ—(ना०) १. धन । संपत्ति । २. अपने काम या मजदूरी के पारिश्रमिक के बदले में वर्षाशन, विशेष अवसरों पर इनाम या विवाह आदि अवसरों पर नेग आदि प्राप्त करने की कुछ मजदूर पेशा (नाई, कुम्हार, मेघवाल आदि) जातियों के धन्धे की एक प्रथा । (अव्य०) १. ही । २. भी । ३. सर्वथा । बिल्कुल ।

आथड़णो—(क्रि०) १. लड़ना । भिड़ना । २. भटकना । ३. कठिन परिश्रम करना ।

आथण—(ना०) १. संध्या समय । साँझ । आथणवेळा । २. पश्चिम । आथुण ।

आथणी—(ना०) दही जमाने की हाँडी । जामणी ।

आथद—(न०) १. कृषि-कर । माल-गुजारी । लगान । २. भूमि-कर । लगान । ३. माल गुजारी देने वाला । कृषक ।

आथमण—(ना०) पश्चिम दिशा ।

आथमणी दिसा—(ना०) पश्चिम दिशा । आथुण ।

आथमणो—(न०) पश्चिम दिशा । (क्रि०) १. अस्त होना । २. मरना । ३. पतन होना ।

आथर—(न०) १. चादर । २. बिछौना । ३. फटा-पुराना ओढ़ने-बिछाने का कपड़ा । ४. सर्दी से बचाने के लिए मवेशी को ओढ़ाने का टाट या मोटा कपड़ा । ५. टाट का बिछावन ।

आथरियो—(न०) १. टाट का बिछावन । २. गोदड़ी । ३. फटा-पुराना ओढ़ने का मोटा कपड़ा ।

आथरो—दे० आथरियो ।

आथाण—(न०) १. स्थान । स्थल । २. घर । मकान । ३. गाँव । नगर । ४. दुर्ग । गढ़ । ५. राजधानी । ६. सृष्टि । दुनिया । ७. नाश । ८. पश्चिम दिशा ।

आथा-पोथी—(ना०) १. धन माल । पूंजी । २. घर का सभी सामान ।

आथुड़णो—दे० आथड़णो ।

आथुण—(ना०) पश्चिम दिशा । २. दे० आथण ।

आथू—(न०) आथ प्रथा पर काम करने वाला व्यक्ति ।

आथूणो—(न०) पश्चिम दिशा ।

आद—(वि०) १. आदि । प्रथम । पहला । (न०) १. प्रारम्भ । मूल । २. उत्पत्ति स्थान । (ना०) याद । स्मरण ।

आद जथा—(ना०) डिंगल छंद का एक रचना-प्रकार । आदिजथा ।

आद जुगाद—(वि०) १. अनादि काल का । अति प्राचीन । २. परम्परा का । (क्रि० वि०) अनादि काल से ।

आदत—(ना०) आदत। स्वभाव।

आद पुरख—(न०) १. आदि पुरुष। ब्रह्म। २. विष्णु। ३. ब्रह्मा।

आद भवानी—(ना०) आदि भवानी। आद्यशक्ति।

आदम—(न०) मनुष्य। आदमी। **मिनख।**

आदमरण—(ना०) १. स्त्री। नारी। **लुगाई।** २. नौकरानी। ३. मजदूरनी। **मजूरणी।**

आदमी—(न०) १. आदमी। मनुष्य। **मिनख।** २. पति। खाविंद। **धणी।** ३. नौकर। ४. मजदूर। **मजूर।**

आदर—(न०) १. आदर। सम्मान। खातिर। २. इज्जत। प्रतिष्ठा।

आदरणो—(क्रि०) १. आदर करना। सत्कार करना। २. आरंभ करना। शुरू करना। ३. स्वीकार करना। मानना।

आदर भाव—(न०) १. सम्मान करने की भावना। २. श्रद्धापूर्वक सम्मान। ३. आदर। सम्मान।

आदरस—(न०) १. आदर्श। दर्पण। २. नमूना। आदर्श।

आदर-सत्कार—(न०) सम्मान के साथ की जाने वाली आव-भगत।

आदरा—(न०) आर्द्रा नक्षत्र।

आदर्श—(न०) १. दर्पण। शीशा। २. वह जिसके रूप गुणादि का अनुसरण किया जाय। ३. नमूना।

आद सगत—(ना०) आदि शक्ति। दुर्गा।

आदंत—(न०) आदि और अंत। आद्यन्त। (अव्य०) आदि से अन्त तक।

आदि—(न०) १. मूल कारण। २. उत्पत्ति स्थान। ३. परमेश्वर। ४. प्रारम्भ। (वि०) प्रथम। पहला। (अव्य०) वगैरह। इत्यादि।

आदिक—(अव्य०) आदि। इत्यादि। वगैरह।

आदि कवि—(न०) १. वाल्मीकि ऋषि। २. ब्रह्मा।

आदि काव्य—(न०) वाल्मीकि रामायण।

आदित—(न०) आदित्य। सूर्य।

आदित वार—रविवार।

आदित्य—(न०) सूर्य। रवि।

आदिनाथ—(न०) १. शिव। २. नाथ संप्रदाय के प्रथम आचार्य। ३. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर। ऋषभनाथ।

आदि नारायण—(न०) विष्णु भगवान्।

आदि पुरुष—(न०) १. परमेश्वर। २. किसी वंश का मूल पुरुष।

आदि भवानी—(ना०) आद्यशक्ति।

आदि वराह—(न०)आदि वाराह। वाराह अवतार।

आदि शक्ति—दे० आद सगत।

आदीत—(न०) आदित्य। सूर्य। दे० आदीत-ब्राह्मण।

आदीत ब्राह्मण—(न०) चितौड़ के शासक सीसोदियों के पूर्वजों की एक उपाधि या अल्ल।

आदू—(वि०) १. प्रथम। पहला। २. आदि। प्रारम्भ का। (क्रि० वि०) १. प्रारंभ में। शुरू में। २. प्रारंभ से। शुरू से।

आदू काळ—(न०) प्रारम्भ। आदि काल।

आदेश—(न०) १. आज्ञा। हुक्म। २. प्रणाम। नमस्कार। ३. एक वर्ण के स्थान पर दूसरे वर्ण का आना (व्या.)।

आदेस—दे० आदेश।

आदेसणो—(क्रि०) १. आज्ञा करना। प्रणाम करना।

आदेसातु—(न०) प्राचीन समय में दानपत्र, पट्टे-परवाने, पद और अधिकार प्रदान इत्यादि के आज्ञा पत्रों में लिखा जाने वाला राजा की आज्ञा का एक प्रमाण (पारिभाषिक) शब्द। २. की आज्ञा से। आदेशात्।

आदो—(न०) अदरक ।

आद्रा—दे० आदरा ।

आध—(वि०) दो समान भागों में से एक । आधा ।

आधक—(न०) १. विरुद्ध । २. प्रभुत्व । आधिपत्य । ३. आधिक्य ।

आधख—दे० आधक ।

आधण—(न०) दाल, चावल आदि पकाने के लिये किया जाने वाला गरम पानी । अदहन ।

आध व्याध—दे० आधि-व्याधि ।

आधंतर—(अव्य०) मध्यान्तर । आधी दूरी । (न०) आकाश । (वि०) बीच का । मध्य का । (क्रि०वि०) १. बीच में । २. आकाश में । ३. ऊंचे पर ।

आधान—(न०) १. गर्भ । गर्भाधान । २. धारण करना ।

आधार—(न०) १. सहारा । आश्रय । २. बुनियाद । नींव । ३. वह जिसके सहारे कोई वस्तु बनी या ठहरी हो । ४. पात्र । (वि०) आश्रय दाता ।

आधारण—(न०) १. सहारा । २.सहायता। ३. स्वीकार । ४. पालन । ५. धारण । ६. आरती ।

आधारणो—(क्रि०) १. धारण करना । २. सहारा देना । ३. उठाये रखना । ४. उठाना । ५. अंकित करना । ६. स्वीकार करना । ७. पालन करना ।

आधाळो—(न०) परकार । परकाल । आधाळो ।

आधा सीसी—(न०) आधे सिर में होने वाला दर्द ।

आधि—(ना०) मानसिक पीड़ा ।

आधि दैविक—(वि०) १. जो प्रकृति या लोक से ऊपर हो । २. दैवकृत ।

आधि भौतिक—(वि०) शरीर धारियों द्वारा प्राप्त (कष्ट) ।

आधियो—(न०) १. किसी वस्तु का आधा परिमाण । २. आधी बोतल । (वि०) आधे हिस्से का मालिक ।

आधि-व्याधि—(ना०) मानसिक और शारीरिक पीड़ा ।

आधी—दे० आधो ।

आधीन—(वि०) १. मातहत । २. आश्रित । ३. वशीभूत । ४. विवश । ५. आज्ञाकारी ।

आधीनता—(ना०) मातहती । ताबेदारी ।

आधीनी—दे० आधीनता ।

आधीरो—(क्रि०वि०) १. आधी रात को । २. आधी रात में ।

आधुनिक—(वि०) अर्वाचीन । आज कल का ।

आधेटो—(न०) किसी दूरी का मध्य स्थान । आधी दूरी ।

आधेड़—दे० अधेड़ ।

आधो—(वि०) किसी वस्तु के दो बराबर भागों में से एक । आधा ।

आधो-आध—(न०) बराबर का आधा भाग । आधा हिस्सा ।

आधोड़ी—(ना०) गाय या बैल का आधा चमड़ा । (वि०) आधी ।

आधोड़ो—(वि०) आधा वाला । आधा ।

आधो-दूधो—(वि०) १. लगभग आधा । २. आधा ।

आधोफर—(वि०) बीच मध्य । (न०) १. महल । २. छज्जा ।

आधोरण—(न०) महावत । पीलवान ।

आधोळी—दे० आधोड़ी ।

आध्यात्मिक—(वि०) १. आत्मा संबंधी । २. आत्मा और ब्रह्म संबंधी ।

आन—(ना०) १. मर्यादा । २. शील-संकोच । ३. शान । ४. प्रतिष्ठा । इज्जत । ५. ठाट-बाट । ६. गौरव । ७. लिहाज । (वि०) दूसरा । और । परायो ।

ग्रानक—(न०) १. बड़ा ढोल। २. बड़ा नगाड़ा। ३. गरजता हुग्रा बादल।

ग्रानघ—दे० ग्रानक।

ग्रानन—(न०) मुख। वदन। मूंढो।

ग्रानन-पंच—(न०) पंचानन। सिंह।

ग्रान-बान—(ना०) ठाट-बाट। सजधज।

ग्रानंद—(न०) हर्ष। प्रसन्नता। मोद। आणंद।

ग्रानंदकंद—(न०) श्रीकृष्ण। २. परमात्मा।

ग्रानंदकारी—(वि०) ग्रानंद देने वाला।

ग्रानंदघन—(न०) १. श्रीकृष्ण २. परमात्मा।

ग्रानंदणो—दे० ग्राणंदणो।

ग्रानंद वधाई—(ना०) १. मंगल उत्सव। २. मंगल ग्रवसर। ग्राणंद बधाई।

ग्रानंद-मंगल—दे० ग्राणंद मंगळ।

ग्रानंदी—(वि०) ग्रानंद में रहने वाला। प्रसन्न रहने वाला।

ग्रानाकानी—(ना०) टालमटूल। ग्रागा-पीछा। हाँ-ना।

ग्रानापाई—दे० ग्रानापाण।

ग्रानापाण—(न०) १. दशांश पद्धति के पूर्व रुपये के ६४ पैसों के हिसाब से रुपये की रेजगारी को ग्राने ग्रौर पाइयों में लिखकर दर्शाने की एक पद्धति, जैसे—'=)' एक ग्राना (चार पैसे), '=)' दो ग्राने (८ पैसे), '≡)' तीन ग्राने (१२पैसे)। '।)' चार ग्राने (१६ पैसे) चवन्नी, '॥)' ग्रठन्नी (३२ पैसे), '॥।)' बारह ग्राने (४८ पैसे) पौन रुपया। '।=)' पाँच ग्राने (२० पैसे), '।=)।' सवा पाँच ग्राने (२१ पैसे), '।=)॥' साढ़े पाँच ग्राने (२२ पैसे)। '।=)॥।' पौने छः ग्राने (२३ पैसे), '।=)' छः ग्राने (२४ पैसे), '।≡)' सात ग्राने (२८ पैसे)। इसी प्रकार रेजगारी के सभी हिस्सों को ग्राना पाइयों में लिखा जाता है। २. ग्राने ग्रौर पाग्रों के पहाड़े।

ग्रानी—(ना०) रुपये (६४ पैसों) के सोलहवें भाग का सिक्का। चार पैसों की कीमत का सिक्का।

ग्रानै—(सर्व०) इनको।

ग्रानो—(न०) १. एक रुपये का सोलहवाँ भाग। चार पैसे। २. किसी वस्तु का सोलहवाँ भाग।

ग्राप—(सर्व०) १. 'तुम' ग्रौर 'वे' के लिये ग्रादरार्थक शब्द। २. स्वयं। खुद। ये।

ग्राप-ग्रंगो—(वि०) १. मस्त। मौजी। २. घमंडी। मिजाजी। ३. ग्रक्कड़।

ग्राप-ग्रापरै—(सर्व०) ग्रपने-ग्रपने।

ग्राप-ग्रापरो—(सर्व०) ग्रपना-ग्रपना।

ग्राप करमी—(वि०) १. स्वभाग्य पर भरोसा करने वाली या करने वाला। २. कर्म करके भाग्य बनाने वाली या बनाने वाला। स्वावलंबी।

ग्राप करमो—(वि०) १. स्वभाग्य पर भरोसा रखने वाला। २. कर्म करके भाग्य बनाने वाला। स्वावलंबी।

ग्रापगा—(ना०) नदी।

ग्रापघात—(ना०) ग्रापघात। ग्रात्महत्या।

ग्रापघाती—(वि०) ग्रात्मघाती। ग्रात्म-हत्यारा।

ग्रापच—(ना०) १. मनोव्यथा। २. ग्रात्म-हत्या।

ग्रापच-कूटो—(न०) १. कलह। २. मन-स्ताप। ३. व्यर्थ का परिश्रम। बिना लाभ का ग्रौर पच-मरने का काम।

ग्राप-चीतो—(वि०) ग्रपनी इच्छा से ग्रौर इच्छानुसार काम करने वाला। २. ग्रपने ग्राप।

ग्रापज—(सर्व०) स्वयं। ग्राप ही।

ग्रापजादो—(वि०) १. स्वावलंबी। २. कर्मठ। ३. ग्रभिमानी ४. हठी।

ग्रापजी—(न०) १. दादा पिता ग्रादि गुरुजनों के लिए सम्मान सूचक संबोधन। २. दादा-पिता ग्रादि गुरुजन। ३. पिता।

आपजी-सा—दे० आपजी ।

आपज्ञान—(न०) आत्मज्ञान ।

आपड़णो—(क्रि०) किसी के पीछे दौड़कर उसको पहुँचना । पकड़ना । पहुँचना ।

आपण—(न०) १. भक्तकवि बाग्हठ ईसरदास का एक आत्मज्ञान संबंधी काव्य । गुण-आपण २. आत्मा । ३. बाजार । ४. दुकान । (सर्व०) १. अपन । अपन-लोग । २. अपना । ३. अपने । हमारे ।

आपणी—(सर्व०) अपनी ।

आपणो—(सर्व०) अपना । (क्रि०)१. देना । २. अर्पण करना ।

आपत—(ना०) आपत्ति । कष्ट । (क्रि०वि०) एक दूसरे के साथ । परस्पर ।

आपतकाळ—(न०) १. आपत्काल । कुसमय । २. दुर्दिन ।

आपदा—(ना०) विपत्ति ।

आपनामी—(वि०) अपने नाम से प्रसिद्ध होनेवाला ।

आपपर—(क्रि०वि०) परस्पर । आपस में ।

आपबळ—(न०) आत्मबल ।

आपबळी—(वि०) १. आत्मबली । २. स्वावलम्बी । ३. सामर्थ्यवान ।

आपमलो—(वि०) १. अपनी इच्छानुसार करने वाला । स्वच्छंद । २. स्वतन्त्र । ३. वीर ।

आपमुरादो—(वि०) स्वेच्छाचारी । स्वच्छंद ।

आपमेळो—दे० आप-चीतो ।

आपरंगो—(वि०) अपने रंग में रंगा हुआ । मौजी । मस्त । २. मिजाजी । घमंडी ।

आपरी—(सर्व०) अपनी । (वि०) आपकी ।

आपरूप—(न०) १. आत्मस्वरूप । ब्रह्म-स्वरूप । २. परमात्मा । ईश्वर । ३. अपना रूप । असली रूप । (क्रि०वि०) अपने रूप में । अपने असली रूप में ।

आपरो—(सर्व०) अपना । (वि०) आपका ।

आपवळ—(क्रि०वि०) अपने पक्ष में । अपनी ओर ।

आपवीती—(वि०) १. अपने में बीती हुई । खुद की भुगती हुई । (ना०) अपनी घटना । घरबीती । 'परबीती' का उलटा ।

आपस—(क्रि०वि०) परस्पर । एक दूसरे के साथ ।

आपसरी—(क्रि०वि०) १. परस्पर में । परस्पर मिल करके । २. अपने आप ।

आपसी—(वि०) पारस्परिक ।

आपसूझ—(ना०) अपनी समझ । खुद की बुद्धि ।

आपा ऊपर—(वि०) अपनी शक्ति से अधिक । अपनी हैसियत से बाहर । (क्रि० वि०) अपने असली रूप में । बिगड़े रूप में ।

आपा ऊपरो—(वि०) १. अपनी शक्ति से अधिक काम करने वाला । २. अपनी हैसियत के उपरान्त बोलने वाला । ३. अपने असली रूप में आने वाला ।

आपाण—(न०)१. शक्ति । पराक्रम । २. साहस । ३. करामात ।

आपाणी—(वि०) १. आपाणवाला । शक्तिवान । पराक्रमी । २. साहसी । हिम्मती । (सर्व०) अपनी ।

आपाधापी—(ना०) १. मनचाही । २. खींचातानी । ३. अपनी-अपनी चिंता । ४. धांधली । शरारत ।

आपापणो—(सर्व० वि०) (आप+आपणो का छोटा रूप) अपना-अपना ।

आपा पणो—(न०) १. अभिमान । अहंकार २. बल । शक्ति ।

आपापंथी—(वि०) १. सामाजिक व धार्मिक नियमों के विरुद्ध आचरण करने वाला । २. पारंपरिक आचार-विचारों की अवहेलना करने वाला । ३. मनमानी करने वाला । स्वेच्छाचारी ।

आपायत—(वि०) १. जबरदस्त। बलवान। २. साहसी।

आपायतो—दे० आपायत। (स्त्री० आपायती)।

आपासमो—(वि०) १. स्वच्छंद। अपने समान।

आपाँ—(सर्व०ब०व०) १. अपन। २. हम।

आपाँपै—(सर्व०) १. अपने-अपने। २.अपन। अपन-अपन। ३. स्वयं।

आपे—(सर्व०) अपने आप। स्वतः।

आपेज—(सर्व०) अपने आप ही।

आपै-थापै—(वि०) १. अपने भरोसे या सहारे पर रहने वाला। स्वावलम्बी। २. मनमौजी। इच्छाचारी। ३. स्वतंत्र। (अव्य०) अपनी मर्जी से। इच्छानुसार।

आपै-थापै—दे० आपै-थापै।

आपो—(न०) १. आत्मा। २. आत्मस्वरूप। ३. सहारा। आधार। ४. परिचय। ५. भूतावेशित व्यक्ति द्वारा दिया जाने वाला भूत का परिचय। ६. शक्ति। ७. अपनी सत्ता। व्यक्तित्व। ८. स्वबल। ९. स्वाभिमान। १०. जीवात्मा।

आपो-आप—(सर्व०) १. अपने आप। स्वतः। २. स्वयं।

आफत—(ना०) विपत्ति। आपदा।

आफताब—(न०) सूर्य।

आफरणो—(क्रि०) पेट में वायु विकार होना। वायु से पेट फूलना। अफरना।

आफरीवाद—(न०) धन्यवाद। शाबास।

आफरो—(न०) पेट में होने वाला वायु-विकार। वायु से पेट में होने वाला फुलाव। आफरा।

आफळणो—(क्रि०) १. टकराना। २. भिड़ना। ३. युद्ध करना। ४. तड़फना। ५. नाश होना। मरना। ६. अत्यधिक परिश्रम करना।

आफाळणो—(क्रि०) १. टक्कर दिवाना। २. भिड़ाना। ३. युद्ध कराना। ४. तड़फाना। ५. नाश कराना। मरवाना। ६. अत्यधिक परिश्रम करवाना।

आफू—(न०) अफीम। अमल।

आफूगो—(वि०) १. समस्त। सब। (सर्व०) अपने आप। स्वयं।

आफूड़ियो—(वि०) अफीमची। अमलदार।

आब—(ना०) १. आभा। चमक। कान्ति। २. आबरू। प्रतिष्ठा। ३. छवि। शोभा। (न०) ४. पानी। ५. वर्ण। रंग।

आबकारी—(वि०) शराब आदि नशीली वस्तुओं से संबंध रखने वाला (सरकारी महकमा)।

आबखानो—(न०)१. पानीघर। पनिहारा। पर्णोंढो। २. स्नानघर। ३. पिशाबघर।

आबखोरो—(न०) एक जलपात्र।

आबदार—(वि०) १. पानी वाला। आभायुक्त। कान्तिमान। २. रंगदार। सुवर्ण। ३. सुन्दर।

आबनूस—(न०) एक वृक्ष।

आबरू—(ना०) प्रतिष्ठा। इज्जत।

आबरूदार—(वि०) प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

आब-हवा—(ना०)१. जलवायु। २. वातावरण।

आबाद—(वि०) १. बसा हुआ। २. उपजाऊ।

आबादी—(ना०) १. बस्ती। आबादी। २. जनसंख्या।

आबी—(ना०) १. चमक। ओप। कान्ति। २. शोभा। ३. प्रतिष्ठा। पानी। ४. शस्त्र में दी जाने वाली एक ओप। पानी। जौहर।

आबू—(न०) १. आडावळा (अरावली) पर्वतमाला का सबसे ऊंचा शिखर। आबू पर्वत। अर्बुदगिरि २. राजस्थान का एक प्रसिद्ध, ऐतिहासिक और पर्वतीय-तीर्थ स्थान। ३. आबू पर्वत पर बसा हुआ एक नगर। ४. आबूरोड़ रेलवे स्टेशन के पास बसा हुआ खराड़ी नाम का नगर। खराड़ी। आबूरोड।

ग्राभ—(न०) १. ग्राकाश । ग्राभो । ऊर्ध्वलोक । स्वर्ग । (ना०) २. ग्राभा । कान्ति ।

ग्राभ-टूटणो—(मुहा०) १. घोर ध्वनि के साथ वज्राग्नि गिरना । २. घोर संकट का ग्रा पड़ना ।

ग्राभड़ छेट—(ना०) १. ग्रछूत व्यक्ति या रजस्वला स्त्री से स्पर्श होने का ग्रशौच । २. स्पर्शदोष । ३. रजस्राव । **ग्रटकाव ।**

ग्राभड़ छोत—दे० ग्राभड़छेट ।

ग्राभड़णो—(क्रि०) १. स्पर्श होना । छू जाना । २. ग्रछूत जाति के व्यक्ति या ऋतुमती स्त्री से छू जाना एवं स्पर्श होने का ग्रशौच लगना । ३. ग्रशौच लगना । ४. स्पर्श करना । छूना । ५. भिड़ना ।

ग्राभड़ियोड़ी—(वि०) १. ऋतुमती । रजस्वला । **कपड़ां ग्रायोड़ी ।** २. स्पर्श की हुई ।

ग्राभड़ियोड़ो—(वि०) स्पर्श किया हुग्रा ।

ग्राभ फूटणो—(मुहा०) घोर वर्षा होना ।

ग्राभरण—(न०) ग्राभूषण ।

ग्राभा—(ना०) १. शोभा । २. चमक ।

ग्राभार—(न०) १. धन्यवाद । १. उपकार । एहसान ।

ग्राभारी—(वि०) १. कृतज्ञ । २. उपकार मानने वाला ।

ग्राभास—(न०) १. किंचित भास या ज्ञान । २. छाया । झलक । ३. भ्रम ।

ग्राभीर—(न०) १. ग्रहीर । ग्वाला । २. एक छंद । ३. एक राग ।

ग्राभूखण—(न०) ग्राभूषण । गहना ।

ग्राभूपण—दे० ग्राभूखण ।

ग्राभूसण—दे० ग्राभूखण ।

ग्राभो—(न०) ग्राकाश । (वि०) ग्राश्चर्य-चकित । चकित ।

ग्राभोग—(न०) भजन, पद या कविता की वह ग्रंतिम कड़ी जिसमें कवि का नाम दिया हुग्रा रहता है । ग्रभोग । २. पूर्ण । समाप्त । ३. उपभोग । ४. विस्तार । (वि०) परिपूर्ण । पूर्ण ।

ग्राभ्रण—(न०) ग्राभरण । ग्राभूषण ।

ग्राम—(वि०) १. सर्व-साधारण । २. सर्व-साधारण में व्याप्त । (न०) ग्राम्र ।

ग्रामड़णो—(क्रि०) १. मिटना । नाश होना । २. लगना । ग्रा लगना । पहुंचना ।

ग्रामण-दूमणो—(वि०) १. उदास । नाराज । २. हताश ।

ग्रामद—(ना०) १. ग्राय । ग्रामदनी । २. ग्रागमन ।

ग्रामदनी—(ना०) १. ग्राय । ग्रामद । २. ग्रायात ।

ग्रामना—(ना०) १. इच्छा । चाह । २. ग्राम्नाय । वेद । ३. द्विजों का ग्राम्नाय सूचक भेद या फिरका । ४. प्राचीन परिपाटी । परम्परा ।

ग्रामनै-सामनै—(क्रि०वि०) एक दूसरे के सामने । ग्रामने-सामने । प्रत्यक्ष ।

ग्रामनो—(न०) नाराजी ।

ग्रामनो-सामनो—(न०) मुठभेड़ । मुकाबला ।

ग्रामय—(न०) १. रोग । बीमारी । २. माया ।

ग्रामरस—(न०) ग्रामरस । ग्राम्ररस ।

ग्रामलवाणी—(न०) गुड़ डालकर बनाया जाने वाला इमली का पानी ।

ग्रामलकी-ग्यारस—दे० ग्राँवला-ग्यारस ।

ग्रामळासार-गंधक—(न०) एक प्रकार का गंधक ।

ग्रामळासार-गंध्रप—दे० ग्रामळासार-गंधक ।

ग्रामली—(ना०) इमली ।

ग्रामळो—दे० ग्राँवळो । दे० ग्रावळो ।

ग्रामहो-सामहो—दे० ग्रामा-सामा ।

ग्रामंख—(न०) ग्रामिप । मांस ।

ग्रामंखच्चर—(वि०) मांस भक्षी (पशु व पक्षी)।

ग्रामंत्रण—(न०) निमंत्रण । बुलावा । तेड़ौ ।

ग्रामंत्रणो—(क्रि०) ग्रामंत्रण देना । बुलाना । तेड़णो ।

ग्रामादा—(वि०) तैयार । तत्पर ।

ग्रामा-सामा—(क्रि०वि०) ग्रामने-सामने ।

ग्रामिख—(न०) ग्रामिप । मांस ।

ग्रामिखच्चर—दे० ग्रामंखच्चर ।

ग्रामिप—दे० ग्रामिख ।

ग्रामीखो—(वि०) इस प्रकार का ।

ग्रामुख—(न०) १. प्रस्तावना । १. उपोद्वात ।

ग्रामुहो-सामुहो—(क्रि० वि०) ग्रामने-सामने ।

ग्रामेज—(न०) १. मुकाबला । मुठभेड़ । २. मिलन । (क्रि०वि०) १. ग्रामने-सामने २. सामने । सम्मुख ।

ग्रामोद—(न०) ग्रानंद ।

ग्राम्हा-साम्हा—(क्रि०वि० ग्रामने-मामने ।

ग्राम्ही-साम्ही—(क्रि०वि०) ग्रामने-सामने।

ग्राम्हीणी—(सर्व०) हमारी । ग्रम्हीणी ।

ग्राम्हीणो—(सर्व०) १. हमारा । ग्रपना । २. मेरा । ग्रम्हीणो ।

ग्राय—(ना०) १. ग्राय । ग्रामदनी । २. लाभ ।

ग्रायत—(वि०) १. शरणागत । २. विस्तृत । लंबा-चौड़ा । (न०) १. घेरा । (ना०) कुरान का वाक्य । ग्रायत ।

ग्रायतां—(न०) मुसलमान लोग ।

ग्रायत्तर—(वि०) पराधीन ।

ग्रायल—(न०) १. चारण जाति की ग्रावड़ देवी । करणीदेवी । २. एक लोक गीत । ३. कुलटा स्त्री । पुंश्चली स्त्री । (वि०) ग्रावड़ देवी की ग्राराधना या पूजा करने वाला ।

ग्रायस—(न०) १. नाथ सम्प्रदाय के संन्यासियों का एक विरुद या पदवी । २. संन्यासी । योगी । ३. ग्रादेश । ग्राज्ञा । ४. लोहा ।

ग्रायात—(वि०) बाहर से ग्राया हुग्रा (माल-सामान) (न०) ग्रायात माल पर लगने वाला कर ।

ग्रायास—(न०) १. ग्रावास । निवास । २. ग्राकाश । ३. ग्राभास । ४. परिश्रम ।

ग्रायु—(ना०) ग्रायुष्य । वय । उम्र ।

ग्रायुध—(न०) ग्रस्त्र-शस्त्र । हथियार ।

ग्रायुर्वेद—(न०) १. भारतीय चिकित्सा शास्त्र । २. ग्रथर्ववेद का उपवेद ।

ग्रायोजन—(न०) १. किसी कार्य में लगना । २. तैयारी । ३. सामग्री ।

ग्रायोड़ी—(भू०कृ०ना०) ग्रायी हुई ।

ग्रायोड़ो—(भू०कृ०) ग्राया हुग्रा ।

ग्रायोधन—(न०) संग्राम ।

ग्रार—(ना०) १. कील जो बैल हाँकने के डंडे में लगी रहती है । २. ऐसी कील वाला डंडा । ३. करौत । ग्रारी । ४. चमड़ा छेदने का सूग्रा । ५. हठ । जिद । (प्रत्य०) एक प्रत्यय जो 'काम करने वाला' के ग्रर्थ का बताता है । करने वाला ।

ग्रारख—(विं०) समान । बराबर । (न०) १. समानता । बराबरी । २. भाँति । प्रकार । ३. चिन्ह । निशान । ४. शक्ति । पराक्रम ।

ग्रारखो—दे० ग्रारिखो ।

ग्रारज—(न०) १. ग्रार्य । २. श्रेष्ठ पुरुष । ३. सबसे पहले सभ्यता प्राप्त करने वाली जाति । ४. हिन्दू । (वि०) १. श्रेष्ठ । २. पूज्य । बड़ा ।

ग्रारजा—(ना०) १. ग्रार्या । २. पार्वती । ३. साध्वी । ४. ग्रार्या छंद । ५. रोग । बीमारी ।

ग्रारजियाँ—*(ना०)* जैन साध्वी। **ग्रारजा।**

ग्रारण—*(न०)* १. ग्ररण्य। वन। २. युद्ध। ३. लुहार की भट्टी।

ग्रारणियो-छाणो—*(न०)* १. सूखा हुग्रा गोबर।। उपला। कंडा।

ग्रारणो—*(वि०)* जंगल का। जंगली। **ग्रारणियो।**

ग्रारणो-छाणो—दे० ग्रारणियो-छाणो।

ग्रारण्य—*(वि०)* जंगल का। *(न०)* दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

ग्रारत—*(ना०)* १. जरूरत। ग्रावश्यकता। २. कामना। इच्छा। ३. पीड़ा। ४. लालसा। ५. ग्रपनत्व। ग्रपनापन। ६. दीन पुकार। *(वि०)* १. जरूरत वाला। २. दुखी। ग्रार्त। ३. ग्रातुर। ग्रधीर।

ग्रारतड़ी—दे० ग्रारती।

ग्रारतवंत—दे० ग्रारतवान।

ग्रारतवान—*(वि०)* १. ग्रधिक जरूरत वाला। २. ग्रातुर। ग्रधीर। ३. दुखी। पीड़ित। ४. संकट ग्रस्त।

ग्रारती—*(ना०)* १. देवमूर्त्ति के सम्मुख घी का दीपक घुमाने की क्रिया। नीराजन। २. ग्रारती का दीपक-पात्र। ३. ग्रारती करते समय गायी जाने वाली स्तुति। ४. विवाह की एक प्रथा जिसमें तोरण-द्वार पर दूल्हे की सास द्वारा ग्रनेक दीपकों वाली ग्रारती उतारी जाती है। ४. दूल्हे की ग्रारती करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

ग्रारती उतारणी—*(मुहा०)* देवमूर्त्ति के सम्मुख ग्रारती घुमाना।

ग्रारती करणी—दे० ग्रारती उतारणी।

ग्रारतो—*(न०)* बड़ी ग्रारती। ग्रारती।

ग्रारपार—*(क्रि०वि०)* १. इस किनारे से उस किनारे तक। २. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। ३. इधर से उधर।

ग्रारब—*(न०)* १. मुसलमान। २. एक प्रकार की तोप। *(वि०)* ग्ररब का रहने वाला।

ग्रारबळ—*(न०)* १. ग्राहारबल। २. शारीरिक बल। ३. ग्रायु बल। लंबी ग्रायु। ४. ग्रायु का परिमाण। ५. ग्रायु।

ग्रारव—*(न०)* १. ग्रार्त पुकार। २. ग्राक्रंद। रुदन।

ग्रारस पहाण—*(न०)* ग्रादर्श पाषाण। संगमरमर। **मकराणो।**

ग्रारसपाण—दे० ग्रारस पहाण।

ग्रारसी—*(ना०)* १. दर्पण। ग्राईना। काच। २.ग्रंगूठे में पहनने की शीशा जड़ी हुई स्त्रियोंकी एक ग्रंगूठी। *(वि०)* ऐसी। इस प्रकार की।

ग्रारहट—*(न०)* युद्ध।

ग्रारंग—*(न०)*१. क्रीड़ा। केलि। २. केलि-घर। ३. शस्त्र।

ग्रारंगपुर—*(न०)* केलिगृह।

ग्रारंभ—*(न०)* १. शुरु। प्रारम्भ। २. उत्पत्ति। ३. कोई महत् कार्य। ४. उत्सव। ५. वैभव-प्रदर्शन। ६. सजावट। ७. तैयारी। ८. कार्य प्रवर्ती। ९. गतिशीलता। १०. पाप। ११. बंधन। १२. हिंसा। १३. युद्ध। १४. घर। १५. मंदिर। देवालय। १६. राजभवन। महल। १७. ग्रटारी।

ग्रारंभणो—*(क्रि०)* १. शुरु करना। २. युद्ध करना।

ग्रारंभराण—दे० ग्रारंभराम।

ग्रारंभराम—*(न०)* १. देशों को जीतने एवं राजाग्रों को ग्राधीन बनाने के लिये ग्राक्रमण करने को हर समय तैयार रहने वाला शक्तिशाली राजा। २. वह राजा या बादशाह जिसने बड़े-बड़े ग्रधिपतियों को ग्रपने वश में कर रखा हो। ३. युद्ध देवता। ४. सम्राट। बादशाह। ५. युद्ध

रसिक वीर। (वि०) आक्रमण करने वाला।

आरंभराय—(ना०) १. युद्ध देवी। २. शक्ति। दुर्गा। ३. राठौड़ों की कुल देवी। चामुंडा।

आराण—(न०) युद्ध।

आरात—(अव्य) १. पास। निकट। (न०) शत्रु।

आराधणो—(क्रि०) १. आराधना करना। २. पूजा करना। ३. रक्षार्थ यत्न करना। ४. अधिकार जमाना।

आराधना—(ना०) १. सेवा। पूजा। २. उपासना। (क्रि०) करना।

आराधी—(वि०) आराधना करने वाला।

आरावो—(न०) १. ऊँट या बैलगाड़ी की तोप। २. छोटी तोप। ३. गोला-बारूद।

आराम—(न०) १. स्वास्थ्य लाभ। २. विश्राम। ३. शान्ति। चैन। ४. बाग। बगीचा।

आरास—(न०) १. शीशा। दर्पण। २. सजावट।

आरासणो—(क्रि०) सजाना। सजावट करना।

आरासुर—(ना०) एक देवी।

आराहणो—(क्रि०) आराधना करना।

आरि—(ना०) झींगुर। झिल्ली।

आरिख—(न०) १. चिन्ह। निशान। २. जोश। ३. दशा। अवस्था। ४. सूरत। (वि०) समान। सदृश।

आरिखो—(वि०) १. समान। सदृश। (न०) १. दशा। अवस्था। २. ढंग। प्रकार।

आरी—(ना०) १. करौती। २. बैलों को हांकने के लिये पैनी कील लगी हुई लकड़ी। ३. जूता सीने का सूआ। सुतारी। ४. चमड़ा कागज आदि छेदने का एक औजार।

आरी-कारी—(ना०) १. तैयारी। २. हलचल।

आरीयण—(न०) १. आर्यजन। आर्य लोग। हिन्दू। २. आर्यावर्त।

आरीसो—(न०) दर्पण। शीशा। काच।

आरे—(न०) १. स्वीकार। मंजूर। २. सीमा। हद। ३. किनारा। ४. अधिकार। वश।

आरे करणो—(मुहा०) १ स्वीकार करना। २. विवश करना।

आरे राखणो—(मुहा०) मंजूर रखना।

आरेठो—(न०) रीठा का वृक्ष अथवा फल।

आरो—(न०) १. बड़ी करौत। २. बैल गाड़ी का एक उपकरण। ३. समय। ४. जैन मतानुसार सृष्टिकाल के विभाग का नाम। ५. बारी। पारी।

आरोगण—(न०) भोजन। जीमन। **जीमण**।

आरोगणो—(क्रि०) भोजन करना। जीमना। **जीमणो**।

आरोगी—(ना०) चिता।

आरोड़—(वि०) जबरदस्त। बलवान।

आरोध—(न०) १. अवरोध। रोक। २. बिना अवरोध। शीघ्र।

आरोप—(न०) १. स्थापित करना। स्थापन। २. आक्षेप। ३. तोहमत।

आरोपण—(न०) १. मिथ्या ज्ञान। २. स्थापित करने का काम। लगाने का काम। स्थापन। स्थापना। ३. मिथ्या धारणा। मिथ्या ख्याल (किसी के संबंध में) ४. किसी के विषय में यह कहना कि उसने ऐसा कहा है।

आरोपणो—(क्रि०) १. आरोप लगाना। २. आरोपित करना। ३. धारण करना। ४. धारणा बनाना। ५. लगाना। लागू करना।

आरोपो—(न०) १. करामात । २ कलंक । ३. जमाव । ४. विवाद ।

आरोह—(न०)१. बाण । तीर । २. आक्रमण । ३. चढ़ाव । चढ़ाई । ४. सवारी। ५. सीढ़ी । ६. स्वर को ऊंचा खींचना । ७. आलाप (संगीत) ।

आरोहणो—(क्रि०) १. सवार होना । २. सीढ़ी पर चढ़ना । ३. आक्रमण करना । ४. स्वर को ऊंचा खींचना । आलाप देना (संगीत) ।

आर्त—(वि०) १. संकट ग्रस्त । २. दीन । ३. पीड़ित ।

आर्थिक—(वि०) १. अर्थ से सम्बन्धित । २. धन या पूंजी सम्बन्धी ।

आर्द्रा—(न०) एक नक्षत्र ।

आर्य—(न०) १. सबसे पहले सभ्य बनने वाली जाति । २. हिन्दू । (वि०) १. श्रेष्ठ । २. पूज्य । ४. श्रेष्ठ कुलोत्पन्न ।

आर्यसमाज—(ना०) महर्षि दयानद द्वारा संस्थापित एक प्रसिद्ध धार्मिक सगठन ।

आर्या—(ना०) १. पार्वती । २. सास । ३. दादी । ४. कुलीन स्त्री । ५. एक छंद ।

आर्यावर्त्त—(न०) भारतवर्ष के उत्तर, मध्य भाग का नाम ।

आर्ष—(वि०) १. ऋषि सबंधी । २. वैदिक ।

आल—(ना०) १. लड़की की संतान । नाती । २. वंश । कुल । ३. गीलापन । आर्द्रता । नमी । ४. लौकी । दूधी । घीआ । ४. लम्बे आकार का मतीरा । एक जाति का लंब-गोल मतीरा । ६. एक क्षुप जिसकी छाल से लाल रंग बनता है ।

आळ—(ना०) १. छेड़छाड़ । खेचल । २. खेल । क्रीड़ा । ३. ठठोली । मजाक । दिल्लगी । ४. झंझट । झमेलो । ५. युद्ध । लड़ाई । ६. घेरा । ७. कलंक । लांछन । ८. दोष । ९. असत्य । झूठ । कूड़ । १०. मादा पशुओं की कामेच्छा । ११. मादा पशुओं की जननेन्द्री । १२. अयाल । (वि०) फजूल । निरर्थक ।

आल-औलाद—(ना०) १. बाल-बच्चे । परिवार । २. अपनी और अपनी लड़की की संतान ।

आळकस—(न०) आलस्य । सुस्ती । आळस ।

आळखो—(न०) १. ओट । २. आलस । आळस ।

आळग—(ना०) १. रुचि के अनुकूल । पसंद । २. प्रीति । प्रणय । प्रेम ।

आळगणो—(क्रि०) १. अच्छा लगना । पसंद आना । २. जी लगना ।

आळ-जंजाळ—(न०) जगत का मोह जाल । माया जाल । प्रपंच ।

आलण—(न०) साग, तीवन आदि को घट्ट बनाने के लिये उसमें मिलाया जाने वाला वेसन ।

आलणो—(क्रि०) १. देना । २. सौंपना । (न०) १. कबूतर का घर । २. कबूतरों का दड़बा । आळनो ।

आळ-पताळियो—(वि०) १. अति चंचल । २. बखेड़ा बाज । ३. ऊधमी ।

आळ-पंपाळ—(न०) १. झंझट । बखेड़ा । २. झंझट बाजी । ३. प्रपंच । माया-जाल मोह जाल । आळ-जंजाळ ।

आलम—(न०) १. ईश्वर । २. संसार । दुनिया । ३. बड़ा जन समूह । ४. बादशाह । ५. मुसलमान । ६. 'माधवानल-कामकंदला, प्रेम काव्य-ग्रन्थ के रचयिता एक मुसलमान कवि ।

आलमखानो—(न०) १. नक्कारखाना । २. राज दरबार की गायिकाएँ और तबलचियों के रहने और उनके साज-सामान रखने का स्थान ।

आलमगीर—(न०) बादशाह औरंगजेब का विरुद ।

आलमजी—(न०) मारवाड़ के मालानी प्रान्त में राड़धरा क्षेत्र के एक प्रसिद्ध लोक-देवता । (आलमजी अत्यन्त पराक्रमी राठौड़ राजपूत थे । वे वचनसिद्ध संत कहे जाते हैं ।)

आलय—(न०) घर । स्थान ।

आळस—(न०) आलस । सुस्ती ।

आळसणो—(क्रि०) १. आलसी होना । २. आलस करना । ३. देरी करना । ४. मुलतवी करना ।

आळसवाण—(वि०) १. आलसी । सुस्त । २. अकर्मण्य ।

आळसाणो—(न०) स्थगित । मुलतवी । (क्रि०) अलसाना । आलस करना ।

आळसी—(वि०) १. सुस्त । धीमा । २. आलसी । आळसी ।

आळसेट—(न०) आलस । (क्रि० वि०) १. कठिनाई से । मुश्किल से । २. धीरे-धीरे । ३. सुस्ती से ।

आळसेटू—(वि०) सुस्ती । आलसी ।

आलस्य—दे० आलस ।

आळंग—(ना०) घोड़ी की मस्ती ।

आलंबण—दे० आलंबन ।

आलंबणो—(क्रि०) १. सहारा पाना । २. सहारा देना ।

आलंबन—(न०) १. सहारा । २. आश्रय । ३. रसोद्रेक की आधारभूत वस्तुएँ । (साहि०)४. रस का एक अंग । (साहि०)

आलाण—(न०) हाथी बांधने का खूंटा ।

आळाणो—दे० आळसाणो ।

आलाप—(ना०) १. तान । राग विस्तार । लय का उठाव । २. स्वर माधुरी । ३. संगीत मधुरिमा । ४. कोयल का स्वर ।

आलापणो—(क्रि०) १. आलाप देना । आलापना । तान लगाना । २. गाना ।

आळावणो—(क्रि०) हराना । परास्त करना ।

आलावणो—(क्रि०) १. दांत पीसना । २. मुँह में झाग लाना ।

आळियो—(न०) १. छोटा आला । छोटा ताक । २. दे० असाळियो ।

आलिंगणो—(क्रि०) आलिंगन करना । बाहुपाश में लेना ।

आलीजो—(वि०) रसिक । अलबेला ।

आलीजो भँवर—(न०) १. शौकीन युवक । २. प्रेम सम्बन्धी लोक गीतों का रसिक नायक । ३. रसिक नायक का एक विशेषण । (वि०) १. रसिक । शौकीन ।

आलीणो—(वि०) आलीन । लीन । अनुरक्त ।

आलु—(न०) एक खाद्य कंद । आलू ।

आळूझणो—(क्रि०) उलझना ।

आळूदो—(वि०) १. सज्जीभूत । सजा हुआ । २. तैयार । ३. थकान मिटाया हुआ । स्वस्थ ।

आळूधणो—(क्रि०) १. उलझना । २. बंधना । ३. जुड़ना ।

आळूधो—(वि०) १. उलझा हुआ । २. फँसा हुआ । बँधा हुआ ।

आळेटणो—दे० आळोटणो ।

आलेड़ो—(न०)१. गीली मिट्टी । गारो । २. गीली मिट्टी के पिण्डों से बनाई हुई नीची दीवार । डँडवारा । ३. गीलापन । नमी । (वि०) मिट्टी से निर्मित ।

आळै—दे० आलय ।

आळै-नाहर—(न०) सिंह की गुफा । (अव्य०) नाहर की गुफा में ।

आलो—(वि०) १. भीगा हुआ । २. नमी वाला । ३. जो सूखा न हो ।

आळो—(न०) १. ताक । आला । २. घोंसला । (वि०) १. अपरिपक्व अथवा कडुआ (फल) । २. बिना कमाया

या बिना साफ किया हुआ (पशु का चमड़ा)। *(प्रत्य०)* १. संबंध कारक 'का' अर्थ को सूचित करने वाली एक विभक्ति। २. संबंध या कर्तृवाचक एक प्रत्यय। वाला। जैसे—घर आळो = घरवाला। खाण आळो = खाने वाला।

आलोच—*(न०)* १. मन के भाव। २. विचार। ३. परामर्श। मंत्रणा। ४. चिंता। फिकर। ५. विवेचन। आलोचन।

आलोचणो—*(क्रि०)* १. आलोचना करना। २. विचार करना। ३. परामर्श करना। ४. चिंता करना। ५. समझना।

आलोज—*(न०)* १. मन के भाव। २. विचार। ३. संकल्प। ४. आलोचना।

आलोजणो—दे० आलोचणो।

आळोटणो—*(क्रि०)* १. सोते हुए करवटें बदलना। लोटना। जागते हुए सोते रहना। लेटना। ३. कष्ट के कारण करवटें बदलना। ४. आराम करना। विश्राम करना। ५. वचन देकर फिर जाना। नट जाना।

आलो-तालो—*(वि०)* १. आला-ताला। उदार। २. मौजी। ३. भाग्यवान। ४. चंचल। चपल।

आलोयणा—*(ना०)* आलोचना।

आलोवणो—*(क्रि०)* मिलाना।

आळ्हो—*(न०)* १. आलस्य। सुस्ती। ढीलाई।

आव—*(ना०)* १. आमद। आमदनी। २. आदर। सत्कार। **आवभगत**। ३. आयु। ४. उमंग। उत्साह।

आव-आदर—*(न०)* आदर। सत्कार। स्वागत। **आवभगत**।

आवक—*(ना०)* १. आमदनी। २. आयात।

आवकार—*(न०)* स्वागत। सम्मान।

आवखाण—दे० आवखान।

आवखान—*(न०)* मरे हुए गाय या बैल आदि का बिना साफ किया हुआ पूरा चमड़ा।

आवखो—दे० आउखो।

आवगी—*(वि० ना०)* संपूर्ण। पूरी।

आवगो—*(वि०)* १. पूरा। सम्पूर्ण। पूरा का पूरा। २. निजी। ३. मौलिक। *(न०)* १. बिना राजस्व का भूमि दान। २. वह भूमि जिसका कर नहीं लिया जाता।

आव-जाव—*(न०)* १. आना-जाना। आवागमन। २. मेल-मुलाकात। ३. आने जाने का संबंध। आतिथ्य संबंध।

आवट—*(न०)* १, उबाल। २. क्रोध। गरमी। ३. कुढ़न। ४. युद्ध। ५. संहार। नाश। ६. राह। वाट। प्रतीक्षा।

आवटकूटो—*(न०)* १. क्लेश। दुख। २. मनस्ताप। ३. नाश। ४. झगड़ा।

आवटणो—*(क्रि०)* १. उबाल आना। उबलना। खौलना। २. क्रोध से मन ही मन दुखी होना। ३. कुढ़ना। व्यथित होना। ४. दूध का उबलकर गाढ़ा होना। ५. भिड़ना। लड़ना। ६. नाश होना।

आवड़—*(ना०)* चारण जाति की एक लोक देवी।

आवड़णो—*(क्रि०)* १. मन लगना। **असींगणो**। २. अनुकूलता होना। ३. भिड़ना। लड़ना।

आवड़त—*(ना०)* १. स्मृति तथा बुद्धि की उपज। सूझ। उपज। उद्भावना। २. कल्पना।

आवड़ी—*(वि०)* इतनी।

आवड़ो—*(वि०)* इतना।

आवण—*(न०)* आगमन।

आवण-जावण—*(न०)* १. आवागमन। जन्म लेने और मरने की क्रिया। जन्म-

मरण। २. एक दूसरे के यहाँ आने-जाने का संबन्ध ।

आवणारी—(वि०) आने वाली ।

आवणारो—दे० आवणियो ।

आवणियो—(वि०) आने वाला ।

आवणू—(वि०) आने वाला ।

आवणो—(क्रि०) १. आना । पहुँचना । २. प्राप्त होना । ३. किसी भाव का उत्पन्न होना ।

आवत समा—(अव्य०) आते ही । पहुँचते ही ।

आवध—(न०) आयुध । शस्त्र ।

आवध-नख—(न०) १. सिंह । २. एक शस्त्र ।

आवधान—(न०) गर्भ । हमल ।

आवधी—(न०) १. सिपाही । २. सैनिक । (वि०) आयुध वाला ।

आवभगत—(ना०) स्वागत-सत्कार । आदर सत्कार ।

आवर—दे० अवर ।

आवरण—(न०) १. परदा । २. ढक्कन । ३. वेष्टन ।

आवरणो—(क्रि०) १. घेरना । २. लपेटना । ३. ढकना । ४. परदा डालना । ५. आवृत्त होना । घिर जाना । ६. आवृत्त करना ।

आवरत—(वि०) १. आवृत्त । घिरा हुआ । २. छिपा हुआ । ३. आच्छादित । (न०) १. वृत्ताकार । घेरा । २. चक्कर । घुमाव । ३. संकट । ४. चिंता । ५. पानी का चक्र । भँवर । ६. सेना । ७. युद्ध ।

आवरदा—(ना०) १. आयु । उम्र । २. जीवन । जिंदगी ।

आवरो—(न०) १. ससुराल से मिलने वाला धन । २. दहेज । ३. आमदनी ।

आवळ—(ना०) एक क्षुप जिसकी छाल से चमड़ा रंगा (कमाया या साफ किया) जाता है । (वि०) निषिद्ध । खराब ।

आवळ-कावळ—(वि०) १. वेजा । कुत्सित । २. अश्लील । ३. उलटा ।

आवळा झूल—(वि०) १. सोलहों शृंगारों से सुसज्जित (स्त्री) । २. अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित (योद्धा) ।

आवळीं—(ना०) अवली । पँक्ति । श्रेणी । (वि०) १. भयंकर । २. सज्जित । ३. टेढ़ी । ४. उलटी । ५. दृढ़ । मजबूत ।

आवळी-घड़ा—(ना०) १. विकट सेना । २. सुसज्जित सेना । ३. विजयी सेना ।

आवळी चमू—दे० आवळी घड़ा ।

आवळो—(वि०) १. विकट । २. मजबूत । दृढ़ । ३. सज्जित ।

आवस—(क्रि० वि०) अवश्य । जरूर । (वि०) तैयार । तत्पर ।

आवा-गमन—(न०) १. आना-जाना । आवागमन । २. जीवात्मा के वार-वार जन्म लेने और मरने की क्रिया । जनमना और मरना । ३. कर्म-बन्धन ।

आवाच— (ना०) दक्षिण दिशा ।

आवाज—दे० अवाज ।

आवादान—(ना०) १. आमदनी । आय । २. उपज । पैदावार । ३. आवादी ।

आवादानी—दे० आवादान ।

आवारो—(वि०) १. निकम्मा । २. निठल्ला । आवारा । ३. वदमाश । ४. लुच्चा ।

आवास—(न०) १. प्रासाद । महल । २. घर । ३. रहवास । रहठाण । निवास । ४. आकाश ।

आवाह—(न०) आहव । युद्ध ।

आवाहण—(न०) आह्वान । निमन्त्रण । बुलावा ।

आवाहणो—(क्रि०) १. बुलाना । २. चलाना । ३. प्रहार करना ।

आवाँ छाँ—(व०क्रि०) १. आते हैं । २. आती हैं ।

आवाँला—(भ० क्रि०) १. आयेंगे । २. आयेंगी ।
आवाँ हाँ—दे० आवाँ छाँ ।
आवूं छूं—दे० आऊं छूं ।
आवूंला—(भ० क्रि०) १. आऊंगा । २. आऊंगी ।
आवूं हूं—दे० आऊं छूं ।
आवेस—(न०)१. आवेश । जोश । २.क्रोध । ३. वेग । ४. भूत-प्रेत का लगाव । ५. प्रवेश ।
आवै छै—(व०क्रि०) १. आता है । २. आते हैं ।
आवैला—(भ०क्रि०) १. आयेगा । आवेगा । आयगा । २. आयगी ।
आवैली—(भ०क्रि०ना०) आयगी । आयेगी ।
आवै है—दे० आवै छै ।
आवो-जावो—दे० आव-जाव ।
आव्रजणो—(क्रि०) १. धारण करना । २. त्यागना । छोड़ना ।
आव्रत—दे० आवरत ।
आश—दे० आशा ।
आशना—(ना०) १. मित्र । दोस्त । २. परस्त्री लंपट । ३. उपपति । जार । ४.जारिणी । व्यभिचारिणी । ५.प्रेमिका ।
आशनाई—(ना०) १. मित्रता । दोस्ती । यारी । २. स्त्री-पुरुष का नाजायज संबंध ।
आशय—(न०) १. अभिप्राय । मतलब । २. इच्छा । ३. उद्देश्य ।
आशंका—दे० आसंका ।
आशा—दे० आसा ।
आशावान—(वि०) आशा रखने वाला ।
आशिष—(ना०) आशीर्वाद ।
आशीर्वाद—(न०) आशीर्वचन । दुआ । मंगल कामना ।
आशुकवि—(न०) तुरंत कविता बना देने वाला कवि ।
आशुतोष—(वि०) शीघ्र प्रसन्न होने वाला । (न०) भगवान शंकर । महादेव ।
आश्चर्य—दे० अचरज ।
आश्रम—दे० आस्रम ।
आश्रय—(न०) १. आसरा । आधार । २. शरण ।
आश्रीवाद—(न०) आशीर्वाद । आशिष ।
आश्वासन—(न०) दिलासा । सान्त्वना ।
आश्विन—(न०) कुआर मास । आसोज का महीना ।
आषाढ़—दे० असाढ ।
आषाढी—(वि०) १. आषाढ मास से संबंधित (ना०) आषाढ मास की एकादशी या पूर्णिमा ।
आस—(ना०) १. आशा । उम्मेद । २. भरोसा । ३. छाछ का पानी । आछ ।
आसकंद—दे० आसगंध ।
आसका—(ना०) १. विभूति स्वरूप यज्ञ की भस्म । विभूति । भभूती । २. सिद्ध-महात्माओं की धूनी की भस्मी । ३. देवताओं को खेए जाने वाले धूपदानी के धूप की भस्मी । भभूती । ४. आशिष । मंगल-कामना ।
आसगंध—(न०) अश्वगंधा नामक एक वनौषधि ।
आसगणो—(क्रि०) १. स्वीकार करना । २. साहस करना ।
आसगीर—(वि०) आशावान । आशामुखी ।
आसण—(न०) १. संध्या-वंदन और पूजा के समय बैठने का कुश या ऊन का बना हुआ बिछावन । आसन । २. बैठने की विधि । बैठक । ३. पीढ़ा । चौकी ४. साधुओं का स्थान । आश्रम । मठ । ५. योग साधन के लिये योगी के बैठने की विधि (पद्मासन, सिद्धासन, स्वस्तिकासन आदि ८४ आसन) । ६. सुरत की विधि । (मैथुन के ६४ प्रकार के आसन) । ७. ऊंट के ऊपर कसे जाने वाले पलान पर बैठने की जगह । ८. हाथी पर

महावत के बैठने की जगह। हाथी का कंधा।

आसणियो—(न०) १. आसन। २. छोटा आसन। ३. पीढ़ा।

आसत—(ना०) १. भक्ति। अनुराग। आसक्ति। २. आस्तिकता। ३. सत्य। ४. शक्ति। बल। ५. करामात। चमत्कार। ६. विश्वास। ७. अभिलाषा। ८. लाभ। ९. मंगल। कल्याण। १०. अधिकार। ११. अस्तित्व। स्थिति। १२. आस्था। (वि०) १. जन्म-मरण रहित। २. आस्तिक।

आसता—दे० आसथान सं० १ से ५।

आसति—दे० आसत।

आसथा—(ना०) १. आस्था। श्रद्धा। २. विश्वास। ३. भावना।

आसथान—(न०) १. घर। २. ठौर। जगह। ३. नगर। ४. स्वस्थान। ५. सभा। आस्थान ६. खेड़पाटण (मारवाड़) में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले राव सीहा के पुत्र का नाम।

आसना—दे० आशना।

आसनाई—दे० आशनाई।

आसन्न—(क्रि०वि०) पास। निकट।

आसन्नो—दे० आसन्न।

आसपद—(दे०) आस्पद।

आसपास—(क्रि०वि०) १. निकट। नजदीक। नजीक। २. चारों ओर। ३. इधर-उधर।

आसमाण—(न०) आसमान। आकाश।

आसमानो—(न०) तंबू। शामियाना।

आसमेध—दे० अश्वमेध।

आसरम—दे० आस्रम।

आसराम—(न०) १. आश्रम। २. मकान का कमरा। कोठरी। ओरो।

आसरियो—(न०) १. घर। मकान। २. आश्रय। सहारा। आसरो।

आसरी वचन—दे० आशीर्वाद।

आसरीवाद—दे० आशीवाद।

आसरो—(न०) १. आश्रय। अवलंब। २. शरण। ३. भरोसा। ४. मकान। ५. झोंपड़ा। ६. अंदाजा। अनुमान। ७. प्रतीक्षा। ८. आसकर्ण का पुत्र वीर दुर्गादास राठौड़।

आसल—(न०) १. आक्रमण। २. आसकर्ण का पुत्र वीर दुर्गादास। ३. दुर्गादास के पिता आसकर्ण।

आसव—(न०) १. शराब। मदिरा। २. खमीर औषधि। पौष्टिक मद्य औषधि। ३. अर्क। अरक।

आसंक—दे० आसंका।

आसंका—(ना०) १. संशय। संदेह। २. डर। भय। ३. चिंता। ४. अनिष्ट की संभावना। खटको।

आसंग—(ना०) १. शक्ति। बल। २. साहस। ३. संसर्ग। लगाव। ४. साथ। ५. मिलाप। ६. संबंध। नाता।

आसंगणो—(क्रि०) १. साहस करना। २. वश में करना। ३. अपनाना। ४. स्वीकार करना। ५. उत्पन्न होना। ६. तबियत लगना। ७. प्रगट होना।

आसंग-बाहिरो—(वि०) १. अशक्त। शक्तिहीन। २. नाहिम्मत। साहसहीन।

आसंगरू—(वि०) पराक्रमी। शक्तिशाली।

आसंगो—(न०) १. पड़ोस। निकट निवास। २. आश्रय। सहारा। ३. भरोसा। ४. शक्ति। बल। ५. साहस। ६. स्पर्श। ७. पास। निकट। ८. आशा।

आसंदी—(ना०) १. बैठने का पाटा। बाजोट। २. पूजा-पाठ आदि करते समय बैठने का आसन। ३. प्रधान पुरुष का आसन। ४. साधु-महात्माओं के बैठने का पाटा या आसन।

आसा—(ना०) १. आशा। उम्मेद २. गर्भ। हमल। ३. दिशा।
आसाउत—दे० आसाणी सं० १।
आसाऊ—(वि०) आशावान।
आसागीर—(वि०) आशावान।
आसाढ़—(न०) आषाढ़ मास। जेठ और सावन के बीच का महीना।
आसाढ़ी—(वि०) आषाढ़ मास संबंधी। आषाढ़ मास का।
आसाण—(वि०) आसान। सरल। सुगम।
आसाणी—(न०) १. आसकर्ण का पुत्र प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौड़। (ना०) आसानी। सरलता। (क्रि०वि०) आसानी से। सुगमता से।
आसान—दे० आसाण।
आसापुरा—(ना०) आशा पूर्ण करनेवाली एक देवी। आशापूर्णा।
आसापुरी—दे० आसापुरा।
आसापुरी धूप—(न०) देव पूजन के लिये (गंध द्रव्यों को कूट कर) बनाया हुआ एक सुगंधित धूप।
आसा बरदार—(न०) सोने या चाँदी के बने आसा को लेकर राजा या महंत के आगे चलने वाला सेवक। चौबदार।
आसाम—(न०) भारत का एक पूर्वोत्तरीय प्रदेश।
आसामी—(वि०) आसाम देश का। आसाम देश से संबंधित। (न०) १. लोक। जन। व्यक्ति। २. ऋणी। देनदार। ३. प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४. मुवक्किल। ५. अभियुक्त। ५. कृषक। ७. वह व्यक्ति जिससे लेन-देन या आर्थिक-प्राप्ति का व्यवहार हो। ८. ऋणदाता का वह कर्जदार कृषक जो अपनी खेती के काम के लिये काटा और ब्याज से समय-समय पर उससे कर्ज लेता रहता है। ९. भोग (अनाज का अमुक भाग) रूप में हासल देकर बोहरे की जमीन जोतने वाला व्यक्ति।
आसामीदार—(न०) १. बोहरगत का काम करने वाला व्यक्ति। आसामियों वाला। २. प्रतिष्ठित व्यक्ति। ३. धनवान। ४. मुखिया।
आसामुखी—(वि०) आशावान।
आसार—(न०) लक्षण। चिन्ह। २. ढंग। तरीका। ३ दीवार की चौड़ाई। ओसार। ४. वर्षा की झड़ी। ५. अतिवर्षा।
आसालुब्ध—(वि०) १. आशालुब्ध। आशावान। २. प्रेमातुर।
आसालुब्धी—(वि०) आशान्वित।
आसाळू—(वि०) आशावान।
आसावत—दे० आसाउत।
आसावंत—(वि०) आशावान।
आसावरि—दे० आसापुर।
आसावरी—(ना०) प्रभात समय गाई जाने वाली एक रागिनी।
आसावान—(वि०) आशावान।
आसावासा—(न०) १. किसी व्यक्ति का विशेष आने-जाने का स्थान। २. रहने का स्थान।
आसाँ—दे० आवाँला।
आसिरवाद—दे० आसीस।
आसी—(भ०क्रि०) आयेगा। (ना०) सर्प की दाढ़।
आसीवाळो—दे० आहीवाळो।
आसीस—(ना०) आशिष। आशीर्वाद।
आसीसणो—(क्रि०) आशिष देना।
आसींगणो—(क्रि०) १. स्थानान्तर या ग्रामान्तर का रुचिकर होना। मन लगना।
आसुगाळ—दे० आउगाळ।
आसुगाळो—दे० आउगाळ।
आसू—दे० आहू।

आसूदो—दे० आसूधो ।

आसूधो—(वि०) १. परिवार और धन-धान्य से सम्पन्न । २. वन का । ३. स्वस्थ । ४. जिसने विश्राम लेकर थकान दूर कर ली हो । अक्लान्त । ५. काम में नहीं ली हुई (वस्तु) । ६. बिना जोता हुआ (खेत) । पड़तल । **आउवो** ।

आसूं—दे० आवूंला ।

आसेर—(न०) किला । दुर्ग । गढ़ ।

आसो—(न०) १. सोने या चाँदी का एक डंडा जिसे राजाओं और मठाधीशों के आगे चोवदार लेकर चलता है । २. साधुओं का एक आसन से बैठकर भजन करते समय आगे की ओर हाथों को टिकाकर सहारा लेने का एक उपकरण । ३. आश्विन मास । ४. लाल रंग की एक शराब । आसव । ५. ध्यान । विचार । ६. एक रागिनी । (वि०) महीन । झीना ।

आसोज—(न०) आश्विन मास । **आसो** । **आहू** ।

आसोजी—(वि०) आसोज मास का । (न०) आसोजी बारहट नाम का एक प्रसिद्ध चारण कवि ।

आस्तिक—(वि०) ईश्वर का अस्तित्व मानने वाला ।

आस्तीन—(ना०) पहनने के कपड़े की बाँह ।

आस्ते—(क्रि० वि०) धीरे ।

आस्था (ना०) १. श्रद्धा । २. सहारा ।

आस्थान—(न०) १. बैठने का स्थान । २. सभा । दे० आसथान ।

आस्पद—(न०) १. स्थान । जगह । २. आधार । ३. कुल । वंश । ४. जाति । ५. पद । **ओहदो** ।

आस्रम—(न०) १. ऋषि-मुनियों का निवास स्थान । आश्रम । २. तपस्वी की कुटिया । ३. साधु-संन्यासियों के रहने का स्थान । मठ । ४. मनुष्य जीवन की अलग-अलग चार अवस्थाएँ । कार्य की दृष्टि से आर्यों (हिन्दुओं) द्वारा मनुष्य की आयु के किये गये शास्त्रोक्त चार विभाग । ५. दशनामी संन्यासियों की एक शाखा । ६. चार की संख्या का संकेत शब्द ।

आस्रय—दे० आश्रय ।

आस्रीवाद—दे० आशीर्वाद ।

आस्वाद—(न०) स्वाद । जायका । **सवाद** ।

आह—(अव्य०) एक कष्ट सूचक शब्द ।

आहट—(ना०) चलने का शब्द । पैर का खुड़का ।

आहड़नरेश—(न०) सीसोदिया वंश का राजा । मेवाड़ के महाराणाओं की एक उपाधि ।

आहड़ै-पाहड़ै—(क्रि० वि०) आसपास ।

आहड़ो—(न०) १. सीसोदिया वंश का क्षत्री । २. आहड़ का निवासी ।

आहण—(न०) १. आसन । २. ऊंट के पलान की बैठक । ३. युद्ध । ४. सेना ।

आहणणो—(क्रि०) १. मारना । नाश करना । २. युद्ध करना ।

आहत—(वि०) घायल । जख्मी ।

आहरट—(ना०) १. सेना । २. युद्ध । ३. संहार ।

आहरण—(न०) आभरण । आभूषण ।

आहरी—(ना०) खींप, सिणिया आदि घास की सींकों से बनाई हुई इंडुरी । आश्रयी ।

आहरो—(न०) १. बड़ी आहरी । २. मकान । ३. झोंपड़ा । ४. आश्रय । **आसरो** ।

आहव—(न०) युद्ध । लड़ाई ।

आहवणो—(क्रि०) युद्ध करना । भिड़ना ।

आहंचणो—(क्रि०) १. मारना । नाश करना । २. प्रहार करना ।

आहंस—(न०) १. अंश । ३. आत्मबल । ३. पराक्रम । शक्ति । ४. साहस ।

५. प्राण । ६. जीवात्मा । ७. व्यक्तित्व । ८. स्वाभिमान ।

आहंसणो—(क्रि०) १. साहस करना । २. आत्मबल का जाग्रत होना । ३. असीम शक्ति से भिड़ना ।

आहंसी—(वि०) १. साहसी । २. तेजस्वी । प्रतापी । ३. आत्मबली । ४. स्वाभिमानी ।

आहा—(अव्य०) आश्चर्य और हर्ष सूचक शब्द ।

आहाड़—(न०) मेवाड़ का एक ऐतिहासिक प्राचीन नगर । आघाट ।

आहाड़ो—(न०) आहाड़ नगर से संबंधित होने के कारण मेवाड़ के गहलोत शासकों का एक नाम ।

आहार—(न०) भोजन ।

आहार-विहार—(न०) रहन-सहन ।

आहिज—(सर्व०) यही । (अव्य०) यही तो ।

आहिस्ता—दे० आस्ते ।

आही—(सर्व०) यही ।

आहीठाण—दे० आइठाण ।

आहीणी—दे० आईणी । आँईणी ।

आहीर—(न०) अहीर । गूजर ।

आहीवाळो—(न०) ऋणी की ओर से ऋण दाता को लिखकर दिये गये दस्तावेज की वह शर्त जिसके अनुसार अमुक अवधि के अंदर ऋण न चुकाया जा सके तो ऋणी की चल-अचल सम्पत्ति जिसका दस्तावेज में नामोल्लेख किया हुआ रहता है, ऋणदाता का अधिकार हो जाता है ।

आहीवाळो-खत—(न०) ऋणी की ओर से ऋणदाता को लिखकर दिया गया दस्तावेज, जिसमें आहीवाळे की शर्तें लिखी रहती हैं ।

आहुगाळ—दे० आउगाळ ।

आहुगाळो—दे० आउगाळो ।

आहुट—(न०) युद्ध ।

आहुटणो—(क्रि०) १. युद्ध करना । २. मारना । वीरगति को प्राप्त होना । ३. व्यर्थ गँवाना । नष्ट करना । ४. नष्ट होना । ५. पीछे मुड़ना । ६. भागजाना । चलेजाना ।

आहुड़—(न०) युद्ध ।

आहुड़णो—(क्रि०) १. लड़ना । भिड़ना । युद्ध करना ।

आहुति—(ना०) १. हवन में मंत्र बोलने के साथ घी, तिल, जौ इत्यादि की डाली जाने वाली सामग्री । २. वह मात्रा जो एक बार हवन में डाली जाय । ३. बलिदान । ४. समर्पण ।

आहुटमा—(न०) चित्तौड़ के सिसोदियों का एक विरुद । (वि०) युद्ध रसिक । युद्धप्रिय ।

आहू—(न०) आश्विन मास । आसोज ।

आहूठणो—दे० आहुटणो ।

आहूत—(वि०) निमंत्रित । बुलाया हुआ । बुलायोड़ो ।

आहूतण—(ना०) १. अग्नि । आग । २. निमंत्रण । **बुलावो** । **तेड़ो** । (वि०) निमंत्रित ।

आहेड़—(ना०) शिकार । आखेट ।

आहेड़ियो—दे० आहेड़ी ।

आहेड़ी—(न०) १. शिकारी । आखेटक । २. भील । ३. थोरी । ४. आर्द्रा नक्षत्र ।

आहेड़ो—(न०) १. शिकार । आखेट । २. शिकारी । आखेटक ।

आँ—(सर्व०व०व०) १. इन्होंने । **इणां** । २. ये । (वि०) इन । इनके । (अव्य०) एक नकारात्मक उद्गार । 'आँहाँ' का छोटा रूप । २. आश्चर्य सूचक उद्गार ।

आँईणी—(ना०) वह गाय या भैंस जिसने पुनः वियाने तक (वियाने के कुछ समय पूर्व) दूध देना बंद कर दिया हो । **आइणी** ।

आँईणो—(न०) १. किसी व्यक्ति के यहाँ भैंस-गायों के दूध देना बंद हो जाने की स्थिति। वह समय या स्थिति जिसमें किसी व्यक्ति के दूधारू पशुओं ने पुनः वियाने तक दूध देना बंद कर दिया हो। २. घर में दूध देने वाले पशुओं का अभाव।

आँक—(न०) १. अंक। चिह्न। निशान। २. संख्या का चिह्न। ३. रुपये का बीसवाँ भाग (गणित)। ४. रुपये का सौवाँ भाग (ब्याज-फलावट में)। दोकड़ा। ५. भाग्य। ६. प्रतीक। ७. सीमा। ८. गोद।

आँकड़ो—(न०) १. माल खरीदने-बेचने का वार्षिक विवरण। २. आय-व्यय का वार्षिक विवरण। ३. माल खरीदी का ब्योरे वार पुरजा। बिल। ४. एक औजार या शस्त्र। ५. संख्या।

आँकणो—(क्रि०) १. मूल्यांकन करना। २. तोलना। ३. कूतना। अनुमान करना। ४. निश्चित करना। ५. निशान लगाना।

आँकल—(वि०) दाग करके निशान लगाया हुआ (पशु)। चिन्हित। २. गिनती में उस कोटि का। ३. वीर।

आँकस—(न०) १. अंकुश। भय। डर। २. रोक। प्रतिबंध।

आँकुस—दे० आंकस।

आँकूर—(न०) ठीक होते हुए घाव में आने वाले अंकुर। जखम का भराव।

आँको—(न०) १. पतन। २. भाग्य। उत्थान। ३. भवितव्यता। ४. सीमा। मर्यादा।

आँको आणो (मुहा०) १. दुर्दिन आना। २. भाग्य पलटना।

आँको आवणो—दे० आँको आणो।

आँकोड़ियो—(न०) १. एक लंबा बाँस जिसके एक सिरे पर हँसिया बंधी रहती है। २. लोहे का एक टेढ़ा काँटा।

आँकोर—दे० आँकूर।

आँख—(ना०) १. नेत्र। लोचन। २. आलू, गन्ना आदि का वह भाग या स्थान जहाँ से अंकुर फूटता है। ३. वृक्ष, पौधे आदि की शाखा का वह अंकुर जिसको किसी अन्य वृक्ष या पौधे में कलम करने के लिये काम में लाया जाता है। ४. मोटे चमड़े की सिलाई करने के लिये किया जाने वाला छेद। ५. सुराख। छेद।

आँखड़ली—(ना०) आँख।

आँखड़ी—(ना०) आँख।

आँख फूटणी—(ना०) एक लता। (मुहा०) आँख में चोट लगना। २. चोट लगने से आँख का बेकार होना।

आँख मीचणी—(ना०) आँख-मिचौनी का खेल। (मुहा०) मरना। मरजाना।

आँख-रातंबर—(न०) ऊँट।

आँखाँ-अखम—(वि०) अंधा।

आँखाँ-जखम—(वि०) अंधा।

आँख्याँ-संजम—(वि०) अंधा।

आँगछ—दे० आँकस।

आँगणो—(न०) १. आंगन। २. चौक। (क्रि०) बैलगाड़ी के पहिये की धुरी में तेल देना। औंगना।

आँगनियो—दे० ओगनियो।

आँगम—(न०) १. अधिकार। २. गर्व। ३. शक्ति। बल। ४. हिम्मत। साहस। ५. उत्साह।

आँगमण—(न०) १. वश। अधिकार। २. गर्व। ३. शक्ति। बल। ४. साहस। ५. उत्तेजन। ६. महनशक्ति। (वि०) १.वेगों को तीव्र करने वाला। उत्तेजक। २. उकसाने वाला। प्रेरक।

आँगमणो—(क्रि०) १. युद्ध करना। २. आक्रमण करना। ३. साहस करना।

४. जोश के साथ आगे बढ़ना । ५. हराना । ६. वश में करना । ७. अधिकार करना । ८. कष्ट पहुँचाना । ९. स्वीकार करना । १०. गर्व करना । ११. निश्चय करना । १२. वेगों को तीव्र करना ।

आँगळ—*(ना०)* १. अंगुली । २. अंगुलियों से किया जाने वाला माप । ३. अंगुली की मोटाई का माप । अंगुल-परिमाण । ४. अंगुली की मोटाई ।

आँगळी—*(ना०)* १. अंगुली । उंगली । २. हाथी की सूंड के आगे का तीखा भाग ।

आँगळी-झल—*(न०)* पुनर्विवाह करने पर अपने साथ लेकर आई हुई पूर्व पति की संतान ।

आँगवण—दे० आँगमण ।

आँगी—*(ना०)* १. चोली । अंगिया । २. होली के उत्सव पर डंडियों की गेहर नाचते समय पहिना जाने वाला बगलबंदी अंगरखी से जुड़ा हुआ बड़ा बागा । ३. जामा । ४. देवमूर्त्ति को मुँह के अतिरिक्त सामने के सर्वांग को ढक देने वाली सोने या चाँदी के पत्तर की बनाई हुई शरीराकार एक खोल । अंगिया । ५. बादशाही जमाने में राजा, बादशाह, नवाबों आदि के पहिनने की अंगरखी सहित एक बागा ।

आँगो—*(न०)*१. स्वभाव । आदत । २. काम का हिस्सा ।

आँच—*(ना०)* १. अग्नि । २. ज्वाला । ३. ताप । ४. कष्ट । तकलीफ । ५. क्रोध ।

आँचळ—*(न०)* १. स्तन । २. स्त्रियों की ओढ़नी का छाती पर रहने वाला छोर ।

आँचाताणो—*(वि०)* ऐंचाताना ।

आँचै—*(क्रि०वि०)* शीघ्रता से ।

आँजणी—*(ना०)* आँख की पलकों के किनारों पर होने वाली फुन्सी । गुहेरी । बिलनी । गुहांजनी ।

आँजणो—*(क्रि०)* अंजन लगाना ।

आँझो—*(वि०पु०)* १. अटपटा । २ कष्ट कर । दुखदाई । ३. कठिन । ४. दुर्गम (मार्ग) । ५. भयावना और बिना बस्ती वाला (प्रदेश) ।

आँट—*(ना०)* १. टेढ़ापन । बाँकापन । २. शत्रुता । ३. द्वेष । ४. हठ । दुराग्रह । ५. बाँकापन । वीरता । ६. कपट । ८. लेखनी की नोक । आंट । ७. घमंड । ९. दाँव । १०. धोती की अंटन । अंटी ।

आँटण—*(न०)* हाथ-पाँव की अंगुलियाँ तथा हथेली की चमड़ी में किसी वस्तु के निरंतर घसारे से गांठ की तरह उभरा हुआ निर्जीव चमड़ी का कठोर भाग । २. दे० अंटी ।

आँटल—दे० आँटाळ ।

आँटाखोर—*(वि०)* १. झगड़ाखोर । २. बखेड़ाबाज ।

आँटादार—*(वि०)* १. मरोड़दार । लपेटदार । घमंडी । २. झगड़ालू ।

आँटायत—*(वि०)* १. बैर का बदला लेने वाला । २. द्वेषी । ३. शत्रु ।

आँटाळ—*(वि०)* १. झगड़ालू । २. बदमाश । ३. शत्रु । ४. दुष्ट ।

आँटियळ—दे० आँटियाळ ।

आँटियाळ—*(वि०)*१. आंटेदार । मरोड़दार २. द्वेषी । ३. शत्रु । ४. विरोधी । ५. हठी । ६. चालाक । ७. अभिमानी । ८. दृढ़व्रती ।

आँटी—*(ना०)* १. कुश्ती में पाँव का एक पेच । २. उलझन । फंदा । ३. आड़ । ४. हठ । जिद । ५. टंट । *(वि०)* टेढ़ी । मुड़ी हुई ।

आँटीलो—*(वि०)* १. झगड़ालू । २. अभिमानी । ३. अपनी बात पर दृढ़ रहने वाला । ४. बदला लेने वाला । ५. जबरदस्त । बलवान ।

आँटै—(क्रिoविo) १. बदले में। २. लिये। निमित्त। वास्ते।

आँटो—(नo) १. लड़ाई। १. शत्रुता। वैर। ३. उलझन। ४. चक्कर। फेरा। ५. मरोड़। (विo) टेढ़ा।

आँटो-टाँटो—(विo) टेढ़ा-मेढ़ा।

आँटो-टूंटो—देo आँटो-टाँटो।

आँठू—(नo) १. घोड़े, ऊंट आदि पशुओं की गरदन के नीचे अगले पाँवों की जोड़ का भाग। २. घोड़े आदि पशुओं के अगले पाँव का घुटना।

आँड—(नo) अण्डकोश।

आँडल—(विo) बढ़े हुए अंडकोशों वाला।

आँडिया—(नoबoवo) अंडकोश।

आँत—देo आँतड़ी।

आँतड़ी—(नाo) अंतड़ी। आँत।

आँतर सेवो—(नo) वस्त्र के अंदर के भाग की सिलाई। देo अंतरेवो।

आंतरिक—(विo) १. भीतरी। २. घरेलू।

आँतरेवो—देo आँतरसेवो।

आँतरै—(क्रिoविo) दूर।

आँतरो—(नo) १. दूरी। फासिला। २. अंतर। भेद। ३. हृदय। ४. रक्त का संबंधी। कुटुंबी। ५. आँत। अंतड़ी।

आँती—देo आती।

आंत्र—(नाo) आँत। अंतड़ी।

आंदोलन—(नo) जनता को उत्तेजित करने या उभारने का प्रयास। २. हल-चल।

आंधळघोटो—(नo) अक्षय तृतीया के दिन आँखें बांधकर खेला जाने वाला पकड़ा-पकड़ी का खेल।

आँधळी—(विoनाo) अंधी। आँधरी।

आँधळो—(क्रिo) अंधा। आँधरा।

आँधी—(नाo) धूलिपूर्ण प्रचंड वायु। अंधड़। (विo) १. आँधरी। अंधी। २. धुंधली। ३. विवेकहीन।

आँधीझाड़ो—(नo) अपामार्ग नामक क्षुप।

आँधो—(विo) १. अंधा। आँधरा। २. धुंधला। ३. विवेकहीन।

आँधोभैंसो—(विo) एक खेल।

आँनै—(सर्वo) इनको। इन्हें।

आँपण—(सर्वo) अपना। (नo) आत्म-स्वरूप।

आँपणी—(सर्वoनाo) अपनी।

आँपणीयाँह—(सर्वoबoवo) १. अपनी। अपना। अपन सबका। २. अपन सभी।

आँपणो—(सर्वo) अपना।

आँपाँ—(सर्वoबoवo) अपन।

आँपाँणी—(सर्वoबoवo) १. अपनी। अपन सबकी। २. हमारी।

आँपाँणो—(सर्वoबoवo) १. अपना। अपन सबका। २. हमारा।

आँपाँरी—देo आँपाँणी।

आँपाँरो—देo आँपाँणो।

आँपाँहूँत—(अव्यo) १. अपने को। २. अपने से। ३. अपन सहित।

आँपै—(सर्वoबoवo) अपन। अपन लोग।

आँब—(नo) आम्र वृक्ष अथवा उसका फल। आम।

आँबणो—देo आँबीजणो।

आँबलवाणी—देo आमलवाणी।

आँबली—(नाo) इमली का वृक्ष अथवा उसका फल। इमली।

आँबाहळद—देo आँबा हळदर।

आँबा हळदर—(नाo) एक जाति की हल्दी जो औषधि के काम आती है।

आँबीजणो—(क्रिo) १. इमली, नींबू आदि खट्टे पदार्थों के खाने से दाँतों का अँबिया जाना। दाँतों में अम्लता आ जाना। २. शरीर का पीड़ा के साथ अकड़ जाना।

आँबी हळद—देo आँबा हळदर।

आँबीहळदर—देo आँबा हळदर।

आँबो—(नo) १. आम्रफल। आम। २. आम्र वृक्ष। ३. एक लोक गीत।

इकताळी—दे० इगताळीस । (क्रि० वि०) ताली देने के साथ । झट ।

इकताळीस—दे० इगताळीस ।

इकती—दे० इगतीस ।

इकतीस—दे० इगतीस ।

इकत्रीस—दे० इगतीस ।

इकपोतियो-लसण—(न०) लहसुन की एक जाति जिसके मूल में एक ही गाँठ होती है । ऊंची जाति का लहसुन ।

इकबाल—(न०)१. स्वीकार । २. भाग्य । नसीब । ३. प्रताप । (वि०) आबाद ।

इकमात—(ना०) १. अक्षर के ऊपर लगने वाली 'ए' की मात्रा, जैसे—'क' के ऊपर 'ए' की मात्रा लगने से उसका 'के' यह रूप बना । (क+ए=के) । (वि०) २. एक माता के उदर से उत्पन्न । सहोदर ।

इकर—(क्रि० वि०) एक बार ।

इक रदन—(न०) श्री गजानन ।

इकरसाँ—(क्रि० वि०) एक बार ।

इकरंगो—(वि०) १. सदा एक सी प्रकृति वाला । २. अपनी बात पर स्थिर रहने वाला । ३. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला । ४. पक्षपात रहित । ५. एक रंग का । एक रंग में रंगा हुआ । ६. एक जैसा । एक समान ।

इकराणुओ—(न०) इक्कानवाँ वर्ष ।

इकराणू—(वि०) नव्वे और एक । इक्यानवे । (न०) इक्यानवे की संख्या—'९१' ।

इकरार—(न०) १. प्रतिज्ञा । वादा । २. कबूल । कबूलात ।

इकरारनामो—(न०) १. प्रतिज्ञा पूर्वक स्वीकृति का दस्तावेज । अनुबन्ध पत्र ।

इकराँ—(क्रि० वि०) एक बार ।

इकळायो—दे० इकळासियो ।

इकळास—(न०) १. मेल-मिलाप । प्रेम । २. मित्रता । इखलास । ३. संगठन ।

इकळासियो—(वि०) जिस पर एक ही सवार बैठ सके ऐसा छोटा (ऊंट) । (न०) वह ऊँट जिस पर एक ही सवार बैठा हो ।

इकळाहियो—दे० इकळासियो ।

इकलिंगजी—(न०) १. मेवाड़ के महाराणाओं के कुल देवता इकलिंग महादेव । २. मेवाड़ का इतिहास प्रसिद्ध पर्वतीय तीर्थ स्थान । ३. मेवाड़ राज्य के स्वामी इकलिंग महादेव । (मेवाड़ के महाराणा इकलिंग जी के दीवान कहलाते हैं ।)

इकलोतो—(वि०) अपने माता-पिता का एक मात्र (पुत्र) ।

इकवीस—(वि०) बीस और एक । इक्कीस । (न०) इक्कीस का आँक—'२१' ।

इकसठ—(वि०) साठ और एक । (न०) इकसठ की संख्या—'६१' ।

इक समचै—(क्रि० वि०) १. एक सन्देश में । २. एक इशारे में । ३. एक साथ सभी । ४. एकाएक । अचानक ।

इक साखियो—(वि०) जहां वर्षाऋतु की एक ही फसल होती हो ।

इकसार—(वि०) एक समान ।

इकसूत—(वि०) एक सूत्र । संगठित । (क्रि०वि०)एक सूत्र में । संगठित रूप में ।

इकंगो—(वि०) १. एक समान प्रकृति वाला । २. एक पक्ष वाला । एक तरफी । ३. एक सिद्धान्त पर रहने वाला । ४. इच्छानुसार करने वाला । ५. क्रोधी ।

इकंत—(न०) एकान्त । (वि०) निर्जन । शून्य ।

इकाई—(ना०) एक का मान । एकाङ्क । २. अंकों की गिनती में प्रथम अंक । समूह अंकों में सबसे आगे का अंक । ३. अंकों की गिनती में प्रथम अंक का स्थान । (समूह अंकों में प्रथम अंक का

लेखन क्रम सबके बाद में होता है, जैसे—१२३ इसमें तीन का अंक प्रथम व इकाई के स्थान पर आया हुआ है।)

इकाणू—दे० इकराणू।

इकार—(न०) 'इ' अक्षर। (अव्य०) एक बार। एक दफा।

इकावन—(वि०) पचास और एक। इक्यावन। (न०) पचास और एक की संख्या—'५१'

इकावनमों—(वि०) संख्या क्रम में जो पचास के बाद आता हो। इक्यावनवाँ।

इकावनो—(न०) इक्यावनवाँ वर्ष।

इकावळी—(ना०) १. अंकों की गिनती। २ एक से सौ तक के अंक। ३. एक से सौ तक के अंकों की पढ़ाई या रटाई।

इकाँतरै—(क्रि० वि०) एक दिन के अन्तर से। एक दिन को छोड़ कर। (वि०) एक दिन को छोड़ कर उसके बाद के दिन। इस क्रम से किया जाने वाला या होने वाला।

इकाँतरो—(न०) एक दिन के अन्तर से आने वाला ज्वर।

इकियासियो—(न०) इक्यासीवां वर्ष।

इकियासी—(वि०) अस्सी और एक। इक्यासी। (न०) इक्यासी की संख्या—'८१'।

इकीस—(वि०) १, बीस और एक। इक्कीस। २. श्रेष्ठतर। ३. तुलना में श्रेष्ठ। (न०) इक्कीस की संख्या—'२१'।

इकीसो—(न०) १. इक्कीसवां वर्ष। २. इक्कीस सौ की संख्या—'२१००'। (वि०) १. विश्वासपात्र। खरा। ३. तुलना में श्रेष्ठ। श्रेष्ठतर। ४. इक्कीस सौ। दो हजार एक सौ।

इकेवड़ो—(वि०) इकहरा। विना तह का। (स्त्री० इकेवड़ी)।

इको ज—(वि०) एक ही।

इकोतर—(वि०) सत्तर और एक। इकहत्तर। (न०) इकहत्तर की संख्या—'७१'।

इकोतरो—(न०) इकहत्तरवां वर्ष।

इको-दुको—(वि०) १. कोई-कोई। २. अकेला-दुकेला। ३. एक दो।

इक्कीस—दे० इकीस।

इक्कीसो—दे० इकीसो।

इक्को—(न०) १. बादशाही जमाने का एक बलशाली और शस्त्र विद्या में प्रवीण योद्धा जो अकेला ही कई योद्धाओं से लड़ने की सामर्थ्य रखनेवाला होता था। २. बादशाह का अंग रक्षक। ३. एक घोड़े की घोड़ा गाड़ी। तांगा। ४. एक बूंटी वाला ताश का पत्ता। (वि०) बेजोड़। अद्वितीय।

इक्को-दुक्को—दे० इको-दुको।

इक्यासियो—दे० इकियासियो।

इक्यासी—दे० इकियासी।

इगढाळ—दे० अगढाळ।

इगताळी—दे० इगताळीस।

इगताळीस—(वि०) चालीस और एक। इकतालीस। (न०) इकतालीस की संख्या—'४१'।

इगताळीसो—(न०) १. इकतालीसवां वर्ष। २. इकतालीस सौ। '४१००'।

इगती—दे० इकतीस।

इगतीस—(वि०) तीस और एक। इकतीस। (न०) इकतीस की संख्या—'३१'।

इगतीसो—(न०) १. इकतीसवां वर्ष। २. इकतीस सौ की संख्या। (वि०) इकतीस सौ। तीन हजार एक सौ।

इगसठ—दे० इकसठ।

इगसठसो—(न०) इकसठ सौ। '६१००'।

इगसठो—(न०) इकसठवाँ वर्ष।

इगियारमो—(न०) १. मृतक के ग्यारवें दिन का क्रियाकर्म। (वि०) जो संख्या क्रम में दस के बाद आता हो। ग्यारहवां।

इगियारस—(ना०) पक्ष का ग्यारहवां दिन। ग्यारस। एकादशी।

इगियारै—दे० इग्यारै।

इगियारै सौ—(न०)ग्यारै सौ। '११००'।

इगियार—(न०) १. ग्यारहवाँ वर्ष। २. मृतक के ग्यारहवें दिन का क्रिया-कर्म।

इग्यारै—(वि०) दस और एक। ग्यारह। (न०) ग्यारह की संख्या।

इग्यु—(ना०) व्यंजन अक्षर के ऊपर मुड़कर आगे की ओर आने वाली मात्रा। दीर्घ 'ई' की यह 'ी' मात्रा। दीर्घ 'ई' की मात्रा का नाम।

इचरज—(न०) आश्चर्य। अचरज।

इच्छाणो—दे० इंछाणो।

इच्छा—(ना०) अभिलाषा। लालसा। चाह। रुचि।

इच्छा-भोजन—(न०) रुचि के अनुसार का भोजन।

इजत—दे० इज्जत।

इजलास—(ना०) न्यायालय। अदालत।

इजहार—दे० इजार सं० १. २. ३।

इजा—(ना०) १. क्षत। चोट। २. कष्ट। ३. हानि।

इजाजत—(ना०) १. हुक्म। आज्ञा। २. मंजूरी।

इजाफै—(वि०) अधिक। ज्यादा।

इजाफो—(न०) १. इजाफा। बढ़ती। वृद्धि। २. लाभ। मुनाफा। बचत।

इजार—(न०) १. इजहार। अदालत में। दिया गया वक्तव्य। बयान। २. साक्षी। ३. प्रकट। ४. पायजामा।

इजारदार—दे० इजारेदार।

इजारबंद—(न०) नाड़ा।

इजारेदार—(न०) १. इजारे पर काम करने वाला। इजारदार। २. ठेकेदार।

इजारो—(न०) १. निश्चित रकम और शर्तों पर भूमि, ग्राम आदि की उपज या कर आदि को वसूल करने का दिया जाने वाला ठीका। २. अधिकार। ३. जिम्मेवारी।

इजै-विजै—(वि०) समान रूप के। एकसी शक्ल के (दोनों)।

इज्जत—(ना०) १. इज्जत। प्रतिष्ठा। सम्मान। २. मान मर्यादा।

इज्जत-आसार—(वि०) लब्ध-प्रतिष्ठ।

इठंतर—(वि०) सत्तर और आठ। इठत्तर। (न०) इठत्तर की संख्या—'७८'।

इठंतरो—(न०) इठत्तरवां वर्ष।

इठियासियो—(न०) इठासीवाँ वर्ष।

इठियासी—(वि०) अस्सी और आठ। इठासी। (न०) इठासी की संख्या—'८८'।

इठै—(क्रि० वि०) यहाँ।

इड़ा—(ना०) १. दे० इंगळा। २. पृथ्वी। ३. गाय। ४. पार्वती। ५. सरस्वती।

इण—(सर्व०) १. इस। २. इसने।

इण कानी—(क्रि०वि०)इस ओर। इधर।

इणगी—(क्रि०वि०) इधर। इस ओर।

इणगी-उणगी—(क्रि०वि०) इधर-उधर।

इणवड़ी—(क्रि०वि०) अभी। इसी-समय।

इणनूं—(सर्व०) इसको।

इणपरि—(क्रि० वि०) १. इस प्रकार। २. इस पर।

इणभाय—(क्रि०वि०) इस प्रकार।

इणमात—(अव्य०) अतः। इसलिए।

इणरी—(सर्व०) इसकी।

इणरै—(सर्व०) इसके।

इणरो—(सर्व०) इसका।

इणविध—(क्रि०वि०) इस प्रकार।

इणसाइत—*(क्रिoविo)* अभी । इसी क्षण ।
इणहिज—*(सर्वo)* १. इसीने । इसने ही । २. इसी । इस ही ।
इणहीज—इणहिज ।
इणां— *(सर्वo)* १. इन । २. इन्होंने ।
इणांनूं—*(सर्वo बo वo)* इनको ।
इणीरी—*(सर्वo)* इनकी ।
इणांरै—*(सर्वo)* इनके ।
इणांरो—*(सर्वo)* इनका ।
इणि—देo इण ।
इणिया-गिणिया—*(विo)* इने-गिने । थोड़े से । कतिपय ।
इणी—*(सर्वo)* इस । इस ही ।
इणौ—*(सर्वo)* इसने ।
इत—*(क्रिoविo)* यहाँ । इधर ।
इतकी—*(विo)* १. थोड़ी । २. इतनी ।
इतकीसी—*(क्रिoविo)* इतनी ही ।
इतकीसीक— *(विo)* बहुत थोड़ी ।
इतको—*(विo)* १. थोड़ा । जरा । २. इतना । *(क्रिoविo)* १. इधर । इस ओर । २. इतना ही ।
इतकोसो—*(अव्यo)* थोड़ा सा । *(सर्वo)* इतना ही ।
इतकोसोक—*(विo)* बहुत थोड़ा ।
इतनो—देo इतरो ।
इतबार—*(नo)* एतबार । भरोसा ।
इतबारी—*(विo)* विश्वासी ।
इतमाम— *(नo)* ठाट बाट । तड़क-भड़क । *(विo)* तमाम ।
इतर—*(विo)* १. दूसरा । अन्य । २. फालतू । ३. साधारण । *(नo)* इत्र । अंतर ।
इतरणो—*(क्रिo)* १. इतराना । फूलना । गर्व करना । २. इठलाना । ठसकना । ३. अपने को बड़ा और बहुत बुद्धिमान समझना । ४ सिर चढ़ना । ५. अपनी बड़ाई करना ।
इतराणो—देo इतरणो ।
इतरावणो—देo इतरणो ।
इतरा—*(विo)* इतने ।
इतराज—देo एतराज ।
इतरा माँहै—*(अव्यo)* १. इस बीच । २. इतने में ।
इतरी—*(विo)* इतनी ।
इतरै—*(क्रिo विo)* इतने में । *(सर्वo)* इतने ।
इतरो—*(विo)* इतना ।
इतरोसो—*(विo सर्वo)* इतनासा । इतना थोड़ा सा ।
इतरोहीज—*(क्रिo विo)* इतना ही । इतना थोड़ा ही । थोड़ा ही ।
इतला—*(नाo)* सूचना । इत्तिला ।
इतलानामो—*(नo)* अदालत में हाजिर होने का सूचनापत्र । इत्तिलानामा ।
इतवार—*(नo)* रविवार ।
इतवरी—*(विo)* कुलटा । व्यभिचारिणी ।
इता—*(सर्वo)* इतने ।
इतां—*(सर्वo)* इतने ।
इति—*(नाo)* १. समाप्ति । अंत । २. उल्लंघन । ३. सीमा । हद । *(अव्यo)* १. समाप्त । २. समाप्ति ।
इतिवृत—*(नo)* १. इतिहास । २. वर्णन । ३. पुरानी कथा ।
इति श्री—*(नाo)* किसी धर्म ग्रन्थ अथवा उसके किसी पर्व, काण्ड या अध्याय आदि भाग का समाप्ति सूचक पद । समाप्ति ।
इतिहास—*(नo)* बीती हुई घटनाओं का क्रमानुसार वर्णन । ख्यात । तवारीख ।
इती — देo इतरी ।
इतीसी—*(सर्वo)* इतनी सी ।
इतै—*(क्रिoविo)* १. इतने में । २. इतनी देर में । ३. इतने समय तक । ४. यहाँ ।
इतैही—*(क्रिoविo)* १. इतने में ही । २. तब तक । ३. उसी क्षण । उसी समय ।

इतो—दे० इतरो ।
इतोसो—दे० इतरो सो ।
इतोसोक—दे० इतरो सो ।
इत्ता—दे० इता ।
इत्ता में—(अव्य०) १. इस बीच । २. इतने में ।
इत्तो—दे० इतरो । (स्त्री० इत्ती) ।
इत्याद—(अव्य०) इसी प्रकार और । इत्यादि । वगैरह ।
इत्यादि—दे० इत्याद ।
इत्यादिक—दे० इत्याद ।
इत्र—(न०) अतर ।
इथ—(क्रि०वि०) यहां ।
इथिए—(क्रि०वि०) इधर । यहां ।
इथियै—दे० इथिए ।
इथै—(क्रि०वि०) यहां ।
इधक—(वि०) अधिक ।
इधक मास—(न०) अधिक मास । पुरुषोत्तम मास ।
इधकाई—(ना०) अधिकाई । अधिकता । विशेषता ।
इधकेरो—(वि०) १. दो या दो से अधिक की तुलना में एक अधिक अच्छा । २. अधिक । ज्यादा । ३. महत्त्व का ।
इधको—दे० इधकेरो ।
इधर—(क्रि०वि०)१. यहां । २. इस ओर ।
इनकार—(न०) १. मनाई । २. अस्वीकार । ३. अस्वीकृति । नामंजूरी ।
इनसान—(न०) १. मनुष्य । मानव । २. मानव जाति ।
इनसाफ—(न०) इंसाफ । न्याय ।
इनात—दे० इनायत ।
इनाम—(न०) पारितोषिक । बख्शिश ।
इनायत—(ना०) १. कृपा । अनुग्रह । २. प्रदान । ३. भेंट ।
इनै—(सर्व०) इसे । इसको । (क्रि० वि०) इस ओर । इधर ।
इन्नै—दे० इनै ।
इफरात—(ना०) अधिकता । (वि०) १. अधिक २. अत्याधिक ।
इब—(क्रि०वि०) अब ।
इबकी सात—(अव्य०) अभी का अभी ।
इबछळ—(वि०) अचल । अविचल । अवचळ ।
इबरकै—(क्रि०वि०) १. इस बार । २. दूसरी बार । और । फिर ।
इबसात—दे० इबकी सात ।
इबादत—(ना०) भक्ति । उपासना ।
इबारत—(ना०) १. लेख । २. लेख-शैली ।
इभ—(न०) हाथी ।
इम—(क्रि० वि०) इस प्रकार । ऐसे ।
इमदाद—(ना०) सहायता । मदद ।
इमरत—(ना०) अमृत । सुधा ।
इमरती—(ना०) १. पानी पीने का एक पात्र । गडुई । २. उरद की पीठी से बनने वाली जलेबी जैसी एक मिठाई ।
इमरस—(न०) १. अमर्ष । क्रोध । २. कुढ़न । खीझ । ३. दुख ।
इमली—(ना०) एक वृक्ष और उसकी गूदेदार लंबी खट्टी फली ।
इमानी—(ना०) मकान बनवाने का वह काम या व्यवस्था जो ठीके पर न हो । मकान बनवाने का वह काम या तरीका जो मजदूरों को दैनिक मजदूरी देकर (उनकी इमानदारी पर) करवाया जाता है ।
इमामदस्तो—(न०) औषधियां आदि कूटने की लोहे या पीतल की ओखली और उसका हत्था । हमामदस्तो ।
इमारत—(न०) बड़ा और पक्का मकान । हवेली ।
इमि—दे० इम ।
इमी—(न०) १. अमृत । अमी । २. भूक । अमी ।

इम्तिहान—*(न०)* परीक्षा ।
इम्रत—दे० इमरत ।
इया—*(क्रि०वि०)* यहाँ ।
इयारो—दे० इयेरो ।
इयां—*(सर्व०)* इन । *(वि०)* ऐसा । *(क्रि० वि०)* ऐसे । इस प्रकार ।
इयांकळो—*(वि०)* इस प्रकार का । ऐसा । *(अव्य०)* इनके जैसा ।
इयु—*(क्रि०वि०)* इस प्रकार । यों ।
इये—*(सर्व०)* इस । इसने ।
इयेनूं—दे० इयेनैं ।
इयेनैं—*(सर्व०)* इसको ।
इयेरै—*(सर्व०)* इसके ।
इयेरो—*(सर्व०)* इसका ।
इयेसूं—*(सर्व०)* इससे ।
इरकाणी—*(ना०)* ऊंट के घुटने का ऊपरी भाग ।
इरकियो—*(न०)* ऊंट के अगले पांव के मूल में बाजू की रगड़ से होने वाला जख्म ।
इरकी—दे० इरकाणी ।
इरखो—दे० ईरखो ।
इरद-गिरद—*(क्रि०वि०)* इर्द-गिर्द । आस-पास । चारों ओर ।
इरंड़ काकड़ी—*(ना०)* पपीता । **पपैयो** ।
इरंडियो—*(न०)* एरंड का पौधा ।
इरंडी—*(ना०)* १. एरंड का बीज । २. एक रेशमी वस्त्र ।
इरादो—*(न०)* १. इरादा । मनोभाव । आशय । २. मित्रता ।
इळ—*(ना०)* इला । धरती । भूमि ।
इळकंत—*(न०)* राजा । भूपति । इलाकांत ।
इलकाब—*(न०)* खिताब ।
इळगार—*(न०)* १. उत्साह । उमंग । २. जोश । ३. साहस । ४. प्रस्थान । कूच । रवानगी । ५. रोष । क्रोध ।
इळचक्र—*(न०)* क्षितिज ।
इळज—वृक्ष । पेड़ ।
इलजाम—*(न०)* १. अपराध । २. अभियोग ।
इळत्री—*(ना०)* तीनों लोक । त्रिभुवन ।
इळपत—*(न०)* इलापति । राजा ।
इळपुड़—*(न०)* पृथ्वी तल ।
इळपूत—*(न०)* इलापुत्र । मंगल ग्रह ।
इळपूतद्योस—*(न०)* मंगलवार ।
इळपूतवार—*(न०)* मंगलवार ।
इलम—*(न०)* १. विद्या । २. हुनर । इल्म । शिल्प । ३. जादू । ४. उपाय । ५. ज्ञान । ६. जानकारी ।
इळवइ—*(न०)* इलापति । राजा ।
इळा—*(ना०)* १. इड़ा । इंगला । २. पृथ्वी । इला । ३. पार्वती । ४. सरस्वती । ५. गौ ।
इला—दे० इळा ।
इळाकंत—दे० इळकंत ।
इलाको—*(न०)* १. प्रान्त । इलाका । २. प्रदेश । ३. क्षेत्र । ४. अधिकार क्षेत्र ।
इळाचक्र—दे० इळचक्र ।
इलाज—*(न०)* १. उपचार । चिकित्सा । २. उपाय ।
इळात्रय—दे० इळत्री ।
इळाथंभ—*(न०)* १. शेषनाग । २. राजा ।
इळाधर—*(न०)* पर्वत ।
इळापत—दे० इळपत ।
इळापुड़—दे० इळपुड़ ।
इळायची—*(ना०)* इलायची । एला ।
इळायचो—*(न०)* एक बहुमूल्य रेशमी कपड़ा ।
इळाव्रत—*(न०)* १. इलावृत्त । पृथिवी मंडल । २. एक पृथ्वी खंड ।
इलोळ—*(ना०)* १. लहर । मौज । २. प्रसन्नता । ३. लहर । तरंग । ४. तरीका । ढंग । ५. एक राजस्थानी छंद ।

इल्लत—(ना०) १. झंझट। २. भूत-प्रेत आदि का लगाव। ३. रोग। ४. दोप। ४. कलंक।

इव—(क्रि०वि०) १. अब। २. ऐसे। (सर्व०) इस।

इव करतां—(अव्य०) इस प्रकार।

इवडो—(वि०) १. इतना। २. ऐसा। (स्त्री० इवडी)

इशारो—दे० इसारो।

इश्क—(न०) १. प्रेम। स्नेह। २. काम विकार।

इष्ट—दे० इस्ट।

इष्टदेव—दे० इस्टदेव।

इसइ—(वि०) १. ऐसे। २. ऐसी।

इसक—(न०) इश्क। प्रेम।

इसक-चाळो—(न०) काम चेष्टा।

इसकी—(वि०) प्रेमी। रसिक। इश्की।

इसकूल—दे० स्कूल।

इसक्रू—दे० स्क्रू।

इसड़ी—(वि०) ऐसी।

इसड़ो—(वि०) ऐसा।

इसपताळ—(न०) अस्पताल (स्त्री० इसड़ी) हॉस्पिटल। दवाखानो।

इसबगुळ—(न०) १. रेचक बीजोंवाला एक पौधा। २. इस पौधे के बीज। इसबगोल।

इसलाम—(न०) मुसलमानी धर्म। इस्लाम।

इसा—(वि०) १. ऐसे। ऐसे अनेक। २. इस प्रकार के। ऐसे।

इसान—(क्रि०वि०) इस प्रकार।

इसारो—(न०) १. इशारा। संकेत। २. सूचन।

इसी—(वि०) ऐसी।

इसूं—(वि०) ऐसा।

इसै—(वि०) ऐसे।

इसो—(वि०) ऐसा।

इसो-निसो—(अव्य०) ऐसा-वैसा। ऐसा-तैसा।

इस्ट—(न०) १. इष्ट। इष्टदेव। आराध्य देवता। २. कुल देवता। ३. मित्र। (वि०) १. वांछित। इष्ट। अभिलषित। अभिप्रेत। २. पूज्य।

इस्टदेव—(न०) १. इष्टदेव। आराध्य देवता। कुल देवता।

इस्टाम—दे० स्टांप।

इस्तगासो—(न०) किसी के विरुद्ध फौजदारी कोर्ट में की जाने वाली अर्जी।

इस्तरी—(ना०) १. धोबी तथा दरजी का एक उपकरण जिससे कपड़े की सिकुड़न मिटाई जाती है। २. स्त्री।

इस्तीफो—(न०) इस्तीफा। त्यागपत्र।

इस्तेमाल—(न०) उपयोग।

इस्त्री—(ना०) स्त्री। दे० इस्तरी।

इस्यो—(वि०) ऐसा।

इस्लाम—(न०) मुसलमानी धर्म।

इह—(सर्व०) १. यह। २. इस। (क्रि०वि०) यहाँ।

इहड़ी—(वि०) ऐसी।

इहड़ो—(वि०) ऐसा।

इहाँ—(क्रि०वि०) यहाँ।

इहि—(सर्व०) १. यह। २. इस।

इहि विचि—(वि०) इस बीच की। (अव्य०) इस वस्तु या समय के बीच में।

इहो—(सर्व०) १. वह। २. यह। (वि०) ऐसा। (अव्य०) इस प्रकार।

इंगळा—(ना०) मेरु दण्ड के वाम भाग की इड़ा नाम की एक नाड़ी।

इंगलिश—(ना०) अंग्रेजी भाषा।

इंगलिस्तान—(न०) इंगलैंड।

इंगलैंड—(न०) अंग्रेजों का देश। इंगलिस्तान।

इंगित—(न०) इशारा।

इंच—(न०) १. एक फुट का बारहवाँ भाग। २. फुट के बारहवें भाग का माप।

इंछणो—(क्रि०) १. इच्छा करना। २. विचार करना। ३. निश्चय करना।

इंछना—*(ना०)* इच्छा ।
इंछा—*(ना०)* इच्छा ।
इंछा-भोजन—दे० इच्छा-भोजन ।
इंजन—*(न०)* भाप की शक्ति से चलने वाला यंत्र । एंजिन ।
इंजीनियर—*(न०)* यंत्र शास्त्र का विशारद ।
इंजैकशन—*(न०)* पिचकारी द्वारा । शरीर में दवा प्रवेश करना ।
इंठै—*(क्रि०वि०)* यहाँ । इस जगह । **अठै** । **इनै** ।
इंडज—*(न०)* अंडे से उत्पन्न होने वाले प्राणी । अंडज ।
इंडिया—*(न०)* भारत देश ।
इंडै—दे० इंठै ।
इंतकाळ—*(न०)* मृत्यु । मौत ।
इंतजाम—*(न०)* प्रबन्ध । इंतजाम ।
इंतजार—*(न०)* १. प्रतीक्षा । २. आतुरता ।
इंतजारी—दे० इंतजार ।
इंद—*(न०)* १. इंद्र । २. इन्दु । चन्द्रमा ।
इंदगोप—दे० इंद्रगोप ।
इंदर—*(न०)* १. इन्द्र । २. मेघ-घटा । ३. स्वामी । ४. वृक्ष ।
इंदर धनख—दे० इंद्र धनुष ।
इंदराज—*(वि०)* १. ऊँचा । १. श्रेष्ठ । ३. बड़ा । *(न०)* १. लिखा जाना । लिखावट । २. नोंध । **नूंध** ।
इंदरियो—*(न०)* १. मेघ-चटा । २ इंद्र ।
इंदिरा—*(ना०)* लक्ष्मी ।
इंदीवर—*(न०)* नील कमल ।
इंदु—*(न०)* चंद्रमा ।
इंद्र—*(न०)* देवताओं का राजा । इन्द्र ।
इंद्र कूण—*(ना०)* खगोल और शकुन शास्त्र की सोलह दिशाओं में से एक दिशा । इन्द्रकोण ।
इंद्र कूंट—दे० इंद्र कूण ।
इंद्रगोप—*(ना०)* वीरवहूटी । **ममोलो** । **ममोलियो** ।
इंद्रजव—*(न०)* कुड़ा बीज ।
इंद्रजाळ—*(न०)* १. मंत्र तंत्र तथा हाथ की सफाई द्वारा अचंभे की बातें दिखाने की विद्या या कला । फरफंद । जादूगरी । २. मायाकर्म । ३. नट विद्या । ४. धोखा । छल । ५. मंत्र-तंत्र द्वारा आश्चर्योत्पादक कला का ग्रन्थ ।
इंद्रजीत—*(न०)* मेघनाद ।
इंद्रधजा—*(ना०)* रंग-बिरंगी अनेक छोटी धजाओं वाला एक बड़ा ध्वज । इन्द्रध्वज ।
इंद्र धनुष—दे० इंद्रधनुस ।
इंद्र धनुस—*(न०)* सूर्य के सामने की दिशा में वर्षा होने के कारण सूर्य के प्रकाश से क्षितिज को छूता हुआ दिखाई देने वाला सात रंगों का अर्धवृत्त ।
इंद्रपुरी—*(ना०)* १. इंद्र की नगरी । २. देवताओं की नगरी ।
इंद्रप्रस्थ—*(न०)* पांडवों की राजधानी । प्राचीन दिल्ली ।
इंद्रलोक—*(न०)* स्वर्ग ।
इंद्रवधू—दे० इंद्रगोप ।
इंद्राण—*(न०)* १. तसतूंबा । इन्द्रायण का फल । २. इंद्रायण की लता ।
इंद्राणी—*(ना०)* इन्द्र की पत्नी ।
इंद्रापुरी—*(ना०)* १. इन्द्र की राजधानी । अमरापुरी २. इन्द्रापुरी के समान वैभव या सुख ।
इंद्रायण—*(ना०)* १. तसतूंबे की लता । २. इन्द्रायण का फल । **तसतूंबो** ।
इंद्रासण—*(न०)* इन्द्र का सिंहासन । इन्द्रासन ।
इंद्रासन—दे० इंद्रासण ।
इंद्रिय—दे० इंद्री ।
इंद्री—*(ना०)* १. शिश्न । लिंगेंद्रिय । २. वह शक्ति जिसके द्वारा बाहरी पदार्थों के भिन्न भिन्न गुणों का भिन्न भिन्न रूपों में अनुभव होता है (ज्ञानेन्द्रिय) । ३. शरीर

के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। (कर्मेंद्रिय)। ४. इंद्रिय।

इंसान—(न०)१. मनुष्य। २. मानव जाति।

इंसाफ—दे० इनसाफ।

इंस्पैक्टर—(न०) निरीक्षक।

ई

ई—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्ण माला का चौथा स्वर वर्ण। 'इ' का दीर्घ रूप।

ई—(सर्व०) यह। (अव्य०) १. ही। २. भी।

ईअे—(सर्व०)१. इसने। २. इस। ३.इससे। (वि०) ऐसे। इसी प्रकार के।

ईकड़—(न०) मूंग-मोठ के जैसा एक जंगली द्विदल नाज और उसका पौवा। इसे पका कर गाय भैंस आदि को खिलाते हैं।

ईकार—(न०) 'ई' वर्ण।

ईख—(ना०) १. दृष्टि। २. गन्ना। ऊख।

ईखण—(ना०) नेत्र। आँख। ईक्षण।

ईखणो—(क्रि०) देखना।

ईटणो—(क्रि०) १. उपयोग करना। काम में लाना। २. बखेरना। छितराना। ३. बहाना। बहा देना।

ईठ—(न०) १. इष्ट। २. पति।

ईडर—(न०) १. ऊंट की छाती में उभरा हुआ एक गोल खुरदरा स्थान। २. गुजरात का एक ऐतिहासिक नगर और राज्य।

ईडरियो—(वि०) १. ईडर का। ईडर संबंधी। २. ईडर निवासी।

ईढ—(ना०) १. समानता। तुलना। बराबरी। २.ईर्ष्या। डाह। ३. शत्रुता। वैर। ४. हठ।

ईढक—(न०) नगाड़ा।

ईढग—दे० ईढगरो।

ईढगरो—(वि०) १. बराबरी करने वाला। २. ईर्ष्यालु। ३. पीछे नहीं रहने वाला। ४. शत्रु। वैरी।

ईत—(ना०) पशुओं की चमड़ी में चिपका रह कर खून चूसने वाला एक छोटा कीड़ा।

ईतरणो—दे० इतरणो।

ईति—(ना०) खेती को हानि पहुँचाने वाले उपद्रव।

ईद—(ना०) मुसलमानों का एक त्यौहार।

ईनणी—दे० ईंघणी।

ईन-मीन—(वि०) इने-गिने। अल्प। थोड़े।

ईन-मीन-तीन—दे० ईन-मीन।

ईनलो—(वि०) इधर का। इस ओर का।

ईनूणी—दे० ईंढोणी।

ईनै—(सर्व०) इसको। (क्रि०वि०) इधर। यहाँ।

ईमान—(न०) १. धर्म। २. नीयत। ३. अच्छी नीयत। ४. विश्वास। भरोसा। ५. प्रामाणिकता।

ईमानदार—(वि०) १. सच्चाई से काम करने वाला। सच्चा। खरा। २. व्यवहार शुद्ध। ३. विश्वासपात्र। ४. धर्मभीरू। ५. प्रामाणिक।

ईमानदारी—(ना०) १. सच्चाई। २. व्यवहार शुद्धता। ३. धर्माचरण। ४. प्रामाणिकता।

ईमानी—दे० इमानी।

ईयेरै—दे० इयेरै।

ईयेरो—दे० इयेरो।

ईयेवळ—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

ईरखा—(ना०) ईर्ष्या। डाह।

ईरखाळू—(वि०) ईर्ष्यालु।

ईरखो—*(न०)* ईर्ष्या ।

ईरण—*(ना०)* अग्नि ।

ईली—*(ना०)* अनाज का एक कीड़ा । अन्न-कीट । इलीका ।

ईलोजी—*(न०)* होली के हुड़दंग की एक अश्लील मूर्ति ।

ईवाड़ो—*(न०)* भेड़-बकरियों का बाड़ा ।

ईश—दे० ईश्वर ।

ईशान—*(न०)* उत्तर-पूर्व के मध्य का कोण। ईशान दिशा । २. शिव । महादेव ।

ईश्वर—*(न०)* १. ईश्वर । परमेश्वर । २. शंकर । महादेव । ३. स्वामी । प्रभु ।

ईश्वरी—*(ना०)* १. दुर्गा । भगवती । २. पार्वती । भवानी ।

ईस—*(न०)* ईश्वर सं० १, २ ३, *(ना०)* १. खाट की चौखट की लंबी लकड़ी । चारपाई के चौखटे की दाहिने या बाएँ की लकड़ी । २. किसी भूभाग की लंबाई । ३. लंबाई की ओर का नाप ।

ईसको--*(न०)* ईर्षा । डाह ।

ईसर--दे० ईश्वर ।

ईसरजी—*(न०)* १. महादेव की वह मूर्ति जो जामा, खिड़किया पाघ और तुर्रे-कलगी वाली राठौड़ी वेशभूषा में गनगौर के उत्सव (गौरी पर्व) पर गौरी की मूर्ति के साथ प्रदर्शित की जाती है । २. महादेवजी । शिवजी ।

ईसरदास—*(न०)*मालाणी प्रदेश (मारवाड़) के भादरेस गाँव के निवासी प्रसिद्ध भक्त कवि ईसरदास बारहठ ।

ईसरी—दे० ईश्वरी ।

ईसरेस—*(न०)* महादेव । ईश्वरेश ।

ईसवीसन—*(न०)* ईसा के जन्म-काल से चलाया हुआ वर्ष ।

ईसा—*(न०)* ईसाई धर्म का प्रवर्तक। ईसा-मसीह ।

ईसाई—*(न०)* ईसा के मत को मानने वाला ।

ईसागांद—*(न०)* भक्तकवि ईसरदास बारहठ का महत्व सूचक नाम ।

ईसाण—दे० ईशान ।

ईसाणी—*(वि०)* ईशान दिशा की ।

ईसान—दे० ईशान । *(सं० पु०)* अहसान । उपकार ।

ईसुरी—दे० ईश्वरी ।

ईह—*(सर्व०)* यह । *(सं०स्त्री०)* इच्छा ।

ईहग—*(न०)* १. याचक । २. चारण । ३. भाट । *(वि०)* इच्छुक ।

ईहण—दे० ईहग ।

ईहा—*(ना०)* इच्छा ।

ईहाड़—*(ना०)* एक तोप ।

ईं—*(सर्व०)* १. इस । २. इसने । ३. यह ।

ईंकी—*(सर्व०)* इसकी ।

ईंके—*(सर्व०)* इसके ।

ईंको—*(सर्व०)* इसका ।

ईंगी—*(सर्व०)* इसकी ।

ईंगो—*(सर्व०)* इसका ।

ईंजाँ—*(क्रि० वि०)* यहाँ ।

ईंट—*(ना०)* १. पकाया हुआ मिट्टी का चौकोर टुकड़ा जिसे सीमेन्ट, चूना या मिट्टी के गारे से जोड़कर मकान की दीवार बनाई जाती है । ईंट । २. चार कोनों की बूटी वाला ताश का पत्ता ।

ईंटाड़ी—दे० ईंट ।

ईंटाळो—*(न०)* १. ईंट का टुकड़ा । *(वि०)* १. ईंटों वाला । ईंटें पकाने वाला ।

ईंटोड़ो—*(न०)* ईंट का टुकड़ा ।

ईंडो—*(न०)* १ं अंडा । २. देव-मंदिर के शिखर के ऊपर का स्वर्णादि का बना हुआ एक विशेष प्रकार का कलश ।

ईंडोणी—दे० ईंढोणी ।

ईंढूणी—दे० ईंढोणी ।

ईंढोणी—*(ना०)* कपड़े आदि की बनी एक विशेष प्रकार की गोल गद्दी (कुंडली) जिसको पानी का घड़ा आदि बोझा

उठाने के लिये स्त्रियाँ सिर पर रखती हैं। ईंडुरी। ईंडुआ।

ईंदावाटी—(ना०) मारवाड़ में ईंदा-परिहारों का एक क्षेत्र। जोधपुर के पश्चिम में ईंदा-राजपूतों की जागीर का प्रदेश।

ईंधरण—(न०) भोजन बनाने के लिये जलाने की लकड़ी, कंडा आदि। जलावन।

ईंधरणी—(ना०) भोजन पकाने के लिये काम में आने वाली (जलाने की) की लकड़ी। बलीते की लकड़ी (बलीता)।

ईंनै—(सर्व०) १. इसने। २. इसको। इसे (क्रि०वि०) इधर। इस ओर।

ईं पर—(अव्य०) १. इस पर। तदुपरान्त। २. इसके पश्चात्। इसके ऊपर।

ईंयाँ—(क्रि०वि०) १. ऐसे। २. वैसे।

ईंयाँरै—(सर्व०) इनके।

ईंयाँरो—(सर्व०) इनका।

ईंरो—(सर्व०) इसका।

ईंसूं—(सर्व०) इससे।

उ

उ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्णमाला का पाँचवाँ ओष्ठ स्थानीय स्वर वर्ण।

उअव—(न०) १. उद्भव। जन्म। २. वृद्धि। बढ़ती (वि०) अद्भुत।

उअरगो—(क्रि०) उगना।

उअर—(न०) उर। हृदय।

उअह—(न०) उदधि। समुद्र।

उआगो—(क्रि०) उगाना।

उआरण—(न०) १. न्योछावर करने की वस्तु। २. निछावर। उत्सर्ग। ३. उद्धार। रक्षा। बचाव। (वि०) उद्धार करने वाला।

उआरणा—(न०) बलैया। न्योछावर।

उआरणो—(क्रि०) निछावर करना। बलिहार जाना। (न०) निछावर। उत्सर्ग।

उआरो—(न०) १. उत्सर्ग। निछावर। २. गाँव से बाहर निकलने का मार्ग। गाँव से बाहर निकलने के मार्ग का अंतिम छोर तथा प्रवेश करने के मार्ग का सिरा।

उआँ—दे० उवाँ।

उआँरै—दे० उवाँरै।

उआँरो—दे० उवाँरो।

उए—दे० उवे।

उकट—(न०) १. कसाव। कसैलापन। २. क्रोध। गुस्सा। ३. मनोमालिन्य। ४. जोश। मनोवेग। ५. आवेश।

उकटणो—(क्रि०) कमाव पैदा होना। कसाना। २. क्रोध पैदा होना। ३. मनोमालिन्य पैदा होना। ४. जोश में आना।

उकत—(ना०) १. उक्ति। कथन। २. समझ। बुद्धि। ३. युक्ति। उपाय।

उकताऊजरगो—(क्रि०) १. उकता जाना। ऊब जाना। २. अधीर होना।

उकतारगो—दे० उकताइजणो।

उकतावरगो—दे० उकताइजणो।

उकती—दे० उकत।

उकतीवान—(वि०) १. उक्ति वाला। २. बुद्धिमान। ३. प्रत्युत्पन्नमति।

उकर—(न०) बाण।

उकरड़ी—(ना०) छोटा उकरड़ा। घूरी।

उकरड़ो—(न०) १. कूड़े-कचरे का ढेर। घूरा। २. कूड़ा-कचरा डालने की जगह।

उकरांस—(न०) १. चाल। धूर्तता। २. युक्ति। उपाय। ३. कौशल। ४. अवसर। मौका। ५. खेल का दाँव।

उखाड़-पछाड़—*(ना०)* १. भांग तोड़ । २. उथल-पुथल । तितर-बितर । ३. छिन्न-भिन्न । ४. बखेड़ा । उपद्रव ।

उखाणो—*(न०)* १. उपाख्यान । ओखाणो । २. कहावत । ३ उक्ति । ४. दृष्टान्त । उदाहरण ।

उखेख—*(न०)* क्रोध ।

उखेखणो—*(क्रि०)* १. क्रोध करना । २. देखना ।

उखेड़णो—दे० उखाड़णो ।

उखेल—*(न०)* १. उत्पात । २. युद्ध । ३. कलह । ४. उत्खनन ।

उखेलणो—*(क्रि०)* १. रस्सी पगड़ी आदि के आंटों को खोलना । २. अपने स्थान से अलग करना । उखेड़ना । ३. परस्पर चिपटी हुई वस्तुओं को अलग करना । दे० उखाड़णो सं० १, २ ।

उखेवणो—*(क्रि०)* देवता के सामने धूप-अगरवत्ती जलाना । धूप खेना ।

उगटणो—*(क्रि०)* कसाव उठना । कसेला-पन पैदा होना । *(न०)* उबटन ।

उगण चाळी—दे० उगण चाळीस ।

उगण चाळीस—*(वि०)* तीस और नौ । *(न०)* उनताळीस की संख्या–'३९'

उगण चाळीसो—*(न०)* उनचालीसवां वर्ष ।

उगणती—*(वि०)* बीस और नौ । *(न०)* उनतीस की संख्या–'२९' ।

उगणतीस—दे० उगणती ।

उगणत्रीस—दे० उगणती ।

उगणतीसो—*(न०)* उनतीसवां वर्ष ।

उगणपचा—दे० उगण पचास ।

उगणपचास—*(वि०)* चालीस और नौ । *(न०)* उनचास की संख्या–'४९' ।

उगणपचासो—*(न०)* उनचासवां वर्ष ।

उगणनो—दे० उगवणो ।

उगणसाठ—*(वि०)* पचास और नौ । *(न०)* उनसाठ की संख्या–'५९' ।

उगणसाठो—*(न०)* उनसाठवां वर्ष ।

उगणंतर—*(वि०)* साठ और नौ । *(न०)* उनहत्तर की संख्या–'६९' ।

उगणंतरो—*(न०)* उनहत्तरवां वर्ष ।

उगणासियो—दे० उगणियासियो ।

उगणासी—दे० उगणियासी ।

उगणियासियो—*(न०)* उनासीवां वर्ष ।

उगणियासी—*(वि०)* सित्तर और नौ । *(न०)* उनासी की संख्या–'७९' ।

उगणी—दे० उगणीस ।

उगणीस—*(वि०)* दस और नौ । *(न०)* उन्नीस की संख्या–'१९' । *(वि०)* हलके दर्जे का । उतरता हुआ । खराब ।

उगणीसो—*(न०)* उन्नीसवां वर्ष । *(वि०)* १. उन्नीस सौ । एक हजार नौ सौ । २. जो तुलना में खराब हो । बदतर ।

उगणोतर—दे० उगणंतर ।

उगणोतरो—दे० उगणंतरो ।

उगत—दे० उकत ।

उगम—*(ना०)* १. उद्गम । उदय । २. उत्पत्ति । ३. अंकुरण ।

उगमण—*(ना०)* पूर्व दिशा ।

उगमणूं—*(क्रि०वि०)* १. पूर्व दिशा की ओर *(वि०)* पूर्व दिशा का । *(न०)* पूर्व दिशा ।

उगमणो—दे० उगमणूं ।

उगरणो—*(क्रि०)* उबरना । बचना ।

उगरांटो—दे० अगरांटो ।

उगरामणो—*(क्रि०)* प्रहार करने के लिये शस्त्र उठाना । हाथ उठाना ।

उगळणो—*(क्रि०)* १. उगलना । २. जुगाली करना । ३. कै करना । वमन करना । ४. वमन होना । उलटी होना ।

उगळाणी—*(वि०)* नग्न । नंगी । विवस्त्र । उघाड़ी । *(ना०)* कै । उलटी । उगाळ ।

उगळाणो—*(क्रि०)* 'उगळाणी' का पुल्लिंग । *(क्रि०)* कै होना । उलटी होना ।

उगवणो—*(क्रि०वि०)* पूर्व दिशा में । पूर्व दिशा की ओर ।

उगाई—(ना०) १. अंकुरन । २. अंकुरित । होने की स्थिति । ३. उगाने का कान ।
उगाड़णो—(क्रि०) १. उगाना । २. बुवाई करना । बीज बोना । ३. पेड़-पौधे लगाना ।
उगाणो—दे० उगाड़णो ।
उगामणो—(क्रि०) प्रहार करने के लिए लाठी, शस्त्र आदि को ऊंचा उठाना ।
उगार—(न०) १. बचाव । उद्धार । २. बचत ।
उगारणो—(क्रि०) उबारना । बचाना ।
उगाळ—(न०) १. पीक । २. जुगाली । ३. वमन । कै ।
उगाळणो—(क्रि०) १. जुगाली करना । २. वमन करना । ३. उच्चारना ।
उगाळदान—(ना०) पीकदान ।
उगाळी (ना०) १. उदय । २. सूर्योदय । ३. जुगाली । २. पीकदान ।
उगावणो—दे० उगाड़णो ।
उगावो—(न०) उगने की क्रिया ।
उगूण—दे० उगमण ।
उगेरणो—(क्रि०) गीत गाना प्रारंभ करना ।
उगेरै—(अव्य०) वगैरह । इत्यादि ।
उग्र—(वि०) १. तेज । प्रचंड । २. भयानक । ३. क्रोधी । ४. ऊचा । ५. जबरदस्त । ६. अति । अधिक ।
उग्रज—(ना०) १. गर्जन । जोर की गर्जना । २. गर्व-गर्जन । (वि०) गर्वोन्नत ।
उग्रजणो—(क्रि०) १. गर्जन होना । २. गर्व से गर्जना । २. गर्व से मस्तक ऊंचा उठाना ।
उग्रजती—(न०) हंस ।
उग्रभागी—(वि०) १. ऊंचे भाग्यवाला । भाग्यशाली । २. तेजस्वी ।
उग्रहणो—(क्रि०) १. बदला लेना । २. बदला मांगना । ३. कर वसूल करना । ४. उगाहना । उगाही करना । ५. पकड़ना धारण करना । ६. ग्रहण करना । ७. मुक्त करना ।
उग्रहण-वैरी—(न०) तलवार भाला आदि शस्त्र ।
उग्राहणो—(क्रि०) दे० १. उबरावणो । २. छोड़ना । ३. प्रहार करने को शस्त्र उठाना । ४. छुड़ाना ।
उघड़णो—(क्रि०) १. उघड़ना । खुलना । २. आवरण रहित होना । ३. प्रगट होना । ४. नंगा होना । उघाड़ा होना । ५. (भाग्य) खुलना ।
उघरणो—(क्रि०) १. उघाई का वसूल होना । लेनदारी का वसूल होना । २ कर की वसूली होना । ३. उघड़ना ।
उघराई—दे० उघाई ।
उघराणी—दे० उघाई ।
उघराणियो—(न०) उघराणी करने वाला ।
उघराणो—(न०) १. नंगे पाँव । २ उघाई । (क्रि०) उगाहना । उगाही करना ।
उघरावणी—दे० उघाई ।
उघरावणो—(क्रि०) उधार दी हुई रकम, वस्तु या वस्तु का मूल्य वसूल करना । तकाजा करना । २. बदला लेना ।
उघवणो—दे० उघरावणो ।
उघाई—(ना०) १. उधार दी हुई रकम का तकाजा । २. उधार दी हुई वस्तु या वस्तु की कीमत का तकाजा । उगाही । ३. उगाही का काम । ४. उधार दी हुई रकम । ५. वसूल हुई रकम । वसूली ।
उघाड़—(न०) १. प्रकट । अवरोधाभाव । २. रहस्य का प्रस्फुटन । रहस्योद्घाटन । ३. (समस्या का) स्पष्टीकरण । खुलासा । ४. मैदान । ५. समझ । ६. आकाश का बादल रहित होकर धूप निकलना ।
उघाड़णो—(क्रि०) १. खोलना २. खुला करना । उघाड़ा करना । ३. ढक्कन का हटाना ।

उघाड़ पड़णो—(मुहा०) १. समझ में आना। २. रहस्य खुलना।
उघाड़ वार—दे० उघाड़ो वारो।
उघाड़ वारो—(न०) १. खुला प्रवेश। २. वह स्थान जिसमें चाहे जिधर से प्रवेश हो सके। ३. मुख्य द्वार के अतिरिक्त विना अवरोध के आने जाने का मार्ग। ४. चोर के आने जाने के लिए सरल मार्ग। ५. चोरी करके भाग जाने का सरल मार्ग।
उघाड़ीछाती—(ना०) हिम्मत। साहस। (वि०) साहसी वीर। (क्रि०वि०) अत्यन्त वीरता पूर्वक।
उघाड़ो—(वि०) १. नंगा। नग्न। उघारा। २. खुला हुआ। विना ढका हुआ। ३. स्पष्ट। साफ। ४. प्रगट। ५. जो बंद न हो। ६. नहीं ओढ़ा हुआ।
उघाड़ो होणो—(क्रि०) १. नंगा होना। २. बदनाम होना। ३. खुल जाना। ४. खुला होना।
उघामणो—दे० उगामणो। उगरामणो।
उचकणियो—(न०) किसी वस्तु को ऊंचा उठाने के लिये उसके नीचे रखा जाने वाला ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा। उचकन। टग। (वि०) १. उठाने वाला। २. बोझा ढोनेवाला। ३. आँखों के सामने चोरी करने वाला। उचकाने वाला।
उचकणो—(क्रि०) १. उचकना। ऊपर उठना। २. भागना।
उचकावणो—(क्रि०) १. उचकाना। ऊपर उठाना। २. आँखों के सामने किसी वस्तु को चुरा लेना। उचकाना।
उचक्को—दे० उचंगो।
उचटणो—(क्रि०) १. चौंकना। भड़कना। बिचकना। १. नींद में चौंकना। ३. नींद उड़ जाना। ४. मन नहीं लगना। ५. चित्त फट जाना।
उचरणो—(क्रि०) उच्चार करना। कहना।
उचंगो—(वि०) १. उचक्का। उठाईगीर। २. चाँई। ठग। धूर्त। ३. बदमाश।
उचंडणो—(क्रि०) १. उठाना। उचकना। २. उछालना।
उचंत—दे० उधार।
उचंत खातो—दे० उधार खातो।
उचाट—(ना०) १. व्यथा। पीड़ा। २. चिंता। ३. मन की अस्थिरता।
उचारणो—(क्रि०) १. उच्चारण करना। २. बोलना। कहना।
उचाळो—(नि०) १. दुष्काल या युद्ध आदि संकट के कारण सामूहिक रूप से निवास स्थान को छोड़ कर दूसरे किसी स्थान में निवास हेतु किया जाने वाला प्रजा का प्रस्थान। २. संकट काल में देशान्तर निवास के लिये किया जाने वाला प्रजा का एक साथ प्रस्थान। उच्चलन।
उचावणो—(क्रि०)१. बोझा आदि उठाना। २. उठवाना।
उचासरो—(न०) १. श्रेष्ठ जाति का श्वेत घोड़ा। २. इन्द्र के घोड़े का नाम। उच्चैःश्रवा।
उचाँचळो—(वि०)१. अविचारी। २. उद्धत। ३. चंचल। ४. उतावला।
उचित—(वि०) योग्य। मुनासिब। ठीक।
उचीश्रव—दे० उचासरो।
उचैश्रव—दे० उचासरो।
उचैस्रवो—दे० उचासरो।
उच्च—दे० ऊंचो। श्रेष्ठ।
उच्चळचित्तो—(वि०) १. उच्च हृदय। उदार। २. अस्थिर चित्त वाला।
उच्चाटन—(न०) १. जुड़ी हुई वस्तु को अलग करना। उखाड़। २. एक अभिचार।
उच्चार—(न०) वचन। बोल।

उच्चारण—(न०) १. शब्दों या वर्णों के बोलने का ढंग। २. मुँह से बोलना।

उच्चैश्रवा—(न०) १. चौदह रत्नों में से एक। २. इंद्र का घोड़ा।

उच्छव—(न०) १. उत्सव। २. पर्व। त्योहार। ३. उत्साह।

उछजणो—(क्रि०) १. प्रहार करने के लिये शस्त्र उठाना। २. हाथ ऊंचा उठाना। ३. जोश में आना। ४. ऊपर उठना। ५. ऊपर उठाना।

उछट—(ना०) १. कुदाई। २. भगदड़। ३. पानी का धक्का। जोर की लहर। ४. लहर। तरंग। ५. उदारता।

उछटणो—(क्रि०) १. कूदना। २. भागना। ३. पानी का धक्का आना। ३. लहर के धक्के से सम्हल नहीं सकना।

उछत—(ना०) १. प्रसन्नता। खुशी। २. इच्छा। चाह। ३. शक्ति. हैसियत। सामर्थ्य।

उछव—दे० उच्छव।

उछरणो—(क्रि०) १. पालण-पोपण प्राप्त करना। पालण-पोपण होना। २. पोषण पाना। ३. पोषण पाकर वयस्क या योग्य होना। ४. गाय भैंस आदि पशुओं का जंगल में चरने को जाना।

उछरंग—(न०) १. उत्सव। २. हर्ष। आनंद।

उछरंजण—(न०) दान।

उछळंग—(न०) १. नाच। नृत्य। उच्छलांग। २. उमंग। उत्साह। ३. खुशी। प्रसन्नता।

उछळ—(ना०) १. किसी कार्य को करने के लिये या किसी वस्तु की पसंदगी अथवा उसको प्राप्त करने के लिये दूसरों से पहले दिया जाने वाला अवसर। २. अनेक इकाइयों में से किसी एक की पसंदगी। ३. अधिक लाभ वाले भाग को लेने की पसंदगी। २. अधिक लाभ वाले भाग को लेने की छूट। ५. अभिरुचि। मन की पंसद। ६. कुदान। छलांग।

उछळ-कूद—(ना०) १. ऊधम। उतपात। २. चंचलता। अधीरता। ३. शोरगुल।

उछळणो—(क्रि०) १. कूदना। फांदना। २. खुशी से फूलना। ३. जोश में आना। ४. आगे बढ़ना।

उछळ-पाँती—(ना०) १. पसंदगी वाला भाग। २. अधिक लाभ वाला भाग।

उछंग—(ना०) उत्संग। गोदी। क्रोड़।

उछाळ—(ना०) १. पाणिग्रहण के बाद दूल्हा-दुलहिन का जनिवासे जाते समय मार्ग में ठौर-ठौर की जाने वाली रुपये-पैसों की निछरावल-वर्षा। २. राजा, महंत या धनाढ्य की मृत्यु होने पर श्मशान यात्रा के समय मार्ग में की जाने वाली रुपये-पैसों की फेंकाई। ३. उछलने की क्रिया। कुदाई।

उछाळणो—(क्रि०) फेंकना। उछालना।

उछाळो—(न०) १. उछलने की क्रिया। २. ऊधम। शोर। ३. लहर। तरंग। ४. उमंग। ५. जोश। ६. बिना सार-सम्हाल के इधर-उधर बिखरी हुई और अव्यवस्थित रूप से पड़ी हुई सामग्री।

उछाव—(न०) १. उत्सव। २. उत्साह। ३. हर्ष। ४. जोश।

उछाह—दे० उछाव।

उछाँट—(ना०) वमन। कै। **उलटी**।

उछेट—(ना०) अपूर्ण गर्भपात।

उछेद—(न०) १. उच्छेद। खंडन। २. नाश। ध्वंश।

उछेदणो—(क्रि०) १. उखाड़ना। २. खंडन करना। ३. नाश करना।

उछेर—(न०) १. पालण-पोपण। भरण-पोपण। २. पुत्र-पुत्री की सन्तान। आल-औलाद। ३. पुत्र-पुत्री। संतान।

उछेरणो—(क्रि०) १. पालन-पोषण करना। २. पालन-पोषण करके योग्य बनाना। ३. गाय-भैंस आदि पशुओं को चराने के लिए जंगल में हाँकना।

उछ्रग—(न०) १. उत्सर्ग। दान। २. निछावर।

उछ्रग—दे० उछ्रग।

उज—(न०)१. नेत्र। २. आँसू। ३. हृदय। ४. स्तन। ५. ओज। पुरुषार्थ। साहस। ६. कान्ति। ७. बल। शक्ति। ऊर्जा। ८. शान। ठाट-बाट।

उजाँ—दे० उज।

उजड़—(वि०) १. निर्जन। वीरान। २. कंटकाकीर्ण। आकीर्ण। अप्रशस्त (मार्ग)। (न०) बिना मार्ग का गमन।

उजड—(वि०) १. मूर्ख। नासमझ। २. अनाड़ी। ३. असभ्य।

उजड़णो—(क्रि०) १. उजाड़ होना। वीरान होना। २. बिखरना। ३. उखड़ना। ४. नष्ट होना। बरबाद होना।

उजदार—(न०) १. सेनाध्यक्ष। २. ओहदेदार। हुजदार। ३. नौकर वर्ग। (वि०) १. साहसी। २. बलशाली। ३. बड़े स्तनों वाली।

उजबक—(न०) १. रणोत्साही वीर। २. घोड़ा। ३. तातारी लोग। ४. तातार जाति। ५. मुसलमान। ६. शत्रु। (वि०) १. आततायी। २. अनाड़ी। उजड्ड। ३. मूर्ख। नासमझ। ४. रण-व्याकुल। रण-विक्षिप्त। (क्रि० वि०) अविच्छिन्न रूप से। लगातार।

उजमणो—(न०) १. किसी प्रतिज्ञात नियमित व्रत का उद्यापन। २. प्रतिज्ञात नियमित व्रत की समाप्ति के अवसर पर किया जाने वाला भोज। उजमणो का भोजन-समारोह। ३. व्रत का उद्यापनोत्सव। ४. उत्तम कार्य। ५. मंगल कार्य का सम्पादन। (क्रि०) १. व्रत का उद्यापन-उत्सव करना। २. उजमणे के निमित्त भोजन-समारोह करना।

उजर—(न०) १. उज्र। आपत्ति। एतराज। २. विरोध। ३. मना। अस्वीकृति।

उजरत—(ना०) पारिश्रमिक। मजदूरी।

उजरदार—(वि०) एतराज करने वाला। उज्र उठाने वाला। उजरदारी पेश करने वाला।

उजळणो—(क्रि०) १. उजला होना। साफ होना। २. प्रकाशित होना। प्रकाशना। चमकना।

उजळाई—(ना०) १. गुदा प्रक्षालन। २. शौचाचार। ३. स्वच्छता। सफाई। ४. उत्तमता। पवित्रता। ५. चमक।

उजळो—(वि०) १. उज्वल। स्वच्छ। २. श्वेत। सफेद। धोळो।

उजवणो—दे० उजमणो।

उजवाळक—(वि०) १. उज्वल करने वाला। २. प्रसिद्ध करने वाला। ३. ख्यातनामा।

उजवाळणो—(क्रि०) १. उज्वल करना। २. प्रसिद्ध करना। ३. यशस्वी बनाना। ४. प्रकाशित करना। चमकाना। दे० अजवाळणो।

उजवाळी—(ना०) चाँदनी। (वि०) शुक्ल पक्ष की।

उजवाळो—(न०) उजाला। प्रकाश। दे० अजवाळो।

उजागर—(वि०) १. प्रकाशित। २. विख्यात। प्रसिद्ध। ३. श्रेष्ठ। ४. महत्वपूर्ण। ५. सुन्दर। मनोहर। ६. सचेत। सावधान। ७. अनोखा। ८. धीर-वीर। ९. वंश को उज्वल करने वाला।

उजागरो—(न०) १. जागरण। २. नींद का अभाव। ३. नींद नहीं लेने के कारण

उत्पन्न आलस्य। (वि०) १. प्रसिद्ध। २. श्रेष्ठ। ३. सुन्दर। ४. अनोखा। ५. वंश को उज्वल करेने वाला।

उजाड़—(न०) १. निर्जन स्थान। २. जंगल। ३. ध्वंस। नाश। ४. हानि। नुकसान। (वि०) १. निर्जन। वीरान। २. नष्ट। ध्वस्त।

उजाड़णो—(क्रि०)१. नष्ट करना। ध्वस्त करना। २. बस्ती को निर्वासित करना। वस्ती निर्जन करना। वीरान करना। ३. बिगाड़ना।

उजाथर– दे० उजागर।

उजाळ—(न०) १. प्रकाश। २. प्रकाशित। करने वाली वस्तु। ३. प्रकाश देनेवाली वस्तु। ४. पानी मिश्रित वह तेजाब जिससे सोना चाँदी आदि धातुएँ व गहने आदि साफ किये जाते हैं।

उजाळक—दे० उजवाळक।

उजाळणो—(क्रि०) १. प्रकाशित करना। २. चमकाना। उजाला करना। साफ करना। ३. कीर्तिवान बनाना।

उजाळी—(ना०) चाँदनी। उजाली।

उजाळो—(न०) १. उजाला। चाँदना। रोशनी। २. चमक। तेज।

उजाळो पख—(न०) शुक्ल पक्ष। **अजवाळियो पाख।**

उजावणो—(क्रि०) उपजाना। पैदा करना।

उजास—(न०) १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। कान्ति। ३. सफेदी। उजलापन।

उजासणो—(क्रि०) प्रकाशित करना। चमकाना।

उजासी—(ना०) १. प्रकाश। २. सफेदी।

उजियाळी—(ना०) चाँदनी। चंद्रिका।

उजियाळो – दे० उजाळो।

उजियास—दे० उजास।

उजीणी—(ना०) उज्जयिनी। उज्जैन नगर।

उजीर—(न०)१. वजीर। मंत्री। दीवान। २. शतरंज की एक गोटी का नाम।

उजूद—(वि०) गैर मौजूद। 'मौजूद' का उलटा।

उजेणी—दे० उजीणी।

उजेणी—दे० उजीणी।

उजेस—(न०) प्रकाश। (वि०) १. प्रकाशमान। २. प्रकाशित।

उजोत—(न०) उद्योत। प्रकाश।

उज्जाण—(न०) उद्यान।

उज्जैन—(न०) १. मालवा की प्राचीन राजधानी का नगर। २. विक्रम सम्वत् के प्रवर्तक विक्रमादित्य की राजधानी का उज्जयिनी नगर।

उज्वल—(न०) १. कांतिमान। उजला। देदीप्यमान। २. स्वच्छ। ३. सफेद।

उभ्कळणो—(क्रि०) १. छलकना। २. मर्यादा के बाहर होना। ३. उफनना।

उभ्काखो—(न०) उजाला। प्रकाश।

उभ्केड़णो—(क्रि०) १. चीरना। फाड़ना। २. उधेड़ना।

उभ्केळ—(ना०) १. लहर। तरंग। २. जोश। (वि०) अत्यधिक।

उभ्केळणो—(क्रि०) १. तरंगित करना। २. जोश में लाना। ३. हिलाना। डुलाना।

उटींगण—(ना०) एक वनस्पति।

उठणो—ऊठणो।

उठंग—(न०) तकिया। उपधान।

उठंतरी—दे० उठाँतरी।

उठाइगरो—(वि०) १. चोर। २. आँख बचाकर वस्तु चुराने वाला। उचक्का।

उठाऊ—(वि०) १. चोर। २. उचक्का। ३. खर्चीला। ४. उभरा हुआ।

उठाऊगीर—(वि०) नजर चुका कर दूसरे की वस्तु को उठालेने या चुराने वाला।

उठाड़णो—(क्रि०) दे० उठावणो ।
उठाणो—(न०) दे० उठामणो । (क्रि०) १. उठाना । खड़ा करना । २. सोते हुए को जगाना । ३. धारण करना । लेना । ४. ऊपर करना । ५. ऊंचा लेना । ६. दूर करना ।
उठामणी—दे० उठांतरी । दे० उठामणो ।
उठामणो—(न०) १. मरे हुए का शोक मनाने को तापड़ डालकर (विछायत करके) बैठे रहने की क्रिया को समाप्त करने की विधि । २. मृतक के शोकार्थ बैठक की समाप्ति । तापड़ की समाप्ति । ३. शोकार्थ-बैठक की समाप्ति के समय स्नेही-संबंधियों का मृत व्यक्ति के यहां जाने की क्रिया ।
उठाव—(न०) १. किसी वस्तु का उठा हुआ भाग । २. उठाने या उभराने का काम । ३. दिखावा । ४. प्रारंभ । शुरू-आत । ५. माल की बिक्री । खपत । ६. खर्च । व्यय । ७. गुंजायश । समाई ।
उठावणी—दे० उठामणी ।
उठावणो—दे० उठामणो । (क्रि०) १. उठाना । खड़ाकरना । २. उठवाना । खड़ा करवाना । ३. सोते हुए को जगाना । ४. ऊंचा करना । ५. लेना । धारण करना ।
उठावो—दे० उठाव ।
उठाँतरी—(ना०) १. चले जाने का भाव । गमन । २. बरखास्तगी । मौकूफी । ३. बदली । स्थानान्तर । ४. चोरी । ५. चापलूसी । ६. उठाईगिरी ।
उठी—(क्रि०वि०) उधर । वहां । उस ओर ।
उठै—(क्रि०वि०) वहां । उधर ।
उड़का-दुड़कियो—(वि०) १. कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में रहने वाला । पक्ष पलट्ट । २. दोनों पक्षों में रहनेवाला । ३. अविश्वसनीय ।
उडगण—(न०) तारा समूह ।
उडगाण—दे० उडगण ।
उडणखटोलो—(न०) उड़नेवाला खटोला । विमान ।
उडणो—(क्रि०) १. पक्षी, टिड्डी, कीट आदि का आकाश में विचरण करना । २. विमान का आकाश में दौड़ना । ३. पंतग, गुड़ी, गुवारा आदि का आकाश में ऊपर उठना । ४. ध्वजा, झंडे आदि का फहराना । ५. तेज भागना । ६. रंग का फीका पड़ना । ७. गायब होना । ८. इधर-उधर हो जाना । ९. छलांग मारकर पार हो जाना । १०. सुरंग के जोर से पत्थरों का ऊंचा जाकर दूर गिरना । ११. तेजी से शस्त्र का चलना । १२. वायु के प्रवाह से वृक्षों के पत्तों का हिलना । (वि०) उड़नेवाला ।
उडणो-प्रणो—(न०) एक ही दिन में टोडा और जालोर को विजय कर लेने के उपलक्ष में प्राप्त किया गया चित्तौड़ के राणा रायमल कुंभावत के पुत्र पृथ्वीराज की अद्भुत वीरता का विरुद । दे० असंख-प्रवाड़ै-जैतवादी ।
उडतो तीर—(न०) जान-बूझ कर सिर पर ली हुई आफत ।
उड़द—(न०) एक द्विदल अन्न । उरद । माष ।
उड़दा बेगम—(ना०) १. नर वेश में रहने वाली मुसलमान बादशाह की दासी । उर्दू बेगम । २. उद्दंड स्त्री ।
उड़दा बेंगण—दे० उड़दा बेगम । (वि०) मूर्ख ।
उड़दावो—(न०) घोड़ों का एक खाद्य । घोड़ों की लापसी ।
उड़दी—(ना०) वरदी । सरकारी वेशभूषा ।
उड़दू—(ना०) १. फारसी लिपि में लिखी जाने वाली एक यावनी भाषा । उर्दू ।

२. बादशाही जमाने का छावनी बाजार। ३. भीड़-भाड़।

उडपती—(न०) उडुपति। चन्द्रमा।

उड़वै—(न०) चन्द्रमा।

उडंछू—(अव्य०) 'छू' बोलकर के किसी वस्तु का गायब कर देने का जादूगरी मंत्र। २. गायब। लुप्त। (न०) जादूगरी का खेल। जादूगरी। (वि०) गायब। लुप्त।

उडंगण—दे० उडगण।

उडंड—(न०) घोड़ा।

उडंडाण—(न०) अश्वसमूह। घोड़े।

उडंडाणी—(न०) अश्वसमूह। घोड़े। (ना०) घोड़ी।

उडाऊ—(वि०) व्यर्थ खर्च करने वाला। अपव्ययी।

उडाड़णो—(क्रि०)१. उड़ाना। २. भगाना। ३. गायब करना। ४. चुराना। ५. तेज दौड़ाना। ६. शस्त्र से किसी अंग को काट कर दूर करना। ७. नष्ट करना।

उडाण—(ना०) १. उड़ने का काम। उडान। २. शीघ्रगति। तेज चाल। ३. छलांग।

उडाणो—दे० उडाड़णो।

उडावणो—दे० उडाड़णो।

उडांगर—(न०) पक्षी।

उड़ियंद—(न०) चन्द्रमा।

उडियण—(न०) उडुगण। तारा समूह।

उडियाण—(न०) १. एक देश। २ साधुओं के शरीर में लपेटने का एक वस्त्र। गाती। ३. आकाश। ४. उड़ान। ५. तारासमूह। (वि०) १. डरावना। भयानक। २ ऊंचा।

उडियाणी—(ना०) शरीर को कस कर बांधने का एक वस्त्र। गाती। २. पक्षी। गगनचर। ३. उडियाण देश का निवासी।

उडिंगळ—(क्रि वि०) उच्च स्वर से। ऊंची ध्वनि से। खूब जोर की आवाज से (ना०) १. उच्च स्वर। तेज आवाज। २. चारण-भाट आदि कवियों की भाषा। ३. 'डिंगल' शब्द का पर्याय।

उडीक—(ना०) १. प्रतीक्षा। इंतजार। २. राजस्थानी खगोल और शकुन शास्त्र की सोलह दिशाओं में पूर्व और आग्नेय दिशाओं के बीच की दिशा।

उडीकणो—(क्रि०) प्रतीक्षा करना। राह देखना। इँतजार करना।

उढरणो—(न०) ओढना। ओढ़ने का वस्त्र। २. दुपट्टा।

उण—(सर्व०) १. उस। २. उसने।

उणगी—(क्रि०वि०) उस ओर। उधर।

उणचास—(वि०) पचास में एक कम। उंचास। उंचास की संख्या। '४९'।

उणचाळीस—(न०) तीस और नौ की संख्या। '३९'। (वि०) उंचालीस।

उणमणापणो—(न०) उदासी। व्याकुलता।

उणमणो—(वि०) १ उन्मना। अनमना। अन्यमनस्क। २. व्याकुल। ३. चिंतित। (स्त्री० उणमणी)

उणरी—(सर्व०) उसकी।

उणरै—(सर्व०) उसके।

उणरो—(सर्व०) उसका। (स्त्री० उणरी)

उणहिज—(सर्व०) उसी। उसही।

उणहीज—दे० उणहिज।

उणादि—(वि०) उ, उर, इर इत्यादि (प्रत्यय)। (व्या०)

उणाम—(न०) १. उपद्रव। २. अशान्ति। ३. खेती की वह नीची जमीन जिसमें वर्षा का पानी इकट्ठा होकर गेहूं, चना उत्पन्न होता हो। **उनाम। उनाव।**

उणाव—दे० उणाम सं० ३।

उणाँ—(सर्व०ब०व०) १. उन। २. उन्होंने।

उणाँरा—(सर्व० ब० व०) १. उनके। २. उनका।

उणाँरै—(सर्व०ब०व०) उनके।

उणांरो—(सर्व०व०व०) उनका।

उणि—(सर्व०) १. उस। २. उसने ३. उसी। उसही। ४. उसी ने।

उणियार—(वि०) समान। सदृश। अनुहार। (न०) १. समान मुखाकृति। २. सूरत। शक्ल।

उणियारो—(न०) १. मुखाकृति। सूरत। शक्ल। २. सादृश्य। ३. अनुकरण। ४. रूप।

उणिआर—दे० उणियार।

उणिहारो—दे० उणियारो।

उणी—(सर्व०) १. उसी। उसही। २. उसीने।

उणीज—दे० उणहिज।

उत—(न०) सुत। पुत्र। (क्रि०वि०) वहां। उधर। (उप०) एक उपसर्ग।

उतकंठ—(क्रि० वि०) उत्कंठापूर्वक। २. ऊपर को गरदन उठाये हुए। (वि०) उत्कंठित। २. आतुर।

उतकंठा—(ना०) १. प्रबल इच्छा। आतुरता। २. आशा।

उतणो—(वि०) उतना।

उतन—(न०) १. वतन। जन्मभूमि। २. देश। ३. निवास। ४. ठिकाना।

उतपत—(ना०) उत्पत्ति।

उतपन—(वि०) उत्पन्न। (क्रि०भू०का०) उत्पन्न हुआ। पैदा हुआ।

उतपात—(न०) १. ऊधम। २. शरारत। ३. उपद्रव। ४. विनाश कारक आपत्ति। उत्पात। ५. दुख।

उतपाती—(वि०) १. नटखट। शरारती। २. उपद्रवी। उत्पाती।

उतवंग—(न०) सिर। मस्तक। उत्तमांग।

उतमंग—दे० उतवंग।

उतमाई—(ना०) १. उत्तमता। २. पवित्रता। अच्छापन। ३. विशेषता। खूबी।

उतरणो—(क्रि०) १. मुकाम करना। ठहरना। मुसाफरी में विश्राम करना। २. ऊपर से नीचे आना। ३. सवारी आदि पर चढ़े हुए का सवारी करने से पूर्व की स्थिति में (नीचे) आना। ४. किसी पद या अधिकार का छिन जाना। ५. पहिने हुए वस्त्र, आभूषण आदि का अंग से विलग होना। ६. भोजन सामग्री का पक कर तैयार हो जाने पर चूल्हे-भट्टी आदि से नीचे लिया जाना। ७. हिसाब, लेख आदि की प्रतिलिपि होना। ८. वर्ष, मास आदि काल विभाग का समाप्त होना। ९. छायाचित्र (फोटो) खिंचना। १०. किसी वस्तु के भाव में मंदी आना। ११. कान्तिहीन होना। १२. साँप, बिच्छू आदि के दंश का विष कम होना। १३. अशौच-सूतक आदि के कारण घड़े आदि मिट्टी के बरतनों का अव्यवहार्य होना। १४. चोट लगने के कारण जोड़ की हड्डी का अपने स्थान से खिसक जाना। १५. नदी-नाले आदि से पार होना। १६. चाक, खराद, कल या साँचे आदि के द्वारा किसी वस्तु का तैयार होना। १७. बुखार या सिरदर्द का कम होना। १८. नशे का कम होना। १९. किसी वस्तु पर चढ़े हुए रंग या मुलम्मे का फीका पड़जाना या उड़जाना। २०. किसी वस्तु को धोने, छीलने या छिलके आदि दूर करने के बाद मूल वस्तु का (अनुमानित) तौल बठना। २१. आवेश या क्रोध आदि का कम होना। २२. किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति मन की वृत्ति का हट जाना या कम हो जाना। २३. नदी आदि जलाशय का पानी कम हो जाना।

(अर्थ संख्या १ से ३ के अतिरिक्त सभी व्याख्याएँ सम्बन्धित संज्ञाओं के साथ 'उतरणो' क्रिया के लगने से यौगिक रूप

में तत्तत् अर्थों को प्रगट करती है। जैसे (अर्थ क्रम से)—४. हाकमी उतरणी। जागीरी उतरणी। ५. अंगरखी उतरणी। ६. रोटी उतरणी। सीरो उतरणो। ७. हिसाब उतरणो। ८. पखवाड़ो उतरणो। ९. फोटू उतरणो। १०. भाव उतरणो। ११. मूंछो उतरणो। १२. जहर उतरणो। १३. मटकी उतरणी। १४. हाथ उतरणो। १५. नदी सू पार उतरणो। १६. खराद सूं चूड़ी उतरणी। १७. ताव उतरणो। १८. नशो उतरणो। १९ रंग उतरणो। २०. बिदामरा छिलका काढिया तो सेर री अधसेर उतरी। २१. रीस उतरणी। २२. मन उतरणो। २३. नदी रो पाणी उतरणो।

उतरतो—(वि०) १. जो तुलना में घटिया हो। २. निम्न श्रेणी का। हलके दर्जे का। ३. ऊपर से नीचे आता हुआ। उतरता हुआ।

उतराई—(ना०) १. ऊपर से नीचे आने की क्रिया। उतरान। २. ढलान। ढळाव। उतरान। ३. नाव द्वारा पार होने या पार करने का काम। ४. नाव द्वारा पार करने की मजदूरी। ५. पार उतरने का कर। ६. उठाई हुई वस्तु को सहारा देकर नीचे रखवाने का काम।

उतराखंड—(न०) १. हिमालय पर्वत-प्रदेश का एक नाम। २. बदरी-केदार, गंगोत्तरी-यमुनोत्तरी और कैलाश आदि हिमालय का तीर्थ प्रदेश। ३. भारत के उत्तर प्रदेश का उत्तरी भाग। हिमालय पर्वत के आस पास का प्रदेश।

उतराण—(न०)१ उत्तर दिशा। २ उतार। ढलाई। ढलाव। उतराई। ३. सूर्य का उत्तरायण प्रवेश पर्व। मकर संक्रान्ति।

उतराणो—(क्रि०) १. उठाई हुई वस्तु को सहारा देकर नीचे रखवाना। उतराना। उतरवाना। २. ऊपर से नीचे लाने में मदद करना।

उतराद—(न०) उत्तर दिशा।

उतरादू—(वि०) १. उत्तर दिशा की ओर का। (अव्य) उत्तर दिशा में।

उतरादो – दे० उतरादू।

उतराध—दे० उतराद।

उतराधी—दे० उतरादू।

उतराधू—दे० उतरादू।

उतरावणो—दे० उतराणो।

उतरासण—(न०) मकान के द्वार पर लगने वाले छज्जे के नीचे का पत्थर।

उतंग—(न०) १. घोड़ा। २. सूर्य। (वि०) ऊँचा। उत्तुंग।

उतंत—(वि०) उत्पन्न।

उतरियोड़ो—(वि०) १. उतरा हुआ। २. व्याकुल। चिंतित। ३. बेकार।

उतरो—(वि०) उतना।

उताप – (न०) १. पीड़ा। दुख। २. रोग।

उतार—(न०) १. कद, विस्तार या मात्रा आदि में कमी होते रहने का भाव। क्रमशः घटने की प्रवृत्ति। घटने की क्रिया। २. उतरने की क्रिया। ३. ढाळ। ढलाव। ४. घटाव। कमी। ५. पतन।

उतार-चढाव—(न०) १. उतरना-चढ़ना। २. उतराई-चढ़ाई। ढलाव और चढ़ाव। नीचाई-ऊँचाई। ३. अवनति और उन्नति। पतनोन्नति।

उतारण-गव्व—(न०) १. गर्व उतारने वाला। गर्वभंजन। २. परमात्मा।

उतारणो—(क्रि०) १. ऊँचे से नीचे लाना। २. उठाई हुई वस्तु को नीचे रखना। ३. पहने हुए वस्त्र को शरीर से अलग करना। ४. निछावर करना। ५. निगलना। ६. पार ले जाना। ७. पद से हटाना। ८. आश्रय देना। ठहराना। ९. तैयार करना। १०. नकल करना। ११. उग्र प्रभाव दूर करना।

उतारू—*(वि०)* १. उपयोग में लाया हुआ। व्यवहृत। उतरन। २. सन्नद्ध। तत्पर। उद्यत। ३. नदी में से पार करने वाला। ४. प्रवासी।

उतारो—*(न०)* १. विश्राम। पड़ाव। २. ठहरने का स्थान। ३. बरात के ठहरने का स्थान। जनिवासा। ४. निवास स्थान। ५. किसी काम या उसकी व्यवस्था के संबंध की सूची। अवतरण। ६. प्रेत बाधा मिटाने की एक क्रिया।

उताळ—दे० उतावळ।

उताळो—दे० उतावळो।

उतावळ—*(ना०)* १. बेकरारी। सरगरमी। व्यग्रता। २. शीघ्रता। जल्दी। ३. चंचलता। अस्थिरता। *(क्रि०वि०)* शीघ्र। जल्दी। ताकीद।

उतावळो—*(वि०)* १. जल्दी करने वाला। उतावला। फुर्तीला। जल्दबाज। २. जोशीला। ३. बेकरार। व्यग्र। ४. चंचल। अस्थिर। *(क्रि०वि०)* झट। शीघ्र।

उतिम—*(वि०)* उत्तम। उत्कृष्ट। श्रेष्ठ।

उतो—*(वि०)* उतना।

उत्कृष्ट—*(वि०)* श्रेष्ठ। उत्तम।

उत्तम—*(वि०)* उत्कृष्ट। श्रेष्ठ।

उत्तमता—*(ना०)* श्रेष्ठता।

उत्तमताई—दे० उतमाई।

उत्तम पुरुष—*(न०)* व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलने वाले पुरुष का बोध कराता है। जैसे—मैं, म्हूं, हूं, म्हे, म्हां।

उत्तमांग—*(न०)* १. सिर। २. मुख।

उत्तर—*(न०)* १. जवाब। प्रतिवचन। २. उत्तर दिशा। ३. बरात को दहेज के रूप में दी जाने वाली विदाई। ओतर। ४. इनकार। मना। ५. बहाना। मिस। ६. शेष। बाकी। पीछे। *(क्रि०वि०)* पीछे। बाद। अनन्तर।

उत्तरकांड—*(न०)* १. रामायण का शेष काण्ड। २. किसी पुस्तक का शेष भाग।

उत्तरकाळ—*(न०)* वृद्धावस्था।

उत्तरक्रिया—*(ना०)* मरण की अंतिम क्रिया।

उत्तरदायी—*(वि०)* जवाबदार।

उत्तर दिशा—*(ना०)* दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। उतराद्‌।

उत्तरपद—*(न०)* समास का अंतिम पद।

उत्तर मीमांसा—*(ना०)* मीमांसा दर्शन का अंतिम भाग। वेदान्त।

उत्तराखंड—दे० उतराखंड।

उत्तराधिकार—*(न०)* १. संपत्ति का क्रमिक स्वत्व। विरासत। २. किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी संपत्ति को पाने का अधिकार।

उत्तराधिकारी—*(न०)* वारिस।

उत्तरायण—*(न०)* सूर्य का उत्तर दिशा में गमन।

उत्तो—दे० उतो।

उत्थान—*(न०)* १. उन्नति। समृद्धि। २. उदय। ३. उठाव।

उत्पत्ति—*(ना०)* १. उद्‌भव। २. जन्म। ३. उपज। पैदास।

उत्पन्न—*(वि०)* १. जन्मा हुआ। २. पैदा। ३. उद्‌भूत।

उत्पात—दे० उतपात।

उत्पाती—दे० उतपाती।

उत्सव—*(न०)* १. आनंद-मंगल का समय। २. धूमधाम। समारोह। ३. पर्व। त्यौहार।

उत्साह—*(न०)* १. उमंग। २. आनंद। ३. साहस।

उथ—*(क्रि०वि०)* वहां।

उथड़णो—*(क्रि०)* १. गिरना। पड़ना। २. भिड़ना। लड़ना।

उथप—*(न०)* १. उल्लंघन। २. अवज्ञा।

उथपणो—(क्रि०) १. उकताना । ऊबना । २. उखाड़ना । उथापना । ३. आज्ञा का उल्लंघन करना । २. राज्यच्युत करना । ५. हराना । ६. उल्लंघना ।

उथळणो—(क्रि०) १. उलटना । २. उलट-पुलट करना ।

उथळ-पुथळ—(ना०) १. हलचल । क्रान्ति । २. उलटा-सीधा । क्रमभंग । ३. परिवर्तन । ४. अव्यवस्था । (वि०) अव्यवस्थित । उलटा-सीधा ।

उथळावणो—(क्रि०) १. उलटाना । उथलाना । २. पदच्युत करना । ३. उलटवाना ।

उथलो—(न०) १. उत्तर । जवाब । २. किसी बात, आवेश, रोग आदि की पुनरावृत्ति । (वि०) १. थोड़ा गहरा । छिछला ।

उथळो—दे० उथलो ।

उथाप—(न०) उत्थापन । उन्मूलन ।

उथापण—(वि०) उत्थापन करने वाला । उन्मूलन करने वाला ।

उथापणो—(क्रि०) १. उखाड़ना । उन्मूलन करना । २. राज्यच्युत करना । ३. आज्ञा का उल्लंघन करना । ४. पराजित करना । हराना ।

उथाप थाप—दे० उथाप सथाप ।

उथाप-सथाप—(न०) उत्थापन और और स्थापन । (वि०) उत्थापन और स्थापन करने वाला । पदच्युत और प्रतिष्ठित करने वाला ।

उथिए—(क्रि०वि०) उधर । वहाँ ।

उथिये—दे० उथिए ।

उथेलणो—(क्रि०) १. उलटना । उलटा । करना । २. उलट-पुलट करना । ३. पुस्तक का पन्ना उलटना ।

उथेलो—(न०) १. जवाब । उत्तर । प्रतिवचन । उथळो । २. टूटे हुए सिलसिले की पुनः की जाने वाली चर्चा । ३. निर्णय । ४. उथलने की क्रिया ।

उदक—(न०) १. पानी । २. दान । ३. विधिवत संकल्प करके दान में दी हुई भूमि, पशु आदि । ४. राज्य-कर से मुक्त इनाम या दान में दी हुई भूमि ।

उदकणो—(क्रि०) हाथ में जल लेकर संकल्प के साथ दान देना ।

उदक-भोम—(ना०) संकल्प करके दी हुई दान की भूमि ।

उदग—दे० उदक ।

उदगणो—दे० उदकणो ।

उदगिरणो—(क्रि०) १. निगली हुई वस्तु को बाहर निकालना । उगलना । २. उदगरना । बाहर निकलना । ३. प्रगट होना ।

उदग्ग—(वि०) १. ऊंचा । २. ऊंचा उठा हुआ । उदग्र । ३. प्रचण्ड ।

उदणो—(क्रि०) १. उदय होना । २. उत्पन्न होना । ३. प्रकट होना ।

उदध—(न०) उदधि । समुद्र ।

उदधि—दे० उदध ।

उदधि-मत—(वि०) गंभीर मति वाला गंभीर बुद्धिमान ।

उदभव—दे० उद्‌भव ।

उदभिज—(न०) पेड़, पौधे आदि जो पृथ्वी में से उगते हैं । उद्भिज ।

उदमाद—(ना०) १. उत्पात । २. उछल-कूद । तोफान । शरारत । ऊधम । ३. जोश । ४. मस्ती । ५. मौज । आनंद । ६. उत्साह । उमंग । ७. उन्माद । पागलपन । ८. उद्योग । धंधा । ७. परिश्रम ।

उधमादी—(वि०) १. नटखट । शरारती । २. उत्पाती । ३. उन्मादी । पागल । ४. उत्साही । ५. मस्त । ६. परिश्रमी ।

उदय—(न०) १. उदय । प्राकट्य । २. उद्‌गम । ३. निकास । ४. उन्नति । वृद्धि ।

उदयागरि—(न०) १. एक कल्पित पर्वत जिसके पीछे से सूर्योदय होना माना जाता है। २. मेरु।
उदयाचळ—दे० उदयगिरि।
उदयास्त—(न०) १. उदय और अस्त। २. उन्नति और अवनति। चढ़ती-पड़ती।
उदर—(न०) १. पेट। २. गर्भ।
उदरनिर्वाह—(न०) गुजारा। आजीविका। पेट भराई।
उदरपूर्ति—(ना०) गुजारा। पेट भराई।
उदंगळ—(न०) १. लड़ाई। युद्ध। २. उपद्रव। उत्पात। ३. टंटा-बखेड़ा। ४. शोर। हो-हल्ला।
उदंड—(वि०) १. उद्दण्ड। अक्खड़। उजड्ड। २. निडर।
उदंत—(वि०) १. दांत आने के पहिले की अवस्था वाला (ऊँट)। वह जिसके दांत न निकले हों। २. विना दांतों का। ३. उद्यत। तत्पर। ४. प्रस्तुत। ५. उठाया हुआ। ६. उठता हुआ। ७. प्रज्वलित। (न०) प्रकाश। उद्योत।
उदार—(वि०) १. दानशील। त्यागशील। २. विशाल हृदय वाला। ३. सरल हृदय वाला। ४. श्रेष्ठ। ५. शिष्ट।
उदाळणो—(क्रि०) १. नाश करना। दलन करना। २. उलटा कर देना। ३. औंधा-मार देना।
उदास—(वि०) १. खिन्न। २. दुखी। ३. नाराज। ४. विरक्त।
उदासी—(ना०) १. खिन्नता। ३. दुख। ३. नाराजी। विरक्ति। ५. एक संप्रदाय। उदासी सम्प्रदाय। (वि०) त्यागी। विरक्त। वैरागी।
उदाहरण—(न०) दृष्टान्त। मिसाल। दाखलो।
उदियाचळ—(न०)उदयाचल। उदयगिरि।
उदियापुर—(न०) उदयपुर नगर।
उदीच—(ना०) उत्तर दिशा। उदीची।
उदीपन—(न०) १. उद्दीपन। प्रकाशन। २. तापन। उत्तेजन। ३. काव्य में रसों का विभाव विशेष। ४. उत्तेजना उत्पन्न करने वाले पदार्थ। ५. उभाड़।
उदेई—(ना०) दीमक। वल्मीक।
उदेग—(न०) १. उद्वेग। बेचैनी। २. घबराहट। ३. चिन्ता। ४. आवेश। जोश।
उदै—दे० उदय।
उदैगिर—(न०) उदयगिरि।
उदो—(न०) १. उदय। २. भाग्योदय। ३. भाग्यकाल। ४. भाग्य। सौभाग्य। ५. भवितव्यता। प्रारब्ध। ६. काल। समय। ७. वृद्धि। बढ़ती। उन्नति।
उदो आरणो—(मुहा०) दुर्दिन आना। भाग्य समाप्त होना।
उदोत—(न०) १. उद्योत। प्रकाश। २.तेज।
उद्गम—(न०) १. आविर्भाव। निकास। २. उदय।
उद्घाटन—(न०) १. खोलना। उघाड़ना। २. स्पष्टता।
उद्दमी—(वि०) उद्यमी। उद्योगी।
उद्दिम—दे० उद्यम।
उद्देश—(न०) १. अभिप्राय। मतलब। २. हेतु। कारण। ३. अनुसंधान। अन्वेषण। ४. नाम निर्देशपूर्वक वस्तु निरूपण। ५. अभिलाषा। उद्देश।
उद्देश्य—(न०) १. लक्ष्य। उद्देश्य। २. ध्येय। २. इष्ट।
उद्देस—दे० उद्देश।
उद्देस्य—दे० उद्देश्य।
उद्धत—(वि०)१. अविनयी। २. उच्छृंखल।
उद्धरणो—(क्रि०) १. उद्धार करना। २. उद्धार होना। ३. धारण करना।
उद्धार—(न०) १. मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २. दोषमोचन। ३. सुधार।

उद्धोर—दे० उद्धार । उधोर ।
उद्‌भव—*(न०)* १. जन्म । उत्पत्ति ।
उद्यम—*(न०)* १. परिश्रम । २. उद्योग । धंधा । काम । ३. यत्न । प्रयास । ४. पुरुषार्थ ।
उद्यमी—*(वि०)* उद्यम करने वाला ।
उद्यान—*(न०)* बाग । बगीचा ।
उद्योग—*(न०)* १. धंधा । रोजगार । २. प्रयत्न । चेष्टा । कोशिश । ३. परिश्रम ।
उद्योत—*(न०)* प्रकाश । तेज ।
उद्योतवंत—*(वि०)* प्रकाशमान । जाज्वल्यमान ।
उद्रक—*(न०)* डर । भय ।
उद्रावणो—*(क्रि०)* भय दिखाना । डराना । *(वि०)* भयावना । डरावना ।
उद्रेक—*(न०)* वृद्धि । अधिकता ।
उधड़णो—*(क्रि०)* १. सिले हुए का टाँका टूट जाना । २. उखड़ना ।
उधमणो—दे० ऊधमणो ।
उधरणो—दे० उद्धरणो ।
उधरत—*(ना०)* १. वह लेन-देन जिसको (कच्ची रोकड़-वही में से) पक्की रोकड़-वही में नहीं लिखा जाता है । २. अल्प समय के लिये विना व्याजू की जाने वाली लेन-देन । ३. निश्चित अल्प कालिक अवधि के अंदर (जिसमें रकम का व्याज नहीं चढ़ता) लेन-देन का चुकता किया जाना । ४. विना लिखा लेन-देन (ऋण) । जबानी लेन-देन ।
उधळणो—दे० ऊधळणो ।
उधळियोड़ी—दे० ऊधळियोड़ी ।
उधार—*(ना०)* १. पैसे वाकी रखकर की गई माल की खरीदी । बाद में चुकाने की नियत से नाम पर लिखवाकर की गई खरीदी । २. बाद में चुका देने की नियत किया जाने वाला रुपये-पैसे (या किसी वस्तु) का लेन-देन । ३. गाहकों में लेना रुपया । तकाजा । उधाई । लेनदारी । *(सं०पु०)* ४. उद्धार । मुक्ति । छुटकारा ।
उधार करणो—*(मुहा०)* १. नाम पर लिखकर माल वेचना । रुपया बाकी रख कर माल वेचना । २. उद्धार करना ।
उधार खातो—*(न०)* अल्पकालिक उधार दी गई या ली गई रकमों (रुपया-पैसा आदि) का अस्थाई (प्रायः विना व्याज का) खाता । २. उधार ।
उधारण—*(न०)* समुद्र । *(वि०)* उद्धार करने वाला ।
उधारण-अळियळ—*(न०)* समुद्र ।
उधारणीक—*(वि०)* १. ऋणपत्र का एक पारिभाषिक शब्द । ऋण लेने वाला । उद्धारणिक । ३. रुपये उधार लेकर खत (दस्तावेज) लिखकर देने वाला । ऋणपत्र लिख कर देने वाला ।
उधारणीनाम—*(न०)* १. ऋण पत्र (दस्तावेज) का एक पारिभाषिक पद । २. ऋण लेने वाले का नाम । ३. ऋण पत्र (खत) लिखाने वाले का नाम । आसामी का नाम । ४. खत (दस्तावेव) में लिखे जाने वाले ऋणी का नाम ।
उधारणो—*(क्रि०)* १. उधार ले जाने वाले के नाम पर बही में लिखना । २. वही में लेखे (उधार) बाजू में रकम का लिखना । उधार की नोंध करना । ३. उधार बाजू में खर्च की रकम लिखना । ४. उद्धार करना । निस्तार करना ।
उधारनूंध—दे० उधार वही ।
उधार वही—दे० उधार वही ।
उधार-लहणो—*(न०)* ग्राहकों को उधार दिये हुए माल के बकाया रुपये । *(क्रि०)* १. नाम पर लिखवाकर माल खरीदना । २. नाम लिखवाकर रुपये लेना ।

उधार-वही—(ना०) १. उधार दिये हुए माल की रकम अथवा दी गई रोकड़ी रकम लिखने की वही । २. उधाई की नींव ।

उधारियो—(वि०) उधार लेने वाला । उधारिया ।

उधारी—(वि०) उधार दी हुई या ली हुई (वस्तु) ।

उधारी घड़—(ना०) १. नहीं लड़ी हुई सेना । २. आश्वस्त सेना । ३. वह शत्रु सेना जो विजेता ने अपने अधिकार में कर ली हो । ४. पराजित सेना ।

उधारी घड़-गहण—(वि०) १. शत्रु की सेना के ऊपर अधिकार करने वाला । २. दूसरे की सहायता के लिए युद्ध करने वाला । ३. परोपकार के लिए युद्ध का आह्वान करने वाला । (न०) मुँहता नैणसी का एक विरुद ।

उधारो—(वि०) उधार दिया हुआ ।

उधियार—(ना०) १. विलम्ब । देर । २. उधार । लेनदारी ।

उधेड़णो—(क्रि०) १. सिलाई को खोलना । २. खाल उतारना । ३. परतों को अलग अलग करना । ४. चीरना-फाड़ना ।

उधोर—(वि०) १. वीर । बलिष्ठ । २. लंबे कद वाला । डीघो । (न०) १. उद्धार । २. उठाना ।

उधोरणो—(क्रि०) १. उद्धार करना । २. उठाना ।

उनग—(वि०) नग्न । नंगा ।

उनगणो—दे० उनंगणो ।

उनथ—(वि०) १. जिसके नाक में नथ नहीं हो । जिसके नाक में नकेल नहीं डाली गई हो । ३. बंधन रहित । ४. स्वतन्त्र ।

उनथ नथ—(वि०) १. नकेल रहित के नकेल डालने वाला । २. बंधन रहित को बंधन में डालने वाला । ३. वश में नहीं होने वाले को वश में करने वाला ।

उनमणो—दे० उनमनो ।

उनमत—(वि०) १. उन्मत्त । पागल । २. मदान्ध ।

उनमत्त—दे० उनमत ।

उनमद—(न०) उन्माद । मस्ती । (वि०) मस्त । मतवाला ।

उनमनो—(वि०) १. व्याकुल । २. दुखी । ३. अन्यमनस्क । अनमना । खिन्न । उदास ।

उनमाद—(न०) १. उन्माद । पागलपन । २. नशा ।

उनमादक—(वि०) उन्मत्त बनाने वाला । उन्मादोत्पादक । (न०) कामदेव का एक बाण ।

उनमान—(न०) १. अनुमान । अंदाज । (वि०) १. थोड़ा । कम । २. परिमाणानुसार । ३. समान । बराबर ।

उनमानणो—(क्रि०) अनुमान करना । अटकलना ।

उनंगणो—(क्रि०) १. प्रहार करने को शस्त्र उठाना । २. प्रहार करना । ३. तलवार को म्यान से बाहर निकालना । ४. नंगा करना । ५. नंगा होना ।

उनाम—(न०) थल प्रदेश का वह भूमि भाग जिसके खेतों में वर्षा का पानी इकट्ठा हो जाता है । २. वह खेत जिसमें (बिना सिंचाई के) वर्षा की नमी से गेहूं और चना उत्पन्न होता हैं । सेंवज खेत । ३. नीची भूमि । ४. जलाशय ।

उनाळू—(वि०) ग्रीष्म ऋतु संबंधी । ग्रीष्म ऋतु का ।

उनाळू वायरो—(न०) नैऋत्य कोण की वायु ।

उनाळू साख—(ना०) वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फसल । वासंतिक । कृषि । ग्रीष्म शाख । रबी की फसल ।

उनाळो—(न०) ग्रीष्म ऋतु । गरमी का मौसम ।

उनाव—दे० उनाम ।
उनींदो—(वि०) जो नींद में हो । निद्रित । निद्रायमान । (क्रि०वि०)निद्रा त्याग कर ।
उनै—(क्रि०वि०) वहाँ । उधर । (सर्व०) उसको ।
उन्नत—(वि०)१. ऊँचा । श्रेष्ठ । ३. आगे बढ़ा हुआ ।
उन्नति—(ना०) १. ऊँचाई । २. सुधार । ३. महत्ता । ४. तरक्की । बढ़ती ।
उन्मत्त—(वि०) १. पागल । २. बेसुध । ३. मतवाला । ४. अहंकारी ।
उन्माद—(न०)१.पागलपन । २. एकरोग ।
उप—(उप०) एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व लगकर उनमे समीपता, सादृश्य, सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, गौणता तथा न्यूनता के अर्थो को प्रकाशित करता है ।
उपकथा—(ना०) मुख्य कथा के अंदर की छोटी कथा ।
उपकरण—(न०) १. साधन । २. सामग्री । ३. औजार । ४. राजा के छत्र चामर आदि ।
उपकार—(न०) १. नेकी । भलाई । २. अहसान । कृतज्ञता । ३. लाभ ।
उपकारी—(वि०) उपकार करने वाला ।
उपक्रम—(न०) १. आयोजन । तैयारी । २. अनुष्ठान । ३. भूमिका ।
उपक्रमणो—(क्रि०) १. आयोजन करना । २. भूमिका बांधना । ३. तैयारी करना । ४. भूमिकानुसार कार्य को शुरू करना । ५. शुरू करना । ६. पहुँचना । ७. आगे बढ़ना ।
उपख़ान—(न०) उपाख्यान । कथा ।
उपखीण—(वि०) फटा-मैला (वस्त्र) ।
उपगरणो—(क्रि०) १. प्राप्त करना । २. प्राप्त होना । ३. अधिकार में होना । ४. लेना । ग्रहण करना ।
उपगार—उपकार ।
उपगारण—(वि०) उपकार करने वाली ।
उपगारी—दे० उपकारी ।
उपचार—(न०) १. चिकित्सा । इलाज । २. व्यवहार । प्रयोग । ३. पूजा । ४. पूजाविधि । ५. संस्कार । ६.साधन । ७. मिथ्या कथन । ८. खुशामद । ९. सेवासुश्रूषा ।
उपज—(ना०) १. खेत में उपजा अन्न आदि । पैदावार । २. उत्पत्ति । ३. समझ । बुद्धि । ४. बुद्धिस्फुरण । सूझ । उक्ति ।
उपजण—(न०) १. जन्म । २. उत्पत्ति ।
उपजणो—(क्रि०) १. उपजना । सूझना । ध्यान में आना । २. उगना । ३. उत्पन्न होना । पैदा होना । ४. जन्म लेना ।
उपजाऊ—(वि०) १. जिसमें अधिक और अच्छी उपज हो । उर्वर । २. फलद्रुप ।
उपजाणो—(क्रि०) १. उत्पन्न करना । पैदा करना । बनाना । २. उगाना ।
उपजावणो—दे० उपजाणो ।
उपट—(न०) १. उठाव । उभार । २. लहर । तरंग । ३. उदारता । ४. दान . ५. उखाड़-पछाड़ ।
उपटणो—(क्रि०) १. उमड़ना । २. उभरना । ३. उछलना । ४. उखड़ना ।
उपडंखणो—(क्रि०) १. आक्रमण करना । २. प्रस्थान करना । ३. क्रोध करना । ४. शल्य रूप होना ।
उपड़णो—(क्रि०) १. किसी वस्तु का ऊपर उठना । २. उठना । उठाया जाना । ३. उमड़ना । ४. उभरना । ५. घटा का उठना । ६. चलना । ७. दौड़ना । ८. खर्च होना ।
उपड़ाणो—(क्रि०)१. उठवाना । २. बोझे को कंधे या सिर पर रखवाना ! भार उठवाना ।
उपड़ावणो—दे० उपड़ाणो ।
उपडांखणों—दे० उपडंखणो ।

उपडाँखियो दे० उवडाँखियो ।

उपत—(ना०) १. उपज । २. उत्पत्ति । ३. आमदनी । कमाई ।

उपदरो - दे० उपद्रव ।

उपदेश—(न०) १. शिक्षा । २. नसीहत ।

उपदेस—दे० उपदेश ।

उपदेसणो—(क्रि०) उपदेश करना ।

उपद्रव—(न०) १. उत्पात । २. विप्लव । ३. गृह-कलह । ४. भूतादि का आवेश । ५. संकट । ६. लड़ाई । ७. रोग । बीमारी । ८. महामारी । ९. बीमारी में अन्य बीमारी ।

उपद्रवी—(वि०) उपद्रव करने वाला । उत्पाती ।

उपधातु—(ना०) मिश्र धातु जैसे—काँसा, पीतल आदि ।

उपनगर—(न०) नगर का वाहरी भाग । सर्वव ।

उपनणो—(क्रि०) उत्पन्न होना ।

उपनाम—(न०) दूसरा नाम ।

उपनायक—(न०) नाटक वार्तादि में मुख्य नायक का सहकारी नायक ।

उपनायिका—(ना०) मुख्य स्त्री पात्र के वाद का दूसरा स्त्री पात्र ।

उपनियम—(न०) पेटानियम ।

उपनिषद—(न०) वेद की शाखाओं के ब्राह्मण ग्रंथों के वे अंतिम भाग जिनमें ब्रह्मविद्या का निरूपण किया हुआ होता है ।

उपन्नो—(वि०) उत्पन्न । (भू०क्रि०) उत्पन्न हुआ । (स्त्री० उपन्नी) ।

उपभापा—(ना०) मुख्य भाषा का गौण भेद । वोली ।

उपभोग—(न०) किसी वस्तु के व्यवहार का सुख । २. किसी वस्तु को उपयोग में लेना ।

उपमंत्री—(न०) सहायक मंत्री ।

उपमा—(ना०) १. साहश्य । समानता । २. मिलान । तुलना । ३. एक अर्थालंकार ।

उपमाण—(न०) १. जिस से उपमा दी जाय वह पदार्थ । २. साहश्य तुल्यता । ३. दृष्टान्त । ४. प्रमाण विशेष ।

उपमाता—(ना०) १. धाय । २. अपर माता ।

उपमान—दे० उपमाण ।

उपमेय—(वि०) जिसकी उपमा दी जाय । वर्ण्य ।

उपयुक्त—(वि०) योग्य । उचित ।

उपयोग—(न०) १. व्यवहार । प्रयोग । इस्तेमाल । १. लाभ । ३. आवश्यकता । ४. प्रयोजन ।

उपरणी—(ना०) १. खिड़कियां या चूंचदार पाघ के ऊपर बाँधी जाने वाली विभिन्न रंग की एक छोटी पगड़ी । स्थाई रूप से बँधी हुई पगड़ी के ऊपर छोटी पगड़ी । २. ओढ़ने का छोटा वस्त्र । दुपट्टी ।

उपरणो—(न०) १. ऊपर से ओढ़ने का वस्त्र । चादर । पिछोड़ी ।

उपरम—(न०) १. अंतर्द्धान । लुप्त । विलीन । २. उपराम । विरति । ३. विश्राम । आराम । ४. मृत्यु । ५. संन्यास ।

उपरमणो—(क्रि०) १. अंतर्द्धान होना । विलीन होना । २. खिसक जाना । ३. उपराम होना । निवृत्त होना । विरक्त होना । ४. आराम करना । विश्राम करना । ५. मरना ।

उपरल्याँ—(ना०ब०व०) १. वायु में विचरण करने वाली वात-प्रकोप की कल्पित लोक देवियां । **मैलड़ियाँ, मावड़ियाँ,** वायाँसा आदि । २. एक वात रोग । वात पीड़ा । ३. बच्चों का एक वात रोग । वाल लकवा ।

उपरवाड़ो—दे० ऊपरवाड़ो ।

उपरंच—दे० अपरंच ।

उपरंत—(क्रि० वि०) १. अतिरिक्त । सिवाय । २. अनन्तर । बाद में । पीछे । ३. बढ़कर । (वि०) १. अतिरिक्त । २. अधिक । दे० उपरांत ।

उपराणो—(क्रि०) १. दुखी होना । २. घबराना । ३. ऊपर आना ।

उपराम—दे० उपरम ।

उपरामणो—दे० उपरमणो ।

उपराळी—दे० उपराळो ।

उपराळो—(न०) १. सहायता । २. सिफारिश । ३. पक्ष । तरफदारी । (वि०) १. बचा हुआ । शेष । २. अधिक ।

उपराँठ—(ना०) १. शरीर का पृष्ठभाग । पेट के पीछे का भाग । पीठ । २. अप्रसन्नता । ३. टेढ़ाई । वक्रता । (वि०) १. अप्रसन्न । २. टेढ़ा । विमुख । (क्रि०वि०) पीठ की ओर । पीछे की ओर ।

उपराँठी वाहाँ—(न०ब०व०) उल्टी मुश्कें । पीठ की ओर मोड़ कर बाँधे हुए हाथ ।

उपराँठो—(वि०) १. विरुद्ध । २. विमुख । असम्मुख । ३. अप्रसन्न । ४. टेढ़ा । वक्र । ५. पीठ फिराया हुआ । पीठ दिया हुआ ।

उपरांत—(वि०) १. विशेष । अधिक । २. आवश्यकता से अधिक । अतिरिक्त । ३. इससे अधिक । (क्रि०वि०) १. आगे जाकर । बढ़कर । २. अनन्तर । पीछे । बाद में । ३. इस पर भी । ४. नहीं हो तो । ५. इससे आगे ।

उपरांयत—(ना०) १. ओढ़ने की राली । २. ओढ़ने के वस्त्र के ऊपर ओढ़ा जाने वाला दूसरा वस्त्र । ३. दोहरा ओढ़ना । दे० उपरांत ।

उपरोक्त—(वि०) ऊपर कहा हुआ ।

उपरोथळी—(क्रि० वि०) ऊपरा-ऊपरी । ऊपर-ऊपर ।

उपल—(न०) १. पत्थर । २. रत्न । ३. ओला । ४. बादल ।

उपवन—(न०) बगीचा ।

उपवस्त्र—(न०) दुपट्टी । चादर ।

उपवास—(न०) १. अनाहार व्रत । भूखे रहकर भजन करने का (एक दिन-रात का) व्रत । २. लंघन ।

उपवीत—(न०) यज्ञोपवीत । जनेऊ ।

उपवेद—(न०) वेदों में से निकली हुई विद्याएँ । आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद और स्थापत्य शास्त्र इत्यादि ।

उपसणो—(क्रि०) १. (व्रण का) उठना । २ फूलना । फूलकर मोटा होना । ३. उभरना ।

उपसंहार—(न०) १. पुस्तक का अन्तिम प्रकरण जिसमें पुस्तक का संक्षेप में निर्देशन किया हुआ होता है । २. सारांश ।

उपस्थ (न०) १. लिंग । २. भग ।

उपस्थकच—(न०) गुह्येन्द्रिय के बाल ।

उपस्थित—(वि०) विद्यमान । हाजिर ।

उपहार—(न०) भेंट ।

उपहास—(न०) हँसी । मश्करी ।

उपाख्यान—(न०) १. छोटा आख्यान । १. अतर्कथा । ३. वृत्तान्त ।

उपाड़—(न०)१. फोड़ा । व्रण । २. उठाव । ३. खर्च । खपत । ४. बोझा । भार । दे० उपाड़ो ।

उपाड़णो—(क्रि०) १. ऊँचा करना । उठाना । २. उखाड़ना । ३. खर्चा करना । ४. कर्जा करना । लेना । थामना । ६. बोझा उठाना । ७. (बच्चे को गोदी में) उठाना । कमर में उठाना ।

उपाड़ू—(वि०) अधिक खर्चा करने वाला । खर्चीला ।

उपाड़ो—(न०) १. खर्चा। २. अपने खाते में भागीदार के द्वारा समय-समय पर उठाई गई रकम। ३. व्यवसाय में से घर खर्च के लिए उठाई गई रकम। ४. असामी (कृषक) के द्वारा बोहरे के यहां से समय समय पर कर्ज ली हुई कुल रकम। ५. वर्ष भर घर का खर्चा। ६. उठाया जा सके उतना बोझा। ७. किसी वस्तु का उतना भार जो एक बार में लिया या उठाया जा सके। ८. विवाह, औसर-मौसर, मकान बनाने इत्यादि पर किया गया नैमित्तिक खर्च। ९. आरंभ। १०. लकड़ी, काँटे, घास आदि का काटकर बनाया हुआ ढेर।

उपाध—(ना०) १. उपाधि। संकट। आफत। विघ्न। २. उपद्रव। ३. शरारत। ४. बदमाशी। ५. तकलीफ। कष्ट।

उपाधि—(ना०) १. पदवी। खिताब। २. उपद्रव। ३. संकट। ४. कष्ट। तकलीफ।

उपाधी—दे० उपाधि।

उपाधियो—(न०)१.उपाध्याय। २.अध्यापक। ३. एक अल्ल। एक उपगोत्र।

उपाध्याय—दे० उपाधियो।

उपाय—(न०) १. युक्ति। तरकीब। २. पास पहुँचना। ३. इलाज। ४. साधन। ५. प्रयोग।

उपायण—(वि०) उत्पन्न करने वाला। रचना करने वाला।

उपायस—(न०) १. उपाय। प्रयत्न। २. उत्पत्ति। ३. आमदनी। पैदाइश। (भ० क्रि०) उत्पन्न करेगा। (भू० क्रि०) उत्पन्न किया।

उपालंभ—(न०) १. शिकायत। २. उलाहना। ठपको। ओळभो।

उपाळो—(क्रि० वि०) १. पैदल। बिना सवारी। २. नंगे पैर। पाळो।

उपाव—(न०) १. उपाय। प्रयत्न। २. युक्ति। तरकीब। ३. लड़ाई। झगड़ा। दे० उपाय।

उपावण—दे० उपायण।

उपावणो—(क्रि०) १. उत्पन्न करना। पैदा करना। २. निर्माण करना।

उपाश्रय—दे० उपासरो।

उपास—दे० उपवास।

उपासक—(न०) १. भक्त। २. साधक। ३. अनुयायी।

उपासना—(ना०) आराधना।

उपासरो—(न०) जैन साधुओं के रहने का स्थान। उपाश्रय। २. पाठशाला।

उपासी—(वि०) उपासना करने वाला। उपासक।

उपेक्षा—(ना०)१. घृणा। घिन। नफरत। २. तिरस्कार। अनादर। ३. उदासीनता। खिन्नता। ४. त्याग।

उपेजो—दे० उपज।

उपेत—(व०क्रि०) ओपता है। शोभा पाता है। (वि०) १. विशिष्ट। २. प्राप्त। (अव्य०) समेत। सहित।

उपोडणो—(क्रि०) १. जागना। २. सोते हुए का उठ बैठना। अपोढ़णो।

उप्रवट—(ना०) १. सहायता। २. सिफारिश। (अव्य०) उपरान्त। (वि०) १. अधिक। २. गर्वीला। गर्वित। ३. क्रोधी। (क्रि०वि०) आगे होकर। बढ़कर।

उफण—(न०) १. उफान। उबाल। २. जोश।

उफणणो—(क्रि०) १. उफनना। उबलना। २. हवा में उड़ाकर भूसा और अन्न को अलग करना। ओसाना। २. अत्यन्त क्रोध करना।

उफतणो—(क्रि०) उकताना। ऊबना। हैरान होना। २. उफनना। क्रोध करना।

उफताणो—दे० उफतणो।

उरदुत—(ना०)१. उरोजद्युति । उरोद्युति । स्तनों की शोभा । २. उरोजद्वय । युगल-स्तन । ३. स्तन ।

उरध—(न०) आकाश । (वि०) ऊर्ध्व । ऊंचा ।

उरधगत—(ना०) १. ऊर्ध्वगति । ऊंची गति । २. स्वर्ग । ३. स्वाभिमान । (वि०) १. स्वाभिमानी । २. बलाभिमानी । स्वबली । ३. ऊंची गतिवाला ।

उरधपुंड—(न०) १. वैष्णवी तिलक । ऊर्ध्वपुण्ड्र । श्रीमुद्रा । २. विशिष्ट सम्प्रदायों के भिन्न-भिन्न प्रकार के खड़े तिलक । ३. खड़ा तिलक ।

उरधरेख—(ना०) हथेली तथा तलुवे की सौभाग्य सूचक एक खड़ी रेखा । ऊर्ध्व-रेखा (सामु०) ।

उरधलोक—(न०) ऊर्ध्वलोक । स्वर्ग ।

उरप—(न०) नृत्य का एक प्रकार ।

उरबाणो—दे० उबाणो ।

उरमी—दे० ऊर्मी ।

उरमंडण—(न०) १. स्तन । २. पुष्पमाला । ३. रत्नजड़ित सुवर्ण हार ।

उरळाई—(ना०) १. विस्तार । विस्तृति । फैलाव । २. अवकाश । ३. खुली जगह । ४. चौड़ाई ।

उरळो—दे० उरड़ो ।

उरवड़—दे० उरड़ ।

उरस—(न०) १. स्वर्ग । २. आकाश । ३. वक्षःस्थल । ४. हृदय । ५. औलिया फकीर की मरण तिथि । उर्स । (वि०) नीरस ।

उराट—(न०) १. छाती । २. हृदय ।

उरासणो—(क्रि०) १. कुएँ में चरस को पानी भरने के लिये ऊंचा नीचा करना । २. चरस को कुएँ में उतारना ।

उराँ-ढालाँ—(वि०) १. ढाल के समान दृढ़ और उठे हुये वक्ष वाला । जिसका वक्ष-स्थल ढाल के समान दृढ़ है । २. चौड़ी छाती वाला । ३. साहसी । हिम्मतवाला ।

उरिण—(वि०) उऋण । ऋणमुक्त ।

उरिया—(क्रि०वि०) इस ओर । इधर ।

उरेखणो—(क्रि०) १. चित्रित करना । चित्र बनाना । २. ढाँचा बनाना । रेखा-चित्र बनाना । रेखांकित करना । ३. अनु-मान करना । ३. देखना । ५. जानना ।

उरेब—(न०) १. बुनावट से टेढ़ा काट कर की जाने वाली एक प्रकार की सिलाई । २. बुनावट से टेढ़ा । (वि०) टेढ़ा । तिरछा ।

उरेव—(न०) १. हृदय । (वि०) हृदयस्थ । हृदय में स्थित ।

उरेहणो—दे० उरेखणो ।

उरै—(क्रि०वि०) इस ओर । इधर ।

उरो—(अव्य०) किसी क्रिया शब्द के साथ प्रयुक्त होने वाला निकटस्थ निश्चय सूचक एक अव्यय । इसका प्रयोग—'यहाँ, इधर और 'इस ओर' इस भावार्थ में होता है । यह 'उरै' शब्द का एक रूप है । इसका स्त्रीलिंग 'उरी' और बहुवचन 'उरा' है । दूरस्थ-निश्चय सूचक 'परो' इसका विप-रीत शब्द है ।

उरोज—(न०) स्तन । कुच ।

उमणो—दे० उणमणो ।

उमणो-दुमणो—(वि०) उन्मना-दुर्मना । उद्विग्नचित्त । उदास ।

उमदा—(वि०) अच्छा । बढ़िया ।

उमराव—(न०) १. श्रीमंत । २. अमीर । ३. धनी । रईस । ४. सरदार । जमींदार। ५. राजा । ६. बादशाह के दरबार का हिन्दू राजा ।

उमराव बनी—(ना०) वैवाहिक लोकगीतों की एक नायिका । २. दुलहिन ।

उमराव-बनो—(न०) १. वैवाहिक लोक गीतों का एक नायक । २. दुलहा ।

उमळको—(न०) १. स्नेह प्रेरित उत्साह का उफान । २. भावावेश ।

उमंग—(ना०) १. उत्साह । उल्लास । २. अभिलाषा ।

उमंगणो—(क्रि०) १. उमंग में आना । प्रसन्न होना । २. उत्साहित होना । ३. उमड़ना । उमंग से बढ़ना ।

उमंडणो—दे० उमड़णो ।

उमा—(ना०) १. पार्वती । २. दुर्गा ।

उमाद—(न०) उन्माद । पागलपन ।

उमादे—(ना०) १. जोधपुर के राव मालदेव (१५८८-१६१९ वि०) की रानी उमादेवी भटियानी । (यह स्वाभिमानी रानी 'रूठी रानी' के नाम से प्रसिद्ध हुई और एक लोकदेवी की भाँति पूजी जाती है) । २. एक लोक गीत ।

उमादो—(वि०) उन्माद ग्रसित । पागल ।

उमापति—(न०) महादेव ।

उमायो—(वि०) १. उमंग से प्रेरित । २. उमंगवाला। (क्रि०वि०) अनुरक्त होकर ।

उमावो—(न०) १. उत्साह । उमंग । २. लगन । अनुराग । अनुरक्ति ।

उमाहणो—दे० ऊमाहणो ।

उमाहो—दे० उमावो ।

उमिया—(ना०) उमा । पार्वती ।

उमियावर—(न०) शिव । महादेव ।

उमिरायत—दे० अमीरात ।

उमीर—दे० अमीर ।

उमेद—(ना०) १. उम्मेद । आशा । २. भरोसा । विश्वास । ३. आसरा ।

उमेरणो—(क्रि०) पूर्ति करना । कमी पूरी करना । और मिलाना ।

उमेरो—(न०) १. पूर्ति । २. वृद्धि ।

उमेश—(न०) महादेव । शंकर ।

उर—(न०) १. हृदय । २. वक्षस्थल । छाती । ३. लक्ष ।

उरग—(न०) सर्प । साँप ।

उरग कोळी—(न०) गरुड़ ।

उरज—(न०) १. स्तन । कुच । २. शक्ति । बल । ३. वृद्धि । ४. कार्तिक मास ।

उरजस—(न०) १. ओज । कान्ति । २. बल । शक्ति । ३. गर्व । इच्छा । अभिलाषा । ५. अवसर ।

उरड़—(ना०) १. बलात् प्रवेश। २. धक्का। टक्कर । ३. मुकाबिला । टक्कर । ४. साहस । ५. युद्ध । ६. रगड़ । ७. आक्रमण । ८. स्वपराक्रम । ९. खींचा-तानी । झपटा झपटी । १०. कामना ।

उरड़णो—(क्रि०) १. भीड़ को लाँघकर आगे बढ़ना । २. धक्का मारकर भीड़ में घुसना । बलपूर्वक घुसना । ३. सीना तानकर आगे बढ़ना । ४. लड़ना । ५. आक्रमण करना । ६ साहस करना ।

उरड़ो—(न०) १. टक्कर । धक्का । २. चौड़ाई । ३. छेद की चौड़ाई । ४. समेटी हुई वस्तु की परतों को खोल कर फैलाने का भाव । प्रसार । फैलाव । (वि०) १. चौड़ा । २. खुला हुआ । विस्फुरित । विस्फारित । ३. फैला हुआ । विस्तीर्ण ।

उरणकी—(ना०) भेड़ ।

उरणियो—(न०) भेड़ का बच्चा । मेमना ।

उरदुत—(ना०)१. उरोजद्युति। उरोद्युति। स्तनों की शोभा। २. उरोजद्वय। युगल-स्तन। ३. स्तन।

उरध—(न०) आकाश। (वि०) ऊर्ध्व। ऊंचा।

उरधगत—(ना०) १. ऊर्ध्वगति। ऊंची गति। २. स्वर्ग। ३. स्वाभिमान। (वि०) १. स्वाभिमानी। २. बलाभिमानी। स्वबली। ३. ऊंची गतिवाला।

उरधपुंड—(न०) १. वैष्णवी तिलक। ऊर्ध्वपुण्ड्र। श्रीमुद्रा। २. विशिष्ट सम्प्रदायों के भिन्न-भिन्न प्रकार के खड़े तिलक। ३. खड़ा तिलक।

उरधरेख—(ना०) हथेली तथा तलुवे की सौभाग्य सूचक एक खड़ी रेखा। ऊर्ध्व-रेखा (सामु०)।

उरधलोक—(न०) ऊर्ध्वलोक। स्वर्ग।

उरप—(न०) नृत्य का एक प्रकार।

उरवाणो—दे० उबाणो।

उरमी—दे० ऊर्मी।

उरमंडण—(न०) १. स्तन। २. पुष्पमाला। ३. रत्नजड़ित सुवर्ण हार।

उरळाई—(ना०) १. विस्तार। विस्तृति। फैलाव। २. अवकाश। ३. खुली जगह। ४. चौड़ाई।

उरळो—दे० उरड़ो।

उरवड़—दे० उरड़।

उरस—(न०) १. स्वर्ग। २. आकाश। ३. वक्षःस्थल। ४. हृदय। ५. औलिया फकीर की मरण तिथि। उर्स। (वि०) नीरस।

उरसथळ—(न०) १. वक्षःस्थल। उरस्थल। छाती। २. स्तन। कुच।

उरसथळी—दे० उरसथळ।

उरस-री-तेग—(वि०) जबरदस्त साहसी। २. वीराग्रणी।

उराट—(न०) १. छाती। २. हृदय।

उरासणो—(क्रि०) १. कुएँ में चरस को पानी भरने के लिये ऊंचा नीचा करना। २. चरस को कुएँ में उतारना।

उराँ-ढालाँ—(वि०) १. ढाल के समान दृढ़ और उठे हुये वक्ष वाला। जिसका वक्ष-स्थल ढाल के समान दृढ़ है। २. चौड़ी छाती वाला। ३. साहसी। हिम्मतवाला।

उरिण—(वि०) उऋण। ऋणयुक्त।

उरिया—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

उरेखणो—(क्रि०) १. चित्रित करना। चित्र बनाना। २. ढाँचा बनाना। रेखा-चित्र बनाना। रेखांकित करना। ३. अनु-मान करना। ३. देखना। ५. जानना।

उरेब—(न०) १. बुनावट से टेढ़ा काट कर की जाने वाली एक प्रकार की सिलाई। २. बुनावट से टेढ़ा। (वि०) टेढ़ा। तिरछा।

उरेव—(न०) १. हृदय। (वि०) हृदयस्थ। हृदय में स्थित।

उरेहणो—दे० उरेखणो।

उरै—(क्रि०वि०) इस ओर। इधर।

उरो—(अव्य०) किसी क्रिया शब्द के साथ प्रयुक्त होने वाला निकटस्थ निश्चय सूचक एक अव्यय। इसका प्रयोग—'यहाँ, इधर और 'इस ओर' इस भावार्थ में होता है। यह 'उरै' शब्द का एक रूप है। इसका स्त्रीलिंग 'उरी' और बहुवचन 'उरा' है। दूरस्थ-निश्चय सूचक 'परो' इसका विप-रीत शब्द है।

उरोज—(न०) स्तन। कुच।

उर्दू—(ना०) १. फारसी लिपि में लिखी जाने वाली एक यावनी भाषा तथा लिपि। २. एक खड़ी बोली जिसमें अरबी, फारसी भाषाओं के शब्दों की अधिकता होती है।

उळखणो—दे० ओळखणो।

उलखो—*(वि०)* १. नाराज। उदास। २. दीन। ३. उपेक्षित। ४. कुलक्षणों वाला। ५. लूखा। ६. उलटा।

उलखो-सुलखो—*(वि०)* १. राजी-वेराजी। २. उलटा-सुलटा। ३. लूखा-सूखा। ४. जैसा-तैसा। कैसा भी। ५. कुलक्षण और सुलक्षण को नहीं समझने वाला। मूर्ख। ६. दीन। ७. दया पात्र।

उळग—*(ना०)* १. सेवा। चाकरी। २. परदेश की नौकरी। ३. परदेशगमन। ४. गीत। गायन। ५. वियोग-गीत। ६. स्मृति-गीत।

उळगणो—*(क्रि०)* १. गाना। गायन करना। २. दूरस्थ की उळग (वियोग-गीत) करना।

उळगाणो—*(न०)* *(वि०)* १.प्रवासी पति। प्रवासी प्रियतम। २. महत्तर। भंगी। *(वि०)* १. परदेशी। प्रवासी। २. परदेश में नौकरी करने वाला। ३. वह जिसकी उळग (वियोग-गीत) की जाये।

उळझणो—*(क्रि०)* १. उलझना। फँसना। २. लड़ना। तकरार करना। ३. विवाद करना। ४. लपेट में आना। ५. आसक्त होना। प्रेम होना। ६. काम में लगा रहना। ७. कठिनाई में पड़ना।

उळझाड़—दे० अळुझाड़।

उलटणो—*(क्रि०)* १. उलटना। पलटना। २. औंधा करना। ३. आक्रमण करना। टूट पड़ना। ४. उमड़ना। उमड़कर आना। बढ़ना। ५. घूमना। पीछे मुड़ना। ६. क्रम विरुद्ध होना। ७. अस्तव्यस्त करना।

उलट-पलट—*(ना०)* १. परिवर्तन। अदल-बदल। २. अव्यवस्था। गड़बड़ी।

उलट-पुलट—दे० उलट-पलट।

उलटफेर—*(न०)*१. हेरफेर। २. परिवर्त्तन।

उलटाणो—*(क्रि०)* १. उलटाना। पलटाना। २. औंधा करना। ३. क्रम विरुद्ध करना। ४. अस्तव्यस्त करना। ५. लौटाना।

उलटावणो—दे० उलटाणो।

उलटी—*(ना०)* वमन। उलटी। कै। *(वि०)* विरुद्ध। *(क्रि०वि०)* वापस।

उलटो—*(वि०)* १. उलटा। औंधा। २. आगे का पीछे और पीछे का आगे। ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर। क्रम विरुद्ध। ३. विपरीत।

उळथणो—*(क्रि०)* 'उथळणो' का वर्ण-विपर्यय। दे० उथळणो।

उलथणो—*(क्रि०)* १. नक्षत्र का अस्त होने के निकट आना। नीचे उतरना। २. मध्याकाश से ढलना। ३. मानसिक व्यथा का मिटना। सिर का हलका होना। ४. उलटना। पलटना।

उळवाणो—*(वि०)* बिना जूती पहने हुए। नंगे पाँव।

उलळणो—*(क्रि०)* १. ढरकना। झुकना। २. आगे बढ़ना। ३. एक ओर बढ़ना। ४. लोगों का इकट्ठा होना। भीड़ करना। ५. बैलगाड़ी का पीछे की ओर झुकना।

उळवाणो—दे० उळवाणो।

उलसणो—*(क्रि०)* प्रसन्न होना। उल्लसित होना। खुश होना।

उलंघणो—*(क्रि०)* १. लाँघना। उल्लंघन करना। २. अवज्ञा करना। अवहेलना करना।

उलंघी—*(वि०)* १. लाँघने वाला। उल्लंघन करने वाला। २. अवहेलना करने वाला।

उलाक—*(ना०)* वमन। कै। उलटी।

उलाळ—*(न०)* १. भार अधिक हो जाने के कारण बैलगाड़ी का पीछे की ओर झुकना। 'धराळ' का उलटा। २. झुकाव। ३. नष्ट।

उलाळणो—*(क्रि०)* १. बैलगाड़ी को पीछे की ओर झुकाना। २. झुकाना। ३. उलट देना। ४. नष्ट करना। ५. चलाना। हटाना।

उलाळियो—*(न०)* चरस को पानी में डुबाने के लिये उसके मुँह की कुड़ में बाँधा जाने वाला भार। *(वि०)* लुढ़काने वाला। झुकाने वाला। उलाळने वाला। *(भू०क्रि०)* १. झुका दिया। उलाळ दिया। २. उलटा कर दिया। उलट दिया। ३. नाश कर दिया।

उलाळो—*(न०)* १. एक मात्रिक छंद। २. धक्का। टक्कर। ३. झुकाव। दे० उलाळ १, २ दे० उलाळियो *(सं०)* और *(वि०)*।

उळावणो—*(क्रि०)* १. उल्लासपूर्वक बुलाना। पुकारना। २. प्रेमपूर्वक सुमिरण करना। ३. भजना। ४. प्रसन्न करना।

उली कानी—*(क्रि० वि०)* इस ओर। इधर।

उळीचणो—*(क्रि०)* १. कुएँ में से गंदे पानी को बाहर फेंकना जिससे ताजा पानी आजाये।

उलूखलमल्ल—दे० ऊखळमल।

उले पासै—दे० उली कानी।

उलेळ—*(ना०)* १. उमंग। उत्साह। २. लहर। तरंग। ३. मौज। तरंग। ४. बाहुल्य। अधिकता। ५. मनुहार। आग्रह। अनुरोध।

उलेळमों—*(क्रिoवि०)* १. मनुहार के साथ। अनुरोधपूर्वक। २. अधिकता से। ३. उँड़ेलते हुए। *(वि०)* १. उँड़ेला हुआ। २. बहुत अधिक।

उलेळवों दे० उलेळमों।

उलोर—*(न०)* १. उत्साह। उमंग। २. हर्ष। ३. बढ़ाव। उमड़ाव। ४. घिराव। ५. घटा।

उल्लास—*(न०)* १. आनंद। २. प्रकाश। ३. प्रकरण। अध्याय। ४. एक काव्यालंकार।

उल्लू—*(न०)* उलूक। घूघू। घूघूराजा।

उल्लेख—*(न०)* १. निर्देश। २. कथन। ३. वर्णन। ४. चर्चा।

उल्हसणो—*(क्रि०)* १. उल्लसित होना। २. प्रसन्न होना। ३. कूदना।

उवट—*(न०)* विकट मार्ग। दुर्गम मार्ग। *(वि०)* ऊबड़ खाबड़। ऊंचा नीचा।

उवड़णो—*(क्रि०)* १. उमड़ना। २. ऊंचा उठना।

उवडाँखियो—*(न०)* १. भूखा (सिंह)। २. क्रोधित सिंह। ३. सिंह के समान झपट कर लड़ने वाला साहसी वीर। ४. डाकू। लुटेरा। *(वि०)* १. भूखा (सिंह)। २. क्रोधी। ३. अत्यन्त साहसी। *(भू०क्रि०)* १. आक्रमण किया। २. प्रस्थान किया। ३. चलाया।

उवणि—*(सर्व०)* उस।

उवर—*(न०)* १. हृदय। अंत:करण। २. उदर। पेट। *(क्रि०वि०)* ऊपरि। ऊपर।

उवह—*(न०)* उदधि। समुद्र। *(सर्व०)*। १. वह। २. उस। ३. उसे।

उवहि—*(न०)* उदधि। समुद्र।

उवाड़ो—*(न०)* पशुओं के पानी पीने के लिये कुएँ के पास बनाया हुआ लंबा उदपान। खेली। उदपान। २. गाय या भैंस के थनों का स्थान। थनों के ऊपर का दुग्धस्थान। गाय या भैंस का अयन।

उवार—*(ना०)* १. न्योछावर। २. न्योछावर की हुई वस्तु। ३. विलंब। देर। *(क्रि०वि०)* रहित। बगैर। बिना।

उवारणा—*(न०)* १. न्योछावर। वारफेर। वारी। वारीफेरी। २. उत्सर्ग। वारी।

उवारणो—*(क्रि०)* वारना। न्योछावर करना। वारी फेरी करना। २. वारीजाणो।

उवारसी—*(ना०)* १. सिफारिश। अनुकूल अनुरोध। २. सहायता। मदद।

उवारा-उरदी—*(वि०)* विना वरदी वाला। जो वरदी पहिना हुआ नहीं है। *(न०)* वादशाह की ओर से प्राप्त अधिकार के रूप में खान-उमरावों को सैनिक रखने के प्रकारों में से 'उवारा-उरदी' सैनिक रखने का एक प्रकार।

उवारो—*(न०)* गांव का निकास मार्ग। गांव के वाहर जाने का रास्ता। उपद्वार।

उवाळ—*(न०)* पानी पर वहकर आया हुआ कचरा, फेन आदि।

उवाह—*(न०)* विवाह। उद्वाह।

उवाँ—*(सर्व०)* १. उन। २. उन्होंने। *(क्रि०वि०)* वहां। उठै।

उवाँरी—*(सर्व०)* उनकी। उणांरी।

उवाँरै—*(सर्व०)* उनके। उणांरै।

उवाँरो—*(सर्व०)* उनका।

उवे—*(सर्व०)*१. वे। २. उन। ३. उन्होंने। ४. वह। ५. उस। ६. उसने।

उवेखणो—*(क्रि०)* १. देखना। २. उपेक्षा करना। ३. नजरंदाज करना।

उवेट—*(वि०)* १. भीषण। भयंकर। *(न०)* फंदा। जाल। वंधन।

उवेठ—दे० उवेट।

उवेळ—*(ना०)*१. लहर। तरंग। २. नशा। ३. छलका। उभराव। उद्वेल। ४. सहायता। मदद।

उवेळणो—*(क्रि०)* १. मदद करना। २. रक्षा करना। ३. छलकाना।

उवेव—*(न०)*१. उपभेद। प्रकार। २. भेद। ३. रूप.

उवो—*(सर्व०)* वह।

उश्रा—*(ना०)* गाय।

उसड़ी—*(वि०)* ग्रैसी। वैड़ी। ग्रोड़ी। ग्रैड़ी।

उसड़ै—*(वि०)* वैसे। उस प्रकार के।

उसड़ो—*(वि०)* वैसा। उस प्रकार का। ग्रोड़ो। वैड़ो।

उसर—*(न०)* १. असुर। २. मुसलमान।

उसराण—*(न०व०व०)* १. असुरसमूह। २. यवनसमूह।

उसरावण—*(न०)* १. उऋण। २. पके हुए चावलों का पानी। ३. चक्की से निकाला हुआ चून।

उससणो—*(क्रि०)* १. वढ़ना। २. फूलना।

उसह—*(न०)* १. वृषभ। २. ऋषभ।

उसारणो—*(क्रि०)* १. चावलों के पकजाने पर उनमें वचे हुए पानी को निकाल कर ग्रलग करना। २. चक्की की वाटी (घेरे) में से पिसे गये ग्राटे को वाहर निकालना। ३. उखाड़ना। ४. फैंकना। ५. निकालना। ६. तैयार करना। वनाना।

उसास—*(न०)* १. उच्छ्‌वास। उसांस। सांस। २. ग्राह। लंवी सांस।

उसी—*(वि०)* वैसी। विसी।

उसीलो—*(न०)* १. वसीला। जरिया। २. ग्राश्रय। ३. संवंध। ४. सहायता। ५. सहारा।

उसीसो—*(न०)* तकिया। ग्रोसियो।

उसुर—दे० उसर।

उसूल—*(न०)* सिद्धान्त।

उसो—*(वि०)* वैसा। विसो।

उस्तरी—*(न०)* इस्तरी।

उस्ताणी—*(ना०)*१. गुरु पत्नी। २. ग्रध्यापिका। ३. धूर्त्त स्त्री। ४. उस्ताद की स्त्री।

उस्ताद—*(न०)* १. गुरु। ग्रध्यापक। २. विशेज्ञ। ३. चिकित्सक। ४. नाई। ५. वेश्याग्रों का संगीत शिक्षक। *(वि०)* १. निपुण। दक्ष। २ धूर्त्त। चालाक।

उस्तादण—दे० उस्तादणी।

उस्तादणी—*(ना०)* दे० उस्ताणी।

उस्तादी—*(ना०)* १. चालाकी। धूर्त्तता। २. चतुराई। होशियारी। ३. निपुणता।

उस्तो—(न०) (उस्ताद का अपभ्रंश रूप)। १. चित्रकार। सिलावट। ३. शिल्पी। ४. कारीगर। उस्ताद।

उह—(सर्व०) वह।

उहाड़ो—दे० उवाड़ो।

उहास—(न०) १. प्रकाश। चमक। उजास। १. दंतपँक्ति की चमक।

उहासणो—(क्रि०) १. प्रकाश करना। २ प्रकाशित होना। ३. दंतपँक्ति का चमकना। ४. अति हँसना।

उहि—(सर्व०) १. वहीं। २. उस। उसी।

उहिज—(सर्व०) १. वही। २. उस ही। उसी।

उंडाई—दे० ऊंड़ाई।

उंडाण—दे० ऊंडाण।

उंडाळी—(वि०) गहराई वाली। गहरी। ऊंडी। (ना०) १. नाभि। सूंटी। ढूंडी। २. मिट्टी का एक बरतन।

उंडाळो—(वि०) गहराई वाला। ऊंड़ा। (न०) एक पात्र।

उंडाँण—दे० ऊंडाँण।

उंताळ—दे० उतावळ।

उंताळो—दे० उतावळो।

उंतावळ—दे० उतावळ।

उंतावळो—दे० उतावळो।

उंधायलो—दे० ऊंधायलो

ऊखधी—(ना०) औषधि।
ऊखम—(ना०) ऊष्म। ताप। गरमी।
ऊखमल—(न०) ('उलूखलमल्ल' का ऊन रूप)। दे० ऊखळमल।
ऊखळ—(न०) ओखली।
ऊखळणो—(क्रि०) १. ऊखल में कूटना। खांडना। २. उखड़ना। ३. नाश होना। ४. नाश करना।
ऊखळमल—(न०) (उलूखलमल्ल का ऊन रूप)। १. रणक्षेत्र। २. युद्ध। रण। ३. योद्धा।
ऊखळमेळो—(न०) युद्ध।
ऊखळी—(ना०) १. ओखली। २. किवाड़ के चूळिये के नीचे रहने वाला लोहे का एक उपकरण।
ऊखेवणो—(क्रि०) दे० उखेवणो।
ऊगट—(न०) १. उबटन। २. कसाव। कसेलापन। (वि०) उच्छिष्ट। बचा हुआ। (क्रि०वि०) खूब। बहुत। पेट भर के।
ऊगटो—(न०) ऊंट या घोड़े पर काठी कसने का पट्टा। तंग। कसन।
ऊगणो—(क्रि०) १. उदय होना। २. अंकुर फूटना। उगना। ३. बीज में से अंखुआ निकलना। ४. नशा चढ़ना। ५. प्रकट होना।
ऊगम—(ना०) १. उगाई। २. उद्गम।
ऊगमण—(ना०) १. पूर्व दिशा। २. उदय।
ऊगमणी—(वि०) १. पूर्व दिशा की। २. पूर्व दिशा से संबंधित। (ना०) १. पूर्व दिशा। २. उगाई।
ऊगमणो—(वि०) १. पूर्व दिशा का। २. पूर्व दिशा से संबंधित। (न०) पूर्व दिशा।
ऊगरणो—(क्रि०) दे० उगरणो।
ऊगळणो—(क्रि०)दे० उगळणो।
ऊगवण—(ना०) दे० ऊगमण।
ऊगाढ—(न०) १. पौरुष। २. नाश। (वि०) प्रबल।
ऊगैदीह—(न०) १. प्रभात। २. कल आने वाला प्रभात। (क्रि०वि०) प्रभात होते ही।
ऊगोड़ो—(वि०) १ उगा हुआ। २. उदित।
ऊग्रजणो—(क्रि०) १. गर्व से गर्जना। २. गर्व से मस्तक ऊँचा करना।
ऊग्रजती—(ना०) कटारी।
ऊग्रजी—दे० उग्रजती।
ऊग्रती—दे० उग्रजती।
ऊग्रहणो—दे० उग्रहणो।
ऊघड़णो—(क्रि०) दे० उघड़णो।
ऊघाड़ी—दे० उघाड़ी।
ऊघाड़ो—दे० उघाड़ो।
ऊचकणो—(क्रि०) १. ऊंचा उठाना। २. सिर पर उठाना।
ऊचळ चितो—(वि०)अशांत-चित्त। अस्थिर चित्त। उदास।
ऊचाळो—दे० उचाळो।
ऊछजणो—(क्रि०) १. उठाना। २. तैयार करना। ३. प्रहार करने के लिये शस्त्र को ऊपर उठाना।
ऊछरणो—(क्रि०) १. गायें, भैंसें आदि का समूह रूप से जंगल में चरने को जाना। २. पालन-पोषण और सार-सम्हाल प्राप्त कर बड़ा होना।
ऊछेरणो—दे० उछेरणो।
ऊज—(वि०) बलवान। ऊर्ज। दे० उज।
ऊजड़—दे० उजड़।
ऊजड़णो—दे० उजड़णो।
ऊजम—(न०) १. उद्यम। उद्योग। २. प्रयास। प्रयत्न।
ऊजमणो—(क्रि०) दे० उजमणो।
ऊजळ—(वि०) १. उज्ज्वल। कांतिमान। २. सफेद। श्वेत। ३. बेदाग। निर्मल। ४. पवित्र।

ऊजळ वरण—(न०) १. उज्वल वर्ण। उच्चवर्ण। २. त्रिवर्ण। ३. सत्‌शूद्र। (वि०) उच्चवर्ण का।

ऊजळाई—दे० उजळाई।

ऊजळा करणो—(मुहा०) १. प्रतिष्ठा बढ़ाना। १. यशस्वी बनाना। ३. उज्वल करना।

ऊजळा जुहार—(अव्य०) १. दूर से ही नमस्कार। ऊपरी नमस्कार। २. उपेक्षा। अवज्ञा। ३. साधारण जान-पहिचान या साधारण रिश्ते का व्यवहार।

ऊजळो—(वि०) १. प्रकाश वाला। १. स्पष्ट। ३. निर्मल हृदय वाला। ४. उज्वल। ५. यशस्वी। ६. सफेद। ७. निर्मल। ८. निष्कलंक।

ऊजळोपख—(न०) १. शुक्ल पक्ष। किसी चान्द्र मास का सुदी पक्ष। २. सत्य पक्ष।

ऊजवणो—दे० उजमणो।

ऊझ—(ना०) ओझरी।

ऊझड़—दे० उजड़।

ऊझणो—(न०) पुत्री के द्विरागमन के समय दिये जाने वाले वस्त्राभूषण आदि। **ओझणो।**

ऊझम—(न०) १. उद्यम। २. उत्पन्न। ३. शांत। ४. उष्ण। ५. ज्वाला।

ऊझमणो—(क्रि०) १. बुझाना। २. औटाना। ३. घटाना। ४. जलाना। ५. गरम करना। ६. शांत करना। ७. उद्यम करना। ८. उत्पन्न करना।

ऊझळणो—(क्रि०) १. भर आना। छलकना। २. उमड़ना। ३. उफनना। ४. बढ़ना। ५. उछलना। ६. मर्यादा के बाहर होना।

ऊझामणो—दे० ऊझमणो।

ऊटपटांग—(वि०) १. बेमेल। २. टेढ़ा-मेढ़ा। ३. व्यर्थ।

ऊठ—(ना०) १. फुरती। तेजी। २. चेतनता। ३. बल। शक्ति। ४. उमंग।

ऊठणो—(क्रि०) १. खड़ा होना। उठना। २. नींद उड़ना। जगना। ३. सोकर उठ बैठना। ४. उभरना। ५. ऊँचा होना। ६. उत्पन्न होना। ७. किसी प्रथा का अंत होना। ८. खर्च होना। मरना।

ऊठबैठ—(ना०) १. दोनों हाथों से दोनों कान पकड़ कर बार बार उठने बैठने की सजा। २. उठने-बैठने का व्यायाम। ३. उठने-बैठने का स्थान। अधिक आने जाने का स्थान।

ऊठाणो—(न०) मरे हुये के पीछे डाले हुए तापड़ को उठाने की विधि।

ऊडंड—(न०) घोड़ा।

ऊड़ी—(वि०) वैसी। ओड़ी। वैड़ी।

ऊणत—(ना०) १. गुरुजन या महापुरुष की वियोगजनित सलने वाली स्मृति (जिसमें उनके आदर्शों की पूर्ति करने वाला कोई न हो।) २. कमी। अभाव। ३. हानि। घाटा। ४. दारिद्र्य।

ऊणप—(ना०) १. कमी। खोट। भूल। २. गैरहाजिर या मरे हुये की खटकने वाली कमी। ३. ओछाई। ओछापन। क्षुद्रता। ४. दिल की दुर्बलता। हृदय-दौर्बल्य।

ऊणारत—दे० ऊणत।

ऊणौ-खूणौ—(क्रि०वि०) घर के कोने-कोने में और इधर-उधर। २. इधर-उधर।

ऊणो—(वि०) १. उदास। २. कम। न्यून। ३. छोटा। ४. अपूर्ण।

ऊत—(न०) १. पुत्र। २. कुपुत्र। (वि०) अविचारी। अज्ञानी।

ऊत जाणो—(मुहा०) १. निःसन्तान होना। २. निःसन्तान मरना।

ऊत जावणो—दे० ऊत जाणो।

ऊत होणो—(मुहा०) १. कुपूत होना। २. कुपूत वत आचरण करना।

ऊथलो—(न०) १. पलटा। पलटा खाना। २. अच्छा होने के बाद फिर रोग

का आक्रमण होना । ३. उत्तर । ४. प्रत्युत्तर । ५. सामने जवाब । मुँहजोरी ।

ऊदल—(न०) १. उदयसिंह या उदयराज का साहित्यिक या काव्य नाम । २. इन नामों का लघुता-सूचक रूप ।

ऊद्रकणो—(क्रि०) १. डरना । भयभीत होना । २. चौंकना । काँपना ।

ऊद्रमणो—(क्रि०) दौड़ना । भागना ।

ऊध—(न०) बैलगाड़ी का एक उपकरण ।

ऊधड़ो—(न०) १. किसी वस्तु या राशि की तोल-माप पर कीमत निश्चित किये विना किया गया क्रय-विक्रय । भाव-तोल के विना अनुमान से कियागया क्रय-विक्रय । २ अनुमान से निश्चित किया हुआ मूल्य । अनुमानित मूल्य । अंदाजा कीमत । ३. मकान आदि के बनाने का ठेका । (वि०) विना भाव-तोल का । विना हिसाव का । (क्रि० वि०) विना भाव-तोल के ।

ऊधड़ो लेणो—(मुहा०) १. डाँट-फटकार वताना । धमकाना । २. विना तोल,माप के किसी वस्तु को खरीदना ।

ऊधम—(न०) १. शोर । कोलाहल । २. शैतानी । शरारत । नटखटपना । ३. उपद्रव । उत्पात । ४. लड़ाई ।

ऊधमणो—(क्रि०) १. अच्छे कार्यों में धन का खर्च करना । अतिथि-सत्कार, दान और कुल की मर्यादा पालन में धन का उपभोग करना । २. सत् कार्य करना । ३. जीवन को सार्थक बनाना । ४. दान, धर्म, वीरता और उपकारादि के काम करना । ५. दान करना ।

ऊधमी—(वि०) ऊधम करने वाला । शरारती ।

ऊधरण—(वि०) उद्धार करने वाला । (न०) उद्धार ।

ऊधरो—(वि०)१. ऊर्ध्व । ऊंचा । २ उदार । दानी । ३. साहसी । ४. उठा हुआ । उभरा हुआ । ५. विषम ।

ऊधळणो—(क्रि०) विवाहित पति को छोड़ कर स्त्री का पर पुरुष के साथ भाग जाना । उढ़रना ।

ऊधळाण—(ना०) पति को छोड़कर पर पुरुष की पत्नी बन कर रहने वाली स्त्री । पर पुरुष के साथ भाग जाने वाली स्त्री ।

ऊधलाळ—दे० ऊधळाण ।

ऊधळियोड़ी—(वि०) १. व्यभिचारिणी । स्वैरिणी । २. स्वेच्छाचारिणी । ३. विना विवाह के पत्नी रूप से किसी पुरुष के घर में रही हुई । ४. पर पुरुष के साथ भागी हुई । ५. पर पुरुष के घर में पत्नी रूप से रही हुई । उढ़री ।

ऊधस—(न०) दूध । (न०) खाँसी । (वि०) ऊर्ध्व । ऊंचा ।

ऊन—(ना०) भेड़ के बाल । ऊर्ण । ऊन । (वि०) १. छोटा । २. थोड़ा ।

ऊनड़—(न०) ऊनड़ जाम नाम का एक प्रसिद्ध दानी राजा जिसने अपना राज्य आउठकोड़ बंभणवाड़ (सामई) साँवळसुध गोहड़िया को दान में दे दिया था ।

ऊनमणो—(क्रि०) बादलों की घटा का उमड़ना ।

ऊनवा—(न०) एक मूत्र रोग ।

ऊनाळू—(वि०) ग्रीष्म ऋतु से संबंधित । उष्णकाल संबंधी । (ना०) उनालू फसल ।

ऊनाळू-साख—(ना०) रबी की फसल । ऊनालू खेती ।

ऊनाळो—(न०) ग्रीष्म ऋतु । उष्णकाल ।

ऊनियो—दे० उरणियो ।

ऊनी—(वि०) १. ऊन का बना हुआ । ऊन से संबंधित । २. उष्ण: गरम ।

ऊनी आँच—(ना०) नुकसान, भय या अप्रतिष्ठित होने का प्रसंग ।

ऊनै—*(सर्व०)* उसको । उसे । *(क्रि० वि०)* १. इधर । इस ओर । यहाँ । २. उधर । उस ओर । वहाँ ।

ऊनो—*(वि०)* गरम । उष्ण ।

ऊन्हाळो देo ऊनाळो ।

ऊपट—देo उपट ।

ऊपटणो—*(क्रि०)* देo उपटणो ।

ऊपड़णो—देo उपड़णो ।

ऊपणणो—*(क्रि०)* देo उफणणो सं० २ व ऊफणणो सं० १ ।

ऊपनणो—*(क्रि०)* उत्पन्न होना । पैदा होना ।

ऊपनियोड़ो—*(वि०)* १. उत्पन्न । पैदा । २. उपार्जित । पैदा किया हुआ ।

ऊपना—*(न०)* १. माल की वही में माल के वेचने का इंदराज । २. बेचान खाते में लिखी जाने वाली रकम या रकमों के इंदराज । ३. माल के वेचान की आमदनी ।

ऊपनो—*(वि०)* उत्पन्न । पैदा ।

ऊपर—*(वि०)* १. ऊंचाई पर । २. ऊंचा । ३. अतिरिक्त । ४. श्रेष्ठ ।

ऊपरकरणो—*(मुहा०)* सहायता करना ।

ऊपर चट्टो—*(वि०)* १. ऊपर ऊपर का । दिखावे का । २. व्यर्थ । (स्त्री० ऊपर-चट्टी) ।

ऊपर चलो—*(वि०)* १. शक्ति उपरान्त । सामर्थ्य से अधिक । सामर्थ्य से ऊपर । २. आवश्यकता से अधिक । अतिरिक्त । ३. ऊपर ऊपर का । ४. साधारण । फुटकर । **परचूरण** । छोटा मोटा । ५. मुख्य कार्य के संपादनार्थ की जाने वाली तैयारी का काम । *(अव्य०)* ऊपर होकर । मरजी के उपरान्त । मरजी के खिलाफ़ ।

ऊपरचूंटो—*(वि०)* १. अतिरिक्त । २. फुटकर ।

ऊपरछल्लो—देo ऊपरचलो ।

ऊपरणी—*(ना०)* चूंचदार या खिड़किया पगड़ी के ऊपर बांधी जाने वाली भिन्न रंग की एक छोटी पगड़ी ।

ऊपरतळै—*(क्रि०वि०)* १. एक के ऊपर एक । २. अव्यवस्थित । ३. ऊपर-नीचे ।

ऊपरदान—*(अव्य०)* १. आगे होकर के । बढ़ कर के । २. मना करने पर भी । ३. और ज्यादा । ४. और । विशेष ।

ऊपरमाळ—*(न०)* १. गांव की सीमा के किनारे आये हुये खेतों की पँक्ति । किनारे के खेत । २. ऊपर का मार्ग । ३. जो सर्वसाधारण के आने जाने का मार्ग न हो ।

ऊपरलियाँ—*(ना०)* एक प्रकार की लोक-देवियाँ, जिनके प्रकोप से बालकों में एक प्रकार का वात रोग होना माना जाता है । **मावड़ियाँ । मैलड़ियाँ** ।

ऊपरली पळ—*(ना०)* जीवन का श्रेष्ठ समय ।

ऊपरलो—*(वि०)* १. ऊपर वाला । ऊपर का । २. बलवान । **जोरावर** ।

ऊपर वट—*(ना०)* १. सहायता । २. सिफारिश । *(क्रि०वि०)* १. बढ़कर । ऊपर होकर के । *(वि०)* अधिक ।

ऊपर वाड़ी—*(ना०)* १. गणित के प्रश्न को शीघ्र हल करने की युक्ति । मूल युक्ति । शीघ्र-रीति । शीघ्रनियम । मूल नियम, शीघ्र-गणित-गुर । २. काम को शीघ्र निपटाने की युक्ति । देo ऊपरवाड़ो ।

ऊपर वाड़ो—*(न०)* १. नजदीक का मार्ग । २. ऊपर का मार्ग । ३. विना मार्ग का मार्ग । ४. वाड़ आदि से घेरे हुए स्थान में प्रवेश करने के मुख्य द्वार के अतिरिक्त अनियमित रूप से बना हुआ शीघ्र पहुँचने का मार्ग । बेकायदा रास्ता ।

ऊपरा-ऊपरी—*(क्रि० वि०)* एक साथ । लगातार । एक के ऊपर एक ।

ऊपळी—(ना०) बैलगाड़ी का एक उपकरण।

ऊपळो—(न०) १. चारपाई के चौखट का सिर या पाँव की ओर का डंडा। चौखट की चौड़ाई का डंडा। २. जमीन के नाप में चौड़ाई का नाम। ३. चौड़ाई।

ऊफरणो—(क्रि०) १. अनाज को साफ करने के लिए छाज में भरकर ऊपर से नीचे गिराना। २. अत्यन्त क्रोध करना। ३. उबलना। उफान आना। ४. जोश में आना।

ऊबको—(न०) उबकाई। ओकाई। मिचली।

ऊबट—दे० ऊबट।

ऊबटो—(न०) १. घोड़े की जीन को कसने का तंग। २. तंग को कसने की उसके किनारे पर लगी हुई चमड़े की पट्टी।

ऊबड़-खाबड़—(वि०) ऊंचा नीचा। खड्डों वाला (मार्ग)।

ऊबड़णो—(क्रि०) दे० उबड़णो।

ऊबड़ियो—(न०) रहँट का एक उपकरण।

ऊबड़ो—दे० ऊबड़ियो।

ऊबरणो—(क्रि०) १. बचना। शेष रहना। २. कष्ट या दुर्घटना से बच जाना। ३. मृत्यु से बचना।

ऊबेलणो—(क्रि०) १. मदद करना। २. रक्षा करना।

ऊभघड़ी—(क्रि०वि०) १. तत्काल। २. तुरंत। ३. एकाएक। अचानक।

ऊभछठ—(ना०) स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला भादों कृष्ण षष्टी का एक व्रत। (इस व्रत में दीपक हो जाने के समय से चन्द्रोदय तक स्त्रियां खड़ी रहती हैं तथा चंद्रदर्शन और पूजन के बाद पारण करती हैं।)

ऊभणो—(क्रि०)१. खड़ा रहना। २. खड़ा होना। ३. तैयार रहना।

ऊभता—(न०) हाथ ऊपर उठाकर खड़े हुए मनुष्य के बराबर की गहराई तथा ऊंचाई का माप।

ऊभताण—दे० ऊभता।

ऊभताळ—(न०) दे० ऊभता। (क्रि०वि०) १. सहसा। एकाएक। २. अभी का अभी। इसी समय।

ऊभसूख—(वि०) जो खड़ा खड़ा ही सूख गया हो (वृक्ष)। खड़ी स्थिति में सूखा हुआ (वृक्ष)।

ऊभाऊभ—(क्रि०वि०) १. खड़े खड़े। अभी का अभी। इसी वक्त। २. सहसा। अचानक।

ऊभा-पगाँ—(क्रि०वि०) १. अभी का अभी। २. बिना विश्राम लिये। तुरंत। ३. जीवित रहने की दशा में। कायम होने की हालत में।

ऊभा पगाँ-री-सगाई—जीवित होने तक का संबंध।

ऊभाँ—(अव्य०) १. खड़े। २. खड़े रहते हुए। ३. उपस्थित रहते हुए। ४. जीवित रहते हुए।

ऊभाँ-ऊभाँ—(अव्य०) खड़े खड़े। अभी का अभी। तुरन्त।

ऊभाँखरो—(वि०) १. जो बैठे नहीं। जो फिरता रहे। भ्रमणशील। २. खाना-बदोश।

ऊभाँ-खुरो—(वि०) १. जो बैठे नहीं। जो फिरता रहे। भ्रमणशील। २. खाना-बदोश। (न०) घोड़ा।

ऊभै-चूकै—(क्रि०वि०) एकाएक। अचानक।

ऊभै-छाज—(न०) छाज में नाज को फटकने का एक विशेष प्रकार।

ऊभो—(वि०) १. खड़ा। खड़ा हुआ। २. उठा हुआ।

ऊमण-दूमणो—(वि०) उदास। खिन्न-चित। अन्यमनस्क।

ऊमणो—(वि०) अनमना। उदास।

ऊमतो—(वि०) १. उन्मत्त। पागल। २. मस्त। मतवाला।

ऊमर—(ना०) आयु।

ऊमरकोट—(न०) पाकिस्तान-सिंध प्रान्त के थरपारकर जिले का एक इतिहास प्रसिद्ध नगर। मध्यकालीन सोढ़ाण क्षेत्र की राजधानी। (एक समय यह मारवाड़ राज्य का भाग था।)

ऊमर दराज—)वि०) दीर्घजीवी।

ऊमरदान—(न०) ऊमर काव्य के रचयिता मारवाड़ के एक प्रसिद्ध चारण कवि।

ऊमरो—(न०) १. द्वार भाग। घर का द्वार और उसके आस-पास का भाग। २. मुख्य द्वार के चौखट की नीचे वाली लकड़ी। देहली। बारोक। ३. हल से बनने वाली पँक्ति। खेत में हल को चलाने से बनी रेखा।

ऊमस—(ना०) १. ऊष्णता। २. तपन। ३. वर्षा के पूर्व की गरमी।

ऊमादे—दे० 'उमादे' और 'रूठी राणी'।

ऊमावो—(न०) १. उत्साह। २. उमंग। सुखदायक मनोवेग।

ऊमाहणो—(क्रि०) उमंग में आना। उमंगित होना। उत्साहित होना।

ऊमाहो—दे० ऊमावो।

ऊरबो—(न०) १. आशा। २. दृढ़ विश्वास। ३. मान। प्रतिष्ठा।

ऊरणो—(क्रि०) १. खौलते पानी में दाल, खीच आदि का डालना। २. चक्की के मुँह में पीसने के लिए मुट्ठी भर करके नाज डालना। ३. घोड़े पर सवार होकर अत्यन्त वेग से युद्ध में प्रवेश करना।

ऊरीजणो—(क्रि०) १. दाल, खीच आदि का गरम पानी होने पर हंडिया में डाला जाना। २. नुकसान में पड़ना। हानि उठाना।

ऊरु—(ना०) जाँघ। साथळ।

ऊर्ध्व—(वि०) १. ऊंचा। ऊपर का। ३. सीधा। ४. उन्नत। ऊँचा उठाया हुआ।

ऊर्ध्वपुण्ड्र—(न०) वैष्णव सम्प्रदाय का खड़ा तिलक।

ऊर्ध्ववायु—(न०) डकार। मुख से निकलने वाला वायु का उद्गार।

ऊर्मी—(ना०) १. लहर। २. मन की लहर।

ऊल—(ना०) जीभ का मैल।

ऊलो—(वि०) १. इधर की। इस ओर की। २. उधर की। उस ओर की।

ऊलै—(सर्व०) १. इस। २. उस।

ऊवट—(न०) ऊजड़। उत्पथ। विकट मार्ग।

ऊवेलणो—(क्रि०) सहायता करना।

ऊस—(न०) १. गाय भैंस का थन प्रदेश। २. थनों के ऊपर का वह भाग जिसमें दूध रहता है।

ऊसर—(ना०) अनउपजाऊ भूमि।

ऊसव—(न०) उत्सव।

ऊसस—(न०) १. जोश। आवेग। २. उत्साह।

ऊससणो—(क्रि०)१. जोश से फूल जाना। २. ऊँचा उठना। ३. उत्साहित होना। ४. जोश में आकर युद्ध करना। ५. प्रफुल्लित होना। प्रसन्न होना।

ऊं—(ना०) १. गर्व। २. अकड़। (सर्व०) उस।

ऊंघ—(ना०) १. नींद। निद्रा।

ऊंघणो—(क्रि०) नींद लेना। ऊंघीजणो।

ऊंघाणो—(क्रि०) दे० ऊंघावणो। (वि०) सोया हुआ। निद्रित। निद्रावश।

ऊंघावणो—(क्रि०) १. सुलाना। २. बच्चे आदि को ऊंघाने का प्रयत्न करना।

ऊंघीजणो—(क्रि०) १. नींद आना। २. एक स्थान पर सतत दबा रहने से किसी अंग का (रक्त प्रवाह बन्द हो जाने से) सो जाना। ३. अनजान तथा अज्ञान में रहा करना।

ऊंच—(वि०) १. ऊंचा । उच्च । २. अधिक अच्छा । श्रेष्ठ ।

ऊंच कुळी—(वि०) ऊंचे कुल का ।

ऊंचनीच—(ना०) ऊंचे और नीचे का भेद । उच्च वर्ण व निम्न वर्ण का भेद । (वि०) १. ऊंचा और नीचा । २. भला और बुरा ।

ऊंचपण—(न०) १. वड़प्पन । ऊंचापना । २. ऊंचाई ।

ऊंचपणो—(न०) दे० ऊंचपण ।

ऊंचमन—(वि०) १. उदार । २. महत्वाकांक्षी ।

ऊंचमनो—दे० उंचमन ।

ऊंचलो—(वि०) ऊपर का ।

ऊंचवरण—(न०) १. उच्च वर्ण । द्विजाति । २. ब्राह्मण ।

ऊंचवहो—(वि०) १. ऊर्ध्वगामी । २. ऊंचे आचरण वाला । श्रेष्ठ आचरण वाला । ३. उपकारी । ४. उदार ।

ऊंचाई—(ना०) १. ऊंचापना । उठान । २. नीचे के स्तर से ऊंचा होता हुआ भाग । ३. वड़प्पन । ४. गौरव ।

ऊंचाण—(ना०) १. चढ़ाव । २. ऊंचा स्थान । दे० ऊंचाई ।

ऊंचाणो—(क्रि०) दे० ऊंचावणो ।

ऊंचावणो—(क्रि०) उठवाना । ऊंचा करना ।

ऊंचासरो—(वि०) १. यश और स्वाभिमान के कारण जिसका सिर ऊंचा हो । उच्च शीर्ष । २. सिरे नाम वाला । ऊंची ख्याति वाला । ३. गर्वोन्नत । ४. उच्चाशय । ५. उच्चाश्रय ।(न०)१. पूर्वजों का स्थान । २. मूलस्थान । ३. उच्चैःश्रवा ।

ऊंचांत—दे० ऊचाण ।

ऊंचीताण—(वि०) उच्चाशय । (ना०) १. महत्वाकांक्षी । २. स्वाभिमान तथा कुलाभिमान को ऊंचा उठाये रखना ।

ऊंचीसरो—दे० ऊंचासरो ।

ऊंचेरो—(वि०) १. तुलना में ऊंचा ।

ऊंचो—(वि०) १. ऊपर । २. लम्बा । ३. बड़ा । ४. श्रेष्ठ ।

ऊंट—(न०) सवारी का एक प्रसिद्ध पालतू पशु । उष्ट्र । उत्कंठ । (वि०) (ला०) १. लंबा । २. मूर्ख ।

ऊंट कंटाळो—(न०) ऊंट के पसंद की एक कँटीली घास ।

ऊंटड़ो—(न०) १. बैलों को छोड़ देने पर छूटी बैलगाड़ी के जमीन पर टिके रहने का आगे के भाग में नीचे लगा हुआ मोटा डंडा । २. ऊंट ।

ऊंट-बाळदो—(न०) ऊंट बैल का संबंध । अनमेल सम्बन्ध । अस्वाभाविक संबंध ।

ऊंट-वैद—(न०)१.नीमहकीम । २.धूर्त वैद्य ।

ऊंटादेवी—(ना०) पुष्करणा ब्राह्मणों की एक देवी । उष्ट्रवाहिनी ।

ऊंडळ—(न०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को थामने के लिये हथेलियां फैला कर ऊपर उठाये हुये हाथ । उदंजलि । २. ऊपर से गिरती हुई वस्तु को बाहुपाश या गोद में थाम रखने की क्रिया । ३. गोद । ४. ऊपर उठाये या फैलाये हुए हाथ । ५. बाहुपाश (बाथ) में समावे जितनी वस्तु । ६. बाहुपाश । बाथ ।(वि०) १. गहरा । ऊंडा । २. घिरा हुआ । सेना द्वारा घिरा हुआ । (न०) सेना का खूब दृढ़ बना हुआ घेरा । घेरा ।

ऊंडाई—(ना०) गहरापन । गहराई ।

ऊंडाण—(ना०) गहराई ।

ऊंडांत—(ना०) १. नीची भूमि । २. गहराई । ३. गम्भीरता ।

ऊंडो—(वि०) १. गहरा । २. गम्भीर । ३. अगाध । ४. अन्दर से लंबा ।

ऊंण—(न०)इस वर्ष । चालू वर्ष । वर्तमान वर्ष ।

ऊंदर—(न०) चूहा । मूसा ।

ऊंदरी—(ना०) १. चुहिया । २. पीठ की नस में गाँठ पड़ जाने का एक कष्ट साध्य

रोग। ३. दाढ़ी-मूंछ के बाल उड़ जाने का एक रोग। ४. गंजरोग।

ऊंदरो—(न०) चूहा। मूषक।

ऊंध—(ना०) १. बैलगाड़ी का एक भाग। २. राजस्थानी खगोल साहित्य की सोलह दिशाओं में से एक दिशा। उत्तर और वायव्य कोण की दिशा। (वि०) औंधा। उलटा।

ऊंधकरमो—(वि०) १. उलटा काम करने वाला। २. बताये गये तरीके से नहीं करने वाला। ३. कुकर्मी। (स्त्री० ऊंध करमी)।

ऊंधाकड़ो—(वि) दे० उंधकरमो।

ऊंधायलो—(न०)औंवे पात्र में शकरकंद आदि रखकर उसके ऊपर आग जला कर भाप से पकाना। २. इस प्रकार पकाने की क्रिया। ३. रोटी सेकने का उलटा तवा।

ऊंधावणो—(क्रि०) १. उलटा करना। २. डालना। गेरना। ३. भरे हुए पात्र को टेढ़ा करके किसी दूसरे पात्र में खाली करना।

ऊंधो—(वि०) १. उलटा। औंधा। २. विरुद्ध। ३. हानिकारक। (स्त्री० ऊंधी।

ऊंधो-पाधरो—(वि०) उलटा-सुलटा।

ऊंब—(न०) नैऋत कोण से ईशान कोण की ओर अपेक्षाकृत नीचे आकाश में तेजी से बहने वाला हलका बादल। लोर।

ऊंबरो—(न०) १. खेत में हल चलाने से खिंची रेखा। हल-रेखा। हल चलाकर निकाली गई रेखा। २. दहेली। दहलीज।

ऊंबी—(ना०)जौ या गेहूं की बाल। ऊमी।

ऊंहूं—(अव्य०) १. अस्वीकृति अथवा हठ सूचक एक उद्‌गार। २. नहीं। ना।

ऋ

ऋ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण-माला का सातवाँ स्वर वर्ण।

ऋग्वेद—(न०) चारों वेदों में से एक जो पहला और प्रधान माना जाता है। संसार की सबसे प्राचीन धर्म पुस्तक। ऋग्वेद।

ऋचा—(ना०) वेद मंत्र।

ऋण—(न०) कर्ज। देना। कर्जदारी।

ऋणी—(वि०) १. ऋण लेने वाला। कर्जदार। २. उपकृत।

ऋत—(न०) १. सत्य। २. अचल नियम।

ऋतु—(ना०) मौसम। रुत। रितु।

ऋतुकाल—(न०) स्त्रियों के रजोदर्शन के बाद के सोलह दिन। गर्भाधान का समय।

ऋतुमती—(वि०) १. रजस्वला। २. वह जिसका रजोदर्शन काल समाप्त हो गया हो और संतानोत्पत्ति के लिये समागम के योग्य हो।

ऋतुराज—(न०) वसंत ऋतु।

ऋतुस्नान—(ना०) रजोदर्शन के चौथे दिन का स्नान।

ऋद्धि—(ना०) १. समृद्धि। वृद्धि। २. सिद्धि। ३. लक्ष्मी। ४. पार्वती।

ऋद्धि-सिद्धि—(ना०) समृद्धि और सफ-लता। २. सुख सम्पत्ति।

ऋषभ—(न०) १. ऋषभावतार। २. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ३. बैल। वृषभ।

ऋषभदेव—(न०) १. ऋषभावतार। २. आदि तीर्थंकर। रिखभदेव।

ऋषि—(न०) १. मंत्र द्रष्टा। २. नया दर्शन प्राप्त करने या कराने वाला महात्मा। ३. मुनि। तपस्वी।

ऋषि-ऋण—(न०) ऋषियों का ऋण जो वेदों के पठन-पाठन और उनके अनुसार आचरण करने से पूरा होता है।

ऋषिकल्प—(न०) ऋषियों के समान पूज्य व बड़ा।

अे

अे—संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा का आठवाँ स्वर वर्ण।

अे—(सर्व०) १. यह। २. इस। (व०व०) ३. ये। (अव्य०) संबोधन के रूप में प्रयुक्त। एक शब्द।

अेक—(वि०) १. संख्या में पहला। दो का आधा। २. बेजोड़। ३. प्रधान। ४. अमुक (उदा, एक हतो राजा)। (न०) १. पहिला अंक या इकाई। २. एक की संख्या। ३. विष्णु। ४. परमात्मा। ५. संख्या-वाचक शब्द के अंत में 'लगभग', 'करीब' अर्थ में-उदा० पाँचेक, हजारेक। (अव्य०) मात्र। सिर्फ। उदा० एक रामरो भरोसो राखो।

अेक अंगो—(वि०) १. एक तरफी प्रकृति वाला। अपनी इच्छानुसार करने वाला। २. हठी। जिद्दी।

अेक-अेक—(वि०) १. एक के बाद अेक। २. एक के बाद दूसरा। क्रमिक।

अेकक्खरी—दे० अेकाक्षरी।

अेकचक्र—(वि०) चक्रवर्ती। (न०) सूर्य।

अेक चख—(वि०) एक चक्षु। एक आंख वाला। काना। काणो।

अेकच्छरी—दे० अेकाक्षरी।

अेकछत्र—(न०)१. एक तंत्र शासन प्रणाली। वह शासन प्रणाली जिसमें एक ही का पूर्ण प्रभुत्व हो। २. एक हत्थी हुकूमत। ३. पूर्ण प्रभुत्व। (वि०) १. एक राजा वाला। २. पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न।

अेकज—(वि०) एक ही।

अेकजीव—(वि०) १. अभिन्न। २. मिला हुआ। मिश्रित। ३. सुघटित।

अेकटंगियो—(वि०) एक टाँग वाला। लंगड़ा।

अेकटाणो—(न०) १. दे० अेकासणो। २. एक बार।

अेकठाँ—(ना०) एक जगह।

अेकठा—(वि०)१. एकत्रित। २. एक साथ।

अेकठो—(वि०) इकट्ठा। एकत्रित।

अेकड़—(न०) १. ४८४० वर्ग गज जमीन। २. इतनी भूमि का नाप।

अेकडंकी—दे० इकडंकी।

अेकडसण—(न०) गणेश। गजानन। एक-दशन।

अेकढाळ—(वि०) एक समान। एक तरह का।

अेकढाळियो—(न०) एक पलिया ओसारा। एक ओर ढालू छाजन वाली कोठरी। अगढाळ्। अगढाळियो।

अेकण—(वि०) एक ही।

अेकत—(न०) दे० अेकासणो। (क्रि०वि०) एकत्र। इकट्ठा।

अेकतरफी—(वि०) १. एक पक्ष का। २. जिसमें पक्षपात किया गया हो।

अेकता—(ना०) १. मेल। एक्य। २. बरा-बरी।

अेकताई—दे० एकता।

अेकतान—(ना०) सभी का एक साथ स्वर (संगीत)। २. एकाग्रचित्त। (वि०) लीन

अेकतारो—(न०) एक तार वाला वाद्ययंत्र। इकतारा।
अेकत्र—(क्रि०वि०) इकट्ठा।
अेकथंभिग्रो—(वि०) १. एक स्तंभ वाला। २. एक थंभे ऊपर बनाया हुआ।
अेकथंभियो-महल—(न०) १. एक थंभे के ऊपर बनाया गया महल। २. एक थंभे के आकार का बना हुआ महल।
अेकदंत—दे० एकडसण।
अेकदम—(अव्य०) १. एकदम। तुरंत। २. निपट। बिल्कुल।
अेकदाँई-रो—(वि०) बराबर उम्र का। समवयस्क।
अेकदा—(वि०) एक बार की। अमुक समय की। (क्रि० वि०) एकबार। अमुक समय।
अेकदाण—(अव्य०) एक बार।
अेकप्राण—(वि०) एकजीव।
अेक फसली—(वि०) वर्ष में एक फसल वाला (देश या भूमि)।
अेक बीजो—(अव्य०) परस्पर।
अेक भाव—(वि०) एक भाव का।
अेकम—(ना०(१. प्रतिपदा। पक्ष का प्रथम दिन। २. इकाई। एकाई।
अेक मत—(वि०) एक राय के।
अेकमते—(अव्य०) एक राय से।
अेकमन—(वि०) १. संगठित। २. अेकमत।
अेकमना—(वि०) १ एक मन वाले। एक मत वाले। २. संगठित।
अेकमात्र—(वि०) केवल एक। एक ही।
अेकमेक—(अव्य०) १. परस्पर। आपस आपस में। २. एक जैसा। एक सरीखा। एक। (न०) मिश्रण। मिलन। (वि०) १. मिश्रित। मिला हुआ। २. परस्पर मिले हुये। एक दूसरे से मिला हुआ। ३. एक समान।
अेक रंग—(वि०) १. बराबर। समान। २. एक समान। एक सरखा।
अेकर—(अव्य०) एक बार।
अेक रदन—(न०) गणेशजी।
अेकरस—(वि०) शुरू से अखीर तक एक जैसा।
अेकरसाँ—(अव्य०) एक बार।
अेकराग—(न०) एकमत। संप।
अेकराह—(न०) १. राष्ट्र का एक धर्म। प्रजा का एक धर्म। २. मुसलमानी धर्म। इलाही मजहब। ३. राह। न्याय। (वि०) पक्षपात रहित।
अेक रूप—(वि०) एक जैसा।
अेक रूपता—(ना०) रूप, गुण, बनावट आदि में किसी अन्य के समान होने का भाव।
अेकल—(न०) सूअर। (वि०) १. अकेला। २. अनुपम। (वि०) इकल्ला।
अेकलअंगो—(वि०) १. इकतरफी स्वभाव का। अपनी इच्छानुसार करने वाला। २. हठी। जिद्दी।
अेकलखोरो—(वि०) १. अकेला रहने वाला। २. अकेला उपभोग करने वाला। ३. स्वार्थी।
अेकलगिड़—(न०) सदा अकेला विचरण करने वाला निर्भय और बड़ा शक्तिशाली सूअर।
अेकलड़ो—(वि०) १. एक लड़ वाला। २. अकेला।
अेकल-दोकल—(वि०) १. अकेला। २. अकेला-दुकेला। इक्का-दुक्का।
अेकलमल्ल—(वि०)१.अकेला ही कई वीरों से लड़ने की शक्ति रखने वाला।
अेकलवाई—(ना०) लुहार का एक औजार।
अेकलवाड़—(न०) शक्तिशाली। शूकर।
अेकलवीर—(न०) अकेला जूझने वाला वीर।

ग्रेकलसूरो—(व०) १. स्वार्थी । मतलबी । २. बहादुर । वीर । ३. साथी रहित । अकेला ।

ग्रेकळास—(न०) १. मेल । प्रीति । मित्रता । २. संगठन ।

ग्रेकलियो—(वि०) अकेला । एकाकी । (न०) एक बैल वाली छोटी गाड़ी । रेखळो ।

ग्रेकलिंग—(न०) १. मेवाड़ राज्य के स्वामी एकलिंग महादेव । २. सीसोदिया क्षत्रियों के इष्टदेव श्री एकलिंग महादेव । ३. उदयपुर के पूर्व में एक तीर्थ स्थान जहां एकलिंग महादेव का मंदिर है । शिवपुरी ।

ग्रेकलो—(वि०) १. अकेला । इकल्ला । २. अलग । ३. सहायहीन ।

ग्रेक लोहिग्रो—(वि०) १. एक रक्तवाला । एक वंश का । २. एक स्वभाव का ।

ग्रेक वचन—(न०) १. व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध हो । २. निश्चय ।

ग्रेकवड़ो—(वि०) १. एक परत वाला । इकहरा ।

ग्रेकसंथ—(वि०) एकमत । एक राय के ।

ग्रेकसर—(वि०) एक समान ।

ग्रेक सरखो—(वि०)एक सरीखा । समान ।

ग्रेक सरीखो—(वि०) एक प्रकार का । एक जैसा ।

ग्रेक साथे—(ग्रव्य०) १. सब मिल करके । २. एक साथ में । एक ही बार में ।

ग्रेक सिरीसो—(वि०) दे० एक सरीखो ।

ग्रेकसो—(वि०) १. एक समान । एक जैसा । २. दस दहाई । एक सौ । (न०) एक सौ की संख्या । '१००'

ग्रेकहथी—(वि०) वह (गाय या भैंस) जो नित्य दुहने वाले व्यक्ति से ही दुहाती हो । एक ही व्यक्ति से दुहाने की आदत वाली ।

ग्रेकहथो—(वि०) एक व्यक्ति द्वारा संचालित । एक हत्था ।

ग्रेकंगो—दे० ग्रेक ग्रंगो ।

ग्रेकंकार—दे० ग्रेकाकार ।

ग्रेकंत—दे० ग्रेकांत ।

ग्रेकंतरै—दे० ग्रेकांतरै ।

ग्रेकंतरो—दे० ग्रेकांतरो ।

ग्रेकंदर—(ग्रव्य०) १. औसतन । २. आम तौर से । समग्रतया । सामान्यतया ।

ग्रेकाई—(ना०) १. ग्रंक गणना में सबसे आगे का और प्रथम ग्रंक । इकाई । २. एक का मान या भाव ।

ग्रेकाग्रेक—(वि०) १. मात्र एक । एक ही । २. अकेला । (क्रि० वि०) एक दम । सहसा । अचानक । अकस्मात ।

ग्रेकाग्रेकी—दे० एकाएक ।

ग्रेकाकार—(वि०) १. कइयों के मेल से जिसने एक रूप या आकार धारण कर लिया हो । २. जो किसी से मिलकर उसी जैसा होगया हो । ३. एक आकार वाला । एक रूप । ४. मिला हुआ । मिश्रित । ५. भेद रहित (न०) १. एक होने का भाव । २. एकाचार । ३. एकधर्म । ४. तुल्य आकृति । ५. एक होने की क्रिया या भाव ।

ग्रेकाकी—दे० एकाएक ।

ग्रेकाक्ष—(वि०) एक आँख वाला । काना । (न०) १. कौआ । २. शुक्राचार्य ।

ग्रेकाक्षरी—(वि०) १. जिसमें एक ही अक्षर हो । एकाक्षरी । (न०) १. एक छंद जिसमें एक ही अक्षर वाले शब्द का प्रयोग किया हुआ होता है । २. एक ऐसा पद्य साहित्य जिसमें अनेक प्रश्नों के उत्तर एक ही अक्षर (=शब्द) में प्राप्त किये हुए होते हैं ।

ग्रेकाखरी—दे० एकाक्षरी ।

ग्रेकाग्र—(वि०) १. एक ही ओर मन लगा हुआ । एक लक्षी २. तल्लीन ।

ऐकाग्रता—(ना०) तल्लीनता। मन की स्थिरता।

ऐकाणुऔ—(न०) इक्यानवाँ वर्ष।

ऐकाणू—(वि०) नव्वे और एक। (न०) ९१ की संख्या।

ऐकाणूमों—(वि०) संख्या क्रम में जो नव्वे और बरानवे के बीच में आता हो। इक्यानवाँ।

ऐकादशी—दे० ऐकादसी।

ऐकादसी—(ना०) चांद्रमास के उभय पक्षों की ग्यारहवीं तिथि।

ऐकादसो—(न०) १. मृतक का ग्यारहवें दिन का कृत्य। २. ग्यारहवाँ दिन।

ऐकाध—(वि०) १. कोई। कोई-कोई। २. क्वचित्। ३. कोई एक।

ऐकाधो—(वि०) दे० ऐकाध।

ऐका बेका—दे० एकी-बेकी।

ऐकावन—(वि०) पचास और ऐक। (न०) इक्यावन की संख्या, '५१'।

ऐकावनमों—(वि०) संख्या क्रम में जो पचास और बावन के बीच में आता हो।

ऐकावनो—(न०) इक्यावनवाँ वर्ष।

ऐकावळ—(न०) १. एक लड़ी का हार। २. गले का एक गहना।

ऐकावळ हार—दे० ऐकावळ।

ऐकावळी—दे० इकावळी।

ऐकासणो—(न०) दिन में केवल एक बार भोजन करने का व्रत। एकाशन।

ऐकांकी—(न०) एक ही अंक में समाप्त होने वाला नाटक।

ऐकांगी—(वि०) १. एक अंग वाला। २. अपंग। ३. एक तरफी। ४. एकेंद्रिय। ५. एक ही बात को पकड़े रहने वाला हठी। जिद्दी। एकंगो।

ऐकांत—(वि०) १. किसी के आने-जाने से रहित। २. खानगी। ३. अलग। ४. बिलकुल। नितान्त। (न०) १. जहाँ कोई न हो ऐसा स्थान। २. अकेलापन।

ऐकांतरै—(अव्य०) १. एक दिन के अंतर से। एक दिन के बाद। एक दिन का बीच।

ऐकांतरो—(न०) एक दिन के अंतर से आने वाला ज्वर। (वि०) एक दिन का बीच देकर आने वाला।

ऐकांतवास—(न०) १. एकान्त में रहना। २. गुप्त रूप से रहना।

ऐकांत वासी—(वि०) एकान्त वास करने वाला।

ऐकी—(ना०) १. वह जिस पर किसी एक वस्तु का चिह्न किया हुआ हो। २. जो दो से निःशेष विभाजित न हो सके। ३. विषम संख्या। इकाई। ४. एक बूटी वाला ताश का पत्ता। ५. एक अंगुली उठाकर पिशाब करने को जाने का संकेत। ६. पिशाब की हाजत। मूत्रवेग। ७. एकता। मेल। सम्भूति।

ऐकी-बेकी—(न०) १. विषम और सम संख्या। २. विषम और सम संख्या को मुट्ठी बंद कर बताये जाने का एक प्रकार का जुआ। मुट्ठी में बंद किये गये दानों की सम या विषम संख्या बताने की हार जीत का एक द्यूत। ३. बालकों का एक खेल। ४. ऐक अंगुली उठाकर पिशाब और दो अंगुलियाँ उठाकर टट्टी जाने का संकेत। ५. पिशाब और टट्टी।

ऐकीसार—(वि०) एक जैसा। एक समान। एकसा।

ऐकूको—(वि०) एक एक। एक के बाद ऐक। एक के बाद दूसरा एक।

ऐकेंद्रिय—(न०) वह जीव जिसके एक ही इंद्रिय होती है, जैसे—जोंक।

ऐकै—(ना०) मास के पक्ष का प्रथम दिन। एकम। प्रतिपदा।

ग्रेकेक—(वि०) एक एक। प्रति एक।

ग्रेकेफेरे—(ग्रव्य०) १. एक साथ। २. एक ही समय में।

ग्रेको—(न०) १. एक। २. एक की संख्या। ३. संगठन। एकता। ४. एक बूटी वाला ताश का पत्ता। ५. एक घोड़े वाली गाड़ी। ६. राजा का अंगरक्षक। इक्का। ७. बादशाही योद्धा जो अकेला ही अनेकों से लड़ने की सामर्थ्य रखता हो। ८. विक्रम संवत् का पहला वर्ष।

ग्रेकोज—(वि०) १. एक। २. एकही।

ग्रेकोतर—(वि०) सत्तर और एक। इकहत्तर। (न०) सत्तर और एक की संख्या '७१'।

ग्रेकोतरमों—(वि०) संख्या क्रम में जो सत्तर और बहत्तर के बीच में आता है। इकहत्तरवां।

ग्रेकोतरो—(न०) इकहत्तरवां वर्ष।

ग्रेकोळाई—(ना०) दे० एकलवाई।

ग्रेखरो—(न०) एक वनौषधि।

ग्रेडी—(ना०) १. एड़ी। २. जूती या बूट की एड़।

ग्रेड़ै-छेड़ै—(क्रि०वि०) १ इधर-उधर। २. किनारों पर।

ग्रेढो—(न०)१. पता। निशान। २.मौका।

ग्रेण—(न०) १. हरिण। २. मृगचर्म। (सर्व०) १. इस। २. यह।

ग्रेणि—(सर्व०) १. इस। २. इसने। ३. इसको।

ग्रेणिपर—(ग्रव्य०)१. इस प्रकार। २. इस पर।

ग्रेतबार—(न०) विश्वास।

ग्रेतराज—(न०) ग्रापत्ति। उज्र।

ग्रेतलो—(वि०) इतना।

ग्रेतवार—(न०) रविवार।

ग्रेतां—(वि०) १. इतने। २. इतनों को।

ग्रेती—(वि०) इतनी।

ग्रेते—(वि०) इतने।

ग्रेतो—(वि०) इतना।

ग्रेथ—(क्रि० वि०) १. यहां। इस ग्रोर। इधर।

ग्रेम—(क्रि०वि०) १. इस प्रकार। ऐसे। २. उस प्रकार। उस तरह।

ग्रेम. ग्रे.—(न०) पारंगत विनयन (ग्रार्ट्स) शिक्षण की पदवी। (मास्टर ग्रॉफ ग्रार्ट्स)

ग्रेरंड—(न०) रैंडी। इरंडियो।

ग्रेरण—(न०) निहाई। ग्रहरन।

ग्रेरसो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का।

ग्रेराक—(न०) १. शराब। २. घोड़ा। ३. तलवार। ४. इराक देश।

ग्रेरिसो—(वि०) दे० ग्रेरसो।

ग्रेळची—(ना०) इलायची।

ग्रेलान—(न०) घोषणा।

ग्रेलावेलो—(न०) १. इधर उधर हो जाने के कारण परस्पर नहीं मिल सकने का भाव। २. बच्चों का एक खेल।

ग्रेळियो—(न०) ग्वारपाठे का सुखाया हुग्रा रस। एलुवा। मुसब्बर।

ग्रेळै—(ग्रव्य०) वृथा। बेकार।

ग्रेवं—(ग्रव्य०) इस प्रकार। ऐसा ही। २. और फिर।

ग्रेवज—(न०) १. गहना। २. बदला। ३. परिवर्तन। ४. स्थानापन्न।

ग्रेवज-पाटी—(ना०) १. सभी प्रकार के ग्राभूषण। २. सगाई-विवाह संबंधी ग्राभूषण। ३. ग्राभूषण वस्त्रादि।

ग्रेवजान—(ग्रव्य०) जगह में। परिवर्तन में। ग्रेवज में।

ग्रेवजानो—(न०) रुपये उधार देने के बदले में रखी जाने वाली रुपयों से ग्रधिक मूल्य की वस्तु। २. बदला। प्रतिकार। ३. प्रतिफल।

ग्रेवजियो—दे० ग्रेवजी।

ग्रेवजी—(न०) बदले में काम करने वाला व्यक्ति।

ग्रेवड़—*(न०)* भेड़-बकरियों का झुंड ।
ग्रेवड़-छेवड़—*(क्रि०वि०)* ग्रासपास । इधर-उधर । ग्राजूबाजू ।
ग्रेवड़ी—*(वि०)* इतनी ।
ग्रेवड़ो—*(वि०)* इतना ।
ग्रेवमस्तु—*(ग्रव्य०)* ऐसा ही हो ।
ग्रेवाळ—*(न०)* गड़रिया ।
ग्रेवाळियो *(न०)* गड़रिया ।
ग्रेवे—*(सर्व०)* वे ।
ग्रेसिया—*(न०)* पाँच महाद्वीपों में से एक ।
ग्रेह—*(सर्व०)* १. यह । २. इस ।
ग्रेहड़ी—*(वि०)* ऐसी ।
ग्रेहड़ो—*(वि०)* ऐसा ।
ग्रेहवो - *(वि०)* ऐसा ।
ग्रेहिज—*(सर्व०ब०व०)* १. येही । २ इन्होंने ही । *(वि०)* ऐसी ।
ग्रेहिजपरि—*(ग्रव्य०)* इस प्रकार ।
ग्रे ही—*(सर्व०)* १. येही । २. ये भी । ३. इन्हीं । ४. यही । यह । ५. इसी ।
ग्रेही—*(वि०)* ऐसी ।
ग्रेहो—*(वि०)* ऐसा ।
ग्रेंचाताणो—दे० ग्रैंचाताणो ।
ग्रेंजिन—दे० इंजन ।
ग्रेठ—*(ना०)* १. उच्छिष्ट । जूठन । २. घमंड । ३. ग्रकड़ । ४. मरोड़ ।
ग्रेठणो—*(क्रि०)* १. जूठा करना । २.चखना । ३. बल देना । मरोड़ना । ४. ग्रकड़ना । ५. गर्व करना । घमंड करना ।
ग्रेंठवाड़ो—*(न०)* जूठा । उच्छिष्ट । जूठन । *(वि०)* जूठा । उच्छिष्ट ।
ग्रेंठीजणो—*(क्रि०)* १ ग्रकड़ना । २ गर्व करना । ३. बल लगना । ४. मोड़ा जाना ।
ग्रेंठो—*(वि०)* १. जूठा । २. वह जिसमें ग्रेंठा लगा हो । ३. वह जिससे जूठन या जूठा हाथ स्पर्श होगया हो । (स्त्री० ग्रेंठी) *(न०)* जूठन ।
ग्रेंठो-चूंटो—दे० ग्रेंठो-जूठो ।
ग्रेंठो-जूठो—*(वि०)* जूठा । *(न०)* १.जूठन । उच्छिष्ट । २. इधर-उधर बिखरी हुई जूठन ।
ग्रेंडणो—*(क्रि०)* १. तोल करना । तोलना । २. ग्रनुमान करना । २. ग्रनुमान लगाना (वजन का) ।
ग्रेंडो—*(न०)* १. किसी के यहाँ भोजन के निमंत्रण पर साथ में ले जाया जाने वाला ग्रनिमंत्रित व्यक्ति । २. तोल । वजन । ३. किसी पात्र के ग्रंदर वस्तु को तोलने के पहले खाली पात्र को तोलने का वजन । *(वि०)* १. कठिन । २. विषम । दुर्गम ।
ग्रेंढणो—दे० ग्रेंडणो ।
ग्रेंढो—दे० ग्रेंडो ।
ग्रेंधाण—*(न०)* १. पहचान । निशानी । २. चिह्न । निशान । निशानी ।

ग्रै

ग्रै—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का नौवां (स्वर) वर्ण ।
ग्रै—*(सर्व०)* 'ग्रा' सर्वनाम नारी जाति ग्रौर 'ग्रो' सर्वनाम नर जाति का बहुवचन । ये । ये लोग ।
ग्रैड़ी—*(वि०)* ऐसी । इस प्रकार की । इसी ।
ग्रैड़ो—*(वि०)* ऐसा । इस प्रकार का । इसो ।
ग्रैठ-पैठ—*(ना०)* १. जानकारी । पहचान । परिचय । ग्रोळखाण । २. प्रतिष्ठा । ३. ख्याति ।

ग्रैतराज—(न०) ग्रापत्ति । विरोध । एतराज ।
ग्रैतरेय—(न०) १. इस नाम का एक उपनिषद् । २. ऋग्वेद का एक ब्राह्मण ग्रन्थ ।
ग्रैतिहासिक—(वि०) इतिहास से सम्बन्धित ।
ग्रैद—दे० ग्रहद ।
ग्रैदी—दे० ग्रहदी ।
ग्रैदीठौड़—(ना०) १. विकट स्थान । २. गुप्त स्थान ।
ग्रैधूळा—(न०)१. मौज । मस्ती । २. रागरंग . ३. मौजमजा ।
ग्रैधूळो—(वि०) १. मस्त । मौजी । २. वीर । ३. छैल । शौकीन । (न०)भूत ।
ग्रैन—(वि०) १. ग्रत्यन्त ठीक । २. उपयुक्त । ३. मुख्य । (ना०) १. प्रतिष्ठा । ग्रावरू । २. समाज या जाति की मर्यादा । ३. घर । ग्रयन । ४. ग्राश्रम । स्थान । ५. गति । चाल ।
ग्रैनरो—(वि०) १. वह जिसमें कष्ट सहने की शक्ति न हो । २. कामचोर । ३. ग्रमीर की तरह बना रहने वाला ।
ग्रैनाण—(न०) १. निशान । चिन्ह । २. लक्षण ।
ग्रैनाण-सैनाण—(न०) लक्षण, चिन्ह ग्रादि ।
ग्रैब—(न०) १. दूपण । २. खामी । ३. भूल । गलती । ४. ग्रवगुण । बुराई । ५. गुनाह । दोप । ग्रपराध । ६. कलंक । लांछन ।
ग्रैब-गैब—(क्रि०वि०) १. गुप्त रीति से । २. ग्रनजान से । ३. दृष्टि से बाहर ।(वि०) १. जिसका किसी को पता या ख्याल न हो । २. ग्रनहोनी ।
ग्रैबी—(वि०) १. दूपणवाला । २. बदमाश । ३. चालाक । ४. बेईमान । ५. दुष्ट । ६. ग्रंगहीन ।
ग्रैरण—दे० ग्रहरण ।
ग्रैराक—(न०)१. शराब । मद्य । २. इराक देश । ३. इराक देश का बाजा । ४. इराक का घोड़ा । ५. घोड़ा । (ना०) तलवार । खड्ग ।
ग्रैराकी—(वि०) इराक देश से संबंधित । (न०) १. घोड़ा । २. इराक का घोड़ा ।
ग्रैरापत—(न०) १. इन्द्र की सवारी का हाथी । ऐरावत । ऐरापति । सक्रवाह । २. गर्जन करता हुग्रा बिजली वाला बादल । विद्युत-मेघ । ३. विद्युत । बिजली ।
ग्रैरावत—दे० ग्रैरापत ।
ग्रैरावती—(ना०) १. रावी नदी । २. बिजली ।
ग्रैरू—(न०) सर्प । साँप ।
ग्रैरू-जांजरू—(न०) सर्प, बिच्छू ग्रादि विषैले जन्तु ।
ग्रैरो-गैरो—(वि०)१. हरकोई । साधारण । २. ग्रपरिचित । ३. उचक्का । ४. पराया । ५. तुच्छ । हीन ।
ग्रैलाण—(न०) १. रूपरंग । २. रंग ढंग । तौर-तरीका । ३. चिन्ह । निशान । ग्रहलाण । ग्रहनाण । ४. प्रसंग । ५. रहस्य । ६. लगाव । संबंध । ७. भूतभय । प्रेत । डर । ८. घोपणा । ऐलान । मुनादी ।
ग्रैलान—(न०)घोपणा । ऐलान । मुनादी ।
ग्रैवाकी—(वि०) १. दुष्ट । २. लुटेरा । ३. शत्रु ।
ग्रैवास—(न०) घर । ग्रावास ।
ग्रैश्वर्य—(न०)१. ग्रणिमा ग्रादि सिद्धियां । २. धन-सम्पत्ति । ३. प्रभुत्व । ४. विभूति ।
ग्रैश्वर्यवान—(वि०) ऐश्वर्यवाला । वैभवशाली ।
ग्रैस—(ग्रव्य०) १. इस वर्ष । वर्तमान वर्ष । ऐप । (न०) १. मौज-मजा । ऐश । २. भोगविलास ।

अँसके—(अव्य०)१. इस बार। २. इस वर्ष। वर्तमान काल।
अँसको—(वि०) इस बार का। वर्तमान वर्ष का।
अँसो—(वि०) ऐसा। इस प्रकार का।
अँहिक—(वि०) लौकिक। सांसारिक।
अँहिज—(सर्व०) ये ही।
अँही—(सर्व०) १. ये ही। ये भी।
अँचणो—(क्रि०) खींचना। तानना।
अँचाताणो—(वि०) जिसकी आंख का कोया और उसकी कीकी सामने नहीं हो। फिरी हुई आंख वाला। भेंगा।
अँठ—दे० अँठ।
अँठणो—दे० अँठणो।
अँठवाड़ो—दे० अँठवाडो।
अँठो—दे० अँठो।
अँठो-चूंटो—दे० अँठो-जूठो।
अँठो-जूठो—दे० अँठो-जूठो।
अँडणो - दे० अँडणो।
अँडे—(क्रि०वि०) इधर। यहां। अठै।
अँडो—दे० अँडो।
अँढ—(वि०)१. उपयोग में नहीं लिया जाने वाला। २. उपयोग में नहीं आ सकने वाला।
अँढणो—(क्रि०)१. तोल करना। २. अनुमान करना (वजन का)।
अँधाण—(न०) १. स्मृति रूप चिन्ह। २. स्मारक। अँनाण।
अँधी ठौड़—(ना०) अनजानी जगह। असेंधी जागा।
अँधो—(वि०) अपरिचित। असेंधो।

ओ

ओ—संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला का दसवां (स्वर) वर्ण।
ओ—(सर्व०) यह।
ओइंछणो—(क्रि०) १. मनेच्छा पूर्ण होने की शर्त पर भेंट के रूप में संकल्प की हुई वस्तु को आराध्य देव के अर्पण कर देना। इच्छापूर्ति होने पर देवता को भेंट चढ़ाना। २. न्योछावर करना। वारना।
ओईछणो - दे० ओइंछणो।
ओईजाळो—दे० ओसीजाळो।
ओक—(न०) १. समूह। २. घर। ३. आश्रय। ४. पक्षी। ५. शूद्र। ६. निशान। ७. अंजलि। ८. खप्पर। ९. कै। उलटी।
ओकणो—(क्रि०) १. निशान करना। लकड़ी या धातु में ओजार से निशान करना। २. निशाना लगाना। निशाने पर तीर लगाना। ३. शस्त्र प्रहार करना। ४. उलटी करना।
ओकर—(न०) १. ताना। उपालंभ। २. अपशब्द। ३. तुच्छकार। तुच्छार्थक शब्द।
ओकळी—(ना०) १. पानी के वेग से बहने के कारण पड़ने वाला खड्डा। २. रेती का छोटा धुस। पवन से उड़कर बना हुआ छोटा टीला। ३. इस प्रकार बने हुए टीले के पास का खड्डा। ४. टीबे पर हवा के वेग से बनी हुई बालू रेत के लहर या लहर माला।
ओकात—(ना०) १. हैसियत। बिसात। २. ताकत।
ओकारी—(ना०) १. वमन। कै। २. मिचली।
ओकीरो—(न०) वर्षाऋतु में गोबर में उत्पन्न होने वाला एक कीड़ा। गोगीड़ो।

ओख—(ना०) १. पर्व के दिन किसी आत्मीय की मृत्यु हो जाने के कारण, उस पर्व को उस दिन मनाने का निषेध। २. कमी। न्यूनता।

ओखण—(न०) मूसल। **सांबीलो।**

ओखणणो—(क्रि०) १. मूसल से ओखली में कूट कर नाज (के दानों) का छिलका दूर करना। **खांडणो।** २. उखेड़ना।

ओखणियो—(न०) मूसल। **सांबीलो।** (वि०) मूसल द्वारा ओखली में कूटने वाला।

ओखणो—(क्रि०) मूसल द्वारा ओखली में कूटना। (न०) मूसल।

ओखद—(ना०) औषधि। दवा।

ओखदी—(ना०) औषधि। दवा।

ओखध—दे० ओखद।

ओखर—(न०)१. विष्टा। मल। गू। २. गोबर। ३. नरक। ४. गंदगी।

ओखर बोलणो—(मुहा०)अशिष्ट बोलना। गाली गलौज देना।

ओखळण—(न०) १. प्रहार। चोट। २. नाश।

ओखळणो—(क्रि०) १. प्रहार करना। २. नाश करना।

ओखळी—(ना०) ओखली। दे० ओकळी।

ओखा—(ना०) अनिरुद्ध की पत्नी। उषा।

ओखाणो—(न०)१. उपाख्यान। २. कहावत। ३. उदाहरण। ४. दृष्टान्त।

ओखा मंडळ—(न०) द्वारका के पास का काठियावाड़ का एक भाग।

ओखी—(वि०) १. कठिन। २. दुःसाध्य। ३. दुर्लंध्य। ४. विकट। ५. अटपटी।

ओखीवार—(ना०) १. संकट काल। २. क्रांति काल।

ओखो—(वि०) १. अटपटा। २. कठिन। ३. दुःसाध्य। ४. दुर्लंध्य। ५. विकट।

ओगण—दे० ओगुण।

ओगणगारो—(वि०) औगुन वाला। दोषी।

ओगनियो—(न०) स्त्रियों के कान के ऊपर को लोल में पहने जाने वाला सोने या चांदी की एक लटकन। **पीपळ पतियो। पीपळ पान्यो।** (एक कान में ऐसे तीन-तीन पहने जाते हैं।)

ओगाळ—(ना) १. कलंक। लांछन। २. जुगाली।

ओगाळणो—(क्रि०) १. जुगाली करना। २. कलंकित करना। ३. जल्दी जल्दी खाना। पूरा चबाये बिना खाना।

ओगाळी—(ना०) जुगाली।

ओगाळो—(न०) चरने के बाद बचा हुआ डंठलों वाला नहीं खाने योग्य घास।

ओगुण—(न०) १. अवगुण। दुर्गुण। २. दोष। ऐब।

ओगुणगारो—(वि०) १. औगुन करने वाला। औगुनी। अवगुणी। २. अपराधी। दोषी।

ओगुणी—(वि०) १. अवगुणी। २. दोषी।

ओघ—(न०) १. समूह। राशि। २. घनापन। ३. धारा। ४. बहाव।

ओघट—(वि०) १. दुर्गम। २. विकट। भयंकर। ३. कठिन।

ओघड़—(न०) १. अघोरी। २. मस्त। ३. मनमौजी। ४. जोगी।

ओघम—(ना०) १. शरीर की उष्मा। २. धरती या मकान आदि से प्राप्त होने वाली उष्मा।

ओघमो—(न०) १. शरीर की उष्मा। २. धरती, मकानादि से प्राप्त होने वाली उष्मा। ३. वर्षागम की तपन।

ओघाट—(न०) दुर्गम स्थान।

ओघो—(न०) जैन साधु के पास रहने वाला रजोहरण। **रजोयणो।**

ओचींतो—(वि०) अचिन्त्य। अप्रत्याशित आकस्मिक। अनचीता। **अणचींतवियो।**

ओछ—(ना०) १. नीचता। ओछापन। क्षुद्रता। २. कमी। न्यूनता।

ओछटणो—(क्रि०) १. कूदना। २ भागना।

ओछणो—(क्रि०) १. ओछापन करना। क्षुद्रता दिखाना। २. ओछा होना। कम होना। घट जाना।

ओछव—(न०) उत्सव। उच्छव।

ओछाई—(ना०) १. क्षुद्रता। ओछापन। २. कमी। न्यूनता।

ओछाड़—(न०) १. थाली आदि में रखी हुई वस्तु को ढकने का वस्त्र। आच्छादन। २. भोजनाच्छादन। ३. कपड़े का ढक्कन। ४. ढकने का कपड़ा। ५. खोल। गिलाफ। ६. रक्षक।

ओछाड़णो—(क्रि०)१. ढकना। आच्छादित करना। २. पूर्ति करना। ३. रक्षा करना।

ओछाणो—(क्रि०) १. कम हो जाना। घट जाना। २. कम कर देना। घटा देना। (क्रि०भू०) कम होगया। घट गया।

ओछापणो—(न०) १. ओछापन। हलकापन। ओछाई। २. नीचता। क्षुद्रता। ३. कमी।

ओछा बोलो—(वि०) १. ओछा बोलने वाला। २. अशिष्ट भाषी।

ओछी—(वि०)१. कम। थोड़ी। २. छोटी। ३. अशिष्ट बोलने वाली। ४. ठिगनी। बौनी। ५. हीन। तुच्छ।

ओछी कापणी—दे० ओछी वाढणी।

ओछीजणो—(क्रि०) कम होना। घट जाना।

ओछी डाण—(ना०) ऊंट की एक चाल। धीमी दौड़।

ओछी वाढणी—(मुहा०) १. बात या काम के फैलाव को अधिक लंबाने से रुकना या रोकना। २. झंझट को फैलाने से रोकना। ३. हानिकारक बात का विस्तार नहीं करना।

ओछो—(वि०) १. कम। थोड़ा। २. नीच प्रकृति वाला। ३. अपशब्द बोलने वाला। अशिष्ट भाषी। ४. निंदा करने वाला। ५. ठिगना। बौना। ६. क्षुद्र। तुच्छ। हीन ७. छोटा।

ओज—(न०) १. बल। शक्ति। प्रताप। २. तेज। प्रकाश। ३. कान्ति। ४. शूरवीरता जगाने वाला काव्य।

ओजगो—(वि०) १. किसी की स्मृति में रात भर नींद नहीं लेने वाला। २. रात में जगना रहने वाला।

ओजगो—(न०) १. रात को नींद नहीं लेने या नहीं आने के कारण उत्पन्न आलस्य। नींद की खुमारी। उनींदापन। २. नींद का अभाव।

ओजतो—(वि०) १. उपयोग में लिया जा सकने योग्य। खपता। २. जिसके उपयोग करने में बहिन-बेटी के भाग की आपत्ति न हो। ३. अनुकूल।

ओजळा—(न०) (बिना सिंचाई के) केवल जमीन की तरी से होने वाले गेहूं।

ओजस—दे० ओज।

ओजस्वी—(वि०) ओजसवाला।

ओजार—(न०) औजार। उपकरण।

ओजूं—(क्रि०वि०) १. अभी। अब ही। २. अब भी। ३. अभी तक। ४. पुनः। और। फिर।

ओजो—(न०) खर्च में कमी तथा बचत करने की भावना। खर्च नहीं करना। बचत करने की मनोवृत्ति।

ओझकणो—(क्रि०) १. डरना। भय मानना। २. डर के मारे उछलना। ३. अचानक जाग उठना। चौंक कर जाग उठना। ४. चौंकना। ५. कांपना।

ओभड़—(क्रि०वि०) लगातार। (वि०) १.असंख्य। अपार। २. भयंकर। (ना०) १. झटका। २. चोट। प्रहार।

ओझड़-झड़—*(वि०)* १. प्रहारों को सहने वाला। २. क्षत-विक्षत। ३. प्रहार करने वाला। *(अव्य०)* प्रहारों पर प्रहार। *(क्रि०वि०)* प्रहारों को सहन करता हुआ।

ओझड़णो—*(क्रि०)* १. झटका मारना। २. प्रहार करना। ३. युद्ध करना। ४. लड़ना।

ओझणो—*(क्रि०)* दे० ओवणो। *(न०)* गौना की विदाई के समय कन्या को दिये जाने वाले वस्त्राभूषण आदि। दहेज। दात। **दायजो**।

ओझर—*(न०)* १. पेट। २. आँत।

ओझरी—*(ना०)* १. पेट। २. बढ़ा हुआ पेट।

ओझरो—*(न०)* दे० ओझरी।

ओझळ—*(वि०)* १. अप्रकट। अप्रत्यक्ष। २. अदृष्ट। अदृश्य। ३. अंतर्द्धान। तिरोहित। *(न०)* १. अप्रकटता। अप्रत्यक्षता। २. तीव्र ज्वाला। *(क्रि०वि०)* १. अप्रकट रूप से। अप्रत्यक्षता से। २. अदृष्ट।

ओझळणो—*(क्रि०)* १. बुझाना। २. बुझना। ३. मिटना। मिटाना। ४. गायब होना। लुप्त होना। ५. कूदना। ६. जलना।

ओझो—दे० १. ओझो। २. ब्राह्मणों की एक अल्ल। उपाध्याय। ३. झाड़ा-झपटा करने वाला।

ओट—*(ना०)* १. शरण। २. आड़। ३. रोक। रुकावट। ४. सहारा। ५. बखिया की सिलाई।

ओटणी—*(ना०)* १. बखिया की सिलाई। तुरपाई। तुरपन। २. तुरपन की मजदूरी। ३. रूई और कपास अलग करने की क्रिया।

ओटणो—*(क्रि०)* १. एक प्रकार की सिलाई करना। २. बखिया की सिलाई करना। बखियाना। ३. चरखी के द्वारा रूई और कपास को अलग करना। ४. अग्नि को राख से ढकना। ५. दूध आदि को उबाला देकर गाढ़ा करना।

ओटली—*(ना०)* चबूतरी। **चोंतरी**।

ओटलो—*(न०)* चबूतरा। **ओटो**। **चोंतरो**।

ओटवणो—*(क्रि०)* १. अधिकार में लेना। २. दबाना।

ओटाई—*(ना०)* १. ओटने का काम। २. ओटने की मजदूरी।

ओटाणो—*(क्रि०)* दूध आदि को उबाला देकर गाढ़ा करना।

ओटावणो—दे० ओटाणो तथा ओटीजणो।

ओटाँटळो—*(वि०)* १. कड़ी गर्दन वाला। जिसकी गर्दन अकड़ गई हो। २. दुबला-पतला। ३. अड़ियल। ४. झगड़ालू।

ओटाँटीजणो—*(क्रि०)* वायु से गर्दन का अकड़ जाना।

ओटो—*(न०)* १. चबूतरा। **चोंतरो**। २. तालाब, बंध आदि में परिमाण से अधिक आये हुये पानी को निकालने के लिये बनाया हुआ मार्ग। जलाशय में समा सकने की शक्ति के उपरान्त पानी के निकलने का बनाया हुआ मार्ग। ३. शरण। सहारा।

ओठ—*(ना०)* १. शरण। २. सहारा। मदद। ३. रोक। रुकावट। ४. एकान्त जगह। ५. परदा। ६ होंठ।

ओठक—*(न०)* १. ऊंट। २. ऊंट, ऊंटनी, टोड आदि। ऊंट जाति। ऊंट धन। *(वि०)* ऊंट संबंधी। ऊंट का।

ओठक-पड़तल—*(न०)* ऊंट के ऊपर कसा जाने जाने वाला काठी-गद्दा आदि सामान।

ओठम—*(वि०)* १. रक्षक। २. सहायक। ३. पोषक। *(ना०)* १. आश्रय। शरण। २. सहायता। मदद।

ओठंभो—*(न०)* १. आश्रय। २. शरण।

ओठारू—*(न०)* ऊंट, ऊंटनी और उसके बच्चे। ऊंट धन। ऊंट समूह। २. ऊंट या ऊंटनी। ३. साँड़नी। ऊंटनी। *(वि०)* ऊंट संबंधी।

ओठी—*(क्रि०वि०)* उधर। *(न०)* १. ऊंट-सवार। शुतुर सवार। २. उष्ट्रारोही-दूत। *(वि०)* ऊंट संबंधी। ऊंट का।

ओठीजट—*(ना०)* ऊंट के काटे हुये बाल। ऊंट के बाल।

ओठीपो—*(न०)* १. आजीविका के लिये ऊंट के द्वारा सवारी ले जाने, माल लादने आदि का किया जाने वाला धंधा। २. ऊंटों के क्रय-विक्रय का काम। ऊंटों के व्यापार का काम। ३. राज्य की शुतुरसवारी की नौकरी का काम। ४. ऊंटों का प्रदेश (जैसलमेर)।

ओठै—*(क्रि०वि०)* १. वहाँ। २. उधर।

ओठो—*(न०)* १. उदाहरण। मिसाल। दृष्टान्त। २. परदा। ३. उपालंभ। ताना। ४. एकान्त। ५. सहारा। मदद। *(वि०)* ऊँट संबंधी। ऊंट का। *(वि०)* १. खराब। बुरा। २. ऊंट से संबंधित।

ओठो दूध—*(न०)* ऊंटनी का दूध।

ओड—*(न०)* १. मिट्टी खोदने का काम करने वाला व्यक्ति। २. एक जाति। वेलदार। ३. किनारा। *(वि०)* समान। वरावर। *(ना०)* ओर। तरफ।

ओड़—*(ना०)* १. समानता। वरावरी। २. समुद्र का किनारा। ३. गांव का किनारा। *(ना०)* ओर। तरफ। *(वि०)* समान। वरावर।

ओडण—*(ना०)* १. ओड की स्त्री। २. ओड जाति की स्त्री। ३. ढाल। फलक।

ओडणो—*(क्रि०)* १. प्रहार करना। २. प्रहार हेतु हाथ या शस्त्र उठाना। ३. तैयार करना। ४. झेलना। थामना। ५. ग्रहण करना। ६. ढकना।

ओडव—*(ना०)* ढाल। फलक।

ओडवणो—*(क्रि०)* ढक देना। ढकना। २. ढाल से रक्षा करना।

ओडंडी—*(ना०)* १. मुक्की। मुट्ठी। दे० ओडंडीस।

ओडंडीस—*(वि०)* १. उद्दण्ड। २. जवर-दस्त।

ओडी—*(ना०)* १. टोकरी। डलिया। २. (ओडा से छोटा) घास का नाप।

ओडो—*(न०)* १. बड़ा टोकरा। २. कुतर किये हुए घास-चारे का एक नाप।

ओड़ो—दे० ओहड़ो। *(वि०)* उस तरह का वैसा। ऊड़ो।

ओढ—*(ना०)* सिंचाई के लिये कुंएँ पर रहने वाले वैलों और मनुष्यों के लिये बने घास के छाजन। हाळी, वैल आदि के रहने के लिये कुँएँ पर बने हुये अस्थाई निवास के पड़वे-झोंपड़े।

ओढण—*(न०)* १. ओढ़ने का वस्त्र। २. ढाल। ३. युद्ध में रक्षा का साधन।

ओढणियो—*(न०)* ओढ़नी या ओढ़ना के लिये ऊनता सूचक शब्द। ओढ़ना। ओढणो।

ओढणी—*(ना०)* १. स्त्री के ओढ़ने का एक वस्त्र। ओढ़नी। २. चुनरी।

ओढणो—*(न०)* १. स्त्री के ओढ़ने का एक वस्त्र। ओढ़ना। *(क्रि०)* १. वस्त्र से शरीर को ढाँकना। २. जिम्मेवारी लेना। ३. धारण करना।

ओढाड़णो—*(क्रि०)* उढ़ाना।

ओढामणी—दे० ओढावणी।

ओढाळणो—*(क्रि०)* दरवाजा वंद करना। किवाड़ ढकना।

ओढावणी—*(ना०)* १. विवाह में कन्या के पिता की ओर से वर के माता-पिता आदि कुटुम्बीजनों को पघड़ी, दुपट्टा, ओढ़ना, रुपये आदि भेंट देकर किया जाने

वाला बरात की विदाई के समय का सम्मान। पहरावणी। २. दहेज।

ओढावणो—(क्रि०) वस्त्र से शरीर ढाँकना। उढ़ाना।

ओढो—(वि०) १. दुर्गम। विकट। बोढो। २. जबरदस्त। बलवान। ३. भयावना। डरावना।

ओण—(न०) पाँव। चरण। (अव्य०) और। फिर। दे० ओरण।

ओत-- (प्रत्य०) १. एक अपत्य प्रत्यय। २. पुरुष के नाम के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय जिसका अर्थ–'का पुत्र' होता है। जैसे—'रघुनाथ करमसीओत' अर्थात् 'रघुनाथ करमसी का पुत्र'। ३. पुरुष नाम के अंतिम अक्षर की 'अ' की मात्रा से संधि-विकार होने से बनने वाले 'उत' शब्द का 'ओत' रूप। (न०) सुत। पुत्र। पूत।

ओतप्रोत—(वि०) १. एक दूसरे के साथ मिला हुआ। २. तल्लीन। तन्मय।

ओतर—(ना०) १. बरात को दी जाने वाली विदाई। २. बरात की विदाई की अंतिम रस्म। ३. दहेज। दायजो।

ओतर देणी—(मुहा०)१. बरात को पहरावनी करना। २. दहेज देना।

ओतरादो—(वि०) उत्तर दिशा का। उतरादो।

ओथ—(क्रि०वि०) उधर। वहाँ। उठै। (ना०) १. हानि। नुकसान। घाटो। २. कमी। ३. सहारा।

ओथणो—(क्रि०) १. अस्त होना। २. कलंकित होना। ३. अवनत होना। बुरे दिन देखना। दुर्दशा होना। ४. पराजित होना। हारना। ५. मरना।

ओथरणो—(क्रि०) १. उमड़ कर आना। २. हमला करना। ३. झोला पड़ना। ४. हानि उठाना।

ओथियें—(क्रि०वि०) वहाँ। उधर। उस जगह। उठै। ओठै।

ओद—(ना०) १. बल, वीर्य और गुण आदि में वंश की परम्परा। २. वंश। खानदान। ओध।

ओदण—(न०) १. बैलगाड़ी के पट्टों के आधार की मोटी बल्लियाँ। तख्ते के नीचे के लंबे डंडे। २. ओदन। भात।

ओदनिक—(न०) रसोईदार।

ओदर—(ना०)१. किसी धातु में बेमेल की धातु का मिश्रण। जैसे–सोने में लोहा, तांबा आदि। २. पेट। उदर।

ओदी—(ना०) शिकार के लिये बैठने का ऊँचा और गुप्त स्थान।

ओद्रक—(न०) भय। डर। आतंक।

ओद्रकणो—(क्रि०) १. भय मानना। २. डरना। घबराना। भयभीत होना। ३. आश्चर्य करना। ४. संपूर्ण शक्ति व वेग के साथ आक्रमण करना।

ओद्राव—(न०) भय। आतंक।

ओध—(ना०) १. वंश। कुल। ओद। २. समूह। ३. खिचड़ी, पकवान्न आदि भोज्यपदार्थों का पैंदे में जल जाने से होने वाला स्वाद-परिवर्तन।

ओधकणो—(क्रि०) डरना। चौंकना।

ओधणो—(क्रि०) खिचड़ी, पकवान्न आदि भोज्यपदार्थों का पकाते समय पैंदे में जल जाना।

ओधीजणो—दे० ओधणो।

ओधूळा—(न०) मौज। हँसी-दिल्लगी। मजा। अंधूळा। (वि०) निडर। निर्भय। (क्रि०वि०) निर्भय होकर।

ओधो—(वि०) पैंदे में जला हुआ। (खिचड़ी आदि भोज्यपदार्थ)।

ओन—(न०) १. मार्ग। २. निकास।

ओनाड़—(वि०) १. योद्धा। वीर। २. अनम्र। अवनाड़।

ओप—*(न०)* १. शोभा । २. चमक । प्रकाश । ३. कान्ति । ४. पॉलिश । ५. कवच । *(वि०)* सदृश । समान ।

ओपणी—*(ना०)* सोने चाँदी के आभूषणों आदि पर जिलह देने का अकीक का मत्स्याकार टुकड़ा । ओपनी । *(क्रि०)* चमक देना । पॉलिश करना ।

ओपणो—*(क्रि०)* १. फबना । शोभा देना । २. शोभा पाना । ओपना । ३. चमक लाना । पॉलिश करना । ओपना । ३.योग्य ठहरना । उपयुक्त होना । ४. उपयुक्त स्थान पर स्थित होना ।

ओपत—दे० उपत ।

ओपतो—*(वि०)* १. फबता । फबता हुआ । सजता हुआ । २. सुंदर । ३. उचित । *(अव्य०)* १. यथाविधि । विधि अनुरूप । २. यथास्थान । ठीक जगह पर ।

ओपम —*(ना०)*१. उपमा–*(वि०)* १. उपमा योग्य । २. सुन्दर ।

ओपमा—*(ना०)* १. उपमा । सादृश्य । समानता । २. तुलना । मिलान । ३. शोभा । सुंदरता । ४. चिट्ठीपत्री में लिखा जाने वाला प्रशंसा सूचक वाक्य । प्रशस्ति ।

ओपरो—*(वि०)* १. उचक्का । २. लुच्चा । ३. सामान्य गुणों से रहित । ४. अजनबी । अपरिचित ।

ओपासरो—दे० उपासरो ।

ओफिस—*(न०)* कार्यालय । दफ्तर ।

ओफिसर—*(न०)* अधिकारी । अफसर ।

ओबासी —*(ना०)* उबासी ।

ओम—*(न०)* १. ओम् । ओंकार । २. परब्रह्म । ३. व्योम । आकाश ।

ओमगोम—*(न०)* १. आकाश और पृथ्वी । २. ब्रह्म और सृष्टि ।

ओमाहणो —दे० ऊमाहणो ।

ओयण—*(न०)* १. शूद्र । २. पाँव ।

ओरड़ी—*(ना०)* छोटी कोठरी ।

ओरड़ो—*(न०)* १. कोठरी । कोठा । २. एक द्वार वाली कोठरी ।

ओरण—*(ना०)* १. जंगल का वह भाग जो किसी देवी-देवता के नाम अर्पित और रक्षित होता है । जिसमें वृक्ष की लकड़ी नहीं काटी जाती और खेती नहीं होती । देवारण्य । अरण्य । रखत । २. गोचर भूमि । रखा । रखत ।

ओरणो—*(क्रि०)*१. खौलते हुये पानी में दाल आदि का डालना । २.पीसने के लिये चक्की के गाले में नाज डालना । ३. सेना को ललकार कर युद्ध में प्रवर्त्त करना । युद्ध में झोंकना । ४. सीमा लांघना । मर्यादा लांघना । ५. घोड़े को वेग से युद्ध में डालना ।

ओरतो—*(न०)* १. धोखा । २. पश्चाताप । पछतावो । ३. संदेह । शक । ४. अभिलाषा । ५. आनंद की उत्कंठा ।

ओरस—*(ना०)* १. दुःख । ग्लानि । २. लज्जा । लाज ।

ओरसियो—*(न०)* चंदन घिसने का पत्थर का चकलोटा ।

ओरसो—*(वि०)* दुखदाई । अनखावना । अणखावणो ।

ओरा—*(क्रि०वि०)* १. यहाँ । इधर । २. समीप । पास ।

ओरी *(ना०)* १. चेचक जैसा एक रोग । छोटी चेचक । २. छोटा कमरा । कोठरी । ओरड़ी ।

ओरीजणो—दे० ऊरीजणो ।

ओरीसो—दे० ओरसियो ।

ओरूं—*(क्रि०वि०)* और । फिर । वळै । फेर ।

ओरो—दे० ओरड़ो ।

ओळ—*(ना०)* १. पँक्ति । २.श्रेणी । ३.हल से खेतमें खींची जाने वाली रेखा । ऊमरो ।

४. जमानत के रूप में बंदी या सेवक बना कर रखा जाने वाला आदमी। ५.जमानत के रूप में आदमी की रहन। ६. परम्परा। वंश परम्परा। पीढी। ७. पैतृक-संस्कार। वंश-गुण। ८. ओट। आड़। ९. वंश। संतति। *(वि०)* १. परम्परागत। २. समान। बराबर।

ओळख—*(ना०)* पहिचान। परिचय।

ओळखणी—दे० ओळख।

ओळखणो—*(क्रि०)* पहिचानना। परिचय प्राप्त करना।

ओळखाण—*(ना०)* पहिचान। जान-पहिचान। परिचय।

ओळग—*(ना०)* १. सेवा। चाकरी। २. स्तुति। सुमिरण। ३. याद। स्मृति। ४. विदेश-प्रवास। ५. यात्रा। ६. गुण। प्रशंसा। कीर्त्तिगान। ७. खुशामद। ८. गायन। गाना। ९. लड़की को पीहर से ससुराल ले जाने के लिये अथवा ससुराल से पीहर ले जाने के लिये आने वाला बुलावा। आणो। १०. भक्ति। ११. उल्लंघन।

ओळगण—*(ना०)* १. यश। कीर्ति। २. विदेश-प्रवास। ३. ढाढ़िन। गायिका। गाने वाली। ४. भंगिन। महतराणी। भंगण।

ओळगणो—*(क्रि०)* १ गुण गाना। यशो-गान करना। २. स्तुति करना। बड़ाई करना। ३. उच्च स्वर से गाना। गायन करना। ४ उल्लंघन करना। *(वि०)* परदेशी।

ओळगवो—*(वि०)* १. गुण गान करने वाला। २. भक्त। ३. गाने वाला।

ओळगाणी—*(ना०)* १. गाने वाली। गायिका। २. ढाढ़िन। ३. भंगिन। महतराणी।

ओळगाणो—*(न०)* १. विदेशी। २. प्रवासी। *(न०)* ३. ढाढ़ी। ४. भंगी। महतर। ५. प्रवासी पति। प्रवासी प्रियतम।

ओळगियो—*(न०)* परदेशी। प्रवासी।

ओळगू—*(न०)* १. परदेशी। प्रवासी। २. स्तुति गायक। ३. गाने वाला।

ओलज—*(ना०)* लाज। शर्म।

ओलण—*(न०)* रोटी के साथ खाया जाने वाला साग, तरकारी आदि। जिससे रोटी, सोगरा, पूरी, चावल आदि लगा कर खाया जाय वह द्रव-व्यंजन। साग-तरकारी। खाटो।

ओलणो—*(क्रि०)* १. साग भाजी आदि में रोटी आदि के टुकड़े कर दोनों को मिला देना। २. किसी गीले या तरल पदार्थ में किसी वस्तु के टुकड़े कर या पीस कर उसमें मिला देना। मिश्रित करना।

ओळणो—*(क्रि०)* १. सिर के बालों में कंघा करना। उलझे हुये बालों को कंघा करके सुलझाना। २. उलझन मिटाना। सुलझाना।

ओळभो—*(न०)* उलाहना। उपालम्भ। ठपको।

ओळमो—दे० ओळभो।

ओलरणो—*(क्रि०)* १. घटा का उमड़ना। २. घटा का झुक कर बरसना। ३. तेज वर्षा होना। ४. आँखों में से पानी पड़ना। आँसू ढलना। ५. प्रतीक्षित समय का आ पहुँचना। ६. आना। ७. लगना।

ओळंग—दे० ओळग।

ओळंदी—दे० ओळंबी।

ओळंबी—*(न०)* नवविवाहिता के प्रथम बार ससुराल जाने के समय साथ जाने वाली सखिन। अनुवर्तिनी। मन लगनी। साथण।

ओळंभो—दे० ओळभो।

ओळाओळ—*(क्रि०वि०)* एक के बाद एक पंक्ति में। पंक्तिबद्ध। हारबंध।

ओला-छाना—(न०) १. मिस । बहाने । २. अस्पष्टता ।

ओलाद—(ना०) औलाद । संतान । केड़ ।

ओळावो—(न०) १. आड़ । ओट । २. परदा । घूंघट । गूंघटो । ३. बहाना । मिस ।

ओलांडणो—(क्रि०)१. छोड़ना । त्यागना । २. अस्वीकार करना । ३. अवज्ञा करना । ४. उल्लंघन करना । लाँघना । ५. उलटना । पलटना । औंधा करना ।

ओळाँतरो—(न०) दूर और सुरक्षित स्थान । दूर एकान्त जगह ।

ओळियो—(न०) १. पत्र । चिट्ठी । २. संक्षिप्त रूप से लिखा जाने वाला पत्र । ३. पत्र लिखने का सँकड़ा और लम्बा कागज । ४. संक्षिप्त पंचांग । ५. जमानत के रूप में आदमी की रहन । ओळ । ६. रहन रखा हुआ आदमी सागड़ी । ७. हस्तलिखित ग्रंथों के कागज पर बिना स्याही की रेखाएँ उभारने के लिये बनी हुई एक ऐसी काष्ट-पट्टी जिसके लंबाई के दोनों सिरों पर समानान्तर में आमने सामने २० २५ छेद बनाये होते हैं, जिनमें लंबाई की ओर मोटे धागों को ग्रथित करके चिपका दिया जाता है । लिखे जाने वाले कागज को उस पट्टी पर रख कर अँगुलिएँ फिराई जाती हैं, जिससे रेखाएँ (ओळियाँ) उभर आती हैं । कागज पर ओळी (रेखा) उभारने की एक काष्ट पट्टी । दे० फांटियो ।

ओळी—(ना०) १. पँक्ति । २. लकीर । ३. चंदा । अनुदान । ३. जैनियों का एक समूह व्रत ।

ओली कानी—(अव्य०) १. इस ओर । २. उस ओर ।

ओळी-दोळी—(क्रि०वि०) १. चारों ओर । २. आस-पास ।

ओळी माँडणो—(मुहा०) चंदे में रुपया देना । चंदे में नाम लिखाना ।

ओळी में बैठणो—(मुहा०) ओळी व्रत के दिन सहयोगियों के साथ उपाश्रय में बैठ कर उपवास और धर्म-ध्यान करना ।

ओळींतर—(वि०) निकम्मा ।

ओळू—(ना०) प्रेमी की वियोग जनित स्मृति । २. एक लोकगीत । ओळूड़ी ।

ओळूड़ी—(ना०) 'ओळू' की स्नेह प्रेरित ऊन संज्ञा । दे० ओळू ।

ओळूंबो—(न०) साँप-बिच्छू आदि जहरीले जतुओं के काटने पर रह रह कर अथवा प्रवाह की भाँति होने वाला दर्द ।

ओळै—(क्रि०वि०)१. ओट में । २. संरक्षण में । ३. गुप्त रीति से ।

ओलै—(वि०) १. इस । २. उस ।

ओलै कानी—दे० ओली कानी ।

ओलो—(न०) १. ओट । आड़ । २. परदा ।

ओळो—(न०) १. कोठरी । झोंपड़ी । २. ओट । परदा । ३. कंद या चीनी का बना लड्डू । मिसरी का लड्डू । खंडोरा । ४. वर्षा के जलकणों से जमा हुआ गोला । ५. शरण । ६. बचाव । रक्षा । ७. ठंड, ताप और वर्षा से बचने के लिये बैलों के लिये बनाया गया ओरड़ा ।

ओलो-दोलो—(वि०) १. ओला-दोला । मौजी । २. उदार । ३. लापरवाह ।

ओल्हरणो—(क्रि०)१. बरसना । २. बढ़ना । तरंग का उठना । ३. प्रवेश करना । ४. शुरू होना । ५. एक मास समाप्त होने के बाद दूसरे मास का प्रारम्भ होना । जैसे—गौरी नै बीजोड़ो मास ओल्हरियो । (सोहर गीत) ।

ओल्हो—(न०)१. मिस । बहाना । २.आड़ । ३. शरण । (वि०) बचता हुआ । छिपता हुआ । भागता हुआ ।

ओवरी—(ना०) छोटी कोठरी । ओरी । ओरड़ी ।

ओवरो—(न०) १. साल के अंदर का कोठा (कमरा) । ओरो ।

ओवारणो—(क्रि०) १. निछावर करना । वारना । ओइंछणो । ओंइछना । २. निछावर होना ।

ओवासणो—(क्रि०) दे० ओहासणो ।

ओस—(ना०) १. शबनम । तुषार । २. पाला ।

ओसण—(वि०) कटु । कडुआ ।

ओसणणो—(क्रि०) आटा गूंधना । माँड़ना । सानना । मसळणो ।

ओसणो—दे० ओळणो ।

ओ-स-तो—(अव्य०) यह लो ।

ओसर—(न०)१. अवसर । मौका । समय । २. कोई खास वक्त । संयोग । ३. मौके की बात । ४. मृतक-भोज । मौसर । ओसर । न्यात ।

ओसरणो—(क्रि०) १. घटा का बरसना । मेह का बरसना शुरू होना । २. आँसू आना । ३. गोले, बाण आदि की झड़ी लगना । अस्त्र-शस्त्रों का बरसना । ४. प्रभाव होना ।

ओसर-मोसर—(न०) १. बृहत् मृतक भोज । मृतक का बड़ा न्याति भोज । न्यात । मौसर । ओसर । २. छोटा-बड़ा न्याति भोज ।

ओसरी—(ना०) १. मकान की भींत के सहारे खुली जगह में बनी हुई छाजन । वारजा । ओसरी । ओहरी । २. छोटा दालान । वरंडा । बरामदा ।

ओसरो—(न०) १. अवसर । २. बारी । पारी ।

ओसळणो—दे० ओळणो ।

ओसवाळ-(न०) १. एक वैश्य जाति । २. इस जाति का व्यक्ति ।

ओसवाळण-(ना०) ओसवाल स्त्री ।

ओसंक—(न०)१. भय । आतंक । २. पराजय । हार । ३. घबराहट ।

ओसंकणो—(क्रि०) १. डरना । २. पराजित होना । ३. घबराना ।

ओसाण—(न०) १. अवसर । मौका । २. अवसान । सुध-बुध । होश-हवास । ३. अवसान । समाप्ति । मृत्यु । ४. अहसान । उपकार ।

ओसाप—(न०) १. यश । कीर्ति । २. शोभा । महिमा । ३. वैभव । ४. महत्त्व । ५. गुण । योग्यता । ६. उपकार । अहसान । ७. पराक्रम । शौर्य । ८. साहस । हिम्मत ।

ओसामण—(न०) १. चावलों के पक जाने के बाद उनमें से निकाला जाने वाला इजाफे का पानी । माँड़ । २. अग्नि पर पकाई जाने वाली वस्तु का उसके पक जाने के बाद निकाला गया अधिक पानी । ३. दाल का छौंका हुआ पानी ।

ओसार—(न०) दीवाल की मोटाई । भींत की चौड़ाई । आसार ।

ओसारो—(न०) ओसारा । दालान । वरंडा । २. ओसरी । बारजा ।

ओसावण—दे० ओसामण ।

ओसावणो—(क्रि०) चावलों के पक जाने पर उनमें रहे हुये अधिक पानी (माँड़) को निकालना ।

ओसियाळो—(न०) १. किसी के किये गये उपकार के बदले में सहन की जाने वाली पराधीनता । २. लाचारी । (वि०) १. लाचार । २. उपकार से दबा हुआ । ३. पराश्रित ।

ओसीजाळो—(न०) १. अव्यवस्थित वस्तुओं का ढेर । २. निकम्मी वस्तुओं का अव्यवस्थित ढेर । ३. तितर-बितर पड़ा हुआ सामान ।

ओसीसो-(न०)१. तकिया । २. सिरहाना ।

ओसो—(न०) आंख में डाली जाने वाली एक औषधि ।

ओहटणो—(क्रि०) १. आच्छादित होना । ढँक जाना । २. ढक देना । ३. हटना ।

औघट—(वि०) १. दुस्साध्य । कष्टसाध्य । दुर्गम २. कठिन । ३. विना सँवारा हुआ । अस्त-व्यस्त । छिन्न-भिन्न ।

औघड़—दे० ओघड़ ।

औघणो—(क्रि०) १. इस प्रकार आपस में मिलना कि बीच में कुछ भी जगह न रहे । सटना । चिपकना । भिचना । भिंठना । भिचीजणो । २. रगड़ खाना । २. घर्पण करना ।

औछाड़—(न०) ढँकने का वस्त्र । ढक्कन । आच्छादन ।

औछाड़णो—(क्रि०) ढँकना । आच्छादित करना ।

औछाप—(ना०) बड़प्पन । महत्व ।

औछाह—(न०) १. उत्सव । २. उत्साह ।

औछाही—(वि०) उत्साही ।

औछाहो—दे० औछाह ।

औंजळ—दे० ओजळा ।

औजस—(न०) अपयश ।

औजार—(न०) १. काम करने का साधन । लुहार, बढ़ई आदि शिल्पियों के काम करने का उपकरण । २. उस्तरा । पाछणो ।

औझड़—(न०) शस्त्र प्रहार का शब्द । (क्रि०वि०) निरंतर । लगातार ।

औझड़णो—(क्रि०) १. शस्त्र प्रहार करना । २. शस्त्र प्रहार का शब्द होना । ३. लगातार प्रहार करना ।

औटाणो—दे० औटावणो ।

औटावणो—(क्रि०) दूध आदि को आँच देकर गाढ़ा करना । औटाना ।

औड़ो—(न०) १. गुरुजनों की बात का दिया जाने वाला असभ्यतापूर्वक उत्तर । बड़ों को टोकना । २. उत्तर ।

औदर—दे० ओदर ।

औदसा—(ना०) अवदशा । दुर्दशा ।

औद्रकणो—(क्रि०) १. डरना । भयभीत होना । २. धड़कना (दिल का) ।

औद्राक—(न०) भय । डर ।

औद्राव—(न०) आतंक । रौब ।

औद्राह दे० औद्राव ।

औध—(ना०) अवधि । समय ।

औधकणो—(क्रि०) डरना । चौकना ।

औधायत—(न० ओहदेदार । पदाधिकारी ।

औधारणो—(क्रि०) १. उद्धार करना । अवधारना । २. ग्रहण करना । धारण करना । ३. उधार खाते लिखना । लेखे (लहना, लेना) लिखना । बही में उधार बाजू में किसी के नाम रकम लिखना ।

औधो—(न०) ओहदा ।

औनाड़—(वि०) १. अनम्र । २. जबरदस्त । ३. वीर । ३. गहलोत वंश का ।

और—(अव्य०) शब्द और वाक्य का एक संयोजक शब्द । (वि०) १. अन्य । दूसरा । निराला । अपर । अवर । २. अधिक । ज्यादा । (क्रि०वि०) १. अतिरिक्त । सिवाय । २. फिर । पुनः ।

और ठै—(अव्य०) और ठौर । दूसरी जगह ।

औरत—(ना०) १. स्त्री । नारी । महिला । २. पत्नी ।

औरतो—(न०) १. पश्चात्ताप । उरस्ताप । २. संदेह । वहम ।

औरवी—(वि०) दूसरा ।

औरवियाँ—(अव्य०) १. दूसरे लोगों को । दूसरे लोगों के पास । (न०) दूसरे लोग ।

औरस—(न०) विवाहिता पत्नी से उत्पन्न पुत्र ।

औरंग—(न०) औरंगजेब ।

औरगसाह—दे० अवरंगसाह ।

कख-(न०) १. तिनका। फूस। तिणको। २. जंगल। ३. आँख का कोना।

कगवा-(ना०) १. ज्वार की एक जाति। २. सफेद ज्वार। जोन्हरी। ३. कंगनी नाम का अन्न।

कच-(न०) १. केश। बाल। २. घँसने का शब्द। (वि०) कच्चा। अपक्व।

कचकच-(ना०) १. बक-झक। किचकिच। माथापच्ची। २. हुज्जत। झौड़। कजियो। वाग्युद्ध।

कचकोळी-(ना०) काँच की चूड़ी।

कचबीड़ी-(ना०) काँच के टुकड़ों से मंडित लाख की चूड़ी।

कचर-(न०) १. कचरा। चूरा। (वि०) टूटा हुआ। फटा हुआ। विर्दीण।

कचर-कचर-(न०) १. कच्चा फल खाने का शब्द। २. हर समय खाते रहना। ३. कचकच। बकझक।

कचरघाण-(न०) १. संहार। नाश। २. कीचड़।

कचरणो-(क्रि०) १. कुचलना। रौंदना। २. खूब खाना। ३. खाते रहना।

कचरो-(न०) कूड़ा-करकट।

कचाट(-ना०) १.कच्चापन। २.अधूरापन। अपूर्णता। ३. कंजूसी।

कचावट-(ना०) १. कच्चापन। कच्चाई। २. अनुभव हीनता। ३. अपूर्णता।

कचूमर-(न०) किसी फल को कुचल कर बनाया गया अचार। दे० छूंदो।

कचेड़ी-(न०) कचहरी। न्यायालय। अदालत।

कचेरो-(ना०) १. कांच की चूड़ियाँ बनाने वाला तथा बेचने वाला व्यक्ति। २. कचेरा जाति का व्यक्ति। कचारा।

कचोट-(ना०) १. दुःख। रंज। शोक। २. मानसिक पीड़ा।

कचोटीजणो-(क्रि०) दुखी होना।

कचोटीजणो-(क्रि०) दुखी होना।

कचोरी-(ना०) बेसन या दाल की पीठी में मसाले भर कर बनाई जाने वाली मैदे की पूरी। कचौड़ी।

कचोळी-(ना०) कचोरी। २. कटोरी। ३. पानी की डोल।

कचोळो-(न०) १. कटोरा। २. कुएँ में से सींच कर पानी निकालने की डोल।

कच्चाई-(ना०) १. अपूर्णता। २. अनुभव-हीनता। ३. कच्चापन। ४. मन की दुर्बलता। कमजोरी। कचावट।

कच्ची रसोई-(ना०) वे भोज्य पदार्थ जो तले हुये न हों। पानी के योग से पकाई गई दाल, साग, रोटी, चावल आदि।

कच्ची रोकड़-(ना०) वह वही जिसमें कच्चा या उबरत हिसाब लिखा जाता है।

कच्चो-(वि०) १.कच्चा। अपक्व। काचो। २. डरपोक। ३. अर्द्ध पठित। ४. अनुभव रहित।

कच्छ (न०) १. गुजरात का कच्छ प्रदेश। २. समुद्र के किनारे की भूमि। ३. कछुआ। ४. कच्छपावतार। ५. लंगोट। कछोटा। ६. धोती की लांग। ७. तट। किनारा।

कच्छी-(वि०) १. कच्छ देश का निवासी। २. कच्छ देश से संबंधित। (ना०) १. कच्छ देश की भाषा। २. एक प्रकार की तलवार। (न०) कच्छ का घोड़ा।

कच्छी पलाण-(न०) कच्छ की बनी हुई विशेष प्रकार की घोड़े या ऊंट की जीन।

कछ-दे० कच्छ।

कछणो-(न०) १.चमड़े को चीर कर बनाई हुई रस्सी। चीरे हुये चमड़े की रस्सी। चमड़े की लंबी पट्टी। २. कछनी।

कछेरी-(वि०) कच्छदेशोत्पन्न (घोड़ी)। कच्छ देश की।

२. बीतना (समय का)। ३. लिखावट पर लकीर फिरना। लिखावट का गलत सिद्ध होना। लिखावट का निरर्थक होना। ४. दूर होना। *(न०)* जिलियों का एक औजार।

कटत–दे० कटती।

कटती–*(ना०)* मूल्य या वेतन में की जाने वाली कमी। कमी।

कटमी–*(ना०)* १. निंदा। बुराई। २. किसी की कही हुई बात को गलत ठहराना। काटना। खंडन। *(वि०)* १. काटी हुई। तराशी हुई। २. कटी हुई। ३. विपरीत। उलटी।

कटमों–*(वि०)* १. कटा हुआ। कटवाँ।

कटमों व्याज–*(न०)* मिती काटा। कटुआँ व्याज।

कटवण–*(वि०)* १. काटने वाला। २. मारने वाला। ३. अपकारी। ४. बुरा करने वाला।

कटवीं–दे० कटवी।

कटाई–*(ना०)* १. काटने का काम। २. काटने की मजूरी।

कटाकट–*(ना०)* १. मारकाट। २. लड़ाई। ३. कटकट का शब्द।

कटाछ–*(न०)* १. तिरछी नजर। २. व्यंग्य से भरी बात। ताना। कटाक्ष।

कटाणो–*(क्रि०)* कटवाना। कटाना।

कटार–*(ना०)* एक दुधारा छोटा शस्त्र। कटारी।

कटारड़ो–*(न०)* सूअर।

कटारभाँतछींट–*(ना०)* देशी रंगाई-छपाई की मोटे कपड़े की एक प्रकार की घाघरे की छींट। कटार के चिह्न की छपाई का घाघरे का कपड़ा।

कटारमल–*(न०)* १. कटारी रखने वाला वीर। २. कटार चलाने में प्रवीण योद्धा।

कटारी–दे० कटार।

कटाव–*(न०)* १. काट-छाँट। कतरब्योंत। २. पानी के वेग से होने वाली जमीन की कटाई। भूकटन। ३. तास के खेल में हुकम के पत्ते का दाँव। ४. तास के खेल में अमुक (रंग के) पत्तों का न होना। ५. कटाई का काम। दस्तकारी। शिल्प।

काटावदार–*(वि०)* कटाई के काम वाला। जिस पर कटाई का काम हो। कटावदार। २. बेल बूंटों वाला।

कटि–*(ना०)* कमर।

कटिमंडण–*(न०)* करधनी।

कटीजणो–*(क्रि०)* १. कसाव पैदा होना। २. काटा जाना। ३. जंग लगना।

कटोती–*(ना०)* किसी रकम में से धर्मादा, दस्तूरी आदि काट लेना।

कटोरदान–*(न०)* गोल डिब्बे के आकार का ढक्कनदार पात्र।

कटोरी–*(ना०)* छोटा कटोरा। प्याली। बाटकी।

कटोरो–*(न०)* प्याला। कटोरा। बाटको।

कट्टो–*(न०)* वह थेला जो पूरी बोरी से आधा हो। *(वि०)* १. मजबूत। २. बलवान।

कठकळ–*(ना०)* १. फाटक। झाँपो। २. किवाड़।

कठकारो–*(न०)* प्रस्थान करते समय पूछा जाने वाला 'कहाँ' अर्थ सूचक अशुभ समझा जाने वाला 'कठै' शब्द, जैसे–'कठै जाओ हो ?' (कहाँ जा रहे हो ?) (ऐसा नहीं पूछ कर मंगलकारी प्रश्न 'सिध जाओ हो ?' पूछा जाना चाहिये) २ अशुभ सूचक 'कठै' शब्द का नाम। कुअर्थक शब्द। (प्रस्थान करते समय 'कठै' शब्द का प्रयोग अशुभ माना जाता है।)

कठचित्र–*(न०)* कठपुतली। काष्ठचित्र।

कठचीत्र–*(वि०)* लकड़ी में चित्रित।

कड़कनाळ-(ना०) तोप विशेष ।

कड़को-(न०) १. अंगुलियों को चटखाने से होने वाला शब्द । २. शक्ति । ताकत । ३. कड़ाके की आवाज ।

कड़ख-(ना०) नदी का ऊँचा किनारा ।

कड़खणो-(क्रि०) आक्रमण करना । टूट पड़ना । २. क्रोध करना । ३. इकट्ठा होना ।

कड़खेत-(वि०) १. कड़खो गाने वाला चारण, भाट, ढाढ़ी आदि । २. योद्धा ।

कड़खै-(क्रि०वि०) १. दूर । २. अलग ।

कड़खो-(न०) १. कगार । किनारा । २. छंद विशेष । ३. ढाढ़ी, भाट या चारणों द्वारा ऊँचे स्वरों में अलापा जाने वाला विजय गीत । ४. विजय-गीत । ५. राग-विशेष, जो युद्ध के समय प्रोत्साहन देने के लिये गाई जाती है । सिंधु राग ।

कड़छंणो-(क्रि०) १. उमड़ना । बढ़ना । २. लपकना । उछलना । ३. तैयार होना । कमर कस कर तैयार होना ।

कड़छी-(ना०) लंबी डंडी का बड़ा चम्मच । कलछी ।

कड़छो-(न०) बड़ी कलछी ।

कड़ड़-(ना०) १. बिजली की आवाज । २. लकड़ी के टूटने की आवाज ।

कड़तळ-(न०) १. तलवार । २. झाला राजपूत । ३. सौराष्ट्र के झाला राजपूतों का एक विरुद । (वि०) वीर ।

कड़तू-(ना०) कमर । कटि ।

कड़तोड़ो-(न०) १. ऊंट । २. करधनी । कंदोरो । (वि०) १. वह (वस्तु) जिसका बीच का भाग टूटा हुआ हो । २. वह जिसकी कमर टूटी हुई हो । कटि से टूटा हुआ । ३. कमर तोड़ने वाला । ४. जो सुरक्षित नहीं । असुरक्षित । ५. वीर ।

कड़दो-(न०) १. तेल घी आदि का कीट (मैल) । २ नाज घी तेल आदि को बेचने खरीदने के समय तोल में बोरी, टीन आदि (जिसमें वे भरे हुये हों) की की जाने वाली कटौती । करदा । ३. सोने चाँदी के आभूषणों में भरी हुई लाख तथा जड़त का सुरमा, नग आदि विजातीय वस्तुएँ । ४. कूड़े-करकट के कारण मूल्य में की जाने वाली कमी । कटौती । ५. माल के क्रय-विक्रय में दी जाने वाली छूट । ६. कूड़ा-करकट । करदा ।

कड़नाळो-(न०) किवाड़ को बंद करने की साँकल । कुंडा । कोंढा ।

कड़प-कपड़ों में लगाया जाने वाला कलफ । माँड़ी ।

कड़पाण-(न०) १. कड़प लगा हुआ । २. मजबूत । ठोस । दृढ़ ।

कड़ब-(ना०) ज्वार के सूखे डंठल । कड़बी ।

कड़बंध-(न०) १. कंदोरा । करधनी । २. कमर बंध । ३. तलवार ।

कड़बंधी-(ना०) १. कटारी । २. तलवार ।

कड़बी-दे० कड़ब ।

कड़मूल-(ना०) १. सेना । फौज । २. कमर के नीचे का भाग । ३. चूतड़ । नितंब । ढूंगो ।

कड़ला-(न०ब०व०) स्त्री के पाँवों में पहनने के सोने चाँदी के पोले कड़े ।

कड़वाई-(ना०) १. कड़ुआपन । कड़वास । २. कटुता । अप्रियता ।

कड़वा जीभो-दे० कड़वाबोलो ।

कड़वाट-दे० कड़वास ।

कड़वा बोलो-(वि०) कटु बोलने वाला । अप्रियभाषी ।

कड़वास-(ना०) १. कटुता । अप्रियता । नाराजी । २. कड़ुआपन । तीखापन । कड़वाई ।

कड़वी-(वि०) १. कटु । कड़ुई । २. अप्रिय । कटु ।

कढीणो–*(नo)* १. देवता के निमित्त बनाया हुआ पकवान। २. खाने से पूर्व देवता के निमित्त परोसा हुआ पकवान। ३. तली हुई भोजन सामग्री।

कढी बिगाड़–देo बुड़ी बिगाड़।

कण–*(नo)* १. दाना। नग। अनाज। ३. धूलिकण। रजकण। ४. बूंद। कतरा। ५. मोती हीरा आदि रत्नकण। ६. हिम्मत। साहस। ७. आँटण। किण।

कणक–*(नo)* १. सफेद गेहूं। २. सोना। कनक।

कण-कण–*(क्रिoविo)* १. अलग-अलग। २. टुकड़े-टुकड़े।

कणकती–*(नाo)* कंदोरा। करधनी। कणदोरो। कंदोरो।

कणकी–*(नाo)* चावलों के टुकड़े।

कणगती–देo कणकती।

कण-गूगळ–*(नo)* दानेदार बढ़िया गूगल।

कणचाळ–*(नo)* युद्ध।

कणछणो–*(क्रिo)* १. क्रुद्ध होकर आक्रमण करना। २. काटना। ३. रोना। ४. दुख पाना। ५. पीड़ा के कारण कराहना। ६. टट्टी फिरने के समय जोर करना।

कणजो—*(नo)* १. करदा। कूड़ा। २. लाक्षा। लाख।

कणणाट–*(नाo)* १. सिंह का क्रोधपूर्ण दहाड़ना। २. वीरों की हुंकार।

कणदोरो–*(नo)* करधनी। कंदोरो।

कणपाण–*(विo)* १. ठोस बुना हुआ (वस्त्र)। २. दृढ़। मजबूत। फडपाण।

कणवण–*(नाo)* कणवी की स्त्री।

कणवी–*(नo)* १. एक कृषक जाति। २. इस जाति का मनुष्य।

कणय–*(नo)* सोना। कनक।

कणयगढ़–*(नo)* १. जालोर का किला। कनकगढ़। २. लंका।

कणयगिर—*(नo)* १. जालोर का पर्वत। कनकगिरि। २. जालोर का दुर्ग। ३. सुमेरु पर्वत। कनकगिरि। ४. लंका का किला। लंकागढ़।

कणलाल–*(नo)* दाड़िम। अनार।

कणवार–*(नo)* कणवारिये का काम। २. कणवारिये का पारिश्रमिक। ३. एक कर। जागीरदार की एक लाग।

कणवारियो–*(नo)* जागीरदार या राज्य के राजस्व विभाग की ओर से खेती की पैदावार की निगरानी रखने और उसके अनुसार कृषकों से राजस्व रूप में अनाज लेने आदि का काम करने वाला एक निम्न कर्मचारी। राजस्व विभाग का एक चपरासी।

कणसारी–देo कणारी।

कणसारो–*(नo)* अनाज भरने के लिये मिट्टी का बना एक कोठा। कोठीलो।

कणाद ऋषि–*(नo)* वैशेषिक दर्शन के प्रणेता ऋषि।

कणारी–*(नाo)* भींगुर। कणसारी।

कणारो–देo कणसारो।

कणावळ–*(नo)* १. नाज का ढेर। २. भिक्षा में प्राप्त विविध प्रकार के अन्नकण। अनाज की भिक्षा।

कणां–*(क्रिoविo)* कब। कद। कदै। करां।

कणांई–*(क्रिoविo)* कभी। करांई।

कणांकलो–*(क्रिoविo)* कभी का। करांकलो। कदइरो।

कणियर–*(नo)* कनेर का पौधा। कणेर।

कणियागिर–देo कणयगिर।

कणियागरो–*(नo)* १. जालोर का किला। २. जालोर का अधिपति। ३. सोनगरा राजपूत। सोनगरा चौहान। *(विo)* जालोर का निवासी। जालोर वाला।

कणियाचल–देo कणयगिर।

कणी–*(नाo)* १. चावल के छोटे टुकड़े। २. हीरा, माणिक आदि किसी रत्न का छोटा टुकड़ा। रत्नकण। ३. टुकड़ा।

कत्थो-(न०) कत्था । काथो ।

कथ-(ना०) १. कथा । वर्णन । २. कथन । उक्ति । ३. कहावत । ४. प्रशंसा । ५. वाग्युद्ध । ६. वादविवाद । ७. निंदा । ८. घटना । ९. बात का लंबाना । लंबा जिक्र ।

कथक-(वि०) कथा बाँचने वाला । कत्थक । (न०) एक नृत्य ।

कथरण-दे० कथन ।

कथरणी-(ना०) १. कथन । उक्ति । २. बातचीत । ३. कहावत । ४. गाथा ।

कथरणो-(क्रि०) १. कहना । २. जपना । ३. कविता करना । ४. चर्चा करना । जिक्र करना । ५. निंदा करना ।

कथन-(न०) १. कहन । वचन । बोल । २. बात । ३. उक्ति । ४. किसी के सम्मुख कही हुई बात । वक्तव्य । ५. चर्चा । ६. प्रसंग ।

कथनी-दे० कथरणी ।

कथा-(ना०) १. गीता, रामायरण आदि धार्मिक ग्रन्थों की व्याख्या जो श्रोतागणों के सम्मुख की जाती है। २. धार्मिक व्याख्यान । ३. कहानी । बात । ४. वृत्तान्त ।

कथानक-(न०) कथा वस्तु ।

कथा वार्ता-(ना०ब०व०) धार्मिक कथाएँ ।

कथीर-(न०) रांगा धातु ।

कद-(न०) १. माप । प्रमाण । २. ऊंचाई । (क्रि०वि०) कब । किस समय । कदै । कदै ।

कदई-(क्रि०वि०) कभी ।

कदक-(न०) १. तम्बू । खेमा । २. चंदोवा । चंदरवो ।

कदको-(क्रि०वि०) कभी का । कदकों ।

कदको ही-(क्रि०वि०) कभी का । कदरो ही ।

कदताई-(क्रि०वि०) कब तक । कठैताई ।

कदतारणी-(क्रि०वि०) कब तक । कठैताई ।

कदन-(न०) १. पाप । २. विनाश । ३. वध । हिंसा । ४. दुःख । ५. युद्ध ।

कदम-(न०) १. डग २. घोड़े की चाल विशेष । ३. राजस्थानी का एक छंद । ४. कदंब वृक्ष । ५. कदंब का फूल ।

कदमकाळ-(अव्य०) कभी-कभी । कदे-कदे ।

कदमोख-(न०) हाथी ।

कदर-(ना०) १. मान । प्रतिष्ठा । २. कांटा या कंकड़ लगने से उठने वाली वाली गाँठ । (अव्य०) तरह । प्रकार ।

कदरज-(वि०)१. कायर । कदर्य । २. पापी । ३. नीच कुल में उत्पन्न । ४. कृपरण । (ना०) धूल ।

कदरदान-(वि०) १. कदर करने वाला । २. गुरण ग्राहक ।

कदरूप-(वि०) कद्रूप । बेडौल ।

कदरूपो-दे० कदरूप ।

कदली-(न०) केला ।

कदली वन-(न०) केले के पेड़ों का वन ।

कदंच-(क्रि०वि०) १. कदाचित । २. कभी-कभी ।

कदंचकाळ-दे० कदमकाळ ।

कदंब-(न०) १. कदम वृक्ष । कदंब । २. फौज । ३. झुंड । समूह । ३. ढेर ।

कदंबो-(न०) कीचड़ । (वि०) १. हत्यारा । २. कीचड़युक्त ।

कदाक-(क्रि०वि०) कदाचित् । शायद ।

कदाच-(क्रि० वि०) कदाचित । शायद ।

कदाचरण-दे० कदाच ।

कदाचार-(न०) अनुचित आचरण ।

कदाचित-(क्रि०वि०) कदाचन । कदंच । शायद ।

कदापि-(क्रि०वि०) कभी । हरगिज ।

कदी-(क्रि०वि०) १. कब । कदे । २. कभी ।

कदीक-(क्रि०वि०) १. कभी । २. कभी-कभी ।

कदीम-(न०) १. प्राचीनकाल। (क्रिoविo) परम्परा से। प्राचीनकाल से। (वि०) पुराना।

कदीय-(क्रिoविo) १. कभी भी। २. किसी भी दिन।

कदे-(क्रिoविo) कब।

कदेक-(क्रिoविo) कभी।

कदेरो-दे० कदोको।

कदेकरण-(क्रिoविo) कभी-कभी।

कदेसको-दे० कदोको।

कदोको-(क्रिoविo) कभी का। कहूंको।

कधी-(क्रिoविo) कभी। कदे।

कन-(क्रिoविo) पास। (अव्य०) १. नहीं-तो। २. या तो। ३. अथवा। या।

कनक-(न०) १. सोना। २. धतूरा। ३. एक छंद। ४. एक घोड़ा।

कनक-कूट-(न०) सुमेरु पर्वत।

कनखजूरो-दे० कनसळायो।

कनकगढ-(न०) १. जालोर का किला। २. लंकागढ़।

कनकगिर-(न०) १. जालोर का पर्वत। २. कनकगिरि पर बना जालोर का किला। ३. सुमेरु पर्वत।

कनकाचल-(न०) १. सुमेरु पर्वत। २. जालोर का पर्वत।

कनखळ-(न०)१. टंटा-फसाद। २. शैतानी। ३. लड़ाई-झगड़ा। दे० कनखळजी।

कनखळजी-(न०) हरिद्वार के पास एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।

कनछ-(ना०) कौंच फली।

कनटोपो-(न०) सिर को कानों तक ढक देने वाली टोपी।

कनपटी-(ना०) कान और आंख के बीच की जगह।

कनपड़ी-(ना०) १. कान और आंख के बीच की जगह। कनपटी। २. कनपटी में होने वाली सूजन।

कनफटो-(न०) वह संन्यासी जो कानों को फड़वा कर उनमें मुद्रायें पहिनता है।

कनफड़ो-(न०) आंख और कान के बीच की जगह। कनपटी।

कनफूल-(न०) स्त्री के कान का एक आभूषण। कर्णफूल।

कनमूळ-(न०) १. कान के नीचे का भाग। २. कान के मूल में होने वाली गांठ।

कनलो-(वि०) पास का। निकट का। कनैरो। गोढलो।

कनवज-(न०) कन्नौज।

कनवजियो-(वि०) १. कन्नौज का रहने वाला। २. कन्नौज से संबंधित। (न०) कन्नौज से आकर मारवाड़ में बस जाने के कारण राठौड़ राजपूतों का एक विशेषण।

कनसळाई-(ना०) कनखजूरा। कंसळाई।

कनसळायो-दे० कनसळाई।

कनंग-(न०) कुंदन।

कना-दे० किना।

कनात-(ना०) मोटे कपड़े की दीवार जिससे किसी जगह को घेर कर आड़ कर दी जाती है। मोटे कपड़े का परदा।

कनार-दे० किनार।

कनारी-दे० किनारी।

कनारो-दे० किनारो।

कनियाणी-(ना०) करणी देवी।

कनीपाव-दे० कणेरीपाव।

कनै-(क्रिoविo) पास। निकट। गोढै।

कनैयो-दे० कन्हैयो।

कनोती-(ना०) घोड़े के कान या उसके कान की नोक।

कन्नै-दे० कनै।

कन्या-(ना०) १. पुत्री। लड़की। बेटी। २ क्वारी लड़की। ३. बारह राशियों में से एक राशि (ज्यो०)। ४. पांच की संख्या।

कन्याकाळ-(ना०)१. कन्यावस्था। २.लड़कों

के विवाह के लिये कन्याओं की प्राप्ति का अभाव। कन्याओं की कमी।

कन्याकुमारी–*(ना०)*१. भारत के दक्षिण किनारे का भूशिर। २. दुर्गा।

कन्यादान–*(ना०)* विवाह में धर्मशास्त्रानुसार वर को कन्या समर्पण करने की रीति।

कन्यावळ–*(न०)* १. पाणिग्रहण के दिन कन्या के वडीलों की ओर से रखा जाने वाला उपवास। २. विवाह में वर को कन्या समर्पण करने के बाद कन्या का मुख देख कर (उपवासी जनों की) भोजन करने की रीति।

कन्याराशि–*(न०)*एक राशि।(ज्यो०)

कन्या विक्रय–*(न०)* कन्या देने के बदले में पैसे लेने की क्रिया या भाव।

कन्याशाळा–*(ना०)* कन्याओं के पढ़ने की पाठशाला।

कन्हं–*(न०)* श्रीकृष्ण।

कन्हैयो–*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. एक पक्षी।

कप–*(न०)* १. प्याला। २. कपि। बंदर।

कपट–*(न०)* १. छल। दुराव। २. धोखा। छळ।

कपटाई–दे० कपट।

कपटी–*(वि०)* छली। दगाखोर। छळियो।

कपड़कोट–*(न०)* १. बड़ा तम्बू। खेमा। शामियाना। २. वस्त्रागार।

कपड़छाण–*(वि०)* कपड़े से छाना हुआ। कपड़छान। चूर्ण को कपड़े से छानने की क्रिया।

कपड़णो–*(क्रि०)* 'पकड़णो' शब्द का विपर्यय रूप। दे० पकड़णो।

कपड़ै आयोड़ी–*(वि०)* रजस्वला। ऋतुमति। आभड़ियोड़ी।

कपड़ो–*(न०)* वस्त्र। कपड़ा। गाभो।

कपड़ो लत्तो–*(न०ब०व०)* पहनने-ओढ़ने के कपड़े।

कपर्दिका–*(ना०)* कौड़ी।

कपर्दी–*(न०)* महादेव।

कपर्दिनी–*(ना०)* पार्वती।

कपाट–*(न०)* दरवाजे के पल्ले। किंवाड़। पट। द्वार।

कपातर–दे० कुपातर।

कपाळ–*(न०)* १. खोपड़ी। कपाल। २. सिर। माथा। ३. भाल। ललाट।

कपाळ क्रिया–*(ना०)* शव-दाह के समय कपाल को तोड़कर उसमें घृत-आहुति देने की एक क्रिया। कपालक्रिया। कपाळकिरिया।

कपाळियो–*(वि०)* सिर खपा देने वाला। झौड़ी। झौरी। विवादी। *(न०)* १. कापालिक। २. राठौड़ क्षत्रियों की कपाळिया शाखा का व्यक्ति।

कपाळी–*(न०)* १. शिव। २. भैरव।

कपालेश्वर–*(न०)* १. शिव। २. महादेव। ३. मारवाड़ के मालाणी प्रान्त में चोहटण गाँव का प्रसिद्ध शिव मन्दिर और उसमें प्रतिष्ठित शिवलिंग।

कपावणो–*(क्रि०)* कटाना। कटवाना। कटाणो।

कपास–*(न०)*१. रूई का पौधा। २. बिनौलों सहित रूई। ३. बिनौला।

कपासियो–*(न०)* १. बिनौला। २. सिर या खोपड़ी के अन्दर का गूदा। भेजा। ३. पगतल या हथेली में उठने वाली कपास के आकार की एक गाँठ।

कपासी–*(वि०)* कपास के फूल जैसे पीले रंग वाला।

कपि–*(न०)* १. बन्दर। २. हनुमान। ३. हाथी। ४. सूर्य।

कपिधुज–१. अर्जुन। कपिध्वज।

कपिल–*(न०)* १. सांख्य दर्शन के प्रणेता ऋषि। २. शिव। ३. सूर्य। ४. अग्नि। *(वि०)* १. सफेद। २. भूरा।

बेंत आदि लचीली लकड़ी के दोनों किनारों में डोरी बँधा हुआ बरमा फिराने का एक साधन । कमानी । छेद करने के लिये बरमे को घुमाने की कमानी । ५. मेहराब ।

कबीर–(न०) एक प्रसिद्ध निर्गुणपंथी संत जो जाति से मुसलमान जुलाहे थे । (इन्हीं के नाम से कबीरपंथ चल रहा है) ।

कबीरपंथी–(न०) १. कबीर पंथ का अनुयायी । २. कबीर पंथी साधु ।

कबीरी–(ना०) १. गुजरान । गुजारा । निर्वाह । २. उदरपूर्ति का काम । ३. पेट भराई । ४. धंधा । छोटा मोटा रोजगार । ५. गरीबी । ६. फक्कड़ जीवन ।

कबीलेदार–(वि०) परिवार वाला ।

कबीलो–(न०) १. जनाना । रनिवास । २. परिवार । कुटुंब ।

कबू–(न०) १. कबूतर । कपोत ।

कबूतर–(न०) पारेवा । कपोत । (वि०) गरीब ।

कबूतर खानो–(न०) १. कबूतरों को रखने का पिंजरा । २. गरीबखाना । अनाथाश्रम । (वि०) गरीब । दीन ।

कबूतरी–(ना०) १. नट की स्त्री । २. अद्भुत नट कला के करतब दिखाने वाली नटनी । ३. कपोती । पारेवी ।

कबूल–(न०) स्वीकार । अंगीकार ।

कबूलणो–(क्रि०) स्वीकार करना । मंजूर करना ।

कबूलात–(ना०) १. स्वीकृति । मंजूर । २. एक विन अपराध की प्राचीन दंड प्रथा जिसके अंतर्गत राजा किसी भी जागीरदार, धनाढ्य या प्रतिष्ठित व्यक्ति से अपनी जरूरत की बड़ी से बड़ी रकम वसूल कर सकता था । ३. किसी धनाढ्य व्यक्ति, दीवान आदि बड़े पदाधिकारी या जागीरदार आदि से राजा के द्वारा अपनी आवश्यकता पर बलात् वसूल की जाने वाली रकम । ४. किसी अपराध पर रईसों से वसूल किया जाने वाला दंड ।

कबूली–(ना०) १. नमक मसाले और आलू आदि डालकर बनाया जाने वाला चावलों का एक खाद्य-पदार्थ । २. स्वीकृति । ३. विजय के रूप में लिया जाने वाला खर्चा या दंड दे० कबूलात ।

कबोल–(न०) कुवचन ।

कबोलो–(वि०) कुवचन बोलने वाला ।

कब्जी–(ना०) कब्जी । मलावरोध । कोष्टबद्धता ।

कब्जो–(न०) १. अधिकार । कब्जा । स्वत्व । २. किवाड़ आदि में पेंच से जड़ा जाने वाला एक उपकरण । ३. स्त्रियों के पहिनने का एक वस्त्र ।

कभागण–(वि०) अभागिनी । अभागण ।

कभागियो–(वि०) अभागा । अभागो ।

कभागी–(वि०) १. अभाग । अभागियो । २. अभागण ।

कभारजा–दे० कुभारजा ।

कभाव–दे० कुभाव ।

कम–(वि०) थोड़ा । अल्प । थोड़ो ।

कम अकल–(ना०) कम बुद्धि का । मूर्ख ।

कम असल–दे० कमसल ।

कमख–(न०) १. पाप । कल्मष । २. क्रोध । ३. हमला । ४. उत्कंठा ।

कमची–(ना०) बेंत । छड़ी ।

कमजात–(वि०) कम असल ।

कमजादा–(वि०) न्यूनाधिक ।

कमजोर–(वि०) अशक्त । दुर्बल ।

कमजोरी–(ना०) अशक्ति । दुर्बलता ।

कमज्या–(ना०)१.कमाई । २.कर्म । ३.जीवन के अच्छे-बुरे कर्म । ४. परिश्रम । मजदूरी ।

कम ज्यादा–(वि०) न्यूनाधिक । ओछो वत्तो ।

कमठ–(न०) १. कच्छप । २. धनुष ।

कमठाण–(न०) १. मकान । महल ।

कमळ जोणी–दे० कमलयोनि ।

कमळ नयण–दे० कमळ नैण ।

कमळ नयणी–(वि०) कमल पुष्प के समान सुन्दर नेत्रों वाली ।

कमळ नैण–(न०) विष्णु । (वि०) कमल-पुष्प के समान सुन्दर नेत्रों वाला ।

कमळ-पूजा–(ना०) १. मस्तिष्क पूजा । २. अपने हाथ से मस्तिष्क काट कर देवी-देवता के अर्पण करने की क्रिया । मस्तक काट कर भेंट करने की पूजा । ३. कमल पुष्प से की जाने वाली पूजा ।

कमल योनि–(न०) ब्रह्मा ।

कमळा–(ना०) १. पृथ्वी । २. लक्ष्मी । ३. देवी । ४. धनसम्पत्ति ।

कमळाखी–(ना०) कमल के समान सुंदर नेत्रों वाली । कमलाक्षी ।

कमळापति–(न०) विष्णु ।

कमळियो–(न०) कामला रोग । पीलिया ।

कमळो–(न०) १. ऊंट । २. एक रोग । कामला ।

कमबखत–(वि०) अभागा । बद्‌किस्मत । कमबख्त ।

कम समझ–(वि०) कमबुद्धि वाला । मूर्ख ।

कमसल–(वि०) १. कम असल । दोगला । वर्णसंकर । २. दगाबाज । ३. नालायक । ४. नीच । ५. कमजात ।

कमसीस–(न०) शिरत्राण । सिर का कवच ।

कमंडळ–(न०) १ साधु संन्यासियों का जलपात्र । कमंडल । २. शाक आदि परोसने का एक पात्र ।

कमंध–(न०) १. राठौड़ क्षत्री । २. कबंध ।

कमंधज–दे० कमधज ।

कमाई–(ना०) १. उपार्जित धन । २. आमदनी । ३. नफा । ४. कमाने का धंधा । उद्यम व्यवसाय । ५. पूर्व कर्म । ६. संचित कर्म । ७. मनुष्य जीवन के भले बुरे कर्म ।

कमाऊ–(वि०) कमाने वाला । कमाई करने वाला ।

कमागर–(वि०) १. शस्त्र बनाने का काम करने वाला । कर्मकार । लुहार । २. मजदूर । ३. सेवक । दास ।

कमाड़–(न०) १. कपाट । किवाड़ । २. छाती की हड्डियाँ ।

कमाड़ियो–दे० किवाड़ियो ।

कमाड़ी–दे० किंवाड़ी ।

कमाण–(ना०) १. कमाई । २. कमान । धनुष । ३. महराब ।

कमाणदार–(वि०) १. कमान वाला । २. अर्ध गोलाकार ।

कमाणस–दे० कुमाणस ।

कमाणी–(ना०) १. कमाई । प्राप्ति । २. नफा । ३. कमानी । ४. तीर कमान बनाने वाला व्यक्ति ।

कमाणो–(क्रि०) १. उपार्जन करना । कमाना । २. नफा होना । ३. साफ करना (चमड़ा) (न०) १. प्रिय पुत्र । २. कमाने वाला बेटा । (वि०) कमाऊ ।

कमान–(न०) १. धनुष । २. महराब । ३. स्प्रिंग ।

कमारग–दे० कुमारग ।

कमाल–(वि०) १. बहुत अच्छा । उत्कृष्ट । २. सर्वोच्च । सर्वोपरि । ३. सुन्दर । (न०) १. कौशल से भरा अद्‌भुत, अनोखा साहसपूर्ण काम । २. खूबी । ३. गुण ।

कमाळी–(ना०) ऊंटनी । (न०) १. शिव । २. भैरव । ३. मुसलमान ।

कमावणो–(क्रि०) १. उद्यम से पैसा प्राप्त करना । २. चमड़े को सुधारना । (वि०) कमाने वाला ।

कमिटी–दे० कमेटी ।

कमी–(ना०) १. न्यूनता । हीनता । २. हानि । नुकसान ।

कमीज–(न०) एक प्रकार का कुरता ।

कमीण–(वि०) १. नीच । हलका । क्षुद्र । कमीना ।कमीणो । (न०) १. शूद्र ऐसी

करड़-कावरो–*(वि०)* चितकवरा। दो या दो से अधिक रंग के धब्बों वाला।

करड़को–*(न०)* १. कठोर वस्तु को दाँतों से चबाने पर होने वाला शब्द। २. लकड़ी आदि किसी वस्तु के टूटने से होने वाला शब्द।

करड़णो–*(क्रि०)* १. काटना (दाँतों से)। २. चबाना। चावणो।

करड़ाई–*(ना०)* १. कड़ापन। २. गर्व। अभिमान। ३. नियम पालन में सख्ती। सख्ती।

करड़ाण–दे० करड़ाँवण।

करड़ापणो–*(न०)* कड़ापन। कठोरता। २. अभिमान। गर्व।

करड़ाँवण–*(न०)*१. बहादुरी का झूठा अभिमान। २. युवावस्था का गर्व। ३. गर्व। ४. कड़ापन। कठोरता। ५. ऐंठ। ऐंठन। मरोड़।

करड़ी–*(वि०)* १. कठोर। कड़ी। सख्त। २. कठिन। मुश्किल। ३. दृढ़। मजबूत।

करड़ी कन्या–*(ना०)* मूल नक्षत्र में उत्पन्न कन्या।

करड़ी रुत–*(ना०)* ग्रीष्म ऋतु। ऊनाला। ऊनाळो।

करड़ू–*(न०)* पकाये हुये या भिजाये हुए नाज में रह जाने वाला अपक्व या अभिन्न दाना।

करड़ो–*(वि०)* १. कठोर। सख्त। कड़ा। २. कठिन। मुश्किल। ३. मजबूत। दृढ़। काठो।

करड़ोधज–*(वि०)* १. अभिमानी। गर्विष्ठ। २. रुष्ट। अप्रसन्न। नाराज। ३. अकड़ा। ऐंठा हुआ। अकड़ा हुआ।

करड़ोलकड़–*(वि०)* १. अकड़ा हुआ। ऐंठा हुआ। २. अभिमानी। करड़ोधज।

करण–*(न०)* १. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है करण-कारक। २. कुंती के गर्भ से उत्पन्न सूर्य के पुत्र वसुषेण, जो बाद में कर्ण नाम से प्रसिद्ध हुए। यह प्रभातनाम और महादानी थे। ३. अमरेली (सौराष्ट्र) के ठाकुर वजाजी का पुत्र करण सरवैया, जिसको भक्त ईसरदासजी बारहठ ने सर्प दंश से हुई मृत्यु से जीवित किया था। ४. श्रवणेन्द्रिय। कान। कर्ण। ५. करने योग्य काम। ६. करने की क्रिया या भाव। ७. साधन। *(वि०)* करने वाला।

करण कारण–*(न०)*१. करने-कराने वाला। २. ईश्वर।

करण पसाव–*(न०)* १. आशीर्वाद। २. कृपा। प्रसाद। ३. कृपाभाव।

करण फूल–*(न०)* कान में पहिनने का स्त्रियों का एक गहना।

करण लंब–*(न०)* गदहा। लंबकर्ण।

करण-संघार–*(वि०)* संहार करने वाला। *(न०)* प्रलयकारी रुद्र। शिव।

करणहार–*(वि०)* करने वाला। करणार। *(न०)* ईश्वर।

करणहारो–दे० करणहार।

करणाट–भारत में दक्षिण का एक प्रदेश। कर्णाट। करणाटक।

करणाटक–भारत में दक्षिण का एक प्रदेश। कर्नाटक।

करणाटी–*(वि०)* १. कर्णाट देश का। २. कर्णाट देश संबंधी। *(ना०)* १. कर्णाट देश की भाषा। २. कर्णाट देश की स्त्री। दे० करणावटी।

करणार–*(वि०)* करने वाला। करणहार। करणवाळो। करणारो।

करणारी–*(वि०)* करने वाली। करणहार। करणवाळी।

करणारो–*(वि०)* करने वाला। करणवाळो

करणाळी–दे० करणारी।

करणाळो–दे० करणारो ।

करणावटी–(ना०) बीकानेर जिले का एक प्रदेश ।

करणियो–(वि०) करने वाला । करणार ।

करणी–(ना०) १ राजगीर का एक औजार । थापो । करनी । २. आचरण । व्यवहार । ३. चारण जाति की एक देवी । करणी । आई ।

करणीगर–(न०) करने वाला । कर्त्ता । ईश्वर ।

करणेज–(न०) मृतक का श्राद्ध आदि क्रिया-क्रम । २. मृतक भोज । औसर ।

करणेजप–(वि०) चुगलखोर ।

करणेल–(न०) १. कर्णिकार । कनक चंपा । २. कनकचंपे का तेल । ३. करने का तेल ।

करणो–(क्रि०) १.करना । बनाना । रचना । २. निबटाना । (न०) १. एक जाति का बड़ा नींबू । करना । २. करने वाला ।

करतब–(न०) १. हाथ की सफाई । जादू । करामात । २. हुनर । ३. छल । कपट । ४. कर्त्तव्य । ५. खोटा काम । अयुक्त-काम ।

करतबी–(वि०) १. करामाती । २. हुनर वाला । ३. अयुक्त काम करने वाला । ४. कपटी ।

करतमकरता–(न०) १. नहीं किया जा सके उसको भी कर सकने में समर्थ । २. सर्वोपरि । सर्वाधिकारी । ३. विशेष क्षमता या योग्यता रखने वाला व्यक्ति । ४. घर या समाज में व्यवस्था देने वाला सर्वेसर्वा व्यक्ति । ५. जिसे किसी कार्य करने के सब अधिकार प्राप्त हों । सर्वे-सर्वा । ६. घर का मालिक या सर्वेसेर्वा जिसकी आज्ञा से घर के सब काम होते हों ।

करतल–(न०) हयेली । हयाळी ।

[illegible] ध्वनि–(ना०) तालियों की आवाज ।

करतल भिक्षा–(ना०) हथेली में समावे उतनी भिक्षा लेने का व्रत ।

करतली–(ना०) हथेली ।

करता–(वि०) १. करने वाला । कर्ता । २. निर्माता । बनाने वाला । (न०) ईश्वर । कर्त्ता । सृष्टि कर्ता दे० कर्त्ता ।

करतार–(न०) ईश्वर । सिरजनहार । सृष्टि रचने वाला । कर्त्तार ।

करताळ–(न०)१. एक काँस्य वाद्य । झाँझ । ताल । २. मजीरा । ३. तलवार ।

करताळी–(ना०) १. हाथ से बजाई जाने वाली ताली । २. हथेली ।

करतां–(अव्य०) १. करते हुये । होते हुये । २. तुलना में (वि०) काम करते हुये ।

करतूत–(ना०) १ काम । २. कला । ३. कौशल । ४. चरित्र । ५. समझ । ६. गुण । ७. निंद्य कर्म ।

करतूतियो–(वि०) १. निंद्य काम करने वाला । २. छली । कपटी ।

करद–(ना०) १. तलवार । २. कटारी । ३. कीचड़ । (वि०) १. कर देने वाला । २. हाथ का उत्तर देने वाला । दानी ।

करद वानी–(वि०) १. तलवार धारी । २. शस्त्रधारी । ३. सहायता करने वाला । ४. उपकारी ।

करधार–(ना०) १. तलवार । २. शस्त्र ।

करनळ–(न०) करणीदेवी का आत्मीय व स्नेह भावना का ऊनता सूचक नाम ।

करनाळ–(न०) १. एक प्रकार का बड़ा युद्ध ढोल, जिसे चलती गाड़ी पर बजाया जाता था । २. एक प्रकार का फूंक वाद्य । भोंपू । ३. बंदूक । ४. तोप ।

करनाळो–दे० कड़नाळो ।

करपण–दे० कुरपण । दे० किरपण या कृपण ।

करपाण–(ना०) तलवार ।

करपाल–(ना०) १. तलवार । २. लाठी । डांग ।

करवो–(न०) एक पेय भोज्य पदार्थ । छाछ या दही मिश्रित पीने योग्य एक भोजन । करंभ । (क्रि०) करना । बनाना ।

करभ–(न०)१. हाथी का बच्चा । २. हाथी । ३. हथेली । ४. ऊंट का बच्चा । ५. ऊँट ।

करभक–(न०) ऊँट ।

करम–(न०) १. कर्म । काम । २. धार्मिक कृत्य । ३. भाग्य । संचित कर्म । ४. मस्तिष्क । माथा । ५. कर्त्तव्य । ६. नित्य कर्म । दे० कर्म ।

करमगत–(ना०) कर्मगति । भाग्य ।

करमचंदियो–(न०) ओछापन और क्रोध में प्रयुक्त की जाने वाली 'सिर' और 'भाग्य' की संज्ञा । कर्म । भाग्य ।

करमठोक–वि०) अभागा । भाग्यहीन । हतभाग्य ।

करमण–(वि०) उद्यमी । कर्मण्य ।

करमणा–(अव्य०) १. कर्म के द्वारा । कर्म से । कर्मणा । २. काम करते हुए ।

करमन्न–दे० करमण ।

करमप्रसाद–(वि०) १. भाग्यशाली । करम प्रसाद । २. उपकारी ।

करम-रेख–(ना०) १. भाग्य रेखा । २. भाग्य का लेख ।

करमसी साँखलो–(न०)एक हरिभक्त कवि । (यह पृथ्वीराज राठौड़ से भी पहले का वेलिकार है ।)

करम-हीण–(वि०) भाग्यहीन । कर्महीन । अभागा । कर्मठोक ।

कर-माठो–(वि०) कंजूस । कृपण ।

करमाँ वाई–(ना०) एक प्रसिद्ध भक्त स्त्री ।

कर-मूकावणी–(ना०) वर वधु के पाणि-ग्रहण को छुड़ाते समय दिया जाने वाला दान, नेग आदि । पाणिग्रहण छोड़ने के समय दिये जाने वाले नेग, दक्षिणा, इनाम आदि ।

करमैतीबाई–(ना०) एक भक्त स्त्री ।

करळ–(ना०) १. मुट्ठी । मुष्टिका । २. तर्जनी अंगुली और अंगूठा दोनों के सिरों को मिलाने से बनने वाली गोलाकार जगह । २. करल में समा सकने वाली वस्तु । (वि०) कराल । भयंकर ।

करळी–(वि०) मुट्ठी में पकड़ा जा सके उतना (पुराल) । (ना०) पुराल । पयाल ।

करळो–(न०) हाथ द्वारा काँख में दबा कर ले जाया जा सके उतने पुराल-घास आदि का मुट्ठा । बड़ा पूला ।

करलो–(न०) ऊंट ।

करवट–(ना०) १. बाजू (पसवाड़े) से लेटने की क्रिया । २. पार्श्व ।

करवत–(ना०) आरी । करौत ।

कर-वरसणो–(वि०) दानी ।

करवरो–(वि०) १. अर्द्ध दुष्काल वाला । थोड़ी वर्षा वाला । २. कठिन । मुश्किल । दुरूह । (न०) वह वर्ष जिसमें वर्षा कम होने के कारण फसल पूरी न हुई हो । छोटा दुष्काल । २. सामान्य फसल का वर्ष । साधारण । वर्ष । ३. दुष्काल । अकाल । ४. आफत । बला ।

करवाण–दे० करवाळ ।

करवाळ–(ना०) तलवार ।

करवो–(न०) सकोरा । कसोरा ।

करसण–(ना०) १. खेती । कृषि । २. कृषिकर्म ।

करसणी–(न०) कृषक । किसान ।

करसणो–(क्रि०) खींचना । तानना ।

करसल–(ना०) १. फर्श में लगी पत्थर की चौकियां । टाइलों वाला फर्श ।

करसाख–(ना०) अंगुली ।

करसाण–(न०) किसान ।

करसो–(न०) कृषक । किसान ।

करहली–(ना०) ऊंटनी । सांयड़ ।

करहलो–(न०) ऊंट ।

करहीणो–(वि०) ऊंटसवार । करभारोही ।

काळजुग पोहरो–दे० काळजुगवारो ।

काळजुग वारो–*(न०)*१. कलियुग का समय । २. अधर्म का समय ।

काळभळ–*(ना०)* कलह ।

कळण–*(ना०)* १. भिगोकर छिलके उतारने के बाद पिसी हुई दाल । २. दलदल । कीचड़ । ३. वह गीली जमीन जिस पर चलने से पैर अन्दर धँस जायँ । ४. नाश । ५. मवाद नहीं निकलने के पहले फोड़े में होने वाला दर्द । व्रण की पीड़ा । पीड़ ।

कळणो–*(क्रि०)* १. कीचड़ में फँसना । २. हैरान होना । परेशान होना । ३. दुख देखना । ४. नाश करना । ५. युद्ध करना । ६. अनुमान करना । ७. दाल को भिगोकर छिलके दूर करने के बाद चक्की में पीसना ।

कळत–*(ना०)* १. कीचड़ । २. कमर । ३. स्त्री । कलत्र ।

कळत्त–दे० कलत्र ।

कळतर–*(ना०)* १. व्रण की वेदना । २. शरीर में होने वाली वेदना । पीड़ा ।

कलत्र–*(न०)* १. पत्नी । स्त्री । लुगाई ।

कळदार–*(न०)* १. मशीन द्वारा निर्मित चाँदी का रुपया । २. ताला । *(वि०)* कलवाला । यंत्रवाला ।

कलप–*(न०)* १. ब्रह्मा का एक दिन । कल्प । २. वेद के छः अंगों में से एक । ३. शरीर को निरोग और पुनः युवा बनाने की एक वैद्यक युक्ति । कल्प । ४. खिजाव । ५. समय । काल ।

कळप–*(न०)*१. दुख । संताप । २. बेचैनी । ३. उत्कट इच्छा । ४. लाग । लगन ।

कळपणो–*(क्रि०)* १. दुख भुगतना । २. बिलखना । विलाप करना । ३ कल्पना करना । ४. किसी वस्तु को किसी के निमित्त करना ।

कळपतर–दे० कल्पतरु ।

काळपावणो–*(क्रि०)*१. दुख देना । सताना । २. रुलाना । ३. विलाप करना । ४. दुखी होना ।

काळपीजणो–*(क्रि०)* १. दुखी होना । २. विलाप करना ।

कळबी–*(न०)* एक कृषक जाति । कणबी । कुणबी ।

कलम–*(ना०)* १. बही में लिखी जाने वाली रुपयों की संख्या और उसके विवरण सहित किसी व्यक्ति के नाम की लिखावट दाखिला । रकम । एन्ट्री । २. दफा । धारा । सेक्शन । ३. बही-खाते में लिखा जाने वाला विषय या व्यक्तिपरक एक बार का ब्योरा । आइटम । ५. लेखनी । कलम । ६. चित्रशैली । ७. पेड़ की वह टहनी जो दूसरी जगह लगाने के लिये रोपी जाती है । ८. सिर के बालों का वह पतला भाग जो कान के आगे दाढ़ी की ओर रखा जाता है । हजामत में कनपटियों के बालों की काट । ९. मुसलमान ।

कळमत–*(न०)* युद्ध ।

कळमस–*(न०)*१. पाप । कल्मष । २. मैल । *(वि०)* १. काला । श्याम । २. मैला ।

कलमदान–*(न०)* एक लंबी छोटी संदूकची जिसमें दवात और कलमें रखी रहती हैं ।

कलम-हथो–*(वि०)* १. लेखक । २. कवि ।

कलमाण–*(न०)* मुसलमान अर्थ सूचक 'कलम' शब्द का बहुवचन रूप । मुसलमान वर्ग ।

कलमी–*(वि०)* कलम लगाने से उत्पन्न । जैसे कलमी आम । २. रवे वा सींक के जैसा । जैसे—कलमीशोरा ।

कलमीसोरो–*(न०)* शोरा । कलमीशोरा ।

कळमूळ–*(न०)* १. सेना । २. सेनापति । ३. युद्ध ।

कळळ–*(न०)* १. पाप । २. अपराध । दोष । ३. गर्भ का आरंभिक रूप । ४.

शोर। ५. चीत्कार। चीख। ६. युद्ध का कोलाहल। ७. घायलों का आर्त स्वर।

कळळणो-(क्रि०) कोलाहल होना।

कळळ-हूंकळ-(न०) १. युद्ध का शोर। २. कोलाहल। शोरगुल।

कळळाटो-(न०)१. रुदन। जोर का रोना। २. समूह रुदन।

कळवाणी-(न०) मंत्रित पानी।

कळव्रख-दे० कल्पवृक्ष।

कळव्रछ-दे० कल्पवृक्ष।

कळस-(न०) १. कलश। घड़ा। २. मंदिर के शिखर या गुंबद के सबसे ऊपर का कलशाकार और नुकीला भाग। ईंडो। ३. काव्य का उपसंहार सूचक अंतिम छंद। ४. कुंभ राशि। ५. डिंगल का एक छंद विशेष।

कळसियो-(न०,पानी पीने का छोटा जल-पात्र।

कळसी-(ना०) १. आठ मन का माप। २. बड़ा घड़ा। जल भरने का बड़ा पात्र।

कळसो-(न०) सँकड़े मुंह का पानी का बड़ा घड़ा। कळो।

कळह-(न०) १. युद्ध। २. झगड़ा।

कळहकारी-(वि०) १. युद्ध करने वाला। २. झगड़ालू। ३. कलहकारिणी।

कळहगुरु-(वि०) युद्ध प्रवीण।

कळहण-(ना०) १. युद्ध। २. सेना।

कळहण-कोट-(वि०) १. युद्ध से नहीं डरने वाला। २. युद्ध प्रिय। युद्ध रसिक। ३. (युद्ध में) रक्षा का स्थान।

कळहळ-(न०) १. युद्ध का शोर। २. कोला-हल। शोरगुल।

कळहवरीस-(न०) १. जोद्धा। वीर पुरुष। २. युद्ध का आवाहन करने वाला।

कळहंत-(न०) युद्ध।

कळहंस-(न०) राजहंस। कलहंस।

कलंक-(न०) १. लांछन। दाग। कलंक। २. दोष। तोहमत।

कलंकी-(वि०) १. लांछित। बदनाम। २. दोषी। अपराधी। (न०) विष्णु का होने वाला अवतार। कल्कि अवतार। २. चन्द्रमा।

कलंगी-(न०) १. मोर अथवा मुर्गे आदि पक्षियों के सिर पर की चोटी या फुनगी। कलगी। २. पगड़ी, टोपी आदि में लगाया जाने वाला फुनगा। ३. पगड़ी में लगाया जाने वाला एक विशेष शिरोभूषण। कलगी। ४. चौंचदार पगड़ी में तुर्रे की सामने वाली बाजू में लटकने वाली बादले की लूम।

कलंदर-(न०) १. एक प्रकार का मुसलमान फकीर। २. रीछ और बन्दर को नचाने का खेल दिखाने वाला व्यक्ति। मदारी। (वि०) १. मैला। गंदा। २. घृणित।

कलंब-(न०) तीर। बाण।

कळा-(ना०)१. अंश। २. युक्ति। ३. कौशल। ४. गाने बजाने की विद्या। ५. छलकपट। ६ धूर्तता। ७. बदमाशी। चालाकी। ८. ज्योति। ९. हुनर। १०. चंद्र मण्डल का सोलहवां भाग। ११. समय का एक मान। १२. नटों का कौशल। नट विद्या। १३. शोभा। १४. अद्‌भुत कार्य। १५. कौतुक। १६. सामर्थ्य। १७. पुरुषों के प्रतिभा सूचक ७२ प्रकार। १८. केलि संबंधी काम शास्त्र के ६४ प्रकार।

कला-दे० कळा।

कळाई-(ना०) (हाथ का) मणिबंध। गट्टा।

कळाकंद-(न०) मावे की एक मिठाई।

कळातरो-(न०) एक कीट। मकड़ी।

कळाधर-(न०) १. चन्द्रमा। २. शिव। (वि०) कलाओं का जानकार।

कळाधारी-(वि०) १. कलावान। २. युक्ति से काम करने वाला।

कळाप-(न०) १. समूह । २. [illegible] । ३. [illegible] । [illegible] । ४. [illegible] । तूणीर । ५. मोर [illegible] ।

कळापानी (वि०) १. [illegible] । [illegible] । २. चंचल । [illegible] ।

कळापी (न०) १. मोर । २. कोयल ।

कलावान् (न०) [illegible] । कलावत् ।

कळावणा (ना०) १. [illegible] । फांटळ । २. [illegible] ।

कलाळ (न०) १. [illegible] जाति का व्यक्ति । २. शराब बनाने या बेचने वाली जाति । कलवार ।

कलाळण (ना०) १. कलाल जाति की स्त्री । २. कलाल की स्त्री

कलाळी-(ना०) १. एक लोक गीत । २. कलाल जाति की स्त्री ।

कलावंत-(न०) १. गायक । २. कलाकार । ३. नट । ४. एक संगीतज्ञ जाति । ५. इस जाति का व्यक्ति । ६. संगीतज्ञों की उपाधि ।

कळावान-(वि०) १. चतुर । प्रवीण । २. छली । कपटी । ३. धूर्त । ४. कला जानने वाला ।

कलावो-(न०) हाथी की गरदन । कलावा ।

कळाहीण-(वि०)१. अज्ञ । मूर्ख । अबूझ । २. अशक्त । ३. कला रहित ।

कलाँ-(वि०) १. बड़ा (गाँव) ।

कळि-(न०)१. युद्ध । २. कलियुग । (अव्य०) लिये । हेतु ।

कळिकाळ-(न०) कलियुग का समय । अधर्म का समय ।

कळिचाळो-दे० कळचाळो ।

कळि पत्थ-(न०) कलियुगी अर्जुन । कलि-पार्थ ।

कळिपाथ-दे० कळि पत्थ ।

कळिभीम (न०) कलियुगी भीम ।

[illegible] (न०) [illegible] । पाप ।

[illegible] दे० [illegible] ।

[illegible] (न०) १. [illegible] के [illegible] । [illegible] ।

[illegible] दे० [illegible] ।

[illegible] (न०) [illegible] युग ।

[illegible] दे० [illegible] । दे० [illegible] ।

[illegible] (अव्य०) [illegible] के लिए ।

[illegible] (न०) १. एक प्राचीन [illegible] का नाम । २. [illegible] । [illegible] ।

कली (ना०) १. बिना खिला हुआ फूल । कलिका । २. कुर्ते आदि में कांख में लगने वाला तिकोना कपड़ा । ३. नीचे की ओर (नीचे से) चौड़ा वाला (नुकीला) आम के आकार का हुक्के का जलपात्र । ४. कली वाला कम्म का बना हुआ हुक्का । ५. कलई नाम की धातु । ६. कलई का मुलम्मा । ७. दीवार में सफेदी करने तथा पान में खाने आदि के काम में आने वाला कंकड़ रहित चूने का बारीक चूर्ण । ८. शुरू में फूटने (आने) वाले मूंछ-दाढ़ी के बाल । ९. दर्पण में एक ओर किया गया पारे आदि का लेप । १०. नाक में से बाल निकालने का नाई का औजार । ११. घाघरे या जामे का पल्ला जो गावदुम (ऊपर की ओर से सँकड़ा और नीचे की ओर क्रमशः चौड़ा होता हुआ) होता है, जिससे घाघरे या जामे की बनावट नीचे से घेरदार बनती है. (एक घाघरे या जामे में २० से १०० कलियाँ तक होती हैं ।) १२. तरह । प्रकार । (वि०) १. सुन्दर । २. समान । (क्रि० वि०) तरह । भाँति ।

कळीजणो-(क्रि०) १. कीच में फँसना । २. घर-गृहस्थी या सांसारिक कामों में उल-

कवल–(न०) १. कौर। ग्रास। २. [illegible]। ग्रास। कवो।

कवळ–(न०) १. सूअर। २. [illegible] सूअर। ३. कमल।

कवलपंजो–(न०) कौलनामा। इकरार-नामा।

कवळी–(ना०) १. हस्तलिखित पुस्तक को सुरक्षित रखने के लिये उसके आकार का हाथ से बनाया हुआ गत्ते, रूई आदि का बना एक प्रकार का वेष्टन या डिब्बा। २. एक विशेष रंग की गाय। ३. गाय। ४. द्वार के आजू बाजू लगाई जाने वाली खड़े पत्थर की पट्टी। (वि०) कोमल। मुलायम।

कवळो–(न०) १. सूअर। २. द्वार का पार्श्वभाग। ३. द्वार। (वि०) १. नर्म। कोमल। २. केवल। मात्र। ३. बिना मात्रा का वर्ण।

कववाहण–(ना०) अग्नि। कव्य-वाहन।

कवा–(ना०) १. ऋतु विरुद्ध हवा। २. ऋतु विरुद्ध हवा के चलने से फल या फसल आदि में उत्पन्न होने वाला रोग या जीव-जन्तु।

कवाज–(ना०) १. कुचाल। बुरा आचरण। कुचमाद। २. दुष्टता।

कवारपाठो–(न०) क्वार पाठा। घीक्वार।

कवाली–(ना०) १. कव्वाली। २. गजल।

कवि–(न०) १. कविता रचने वाला। २. ब्रह्मा। ३. वालमीकि। ४. वेदव्यास। ५. भाट। ६. चारण।

कविड्लोळ–(न०) डिंगल का एक गीत-छंद।

कवित–(न०) एक छंद। एक वर्णवृत। छप्पय। घनाक्षरी छंद।

कविता–(ना०) छंदोबद्ध रसमय रचना। पद्य।

कविताई–(ना०) १. कविता। २. कविता रचना का काम। कवि कर्म।

कवि[illegible]–दे० कवि-समय।

कवि[illegible]–[illegible]

कविराजा–(न०)१. श्रेष्ठ कवि। २. भाट।

कविराय–(न०) कविराज।

कवि-समय–(न०) प्रकृति, शास्त्र और लोक विरुद्ध होते हुए भी कवि लोग परम्परा से जिनका वर्णन करते आ रहे हैं। उनके संबंध में यह नहीं विचारा जाता कि वस्तुतः वे उस प्रकार होते हैं या नहीं। यथा-हंस का मोती चुगना। स्वाति बूंद से सीप में कपूर उत्पन्न होना इत्यादि। कवि प्रसिद्धि।

कवीश्वर–(न०) १. वाल्मीकि ऋषि। २. बड़ा कवि। कवीसर।

कवीसर–(न०) कवीश्वर।

कवेयीमीन–दे० कावी मीन।

कवेयो–(वि०) १. कुवयस्क। अल्पवयस्क। २ युवा। (केवल मीन का एक विशेषण।)

कवेळा–(ना०) १ कुसमय। २. संध्यासमय। सांझ। ३. अमंगल वेला।

कवेसर–दे० कवीसर।

कवैन–दे० कुवैन।

कवो–(न०) ग्रास। कौर।

कव्य–(न०) पितरों को आहुति रूप में दी जाने वाली भोजन सामग्री। कव।

कव्यंद–(न०) कवीन्द्र। श्रेष्ठकवि।

कव्वाल–(न०) कव्वालियों का गाने वाला। कव्वाली-गायक।

कश्मीर–(न०) भारत का ठेठ उत्तर में आया हुआ प्राकृतिक सौंदर्य का एक प्रसिद्ध प्रदेश या राज्य। काश्मीर।

कश्मीरी–(वि०) १. काश्मीर-संबंधी। (न०) १. काश्मीर की भाषा। २. काश्मीर का निवासी।

कश्यप–(न०) एक प्रसिद्ध ऋषि।

कश्यपसुत–(न०) सूर्य।

कष्ट–(न०) १. दुख । संताप । २. श्रम । महनत ।

कष्टीजणो–(क्रि०) प्रसव की पीड़ा होना । प्रसव वेदना होना ।

कस–(य०) १. सार । तत्व । २. अरक । ३. सारभाग । ४. रस । ५. थूक । ६. सोने की परीक्षा के लिये उसको कसौटी पर घिस कर बनाई जाने वाली रेखा । ७. पतले और ऊँचे बादल । कसवाड़ । ८. तृण । तिनका । ९. घास । १०. अंगरखी को कसने की डोरी । बंद । तनी । ११. शक्ति । बल । १२. अर्थ । प्रयोजन । मतलब । १३. लाभ । अर्थ । १४. चिलम, हुक्के आदि के धुएं को खींचने की क्रिया । १५. गर्व । अभिमान ।

कसण–(न०) १. बंधन । बँधना । बंद । २. अग्नि । कृशानु ।

कसणो–(न०) कसने की डोरी । तस्मा । (क्रि०) १. खींचकर बांधना । २. कसौटी पर कस लगाना ३. दबाना । ३. तैयार होना । ५. धनुष की डोरी चढ़ाना । ६. मशीन में उसके पुरजे को कस कर बिठाना ।

कसतो–(वि०) १. तोल माप आदि में कुछ कम । २. मात्रा या परिमाण से कुछ थोड़ा । कम । ओछो ।

कसदार–(वि०) सत्त्ववाला ।

कसनागर–(न०) अफीम ।

कसपाण–(न०) १. जो कसे रहते हैं । जो पुरुष के हाथों से मर्दन किये जाते हैं । २. जो हाथों से कसती है । स्त्री । ३. जो पुरुष के मन और शक्ति का कर्षण करती है । स्त्री । (वि०) शक्तिशाली भुजाओं वाला ।

कसब–(न०) १. कारीगरी । २. वेश्यावृत्ति । ३. धंधा । पेशा ।

कसबो–(ना०) १. खुशबू । सुगंध । २. बड़ा गाँव । नगर । कस्बा ।

कसबो लोग–(न०) गाँव के लोग । गँवार ।

कसम–(ना०) सौगंध ।

कसमसणो–(क्रि०) १. घबराना । २. हिचकना । कसमसाहट करना । ३. कुल बुलाना । ४. आगा पीछा करना । दुविधा में पड़ना । ५. चलायमान होना । इधर उधर होना ।

कसमीर–(न०) काश्मीर देश ।

कसर–(ना०) १. कमी । खामी । नुक्स । २. न्यूनता । कमी । ३. हानि नुकसान । ४. अपूर्णता । ५. मात्रा, मान, मूल्य इत्यादि में कम । घट ।

कसरत–(ना०) १. व्यायाम । २. अभ्यास । ३. अधिकता । (वि०) अधिक । बहुत ।

कसरात–(ना०) १. त्रुटि । खामी । २. कसर का एवजाना । ३. कसर (त्रुटि) होने के कारण मूल्यों में की जाने वाली कमी ।

कसवाड़–दे० कस सं० ७.

कससणो–(क्रि०) १. जोश में आना । २. आक्रमण करना । ३. जोश में आकर चलना ।

कसाई–(न०) १. बूचड़ । (वि०) निर्दय । क्रूर ।

कसायलो–(वि०) कषाय स्वाद वाला । कसैला ।

कसालो–(न०) १. पेट भर भोजन नहीं मिलना । २. दरिद्रता । निर्धनता । ३. अभाव । ४. कमी ।

कसाव–(न०) १. कसैलापन । २. परीक्षा । ३. खिंचाव ।

कसावट–(ना०) १. कसने का काम । २. तपास । परीक्षा ।

कसी–(ना०) लंबे डंडे वाला फावड़े जैसा एक औजार । फावड़ी । कस्सी । (वि०) १. कैसी । किस प्रकार की । २. कौनसी । फुणसी । किसी ।

कसीजणो-(क्रि०) १. कसीला होना। २. कसा जाना। मांगा जाना। ३. कसौटी पर घिसा जाना।

कसीणणो-(क्रि०) १. कसना। खींचना। २. कसा जाना।

कसीदो-(न०) कपड़े पर सूई और धागे से बनाया हुआ काम। कशीदा।

कसुआड़-दे० कुसुनाड़।

कसुवाड़-दे० कुसुनाड़।

कसूण-(न०) कुशकुन। अपशकुन।

कसूत-(वि०) १. जो सूत्र में नहीं। वक्र। टेढ़ा। २. अव्यवस्थित। कुसूत। (न०) १. कुप्रबन्ध। कुसूत। २. अव्यवस्था।

कसूमल-(न०) १. लाल रंग। कसूंवल। २. लाल रंग का एक कपड़ा। कसूंवल।

कसूर-(न०) १. अपराध। अनुचित कार्य। दोष। २. गलती। भूल। ३. दोष। पाप।

कसूर वार-(वि०) १. अपराधी। दोषी। २. भूल करने वाला। भूलक। ३. पापी।

कसूंवल-(न०) १. कुसुम के फूल से बना हुआ रंग। २. लाल रंग। ३. लाल रंग से रंगा हुआ एक कपड़ा। (वि०) लाल। लाल रंग का।

कसूंवी-(वि०) लाल रंग का। लाल रंग से रंगा हुआ।

कसूंबो-(न०) १. अधिक मादकतार्थ पानी में गाला हुआ अफीम। अहिफेन-द्राव। २. कसूमल रंग। लाल रंग। ३. ढाक वृक्ष। टेसू।

कसो-(सर्व०) कौन। (वि०) कौनसा। कुणसो। किसो। (न०) कसना। फीता।

कसोटी-(ना०) १. काले पत्थर का एक चिकना टुकड़ा जिस पर घिस कर सोना परखा जाता है। कसौटी। २. परीक्षा। जाँच।

कसोटो-(न०) लंगोटा। पटली।

कस्ट-दे० कष्ट।

कस्तर-(न०) १. मलमूत्र। २. खाने वाले भाग पर लगने वाली धूंगी। ३. रिवाज।

कस्टीजणो दे० कष्टीजणो।

कस्तूरियो-मिरग-(न०) १. कस्तूरी मृग। २. सिलाजीत की एक उपाधि। (वि०) १. सुगंध प्रिय। २. शौकीन।

कस्तूरी-(ना०) एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो हिमालय के कस्तूरी मृग की नाभि से प्राप्त होता है। मृगमद।

कस्तो-दे० कसनो।

कस्यो-(वि०) १. कैसा। २. कौनसा।

कहकह-(न०) कोलाहल।

कहड़ो-(वि०) कैसा। किस प्रकार का। किसड़ो। कैड़ो।

कहण-(ना०) १. संदेश। २. वचन। कथन। ३. कहावत। ४. अपवाद। ५. लांछन। कलंक। ६. लोकापवाद। दोष।

कहणगत-(ना०) १. बदनामी। २. कलंक। ३. कहावत।

कहणार-(वि०) कहने वाला। कहणियो। २. उपालंभ देने वाला।

कहणावट-दे० कहणावत।

कहणावत-(ना०) १. कहावत। कहवत। २. किम्वदंती।

कहणियो-दे० कहणार।

कहणी-(ना०) १. कहावत। २. दोष। लोकापवाद। ३. कथनी।

कहणो-(क्रि०) १. कहना। बोलना। २. आज्ञा करना। ३. डाँटना। ४. समझाना। (न०) १. कथन। २. आज्ञा।

कहर-(न०) १. युद्ध। २. विपत्ति। दुख। ३. वज्रपात। ४. प्रलय। ५. अकाल। (वि०) १. भयंकर। २. उग्र। तेज।

कहवत-(ना०) १. कहावत। २. दृष्टान्त। ३. कथन।

कहवाड़णो–(क्रि०) १. संदेश भेजना। २. कहवाना। कहलवाना। ३. सिफारिश करवाना।

कहवावणो–दे० कहवाड़णो।

कहाड़णो–(क्रि०) कहलाना।

कहाणी–(ना०) १. वार्ता। बात। कहानी। २. विगत। वृत्तान्त। ३. कल्पित बात। कहानी।

कहाव–(न०) १. संदेश। खबर। २. कथन। उक्ति।

कहावत–दे० कहवत।

कहिम–(अव्य०) १. यदि। अगर। २. अथवा। या। ३. चाहे। जो।

कहिरो–(वि०) क्रोधी। कोहिरो।

कही–(ना०) १. कथन। २. रचना। (वि०) कृत। रचित। बनाई हुई। कही हुई। जैसा– वेलि श्रीकिसन रुकमणी री राठौड़ प्रथीराज री कही।

कहूँबो–दे० कसूंबो।

कहूँभो–दे० कसूंबो।

कह्यो–(न०) १. आज्ञा। २. कथन। ३. रचना (वि०) कहा हुआ। बनाया हुआ। रचित। कृत। जैसे–गुण हरिरस बारहठ ईसरदास रो कह्यो।

कं–(न०) १. मुख। २. कामदेव। ३. सिर। ४. जल। पानी। ५. स्वर्ण। ६. कमल। ७. आग। ८. सेना।

कँइ–(सर्व०) एक प्रश्नवाचक शब्द। क्या। कांइ।

कँइक–(वि०) १. थोड़ा। जरा। २. कुछ। थोड़ासा।

कँइ ठा–(अव्य०) १. क्या पता। २. न जाने। कजाणां।

कंक–(न०) १. एक पक्षी जिसके पंख बाण में लगाये जाते हैं। २. चील पक्षी। ३. कौआ। ४. युद्ध। ५. नर कंकाल। ६. बाण। ७. शृगाल। ८. महादेव। शिव। ९. सूर्य।

कंकट–(न०) १. कवच। २. शत्रु। ३. राक्षस। (वि०) दुष्ट।

कंकणी–(ना०) १. स्त्रियों के पहुँचे में पहने जाने वाला एक गहना। २. गिद्धनी। गीधणी। गरजड़ी।

कंकपत्र–(न०) बाण। तीर।

कंकाड़ो–(न०) कांटों वाला एक जंगली वृक्ष। ककेड़ो।

कंकाणी–दे० कंकणी।

कंकाळ–(न०) १. अस्थि-पंजर। २. सिंह। ३. युद्ध।

कंकाळण–(ना०) १. कंकालिनी। कर्कशा स्त्री। २. काली देवी का एक नाम। कंकालिनी। कंकाली। (वि०) कलहप्रिया।

कंकाळणी–दे० कंकाळण।

कंकाळी–(ना०) १. एक देवी। दुर्गा का एक नाम। दुर्गा। २. झगड़ाखोर स्त्री। कलहप्रिय स्त्री।

कंकावटी–(ना०) १. बिन्दी लगाने के लिये कुमकुम रखने का एक पात्र। २. एक देश।

कंकू–(न०) कुंकुम। रोळी। रोरी।

कंकूपत्री–(ना०) विवाह, जनेऊ आदि मांगलिक अवसरों की आमंत्रण पत्रिका। कुंकुमपत्रिका। कूंगचड़ी। कंकोत्री।

कंकेड़ो–दे० कंकाड़ो।

कंकोड़ो–(न०) साग बनाने के काम में आने वाला एक छोटा लता फल। बरसाती लता का एक फल।

कंकोत्री–दे० कंकूपत्री।

कंकोळ–(न०) १. शीतलचीनी का वृक्ष। २. शीतलचीनी।

कंग–(न०) कवच। बख्तर।

कंगर–(न०) कंगुरा।

कंगळ–(न०) कवच। बख्तर।

कंगलो–(वि०) १. झगड़ालू। २. कंगाल। दरिद्री।

कंगवो–*(न०)* फसल का एक रोग ।
कंगस–*(न०)* कवच ।
कंगाल–*(वि०)* गरीब । निर्धन ।
कंघो–*(न०)* कंघा । कांकियो ।
कंचरा–*(न०)* सोना । कंचन । सोनो ।
कंचरगी–*(ना०)* १. हल्दी । २. वेश्या । पातर । ३. नर्तकी । नाचरा । *(न०)* १.नपुंसक । नामर्द । २.नाजिर । नाजर ।
कंचनी–दे० कंचरगी ।
कंचुग्रो–*(न०)* कंचुकी । अंगिया । चोली । कांचळी ।
कंचुवो–दे० कंचुग्रो ।
कंचू–दे० कंचुग्रो ।
कंचो–*(न०)* १. पतंग । गुड्डी । कनकौवा । २. कंचुकी ।
कंज–*(न०)* १.कमल । २.ब्रह्मा । ३. अमृत । ४. सिर के बाल । ५. दोप । ६. महादेव ।
कंजर–न०) एक ग्रस्पृश्य जाति । *(वि०)* झगड़ालू ।
कंजरी–*(ना०)* १. कंजर जाति की स्त्री । २. मुसलमान वेश्या । *(वि०)* झगड़ालू ।
कंजार–*(न०)* सूर्य । सूरज ।
कंजारी–*(न०)* चंद्रमा ।
कंजूस–*(वि०)* कृपरा ।
कंटक–*(न०)* १. कांटा । २. दुश्मन । शत्रु । ३. असुर । राक्षस । *(वि०)* १. बाधक । विघ्नकर्त्ता । २ कष्टदायक । शल्यरूप । ३. हृदयहीन । ४. शठ । ५. मूर्ख । ६. दुष्ट । दुरात्मा ।
कंटक असरा–*(न०)* ऊँट ।
कंटग–दे० कंटक ।
कंटाळो–*(न०)* १. ऊँट कंटाला घास । २. ऊब । उद्वेग । उकतान । व्याकुलता । *(वि०)* कांटेदार । कांटोवाला । कँटीला ।
कंट्राट–दे० कांट्रेक्ट ।
कंट्रोल–*(न०)* अंकुश । काबू ।
कंठ–*(न०)* १. गला । २. गले के अंदर का भाग । घांटा । गळो । ३. स्वर । आवाज । ४. स्मरण करने की क्रिया । ५. याद *(वि०)* कंठस्थ । जबानी ।
कंठत्रारा–*(न०)* गले की रक्षा के लिए युद्ध में पहिनी जाने वाली लोहे की एक जाली । कंठकवच । गलत्रारा । गले का कवच ।
कंठ बैठरगो -*(मुहा०)* १. गला बैठना । २. स्वर साफ नहीं निकलना ।
कंठमाळ–*(ना०)*गले में माला की तरह अनेक गुमड़ियाँ निकलने का रोग । गंडमाला ।
कंठमाळा–*(ना०)* १. गंडमाला का एक रोग । २. गले का हार ।
कंठळ–दे० कांठळ ।
कंठलो–*(न०)* गले का एक आभूपरा ।
कंठसरी–*(ना०)* कंठी । कंठसिरी । कंठश्री । गले की माला ।
कंठ सूखरगो–*(मुहा०)* १. गला सूखना । २. मुसीबत में पड़ना ।
कंठस्थ–*(वि०)* १. कंठस्थित । कंठगत । २. जबानी याद । कंठाग्र ।
कंठाळ–*(न०)* ऊंट ।
कंठाळो–*(वि०)* १. गाने में सुमधुर आवाज वाला । २.बलवान । शक्तिमान । ३.सिंह । *(न०)* ऊँट ।
कंठी–*(ना०)* १. गले का एक आभूषरा । २. छोटे गुरियों की माला । ३. साधु-गुरु की ओर से शिष्य को दीक्षा के रूप में पहिनाई जाने वाली माला । ३. तुलसी की माला ।
कंठीबंध–*(वि०)* किसी सम्प्रदाय में दीक्षित होकर उसके चिह्न स्वरूप कंठी गले में धारण करने वाला । अनुयायी ।
कंठीर–*(न०)* सिंह ।
कंठीररा–*(ना०)* सिंहनी ।
कंठीररगी–*(ना०)* सिंहनी ।
कंठीरल–*(न०)* सिंह ।

कंठीरव-(न०) सिंह ।
कंठे करणो-(मुहा०) याद करना ।
कंठेसरी-(ना०) सोलंकियों की कुलदेवी । कंठेश्वरी ।
कंठे होणो-(मुहा०) कंठस्थ होना । जवानी होना ।
कंठो-(न०) १. गले का एक आभूषण । २. गला ।
कंड-(वि०) १.मक्खीचूस । कंजूस । २.धूर्त्त । ३. कुटिल । ४. मैला-कुचेला ५. ढोंगी ।
कंडियो-दे० करंडियो ।
कंडीर-(वि०) १. मैला । गंदा । २. बहुत अफीम खाने वाला । ३. बहुत खाने वाला । पेटू । खाऊ ।
कंडील-दे० कंदील ।
कंत-(न०) १. पति । कान्त । २. ईश्वर ।
कंतर-(ना०) खाने-पीने आदि की वस्तुओं में मिली हुई रेत ।
कंता-(ना०) पत्नी । कान्ता ।
कंथ-(न०) १. पति । कान्त ।
कंथकोट-(न०) योगी कंथड़नाथ के नाम से जाम साड़ के द्वारा बनवाया हुआ सिंध के पारकर जिले का इतिहास प्रसिद्ध प्राचीन किला और नगर ।
कंथड़नाथ-(न०) सिंध का इतिहास प्रसिद्ध एक सिद्ध योगी ।
कंथा-(ना०)१. संन्यासी का लम्बा चोला । २. गुदड़ी ।
कंथाधारी-(न०) १.संन्यासी । २. महादेव ।
कंथुओ-(न०) एक कीड़ा ।
कंथो-(न०)१.पति । कंथ । कांत । २.संन्यासी के पहनने का लंबा चोला ।
कंद-(न०) १. वानस्पतिक गांठदार मूल-प्याज, आलू, सूरण इत्यादि । २. बिना रेशे की जड़ । मूली, शकरकंद इत्यादि । ३. गूदेदार जड़ । ४. शुद्ध की हुई चीनी । चीनी-बूरा । ५. बादल । ६. दुर्गन्ध । ७. समूह । ८. दुख । (वि०) मूर्ख ।
कदक-(न०) चंदोवा । चंदरवो ।
कंद काढणो-समूल नष्ट करना ।
कंदचर-(न०) सूअर । शूकर ।
कंदमूळ-(न०) खाने योग्य वानस्पतिक जड़ें । कंदमूल ।
कंदरप-(न०) १. प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध । श्रीकृष्ण का पौत्र । २. कामदेव । कंदर्प ।
कंदर्प-दे० कंदरप ।
कंदळ-(न०) १. युद्ध । २. नाश । ध्वंश । ३. शोरगुल । ४. कटा हुआ अंग । ५. टुकड़ा । ६. समूह । ७. स्वर्ण । सोना ।
कंदळी-(ना०) १. ध्वजा । २. एक प्रकार की शराब । ३. एक देव वृक्ष । ४. युद्ध । संग्राम । ५. हरिण ।
कंदीजणो-(क्रि०) सड़ना ।
कंदीजियोड़ो-(वि०) सड़ा हुआ ।
कंदील-(ना०) १. बांस की सींकों के बनाये गये ढांचे पर कागज या अभ्रक चिपका कर बनाया हुआ एक दीपक । २. लाल-टेन । लैंटर्न ।
कंदूड़ी-(ना०) संग्रह हेतु चुन कर बनाया गया घास का ढेर । कराई । कंदूड़ो ।
कंदोई-(न०) मिठाई बनाने वाला । हलवाई । सुखड़िया ।
कंदोराबंध-(वि०) कंदोरा बांधने वाला (मनुष्य) । (न०) १. जन्म लेने के समय पुत्र शब्द के पर्याय रूप में प्रयोग किया जाने वाला शब्द । जैसे—फलाणचंद रै कंदोराबंध हुओ है । धिन्नड़ । धेनड़ । ३. मात्र पुरुषों को निमंत्रित करने के लिये प्रयुक्त पुरुषवाची शब्द । जैसे—कंदोराबंध नैतो है ।
कंदोराबंध-नैतो-(न०) भोजन के लिये मात्र पुरुषों को दिया जाने वाला निमंत्रण ।
कंदोरो-दे० कणदोरो ।
कंद्रप-(न०) १. कामदेव । कंदर्प । २. पुरुषत्व ।

कंध–(न०) १. कंधा । स्कंध । २. गर्दन ।

कंध-चाप–(न०) धनुषाकार ग्रीवा वाला घोड़ा ।

कंध-रूढा–(ना०) स्कन्ध रूढ़ा देवी । सिंह वाहिनी ।

कंधाळ–(न०) १. बैल । २. बैल के कंधे पर रखा जाने वाला जूआ । (वि०) वीर ।

कंधाळधुर–(न०) बल ।

कंधो–(न०) कन्धा ।

कंप–(वि०) चंचल । अधीर । (न०) १. दोष । २. कँपकँपी । ३. भय ।

कँपकँपी–(ना०) कँपनी । कंपन । थरथराहट ।

कंपणी–(ना०) १. कँपकँपी । २. कम्पनी । व्यवसाय में भागीदारी ।

कंपनी–(ना०) १. व्यापारिक-मंडली या संस्था । २. साथी । ३. मंडली ४. भागीदारी ।

कंपाउंडर–(न०) डाक्टर के कहने मुताबिक दवाओं का मिश्रण तैयार करने वाला ।

कंपाण–(न०) तराजू । काँटो ।

कंपास–(न०) १. दिशा सूचक यंत्र । २. वृत्त बनाने का औजार । परकार ।

कंपी–(ना०) १. उड़ कर आई हुई बारीक धूल । गर्द । गर्दगुबार । २. कँपकँपी ।

कंपू–(ना०) १. छावनी । कैम्प । २. सेना ।

कंपोजीटर–(न०) छापाखाना में टाइप जोड़ने वाला । मुद्राक्षर बिठाने वाला ।

कंब–(ना०) छड़ी । काँब ।

कंबू–(न०) १. शंख । २. हाथी ।

कंबोज–(न०) १. घोड़ा । २. एक देश ।

कंभूठाण–(न०) हाथी को बाँधने का स्थान । खंभूठाण ।

कँवर–(न०) १. पिता की जीवित अवस्था में पुत्र का सम्मान सूचक पर्याय । २. पिता की जीवित अवस्था में लड़के को किया जाने वाला संबोधन । ३. पुत्र । बेटा । ४. राजकुमार । (प्रत्य०) कुंवरि या कुमारी नामों का अपभ्रंश रूप जिसका पुत्री के नाम के अंत में प्रत्यय रूप में प्रयोग किया जाता है जैसे–रतनकुंवर । पोहपकुंवर ।

कँवर कलेवो–(न०) पाणिग्रहण के पूर्व दुलहे को ससुराल में कराया जाने वाला भोजन । क्वारा जीमन । इस अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

कँवराणी–(ना०) १. राजकुमार की पत्नी । २. पुत्रवधु । जिसके ससुर जीवित हों ।

कँवरी–(ना०) १. कन्या । पुत्री । २. क्वारी कन्या । ३. राजकन्या ।

कँवळ–(न०) १. कमल । २. मस्तक । ३. सुअर ।

कँवळ-पूजा–दे० कमल पूजा ।

कँवळा–(ना०) लक्ष्मी । कमला ।

कँवळापणो–(न०) कोमलता । नरमाई ।

कँवळापति–(न०) विष्णु । लक्ष्मीपति । कमलापति ।

कँवळी–(ना०) १. दरवाजे की दीवाल के मुहरों पर चौखट की खड़ी लकड़ियों के पीछे चौखट की बराबर लंबाई का लगाया जाने वाला खड़ा चपटा पत्थर । २. सुअरनी । शूकरी । (वि०) १. कोमल । मुलायम ।

कँवळो–(न०) दरवाजे में लगी दोनों कंवलियों के आसपास की भींत । २. सूअर । (वि०) १. कोमल । मुलायम । २. बिना मात्रा वाला अक्षर जैसे— कँवळो 'क' ।

कँवाड़–दे० किवाड़ ।

कँवार मग–(न०) क्वार मग । आकाश-गंगा ।

कँवार सूंखड़ी–(ना०) एक कर विशेष जो राजा या जागीदार के पुत्र के नाम से किसी पर्व या उसके जन्मदिन और विवाह

के अवसरों पर नजराना के रूप में प्रजा से लिया जाता था।

कँवारी–(वि०) अविवाहिता। क्वारी।

कँवारी घड़ा–(ना०) १. युद्ध के लिये तैयार सेना। २. अनामत सेना। ३. युद्ध नहीं लड़ी हुई सेना। **कँवारी घड़**।

कँवारी लापसी–(ना०) बारात को दुल्हे के पाणिग्रहण के पूर्व दिया जाने वाला वह प्रथम भात (=भोजन) जिसमें मांगलिक रूप से गुड़ की लापसी बनाई जाती है। **कँवारो भात**।

कँवारो–(वि०) क्वारा। अविवाहित।

कँवारो भात–दे० कँवारी लापसी।

कंस–(न०) १. मथुरा के राजा उग्रसेन का पुत्र। २. प्याला। ३. मजीरा। ४. काँसा।

कंसळो–दे० कानखजूरो।

कंसार–(न०) एक प्रकार का मिष्टान्न।

कंसारी–(ना०) १. फुदकने वाला एक छोटा कीड़ा। झींगुर। २. कंसारे की स्त्री। **कंसारण**।

कंसारो–(न०) ठठेरा। कंसारा। कसेरा।

कंसासुर–(न०) कंस।

का–(अव्य०) अथवा या तो। (सर्व०) क्या। (प्रत्य०) संबंधकारक अथवा छठी विभक्ति का बहुवचन रूप।

काइ–(अव्य०) अथवा। या। (क्रि० वि०) १.क्यों। २.क्या। (सर्व०) १.कोई। २.क्या।

काइम–(वि०) १. सर्वकालीन। २. सर्वव्यापक। ३. सर्वज्ञ। सर्वविद। ४. सर्वद्रष्टा। ५. सर्वशक्तिमान। ६. सर्वकाल में समान रूप से स्थित। ७. उपस्थित। ८. कायम। स्थिर। ९. निश्चित। १०. स्थापित। (न०) ईश्वर। परमात्मा।

काइमराव–(न०) सर्वकाल में समान रूप से स्थिर रहने वाला परमात्मा।

काइमो–(वि०) १. निकम्मा। २. अयोग्य। नालायक। ३. अकर्मण्य। ४. स्त्रैण। ५. मूर्ख। (न०) १. सर्वकाल में समान रूप से स्थित। परमेश्वर। सदा कायम रहने वाला। ईश्वर। २. ज्वार का वह दाना जो भुट्टे में दाना बनते समय कीड़ा लगकर बिगड़ जाता है और कुछ लंबा होकर मिट्टी से भर जाता है।

काई–(अव्य०) अथवा। या। (सर्व०) १. कोई। २. कुछ। ३. कुछ भी। (न०) १. पानी की एक घास। २. दाँतों का मैल। ३. होठों की पपड़ी। ४. मैल।

काकड़ी–(ना०) ककड़ी। खीरा।

काकड़ो–(न०) १. कपास। बिनौला। २. गले के भीतर की दोनों ओर की गाँठें। ३. जीभ की जड़ के ऊपर लटकने वाला मांस खंड। गले का कौआ। घंटी।

काकनदी–(ना०) जैसलमेर राज्य की इतिहास प्रसिद्ध प्राचीन राजधानी लुद्रवा के खंडहरों के निकट बहने वाली एक बरसाती नदी, जिसकी तट पर उमरकोट के महेंद्रा की प्रसिद्ध प्रेमिका मूमल की मैड़ी बनी हुई है।

काकरियो–दे० काकरो।

काकरेज–(न०) मारवाड़ की दक्षिण सीमा पर उत्तर गुजरात का एक स्थान तथा प्रदेश जहाँ के बैल और गायें प्रसिद्ध हैं।

काकरेजी–(वि०) काकरेज (उत्तर गुजरात) का प्रसिद्ध (बैल)। काकरेज संबंधी।

काकरो–(न०) १. पत्थर का छोटा टुकड़ा। २. एक घास।

काकळ–(न०) १. स्वजन के दुख से कातर होकर रोना-पीटना। २. शोक। ३. युद्ध।

काकाजी–(न०)१. चाचाजी। २. पिताजी।

काकींडो–(न०) एक जाति की छिपकली जो सूर्य-किरणों की सहायता से अपने शरीर को अनेक रंगों में बदलती है। गिरगिट।

काकी–*(ना०)* चाची।
काकी-सासू–*(न०)* चचिया सास।
काकी-सुसरो–*(न०)* चचिया ससुर।
काको–*(न०)* १. चाचा। २. पिता।
काकोदर–*(न०)* सर्प। साँप।
काकोदरी–*(ना०)* सर्पिणी। **सापणी**।
काखबिलाई–*(ना०)* बगल का फोड़ा। कँखौरी। **काखोळाई**।
काखोळाई–दे० काखबिलाई।
काग–*(न०(* १. कौग्रा २. शीशी का ढक्कन। कॉर्क।
काग उडावणी–*(न०)* अवगुणी और झगड़ालू पुत्रवधु की ओर से सासू के लिये कहा जाने वाला अपमान जनक सांकेतिक नाम।
कागण–*(ना०)* बाजरी की फसल का एक रोग।
कागद–*(न०)* १. चिट्ठी। पत्र। पत्री। २. कागज।
कागदवाई–*(ना०)* पत्र-व्यवहार। चिट्ठी-पत्री का उत्तर-प्रत्युत्तर।
कागदियो–*(न०)* १. छोटी चिट्ठी। पुरजा। २. कागज का टुकड़ा।
कागदी–*(वि०)* पतली छालवाला जैसे–कागदी नींबू। कागदी बदाम। २. जो जल्दी टूट-फूट जाय। ३. नाजुक। *(न०)* कागज बेचने वाला।
कागदी जवान–*(ग०)* जवान उम्र का निर्बल व्यक्ति।
कागदी नींबू–*(न०)* पतली छाल का अधिक रस वाला ऊँची जाति का नींबू।
कागदी बदाम–*(ना०)* पतले छिलके की और अधिक मीठी ऊँची जाति की बादाम।
कागभुसंड–*(न०)* काकभुशुंडि।
कागमुखो–*(न०)* कौए की चोंच के समान पीछे से चौड़ा और आगे से सँकड़ा (मकान)।
कागलियो–*(न०)* गले के भीतर की घंटी। गले का कौग्रा। गलशुंडी।
कागलो–*(न०)* कौग्रा। काग।
कागावाटी–*(ना०)* एक घास।
कागारोळ–*(ना०)* १. रोना-पीटना। २. शोर। कोलाहल।
कागोळ–*(ना०)* श्राद्ध कर्म में पितरों के निमित्त दी जाने वाली काकबलि। कागबलि।
कागोलड़–*(ना०)* मेघ घटा के आगे-आगे चलने वाले सफेद बादल। **कोरण**।
काच–*(न०)* १. दर्पण। आइना। २. काँच। ३. एक नेत्र रोग। मोतियाबिंद।
काचड़कूटो–*(वि०)* चुगलखोर।
काचड़ो–*(न०)* १. निंदा। बुराई। २. चुगली।
काचर–*(न०)* ककड़ी। कचरी।
काचर-कूचर–*(न०)* १. खाने की फुटकर चीजें। २. हलका खाना। घटिया खाना। ३. चना-चबेना। अटरम-पटरम।
काचरी–*(ना०)* सुपारी या नींबू के आकार का छोटा कचरी फल। कचरी।
काचरो–*(न०)* १. ककड़ी। २. छोटी और गोल ककड़ी।
काचा कानांरो–*(मुहा०)*१. सुनी-सुनाई बात को बिना विचारे सच्ची मान लेने वाला। कान का कच्चा। बहकावे में आने वाला।
काची गार–*(ना०)* १. मिट्टी का गारा। २. कीचड़।
काची मौत–*(ना०)* जवान की मृत्यु। युवा-मृत्यु।
काचो–*(वि०)* १. कच्चा। बिना पका। अपक्व। २. जिसके तैयार होने में कसर हो। ३. बिना रस का। जिसमें रस उत्पन्न न हुआ हो। ४. जो आँच पर पका न हो। ५. कच्ची मिट्टी का बना। ६. अशक्त। कमजोर। ७. अन-अभ्यस्त। ८. कायर। ९. असत्य। १०. खराब।

बुरा । ११. व्यर्थ । १२. अबूरा । (न०) कच्चापन । कचाई ।

काचो-कवैयो–(वि०) अल्पायु का । कच्चा और कुवयस्क ।

काचो-पाको–(वि०) १. कच्चा-पक्का । अर्वदग्ध ।

काचो-पोचो–(वि०)१. डरपोक । २.साहस-हीन । नाहिम्मत । ३. अनुभवहीन ।

काचोमतो–(न०) १. ढिल-मिल विचार । २. अस्थिर मन । ३. कायरता ।

काछ–(ना०)१. जाँघ । साथळ । २.लंगोट । ३. लाँग । (न०) १. कच्छ देश ।

काछ जती–(वि०) लंगोट का सच्चा । जितेन्द्रिय ।

काछणो–(क्रि०) १. युद्ध करना । २. नाश करना । ३. कमर कसना । ४. लंगोट लगाना । (न०) कछोटा । छोटी धोती ।

काछद्रढो–(वि०) जितेन्द्रिय । (न०) ब्रह्म-कारी ।

काछ-पंचाळ–(ना०)१. एक लोक देवी । २. सैंणी देवी । ३. कच्छ की एक देवी ।

काछवियो–(न०) १. लोकगीतों का एक नायक । २. एक प्रसिद्ध लोकगीत । दे० काछवो ।

काछवो–(न०) १. कछुआ । २. थरपारकर जिले के उमरकोट में हुआ एक लोक प्रसिद्ध काछव नामक राजा । ३. एक लोकगीत का नायक । काछवियो । ४. काछवा से संबंधित एक लोकगीत ।

काछराय–(ना०)कच्छ देश की सैंणी देवी ।

काछ-वाच-निकळंक–(वि०) जिसने ब्रह्म-चर्य पालन करने में और सत्य भाषण करने में कलंक नहीं लगने दिया हो ।

काछियो–(न०) धोती अथवा लहंगे के नीचे पहिनने का एक वस्त्र ।

काछी–(वि०) १. कच्छ देश का । कच्छ निवासी । (ना०) कच्छ की भाषा । कच्छी भाषा । (न०)१.घोड़ा । २.कच्छी घोड़ा ।

काछी जोड़-रो–(न०) १. कच्छ का ऊंट । २. ऊंट ।

काछेल–दे० काछराय ।

काछेली–दे० काछराय ।

काछेलो–(न०) कच्छ का रहने वाला चारण । कच्छ देश का चारण । २. चारणों की अेक शाखा ।

काज–(न०) १. कार्य । काम । २. प्रयोजन । उद्देश्य । ३. व्यवसाय । ४. बटन फँसाने के लिये कोट, कुरता आदि में बनाया जाने वाला छेद । ५. मृत्यु भोज । मौसर । औसर । (अव्य०) लिये । कारण । निमित्त । वास्ते ।

काज-किरियावर–(न०) औसर-मौसर (मृत्यु भोज), भात भरना (माहेरा), दहेज, बड़े-बड़े दान, न्याति भोज, ब्रह्मभोज और आर्थिक सहायता इत्यादि श्रेष्ठ कर्म । कीर्त्ति-कर्म ।

काज-किरियावरो–(वि०) औसर-मौसर आदि महाभोज करने वाला । २. भात भरने वाला । माहेरा भरने वाला । ३. बड़े बड़े दान और आर्थिक सहायता करने वाला । महान् उदार । महादानी ।

काजथंभ–(वि०) १. प्रवान कार्यकर्त्ता । २. कार्य कुशल । (न०) १. पुण्य कार्य । धर्म काम । २. वीर मृत्यु । ३. मरणो-त्सव ४. कीर्त्तिस्तम्भ । ५. स्मारक ।

काजळ–(न०) १. कज्जल । दीपक का धुँआ । २. काजल से तैयार किया हुआ अंजन ।

काजळियो–(न०) १. काले रंग से रंगा हुआ ओढ़ना । २ अेक लोक-गीत । ३. अंजन ।

काजळी–(ना०) १. धुँए की कालिख । कलौंछ । २. काजली तीज ।

काजळी-तीज–(ना०) १. कजली तीज । २. भादों वदि तीज को मनाया जाने

काकी–(ना०) चाची ।
काकी-सासू–(न०) चचिया सास ।
काकी-सुसरो–(न०) चचिया ससुर ।
काको–(न०) १. चाचा । २. पिता ।
काकोदर–(न०) सर्प । साँप ।
काकोदरी–(ना०) सर्पिणी । **सापणी** ।
काखबिलाई–(ना०) बगल का फोड़ा । कँखौरी । **काखोळाई** ।
काखोळाई–दे० काखबिलाई ।
काग–(न०(१. कौआ २. शीशी का ढक्कन । कॉर्क ।
काग उडावणी–(न०) अवगुणी और झगड़ालू पुत्रवधु की ओर से सासू के लिये कहा जाने वाला अपमान जनक सांकेतिक नाम ।
कागण–(ना०) वाजरी की फसल का एक रोग ।
कागद–(न०) १. चिठ्ठी । पत्र । पत्री । २. कागज ।
कागदवाई–(ना०) पत्र-व्यवहार । चिट्ठी-पत्री का उत्तर-प्रत्युत्तर ।
कागदियो–(न०) १. छोटी चिट्ठी । पुरजा । २. कागज का टुकड़ा ।
कागदी–(वि०) पतली छालवाला जैसे–कागदी नींबू । कागदी वदाम । २. जो जल्दी टूट-फूट जाय । ३. नाजुक । (न०) कागज वेचने वाला ।
कागदी जवान–(न०) जवान उम्र का निर्वल व्यक्ति ।
कागदी नींबू–(न०) पतली छाल का अधिक रस वाला ऊँची जाति का नींबू ।
कागदी वदाम–(ना०) पतले छिलके की और अधिक मीठी ऊँची जाति की वादाम ।
कागभुसंड–(न०) काकभुशुंडि ।
कागमुखो–(न०) कौए की चोंच के समान पीछे से चौड़ा और आगे से सँकड़ा (मकान)।
कागल्यो–(न०) गले के भीतर की घंटी । गले का कौआ । गलशुंडी ।
कागलो–(न०) कौआ । काग ।
कागावाटी–(ना०) एक घास ।
कागारोळ–(ना०) १. रोना-पीटना । २. शोर । कोलाहल ।
कागोळ–(ना०) श्राद्ध कर्म में पितरों के निमित्त दी जाने वाली काकवलि । कागबलि ।
कागोलड़–(ना०) मेघ घटा के आगे-आगे चलने वाले सफेद वादल । **कोरण** ।
काच–(न०) १. दर्पण । आइना । २. काँच । ३. एक नेत्र रोग । मोतियाबिंद ।
काचड़कूटो–(वि०) चुगलखोर ।
काचड़ो–(न०) १. निंदा । बुराई । २. चुगली ।
काचर–(न०) ककड़ी । कचरी ।
काचर-कूचर–(न०) १. खाने की फुटकर चीजें । २. हलका खाना । घटिया खाना । ३. चना-चवेना । अटरम-पटरम ।
काचरी–(ना०) सुपारी या नींबू के आकार का छोटा कचरी फल । कचरी ।
काचरो–(न०) १. ककड़ी । २. छोटी और गोल ककड़ी ।
काचा कानांरो–(मुहा०)१. सुनी-सुनाई बात को बिना विचारे सच्ची मान लेने वाला। कान का कच्चा । बहकावे में आने वाला ।
काची गार–(ना०) १. मिट्टी का गारा । २. कीचड़ ।
काची मौत–(ना०) जवान की मृत्यु । युवा-मृत्यु ।
काचो–(वि०) १. कच्चा । बिना पका । अपक्व । २. जिसके तैयार होने में कसर हो । ३. बिना रस का । जिसमें रस उत्पन्न न हुआ हो । ४. जो आंच पर पका न हो । ५. कच्ची मिट्टी का बना । ६. अशक्त । कमजोर । ७. अन-अभ्यस्त । ८. कायर । ९. असत्य । १०. खराब ।

बुरा । ११. व्यर्थ । १२. अधूरा । (न०) कच्चापन । कचाई ।

काचो-कवैयो–(वि०) अल्पायु का । कच्चा और कुवयस्क ।

काचो-पाको–(वि०) १. कच्चा-पक्का । अर्धदग्ध ।

काचो-पोचो–(वि०)१. डरपोक । २.साहस-हीन । नाहिम्मत । ३. अनुभवहीन ।

काचोमतो–(न०) १. ढिल-मिल विचार । २. अस्थिर मन । ३. कायरता ।

काछ–(ना०)१. जाँघ । साथळ । २.लंगोट । ३. लाँग । (न०) १. कच्छ देश ।

काछ जती–(वि०) लंगोट का सच्चा । जितेन्द्रिय ।

काछणो–(क्रि०) १. युद्ध करना । २. नाश करना । ३. कमर कसना । ४. लंगोट लगाना । (न०) कछोटा । छोटी धोती ।

काछद्रढो–(वि०) जितेन्द्रिय । (न०) ब्रह्म-कारी ।

काछ-पंचाळ–(ना०)१. एक लोक देवी । २. सैणी देवी । ३. कच्छ की एक देवी ।

काछवियो–(न०) १. लोकगीतों का एक नायक । २. एक प्रसिद्ध लोकगीत । दे० काछवो ।

काछवो–(न०) १. कछुआ । २. थरपारकर जिले के उमरकोट में हुआ एक लोक प्रसिद्ध काछव नामक राजा । ३. एक लोकगीत का नायक । काछवियो । ४. काछवा से संबंधित एक लोकगीत ।

काछराय–(ना०)कच्छ देश की सैणी देवी ।

काछ-वाच-निकळंक–(वि०) जिसने ब्रह्म-चर्य पालन करने में और सत्य भाषण करने में कलंक नहीं लगने दिया हो ।

काछियो–(न०) धोती अथवा लहंगे के नीचे पहिनने का एक वस्त्र ।

काछी–(वि०) १. कच्छ देश का । कच्छ निवासी । (ना०) कच्छ की भाषा । कच्छी भाषा । (न०)१.घोड़ा । २.कच्छी घोड़ा ।

काछी जोड़-रो–(न०) १. कच्छ का ऊंट । २. ऊंट ।

काछेल–दे० काछराय ।

काछेली–दे० काछराय ।

काछेलो–(न०) कच्छ का रहने वाला चारण । कच्छ देश का चारण । २. चारणों की अेक शाखा ।

काज–(न०) १. कार्य । काम । २. प्रयोजन । उद्देश्य । ३. व्यवसाय । ४. बटन फँसाने के लिये कोट, कुरता आदि में बनाया जाने वाला छेद । ५. मृत्यु भोज । मोसर । औसर । (अव्य०) लिये । कारण । निमित्त । वास्ते ।

काज-किरियावर–(न०) औसर-मोसर (मृत्यु भोज), भात भरना (माहेरा), दहेज, बड़े-बड़े दान, न्याति भोज, ब्रह्मभोज और आर्थिक सहायता इत्यादि श्रेष्ठ कर्म । कीर्त्ति-कर्म ।

काज-किरियावरो–(वि०) औसर-मोसर आदि महाभोज करने वाला । २. भात भरने वाला । माहेरा भरने वाला । ३. बड़े बड़े दान और आर्थिक सहायता करने वाला । महान् उदार । महादानी ।

काजथंभ–(वि०) १. प्रधान कार्यकर्त्ता । २. कार्य कुशल । (न०) १. पुण्य कार्य । धर्म काम । २. वीर मृत्यु । ३. मरणो-त्सव ४. कीर्त्तिस्तम्भ । ५. स्मारक ।

काजळ–(न०) १. कज्जल । दीपक का धुँआ । २. काजल से तैयार किया हुआ अंजन ।

काजळियो–(न०) १. काले रंग से रंगा हुआ ओढ़ना । २ अेक लोक-गीत । ३. अंजन ।

काजळी–(ना०) १. धुँए की कालिख । कलौंछ । २. काजली तीज ।

काजळी-तीज–(ना०) १. कजली तीज । २. भादों बदि तीज को मनाया जाने

वाला स्त्रियों का एक त्यौहार ।

काजी–(न०) मुसलमानों का धर्म गुरु एवं (शरा के अनुसार) न्यायाधिकारी ।

काजी री लाग–(ना०) काजी लोगों के गुजारे के लिये बादशाही वक्त में लिया जाने वाला एक कर ।

काजू–(न०) एक मेवा । (वि०) १. काम की । काम में आने वाली । उपयोगी । २. उत्तम ।

काजू कळिया–(न०) काजू मेवा ।

काट–(न०) १. जंग । मुरचा । २. क्रोध । ३. शत्रुता । वैर । ४. कलंक । दोष । ५. पाप । ६. ऐब । खोट । ७. किसी कही हुई बात को गलत ठहराने का भाव । खंडन । ८. काटने का काम या ढंग । कटाई ।

काटकरणो–(क्रि०) १. क्रोध करना । २. आक्रमण करना । ३. कड़कना ।

काट खूणियो–(न०) १. समकोण । २. नव्वे अंश का कोण । ३. समकोण नाप का राज-बढइयों का एक औजार । गुनिया ।

काट खूणो–दे० काटखूणियो ।

काट-छाँट–(ना०) १. काटने छाँटने का काम । २. काट कर छाँटने का काम । ३. दुरुस्ती । संशोधन ।

काटण–(वि०) १. काटने वाला । २. नाश करने वाला ।(न०) १. काटने की क्रिया । २. कसाई ।

काटणो–(क्रि०) १. काटना । २ चीरना । ३. दांत मारना या डसना । ४. लिखे हुये के ऊपर लकीर फेरना । रद्द करना । ५. डंक मारना । ६. कम करना ।

काटल–(वि०) १. जंग लगा हुआ । जंग वाला । २. लांछित । कलंकित । ३. बहिष्कृत । ४. काटा हुआ ।

काटा-कूटो–(न०) १. काट-छांट । दुरुस्ती । २. काट-छाँट की अस्पष्टता । ३. कतर ४. कलह ।

काटो–(न०) १. माल की खरीद-फरोख्त मूल्य की अदायगी में बारदाना, धर्मा दस्तूरी आदि के रूप में की जाने वा कटौती । २. ऋण-पत्र में ऋणी के न लिखे गये रुपयों में से काट कर दिये ज वाले कम रुपये । ३. कर्जदार के न दस्तावेज में लिखी गई रकम में से (। निश्चित परिणाम में) कम देने शोषण वृत्ति का एक रिवाज । ४. शो वृत्ति का एक प्रकार ।

काठ–(न०) १. लकड़ी काष्ठ । २. ईंधन ३. मुर्दे को जलाने की लकड़ियाँ ।

काठ-कवाड़–(न०) लकड़ी का सामान ।

काठ देणो–(मुहा०) १. मृतक की सहा भूति में शव की रथी के साथ श्मस तक जाना । २. चिता में लकड़ी रख में योग देना ।

काठ-भखण–(ना०) १. अग्नि । का भक्षण । २ वीर गति प्राप्त पति चिता में सती का प्रवेश ।

काठ लेणो–दे० काठां चढ़णो ।

काठहड़ो–(न०) १. तख्त । सिंहासन । काठ का पिंजरा । कठघरा ।

काठाँ चढणो–(मुहा०) सती होना । वी गति प्राप्त पति की चिता में पत्नी क जल मरना । सहगमन करना । २. श का चिता में जलना ।

काठियावाड़–(न०) गुजरात का अेक भा सौराष्ट्र प्रदेश । सौराष्ट्र ।

काठियावाड़ी–(वि०) १. काठियावा संबंधी । २. काठियावाड़ का रहने वाला (ना०) काठियावाड़ी भाषा या बोली ।

काठियो–(वि०) १. दुष्कर्म करने वाला २. मंदभागी । ३. काठ बेचने वाला ।

काठी–(ना०) १. घोड़े या ऊँट की पीठ प रखी जाने वाली जीन । पलान ।

राजपूतों की एक उपजाति । ३. शरीर की गठन । (वि०) १. काठियावाड़ का । २. दृढ़ । मजबूत । ३. तंग । सँकरी ।

काठो-(वि०) १. तंग । सँकरा । २. सख्त । कड़ा । ३. कठोर । ४. मजबूत । दृढ़ । ५. कंजूस । कृपण । ६. मोटा । जाड़ा । (न०) एक प्रकार का कठोर फोड़ा । कारबंकल ।

काडो-(न०) १. एक गाली । २. एक अशिष्ट वाक् संपुट ।

काढणो-(क्रि०) निकालना ।

काढो-(न०) क्वाथ । काढ़ा ।

काण-(ना०) १. सम्मान । प्रतिष्ठा । २. सम्मान की भावना । ३. लोक-लाज । मर्यादा । ४. संकोच । ५. महत्व । ६. मृतक के घरवालों के शोक में संवेदना प्रकट करने को जाने की प्रथा । ७. तराजू के दोनों पलड़ों में समतुला का अभाव । डंडी और उसके एक पलड़े का एक ओर झुकाव । ८. तराजू के दोनों पलड़ों को समतुलित करने के लिए ऊँचे उठने वाले पलड़े में रखा जाने वाला वजन । पासंग ।

काण-कुरब-(न०) १. मान मर्यादा । २. प्रतिष्ठा ।

काणण-राण-(न०) सिंह । काननराज ।

काणम-(ना०) १. तकड़ी की डंडी और पलड़े में रहने वाला झुकाव । २. दोनों पलड़ों को समतुलित करने के लिए ऊँचे उठने वाले पलड़े में रखा जाने वाला वजन । काण ।

काणजो-(वि०) काना । एकाक्ष । (न०) १. चिपड़ी । २. कचरा ।

काण-मुकाण-दे० काण ६ ।

काणस-(ना०) एक औजार जिसको किसी धातु पर रगड़ने से उसके बारीक कण कट कर गिरते हैं । रेती । अरगती । कानस ।

काणी-(वि०) एक आंख वाली । काणंखी । कानी ।

काणी दिस-(ना०) १. अपने जनपद से भिन्न दूर का जनपद । अपने चौखले से बाहर का स्थान । २. दूर और एकान्त जगह । अटपटी जगह । ३. वह दिशा या स्थान जिसके साथ अपना कोई संबन्ध न हो ।

काणी दीवाळी-(ना०)दीपावली का पहिला दिन । इस दिन द्वार के एक तरफ ही दीपक रखा जाता है ।

काणोठो-(न०) नुकीला दांत । शूल दांत । खूंटो ।

काणो-(न०)१. सुराख । छिद्र । (वि०)१. एक आँख वाला । काखांण । काना । २. दुर्बुद्धि । ३. जिस फल का कुछ अंश कीड़ों ने खा लिया हो । कीट भक्षित (फल, साक आदि ।)

काणो गूंघटो-(न०) घूंघट में से देखने के लिये एक आंख के आगे दो अंगुलियों में ओढ़ने को लपेट कर बनाया जाने वाला घूंघट का नेत्राकार छिद्र ।

कात-(ना०) बड़ी कतरनी । बड़ी कैंची ।

कातणो-(क्रि०) १. सूत कातना । ऊन या रूई का धागा बनाना । कातना । कताई करना । (न०) सूत कातने का काम । कताई ।

कातर-(ना०) बड़ी कतरनी । (वि०) १. कायर । २. व्याकुल ।

कातरियो-(न०) स्त्री के हाथ का एक गहना ।

कातरो-(न०) फसल को चौपट करने वाला एक कीड़ा ।

कातळी-(ना०) १. शरीर का ढांचा । २. शरीर की शक्ति । ३. किसी चीज का लम्बा पतला और चपटा टुकड़ा । कतली ।

कातियो-(न०) जवड़ा । जवाड़ो ।

काती–(न०) १. कार्तिक मास। २. घास काटने का एक औजार। ३. एक शस्त्र।

कातीरो–दे० कातीसरो।

कातीसरो–(न०) खरीफ की फसल। **कातीरो।**

का तो–(अव्य०) या तो। अथवा तो।

कात्यायनी–दे० कतियाणी।

काथ–(न०)१. ताकत। शक्ति। २. शरीर। ३. माया। धन। ४. कथा। ५. मिजाज। ६. चरित्र। ७. विनाश। ध्वंस। ८. काम। ६. रचना। निर्माण।

काथो–(न०) कत्था।

कादमी–(ना०) बुखार में होने वाला पसीना। २. भैंस। (संकेत शब्द)

कादंबरी–(ना०)१. सरस्वती। २. कोयल। ३. सारिका। मैना।

कादंविनी–(ना०)१. मेघमाला। २. विजली।

कादो–(न०) कीचड़। कर्दम। **कादा-कीच। गारो।**

कान–(न०) १. श्रवणेन्द्रिय। कर्ण। कान। २. वन्दूक का लोंग।

कान कतरणा–(मुहा०) होशियारी में किसी को दाद नहीं देना। होशियारी में चढ़ा-वढ़ा होना।

कान कापणा–दे० कान कतरणा।

कानखजूरो–(न०) कनखजूरा। **कनसळायो।**

कान खाणा–(मुहा०) वार वार कहना।

कान खुलणा–(मुहा०) सचेत होना।

कान खोलणा–(मुहा०) सचेत करना।

कानजी–(न०) श्रीकृष्ण।

कानजी-आठम–(ना०) भादों कृष्ण पक्ष की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी। **गोकळ आठम।**

कान देणो–(मुहा०) ध्यान से सुनना।

कान धरणा–(मुहा०) ध्यान से सुनना।

कान पकड़णो–(मुहा०) भूल स्वीकार करना।

कान पकड़ाणो–(मुहा०) भूल स्वीकार कराना।

कान-फूटो–(वि०) वहरा।

कान भरणा–(मुहा०) वहकाना।

कान मांडणा–(मुहा०) ध्यान से सुनना।

कान वाढणा–दे० कान कतरणा।

कानवो–दे० कानव्हो।

कानव्हो–(न०) श्रीकृष्ण।

कानसळाई–(ना०) कनखजूरा।

कानसळायो–दे० कानसळाई।

काना करमत–(ना०) वर्ण के ऊपर और आगे लगाई जाने वाली मात्राएँ। 'ओ' की मात्रा। **कानामात।**

काना-पाती–(ना०) कान के पास धीरे-धीरे वात करना। काना-फूसी। काना-वाती।

कानामात–(ना०) वर्ण के ऊपर और आगे लगाई जाने वाली मात्राएँ। काना और मात्रा।

कानी–(क्रि०वि०)१. ओर। तरफ। (ना०) धोती आदि वस्त्र की किनारी।

कानी-कानी–(क्रि०वि०) इधर उधर। सभी जगह।

कानूंगो–(न०) १. बादशाही समय का एक कर्मचारी। २. कानूनगो। कानून जानने वाला व्यक्ति। ३. एक राज्य कर्मचारी।

कानैकान–(अव्य०) कानों-कान। एक कान से दूसरे कान। एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति। व्यक्ति से व्यक्ति।

कानो–(न०) १. वरतन का किनारा। २. वर्ण के आगे आने वाली 'आ' की मात्रा। खड़ी पाई। काना। ३. श्रीकृष्ण। (अव्य०) पृथक।

कानोकान–दे० कानै कान।

कानो देणो–(मुहा०) १. किनारा लेना। दूर रहना। किनारा देना। दूर करना। ३. वर्ण के आगे खड़ी पाई रूप 'आ' की मात्रा लगाना।

कानो लेणो–(मुहा०) किनारा लेना। दूर रहना। दूर होना।

कान्ह कुँवर–(न०) १. पुत्र । २. श्रीकृष्ण । बाल कृष्ण ।

कान्हड़–(न०) श्रीकृष्ण ।

कान्हड़दे-प्रबंध–(न०) मारवाड़ के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जालोर के वीर कान्हड़दे सोनगरा और सुलतान अल्लाउद्दीन के परस्पर जालोर में हुये युद्ध के वर्णन का जालोर के कवि पद्मनाभ के द्वारा रचा हुआ १५ वीं शताब्दि की राजस्थानी भाषा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक प्रबंध ग्रंथ।

कान्हवो–(न०) श्रीकृष्ण । कान्हो । कान्हजी ।

कान्हूड़ो–दे० कान्हवो ।

कान्हो–दे० कान्हवो ।

काप–(न०) १. काटना । कटाई । काट-छाँट । २. कमी । ३ बचत ।

कापकूप–(न०) कतर-ब्योंत । २. काट-छाँट । ३. बचत । किफायत । ४. कटे हुए टुकड़े ।

कापड़–(न०) कपड़ा ।

कापड़ी–(न०) १. याचक । २. साधु । ३. भाटों की एक शाखा ।

कापड़ो–(न०) कपड़ा । वस्त्र ।

कापणो–(क्रि०) १. काटना । २. मारना । ३. कम करना , घटाना । ४. हटाना । दूर करना । ५. ताश के खेल में तुरुप चाल चलना । काटना ।

कापुर–(न०) १. छोटा गाँव । २. सुविधाओं से रहित बस्ती । कुगांव । ३. ऊजड़ खेड़ा ।

कापुरस–(वि०) कापुरुष । कायर ।

कापो–(न०) चमड़े का टुकड़ा । साक फलादि का टुकड़ा ।

काफर–(न०) १. भिन्न धर्मावलम्बी । २. ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाला। नास्तिक । (वि०) १. क्रूर । निर्दय । २. पश्चिमाभियाची । पश्चिमाभिमुखी ।

काफलो–(न०) काफिला । कारवाँ । पथिक-समूह ।

कावर–(ना०) एक पक्षी ।

कावरियो–(वि०) चितकवरा । कवरा । (न०) कवरा कुत्ता। २. कुत्ते का बच्चा ।

कावली–(वि०) १. कावुल का निवासी । २. कावुल से संवंधित । ३. जिसकी वोली समझ में न आवे । (न०) १. मुसलमान। २. हींग वेचने वाला पठान ।

कावली चिणो–(न०)एक प्रकार का चना । वड़ा चना ।

कावली दाड़म–(न०) लाल और मोटे दानों की एक दाड़िम । कावुली अनार ।

कावली वदाम–(ना०) १. कावुल से आने वाली वादाम । २. अच्छी जाति की एक वादाम ।

कावली हींग–(ना०) १. कावुल की हींग । पठानी हींग । २. अच्छी जाति की हींग ।

कावू–(न०) १. बंद । पकड़ । २. अधिकार । वश ।

कावू करणो–(मुहा०) १. बाँधना । २. कैद में रखना । ३. अधिकार में लेना ।

कावो–(न०) १. परमार क्षत्रियों की एक शाखा । ३. इस शाखा का व्यक्ति । ३. लूट खसोट करने वाली जाति का व्यक्ति । ४. अरव देश के मक्का शहर में मुसलमानों की जियारत का एक स्थान ।

काम–(न०) १. कार्य । कृत्य । २. व्यापार । ३. इच्छा । ४. कर्त्तव्य । ५. धंधा । व्यवसाय । ६. उपयोग । जरूरत । ७. प्रयोजन । मतलव । तात्पर्य । ८. सरोकार गरज । ९. रचना । १० रचना कौशल । १२. विषय सुख की इच्छा । १३. काम। रति । १४. कामदेव । १५. धर्मशास्त्रानुसार चार पदार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से एक । काम । पुरुषार्थ ।

काम करणियो–(वि०) १. महनती । परिश्रमी । २. कर्त्तव्यनिष्ट । कर्मठ ।

कामकाज–(न०) १.काम धंधा । २. कारोवार ।

कामगरो–(वि०) कामकाजी । उद्यमी । २. काम करने वाला । ३. काम में आने वाला । उपकारी ।

काम चलाऊ–(वि०)१. अस्थाई । २. सामान्यतया काम में लाया जा सकने योग्य ।

कामचोर–(वि०) काम से जी चुराने वाला। आलसी ।

कामड़–दे० काँबड़ ।

कामड़ियो–(न०) १. कामड़ी से टोकरी आदि बनाने वाली जाति का पुरुष । २. रामदेव का भक्त । ३. तंबूरे पर गाने का काम करने वाली याचक जाति ।

कामड़ी–(ना०) बेंत । छड़ी ।

कामण–(न०) १. स्त्री । कामिनी । २. वशीकरण । **कामण** । ३. वर्षागम के कारण काँसा, ताँबा आदि धातु-पात्रों पर होने वाला रंग बदल । ४. विवाह का एक लोक गीत । कामण ।

कामणगारी–(वि०) १. वशीकरण करने वाली । २.मोहित करने वाली। मोहिनी ।

कामणगारो–(वि०) १. कामण करने वाला। वशीकरण करने वाला। जंत्र-मंत्र द्वारा वश में करने वाला । २. जो वश में करले । मोहित करने वाला। मोहक ।

कामणि–(ना०) कामिनी । स्त्री ।

कामणी–दे० कामणि ।

कामदार–(न०) १. कर्मचारी। २. जागीरदार का मुख्य पदाधिकारी । जागीरदार की जागीरी का प्रबंधक । **कामेती** । (वि०) जिस पर गोटा किनारी या बेल-बूटों का काम किया हुआ हो ।

कामदेव–(न०) काम वासना का देवता । मदन । मनोज ।

कामधकाऊ–(वि०) १. काम में आने लायक । साधारणतया जिससे काम निकल सके । काम चलाऊ ।

कामधंधो–(न०) १. कामधंधा । वनिज-व्योपार । २. नौकरी । ३. मजदूरी । ४. शिल्प काम । शिल्पियों का कारोबार ।

कामधेनु–(ना०) याचित वस्तुओं को देने वाली एक गाय । सुर-सुरभि ।

कामना–(ना०)कामना । मनोरथ । इच्छा ।

कामरू देस–दे० कामरूप ।

कामरूप–(न०) भारत का आसाम देश ।

कामल–(वि०) योग्य । काबिल ।

कामळ–(ना०) १. कम्बल । २. गाय-बैल की गरदन के नीचे लटकने वाली मोटी चमड़ी । सास्ना ।

काम विराम–(न०) स्तन । उरोज ।

कामसर–(अव्य०) १. काम के लिये । २. काम हो तो ।

कामंख्या देवी–(न०) आसाम की कामाख्या देवी ।

कामंछा–(ना०) १. कामेच्छा २. कामाख्या ।

कामागनी–(न०) कामाग्नि । कामज्वाला ।

कामाग्नि–(ना०) कामज्वाला ।

कामिणी–दे० कामणि ।

कामू–(वि०) १. कामकाज वाला । २. उपयोग में आने वाला । काम में आने वाला ।

कामेती–(न०) १. **कामदार** । प्रबंधक । २. जागीरदार की जागीरी का प्रबंधक ।

कामेही–(ना०) गौड़ों की कुलदेवी ।

काय–(अव्य०) १. या । २. या तो। अथवा । अथवा तो। ३. क्योंकि । (वि०) १.कौन । २. क्या । ३. कितना । ४. कुछ । ५.कुछ भी । (क्रिoवि०) १. क्यों। २. किसलिए। (सर्व०) १. क्या । २. कोई । (ना०) शरीर । काया ।

कायजैं करणो–(मुहा०) १. जीन कसे हुये घोड़े की लगाम को जीन में ही अटका देना । २. लगाम, जीन आदि डाल कर घोड़े को संपूर्ण रूप से सवारी के लिये तैयार रखना ।

कायथ–(न०) १. कायस्थ जाति । २. कायस्थ जाति का व्यक्ति । पंचोली ।

कारकूट-लिखत-*(न०)* बैनामा । विक्री पत्र । (जमीन का)

कारकून-*(न०)* १. अहलकार । मुंशी । २. गुमास्ता । ३. कार्यकर्त्ता । ४. कारिंदा ।

कारखानो-*(न०)* १. अधिक मात्रा मे वस्तुएं तैयार करने का कार्यालय । कारखाना । २. वड़ा कार-वार । ३. विभाग । खाता ।

कारगर-*(वि०)* गुणकारी । प्रभावी । उपयोगी ।

कारगुजार-*(वि०)* भली प्रकार काम करने वाला ।

कारचोबी-*(ना०)* १. कपड़े पर जरी का काम । २. कसीदा ।

कारज-*(न०)* १. काम । कार्य २. मृत्यु-भोज । ३. मृत्यु से संबद्ध प्रसंग ।

कारटियो-*(न०)* १. मृतक के एकादशे का क्रिया कर्म और श्राद्ध कराने वाला ब्राह्मण । २. महाब्राह्मण । कट्टहा ।

कारण-*(न०)* १. हेतु । उद्देश्य । २. सबब । निमित्त । ३. लिये । वास्ते । ४. ईश्वर । ५ प्रेम । ६. कृपा । ७. प्रभाव । ७. मान । प्रतिष्ठा । ६. लाभ । १०. गौरव । ११. गर्भ । हमल ।

कारण-कै-*(अव्य०)* १. कारण यह कि । २. इसलिये कि । ३. क्योंकि ।

कारणसर-*(अव्य०)* १. इस कारण २. के कारण । ३. कारण उत्पन्न होने पर ।

कारणिये-*(अव्य०)* १. लिये । २. के लिये । के कारण ।

कारण करण-*(न०)* सृष्टि उत्पत्ति का कारण । ईश्वर ।

कारणीक-*(वि०)* १. प्रभावशाली । २. प्रामाणिक । ३. बुद्धिमान । समझदार । विवेकी । ४. प्रतिष्ठित । ५. योग्य । ६. अधिकारी । ७. ख्यातिप्राप्त । ख्यातनाम । ८. ज्ञाता । जानकार । ६. परोपकारी । १०. दरमियानगिरि करने वाला । ११. करने योग्य । करणीय । १२. कारण से उत्पन्न । १३. कारण के रूप में होने वाला । १४. कारण संबंधी । कारणिक । १५. शुभ । मांगलिक । १६. श्रेष्ठ ।

कारणै-*(न०)* १. कारण । २. निमित्त । प्रयोजन । हेतु । *(अव्य०)* १. कारण से । २. के कारण । के लिये ।

कारतक-*(न०)* कार्तिक । कार्तिक मास ।

कारतकसाम-*(न०)* स्वामीकार्तिक ।

कार-वार-*(न०)* १. काम काज । २. व्यापार । व्यवसाय ।

कारमुख-*(न०)* धनुष ।

कारमो-*(वि०)* १. नाशवान । २. न्यून । ओछा । ३. उतरता हुआ । हलका । निम्नश्रेणी का । ४. निकम्मा । ५. भयंकर । ६. अद्भुत । ७. असत्य । ८. अनुपयोगी । ६. उपयोगी १०. सुन्दर ।

कारस-*(ना०)* कंडों की महीन आग । कारा । २. कंडों का चूरा । करीष ।

कारसथानी-*(ना०)* चालाकी । चालबाजी । कारस्तानी । कारसाजी ।

कारसाजी-दे० कारसथानी ।

कारंदो-*(वि०)* १. काम करने वाला । कारिंदा । २. होशियार । चतुर । ३. प्रवीण । ४. मुख्य ।

कारा-दे० कारस ।

कारायण-*(न०)* १. विजली । २. मेघघटा । काळायण । *(वि०)* करने वाला ।

कारी-*(ना०)* १. फटे हुये वस्त्र या वरतन आदि की जोड़ । पैवंद । २. इलाज । चिकित्सा । ३. उपाय । तरकीब । युक्ति । ४. आंख के ऊपर आये हुये जाल को हटाने की शल्य चिकित्सा । ५. एक प्रत्यय जो शब्द के आगे लग कर उसका कर्त्ता अर्थ प्रकट करता है, जैसे-लाभकारी सुखकारी आदि ।

काळ-पूंछियो-*(वि०)* १. अशुभ (व्यक्ति)। २. अशुभ कर्मा।

काळवी-*(वि०)* १. काले रंग की। काली। २. सड़ा हुआ (बाजरी, ज्वार आदि मोटा अनाज) *(न०)* खराब अन्न। कदन्न।

काळबूट-*(न०)* वह ढांचा जिस पर मढ़कर जूता तैयार किया जाता है। कलबूत।

काळबेलियो-*(न०)*सँपेरा।

काळ-भुजाळ-*(न०)* काल से भी युद्ध करने में समर्थ वीर।

काळमिस-*(ना०)* कालिख।

काळमी-*(ना०)* १. लोक देवता पावूजी की घोड़ी का नाम। २. काली घोड़ी।

कालर-*(ना०)* १. खेती के अयोग्य जमीन। २. घास के संग्रह के निमित्त व्यवस्थित रूप से लगाया जाने वाला शिखराकार ढेर। कराही।

काळंतर-*(अव्य०)* कालांतर। समय बाद।

काळंतरै-*(अव्य०)* १. कालांतर में। २. समय पाकर।

कालाई-*(ना०)* १. पागलपन। २. मूर्खता। गहलाई।

काळाई-*(ना०)* कालापन। श्यामता। काळास।

काळाखरियो-दे० काळ-आखरियो।

काळागर-*(न०)* अफीम।

काला-गहिलाँ-रो-दातोर-*(वि०)*१.पागल के समान दानी। अति उदार। २. असहाय व निर्बलों का पालन-पोषण करने वाला।

काळा-धोळा-*(न०)* काली करतूतें। कारस्तानी। २. छल-कपट। ३. उलटे काम। अनुचित काम। ४. बदचलनी।

कालापणो-दे० कालाई।

काळा-पीळा-*(न०)* १. कार्य संपादन करने के लिये उचितानुचित का विचार नहीं करने की कार्य प्रणाली। २. कार्य-संपादन के लिये उठाया गया कठिन परिश्रम। ३. काम सम्पादन के लिये रिश्वत देने, खुशामद करने और भाग-दौड़ करने आदि कठिन और हैरानी की कार्यवाही। ४. जैसे तैसे करके किया जाने वाला गुजारा। ५. अनुचित कार्य।

कालावाला-*(न०)* १.भोली भाली विनती। २. शुद्ध मन की प्रार्थना। ३. खुशामद। गिड़गिड़ाहट। आजिजी।

काळास-*(न०)* १. कालापन। कालिमा। २. साधारण कालापन. ३. दुर्भावना। ४. पाप।

काळाहण-*(ना०)* काली घटा। काले बादलों की घटा।

काळांतर-दे० काळंतर।

काळांतरै-दे० काळंतरै।

काळिज-*(न०)* कलेजा।

काळियार-*(न०)* काला हरिण।

काळियो-*(वि०)* १. काले वर्ण का। *(न०)* १. नाग। २. अफीम।

कालिंगड़ो-*(न०)* संपूर्ण-जाति की एक राग।

कालिंद्री-*(ना०)* यमुना नदी।

काली-*(वि०)* १. पगली। २. मूर्ख।

काळी-*(वि०)* काले रंग की। काली। *(ना०)* काली देवी। कालिका।

काळी कांठळ-*(ना०)* काली घटा। मेघ घटा। काळायण।

काळी छांग-दे० काळी थाट।

काळीजीरी-*(ना०)* एक पेड़ की फली के बीज।

काळीथाट-*(ना०)* बकरियों का समूह। टाटा छांग। छांग।

काळी द्रह-*(ना०)*वृन्दावन के पास यमुनानदी का एक द्रह जिसमें कालिय नाग रहता था।

काळीधार-*(ना०)* १. काली द्रह। कालीदह। २. भयंकर आफत। भारी दुख।

काळी नाग-*(न०)* व्रज में यमुना नदी के काली दह में रहने वाला एक प्रसिद्ध जल

विषधर जिसको श्रीकृष्ण ने वहाँ से भगा कर पुनः समुद्र में रहने के लिये विवश किया था। कालिय नाग।

काळी-पीळी-(वि०) १. काली और पीली। काले और पीले रंग की। २. भयंकर। (ना०) १. जीवन के उतार चढ़ाव। २ बड़ी बड़ी आफतें।

काळी बोळी-(वि०) १. अत्यधिक। घोर। २. तेज। प्रचंड। ३. भयंकर। भयावनी। ४. भयंकर आँधी। ५. ग्रीष्म की तेज धूप और घोर अंधेरी रात का विशेषण शब्द।

काळी माता-(ना०) कालिका देवी।

काली रो कळस-(न०) १. पगली स्त्री के सिर पर उठाये हुये घड़े के अखंडित रहने की असंभावना। (वीरों के जीवन पर आरोपण) २. युद्ध करने के लिये अपने निश्चय से नहीं हट कर मृत्यु को वरण करने वाले वीर का एक विशेषण। मरणोन्मत्त वीर का एक विशेषण। ३. पगली के सिर का घड़ा। ४. राजस्थानी लोक कथाओं की एक कथानक-रूढ़ि। ५. वीर साहित्य का एक उपमा अलंकार। ६. एक कवि समय।

काळींगो-(न०) १. बरसाती तरबूज। २. तरबूज। मतीरो।

काळींदार-(न०) भयंकर विषैला काला सर्प।

काळूंडी-(न०) १. कलंक। लांछन। २. बहुत बड़ा कलंक।

काळूंस-दे० काळास। काळूंडी।

काले-(अव्य०) आने वाले या बीते दिन को।

काळै कोसाँ-(अव्य०) १. बहुत दूर। २. दुर्गम और दूर।

काळै नाग रा झाग-(न०) अफीम।

कालो-(वि०) १. पागल। उन्मत्त। २. मूर्ख। ३. रणोन्मत्त। ४. मतवाला। मस्त।

काळो-(वि०) १. काले रंग का। काला। २. खोटा। ३. छली। ४. भयंकर। (न०) १. सर्प। २. अफीम। ३. कलंक।

काळो आखर-(न०) १. दुर्भाग्य। २. मृत्यु। ३. मृत्यु संदेश। मृत्यु-संदेश का पत्र। ४. काली स्याही से लिखा अक्षर। यथा:- काळो आखर भैंस बराबर।

काळो ऊन्हाळो-(न०) अत्यधिक गर्मीवाला। ग्रीष्मकाल।

काळोकुट-(वि०) अत्यन्त काला।

काळो टीलो-(न०) कलंक का टीका। कलंक। लांछन।

काळो तारो-(न०) १. पिता को मारने वाले शत्रु का बदला नहीं लेने वाले पुत्र की कलंक रूप उपाधि। २. युद्ध से भाग जाने वाले व्यक्ति का कलंककारी नाम।

कालो तुतक-(वि०) बिलकुल पागल।

कालो पाणी-(न०) शराब। दारू।

काळो पाणी-(न०) १. काला पानी। २. अंग्रेजों के शासन-काल में अंदामन द्वीप में भेज देने की सजा। ३. देश निकाला। ४. यातायात और पानी आदि की असुविधाओं वाला निकृष्ट स्थान।

काळो-पीळो-(वि०) १. क्रोधित। (न०) काला और पीला।

काळो मूंडो-(न०) किसी नीच काम करने का कलंक। काला मुँह।

काळो मूंडो करणो-(मुहा०) १. कुपात्र या दुष्टजन का आँखों के आगे से दूर होना। आंखां-अदीठ होणो। २. कलंकित होने का काम करना।

काव-(ना०) १. मृत्यु। २. अवधि। मयाद। म्याद।

कावड़-(ना०) १. काँवर। बहँगी। २. देवी-देवता, धर्मात्मा और भक्तों आदि पुण्य-पुरुषों के रंग-बिरंगे चित्रों की अनेक छोटे छोटे खंडों वाली एक छोटी पेटी। ३. इन चित्रों के दिखाते समय कावड़िये

करते समय मुँह से 'ऊं' आदि शब्द निकलना। कनसना। काँखना।

काँटारखी-(ना०) जूती। पगरखी।

काँटारखो-(न०) जूता। पगरखो।

काँटाळो-(वि०) १. काँटोंवाला। २. वीर। (न०) १. हिंसक पशु। २. सिंह। ३. एक घास।

काँटावाड़-(ना०) बेरी की कँटीली डालियों से बनाया हुआ अहाता। काँटों का घेरा। वाड़।

काँटियो-(न०) १. एक मुसलमान जाति। २. इस जाति का पुरुष। ३. हँसिया।

काँटी-(ना०) १. तोलने का एक छोटा काँटा। २. एक घास।

काँटी-लाग-(न०) एक प्राचीन कर।

काँटेदार-(वि०) वह जिसमें काँटे लगे हों। काँटों वाला। काँटाळो।

काँटो-(न०) १. काँटा। २. साँप-बिच्छू आदि विषैले जंतु। ३. बिच्छू आदि का डंक। ४. डंडी के बीचोबीच खड़ी नोक वाली तराजू। काँटा। ५. स्त्रियों के नाक का एक गहना। काँटा। ६. समतोल के लिये तराजू की डंडी के बीचोबीच लगी रहने वाली नोक। ७. घड़ी की सूई। ८. अवरोध। बाधा। ६. शंका। वहम। (वि०) दुखदायी।

काँट्रेक्ट-(न०) ठीका। कंट्राट।

काँट्रेक्टर-(न०) ठीका लेने वाला व्यक्ति। ठीकेदार।

काँठळ-(ना०) उठती हुई काली मेघ घटा। बादलों की घटा। कळायण।

काँठळियो-(न०) १. प्रति समय सेवामें या पास रहने वाला व्यक्ति। २. राज्य के समीप रहने वाला। राज्य का पड़ौसी। २. पड़ौसी देश की सीमा का जागीरदार। ४. नित्य पास में रहकर सेवा करने वाला जागीरदार। ५. पहाड़ों में रहने वाली जाति। ६. इस जाति का व्यक्ति। ७. सीमा रक्षक। ८. पड़ौसी राज्य का लुटेरा। ६. लूट-खसोट करने वाला पहाड़ी लुटेरा।

काँठलो-(न०) १. गले में पहनने का एक आभूषण। २. हार।

काँठायत-(वि०) १. राज्य की सीमा पर रहने वाला। २. सीमा रक्षक।

काँठिया वरण-(न०) १. सरहद पर रहने वाले लोग। २. सरहद की रक्षा करने वाले लोग। ३. धनुष-बाण आदि शस्त्र पास में रखने वाली शिकारी जाति के लोग। भील, मीणा आदि।

काँठीर-दे० कंठीर।

काँठै-(क्रि० वि०) १. निकट। पास। २. किनारे पर।

काँठो-(न०) १. नदी आदि का किनारा। २. सीमा। किनारा।

काँड-(न०) १. बाण। तीर। २. धनुष के बीच का भाग। ३. ग्रंथ का एक अंश। प्रकरण। काण्ड। ४. दुर्घटना।

काँडा-दे० काँडो।

काँडी-(न०) १. तीर-कमान। धनुष। २. तीर-कमान से शिकार करने वाला व्यक्ति। ३. कौआ। कागलो।

काँडो-(न०) १. बुराई। निंदा। २. खोटी चर्चा। ३. बदनामी। अपकीर्ति। ४. झगड़ा-टंटा।

काँदो-(न०) प्याज। काँदा।

काँध-(ना०) १. कंधा। २. जूए की रगड़ से बैल की गरदन पर होने वाला गड्ढा। बैल के गरदन की चमड़ी का मोटा और सख्त होना। ३. लाश की अरथी को श्मशान ले जाते समय दिया जाने वाला कंधा।

काँधमल-(वि०) वीर।

काँधाळ-(वि०) १. बड़े कंधों वाला। २. वीर। ३. बैल।

कांधियो-*(वि०)* १. शव की ठठरी को कंधा देने वाला । २. चापलूस ।
कांधो-*(न०)* कन्धा । खवो ।
कांप-*(ना०)* १. नदी में बह कर आई हुई मिट्टी । *(न०)* सेना-शिविर । कैम्प ।
कांपणी-*(ना०)* कंपन । थरथराहट । धूजणी ।
कांपणो-*(क्रि०)* १. कांपना । थरथराना । धूजना । २. भय खाना । डरना ।
कांव-*(ना०)* १. वेंत । छड़ी । २. लम्बी पतली टहनी । ३. सोने या चाँदी को गाल कर रेजे में ढालने से बनी लम्बी छड़ ।
कांवड़-*(न०)* १. रामसा पीर (रामदेव) के चमार जाति के भक्त । २ तंबूरे पर गाने का काम करने वाली एक जाति । ३. चमार जाति का याचक ।
कांवड़ियो-दे० कांवड़ ।
कांवड़ी-*(ना०)* छड़ी । वेंत । कांव । तड़ी ।
कांवळ-*(ना०)* दे० कामळ ।
कांवळी-*(ना०)* कमली । कम्बल ।
कांवळो-*(न०)* कम्बल ।
कांवाटणो-*(क्रि०)* वेंत से मारना । वेंत से प्रहार करना ।
कांवी-*(ना०)* १. खुले पत्रों की हस्तलिखित पुस्तक को पढ़ते समय पुस्तक अंगुलियों के पसीने से मैली न हो इसलिये अंगूठे के नीचे रखी रखी जाने वाली एक काष्ठ-पट्टिका । कम्बिका । २. पाँव का एक गहना । ३. पतली छड़ी । ३. सोने या चांदी को पिघाल कर रेजे में ढाली हुई लंबी पतली शलाका । ढाळकी । ढाळी ।
कांवेटणो-दे० कांवाटणो ।
कांय-*(क्रि०वि०)* १. कुछ भी । २. किस-लिये ।
कांयरो-*(वि०)* १. क्या । २. किस बात का । किण बात रो ।
कांवळी-*(ना०)* चील पक्षी ।
कांवळो-*(न०)* पीली चोंच और सफेद पांखों वाला गिद्ध जाति का एक पक्षी ।
कांस*(न०)* एक प्रकार की घास ।
कांसटियो-*(न०)* कंसारा । ठठेरा । २.कांसी के वरतन वेचने वाला व्यापारी ।
कांसाळ-*(न०)* १. झांझ । कंसताल । ताल । २. मजीरा ।
कांसा-रोग-*(न०)* १. गरीबी के कारण खाने को नहीं मिलने की स्थिति । भूखा मरने की हालत । २. गरीबी ।
कांसो-*(न०)* किसी व्यक्ति के लिये उसके घर पर थाल में परोस कर भेजा जाने वाला भोजन । २. परोसा हुआ भोजन । भोजन । ३. कांसे का बना थाल या थाली ।
कांहटो-*(न०)* किवाड़ की सांकल । कुंडी । कूंटो ।
कि-*(अव्य०)* १. अथवा । या । २. मानो । गोया । ३. क्या । ४. कैसे ।
किअोसड़ो-*(न०)* ब्राह्मण के लिये अपमान जनक शब्द । ब्राह्मण ।
किचरणो-*(क्रि०)*१. पीसना । २. दाबना । ३. कुचलना । रौंदना ।
किजातियो-*(अव्य०)*एक प्रश्न पद, जिसका अर्थ-'कौन सी जाति का ।' 'किस जाति का' अथवा 'जाति से कौन हो' होता है ।
किठाँ-*(अव्य०)*कौनसी जगह । किस जगह । कहाँ ।
किण-*(सर्व०)* १. किस । २. किसने । ३. किसके । *(ना०)* १. किसी वस्तु की निरंतर रगड़ से हथेली की चमड़ी का ऊपरी भाग का निर्जीव होकर मोटा हो जाना । आइठाण । आंटण । २. घाव पर आने वाला मोटा चमड़ा । खरूंट ।
किणणो-*(क्रि०)* १. कराहना । २. रोना । ३. खुशामद करना ।

किण मात–*(अव्य०)* १. किस प्रकार। २. किस लिये।
किणरी–*(सर्व०)* किसकी।
किणरो-*(सर्व०)* किसका।
किणही-*(सर्व०)* किसी ने।
किणाँरी–*(सर्व०)* किनकी।
किणिपरि–*(अव्य०)* किसी भी प्रकार।
किणिय–*(अव्य०)*१. किसी भी। २. किसी ने भी।
किणी–*(सर्व०)* १. किसी। २. कौनसी।
किणै–*(सर्व०)* किसने।
कित–*(क्रि०वि०)* कहां। किधर। किस जगह।
कितरो–*(वि०)* कितना।
कितरोइक–*(वि०)* कितनाक।
किता–*(वि०)* कितने।
किताइक-*(वि०)* कितने ही।
कितावर–*(न०)* उपकार। किरियावर।
कितो–*(वि०)* कितना।
कितोक–*(वि०)*१. कितना सा। कितनाक। २. कितना। ३. कितना थोड़ा।
कितोसोक–*(वि०)* १. कितना सा। २. कितना थोड़ा। ३. थोड़ा सा।
कित्ति–*(ना०)* कीर्त्ति। यश।
कित्ती–*(वि०)* कितनी।
कित्तो–*(वि०)* कितना।
किथ–*(सर्व०)* १. कौन। २. कौनसा। *(क्रि०वि०)* कहां।
किथाँ–*(क्रि०वि०)* कहां। किस जगह।
किथिये–*(क्रि०वि०)* कहां। किस जगह।
किथै–*(क्रि०वि०)* कहां। किस जगह।
किन–*(अव्य०)*१. अथवा। या। २. मानो। गोया।
किनकी–*(ना०)* छोटा पतंग। गुड्डी।
किनको–*(न०)* पतंग। कनकौवा। गुड्डी।
किना–*(अव्य०)*१. अथवा। या। २. मानो। गोया।
किनार–दे० किनारी।
किनारी–*(ना०)* १. किनारा। कोर। २. गोटा-किनारी। ३. कपड़े के छोर का भाग जो भिन्न रंग का होता है।
किनारै–*(क्रि०वि०)* १. दूर। अलग। २. जुदा। अलग। भिन्न। ३. तट पर।
किनारो–*(न०)* १. किनारा। तट। कांठो। २. छोर। अंतिम सिरा।
किनियाणी–*(ना०)* चारणों की किनिया शाखा में उत्पन्न करणी देवी का एक नाम।
किन्नो–दे० किनको।
किम–*(क्रि०वि०)* १. क्यों। २. कैसे। किस प्रकार।
किमकर–*(क्रि०वि०)* १. कैसे। २. किस उपाय से। कैसे करके।
किमाड़–दे० किंवाड़।
किमाड़ियो–दे० किंवाड़ियो।
किमाड़ी–दे० किंवाड़ी।
कियो–*(वि०)* कौनसा। *(सर्व०)* कौन। *(क्रि० भू०)* किया। बनाया।
किर–*(अव्य०)* मानो। जैसे। गोया। *(न०)* निश्चय।
किरकाँटियो–*(न०)* गिरगिट। काकींडो। किरड़ो।
किरकिर–*(ना०)* १. आटा आदि भोजन सामग्री में मिली हुई रेती। २. अपयश। ३. लांछन।
किरकिरो–*(न०)* १. विघ्न। बाधा। २. बनते हुये उत्सव आदि कार्यों में पड़ने वाला विघ्न। कार्यविरोध।
किरच–*(ना०)* सीधी तलवार।
किरचो–*(न०)* १. टुकड़ा। २. सुपारी का टुकड़ा।
किरड़ो–*(न०)* १. छिपकली की जाति का विविध रंग बदलने वाला एक जन्तु। गिरगिट। किरकांटियो। काकींडो।

किरण-(ना०) १. गोटा-किनारी । तार-किनारी । २. वादले की झालर । ३. प्रकाश की रेखा । रश्मि ।

किरणझाळ-(ना०) ज्वाला के समान तप्त किरणों वाला सूर्य । सूर्य । आदित्य ।

किरणाळ-(न०) १. सूर्य । २. चंद्र । ३. तेजवान पुरुष । ४. यशस्वी वीर पुरुष । (वि०) १. आभायुक्त । २. तेजस्वी ।

किरणाळो-(वि०) १. तेजस्वी । २. वीर । (न०) सूर्य ।

किरणियो-(न०) १. महंत, श्रीपूज, आचार्य और राजा लोगों की सवारी के साथ रहने वाला सोने या चाँदी से निर्मित लँबे डंडे वाला गोल या पत्तेनुमा एक राजचिन्ह जिसकी एक ओर सूर्य और दूसरी ओर चंद्रमा किरणों सहित चित्रित किये हुये होते हैं । भादंड । भामंडल । २. छाता ।

किरणी-(ना०)सहारा । आश्रय । आसरो ।

किरतव-दे० करतव ।

किरतवी-दे० करतवी ।

किरतार-दे० करतार ।

किरती-(ना०) १. कृत्तिका नक्षत्र । २. कृत्तिका नाम के छः तारों का समूह ।

किरपण-(वि०) १. कंजूस । कृपण । २. नीच ।

किरपा-(ना०) कृपा । मेहरबानी ।

किरपाण-(ना०) कृपाण । किरपान । तलवार खांडो ।

किरमजी-(वि०) किरमिजी । गहरा लाल ।

किरमर-(ना०) तलवार । तरवार ।

किरमर-झल-दे० किरमर हथो ।

किरमर-हथो-(वि०) १. खड्गधारी । २. मुंहता नैणसी का एक विशेषण ।

किरमाळ-(ना०) १. तलवार । (न०) १. तेजस्वी पुरुष । २. वीर पुरुष । ३. सूर्य ।

किरमाळी-(वि०) खड्गधारी । (ना०) १. खड्ग । २. सूर्य । तलवार ।

किरमिर-(ना०) तलवार ।

किरळी-(ना०) तीव्र चिल्लाहट ।

किर वाणी-(ना०) तलवार ।

किरसाण-(न०) १. किसान । कृषक । २. खेती । कृषि ।

किरसाणी-(न०) कृषक । किसान ।

किरसाणी-(न०) खेती करने वाले लोग । कृषक जाति ।

किराड़-(न०) १. किरड़े (गिरगिट) के समान भाव, चेष्टा और विचार आदि के रूप में विविध रंग बदलने वाली शोषक वृत्ति वाला व्यक्ति । २. किराड़ू नगर के नाम के ऊपर से प्रसिद्धि में आई हुई बनियों की एक संज्ञा । बनिया । ३. नदी का किनारा । ४. किनारा । ५. कलार ।

किराड़ू-(न०) १. मारवाड़ के मालाणी प्रान्त का खंडहर रूप एक प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक नगर । किराटकूप । २. मारवाड़ के नौ बड़े दुर्गों में से एक । ३. मारवाड़ के इतिहास प्रसिद्ध नगर और उसके किले का नाम ।

किराणो-दे० किरियाणो ।

किरात-(न०) १. एक जंगली जाति । २. भील ।

किरायतो-(न०) प्याज के बीज ।

किरायरो-दे० किरायतो ।

किरायो-(न०) किराया । भाड़ा । भाड़ो ।

किरांसूं-(सर्व०) किससे ।

किरि-(अव्य०) १. अथवा । किंवा । २. मानों । गोया । जैसे ।

किरिया-(ना०) १. मृतक का अशौच निवारणार्थ किया जाने वाला बारह दिनों तक का क्रिया कर्म । २. मृतक का ग्यारहवें दिन का श्राद्ध आदि क्रिया कर्म । एकादशा । ३. व्यवहार । आचरण ।

किरियाणो-(न०) १. सोंठ, पीपर, पीपरामूळ, अजवायन, चिरोंजी, बादाम, इला-

यची आदि पंसारी के यहाँ मिलने वाली वस्तुएँ। पंसारठ की वस्तुएँ। किराना। २. प्रसूता के लिये बनाये जाने वाले पौष्टिक संधाने की वस्तुएँ।

किरियावर–*(न०)* १. श्रेष्ठ कर्म। दे० काज-किरियावर और क्यावर २. उपकार।

किरियावरो–*(वि०)* १. किरियावर करने वाला। २. अहसान करने वाला। ३. श्रेष्ठ कामों को करने वाला। ४. कीर्त्ति-मान। यशस्वी।

किरी–*(ना०)* १. पथ्य। परहेज। २. तने के बीच का (काला और) सख्त भाग।

किरीट–*(न०)* मुकुट। **मुगट**।

किरीटी–*(न०)*१. कुक्कुट। मुर्गा। कूंकड़ो। २. मोर। ३. इन्द्र। ४. श्रीकृष्ण। ५. किरीट धारण करने वाला।

किरै–*(न०)* १. हाहाकार। कुहराम। रोना-पीटना। २. शोक। उदासी।

किरै-फूटणो–*(मुहा०)* हाहाकार मचना। रोना-पीटना।

किरोड़ी–दे० करोड़ी।

किल–*(अव्य०)*१. या। अथवा। २. निश्चय।

किलकिला–*(ना०)* एक प्रकार की तोप। *(न०)* १. तोप का गोला। २. बड़े वेग की उड़ान के साथ जल-जंतुओं को पकड़ कर खाने वाला एक पक्षी। ३. किल किल शब्द। किलकिलाहट।

किलकोळ–*(ना०)* १. कलोल। क्रीड़ा। केलि। २. हँसी-मजाक।

किलच–*(न०)* १. मुसलमान। २. एक पक्षी।

किलम–*(न०)* मुसलमान। (ब. व–किलमां, किलमाण। किलमायण।

किलंग–*(न०)* १. एक दैत्य। २. कल्कि अवतार।

किलंगी–दे० कलंगी।

किलंब–*(न०)* मुसलमान। (ब.व.–किलंबा, किलंबाण, किलंबायण, किलबाण किलबायण)।

किलो–*(न०)* किला। दुर्ग।

किलोड़ो–*(न०)* १. छोटे कद का बैल। २. छोटी उमर का बैल।

किलोळ–*(ना०)* १. कल्लोल। उमंग। २. तरंग। लहर। ३. आनंद। मौज।

किवळो–*(न०)* १. सूअर। **कवळो**। २. बिना मात्रा का वर्ण। **कवळो**।

किवाण–*(ना०)*कृपाण। तलवार। **तरवार**।

किसकंध–*(ना०)* किष्किन्धा।

किसड़ी–*(वि०)* १. कैसी। २. क्या। *(सर्व०)* कौनसी।

किसड़ो–*(वि०)* १. कैसा। २. क्या। *(सर्व०)* कौनसा।

किसड़ै–*(सर्व०)* कौनसा।

किसन–*(न०)* श्रीकृष्ण।

किसनाग–*(न०)* अफीम।

किसनागर–*(न०)* अफीम। **अमल**।

किसब–*(न०)*१ धंधा। व्यवसाय। २. वैश्य-वृत्ति। ३. कला। हुनर।

किसबण–*(ना०)* वेश्या। **पातर**।

किसम–*(ना०)* १. किस्म। प्रकार। २. ढंग। तर्ज।

किसमत–*(ना०)* भाग्य। तकदीर। किस्मत। **तगदीर**।

किसमिस–*(ना०)* छोटी दाख। किशमिश।

किसान–*(न०)* कृषक। खेतीखड़। **किरसाण**।

किसी–*(वि०)* कौनसी।

किसूं–*(वि०)* १. कौनसी। कौनसा। २. कैसी। कैसा। ३. क्या।

किसो–*(वि०)* १. कौनसा। २. कैसा। *(सर्व०)* १. कौन। २. कैसा।

किसोक–*(वि०)* कैसा। स्त्री०–किसीक।

किसोदरि–*(ना०)* कृशोदरी। पतली कमर वाली।

किस्टो–*(न०)* जरदालू।

किस्त–*(ना०)* १. ऋण को थोड़ा-थोड़ा करके देने की क्रिया। २. पराजय। हार।

३. हानि। ४. शह (शतरंज में)। किस्त में दिया जाने वाला रुपया।

किस्सो-(न०) १. किस्सा। कहानी। २. झगड़ा। ३. विवाद।

किहड़ो-(वि०) १. कौनसा। २. कैसा।

किहड़ी-(वि०) कैसी।

किहकि-(वि०) कुछ। थोड़ा। (सर्व०) कोई।

किहि-(सर्व०) १. किसी के। २. किस।

कि-(सर्व०) क्या।

किंगरी-सारंगी के समान एक तंतुवाद्य।

किंजळक-(ना०) १. पराग। पुष्परज। २. केशर। केसर।

कियाँ-(क्रि०वि०) कैसे। किस प्रकार।

किंवाड़-(न०) १. दरवाजा। २. कपाट। किवाड़। कमाड़।

किंवाड़ियो-(न०) १. छोटा किवाड़। कमाड़ियो। २. रसोईघर में भोजनादि रखने का छोटा कोठा।

किंवाड़ी-(ना०) छोटा किवाड़।

की-(क्रि०वि०) १. क्या। (सर्व०) कौनसा। (अव्य०) 'का' विभक्ति का नारीजाति रूप। (क्रि०भू०) 'करणो' क्रिया का भूतकालिक नारी जाति रूप।

कीकरण-दे० कीकर।

कीकर-(क्रि०वि०) १. किस प्रकार। कैसे। २. किसलिये।

कीकली-(ना०)छोटी बच्ची। कीकी। गीगी।

कीकलो-दे० कीको।

कीकी-(ना०) १. छोटी बच्ची। २. आंख की पुतली। आंख का तारा।

कीको-(न०) बालक। छोटा बच्चा। गीगो।

कीच-(न०) १. कीचड़। कादो। २. सुहागा और दानामेथी को उबाल कर बनाया हुआ एक लसदार चेप जिसमें आभूषण तैयार करते समय उसके खंडों को चिपका कर उनमें झालन लगाई जाती है। झालन लगाने के पूर्व आभूषण के छोटे छोटे विविध भागों को चिपकाने का एक चेप। चीक।

कीचक मारण-(न०) भीमसेन।

कीचकरिप-(न०) भीम। कीचक-रिपु।

कीचड़-(न०) कर्दम। पंक। गारो। कादो।

कीचरड़ो-(न०) कीच।

कीट-(न०) १. मैल। २. किट्ट। करदो। ३. तपाये हुये घी की तलछट। ४. कीड़ा-मकोड़ा। कीड़ा। (वि०) महाकंजूस। अत्यन्त लोभी।

कीटी-(ना०) मावा। खोया।

कीटो-(न०) घी, तेल आदि में नीचे जम-जाने वाला मैल। किट्ट। तलछट। करदो।

कीड़ी-(ना०) चींटी। चींउंटी।

कीड़ी नगरो-(न०) १. चींटियों का बिल। २. हथेली और पगथली में होने वाला एक फोड़ा।

कीड़ी-वेग-(क्रि०वि०) १. मंदगति। २. धीरे-धीरे। (वि०) धीरे धीरे चलने वाला। मंदगति।

कीड़ो-(न०) कीड़ा।

कीणो-(न०) १. साग सब्जी खरीदने के लिये पैसों के एवज में दिया जाने वाला अनाज। २. अनाज।

कीत-(ना०) कीर्ति।

कीध-दे० कीधो।

कीधी-(भू०क्रि०) १. 'की' 'करणो' वर्तमान क्रिया का नारीजाति भूतकाल रूप। करदी। बनादी। २. समाप्त कर दी। ३. वर्णन की।

कीधो-(भू०क्रि०) 'करणो' वर्तमान क्रिया का भूतकाल रूप। १. कर दिया। बनाया। निर्माण किया। २. वर्णन किया। ३. समाप्त किया।

कीधोड़ो-(भू०कृ०) (वि०) किया हुआ।

कीन-दे० कीधो।

कीनरो-*(न०)* किसी के संबंध में निंदायुक्त लंबी चर्चा । दे० कींदरो ।

कीनास-*(न०)* यम । कीनाश । **जम** ।

कीनी-दे० कीधी ।

कीनो-दे० कीधो ।

कीनोड़ो-दे० कीधोड़ो ।

कीन्ही-दे० कीधी ।

कीन्हो-दे० कीधो ।

कीन्होड़ो-दे० कीधोड़ो ।

कीप-*(न०)* १. लोहे की चद्दर का बना छोटे मुँह वाला तूंग जैसा पानी का बरतन । २. बोतल में प्रवाही भरने का एक चोंगा । **कीमो** । ३. हाथी की कनपटी का मद । ४. कुप्पी । **कूंपी** ।

कीमत-*(ना०)* मूल्य । दाम । **मोल** ।

कीमतणी-*(ना०)* १. कीमत का अनुमान लगाना । जाँच ।

कीमतणो-*(क्रि०)* १. कीमत करना । मोल करणो । **मोलणो** । २. कीमत लगाना ।

कीमताणो-*(क्रि०)* कीमत करवाना ।

कीमती-*(वि०)* मूल्यवान ।

कीमियागर-*(न०)* रसायनी ।

कीमियो-*(न०)* १. रासायनिक क्रिया । २. रसायन ।

कीमो-*(न०)* १. छोटे छोटे टुकड़ों में काटा हुआ खाद्य-मांस । २. बोतल में तरल पदार्थ डालने का चोंगा । कीप । **कीमो** ।

कीर-*(न०)* १. केवट । २. एक जाति । ३. तोता । शुक । **सूओ** । **सूवटो** ।

कीरत-दे० कीर्ति ।

कीरतन-*(न०)* १. ईश्वर भजन और नाम कीर्त्तन । २. गायन-भजन । कीर्त्तन ।

कीरतनिया-*(न०ब०व०)* १. एक घरबारी वैष्णव-साधु जाति जो राम कृष्ण आदि के धार्मिक चरित्रों का अभिनय करती है । २. कीर्त्तनियों की मंडली । रासधारियों की मंडली ।

कीरतनियो-*(न०)* १. कीरतनिया जाति का व्यक्ति । २. मंदिर में गा-बजा कर कीर्त्तन करने वाला । ३. कीर्त्तनकार ।

कीरथम-दे० कीरथंभ ।

कीरथंभ-*(न०)* कीर्त्तिस्तम्भ । कीर्त्ति स्थाई रखने के लिये बनाया हुआ स्तम्भ । स्मरण स्तम्भ ।

कीरप-*(ना०)* १. दया । अनुकंपा । करुणा । २. किसी के दुखदर्द की वेदना । हमदर्दी । सहानुभूति ।

कीर्त्तन-दे० कीरतन ।

कीर्त्ति-*(ना०)* १. यश । २. प्रशंसा । ३. ख्याति ।

कीर्त्तिस्तभ-दे० कीरथंभ ।

कील-*(ना०)* १. मेख । कीली । २. खूंटी ।

कीलणियो-*(न०)* मंत्रित कील को जमीन व खेजड़ी आदि में ठोंक कर भूतप्रेत को वश में करने वाला । कीलक ।

कीलणो-*(क्रि०)* भूतप्रेत आदि को मंत्र पढ़ते हुये कील ठोंक कर वश में करना ।

कीलियो-*(न०)* कुएँ में से पानी निकालने के चरस के रस्से को बैलों के जूए की रस्सी से कील द्वारा जोड़ने और बैलों का चला कर कुएँ से चरस निकालने वाला व्यक्ति ।

कीली-दे० कील ।

कीवी-दे० कीधी ।

कीं-*(वि०)* कुछ । थोड़ा । किंचित ।

कींक-*(वि०)* कुछ । किंचित । *(अव्य०)* कुछ तो ।

कींगरणो-*(क्रि०)* १. रोना । २. शोक मनाना ।

कींजरो-*(न०)*१. कलंक । लांछन । २.निंदा । बुराई ।

कींजाँ-*(क्रि०वि०)* किस जगह । कहाँ । **कठै** ।

कींदरो-*(न०)* १. दोषदर्शन । २. निंदा । बुराई । ३. लंबी और निरर्थक बात ।

कीरो-(वि०) किसका। किणरो।

कु-(उप०) संज्ञा शब्द के पहिले लग कर उसमें दूषित भाव उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग। यथा-कुवेला, कुठाम। कुवखाण आदि। (ना०) पृथ्वी।

कुअवसर-(न०) प्रतिकूल समय। कुसमय। कवेळा।

कुओ-(न०) कुँआँ।

कुकड़ी-(ना०) सूत की लच्छी। ग्रंटी।

कुकरम-(न०) कुकर्म। कुकृत्य। खोटा काम।

कुकरमी-(वि०) १. कुकर्म करने वाला। २. व्यभिचारी।

कुकरियो-(न०) कुत्ते का बच्चा। पिल्ला।

कुकर्म-दे० कुकरम।

कुकर्मी-दे० कुकरमी।

कुकवि-(न०) १. अयोग्य तथा कुकर्मी पुरुषों की प्रशंसा करने वाला कवि। २. काव्य के कर्म व मर्म को नहीं जानने वाला कवि। ३. ईश्वर तथा देश भक्ति से विमुख कवि। ४. अपढ़ कवि। अबूझ कवि।

कुकस-(न०) १. इमली का बीज। कूँगो। २. वाजरी ज्वार आदि नाज को ऊखल में कूटने से निकला हुआ छिलका। कूको। ३. सड़ा गला नाज। ४. निस्सार अन्न। (वि०) १. सार रहित। निःसार। २. कुसार।

कुकाम-(न०) कुकृत्य। कुकर्म।

कुकुदवान-(न०) वैल।

कुखेत-(न०) १. खोटे आचरण वाली स्त्री। व्यभिचारिणी। २. बुरा स्थान। कुठौर। कुठोड़।

कुख्यात-(वि०) वदनाम।

कुगति-(ना०) दुर्गति।

कुच-(न०) स्तन। उरोज।

कुचमाद-(ना०) १. वदमाशी। २. धूर्तता। ३. चालाकी।

कुचमादी-(वि०) १. वदमाश। २. धूर्त। ३. चालाक।

कुचरणी-(ना०) १. छेड़छाड़। २. किसी को तंग करने की क्रिया। ३. चर्चा। ४. निंदा।

कुचरणो-(क्रि०)कुरेदना।

कुचलणो-(क्रि०) कुचलना। रौंदना।

कुचाल-(ना०) १. वदमाशी। २. दुष्टता।

कुचाली-(वि०) १. कुचाल चलने वाला या करने वाला। वदमाश। २. दुष्ट।

कुचाव-(ना०) बुरी इच्छा। खोटी चाह।

कुचील-(वि०) मैला-कुचेला।

कुचीलणी-(वि०) गंदी। मैली।

कुछ-(वि०) थोड़ा। किंचित।

कुछाप-(ना०) १. कलंक। २. वदनामी। ३. बुरा प्रभाव।

कुछेक-(वि०) थोड़ासा।

कुछोरू-दे० कछोरू।

कुज-(सर्व०) कोई। (न०) मंगलग्रह।

कुजकोई-(वि०) हरएक। प्रत्येक। (सर्व०) हरकोई।

कुजस-(न०) कुयश। अपयश। निंदा। अपकीरत।

कुजात-(न०) १. कुत्ता। २. नीच जाति। (वि०) १. नीच। अधम। पतित।

कुजाव-(न०) १. बुरी वात। २. अवांछित उत्तर। ३. गाली।

कुजोग-(न०) १. कुयोग। कुसंग। २. अशुभ योग। बुरा समय।

कुजोड़-(ना०) अयोग्य जोड़ी।

कुजोड़ी-दे० कुजोड़।

कुजोड़ो-दे० कुजोड़।

कुटको-(न०) टुकड़ा। कटको।

कुटम-दे० कुटंब।

कुटम-कवीलो-(न०) कुटुंब के समस्त स्त्री पुरुषों का समूह।

कुटमजात्रा-दे० कुटंबजात्रा।

कुटम परिवार-दे० कुटम-कवीलो।

कुटळ-(वि०) कुटिल। कपटी।

कुटळाई–*(ना०)* कुटिलता ।
कुटंव–*(न०)* कुटुम्व । परिवार ।
कुटंब-जात्रा–*(ना०)* १. संन्यास की दीक्षा लेने के बाद अपने कुटुम्व से प्रथम बार भिक्षा माँग कर लाने का विधान । २. प्रव्रज्या ग्रहरा के बाद कुटुम्वीजनों से मिलने जाना । ३. प्रवासी का अपनी मातृभूमि और कुटुम्वीजनों से मिलने जाना ।
कुटाई–*(ना०)* १. कूटने का काम । २. पिटाई । ठोंकपीट ।
कुटार–*(न०)* १ मड़ियल टट्टू । २. खराव आदत का पशु । ३. मड़ियल चौपाया । दुर्वल पशु ।
कुटि–*(ना०)* कुटिया । झोंपड़ी ।
कुटिया–*(ना०)* कुटि । झोंपड़ी ।
कुटिल–*(वि०)* १. कपटी । २. टेढ़ा ।
कुटिलता–दे० कुटिलाई ।
कुटिलाई–*(ना०)* १. टेढ़ापन । २. कपट ।
कुटी–दे० कुटि ।
कुटीजरगो–*(क्रि०)* १. मार खाना । पिटना । २. कूटा जाना । (औषध आदि का) ।
कुटुंव–दे० कुटंव ।
कुटेव–*(ना०)* खराव आदत ।
कुटैम–*(ना०)* १. कुसमय । बुरावक्त । २. अनुपयुक्त समय ।
कुठाम–*(न०)* दे० कुठौड़ ।
कुठाँव–दे० कुठाम ।
कुठौड़–*(ना०)* १. बुरी जगह । कुठौर । २. गुप्तांग ।
कुड–*(न०)* १. दीवाल । २. झोंपड़ा । कड ।
कुड़–*(ना०)* १. शिकार के समय हरिरा को फंसाने का लोहे का वना एक घेरा । २. चरस के मुँह का गोल घेरा ।
कुड़कली–दे० करकली ।
कुड़की–*(ना०)* देन, अर्थदंड आदि की वसूली के लिये माल या जायदाद की कीजाने वाली जव्ती । कुर्की । आसंजन ।
कुड़छी–*(ना०)* करछी । कड़छी ।
कुड़तो–*(न०)* कुरता । चोला ।
कुड़-दाँतळी–*(ना०)* एक चिड़िया ।
कुड़ापो–दे० कुढापो ।
कुड़ियारो–*(वि०)* झूठा ।
कुडोळ–*(वि०)* वेडौल । भद्दा ।
कुढ–दे० कुढरा ।
कुढरा–*(ना०)* १. मनस्ताप । २. खीझ । ३. रीस ।
कुढरगो–*(क्रि०)* भीतर ही भीतर संतप्त होना । मन ही मन में दुखी होना ।
कुढव–*(वि०)* १. वेढव । २. कठिन । ३. बुरा । *(न०)* बुरी आदत ।
कुढवो–*(वि०)* १. अव्यवस्थित । २. वेढंगा । कुढंगा । ३. विवेक रहित ।
कुढंग–*(वि०)* वेढंगा । कुढंगा । *(न०)* बुरा ढंग ।
कुढंगी–*(वि०)* १. वेढंगी । २. वेढंगा । ३. उजड्ड ।
कुढंगो–*(वि०)* दे० कुढंगी ।
कुढापो–*(न०)* १. ईर्ष्यावश हृदय में जलन उत्पन्न करती हुई प्रतिपल बनी रहने वाली स्मृति । २. कुढन । जलन । ३. ईर्ष्या ।
कुढाळो–*(वि०)* १. प्रतिकूल । २. नियम विरुद्ध । ३. रिवाज के खिलाफ ।
कुरा–*(सर्व०)* १. कौन । २. किसने ।
कुरा पाखै–*(क्रि०वि०)* १. किसलिये । क्यों । २. किस ओर ।
कुरावो–*(न०)* कुटुम्व । परिवार ।
कुण्यां–*(सर्व०)* १. किसके । २. कौन ।
कुत–*(ना०)* १. वर्षा ऋतु में होने वाला मच्छर जाति का एक सूक्ष्म जन्तु । २. एक घास ।
कुतको–*(न०)* कुतका । सोंटा । डंडा ।
कुतवनमा–दे० कुतुवनमा ।

कुतवसाही नाणो–(न०) कुतुवशाही रुपया ।
कुतर–(ना०) ढोरों के चरने के लिये ज्वार, बाजरी आदि के डंठलों को फरसी से काट कर किये हुये महीन टुकड़े । भूसा ।
कुतरणो–(क्रि०) चूहों द्वारा वस्त्र आदि का काटना । २. घास डंठल आदि की कुतर करना ।
कुतरियो–(न०) १. एक घास । २. कुत्ता ।
कुतुव–(न०) ध्रुवतारा ।
कुतुवनुमा–(न०) दिग्दर्शक यंत्र ।
कुतुवमीनार–(न०) दिल्ली का एक प्रसिद्ध मीनार ।
कुत्तावींसी–(ना०) १. नीच काम । हलका काम । २. हीन वृत्ति ।
कुत्ती–(ना०) १. कुतिया । २. कुत नाम की घास ।
कुत्तो–(न०) कुत्ता ।
कुथान–दे० कुठाम ।
कुथाळ–(वि०) विपरीत । उलटा । (ना०) अन अपेक्षित स्थिति ।
कुदरत–(ना०)१. ईश्वरीय शक्ति । २ प्रकृति ।
कुदान–(न०) १. कुपात्र दान । २. दान में नहीं देने योग्य वस्तु का दान । निकम्मी वस्तु का दान । (ना०) कूदने की क्रिया ।
कुधान–(न०) १. कुधान्य । सड़ा हुआ अनाज । २. रांधने में कच्चा या जला हुआ अनाज ।
कुधारो–(न०) १. 'सुधारो' का उलटा । कुरीति । २. बिगाड़ ।
कुनण–दे० कुंदण ।
कुनाम–(न०) अपकीर्ति । बदनामी । (वि०) जिसकी लोग निंदा करते हों । बदनाम ।
कुनार–दे० कुमारजा ।
कुमार्ग । २. निषिद्ध आचरण । कुमार्ग । ३. बुरा मत ।
कुपातर(न०) अयोग्य व्यक्ति । कुपात्र । (वि०)१ अयोग्य । नालायक । २ निकम्मा । ३. बदचलन ।
कुपाती–(वि०) १. उत्पाती । उपद्रवी । २. अयोग्य । नालायक । ३. निकम्मा ।
कुपार–(न०) समुद्र । अकूपार ।
कुपी–(ना०) घी, तेल भरने की चमड़े की छोटी कुप्पी । २. शीशी ।
कुपीत–(ना०) १. बुरा हाल । २. तकलीफ । संकट ।
कुफळ–(न०) बुरा परिणाम ।
कुफायदो–(न०) हानि । नुकसान ।
कुफार–(वि०) १. अश्लील । २. कुत्सित । (ना०) अश्लील गाली ।
कुवध(ना०) १. कुबुद्धि । मूर्खता । २. चालाकी । धूर्तता । ४. बुरी सलाह ।
कुवधमूळ–(न०) चोर ।
कुवधी–(वि०) १. कुबुद्धि वाला । चालाक । धूर्त ।
कुवाण–(ना०) १. बुरा स्वभाव । २. कुवचन ।
कुब्जा–(ना०) कंस की एक दासी का नाम ।
कुभारजा–(ना०)१. अकुलिनी । २. कुलटा । ३. झगड़ालू स्त्री । ४. कलहप्रिय स्त्री । ५. फूहड़ स्त्री । कुभार्या ।
कुभाव–(न०) १. अप्रीति । २. तिरस्कार ।
कुमकुम–(न०) १. केशर । २. कुंकुम । रोली ।
कुमकुमो–(न०) १. गुलाब जल । २. गुलाब पुष्प । ३. अबीर गुलाल से भरा लाख का गोला ।
कुमजा–(ना०)१. दुख । कष्ट । २. भाग्य ।

कुमत–*(ना०)* कुमति । बुद्धिहीनता ।
कुमया–*(ना०)* अवकृपा । नाराजगी ।
कुमळावरणो–*(क्रि०)* कुम्हलाना ।
कुमळीजरणो–दे० कुमळावरणो ।
कुमंत्र–*(न०)* खोटी सलाह । अनुचित परामर्श ।
कुमाई–दे० कमाई ।
कुमारणस–*(न०)* दुर्जन । नीच मनुष्य ।
कुमारग–*(न०)* १. खोटा मार्ग । कुमार्ग । २. खोटा आचरण ।
कुमारमग–*(न०)* आकाशगंगा ।
कुमी–*(ना०)* कमी । न्यूनता । मरण ।
कुमीट–*(ना०)*१. अवकृपा । नाराजगी । २. कुदृष्टि । ३. पापदृष्टि ।
कुमुही–*(वि०)* बदसूरत । कुरूपा ।
कुमुहो–*(वि०)* १. बदसूरत । कुरूप । २. जिसका मुंह देखने से अमंगल माना जाता है ।
कुमेत–*(न०)* १. घोड़े का लाल रंग । २. लाल रंग का घोड़ा ।
कुमेळ–*(वि०)* बेमेल । बेजोड़ । *(न०)* १. वैमनस्य । अनबन । २. दुश्मनी । शत्रुता ।
कुमौत–*(ना०)* बेमौत । इलाज और सेवा सुश्रुषा के अभाव में हुई मृत्यु । २. भूख प्यास से हुई मृत्यु । ३. दुर्घटना से हुई मृत्यु ।
कुरकी–दे० कुड़की ।
कुरकुरी–*(ना०)* १. पेट-दर्द । २. दर्द ।
कुरखेत–*(न०)* कुरुक्षेत्र ।
कुरझ–*(ना०)* क्रौंच पक्षी ।
कुरटरणो–*(क्रि०)* कुतरना । काटना ।
कुरड़–*(ना०)* १. दंत पंक्ति । २. घोड़े की दंत पंक्ति । ३. एक घास । ४. पीठ ।
कुरनस–*(न०)* झुक कर किया जाने वाला अभिवादन ।
कुरपरण–*(ना०)* कपड़े या चमड़े आदि की कतरन ।
कुरब–*(ना०)* १. प्रणाम । २. विनय । ३. सत्कार । आदर ।
कुरब कायदो–*(न०)*१. नियमानुसार आदर सत्कार करने की भावना । २. मान । प्रतिष्ठा । ३. सत्कार ।
कुरळरणो–*(क्रि०)* दहाड़ दहाड़ कर रोना । व्याकुल होकर रोना । कराहना ।
कुरळाट–*(न०)* रोना । चिल्लाना । रुदन ।
कुरळाटो–*(न०)* विलाप । रुदन ।
कुरलो–*(न०)* कुल्ला । गरारा ।
कुरसी–*(ना०)* एक प्रकार का आसन ।
कुरसीनामो–*(ना०)* वंशवृक्ष ।
कुरंग–*(न०)* १. हरिण । मृग । २. कुमेत रंग का घोड़ा । ३. घोड़ा । *(वि०)* १. बदरंग । खराब रंग का । २. असुन्दर ।
कुरंगारण–*(न०)* हिरणों का झुंड । मृग समूह ।
कुरंगी–*(वि०)* बदरंगी । बदरंग । *(न०)* हिरण । *(ना०)* हरिणी ।
कुरंड–*(न०)* एक खनिज पदार्थ ।
कुरंद–*(न०)* दीनता । गरीबी ।
कुरारण–*(न०)* मुसलमानों का धर्मग्रन्थ । कुरान ।
कुरारणी–*(न०)* १. कुरान के अनुसार आचरण करने वाला । कुरानी । २. मुसलमान ।
कुरान दे० कुरारण ।
कुरीत–*(ना०)*कुप्रथा । खोटीरीत । कुरीति ।
कुरुक्षेत्र–*(न०)* एक तीर्थ स्थान । २. महाभारत का युद्धस्थल ।
कुल–*(वि०)* समस्त । तमाम ।
कुळ–*(न०)* वंश । कुटुम्ब ।
कुळकारण–*(ना०)* कुल की मर्यादा ।
कुळकाट–*(वि०)* कुल को कलंक लगाने वाला ।
कुलखरण–*(न०)* कुलक्षरण । अवगुण ।
कुलखरणी–*(वि०)* १. बुरे लक्षणों वाली । २. दुराचारिणी ।
कुलखरणो–*(वि०)* १. बुरे लक्षणों वाला । औगुणी । २. दुराचारी ।

कुलछ़-(न०) कुलक्षण । बुरालक्षण । बदचलनी ।

कुलटा-(ना०) व्यभिचारिणी स्त्री ।

कुलड़ी-(ना०) मिट्टी की छोटी लुटिया । कुल्हिया ।

कुलड़ी मुखो-(वि०) छोटी व भद्दी मुखाकृति वाला ।

कुलड़ो-(न०) कुल्हड़ । पुरवा ।

कुळण-(ना०) १. व्रण पीड़ा । २. अत्यधिक पीड़ा ।

कुळणो-(क्रि०) व्रण में पीड़ा होना ।

कुळतारक-दे० कुळतारण ।

कुळतारण-(वि०) कुल को तारने वाला । कुल की कीर्ति बढ़ाने वाला ।

कुळतारणी-(वि०) कुल को तारने वाली । कुल की कीर्त्ति बढ़ाने वाली ।

कुळदीवो-(न०)१. कुल दीपक । २. सुपुत्र । सपूत ।

कुळदेवी-(ना०) वह देवी जिसकी पूजा इष्टदेव के रूप में कुल में परंपरा से होती आ रही हो । कुल की परंपरागत इष्ट देवी ।

कुळदेवता-(न०)वह देवता जिसकी मान्यता कुल में परम्परा से होती आ रही है ।

कुळधर-(न०) पुत्र ।

कुलनास-(न०) १. ऊँट । २. कुलक्षय ।

कुळपाँति-(ना०) कुल परम्परा ।

कुलफत-(न०) १. शत्रुता । २. द्वेष ।

कुळवहू-(ना०) १. कुल वधू । कुलीन पुत्रवधू । कुलीन स्त्री ।

कुळवाहिरो-(वि०)कुलहीन । कुल वाहिर । अकुलीन ।

कुळ विदरी-(वि०) १. जो वर्णसंकर कुल में उत्पन्न हुआ हो । २. वर्णसंकर ।

कुलवै-(क्रि०वि०)छिपे रूप से । छिपे-छिपे ।

कुळभाण-(न०) १. कुल में सूर्य रूप । २. कुल में श्रेष्ठ । ३. पुत्र । सपूत ।

कुळभूखण-(न०) कुल में भूषण रूप । कुल में शोभा रूप ।

कुळ-मंडण-(न०) १. कुल की शोभा ।

कुळमेरू-(न०) सुमेरू सहित सातों पर्वत । सुमेरु पर्वत का कुल-समूह । सुमेरु-कुल । ३. सभी पर्वत ।

कुळमौड़-(न०) १. कुल की कीर्ति को बढ़ाने वाला । वंश का सिरमौर । २. वडील पुरुष । वडेरो । ३. सुपुत्र ।

कुळ-लजामणो-(वि०) १. कुल को लज्जित करने वाला । (न०) कुपुत्र ।

कुळलाज-(ना०) कुल की मर्यादा ।

कुळवंत-(वि०) कुलीन । खानदानी ।

कुळवंती-(ना०) उच्चकुल में उत्पन्न स्त्री ।

कुळवट-दे० कुळवाट ।

कुळवहू-दे० कुळवहू ।

कुळवाट-(ना०) १. कुल की उच्च मर्यादा २. कुल का श्रेष्ठ मार्ग । ३. वंशपरंपरा ।

कुळवान-(वि०) कुलीन । कुलवान । सद्वंशज ।

कुळसुध-(वि०) शुद्ध कुल का कुलीन ।

कुळहीण-(वि०) १. कुलहीन । २. नीच कुल का ।

कुलंग-(ना०) वदमाशी ।

कुलंगार-(न०) कुल को कलंकित करने वाला । कुलांगार ।

कुलंगी-(वि०) वदमाश ।

कुळाच-(ना०) १. औंधे सिर गिरना । २. छलांग । कुलाँच । गुलाँच ।

कुळातरो-(न०) मकड़ी ।

कुलक-(ना०) खेत में घास काटने (निदानि करने) की खुरपी ।

कुळियो-(न०) वेर आदि फलों का बीज । ठळियो ।

कुली-(न०) भार ढोने वाला मजदूर । (वि०) कुलवान ।

कुळी-(ना०) खरबूज-तरबूज आदि फलों के बीज । मग्ज । गिरी । २. बीज । दाना ।
कुलीण-(वि०) कुलीन । खानदानी ।
कुवखाण-(न०) निंदा । बुराई । अपकीर्त्ति ।
कुवचन-(न०) १. खोटा शब्द । २. गाली ।
कुवट-(न०) कुमार्ग । कुपथ ।
कुवत-(ना०) १. कुवाक्य । २. बुरी बात । ३. गाली । ४. कूवत । बुद्धि । ५. शक्ति । ताकत । कुव्वत ।
कुवाड़ियो-(न०) कुल्हाड़ा ।
कुवाड़ी-(ना०) कुल्हाड़ी ।
कुवाण-(ना०) १. कुवाणी । कुवाक्य । २. कटुवचन । ३. गाली ।
कुवादी-(न०) शत्रु ।
कुविसन-(न०) कुव्यसन ।
कुवेळा-(ना०) १. कुसमय । कवेळा । २. आपत्तिकाल । ३. संध्याकाल । साँझ ।
कुवैण-दे० कुवाण ।
कुवेंत-(क्रि०वि०) १. बिना विचार । २. नाप तोल रहित ।
कुशळ-दे० कुसळ ।
कुशळलाभ-(न०) 'ढोला मारू रा दूहा' ग्रंथ का संकलन कर्त्ता और कवि ।
कुस-(ना०) १. कुश । दर्भ । २. एक घास । ३. हल की फाल । ४. जल । ५. श्रीराम का पुत्र । ६. एक द्वीप ।
कुसनेही-(वि०) १. कृत्रिम स्नेह वाला । १. कपटी । छली । (न०) १. कपटी मित्र । २. शत्रु ,
कुसम बाण-(न०) १. कामदेव । २. कुसुशर ।
कुसळ-(ना०) १. क्षेम । मंगल । कुशल । (वि०) प्रवीण । चतुर ।
कुसळखेम-(ना०)१. कुशल-क्षेम । खैरियत । (वि०) सुखी और तदुरुस्त ।
कुसळात-(ना०) कुशल क्षेम । खैरियत ।
कुसळायत-दे० कुसळात ।
कुसस्थळी-(न०) १. द्वारिका । २. प्राचीन द्वारका । कुशस्थली ।
कुसंग-(ना०) बुरी संगति ।
कुसंगत-(ना०) कुसंग । कुसंगति ।
कुसंगी-(वि०) बुरी संगति में रहने वाला ।
कुसंप-(न०)१. अनबन । फूट । २. शत्रुता । ३. विरोध ।
कुसागड़ी-(न०) १. बैलगाड़ी को चलाने वाला वह सागड़ी जो गाड़ी पर सवारियों को बिठाने या भार लादने में बैलों की सुख सुविधा का ध्यान नहीं रखता हो । २. कुमार्ग दर्शक । जो गाड़ी को चलाना नहीं जानता ।
कुसुआड़-दे० कुसुवाड़ ।
कुसुवाड़-(ना०)१. गर्भ का समय के पहिले गिर जाना । २. प्रसव सम्बन्धी अनियमितता से होने वाली बीमारी । प्रसवरोग।
कुसूत-(वि०) १. अव्यवस्थित । २. अव्यवहारिक (न०) १. अंधेर । कुप्रबन्ध । २. अनाचार । असत् कार्य ।
कुहकबाण-(न०)१. एक प्रकार की तोप । २. अग्निबाण ।
कुहाड़ियो-(न०) कुल्हाड़ा ।
कुहाड़ी-(ना०) कुल्हाड़ी ।
कुहाल-(न०) बुरा हाल ।
कुहीजणो-(क्रि०)१. सड़ना । २. बासना । दुर्गंध देना । ३. पकाये हुए अन्न का पड़े रहने से दुर्गंध देना ।
कुँअर-(न०) १. कुमार । पुत्र । कुँवर । २. राजकुमार ।
कुँअरी-(ना०) १. कुमारी । पुत्री । २. राजकुमारी ।
कुँआरमग-(ना०) आकाशगंगा ।
कुँआरी-(ना०) कुमारी । अविवाहिता । क्वारी ।
कुँआरी-घड़ा-(ना०) १. वह सेना जो कभी न हारी हो । २. वह सेना जिस पर कभी कोई विजय प्राप्त न कर सका हो । ३. वह सेना जो युद्ध के लिये तैयार खड़ी हो ।

कुँआरो-(वि०) अविवाहित । क्वारा ।
कुंकुम-(न०) १. केशर । २. रोली ।
कुंकुमपत्रिका-दे० कंकूपत्री ।
कुंज-(न०) १. लताच्छादित मंडप । २. क्रौंच पक्षी । कूंझ । कुरझ ।
कुंज गळी-(ना०) १. बगीचे में लताओं से आच्छादित तंग गली । २. वृंदावन की एक गली ।
कुंजड़ो-(न०)शाक, तरकारी बेचने वाला । माली ।
कुंजर-(न०) १. हाथी । २. बाल ।
कुंजर-असण-(न०) पीपल वृक्ष ।
कुंजविहारी-(न०) श्रीकृष्ण ।
कुंजा-बरदार-(न०) पानी पिलाने वाला नौकर ।
कुंजो-(न०) सुराही । कूजा ।
कुंड-(न०) १. छोटा जलाशय । २. हवन के लिये बनाया हुआ गड्ढा । ३. हवन-पात्र । ४. यज्ञवेदी । ५. हौज ।
कुंडळ-(न०) १. कान का एक गहना । २. संन्यासी के कान की मुद्रा ।
कुंडळियो-(न०) एक डिंगल छंद ।
कुंडळी-(ना०) १. साँप का गोलाकार में बैठने की एक मुद्रा । २. जन्मपत्री में ग्रहों की स्थिति सूचक बारह कोष्टकों वाला चक्र । ३. सर्प ।
कुंडाळी-(ना०) १. छोटा गोल घेरा । २. प्रायः रोटी आदि खाद्य पदार्थ रखने का ढक्कन वाला एक पात्र ।
कुंडाळो-(न०) १. वृत्त । गोलाकार । गोल घेरा । २. सूर्य और चंद्र के चारों ओर दिखने वाला वृत्त ।
कुंत-(न०) भाला ।
कुंतळ-(न०) १. बाल । २. भाला ।
कुंतळमुखी-(ना०) कटारी ।
कुंद-(न०) जूही की जाति का एक सफेद फूल । (वि०) कुंठित । मंद । २. सुस्त । ३. अस्वस्थ । ४. उदास । खिन्न ।
कुंदण-(न०) आभूषण में रत्नों की जड़ाई करने के लिए ताप दे कर बनाया हुआ शत प्रतिशत शुद्ध सोना । कुंदन । (वि०) कान्तिमान ।
कुंदी-(ना०) १. धुले या रंगे हुए कपड़ों की तह करके मोगरी से कूटने और उसकी सिकुड़ मिटाने की क्रिया । २. खूब मारना । ३. ठुकाई । पिटाई ।
कुंदीगर-(न०)कुंदी करने वाला कारीगर ।
कुंदो-(न०) बंदूक का लकड़ी का बना हुआ पिछला भाग । कुंदा ।
कुंभ-(न०) १. कलश । घड़ा । २. एक प्रसिद्ध पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में मनाया जाता है । ३. एक राशि का नाम । ४. हाथी का कुंभस्थल । ५. हाथी का सिर । ६. शिवजी के एक गण का नाम । ७. रावण का भाई कुंभकर्ण ।
कुंभकर्ण-(न०) १. रावण के भाई का नाम । २. रतनरासो के रचयिता का नाम ।
कुंभगढ-(न०) मेवाड़ के महाराणा कुंभा द्वारा बनवाया गया कुंभलमेर का दुर्ग ।
कुंभटगढ़-(न०) मारवाड़ के सिवाने के किले का एक नाम । अणखळो किलो ।
कुंभायळ-(न०) कुंभस्थल । हाथी का गंडस्थल ।
कुंभार-(न०) कुम्हार ।
कुंभारण-(ना०) १. कुम्हार की पत्नी । २. कुम्हार जाति की स्त्री ।
कुंभीपाळक-(न०) महावत ।
कुंभेण-(न०) १. कुंभकर्ण । २. कुंभज ऋषि । ३. हाथी ।
कुँवर-(न०) १. कुमार । २. राजपुत्र । ३. पुत्र ।
कुँवर-नजराणो-(न०) जागीरदार के पुत्र के नाम पर अथवा उसके विवाह

आदि के अवसर पर लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।

कुँवर-पछेवड़ो–दे० कुँवर-नजराणो।

कुँवर-पाँवरी–(न०) पुत्री की ओढ़नी के नाम पर लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।

कुँवर-माणो–(न०) पुत्र के नाम पर लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।

कुँवर-सूखड़ी–(न०) कुंवर के भोजन के निमित्त लिया जाने वाला एक जागीरदारी कर।

कुँवरी–(ना०) १. क्वारी कन्या। २. राजकुमारी। ३. बेटी। पुत्री।

कुँवारिका–(ना०) १. समुद्र में नहीं मिलने वाली नदी। सरस्वती। क्वारिका। २. अविवाहिता। कुमारी। क्वारिका।

कुँवारी–(ना०) १. क्वारी। क्वारिका। अविवाहिता।

कुँवारीघड़ा–दे० कुँआरीघड़ा।

कुंवारो–(वि०) क्वारा। अविवाहित।

कुंसड़–'किओसड़ो' का विकृत रूप। दे० किओसड़ो।

कुंहिक–(क्रि०वि०) कुछेक। कुछ।

कुंही–(क्रि०वि०) कुछ भी।

कूक–(ना०) १. पुकार। २. हल्ला। शोर। ३. रुदन।

कूकड़–१. कुक्कुट। मुर्गा। (ना०) २. सूखे पीलू या लिसोड़े। कोकड़।

कूकड़कंधो–(न०) घोड़ा।

कूकड़ला–(न०) १. जमाई के सम्मान या व्याज-प्रशंसा में गाये जाने वाले लोकगीत।

कूकड़लो–(न०) मुर्गा।

कूकड़वाहणी–(ना०) बहुचरा देवी।

कूकड़ी–दे० कोकड़ी।

कूकणो–(क्रि०) १. शोर करना। २. पुकारना। ३. पुकार करना। ४. विलाप करना। रोना।

कूकर–(न०) कुत्ता। कूतरो।

कूकरियो–(न०) पिल्ला। कुत्ते का बच्चा। **गूलरियो**।

कूकवो–(न०) जोर की आवाज। चिल्लाहट।

कूकाऊ–(न०)१. पुकार करने वाला। कूकने वाला। २. अर्ज करने वाला।

कूकी–(ना०) बच्ची। **कीकली**। **कीकी**। **गीगो**। **गीगली**।

कूको–(न०) १. ऊखल में कूटने से बाजरी आदि अनाज का निकला हुआ छिलका। २. पुकार। ३. शोर। ४. बच्चा। गीगो। **कीको**। **गीगलो**।

कूख–(ना०) १. कोख। गर्भाशय। २. पेट। उदर।

कूचा-पाणी–(न०) वह वस्तु जो पानी में बराबर घुल-मिल या पिघल गई न हो। जैसे बिना सीझी हुई दाल।

कूचो–(न०) १. फुजला। कूड़ा-करकट। २. घास। भूसा। ३. घास-फूस। कचरा।

कूजणो–(क्रि०) १. कोयल का बोलना। २. मधुर शब्द करना।

कूट–(न०) १. झूठ। कूड़। कपट। २. पर्वत। पर्वत की चोटी। ३. वह पद जिसका अर्थ जल्दी स्पष्ट न हो। ४. चिढ़। खीज। ५. कूटने पीटने की क्रिया। (वि०) १. आततायी। अत्याचारी। २. कृत्रिम। नकली।

कूटणो–(क्रि०) १. पीटना। मारना। २. कूटना। (धान औषध आदि)।

कूटळो(-लो)–(न०) कचरा। कूड़ाकरकट।

कूटियाँ–(ना०) १. किसी को चिढ़ाने के लिये उसके हाव भाव तथा बोलने आदि की कीजानेवाली नकल। चिढ़ाना। २. उपहास।

कूटो–(न०) १. पानी में सड़ा लेने के बाद कागज, चिथड़ों आदि को कूटकर मुलतानी

मिट्टी के योग से बनाई हुई (बरतन आदि विविध पात्र बनाने की) लुगदी। २. चूरा। चूर्ण। ३. कचरा।

कूड़-(न०) १. झूठ। असत्य। २. कपट। ठगाई।

कूड़-कपट-(न०) धोखा-धड़ी। छल-कपट।

कूड़चो-(वि०) झूठा। झूठ बोलने वाला।

कूड़णो-(क्रि०) १. डालना। गेरना। २. किसी वस्तु को एक पात्र में से दूसरे पात्र में डालना। उँड़ेलना।

कूड़ाबोली-(वि०) झूठ बोलने वाली। झूठ बोलने की आदत वाली।

कूड़ाबोलो-(वि०) झूठ बोलने वाला। झूठ बोलने की आदत वाला।

कूड़ियो-(न०) १. ऊंट के चमड़े या लोहे का बना हुआ कुप्पा। कुप्पा। २. चरस द्वारा कुँएँ में से पानी निकालने का एक उपकरण। (वि०) झूंठ बोलने वाला। झूंठा।

कूड़ो-(न०) १. कुँआँ। २. घी या तेल भरने का चमड़े का एक पात्र। कुप्पा। मलसा। चीप। ३. कचरा। (वि०) १. कपटी। २. कुटिल। खोटा। ३. झूंठा। ४. व्यर्थ।

कूडो-(न०) कचरे, तुस आदि से साफ कर खलियान में लगाया हुआ अनाज का ढेर।

कूढणो-(क्रि०) डालना। उँड़ेलना।

कूण-(ना०) १. दिशा। २. कोना।

कूत-(ना०) १. कुत्ता घास। २. मच्छर की एक जाति। कुत।

कूतरी-(ना०) कुतिया। कुत्ती।

कूतरो-(न०) कुत्ता। श्वान।

कूदको-(न०) छलांग। कुदान।

कूदणो-(क्रि०) १ कूदना। फांदना।

कूधर-(न०) पर्वत।

कूपार-(न०) समुद्र। अकूपार।

कूबड़-(ना०) पीठ का टेढ़ापन। कूबर।

कूबड़ो-(वि०) दे० कूबो।

कूबावत-(न०) महात्मा कूबाजी के नाम से प्रसिद्ध एक वैष्णव सम्प्रदाय।

कूबो-(वि०) १. टेढ़ी पीठ वाला। आगे की ओर झुकी हुई पीठ वाला। कूबा। कुबड़ा। ३. टेढा। बाँका। (न०)हल।

कूमटिया-(न०ब०व०) १. कूमट वृक्ष के बीज। भटकणिया। कूमटियों का साग।

कूर-(न०) १. पकाया हुआ भोजन। २. मांस। ३. असत्य। कूड़। झूठ।

कूरवाण-(न०) १. पकाये हुये भोजन को रखने का पात्र। २. मांस-पात्र।

कूरम-(न०) १. कूर्म। कछुआ। २. कछवाहा राजपूत।

कूरो-(न०)मक्का, ज्वार आदि मोटा अनाज।

कूलर-(ना०) घी में भुनाये हुये आटे में शक्कर मिलाकर बनाया हुआ खाद्य।

कूलो-(न०) १. कूल्हा। २.चूतड़। ३. पेड़ू के आजू बाजू कमर में निकला हुआ हड्डी भाग। ४. चारण का निंदा सूचक नाम।

कूवो-(न०) १. हल। २. कुँआँ।

कूं-(प्रत्य०)कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति।

कूंकड़ी-(ना०) मुर्गी।

कूंकड़ो-(न०) मुर्गा। कुक्कुट।

कूंकर-(क्रि०वि०) कैसे। क्यों कर।

कूंकावटी-(ना०) तिलक करने के निमित्त कुंकुम (रोली) रखने का पात्र।

कूंकूं-(न०) कुंकुम। रोली।

कूंकूपत्री-(ना०) १. यज्ञ, यज्ञोपवीत और विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर भेजी जाने वाली निमंत्रण पत्रिका। २. विवाह की निमंत्रण पत्रिका।

कूंगचड़ी-दे० कूंकूपत्री।

कूंगचो-(न०)इमली का बीज। कूंगो। कूंको।

कूंको-(न०) इमली का बीज।

कूंगो-दे० कूंको।

कूंची–*(ना०)* १. चावी । कुंजी । ताली । २. दीवार पोतने का मूंज का बना झाड़ू-नुमा एक उपकरण । ३. चित्र बनाने की टिटहरी के बालों की बनी कलम । ४. ऊंट की पीठ पर कसा जाने वाला पलान । **पलाण** । चारजामा । ५. उपाय । ६. रहस्य जानने का साधन । कुंजी । ऊंट की मूत्रेन्द्रिय ।

कूंचीडढो–*(न०)* कूंची के समान दाढ़ी वाला । मुसलमान ।

कूंज–दे० कूंझ ।

कूंजड़ी–*(ना०)* १. कुंजड़े की स्त्री । *(वि०)* झगड़ालू ।

कूंजड़ो–*(न०)* साग-सब्जी और फल बेचने वाली जाति का मनुष्य । कुंजड़ा । *(वि०)* झगड़ालू ।

कूंझ–*(ना०)* क्रौंच पक्षी । कुरझ ।

कूंट–*(ना०)* १. दिशा । कोण । २. कोना । कोण । ३. ऊँट के पैर का बंधन । ४. सीमा । ५. छोर । किनारा ।

कूंटाळ–*(न०)* १. सिंह । *(वि०)* १. दिशा वाला । २. अमुक दिशा से संबंधित ।

कूंटणो–*(क्रि०)* ऊँट के एक पैर को मोड़ कर बाँधना ।

कूंठो–*(न०)* सांकल अटकाने का कोंढा । कुंडा ।

कूंडापंथ–*(न०)* एक वाम मार्ग ।

कूंडापंथी–*(न०)* कूंडा पथ का अनुयायी ।

कूंडी–*(ना०)* १. पत्थर सीमेंट आदि का बनाया जल-पात्र । २. भोजन सामग्री रखने का एक पात्र ।

कूंडो–*(न०)* चौड़े मुंह का एक पात्र ।

कूंत–*(ना०)* १. समझ । बुद्धि । २. उपज । ३. उक्ति । ४. अनुमान । ५. कूंतने का काम । ६. योग्यता । ७. अनुभव । ८. यश । ९. प्रतिष्ठा । मान ।

कूंतणी–*(ना०)* १. अनुमानित तोल पर लगाया जाने वाला मूल्य । २. परिमाण । ३. कूंतने का काम ।

कूंतणो–*(क्रि०)* १. तोलना । २. तोल, नाप करना । ३. किसी वस्तु के तोल, माप, परिमाण और मूल्य आदि का अनुमान करना । कूंतना ।

कूंताई–*(ना०)* १. कूंतने की क्रिया या मजदूरी । २. अनुमानित परिमाण, मूल्य आदि ।

कूंतो–*(न०)*१. अनुमान से किसी वस्तु का निश्चय किया गया परिमाण या मूल्य । २. कूंतने का काम । ३. खड़ी फसल का अनुमानित परिमाण । *(वि०)* परखने वाला । परीक्षक ।

कूंपळ–*(ना०)* १. नया और कोमल पत्ता । कोंपल । २. अंकुर ।

कूंपळी–दे० कूंपळ ।

कूंपली–*(ना०)* चांदी आदि की बनी काजल रखने की छोटी डिबिया । २. टुंडी । नाभि । ३. दोनों पसलियों के नीचे और पेट के ऊपर मध्यभाग का गड्ढा ।

कूंपलो–*(न०)* कुंकुम, अरगजा, चोवा आदि रखने की डिबिया ।

कूंपी*(ना०)* कुप्पी ।

कूंळो–*(वि०)* कोमल । नरम । कँवळो ।

कृत–*(न०)* १. मृत्यु भोज । कृत्य । २. मृतक संस्कार । मृतक का क्रिया कर्म । ३. काम । कृत्य । कर्म । *(वि०)* किया हुआ । संपादित । २. बनाया हुआ । रचित । ३. पूरा किया हुआ ।

कृतघण–*(वि०)* कृतघ्न । अकृतज्ञ ।

कृतघणी–दे० कृतघण ।

कृतघ्न–दे० कृतघण ।

कृतघ्नी–दे० कृतघण ।

कृतज्ञ–*(वि०)* अहसानमंद ।

कृतज्ञता–*(ना०)* अहसानमंदी ।

कृतयुग–*(न०)* सतयुग ।

कृतार्थ-(वि०) कृतकृत्य ।
कृतांत-(न०)१. मृत्यु । २. यम । ३. पाप ।
कृपण-(वि०) १. कंजूस । २. नीच ।
कृपा-(ना०) मेहरवानी । अनुग्रह ।
के-(वि०) १. कितने । २. कुछ । (क्रि०वि०) क्या । (प्रत्य०) संवंध कारक विभक्ति 'को' का एक वहुवचन रूप ।
केक-(सर्व०) १. किसी को । २. किसी । कोई । (वि०) १. कई एक । कईयक । २. कई । कितने ही ।
केका-(ना०) मोर का शब्द ।
केकाण-(न०) घोड़ा ।
केकावळ-(न०) मोर ।
केकी-(न०) मोर ।
के-के-(अव्य०) १. कई-कई । २. क्या-क्या । ३. कौन-कौन ।
केजती-(न०) शत्रु ।
केजम-(न०) शत्रु ।
केठा-(अव्य०) क्या पता ?
केठी-(अव्य०) १. क्या पता ? २. कहाँ ?
केठीक-(अव्य०) क्या पता ?
केठै-(अव्य०) कहाँ ?
केड़-(न०) १. वंश । खानदान । (ना०) १. कमर । कटि । २. शरीर का पीठ वाला भाग । पीछा । ३. पीछे जाने का भाव । पीछा ।
केड़ै-(क्रि०वि०) १. पीठ की ओर । २. पीछे । वाद में । (वि०) अनुगामी ।
केड़ो-(न०) १. पीछा । अनुगमन । २. सिरा । अंत ।
केण-(सर्व०) १. किस । किसने । २. कौन । (क्रि० वि०) किसलिये ।
केणवई-(अव्य०) किसलिये ।
केत-(न०) केतुग्रह । (ना०) १. पताका । धजा । २. मृत्यु ।
केतलो-(वि०) कितना ।
केता-(वि०) १. कई । २. कितने ।
केतान-(क्रि०वि०) कितने ही ।
केताँ-(क्रि०वि०)कितनों का । (वि०) कितने ।
केतो-(वि०) कितना ।
केथ-(क्रि०वि०) कहाँ ? किधर ?
केदार-(न०) १. हिमालय का एक शिखर । २. एक यात्रा धाम । ३. खेत ।
केदारनाथ-(न०) १. हिमालय का एक तीर्थ स्थान । २. केदारेश्वर महादेव ।
केदार-रो-काँकण-(न०) १. शिवजी का कंकण । (मुहा०) २. वड़ी भारी विजय । ३. अति कठिन काम । ४. मंत्रसिद्ध कंकण । ५. कोई अद्भुत वस्तु या काम ।
केदारेश्वर-दे० केदारनाथ ।
केदारो-(न०) १. एक राग ।
केन-(क्रि०वि०)कोई नहीं । (अव्य०)की तरफ से । पत्र लिखने या भेजने वाले की ओर से ।
केम-(क्रि०वि०) किस प्रकार ? कैसे ?
के मात्र-(अव्य०) १. क्या विसात ? २. क्या इतना ही ?
केर-(प्रत्य०) संवंध कारक विभक्ति । 'का' अथवा 'की' । काव्य की 'केरो' या 'केरी' संवंध कारक विभक्ति का एक रूप ।
केरड़ी-(ना०) गाय की वछड़ी । टोगड़ी ।
केरड़ो-(न०) गाय का वछड़ा । टोगड़ो ।
केरी-(प्रत्य०) संवंध सूचक स्त्रीलिंग विभक्ति 'की' ।
केरे-(प्रत्य०) संवंध सूचक काव्य विभक्ति 'के' ।
केरो-(प्रत्य०) संवंध सूचक विभक्ति 'का' ।
केळ-(ना०) १. केलि । आनंद । क्रीड़ा । २.खेल । तमाशा । ३.एक लता । ४. केले का पौधा । ५. एक वड़े फूल वाला पौधा ।
केलड़ो-(न०) मिट्टी का तवा ।
केळ नारायणी-(ना०) गौड़ क्षत्रियों की देवी ।
केळवणो-(क्रि०) १. शिक्षित वनाना । तालीम देना । २. सुधारना । ३. सफाई

दार बनाना । ४. काम में आने लायक बनाना ।

केळो–दे० केला ।

केवटणो–(क्रि०) १. निभाना । २. अधीनस्थ के अनुकूल होना या उसको प्रेम द्वारा अपने अनुकूल बनाना । ३. सुधारना । समारना । ४. इकट्ठा करना । बटोरना । ५. मितव्ययिता करना । ६. संभालना । ७. पालन-पोषण करना । ८. पशु को मार कर उसकी चमड़ी से मांस दूर करना ।

केवटियो–(न०) नाव खेने वाला । नाविक । केवट ।

केवट–(न०) १. निभाने वाला । २. अधीनस्थ को प्रेम से अपने अनुकूल बनाना । ४. सुधारने वाला । ४. संभालने वाला । ५. पोषण करने वाला । ६. संग्रह करने वाला । ७. मितव्ययी । ८. नाविक ।

केवटणहार–(वि०) केवटने वाला । (न०) केवटियो ।

केवड़ो–(न०) केतकी । केवड़ा ।

केवळ–(वि०) १. केवल । शुद्ध । २. मात्र । सिर्फ । (अव्य०) निपट । बिलकुल । (न०) १. शुद्ध ज्ञान । २.एक संप्रदाय । कैवल्य ।

केवळ-ज्ञानी–(न०) शुद्ध ज्ञान वाला ।

केवळियो काथो–(न०) एक प्रकार का कत्था ।

केवाण–(ना०) तलवार । कृपाण ।

केवाय देवी–(ना०) दहिया चाच राना द्वारा बनवाये हुये किणसरिया गांव के केवाय मंदिर की देवी । दहिया राजपूतों की कुलदेवी ।

केवाळिया–(न०ब०व०) खड़िया मिट्टी की दवात (बोळखो) में डाला जाने वाला बालों का गुच्छा । केशावली ।

केवी–(न०) १. शत्रु । दुश्मन । २. दुरात्मा । दुर्जन । (वि०) १. दूसरे । अन्य । २.कई । अनेक । (क्रि०वि०) किस प्रकार ?

केवो–(न०) १. प्रतिशोध । वैर का बदला । २. बुराई । ऐब । दोष । ३. निंदा । बुराई । ४. दोष-दृष्टि । ५. वैर । शत्रुता । ६. कमी । न्यूनता । ७. नुक्स । खामी ।

केशव-दे० केसव ।

केस–(न०) बाल । केश ।

केसर–(न०) १. केशर । जाफरान । २. फूल के बीच में होने वाली बाल के समान सींकें ।

केसरियो–(न०) १. गोगाजी की भाँति नाग-रूप माना जाने वाला एक लोक देवता । २. वैवाहिक लोकगीतों का एक नायक । ३. दुलहा । ४. घुला हुआ अफीम । (वि०) १. केशर से रंगा हुआ । २. केशरी रंग का ।

केसव–(न०) १. केशव । श्रीकृष्ण । २. विष्णु ।

केसवाळिया–दे० केवाळिया ।

केसवाळी–(ना०) १. घोड़े की गर्दन की केश राजि । अयाल । २. सिंह की गर्दन के बाल । केसर । ३. घोड़े की गर्दन पर शोभा के लिये पहनाई जाने वाली धागों से गुंथी हुई एक जाली ।

केसू–(न०) १. टेसू । पलाश का फूल । २. पलाश वृक्ष । केसूलो ।

केसूलो–(न०) १. पलाश का फूल । टेसू का फूल । २. पलाश के फूल का रंग । ३. पलाश वृक्ष । केहूलो ।

केहड़ो–(वि०) किस प्रकार का ? कैसा ?

केहर–(न०) सिंह ।

केहरी–(न०) सिंह ।

केहवो–(वि०) कौनसा ? कैसा ?

केहूलो–दे० केसूलो ।

केहो–(वि०) कैसा ? कौनसा ?

कै–(अव्य०) १. एक संयोजक शब्द 'कि' । २. या । अथवा । किंवा । ३. या तो ।

अथवा तो । ४. अर्थात् । यानि । *(वि०)* कितना ?

कैड़ो–*(वि०)* कैसा ? किस तरह का ?

कैद–*(ना०)* १. जेल । कारावास । २. बंधन । ३. रोक । अवरोध ।

कैनै–*(सर्व०)* किसको ।

कैफ–*(न०)* १. नशा । २. मस्ती ।

कैफियत–*(न०)* १. विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में निवेदनपत्रों आदि पर स्टांप नहीं लगाने की राज्य की ओर से दी जाने वाली माफी । २. राज्य में या राजा को पेश किये जाने वाले निवेदन-पत्रों में स्टाम्प नहीं लगाने की माफी का एक पारिभाषिक शब्द (मारवाड़ राज्य का एक नियम) ३. विवरण । ४. विशेष सूचना या विवरण । रिमार्क । ५. हाल । समाचार ।

कैमखानी–*(न०)*१. एक अर्द्ध-मुसलिम जाति । क्यामखानी । २. इस जाति का व्यक्ति ।

कैयाँ–*(क्रि०वि०)* कैसे ? किस प्रकार ?

कैर-अंबोळ–दे० कैरंबोळ ।

कैर–*(न०)* १. करील वृक्ष । २. करील फल । कैर ।

कैर-बाटो–*(न०)* करील के कच्चे ताजे फल और फूल ।

कैरंबोळ–*(न०)* कैर, कुमटिया, साँगरी आदि में अमचूर मिला कर बनाया हुआ पचकूटे का साग ।

कैरी–*(ना०)* कच्चा आम । अंबिया । *(सर्व०)* किसकी ?

कैरो–*(सर्व०)* किसका ?

कैलास–*(न०)* मानसरोवर के पास हिमालय का एक शिखर, जहाँ शिव-पार्वती का निवास स्थान माना जाता है ।

कैलासपुरी–*(ना०)* मेवाड़ का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान एकलिंगजी ।

कैलू–*(न०)* खपरैल ।

कैलूड़ो–दे० कैलू ।

कैंकी–*(सर्व०)* १. किसकी । २. किसी की ।

को–*(सर्व०)* कौन । *(वि०)* कोई । *(प्रत्य०)* कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति ।

कोइक–*(सर्व०)* १ कोई-कोई २. कोई एक ।

कोइठो–*(न०)* १. वह कुँआ जिसका चरस के द्वारा पानी निकाला जाकर सिंचाई की जाती है । कोसीटो । २. साग-सब्जी की बाड़ी । बाड़ी ।

कोइड़ो–*(न०)* १. रहस्य । भेद । २. उलझन । ३. आँटी । ४. झमेला । झंझट ।

कोइलो–*(न०)* कोयला ।

कोई–*(सर्व०)* १. अनिश्चित । २. अनेक में से एक । ३. एक भी ।

कोकड़–*(ना०)* १. सूखे हुये पीलू फल । २. सूखे हुये लिसोड़े (गूंदिये) ३. गप्प ।

कोकड़ी–*(ना०)* १. सूत की आँटी । कुकड़ी । लच्छी । २. वस्त्र वर्तिका ।

कोकड़ो–*(न०)* १. वस्त्र वर्तिका । कपड़े की बाती । २. बड़ी कुकड़ी । लच्छा ।

कोकणो–*(क्रि०)* १. कच्ची सिलाई करना । २. छेदना ।

कोकरू–*(न०)* कानों का एक आभूषण । गोखरू ।

कोकळ–*(ना०)* १. बहुत बाल बच्चों का परिवार । २. बहुत अधिक संतान वाला अभावग्रस्त परिवार । *(वि०)* १. दीनता-युक्त । २. दीन । ३. विनीत ।

कोकलो–*(न०)* १. टिंडसी, ककड़ी आदि का बड़ा खेलड़ा । २ मतीरे, टिंडसी आदि की खाली खुपरी ।

कोख–*(ना०)* १. कुक्षी । कुख । २. गर्भाशय । ३. पेट । उदर ।

कोचर–*(ना०)* दाढ़ की जड़ में पड़ने वाला खड्डा । दाढ़ का एक रोग । *(न०)*१. खड्डा । २. पेड़ की खोड़र । कोटर ।

कोचरी–*(ना०)* उल्लू जैसी उल्लू से छोटी एक चिड़िया । उल्लू की जाति का एक पक्षी । भैरव चीवरी ।

कोज–*(सर्व०)* कोई। *(क्रिoविo)* नहीं।

कोझो–*(वि०)* १. अनुचित। २. विपरीत। ३. कुरूप। बदसूरत। ४. बेढंगा। ५. खराब। बुरा।

कोट–*(न०)* १. शहर की चार दीवारी। प्राचीर। परकोटा। २. दुर्ग। किला। ३. जागीरदार की कचेरी। दरीखाना। ४. पहिनने का एक वस्त्र। ५. ताश के खेल में एक पक्ष का एक साथ सातों ही सर (हाथ) बना लेना और विपक्ष को एक भी नहीं बनाने देकर मात देना। ६. सौ लाख। करोड़।

कोटड़ी–*(ना०)* १. छोटा कमरा। कोठरी। २. छोटे जागीरदार की बैठक।

कोटवाळ–*(न०)* १. गढ़ या नगर का बंदोबस्त करने वाला अधिकारी। २. कोट रक्षक। दुर्ग रक्षक। ३. पींजारा।

कोटवाळी–*(ना०)* कोटवाळ की कचहरी। नगर रक्षक के काम करने का दफ्तर।

कोट सलेम–दे० सलेम कोट।

कोठार–*(ना०)* अनाजघर। गोदाम। बखार।

कोठारियो–*(न०)* १. छोटा कोठार। २. रसोईघर में बना एक कोठा जिसमें भोजन सामग्री रखी रहती है।

कोठारी–*(न०)* १. भंडारी। कोठारी। २. एक अल्ल या जाति।

कोठा-सूझ–*(ना०)* १. अपने आप उपजने वाली कल्पना। कल्पना। २. खुद की बुद्धि। ३. मन की उपज।

कोठी–*(ना०)* १. बंगला। २. अनाज रखने का कुठला। ३. बड़ी दुकान। ४. कुठिया के आकार की आतिशबाजी। ५. कोल्हू में तिलहन पीसने का खड्डा।

कोठीवाळ–*(न०)* १. बड़ा व्यापारी २. कोठी वाला।

कोठो–*(न०)* १. खाना। कोठा। कोष्ठक। २ माल सामान रखने या भरने का गोदाम। ३. पेट। उदर। ४. अनाज भरने का बखार। ५. पानी का हौज।

कोड़–*(वि०)* १. करोड़। कोटि। २. छाती।

कोड–*(न०)* १. उत्साह। २. अन्तर की आशा। ३. प्यार। ४. मनोभाव। हुलास। चाव। ५ हर्ष। ६. उमंग।

कोड़दान–दे० कोड़पसाव।

कोड़पसाव–*(न०)* करोड़ रुपयों के मूल्य का पुरस्कार।

कोड़ वरीस–*(न०)* करोड़ रुपयों का दान देने वाला। कोड़-पसाव देने वाला।

कोडंड–*(न०)* धनुप।

कोडंडीस–*(न०)* बड़ा धनुप। कोदंड।

कोडायतो–*(वि०)* १. हर्ष पूर्ण। २. उत्साह युक्त। *(क्रि०वि०)* उत्साह से। उमंग से।

कोडायो–*(वि०)* कोड वाला। उमंग वाला।

कोडाळी–*(वि०)* १. जिसमें अनेक कौड़ियाँ लगी हुई या गुंथी हुई हों। २. कौड़ी के जैसी। कौड़ी के समान सफेद और बड़ी। ३. उमंग वाली। ४. प्रेम वाली।

कोडाळो–*(वि०)* १. कौड़ी या कौड़ों से युक्त। कौड़ों से गुंथा हुआ। २. उमंग वाला। ३ प्रेमी। स्नेही। *(न०)* ऊँट के गले में पहिनाने का कौड़ियों या कौड़ों से गुंथा हुआ एक आभूषण।

कोड़ियो–*(न०)* मिट्टी का दीपक।

कोड़ी–*(ना०)* १. बीस वस्तुओं का समूह। २. बीस की संख्या। २०।

कोड़ीक–*(वि०)* एक करोड़ की कीमत का।

कोड़ीडढ्ढो–*(न०)* सूअर।

कोड़ीधज–*(न०)* १. करोड़पति। २. एक उच्च जाति का घोड़ा।

कोड़ी मोल–*(वि०)* करोड़ के मूल्य का।

कोडीलो–*(वि०)* कोड वाला। उमंग वाला।

कोढ–*(न०)* एक चर्म रोग। कोढ। कुष्ठ।

कोढियो–*(न०)* कोढ़ी। कुष्ठी। *(वि०)* कोढ़ रोग वाला।

कोणप-(न०) राक्षस । कौणप ।
कोतक-(न०) १. कौतुक । विनोद । २. मजाक । ३. खेल तमाशा । ४. प्रपंच ।
कोतग-दे० कोतक ।
कोतरकाम-(न०) लकड़ी या पत्थर पर की गई नक्काशी । कोरणी ।
कोतरणी-(ना०) १. नक्काशी । कोरणी । खुदाई । २. नक्काशी का ढंग । ३. नक्काशी की उज्रत । ४. नक्काशी का औजार ।
कोतरणो-(क्रि०) लकड़ी या पत्थर पर चित्रकारी करना ।
कोतल-(न०) सोने चाँदी के गहने, फूल और रेशम तथा मखमली जीन से सजाया हुआ जलूसी घोड़ा ।
कोताई-(ना०) १. कमी । त्रुटि । कोताही । २. निर्धनता । गरीबी । ३. कंजूसी ।
कोथमीर-(न०) हरा धनिया ।
कोथळी-(ना०) थैली । कोथली ।
कोथळी खोलामणी-दे० ताळो खोलामणी ।
कोथळो-(न०) बड़ा थैला । कोथला ।
कोदम-(न०) एक जंगली नाज ।
कोदमी-दे० कोदम ।
कोदाळो-(न०) कुदाला ।
कोनी-(क्रि०वि०) नहीं ।
कोन्याँ-दे० कोनी ।
कोप-(न०) क्रोध । रीस ।
कोपणो-(क्रि०) १. क्रोध करना । रीस करना । २. नाराज होना ।
कोपर-(ना०) १. खोपड़ी । २. कोहनी ।
कोपरियो-(न०) छोटा पत्थर । कंकड़ ।
कोपरो-(न०) नारियल की गिरी का आधा भाग ।
कोम-(न०) १. कूर्म । कछुआ । (ना०) १. जाति । कौम ।
कोमळ-(वि०) १. कोमल । मुलायम । २. सुकुमार । नाजुक । ३. दयार्द्र । ४. मधुर ।
कोमंड-(न०) कोदंड । धनुष ।
कोय-(सर्व०) १. कोई । २. किसी को ।
कोयण-(न०) १. नेत्र । आँख । २. आँख का कोना । ३. शत्रु ।
कोय-नी-(क्रि०वि०) नहीं ।
कोयल-(ना०)१. कोकिल । कोयल । पिक । २. एक लता । ३. लम्बी डंडी का पोला छेदों वाला एक लट्टू जिसे घुमाने पर कोयल की भाँति शब्द निकलता है । कोयली ।
कोयलाराणी-(ना०) सौराष्ट्र में कोयल पर्वत पर की कोकिलारोहिणी देवी । हर्षद देवी । हरसिद्धि देवी । कोकिला रानी ।
कोयली-(ना०) १. पीठ में उठने वाली एक गाँठ । २. एक प्रकार की लम्बी डंडी का लट्टू जो घुमाने पर कोयल की भाँति शब्द करता है । ३. चरस की लाव के सिरे पर बँधा रहने वाला लकड़ी का छोटा गट्टा ।
कोयलेक-(न०) कुत्ता ।
कोयो-(न०) १. आँख का डेला । २. सूत डोरे आदि की अंटी । घुंडी । लच्छी ।
कोर-(ना०)१. गोटा-किनारी । २. किनारा । सिरा । ३. सीमा । हद । ४. बुराई । दोष । त्रुटि ।
कोर-कसर-(ना०) १. कम-खर्ची । किफायत । २. कमी । कसर । त्रुटि ।
कोर-गोटो-(न०) गोटा-किनारी । गोटा-पट्टा ।
कोरज-दे० कोरपाण ।
कोरड़-(ना०)१. एक घास । २. फली और पत्तों सहित उखाड़े हुये मोठों के पौधे ।
कोरड़ो-(न०) रस्सी या कपड़े को वट कर बनाया हुआ चाबुक । कोड़ा ।
कोरण-(ना०) काले बादलों की घटा के आगे की सफेद बादलों की घटा । कागोलड़ ।

कोरणावटी–(ना०) राजस्थान में जोधपुर जिले का एक प्रदेश। मारवाड़ का एक प्रदेश।

कोरणी–(ना०) १. पत्थर, काष्ठ आदि को कुरेद कर बनाये जाने वाला बेल बूटे का काम। तक्षण। नक्काशी। संगतराशी। २. कोरने का औजार। छेनी। ३. कोरने की कारीगरी। निपुणता। ४. कोरने की उज्रत।

कोरणी करणी–दे० कोरणो।

कोरणो–(क्रि०) १. चित्र बनाना। २. नक्काशी करना। तक्षण करना।

कोरपाण–(वि०) मांड लगा हुआ (वस्त्र)।

कोरम–(न०) १. कूर्म। कच्छप। २. सभा का काम शुरू करने के लिये आवश्यक मानी हुई सदस्य संख्या।

कोरमो–(न०) १. मूंग, मोठ आदि द्विदल धान्य को दल करके उसमें का अलग किया हुआ महीन चूरा। दाल का चूरा। मिस्सा। खुद्दी। २. एक प्रकार का मांस भोजन।

कोरंभ–(न०) १. कच्छप। कूर्म। कछुआ। २. कच्छपावतार।

कोराई–(ना०) १. पवित्रता। २. चतुराई। ३. आडम्बर। ४. रूखापन। ५. तक्षण कार्य। नक्काशी। ६.तक्षण की मजदूरी।

कोरी–(वि०) १. उपयोग में नहीं लाई हुई। नई। अछूती। २. सिर्फ। मात्र। ३. व्यर्थ की। वेमतलब की। थोथी। ४.खाली हाथ। असफल। ५. रूखी-लूखी। ६. निखालिस। वेदाग। (ना०) कच्छ राज्य का सिक्का।

कोरो–(वि०) १. काम में नहीं लाया हुआ। न बरता हुआ। नया। अछूता। २. रूखा। लूखा। ३. सादा। कोरा (कागज आदि) ४. खाली हाथ। असफल। ५. सिर्फ। मात्र। ६. व्यर्थ का। वे मतलब का। ७. थोथा। फालतू। ८. वेदाग।

कोरो-कट–(वि०) बिलकुल नया। समूचा कोरा।

कोरो-मोरो–(क्रि०वि०) खाली। यों ही। वेमतलब। फालतू। खाली हाथ।

कोर्ट–(ना०) न्यायालय। कचहरी।

कोर्टफीस–(ना०) कोर्ट के केस के खर्च की सरकार में भरी जाने वाली रकम। रसम।

कोळ–(ना०) बड़ी जाति का एक चूहा। घूस।

कोलक–(ना०) मिर्च।

कोळण–(ना०) १. कोळी की स्त्री। २. कोळी जाति की स्त्री।

कोळामण–(ना०) दूर वर्षा के वे बादल जो ठंडे पवन के साथ उड़ कर आते हैं।

कोलायत–(न०) वीकानेर से ५० किलोमीटर दूर उत्तर पश्चिम में कपिल मुनि का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।

कोलाळी–(न०) १. कुम्भकार। कुम्हार। २. ब्रह्मा। ३. उल्लू।

कोळी–(न०) १. एक जाति। २. इस जाति का मनुष्य। ३. खाद्यान्न आदि अंजली में रख कर देवता को अर्पण करने की क्रिया। ४. हाथ और काँख में उठाया जा सके जितना घास आदि का गट्ठा। पूळी। ५. कवल। ग्रास।

कोलेज–(न०) महाविद्यालय।

कोश–दे० कोस।

कोशकार–(न०) शब्द कोश बनाने वाला।

कोशल–दे० कोसळ।

कोशल-नंदन–दे० कौसळनंदण।

कोशला–दे० कोसळा।

कोशाध्यक्ष–(न०) खजानची।

कोस–(न०) १. दो मील की दूरी का माप। गाऊ। गव्यूत। २. दो मील की दूरी ३. खजाना। कोष। ४. वह ग्रन्थ जिसमें शब्द और उनके अर्थ दिये गये हों।

शब्दार्थ संग्रहावली । कोश । ५. कुंएँ में से बैलों द्वारा पानी निकालने का चमड़े का बना हुआ जलपात्र । चरस । **मोट** । ६. तलवार का म्यान । ७. अंडा । ८. अंडकोश ।

कोसणो–*(क्रि०)* १. बुराई करना । निंदा करना । २. बुरा कहना । बुरा-भला कहना ।

कोसळ–*(न०)* अयोध्या नगरी । कोशल ।

कोसळ-नंदण–*(न०)* श्रीराम ।

कोसळा–*(ना०)* अयोध्या नगरी ।

कोसीटो–*(न०)* वह कुंआं जिस पर खेत में सिंचाई करने के लिये चरस से पानी निकाला जाता है । **कोइटो** ।

कोसीद–*(न०)* आलस्य ।

कोह–*(न०)* १. क्रोध । रीस । २. मोट । चड़स । ३. दो मील । गाऊ । ४. पर्वत । *(ना०)* धूलि । रज । धूड़ ।

कोहणो–*(क्रि०)* १. क्रोध करना । २. नाराज होना । दे० कुहीजणो ।

कोहर–*(न०)* कुंआं । कूप ।

कोहर तेवणो–*(मुहा०)* कुंएं में से बैलों द्वारा पानी निकालना ।

कोहीटो–दे० कोइठो ।

कोहीरो–*(वि०)* १. क्रोधी । २. मन में कुढ़ते रहने वाला ।

कोंकर–*(क्रि०वि०)* क्यों कर । कैसे ।

कौगत–*(ना०)* १. मजाक । हँसी । २. दुर्गति । कुगति । कौतुक । ४. हद से ज्यादा हँसी-मजाक ।

कौड़ियो–*(न०)* खंजरीट नामक पक्षी ।

कौडी–*(ना०)* १. कौड़ी । कर्पादिका । २. कभी किसी समय कम मूल्य का एक सिक्का । *(वि०)* तुच्छ ।

कौडो–*(न०)* बड़ी कौड़ी ।

कौल–*(न०)* १. कौल । वचन । २. कथन ।

क्यव–*(न०)* कवि ।

क्यामखानी–दे० कैमखानी ।

क्यारो–*(न०)* सिंचाई के लिये खेत में बनाया जाने वाला पाली से घिरी जमीन का एक भाग । खोडो ।

क्यावर–*(न०)* १. यश का काम । २. जीत का काम । ३. कुल को उज्वल और प्रख्यात करने वाला काम । ४. माहेरा । ५. मौसर । ६. उपकार । अहसान ।

क्यां–*(क्रि०वि०)* १. क्यों ? २. किस प्रकार ? कैसे ? *(सर्व०)* किस ?

क्यांनै–*(क्रि०वि०)* १. किसलिये ? *(सर्व०)* किसको ?

क्यांरी–*(अव्य०)* किसकी ? काहेकी ? २. किस बात की ?

क्यांरै–*(अव्य०)* किसके ?

क्यांरो–*(अव्य०)* किसका ? काहे का ? किस बात का ?

क्यांसूं–*(सर्व०ब०व०)* किनसे ?

क्युं–*(वि०)* १. कुछ । *(क्रि०वि०)* क्यों ?

क्युंइ–*(वि०)* कुछ । कुछ भी ।

क्युंइक–*(वि०)* कुछ । कुछेक ।

क्युंकर–दे० कूंकर ।

क्युंकै–*(क्रि०वि०)* क्योंकि ।

क्युंही–दे० क्युंइ ।

क्रग–*(ना०)* १. तलवार । २. हाथ । करग ।

क्रगल–*(न०)* कवच ।

क्रण–*(न०)* १. कुंती पुत्र महादानी कर्ण । २. कान ।

क्रतकाळ–*(वि०)* नाश करने वाला । मारने वाला । *(न०)* यमराज ।

क्रतगुणी–*(वि०)* कृतज्ञ । गुण करने वाला । उपकारी ।

क्रतघण–*(वि०)* कृतघ्न ।

क्रतबिलंद–*(वि०)* १. उदार । २. कार्य-कुशल ।

क्रतांत–*(न०)* १. यम । कृतान्त । ३. मृत्यु । ३. पाप ।

क्रपण–*(वि०)* १. कृपण । कंजूस । २ नीच ।

क्रपा–*(ना०)* कृपा । अनुग्रह ।

क्रपाण–(ना०) तलवार। कृपाण।

क्रपाळ–(वि०) कृपालु। दयालु।

क्रपीट–(न०) पानी।

क्रपीठ–(न०) १. अग्नि। २. जल।

क्रम–(न०) १. पैर। २. कर्म। ३. लीला। ४. क्रम। सिलसिला। ५. पँक्ति। ६. नियमित व्यवस्था।

क्रम-काळा–(न०) १. दुर्भाग्य। २. दरिद्रता। ३. अनुचित काम। ४. कुकर्म। दुष्कर्म।

क्रमगत–(ना०) १. कर्मों की गति। २. प्रारब्ध।

क्रमणा–(अव्य०) कर्म से। कर्मणा। (न०) कर्म।

क्रमणो–(क्रि०) १. चलना। जाना। २. आक्रमण करना।

क्रमशः–(अव्य०) क्रमवार।

क्रमसाखी–(न०) सूर्य।

क्रमाळी–(ना०) ऊँट की मादा। ऊंटनी। क्रमेलिका। **साँयड़**।

क्रमिजा–(ना०) लाख। लाक्षा।

क्रमेळक–(न०) ऊँट। क्रमेलक।

क्रहकणो–(क्रि०) किलकारी मारना।

क्रहूको–(न०) चिल्लाहट। बड़बड़ाहट। बलबलाहट।

क्राभ्राळ–(वि०) १. महाक्रोधी। २. वीर। बहादुर।

क्रामत–(ना० १. करामात। २. कांति।

क्रामात–दे० क्रामत।

क्रांत–(न०) छवि। कांति। शोभ। (वि०) १. भयभीत। २. आक्रान्त।

क्रिगल–(न०) कवच।

क्रितारथ–(वि०) कृतार्थ। कृतकृत्य। संतुष्ठ।

क्रिपण–(वि०) कृपण। कंजूस।

क्रिपा–(ना०) दया। कृपा। महरबानी।

क्रिपाण–(ना०) कृपाण। तलवार।

क्रिपाळ–(वि०) कृपालु।

क्रिसण–(न०) कृष्ण।

क्रिसन–(न०) कृष्ण।

क्रीत–(ना०) १. कीर्ति। २. गुण। (वि०) खरीदा हुआ।

क्रीळा–(ना०) १. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद। लीला।

क्रोड़–दे० कोड़।

क्रोड़दान–दे० कोड़दान।

क्रोड़पति–(न०) करोड़ पति।

क्रोड़पसाव–दे० कोड़पसाव।

क्रोड़वरीस–दे० कोड़वरीस।

क्रोडीधज–दे० कोड़ीधज।

क्रोध–(न०) गुस्सा। कोप।

क्रोधणो–(क्रि०) क्रोध करना। रीस करना। (वि०) क्रोध करने वाला। क्रोधी।

क्रोधंगी–(वि०) क्रोधी। क्रोधांगी।

क्रोधी–(वि०) गुस्से वाला। **रीसटियो**।

क्रोधीलो–(वि०) १. क्रुद्ध। २. क्रोधी स्वभाव वाला।

क्लास–(ना०) वर्ग। श्रेणी।

क्लोक–(ना०) दीवाल घड़ी।

क्वाट–(न०) ऊंट।

क्वारमग–दे० कँवारमग।

क्वार्टर–(न०) कर्मचारियों के रहने का मकान।

क्षण–(न०) १. समय का सबसे छोटा मान। पल का चौथा भाग। २. काल। समय।

क्षण-भंगुर–(वि०) क्षण भर में नष्ट होने वाला। २. अनित्य।

क्षणेक–(अव्य०) क्षणभर। थोड़ी देर।

क्षत्र–(न०) १. क्षत्रिय। २. बल। ३. शरीर। ४ राष्ट्र। ५. धन।

क्षत्रिय–दे० क्षत्री।

क्षत्री–(न०) क्षत्रिय। राजपूत।

क्षमता–(ना०) १. सामर्थ्य। शक्ति। २. धैर्य। ३. काम करने की योग्यता।

क्षमा–(ना०) १. माफी। क्षमा। खमा। २. सहनशक्ति। ३. पृथ्वी। ४. दुर्गा।

क्षय–(न०) १. ह्रास। २. नाश।

क्षर–*(वि०)* १. नष्ट होने वाला। *(न०)* १. जल। २. मेघ। ३. शरीर। ४. जीवात्मा। ५. अज्ञान।

क्षात्र–*(वि०)* क्षात्रेय संबंधी।

क्षार–*(न०)* १. खार। २. सुहागा। ३. शोरा। ४. राख।

क्षितिज–*(न०)* १. वह स्थान जहाँ धरती और आकाश मिले हुए दिखाई देते हैं। २. वृक्ष। ३. मंगल ग्रह।

क्षीण–*(वि०)* १. सूक्ष्म। २. जो कम हो गया हो। ३. दुबला-पतला।

क्षीर–*(न०)* १. दूध। २. खीर। ३. पानी।

क्षीरसागर–*(न०)* १. एक समुद्र जो दूध का माना जाता है। २. मीठे पानी का समुद्र।

क्षुद्र–*(वि०)* १. नीच। २. कृपण। ३. छोटा। ४. थोड़ा। ५. दरिद्र।

क्षुधा–*(ना०)* भूख।

क्षुप–*(न०)* १. पौधा। २. झाड़ी।

क्षुर–*(न०)* १. पशु का खुर। २. उस्तरा।

क्षेत्र–*(न०)* १. खेत। २. भूमि का टुकड़ा। ३. तीर्थस्थान। ४. प्रदेश। ५. युद्धस्थल। ६. स्त्री।

क्षेत्रपाल–*(न०)* १. ग्राम रक्षक देवता। खेत्रपाल। २. भोमिया। **भोमियोजी**।

क्षेत्रफळ–*(न०)* रकबा। वर्गफल।

क्षेपक–*(न०)* १. ग्रन्थ में पीछे से मिलाया हुआ अंश जो उसके मूलकर्त्ता की रचना न हो। *(वि०)* १. बाद में मिलाया हुआ। फेंका हुआ।

क्षेम–*(न०)* १. कुशल-मंगल। २. सुख। ३. सुरक्षा।

क्षेमंकरी–*(ना०)* एक देवी।

क्षोणि–*(ना०)* पृथिवी।

क्षोभ–*(न०)* १. व्याकुलता। २. क्षुब्ध होने का भाव। ३. क्रोध। ४. शोक। ५. भय। डर।

ख

ख–संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के 'कवर्ग' का द्वितीय व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान कंठ है।

ख–*(न०)* १. शून्य स्थान। २. आकाश। ३. सूर्य। ४. छिद्र। ५. स्वर्ग। ६. किसी भी नक्षत्र से दशवाँ स्थान (ज्यो०)।

खई–*(ना०)* १. कँटीली टहनियों का इतना ढेर जो बेई द्वारा उठाया जा सके। मयारी। २. क्षय। ३. युद्ध।

खईस–दे० खवीस।

खकार–*(न०)* 'ख' अक्षर। खख्रो।

खख–*(ना०)* १. खाख। राख। २. धूलि। रज। धूड़।

खखड़–*(वि०)* १. जोरावर। जबरदस्त। २. वृद्ध। वूढो।

खखड़धज–*(वि०)* १. अति बलवान। २. रोबदार। ३. चुस्त। फुरतीला। अक्खड़। ५. दृढ़। मजबूत। ६. शौकीन। छैला। छैलो।

खखपती–*(न०)* १. निर्धन व्यक्ति। २. देवा-लिया। देवाळियो। खूटोलो।

खखाटी–*(ना०)* १. खाँसी। २. खाँसी की आवाज।

खखार–*(न०)* १. कफ। श्लेष्मा। बलगम। २. खाँसी की आवाज।

खखारणो–*(क्रि०)* खाँसी करना। खाँसना। खाँसणो।

खखी–*(न०)* १. खाख रमाने वाला खाखी। साधु। २. दीनजन। गरीब।

खटकळ–*(न०)* १. नोहरे या वाड़े का घास फूस से बना कच्चा फाटक। २. छोटा फाटक।

खटकाणो–दे० खटकावणो।

खटकावणो–*(क्रि०)* खट खट का शब्द उत्पन्न करना। खटकाना। खटखटाना।

खटको–*(न०)* १. टकराने या ठोकने पीटने से उत्पन्न होने वाला शब्द। खटका। खट-खट शब्द। २. भय। डर। ३. अनिष्ट की संभावना। ४. खटका। आशंका। संदेह। ५. चिंता। खटका। ६. किवाड़ की सिटकनी। **आगळ।**

खटको होणो–*(मुहा०)* १. शब्द होना। २. संदेह होना। ३. डर लगना।

खटखट–*(ना०)* खटखट की आवाज। ठोंकने-पीटने का शब्द। २. झंझट। माथापच्ची।

खटचरण–दे० खटचलण।

खटचलण–*(न०)* भौंरा। **भमरो।**

खटणी–*(ना०)* सहनशक्ति।

खटणो–*(क्रि०)* १. निभना। २. परिश्रम करना। ३. उपार्जन करना। ४. प्राप्त करना। ५. सहन होना। ६. समाना।

खट दरसण–*(न०)* १. न्याय, वैशेषिक, सांख्य, मीमांसा, उत्तर मीमांसा और योग—ये छः दर्शन। षट्शास्त्र। २. संन्यासी। ३. ब्राह्मण, संन्यासी, दरवेश (मुसलमान फकीर), जोगी, जंगम और जती—इन छः पराश्रित जातियों का समाहार।

खटपट–*(ना०)* १. युक्ति से काम निकालने का प्रयत्न। २. योजना। व्यवस्था। ३. प्रपंच। ४. झगड़ा। बोलचाल। ५. दुश्मनी। *(क्रि०वि०)* जल्दी। शीघ्र।

खटपटियो–*(वि०)* १. प्रपंची। चालबाज। २. झंझटी। ३. झगड़ालू। **फजियाखोर।** ४. भाग-दौड़ करने वाला।

खटपटो–*(न०)* नैमित्तिक काम की झंझट। २. झंझट। ३. विवाहादि नैमित्तिक काम। ४. नित्य करने के काम। नित्य-कर्म। ५. हाथ में लिया हुआ काम।

खटपद–*(न०)* भ्रमर। भौंरा। **भमरो।**

खटपदी–*(ना०)* १. जूं। २. षटपदी। छप्पय छंद।

खट भाखा–*(ना०)* १. छः दर्शन। छः शास्त्र। २. संस्कृत, प्राकृत आदि छः भाषाएँ।

खटमल–*(न०)* खाट में पड़ने वाला एक कीड़ा। **माँकड़। मतकुण।**

खटमीठो–*(वि०)* खट्टा मीठा। खटमीठा।

खटमुख–*(न०)* स्वामी कार्तिकेय। षडानन।

खटरस–*(न०)* १. भोजन के छः प्रकार के रस—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल। षड्रस। २. मनमुटाव। अनबन। ३. खट्टारस। **खाटो रस।**

खटराग–*(ना०)* १. छः राग। २. अनबन। **खटरास।** ३. घर-गृहस्थी का जंजाल। ४. मायाजाल।

खटरास–*(न०)* मनोमालिन्य। अनबन। मनमुटाव। **कड़ाकूट।**

खट रितु–*(ना०)* छः ऋतुएँ। षटऋतु।

खट रिपु–*(न०)* काम क्रोधादि मनुष्य के छः विकार। षड्रिपु।

खटरुत–दे० खटरितु।

खटरो–दे० खाटरो।

खटली–*(ना०)* खटिया। **मांचली। मचली।**

खटवदन–दे० खटमुख।

खटवरण–*(न०)* १. छः याचक जातियां—जोगी, जंगम, सेवड़ा (जैन-साधु) संन्यासी, दरवेश (मुसलमान फकीर) और ब्राह्मण। २. षटवर्ण। ३. समस्त जातियां।

खटवाटी–*(ना०)* १. जिद। हठ। २. प्रतिज्ञा। ३. रुष्टता। खटपाटी। **नाराजी।**

खटव्रण–दे० खट वरण।

खड़गसिध–*(वि०)* खड्ग चलाने में सिद्ध-हस्त। वीर।

खड़गहथो–*(वि०)*१. योद्धा। २. खड्गधारी।

खड़चर–*(न०)* घास चरने वाला पशु। *(वि०)* घास चरने वाला।

खड़चराई–*(ना०)* १. पशुओं को जंगल में चराने का कर। २. पशु रखने वालों से लिया जाने वाला कर। ३. चराने का काम।

खड़णो–*(क्रि०)* १. खेत बोना। २. खेत में हल चलाना। ३. बैलगाड़ी आदि को हाँकना। ४. चलना। ५. चलाना।

खड़तल–*(वि०)* १. दुख सहन करने वाला। २. परिश्रमी। महनती। ३. गठीले शरीर का। ४. उग्र। प्रचंड। ५. दृढ़। मजबूत। सैंठो।

खड़ताल–*(ना०)* घोड़े की टाप में लगने वाली नाल। २. जूते के नीचे लगने वाली नाल।

खड़ताळ–दे० खड़ताल।

खड़व–*(न०)* सौ अरब की संख्या। खरब। खर्व।

खड़बड़–दे० खड़बड़ाहट।

खड़बड़ खोपो–*(न०)* अवगुणी और झगड़ालू पुत्र-वधू की ओर से रखा जाने वाला ससुर का अपमानजनक सांकेतिक नाम। ससुर। *(वि०)* झगड़ालू।

खड़बड़णो–*(क्रि०)* १. लड़ना। २. उतावला होना। ३. घबराना।

खड़बड़ाट–*(ना०)* १. तकरार। लड़ाई। २. उतावल। ३. घबराहट। ४. खड़बड़ शब्द।

खड़बड़ी–*(ना०)*१. घबराहट। २. तकरार।

खड़बूजो–*(न०)* खरबूजा।

खड़बो–*(न०)* १. दही या दही जैसी जमी हुई वस्तु की उपमा। २. ठसी हुई या जमी हुई वस्तु। स्थिर हुआ द्रव पदार्थ।

खड़भड़–*(ना०)* खड़बड़ आवाज। २. गड़बड़। शोर। ऊधम। ३. कहासुनी। बोलचाल। कजियो। ४. घबराहट।

खड़भड़णो–*(क्रि०)*१. खड़बड़ाना। २. कहासुनी होना। झगड़ा होना। ३. घबराना।

खड़भड़ाट–*(ना०)*१. खलबली। २. आवाज। दे० खड़बड़ाट।

खड़भरी–दे० खडेरी।

खड़वा–*(ना०)* १. चलने का परिश्रम। चलना। २. चलने की दूरी। ३. चलने की क्रिया। चलाई। गमन।

खड़सल–*(ना०)* एक प्रकार का रथ।

खड़हड़णो–*(क्रि०)*१. लड़ना। युद्ध करना। २. नाश होना। ३. गिरना। गिरजाना। पड़ना। ४. लड़खड़ाना।

खड़हंड–*(न०)* घोड़ा।

खड़ंग–*(वि०)* १. सीधा २. सीधा खड़ा। *(न०)* शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष—वेद के ये छः अंग। षडंग।

खडंजो–*(न०)* खड़ी ईंटों की चिनाई।

खड़ाऊ–*(ना०)*पादुका। चाखड़ी।

खड़ाक–*(न०)* गिरने का शब्द। *(वि०)* सीधा। टटार। खड़ंग।

खड़ाखड़–*(अनु०)* खड़खड़ ध्वनि।

खड़ाखड़ी–*(क्रि०वि०)* १. अभी का अभी। खड़े-खड़े।

खड़ाणो–दे० खड़ावणो।

खडाळ–*(न०)* जैसलमेर जिले का एक प्रदेश।

खड़ावणो–*(क्रि०)* १. हँकवाना। चलवाना। २. खेत में हल चलवाना।

खड़ियो–*(न०)* १. कंधे की दोनों ओर लटकाई जाने वाली दो खानों वाली एक थैली। झोलो। थैला। २. कंधे पर लटकाया जाने वाला दो या दो से अधिक खानों वाला एक थैला जिसमें भिक्षुक

खताई–दे० खतवणी ।

खताणो–दे० खतावणो ।

खतावणी–दे० खतवणी ।

खतावणो–(क्रि०) रोकड़ बही की रकमें खाता में लेना । रोकड़ से खाते में व्यक्ति या विषय क्रम से हिसाब लिखना । खाते में चढ़ाना ।

खतियो–(वि०) जंग लगा हुआ । जंग से कटा हुआ । (न०) १. एक (बिना सिला) मोटा सूती वस्त्र । मोटी सूती चद्दर । खत्तो । २. जंग । काट ।

खतोणी–दे० खतावणी ।

खत्ताळ–(न०) घोड़ा ।

खत्तो–(न०) ठंड में ओढ़ने का एक मोटा वस्त्र । खतियो ।

खत्र–(न०) १. क्षत्रियत्व । २. क्षत्रिय । ३. युद्ध । ४. बल । ५. राष्ट्र । ६. धन । ७. शरीर ।

खत्रवट–(न०) १. क्षत्रियत्व । क्षात्रधर्म । २. रजस । ३. युद्ध ।

खत्रवाट–दे० खत्रवट ।

खत्रवेध(न०) युद्ध ।

खत्राणी–(ना०) १. क्षत्राणी । २. खत्री जाति की स्त्री । खतराणी ।

खत्री–(न०) १. क्षत्री । २. दे० खतरी ।

खथावळ–(ना०) उतावला । शीघ्रता ।

खद–(न०) मुसलमान ।

खदखद–(न०) १. खदखद शब्द । २. पानी उबलने का शब्द । ३. खिलखिलाहट ।

खदड़ो–(न०) मुसलमान ।

खदबद–(अव्य०) किलबिलाते हुए । (अनु०) उबलने का शब्द ।

खदबदणो–(क्रि०) १. किलबिलाना । २. उबलना ।

खदराळ–(न०) १. मुसलमान । यवन । २. यवन-समूह ।

खदेड़णो–(क्रि०) मार भगाना । डरा धमका कर भगवाना । खदेड़ना ।

खद्योत–(न०) जुगनू ।

खनै–दे० कनै ।

खनोड़ियो–(वि०) खान में काम करने वाला । खनोड़ी ।

खनोड़ी–(ना०) छोटी खान । (वि०) खान में काम करने वाला । खानोड़ियो ।

खप–(ना०) १. आवश्यकता । उपयोगिता । २. खपत । ३. उपयोग । व्यवहार । ४. महत्व । ५. कमी । तंगी । ६. बिक्री । ७. प्रयत्न । ८. नाश ।

खपणो–(क्रि०) १. मरना । २. युद्ध में काम आना । ३. खतम होना । समाप्त होना । ४. जरूरत होना । ५. उपयोग में आना । ६. परिश्रम करना । ७. प्रयत्न करना ।

खपत–(ना०) दे० 'खप' के सभी अर्थ । १. माल का बिकरा । २. नाश । ३. समावेश । ४. गुंजाइश ।

खपती–(ना०) १. आवश्यकता । २. उपयोग । ३. बिकरा ।

खपतो–(वि०) १. उपयोग में आसके ऐसा । उपयोगी । २. व्यवहार्य । जो काम में आ सके । ३. खान-पान में लिया जा सके । ४. बिक सकने योग्य । खपता । ५. जिसको धार्मिक या सामाजिक रूप से अंगीकार या ग्रहण करने में कोई रुकावट न हो ।

खप परमाणै–(अव्य०) आवश्यकतानुसार । यथावश्यक । जरूरत के मुताबिक ।

खपरी–(ना०) शरीर का आधा भाग ।

खपाणो–दे० खपावणो ।

खपावड–दे० खपावळ ।

खपावण–(वि०) खपाने वाला । (ना०) मृत्यु ।

खपावणो–(क्रि०) १. किसी वस्तु की आवश्यकता उत्पन्न करना । २. किसी को किसी काम पर लगा देना । ३. बिकरा

खमाघणी–(अव्य०) राजा-महाराजा, महंत, आचार्य और गुरु आदि को किया जाने वाला एक अभिवादन ।

खमाभुज–(न०) राजा । क्षमाभुज ।

खमावणो–(क्रि०) १. क्षमा माँगना । २. क्षमा मंगवाना । ३. क्षमा करवाना । ४. ठहराना । रुकवाना । ५. प्रतीक्षा करवाना । ६. शांत करना ।

खमीर–(न०) १. गुँथे हुए आटे का सड़ाव । २. जोश, आवेश । ३. ताकत । बल ।

खमीरदार–(वि०) १. जिसका खमीर उठाया हुआ हो । २. जिसमें खमीर मिला हुआ हो । ३. जोशवाला । खमीर वाला । ४. ताकत वाला । बलवान् ।

खम्माच–दे० खंभावती ।

खम्या–दे० खमा १. २. ३.

खय–(न०) १. क्षय । नाश । २. ह्रास । २. क्षय रोग ।

खयमान–(वि०) जिसका मान क्षय हो गया हो । अप्रतिष्ठित । मानक्षय ।

खयंकर–(वि०) १. नाश करने वाला । क्षयंकर । २. नाश होने वाला ।

खर–(न०) १. गदहा । गधो । (वि०) १. अशुभ । २. मूर्ख ।

खरक कूण–(न०) वायव्य और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा ।

खरखर–(ना०) १. किसानों से लिया जाने वाला एक जागीरदारी लगान । २. झगड़ा करने की इच्छा । ३. गर्व । ४. पछतावा । ५. दुख ।

खरखरणो–(क्रि०) १. चुभना । २. खटकना । ३. सलना ।

खरखरावणो–(क्रि०) वड़ियां (मुंगोड़ी) आदि किसी सूखी वस्तु को तवे पर घी से भूनना ।

खरखरो–(न०) १. पश्चाताप । पछतावा । २. शक । अंदेशा । ३. संताप ।

खरखोदरो–(वि०) खुरदरा ।

खरगो–दे० खरगोस ।

खरगोस–(न०) खरगोश । शशक ।

खरच–(न०) १. खर्च । व्यय । २. लागत । खर्चा । ३. कमी । ४. औसर । मोसर । नुकतो । मृतकभोज । ५. खूब पैसे खर्च करने का शुभाशुभ अवसर । (वि०) थोड़ा । कम ।

खरच करणो–(मुहा०) औसर करना । मृतक-भोज करना । (क्रि०) खर्च करना । खरचना ।

खरचणो–(क्रि०) १. खर्च करना । २. व्यवहार में लाना । बरतना ।

खरचाऊ–(वि०) जिसके करने या बनाने में अधिक खर्च हो । बहुत खर्च वाला । २. खर्चीला ।

खरची–(ना०) १. निर्वाह-खर्च । २. हाथ खर्च । ३. धन-माल ।

खरची-खूट–(वि०) १. धनाभाव वाला । २. निर्धन । (न०) धनाभाव । दरिद्रता ।

खरचीलो–(वि०) खर्चवाला । खर्चीला ।

खरचो–(न०) १. खर्च । खर्चा । २. किसी अवधि तक का समग्र खर्च । ३. समग्र खर्चे का योग ।

खरज–दे० षड्ज ।

खरड़–(ना०) १. मिलावट वाली चाँदी को आग द्वारा शोधने पर भट्टी (खुड़िया) में लगे रहने वाले रजतकण और उसका कीट । रौप्यकण संलग्न मिट्टी और कीट । २. अफीम की टिकिया पर लगा रहने वाला कचरा । अफीम युक्त पोस्त का चूरा । ३. जाजम, त्रिपाल आदि मंडप की सामग्री । ४. शस्त्र प्रहार की ध्वनि ।

खरड़क–(ना०) १. शस्त्र प्रहार की ध्वनि । २. रगड़ ।

खरड़को–(न०) १. रगड़ । २. ध्वनि विशेष ।

खरापणो-(न०) १. खरापन। सच्चाई। २. दृढ़ता। मजबूती। २. पुष्टता। ४. कड़ापन।

खराब-(वि०) १. बुरा। गन्दा। २. दुराचारी। अनीतिमान। ३. बिगड़ा हुआ। टूटा-फूटा। ४. सड़ा हुआ।

खराबी-(ना०) १. दोष। ऐब। बिगाड़। २. अवगुण। ३. दुर्दशा। ४. तोड़-फोड़। ५. सड़ांध।

खराबो-(न०) १. हानि। नुकसान। २. बिगाड़।

खराबोलो-(वि०) खरी बात कहने वाला। स्पष्ट वक्ता।

खरामण-(ना०) १. पक्की बात। २. किसी से बार बार कह कर बात या शर्त पक्की करना। ३. शर्त। कौल।

खरामणी-दे० खरामण।

खरावट-दे० अखरावट या खरामण।

खरीकहो-(वि०) १. स्पष्ट वक्ता। खरी कहने वाला। खरी कहा। २. सच्चा। ३. प्रामाणिक।

खरीको-(वि०) १. खरी कहने वाला। खरी कहा। स्पष्ट वक्ता। २. सच्चा। ३. प्रामाणिक। ४. कठिन। दुर्गम। ५. शीघ्र समझ में नहीं आने वाला। ६. जो शीघ्र नहीं किया जा सके।

खरीखोटी-(ना०) १. कटुबात। २. कड़वी किन्तु सच्ची बात। (वि०) खरी और खोटी।

खरीद-(ना०) १. खरीदा हुआ। २ क्रय।

खरीदणो-(क्रि०) मोल लेना। खरीदना।

खरीददार-(वि०) खरीदने वाला।

खरीदारी-(ना०) खरीददार।

खरीदी-(ना०) १. खरीद की हुई वस्तु। २. खरीदने का काम।

खरीदीकरणो-खरीदना।

खरीफ-(ना०)चौमासे की फसल। बरसाळू साख।

खरीलो-(वि०) १. विश्वासी। २. हठी। जिद्दी। ३. क्रोधी।

खरूंट-(न०) १. भरते हुये घाव की सूखी पपड़ी। खरूंड। २. छिल जाने का छिह्न। खरोंच।

खरेखर-(अव्य०) १. वस्तुत:। सचमुच। २. निश्चय। निश्चय ही। ३. जरूर। अवश्य।

खरेड़ी-(ना०) १. एक बैलगाड़ी पर लादा या भरा जाय उतने सूखे घास का परिमाण। २. गाड़ी भरा घास। ३. घास से भरी हुई बैलगाड़ी। खड़भरी। खडेरी।

खरो-(वि०) १. विशुद्ध। २. सच्चा। ईमानदार। ३. छल रहित। ४. स्पष्टभाषी ५. पक्का। ६. कड़ा। सख्त। ७. सही। दुरुस्त।

खरोटो-(न०) अपनी जागीरी में बाहर के मवेशी चराने वाले से जागीरदार द्वारा ली जाने वाली एक लाग। एक लगान जो बाहर के मवेशी चराने वाले से जागीरदार द्वारा लिया जाता था। प्रान्तेतर से लिया जाने वाला चराई का एक लगान। २. एक कर जो गाँव की सफाई आदि के लिये लिया जाता था।

खळ-(वि०)१. दुष्ट। खल। २. नीच। ३. क्रूर। (न०) १. शत्रु। २. यवन। ३. खरल। ४. खली। सीठी।

खलक-(न०)१. दुनिया। संसार। २. लोग। लोग समूह। मानव समूह। ३. मानव मात्र। ४. मनुष्य जाति। ५. जीव मात्र। ६. भीड़।

खळकट-(न०) नाश। संहार।

खळकणो-(क्रि०) १. पानी का खळ-खळ शब्द करते हुये बहना। २. खाँसने से कफ का गले में से आवाज करते हुये छूटना।

खळकत-(ना०) १. दुनिया। सृष्टि। २. भीड़। ३. लोगबाग।

खवावणो–(क्रि०) खिलाना।

खवास–(न०)१. नाई। २. सेवक। ३. एक जाति। (ना०) १. दासी। २. उप पत्नी। ३. रखेल स्त्री।

खवासण–(ना०) खवास की स्त्री। खवासिन। नाइन। २. दासी। ३. रखेल।

खवासवाळ–(ना०) खवास और उसकी सन्तान।

खवासी–(ना०) १. सेवकाई। २. सेवा। चाकरी। ३. हाजरी।

खवाँ-खाँच–(वि०) १. दोनों हाथों में ठेठ कंधों तक पहिना हुआ (चूड़ा)। दोनों हाथों में चूड़ा पहनी हुई। ३. सधवा। सुहागिन। (ना०) सधवापन। सुहाग। सौभाग्य।

खवी–दे० खवीस।

खवीस–(न०)१. दुष्ट तथा भयंकर व्यक्ति। खबीस। २. राक्षस। ३. बिना सिर का प्रेत।

खवो–(न०) १. कंधा। कांधो। २. पार्श्व। बाजू।

खस–(न०) गाँडर नामक घास की सुगन्धित जड़। लंबे तंतुओं वाली गाँडर की जड़। उशीर।

खसकणो–(क्रि०) १. खिसकना। हटना। सरकना। २. बिना सूचना चले जाना। ३. भाग जाना। चले जाना।

खसकाणो–(क्रि०) हटाना। सरकाना। खिसकाना।

खसखस–(न०) पोस्त का दाना। खसखस।

खसखानो–(न०) गरमी के मौसम में रईसों के लिये बनाई जाने वाली खस की टट्टियों की कुटिया। खस-गृह। गाँडर घर। उशीरालय। टाटी घर।

खसण–(न०) १. युद्ध। २. शत्रुता। ३. अनबन। झगड़ो।

खसणो–(क्रि०) १. खिसकना। सरकना। २. चलना। ३. पीछे हटना। ४. भाग जाना। ५. लड़ना। ६. परिश्रम करना। ७. प्रयत्न करना।

खसपोस–(ना०) १. खस का परदा। २. खस की टट्टी। टाटी।

खसवो–दे० खसबोई।

खसवोई–(ना०) सुगंध। खुशबू।

खसम–(न०) पति। खाविंद। धणी।

खसर–(ना०) १. छेड़खानी। २. युद्ध।

खसंग–(न०) पवन। वायु।

खसाखस–(ना०) १. टंटा-फिसाद। २ लड़ाई-झगड़ा। ३. कहा-सुनी। बोल-चाल। ४. युद्ध। लड़ाई।

खसाखूंद–(ना०) १. शत्रुता। २. द्वेष। ३. लड़ाई-झगड़ा।

खसियो–(वि०) खसिया। बधिया।

खसोलणो–(क्रि०) १. घुसेड़ना। धँसाना।

खहण–(न०)१. युद्ध। छेड़छाड़। खसण। झगड़ो।

खहणो–(क्रि०)१. मरना। २. युद्ध करना। ३. खिसकना। हटना। ४. चलना। ५. चले जाना। ६. गिरना-पड़ना।

खंकाळ–(न०) दुर्भिक्ष। (वि०) खाली।

खंख–(ना०) बारीक धूल। वस्तुओं के ऊपर उड़कर जमने वाली महीन मिट्टी। (वि०) १. खाली। २. सार रहित। खोखला। ३. निर्धन।

खंखर–(वि०) जिसके पत्ते झड़ गये हों। बिना पत्तों वाला (वृक्ष)।

खंखाड़–(ना०) १. ग्रीष्म ऋतु की तेज हवा। २. ग्रीष्म ऋतु की तेज हवा और उसकी आवाज।

खंखारो–दे० खँखारो।

खंखाळणो–(क्रि०)१. खंगालना। २.धोना।

खंखी–(न०) साधु। यति।

खंडित–दे० खंडत ।

खंडियो–(वि०) १. खिराज देने वाला । वह जो खंडी भरता है । २. खंडित ।

खंडियो राजा–(न०) वह राजा जो केन्द्र सरकार को खंडी भरता है । २. केन्द्र सरकार का मातहती राजा ।

खंडी–(ना०) खिराज । खंडिका । खरणी । रेख । खिरणी ।

खंडीवन–दे० खांडव ।

खंडीवनखावक–(ना०) अग्नि ।

खंडेलवाल–(न०) १. एक वैश्य जाति । २. एक ब्राह्मण जाति ।

खंडो–(न०) १. दीवाल की चुनाई में काम आने वाला पत्थर का चौकोर टुकड़ा । पत्थर की ईंट । २. तलवार । खांडो ।

खंत–(ना०) १. उत्सुकता । २. अभिलाषा । चाह । इच्छा । ३. सावधानी । होशियारी । ४. सावधानी के साथ काम में लगे रहने का गुण । ५. उमंग ।

खंदक–(ना०) १. कोना । २. खड्डा । ३ खाई ।

खंदाखोळ–(ना०) १. ऊधम । २. शोर । ३. उद्दण्डता ।

खंदी–दे० खंधी ।

खंदेड़ी–(ना०) मिट्टी की खान ।

खंध–(न०) कंधा । नाश ।

खंधार–(ना०) १. सेना । (न०) १. खंधारी घोड़ा । २. खंधार देश । ३. खंधार शहर ।

खंधी–(ना०) १. किश्त । प्रदेयऋण भाग । खंडिका । २. खिराज । खरणी । खंडिका ।

खंधीवाळो–(वि०) किश्तों के रूप में वसूली की शर्त से रुपया उधार देने वाला । २. किश्तों के रूप में कर्ज चुकाने वाला । ३. किश्तों की उगाही करने वाला ।

खंधेड़ी–दे० खंदेडी ।

खंधो–(न०) कन्धा । स्कन्ध ।

खंभ–(न०) १. स्तम्भ । खंभा । थंभा । २. कंधा । ३. बाहुदण्ड ।

खंभाइची–(ना०) १. विवाह के अवसर पर गाई जाने वाली एक रागिनी । २. खंभावती । खम्माच रागिनी ।

खंभावती–(ना०)मालकोस की एक रागिनी । खम्माच ।

खंभूठाण–(न०) हाथी को बाँधने का स्थल ।

खंभो–(न०) खंभा । थंभा । थांबो ।

खंस–(ना०)१. प्रयत्न । २. मस्ती । ३. युद्ध ।

खंसणो–(क्रि०) १. प्रयत्न करना । २. मस्ती करना । ३. युद्ध करना । ४. खाँसना ।

खाइस–दे० ख्वाहिश । (भ०क्रि०) १. खाऊंगा । २. खायेगा ।

खाई–(ना०) १. खंदक । २. किले के चारों ओर रक्षार्थ खोदी हुई नहर ।

खाउकड़ो–दे० खाऊ ।

खाऊ–(वि०) १. अधिक खाने वाला । २. रिश्वतखोर ।

खाकी–दे० खाखो ।

खाख–(न०) १. काँख । २. राख । ३. मिट्टी । ४. धूल । खाक । ५. कुश्ता । किसी धातु की भस्म । ६. नाश ।

खाख खिलाई–(ना०) काँख में उठने वाला व्रण । खाखोळाई ।

खाखरी–(ना०) तंबाकू की सूखी पत्तियाँ ।

खाखरो–(न०) १. पलाश वृक्ष । २. चना, मोठ आदि द्विदल की बनी पतली कुरकुरी रोटी । ३. होली का दूसरा दिन । धूरेली । ४. खूब सिकी हुई करारी रोटी । ५. सूखी रोटी । ६. मोयन डाल कर बनाई हुई बेसन या गेहूं के आटे की कुरकुरी पतली चपाती ।

खाखलो–(न०) गेहूँ या जौ के डंठलों का चूरा । भूसा ।

खाखी–(न०) खाख रमाने वाला साधु । (वि०) खाकी रंग का । खाकी ।

खाखो-(न०) नकशा या चित्र आदि का डौल। ढाँचा। बनावट। खाका। आकृति। २. खिन्न आकृति।

खाखोळाई- दे० खाखविलाई।

खाखो-विलखो-(वि०) १. दुखी। २. व्याकुल। उदास।

खाग-(ना०) १. तलवार। खड्ग। २. गेंडे का सींग। थोवड़े के वाहर एक तरफ निकला हुआ सूअर का लम्वा दाँत।

खागचाळो-(न०) युद्ध।

खाग-भळ-(ना०) १. खड्ग-प्रहार रूपी ज्वाला। २. खड्ग-प्रहार। ३. खड्ग प्रहार की वेदना।

खाग-झल-(वि०) खड्गधारी।

खागणो-(क्रि०) १. तलवार चलाना। २. मारना। नाश करना।

खाग-त्याग वीर-(न०) युद्धवीर और दानवीर।

खागरणी-(ना०) तलवार। (वि०) नाश करने वाली।

खागरणो-(क्रि०) मारना। नाश करना। (वि०) नाश करने वाला।

खागवळ-(ना०) १. तलवार। २. शस्त्रवल।

खागेल-(वि०) १. खड्गधारी। २. वीर। (न०) लम्वे दाँत वाला सूअर। डाढाळो।

खाज-(ना०) खुजली।

खाजटणो-दे० खाजूटणो।

खाजरू-(न०) १. वकरे का वलिदान। २. वलिदान के लिये मारा जाने वाला वकरा। ३. वलि के वकरे का मांस।

खाजापीर-(न०) अजमेर के ख्वाजा पीर मयुद्दीन चिश्ती की दरगाह।

खाजासरो-(न०) नवावों के अंतःपुर का नपुंसक मुसलमान नौकर। ख्वाजासरा।

खाजूटणो-(क्रि०) खाना (तुच्छता के अर्थ में)। खाजटणो।

खाजो-(न०) मैदे की वनी खस्ता पूरी। खाजा।

खाट-(ना०) चारपाई। खटिया। **मांचो।**

खाटक-(वि०) १. प्राप्त करने वाला। २. कमाने वाला। उद्यमी। **खाटणियो।** ३. जीतने वाला। विजयी। ४. वीर। वहादुर। ५. योद्धा।

खाटणियो-दे० खाटक।

खाटणो-(क्रि०) १. प्राप्त करना। २. अधिकार करना। ३. कमाना। अर्जित करना। ४. जीतना।

खाटरो-(वि०) नाटा। ठिगना। **ठींगणो।**

खाटी-(वि०) १. खट्टी। अम्ल। तुर्श। २. प्राप्त की हुई। ३. कमाई हुई। (ना०) कमाई। आमदनी।

खाटो-(वि०) खट्टा। तुर्श। (न०) १. छाछ। २. कढ़ी। २. तरकारी। तीवन। ३. रावड़ी। राव। ५. हाजमा वढ़ाने वाला एक चूर्ण। खट-मीठा चूर्ण।

खाटो-चू-(वि०) अत्यन्त खट्टा।

खाटो तूड़-दे० खाटो-चू।

खाटो-वड़छ-दे० खाटो-चू।

खाड-(ना०) १. खड्डा। गड्ढा। गर्त। खाडो। २. हानि। नुकसान।

खाडावूच-दे० खाडावूज।

खाडावूज-(वि०) खड्डे में डाल कर मिट्टी से वरावर किया हुआ। जमीदोज।

खाडाळ-(न०) जैसळमेर प्रान्त का एक भू-भाग। (वि०) खड्डे वाला।

खाडाळी-(ना०) भैंस। (संकेत शब्द)।

खाडू-(न०) भैंसों का वाड़ा।

खाड़ेती-(न०) १. वैलगाड़ी को चलाने वाला व्यक्ति। **सागड़ी।** २. खेत खड़ने वाला व्यक्ति। हल चलाने वाला। **हाळी।**

खाडो-(न०) खड्डा। गड्ढा। २. घाटा। हानि। ३. कमी।

खाण-(ना०) १. खान। खदान। २. उत्पत्ति स्थान। ३. भोजन। खाद्य। ४.

खानि । योनि । जीवयोनि ।
खाणकी–(*ना०*) १. रिश्वत । लाँच । २. भोजन खर्च ।
खाणखंडो–दे० खावणखंडो ।
खाण-पाण–(*न०*) १. खाना और पीना । २. खाने पीने के शुद्धाशुद्ध का विचार । ३. खाने-पीने का ढंग । ४. अन्न-पानी । ५. सामिल बैठ कर खाने पीने का व्यवहार ।
खाणो–(*न०*) १. भोजन । खाना । २. भोजन सामग्री । **जीमण** । (*क्रि०*) १. खाना । भोजन करना । २. सेवन करना । ३. हड़प जाना । ४. सहन करना । ५. डसना । काटना । ५. छींक, उबासी आदि शरीर के ऊर्ध्व वेगों का मुँह द्वारा उभरना । ७ उड़ा लेना । ८. घूस लेना ।
खाणो-दाणो–(*न०*) १. खाना । भोजन । **जीमण** । २. खाना-पीना । ३. यात्रा में पड़ाव डाल कर किया जाने वाला विश्राम और खाना-पीना ।
खाणो-पीणो–(*न०*) खाना-पीना । भोजन । भोजन-सामग्री । **जीमण** । (*क्रि०*) १. खाना-पीना । २. भोजन करना ।
खात–(*न०*) खेत-जमीन की उपज बढ़ाने के लिये उसमें डाला जाने वाला सड़ा-गला कचरा । खाद । **खातर** ।
खातण–(*ना०*) खाती की स्त्री । खातिन । **बणाकण** ।
खातमो–(*न०*) १. खातमा । अंत । २. मृत्यु । **मौत** ।
खातर–(*न०*) १. खाद । खात । २. फूस । ३. आदर-सत्कार । खातिर । (*अव्य०*) लिये । वास्ते ।
खातर जमा–(*ना०*) १. तसल्ली । २. भरोसा ।
खातरदारी–(*ना०*) आवभगत । आदर सत्कार । खातिरदारी ।
खातरी–(*ना०*) १. आदर । स्वागत । खातिर । २. देखभाल । ध्यान । ३. भरोसा । ४. जिसमें कोई संशय न हो । निश्चय । ५. प्रमाण । सबूत । (*अव्य०*) लिये । वास्ते ।
खातरीबंध–(*वि०*) विश्वास करने योग्य । **भरोसावाळो** ।
खातरोड़–(*ना०*) खातियो के मोहल्ले की वह जगह या चौक जहां मोहल्ले के खाती अपना काम करते हैं । २. खातियों का मोहल्ला । **खातोड़** ।
खातापाड़–(*ना०*) खाता वही से उद्धृत किये हुये ग्रामांतर खातों की वह वही जिसमें उघाही निमित्त सफर की सहूलियत की दृष्टि से अलग अलग दिशाओं, गाँवों तथा अलग अलग वस्तुओं के व्यवसाय मद के क्रम से खातों की प्रतिलिपि की गई होती है । **लेखापाड़** ।
खातावही–(*ना०*) वह वही जिसमें व्यक्ति-वार लेन-देन का हिसाब व खाते लगे रहते हैं ।
खाती–(*न०*) बढ़ई । सुथार । **बणाक** ।
खाती चिड़ो–(*न०*) एक पक्षी ।
खातो–(*न०*) १. खाता । मद । विभाग । २. व्यक्ति परक लेन-देन का हिसाब । रोकड़ बही के जमा-खर्च का मद वार हिसाब । ३. खाता वही । ४. विषय । प्रकरण ।
खातो खलोणो–(*मुहा०*) १. काम काज का नया विभाग शुरू करना । २. बैंक या दुकानदार के यहां नया खाता खोलना । ३. नया व्यवहार करना । ४. व्याज पर उधार लेना ।
खातो चूकतो करणो–(*मुहा०*) १. लेन-देन बराबर करना । २. ऋण चुका देना ।
खातो पाड़णो–(*मुहा०*) नाम का खाता लगाकर लेने-देने की रकमें खाते में लेना । लेने-देने वाले के नाम का खाता लगाना ।

खापरियो-(वि०) १. धूर्त । शठ । चालाक । २. ठग । वंचक ३. चोर । ४. अनाज में लगने वाला एक कीड़ा ।

खापाँ नमावणो-(मुहा०) उद्दण्डों को झुकाना । उद्दण्डों को स रकरने वाला ।

खापाँ न मावणो-(मुहा०) १. उत्साहित होकर अथवा क्रोधित होकर अपने आपे में नहीं रहना । २. अति अभिमान करना ।

खापी-(ना०) १. आवश्यकता । जरूरत । २. मांग । चाह । खपत ।

खाफरो-(न०) एक प्रसिद्ध चोर का नाम ।

खावक-(ना०) १. खार मंजरा आदि से भरी हुई अंजलि या हथेली । खावचो । २. अफीम (कंसूबे) से भरी हुई अंजलि । ३. अंजलि । ४. यश-नायक । ५. भाट आदि याचक । याचक वर्ग । ६. भोजन-भट्ट ।

खावचो-(न०) हथेली का एक संपुट । खावक । खावचो ।

खावड़-(न०) १. जैसलमेर प्रान्त का एक भाग । २, ईडर प्रदेश का एक भाग ।

खावोलियो-(वि०) बाँये हाथ से भी काम करने या लिखने की आदत वाला । खावेड़ी । सव्यसाची ।

खावेड़ी-दे० खावलियो ।

खावोचियो-(न०) छोटा खड्डा । २. पानी का छोटा खड्डा । डवरा ।

खावोचो-दे० खावोचियो ।

खाम-(न०)१. लिफाफा । २. संधि । जोड़ । ३. बरतन और उसके ढक्कन की सन्धि को गीली मिट्टी से बंद करने का काम ।

खामखाह-(क्रि०वि०) व्यर्थ । योंही ।

खामचाई-(ना०) हस्तकौशल । कारीगरी । चतुराई । निपुणता ।

खामची-(वि०)निपुण । प्रवीण । कुशल ।

खामण-(न०) १. खामने की क्रिया । २. वह गीला आटा या मिट्टी जिससे किसी पात्र के ढक्कन की सांध को बंद किया जाता है । ३. अकर्मण्यता । निठल्लापन । ४. मौन । चुप ।

खामणियो-(न०) खाम करने के गोंद का बरतन । २. चूल्हे के आगड़ की पाली में हंडिया रखने के लिये बनाया हुआ छोटा गोल खड्डा ।

खामणी-दे० खामणियो ।

खामणो-(क्रि०) १. गीली मिट्टी आदि से किसी पात्र के ढक्कन को चिपका कर बंद करना । २. लिफाफे को (उसमें चिट्ठी डालकर) गोंद से चिपका कर बंद करना । (न०) १. शरीर की ऊँचाई । कद । २. आकार । (वि०) ठिगना । बौना । ठींगणो ।

खामी-(स्त्री०) १. दोष । भूल । २. कमी । त्रुटि । न्यूनता । कसर । ३. घाटा । हानि । ४. दोष । कसूर । अपराध ।

खामीदार-(वि०) १. कसूरवार । अप-राधी । दोषी । २. त्रुटित । खंडित । ३. भूलक ।

खामेड़ो-दे० खांभीड़ो ।

खामोश-(वि०) चुप । मौन ।

खामोशी-(ना०) १. चुप्पी । मौन । २. नीरवता ।

खायकी-(ना०) १. रिश्वत । घूंस । २. खाने का खर्चा ।

खार-(न०) १. क्रोध । गुस्सा । २. द्वेष । डाह । ३. दुश्मनी । ४. क्षार । ५. सज्जीखार । ६. सुहागा । सुहागाखार ।

खारक-(ना०) छुहारा । खारक ।

खारक-चोर-(वि०) १. भगलोभी । भग-प्रिय । २. कामी । (न०) कामी पुरुष ।

खारखंध-(वि०) क्रोधवाला । क्रोधी ।

खारच-(वि०) क्षार वाली (भूमि) ।

खारचिया-(वि०) साधारण खारे पानी की सिंचाई से उत्पन्न होने वाले (गेहूं) ।

खालिक–(न०) सर्जनहारा । सृष्टिकर्ता ।
खाळिया करणो–(मुहा०)अन्याय के विरुद्ध वरना देकर अपने ही हाथ से अपना सिर काट कर वलिदान हो जाना । **चाँदी करणो** ।
खालियो–(न०) घाव ।
खाळियो–(न०) पानी की नाली ।
खालिस–(वि०) निखालिस । शुद्ध ।
खाली–(वि०) १. रिक्त । खाली ठाली । २. निठल्ला । वेकार । ३. व्यर्थ । ४. निर्धन । (क्रि०वि०) १. मात्र । केवल । २. योंही । ऐसे ही ।
खाळी–(ना०) पानी की नाली । मोरी । **नाळो** ।
खालीखम–(वि०) विलकुल खाली ।
खाळीदो–(वि०) निद्रावश ।
खालीपीली–(अव्य०) विना कारण । व्यर्थ ।
खाळू–(न०) १. खेल का साथी । खेल में अपने अपने पक्ष का सहयोगी । २. कवड्डी का साथी खिलाड़ी । खेळू ।
खाळो–(न०) गंदे पानी का नाला । २. नाला । नाळो ।
खावणखंडो–दे० खावणसूरो ।
खावणसूरो–(वि०) वहुत खाने वाला । खाने में शूरवीर । खाऊ ।
खावणियो–(वि०) १. खाने वाला । २. उपभोग करने वाला । ३. सहन करने वाला ।
खावणो–(क्रि०) १. खाना । भोजन करना । २. सहनकरना । उदा०मार खावणो । ३. सेवन करना । उदा० हवा खावणो । ४. छींक, दम, उवासी आदि खाना । ५. हजम करना । हड़प करना ।
खावणो-पीवणो–दे० खाणो पीणो ।
खावतो-पीवतो–दे० खानो-पीतो ।
खावंद–(न०) १. पति । खाविंद । २. मालिक । **धणी** ।
खावाळ–(वि०) खाने वाला ।
खावाळी–(ना०) खाने की इच्छा ।
खाविंद–दे० खावंद ।
खास–(वि०) १. स्वयं । मुख्य । विशेष । ३. निजका । अपना । आत्मीय । (न०) खाँसी । कफ ।
खास करनै–(अव्य०)खासकर । विशेपतः । प्रधानतः ।
खासखेळी–(अव्य०) १. खास आदमियों की मंडली । अपनी मंडली । २. आनंद-गोष्ठी ।
खासड़ो–(न०) १. जूता । २. फटा-पुराना जूता ।
खास ड्योढी–(ना०) १. रानियों के रहने का स्थान । २. राजमहल का खास द्वार ।
खास नवीस–(न०)१. नवींसंदों का ऊपरी । २. गुप्त वातों का लिखने वाला । ३. राजा का निजी लेखक ।
खासियत–(ना०) १. विशेशता । २. गुण ।
खासी–(ना०) रानी से संवंधित, यथा–खासी डावड़ी ।(वि०)१. वहुत । अधिक । खूव । २. वढ़िया । ३. वरावर ।
खासी डावड़ी–(ना०) रानी की मानीती और विश्वासपात्र दासी ।
खासीताळ–(अव्य०) १. वहुत देर । अति विलम्व । २. वहुत समय ।
खासो–(वि०) १. राजा से संवंधित वस्तुओं का विशेपण । राजा का,यथा–खासोथाळ खासो घोड़ो, खासो हाथी, खासो झंडो, खासो नौकर इत्यादि । २. अधिक । ३. वहुत सा । ४. खूव । भला । वरावर । ५. वढ़िया ।
खासो घोड़ो–(न०) राजा की सवारी का घोड़ा ।
खासो झंडो–(न०) युद्ध अथवा सवारी के समय साथ रहने वाला राजा का निजी झंडा ।

खाँच–*(ना०)* १. स्त्रियों के बाहु-मूल से कोहनी तक का भाग जिसमें गजदन्त हाथीदांत की चूड़ियों का सैट पहना जाता है। दे० खाँच-रो-चूड़ो । २. तंगी । संकीर्णता । ३.घाटा । हानि । ४. कोना । ५. मोड़ । खाँचा । ६. मनुहार । आग्रह ।

खाँचखूंच–*(ना०)* १. छोटी-मोटी त्रुटि । कोर-कसर । न्यूनता । २. बारीकी । गहराई ।

खाँचणो–*(क्रि०)* १. खींचना । घसीटना । २. म्यान में से शस्त्र बाहर निकालना । ३. भभके से अर्क शराब आदि बनाना ।

खाट जान- दे० मांट । *(न०)* ।

खाड–*(ना०)* १. प्रकार । २. नींगी ।

खाडणियो *(न०)* मूसल । सांबीलो । *(वि०)* १. खांडने वाला । मूसल से कूटने वाला । २. नाश करने वाला ।

खाँडणी–*(ना०)* १. ओखली । ऊखळ । २. छोटा मूसल ।

खाँडणो–*(क्रि०)* १. धान्य या किसी वस्तु को ओखली में मूसल से या इमामदस्ते से कूटना । २. मारना ३. नाश करना । ४. भाले से मारना । ४. सवारी ऊंट का कूदते हुए चलना । *(न०)* मूसल । *(वि०)*

१. खाँडने वाला। मूसल से कूटने वाला। २. कूदते हुये चलने या दौड़ने वाला (सवारी ऊंट)। ३. मारने वाला। नाश करने वाला।

खाँड वारस–दे० खाँडवारो।

खाँडवारो–(न०) वारहवें दिन किया जाने वाला मृत्यु-भोज। औसर। नुकतो। मौसर।

खाँडरणो–(क्रि०) १. नाश करना। २. मारना। ३. टुकड़े करना।

खाँडव–(न०)१.एक वन का नाम (पुराण)।

खाँडाधर–(वि०) शस्त्रधारी।

खाँडाळी–(वि०) टूटे हुए सींगों वाली। (गाय, भैंस आदि)

खाँडियो–(वि०) १. खंडित सींगों वाला। (ढोर) २. विकलांग। खांडा।

खाँडाळो–(वि०) खड्गधारी।

खाँडी–(वि०) खंडित। (ना०) १. एक तौल। २. एक माप।

खाँडेराव–(वि०) १. तलवार चलाने में प्रवीण। २. खड्गधारी।

खाँडैल–(वि०) खड्गधारी।

खाँडो–(न०) १. तलवार। २. दुधारी तलवार। (वि०). १. खंडित। खाँडा। टूटा हुआ। २. अपूर्ण।

खाँडो-खोचरो-(वि०) टूटा-फूटा।

खाँत–(ना०) १. तीव्र इच्छा। २. लगन। ३. चतुरता। ४. रुचि। ५. विवेक बुद्धि। ६. उत्कंठा। ७. सावधानी। होशियारी। ८. सावधानी से काम करने का गुण। ९. देख रेख। निगहवानी। १०. शौक। ११. उमंग।

खाँतीलो–(वि०) १. तीव्र उत्साह व इच्छा वाला। २. जानने वाला ३. जिज्ञासु। ४. रसिक। ५. वहुन। ६. चतुर। ७. खाँत से काम करने वाला। (अव्य०) विवाह संबंधी लोकगीतों के नायक का एक विशेषण।

खाँदेड़ी–दे० खानेड़ी।

खाँध–(ना०) १. कंधा। २. पशु की गरदन। ३. अरथी को कंधे पर उठाने का भाव।

खाँधियो–(न०) शव की रथी को कंधे पर उठा कर श्मशान ले जाने वाला। अरथी ढोने वाला। कंधा देने वाला।

खाँधो–(न०) १. कंधा। २. बैल की गरदन।

खाँधोळो–(न०) १. कंधा। २. जुए की लंबी लकड़ी के बूंगों (सिरों) के पास ऊपर की ओर उठा हुआ भाग।

खाँप–(ना०) १. कुल-शाखा। २. वंश। ३. गोत्र। ४. जाति। ५. फल की लंबी चीरी। ६. छील कर बनाया हुआ बाँस का चिपटा टुकड़ा। खपची। चीप।

खाँपण–(न०) कफन।

खाँपो–(न०) १. टूटी हुई डाल के तने से लगा रहने वाला ठूंठ। गुत्थ। २. ज्वार बाजरी आदि के डंठलों का वह नीचे का भाग जो फसल काटने पर भी जमीन में लगा रहता है। घोचो। (वि०) १.झगड़ालू। लड़ाकू। २.उजड्ड। गँवार।

खाँपो-खरड़ो–दे० खाँपो-खीलो।

खाँपो-खीलो–(वि॰, खांपा और [illegible]ा के समान चुभने वाला। दुखदायी। दुष्ट। २. कलहप्रिय। झगड़ालू। खीलोखाँपो।

खाँभ–(ना०) १. पर्वत का मोड़। २. दो पर्वतों के मध्य का भाग ३. पहाड़ी ढलाव। ४. पहाड़ का भीतर घुसा हुआ भाग। ५. तलहटी। ६. कुँए में से पानी निकाले जाने वाले चरस की लाव (रस्से) की कीली।

खांभणो–(क्रि०) १. ठहराना। २. रोकना। ३. खड़ा करना। ४. मारना।

खाँभियो–(न०)१. दे० खाँभीड़ो। खामेड़ो। २. नट। (वि०) शव की रथी को कंधे पर उठाने वाला। खाँधियो।

खाखेड़ो ।

खांचनाई-दे० [illegible] ।

खांगड़ी(ना०) १. [illegible] । २ [illegible] जूता । खाहड़ो ।

खांगणो-(क्रि०) खांगना ।

खांसी-(ना०) १. गले में अटके हुए कफ को बाहर निकालने की क्रिया । २. कास रोग । खांसी । धांसी ।

खिचड़ी-दे० खीचड़ी ।

खिचता-(ना०) क्षमा ।

खिजणो-दे० खीजणो ।

खिजमत-(ना०) १. हजामत । क्षौर । २. सेवा । चाकरी । खिदमत ।

खिजा-(ना०) पतझड़ । खिजाँ । पानखर । २. पतन । अवनति ।

खिजाणो-दे० खिजावणो ।

खिजावणो-(क्रि०) १. क्रोधित करना । २. चिढ़ाना । खिजाना । तंग करना ।

खिजी-(न०) ऊंट ।

खिजूर-(ना०) खजूर ।

खिड़क-(ना०) १. कंटक तृणों से बने हुये फलसे का अर्गल-डंडा । २. खिड़की । द्वार । ३. व्यवस्थित ढेर । ४. ढेर । राशि । ५. वस्तु के अंग या सीमा से बाहर निकला हुआ किनारा । बाहर की ओर झुका हुआ भाग । (वि०) अलंकृत ।

खिड़कणो-(क्रि०) १. चिनना । २. तरकीब से रखना । ३. ढेर लगाना ।

खिड़कियापाघ-(ना०)मध्यकालीन राजाओं के आंगीजामा पहनते समय धारण की

खिण-(ना०) [illegible] । समय का थोड़ा भाग । क्षण । (ना०) [illegible] ।

खिणक-(ना०) १. [illegible] । २. क्षण । (अव्य०) क्षण भर में । क्षण में ।

खिणका-(ना०) १. [illegible] । २. झूठी [illegible] ।

खिणणो-(क्रि०) १. [illegible] । [illegible] । २. गुदाना । ३. [illegible] ।

खिणदा-(ना०) [illegible] ।

खिणवाणो-(क्रि०) १. गुदवाना । २. हटवाना । ३. तुड़वाना ।

खिणांतर-(अव्य०) क्षण भर के बाद । थोड़ी देर के बाद । क्षणान्तर ।

खिणाणो-दे० खिणावणो ।

खिणावणो-(क्रि०) १. गुदवाना । २. हटवाना । ३. तुड़वाना ।

खिणेक-(क्रिवि०) क्षणेक । क्षण भर । थोड़ी देर ।

खित-(ना०) १. पृथ्वी । क्षिति । २. क्षेत्र । ३. धन ।

खितज-(न०) १. क्षितिज । २. वृक्ष ।

खितजा-(ना०) क्षितिजा । सीता ।

खितधर-(न०) पर्वत । क्षितिधर ।

खितप-(न०) राजा ।

खितपाळ-(न०) १. क्षेत्रपाल । २. राजा ।

खितपुड़-(न०) पृथ्वीतल ।

खितबो-(न०) १. पद । ओहदा । रुतबा । २ प्रतिष्ठा । ३. प्रशंसा ।

खितरू-(न०) क्षितिरुह । वृक्ष ।

खिताव-*(न०)* उपाधि। पदवी।
खिति-दे० खित।
खितिज-*(न०)* वह दृश्य जहाँ धरती और आकाश मिले हुये दिखाई देते हैं। क्षितिज। २. वृक्ष।
खिदमत-*(ना०)* सेवा। चाकरी। टहल।
खिदमतगार-*(न०)* सेवक। नौकर।
खिनाणो-*(क्रि०)* १. भेजना। २. भिजवाना। ३. उठवाना। ४. उचवाना।
खिनावणो-दे० खिनाणो।
खिपा-*(ना०)* रात। क्षिपा।
खिमण-दे० खिवण।
खिमणो-दे० खमणो।
खिमता-दे० खमता।
खिमा-दे० खमा।
खिमावत-*(वि०)* १. क्षमावंत। दयालु। २. क्षमा करने वाला। ३. शाँत प्रकृति। ४. गंभीर। धीर।
खिमिया-*(ना०)* १. क्षमा। २. देवी। शक्ति। ३. पृथ्वी।
खिमियावान-*(वि०)* १. क्षमा करने वाला। क्षमावान। २. शांत प्रकृति। गंभीर। धीर। ४. दयालु।
खिमियावाळो-दे० खिमियावान।
खिरणियो-*(न०)* वाड़ करने के काम में ली जाने वाली शमी आदि कँटीले वृक्षों की काटी हुई शाखा। खरणियो।
खिरणी-*(ना०)* एक वृक्ष और उसका फल। रायण। खिरनी। दे० खरणी।
खिरणो-*(क्रि०)* वृक्ष से पत्ते, फूल आदि का नीचे गिरना। २. गिरना। झड़ना।
खिराज-*(ना०)* १. राजस्व। खंडी।
खिल-*(ना०)* १. खेत में पहली खेड़न। २. विकसित होती हुई खेती। बाल कृषि। ३. बिना जुती भूमि।
खिलअत-दे० खिल्लत।
खिलकत-*(ना०)* सृष्टि। संसार।
खिलको-*(न०)* १. अनुचित हँसी-मजाक। २. तमाशा। हँसी। खेल। ३. तमाशबीनों की भीड़। ४. वातावरण। ५. अव्यवस्था।
खिलणो-*(क्रि०)* १. विकसित होना। खिलना। फूलना। २. फबना। शोभा देना।
खिलदार-*(वि०)* १. खिलाड़ी। २. ख्याल रखने वाला। ३. ख्याल-अभिनय करने वाला।
खिलवत-*(ना०)* १. आमोद-प्रमोद। हँसी-खुशी। २. आमोद-प्रमोद की गोष्ठी। ३. एकान्त स्थान। खिलवत। ४. खेल-तमाशा।
खिलवाड़-*(ना०)* १. खेल। तमाशा। कौतुक। २. जिसको करने में कोई तकलीफ का अनुभव न हो, ऐसा साधारण काम।
खिलहरी-दे० खिलोरी।
खिलाड़-दे० खेलाड़।
खिलाड़ी-दे० खेलाड़ी।
खिलाणो-*(क्रि०)* १ खिलाना। भोजन कराना। २. खेलने देना। ३. विकसित करना।
खिलाफ-*(वि०)* विरुद्ध। प्रतिकूल।
खिलाफत-*(ना०)* विरुद्धता। प्रतिकूलता।
खिलियार-*(वि०)* १. खिलाड़ी। २. रण-रसिक। युद्ध कुशल। युद्ध का खिलाड़ी।
खिलोणो-*(न०)* खिलौना। रमकड़ो। रामलियो।
खिलोरी-*(न०)* १. जंगली मनुष्य। २. असभ्य व्यक्ति। ३. भेड़-बकरी चराने वाला व्यक्ति। गड़रिया। रबारी।
खिल्लत-*(ना०)* वे वस्त्रादि जो बादशाह की ओर से किसी राजा आदि को उसके सम्मानार्थ उपहार में दिये जाते हैं। खिलअत।
खिल्ली-*(ना०)* हँसी। मजाक। दिल्लगी।

(क्रि०) १. लज्जित करना । २. खिसकना । पीछे हटना । (क्रि०भू०) लज्जित हुआ ।

खिहाणो–दे० खिसाणो ।

खिंचणो १. तनना । २. आकर्षित होना । ३. घसीटा जाना । ४. अंकित होना । ५. अंकित करना ।

खिंचाई–(ना०) १. खींचने की क्रिया या भाव । खींचने की मजदूरी ।

खिंचाव–(न०) १. तनाव । २. मनभेद । ३. शत्रुता । ४. खींचने का काम या भाव ।

खिंडणो–(क्रि०) १. चलना । जाना । २. मरना । ३. तहस-नहस होना । ४. छितराना । बिखरना । तितर-बितर होना । ५. ले जाना । ६. उठाना । ७. बिखेरना ।

खिंडाणो–(क्रि०) १. बिखराना । छितराना । तितर-बितर करना । २. तहस-नहस करना । ३. उठवाना । ४. ले जाना ।

खिंदाणो–दे० खिंडाणो ।

खिंवण–(ना०) बिजली ।

खिंवणो–(क्रि०) १. बिजली का चमकना । २. क्रोध करना ।

खीच–(न०) छड़े हुये बाजरी या गेहूँ को दाल के साथ पका कर बनाया हुआ खिचड़ी जैसा एक खाद्यान्न । २. बाजरी

खीचड़ी-लाग–(न०) जागीरदार का एक कर ।

खीचड़ो–दे० खीच ।

खीच परब–दे० खीचड़वार ।

खीचवार–दे० खीचड़वार ।

खीचियो–(न०) गेहूँ, ज्वार आदि के आटे को सज्जी के पानी में पका कर बना हुआ एक प्रकार का पापड़ ।

खीची–(ना०) १. चौहान राजपूतों की एक शाखा । (न०) २. खीची राजपूत ।

खीचीवाड़ो–(न०) खीची राजपूतों की जागीरी का प्रदेश ।

खीज–(ना०) १. क्रोध । गुस्सा । रीस । २. चिढ़ । झुंझलाहट । ३. शीतकाल में ऊंट को आने वाली मस्ती । ऊंट की गर्जन ।

खीजणो–(क्रि०) १. क्रोध करना । रीसणो । रीस करणो । २. खीजना । झुंझलाना । चिड़णो । ३. पश्चाताप करना । ४. ऊंट का मस्ती में आना ।

खीजाणो–(क्रि०) १. क्रोधित होना । २. क्रोधित करना । चिड़ाणो ।

खीजाळ–(वि०) क्रोध करने वाला । खीजने वाला । (न०) ऊंट ।

खीजावणो–दे० खीजाणो ।
खीजियोड़ो–*(वि०)* १. क्रोधित । २. चिढ़ा हुआ । ३. शीतकाल में मस्ती में आया हुआ (ऊंट) ।
खीटणो–दे० खींटणो ।
खीण–*(वि०)* १. क्षीण । दुर्बल । २. सूक्ष्म । मंद । ३. कृश । पतला । ४. जो क्षीण हो गया हो । जो घट गया हो ।
खीणता–*(ना०)* क्षीणता । दुर्बलता । दुबळाई ।
खीनखाप–*(न०)* एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा ।
खीप–दे० खींप ।
खीमर–दे० खींवर ।
खीर–*(ना०)* १. दूध । क्षीर । २. दूध में चावल डालकर बनाया जाने वाला एक भोज्य पदार्थ । क्षीर । तस्मई । हविष्य ।
खीरकंठ–*(न०)* बालक । क्षीरकंठ । बोबो-बावणियो । थण-चूंघणियो ।
खीरज–*(न०)* दही ।
खीर सागर–*(न०)* १. क्षीर सागर । २. खीर आदि द्रव पदार्थ परोसने का एक पात्र ।
खीरो–*(न०)* जलता हुआ कोयला । अंगारा ।
खील–*(न०)* २. मुँहासा । २. चक्की के नीचे के पाट में बीच में लगी कील । ३. मेख । कील । ४. एक प्रकार का व्रण जिसमें से चावल जैसी कील निकलती है । ५. व्रण की कील । ६. भुना हुआ अन्न ।
खीलणो–*(क्रि०)* १. खिलना । फूलना । २. मंत्र के प्रभाव से प्रेतादि के आवेश को रोकना । कीलना । ३. किसी वस्त्र के दो लम्बे टुकड़ों को इस प्रकार सीना कि दोनों के किनारे मुड़े नहीं । डँडियाना ।
खील-माँकड़ी–*(ना०)* चक्की के ऊपर वाले पाट के बीच की लकड़ी और नीचे वाले पाट की खूंटी जो ऊपर वाले पाट की लकड़ी में बनाये हुये खड्डे में इस प्रकार अटकी रहती है कि जिससे ऊपर वाला पाट आसानी से घुमाया जा सके । खील और माँकड़ी ।
खीली–*(ना०)* १. कील । मेख । चूंक । २. खूंटी ।
खीली करणो–*(मुहा०)* १. दुख देना । २. चिढ़ाना ।
खीली खटको–*(न०)* भय । डर ।
खीलो–*(न०)* १. बड़ी कील । मेख । २. लंबा और पतला आदमी ।
खीलो-खाँपो–दे० खाँपो-खीलो ।
खीलोरी–*(वि०)* १. जंगली । २. उजड्ड । *(न०)* गड़रिया ।
खीवर–*(न०)* सुभट । वीर ।
खीस–दे० खीसी ।
खीसी–*(ना०)* शमीवृक्ष की मंजरी । खेजड़ी की मंजरी । मींजर ।
खीसो–*(न०)* जेब । खूंजियो । गूंजियो ।
खींखरो–*(वि०)* १. अति वृद्ध । डैण । डोकरड़ो । १. जीर्ण । बोदो । *(न०)* १. जंगल । वन । २. घास । चारो ।
खींच–*(ना०)* १. खिंचाव । तनाव । २. आकर्षण । ३. आग्रह । ४. कमी । तंगी ।
खींचणो–*(क्रि०)* १. खींचना । घसीटना । २. म्यान से तलवार को बाहर निकालना । ३. भभके से शराब आदि बनाना । ४. लकीर काढ़ना । रेखा बनाना । ओळी-काढणो ।
खींचा-खींच–*(ना०)* १. खींचातानी । २. आग्रह । ३. तंगी । कमी ।
खींचा-खींची–दे० खींचा-खींच ।
खींचाताण–*(ना०)* १. किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिये दो में से एक दूसरे के विरुद्ध किया जाने वाला उद्योग । खींचा-खींची । २. शब्द तथा वाक्य का क्लिष्ट कल्पना के सहारे या जबरदस्ती

भिन्न अर्थ करना । ३. आग्रह । ४. दुराग्रह ।
खींचा-ताणी–दे० खींचाताण ।
खींचीजणो-(क्रि०) १. खींचा जाना । २. घसीटा जाना ।
खींजो-(न०) जेब ।
खींटणो-(क्रि०) १. तोड़ना । २. क्रोध करना ।
खींडणो-(क्रि०) बिखेरना । फैलाना । दे० खिड़णो ।
खींप-(न०) लम्बी और पतली सींकों तथा बिना पत्तों वाला एक क्षुप ।
खींपड़ो–दे० खींप ।
खींपोली–(ना०) खींप की फली ।
खींवर–(वि०) शूरवीर । बहादुर ।
खींवळ–(न०) एक आभूषण ।
खुक–(ना०) १. पानी पीने की अधिक इच्छा । अधिक प्यास । २. गरमी या या बुखार के कारण गले में उत्पन्न होने वाली खुश्की और प्यास । ३. खुश्की ।
खुख–दे० खुक ।
खुजळी–(ना०) खुजली । खाज ।
खुजाळ-(ना०) १. खुजली । २. कामेच्छा । ३. किसी अनुचित काम की प्रवृत्ति ।
खुजाळणो–(क्रि०) खुजलाना । खिणणो ।
खुटणो-(क्रि०) १. कम होना । घट जाना । २. समाप्त होना । ३. पूरा नहीं होना । कम पड़ जाना ।
खुटहड़–(वि०)१. जबरदस्त । २.नालायक ।
खुटाड़णो–(क्रि०) १. कम करवा देना । घटवा देना । खुटवा देना । २. समाप्त करवाना । ३. समाप्त करना । ४. कम करना ।
खुटाणो–दे० खुटाड़णो ।
खुटावणो–दे० खुटाड़णो ।
खुड–(ना०) अर्ध पथरीली (और ऊँची-नीची) भूमि में बनी हुई गुफा । खोह । खुड्डो ।
खुड़कणो–(क्रि०) बजना । शब्द करना । खुड़का होना ।
खुड़को–(न०) आवाज । शब्द ।
खुड़खोज–दे० खुरखोज ।
खुड़ताल–दे० खड़ताल ।
खुड़ताळ–दे० खड़ताल ।
खुड़द–(न०)१. संहार । नाश । २. टुकड़ा । ३. छोटा । खुर्द ।
खुड़द साणोर–(न०) एक डिंगल छंद ।
खुड़दा-खुड़दा–(अव्य०) १. टुकड़े-टुकड़े । २. जुड़े हुये भागों का अलग होना ।
खुड़दियो–(वि०) परचुनिया ।
खुड़दो–(न०) १. चूरा । टुकड़ा । २. खुर्दा। रेजगारी । खुदरा ।
खुड़दो करणो–(मुहा०) १. धन उड़ा कर खतम करना । २. तोड़ना । ३. नाश करना ।
खुड़पगी–दे० खुरड़पगी ।
खुड़पगो–दे० खुरड़पगो ।
खुड़ाणो–(क्रि०) लंगड़ाना ।
खुड़ावणो–दे० खुड़ाणो ।
खुडी–(ना०) १. छोटा घर । २. थेपड़ियों (उपलों) को खड़ा करके सोने चाँदी को गलाने के लिये बनाया जाने वाला एक बिवराकार ।
खुडीबिगाड़–(वि०) १. सभा में विघ्न उत्पन्न करने वाला । सभा बिगाड़ । २. घर घालक । घर बिगाड़ू ।
खुड्डी–(ना०) छोटी छोटी कोटरियों वाला घर । छोटा घर । खुडिया ।
खुड्डो–(न०) १. पक्की मिट्टी का टीबा । २. ऐसे टीबे को खोद कर बनाया हुआ घर या गुफा । ३. अर्ध पथरीली भूमि में बनी हुई गुफा । खोह । ४. कबूतर और मुर्गा-मुर्गी को रखने का घर । खाना । दड़बा ।

खुणखुणियो-(न०) १. खनखन आवाज करने वाला खिलौना। रमकड़ो।
खुणचो-(न०) नाज आदि सूखा पदार्थ लेने के लिये बनाई जाने वाली हाथ की अंजलि। खब्चो।
खुणस-(ना०) १. शत्रुता। २. द्वेष। ३. क्रोध। ४. शक। अंदेशा। ५. आदत। ६. खराब आदत।
खुणसो-दे० खुणचो।
खुद-(सर्व०) स्वयं। आप।
खुदकाश्त-(ना०) १. अपनी ही जमीन में की जाने वाली काश्त। २. खुद की ही भूमि को जोतने वाला काश्तकार।
खुदकुशी-(ना०) आत्महत्या। आपघात।
खुदगरज-(वि०) स्वार्थी। मतलबी। खुद-गरज।
खुदगरजी-(ना०) स्वार्थ परता। (वि०) खुदगरज। स्वार्थी।
खुदणो-(क्रि०) खोदा जाना।
खुद बखुद-(वि०) १. अपने आप। २. आप खुद।
खुद मुख्तार-(वि०) स्वतंत्र।
खुद मुख्तारी-(ना०) स्वतंत्रता।
खुदवाई-(ना०) १. खोदने का काम। २. खोदने की मजदूरी।
खुदवाणो-(क्रि०) खुदवाना। खोदने का काम करवाना।
खुदा-(न०) ईश्वर।
खुदाणो-दे० खुदावणो।
खुदालम-दे० खूंदालम।
खुदावणो-(क्रि०) खुदवाना।
खुदावंद-(न०) १. खुदा। परमेश्वर। २. महाशय।
खुदिया-दे० खुधा।
खुदी-(ना०) १. अहंभाव। २. अभिमान।
खुदोखुद-(वि०) १. अपने आप। २. आप खुद।
खुद्या-दे० खुधा।
खुधा-(ना०) क्षुधा। भूख।
खुधाळ-दे० खुधावंत।
खुधावंत-(वि०) भूखा। क्षुधावंत।
खुधिया-(ना०) क्षुधा। भूख।
खुध्या-दे० खुधिया।
खुपरी-(ना०) १. खोपड़ी। २. किसी कड़ी गोलाकार वस्तु का ऊपरी आवरण। ३. गूदा निकाले हुये मतीरे के ऊपर का मोटा छिलका अथवा उसका आधा भाग।
खुफिया-(वि०) गुप्त। छिपा हुआ।
खुभणो-(क्रि०) चुभना। धँसना। गड़ना। चुभणो।
खुभाणो-(क्रि०) चुभाना। घँसाना। चुभा-वणो।
खुभावणो-दे० खुभाणो।
खुमरी-(ना०) एक चिड़िया।
खुमाणरासो-(न०)दलपतविजय द्वारा रचा हुआ मेवाड़ के इतिहास का एक डिंगल काव्य ग्रंथ।
खुमाणी-(ना०) एक मेवा। खुरवाणी।
खुमाणो-(वि०) नशा किया हुआ। नशीला। खुमारियो। (न०) मेवाड़ के अधिपति रावळ खुमान के वंशज।
खुमार-दे० खुमारी।
खुमारियो-(वि०) नशा किया हुआ। नशीला।
खुमारी-१. नशा। २. नशे का उतार। ३. अधूरी नींद। ४. भोजन के बाद की सुस्ती।
खुर-(न०) १. सींग वाले चौपायों के पैर की दो भागों में विभक्त टाप। गाय, भैंस आदि के पैर का नख। घोड़े आदि पशुओं के पैर का वह बिना फटा नख भाग जो जमीन पर पड़ता है। सुम। टाप। खुर। २ पैर। पाँव।
खुरखूं-(ना०) धरती।

भिन्न अर्थ करना। ३. आग्रह। ४. दुराग्रह।

खींचा-ताणी–दे० खींचाताण।

खींचीजणो-(क्रि०) १. खींचा जाना। २. घसीटा जाना।

खींजो–(न०) जेब।

खींटणो–(क्रि०) १. तोड़ना। २. क्रोध करना।

खींडणो-(क्रि०) बिखेरना। फैलाना। दे० खिड़णो।

खींप-(न०) लम्बी और पतली सींकों तथा बिना पत्तों वाला एक क्षुप।

खींपड़ो–दे० खींप।

खींपोली–(ना०) खींप की फली।

खींवर–(वि०) शूरवीर। बहादुर।

खींवळ–(न०) एक आभूषण।

खुक–(ना०) १. पानी पीने की अधिक इच्छा। अधिक प्यास। २. गरमी या या बुखार के कारण गले में उत्पन्न होने वाली खुश्की और प्यास। ३. खुश्की।

खुख–दे० खुक।

खुजळी–(ना०) खुजली। खाज।

खुजाळ-(ना०) १. खुजली। २. कामेच्छा। ३. किसी अनुचित काम की प्रवृत्ति।

खुजाळणो–(क्रि०) खुजलाना। खिणणो।

खुटणो-(क्रि०) १. कम होना। घट जाना। २. समाप्त होना। ३. पूरा नहीं होना। कम पड़ जाना।

खुटहड़–(वि०)१. जबरदस्त। २.नालायक।

खुटाड़णो–(क्रि०) १. कम करवा देना। घटवा देना। खुटवा देना। २. समाप्त करवाना। ३. समाप्त करना। ४. कम करना।

खुटाणो–दे० खुटाड़णो।

खुटावणो–दे० खुटाड़णो।

खुड–(ना०) अर्ध पथरीली (और ऊँची-नीची) भूमि में बनी हुई गुफा। खोह। खुड्डो।

खुड़कणो–(क्रि०) बजना। शब्द करना। खुड़का होना।

खुड़को–(न०) आवाज। शब्द।

खुड़खोज–दे० खुरखोज।

खुड़ताल–दे० खड़ताल।

खुड़ताळ–दे० खड़ताल।

खुड़द–(न०)१. संहार। नाश। २. टुकड़ा। ३. छोटा। खुर्द।

खुड़द साणोर–(न०) एक डिंगल छंद।

खुड़दा-खुड़दा–(अव्य०) १. टुकड़े-टुकड़े। २. जुड़े हुये भागों का अलग होना।

खुड़दियो–(वि०) परचुनिया।

खुड़दो–(न०) १. चूरा। टुकड़ा। २. खुर्दा। रेजगारी। खुदरा।

खुड़दो करणो–(मुहा०) १. धन उड़ा कर खतम करना। २. तोड़ना। ३. नाश करना।

खुड़पगी–दे० खुरड़पगी।

खुड़पगो–दे० खुरड़पगो।

खुड़ाणो–(क्रि०) लंगड़ाना।

खुड़ावणो–दे० खुड़ाणो।

खुडी–(ना०) १. छोटा घर। २. थेपड़ियों (उपलों) को खड़ा करके सोने चाँदी को गलाने के लिये बनाया जाने वाला एक विवराकार।

खुडीविगाड़–(वि०) १. सभा में विघ्न उत्पन्न करने वाला। सभा विगाड़। २. घर घालक। घर विगाड़ू।

खुड्डी–(ना०) छोटी छोटी कोटरियों वाला घर। छोटा घर। खुडिया।

खुड्डो–(न०) १. पक्की मिट्टी का टीवा। २. ऐसे टीवे को खोद कर बनाया हुआ घर या गुफा। ३. अर्ध पथरीली भूमि में बनी हुई गुफा। खोह। ४. कबूतर और मुर्गा-मुर्गी को रखने का घर। खाना। दड़बा।

खुणखुणियो-(न०) १. खनखन आवाज करने वाला खिलौना । **रमकड़ो** ।
खुणचो-(न०) नाज आदि सूखा पदार्थ लेने के लिये बनाई जाने वाली हाथ की अंजलि । **खबचो** ।
खुणस-ना०) १. शत्रुता । २. द्वेष । ३. क्रोध । ४. शक । अंदेशा । ५. आदत । ६. खराब आदत ।
खुणसो-दे० खुणचो ।
खुद-(सर्व०) स्वयं । आप ।
खुदकाश्त-(ना०) १. अपनी ही जमीन में की जाने वाली काश्त । २. खुद की ही भूमि को जोतने वाला काश्तकार ।
खुदकुशी-(ना०) आत्महत्या । आपघात ।
खुदगरज-(वि०) स्वार्थी । मतलवी । खुद-गरज ।
खुदगरजी-(ना०) स्वार्थ परता । (वि०) खुदगरज । स्वार्थी ।
खुदणो-(क्रि०) खोदा जाना ।
खुद बखुद-(वि०) १. अपने आप । २. आप खुद ।
खुद मुख्तार-(वि०) स्वतंत्र ।
खुद मुख्तारी-(ना०) स्वतंत्रता ।
खुदवाई-(ना०) १. खोदने का काम । २. खोदने की मजदूरी ।
खुदवाणो-(क्रि०) खुदवाना । खोदने का काम करवाना ।
खुदा-(न०) ईश्वर ।
खुदाणो-दे० खुदावणो ।
खुदालम-दे० खूंदालम ।
खुदावणो-(क्रि०) खुदवाना ।
खुदावंद-(न०) १. खुदा । परमेश्वर । २. महाशय ।
खुदिया-दे० खुधा ।
खुदी-(ना०) १. अहंभाव । २. अभिमान ।
खुदोखुद-(वि०) १. अपने आप । २. आप खुद ।
खुद्या-दे० खुधा ।
खुधा-(ना०) क्षुधा । भूख ।
खुधाळ-दे० खुधावंत ।
खुधावंत-(वि०) भूखा । क्षुधावंत ।
खुधिया-(ना०) क्षुधा । भूख ।
खुध्या-दे० खुधिया ।
खुपरी-(ना०) १. खोपड़ी । २. किसी कड़ी गोलाकार वस्तु का ऊपरी आवरण । ३. गूदा निकाले हुये मतीरे के ऊपर का मोटा छिलका अथवा उसका आधा भाग ।
खुफिया-(वि०) गुप्त । छिपा हुआ ।
खुभणो-(क्रि०) चुभना । धँसना । गड़ना । **चुभणो** ।
खुभाणो-(क्रि०) चुभाना । धँसाना । **चुभावणो** ।
खुभावणो-दे० खुभाणो ।
खुमरी-(ना०) एक चिड़िया ।
खुमाणरासो-(न०)दलपतविजय द्वारा रचा हुआ मेवाड़ के इतिहास का एक डिंगल काव्य ग्रंथ ।
खुमाणी-(ना०) एक मेवा । खुरवाणी ।
खुमाणो-(वि०) नशा किया हुआ । नशीला । **खुमारियो** । (न०) मेवाड़ के अधिपति रावळ खुमान के वंशज ।
खुमार-दे० खुमारी ।
खुमारियो-(वि०) नशा किया हुआ । नशीला ।
खुमारी-१. नशा । २. नशे का उतार । ३. अधूरी नींद । ४. भोजन के बाद की सुस्ती ।
खुर-(न०) १. सींग वाले चौपायों के पैर की दो भागों में विभक्त टाप । गाय, भैंस आदि के पैर का नख । घोड़े आदि पशुओं के पैर का वह बिना फटा नख भाग जो जमीन पर पड़ता है । सुम । टाप । खुर । २. पैर । पाँव ।
खुरखूं-(ना०) धरती ।

खुरखोज-(ना०) १. शोध। पता। २. जांच। पूछताछ। ३. पदचिन्ह। खोज।

खुरचण-(ना०) १. कड़ाही, हांडी आदि में से खुरच कर निकाला गया खाद्यान्न। खुरचन। २. गरम किये हुये दूध के पात्र में से खुरच कर निकाला हुआ अंश। ३. कड़ाह में रखा जाने वाला नाई का भोज्य-नेग। पकाये गये पक्वान्न का कड़ाह में रखा जाने वाला नाई के नेग का शेष भाग।

खुरचणियो-(न०) छोटा खुरपा। खुरचनी। पलटा।

खुरचणो-दे० खुरचणियो। (क्रि०) किसी जमी हुई वस्तु को छील कर अलग करना। खुरचना। छुटाना।

खुरजी-(ना०) एक प्रकार का थैला।

खुरड़पगी-(ना०) वह स्त्री जिसके आने से-निवास करने से अनिष्ट और हानि होती हो।

खुरड़पगो-(न०) वह पुरुष जिसके पदार्पण से तथा आकार रहने से अमंगल और हानि होती हो।

खुरद-(वि०) छोटा। क्षुद्र। खुर्द।

खुरदम-(न०) गदहा।

खुरदरो-(वि०) जो चिकना न हो। खुरदरा।

खुरपियो-(न०) लोहे या पीतल की चपटी कलछी। लोहे या पीतल की खुरचनी। छोटा पलटा। खुरचणियो।

खुरपी-(ना०) १. घास छीलने-काटने का एक उपकरण। २. चमार का एक औजार।

खुरपो-(न०) खुरपा। क्षुरप्र। बड़ा पलटा। खुरचना।

खुरवाणी-दे० खुमाणी।

खुरमो-(न०) एक मिष्ठान्न। खुरमा।

खुररो-(न०) १. पशुओं के बालों में से मैल निकालने का एक उपकरण। २. ईंटों, पत्थरों से बंधा हुआ ढलुवां मार्ग। खुर्रा।

खुरसाड़ो-दे० खुराड़ो।

खुरसाण-(ना०) १. शाण। सान। खरसान। २. घोड़ा। ३. सेना। ४. तलवार। ५. बादशाह। ६. मुसलमान। ७. खुरासान।

खुरसाणी-(वि०) खुरासान का। (न०) मुसलमान।

खुरसी-(ना०) १. कुरसी। २. ओहदा। पद।

खुरंट-(न०) घाव के ऊपर की सूखी पपड़ी।

खुराक-(ना०) १. भोजन। २. भोजन-परिमाण। ३. औषधि-मात्रा।

खुराकी-(ना०) १. भोजन-व्यय। खुराक का नकद एवजाना। खुराक के लिये दिया जाने वाला नकद दाम। २. खुराक के एवजाने में की जाने वाली मजदूरी। ३. पारिश्रमिक एवजाना। ४. दैनिक वेतन। दैनिकी। दैनगी। (वि०) अधिक खाने वाला।

खुराड़ो-(न०) पशुओं के खुरों में होने वाला एक रोग।

खुराड़ो-मुराड़ो-(न०) पशुओं के खुरों और मुँह में होने वाला एक रोग।

खुरापाती-(वि०) १. उपद्रवी। झगड़ा। करने वाला। २. इधर-उधर की लगा कर झगड़ा कराने वाला।

खुरासाण-(न०) १. फारस का एक प्रांत। खुरासान। २. फारस का एक नगर। ३. मुसलमान। ४. बादशाह। ५. घोड़े की एक जाति।

खुरासाणी-(वि०) १. खुरासान का रहने वाला। खुरासानी। २. खुरासान से संबंधित, यथा-खुरासाणी अजमो। खुरासाणी घोड़ो। (न०) मुसलमान।

खुरासाणी अजमो-(न०) एक प्रकार का बढ़िया अजवाइन।

खुरांट–(वि०) १. वृद्ध । बूढ़ा । खुरींट । २. अनुभवी । खुरींट । ३. होशियार । चालाक ।

खुरियो–(न०) १. पैर । २. सद्य-जात पशु के बछड़े का खुर । ३. पशु का पैर ।

खुरिया करणो–(मुहा०) सद्यजात बछड़े के नरम खुरों को तोड़ कर छोटा करना ।

खुरी–(ना०) १. पशु का खुर । सुम । २. घोड़ा । ३. खुर वाला पशु । ४. घोड़े को फिराने की एक अभ्यास क्रिया । ५. आनंद । सुख । मौज । ६. पशुओं का खुर से भूमि खोदने या पग पटकने की क्रिया । ७. चुराए गये पशु को प्राप्त करने के लिये चोरों को दिया जाने वाला धन ।

खुरो–(न०) दे० खुररो १, २ । ३. सिर में मैल की पपड़ी जमने का एक रोग ।

खुलखुलियो–(न०) बच्चों को होने वाला सूखी खाँसी का एक रोग । कुकुर खाँसी । घाँसी ।

खुलणो–(क्रि०) १. आवरण हटना । खुलना । २. बंधन छूटना । ३. ताले में चाबी लगना । ४. शोभित होना । ५. आरंभ होना । ६. प्रचलित होना ।

खुळणो–(क्रि०) १. खौलना । गरम पानी का खौलना । २. गले से खांसी के कफ का उखड़ना ।

खुलावणो–(क्रि०) खुलवाना ।

खुलास–(वि०) १. स्पष्ट । साफ-साफ । १. कुशादा । चौड़ा । विस्तृत (मकान) । ३. हवादार (मकान) ।

खुलासावार–(अव्य०) विवरण सहित । स्पष्टीकरण के साथ ।

खुलासो–(न०) १. स्पष्टीकरण । खुलासा । २. सार । निचोड़ । सारांश । (वि०) १. खुला हुआ । २. साफ-साफ । स्पष्ट ।

खुल्लो–(वि०) १. जो बँधा न हो । खुला हुआ । २. जो ढका न हो । खुला । ३. साफ-साफ । स्पष्ट ।

खुल्लमखुल्ला–(अव्य०) १. सबके सामने । खुले में । २. बिलकुल स्पष्ट ।

खुवाणो–(क्रि०) खिलाना ।

खुवार–(वि०) १. नष्ट । बरबाद । ख्वार । २. खराब ।

खुवारी–(ना०) ख्वारी । बरबादी ।

खुश–दे० खुस ।

खुशखबरी–दे० खुसखबरी ।

खुशनसीब–(वि०) भाग्यशाली ।

खुशनसीबी–(ना०) सौभाग्य ।

खुशनुमा–(वि०) मनोहर । सुंदर ।

खुशबू–(ना०) सुगंध ।

खुशबूदार–(वि०) सुगंधित ।

खुशवख्ती–दे० खुसभगती ।

खुशमिजाज–(वि०) हमेशा प्रसन्न रहने वाला ।

खुशहाल–दे० खुस्याल ।

खुशहाली–दे० खुस्याली ।

खुशामद–दे० खुसामद ।

खुशी–दे० खुसी ।

खुश्क–दे० खुस्क ।

खुश्की–दे० खुस्की ।

खुस–(वि०) १. प्रसन्न । राजी । खुश । २. तंदुरुस्त । स्वस्थ ।

खुस करणो–(मुहा०) १. पसंद करना । चाहना । २. प्रसन्न करना । राजी करना । संतोष कराना ।

खुसकी–(ना०) १. खुश्की । स्थल मार्ग । २. पैदल चलना । ३. शुष्कता । खुश्की ।

खुसखबरी–(ना०) आनंद समाचार ।

खुसणो–(क्रि०) चुभना । धँसना ।

खुसबो–(ना०) खुशबू । सुगंध ।

खुसबोदार–(वि०) खुशबूदार । सुगंधित ।

खुसभगती–(ना०) खुशवख्ती । सद्भाग्य । २. बख्शिश । ३. अति प्रसन्नता ।

खुसामद-(ना०) १. चापलूसी । खुशामद । २. झूठी प्रशंसा ।

खुसामदियो-(वि०) खुशामदी । चापलूस ।

खुसामदी-(वि०) खुशामद करने वाला । चापलूस । २. झूंठी प्रशंसा करने वाला । (न०) खुशामद । चापलूसी ।

खुसी-(ना०) १. खुशी । प्रसन्नता । २. इच्छा । मरजी (वि०) राजी । खुश ।

खुस्क-(वि०) १. शुष्क । सूखा । २. रूखा ।

खुस्की-दे० खुसकी ।

खुस्याल-(वि०) १. प्रसन्न । २. सब प्रकार से सुखी । खुशहाल । सम्पन्न । २ तंदुरुस्त ।

खुस्याली-(ना०) १. प्रसन्नता । खुशी । २. खुशहाली । ३. सुख । ४. सम्पन्नता । समृद्धि ।

खुंदालम-दे० खूंदालम ।

खुंभी-(ना०) १. थंभे के नीचे का भाग । थंभे के नीचे की चौकी । थंभे का आधार । २. वर्षा ऋतु में उत्पन्न । होने वाला सर्वांग में कोमल, सफेद, क्षुद्र, छतरी जैसा एक उद्‌भिद् । कुकुरमुत्ता । धरती का फूल । साँप की टोपी । खुमी । ढिंगरी । ३. कान का एक गहना ।

खू-(न०) १. दुष्काल । अकाळ । (उ०पाँचों आठो दस पनरो खू पड़िया) २. पीड़ा । दुख । ३. क्रंदन । विलाप ।

खूटणो-दे० खुटणो ।

खूटल-दे० खूटोलो ।

खूटोड़ो-दे० खूटोलो ।

खूटोलो-(वि०) १. निर्धन । गरीब । दीन । २. दीनहीन । ३. मूर्ख । बेवकूफ । ४. अप्रामाणिक । झूठ बोलने वाला । ५. निकम्मा । ६. समाप्त । ७. हानिवाला । ८. कमीवाला । खूटोड़ो । ९. भूलवाला । १०. निर्लज्ज ।

खूणियो-(न०) कोना । खूणो ।

खूणी-(ना०) कोहनी ।

खूणै-खोचरै-(अव्य०) किसी कोने में । कोने में । इधर-उधर ।

खूणो-(न०) १. कोना । २. पति के मरने के बाद कुछ काल तक विधवा को कोने में बैठने का रिवाज । ३ ऐसी विधवा के बैठने का स्थान ।

खूणो-खोचरो-(न०) १. कोना-खाँचा । २. काम में नहीं आनेवाला तथा काम में नहीं लिया जाने वाला घर का भाग । ३. एकान्त स्थान । (अव्य०) किसी कोने में । कोने में ।

खून-(न०) १. रक्त । लहू । लोही । २. हत्या । कत्ल । ३. अपराध । ४. बिगाड़ । ५. रक्त संबंध । वंश ।

खून करणो-(मुहा०) हत्या करना ।

खूनी-(वि०) १. खून करने वाला । घातक । हत्यारा । २. दोषी । अपराधी । ३. अत्याचारी । ४. खून से संबंधित । ५. खून से रंगा हुआ । रक्त रंजित ।

खूब-(वि०)१. बहुत । अधिक । २. बढ़िया । ३. कमाल ।

खूबसूरत-(वि०) रूपवान । सुंदर ।

खूबसूरती-(ना०) सुन्दरता ।

खूबाणी-(ना०) खूबानी । जरदालू । खुरबाणी ।

खूबी-(ना०) १. विशेषता । विलक्षणता । २. गुण । खूबी । ३. चतुराई । निपुणता । ४. अच्छापन । ५. मौज । मजा ।

खूम-(न०) १. मुसलमान । २. कृषक । ३. वस्त्र । ४. निम्न जाति या उस जाति का व्यक्ति ।

खूमचो-(न०) एक बड़ा थाल जिसमें मिठाई आदि खाने का सामान रख कर फेरी वाले बेचते हैं । खौंचा ।

खूमपोस-(न०) परोसे हुये भोजन के थाल को ढकने का वस्त्र ।

खूमाणो-(न०) रावल खुमान का वंशज शिशोदिया राजपूत ।

खूमो-(न०) १. वस्त्र । २. वस्त्र जलने की दुर्गंध ।
खूर-(न०) १. सेना । फौज । २. मुसलमान । यवन । ३. घोड़ा । ४. बाण । तीर । (वि०) दुष्ट ।
खूसट-(वि०) १. मूर्ख । बेवकूफ । २. वृद्ध । बूढ़ा ।
खूह-(न०) कुँआँ । कूप ।
खूहखरण-(न०) नाश । विनाश । (वि०) कुँआँ खोदने वाला ।
खूंखाट-(ना०) तेज आँधी और उसकी आवाज ।
खूंखार-(वि०) १. भयानक । डरावना । २. क्रूर । निर्दयी ।
खूंगाळी-(ना०) गले का एक आभूषण ।
खूंच-(ना०) १. नुक्कड़ । कोना । २. भूल । चूक । खामी । ३. नुक्स । दोष । ४. कमी । न्यूनता । ५. द्वेष । वैर ।
खूंचरणा-(न०) १. दोष । ऐब । नुक्स । बुराई । २. कसर । कमी ।
खूंजियो-(न०) जेब । खीसो । गूंजियो ।
खूंजो-दे० खूंजियो ।
खूंट-(ना०) १. दिशा । २. ओर । तरफ । ३. कोना । ४. छोर । सिरा । ५. भाग । हिस्सा । ६. वंश या शाखा । ७. गाँव या प्रदेश का एक छोर । (अव्य०) पूरा । ठीक । (नाप में) ।
खूंटरणी-(ना०) खूंटने का काम ।
खूंटणो-(क्रि०) १. तोड़ना । २. चुनना । ३. उखाड़ना । ४. फूल पत्ते आदि तोड़ना ।
खूंटा-उपाड़-(न०) सभी लोग ।
खूंटा-उपाड़ नैतो-(न०) भोजन का वह निमंत्रण जिसमें कोई बाकी नहीं रहे । (बड़े भोज में) सभी घरों में दिया जाने वाला निमंत्रण ।

खूंटारोप-(वि०) १. दृढ़ । मजबूत । २. पक्कावट ।
खूंटियो-(न०) १. खूंट (वंश की शाखा) का अधिकारी या प्रतिनिधि । २. मुखिया । प्रधान । ३. गाँव का मुखी । ४. खूंटा । मेख । (वि०) १. नामी । प्रसिद्ध । प्रख्यात । २. खूंटे से बँधा रहने वाला ।
खूंटी-(ना०) १. कपड़े लटकाने के लिये दीवाल में लगी कील । २. कील । मेख । खूंटी । छोटा खूंटा । ४. दाढ़ी के बालों के वे अंकुर जो हजामत कराने पर रह जाते हैं ।
खूंटी ताण-(ना०) १. पाँव लम्बे करके सीधे सोने की स्थिति । २. गाढ़ निद्रा ।
खूंटो-(न०) १. नुकीला दाँत । शूल दाँत कारणेठो । २. गाय-भैंस आदि बाँधने की जमीन में गड़ी मोटी लकड़ी । बड़ी मेख खूंटा । ३. फसल काटने के बाद खेत में खड़ा उसका सूखा डंठल ।
खूंद-(न०) १. मुसलमान । २. बादशाह ३. वीर । ४. खूंदने का भाव । ५. स्वामी
खूंदणो-(क्रि०) १. खूंदना । रौंदना । २ कुचलना । (पैरों के द्वारा) ३. चंपी करना । ४. नाश करना ।
खूंदळियो-(वि०) १. किसी को संकट के समय सहायता न करने वाला । संकट के समय मुँह छिपाने वाला । २. पराप-कारी । ३. खुशामदी । (न०) १. शत्रु २. आक्रमणकारी ।
खूंदवै-(न०)१. बादशाह । २. मुसलमान
खूंदालम-(न०) १. बादशाह । २. मुसलमान । ३. यवन सेना । ४. वीर ५. क्षमा । (वि०) क्षमावंत ।
खूंसड़ो-(न०) १. सूखा जूता । २. जूता खाहड़ो ।

खेचल-(ना०) १. कष्ट । दुख । २. रोग । ३. परेशानी । हैरानी । ४. छेड़ छाड़ । छेड़खानी ।

खेजड़ी-(ना०) शमी वृक्ष । खेजड़ी । जाँट ।

खेजड़ो-दे० खेजड़ी ।

खेट-(ना०)१. युद्ध । २. घोड़ा । ३. ढाल । फलक । ४. शिकार । आखेट । ५. गाँव ।

खेटक-(ना०) १. ढाल । २. शिकार । आखेट । (वि०) ३. शिकारी । आखेटक । वीर । बहादुर ।

खेटर-(न०) १. फटा पुराना सूखा जूता । ठेठर । २. जूता ।

खेटो-(न०) १. युद्ध । २. शत्रुता । ३. धक्का । ४. भिड़न्त । मुठभेड़ । ५. सरोकार । वास्ता । ६. जान-पहचान । परिचय । फेटो ।

खेड़-(न०) १. गाँव । खेड़ा । २. खंडहर । ३. हल-चला कर निकाली हुई रेखा । ओळ । ४. लड़ाई । ५. आक्रमण । ६. ओसर-मौसर आदि बड़े भोज समारोह में अमुक गाँवों को निमंत्रित करने की निश्चित मर्यादा । ७. मारवाड़ का एक इतिहास प्रसिद्ध नगर जहाँ राठौड़ों ने (राव सीहा और उसके पुत्र आसथान ने) कन्नोज से आकर सर्व प्रथय अपने राज्य की नींव डाली थी । (आज यह नगर खंडहर रूप में है । इसके प्राचीन नाम 'खेड़पाटण' या 'क्षीरपुर' कहे जाते हैं । यह नगर बालोतरा से ५ मील पश्चिम में स्थित है ।)

खेड़करणो-(मुहा०)१. खेत में हल चलाना । खेत जोतना । २. पैदल मुसाफिरी करना । चलना । ३. मनुष्यों को आक्रमण के लिये इकट्ठा करना । ४. आक्रमण करना । ५. किसी बड़े कार्य को सफलता पूर्वक पार लगाना ।

खेड़खरच-(न०) १. पराजित शत्रु से लिया जाने वाला सेना खर्च । २. सेना का मार्ग व्यय । ३. शत्रु से लिया जाने वाला आक्रमण खर्च । ४. खेत को खड़ने में होने वाला खर्च ।

खेड़णो-(क्रि०) १. खेत में हल चलाना । २. चलाना । हाँकना ।

खेड़पति-(न०) १. खेड़ नगर का स्वामी । २. राठौड़ क्षत्री ।

खेड़ादेवत-(न०) १. ग्राम देवता । २. क्षेत्रपाल ।

खेड़ायत-(न०) १. एक गाँव का धनी । एक गाँव की जागीरीवाला जागीरदार । २. जमीन जोत कर गुजरान करने वाला व्यक्ति ।

खेड़ा-री-वाधण-(ना०) शिकार का एक प्रकार ।

खेड़ी-(ना०) इस्पात । पक्का लोह ।

खेड़ेचो-(न०) १. खेड़ में सर्वप्रथम राज्य स्थापित करने और वहाँ से अन्य स्थानों में फैलने के कारण राठौड़ राजपूतों का प्रचलित नाम । २. राठौड़ राजपूतों की एक शाखा ।

खेड़ो-(न०) गाँव । खेड़ा ।

खेढी-(न०) शत्रु । खेधी । वैरी ।

खेत-(न०) १. वह भूमिखंड जिसे अन्न उत्पन्न करने के लिये जोतते बोते हैं । खेतर । २. रणक्षेत्र । रणखेत । युद्धस्थल । ३. खानदान । कुळ । वंश । ४. उत्पत्ति स्थान । ५. श्मशान भूमि ।

खेतपाळ-(न०)एक लोक देवता । क्षेत्रपाल । एक ग्राम रक्षक देवता । खेत्रपाळ ।

खेतर-दे० खेत १ ।

खेतरपाळ-दे० खेतपाळ ।

खेत रहणो-(मुहा०) युद्ध में मरना ।

खेतरी-दे० खेती ।

खेतल-(न०) १. क्षेत्रपाल । क्षेत्र या गाँव का देवता । २. भैरव । ३. खेतसिंह

खेतराम या खेताराम का साहित्यिक लघु रूप।

खेतलरथ–(न०) भैरव का वाहन। कुत्ता। **कूतरो।**

खेतलवाहण–दे० खेतलरथ।

खेतलोजी–(न०) १. क्षेत्रपाल। खेतरपाळ। २. भैरव। भैरों।

खेती–(ना०) १. कृषि। काश्तकारी। काश्त। २. खेत में उगी हुई या खड़ी फसल। ३. व्यवसाय। धंधा।

खेती-पाती–(ना०) खेती बाड़ी का काम। कृषि का काम। **करसण।**

खेतीवाड़ी–(ना०)१. खेती काम। **किसानी।** २. खेती करने, साग सब्जी लगाने और बागवानी करने का काम। खेतीवारी। ३. वह भूमिखंड जहाँ सिंचाई द्वारा खेती, बागवानी और साग सब्जी पैदा होती है।

खेत्र–दे० खेत।

खेत्रपाळ–दे० खेतरपाळ।

खेत्री–दे० खेती।

खेद–(न०) १. अफसोस। शोक। २. मानसिक कष्ट। संताप। मनस्ताप। ३. पश्चाताप। अनुताप। पछतावा। ग्लानि। ५. खिन्नता। ६. शत्रुता।

खेदाई–(ना०) १. छेड़छाड़। २. ईर्ष्या।

खेदाखेद–(ना०) १. शत्रुता। २. वैमनस्य। ३. झगड़ा-टंटा। **तकरार।**

खेदो–(न०) १. छेड़छाड़। छेड़खानी। २. रगड़ा-झगड़ा। **टंटोझगड़ो।** ३. द्वेष। ४. हमला। ५. पीछा।

खेध–(न०) १. शत्रुता। वैर। २. युद्ध। ३. विरोध। ४. वाद-विवाद। ५. क्रोध। ६. दुख।

खेधी–(न०) शत्रु। दुश्मन। **वैरी।**

खेधो–दे० खेदो।

खेप–(ना०)१. एक मुश्त माल का अधिक लाभ प्रद क्रय विक्रय। लाभप्रद सौदा। २. सस्ते में खरीदा हुआ थोक माल। ३ व्यापार के निमित्त किया गया वह दौरा जिसमें अधिक लाभ मिला हो। ४. आयात होने वाला माल। ५. खेप। **फेरो।**

खेपक–(न०) मूलग्रन्थ में किसी अन्य द्वारा पीछे से जोड़ी हुई रचना। मूलग्रन्थ में दूसरे व्यक्ति द्वारा मिलाया हुआ रचना-अंश। क्षेपक (वि०) १. बाद में मिलाया हुआ। २. खेप करने वाला।

खेपियो–(न०) दूत। कासिद। (वि०) १. खेप करने वाला। २. परिश्रमी।

खेम–(न०) १. क्षेम। मंगल। कल्याण। स्वस्थ। ३. सुरक्षा। ४. सुख।

खेमकुसळ–(ना०) १. सुख-शांति और आरोग्य। क्षेम कुशल। आनंद-मंगल। **राजीबाजी। राजीखुशी।**

खेमंकरी–(ना०) १. क्षेमंकरी देवी। २. सफ़ेद पंखवाली चील। **खेमकरी।**

खेमाळ–(ना०) तलवार।

खेमो–(न०) तंबू।

खेरणियो–(न०) चालनी। चलनी। (वि०) खिरानेवाला।

खेरणी–(ना०) १. चालनी। चलनी। २. खिराने का काम।

खेरणो–(क्रि०) १. गिराना। खिराना। २. झगड़ना। ३. संहार करना।

खेरवाळी–(ना०) रखवाली। **निगै। रखवाळी।**

खेरा-खारो–(न०) १. मिठाई का चूरा। २. किसी वस्तु का बचा हुआ टूटा-फूटा भाग। ३. चूरा। जमीरा। **खाराखेरो।**

खेरी–(ना०) दांतों पर जमने वाली पपड़ी। दन्तशर्करा।

खेरूं-*(वि०)* १. बरबाद । नाश । २. बिगाड़ । क्षति । ३. व्यर्थ ।

खेरो-*(न०)* १. चूरा । चूरो । २. छोटा टुकड़ा । ३. बची हुई सूखी लपसी, हलुआ, मिठाई आदि । ४. इन वस्तुओं का मिश्रण । ५. इन वस्तुओं का बचा हुआ बासी चूरा । ६. किसी वस्तु या वस्तुओं का अवशिष्ट कण समूह ।

खेल-*(न०)* १. नाटक । २. तमाशा । रमत । ३. हँसी । रमत । ४. क्रीड़ा । ५. खेलकूद । ६. करतब । ७. साधारण बात ।

खेळ-*(ना०)* १. पशुओं के पानी पीने के लिये बनाया हुआ लंबोतरा कुंड । खेळी । २. कुल । ३. कुलभेद ।

खेलड़ो-*(न०)* ककड़ी, टींडसी आदि की सूखी फाँक । *(वि०)* दुबला पतला । कृश ।

खेलणो-*(क्रि०)* १. खेलना । रमणो । २. क्रीड़ा करना । ३. युद्ध करना । ४. सट्टे का व्यापार करना । ५. जुआ खेलना ।

खेलाड़-दे० खेलार ।

खेलाड़ी-*(वि०)* १. खेल खेलने वाला । खिलाड़ी । खेलाड़ी । रमाक । रमाकू । २. अभिनय करने वाला । ३. सट्टेबाज । ४. चतुर । चालाक । ५ मुत्सद्दी । *(न०)* नट । २. कीर्तनिया ।

खेलार-*(वि०)*१. अभिनय करने वाला । २. खेलने वाला । खिलाड़ी । ३. चतुर । होशियार । चालाक । ४. सट्टेबाज ।

खेळी-*(ना०)* १. युवती । २. मौजी-स्त्री । आनंद-प्रकृति वाली । ३. पशुओं के पानी पीने के लिये बनाया गया आयताकार हौज । ४. स्त्री के लिये (बात करते समय का) एक संपुट । *(वि०)* १. हँसमुखी । २. मौजी ।

खेळू-*(न०)*१. खेल का मुखिया । २. पक्ष में खेलने वाला साथी । खेल का सहयोगी । खाळू ।

खेळो-*(न०)* १. सैनिक । २. बच्चा । ३. पुरुष । ४. व्यक्ति । ५.तीसरे पुरुष का एक विशेषण । ६. बात करते समय का एक संपुट (तीसरे व्यक्ति के लिए) । *(वि०)* १. जवान । युवा । २. मस्त । ३. मूर्ख । ४. मजाकी । ५. आनन्दी ।

खेलो-*(न०)* १. सट्टा । खेला । २. दाँव । ३. खेल ।

खेव-*(ना०)* १. विलंब । देर । २. क्षण । पल । ३. आदत । टेव ।

खेवट-*(न०)* १. केवट । मल्लाह । *(ना०)* १. ध्यान । लगन । २. अभ्यास । ३. उत्कंठा ।

खेवटियो-*(न०)*१. केवट । मांझी । खेवट । २. अगुआ । अग्रणी ।

खेवणा-*(ना०)* १. चिन्ता । परवाह । २. देख-रेख । निगरानी ।

खेवणी-*(ना०)* १. नाव चलाने का डाँड़ । २. छोटा खेवणा । खेवणो ।

खेवणो-*(न०)* नथ के मध्य का जड़ा हुआ एक रत्न जिसके आजू-बाजू मोती पिरोये हुए रहते हैं । *(क्रि०)* १. देवता के आगे धूप या अगरबत्ती जलाना । धूप खेना । २. नाव चलाना । नाव खेना ।

खेवो-*(न०)* अभ्यास । आदत ।

खेस-*(न०)* १. दुपट्टा । उपरना । २. मोटे सूत की चद्दर । खेसलो ।

खेसणो-*(क्रि०)* १ हटाना । दूर भगाना । २. मारना ।

खेसलो-*(न०)* १. खेस । दुपट्टा । २. मोटे सूत की बुनी चद्दर ।

खेह-*(ना०)*१. उड़ती हुई धूलि । २. धूलि । रज । ३. रोटों (बाटी) को पकाने के

लिये जलाई हुई कण्डों की निर्धूम अग्नि। ४. राख।

खेहटियो-विनायक-(न०) १. विवाहादि मांगलिक कार्यों के प्रारम्भ में अस्थाई रूप से स्थापित की जाने वाली विनायक की मूर्त्ति। किसी मांगलिक कार्य के पूर्व मिट्टी से बना कर स्थापित की जानेवाली गणेश की मूर्त्ति जो कार्य की समाप्ति के पश्चात् नदी, आदि किसी तीर्थ या स्थानीय जलाशय में विधिपूर्वक विसर्जित कर दी जाती है।

खेहरोटो-(न०)खेह में पकाया हुआ रोटा। बाटी।

खेहाडंबर-दे० खेहारव।

खेहारव-(ना०) आकाश में छाई हुई गर्द।

खेहारवण-दे० खेहारव।

खेंखाट-१. ग्रीष्म की तेज हवा। २. ग्रीष्म की तेज हवा की आवाज। खूंखाट। खंखाड़।

खेंखार-(न०) १. कफ। श्लेष्म। बलगम। दे० खेंखारो।

खेंखारो-(न०) १. गले में से कफ छूटने का शब्द। खांसी होने का शब्द। २. घर में प्रवेश के समय सूचना के रूप में गुरुजनों के द्वारा की जाने वाली कृत्रिम खांसी जिससे स्त्री आदि कुटुम्बीजन उनके प्रति शिष्टाचार का पालन करने के लिये सतर्क हो जायें। अंतःपुर आदि खानगी स्थानों में प्रवेश के समय पूर्व सूचना के रूप में किया जाने वाला कृत्रिम खांसी का शब्द।

खेंग-(न०) १. घोड़ा। २. तलवार। ३. पशु के अंग-प्रत्यंग के रंग या आकृति द्वारा उनको पहिचानने का चिन्ह। खंग ४. पशु की आकृति। ५. नाश।

खेंगरणो-(क्रि०) १. नाश करना। संहार करना। २. धन को दुर्व्यसन में नष्ट करते रहना। धन का दुरुपयोग करना।

खेंगाळ-(न०) नाश। संहार।

खेंच-दे० खींच।

खेंचणो-दे० खींचणो।

खेंचाखेंच-दे० खींचाखींच।

खेंचाखेंची-दे० खेंचाखेंच।

खेंचाताण-दे० खींचाताण।

खै-(न०) क्षय। नाश। खय।

खैकार-(न०) नाश। संहार।

खैकारी-(वि०) क्षयकारी। संहारक।

खैकाळ-(न०) १. नाश। २. युद्ध।

खैगरणो-(क्रि०) नाश करना।

खैगाळ-दे० खैकाळ।

खैड़ी-दे० खेड़ी।

खैड़ो-(न०) १. गाँव। २. गाँव का बाहरी प्रदेश। ३. बर्रं आदि का छत्ता। ४. पूरे गाँव को कराया जाने वाला भोजन। समस्त गाँव का न्योता। खेड़ा-न्यात। खेड़ा-जीमण।

खैण-(न०)१. नाश। २. क्षय रोग। तपेदिक।

खैर-(न०) १. एक वृक्ष जिसकी छाल से कत्था बनाया जाता है। २. कुशल। क्षेम। खैर। (अव्य०) १. कुछ चिंता नहीं। २. अस्तु। अच्छा।

खैरसार-(न०) कत्था।

खैराइत-दे० खैरात।

खैरात-(ना०) दान। पुण्य।

खैरादी-(न०) खराद पर काम करने वाला व्यक्ति। खरादने का काम करने वाला। खरादी।

खैरायत-दे० खैरात।

खैरियत-(ना०) कुशल।

खैरी गूंद-(न०) खैर वृक्ष का गोंद। खैरी गूंद।

खैरोग-(न०) क्षय रोग। तपेदिक।

खैसर-(न०) कुबेर।

खैंखाड़-(न०) ग्रीष्म की तेज हवा और उससे उत्पन्न सरसराती ध्वनि।

खोड़लो–दे० खोड़ीलो। *(वि०)* लंगड़ा।

खोड़ाणो–दे० खोड़ावणो।

खोडा में देणो-*(मुहा०)* कैदी के पांवों को खोडा में डालना।

खोड़ावणो–*(क्रि०)* लंगड़ाना।

खोड़ियो–*(वि०)* लँगड़ा। खोड़ो।

खोडियो-*(न०)* १. छोटा क्यारा। २. हजामत बनाने का एक उपकरण। सेफ्टी रेज़र।

खोड़ी–*(ना०)* १. खेत में आने जाने के लिये दो बाजू (बाँहाँ) वाला गाड़ा हुआ एक खूंटा जिससे जानवर खेत में नहीं जा सके। २. ऊँट के अगले पैर को मोड़कर दिया जाने वाला बंधन। *(वि०)* लंगड़ी।

खोड़ीलाई–*(ना०)*१.बदमाशी। २ चालाकी। ३. शरारत। ४. नुक्ताचीनी। ५. हैरानगति।

खोड़ीलो–*(वि०)* १. ऐबी। ऐब देखने वाला। दोष देखने वाला। २. अशुभ। ३. अमंगलकारी। ४. बदमाश। ५. चालाक। ६. हैरान करने वाला। ७. नुक्ता चीनी करने वाला। ८ व्यर्थ नुकशान करने वाला। (स्त्री० खोड़ीली)

खोडो-*(न०)* १. क्यारा। २. कैदी के पाँवों को कस कर रखने का एक बड़ा और भारी काष्ठ यंत्र। २. डाढ़ी के बीच में ठुड्डी पर (हजामत में) बनवाई जाने वाली पतली रेखा।

खोड़ो–*(वि०)* १. लंगड़ा। २. वीर। ३. स्वर रहित। हलंत। (अक्षर) *(न०)* १. हनुमान। २. भाटी क्षत्री।

खोण-*(ना०)* १. क्षोणी। पृथ्वी। २. अक्षौहिणी सेना।

खोणी-दे० खोण।

खोणो-*(क्रि०)*१. गँवाना। २. नष्ट करना। बिताना।

खोत–*(न०)* १. मुसलमान। २. मुस्लिम सेना।

खोतरणी–*(ना०)* १. दाँत कुरेदने की सलाई। तिनका। २. नक्काशी करने का औजार। टाँकी। ३. छेड़-छाड़। कुचरणी।

खोतरणो–*(क्रि०)* १. खोदना। २. जड़ से उखाड़ना। ३. कुरेदना।

खोदणियो–*(वि०)* खोदने वाला।

खोदणो–*(क्रि०)* १. खोदना। २. नक्कासी करना।

खोदाई–*(ना०)* १. खोदने का काम। २. खोदने की उजरत। ३. ऊधम। पाजीपन। शैतानी।

खोदियो–*(न०)* १. गदहे का बच्चा। दे० खोदो।

खोदो–*(न०)* १. साँढ। २. छोटा साँढ। ३. बैल।

खोध–*(न०)* क्रोध।

खोपड़ी–*(ना०)* सिर की की खुपरी।

खोपणो–*(क्रि०)* १. खोना। २. नष्ट करना। ३. गाड़ना। ४. रोपना।

खोपरी-*(ना०)* १. सिर की हड्डी। कपाल। २. सिर। ३. गूदा निकला हुआ तरबूज का टुकड़ा। खुपरी।

खोपरेल–*(न०)* नारियल का तेल।

खोपरो–*(न०)* सूखे नारियल का आधा भाग।

खोपी–*(ना०)* १. गाय का तुच्छार्थक नाम। २. बूढ़ी गाय।

खोपो–*(न०)* १. बैल का तुच्छार्थक नाम। २. बूढ़ा बैल। *(वि०)* अनावश्यक हस्तक्षेप करने वाला। बिन जरूरी दखल करने वाला।

खोबो–*(न०)* १. करतल का संपुट। अंजली। खबचो। २. अंजली भर वस्तु। ३. मोटी रोटी में अंगुली से दबाकर बनाया हुआ खड्डा।

खोम–*(ना०)* बुर्ज।

खोयण-(ना०) १. पृथ्वी। २. अक्षौहिणी सेना।

खोरड़ी-(ना०) १. झोंपड़ी। २. कोठरी। ३. बुढ़िया। (वि०) बुड्ढी।

खोरड़ो-(ना०) १. झोंपड़ा। मिट्टी का बना घर। २. कोठरी। (वि०) बुड्ढा।

खोरो-(न०) १. सिर की चमड़ी का एक रोग। २. अधिक दिनों की खाद्य वस्तु में पैदा होने वाला बे-स्वादपना। (वि०) अधिक दिनों के कारण बेस्वाद बना हुआ (खाद्य पदार्थ)।

खोळ-(ना०) १. गिलाफ। २. केंचुली। ३. आवरण। ४. शरीर। ५. गोद। ६. सिंह की गुफा। ७. विवाह की एक प्रथा जिसमें वर और वधु के दुपट्टे और ओढ़ने के छोर में गुड़ मेवा आदि भरा जाता है।

खोलड़ो-(न०) १. घर। २. झोंपड़ा। ३. शरीर।

खोळणो-(क्रि०) धोना।

खोलणो-(क्रि०) १. बँधी हुई वस्तु को छोड़ देना। २. ढके हुए पात्र के ढक्कन को हटाना। ३. समेटी हुई वस्तु को फैलाना। ४. बंध किये हुए किवाड़ आदि की रुकावट को हटा देना।

खोळ भरणी-(मुहा०) वर-वधू की खोळ में गुड़ मेवा आदि भरना।

खोळायत-(वि०) दत्तक। गोद लिया हुआ। (न०) दत्तक पुत्र।

खोलावणो-(क्रि०) खुलवाना।

खोळियो-(न०) शरीर।

खोळी-(ना०) १. गिलाफ। २. आवरण।

खोळो-(न०) १. गोद। अंक। २. अंचल। ३. अंचल से बनाई हुई झोली। ४. धोती के अगले भाग को ऊंचा खोलने से बना हुआ झोला।

खोवणियो-(वि०) खोने वाला।

खोवणो-(क्रि०) दे० खोणो।

खोवा-खूंदो-(न०) १. लूट-खसोट। २. छीना-झपटी।

खोवो-(न०) खोआ। मावा। कीटी। मावो।

खोसणियो-(वि०) १. खोसने वाला। लूटने वाला। २. छीनने वाला।

खोसणो-(क्रि०) १. खोसना। लूटना। २. छीनना। झपटना। ३. लटकाना। टाँगना। ४. अटकाना। फँसाना। खोंसना।

खोसरो-(न०) वेश्या का दूत या दलाल।

खोसा-खूंदो-(न०) १. लूट-खसोट। २. २. छीना-झपटी।

खोह-(ना०) गुफा।

खोहण-(ना०) १. अक्षौहिणी सेना। २. पृथ्वी। क्षोणि।

खौडी-(ना०) घास फूस एकत्रित करने का लकड़ी के दाँतों वाला कृषकों का एक उपकरण।

खौळो-(वि०) जो तंग न हो। ढीला। शिथिल।

ख्यात-(ना०) १. इतिहास। २. इतिहास ग्रंथ। ३. मध्यकाल में लिखे गये राजस्थानी भाषा के इतिहास ग्रंथों की संज्ञा। ४. यश। ५. प्रसिद्धि। (वि०) प्रसिद्ध।

ख्याती-(ना०)१ ख्याति। प्रसिद्धि। २. यश। कीर्ति।

ख्याल-(न०) १. ध्यान। २. विचार। ३. नाटक का एक प्रकार। लोक नाटक। तमाशा। ४. एक रागिनी। ५. खेल।

ख्यालक-(न०) १. ख्याल खेलने वाला। ख्याली। २. बाजीगर।

ख्याली-(वि०) १. ख्याल खेलने वाला। खेलाड़ी। २. मजाकी। मजाक पसंद। ३. कल्पित। मनगढ़ंत।

ख्यालीड़ो-दे० ख्याली।

ख्यांत–दे० खांत ।

ख्योणी–(ना०) १. पृथ्वी । क्षोणि । २. अक्षौहिणी ।

ख्वार–दे० खुवार ।

ख्वारी–दे० खुवारी ।

ख्वाहिश–(ना०) इच्छा ।

ग

ग–संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा के कवर्ग का तीसरा वर्ण । कंठस्थानी तीसरा व्यंजन वर्ण ।

ग–(न०) १. गणेश । २. श्रीकृष्ण । ३. गंधर्व । ४. गीत । ५. गुरुमात्रा । (का०) । (वि०) १. गाने वाला । २. जाने वाला ।

गइ–(ना०) गति ।

गई–(वि०) दरगुजर । माफ किया हुआ । (ना०) माफी । क्षमा । (क्रि०भू०) 'जाणो' क्रिया का भूतकाल नारी जाति रूप । 'गयो' का नारी जाति रूप ।

गई करणो–(मुहा०) १. दर गुजर करना । २. माफ करना । ३. अनसुनी करना ।

गई गुजरी–(वि०) १. बीती हुई । भूतकाल की । २. बुरी दशा को पहुँची हुई । निकृष्ट । ३. अशिष्ट व्यवहार वाली । अशिष्ट । (ना०) भूतकाल की हकीकत । बीती हुई बात ।

गईवाळ–(वि०) १. गयाबीता । निकम्मा । अयोग्य । २. हतभाग्य ।

गउ–(ना०) गाय ।

गउ खाणो–(न०) मुसलमान ।

गउखानो–(न०) गौशाला ।

गउघाट–(न०) १. तालाव आदि जलाशयों पर बना हुआ गायों के पानी पीने का घाट । २. बड़ा घाट । मुख्य घाट ।

गउतिरात–दे० गोत्रात ।

गउदान–(न०) गायदान । गोदान ।

गउ-मारणो–(न०) १. मुसलमान । २. गोहत्या ।

गउमुखी–(ना०) गउमुख के आकार की एक थैली जिसमें हाथ डालकर माला फिराई जाती है ।

गकार–(न०) कवर्ग का तीसरा वर्ण । 'ग' वर्ण । **गग्गो** । **गगियो** ।

गखड़ो–(न०) मुसलमान ।

गगन–(न०) आकाश । **असमान** ।

गगन-गढ–(न०) बहुत ऊंचा महल ।

गगनघेर–(न०) १. भीड़ । २. मानवसमूह ।

गगनचर–(न०) १. पक्षी । २. नक्षत्र ।

गगनमणि–दे० गगनमिण ।

गगनमंडळ–(न०) १. आकाश मंडल । २. ब्रह्माण्ड । ३. मस्तक (योगशास्त्रानुसार) ।

गगनमिण–(न०) सूर्य । गगनमणि ।

गगियो–दे० गग्गो ।

गग्गो–(न०) 'ग' वर्ण ।

गघ–(न०) ऊँट ।

गघराज–दे० गघराव ।

गघराव–(न०) १. ऊँट । २. बड़ा ऊंट । ३. महिया ऊंट । **महियो** ।

गच–(न०) १. चूने का फर्श । २. चूना ।

गचरको–(न०) १. खट्टी या तीखी डकार । अम्लीका । २. डकार के साथ आने वाला अपच अम्ल अंश । ३. उपेक्षा । **सूग** । ४. **मिचळी** । मतली ।

गच्छ–(न०) १. समुदाय । जत्था । २. जैन सम्प्रदाय के भेद या समुदाय का नाम । जैन साधुओं के चौरासी भेदों की संज्ञा । ३. जाना । गमन ।

गच्छवै-दे० गछवै ।

गच्छंती-(ना०) १. भाग जाने का भाव । चंपत होना । २. गमन करने का भाव । गमन ।

गछणो-(क्रि०) १. चलना । २. भागजाना । ३. चले जाना ।

गछवै-(न०) गच्छपति ।

गछंत-दे० गच्छंती ।

गज-(न०) १. हाथी । २. तीन फुट का एक माप । ३. वंदूक भरने की छड़ । ४. सारंगी वजाने की कमान । (वि०) १. मुख्य । प्रधान । जैसे-गज दशा । २. श्रेष्ठ । उत्तम । जैसे-गजगिरि । ३. वड़ा । जैसे-गजमोती । गजपीपर ।

गजक-(ना०) तिल पपड़ी ।

गजगत-(न०) १. जमीन का गजों से किया हुआ माप । २. हाथी के समान मतवाली चाल । गजगति ।

गजगामणी-(वि०) हाथी के समान मस्त चाल से चलने वाली । गजगामिनी ।

गजगामिनी-दे० गजगामणी ।

गजगाव-दे० गजगाह ।

गजगाह-(न०) १. हाथी । २. हाथियों का झुंड । ३. हाथी की झूल । ४. शृंगारी घोड़ों के इधर उधर लटकाने वाले चमर । ५. घोड़े की झूल । ६. घाघरा । लहँगा । ७. गजगति । हाथी के समान चाल । ८. युद्ध । गजग्राह । ६. संहार । नाश । (वि०) शूरवीर ।

गजगौहर-(न०) गजमोती ।

गजग्राह-(न०) युद्ध ।

गजघड़ा-(न०) हस्ती सेना ।

गजठेल-(वि०) हाथियों को पछाड़ने वाला । महाशक्तिशाली ।

गजडंवर-(न०) गज समूह ।

गजढाल-(न०) हाथियों का समूह । गजथाट । २. युद्ध में हाथियों की रक्षा करने वाला वीर योद्धा । ३. शरणागत रक्षक । ४. रक्षा करने में अग्रणी । (ना०) १. हाथी के कुंभस्थल पर वांधी जाने वाली ढाल । २. वड़ी ढाल ।

गजथाट-(न०) हस्ति सेना ।

गजदंत-(न०) हाथी का दांत ।

गजधर-(न०) १. भवन निर्माण करने वाला शिल्पी । मिस्त्री । २. दरजी, वढ़ई, सिलावट आदि जिनके काम में गज की आवश्यकता रहती है । ३. दरजी ।

गजनाळ-(ना०) वड़ी तोप ।

गजव-(न०) १. विचित्र वात । २. आश्चर्य । अचंभा । ३. जुलम । अन्याय । ४. आपत्ति । आफत । ५. कोप । रोप । (वि०) १. भयंकर । २. विचित्र । ३. अतिशय । खूब ।

गजवण-(वि०) १. गजव करने वाली । २. नखरे वाली । नखराळी ।

गजवंध-(न०) जिसके यहाँ सवारी के लिये हाथी वँधे रहते हों । राजा ।

गजवंधी-दे० गजवंध ।

गजवाग-(न०) हाथी को चलाने या वश में करने का अंकुश । गजवांक ।

गजवाँक-दे० गजवाग ।

गजवी-(वि०) १. गजव करने वाला । २. कुशल । प्रवीण । चतुर ।

गजवोह-(न०) १. चमत्कार । २. विचित्रता । ३. गजव की वात । ४. शौर्य । वीरता । ५. हस्तीदल ।

गजमुख-(न०) १. गणेश । २. हस्तीमुख ।

गजमोती-(न०) १. एक प्रकार का मोती जो हाथी के मस्तक से निकलता है । गजमुक्ता । २. वड़ा मोती । गजमोती ।

गजर-(ना०) १. घंटा वजने का शब्द । २. प्रातः काल वजने वाला घंटा । ३. चार, छः, आठ, दस और वारह सम संख्या के घंटों के वजने पर उतनी ही

वार जल्दी जल्दी बजने वाले घंटों की झनकार (शब्द) या बजाने की क्रिया। ४. दुर्ग पर से बजने वाला भोर का नगाड़ा। ५. एक प्रकार की बंदूक। ६. एक तोप। ७. गजर के अनुसार तोप का छोड़ा जाना। ८. मजाक। दिल्लगी। ९. शोर। हल्ला। १०. उत्पात।

गजराज–*(न०)* बड़ा हाथी।

गजरो–*(न०)* १. हाथ में पहिनने का एक गहना। २. फूलों का गजरा।

गजल–*(ना०)* १. उर्दू-फारसी की एक रागिनी। २. इस राग का शृंगारिक काव्य। ३. उर्दू-फारसी का एक गायन प्रकार। ४. रेखता। ५. वह गजल काव्य जो सूफियों द्वारा जीव और आत्मा के प्रतीक रूप तुर्रा और कलगी अथवा प्रिय और प्रियतमा (आशिक और माशूक) के दो प्रतिद्वन्द्वी समुदायों में आमने-सामने बैठ कर परस्पर एक दूसरे की श्रेष्ठता या महत्व के रूप में गाया जाता है।

गजवदन–*(न०)* गणेश।

गजवाग–दे० गजवाग।

गजविभाड़–*(वि०)* हाथी को पछाड़ देने वाला। जबरदस्त। वीर।

गजवेल–*(न०)* फौलाद। इस्पात। कांतिसार।

गजशाही–*(न०)* जोधपुर और बीकानेर के दोनों राजाओं द्वारा प्रवर्तित रुपया।

गजसिंघजी-रो-रूपक–*(न०)* बीकानेर नरेश गजसिंह की प्रशस्ति का सिंढायच फतहराम का एक डिंगल काव्य।

गजंद–दे० गयंद।

गजा–*(ना०)* १. आफत। २. सामर्थ्य। शक्ति। हैसियत।

गजाणण–*(न०)* गजानन। गणेश।

गजानन–*(न०)* गणेश।

गजानंद–*(न०)* गजानन। गणेश।

गजारूढ–*(वि०)* हाथी पर सवार।

गजियाणी–*(ना०)* १. एक रेशमी कपड़ा। २. एक गज पनहे का रेशमी कपड़ा।

गजी–*(ना०)* १. हस्तिनी। १. एक मोटा कपड़ा। खद्दर।

गजेन्द्र–*(न०)* १. बड़ा हाथी। २. ऐरावत।

गजो–*(न०)* १. सामर्थ्य। शक्ति। २. सामर्थ्य। बिसात। बूता।

गज्जूह–*(न०)* गजयूथ। हाथियों का झुंड।

गज्र–*(ना०)* तोप।

गट–*(न०)* गले में कोई वस्तु उतारने का शब्द।

गटकाणो–दे० गटकावणो।

गटकावणो–*(क्रि०)* १. उदरस्थ करना। गटकाना। पीना। निगल जाना। २. हड़पना।

गटकूड़ो–*(न०)* १. कबूतर। २. सुंदर रंग-रूप का छोटा बच्चा।

गटपट–*(ना०)* १. परस्पर की गुप्त बात। २. घनिष्टता।

गटरमाळा–*(ना०)* बड़े दानों की माला।

गटो–दे० गट्टो सं० ३

गट्टी–*(ना०)* लपेटे हुए धागे की दड़ी।

गट्टो–*(न०)* मुसाफिरी में सेवा-पूजा और दर्शनार्थ साथ में रखने योग्य राम, कृष्ण आदि की ढक्कनदार गोल छबि। २. हुक्के की तंबाकू रखने का एक विशेष प्रकार का गोल डिब्बा। ३. कलाई और पाँव की नली के नीचे की जोड़ की उभरी हुई हड्डी। टखना। गट्टा। ४. बेसन की लोई। ५. हुक्के का एक भाग। ६. लपेटे हुये धागे का बड़ा गोल-दड़ा।

गठजोड़ो–*(न०)* १. विवाह में पाणिग्रहण के समय वर-वधू के उत्तरीय के छोरों को परस्पर बाँधने की एक प्रथा। २. गठबंधन। छेड़ाछेड़ी।

गठड़ी–*(ना०)*१. कपड़े में बँधा हुआ सामान। गठरी। पोटकी।

गठवंधण–दे० गठजोड़ो ।

गठियो–(न०) १. गाँठ काटने वाला । जेब काटने वाला । जेब कतरा । २. लुच्चा । ३. घुटने आदि अंग की जोड़ों में होने वाला वायु रोग । वायु रोग से जोड़ों में होने वाली पीड़ा ।

गड़–(न०) फोड़ा । गाँठ ।

गड़गड़-खाँड–दे० कड़कड़ खाँड ।

गड़गड़ाट–(न०) गर्जन ।

गड़गड़ी–(ना०) कुँएँ से डोल की रस्सी खींचने का एक चक्राधार । फिरकी । २. घिरनी । चरखी । गराड़ी ।

गड़-गूमड़–(न०) फोड़ा-फुन्सी ।

गड़ड़णो–(क्रि०) १. बादलों का गर्जना । २. गड़गड़ की ध्वनि होना । ३. नगाड़ा बजना । ४. जोर से बाजा बजना ।

गडणो–(क्रि०) १. गड़ना । दफन होना । २. धँसना । ३. चुभना ।

गडत–(ना०)१. बीमारी की तंद्रा । बीमारी की बेहोशी । २. हलकी बेहोशी । ३. हलकी नींद ।

गड़दन–दे० गरदन ।

गड़दानी–(ना०) गरदन । गरेबान ।

गड़दान–(न०) १. एक वाद्य । २. ढोल । ३. एक तोप ।

गड़दानो–(न०) बाजा । ढोल ।

गड़बड़–(ना०) १. कोलाहल । शोरगुल । २. अव्यवस्था । गोलमाल । ३. क्रमभंग । ४. दंगा । बलवा । ५. **खड़बड़ी** । बखेड़ा ।

गडवी–(ना०) लोटे के आकार की छोटी लुटिया । लोटे के ऊपर रखी जानेवाली छोटी लुटिया, जिससे लोटे में से लेकर पानी पिया जाता है । **कळसियो** । (न०) चारण । **गढवी** ।

गडवो–(न०) १. लोटा । २. कलसा । घड़ा । ३. चारण । **गढवी** ।

गड़ाकू–(ना०) गुड़ या खमीर मिला हुआ तम्बाकू ।

गड़ागड़-साज– १. वाद्य सामग्री । गाजे-बाजे । २. वाद्य-ध्वनि ।

गड़ासंध–(न०) सीमा । हृद । (क्रि० वि०) पास । निकट ।

गडी–(ना०) १. कपड़े की तह । २. कपड़े के समेटने पर बनने वाला उसका हर भाग या मोड़ । ३. बही के पन्नों में डाले हुये सल । ४. उलझन । गाँठ । ५. कपड़े के थान थेले आदि की एक समान वस्तुओं की श्रेणीवद्ध की हुई चुनाई । ६. करीने से रखी हुई वस्तुओं का समूह ।

गडूथळ–दे० गड़ोथळ ।

गड़ो–दे० गिड़ो ।

गड़ोथळ–(न०) १. छलाँग । कुलाँच । कलाबाजी । २. शर्मिन्दगी । ३. हतप्रभ । ४. हतकीर्ति ।

गढ़–(न०) किला । दुर्ग ।

गढपति–(न०) १. राजा । २. दुर्गपति ।

गढरोहो–(न०)१. किले का घेरा । २. किले पर से किया जाने वाला शत्रुओं का अव-रोध । ३. गढ़ की आड़ में किया जानेवाला अवरोध । ४. गढ़ पर किया जाने वाला आक्रमण ।

गढवई–दे० गढपति ।

गढवाड़ो–(न०)चारणों का गाँव या बस्ती ।

गढ़वार–(वि०) दृढ़ । मजबूत (कपड़े के लिये) ।

गढवी–(न०) १. चारण । (ना०) २. पानी पीने का लोटे के आकार का छोटा पात्र । **कळसियो** ।

गढवै–दे० गढपति ।

गढवो–(न०) चारण ।

गढी–(ना०) १. छोटा गढ़ । २. गाँव के चारों ओर का बाड़, भींत आदि का बना हुआ अहाता ।

गढीस–(न०) गढ़पति ।

गढोई–(न०) गढ़पति ।

गण–(न०) १. शिव का पारिषद । पार्षद । प्रमथ । २. झुंड । समूह । ३. श्रेणी ।

वर्ग । ४. छंद शास्त्र के अनुसार तीन वर्णों का समूह । जैसे—यागण, मागण आदि ।

गणकारणो—दे० गिणकारणो ।

गणगोर—*(ना०)* १. पार्वती । गौरी । २. चैत्र मास में मनाया जाने वाला राजस्थान का एक प्रसिद्ध गौरी-पूजन का उत्सव ।

गणणाणो—*(क्रि०)* १. तोप में गोला छूटने का शब्द । २. प्रतिध्वनि होना । ३. बीत जाना । निकल जाना ।

गणणाटो—*(न०)* १. गोल चक्कर खाने की क्रिया या भाव । २. सिर घूमना । चक्कर । ३. भिनभिनाहट । ४. रोने जैसी सूरत बनाकर भीं-भीं करने का भाव । **गन्नाटो** । **टन्नाटो** । गुनगुनाहट ।

गणणो—*(क्रि०)*१. गिनना । गिनती करना । २. हिसाब लगाना । ३. समझना । ४. किसी को कुछ महत्व का समझना । महत्व देना ।

गणतरी—*(ना०)* १. गिनती । २. अनुमान । अंदाज । ३. पूछ । आदर । मान । सम्मान ।

गणधर—*(न०)* तीर्थंकरों के उपदेशों का प्रचार करने वाले जैनाचार्य ।

गणनायक—*(न०)* गणेश ।

गणपति—*(न०)* गणेश ।

गणव—*(न०)* गणपति ।

गणवै—*(न०)* गणपति ।

गणिका—*(ना०)* गनिका । वेश्या ।

गणित—*(न०)* १. गिनती, मात्रा, संख्या इत्यादि के हिसाब का शास्त्र । २. हिसाब ।

गणेश—दे० गणेसजी ।

गणेसजी—*(न०)* ज्ञान और मंगल कार्यों के देवता । सर्वप्रथम पूजनीय देव । गणेश । गजानन ।

गत—*(ना०)*१. गति । २. मोक्ष । ३. विधि । गति । ४. दशा । हालत । ५. ढंग । ६. गति । चाल । ७. ईश्वरीय लीला । ८. वादन की क्रिया विशेष । वाद्य बजाने की कोई रीति । ९. तालभेद । १०. मजाक । ११. चालाकी । १२. मनुष्य, पशु आदि के बोलने (बोलियों) की नकल । *(वि०)* १. भूतकाल का । बीता हुआ । अतीत । व्यतीत । २. गया हुआ । ३. नष्ट । हत । ४. रहित । हीन । ५. मरा हुआ ।

गत-पंचमी—*(ना०)* १. पंचत्व । २. मोक्ष । ३. पंचम गति । श्रेष्ठ गति । ४. वीर गति । ५. वीर लोक । ६. स्वर्ग ।

गतराड़ो—*(न०)* हिजड़ा । **गतंड** ।

गतंड—दे० गतराड़ो ।

गतागत—*(वि०)* गया और आया हुआ । *(न०)* गमनागमन ।

गतागम—*(ना०)* १. समझ । २. विचार । ध्यान । ३. सूझ । ४. आना-जाना । आवागमन । *(वि०)* गया और आया । गया और आया हुआ ।

गताबोळ—*(न०)* १. वंशोच्छेदन । २. नाम शेष । नष्ट । *(वि०)*पानी में समाविष्ट । डूबा हुआ । २. नष्ट ।

गति—*(ना०)* १. चाल । गति । गमन । २. स्पदंन । हरकत । ३. गम्यस्थान । ४. प्रकार । ढंग । रीति । ५. दशा । हालत । अवस्था । ६. मरने के बाद की स्थिति । ७. मुक्ति । मोक्ष । ८. लीला । माया ।

गतू—*(न०)* किसी वस्तु पर से छोड़ा हुआ अपना अधिकार । २. बेचान । जैसे—मकान गतू कर दियो । *(अव्य०)* १. बिल्कुल भी । २. कुछ भी । ३. पूर्णतया । *(वि०)* १. मस्त २. पूर्ण । संपूर्ण ।

गथराड़ो—*(न०)* १. हिजड़ा । २. नपुंसक ।

गथियो—दे० गथराड़ो ।

गदफड़—*(न०)* एक पीली चोंचवाला मांसाहारी पक्षी । *(वि०)* १. मोटा । २. फूला हुआ ।

गदरो–(न०) गद्दा । गादी ।
गदा–(ना०) एक अस्त्र ।
गदियाणो–(न०) आधे तोले का एक तोल । गद्याणक ।
गदियो–(न०) एक पुराने सिक्के का नाम । गधैयो ।
गद्य–(न०) वह रचना जो पद्यबन्ध न हो । पद्य का उलटा । सादी लिखावट । २. लेखनशैली । ३. लेखशैली ।
गधामस्ती–(ना०) १. शरारत । ऊधम । २. धक्कमधक्का ।
गधेड़ी–(ना०) गधी ।
गधेड़ो–(न०) गदहा । गधो ।
गधो–दे० गधेड़ो । (ना०) गधी ।
गनायत–(न०) स्वगोत्री के अतिरिक्त वह सजातीय व्यक्ति जिसके घर बेटी लेने देने का सम्बन्ध हो सकता हो । रिश्तेदार । सम्बन्धी । गिनायत ।
गनीम–(न०) १. शत्रु । २. डाकू । लुटेरा ।
गनीमाण–(न०)१. शत्रुदल । २. डाकूदल ।
गनो–(न०) सम्बन्ध । रिश्ता । गिनो ।
गप–(ना०) १. उड़ती बात । अफवाह । २. झूठी बात । डींग ।
गपाटो–(न०) गप । डींग ।
गपी–(वि०) गप हांकने वाला या वाली । गप्पी ।
गपोड़–(वि०) गप हांकने वाला । गप्पी ।
गपोड़बाज–(वि०) गप हांकने वाला । गप्पी ।
गपोड़ो–(न०) गप्प ।
गप्पी–दे० गपी ।
गप्पीदास–(वि०) गप हांकने का आदी ।
गफलत–(ना०) १. असावधानी । २. भूल ।
गबकावणो–(क्रि०) धमकाना । डांटना ।
गबड़कावणो–(क्रि०)धमकाना । दुत्कारना । फटकारना । फटकारणो ।
गबरू–(वि०)१. मूर्ख । २. सीधा । भोला । ३. असावधान ।
गबीड़ो–(न०) १. हानि । घाटा । २. किसी दुर्घटना का समाचार । ३. चोट । ४. धोखा ।
गबोळो–(न०)१. विघ्न । रुकावट । बाधा । २. खयानत । ३. गबन । ४. गोटाला । गोटाळो ।
गभ–(न०) गर्भ ।
गम–(न०) १. सूझ । २. ज्ञान । ३. गति । ४. सहन शीलता । ५. विचारशक्ति । ६ जानकारी । ७. क्षोभ । दुख । गम । ८. सब्र । ९. प्रतिष्ठा । साख ।
गमण–(न०) १. गमन । प्रस्थान । २. संभोग । मैथुन । ३. पांव । ४. नाश ।
गमणो–(क्रि०) १. खो जाना । २. मरना । ३. नाश होना । ४. गमन करना । ५. बीतना । ६. बिताना । ७. मन लगना । ८. फबना । अच्छा लगना ।
गमत–(ना०) १. विनोद । गम्मत । २. आनन्द । मजा ।
गमती–(वि०) १. विनोदी । गम्मती । २. मजाक-पसन्द । हँसोड़ ।
गमर–(ना०) १. तुलना । बराबरी । २. घमंड । गुमर ।
गमलो–(न०) मिट्टी का एक पात्र जिसमें फूल-पत्ती के पौधे लगाये जाते हैं । गमला ।
गयोबीतो–(वि०) निकम्मा । गया-गुजरा ।
गमागम–(क्रि०वि०) १. चारों ओर । २. इधर-उधर । यहां-वहां । ३. जहां-तहां । ४. निरन्तर ।
गमाड़णो–दे० गमावणो ।
गमार–दे० गँवार ।
गमावणो–(क्रि०) १. खोना । २. नाश करना । ३. खो देना । ४. व्यतीत करना ।
गमांगमां–(क्रि०वि०) १. चारों ओर से । २. चारों ओर को । चारों तरफ ।

गमी–(ना०) १. शोक। २. दिलगीरी। ३. मृत्यु।

गमीजणो–(क्रि०) खो जाना।

गमे–(क्रि०वि०) १. ओर। तरफ। (अव्य) अथवा। वा। या।

गमे-गमे–(क्रि०वि०) १. चारों ओर से। २. चारों ओर। ३. इधर उधर। इधर-उधर को।

गय–(न०) १. गज। हाथी। २. ऊँट।

गयगमणी–(वि०) गजगामिनी।

गयण–(न०) आकाश। गगन। **अकास। आभो**।

गयणमिण–(न०) गगनमणि। सूर्य।

गयणंग–(न०) आकाश। **आभो**।

गयणाग–(न०) आकाश। **आभो**।

गयणांगण–(न०) आकाश। **आभो**।

गयदंतो–(न०) हाथी के समान बड़े दाँत वाला सूअर।

गयनाळ–दे० गजनाळ।

गयंद–(न०) गजेन्द्र। हाथी।

गयाजी–(न०) विहार में फल्गु नदी के तट पर स्थित एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थस्थान। यहाँ पितरों को पिंडदान करने का महात्म्य माना जाता है। गया।

गयो–(क्रि०भू०) 'जाणो' या 'जावणो' का भूतकाल रूप। १. चला गया। २. मर गया। ३. खो गया।

गयोड़ो–(भू०का०कृ०) १. गया हुआ। २. खोया हुआ।

गयो-वीतो–(वि०) बुद्धिहीन। वेअक्ल।

गरक–(वि०) १. डूबा हुआ। सना हुआ। गरक। २. लीन। तन्मय। ३. खूब।

गरकाव–(वि०) १. मग्न। २. अंतरस्थ। डूबा हुआ। ३. समाहित। ४. गायब। लुप्त। गीला। शराबोर।

गरगड़ी–दे० गड़गड़ी।

गरज–(ना०) १. स्वार्थ। २. प्रयोजन। ३. आवश्यकता। ४. इच्छा। ५. खुशामद। ६. मेघ गर्जन। **गाज**। ७. दहाड़।

गरजणो–(क्रि०) १. गरजना। २. दहाड़ना। गर्जन होना। ३. कड़क कर बोलना। तड़कना।

गरजाउ–(वि०) १. गरज वाला। जरूरत वाला। २. स्वार्थी।

गरट–दे० गरठ।

गरठ–(न०) १. सेना। २. समूह। झुंड। ३. पाताल। (वि०) १. गरिष्ट। भारी। २. अधिक। ३. कठिन। ४. अभेद्य।

गरढी–(वि०) वृद्धा। बुड्ढी। **डोकरी। डैणती**।

गरढो–(वि०) बूढ़ा। वृद्ध। बूढो। डोकरो। **डैण**।

गरण–(ना०) १. कराह। २. ग्रहण। ३. पकड़।

गरणाटो–(ना०) १. कराह। **गरण**। २. बक-बक। ३. सिर घूमना। चक्कर।

गरणावणो–(क्रि०) १. गरण करना। कराहना। २. चक्कर खाना। सिर घूमना। ३. भिनभिनाना।

गरणो–(न०) छन्ना। **गळणो। जळ छाणणो**।

गरथ–(न०) १. रुपया-पैसा। धनमाल। २. माल असबाब। ३. घर। ४. गृहस्थ। ५. गाँठ।

गरथार–(ना०) घर।

गरद–(ना०) १. गर्द। धूल। **धूड़**। २. नाश। ३. झुंड। (वि०) गर्द छाई हुई।

गरदन–(ना०) १. गला। ग्रीवा। २. बोतल या कुप्पे का ऊपर का सँकरा भाग।

गरदभ–(न०) गधा। **गधो**।

गरदी–(ना०) १. भीड़। जनसमूह। २. गर्द। धूल।

गरनाळ–(ना०) चौड़े मुँह की तोप।

गरव–(न०) गर्व। अभिमान।

गरव गहेलो–(वि०) गर्वोन्मत्त ।
गरवणो–(क्रि०) गर्वित होना । गर्व करना ।
गरवीजणो–(क्रि०) गर्वित होना । अभिमान में आना । अभिमान होना । अभिमान करना ।
गरवीलो–(वि०)१. अभिमानी । २. गर्वीला ।
गरभ–(न०) १. हमल । गर्भ । भ्रूण । २. गर्भाशय । ३. गूदा । ४. किसी वस्तु का मध्य भाग । (अव्य०) बीच में । भीतर में ।
गरभ-जगत–(न०) जगत का कारण । जगत-गर्भ । परब्रह्म ।
गरभणी–(वि०) गर्भिणी । गर्भवती । हामिला ।
गरभवती–दे० गर्भवती ।
गरभवास–दे० गर्भवास ।
गरभीजणो–(क्रि०) गर्भधारण करना ।
गरम–(वि०) १. उष्ण । तप्त । गरम । २. क्रुद्ध । उत्तेजित । ३. उग्र । तीव्र । ४. गरमी पैदा करने वाला ।
गरमागरम–(वि०) गरम-गरम ।
गरमास–(ना०) १. गरमी । उष्णता । २. गरम वातावरण ।
गरमी–(ना०) १. उष्णता । ताप । २. विचार-विमर्श में आने वाली तेजी । गरम वातावरण । ३. क्रोध । ४. उपदंश । ५. आतशक रोग ।
गरळ–(न०) विष । जहर ।
गरळस–(न०) १. सर्प । २. बिच्छू ।
गरळाणो–दे० गरळावणो ।
गरळावणो–(क्रि०) १. रोना । २. घिघियाना ।
गरवाई–(ना०)१. गंभीरता । २. अभिमान । ३. महिमा । ४. गरुआई ।
गरवीजणो–(क्रि०) गर्व करना । घमंड करणो ।
गरवो–(वि०) १. गौरव वाला । गरुआ । २. गंभीर । वीरजवान । ४. गर्ववाला । घमंडी ।
गरहण–(ना०) १. घृणा । २. निंदा । ३. उपालम्भ ।
गराळ–(वि०) विषभरा । विषाक्त । जहरीला (न०) विषतुल्य शत्रु । भयंकर शत्रु ।
गरास–दे० ग्रास ।
गरासियो–दे० ग्रासियो ।
गरीठ–(वि०) १. गरिष्ठ । भारी । २. पराक्रमी । ३. जबरदस्त । ४. अजेय वीर । (न०) १. भीषण युद्ध । २. हाथी ।
गरीब–(वि०) १. निर्धन । २. अनाथ । ३. दीन हीन । बापुरा । ४. सीधा । सरल । (न०) भिखारी । मँगता । २. गलित कुष्ट वाला रोगी । कोढ़ी ।
गरीब-गुरबो–(न०) कंगाल । भिखारी ।
गरीबणी–(वि०) निर्धना । २. सीधी । सरल । (ना०) भिखारन । मँगती ।
गरीब नवाज–(वि०) दयालु ।
गरीब परवर–(वि०) गरीब का पालन करने वाला । दीन प्रतिपालक ।
गरीबाई–(ना०) गरीबी । कंगाली ।
गरीबी–दे० गरीबाई ।
गरुड़–(न०) गरुड़ पक्षी । विष्णु का वाहन ।
गरुड़गामी–(न०) विष्णु भगवान ।
गरुड़ध्वज–(न०) विष्णु ।
गरुठ–(वि०) १. गरिष्ठ । भारी । २. जोरदार । जबरदस्त । ३. भयंकर । ४. बड़ा । ५. गर्व वाला ।
गरुर–(न०) गर्व । अभिमान ।
गरो–(न०) १. बल । शक्ति । २. पकड़ । ग्रहण । पकड़ने की शक्ति । ३. समूह । ४. ढेर । राशि । ५. झड़बेरी की पतली शाखाओं का ढेर ।
गरोळी–(ना०) छिपकली ।
गर्दभ–(न०) गधा ।
गर्भ–दे० गरभ ।

गर्भवती–*(वि०)* सगर्भा । गर्भिणी ।

गर्भवास–*(न०)* १. उदर में गर्भ का वास । २. उदरस्थ गर्भ ।

गल–*(ना०)* १. वात । २. खबर । समाचार । ३. संदेश । ४. गप्प । डींग । ५. पुकार ।

गळ–*(ना०)* १. गला । कंठ । *(क्रि०वि०)* १. संलग्न । २. पास । निकट । ३. चारों ओर ।

गळकासिला–*(ना०)* गंडकी नदी की शिला । सालिग्राम ।

गळगळो–*(वि०)* १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के कारण आवेग से पूर्ण । पुलकित । गदगद । २. दुखकातर । ३. अश्रुपूर्ण ।

गळगै–*(ना०)* १. मन की गाँठ । मन की वात । २. गलग्रंथि । गले की गाँठ । *(अव्य०)* मन में

गळचिया खाणो–*(मुहा०)* मुँह, नाक, कान आदि में पानी घुस जाने पर डूबने की स्थिति में होना । २. यथार्थ उत्तर नहीं दे सकने की स्थिति में या घबराहट से ऊटपटांग उत्तर देना ।

गळचियो–*(न०)* गले से ऊपर मुँह, कान, नाक में आ जाये उतने पानी में डूबने की क्रिया ।

गळडवो–*(न०)* कंधे पर रहने वाला चमड़े का लंबा पट्टा जिसमें तलवार लटकाई रहती है ।

गळणियो–*(न०)* दे० गळणी ।

गळणी–*(ना०)* १. तरल पदार्थ छानने का उपकरण, चलनी । चाळणी । २. गले हुए अफीम को छानने की (वकरी के स्तन जैसी) कपड़े की एक थैली ।

गळणो–*(क्रि०)* १. गलना । पिघलना । पिघळणो । २. दुवला होना । क्षीण होना । ३. वीतना । खतम होना । ४. रस वनना । ५. छनना । *(न०)* पानी आदि तरल पदार्थों को छानने का कपड़ा । छन्ना । जलछाणणो । जळछाणणियो ।

गलत–*(वि०)* १. अशुद्ध । जो सही न हो । २. असत्य । झूठा । खोटो ।

गळत कोढ–*(न०)* गलितकुष्ट । कोढ ।

गळत कोढी–*(न०)* गलितकुष्टी । कोढियो ।

गळतंग–*(न०)* ऊंट के गले में माला की तरह बंधी हुई एक मोटी रस्सी जिसको ऊट पर कसे हुए पलान के अगले भाग में एक रस्सी के टुकड़े से इसलिए वाँध दिया जाता है कि जिससे पलान ऊंट की पीठ पर से पीछे की ओर न खिसक सके ।

गळती–*(वि०)* समाप्त होती हुई । बीतती हुई (रात) । *(ना०)* भूल । गलती । खोट ।

गळथणो–*(न०)* १. खूंटे से बाँधने के लिए पशु के गले में डाली जाने वाली रस्सी । २. बकरी के गले में लटकने वाला स्तन । *(क्रि०)* गले में रस्सी डालना । गले में डोरी बाँधना ।

गळपटियो–*(ना०)* स्त्रियों के गले में पहिनने का एक आभूषण ।

गलफो–*(न०)* १. ऊंट की फुलाई हुई जीभ । गल्लो । २. गाल का अंदर का भाग । गले के अंदर का चमड़ा ।

गलबल–*(अनु०)* शोर । कोलाहल ।

गलवो–दे० गलबल ।

गळवाणी–*(ना०)* घी में सिके हुए गेहूँ के आटे को गुड़ के पानी में औटा कर बनाई जाने वाली पतली राव । मीठी राव । गुळराव ।

गळसूंडो–*(न०)* १. गले और तालू के वीच में उभरा हुआ भाग । गलशुंडी । गले का एक रोग ।

गळहथ–*(ना०)* १. सौंगध । शपथ । २. वंधन ।

गळाई-(क्रिoविo) १. ज्यों । जिस प्रकार । २. जिस ढंग से । जैसे । ३. प्रकार । तरह समान । (नाo) १. गलाने का काम । १. गलाने की मजदूरी । ३. गालने की मजदूरी । ४. गालने का काम ।

गळाडोव-(विo) गला डूबे इतना (पानी) ।

गळाणो-(क्रिo) १. गलवाना । गलाना । पिघलाना । २. नष्ट करना ।

गळामणो-(नo) १. पशुओं के गले में बाँधने की डोरी । २. लंबी माला की तरह गले में बंधी हुई कपड़े की पट्टी जिसमें चोट लगाने या फोड़ा आदि होने से हाथ रखा रहता है ।

गलार-(नाo) १. मौज । मज़ा । २. गायन । ३. भेड़ बकरी आदि पशु तथा गिद्ध आदि पक्षियों का तृप्ति या मौज में किया जाने वाला शब्द । ४. पशु-पक्षियों की मस्ती या मौज ।

गळावणो-(क्रिo) गलाना । (नo) देo गळामणो ।

गळित्रागो-(नo)१. ब्राह्मण । २. त्रिवर्ण । द्विज । ३. जनेऊ ।

गळियार-(नo) १. सँकड़ी गली । (विo) १. गली गली में चक्कर लगाते रहने वाला । आवारा । २. रसिक ।

गळियारो-(नo) १. सँकड़ी छोटी और बंद गली । २. संकड़ी गली । ३. संकड़ा मार्ग ।

गळियो गुलसरो-(नo) अधिक मादकतार्थ गला कर तैयार किया हुआ अफीम द्राव ।

गळी-(नाo) १. गली । कूचा । सेरी । २. छेद । ३. उपाय ।

गळी-कूंचळी-देo गळी-कूंची ।

गळी-कूंची-(नाo) १. रहस्य । भेद । २. प्रत्येक गली । गली-गली । ३. उपाय ।

गलीचो-(नo) गालीचा । कालीन ।

गळूंडो-(नo) देo गळमूंडो ।

गळेटो-(नo) १. तीवन, घाट आदि रंधेज राँधते समय वेसन, दलिया आदि में पड़ने वाली गांठ । २. गुलांट । कुलांच ।

गलेफ-(नाo) खाँड की परत । खाँड की चासनी की परत ।

गलेफणो-(क्रिo) मिठाई पर खांड की चासनी की परत चढ़ाना ।

गळै-(क्रिoविo) पास । निकट । कनै । (अव्यo) गले में ।

गळै-उतरणो-(मुहाo) दिल में बैठना । उचित जान पड़ना । जँचना । २. समझ में आना ।

गळै-टूंपो आवणो-(मुहाo) संकट में पड़ना ।

गळै-पड़णो-(मुहाo) १. दोष मँढ़ना । २. जवाबदारी डालना । ३. खुशामद की जबरदस्ती करना ।

गळै हाथदेणो-(मुहाo) सौंगध खाना ।

गळो-(नo) १. गला । गर्दन । कंठ । २. कंठ । स्वर । ३. बर्तन आदि का ऊपरी पतला भाग । ३. अंगरखी, कुरते आदि का वह भाग जो गले के आजू-बाजू रहता है ।

गळो-पड़णो-(मुहाo) बालक के गले में गरमी से होने वाला एक रोग ।

गल्ल-(नाo) १. कीर्ति । यश । २. शुभ कामों की कीर्ति गाथा । ३. बात । ४. उड़ती बात । ५. डींग । गप्प ।

गल्लड़ी-(नाo) १. शुभ कामों की यश गाथा । २. बात । ३. उड़ती बात ।

गल्लो-(नo) १. ऊंट की फुलाई हुई जीभ । २. बिकरी का रुपया-पैसा रखने की पेटी । ३. अन्न राशि ।

गवड़-(नo) गौड़ (राजपूत या ब्राह्मण) ।

गवड़ावणो-(क्रिo) गीत गवाना । गाने में साथ देना । गवाना ।

गवीड़जणो-(क्रि०) १. गाया जाना। २. बदनाम होना।
गवर-(ना०) १. गौरी। पार्वती। २. गणगोर के उत्सव पर प्रदर्शित की जाने वाली गौरी की काष्ठ-प्रतिमा।
गवरजा-(ना०) गौरी। पार्वती।
गवरल-(ना०) १. गौरी। पार्वती। २. गणगोर उत्सव पर गाया जाने वाला एक लोकगीत।
गवरांदे-(ना०) गौरीदेवी। गौरी। पार्वती।
गवरी-(ना०) गौरी। पार्वती।
गवरीपुत्र-(न०) गणेशजी।
गवळ-(न०) १. गौवंश। गाय बैल आदि। २. ग्वाला।
गवा-(ना०) गवाह। साक्षी।
गवाड़-(ना०) १. मोहल्ला। गली। २. बाड़ा।
गवाड़णो-दे० गवड़ावणो।
गवाड़ी-(ना०) १. छोटी गली। गृहावली। २. एक कुटुम्ब के पाँच-सात घरों की बंद गली। २. घर। वंश। बाड़ी।
गवार-(न०) १. ग्वार का क्षुप। २. ग्वार का बीज। ग्वार।
गवारणी-(ना०) गवारिया की स्त्री।
गवारफळी-(ना०) ग्वारफली।
गवारियो-(न०) प्रायः कंघा बनाने और बेचने वाली एक खानाबदोश जाति का मनुष्य।
गवाळ-(न०) ग्वाल।
गवाळण-(ना०) ग्वालिनी।
गवाळणी-दे० गवाळण।
गवाळियो-(न०) ग्वाला।
गवावणो-दे० गवड़ावणो।
गवाह-दे० गवा।
गवाही-(ना०) साक्षी। गवाही।
गवीजणो-(क्रि०) १. कुख्यात होना। बदनाम होना। २. चर्चा का पात्र होना। ३. गाया जाना।
गवेसो-(न०) १. निंदा-चर्चा। २. चर्चा। व्यर्थ की बातें। गप्पें। ३. बकवाद। ४. बातचीत। ५. खोज-पता।
गवैयो-(न०) गाने वाला। गवैया। गायक।
गस-(ना०) १. चक्कर। २. बेहोशी।
गह-(न०) १. गर्व। घमंड। २. आनंद। मौज। ३. मस्ती। ४. प्रतिष्ठा। मान। ५. घर। गृह। ६. घर का कोई भाग। ७. घर का ऊपरी भाग। ऊपर की मंजिल। (वि०) १. गंभीर। ऊंड़ा। २. मस्त। ३. जबरदस्त वीर।
गहक-(न०) १. नखरा। २. गर्व। घमंड। ३. कृत्रिमता।
गहकणो-(क्रि०) १. प्रसन्न होना। खुश होना। २. खुश होकर गर्जना। ३. नखरे से बोलना। ४. नखरे करना। ५. गर्व से बोलना। ६. पक्षियों का कलरव करना। ७. ढोल या नगाड़े का बजना।
गहको-(न०) १. बोलने का बनावटी और व्यंग्य पूर्ण ढंग। २. मिजाज। घमंड। ३. नखरा। ४. कृत्रिमता। ५. ढंग। तरीका।
गहगट-(न०) १. आनंद। हर्ष। खुशी। २. हर्षातिरेक। ३. उत्सव। ४. खूबी। विशेषता। ५. अधिकता। ६. हर्ष की अधिकता। बादलों का छा जाना। घटा। ८. युद्ध। घमासान।
गहगहणो-(क्रि०) १. उत्साहित होना। २. प्रसन्न होना ३. उत्सव होना। ४. अच्छा लगना। ५ महकना। ६. विशेषता युक्त होना। ७. फलना-फूलना।
गहगाट-(वि०) प्रकाशमान। रौबवाला।
गहड़-(वि०) १. वीर। २. जबरदस्त। ३. गंभीर। (न०) गर्व। घमंड।
गहडंवर-(न०) १. घटा। २. धूप, अत्तर आदि की सुगंधि से भरपूर बना हुआ

वातावरण। (वि०) १. बादलों से छाया हुआ। २. वस्त्राभूषणों से अलंकृत। ३. घना। ४. खूब।

गहण-(न०) १. ग्रहण (सूर्य, चंद्र का)। २. युद्ध। ३. भीड़। (वि०) गहन। गंभीर।

गहणो-(क्रि०) १. पकड़ना। २. धारण करना। लेना। (न०) गहना। आभूषण।

गहणो-गाँठो-(न०)गहना व अन्य सम्पत्ति। धन-माल।

गहतंग-(न०) नशे में मस्त।

गहपूर-(वि०) पूर्ण गर्वित। (न०) सिंह।

गहभरियो-(वि०) १. गर्वित। घमंडी। २. गंभीर। ३. मस्त। मौज।

गहमह-(न०) १. दीपकों की जगमगाहट। २. धूमधाम। उत्सव। ३. भीड़।

गहमहणो-(क्रि०) १. दीपकों का चमकना। २. शोभा देना। ३. धूमधाम होना। ४. जोश में आना। ५. गर्व करना। ६. भीड़ करना। ७. भीड़ होना।

गहमहर-(वि०) १. गंभीर। २. वीर। योद्धा। (न०) उत्सव। धामधूम।

गहमातो-(वि०) पूर्ण गर्वित। गर्वोन्मत।

गहर-(न०) १. गर्व। घमंड। २. शोभा। (वि०) १. घना। गहरा। २. अथाह। ३. गंभीर।

गहराई-(ना०) १. गहरापन। ऊंड़ाई। २. गंभीरता।

गहरो-(वि०) १. घनिष्ट। २. घना। अधिक। ३. गंभीर। ऊंड़ा।

गहळ-(ना०) १. नशा। २. चक्कर। सिर घूमना। ३. भोजन का नशा या सुस्ती। ३. हलकी नींद।

गहलाई-(ना०) पागलपन।

गहलो-(वि०) पागल। मत्त। (न०) १. अणहिलपुर-पाटण के शासक कर्ण की मूर्खता का एक विरुद। २. कर्ण-गहलो।

गहवइ-(न०) गृहपति।

गहवर-(न०) १. सघनता। २. अभिमान। (वि०) १. गह्वर। दुर्गम। २. घना। ३. अभिमानी।

गहवरणो-(क्रि०) १. अभिमान करना। २. वृक्ष का पुष्पों, पत्तों आदि से छा जाना। ३. मस्ती से झूमना।

गहवरियो-(वि०) १. गंभीर। २. निडर। ३. गर्वित। ४. मस्त।

गहवंत-(वि०) १. घमंडी। अभिमानी। २. गंभीर।

गहीजणो-(क्रि०) १. घिस जाना। २. हानि उठाना। ३. दूसरे के बदले में हानि उठाना।

गहीर-(वि०) गंभीर। गहरा।

गहुंआळ-(ना०) गेहूं के खेतों का समूह। गेहूं के खेतों की पँक्ति।

गहूं-(न०) गेहूं।

गंग-(ना०) गंगा। जान्हवी। भागीरथी। (न०) १, जोधपुर नगर के स्थापक राव जोधा के वंशज राव गांगा का काव्य नाम। २. चहुवाण का पौत्र और चाह का पुत्र राणा घणसूर (छापर-द्रोणपुर के माहिल का वडेरा) का विरुद। ३. ३. अकबर कालीन एक कवि।

गंग-रो-जड़ाग-(न०) भीष्म पितामह।

गंगा-(ना०) भारत के उत्तर भाग की एक प्रसिद्ध और अति पवित्र नदी, जो हिमालय में गंगोत्री से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। भागीरथी।

गंगाजळ-(न०) गंगा का जल।

गंगाजळी-(ना०) १. टोंटी वाला छोटा जलपात्र। २. गंगा की यात्रा करके गंगाजल भर कर लाने का पात्र। ३. पीतल और तांबे की चद्दर जोड़ कर बनाया हुआ छोटा कलश।

गंगा न्हावणो–*(मुहा०)* १. पाप, झंझट और उत्तरदायित्व से बरी होना। २. गंगा में स्नान करना।

गंगा-परसादी–*(ना०)* गगा-यात्रा की प्रसादी और गंगाजल बांटने के निमित्त किया जाने वाला भोजन-समारोह।

गंगा-सागर–*(न०)* वह तीर्थ स्थान जहाँ गंगा सागर में मिलती है। २. टोंटी वाला लोटा।

गंगा-स्वरूप–*(वि०)* १. गंगा के समान निर्मल स्वभाव वाला। २. शांत प्रकृति के धर्माचारी व्यक्तियों के नाम के पहिले आदरार्थ प्रयुक्त होने वाला एक विशेषण। ३. विधवा स्त्रियों के नाम के पूर्व लिखा जाने वाला आदर सूचक 'गं० स्व०' विशेषण का पूरा नाम।

गंगेरण–*(ना०)* १. एक वृक्ष। २. इस वृक्ष की लकड़ी।

गंगेव–*(न०)* गांगेय। भीष्म पितामह।

गंगोज–*(न०)* दे० गंगा-परसादी।

गंगोतरी–*(ना०)* वह तीर्थ स्थान जहाँ से गंगा निकलती है। गंगोत्री। रुद्र हिमालय।

गंज–*(न०)*१. ढेर। राशि। २. एक के ऊपर एक रखी हुई एकसी चीजों का ढेर। ३. सिर की चमड़ी का एक रोग। खल्वाट। ४. एक ही वस्तु के क्रय-विक्रय का बाजार। मंडी।

गंजणहार–*(वि०)* १. शत्रुओं का नाश करने वाला। २. वीर। ३. जीतने वाला।

गंजणो–*(वि०)* शत्रुओं का नाश करने वाला। *(क्रि०)* १. नाश करना। गंजना २. पराजित करना।

गंजीजणो–*(क्रि०)* १. नाश होना। मरना। २. हारना।

गंजीफो–*(न०)* १. ताश की गड्डी। ताश का खेल।

गंजेड़ी–*(वि०)* गांजा पीने वाला। नशाबाज।

गंजो–*(न०)* गंज रोग वाला।

गंठ–*(ना०)* १. गाँठ। २. उलझन। ३. माया-रूपी गाँठ। अविद्या। अज्ञान।

गंठियो–*(न०)* १. संधिवात का एक रोग। गठिया रोग। २. गँठकटा। गिरहकटा। ३. ठग। धूर्त्त। ४. एक घास।

गंठीजणो–*(क्रि०)* बँध जाना।

गंठो–*(न०)* १. ऊंट पर दोनों ओर लदी हुई जलाने की लकड़ियों (ईंधन) की लाद। २. कस कर बांधी हुई गठरी। ३. पानी में ऊपर से सीधी मारी जाने वाली छलाँग।

गंडक–*(न०)* १. कुत्ता। कूतरो। २. ग्राम-शूकर।

गंडकड़ी–*(ना०)* १. कुत्ती। कुतिया। कूतरी। २. ग्राम-शूकरी।

गंडकड़ो–दे० गंडक।

गंड़की–*(ना०)* १. एक नदी का नाम। २. कुतिया। कुत्ती।

गंडसूर–*(न०)* ग्राम शूकर।

गंडसूरो–दे० गंडसूर।

गंडूरो–दे० गंडसूर।

गंडो–*(न०)* १. अंकुश। २. एक शस्त्र। ३. ताबीज। गंडा।

गंदगी–*(ना०)* १. मैलापन। २. अस्वच्छता। अशुद्धता। ३. मैला। मल।

गंदळ–*(ना०)* मूली, गाजर आदि के पत्तों के बीच में उत्पन्न होने वाला एक कोमल डंठल वाला पत्ता।

गंदवाड़–*(ना०)* १. गदंगी। २. अस्वच्छता। ३. गंदीवाड़ा।

गंदियो–*(न०)* १. एक तीक्ष्ण बदबू वाला घास। २. एक कीड़ा।

गंदीवाड़ो–*(न०)* १. दुर्गंध वाले कचरे का ढेर। २. वह स्थान जहाँ ऐसा गंदा कचरा पड़ा हो। ३. गंदगी।

गंदो–*(न०)* जट की दरी । *(वि०)* मैला । गंदा । अस्वच्छ ।

गंध–*(ना०)* १. सुगंध । २. दुर्गंध । ३. लेशमात्र स्पर्श । ४. लेशमात्र निकटता ।

गंधक–*(न०)* गंधक ।

गंधजाण–*(न०)* नासिका ।

गंधमद–दे० मदगंध ।

गंधरप–*(न०)* १. गंधर्व । २. गंधक ।

गंधर्व–*(न०)* १. गाने बजाने वाले देवताओं का एक वर्ग । गाने बजाने वाली एक जाति ।

गंधर्वनगरी–*(ना०)* १. आकाश मंडल में दिखने वाला एक प्रतिबिम्ब । २. काल्पनिक नगर । मिथ्या ज्ञान ।

गंध-वह–*(न०)* १. नाक । नासिका । २. २. पवन । वायु । ३. चंदन । *(वि०)* सुगंधित ।

गंध-वहण–दे० गंधवह ।

गंधवाह–दे० गंधवह ।

गंधसार–*(न०)* चंदन ।

गंधहर–*(न०)* नाक ।

गंधावणो–*(क्रि०)* गंधना । बदबू मारना । बू मारना ।

गंधी–दे० गाँधी ।

गंधीलो–*(वि०)* १. मैला । बदबूदार । गंधवाला ।

गंध्रव–*(न०)* गंधर्व ।

गंभीर–*(वि०)* १. उदार । २. प्रौढ़ । ३. गहरा । ४. विकट । ५. शांत । ६. धीर । *(न०)* एक विपला व्रण ।

गंभीरी–*(ना०)* मेवाड़ की एक नदी ।

गँवार–*(वि०)* १. ग्रामीण । देहाती । २. मूर्ख । नासमझ । २. असभ्य ।

गा–*(ना०)* १. गाय । २. पृथ्वी । *(वि०)* गरीब । बिचारा ।

गाएठो–*(न०)* पराल में से अनाज को अलग करने का काम ।

गाऊ–*(न०)* दूरी का एक नाप जो दो मील का होता है । गव्यूत । कोस ।

गागड़दो–*(न०)* राब के जैसी गाढ़ी छनी हुई भांग । २. अधिक गाढ़ा द्रव ।

गाघ–*(न०)* १. गहरा घाव । २. सड़ा हुआ घाव । *(वि०)* १. चालाक । होशियार । घाघ । २. चतुर । दक्ष ।

गाघरारगो–*(क्रि०)* विवाहित पति को छोड़कर या विधवा होने पर स्त्री का दूसरे पुरुष के घर में पत्नी रूप से रहना ।

गाज–*(न०)* १. बादल का गर्जन । २. सिंह की दहाड़ । ३. तोप के छूटने का शब्द । ४. बिजली । वज्र । ५. एक वस्त्र । ६. बटन का काज ।

गाजणो–*(क्रि०)* १. बादलों का गर्जना । २. सिंह का दहाड़ना । *(वि०)* गाजने वाला ।

गाजन माता–*(ना०)* बनजारों की कुलदेवी ।

गाजर–*(ना०)* १. मूली के जैसा एक कंद । गाजर । २. एक प्रकार की अतिशबाजी ।

गाज-बीज–*(न०)* बादलों का गर्जन और बिजली की चमक ।

गाठणो–*(क्रि०)* घिसना । घिसजाना ।

गाठीजणो–*(क्रि०)* घिसजाना ।

गाडणो–*(क्रि०)* १. गाड़ना । दफनाना । २. थंभे आदि के कुछ भाग को गाड़ कर खड़ा करना ।

गाडर–*(ना०)* भेड़ ।

गाडियोड़ो–*(वि०)* १. गाड़ा हुआ ।

गाडी–*(ना०)* १. सामान या मनुष्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने वाला यान । रेलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, बैलगाड़ी आदि ।

गाड़ीखड़–*(वि०)* गाड़ी चलाने वाला । गाड़ीवान । गाड़ीवाळो । सागड़ी ।

गाडीवान–दे० गाड़ीखड़ ।

गाडेती–(वि०) गाड़ीवान । **गाड़ीवाळो** ।

गाडो–(न०) १. छकड़ा । २. बैलगाड़ी । ३. घास से भरी हुई बैलगाड़ी ।

गाडो धकावणो–(मुहा०) १. जैसे तैसे गुजारा करना । २. अपना व्यवहार विवेक से चलाना ।

गाडो चलावणो–दे० गाडो धकावणो ।

गाडोलियो–(न०) १. बैलगाड़ी पर घर-सामान रख कर एक गांव से दूसरे गांव धंधे के निमित्त फिरती रहने वाली खाना-बदोश लुहार जाति का व्यक्ति । २. चलना सीखने की बच्चों की एक प्रकार की छोटी गाड़ी ।

गाडोलो–(ना०) १. दे० गाडोलियो । २. हाथ से चलाया जाने वाला ठेला ।

गाढ–(न०) १. शक्ति । २. धैर्य ३. गर्व । **घमंड** । ४. आग्रह । ५. दृढ़ता । ६. निरोगता । ६. सम्मान । **मान-सनमान** । (वि०) १. गहरा २. पक्का । ३. घना । ३. दृढ़ । ५. अधिक ।

गाढम–(वि०) १. गर्वीला । २. गँभीर । ३. वीर । (न०) १. वीरता । २. बल । ३. गंभीरता । ४. प्रतिष्ठा ।

गाढमल–(न०) १. गर्वीला वीर । २. वीर पुरुष । (वि०) स्वाभिमानी । २. अभि-मानी ।

गाढ-रो-कोट–(न०) शक्ति का भंडार । (वि०) १. अजेय शक्तिशाली । जबरदस्त ताकतवर । २. स्वाभिमानी ।

गाढवान–दे० गाढवाळ ।

गाढवाळ–(वि०) १. शक्तिमान । २. धीरज वान । ३. दृढ़ ।

गाढवाळो–(वि०) १. बलवान । २. धैर्य-वान । ३. गंभीर । ४. सहनशील ।

गाढा-मारू–(न०) १. गर्वीला पुरुष । स्वाभिमानी व्यक्ति । २. रसिक-पुरुष । ३. जमाई । दामाद । ४. दूल्हा । ५. जमाई । विवाह के लोकगीतों का । ६. एक नायक । ७. एक लोक गीत ।

गाढो–(वि०) १. अच्छा । २. खूब । अधिक । बहुत । ३. जो अधिक पतला न हो । काठो । ४. घनिष्ट । घना । ५. धैर्यवान । धीरजवाळो । ६. दृढ़ । ७. गर्वीला ।

गाणो–(न०) गाना । गायन । गीत । (क्रि०) गाना । गीत गाना । लय के साथ अलापना ।

गात–(न०) शरीर । देह ।

गातड़ी–(ना०) दे० गाती ।

गातर–(न०) १. गात्र । अंग । २. शरीर का कोई भाग । ३. दे० गातरो ।

गातर ढीला पड़णो–(मुहा०) शर्म या डर के मारे शिथिल पड़ जाना ।

गातरो–(न०) १. अनेक आड़े डंडों वाली निसेनी का एक डंडा । २. किवाड़ में लगने वाली आड़ी लकड़ी का एक टुकड़ा ।

गाती–(ना०)१. शरीर पर कपड़ा लपेट कर बाँधने का एक ढँग । २. छाती और पीठ पर लपेट कर बाँधा जाने वाला कपड़ा ।

गातो–दे० गातरों ।

गात्र–(न०) १. शरीर । देह । २. शरीर का कोई भाग । अंग । **गातर** ।

गाथ–(ना०) १. धन । २. घर । ३. गाथा । कथा । वृत्तान्त । ४. कीर्ति । यश ।

गाथा–(ना०) १. कथा । वृत्तान्त । २. कीर्ति । यश । ३. छंदबद्ध वार्ता । ४. वर्णन । बयान । चित्रण । ५. एक छंद ।

गाद–(ना०) १. तरल पदार्थ के नीचे जम जाने वाली गाढ़ी चीज । तलछट । कीट । कीचड़ । २. पशुओं के चूतड़ के ऊपर का भाग । पुट्ठा । ३. गंध । ४. दुर्गंध । ५. मैला । विष्ठा । मल ।

गादड़ो–(न०) गीदड़ ।

गादरणो–(क्रि०) १. अंकुरित होना । २. प्रफुल्लित होना । खिलना । प्रसन्न होना ।

गादह–(न०) गदहा । **गधो** ।

गादहो–दे० गादह ।

गादी–(ना०) १. राज्य सिंहासन । २. राजा, महंत, साधु आदि के बैठने का आसन तथा पद । ३. किसी व्यवसायी के बैठने का स्थान । पेढ़ी । दुकान । ४. गद्दी । आसन ।

गादीधर–(न०) १. महंत । २. राजा । ३. उत्तराधिकारी ।

गादी नशीन–(वि०) १. गद्दी नशीन । गद्दी पर बैठा हुआ । सिंहासनारूढ़ । २. पदारूढ़ ।

गादेपत–दे० गावोतरो ।

गादोतरो–दे० गावोतरो ।

गाधोतरै-गाळ–(अव्य०) सख्त से सख्त दी जाने वाली शपथ या गाली । जैसे–मारा रुपिया हमार-रा-हमार नहीं देवैला तो थनैं गादोतरैं-गाळ है ।

गाधोतरो–(न०) १. पुनः नहीं लौट आने के लिये, गौवध के पाप लगने की प्रतिज्ञा करके किसी गाँव से किया हुआ सामूहिक निष्कासन । गौववोत्तर । २. ऐसी दुर्घटना के समय छोड़े हुए स्थान पर खड़ा किया जाने वाला गौ मूर्ति के साथ अंकित शिलालेख । ३. इसी प्रकार किया जाने वाला निष्कासन जिसमें वापिस नहीं लौट आने के लिए माता, पुत्री, बहिन और पत्नी के साथ गदहे से संभोग कराने की शपथ ली हुई हो । ४. गदहे से संभोग कराती हुई स्त्री की मूर्त्ति के साथ अंकित उक्त आशय का शिलालेख । गर्दभोतर ।

गानगर–(न०) गायक ।

गाफल–(वि०) गाफिल । वेसुध ।

गावड़–(ना०) गरदन । ग्रीवा ।

गाभ–(न०) १. हमल । भ्रूण । गर्भ । प्रायः इस शब्द का अर्थ गाय, भैंस आदि मादा पशुओं के गर्भ से ही लिया जाता है । २. किसी वस्तु का मध्य भाग । ४. किसी वस्तु का भीतरी भाग ।

गाभणी–(ना०) गर्भवती । (प्रायः गाय, भैंस आदि के लिये) ।

गाभलो–(न०) चूड़ा चीरने के वाद रहा हुआ हाथी-दांत का वह वीच का भाग जो चूड़ी चीरने के योग्य नहीं रहता । (वि०) १. भोला । सीधा । २. मूर्ख । गोमू ।

गाभो–(न०) १. वस्त्र । कपड़ा । २. रद्दी कपड़ा । ३. कड़ा, टड्डा आदि पोले आभूषणों के अंदर की तांबे की पतली छड़ (सरिया) ।

गाम–(न०) १. ग्राम । गाँव । २. निवास स्थान ।

गाम-गोठ–(न०) १. प्रवास । यात्रा । २. गाँव -गोष्ठी । ३. ठाम-ठिकाना । पता-ठिकाना ।

गामठी–(वि०) १. गाँव से संबंधित । २. गाँव संबंधी । ३. गाँव का रहने वाला । गँवार । ४. विदेशों में बनी हुई के मुकाबिले देश में बनी हुई (वस्तु) । देश में गृह उद्योग द्वारा निर्मित ।

गामठी-चाँदी–(ना०) १. जेवर आदि मिलावटी चाँदी को घरू शोधन-प्रक्रिया से तैयार की गई शुद्ध चाँदी । २. टँकसाल में शुद्ध नहीं की हुई अथवा टँकसाल में टच नहीं निकलवाई हुई चाँदी ।

गामड़ियो–(न०) छोटा गाँव । (वि०) गाँव का । गाँव का रहने वाला ।

गामतरो–(न०) १. अपने गाँव से की जाने वाली दूसरे गाँव की यात्रा । २. एक गाँव से दूसरे गाँव को जाने की क्रिया । ग्रामान्तर होना । ग्रामान्तरण ।

गामधणी–(न०)गांव का स्वामी । जागीरदार ।

गामधर–(न०) गाँव का स्वामी ।

गाम भांभी–(न०) सरकारी या जागीरी के काम के लिये आसामियों को बुलाने के

लिये नियुक्त किया गया भांभी जाति का व्यक्ति ।

गाम-सारणी–(ना०) सारे गाँव को दिया जाने वाला भोजन । किसी एक व्यक्ति की ओर से समस्त गाँव के लिये किया जाने वाला भोजन समारोह । वृहत् गाँव भोज ।

गामसिंघ–(न०) कुत्ता । ग्रामसिंह ।

गामाऊ–(वि०) गांव संबंधी । गाँव का ।

गामेती–(वि०) १. गाँव का निवासी । गँवार । ग्रामीण । २. गाँव का अगुआ ।

गामोगाम–(न०) गाँव-गाँव । प्रत्येक गाँव । प्रति गाँव ।

गाय–(ना०) धेनु । गाय । गौ ।

गायक–(न०) गवैया ।

गायकवाड़–(न०) वडोदरा राज्य के शासक की जाति या विरुद ।

गायटो–(न०) खलिहान में भूसे से अनाज को जुदा करने की क्रिया ।

गायड़मल–दे० गाहड़मल ।

गायड़-रो-गाडो–दे० गाहड़-रो-गाडो ।

गायणी–(ना०) १. गाने वाली । गायिनी । पेशेवर गायिका । २. वेश्या ।

गायत्री–(ना०) १. एक अत्यन्त पवित्र वैदिक मंत्र । गायत्री । २.एक वैदिक छंद ।

गायवी–(न०) गायक ।

गार–(ना०) लीपने के लिये बनाया हुआ गोबर और मिट्टी का गारा । २. कीचड़ ।

गारड़ी–(न०) सँपेरा ।

गारत–(वि०) नष्ट वरबाद ।

गारवो–(न०) १. गर्व । घमंड ।

गारो–(न०) १. कीचड़ । कादो । २. चुनाई के लिये गाली हुई मिट्टी । गारा । आलेड़ो ।

गाल–(न०) कपोल । गाल ।

गाळ–(ना०) १. गाली । अपशब्द । २. कलंक । लांछन । ३. विवाह में स्त्रियों द्वारा संबंधियों को संबोधन करके गाये जाने वाले परिहास गीत । (न०) १. मालपुआ, जलेबी आदि बनाने के लिये बनाया जाने वाला आटे का घोल । २. मार्ग । ३. पहाड़ का तंग मार्ग । ४. दो पहाड़ों के बीच का सँकड़ा मार्ग । ५. पर्वत की घाटी । ६. संहार । नाश ।

गाळणो–(क्रि०) १. पिघलाना । गलाना । २. निचोड़ना । ३. पानी आदि किसी तरल पदार्थ को छानना । ४. मजबूर करना । मनाना । ५. प्रभाव डालना । ६. नष्ट करना ।

गाळमो–(न०) गला हुआ अफीम । कसूंबो । (वि०) गला हुआ । पिघला हुआ ।

गाळी–(ना०) १. उपाय । रास्ता । २. गाँठ । ग्रंथि । ३. टोटी, लोंग आदि कर्णाभूषणों का वह पिछला भाग जो (लोलक) कर्ण छेद में डाला हुआ रहता है । ४. गाली । दुर्वचन ।

गाळो–(न०) १. अंतर । फर्क । २. समयान्तर । ३. स्थलान्तर । ४. किसी वस्तु के मूल्य में एक दूसरे स्थान में परस्पर रहने वाला अंतर । ५. सरकाई जा सकने वाली रस्सी की गाँठ । फांसा । सरकी पासो । ७. चक्की का मुँह । ८. चूड़ी आदि गोल वस्तु का घेरा । व्यास । ९. चक्की के गाले (मुँह में पीसने के लिये डाले जाने वाले मुट्ठी भर अनाज का परिमाण । १०. चक्की के मुँह में डाला जाने वाला मुट्ठी भर अनाज ।

गावड़ियो–(न०) १. बैल, सांढ़, बछड़ा आदि गोवंश । २. बैल । ३. साँढ़ ।

गावड़ी–(ना०) गाय । गौ ।

गावणियो–(वि०) गाने वाला । गवैयो ।

गावणो–दे० गाणो ।

गाव तकियो–(न०) १. छोटा गोल तकिया जो सोते समय गाल के नीचे रखा रहता

है। २. गादी पर रखा रहने वाला लंवा तकिया। मसनद। पीठ के सहारे का वड़ा तकिया।

गावदू–(वि०) गावदी। नासमझ।

गावी छाछ–(ना०) गाय की छाछ। गोतक्र।

गावो–(वि०) गाय का। गाय से संवंधित। (ना०) गाय।

गावो-घी–(न०) गाय का घी। गोघृत।

गावो-दूध–(न०) गाय का दूव। गो-दुग्ध।

गास–(न०) ग्रास। कौर। निवाला। कवो।

गासियो–दे० गास।

गाह–(न०) १. गर्व। २. शक्ति। ३. कथा। ४. हानि। नुकसान। ५. नाश।

गाहटणो–(क्रि०) दे० गाहणो।

गाहटो–दे० गायटो।

गाहड़–(न०)१. अभिमान। २. स्वाभिमान। ३. शक्ति। वल।

गाहड़णो–(क्रि०) अभिमान करना।

गाहड़मल–(वि०) १. गर्वीला। २. स्वाभिमानी। ३. शौकीन। (न०) १. दूल्हा। वींद। २. स्वाभिमान और वीरता सूचक दूल्हे का पर्याय। ३. दूल्हे का एक विरुद। ४. विवाह के गीतों का एक नायक।

गाहड़-रो-गाडो–(न०) १. समर स्वाभिमानी। २. स्वाभिमानी पुरुप। ३. वीर पुरुप।

गाहण–(न०) १. नाश। २. युद्ध। (वि०) नाश करने वाला।

गाहणो–(न०) १. धान, गेहूं आदि दाने निकालने के लिये डंठलों के ढेर पर वैलों आदि को फिराने की क्रिया। दे० गायटो। (क्रि०) १. नाश करना। २. पकड़ना। ग्रहण करना। ३. ठगना। ४. पहुँचना। ५. घिस जाना। ६. घिसना। घिसा जाना।

गाहा–दे० गाथा।

गांगड़ी–(ना०) १. एक क्षुप। २. इस क्षुप का फल।

गांगरत–(ना०) १. व्यर्थ की वातें। वकवाद। २. वात की रगड़। रटन।

गांगरो–दे० गांगरत।

गांगीरासो–(न०) १. व्यर्थ की लम्बी वातें। वकवाद। २. वार-वार वे ही वातें। वात की रगड़।

गांगेय–(न०) भीष्म पितामह।

गांघेड़ो–(न०) गरदन में से टूट कर जुदा हो गया हुआ घड़े वरतन आदि का मुँह।

गांघो–(न०) दे० गांघेड़ो।

गांछ–(ना०) १. गांछे का काम। २. गांठ। ३. समूह। टोळी।

गांछण–(ना०)१. गांछे की पत्नी। २. गांछा जाति की स्त्री।

गांछो–(ना०) १. वांस की टोकरियां वनाने वाली जाति का व्यक्ति।

गांजणो–(क्रि०) १. नष्ट करना। नाश करना। गंजन करना। २. हराना।

गांजर–(न०) चरस। मोट। कोश।

गांजो–(न०) १. भाला। २. भांग की जाति का एक नशीला पौधा, जिसकी कलियों को चिलम में तमाकू की तरह पीते हैं।

गांठ–(ना०) १. वंध। २. ग्रंथि। गांठ। ३. जड़ की गुत्थी। ४. गोल जड़। ५. वांस का पोर। ६. गठड़ी। ७. फोड़ा। व्रण।

गांठड़ी–(ना०) गठरी। गठड़ी।

गांठणो–(क्रि०)१. जूतों की मरम्मत करना। २. फँसाना। वनाना। ३. गांठ देना। वांधना।

गांठ-रो–(वि०) अपना। निज का।

गांठाळो–(वि०) गांठों वाला।

गांठियो–(न०) सोंठ, हल्दी आदि की गांठदार जड़। गांठ के आकार की जड़।

गांठे–(क्रि०वि०)१. पास में। २.अधिकार में।

गांड–(ना०) १. गुदा। मलद्वार। २. पेंदा। तला।

गाँथणो–(क्रि०) १. किसी को अपने पक्ष में कर लेना। २. बाँधना। दो पशुओं को गले से एक साथ बाँधना।

गाँथे घालणो–(मुहा०) १. अपनाना। अपना करना। २. अपने पक्ष में करना। ३. आश्रय देना। ४. किसी को अपने कब्जे में लेना। ५. किसी को दूसरे के आश्रय में कर देना। ६. दो पशुओं को गले से एक साथ बाँधना।

गाँधण–(ना०) गाँधी की स्त्री।

गाँधी–(न०)१. अत्तर बेचने वाला। अत्तार। २. पंसारी। ३. एक वैश्य जाति।

गाँव–(न०) दे० गाम।

गाँव खेड़ो–(न०) १. गाँव के आजू बाजू की जमीन। बस्ती के अतिरिक्त गाँव की वह जमीन जो वहाँ की पंचायत या म्युनिसीपैलिटी के अधिकार में हो। गाँव की सीमा। २. गाँव।

गाँवड़ियो–दे० गामड़ियो।

गाँवतरो–दे० गामतरो।

गाँवधणी–दे० गामधणी।

गाँवधर–दे० गामधर।

गाँवभाँमी- दे० गामभाँमी।

गाँव सारणी–दे० गामसारणी।

गाँवसिंघ–दे० गामसिंघ।

गाँवाऊ–दे० गामाऊ।

गिगन–(न०) गगन। आकाश।

गिगनार–(न०) १. आकाश। २. गिरनार-पर्वत।

गिचरको–दे० गचरको।

गिजा–(ना०) १. भोजन। २. ताकत देने वाली खुराक। ३. संकट। आफत।

गिटकणो–(क्रि०) गिटना। निगलना।

गिटणो–(क्रि०) १. निगलना। २. समाप्त करना।

गिड़- (न०) सूअर। (वि०) बड़ा। दे० गिड़ो।

गिड़कंध–(वि०) १. दृढ़स्कंध। २. दृढ़स्कंध वाला। बलवान। (न०) १. शूकर। २. ऊंट।

गिड़गिड़ी–(ना०) कुँएँ पर लगा हुआ पहिया जिस पर डोल रख कर खींचा जाता है। चरखी। फिरकी।

गिड़दी–दे० गिरदी।

गिड़राज–(न०) १. बड़ा सूअर। सूअर। २. ऊंट।

गिड़ंग–(न०) ऊंट।

गिड़ो–(न०) १. ओला। २. बड़ा गोल पत्थर।

गिणका–(ना०) गणिका। वेश्या।

गिणकारणो–(क्रि०) १. सम्मान करना। २. आदर देना। ३. किसी बात पर ध्यान देना। बात का मानना। स्वीकार करना। ४. लक्ष्य में लेना। ५. अपनाये रखना।

गिणगोर–(ना०) दे० गणगोर।

गिणणो–(क्रि०) १. गिनना। गिनती। करना। गणना करना। २. हिसाब लगाना। ३. मानना। ४.ध्यान देना। ५. किसी बात को कुछ महत्व की समझना। ६. किसी को कुछ महत्व का समझना। ७. महत्व देना।

गिणत–(ना०) १. चिंता। खटक। परवाह। २. विचार। ध्यान। ३. सोच-विचार। ४. गणना। ५. महत्व। (वि०) गिना जाने वाला। माना जाने वाला। सम्मान वाला। गिनती में आने वाला।

गिणती–(ना०) १. गिनती। गणना। २ महत्व। ३. संख्या।

गिणाणो–(क्रि०) गिनाना।

गिणावणो–(क्रि०) गिनवाना। गिणाणो।

गिथळ–(वि०) १. गंदा। २. पागल। (न०) हिजड़ा।

गिनर–(ना०) १. परवाह। चिंता। २. ध्यान। ख्याल।

गिनरत-(ना०) १. गिनती । गणना । २. ख्याल । विचार । ध्यान । ३. पूछ । बूझ ।
गिनान-दे० ग्यान ।
गिनान-विसंभ-(न०) ज्ञान का आधार-रूप । ज्ञान-विश्रंभ । (वि०) तत्वज्ञान में दृढ़ ।
गिनायत-दे० गनायत ।
गिनारणो-(क्रि०)१. ध्यान देना । सोचना । २. परवाह करना । ३. समझना । विचार करना ।
गिनारो-(न०) परवाह । ध्यान । ख्याल । गिनती ।
गिनो-दे० गनो ।
गिर-(न०)१.गिरि । पहाड़ । २.तरबूज आदि फलों के अन्दर का गूदा । ३. दसनामी संन्यासियों का एक भेद । गिरि ।
गिर-अढार-(न०) १. आबू पर्वत । २. समस्त पर्वत ।
गिर-उद्धर-(न०) गिरिधारी । श्रीकृष्ण ।
गिरगट-दे० काकींडो ।
गिरजा-(ना०) १. गिरिजा । पार्वती । २. ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर । गिरजा-घर ।
गिरझ-(न०) १. गिद्ध । (ना०) गिद्धनी ।
गिरझड़ो-(न०) गिद्ध ।
गिरण-(न०) १. सूर्य, चंद्र का ग्रहण । २. पीड़ा के कारण मुँह से निकलने वाला एक अव्यक्त शब्द । पीड़ा सूचक शब्द । कराह ।
गिरण-गहलो-(वि०) अति विक्षिप्त । पूरा पागल ।
गिरणो-(क्रि०) १. गिरना । २. पतन होना । अवनति होना । ३. लुढ़कना । ४. सूर्य चंद्र का ग्रहण होना । ग्रहण लगना ।
गिरद-(क्रि०वि०) १. चारों ओर । गिर्द । २. आजू-बाजू । इर्द-गिर्द । (ना०) रज । धूलि । गर्द ।
गिरदवाय-(न०) १. विस्तार । २. घेरा । चारों ओर का विस्तार ।
गिरदाव-(क्रि०वि०) चारों ओर । (न०) घेरा । चक्कर ।
गिरदावर-(न०) महकमा मालगुजारी का एक कार्यकर्त्ता । फिर करके जाँच पड़ताल करने वाला । गिर्दावर ।
गिरदी-(ना०) १. भीड़ । २. धूलि । गर्द ।
गिरधर-(न०) श्रीकृष्ण । गिरिधर ।
गिरधारी-(न०) गिरिधारी । श्रीकृष्ण ।
गिरनार-(न०) सौराष्ट्र में जूनागढ़ के पास का पर्वत और तीर्थस्थान ।
गिरपुर-(न०)१.राजस्थान के डूंगरपुर नगर का काव्योक्त नाम ।.२.पहाड़ और नगर ।
गिरफतार-(वि०)पकड़ा हुआ । गिरिफ्तार ।
गिरफतारी-(ना०) कैद । बंधन ।
गिरमिट-(न०) १. भारत के बाहर मजदूरी के लिये ले जाये जाने वाले मजदूरों से कराया जाने वाला इकरार नामा । एग्रीमेन्ट । २. छेद करने का एक औजार । गिम्लेट ।
गिरमिटियो-(न०) गिरमिट (एग्रीमेन्ट) से बँधा हुआ मजदूर ।
गिरमेर-(न०) सुमेरु पर्वत । मेरुगिरि ।
गिरराज-(न०) १. गोवर्द्धन पर्वत । गिरि-राज । २. हिमालय । ३. आबू पर्वत ।
गिरराजधरण-(न०) गिरिराजधरण । श्रीकृष्ण ।
गिरवाण-(ना०) १. लकड़ी की बनी ऊंट की नकेल । (न०) देवता । गीर्वाण ।
गिरवाणपत-(न०) इन्द्र । गीर्वाणपति ।
गिरवाणी-(ना०) देवी । सरस्वती । गीर्देवी ।
गिरवी-(ना०) रेहन । बंधक ।
गिरवै-(न०) गिरिराज । दे० गिरवी ।
गिरसोन-(न०) जालोर का स्वर्णगिरि पर्वत । सोनगिरि ।

गिरस्थ–दे० गृहस्थ ।
गिरस्थी–दे० गृहस्थी ।
गिरंता–*(अव्य०)* ऋणदाता की ओर से ऋणी से लिखाये जाने वाले दस्तावेज में 'ग्रहीता' अर्थ का बोधक एक पारिभाषिक शब्द । उदा० के लिये देखिये 'धनिक नाम' शब्द ।
गिरंद–*(न०)* बड़ा पहाड़ ।
गिरा–*(ना०)* १. सरस्वती । २. विद्या । ३. वाणी । वचन । ४. आज्ञा ।
गिराग–*(न०)* ग्राहक । गाहक ।
गिराज–*(ना०)* १. समझ । विचार । २. उपाय ।
गिराणो–*(क्रि०)* १. गिराना । २. घटाना । ३. पतन करना ।
गिराळ–*(न०)* १. पर्वतश्रेणी । २. बड़ा पर्वत ।
गिरावट–*(ना०)* १. गिरने की क्रिया, (भाव अथवा ढंग) । २. पतन । ३. वस्तुओं के मूल्य अथवा भाव घटने की क्रिया । मंदी ।
गिरावणो–*(क्रि०)* दे० गिराणो ।
गिरासियो–*(न०)* दे० ग्रासियो ।
गिरि–*(न०)* १. पर्वत । २. दसनामी संन्यासियों का एक भेद । ३. इस वर्ग के संन्यासियों के नाम के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय ।
गिरिजा–*(ना०)* पार्वती ।
गिरिजापति–*(न०)* महादेव ।
गिरिधर–*(न०)* श्रीकृष्ण । गिरधर ।
गिरिधारी–दे० गिरिधर ।
गिरियंद–*(न०)* १. गिरीन्द्र । बड़ा पर्वत । २. सुमेरु पर्वत । ३. हिमालय ।
गिरियांडोव–*(वि०)* टखना डूबे जितना (पानी) । टखने तक ।
गिरियो–*(न०)* एड़ी के ऊपर बाहर निकली हुई गांठ जैसी हड्डी । गुल्फ ।
गिरिराज–*(न०)* गोवर्धन पर्वत ।
गिरिराज धरण–*(न०)* श्रीकृष्ण ।
गिरिंद–दे० गिरियंद ।
गिरी–*(ना०)* नारियल के अन्दर (जमे हुए पानी) के गूदे का टुकड़ा । चटक ।
गिरे–*(ना०)* १. ग्रह । २. संकट । ३ आपत्ति ।
गिलगिली–*(ना०)* गुदगुदी । कांख आदि में किसी के हाथ के स्पर्श से होने वाली सुरसुराहट ।
गिलट–*(न०)* १. किसी धातु पर सोने चाँदी का चढ़ाया जाने वाला झोल । २. कथीर । कलई ।
गिळणो–*(क्रि०)* १. निगलना । २. नाश करना । ३. अधिकार में करना ।
गिलम–*(न०)* १. मोटा गद्दा । २. बड़ा गोल तकिया । ३. कालीन ।
गिला–*(ना०)* १. निंदा । गिला । बदनामी । २. झगड़ा । टंटा । ३. शिकायत । उलहना ।
गिलानी–*(ना०)* १. ग्लानि । घृणा । नफरत । सूग । २. शिथिलता । थकावट । ३. खेद । पश्चाताप ।
गिलास–*(ना०)* पानी पीने का एक जलपात्र । ग्लास ।
गिलो–*(न०)* १. झगड़ा-टंटा । २. निंदा । गिला । ३. गिलोय ।
गिलोवणो–*(क्रि०)* गीला करना ।
गिंदणो–*(क्रि०)* १. दुर्गंध देना । २. सड़ांध-गंध उत्पन्न होना । ३. निंदा करना । बुराई करना ।
गिंदवो–*(न०)* तकिया । गिंदुक ।
गिंदियो–*(न०)* एक बदबूदार घास । २. एक बदबूदार कीड़ा । *(वि०)* गंदा । मैला ।
गीगली–दे० गीगी ।
गीगलो–दे० गीगो ।
गीगी–*(ना०)* बच्ची । कीकी ।
गीगो–*(न०)* बालक । बच्चा । कीको ।
गीजड़–दे० गींड ।

गीत–(न०) १. गायन। २. डिंगल साहित्य का एक छंद विधान।
गीतण–(वि०) गीत गाने वाली।
गीतणी–दे० गीतण।
गीत भेदक–(वि०) १. काव्य (डिंगल) के भेदों को जानने वाला। २. गायन तथा राग-रागिनियों का जानकार।
गीता–(ना०) १. एक विश्वविख्यात धर्म पुस्तक। श्रीमद्भगवद्गीता। २. कितनेक धार्मिक पद्यग्रन्थों के रखे हुए नाम। जैसे–रामगीता। शिवगीता आदि।
गीताजी–(ना०) श्रीमद्भगवद्गीता।
गीतेरण–दे० गीतण।
गीदड़–(न०) सियार। (वि०) डरपोक।
गीध–(न०) गिद्ध।
गीधण–दे० गीधाणी।
गीधाण–(न०) गिद्ध समूह।
गीधाणी–(ना०) गिद्धनी।
गीरवो–दे० गारवो।
गीरवाण–(न०) गीर्वाण। देवता।
गीरवाणी–(ना०) १. सरस्वती। २. देवी। ३. संस्कृत भाषा। गीर्वाणी। ४. वेद वाणी।
गीलो–(वि०) १. गीला। भीगा हुआ। तर। २. जो गाढ़ा न हो। गीला। ढीला। ३. सुस्त। ढीला।
गींगणी–(ना०) पीली आँखों वाली एक चिड़िया।
गींड–(न०) आँख का मैल। चीपड़।
गींडोळो–(न०) १. वर्षा ऋतु में पैदा होने वाला काले रंग का एक कीड़ा। (वि०) १. मैला। कुचेला। गंदा। २. आलसी। अकर्मण्य।
गींदड़–(ना०) १. शेखावाटी का होली का नृत्योत्सव। २. रास। ३. गेहर।
गींदवो–(न०) तकिया।
गींदोळो–(न०) एक मिठाई।
गुआड़–दे० गवाड़।
गुआड़ी–दे० गवाड़ी।
गुआर–दे० गवार।
गुआरतरी–(ना०)१. ग्वारफली। २. बीज निकली हुई ग्वारफली का भूसा।
गुआरपाठो–(ना०) १. ग्वारपाठा। घीकुआँर।
गुआरफळी–(ना०) ग्वार की फली।
गुआळ–(न०) ग्वाला।
गुआळियो–(न०) ग्वाला।
गुआळो–(न०) ग्वाला।
गुआँजणी–(ना०) पलक पर होने वाली फुंसी। गुहांजनी।
गुचळकियो–दे० गळचियो।
गुचळको–(न०) १. पानी में गोता खाने की क्रिया। डूबने का भाव। डुबकी। २. अधिक भोजन करने से डकार के साथ आने वाला अन्नांश।
गुचळी–(ना०) कोई बात कह कर उससे फिर जाने का भाव, मुकरने का भाव मुकरनी।
गुजर–(न०) १. गुजरान। निर्वाह। २. निकाल। निकास। ३. प्रवेश।
गुजरणो–(क्रि०)१. बीतना। व्यतीत होना। २. किसी जगह से आना या जाना। ३. निभना। निभाव होना। निर्वाह होना। ४. मरना। फौत होना।
गुजराण–(न०) गुजरान। निर्वाह।
गुजरात–(न०) राजस्थान के दक्षिण में अरब समुद्र के किनारे आया हुआ भारत का एक प्रान्त। गुर्जर देश।
गुजरातण–(ना०) १. गुजरात की स्त्री। २. गुजरात की तंबाकू। ३. तमाखू।
गुजराती–(न०)१. गुजरात का रहने वाला। गुजरात का निवासी। २. मूंझारो (निमोनिया रोग)। (ना०) गुजरात की भाषा। गुजराती। (वि०) गुजरात का। गुजरात संबंधी।

गुजारणो-(क्रि०) १. गुजारना। बिताना। २. निर्गमन करना। ३. पेश करना। दाद मांगना।

गुजारिश-(ना०) निवेदन।

गुजारो-(न०) निर्वाह। गुजर। गुजरान।

गुज्ज-(वि०) गुह्य।

गुटकी-(ना०) १. जन्मघुट्टी। २. पानी आदि प्रवाही की घूंट।

गुटको-(न०) १. पानी की घूंट। २. छोटे आकार की मोटी पुस्तक। ३. बीच में सिले हुये पत्रों की हस्तलिखित पुस्तक।

गुठली-(ना०) ऐसे फल का बीज, जिसमें एक ही कड़ा बीज होता है। अष्टि। गुठली।

गुड़-(न०) १. हाथी का कवच। २. कवच। ३. गुड़। गुळ।

गुड़कणो-(क्रि०) १. गिरना। २. चलना। ३. लुढ़कना। लुड़कना। ४. मरना।

गुड़को-(न०) १. लुढ़कने की क्रिया। २. धक्का। ३. बात को आगे की चर्चा के लिये मुल्तवी करने की क्रिया। ४. किसी बात की चर्चा या टंटे झगड़े के निपटाने के लिए नियत किये गये समय को और आगे बढ़ाना।

गुड़णो-(क्रि०) १. लुढ़कना। २. गिरना : गिर पड़ना। ३. मरना। ४. पाखर (कवच) पहिनना।

गुड़ पाखर-(वि०) कवचधारी। (न०) १. कवच। २. हाथी या घोड़े का कवच।

गुडळ-(न०) १. अस्थियुक्त पकाया हुआ मांस। २. घुटना।

गुडळणो-(क्रि०) पानी का मैला होना।

गुडळो-(वि०) १. मैला। गँदला। २. गाढ़ा। ३. घना।

गुड़ाणो-दे० गुड़ावणो।

गुडाळियाँ-(क्रि० वि०) घुटनों के द्वारा (चलना)।

गुड़ावणो-(क्रि०) १. गिराना। २. लुढ़काना।

गुड़ियो-(वि०) कवच धारण किया हुआ। (हाथी)। पाखरित।

गुडी-(ना०) १ पतंग। २. ध्वजा। धजा। ३ छोटी धजा। ३. वन्दनमाला। वंदनवार। वंदणमाळा। ५. उत्सव। ६. गुलाल। ७. चंग। डफ। ८. कागज की बनी चिड़िया। ६. रहस्य। १०. गाँठ। ११. कपोल। गाल। १२. कवच।

गुड़ी-(न०) १. ऊंट। २. कवच। ३. एक गाली।

गुडी उछळणो-(मुहा०) १. उत्सव होना। २. पतंग उड़ना।

गुडीजणो-(क्रि०) १. आना। २. जाना। (दोनों अर्थ तुच्छकार में)

गुडी पड़णो-(मुहा०) १. गाँठ पड़ना। २. मनोमालिन्य होना। ३.शत्रुता होना।

गुडी-पड़वो-(न०) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा।

गुडी मेळो-(न०) पतंगोत्सव। पतंग उड़ाने और काटने की स्पर्धा का उत्सव।

गुढियो-(न०) १. किसी अंक की एक से दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सारिणी। पहाड़ा। २. छोटा घड़ा।

गुढ़ो-(न०) रक्षास्थान।

गुण-(न०)१. जाति स्वभाव। २. लक्षण। ३. धर्म। ४. निपुणता। चतुराई। ५. ज्ञान। ६. विद्या। ७. कीर्ति। ८. उपकार। अहसान। ६. प्रभाव। असर। १०. लाभ। ११. प्रकृति के सत्व, रज और तम ये तीन गुण। १२. कला। १३. कारण। १४. काव्य। १५. स्तुति काव्य। विरुद काव्य। १६. डिंगल के प्रशस्ति काव्यों की एक संज्ञा। १७. डिंगल का भक्ति काव्य। १८. सुमिरन। १९. [illegible] ... तीन की संख्या।

(ना०) १. रस्सी। २. धनुष की डोरी। प्रत्यंचा।

गुण-अतीत-(न०) गुणातीत। निर्गुण परमेश्वर। परब्रह्म।

गुण-आगम-(न०)१. परब्रह्म महिमा। २. भक्त ईसरदास-बारहठ द्वारा रचित एक भक्ति ग्रन्थ। (गुण आपण, गुण निंदा-स्तुति इत्यादि इनके रचे हुए 'गुण' संज्ञक आठ ग्रन्थ प्राप्त हैं जो इनके अन्य काव्य ग्रन्थों के अतिरिक्त हैं)।

गुणकारी-(वि०) लाभकारी।

गुण-गरवो-(वि०)गम्भीर। धीर। शांत। २. गुणों में गरुआ। धीर। गुणी। ३. गौरवशाली।

गुणगान-(न०) स्तुति। प्रशंसा।

गुणग्राम-(न०) गुण समूह।

गुण-ग्राहग-(न०) १. गुणों का ग्राहक। २. काव्यरसिक।

गुणचाळी-(वि०) तीस और नौ। उनचालीस। उनतालीस। (न०) तीस और नौ की संख्या '३९'।

गुणचाळीस-दे० गुणचाळी।

गुणचास-(वि०) चालीस और नौ। उनचास। उनपचास। गुणपचास। (न०) चालीस और नौ की संख्या '४९'।

गुणचोर-(वि०) १. कृतघ्न। २. खल। दुष्ट।

गुणणी-(ना०) पाठशाला में पढ़े हुए और पढ़ाए जाने वाले पाठों (पट्टी पहाडे आदि) की विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक रूप से की जानेवाली आवृत्ति। गणना। गणनावृत्ति।

गुणणो-(क्रि०) गुणा करना। दे० गणणो तथा गिणणो।

गुणताळीस-दे० गुणचाळीस।

गुणती-दे० गुणतीस।

गुणतीस-(वि०) बीस और नौ। उनतीस। (न०) उनतीस की संख्या। २९

गुणपचा-दे० गुणचास।

गुणपचास-दे० गुणचास।

गुण-पाड़-(न०) आभार। उपकार।

गुण-बाहिरो-(वि०) १. गुणहीन। २. प्रभावहीन। महिमा रहित। ३.अवगुणी। दोषी। ४. खोटो। खोटा।

गुणमोती-(न०) बढ़िया और बड़ा मोती।

गुणव-(न०)१. स्तुति। प्रार्थना। २. भक्ति। ३. गुणानुवाद। गुणावली। गुणराशि। ४. प्रशंसा।

गुणवत्ता-(ना०) १. गुणयुक्तता। २. उत्तमता। श्रेष्ठता।

गुणवंत-दे० गुणवान।

गुणवंती-(वि०) गुणवाली। सुलक्षणा। गुणशालिनी।

गुणवाचक-(वि०)१. जो गुण को बतलावे। २. विशेषण। (व्या०)३. प्रशंसक।

गुणवान-(वि०) १. गुणवंत। २. विद्वान।

गुण-वृद्धिविधान-दे० वर्ण वार्धक्य विधान।

गुणसठ-(वि०) १. पचास और नौ। (न०) पचास और नौ की संख्या '५९'। उनसठ।

गुणसाठ-दे० गुणसठ।

गुणहीण-(वि०)१. गुणहीन। गुणरहित। २. उपकार को नहीं मानने वाला। कृतघ्न।

गुणंतर-(वि०) साठ और नौ। (न०) साठ और नौ की संख्या '६९'। उनहत्तर।

गुणा-(न०) १. एक संख्या को दूसरी संख्या से उतनी ही बार बढ़ाने की अंकगणित की एक प्रक्रिया। २. बार। बेर।

गुणाकार-(न०) गुणा। गुणन। (वि०) गुण करने वाला। लाभदायक।

गुणानुवाद-(न०) प्रशंसा। स्तुति।

गुणावळी-(ना०) १. यशोगान। गुणगान। २. माला।

गुणियण-(न०) १. गुणीजन। गुणवान लोग। २. पंडित जन। ३. गवैया। ४. कवि। ५. यशगायक।

गुणियासी–(वि०) सत्तर और नौ। उनासी। (न०) उनासी की संख्या '७६'।

गुणियो–(न०) बढ़ई आदि शिल्पियों का एक उपकरण जिससे किसी वस्तु के कोणों की सीध देखी जाती है। गुनिया-गज। कोण-गज। कोण-माप।

गुणी–(न०) १. कवि। २. कला कोविद। ३. विद्वान। पंडित। ४. गवैया। ५. जंतर मंतर जानने वाला। ६. रस्सी। (वि०) १. गुणवान। सद्गुणी। २. अनुभवी। ३. चतुर। होशियार। दक्ष।

गुणीजण–दे० गुणियण।

गुणीजणो–(क्रि०) १. गिनती में आना। २. हिसाब में लिया जाना। ३. बड़े आदमियों की गिनती में आना। ४. धनवानों में गिना जाना। ५. शिष्ट पुरुषों में गिना जाना।

गुदड़ी–दे० गूदड़ी।

गुदरणो–(क्रि०) १. निभना। गुजरान करना। निभाव होना। २. परवरिश पाना।

गुदराण–(न०) निर्वाह। गुजरान।

गुदरावणो–(क्रि०) १. अर्ज करना। गुजारिश करना। १. अर्ज पहुंचाना। ३. पेश करना। गुजारना।

गुदाळक–(वि०) मांसाहारी।

गुद्दी–(ना०) गरदन का पिछला भाग।

गुधळक–दे० गुधळकियो।

गुधळकियो–(वि०) गोधूलिक। गोधूलि समय का। सन्ध्या समय का।

गुधळकियो लगन–(न०) गोधूलिक समय का पाणिग्रहण लग्न। संध्या समय का विवाह मुहूर्त।

गुनैगार–(वि०) गुनहगार। अपराधी। कसूरवार।

गुनैगारी–(ना०) १. दंड। जुरमानो। जरीवानो। २ अपराध। गुनहगारी। कसूर।

गुनो–(न०) गुनाह। जुर्म। अपराध। कसूर।

गुपचुप–(अव्य०) चुपचाप।

गुपती–(ना०) एक शस्त्र।

गुफा–(ना०) गुफा। कंदरा। खोह।

गुम–(वि०) १. लापता। गायब। २. खोया हुआ। ३. अप्रसिद्ध।

गुमकरणो–(मुहा०) १. छिपा देना। २. उठा ले जाना। उड़ा देना।

गुमघाम–दे० गुमसुम।

गुमणो–(क्रि०) खोना। खोजाना।

गुमनाम–(वि०) १. अज्ञात। २. जिस (पत्र) में भेजने वाले का नाम न हो।

गुमर–(न०) १. अभिमान। मिजाज। २. युद्ध।

गुमसुम–(अव्य०) १. स्तब्ध। २. मंद। उदास। ३. चुपचाप।

गुमहोणो–(मुहा०) १. खोजाना। २. छिप जाना।

गुमाणो–दे० गुमावणो।

गुमान–(न०) गर्व। घमंड।

गुमानण–(वि०) १. गुमानवाली। गर्वीली। २. लोक गीतों की एक नायिका।

गुमानी–(वि०) १. गर्वीला। अभिमानी। गुमानवाला। २. स्वाभिमानी।

गुमावणो–(क्रि०) १. गुमाना। खोना। २. नष्ट करना। ३. गायब करना। उड़ा लेना।

गुमासतो–(न०) १. व्यापारी की ओर से खरीद फरोक्त करने वाला मनुष्य। गुमाश्ता। एजेण्ट। २. दुकानदार का नौकर। ३. मुनीम।

गुमेज–(न०) १. अभिमान। गर्व। २. हैसियत।

गुर–(न०) १. गणित की एक सहज प्रणाली। ऊपर मार्ग। ऊपरवाड़ी। २. रहस्य। ३. गुरु।

गुरज–(न०) एक शस्त्र । गदा । मुद्गर । गुर्ज ।

गुरजदार–(न०) गदाधारी । गुर्जबरदार ।

गुरजबरदार–दे० गुरजदार ।

गुरड़–(न०) गरुड़ । पक्षीराज । विष्णु का वाहन ।

गुरड़धजगामी–(न०) विष्णु ।

गुरड़ो–(न०) १. भाँभी जाति का गुरु । चमारों का पुरोहित । २. गुरु की अपमान सूचक संज्ञा ।

गुर-सदातारां–(वि०) दान दाताओं का गुरु । महादानी ।

गुरंड–(न०) अंग्रेज ।

गुराणी–(ना०) १. गुरुपत्नी । गुरुआनी । २. पुरोहितानी । ३. स्त्री शिक्षक । शिक्षिका । ४. रसोई बनाने का धंधा करने वाली ब्राह्मणी । बामणी । रसोई-दारणी ।

गुराव–(ना०) एक प्रकार की तोप ।

गुरां–(न०) १. देशी पाठशाला का शिक्षक । मारजा । २. जैन जती । जती ।

गुरांसा–दे० गुरां ।

गुरु–(वि०) १. बड़ा । २. भारी । वजनी । ३. श्रेष्ठ । (न०) १. आचार्य । शिक्षक । २. किसी धर्म के मंत्र का उपदेष्टा । आचार्य । ३. देवताओं के गुरु बृहस्पति । ४. एक नक्षत्र । ५. भांभी जाति (चमारों) का गुरु । ६. सात वारों में से एक वार । बृहस्पतिवार । ७. दो मात्राओं वाला दीर्घाक्षर ।

गुरुकूंचो–(ना०) १. गुरु के द्वारा प्राप्त मार्ग । २. रहस्य । भेद । ३. किसी भी परिस्थिति में कारगर होने वाली युक्ति, साधन, उपाय आदि । ४. अनेक तालों में लगने वाली चाबी । ५. वह दूसरी चाबी जिसके लगाये बिना ताला नहीं खुलता । ६. गुप्त चाबी । ७. सरल उपाय । ८. परिश्रम के बाद प्राप्त सफलता का सरल उपाय ।

गुरुगम–(ना०) १. गुरु के द्वारा बतलाया हुआ ज्ञान या मार्ग । २. गुरु द्वारा समझा हुआ रहस्य । ३. गुरुज्ञान ।

गुरुजन–(न०) माता, पिता, शिक्षक इत्यादि बडील वर्ग ।

गुरुद्वारो–(न०) १. गुरु का निवास स्थान । २. वह सम्प्रदाय जिसमें गुरुदीक्षा ली हो । ३. सिक्खों का धर्म स्थान ।

गुरुभाई–(न०) एक ही गुरु के शिष्य होने के नाते अन्य शिष्य की भाई संज्ञा । अपने गुरु का दूसरा शिष्य । गुरुभाई ।

गुरुमुखी–(ना०) पंजाब की एक लिपि एवं भाषा ।

गुरुवार–(न०) बुधवार के बाद का दिन । बृहस्पतिवार ।

गुर्जर–(न०) १. गुजरात । २. गूजर जाति । (वि०) गुजरात का रहने वाला ।

गुर्जरी–(ना०) १. गुजराती भाषा । २. गुजरात की स्त्री । गुजरातिन । ३. ग्वालिन । ग्वारण । गूजरी ।

गुल–(न०) १. फूल । २. चिलम का कीट । ३. चिलम में जली हुई तम्बाकू । ४. दिये की बत्ती का जल कर फूला हुआ सिरा । ५. दीपक के बुझने या बुझाने का भाव । बुझाना । ६. दग्धोपचार । डाम । ७. पशुओं के पुट्ठे पर गरम शलाका से बनाया हुआ चिह्न । दाग ।

गुळ–(न०) गुड़ ।

गुल करणो–(मुहा०) दीये को बुझाना ।

गुल क्यारी–(ना०) १. अनेक भांति के पुष्प । २. पुष्पों की क्यारी । गुलक्यारी ।

गुळगचियो–(न०) १. छोटा गोल पत्थर । २. एक कँटीले पौधे का गोल बीज ।

गुलगुलो–(न०) मीठा पकोड़ा । गुड़ का बड़ा ।

गुळचियो-(न०) १. तैरना नहीं जानने के कारण डूबने की क्रिया। निराश्रय होकर डूबने की हालत। २. डुबकी। गोता।

गुलजार-(वि०) १. रौनक वाला। शोभा वाला। २. हराभरा। ३. पुष्पावृत। (न०) वाटिका। बगीचा।

गुळराब-दे० गळवाणी।

गुललंजा-(ना०) १. कामिनी। सुंदरी। सदा बनी ठनी रहने वाली। छैली। २. सुन्दर रमणी। ३. एक लोक गीत।

गुललंजो-(वि०) सदा बना ठना रहने वाला। छैला। शौकीन। २. रसिक। ३. अति सुन्दर। (न०) लोकगीतों का एक नायक।

गुळ-लपेटी-(वि०) १. गुड़ से लपेटी हुई। ऊपर से मीठी और अंदर से कड़वी। २. २. परवश मनुष्य।

गुलामी-(ना०) १. दासता। गुलामपना। २. बहुत हलकी तावेदरी। ३. पराधीनता।

गुलाल-(ना०) उत्सव के समय लोगों पर डाली जाने वाली लाल रंग की एक बुकनी।

गुलांच-(ना०) १. जमीन पर उलटा गिर पड़ना। लुढ़कन। २. कुलाँच। छलांग।

गुळी(ना०) नील का रंग। नील। लालबुर्ज।

गुळेचो-(न०) १. डुबकी। गुलांच। २. कुलाँच।

गुळेटो-(न०) जमीन पर उलटा गिर पड़ने की क्रिया। लुढ़कन।

गुवाड़-दे० गवाड़।

गुवाड़ी-दे० गवाड़ी।

गुवार-दे० गुआर।

गुंजारव–*(ना०)* १. भौंरों का शब्द । भ्रमर ध्वनि । गुंजार । २. झनझनाहट ।

गुंजास–*(ना०)* १. गुंजाइश । सुभीता । २. खटाव । सामर्थ्य । हैसियत । ३. खाली जगह । ४. अवकाश । समाई ।

गुंजाहळ–*(न०)* गुंजाफल । चिरमटी । घुंघची । चिरमी

गुंडो–*(वि०)* बदमाश । दुराचारी । कुमारगी । *(न०)* दुराचारी व्यक्ति ।

गुंभारियो–दे० गुंभारो ।

गुंभारो–*(न०)* १. गुफा । कंदरा । २. भूमिगृह । तलघर । तहखाना ।

गू–*(न०)* मल । विष्टा । भिस्टो ।

गूगीड़ो–दे० गोगीड़ो या जूंजळो ।

गूगरी–दे० गूघरी ।

गूगळ–*(न०)* एक पहाड़ी वृक्ष । २. गूगल का सूखा रस । गूगल का सुगंधि वाला गोंद । गुग्गुल ।

गूगळी–*(ना०)* छोटी जाति का गूगल का पेड़ । *(वि०)* १. मैली । २. धुँधली । ३. गाढ़ी । ४. मटमैली ।

गूगळो–*(वि०)* १. धुंधला । २. मैला । ३. मटमैला ।

गूघरमाळ–दे० घूघरमाळ ।

गूघरी–*(ना०)* १. धातु की बनी गुरिया, जो हिलने पर बजती है । छोटा घुंघरू । २. उबाले हुए गेहूँ । ३. अनाज के रूप में लिया जाने वाला लगान । गूघरी लाग ।

गूघरी लाग–*(ना०)* खेत मालिक की ओर से खेत जोतने वाले से लिया जाने वाला अनाज के रूप में एक लगान । खेत या कुएँ का किराये के रूप में जोतने वाले से लिया जाने वाला धान्यकर ।

गूघरो–*(न०)* घुँघुरू ।

गूघी–*(ना०)* जमा हुआ ऊनी कपड़ा । नमदा । घुग्घी । घूघी ।

गूघू–*(न०)* उल्लू । घुग्घू । घुघूराजा ।

गूजर–*(न०)* १. गूजर जाति । २. गूजर जाति का व्यक्ति । घोसी । ३. ग्वाला । *(ना०)* तीसरी पत्नी ।

गूजर-खंड–*(न०)* गुजरात ।

गूजरधरा–*(ना०)* गुजरात ।

गूजरवै–*(न०)* गूर्जरपति । गुजरात का स्वामी ।

गूजरी–*(ना०)* १. गूजर जाति की स्त्री । २. ग्वालिन । ३. स्त्रियों की कलाई में पहिनने का एक गहना ।

गूजी–*(ना०)* १. गरम की हुई छास । २. मिला हुआ गेहूं और जौ । गोजई ।

गूझ–*(ना०)* गुह्य । रहस्य ।

गूडण–*(ना०)* एक गाली *(वि०)* गिराने वाला ।

गूडळ–*(न०)* १. बैल का अंडकोश । २. हड्डी में लगा हुआ मांस जो चूस करके या दाँतों से तोड़कर खाया जाता है । ३. घुटना । ४. अंडकोश ।

गूडळणो–*(क्रि०)* १. छा जाना । आच्छन्न होना । २. गँदला होना । ३. धूल से आच्छादित होना ।

गूडळियो–*(वि०)* गँदला ।

गूढ–*(वि०)* १. जिसमें कोई विशेष अभिप्राय छिपा हो । २. जिसका अभिप्राय समझना कठिन हो । ३. रहस्यमय । ४. गहन । ५. गुह्य । छिपा हुआ । ६. दुर्गम । *(न०)* पहेली ।

गूढचर–*(न०)* चोर ।

गूढपद–*(न०)* १. साँप । सर्प । २. मन । ३. गूढ़ अर्थ वाला पद ।

गूढा–*(ना०)* पहेली ।

गूण–*(ना०)* १. गूनी । बोरा । बोरी । २. बैल या ऊंट पर अनाज भरने और लादने का दोनों ओर लटकने वाला दोहरा थैला । खुरजी । गोन । छाटी ।

गूणती–दे० गूण ।

गूणियो-(न०) १. छोटा कलश। २. दूध दुहने का पात्र। **दूणियो। दूहणियो।**

गूणो-(न०) ग्वार, मूंग, मोंठ आदि के सूखे हुए पौधों की कूटी हुई टहनियाँ, पत्तियाँ आदि का भूसा।

गूतो-(न०) १. गाय या भैंस के प्रसव के बाद पहली बार दोहा हुआ और गरम किया हुआ दूध। २. पहली बार दोहा हुआ दूध।

गूद-(न०) माँस।

गूदड़ती-दे० गूदड़ी।

गूदड़ी-(ना०) चिथड़ों से बनी हुई बिछाने व ओढ़ने की गुदड़ी। **गोदड़ी। राली।**

गूदड़ो-(न०) चिथड़ों से बना हुआ बिछावन।

गूमड़ो-(न०) व्रण। गाँठ। फोड़ा।

गू-मूतर-(न०) मल-मूत्र। मैला।

गूलरियो-(न०) कुत्ते का बच्चा। पिल्ला। **कूकरियो।**

गूहो-(न०) उपस्थकच राशि।

गूंग-(ना०) १. गूंगापन। मूकपन। २. आपे से बाहर होने का भाव। ना समझी। सनक। ३. पागलपन। उन्मत्तता।

गूंगलो-(वि०) १. गूंगा। मूक। (न०) १. एक बरसाती कीड़ा। २. मस्त ऊंट।

गूंगी-(ना०) ठंड तथा बरसात में ओढ़ा जाने वाला जमाई हुई सफेद ऊन का

गूंघटो-दे० गूंघट।

गूंच-(ना०) १. गुत्थी। २. उलझन। कठिनाई।

गूंचवाड़ो-(न०) १. उलझन। गुत्थी। २. असमंजस। दुविधा। ३. कठिनाई।

गूंछळी-(ना०)१. लच्छी। अंटी। २. उलझन। मुश्किली। ३. डोरे आदि में पड़ने वाली गांठ, गूंची। उलझन।

गूंछळो-(न०) बड़ी गूंछळी।

गूंज-(ना०) १. गुंजार। २. प्रतिध्वनि। ३. कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार ४. गुप्त मंत्रणा।

गूंजणो-(क्रि०) १. गुर्राना। २. गरजना। ३. प्रतिध्वनि होना। गूंजना। ४. भौंरे का गुंजार करना। ५. जोर से बोलना।

गूंजार-(न०) कोठार।

गूंजियो-(न०) जेब। **खीसो।**

गूंजी-(ना०) घर वालों से छिपा कर रखा हुआ धन।

गूंजो-(न०) १. जेब। २. एक मिठाई।

गूंथणो-(क्रि०) १. गूंथना। २. पिरोना। ३ रचना करना। ग्रथित करना।

गूंथाणो-दे० गूंथावणो।

गूंथावणो-(क्रि०) गुथवाना।

गूंद-(ना०) १. गोंद। २. मांस। ३. मरा हुआ पशु।

गूंदणो-(क्रि०) गूंधना। माँड़ना।

गूंदी–(ना०) एक वृक्ष जिसके फल लगभग चने जितने वड़े, मीठे और लसदार होते हैं। गोंदी। छोटे लिसोड़ा वाला वृक्ष। छोटा लसोड़ा। लभेरा।

गूंदो–(न०) १. वड़े लसोड़ों का वृक्ष। २. वड़ा लसोड़ा फल। **गूंदो।**

गूंवड़ो–(न०) दे० गूमड़ो।

गृह–(न०) घर। मकान।

गृहस्थ–(न०) १. ब्रह्मचर्य के वाद विवाह करके घर में रहने वाला पुरुष। २. घर-संसार। ३. गृहराज्य। ४. उच्च कुलोत्पन्न पुरुष। ५. कुटुंब। परिवार।

गृहस्थाश्रम–(य०) भारतीय जीवन के चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम। ब्रह्मचर्य के वाद का आश्रम।

गृहस्थी–(ना०) १. घर की व्यवस्था। २. गृहस्थ का काम काज। ३. कुटुम्व। परिवार।

गृहिणी–(ना०) १. गृहस्थ की स्त्री। २. गृहस्वामिनी। घर मालकिन। ३. पत्नी।

गेघरो–(न०) १. कच्चा व हरा चना। कोप सहित हरा चना। २. चने का पौधा। ३. चने की फसल। ४. ज्वार की वाल।

गेडियो–(न०) १. मुड़े हुए हत्थेवाला मोटा डंडा। २. छड़ी।

गेडी–(ना०) १. छड़ी। २. लाठी। ३. मुड़े हुए हत्थे वाली छड़ी।

गेड़ो–(न०) १. वैलगाड़ी आदि वाहन द्वारा माल ले जाने-लाने का चक्कर। २. चक्कर। फेरा। परिभ्रमण। ३. माल या सामान को इधर से उधर ले जाने की क्रिया।

गेढी–(ना०) १. स्त्रियों के सिर में वोर (रखड़ी) की जड़ाऊ नली। एक सिरोभूषण। २. सूत, ऊन आदि की गेंडुरी। ३. वैलगाड़ी के पहिये की धुरी में लगाया जाने वाला सुराख वाला चमड़े का गोल टुकड़ा।

गेढी-डोरो–(न०) स्त्रियों के सिर के वोर (रखड़ी) के साथ लगने वाली सोने की जड़ाऊ गावदुम नली और उसके साथ लगाई जाने वाली इधर-उधर दो सोने की पतली संकले। (जंजीरें)।

गेम–(न०) १. देशद्रोह। २. पाप। दुष्कर्म। ३. शत्रुता।

गेमार–(वि०) १. गँवार। असभ्य। २. मूर्ख।

गेमी–(वि०) १. देशद्रोही। २. पापी। दुष्कर्मी।

गेरणियो–(न०) वड़ी चलनी। चालना।

गेरणी–(ना०) चलनी। चालनी।

गेरणो–(न०) वड़ी चलनी। चालना। (क्रि०) गिराना। डालना। पटकना।

गेरू–(न०) एक लाल मिट्टी।

गेह–(न०) घर। गृह।

गेहणी–(ना०) १. गृहिणी। २. पत्नी।

गेहर–(ना०) १. होलिका उत्सव का एक लोक नृत्य। **डंडिया गेहर।** वासंतिक रास क्रीड़ा। २. चंग के साथ गाने-वजाने और नाचने का एक वासंतिक उत्सव। ३. डोलचियाँ द्वारा एक दूसरे पर पानी डाल कर खेलने की एक वासंतिक जल-क्रीड़ा।

गेहरियो–(न०) गेहर खेलने वाला। गेहर में नाचने वाला व्यक्ति।

गेहूं–(न०) एक प्रसिद्ध अनाज। गहूं। गोधूम। गदुम।

गेंती–(ना०) कुदाली। कोदाळी।

गेंद–(ना०) दड़ी। गेंद।

गै–(न०) १. हाथी। गज। २. आकाश। (ना०) गति। चाल।

गैगमणी–दे० गयगमणी।

गैगहण–(वि०) १. अपने वाहुवल से आकाश को थामने वाला। अत्यन्त

बलशाली। २. हाथियों को पकड़ने या पछाड़ने वाला।

गैगाह–दे० गजगाह।

गैघट–(न०) १. आनंदोल्लास। २. महोत्सव। ३. भोगविलास। ४. आनंद के साधनों की उपलब्धि। सर्व सम्पन्नता। ५. गैघट (गैघट्ट) नाम का राजस्थानी दूहा साहित्य। ६. गजदल। हस्तीदल।

गैघटा–(ना०) १. हाथियों की घटा। हाथियों का झुंड। २. हाथियों की सेना। हस्ती सेना।

गैघूमणो–(क्रि०) १. घने बादलों का उमड़ना। घटा का उमड़ना। २. छा जाना। मंडराना।

गैजूह–(न०) हस्ती दल।

गै-डसण–(न०) १. गजदंत। गजदशन। २. गजदंशन। सिंह। ३. ध्रोळ (सौराष्ट्र) के ठाकुर जसाजी जाड़ेजा का विरुद। ४. सूअर। (वि०) सिंह के समान वली। वीर।

गैडंबर–(न०) १. घटा। घनघटा। २. पश्चिम की ओर से उठने वाले बादलों की घटा। लोरों की घटा।

गैण–(न०) आकाश। गगन।

गैणाग–(न०) १. गगन। आकाश। २. गगनाग्नि। ३. हाथी।

गैतूल–(न०) १. वातचक्र। बवंडर। २. आकाश में छाई हुई गर्द। ३. आंधी। तूफान। ४. हस्ती सेना। ५. सेना। ६. समूह। ७. पवन।

गैदंत–(न०) हाथी दाँत।

गैब–(वि०) १. जो सम्मुख न हो। जो अज्ञात हो। परोक्ष। २. जो नहीं देखा जा सके। अदृश्य।

गैबाऊ–(क्रि०वि०) १. गुप्त रीति से। २. अचानक। ३. सामान्य प्रकार से। (वि०) सामान्य।

गैबो–(वि०) १. गुप्त। छिपा हुआ। २. अदृश्य। ३. अज्ञात। ४. पापी। (क्रि०वि०) अचानक।

गैमर–(न०) हाथी।

गैर–(अव्य०) निषेध, अभाव, गलत इत्यादि अर्थ सूचक एक उपसर्ग। (वि०)१.दूसरा। अन्य। २. अपरिचित। ३. अनुचित।

गैर इनसाफ–(न०) अन्याय।

गैर कायदे–(वि०) कायदा विरुद्ध।

गैर चलण-(न०) १. जो राज्य से अमान्य हो। जो राज्य द्वारा संचालित न हो। जैसे खोटा रुपया। नकली रुपया। २. जो व्यवहार विरुद्ध हो, जैसे–खोटी हुंडी। जाली हुंडी। ३. गैर चाल। कुमार्ग।

गैर चाल–(न०) कुमार्ग। बदचलनी। (वि०) बदचलन।

गैर-मुनासिब–(वि०) गैर वाजिबी। अनुचित।

गैर-रस्तो–(न०) १. बेकायदा। २. खोटा मार्ग। ३. कुरीति।

गैर-वदळै–दे० गैर वल्ले।

गैर वल्ले–(अव्य०) १. चिट्ठी पत्री आदि का योग्य पते पर नहीं पहुँचना। गैर वदले। गैर वदले हो जाने का भाव। २. खो जाने का भाव। गुम हो जाने का भाव।

गैर वाजबी–(वि०) १. अनुचित। २. अयोग्य।

गैर-हाजर–(वि०) अनुपस्थित। गैर हाजिर।

गैर-हाजरी–(ना०) अनुपस्थिति। गैर हाजिरी।

गैल–(ना०) १. पीछा। २. रास्ता। मार्ग। (अव्य०) प्रति। हर। (क्रि०वि०) पीछे।

गैल छोड़णो–(मुहा०)१.(किसी से संबंधित) छेड़ी हुई चर्चा को बंद करना। घर रखना। पीछा छोड़ना। २. पीछा नहीं करना।

गैलापणो–(न०) पागलपन ।

गैली–(वि०) पगली ।

गैलो–(न०)१. मार्ग । रास्ता । २. परम्परा । सिलसिला । (वि०) १. पागल । गहलो । २. नासमझ ।

गैवर–(न०) १. हाथी । २. श्रेष्ठ हाथी । गजवर ।

गैंडो–(न०) भैंसे की तरह का एक जंगली जानवर ।

गो–(ना०) १. गाय । गौ । २. इन्द्रिय । ३. वाणी । ४. पृथ्वी । ५. आकाश ।

गोग्राळ–(न०) ग्वाल ।

गोग्राळियो–दे० गोग्राळ ।

गोउड़ो–(वि०) गाय का (चमड़ा) ।

गोउड़ो साज–(न०) गाय का चमड़ा । गोचर्म ।

गोग्रो–(न०) शीतकाल में मस्ती में आये हुए ऊंट की गलसुई के समान फूल कर मुँह से वाहर निकली हुई जीभ ।

गो-करण गहरण–(न०) पृथ्वी को उत्पन्न व धारण करने वाला परमेश्वर ।

गो-कर्ण–(न०) १. टोडा (राजस्थान) के पास बनास नदी के तट पर आया हुआ शिव का एक प्रसिद्ध तीर्थ । २. दक्षिण में आया हुआ एक प्रसिद्ध शिव-तीर्थ । ३. गाय का कान । ४. खच्चर । ५. सर्प ।

गोकळ–(न०) गोकुल । गोकुळ ।

गोकळ-आठम–दे० कानजी-आठम ।

गोकळिया गुसांई–(न०) वल्लभ सम्प्रदाय के गुसांईजी ।

गोकुळ–(न०) १. व्रज में मथुरा के पास का एक गाँव, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अपना वाल्यकाल विताया था । नंद, यशोदा और श्रीकृष्ण की निवास भूमि २. गौओं का समूह । ३. गो, वृषभ आदि ।

गोकुळनाथ–(न०) श्रीकृष्ण ।

गोकुळवाळ–(न०) गोकुलवाला । श्रीकृष्ण ।

गोकुळीनाथ–(न०) १. जालोर के इतिहास प्रसिद्ध शासक वीर कान्हड़दे सोनगरा का एक विरुद । २. श्रीकृष्ण ।

गोख–(न०) १. गवाक्ष । झरोखा । झरूखो । २. कान का बाहरी पर्दा व भाग । ३. आँख और कान के आजू बाजू का भाग । ४ कर्ण विवर । ५. कनपटी । कनपडो ।

गोखड़ो–(न०) १. गवाक्ष । वातायन । झरोखा । २. एक प्रकार का ताक जो साल के प्रवेश द्वार (की दोनों ओर दीवाल के आसारों) में बना हुआ होता है ।

गोखरू–(न०) १. एक वनस्पति और उसका बीज । २. स्त्रियों के हाथ में पहिनने का एक गहना । ३. पुरुषों के कान में पहिनने का एक गहना । ४. जरतार । (कोग्गोटा) का एक प्रकार का फीता ।

गोखो–(न०) १. गवाक्ष । गोखडो । २. डिंगल का एक छंद ।

गोगादे–(न०) १. एक लोक देवता । २. गोगादे चौहान । ३. राठौड़ राव वीरम का पुत्र ।

गोगानम–(ना०) भादौं सुदी नौम । सर्प पूजा का दिन । नाग-नवमी ।

गोगीड़ो–दे० झूंजळो ।

गोगो–(न०) १. एक लोक गीत । २. एक लोक देवता । ३. गोगादे चौहान । ४. गोगादे राठौड़ ।

गोघ–(न०) फेन । झाग ।

गोघी–दे० गूघी ।

गोघोख–(न०) गौशाला ।

गोचर–(न०) १. चरागाह । (वि०) इन्द्रिय-गम्य ।

गोचरी–(ना०) १. भिक्षा । २. भिक्षा-वृति । (जैन साधुओं की) । ३. अपने ही घर में की जाने वाली चोरी । ४. चोरी से घर वालों से छिपाकर इकट्ठा किया हुआ धन ।

गोचंदण-(न०) गोपीचंदन। (ना०) एक प्रकार की गोह। चंदनगोह।

गोट-(ना०) १. मगजी। २. चौपड़ की गोटी। ३. मुंझाहट। ४. धुएँ की घटा। ५. धूलि की घटा। गर्द। ६. आवेग। मन की तरंग।

गोटको-(न०)जिल्द बंधी हुई छोटी पुस्तक। गुटका। २. बिना पकाई हुई ईंट।

गोटाळो-(न०) १. अव्यवस्था। २. पैसों के मामले में गोलमाल।

गोटावाळ-(वि०) कर्त्तव्य भावना से रहित होकर किया हुआ (काम)। २. फूहड़पन। से किया हुआ। ३. जैसा-तैसा किया हुआ।

गोटी-(ना०) चौपड़ की सारी। चौपड़ या सतरंज का मोहरा। २. गोली। टिकिया।

गोटीजणो-(क्रि०) १. मुँझाना। २. दम घुटना। ३. धुआँ, धूल आदि से भर जाना।

गोटो-(न०) १. नारियल। २. गोटा किनारी। ३ मुँझाहट। ४. मन की तरंग आवेग। ५. घुटन। ६. धुएँ का बादल या घटा।

गोठ-(ना०)१. मित्रमंडली का भोजनोत्सव। दावत। गोठ। २. समूह भोज। ३. गोष्ठी। ४. ढाणी। ५. छोटा गाँव।

गोठ-गूघरी-(ना०) किसी प्रसन्नता या उत्सव के समय किया जाने वाला मित्र-मंडली का भोजन समारोह। महफिल और दावत। प्रीति भोज।

गोठण-(ना०) १. साथिन। स्त्रीमित्र। २. सखी। सहेली।

गोठियो-(न०) १. मित्र। २. बालमित्र।

गोठी-(न०) १. बालमित्र। २. मित्र। दोस्त।

गोड-(ना०) (हाथी की) मस्ती।

गोडणो-(क्रि०)१. खुरपी लगाना। २. खेत बाग आदि में कसी, फावड़े इत्यादि से मिट्टी उलट-पुलट करना।

गोड़-(ना०) १. भीड़। २. समूह। झुंड। ३. नाश। संहार।

गोड़णो-(क्रि०) १. नाश करना। संहार करना। २. हाथी का चिंघाड़ना।

गोड़वणो-(क्रि०) १. मारना। नाश करना। २. गिराना।

गोडवाड़-दे० गोढवाड़।

गोड़ाटी-(ना०) मारवाड़ के नागौर जिले का भाग।

गोड़ा देणो-(मुहा०) १. हानि पहुंचाना। २. किसी प्रिय की मृत्यु होना।

गोडालकड़ी-(ना०) एक कठोर शारीरिक दंड।

गोडाळियाँ-(क्रि०वि०) बच्चे का घुटनों और हाथों के बल चलने की क्रिया।

गोड़ियो-(न०) १. इंद्रजालिक। जादूगर। २. मदारी।

गोडी-(ना०)१. घुटना। २. घुटने को मोड़ कर रस्सी से पैर को बाँधने की क्रिया।

गोडी करणो-(मुहा०)१. ऊँट के एक पाँव को घुटने में से ऊपर को मोड़ कर रस्सी के द्वारा घुटने से बाँध देना, जिससे वह भाग नहीं सके। २. विवश करना। मजबूर करना। ३. विश्राम करना।

गोडी ढाळणो-(मुहा०) १. थक जाना। २. थक कर बैठ जाना। ३. बैठ जाना। ४. मृतक के घर उसके घर वालों को सम्वेदना प्रकट करने को जाना।

गोडी देणो-(मुहा०) ऊंट के अगले पैर को घुटने से मोड़कर रस्सी से बाँधना।

गोडीख-(न०)१. समुद्र। २. समुद्र में उठने वाली लहरों की ध्वनि।

गोडो-(न०) घुटना।

गोडो वळावणो-(मुहा०)मुँहकाण कराना। मृतक के यहाँ उसके घर वालों को सान्त्वना देने व संवेदना प्रकट करने को जाना।

गोडो वाळणो-(मुहा०)दे० गोडोवळावणो।
गोढ-(न०) १. वृक्ष का तना। थड़। २. मूला। मूली। ३. जड़। मूल।
गोढलो-(वि०)निकट का। पास का।
गोढवाड़-(न०) मारवाड़ के पाली जिले का दक्षिण-पूर्वी प्रदेश।
गोढवाड़ी-(वि०) १. गोढवाड़ प्रदेश का रहने वाला। २. गोढवाड़ का। गोढवाड़ सम्बन्धी।
गोढाण-दे० गोढवाड़।
गोढाँ-दे० गोढै।
गोढै-(क्रि०वि०) पास। निकट। कनै।
गोण-(न०) १. आसमान। २. गमन। जाना।
गोणो-(न०) गौना। द्विरागमन। आणो।
गोत-(ना०) १. गोत्र। २. वंश। कुल। ३. डुबकी। ४. बहाना। ५. तलाश। खोज।
गोतकदम-(ना०) गोत्र हत्या। कुल-हत्या।
गोत खाणो-(मुहा०) नट जाना। मुकर-जाना।
गोतणो-(क्रि०) तलाश करना। ढूंढ़ना।
गोतभाई-(न०) एक ही गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।
गोतर-दे० गोत्र।
गोतियो-(न०) १. गाय, भैंस आदि के लिये बाजरी, ग्वार, खल और कुतर आदि के मिश्रण (बांटो) को पकाने का चूल्हा व पात्र (हांडो)। (वि०)समान गोत्र वाला। गोत्रज।
गोती-(वि०)१. गोत्रवाला। २. स्वगोत्री।
गोतीत-(वि०) इन्द्रियातीत।
गोतो-(न०) १. व्यर्थ का चक्कर। फेरा। आंटो। २. मार्ग भूलकर इधर-उधर फिरते रहने की क्रिया। चक्कर। ३. डुबकी। गोता।
गोत्र-(ना०) १. किसी ऋषि के नाम से पहिचाने जानेवाला कुल। कुल के मूल पुरुष के नाम के अनुसार उस कुल की संज्ञा। २. वंश। कुल। ३. संतान।
गोत्र-कदंब-दे० गोतकदम।
गोत्रजरा-(ना०) पड़िहारों की कुलदेवी।
गोत्रात-(न०) गोत्रिरात्र नाम का स्त्रियों का व्रत जो भादों शुक्ल पक्ष की सप्तमी, अष्टमी और नौमी को किया जाता है। गोत्रिरात्रि।
गोथणी-(ना०) १. बैलगाड़ी के जुए में लगने वाली लकड़ी की कील जो बैल की गरदन को अंदर की ओर जाने से रोकती है। २. द्राक्षा। बड़ी दाख।
गोथणो-(न०) जुआ (घूंसरी) को बंद करने की लकड़ी की एक कील। गोथणी। (क्रि०) गोथणी से बंद करना।
गोथळी-(ना०) थैली। कोथली।
गोद-(ना०) १. क्रोड़। उत्संग। अंचल। खोळो। २. क्रोड़ांग का वस्त्र भाग। ३. दत्तक प्रणाली। ४. दत्तक।
गोदड़ी-(ना०) गुदड़ी। गूदड़ी।
गोदड़ो-(न०) फटे-पुराने चिथड़ों का बिछौना। गुदड़ा। गोदड़ा।
गोद लेणो-(मुहा०)नि.संतान होने की दशा में अपने किसी गोत्री के पुत्र को शास्त्र विधि अनुसार अपना पुत्र स्वीकार करना। खोळै लेणो। २. बच्चे को कमर में उठाना। तेडणो।
गोदान-(न०) गाय का दान।
गोदाम-(न०) माल रखने का वखार। गोडाउन। गोदाम।
गोदावरी-(ना०) दक्षिण भारत की एक पवित्र नदी।
गोदी-(ना०) १. क्रोड़। उत्संग। २. गोदाम। भखार। वखार।
गोधण-(न०) गायों का समूह। गोवन।
गोधन-(न०) १. गायें रूपी धन-दौलत। २. गोवृन्द।
गोधम-(न०) १. होहल्ला। २. झगड़ा-टंटा। ३. कलह। ४. गृह कलह।

गोधळियो–*(न०)* १. छोटा सांड़। २. वेनसल का सांड़। ३. छोटा बैल।

गोधुळक–*(ना०)* संध्या समय। गोधूलि समय। *(वि०)* गोधूलि समय का (पाणि-ग्रहण)।

गोधुळक-लगन–*(न०)* १. गोधूलिक लग्न। २. गोधूलिक समय का विवाह। गोधूलिक पाणिग्रहण।

गोधुळकिया फेरा–*(न०)* संध्याकालीन मुहूर्त में होने वाला पाणिग्रहण।

गोधुळकियो साहो–दे० गोधुळकिया फेरा।

गोधुलि–*(ना०)* गायों के चलने से उड़ने वाली धूलि। २. गायों के जंगल में से वापिस लौटने का समय। संध्या समय।

गोधो–*(न०)*१. सांड़। २. खस्सी नहीं किया हुआ बैल।

गोप–*(न०)* १. गले का एक आभूषण। २. व्रज की एक अहीर जाति। ३. ग्वाला। ४. गौ। गाय।

गोपकाव्य–*(न०)* ग्राम्य-जीवन वर्णन करने वाला काव्य।

गोपाळ–*(न०)* १. श्री कृष्ण। २. ग्वाला।

गोपी–*(ना०)* १. गोप पत्नी। ग्वालिन। २. वृन्दावन की श्रीकृष्ण भक्त गोप-स्त्री।

गोपीचंदरा–*(न०)* तिलक करने की एक सफेद व पीली मिट्टी। गोपीचंदन।

गोपीवर–*(ना०)* श्रीकृष्ण।

गोफरा–*(न०)* पत्थर या ढेला फेंकने का जोता (योत्र) के जैसा एक साधन। गोफन। फिन्नी। ढेलवांस।

गोफरिायो–*(न०)* १. गोफन से फेंका जाने वाला ढेला या पत्थर। २. गोफन। ढेलवांस।

गोबर–*(न०)* गाय या भैंस का मल।

गो-भरतार–*(न०)* १. पृथ्वीपति। २. इन्द्रियों का अधिपति। ३. श्रीकृष्ण।

गोभी–*(ना०)* शाक में प्रयोग आने वाला एक फूल या पत्तों की एक गांठ। कोबी।

गोभू–*(वि०)* डरपोक।

गोम–*(न०)* १. पृथ्वी। २. आकाश। ३. नगाड़ा। ४. गर्जन। *(वि०)* गुप्त।

गोमगह–*(न०)* १. आकाश। २. मेघगर्जन।

गोमतसर–*(न०)* मारवाड़ के इतिहास प्रसिद्ध भीनमाल नगर का एक प्राचीन नाम। गौतमसर।

गोमती–*(ना०)*१. द्वारका की सामुद्र नदी। २. गंगा में मिलने वाली एक नदी।

गोमय–दे० गोबर।

गोमुख–*(न०)* १. गाय का मुँह। २. एक प्राचीन तीर्थ।

गोमुखी–*(ना०)* १. माला जपने की गाय के मुख के आकार की कपड़े की कोथली। २. गंगोत्री तीर्थ। गंगोतरी।

गोमूत–*(न०)* गोमूत्र।

गोय–*(क्रि०वि०)* छिपा करके।

गोयरगी–दे० गोरगी।

गोयरो–*(न०)*१. गाँव के निकट का भाग। गूंदरो। २. गोह।

गोरखधंधो–*(न०)* १. गोरखपंथी साधुओं का वहुत कड़ियों वाला एक डंडा। २. गोरख पंथियों का एक यंत्र। ३. अनेक कड़ियों वाली एक अंगूठी। ४. एक ही काम की निरर्थक पुनरावृत्ति। ५. निकम्मा धंधा। खोटो धंधो। ६. वहुत झंझट वाला काम। ७. उलझन। झंझट।

गोरखनाथ–*(न०)* एक प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा गोरखनाथ।

गोरखपंथ–*(न०)* गोरखनाथ द्वारा चलाया हुआ पंथ।

गोरखपंथी–*(वि०)* गोरखपंथ के अनुयायी।

गोरज–*(ना०)* गायों के चलने से उड़नेवाली रज।

गोरटियो–*(वि०)* गोरे रंग वाला। गौर वर्ण।

गोरण-(ना०) प्रथम मिलन । सुहागरात ।
गोरणी-(ना०) १. गौरी व्रत उद्यापन की सौभाग्यवती स्त्रियों को दी जाने वाली लहाण (सौगात) गौरिणी । २. व्रत उद्यापन के दिन भोजन के लिये निमंत्रित सौभाग्यवती स्त्री । ३. सौभाग्यवती स्त्री के गौरी व्रत के उद्यापन का भोज ।
गोरधन-दे० गोवर्धन ।
गोरवंध-(न०) १. ऊंट का श्रृंगार करने के लिए उसे पहिनाया जाने वाला फुंदनों और लूमों वाला अलंकार । २. इस संबंध का एक बहुत प्रसिद्ध लोक-गीत । 'गोरबंध लूंबाळो' नामक लोक गीत ।
गोरमो-(न०) १. बरात को, उसके गोरमे में पहुंच जाने पर कन्यापक्ष की ओर से दिया जाने वाला एक स्वागत भोज । २. गाँव के बाहर का मैदान । ३. गाँव के निकट का भाग । ४. गाँव का वह स्थान या मैदान जहाँ गांव की गायें जंगल में चरने को जाने के लिये इकट्ठी होती हैं ।
गोरल-दे० गणगोर ।
गोरवो-दे० गोरमो ।
गोरस-(न०) दूध, दही, छाछ, मक्खन आदि गाय के द्वारा प्राप्त होने वाली वस्तुएँ ।
गोरहर(न०) जैसलमेर किले का नाम ।
गोरंग-(वि०) गौर वर्ण का । (न०) १. अंगरेज । २. यूरोपियन ।
गोरंगी-(वि०) गौर वर्ण वाली । सुन्दर । (ना०) अंगरेज स्त्री ।
गोरावो-(न०) एक जाति का साँप ।
गोरांगी-दे० गोरंगी ।
गोरांदे-(ना०) १. गौरी । पार्वती । २. पत्नी । ३. गौर वर्णवाली स्त्री ।
गोरी-(वि०) १. गौर वर्ण की । सुन्दर । (न०)१. मुसलमान । २. ग्वाला । (ना०) गौर वर्ण की स्त्री ।
गोरीराय-(न०) बादशाह ।
गोरु-(ना०) गाय । (न०) गोवंश । (वि०) कायर । डरपोक ।
गोरो-(वि०) गौर वर्ण का । (न०) १. यूरोप का निवासी । २. अंग्रेज । फिरंगी । ३. गोरा भैरव ।
गोरोचन-(न०) गाय के पित्ताशय से प्राप्त होने वाला एक सुगन्धित द्रव्य ।
गोरो-निचोर-(वि०) खूब गोरा । सुन्दर वर्ण का ।
गोळ-(न०)१. वृत्ताकार । वृत्त । २. समूह । झुंड । ३. सेना । फौज । ४. शक । संदेह । ५. अंतर । फर्क । ६. षड्यन्त्र । जाल । ७. एक शस्त्र । ८. घेरा । (वि०) १. वृत्त या चक्र की तरह का । घेरे वाला । २. गेंद या गोले की तरह का । गोल ।
गोल-(न०) १. सेना का मध्य भाग । २. गोला । वर्णसंकर । ३. गोलों का मुहल्ला । ४. दास । सेवक ।
गोलक-(न०) १. रुपया पैसा रखने की पेटी । गल्ला । २. वर्णसंकर । गोलो ।
गोळ गूंथणो-(मुहा०) षड्यंत्र रचना ।
गोलण-(ना०) गोले की स्त्री । गोली । २. दासी ।
गोलणो-(न०) १. वर्णसंकर । गोलो । २. दास । नौकर ।
गोळ-मटोळ-(वि०) १. बिल्कुल गोल । २. अस्पष्ट (बात) ।
गोळमाळ-(न०) १. गोलमाल । २. अव्यवस्था । ३. घपला । घोटाला । ४. मिलावट ।
गोळमोळ-(वि०) १. गोल-गोल । बिल्कुल गोल । २. अस्पष्ट ।
गोळवो-(न०) गेहूँ के आटे का दड़ी के जैसा गोल बनाये जाने वाला एक भोज्य पदार्थ । रोटक । रोटो । बाटी ।

गोलाई–(ना०) गोलापन। नीचता।

गोळाई–(ना०) गोलाई। घेरा।

गोळियो–(न०) १. काँसी की कटोरी। २. अंगुली में पहनी जाने वाली एक प्रकार की अंगूठी। ३. स्त्रियों के पाँव की अंगुली में पहिना जाने वाला एक छल्ला।

गोळी–(ना०) १. वटिका। २. बच्चों के खेलने की कांच की गुलिका। ३. बंदूक में भर कर छोड़ने की शीशे की गुलिका। ३. दही विलौने का मिट्टी का बड़ा पात्र। ४. पीतल या तांबे का बड़ा घड़ा। ४. वृक्ष का सूखा हुआ मोटा तना।

गोली–(ना०) १. गोले जाति की स्त्री। २. दासी। ३. गोले की स्त्री।

गोळो–(न०)१.गेंद के समान कोई गोल वस्तु। किसी वस्तु का गोलपिंड। ३. नारेली (टोपाळी) रहित नारियल। वह नारियल जिसके ऊपर का कठोर छिलका (नारेली) दूर कर दिया गया हो। गरी का गोला। **गोळो**। **गोटो**। ४. लोहे का गोल पिंड जो तोप में डाल कर छोड़ा जाता है। ५. लालटैन में लगाया जाने वाला काच का एक उपकरण। लालटैन का गोला। ६. पेट का एक रोग। गुल्म रोग।

गोलो–(न०) १. गोला जाति का आदमी। गोला। २. वर्णसंकर। ३. दास। चाकर।

गोवणियो-दे० गूणियो।

गोवर्धन–(न०) १. व्रज प्रदेश का एक पुराण-प्रसिद्ध पर्वत। श्रीकृष्ण द्वारा अंगुली पर उठाया गया एक पर्वत। २. मंदिर के द्वार के आगे स्थापित किया जाने वाला कीर्त्तिस्तम्भ। ३. गोवंश की वृद्धि। ४. दीवाली पर घर के आगे बनाया जाने वाला गोबर का एक पर्वत-रूप जिसकी स्त्रियाँ पूजा करती हैं।

गोवर्धनधारी–(न०) गोवर्धन पर्वत को अंगुली पर उठाने वाले श्रीकृष्ण।

गोवाळ–दे० गुआळ।

गोवाळियो–दे० गुआळियो।

गोविंद–(न०) १. श्रीकृष्ण। २. परब्रह्म।

गोवो–दे० गोओ। (न०) गोचर भूमि।

गोश्त–(न०) मांस।

गोष्ठी–(ना०) १. मंडली। २. बातचीत। ३. परामर्श।

गोस–(न०) १. कान। २. गोश्त।

गोसवारो–(न०) १. आय-व्यय का लेखा तथा ब्योरा। गोशवारा। २. योग। जोड़।

गोसियळ–दे० गोसेल।

गोसेल–(वि०) क्रोधी। गुस्सैल।

गोसो–(न०)१. एकान्त। गोशा। २. कोना। गोशा। खूणो। ३. अंडकोश वृद्धि रोग। ४. अंडकोश। पोतवाळ। ५. कमान, छड़ी आदि की नोक।

गोह–(ना०) छिपकली की जाति का एक बड़ा जहरीला जन्तु।

गोहर–(न०) १. गाँव के बाहर का वह मैदान, जहाँ गाँव की गायें चरने जाने को इकट्ठी होती हैं। २. गोसमूह।

गोहरी–(न०) गाँव की गायें जंगल में ले जाकर चराने वाला। २. ग्वाला।

गोहीरो–(न०) १. गोह के समान एक छोटा विषाक्त जंतु। विषखपरा। २. गोह।

गोहूं–(न०) गेहूँ।

गौ–(ना०) १. गाय। २. पृथ्वी। ३. सरस्वती।

गौतमसर–दे० गोमतसर।

गौरजा–(ना०) पार्वती। गौरी। **गवरजा**।

गौरव–(न०) १. गुरु होने का भाव। २. बड़प्पन। बड़ाई। ३. सम्मान। आदर। ४. वृद्धि। बढ़ती। ५. वर और उसके संबंधियों का गौरव-मान बढ़ाने के निमित्त कन्यापक्ष की ओर से दी जाने वाली एक विशेष ज्योनार।

गौरवान्वित–(वि०) गौरवमय। महिमामय।

गौरी–(ना०) १. पार्वती। २. गोरे रंग की स्त्री। ३. आठ वर्ष की कन्या।

गौरी शंकर–(न०) १. महादेव। २. गौरी और शंकर। ३. हिमालय की एक चोटी का नाम।

गौहर–(न०) मोती।

ग्याति–(ना०) १. जाति। २. ख्याति।

ग्यान–(न०)१. ज्ञान। तत्वज्ञान। ब्रह्मज्ञान। २. चेतनता। ३. बोध। जानकारी। ४. बुद्धि। समझ। ५. प्रतीति। भान।

ग्यान-गहीर–(वि०) ज्ञान-गंभीर।

ग्यानरण–(वि०) ज्ञान वाली।

ग्यान पंचमी–(ना०) कार्तिक शुक्ल पंचमी।

ग्यान भंडार–(न०) पुस्तकालय। ज्ञान भंडार।

ग्यान रुपेत–(न०) ज्ञान-स्वरूप।

ग्यान रूप–(न०) ज्ञान-स्वरूप।

ग्यानवान–(वि०) १. ज्ञानी। २. विद्वान।

ग्यान विसंभ–दे० गिनान-विसंभ।

ग्यानी–(वि०) १. ज्ञानवान। ज्ञानी। २. विद्वान। पंडित। (न०) आत्मज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी।

ग्याभ–(न०) गर्भ (मादा पशु का)। गाभ।

ग्याभरण–(वि०) गर्भवती (मादा पशु)। गाभरण।

ग्याभरणी–दे० ग्याभरण।

ग्यारस–(ना०) एकादशी। पक्ष का ग्यारहवाँ दिन।

ग्यारसियो–(वि०) वह, जो एकादशी का व्रत रक्खे हुए हो।

ग्रगाचार–(न०) गर्गाचार्य ऋषि।

ग्रज–दे० गरज।

ग्रजणो–दे० गरजणो।

ग्रब–(न०) गर्व। घमंड।

ग्रभ–(न०) २. गर्भ। हमल।

ग्रभवास–(न०) गर्भवास।

ग्रह–(न०) १. नक्षत्र। २. नौ की संख्या। १. नौ प्रसिद्ध तारे जो सूर्य के चारों ओर घूमते हैं।

ग्रहरण–(न०) १. सूर्य या चन्द्र पर क्रमशः चंद्र या पृथ्वी की छाया पड़ने की स्थिति। सूर्य या चंद्र का पूरा या किसी अंश में पृथ्वीवासियों को दिखाई नहीं देना। २. पकड़ना। पकड़। ३. स्वीकार। मंजूर।

ग्रहरणगंध–(न०) नाक। नासिका।

ग्रहरणी–(ना०) गृहिणी। पत्नी।

ग्रहणो–(क्रि०) १. लेना। पकड़ना। २.ग्रहण लगना। (न०) गहना। आभूषण।

ग्रहदशा–दे० ग्रहदसा।

ग्रहदसा–(ना०) ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी व्यक्ति की अच्छी या बुरी दशा। ग्रहदशा। २. गोचर ग्रहों की स्थिति। ३. दुर्भाग्य। अभाग्य।

ग्रहमिरण–(ना०) दीपक। गृहमणि।

ग्रहम्रग–(न०) कुत्ता। गृहमृग।

ग्रहस्थ–दे० गृहस्थ।

ग्रहस्थास्रम–दे० गृहस्थाश्रम।

ग्रहस्थी–दे० गृहस्थी।

ग्रहावणो–(क्रि०) १. पकड़वाना। २. प्राप्त कराना।

ग्रंथ–(न०) पुस्तक। पोथी। किताब।

ग्रंथसाहब–(न०) सिक्खों का धर्म-ग्रंथ।

ग्रंथारण–(न०) १. शास्त्र। २. ग्रंथ राशि। ग्रंथसमूह।

ग्रंथी–(न०) १. ग्रंथ साहब का पाठ करने वाला। २. ग्रन्थि। गाँठ। ३. बंधन।

ग्राम–(न०) १. गाँव। २. बस्ती। ३. राशि। ढेर। ४. शिव। ५. सप्तक (संगीत) ६. तौल की दशांश पद्धति की एक इकाई।

ग्रामदेवता–(न०) गाँव का रक्षक-देवता। खेतरपाळ।

ग्राममृग–*(न०)* कुत्ता । स्वान ।
ग्रामसिंह–*(न०)* कुत्ता । **कूतरो** ।
ग्रामसीह–*(न०)* कुत्ता । ग्रामसिंह ।
ग्रामान्तर–*(न०)* दूसरा गाँव । **गाँवतरो** ।
ग्रामीण–*(वि०)* गाँव का रहने वाला । देहाती । गँवार । **गमार** । **गिंवार** ।
ग्राव–*(न०)* पत्थर ।
ग्रास–*(न०)* १. राजाओं की ओर से अपने छुटभाइयों को आजीविका के लिये दी हुई भूमि । २. कौर । **कवो** । लुकमा । ३. खुराक । भोजन । ४. लूटखसोट । ५. हिस्सा ।
ग्रासवेध–*(न०)* १. लूटखसोट । २. लूटमार । ३. लड़ाई । ४. दूसरे की जमीन या जागीरी पर किया जाने वाला बलात् अधिकार । बलात् वसूल किया जाने वाला भूमिकर ।
ग्रासियो– १. ग्रास में प्राप्त भूमि का जागीरदार । गुजारे के लिए दी हुई जागीरी का जागीरदार । २. जागीरदार । ३. पहाड़ों में रहने वाली लुटेरी जाति का व्यक्ति । ४. लूट-खसोट करने वाला व्यक्ति । ५. विद्रोही । बागी ।
ग्राह–*(न०)* मगरमच्छ ।
ग्रिध–*(न०)* गिद्धपक्षी ।
ग्रीखम–*(न०)* ग्रीष्म ऋतु । गरमी का मौसम । ऊनाळो ।
ग्रीभण–*(ना०)* गिद्धनी ।
ग्रीठ–दे० गरीठ ।
ग्रीधण–दे० ग्रीभण ।
ग्रीधाण–*(ना०)* गिद्धनियाँ । *(न०)* गिद्धों का झुंड ।
ग्रीधाणी–दे० ग्रीधण ।
ग्वाड़–दे० गवाड़ ।
ग्वाड़ी–दे० गवाड़ी ।
ग्वार–दे० गवार ।
ग्वारतरी–दे० गुआरतरी ।
ग्वारपाठो–दे० गुआरपाठो ।
ग्वारफळी–दे० गुआरफळी ।
ग्वाळ–*(न०)* ग्वाला । अहीर । **गुआळो** । **ग्वाळो** ।
ग्वाळियो–दे० गोआळ । ग्वाळ ।
ग्वाळेरी–*(ना०)* ग्वालियर की भाषा या बोली । *(वि०)* ग्वालियर का ।
ग्वाळो–दे० गोआळ ।

घ

घ–संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का चौथा कंठ्य व्यंजन-वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान कंठ है ।
घकार–*(न०)* वर्णमाला का चौथा व्यंजन वर्ण । 'घ' वर्ण । **घघ्घो** ।
घघ–*(न०)* ऊंट । *(ना०)* खजूर (खारक) का बीज । **कुळियो** ।
घघड़ो–*(न०)* १. बेर का बीज । **कुळियो** । २. अष्ठि । **गुठली** ।
घघ्घो–*(न०)* घकार । वर्णमाला का चौथा व्यंजन वर्ण । 'घ' वर्ण ।
घचरो–दे० घसरो ।
घचोळणो–*(क्रि०)* १. धमकाना । डराना । २. मारना । पीटना ३. विघ्न डालना ।
घट–*(न०)* १. घड़ा । २. शरीर । ३. हृदय । ४. कमी । *(वि०)* कम । थोड़ा ।
घटकार–*(न०)* कुम्हार । **परजापत** । कुंभकार ।
घटणो*(क्रि०)* १. कम होना । छीजना । २. होना । घटना । वाका होन

उचित लगना । ४. उचित होना । ५. लागू होना ।

घटना–*(ना०)* १. रचना । बनावट । २. माजरा । वारदात ।

घटमाळ–*(ना०)* १. रहँट की घड़ियों की माला । २. क्रम । प्रणाली । ३. आवागमन । जन्म-मरण ।

घट-वध–*(ना०)* १. कमीवेशी । न्यूनाधिकता । २. अवनति-उन्नति । ३. मंदी-तेजी । (व्यापारिक वस्तुओं की) ।

घटा–*(ना०)* १. बादलों का उमड़ना । मेघमाला । २. वृक्ष समूह । ३. समूह । झुंड ।

घटाटोप–*(न०)* बादलों या रज के उड़ने से हुई छाया या अंधेरा । २. आकाश में छाई हुई बादलों की घटा । घनघोर घटा । ३. ओहार । छाजन । आच्छादन ।

घटाड़णो–*(क्रि०)* १. घटाना । कम करना । २. शेष करना । बाकी निकालना । ३. उचित ठहराना । ४. लागू करना ।

घटाणो–दे० घटाड़णो ।

घटावणो–दे० घटाड़णो ।

घटिया–*(वि०)* १. अपेक्षाकृत निम्न कोटि का । उतरता । हलका । २. तुच्छ । नीच । कमसल ।

घटियो–दे० घटोलियो ।

घटूलियो–दे० घटोलियो ।

घटोलियो–*(न०)* छोटी चक्की ।

घट्टी–*(ना०)* आटा पीसने की चक्की । घरटी ।

घड़–*(ना०)* १. सेना । २. शरीर । ३. समूह । ४. घटा । ५. घड़ा । ६. परत । तह । *(क्रि०वि०)* १. यथास्थिति । ठिकाने सर । २. समुचित रूप में ।

घड़घड़ाट–*(न०)* गर्जन । गाड़ी चलने आदि से होने वाला शब्द ।

घड़णो–*(क्रि०)* १. घड़ना । बनाना । आकार देना । २. शिक्षित बनाना । योग्य बनाना । ३. माल बेच कर पैसा बनाना ।

घड़त–दे० घड़तर ।

घड़तर–*(ना०)* १. बनावट । गढ़न । २. कारीगरी । ३. शिल्प ।

घड़ बैठणो–*(मुहा०)* १. समुचित रूप से तय होना । २. किसी काम का यथा स्थिति, यथास्वरूप पार पड़जाना ।

घड़भंजण–*(ना०)* १. निर्माण और नाश । २. उथल-पुथल । ३. विचारों का उठना और समा जाना । विचारों की उथल-पुथल । उधेड़बुन । *(वि०)* सेना का नाश करने वाला । वीर ।

घड़मोड़–*(वि०)* शत्रु की सेना को पीछे हटाने वाला । २. शूरवीर ।

घड़ली–*(ना०)* १. रहँट की माल में बँधी रहने वाली घड़िया । घेड । २. कागज, कपड़े आदि की परत । घड़ी ।

घड़वै–*(न०)* सेनापति ।

घड़ा–*(ना०)* १. सेना । फौज । २. समूह । झुंड ।

घड़ाई–*(ना०)* १ घड़ने का काम । २. घड़ने का पारिश्रमिक ।

घड़ाणो–दे० घड़ावणो ।

घड़ामण–दे० घड़ाई ।

घड़ामणी–दे० घड़ामण ।

घड़ामोड़–दे० घड़मोड़ ।

घड़ाळ–*(वि०)* १. सेना वाला । २.शूरवीर ।

घड़ावणो–*(क्रि०)* घड़ाना । गढ़ाना । बनवाना ।

घड़ा-विभाड़–*(वि०)* शत्रु सेना का नाश करने वाला ।

घड़ियक–*(क्रि०वि०)* घड़ी भर के लिये । एक घड़ी भर ।

घड़ियाल–*(ना०)* १. घड़ी । २. घंट । टकोरा । *(न०)* मगरमच्छ । ग्राह ।

घड़ियो–*(न०)* १. किसी अंक के एक से १० तक गुणनफलों की क्रमिक सारणी ।

पहाड़ा । **गुढियो** । पट्टी पहाड़ा । २. सुवर्णकार । ३. छोटा घड़ा ।

घड़ी–*(ना०)* १. चौबीस मिनट का समय परिमाण । २. समय । ३. अवसर । ४. एक समय सूचक यंत्र । **घड़ियाल** । ५. रहट की माल में लगी हुई कुलिया । **घड़लो** । ६. कपड़े, कागज आदि की परत ।

घड़ी-घड़ी–*(क्रि०वि०)* बार-बार ।

घड़ीभर–*(अव्य०)* थोड़ी देर । थोड़ी देर के लिये ।

घड़ूलो–*(न०)* छोटा घड़ा ।

घड़ो–*(न०)* घड़ा । कलसा ।

घड़ोटिया–*(न०ब०व०)* एकादशा की शुद्धि क्रिया के उपरान्त मृतक के बारहवें दिन की एक विशेष अशौच-निवारण क्रिया जिसमें बारह पिण्डों के अतिरिक्त (घट-स्वरूप) पानी भरे बारह घड़े, बारह जल छानने और उनके ऊपर बारह थालियों में उस दिन का बनाया हुआ मिष्टान्न भर करके शुद्ध किये हुए तर्पण स्थान में रख दिये जाते हैं और फिर तर्पण करके मिष्टान्न सहित वे घड़े संबंधी और कुटुंबी-जनों में अशौच निवारण की सूचना रूप में दिये जाते हैं और पिंड गाय को दे दिये जाते हैं । बारहवें दिन का श्राद्ध । द्वादशा । **बारियो** ।

घड़ोटियो–*(न०)* छोटा घड़ा ।

घण–*(न०)* १. बड़ा हथौड़ा । २. बादल । मेघ । ३. द्विदल अनाज में पड़ने वाला एक कीड़ा । घुन । ४. समूह । झुंड । ५. लोहा । *(वि०)* १. बहुत । अधिक । २. ठोस । दृढ़ ।

घणकरो–*(वि०)* १. बहुत सा । *(क्रि०वि०)* प्रायः । बहुत करके । अकसर ।

घणखाऊ–*(वि०)* अधिक खाने वाला ।

घणघणा–*(वि०)* बहुत अधिक ।

घणघट्ट–*(वि०)* अत्यन्त ।

घणघोर–*(न०)* मेघ गर्जन । *(वि०)* १. घनघोर । भयंकर । २. बहुत । ३. गहरा । घना ।

घणचक–*(न०)* १. भीड़ । भीड़भाड़ । २. मेला । ३. युद्ध । ४. बड़ा आयोजन ।

घणजाण–*(वि०)* १. बहुज्ञ । २. बुद्धिमान । पंडित । ३. कलाविद । ४. होशियार । चतुर ।

घणजाणग–दे० घणजाण ।

घणदाता–*(वि०)* अधिक दान देने वाला । औढर दानी । **घणदेवाळ** ।

घणदीहो–*(वि०)* १. वृद्ध । बुड्ढ़ा । २. बहुत दिनों का । पुराना । ३. बासी ।

घण-देवजी-रोटा–*(न०ब०व०)* १. देवी-देवता के निमित्त बनाये जाने वाले घी, गुड़ मिश्रित बाटी (रोटों) के चूरमे के लड्डू । २. विशेष प्रकार से बनाया हुआ देवता के निमित्त का रोटा-भोज । ३. हनुमानजी के लिये बनाया हुआ मोटी रोटियों के चूरमे का भोज । रोट । ४. बड़ी बाटी । गोल आकार के बड़े रोटे । **गोळवा** ।

घणदेवाळ–*(वि०)* दातार । **घणदाता** ।

घणनामी–*(वि०)* असंख्य नामों वाला । *(वि०)* ईश्वर । परमेश्वर ।

घणमंड–*(न०)* मेघ घटा ।

घणमोली–*(वि०)* बहुमूल्य । महँगी ।

घणमोलो–*(वि०)* १. अमूल्य । बहुमूल्य । २. महँगा । ३. प्रिय ।

घणरूप–*(वि०)* अनेक रूपों वाला । *(न०)* ईश्वर ।

घणसहवाळ–दे० घणसहो ।

घणसहो–*(वि०)* सहनशील । **भरखमो** । **भारीखमो** ।

घणसार–*(न०)* १. कपूर । २. चंदन । ३. पारा । ४. धुंआं । ५. वर्षा । ६. पानी ।

घणस्याम-(न०) १. घनश्याम। श्रीकृष्ण। २. काला बादल। (वि०) अधिक श्याम। बहुत काला।

घणहर-(ना०) घटा।

घणाक-(वि०) बहुत से। ज्यादातर।

घणाघणी-(ना०) १. आश्चर्यजनक बात। २. बहुत अधिक होशियारी की बात या काम। ३. चालबाजी।

घणाजीवो-(अव्य०) चिरायु हो। दीर्घजीवी हो। आशीर्वाद।

घणारग-(अव्य०) १. बहुत आभार। २. धन्य। धन्यवाद। शाबास। ३. वाह-वाह।

घणी खमा-(अव्य०)१. गुरुजन आदि अत्यन्त सम्मानित पुरुषों को किया जाने वाला अभिवादन। २. बहुत क्षमावान हैं आप। ३. गुरुजनों की बात का स्वीकृति सूचक शब्द। 'हाँ' शब्द का एक शिष्ट पर्याय।

घणी बात-(वि०) १. अनेक गुणों से अलंकृत। २. महिमावंत। ३. आदरणीय।

घणी वार-(क्रि०वि०)१. कई बार २.प्रायः। ३. कभी २। ४. बहुत देर।

घणूं-दे० घणो।

घणेरो-(वि०) बहुतेरा। बहुल। बहुत सारा।

घणो-(वि०) अधिक। बहुत। पुष्कल।

घणोखरो-दे० घणकरो।

घतावणो-दे० घलावणो।

घन-(वि०) १. ठोस। २. घना। गाढ़ा। ३.बहुत। अधिक। (न०) बादल। मेघ।

घनघोर-दे० घणघोर।

घनमंड-दे० घणमंड।

घनरूप-(वि०) मेघ के समान श्याम रूप। श्यामवर्ण।

घनवान-(वि०) मेघ के समान वर्णवाला। मेघवान। श्यामवर्ण।

घनश्याम-(न०) श्रीकृष्ण।

घनसार-दे० घणसार।

घबराट-(ना०) १. घबराहट। हड़बड़ी। २. व्याकुलता।

घबराणो-दे० घबरावणो।

घबरावणो-(क्रि०) १. घबराना। हड़बड़ाना। २. व्याकुल होना।

घबरीजणो-(क्रि०) १. घबरा जाना। हड़बड़ा जाना। २. व्याकुल होना।

घमक-(न०) १. भाले के प्रहार का शब्द। २. अधिक जोर की वर्षा का शब्द। ३. मेहमानों को भोजन के समय बार-बार अधिक से अधिक घी परोसने की मनुहारें। जैसे-'घी री घमक उड़ रही है।' ४. लूहर और घूमर नाम के नृत्यों में एक नृत्य ताल। ५. अनेक पाँवों के घुंघुरुओं का एक साथ होने वाला तालबद्ध शब्द।

घमकणो-(क्रि०) १. नाचना। २. घटा का उमड़ना। ३. अचानक आ पड़ना।

घमको-(न०) १. नाच में घुंघुरुओं का लगने वाला झटका। २. एक नृत्य ताल।

घमचाळ-(ना०) १. युद्ध। २. प्रहार। ३. सेना। फौज। **धमचाळ**।

घमड़-घमड़-(अनु०) चक्की का तेजी से चलने का शब्द।

घमरोळ-(ना०) १. ऊधम। २. उत्पात। ३. युद्ध। ४. खलबली। ५. प्रहार।

घमसाण-(वि०) भयंकर। प्रचण्ड। (न०) १. भयंकर युद्ध। २. सेना। ३. समूह। ४. भीड़। ५. शोर। ६. नाश।

घमंड-(न०) अहंकार। गर्व।

घमंडी-(वि०) अभिमानी।

घमोड़णो-(क्रि०) १. ठोकना। पीटना। २. धमकाना। डराना। ३. मारना। नाश करना। ४. बहुत खाना। ५. बिलौना करना।

घय-(ना०) १. चोट। जख्म। २. ढोल या नगाड़े का शब्द। **धाई**।

घर-(न०) १. मनुष्य का रहने का स्थान। मकान। घर। गृह। आवास। २. किसी वस्तु का कोष। आवरण। ३. कुल। वंश। ४. वस्तु रखने का कोठा। खाना। ५. चौपड़, शतरंज आदि का खाना। ६. कोठरी। ७. जन्म स्थान। ८. जन्म कुंडली में ग्रह विशेष का स्थान। ९. मूल कारण। जैसे-'रोग रो घर खाँसी।'

घर-आँगणो-(न०) १. घर का आँगन। २. अति परिचित और निकट का स्थान। ३. बार बार आते जाते रहने का स्थान।

घरकोलियो-(न०) १. छोटा और कच्चा घर। २. अवदशा को प्राप्त हुआ घर। ३. पाँव के पंजे पर गीली मिट्टी थपथपा कर बच्चों द्वारा बनाया हुआ विवर।

घर-खरच-(न०) १. घर वालों का निर्वाह करने में होने वाला खर्च। २. घर में या घर के संबंध में होने वाला खर्च। घरखर्च।

घरगतु-(वि०) १. जो घर के उपयोग के लिये बना हो। २. जो बेचने के लिये नहीं बनाया गया हो। ३. खानगी।

घर गरणो-(न०) विधवा का पुनर्लग्न। **नातो। नातरो।**

घर-घर-(अव्य०) प्रतिघर।

घर जमाई-(न०) १. वह व्यक्ति जो ससुर का आश्रित होकर ससुराल में ही रहे। २. वह व्यक्ति जो अपनी प्रथा के अनुसार विवाह संबंध के निमित्त अपनी ससुराल में रहने के लिये बाधित होता है।

घरजाम-(वि०) घर में जन्म लिया हुआ (गोद आया हुआ नहीं।) २. विवाहिता पत्नी से उत्पन्न। औरस।

घरट-(न०) भैंसे द्वारा चलाई जाने वाली चूना पीसने की बड़ी चक्की। घट्टा। घरट्ट। २. घेरा। ३. समूह। (वि०) बहुत अधिक।

घरटियो-दे० घटोलियो।

घरटी-(ना०) आटा पीसने की चक्की। घट्टी।

घरणी-(ना०) १. गृहिणी। पत्नी। २. स्त्री। लुगाई।

घर दीवो-(न०) वंश का दीपक। वंश को प्रकाशित करने वाला। पुत्र।

घर-धण-(ना०) १. स्वपत्नी। २. घर की स्वामिनी।

घर-धणियाणी-(ना०) १. पत्नी। २. घर की मालकिन।

घर-धणी-(न०) १. पति। २. गृहस्वामी। ३. मकान का मालिक।

घरनार-(ना०) पत्नी। लुगाई।

घरनाळो-(न०) मिट्टी का पकाया हुआ नल जैसा फुट डेढ़ फुट का एक टुकड़ा। **परनाळो।** घरनाला।

घरबार-(न०) १. बाल बच्चे वगैरह। **घर-गिरस्ती।** २. घर की चीज वस्तु। माल-मिल्कीयत।

घरबारी-(वि०) १. घर वाला। २. संसारी। गृहस्थी।

घरबीती-(वि०) खुद में बीती हुई। (ना०) निजी तथा घर के सुख-दुख की बात। 'पर बीती' का उलटा।

घर बूडो-(वि०) घर को नष्ट करने वाला। घर घालक।

घर भेदू-(वि०) १. घर का भेद जानने वाला। २. घर का भेद जानकर चोरी करने वाला। ३. घर का भेद खोल कर दगा देने वाला।

घरमंड-(न०) १. धन। सम्पत्ति। २. घर का स्वामी। गृहपति। ३. पति। ४. कुल की शोभा।

घरमंडण-(न०) १. स्वामी। पति। २. घर की शोभा। ३. पुत्र। ४. कुल

घर–*(न०)* १. मनुष्य का रहने का स्थान। मकान। घर। गृह। आवास। २. किसी वस्तु का कोष। आवरण। ३. कुल। वंश। ४. वस्तु रखने का कोठा। खाना। ५. चौपड़, शतरंज आदि का खाना। ६. कोठरी। ७. जन्म स्थान। ८. जन्म कुंडली में ग्रह विशेष का स्थान। ९. मूल कारण। जैसे–'रोग रो घर खांसी।'

घर-आँगणो–*(न०)* १. घर का आँगन। २. अति परिचित और निकट का स्थान। ३. बार बार आते जाते रहने का स्थान।

घरकोलियो–*(न०)* १. छोटा और कच्चा घर। २. अवदशा को प्राप्त हुआ घर। ३. पाँव के पंजे पर गीली मिट्टी थपथपा कर बच्चों द्वारा बनाया हुआ विवर।

घर-खरच–*(न०)* १. घर वालों का निर्वाह करने में होने वाला खर्च। २. घर में या घर के संबंध में होने वाला खर्च। घरखर्च।

घरगतु–*(वि०)* १. जो घर के उपयोग के लिये बना हो। २. जो बेचने के लिये नहीं बनाया गया हो। ३. खानगी।

घर गरणो–*(न०)* विधवा का पुनर्लग्न। **नातो। नातरो।**

घर-घर–*(अव्य०)* प्रतिघर।

घर जमाई–*(न०)* १. वह व्यक्ति जो ससुर का आश्रित होकर ससुराल में ही रहे। २. वह व्यक्ति जो अपनी प्रथा के अनुसार विवाह संबंध के निमित्त अपनी ससुराल में रहने के लिये बाधित होता है।

घरजाम–*(वि०)* घर में जन्म लिया हुआ (गोद आया हुआ नहीं।) २. विवाहिता पत्नी से उत्पन्न। औरस।

घरट–*(न०)* भैंसे द्वारा चलाई जाने वाली चूना पीसने की बड़ी चक्की। घट्टा। घरट्ट। २. घेरा। ३. समूह। *(वि०)* बहुत अधिक।

घरटियो–दे० घटोलियो।

घरटी–*(ना०)* आटा पीसने की चक्की। घट्टी।

घरणी–*(ना०)* १. गृहिणी। पत्नी। २. स्त्री। लुगाई।

घर दीवो–*(न०)* वंश का दीपक। वंश को प्रकाशित करने वाला। पुत्र।

घर-धण–*(ना०)* १. स्वपत्नी। २. घर की स्वामिनी।

घर-धणियाणी–*(ना०)* १. पत्नी। २. घर की मालकिन।

घर-धणी–*(न०)* १. पति। २. गृहस्वामी। ३. मकान का मालिक।

घरनार–*(ना०)* पत्नी। लुगाई।

घरनाळो–*(न०)* मिट्टी का पकाया हुआ नल जैसा फुट डेढ़ फुट का एक टुकड़ा। **परनाळो**। घरनाला।

घरबार–*(न०)* १. बाल बच्चे वगैरह। **घर-गिरस्ती**। २. घर की चीज वस्तु। माल-मिल्कीयत।

घरबारी–*(वि०)* १. घर वाला। २. संसारी। गृहस्थी।

घरबीती–*(वि०)* खुद में बीती हुई। *(ना०)* निजी तथा घर के सुख-दुख की बात। 'पर बीती' का उलटा।

घर बूडो–*(वि०)* घर को नष्ट करने वाला। घर घालक।

घर भेदू–*(वि०)* १. घर का भेद जानने वाला। २. घर का भेद जानकर चोरी करने वाला। ३. घर का भेद खोल कर दगा देने वाला।

घरमंड–*(न०)* १. धन। सम्पत्ति। २. घर का स्वामी। गृहपति। ३. पति। ४. कुल की शोभा।

घरमंडण–*(न०)* १. स्वामी। पति। २. घर की शोभा। ३. पुत्र। ४. कुल

घराण–(ना०) १. युद्ध । लड़ाई । २. सेना । फौज । ३. मार्ग ।

घसणो–(क्रि०) घिसना । रगड़ना ।

घसरको–(न०) १. खरोंच । २. दूसरे के लिये उठाई जाने वाली हानि और कष्ट । ३. बेगार । वेठ । दे० घसारो ।

घसरो–(न०) १. बिना मतलब का काम । व्यर्थ का काम । २. बिना पारिश्रमिक के किया जाने वाला काम । ३. हैरानी का काम । ४. प्रासंगिक काम । ५. मन को नहीं रुचने वाला काम । ६ काम पर काम । काम की अधिकता । एक साथ अनेक काम ।

घसाणो–दे० घसावणो ।

घसारो–(न०) १. विवशता अथवा लिहाज से किसी का मुफ्त में किया जानेवाला काम । २. दूसरे के लिये उठायी जाने वाली हानि । ३. वेगार । ४. हानि । नुकसान । ५. घिसाई । ६. घिसा जाना । छीजन । घटाव ।

घसावणो–(क्रि०) घिसाना ।

घसियारो–(न०) घासवाला । घसियारा ।

घसीट–(ना०) १. घसीटने की क्रिया या भाव । २. जल्दी की लिखावट । शीघ्र लिखावट ।

घसीटणो–(क्रि०) १. रगड़ते हुए खींचना । १. जल्दी जल्दी में लिखना । जैसा तैसा लिखना ।

घंट–(न०) १. बड़ी घंटी । घंटो । २. कंठ । (वि०) उस्ताद ।चालाक ।

घंटारव–(न०) घंट बजने की ध्वनि ।

घंटाळ–(वि०) जिसके गले में घंट बँधा हुआ हो ।

घंटाळी–(ना०) घंटिका देवी ।

घंटियाल–(न०) फोग के छोटे छोटे दानों (फोगला) के पक जाने की संज्ञा । पका हुआ फागला । फोग मंजरी ।

घंटी–(ना०) छोटा घंटा ।

घंटो–(न०) १. साठ मिनिट का समय । दिन-रात का चौबीसवाँ भाग । २. धातु का एक बाजा जो केवल ध्वनि उत्पन्न करता है । घंट । बाजा । लिंगेन्द्रिय । (गाली के रूप में)

घंटो देखावणो–(मुहा०) अंगूठा दिखाना । इनकार करना ।

घंस–(न०) १. मार्ग । २. बड़ा मार्ग । ३. सेना का मार्ग । ४. युद्ध । ५. सेना । ६. संहार । ध्वंस । ७. समूह ।

घंसार–(न०) १. मार्ग । २. नाश । ३. सेना । फौज । ४. युद्ध । (वि०) १. युद्ध करने वाला । नाश करने वाला । ३. पीछा करने वाला ।

घा–(न०) १. घाव । २. घास । चारा । ३. नाश ।

घाई–(ना०) ढोल नगाड़े आदि बड़े वाद्यों का (दूसरे वाद्यों के साथ) तालबद्ध वादन । दो वाद्यों के बजने का मिलान । तान । २. ढोल नगाड़े आदि का शब्द । ३. अजस्र वादन । बजाते जाना । ४. किसी वस्तु या बात के लिये लगायी जाने वाली रटन । अजस्रता । अविच्छिन्नता । जैसे—कँई घाई लगा दी है, चुप रह । ५. उतावल । दौड़धूप ।

घाउ–(न०) १. घाव । २. नाश । (वि०) घाव करने वाला । प्रहार करने वाला ।

घाघ–(वि०) १. बहुत चालाक । २. अनुभवी । (न०) एक अनुभवी व्यक्ति जिसके नाम की वर्षा व कृषि सम्बन्धी कहावतें प्रसिद्ध हैं ।

घाघड़दी–(वि०) गहरी । गाढ़ी ।

घाघरी–(ना०) छोटा लहँगा । घघरी ।

घाघरो–(न०) लहँगा । घाघरा ।

घाघस्याण–(न०) ब्राह्मणों का एक भेद ।

घालणो-(क्रि०) १. डालना। रखना। छोड़ना। २. अंदर रखना। ३. घुसाना। प्रवेश कराना। ४. मिलाना। ५. बिगाड़ना। ६. मारना। नाश करना।

घालमेल-(ना०) १. हस्तक्षेप। दखल। दस्तंदाजी। २. उखाड़-पछाड़। ३. किसी बात पर आवश्यकता से अधिक विचार विनिमय। ४. प्रपंच। बखेड़ा। ५. निकालने और डालने का काम। इधर-उधर करना। ६. फेरफार करना। हेरा-फेरी। ७. व्यर्थ का काम। ८ चुगली-चाँटी। इधर-उधर लगाने का काम।

घालामेलो-(न०) १. भोज के अवसर पर कमीन-कारू आदि नेग वालों को काँसा (जीमन) परोसने का काम। २. निमंत्रित व्यक्तियों के नहीं आ सकने पर उनके लिए थाल परोसकर भेजने का काम। दे० घालमेल १, २, ४ और ५।

घाव-(न०) १. क्षत। जख्म। २. आघात। चोट। प्रहार।

घाव करियो-(वि०) घाव करने वाला। मारने वाला।

घावड़ियो-(वि०) १. घाव करने की ताक में रहने वाला। २. मारने वाला। घातक। ३. अवसर का लाभ उठाने वाला। ३ होशियार। चालाक। (न०) हानि पहुँचाने या मारने की ताक में रहने वाला या पीछा करने वाला व्यक्ति। २. जासूस।

घावणो-(क्रि०) १. घाव करना। प्रहार करना। २. मारना। संहार करना।

घाव भरीजणो-(मुहा०) घाव का दुरुस्त होना।

घा वेकरियो-(न०) घाव के खून को बंद करने वाला एक घास।

घास-(न०) तृण। चारा। खड़।

घास चराई-(ना०) पशुओं को घास चराने का कर।

घासतेल-(न०) मिट्टी का तेल। घासलेट।

घासफूस-(न०) कूड़ा करकट।

घास बराड़-दे० घास चराई।

घासमारी-(ना०) मवेशी रखने वालों से लिया जाने वाला कर।

घासलेट-(न०) मिट्टी का तेल। घासतेल।

घासियो-(न०) १. मोटा गद्दा। २. ऊंट के पलान पर बिछाया जाने वाला गद्दा।

घासियो कसणो-(मुहा०)१. रवाना होना। २. ऊँट पर घासिया रखना।

घासो-(न०) १. औषध को पानी में घिस कर देने का प्रकार। इस प्रकार घिसकर दी जाने वाली औषधि। ३. पानी में घिसी हुई औषधि का द्रावण। ४. दूसरे के बदले में उठायी जाने वाली हानि।

घासो खाणो-(मुहा०) दूसरे के बदले में हानि उठाना।

घाह-(ना०) लहँगे, घाघरे, पायजामे इत्यादि में नाड़ा डालने की जगह। नेफा।

घाँचण-(ना०) १. घाँची की स्त्री। २. घाँची जाति की स्त्री।

घाँची-(न०)१. कोल्हू चलाने वाली जाति का व्यक्ति। २. तिलहन पेलने वाली जाति।

घाँटकी-दे० घाँटी।

घाँटकी दावणी-दे० घाँटो दावणो।

घाँटी-(ना०) १. कंठ। २. गरदन। ३. गले की वह हड्डी जो आगे की ओर निकली रहती है। टेंटुआ।

घाँटो-(न०) १. कंठ। २. गरदन। ३. गला।

घाँटो-टूंप-(न०) १. गले में टूंपा आये जैसी दशा। २. गला-घोंट।

घाँटो दावणो-(मुहा०)१. गला दबोचना। २. मजबूर करना।

घाँतरड़ो-(न०) गला। कंठ।

घाँदो-(न०) १. बाधा। अड़चन। २. विघ्न।

घांसाड़–दे० घांसाहर ।
घांसाड़ो–*(वि०)* वीर । बहादुर । *(न०)* १. सेनापति । २. योद्धा ।
घांसाहर–*(ना०)* १. सेना । फौज । २. समूह । ३. वीर । ४. सिंह । ५. युद्ध ।
घांसाहरो–*(न०)* १. सेनापति । २. योद्धा ।
घिनड़ो–*(न०)* १ घास, लकड़ी बेचने वाली जाति का व्यक्ति । २. गंदा रहने वाला व्यक्ति ।
घिरणो–*(क्रि०)* १. लौटना । फिरना । २. गई हुई या खोई हुई वस्तु का प्राप्त होना । ३. घिर जाना । आवृत होना । ३. एकत्रित होना ।
घिरत–*(न०)* घृत । घी ।
घिरोळो–*(न०)* डर के कारण मन में उठने वाला वेग । २. चक्कर । ३. बेहोशी ।
घिलोड़ी–दे० घीलोड़ी ।
घिसणो–*(क्रि०)* १- घिसना । रगड़ना ।
घिसाणो–दे० घिसावणो ।
घिसारो–दे० घसारो ।
घिसावणो–*(क्रि०)* घिसाना । घिसवाना ।
घिस्सो–*(न०)* झांसा । झुल । धोखा ।
घी–*(न०)* घृत । घी । तूप ।
घी-खीचड़ी–*(ना०)* १. समान संबंध । २. प्रेम संबंध । ३ लाभ ।
घी-खीचड़ी रो मेळ–*(मुहा०)* १. लाभ । २. प्रेम सम्बन्ध । ३. समान सम्बन्ध । ४. मृतक के पीछे किये जाने वाले अनेक टंकों के ज्याति-भोज (मौसर) का घी और खिचड़ी का पहला भोज ।
घी घालणो–*(मुहा०)* १. हानि पहुँचाना । २. विघ्न डालना ।
घी चोपड़णो–*(मुहा०)* १- फुसलाना । २. धोखा देना ।
घी देणो–*(मुहा०)* अग्नि संस्कार के समय कपाल तोड़कर के उसमें घी डालना । कपाल क्रिया की विधि करना ।
घींगड़–*(न०)* शेखावाटी में होली-त्योहार के दिनों में पुरुषों द्वारा खेला जाने वाला एक डंडिया नृत्य । गींदड़ रास ।
घीनरो–*(न०)* फटा-पुराना और मैला कपड़ा ।
घी पीणो–*(मुहा०)* किसी काम को सुगम समझना ।
घी रा दीवा बळणा–*(मुहा०)* १. अत्यन्त वैभवशाली बनना । २. वैभव का उपभोग करना ।
घी री नाळ देणी–*(मुहा०)* मोटे बांस की नली को घी से भर कर गाय, भैंस, ऊंट आदि के मुँह में डालकर पिलाना ।
घी री माखी–*(वि०)* १. घृणित । २. उपेक्षित ।
घीलोड़ी–*(ना०)* घृतपात्र । घी की लुटिया ।
घीसणो–दे० घींसणो ।
घींचणो–*(क्रि०)* १. खींचना । २. घसीटना ।
घींचीजणो–*(क्रि०)* १. खींचा जाना । २. घसीटा जाना ।
घींसणो–*(क्रि०)* घसीटना ।
घींसार–*(न०)* १. मार्ग । २. विकट जगह में बनाया हुआ मार्ग ।
घींसाळी–*(ना०)* १. हल को आड़ा रख कर के (घर से खेत और खेत से घर तक बैलों द्वारा) ले जाने का लकड़ी का बनाया हुआ साधन । २. क्यारों में पानी पहुँचाने वाली नाली में पानी नहीं सोखने देने के लिये नाली में चिकनी मिट्टी लेप करने की क्रिया ।
घुचरियो–*(न०)* पिल्ला । **कूकरियो** । **गूलरियो** ।
घुटणो–*(क्रि०)* भंग, ठंडाई आदि का पिसना । २. दम घुटना । ३. मन ही मन दुखी होना । कुढ़ना । *(न०)* घुटना । **गोडो** ।
घुटाई–*(ना०)* घोटने का काम अथवा उसकी मजदूरी ।

घुटाणो–(क्रि०) घुटवाना ।

घुटीजणो–(क्रि०) १. घोटा जाना । २. क्रोधित होना । ३. दम घुटना । ४. क्रोध से अंदर ही अंदर घुटना ।

घुड़काणो–(क्रि०) धमकाना । डाँटना ।

घुड़की–(ना०) धमकी । डाँट ।

घुड़चढ़ी–(ना०) विवाह की एक प्रथा ।

घुड़चराई–दे० घोड़ा-चारण ।

घुड़नाळ–दे० अ्रसनाळ ।

घुड़लो–(न०) १. चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से सप्तमी तक मनाया जाने वाला कन्याओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार । २. अनेक छिद्रों वाला एक छोटा मिट्टी का घड़ा जिसमें दीपक जला रहता है । कन्याएं इसे सिर पर उठा कर दुष्टों द्वारा सतीत्व रक्षा करने और सतीत्व महिमा के गीत गाती हैं । ३. इस संबंध का एक लोकगीत ।

घुड़साळ–(ना०) घुड़शाला । **पायगा । तबेलो** ।

घुण–(न०) मूंग, मोठ आदि द्विदल अन्न व लकड़ी में उत्पन्न होने वाला और उसी को खाने वाला कीड़ा । घुन ।

घुण पड़णा–(मुहा०) नाज में घुन पैदा होना ।

घुण लागणो–(मुहा०) १. नाज में घुन पैदा होना । २. नहीं मिटने वाली बीमारी का लगना । ३. लंबी बीमारी लगा कर देखना ।

घुरकाणो–(क्रि०) धमकाना । डाँटना । **घुड़काणो** ।

घुरकावणो–दे० घुरकाणो ।

घुरको–(न०)१. डाँट । धमकी । २. गुर्राहट ।

घुरड़का-रो-दान–(न०) १. मृत्यु के समय दिया जाने वाला दान । २.निकृष्ट दान ।

घुरड़को–(न०) १. मृत्यु के समय कफ उठ जाने से कंठ में होने वाली घरघराहट । २. अंतिम साँस के समय दिया जाने वाला दान ।

घुरड़णो–(क्रि०)१. रगड़ना । २. खरोंचना ।

घुरणो–(क्रि०) १. नगाड़े, ढोल आदि का बजना । २. बादलों का गरजना । ३. कुत्ते आदि पशुओं का गुर्राहट करना । गुर्राना । ४. एक टक देखना ।

घुरस–(ना०) घोड़े का गरदन झुका कर पैर पटकने की क्रिया ।

घुरस खाणो–(मुहा०) घोड़े का पैर पटक कर गरदन झुकाना ।

घुरसाळी–(ना०) कुतिया, लोमड़ी आदि के रहने का खड्डा । घुरिया ।

घुरसाळो–(न०) घोंसला ।

घुरावणो–(क्रि०) १. ढोल, बाजा आदि बजाना । २. बजवाना । ३. गरजना । ४. निद्रावस्था में जोर से खुर्राटों की आवाज करना ।

घेचणो–(क्रि०) घसीटना । खींचना । लेजाना ।
घेटियो–(न०) भेड़ का बच्चा । मेमना ।
घेटो–(न०) नर भेड़ । मेढ़ा ।
घेट्यो–दे० घेटो ।
घेड़–दे० घड़ली ।
घेर–(न०) १. घाघरा, जामा आदि का गोल विस्तार । घेराव । २. घेरा । परिधि । ३. समूह । टोली ।
घेरणो–(क्रि०) १. घेरना । मोड़ना । २. चारों ओर फैल जाना । ३. घेरा डालना ।
घेरदार–(वि०) घेरवाला ।
घेरो–(न०) १. परिधि । २. सेना का किसी दुर्ग आदि के चारों ओर किया हुआ घेराव । ३. घेरा हुआ स्थान । ४. गोल चक्र । घेरा ।
घेरो खाणो–(मुहा०) चक्कर खाना ।
घेरो देणो–(मुहा०) १. घेरा डालना । २. चक्कर खाना । ३. चक्कर देना ।
घेवर–(न०) एक मिठाई । घेवर ।
घैघूंवणो–दे० घेघूमणो ।
घैंसाहर–दे० घाँसाहर ।
घोई–(ना०) १. चक्कर । मोड़ । टेढ़ापन । (मार्ग का) २. बार । दफा । समय । मरतबा । ३. देर । बेर । विलम्ब ।
घोई खाणो–(मुहा०) चक्कर खाना । आँटे मारना ।
घोख–(न०) १. गर्जन । गरज । घोष । २.नाद । शब्द । ३. नारा । ४. गायों का बाड़ा । गौशाला ।
घोखणो–(क्रि०) १. रटना । २. बराबर पढ़ना । ३. मनन करना । चिंतन करना ।
घोघ–(न०) १. झाग । फेन । २. नदी के पानी का बढ़ता हुआ वेग ।
घोघड़ मिन्नो–(न०) १. बड़े सिर वाला जंगली बिल्ला । वनबिलाव । २. बच्चों को डराने का हाऊ । हौवा ।
घोचो–(न०) १. लकड़ी का छो... २. तृण । तिनका ।
घोचो लागणो–(मुहा०) घोचा
घोट–दे० घोटो ।
घोट उपड़णो–(मुहा०) लट्ठिगों होना ।
घोटणो–(क्रि०) १. घिसना । २... ३. रगड़ना ।
घोटमघोट–(वि०) १. दृढ़ । ... (मनुष्य) ।
घोटाई–(ना०) १. घोटने का क... घोटने की मजदूरी ।
घोटो–(न०) डंडा । सोंटा । घोटा
घोड़चढी–दे० घुड़चढ़ी ।
घोड़ची–(न०) घुड़सवार ।
घोड़ पलाण–(न०) घोड़े की जीन
घोड़लो–(न०) १. घोड़ा । २. द्वार में ऊपर की ओर दोनों बाजू ... वाली लकड़ी या पत्थर की ... कृति । ३. मकान की शाल के दोनों ओर आमने-सामने बना... वाला एक प्रकार का गवाक्ष । गं...
घोड़ागाँठ–(ना०) १. रस्सी में लग... वाली सरकने वाली गाँठ । सर... खूंटा गाँठ ।
घोड़ागाड़ी–(ना०) १. घोड़े से च... वाली गाड़ी । इक्का । तांगा । ...
घोड़ा चारण–(न०) घोड़ों का ... चराने का कर ।
घोड़ा नस–(ना०) १. बड़ी नस वाहिनी । २. एड़ी के पीछे की न...
घोड़ा ले–(अव्य०) आश्चर्य सूच... अव्यय पद ।
घोड़ावेग–(क्रि०वि०) १. अति शीघ्र तुरंत । एकदम । एकाएक । ... गति से ।
घोड़ियो–(न०) पालना । झूलना । ग...

घोड़ी-(ना०) १. घोड़े की मादा। अश्वा। अश्विनी। २. पालना। कपड़े की झोली का झुलना। गहवारा। ३. सेवइयां बनाने की मशीन को खड़ा करने का ढाँचा। ४. ऊंट की काठी को दो बैठकों में विभाजित करने वाला बीच का उठा हुआ भाग। ५. लंगड़े के सहारे की लाठी। ६. विवाह का एक लोक गीत। ७. बच्चों का एक खेल। ८. एक ऊंची तिपाई। ९. ताने को माँड देने के लिये उसे फैलाने का जुलाहों का एक उपकरण।

घोड़ो-(न०) १. घोड़ा। अश्व। २. सीमा चिन्ह। हदबंधी का निशान। ३. बंदूक दागने का खटका। ४. शतरंज का एक मोहरा।

घोणी-(न०) सूअर।

घोदो-(न०) १. लकड़ी व हाथ की हलकी चोट। २. तीक्ष्ण वस्तु के चुभने की क्रिया। ३. रोक। अड़चन।

घोनी-(ना०) बकरी।

घोनो-(न०) १. बकरा। २. बकरी। (वि०) बहरा।

घोवो-(न०) १. नेत्र की नस में होने वाला शूल। २. रह रह कर होने वाला शिर शूल। सिर दर्द। ३. रह रह कर होने वाला दर्द। ४. अंगुली आदि से आँख में लगने वाली चोट। ५. खेत में काटी हुई फसल के खड़े डंठल। खांपा।

घोवो चालणो-दे० घोवो हालणो।

घोवो लागणो-(मुहा०) लकड़ी चुभना। तिनका चुभना।

घोवो हालणो-(मुहा०) १. कनपटी या सिर में असह्य दर्द होना। २. आँख में दर्द होना। ३. आँख की नस में दर्द होना।

घोर-(वि०) १. भयंकर। भयानक। २. विकराल। ३. सघन। घना। ४. अत्यधिक। ५. विकट। दुर्गम। ६. गंभीर। (ना०) १. मुर्दे को दफनाने का स्थान या खड्डा। कब्र। २. नींद में होने वाला श्वास शब्द। ३. गूंज। गुंजार। ४. ढोल या नगाड़े की गंभीर ध्वनि।

घोरणो-(क्रि०) १. ढोल बजाना। २. ठोकना। पीटना। २. नींद में साँस लेने की आवाज होना। खर्राटे खींचना।

घोरंधार-(न०) १. प्रसिद्ध लोक-देवता पाबूजी के प्रतिघाती कोळू के स्वामी पमे की लोक निंदित उपाधि। २. घोर अंधेरा।

घोरावणो-(क्रि०) १. नींद की अवस्था में जोर से खर्राटे खींचना। २. जोर से ढोल या नगाड़ा बजाना।

घोरारव-(न०) १. भयसूचक आवाज। २. खूब जोर की आवाज। घोर ध्वनि।

घोळ-(न०) १. न्योछावर। उत्सर्ग। उतारा। वारीफेरी। १. न्योछावर की गई वस्तु। ३. वह पानी जिसमें कोई वस्तु हल की गई हो। पानी में मिला हुआ कोई घुलनशील पदार्थ।

घोळ करणो-(मुहा०) न्योछावर करना। उतारा करना। वारीफेरी करना। उवारणो।

घोळणो-(क्रि०) किसी घुलनशील पदार्थ को पानी में मिलाना। घोलना। मिश्रण करना। २. न्योछावर करना। वारना। वारणो। उवारणो।

घोळियो-(न०) मट्ठा। गाढ़ी छाछ। दे० घोळचो।

घोळीजणो-(मुहा०) १. पिघलना। २. न्योछावर होना। दुखी होना। मन में घुटना। मनस्ताप होना। घुटीजणो।

घोळी जाणो-(मुहा०) १. न्योछावर होना। बलि होना। बलि जाना। २. बलैया लेना।

घोळचो-(न०) एक तकिया कलाम। एक सखुन तकिया। बातचीत के बीच में

प्रायः कई मनुष्यों द्वारा स्वभावतः बोला जाने वाला एक सम्पुट। *(अव्य०)* १. अस्तु। अच्छु। अच्छा। भला। खैर। २. न्योछावर होता हूँ। वारी जाऊं। उत्सर्ग करता हूं। ३. उत्सर्ग होता हूं। बलि जाता हूं। ४. उत्सर्ग हुआ। निछावर हो गया।

घोसरण–*(ना०)* १. घोसी की स्त्री। २. घोसी जाति की स्त्री।

घोसी–*(न०)* १. गायें रखने वाला। घोषिन्। २. गूजर। ३. गायें रख कर उनके दूध को बेचने का धंधा करने वाली एक मुसलमान जाति। ४. इस जाति का व्यक्ति।

घोंघाट–*(न०)* कान में होने वाला घों-घों का शब्द।

घ्रणा–*(ना०)* घृणा। ग्लानि। नफरत।

घ्रत–*(न०)* घृत। घी।

घ्रोणी–*(न०)* शूकर। सूअर।

ङ–संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण-माला के क-वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है। महाजनी में इसका उच्चारण 'ड़' होता है। पोसाळ (पाठशाला) की बालभापा में इसे 'रड़ियो ऊमणो-दूमणो' कहते हैं। 'ङ' या 'ड़' का शब्द के आदि में प्रयोग नहीं होता।

च

च–संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला के चवर्ग का तालुस्थानीय पहला व्यंजन।

च–*(अव्य०)* १. और। अन्य। २. एक पद पूर्णार्थक वर्ण। *(न०)* १. मुख। २. चन्द्रमा। ३. अग्नि।

चइ–*(अव्य०)* 'चे' विभक्ति का एक रूप। के।

चइलो–दे० चीलो।

चउ–*(ना०)*हल का एक उपकरण। *(अव्य०)* संबंध सूचक (षष्टी) विभक्ति का एक चिन्ह। राजस्थानी की 'चो' और हिन्दी की 'का' विभक्ति का अपभ्रंश रूप।

चउक–दे० चौक।

चउगरणउ–दे० चौगुणो।

चउथ–दे० चौथ।

चउद–*(वि०)* चौदह। '१४'

चउपई–दे० चौपाई।

चउहट्ट–दे० चोहटो।

चऊ–*(ना०)* हल का एक उपकरण।

चक–*(न०)* १. एक अस्त्र। चक्र। २. पहिया। ३. चकवा पक्षी। ४. जमीन का बड़ा टुकड़ा। ५. दिशा। *(वि०)*चकित। अचंभित। *(ना०)* ओर। तरफ।

चकचक–*(ना०)* १. निंदा। चर्चा। २. लोकापवाद। ३. बकबक। ४. पक्षियों की चहचहाट।

चकचाळो–*(न०)* १. युद्ध। २. उत्पात। उपद्रव।

चकचूर–*(न०)* १. नाश। चकनाचूर।

ध्वंस। २. थकान। (वि०) १. अधिक। नशा लिया हुआ। २. थका हुआ। ३. (क्रि०वि०) चूराचूरा।

चकचूंध-(ना०)प्रकाश या चमक के कारण आंखों की दृष्टि का स्थिर न रहना। तिलमिली। चकाचौंध।

चकचूंधियो-दे० चकचूंध।

चकड़ीखम-(वि०)चकित। विस्मित।

चकडोळ-(न०)१.जनानी पालकी। डोली। २. नीचे ऊपर चक्कर खाने वाला झूला। ३. नशा। दे० वैकुंठी।

चकडोळ चढणो-(मुहा०) १. नशा छा जाना। बदनाम होना।

चकतो-(न०)१. मुसलमान। २. मुसलमानों का एक भेद। ३. चमड़ी के ऊपर उठी हुई चपटी सूजन।

चकनाचूर-(क्रि०वि०)१. चूरा-चूरा। टुकड़े टुकड़े। २. बहुत थका हुआ। ३. जो बिल्कुल टुकड़े-टुकड़े हो गया हो।

चकबंदी-(ना०) १. कई खेतों को मिलाकर एक चक बनाना। २. खेती की भूमि को चकों में बांटना। ३. भूमि को भागों में बाँटकर सीमाबंदी करना।

चकमक-(न०) १. झगड़ा। तकरार। २. चिनगारी। ३. चकमक पत्थर।

चकमो-(न०) १. धोखा। २. भुलावा। चकमा। ३. ऊन को जमाकर बनाया हुआ एक वस्त्र।

चकर-(न०) १. चक्र। २. चक्कर।

चकरड़ी-दे० चकरी।

चकराणो-(क्रि०) १. चकराना। चकित होना। २. चक्कर खाना। ३. भ्रमित होना।

चकरायत-(न०) १. योद्धा। शूरवीर। २. घबराहट। (वि०) घबराया हुआ।

चकरावणो-दे० चकराणो।

चकरी-(ना०)गिररी। फिरकनी। फिरनी।

चकरीखम-(वि०) चकित। विस्मित। चकड़ीखम।

चकरीजणो-(क्रि०) १. चकित होना। २. भ्रम में पड़ना। चकराना। ३. घबरा जाना।

चकळ-(वि०) भ्रमित। चकित।

चकलो-(न०) १. चकलोटा। चकला। २. दुश्चरित्र स्त्रियों का अड्डा।

चकलोटो-दे० चकलो।

चकवई-दे० चकवै।

चकवान-(न०) गदहा। खर।

चकवी-(ना०) चक्रवाकी। चकई।

चकवै-(न०) चक्रवर्ती राजा। सार्वभौम राजा। सम्राट। (वि०) चक्रवर्ती। सार्वभौम।

चकवो-(न०) चकवा। चक्रवाक।

चकाचक-(वि०) १. तृप्त। २. घृतपूर्ण। तरबतर। ३. मजेदार।

चकाचूंध-दे० चकचूंध।

चकावो-(न०) १. लड़ाई। युद्ध। २. हमला। आक्रमण। ३. चमत्कार।

चकार-(न०) १. चवर्ग का प्रथम वर्ण 'च'। २. भीड़। जन समूह। ३. स्वीकार। ४. चारण को दान में दी हुई जागीरी। (वि०) चतुर।

चकारो-(न०) १. भाला आदि शस्त्रों की कपड़े की खोल। २. दल। समूह। ३. गोलाई। चक्र। गोलचक्र। ४. दंतक्षत का गोल निशान। ५. एक प्रकार का तंतुवाद्य। चिकारो। ६. चक्कर। फेरा।

चकास-(ना०) १. जाँच। तपास। २. प्रकाश।

चकासणो-(क्रि०) परीक्षा करना। जाँच करना। **तपासणो**।

चकासो-(न०) १. प्रकाश। २. कौतुक। ३. चमत्कार। ४. करामात। ५. झगड़ा। लड़ाई। बोल-चाल। वाद-विवाद।

चकित–(वि०) दंग। चकित। विस्मित।
चकू–दे० चक्कू।
चकोतरो–(न०) एक प्रकार का नींबू। चकोतरा।
चकोर–(न०)१. एक पक्षी। (वि०)१. सावधान। होशियार। सतर्क। २. चालाक।
चक्क–(न०) १. चक्र। २. पहिया। चक्का। ३. दिशा। ४. चकवा। ५. ओर। तरफ। (वि०) चकित।
चक्कर–(न०) १. गोलाकार वस्तु। २. घेरा। ३. पहिया। चक्का। ४. फेरा। ५. हैरानी। ६. सिर घूमना। गश। चक्कर।
चक्कर आणो–(मुहा०) माथा फिरना।
चक्कर खाणो–(मुहा०)फेरा खाना। आँटा मारना।
चक्कवै–दे० चकवै।
चक्की–(ना०) १. आटा पीसने का एक यंत्र। घरटी। घट्टी। २. मिठाई का थक्का। चाशनी में तैयार की हुई एक मिठाई जिसको थाली में ढालकर थक्के काट दिये जाते हैं।
चक्की फेरणो–(मुहा०) चक्की चलाना। घट्टी फेरना।
चक्कू–(न०) चाकू। छुरी।
चक्को–(न०) १. पहिया। चक्का। २. धक्का। ३. पिंड।
चक्ख–(ना०) चक्षु। आँख। नेत्र।
चक्खेव–(अव्य०) आँखों से।
चक्र–(न०) १. एक शस्त्र। चक्र। २. सुदर्शन चक्र। ३. चक्रांक। ४. गोल आकृति। गोलाकार। ५. पहिया। चक्का। ६. कुम्हार की चाक। ७. पानी का भँवर। ८. सेना। ९. अंगुली के ऊपर के पोर पर बनी हुई चक्राकार रेखा। १०. वातचक्र। ११. चक्कर। १२.फेरा। दौर।
चक्रधर–(न०) विष्णु भगवान।
चक्रपाणि–(न०) १. विष्णु भगवान। २. श्रीकृष्ण।
चक्रवर्ती–(वि०) एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक राज्य करने वाला। सार्वभौम।
चक्रवाक–(न०) चकवा।
चक्र सुदर्शन–दे० सुदर्शन चक्र।
चक्राकार–(न०) गोलाकार।
चक्रायुध–(न०) सुदर्शन चक्र।
चक्रांकित–(न०) एक वैष्णव सम्प्रदाय। (वि०) जिसके बाहु मूल पर सुदर्शन चक्र का चिन्ह अंकित हो।
चक्रित–(वि०) चकित। विस्मित।
चक्रेश्वरी–(ना०) एक देवी।
चख–(ना०) १. नेत्र। चक्षु। आँख। २. युद्ध। ३. अग्नि।
चख-अलाव–(न०) क्रोध पूर्ण नेत्र। क्रोध से जलते हुए नेत्र। क्रोध-पूर्ण लाल नेत्र।
चखएक–(न०) दैत्यगुरु शुक्राचार्य। (वि०) एकाक्ष। काना। काणो।
चखचूंधियो–(न०) चकाचौंध।
चखचूंधी–(ना०) चकाचौंध।
चखचूंधो–(वि०) छोटी आँख वाला।
चखचोळ–(न०) क्रोधाविष्ट रक्त नेत्र। क्रोधपूर्ण लाल नेत्र। रक्त वर्ण नेत्र। (वि०) १. लाल आँखों वाला। २. क्रुद्ध।
चखण–दे० चखणी।
चखणी–(ना०) १. चखने की क्रिया। २. चखने की वस्तु।
चखणो–दे० चाखणो।
चखस्रव–(न०) सर्प। साँप।
चखाड़णो–(क्रि०) चखाना।
चखाणो–दे० चखाड़णो।
चखावणो–दे० चखाड़णो।
चग–(न०) खींप नाम का एक जंगली क्षुप। खींपड़ो।
चगडोळ–दे० चकडोळ।

चगणो-(क्रि०)१. चग से झोंपड़े को छाना। २. घाव से खून बहना।

चगतो-(न०) मुसलमान।

चगदायळ-(वि०) १. कुचला हुआ। २. घायल।

चगदो-(न०) १. घाव। क्षत। २. कुचल कर बनाया हुआ चूरा।

चगाणो-दे० चिगाणो।

चगावणो-दे० चिगाणो।

चच्चो-(न०) 'च' वर्ण। चकार।

चज-(न०) १. छल। कपट। २. बुरा चरित्र। ३. कपटपूर्ण आचरण। चरित्तर। ४. नखरे बाजी। ५. चमत्कार की बात।

चट-(न०) लकड़ी के टूटने का शब्द। (क्रि० वि०) शीघ्र। तुरंत। झट।

चटक-(ना०) १. शोभा। २. फुरती। शीघ्रता। ३. चमक दमक। ४. चमक। कान्ति। ५. नखरा। ६. गर्व। घमंड। ७. नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। चिटक।

चटकणी-(ना०) सिटकनी।

चटकणो-(क्रि०) १. चट चट शब्द होना। २. उछलना। ३. टूटना। ४. चुभना।

चटक-मटक-(ना०) १. नखरा। बनाव। चटकीलापन। २. रसिकता।

चटकाणो-दे० चटकावणो।

चटकावणो-(क्रि०) डंक मारना।

चटकीलो-(वि०) १. सुन्दर। मनोहर। २. चमकने वाला। रंगीला।

चटको-(न०) १. बिच्छू, मच्छर आदि का डंक। २. काटने या डंक मारने की क्रिया। दंशन। ३. चुभन। चटक। ४. मनोभाव।

चटको-भरणो-(मुहा०) १. किसी कीड़े या जानवर का डंक मारना या दांत से

चटको-मटको-(न०) नखरा।

चटको मारणो-दे० चटको भरणो।

चटको लागणो-(मुहा०) १. डंक लगना या चुभना। २. बात चुभना।

चटणी-(ना०) १. पुदीना, अदरक, धनिया आदि को पीस कर बनाया हुआ व्यंजन। चटनी। २. चाटने की चीज। अवलेह।

चटपटी-(वि०)१. स्वादिष्ट। जायकादार। २. मसालेदार। (ना०) १. घबराहट। संताप। २. उतावल। शीघ्रता।

चटाई-(ना०) १. चाटने की क्रिया या भाव। २. तृण, सींक, ताड़ के पत्तों आदि का बना बिछावन। साथड़ी। सालड़ी।

चटाणो-दे० चटावणो।

चटावणो-(क्रि०) चटाना।

चटाँ-लटाँ-(ना०)लत्थोबत्थ। गुत्थमगुत्था। भिड़ंत।

चटियो-(न०) छड़ी। चिटियो।

चटु-दे० चिटुड़ी।

चटुकी-दे० चिटुड़ी।

चटोकड़ो-(वि०) स्वाद-लोलुप। चटोरा। चट्टू।

चट्टान-(ना०) पर्वत का समतल भाग। विशाल पाषाण-खंड।

चट्टो-दे० चोटलो।

चड़भड़-(ना०) १. कलह। टंटा। २. बकवाद।

चड़भड़णो-(क्रि०) १. गुस्से होना। २. ऊंचानीचा होना। ३. लड़ पड़ना। झगड़ना।

चड़वो-(न०) रंगरेज। रंगारो।

चड़स-(न०) १. चिलम में पीने का एक मादक पदार्थ। चरस। २. मोट। चरसा। कोस। चड़ो।

चड़सियो-(न०) चरसा को खाली करने वाला व्यक्ति।

चड़सो-दे० चड़ो।

चढ-उतार-*(वि०)* १. गावदुम । २. चढ़ाई-उतराई । ३. ऊंचाई और ढलाई ।

चढण-सितवारण-*(न०)* इन्द्र ।

चढणो-*(क्रि०)* १. नीचे से ऊपर को जाना । चढ़ना । २. प्रस्थान करना । ३. हमला करना । ४. उन्नति करना । ५. सवार होना । ६. कर्ज होना । कर्ज बढ़ना । ७. नदी, तालाब आदि के पानी का बढ़ना । ८. सेवन किये हुए मादक पदार्थ का नशा होना । ९. पदवृद्धि होना । १०. अर्पित होना । किसी देवता को किसी वस्तु की भेंट धरा जाना । ११. पकाने के लिए पात्र का चूल्हे पर रखा जाना । १२. मोल बढ़ना । भाव बढ़ना । १३. जोश में आना । १४. लेप, रंग, मुलम्मा आदि का आवरण होना ।

चढती-*(ना०)* १. उन्नति । उत्थान । २. **बढोतरी** ।

चढती-पड़ती-*(ना०)* उन्नति-अवनति । उत्थान-पतन ।

चढतो-*(वि०)* १. तुलना में बढ़ा हुआ । २. बढ़ा चढ़ा हुआ । ३. उदीयमान । ४. अधिक । ज्यादा ।

चढतो आँक-*(न०)* संख्या का अगला अंक शून्य में अशुभ समझा जाता है इसलिये उसमें जोड़ी जाने वाली '१' की संख्या । जैसे ५००) के स्थान पर ५०१) इसी प्रकार सभी शून्याग्र संख्याओं में । **तीखो आँक** ।

चढाई-*(ना०)* १. हमला । आक्रमण । २. पर्वत या भूमि का वह भाग जो क्रमशः ऊंचा हो । ऊंचाई की ओर जाने वाली भूमि । ३. ऊंचाई । ४. चढ़ने की क्रिया ।

चढाऊ-*(वि०)* १. सवारी योग्य । २. तुलना में चढ़ता हुआ । ३. क्रमशः ऊंची होती हुई भूमि । ४. चढ़ने वाला ।

चढाक-*(वि०)* ऊट, घोड़े आदि सवारी में कुशल । **चढाकू** ।

चढाकू-दे० चढाक । २. सवारी करने के लायक उम्र का (ऊंट, घोड़ा) सवारी योग्य । **चढाऊ** ।

चढाचढ़ी-*(ना०)* प्रतिस्पर्धा । **होड़** ।

चढाण-*(ना०)* १. चढ़ाई । २. ऊंचाई ।

चढाणो-*(क्रि०)* १. नीचे से ऊपर की ओर ले जाना । चढ़वाना । २. चढ़ने में प्रवृत्त करना । ३. देवताओं को अर्पण करना । ४. सवारी कराना । ५. मँगेतर को वस्त्र और आभूषण पहिनाने की प्रथा को मनाना । ६. हँडिया, तवा आदि पात्र को चूल्हे पर रखना । ७. वही या रजिस्टर में दर्ज करना । ८. लेप, रंग मुलम्मा आदि का आवरण करना । **चढावणो** ।

चढापो-दे० चढावो ।

चढाव-*(न०)* १. पर्वत या भूमि के किसी भाग की उत्तरोत्तर ऊंचाई । चढ़ाई । २. समुद्र के जल का बढ़ाव । ज्वार । ३. नदी आदि के पानी का बढ़ाव ।

चढावणो-दे० चढाणो ।

चढावो-*(न०)* १. देवता को अर्पण किया हुआ रुपया-पैसा, गहना, वस्त्र इत्यादि सामग्री । २. देवता को अर्पण किया हुआ नैवेद्य । प्रसाद । ३. व्यापारी द्वारा वस्तु पर उसके वास्तविक मूल्य से अधिक मूल्य अंकित करने अथवा मूल्य के आगे और फालतू अंक बढ़ा देने का संकेत । ४. बढ़ावा । उत्साह । ५. बहकावा ।

चढी-रो-पलाण-*(न०)* ऊंट पर कसी जाने वाली सवारी की काठी । सवारी का पलान ।

चणक-दे० चिणक ।

चणखार-*(न०)* चने के क्षुप को जला कर निकाला हुआ क्षार । चनकक्षार ।

चणणाट-*(न०)* १. तमाचा, बेंत आदि के लगने से होने वाला दर्द । २. एक ध्वनि । ३. नाश ।

चणणावणो–(क्रि०) १. भय, क्रोध, करुणा, हर्ष, शीत, आवेश इत्यादि से शरीर की रोमावली का तन कर खड़ा होना। २. आवेश में आना। तनतनाना। ३. 'चणण' शब्द करना। ४. जोश में आना।

चणपण–(ना०) १. शारीरिक अशांति। अस्वस्थता। २. वेदना। व्यथा। क्लेश। ३. मानसिक अशांति।

चणाई–दे० चिणाई।

चणायकाँ–दे० चिणायकाँ।

चणारी–दे० चिणाई।

चणीबोर–(न०) छोटा बेर। झड़बेरी का बेर।

चणो–(न०) चना। चणक।

चण्णाटियो–(न०) नाश।

चतड़ा-चौथ–(ना०) भादों मास की गणेश चतुर्थी।

चतरबांह–दे० चत्रबाह।

चतराई–दे० चतुराई।

चतुर–(वि०) १. होशियार। चतुर। २. बुद्धिमान। ३. दक्ष। निपुण। ४. व्यवहार कुशल। ५. चालाक। ६. चार। चतुर्। (समास में पूर्व पद)।

चतुरता–दे० चतुराई।

चतुरपणो–दे० चतुराई।

चतुरभुज–(वि०) चार भुजाओं वाला। चत्रभुज। (न०) विष्णु भगवान।

चतुरंग–(ना०) १. शतरंज। २. चतुरंगिणी।

चतुरंगणी सेना–(ना०) हाथी, घोड़े, रथ और पैदल इन चार अंगों वाली सेना। चतुरंगिणी।

चतुरंगिणी–दे० चतुरंगणी सेना।

चतुराई–(ना०) १. पवित्रता। २. चतुरपना। चतुरता। ३. चालाकी। ४. होशियारी। सावधानी।

चतुराणण–(न०) चतुरानन। ब्रह्मा। (वि०) चार मुख वाला।

चतुरानन–दे० चतुराणण।

चतुराश्रम–(न०) चार आश्रम। (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास)।

चतुर्थ–(वि०) चौथा। चौथो।

चतुर्थाश्रम–(न०) चौथा आश्रम। संन्यस्ताश्रम।

चतुर्थांश–(न०) चौथा भाग।

चतुर्थी–(ना०) १. चौथ तिथि। २. चौथी विभक्ति।

चतुर्दश–(वि०) चौदह। चवदै।

चतुर्दशी–(ना०) पक्ष का चौदहवां दिन। चौदश। चवदस।

चतुर्दिश–(अव्य०) चौतरफ। चारों ओर। चारूंकानी।

चतुर्दिशा(ना०) चारों दिशाएँ। चारूंकूंट।

चतुर्धाम–(न०) द्वारका, रामेश्वर, जगन्नाथपुरी और बदरिकाश्रम–ये मुख्य तीर्थ या धाम।

चतुर्भुज–(वि०) १. चार हाथ वाला। २. चार कोण वाला। (न०) १. चार कोण वाली आकृति। २. विष्णु भगवान।

चतुर्मास–(न०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी से कार्तिक शुक्ला एकादशी तक की अवधि। चातुर्मास। चौमासो।

चतुर्युग–(न०) सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि–ये चार युग।

चतुर्वर्ण–(न०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—ये चार वर्ण।

चतुर्वेद–(न०) ऋक्, यजुर, साम और अथर्व–ये चारों वेद।

चतुर्वेदी–(न०) ब्राह्मणों का एक गोत्र।

चतुस्तन–(न०) गाय, भैंस आदि चार स्तन वाला मादा पशु।

चत्र–(वि०) १. चार। २. चतुर। दक्ष। ३. धूर्त। छली। छळियो।

चत्रकोट–दे० चत्रगढ।

चत्रगढ–(न०) चित्तौड़गढ़।

चत्रधा-*(वि०)* चार प्रकार का। *(न०)* चारों ओर।
चत्रबाह-*(न०)* १. श्रीकृष्ण। २. चार भुजा धारी श्री विष्णु। *(वि०)* चार हाथों वाला। चतुर्भुज। **चत्रभुज। चतुरबाह।**
चत्रभुज-दे० चत्रबाह।
चत्रभुज वाहण-*(न०)* गरुड़।
चत्रमास-*(न०)* चातुर्मास। चौमासा। **चौमासो।**
चत्रवाणी-*(ना०)*१. चारों वेद। २. ब्रह्मा।
चत्वार दिस-*(न०ब०व०)* चारों दिशाएँ। **चारूंखूंट।**
चदरो-*(न०)* चादर। चद्दर।
चनण-*(न०)* चंदन। **चंदण।**
चनण गोह-दे० चंदण गोह।
चनण चौक-दे० चन्नणचौक।
चनरमा-*(न०)* चंद्रमा। चाँद।
चन्नण-दे० चनण।
चन्नणगोह-*(ना०)* चंदन के समान रंग वाली एक गोह। **चनणगोह।**
चन्नणचौक-*(न०)* १. चंदन से सुवासित चौक। २. वह चौक जिसके द्वार आदि चंदन के बने हुए हों। ३. श्रीखंड मंडित बड़ा मंडप। ४. सभी प्रकार से सजा हुआ आलोकित चौक।
चपक-*(न०)* सेना का बायाँ भाग।
चपको-दे० डाम।
चपटो-*(वि०)* जो छितराया हुआ और पतला हो। चपटा।
चपड़ास-*(ना०)* चपरास।
चपड़ासी-*(न०)* १. अरदली। २. चौकीदार। ३. नौकर। सेवक। ४. चपरासी।
चपड़ी-दे० चिपड़ी।
चपड़ो-*(न०)* १. चीनी की चाशनी को थाली में बिछाकर बनाई हुई पतली परत। २. चीनी की चाशनी से बनाई हुई पतली झिल्ली। **बिड़क। चिपड़ो।** ३. साफ की हुई लाख की पतली परत। चिपड़ी। **चपड़ो।**
चपत-*(ना०)* थप्पड़। तमाचा। **थाप।**
चपळ-*(वि०)* १. स्थिर नहीं रहने वाला। चपल। चंचल। २. होशियार। चालाक। ३. फुर्तीला। उतावला। **उतावळो।**
चपळता-*(ना०)* १. चंचलता। चपलता। २. होशियारी। चालाकी। ३. उतावल। फुर्ती। **उतावळ।**
चपळा-*(ना०)* १. बिजली। चपला। २. लक्ष्मी। ३. चपला स्त्री।
चपेट-*(ना०)* १. तमाचा। थप्पड़। २. चंगुल।
चपेटणो-*(क्रि०)*१.तमाचा मारना। ठोंकना। २. भगाना।
चप्पल-*(न०)* खुली एड़ी का एक प्रकार का जूता।
चबको-*(न०)* १. घाव या व्रण का दर्द। २. रह रह कर होने वाला दर्द। चबक। ३. व्रण आदि को गरम शलाका से दागने की क्रिया। **डंभ क्रिया। डाम।** ४. मर्म वचन। ताना। **महणो।** ५. मर्म प्रहार।
चबाणो-*(क्रि०)* दाँतों से कुचलना या काटना। चबाना। **चबावणो।**
चबावणो-दे० चबाणो।
चबीणो-*(न०)* चबैना। चर्वण। चना-चबैना। मूंगफली, सेव, चना आदि चबा कर खाने की चीज।
चबूतरी-*(ना०)* छोटा चबूतरा। **चौतरी।**
चबूतरो-*(न०)* चबूतरा। **चौतरा।**
चमक-*(ना०)* १. प्रकाश। २. आभा। कान्ति। ३. चौंक। झिझक। ४. भ्रम। संदेह। ५. संदेहगत भय।
चमक चूड़ी-*(ना०)* एक प्रकार का सोने या चाँदी का कंगन। गोल मोगरों वाली चूड़ी।

चमकणो-*(क्रि०)* १. चमकना। प्रकाशित होना। २. प्रतिभा का प्रकाश में आना। ३. ऐश्वर्य बढ़ना। ४. कीर्ति पाना। ५. चौंकना। ६. डरना। ७. संदेह करना। ८. संदेह होना।

चमकदार-*(वि०)* चमकीला।

चमकाणो-दे० चमकावणो।

चमकारो-*(न०)* १. चमक। प्रकाश। २. चमत्कार।

चमकावणो-*(क्रि०)* १. चमकाना। चमचमाना। २. उज्वल करना। ३. चौंकाना। ४. डराना। ५. कीर्ति फैलाना।

चमकीलो-*(वि०)* चमक वाला। प्रकाश वाला।

चमगादड़-*(ना०)* चूहे से मिलती सूरत का उड़ने वाला एक जंतु, जिसे दिन में नहीं दिखने से पैरों के बल औंधा टँगा रहता है और रात में उड़ता है। चमचेड़।

चमचम-*(ना०)* जलन। चमचमाहट। चरचराट। *(न०)* एक मिठाई। खोए की एक बीकानेरी मिठाई। *(वि०)* तेज युक्त।

चमचाटक-दे० चमगादड़।

चमची-*(ना०)* छोटा चम्मच।

चमचेड़-दे० चमगादड़।

चमचो-*(न०)* चम्मच।

चम-जूं-*(ना०)* १. उपस्थ के बालों में उत्पन्न होकर चमड़े से चिपटी हुई रहने वाली एक प्रकार की जूं। चर्म-यूका। २. पशुओं के बालों में होने वाली जूं।

चमड़पोस-*(न०)* वह हुक्का जिसका जल-पात्र चमड़े का होता है।

चमड़ी-*(ना०)* चमड़ी। त्वचा। चामड़ी।

चमड़ो-*(न०)* चमड़ा। खाल। चामडो।

चमतकार-*(न०)* १. करामात। चमत्कार। २. विस्मय। आश्चर्य। ३. अलौकिक क्रिया।

चमतकारी-*(वि०)* १. चमत्कार दिखाने वाला। चमत्कारी। २. जिसमें कोई चमत्कार हो। ३. उन्नति करने वाला। भाग्यशाली। ४. सिद्धिवान।

चमत्कार-दे० चमतकार।

चमत्कारिक-दे० चमतकारी।

चमन-*(न०)* १. फुलवाड़ी। २. बगीचा। ३. मौज।

चमर-दे० चँवर।

चमरख-*(न०)* सुराख वाले मोटे चमड़े की एक चकती जिसमें होकर चरखे का तकला फिरता रहता है। चमरखो।

चमरखो-दे० चमरख।

चमर ढोळणो-*(मुहा०)* किसी देवता पर चमर फिराना।

चमरबंद-*(न०)* १. राजा। २. शूरवीर।

चमराळो-*(न०)* मुसलमान। *(वि०)* १. वह जिसके ऊपर चँवर ढुलता हो। चँवरबंद। २. चँवर फिराने वाला।

चमरी-दे० चँवरी।

चमार-*(न०)* १. जूता बनाने वाला व्यक्ति। मोची। २. जूता गाँठने वाली जाति का व्यक्ति। चर्मकार।

चमारण-दे० चमारी।

चमारी-*(ना०)* चमार जाति की स्त्री। मोचण।

चमाळियो-दे० चँवाळियो।

चमाळीस-*(वि०)* चालीस और चार। चँवालीस। *(न०)* चँवालीस की संख्या। "४४"।

चमाळीसो-*(न०)* चँवालीसवाँ सम्वत्।

चमीर-*(न०)* सुवर्ण। सोना। चामीकर। सोनो।

चमीरळ-*(न०)* सोना। सुवर्ण। *(वि०)* सुवर्ण निर्मित।

चमू-*(ना०)* सेना।

चमूपत-*(न०)* चमूपति। सेनापति।

चमेली–*(ना०)* छोटे सफेद सुगंधित फूलों वाली एक लता ।

चमोटो–*(न०)* १. चमड़े का एक टुकड़ा जिस पर उस्तरे की तेज की हुई धार को सँवारा जाता है । २. सान को घुमाने की चमड़े की लम्बी पट्टी ।

चम्मड़–*(न०)* चमड़ा । *(वि०)* १. चमड़े जैसा मजबूत । २. कंजूस ।

चम्मड़पोस- दे० चमड़पोस ।

चय–*(न०)* ढेर । राशि ।

चर–*(न०)* १. दूत । २. दास । सेवक । ३. घास । चारा । *(वि०)* चलने वाला ।

चरक–*(न०)* वैद्यक के एक आचार्य । २. चरक ऋषि का रचा हुआ 'चरक संहिता' ग्रंथ ।

चरकणो–*(क्रि०)* पक्षी या बच्चों का हँगना ।

चरकीन–*(न०)* टट्टी । विष्टा ।

चरको–*(वि०)*१. जिसमें अधिक मिर्चें हों । २. चरपरा । तीखा । ३. तेज । ४.क्रोधी ।

चरको-फरको–*(न०)* मिर्च-मसाला युक्त व्यंजन । तीखा-फीका व्यंजन । *(वि०)* १. जो मीठा न हो । २. फीके स्वाद वाला । ३. मिर्च मसाले वाला ।

चरख–*(न०)* १. तोप । २.बंदूक । ३. तोप-गाड़ी ।

चरखी–*(ना०)* १. तोप खींचने वाली गाड़ी । तोप गाड़ी । २. तोप । ३. कपास ओटने का चरखा । ४. कुएँ में से डोल खींचने की गड़ारी । घिरनी । ५. चक्कर खाने वाली एक आतिशबाजी । ६. रस्सी वटने का एक यंत्र । ७. सर्दियों में मस्ती में आने के समय ऊँट के दाँत पीसने की क्रिया या शब्द ।

चरखो–*(न०)* १. हाथ से सूत कातने का यंत्र । चरखा । अरटियो । २. कपास लोढ़ने का एक संचा ।

चरचणो–*(क्रि०)* १. चरचना । लेप करना । २. चर्चा करना ।

चरचरणो–*(क्रि०)* जलन होना ।

चरचराट–*(ना०)* १. जलन । २. चरचर ध्वनि ।

चरचराणो–दे० चरचरणो ।

चरचरो–*(वि०)* चरपरा । तीखा ।

चरचा–*(ना०)* १. चर्चा । बातचीत । २. जिक्र । वर्णन ।

चरज–*(न०)* १. चरित्र । ढोंग । २. धोखा । ३. एक पक्षी ।

चरजणो–*(क्रि०)* काटना । चीरना ।

चरजा–*(ना०)* १. विशेष रागिनी जिसमें देवी की स्तुति गाई जाती है । २. देवी की स्तुति ।

चरजाळी–*(वि०ना०)* १. ढोंगी । २. धूर्ता । ३. नखरों वाली । नखराळी ।

चरजाळो–*(वि०)* १. ढोंगी । पाखंडी । २. धूर्त्त ।

चरड़–*(अव्य०)* चीरने या फाड़ने का शब्द ।

चरण–*(न०)* १. पाँव । पग । २. कविता या गायन का एक पाद । तुक । कड़ी ।

चरण कमळ–*(न०)* कमल के समान कोमल और सुंदर चरण ।

चरण कमळायने–*(अव्य०)* चरण कमलों में (गुरुजनों को पत्र में लिखा जाने वाला एक पद) ।

चरणरज–*(ना०)* चरणों की धूलि ।

चरणामृत–*(न०)* देव मूर्ति या किसी पूज्य व्यक्ति के पाँवों की धोवन । पादोदक । चरणोदक ।

चरणारविंद–दे० चरण कमल ।

चरणो–*(क्रि०)*१. पशुओं का घास चरना । घास खाना । *(न०)* १. एक रेशमी वस्त्र । २. जूता निकालने और पहिनाने वाला सेवक ।

चरणोई–*(ना०)* १. चरने की जगह । २. घास । ३. विविध प्रकार की घास ।

चरताळो–*(वि०)* १. चरित करने वाला । धूर्त्त । पाखंडी । चरजाळो ।

चरपराट-(न०) १. गर्व । **तरमराट** । २. स्वाद में तीखापन । ३. घाव की जलन ।

चरपराणो-(क्रि०)१.जलन होना । २.तीखा लगना । **चरवरणो** ।

चरपरो-(वि०) १. तीखे स्वाद वाला । चरपरा । **चरचरो** । २. बहुत बोलने वाला ।

चरवरा-(न०) चबैना । **चबीणो** ।

चरबी-(ना०) मेद । वसा । चरवी ।

चरभर-(न०) एक खेल । 'सरभर' नाम का खेल ।

चरम-(वि०)१. अंतिम । २.पराकाष्टा का । दे० चर्म ।

चरमराट-(ना०) १. जलन । २. अकड़ ।

चरम-समाध-(ना०) संभोग ।

चरमी-दे० चिरमी ।

चरवरणो-(क्रि०) घाव का चर्राना । जलन होना ।

चरवादार-दे० चरवैदार ।

चरवी-(ना०) पीतल का एक जल पात्र ।

चरवैदार-(न०) घोड़ों की देखभाल करने वाला या जंगल में जाकर चराने फिराने वाला नौकर । सईस । **चरवादार** ।

चरवो-(न०) तांबे या पीतल का एक बड़ा जलपात्र । चरू । देग ।

चरस-(ना०) १. तीव्र इच्छा । उत्कट चाह । २. परम्परा । अनुक्रम । ३. उत्साह । उमंग । (न०) १. एक मादक पदार्थ जो तंबाकू की तरह चिलम में रख कर धुएँ के रूप में पिया जाता है । गांजे का गोंद । २. मोट । चरसा । कोश । (वि०) बढ़िया । अच्छा ।

चराई-(ना०) १. चरवाने की मजदूरी । २. चराने का काम ।

चराक-(न०) चिराग । दीपक ।

चराचर-(वि०) स्थावर और जंगम । जड़ और चेतन । चर-अचर । (न०) जगत ।

चराणो-(क्रि०) चराना । घास खिलाना । **चरावणो** ।

चरावणो-दे० चराणो ।

चरित-(न०) १. आचरण । वर्तन । व्यवहार । २. चरित्र । ३. रीति नीति । ४. वृत्तान्त । हाल । ५. जीवनी । ६. पाखंड । ढोंग । ६. करनी । करतूत । ८. कपट ।

चरिताळी-दे० चिरताळी ।

चरिताळो-दे० चिरताळो ।

चरित्र-दे० चरित ।

चरित्रवान-(वि०) उत्तम चरित्र वाला । सदाचारी ।

चरी-(ना०)१. घास । चारा । २.हरी ज्वार आदि का चारा । ३. चरने की क्रिया । ४. घास वाली जगह । चरागाह । ५. एक जळ पात्र । **चरवी** ।

चरू-(न०) चौड़े मुँह का एक बरतन । देग । **देगड़ो** ।

चरू-सुगाळ-(न०) १. अधिक अतिथियों के आवागमन के कारण वह स्थिति जिसमें हर समय भोजन बनाना चालू ही रहता है । २. वह नियम जिसमें आने वाला कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं जा सके । ३. किसी भी समय किसी भी अतिथि या अनाथ के आ जाने पर भोजन किये बिना नहीं जाने देने की उदारता । ४. अतिथि सेवा की वह व्यवस्था जिसमें किसी भी समय कोई भी आये भोजन किये बिना नहीं जा सकेगा ।

चर्चरी-(ना०) १. आनंद । २. उत्सव । ३. होली पर नाच-गान के साथ गाई जाने वाली फाग रागिनी ।

चर्चा-दे० चरचा ।

चर्म-(न०) चमड़ा । त्वचा । **चामड़ो** । खालड़ो ।

चर्मकार-(न०) १. चमार । २. मोची ।

चर्मचिड़ी-*(ना०)* चमगादड़ ।

चर्मवाद्य-*(न०)* ढोल, नगाड़ा आदि चमड़े से मँढा हुआ बाजा ।

चळ-*(वि०)* अस्थिर । चल । *(ना०)* खाज । खुजली । *(न०)* युद्ध ।

चल-*(वि०)* अस्थिर । चलायमान । चलता हुआ । *(न०)* १. रिवाज । २. व्यवहार । उपयोग ।

चळक-*(ना०)* १. चमक । चिलक । २. कांति । आभा । ३. वस्तुओं के भाव में आने वाली तेजी । **तेजी** । सुर्खी ।

चळकणो-*(न०)* १. प्रकाश । चमक । २. प्रतिबिम्ब । चमक । *(वि०)* १. चमकने वाला । चमकीला । २. प्रकाश देने वाला । *(क्रि०)* चमकना । प्रकाश देना ।

चलकर्ण-*(न०)* घोड़ा ।

चळकाणो-*(क्रि०)* चमकाना । **चळकावणो** ।

चळकी-*(ना०)* चमक ।

चळको-*(न०)* १. प्रकाश । २. प्रतिबिम्ब ।

चळगत-*(ना०)* १. स्वभाव । २. चाल-चलन । ३. रहन-सहन ।

चलचाल-*(ना०)* १. धंधा । व्यापार । **काम-धंधो** । कामधंधा । २. बिकरा । ३. रहन-सहन ।

चळचूक-*(ना०)* १. जान-बूझ कर की हुई गलती । २. गलती । भूल । ३. धोखा । छल ।

चलण-*(न०)* १. पाँव । चरण । **पग** । २. व्यवहार । ३. उपयोग । ४. स्वत्व । हक । ५. अधिकार । सत्ता । ६. प्रचार । रिवाज । व्यवहार । ७. प्रथा । रीति-रिवाज । चलन । ८. रुपया-पैसा आदि । सिक्का । ९. प्रचलित सिक्का । **प्रचलित नाणो** ।

चलणसार-*(वि०)* १. प्रचलित । २. काम में आने योग्य । काम चलाऊ ।

चलणी-*(वि०)* १. जिसका चलन हो । चलनसार । चलता (सिक्का) यथा-चलणी नोट । *(ना०)* १. चलने की क्रिया । २. आटा छानने की चलनी । चालणी ।

चलणो-*(क्रि०)*१. चलना । प्रस्थान करना । २. हिलना । ३. बहना । ४. जारी रहना । ५. निभना । ६. अनुसरण करना । ७. उपयोग में लेना । ८. उपयोग में आना । ९. आरंभ होना । शुरू होना । १०. मरना ।

चळणो-*(क्रि०)* १. विकृत होना । २. पथ भ्रष्ट होना । चलित होना । विचलित होना । ३. डिगना । **डिगणो** । पतित होना ।

चळदळ-*(न०)* १. पीपल वृक्ष । २. पीपल का पत्ता ।

चळपत्र-*(न०)* १. पीपल वृक्ष । अश्वत्थ । २. पीपल का पत्ता ।

चळवळणो-*(क्रि०)* १. घबराना । **घबरा-वणो** । २. विचलित होना ।

चळवळाट-*(न०)* १. घबराहट । २. तन-मनाट ।

चळविचळ-*(वि०)* १. चलायमान । डाँवा-डोल । अस्थिर । २. अस्त-व्यस्त । ३. घबराया हुआ ।

चळस-दे० फैशन ।

चळा-*(ना०)* १. लक्ष्मी । २. बिजली । ३. पृथ्वी । ४. स्त्री ।

चलाऊ-*(वि०)* १. साधारण । २. साधारण उपयोग की । ३. व्यवहार में आने योग्य ।

चलाक-*(वि०)* १. चालाक । धूर्त । चाल-बाज । २. होशियार ।

चलाकी-*(ना०)* १. चालाकी । धूर्तता । चालबाजी । २. होशियारी ।

चलाचली-*(ना०)* १. जन्म-मरण । आवा-गमन । २. व्यग्रता । घबराहट । ३. चलने की तैयारी ।

चलाण-(न०) १. पुलिस द्वारा अपराधी को पकड़ कर न्यायालय में उपस्थित करने का काम। २. माल या एक स्थान से से दूसरे स्थान पर भेजे जाने का काम। ३. रेलवे से बाहर भेजे जाने वाले माल की गिनती, तोल आदि की नोंध का भरा जाने वाला फॉर्म। चलान। रवन्ना। ४. बाहर से आये हुए माल की रेलवे की रसीद।

चलाणो-दे० चलावणो।

चलावणो-(क्रि०)१. चलाना। २. हिलाना। ३. हाँकना। ४. बहाना। ५. निभाना। ६. काम में लेना। ७. जारी रखना। ८. गतिमान करना। ९. प्रचलित करना। १०. प्रहार करना।

चलायमान-(वि०) १. विचलित। २. चलने वाला। ३. चलता हुआ। ४. चंचल।

चळीजणो-(क्रि०) पतन होना। पथभ्रष्ट होना।

चळुअळ-दे० चळूळ।

चळुवो-(न०) १. रक्त। २. चुल्लू। अंजली।

चळू-(न०) १. भोजन के बाद का आचमन। चुल्लू। २. अंजली। चळुवो। ३. भोजन के बाद हाथ-मुँह धोने की क्रिया।

चलू करणो-(मुहा०) चालू करना। शुरू करना। आरंभणो।

चळू करणो-(मुहा०) भोजन करके हाथ-मुँह धोना। चुल्लू करना।

चळूळ-(न०) १ रक्त। खून। २. मुसलमान। ३. युद्ध।

चळेवो-(न०) १. मृतक का क्रिया कर्म। २. मृतक भोज।

चळो-(न०) घोड़े, गधे आदि उन पशुओं का मूत्र जिनके खुर फटे हुए नहीं होते हैं।

चव-(न०) १. मोतियों को तोलने का एक तोल। मोती आदि रत्नों को तोलने का बहुत छोटा एक तोल। २. कथन। बात। ३. खबर। संदेश। (वि०) चार।

चवड़ै-दे० चौड़े।

चवड़ो-दे० चौड़ो।

चवणो-(क्रि०) १. कहना। २. चूना। टपकना। झरणो। चूवणो।

चवथो-(वि०) चौथा। चौथो।

चवथ-(वि०) चौथा। चतुर्थ।

चवदमो-(वि०) चौदहवां।

चवदस-(ना०) पक्ष का चौदहवां दिन। चतुर्दशी। चौदस।

चवदंत-(न०) प्रकट। (अव्य०) प्रत्यक्ष रूप में।

चवदे-(वि०) दस और चार। १४। (न०) चौदह की संख्या। १४.।

चवदोतर सो-(न०) पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ चौदह (११४) की संख्या।

चवदोतरो-(न०) चौदहवां वर्ष।

चवरासियो-(न०) चौरासी गाँवों का जागीरदार। बड़ा ठाकुर। २. लोकगीतों का एक नायक। ३. चौरासीवां वर्ष।

चवरासी-दे० चोरासी।

चवरी-(ना०) चौरी। विवाह-वेदी।

चवर्ग-(न०) च, छ, ज, झ, ञ-इन पांच तालुस्थानी व्यंजनों का वर्ग। 'च' समाम्नाय। 'च' समाम्नाय के पांच वर्ण।

चवळेरी-दे० चँवळेरी।

चवळो-दे० चँवळो।

चवाण-(न०) १. चौहान राजपूत। २. किसी जाति की अल्ल या अटक।

चश्म-(ना०) आँख।

चश्मदीद-(वि०) प्रत्यक्षदर्शी। आँखों से देखा हुआ।

चश्मो-(न०) १. ऐनक। २. झरना। सोता।

चसक-(ना०) रह रह कर होने वाला दर्द। चसको।

चसकणो-*(क्रि०)* रह रह कर दर्द होना। चवखणो।

चसको-*(न०)* १. चसका। लत। २. व्यसन। ३. झटका देकर उठने वाली पीड़ा। ४. रह रह कर उठने वाला दर्द। चवखो।

चसणो-*(क्रि०)* १. दीपक जलना। दीपक का प्रकाशित होना। ३. दीपक का प्रकाश होना। ३. प्रकाशित होना। ४. बंदूक का छूटना।

चसम-*(ना०)* आँख। चश्म। नेत्र।

चसमाण-*(ना०ब०व०)* आँखें। चक्षुद्वय।

चसमो-*(न०)* १. चश्मा। ऐनक। २. झरना। स्रोत। झरणो।

चसळक-दे० चसळको।

चसळको-*(न०)* १. बैलगाड़ी के चलने पर उसके पहिये में अथवा कुएँ पर मोट निकालते समय भमण में होने वाला शब्द। २. मस्ती में आये हुए ऊंट के दाँत पीसने से होने वाला शब्द। चसळक। ३. दर्द। पीड़ा। पीड़।

चसवाणो-दे० चसावणो।

चसाणो-दे० चसावणो।

चसावणो-*(क्रि०)* १. दीपक जलाना। दीपक से प्रकाश करना। २.बंदूक छोड़ना। ३. आग जलाना।

चह-*(ना०)*१. चिंता। आरोगी। २ इच्छा। चाह। *(वि०)* गुप्त।

चहक-*(ना०)*१. पक्षियों का शब्द। २.दर्द। पीड़ा।

चहकणो-*(क्रि०)* १. उमंग में बोलना। २. पक्षियों का कलरव करना। ३.दर्द होना। दर्द उठना।

चहचंद-*(न०)* १. आनंद। २. उत्सव। उच्छव।

चहटणो-*(क्रि०)* चिपटना। चिपकना। चेंटणो।

चहन-*(न०)* १. रोने का ढोंग। ढपला। २. शिशु के अपने आप हँसने, अव्यक्त शब्द बोलने आदि के अति लक्षण। ३. चिन्ह।

चहबच्चो-*(न०)* पानी का हौद। कुंड। चह बच्चा।

चहर-*(ना०)*१. निंदा। बदनामी। २. खेल। तमाशा। ३.बाजीगर। मदारी। ४.ठाट-बाट। आनंदोत्सव। चहल। ५. पक्षियों का कलरव। ६. भाँति २ के पक्षियों का समूह। पक्षी समूह। ७. कलंक। ८. व्यंग्य। *(वि०)* श्रेष्ठ।

चहरो-*(न०)* १. चहरा। सूरत। शक्ल। २. मुख। मुँह। ३. मुँह पर पहनने की कोई मुखाकृति। मुखोटा। ४. निंदा। अपकीर्त्ति।

चहल-*(न०)* १. आनंद। मौज। २. पक्षियों का कलरव। ३. सीमा। *(अव्य०)* आनंद से। मौज में। *(क्रि०वि०)* इधर-उधर।

चहल-पहल-*(ना०)* १. आनंदोत्सव की सजीवता। २. उत्सवीय वातावरण। ३. रौनक। चमक-दमक।

चहळावणो-*(क्रि०)* १. बिजली का चमकना। २. चमकना।

चहळावळ-*(ना०)* चमक। प्रकाश।

चहाव-*(ना०)* १. इच्छा। अभिलाषा। २. उत्साह। उमंग।

चहावणो-*(क्रि०)* चाहना। इच्छा करना।

चहीजणो-*(क्रि०)* १. आवश्यकता होना। २. चाहिये।

चहीजै-*(अव्य०)* १. चाहिये। २. उचित है। ३. आवश्यकता है।

चहुँ-*(वि०)* १. चारों। चारोंही। २. चार।

चहुँगमाँ-*(अव्य०)* चारों ओर।

चहुँचक-*(अव्य०)* १. चारों दिशाएँ। २. चारों दिशाओं में। ३. चारों ओर।

चहुँदिस-(अव्य०) चारों दिशाएँ। सब ओर।
चहुँधा-दे० चहुँगमाँ।
चहुँवळ-दे० चहुँगमाँ।
चहुँवै-(अव्य०)१ चारों ओर। २.चारों ही।
चहुँवैग्रमा-दे० चहुँगमाँ।
चहुँवैचकाँ-दे० चहुँगमाँ।
चहुँवैवळाँ-दे० चहुँगमाँ।
चंग-(न०) १. एक प्रकार का डफ। बड़ा डफ। २. पतंग। ३. पतंग की पूंछ।
चंगास-(न०) गोमूत्र। चौंगास।
चंगासणो-(क्रि०) गाय का मूतना। चौंगासणो।
चंगी-(वि०) १. उत्तम। २. स्वस्थ। ३. सुंदर।
चंगुल-(न०) १. पंजा। २. फंदा।
चंगो-(वि०) १. अच्छा। उत्तम। २. स्वस्थ। तंदुरुस्त। ३. सुन्दर। ४. मजबूत। ५. पवित्र। (स्त्री० चंगी)।
चंच-(ना०) चोंच। चंचु।
चंचरी-(ना०) भौंरी। भमरी।
चंचरीक-(न०) भौंरा। भमरो।
चंचळ-(वि०) १. चुलबुला। चपल। २. चलायमान। गतिशील। अस्थिर। ३. चालाक। होशियार। ४. तेज। फुर्तीला। ५. क्षणिक। फानी। (न०) १. घोड़ा। २. मन। ३. पारा। ४. पवन। (ना०) १. बिजली। २. मछली। ३. माया।
चंचळता-(ना०) १. चपलता। चुलबुलापन। २. गतिशीलता। अस्थिरता। ३. तेजी। फुर्ती। चंचळाई।
चंचळा-(ना०) १. बिजली। २. लक्ष्मी। ३. माया। ४. मछली। ५. घोड़ी। ६. चंचल स्त्री। (वि०) अस्थिर। चलायमान।
चंचळाई-(ना०) चंचलता। अस्थिरता।
चंचाणी-(ना०)१. चील पक्षी। २.गिद्धनी। ३. मांसाहारी पक्षी।
चंचाळ-(न०) १. घोड़ा। २. घोड़ों का समूह। अश्व समूह। ३.पक्षी। ४.हाथी।
चंचाळी-दे० चंचाणी।
चंचु-(ना०) चोंच। चूंच।
चंट-दे० छंट।
चंटेल-दे० छंटेल।
चंड-(ना०)१. चंडिका देवी। चंडी। (वि०) १. विकट। भयंकर। २. बलवान। ३. उग्र। ४. क्रोधी। ५. उद्धत।
चंडका-दे० चंडिका।
चंड-डाक-(ना०)१. युद्ध-चंडिका का वाद्य। २. भय या युद्ध की चेतावनी देने वाला वाजा।
चंडा-(ना०) उग्र स्वभाव की स्त्री। कर्कशा। करगसा।
चंडाई-(ना०) १. उग्रता। २. प्रबलता। ३. नालायकी। ४. बे-ईमानी। ५. चंडालपना। ६. अत्याचार। ७. ऊधम। ८. शीघ्रता।
चंडातर्क-(न०) लहँगा।
चंडाळ-(वि०) १. चाण्डाल। क्रूर। २. निर्दय घातक। ३. पापी। ४. जल्लाद। ५. पतित। ६. उग्र क्रोधी। (न०) एक अन्त्यज जाति। चाण्डाल। डोम। २. जल्लाद।
चंडाळ-चौकड़ी-(ना०) १. कुकर्म करने वालों की टोली। २. षड्यन्त्रकारियों की मंडली। गुन्डाटोली।
चंडाळण-(ना०) १. चाण्डाल जाति की स्त्री। २. चांडाल स्त्री। (वि०) क्रूर स्वभाव वाली।
चंडाळणी-दे० चंडाळण।
चंडाळी-(ना०) १. क्रोध। २. उग्र क्रोध।
चंडावळ-दे० चंदावळ।
चंडिका-दे० चंडी।
चंडी-(ना०) १. चंडिका देवी। दुर्गा। २. कर्कशा स्त्री। (वि०) कर्कशा।

चंडीश-*(न०)* महादेव । शिव ।

चंडू-*(न०)* अफीम का किवाम जो तंबाकू की तरह नशा करने के लिये चिलम में पिया जाता है ।

चंडूखानो-*(न०)* चंडू पीने का नशावाजों का स्थान ।

चंडूल-*(ना०)* एक चिड़िया ।

चंडोळ-*(ना०)* एक प्रकार की पालकी ।

चंद-*(न०)* १. चंद्रमा । चाँद । *(ना०)* एक रागिनी । *(वि०)* कुछ । थोड़े । थोड़े से । २. कई एक ।

चंदगी-*(ना०)* १. रुपया-पैसा । २. बहुत थोड़ा पैसा ।

चंदण-*(न०)* चंदन । श्रीखंड । संदल । **चनण** ।

चंदणगिर-*(न०)* चंदनगिरि । मलयाचल । मलयगिरि ।

चंदणगोह-*(ना०)* एक प्रकार की गोह । चंदनगोह ।

चंदणहार-*(न०)* १. चंदनहार । २. चन्द्रहार ।

चंदणिया-*(वि०)*चंदन के समान रंगवाला। चंदनी । चंदनिया ।

चंदन-दे० चंदण ।

चंदनाम-दे० चंदनामो ।

चंदनामो-*(न०)* यावच्चन्द्र प्राप्त की हुई ख्याति । यावच्चन्द्र बनी रहने वाली कीर्ति । २. ऐसा काम जिसकी ख्याति यावच्चन्द्र बनी रहे । ३. कीर्त्ति । यश ।

चंदप्रहास-दे० चंद्रप्रहास ।

चंदमुखी-*(वि०)* चन्द्रमा के समान मुख वाली । चंद्रमुखी । चंद्राननी ।

चंदरमा-*(न०)* चंद्रमा ।

चंदरवो-*(न०)* चंदोवा ।

चंदळाई-दे० चंदळेवो ।

चंदळियो-दे० चंदळेवो ।

चंदळेवो-*(न०)* चौलाई । चंदळियो ।

चंद वदनी-दे० चंदमुखी ।

चंद वरदाई-*(न०)*डिंगल महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' का रचयिता प्रसिद्ध महाकवि चंदवरदायी ।

चंदवो-दे० चंदरवो ।

चंदाणणी-*(वि०)* चन्द्रवदनी । चंद्राननी ।

चंदावदनी-दे० चंदाणणी ।

चंदावळ-*(ना०)* सेना का पीछे का भाग । २. चांद्रायण व्रत ।

चंदो-*(न०)* १. किसी कार्य की सहायता के लिये कई व्यक्तियों से उगहाया हुआ धन। चंदा । २. पत्र-पत्रिकाओं का वार्षिक मूल्य । ३. सदस्य शुल्क । ४. चंद्रमा ।

चंदोल-*(न०)* १. सेना का पिछला भाग । **चंदावळ** । २. एक प्रकार की पालकी ।

चंदोवो-*(न०)* चंदोवा । **चंदरवो** ।

चंद्र-*(न०)* १. चन्द्रमा । चाँद । २. मोर पाँख का चन्द्राकार चिन्ह या भाग । चंद्रक । ३. एक की संख्या । ४. शकुन तथा योग के अनुसार बाएँ नासाछिद्र से चलने वाला श्वासोच्छ्वास । चंद्रस्वर ।

चंद्रकळा-*(ना०)* चंद्रिका । चाँदनी । **चानणी** ।

चंद्रग्रहण-*(न०)* चंद्रमा का ग्रहण ।

चंद्रदुरंग-*(न०)* चितौड़गढ़ का एक नाम । चंद्रदुर्ग ।

चंद्रप्रहास-*(ना०)* तलवार ।

चंद्रबिंदु-*(न०)* सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगने वाला अर्ध चन्द्राकार और बिन्दु । 'ँ' ऐसा चिन्ह । अर्धबिन्दु ।

चंद्रमा-*(न०)* चंद्र । इंदु । शशि । । **चाँद** ।

चंद्रमुखी-दे० चंदमुखी ।

चंद्रमौलि-*(न०)* महादेव ।

चंद्रवार-*(न०)* सोमवार ।

चंद्रवो-दे० चंदरवो ।

चंद्रशेखर-*(न०)* महादेव ।

चंद्रहार-*(न०)*१. रत्नहार । २. एक प्रकार का हार ।

चंद्रहास–(ना०) १. तलवार। २. रावण की तलवार का नाम। ३. एक भक्त का नाम।

चंद्रहांस–(न०) चंद्रहार। हार।

चंद्राणणी–दे० चंदाणणी।

चंद्रायणो–(न०) एक छंद।

चंद्रवो–दे० चंदोवो।

चंद्रोदय–(न०) १. चंद्रमा का उदय। २. एक रसौषधि।

चंपक–(न०) चंपा का वृक्ष अथवा पुष्प।

चंपकळी–(ना०)१. गले का एक आभूषण। २. चंपे के फूल की कली।

चंपकवरणी–दे० चंपावरणी।

चंपणो–(क्रि०)१. दवाना। २. पैर चांपना। ३. पकड़ना। ४. हराना। ५. लज्जित होना। ६. लज्जित करना। ७. छिपना।

चंपत–(वि०) लुप्त। गायब।

चंपाई–(वि०) चंपा के रंग के समान।

चंपा-वरणी–(वि०) १. चंपा के फूल के समान वर्ण वाली। गौर वर्ण वाली।

चंपी–(ना०) पाँव दवाने का काम।

चंपू–(न०)गद्य-पद्य मय काव्य। वह साहित्य कृति जिसमें गद्य पद्य दोनों हों।

चंपेल–(न०) १. चंपे का तेल। २. चमेली का तेल।

चंपेली– (ना०) चमेली।

चंपो–(न०) चम्पे का वृक्ष या फूल। चंपा। चंपक।

चंवळ–(ना०) कोटा के पास होकर वहने वाली राजस्थान की एक नदी जो विंध्याचल पर्वत से निकलती है और यमुना में मिल जाती है। चर्मण्यवती। चम्वल।

चंवु–सुराही। भुड़को।

चंवर–(न०) चमर। चामर।

चंवरगाय–(ना०) वह गाय जिसके पूंछ के वालों से चमर वनता है।

चँवरी–(ना०) १. लग्न मण्डप। विवाह वेदी। २. घोड़ों के पूंछ के वालों की वनाई हुई चमरी। झमरी।

चँवरीदापो–(न०)१ विवाह का एक नेग। २. विवाह का एक राज कर।

चँवरीलाग–दे० चँवरी दापो।

चँवळेरी–(ना०) चौले की फली।

चँवळो–(न०) चौला। चवळो।

चँवाळियो–(न०) मकान के छत की पत्थर की पट्टियों तथा भारी पत्थर को उठाकर ऊपर रखने वाला मजदूर।

चा–(प्रत्य०) प्रायः काव्य में प्रयुक्त छठी विभक्ति का वहुवचन रूप। के।

चाउंडा–(ना०) चामुंडा।

चाऊ–(वि०) १. मिष्ठान्न खाने की आदत वाला। २. खूव खाने वाला। ३. रिश्वत लेने वाला।

चाक–(ना०) १. वागा (जामा) का घेरवाला नीचे का भाग। २. कुम्हार का वरतन वनाने का चक्र। ३. वड़ी चक्की। ४. चक्र। ५. पहिया। ६. वोर्ड पर लिखने की खड़िया मिट्टी की पैन। (वि०) १. स्वस्थ। चंगा। २. मस्त। मदोन्मत्त। ३. सावधान। सचेत। सतर्क। ४. तृप्त। ५. ठीक। दुरुस्त। ६. सज्जित। ७. प्रसन्न। कुशल। राजी खुशी।

चाकर–(न०)१. नौकर। सेवक। २. दास। ३. गोला। ४. एक जाति। गोला जाति।

चाकराणी–(ना०) १. चाकरनी। नौकरानी। २. दासी। ३. गोली।

चाकरी–(ना०) १. सेवा। २. नौकरी।

चाकली–(ना०) चक्की।

चाकी–(ना०) १. चक्की। घट्टी। २. टिकिया।

चाकू–(ना०) चक्कू। छुरी। छरी।

चाख–(ना०) १. नजर। दृष्टि-दोष। दीठ। २. आँख। (वि०) प्रसन्न। (अव्य०) राजी

खुशी । कुशल क्षेम । मजे में । प्रसन्न हो । (कुशल समाचार)

चाखड़ी–*(ना०)* १. खड़ाऊ । पाँवड़ी । २. चक्की के खील (कील) के ऊपर रहने वाला लकड़ी का टुकड़ा जो चक्की के ऊपर के पाट के सुराख में लगा रहता है । **माँकड़ी** । ३. बाँस की पट्टी जो हड्डी टूटे हुए अंग पर बाँधी जाती है ।

चाखणो–*(क्रि०)* १. चखना । स्वाद लेना । २. अनुभव करना । ३. फल भुगतना ।

चागर–*(ना०)* १. प्रेम । लाड़ । २. वार्तालाप । ३. प्रेम मिलन ।

चाच–*(न०)* १. सिर । २. मुँह ।

चाचर–*(ना०)* १. करतल ध्वनि के साथ गाते हुए किया जाने वाला समूह-नृत्य । ताली के साथ ताल मिलाते हुए किया जाने वाला समूह-नृत्य और गायन । २. ताली के साथ स्त्रियों का समूह नृत्य और गायन । ३. नृत्य । नाच । ४. संगीत । ५. खेल तमाशा । ६. वसंत ऋतु की एक राग । होली-गीत । ७. चाचर खेलने का चौक । ८. मंदिर के आगे का चौक । ९. होली का हुड़दंग । १०. हो-हल्ला । ११. बड़ा ढोल । १२. बड़ा डफ । चंग । १३. शिखर । १४. मस्तक । १५. युद्ध-भूमि । रणक्षेत्र । १६. श्मशान भूमि ।

चाचरो–*(न०)* १. सिर । २. सिर का अग्र भाग । ३. कपाल । खोपड़ी । ४. भग । योनि ।

चाची–*(ना०)* चाचा की पत्नी । **काकी** ।

चाचो–*(न०)* बाप का छोटा भाई । **काको** ।

चाट–*(न०)* १. व्यसन । २. लत । ३. चाटने की वस्तु । ४. चटपटी वस्तु । ५. प्रबल इच्छा । ६. लोलुपता ।

चाटण–*(ना०)* चाटी जाने वाली वस्तु । चटनी ।

चाटणो–*(क्रि०)* १. चाटना । २. स्वाद लेना । ३. खा जाना । ४. पोंछ कर खा लेना । ५. गाय आदि का सद्यजात बछड़े को जीभ से चाटना । प्यार से जीभ फेरना ।

चाटाळ–*(वि०)* १. चाटो खाये विना दुहाने नहीं देने वाली (गाय या भैंस) । २. रिश्वतखोर ।

चाटू–*(वि०)*१. चापलूस । २. चाटने वाला । **चटोकड़ो** ।

चाटो–*(न०)* गाय, भैंस के लिए घास की कुतर (महीन कुट्टी) के साथ बाजरी, ग्वार, गुड़ आदि मिश्रण का रंधा हुआ एक खाद्य । **चाँटो** ।

चाठ–*(ना०)* १. पहाड़ का समतल भाग । २. पहाड़ पर चढ़ाई का चिपटा समतल भाग । पहाड़ का ढलवाँ समतल भाग । **चौठ** । ३. लंबा चौड़ा चिपटा पत्थर ।

चाठो–*(न०)* १. चोट, व्रण आदि का निशान । २. चकता । दाग । ३. ददोरा । चपटी सूजन । ४. चिन्ह । निशान ।

चाड–*(ना०)* १. पुकार । २. सहायता । रक्षा । ३. रक्षार्थ पीछे दौड़ना । **वाहर** । ४. युद्ध । ५. चुगली । ६. धोखा । दगा । ७. इच्छा । चाह । ८. कुएँ में से पानी खींचने के लिये मुंडेर के सहारे खड़े रहने का स्थान ।

चाडकी–*(ना०)* छोटी मटकी । **चाडी** ।

चाडको–दे० चाडो ।

चाड़व–*(न०)* १. कवि । २. चारण ।

चाडियो–*(न०)* मिट्टी का छोटा जल पात्र । *(वि०)* चुगलखोर ।

चाडी–*(ना०)*१. चौड़े मुँह की छोटी मटकी । २. चुगली । ३. शिकायत । ४. सहायता ।

चाडीखोर–*(वि०)* चुगली करने वाला ।

चाडो–*(न०)* चौड़े मुंह का मटका । चौड़े मुंह का बड़ा घड़ा । मिट्टी का बड़ा

घड़ा। २. चौड़े मुँह का दही बिलौने का मटका।

चाढ-(ना०) १. आक्रमण। २. सहायता। मदद। मदत। ३. सहायता की मांग। ४. अभिलाषा। इच्छा। अभळाखा।

चाढण-जळ-(वि०) १. कीर्ति प्राप्त करने वाला। २. वंश की कीर्ति को बढ़ाने वाला।

चाढणो-दे० चढ़ाणो।

चाणक-(न०) चाणक्य। कौटिल्य। (क्रि० वि०) अचानक। सहसा।

चाणचक-(क्रि०वि०) अचानक। एकदम।

चातक-(न०) पपीहा। सारंग।

चातर-(वि०) चतुर।

चाती-(ना०) फोड़े फुन्सी पर चिपकाई जाने वाली मरहम की थिगली। पट्टी।

चातुर-दे० चातर।

चातुर्मास-(न०) चौमासा। वर्षा के चार मास। चौमासो।

चात्रक(वि०) चतुर। होशियार। (न०) चातक।

चात्रग-दे० चात्रक।

चात्रण-(न०) नाश। संहार।

चात्रणो-(क्रि०) १. नाश करना। २. हराना। हराणो।

चादर-(ना०) १. तालाब नदी आदि में फैले हुये पानी की सतह। २. ऊपर से गिरने वाली पानी की चौड़ी धारा। ३. ओढ़ने या बिछाने का कपड़ा। दुपट्टा। चद्दर। ४. धातु का पत्रा। ५. मुकाम। डेरा।

चादरो-(न०) ओढ़ने तथा खाट पर बिछाने का वस्त्र।

चानणी-दे० चाँदणी।

चानणो-(न०)प्रकाश। चाँदना। उजाला।

चानणोपख-(न०)१. शुक्लपक्ष। सुदपख। २. अनुकूल समय या वातावरण।

चाप-(ना०)१. आहट। खुड़को। पदचाप। २. दीवाल की चुनाई में लगाया जाने वाला चपटा पत्थर। (न०) धनुष।

चापट-(ना०) १. चपेट। तमाचा। थप्पड़। २. चापड़। थूलो। ३. भाग-दौड़।

चापटणो-(क्रि०) १. भागना। २. थप्पड़ मारना।

चापटो-दे० चपटो।

चापड़-(न०) १. गेहूं के आटे का चोकर। थूलो। चापट। २. दौड़ने की क्रिया। दौड़। ३. युद्ध।

चापड़णो-(क्रि०) १. भागना। २. युद्ध करना। लड़ना। ३. भयभीत होना। डरना। बीहणो।

चापड़ो-दे० चापड़।

चापधारी-(न०)धनुषधारी श्री रामचंद्र।

चापर-(ना०) शीघ्रता।

चापर करणो-(मुहा०) १. जल्दी करना। २. उतावल करना।

चापळी-(ना०) १. बिजली। २. लक्ष्मी।

चापलूस-(वि०) खुशामदी। खुसामदियो।

चापलूसी(ना०) खुशामद।

चाबखो-(न०)१. चाबुक। कोड़ा। कोरड़ो। २. मार्मिक वचन। ३. तीव्र प्रेरणा।

चाबणो-(क्रि०)दाँतों से कुचलना। चबाना।

चाबी-(ना०) १. कुंजी। कूंची। ताली। २. घड़ी चालू करने का एक पुर्जा।

चाबुक-(ना०) कोड़ा। कोरड़ो।

चाम-(न०) १. चमड़ा। त्वचा। खाल। २. खेत में हल चलाकर निकाली हुई रेखा। हल चलाने से हल की फाल से बनी हुई रेखा या नाली। सीता। कूंड। ओळ। ३. खेत के किनारों की आड़ी निकाली हुई हल की रेखाएँ। आडी-ओळां।

चामकस-(न०) १. एक घास। २. बहुत फलियों वाली एक पौष्टिक वनस्पति का छत्ता। बहुफळी। बोफळी।

चामचोर-(वि०) व्यभिचारी ।

चामचोरी-(ना०) व्यभिचार । पर स्त्री गमन ।

चामजूं-दे० चमजूं ।

चामड़ियाळ-(न०) मुसलमान ।

चामड़ियो-(न०) चमड़े का काम करने वाला । चमार । चर्मकार । खालड़ियो ।

चामड़ी-(ना०) चमड़ी ।

चामड़ो-(न०) १. चमड़ा । खाल । २. त्वचा । चमड़ी । ३. मरे हुए पशु का चमड़ा । खालड़ो ।

चामण-(ना०) आँख ।

चामणी-दे० चामण ।

चामर-दे० चँवर ।

चामरस-(न०) संभोग सुख ।

चामसुख-दे० चामरस ।

चामरियाळ-(न०) १. मुसलमान । २. घोड़ा ।

चामरी-(न०) घोड़ा ।

चामळ-(ना०) चम्बल नदी ।

चामीकर-(न०) सोना । सुवर्ण ।

चामीर-दे० चामीकर ।

चामुंडा-(ना०) चामुंडा देवी । दुर्गा का एक स्वरूप ।

चामोटो-दे० चमोटो ।

चाय-(ना०) १. एक पौधा तथा उसकी पत्तियां । २. इस पौधे की सूखी पत्तियों को गरम पानी में डालकर बनाया जाने वाला गरम पेय ।

चायना-(ना०) १. चाहना । इच्छा । २. आवश्यकता ।

चायलवाड़ो-(न०)बीकानेर जिले का चायल जाति के जाटों का प्रदेश ।

चार-(वि०) तीन और एक । (न०) चार की संख्या । '४' (ना०) घास । चारो । चर ।

चारखाणी-(ना०) जरायुज, उद्भिज, अंडज और स्वेदज प्राणियों के उत्पन्न होने के ये चार प्रकार ।

चारखूंट-(ना०) १. चारों दिशाएँ । २. चौखूंट ।

चार चाँद लागणो-(मुहा०)प्रतिष्ठा, शोभा इत्यादि में वृद्धि होना ।

चार-छाँतो-(न०)घास, कड़बी आदि पशुओं के चरने की सामग्री । चार-डोको । चारो ।

चारजामो-(न०) घोड़े या ऊंट की पीठ पर कसा जाने वाला सवारी के लिए आसन ।

चारडोको-(न०) अन्न के अतिरिक्त कृषि द्वारा प्राप्त होने वाला पशुओं के लिये घास चारा आदि । खेती से उत्पन्न होने वाले नाज का अतिरिक्त भाग । कड़बी । कड़ब चार-छाँतो ।

चारण-(न०) १. क्षत्रियों का यशोगान करने वाली एक जाति । २. इस जाति का मनुष्य ।

चारणिया वंट-(न०)जागीरी की वह प्रथा जिसमें(पाटवी और थाटवी)सभी भाइयों में जागीरी व भूमि का समान बंटवारा किया जाता है । सभी भाइयों में गाँव और जमीन के समान बँटवारे की प्रथा ।

चारणी-(ना०) १. चारण की स्त्री । २. चालनी । (वि०) चारण संबंधी ।

चारणो-(क्रि०) चराना । घास खिलाना । (न०) चालना । बड़ी चलनी ।

चार धाम-(न०) भारत की चार दिशाओं में चार बड़े तीर्थ—पूर्व में जगन्नाथपुरी, दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में द्वारका, और उत्तर में बदरीनाथ ।

चारपाई-(ना०) खाट । मांचो ।

चारभुजा-(न०) राजस्थान का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान । वल्लभ संप्रदाय का एक तीर्थ स्थान ।२. चारभुजा भगवान ।

चार-वीसी-(वि०) वीस का चार गुना। अस्सी। '८०'

चारानी-(ना०) चार आनों का सिक्का। चवन्नी।

चारु-(वि०) सुन्दर। फूठरो।

चारूं-(वि०) चारों। चारों ही। चार के चार।

चारूंकानी-(अव्य०) चारों ओर।

चारूंमेर-(अव्य०) चारों ओर। चोफेर। चारूंकानी।

चारो-(न०) १. घास। चारा। २. किसी एक बात के विषय में अनेक विधियों का मिलान। विकल्प। ३. उपाय। चारा। तदबीर। ४. वश। अधिकार।

चारोतरसो-(न०) पहाड़े में बोली जाने वाली एक सौ चार (१०४) की संख्या।

चारोळी-(ना०) १. एक प्रकार की बढ़िया पारदर्शक खड़िया जिसको पका पर टैल्कम पाउडर आदि बनाये जाते हैं। (थोब री) खड्डी। २. नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। ३. चिरौंजी।

चार्वाक-(न०) १. एक अनीश्वरवादी तत्व विचारक। एक नास्तिक तार्किक। २. नास्तिक दर्शन।

चाल-(ना०) १. रिवाज। प्रथा। २. गति। रफ्तार। ३. चलने का ढंग। चाल। ४. विधि। ढंग। ५. छल। कपट। ६. शतरंज आदि के खेल में दाँव चलने की पारी। ७. अनुकरण। नकल।

चाळ-(ना०) १. अंगरखे आदि का सामने का निचला भाग। २. कमर बाँधने का कपड़ा। ३. कपड़े का छोर। अंचल। दामन। ५. युद्ध। ६. कोप। ७. प्रान्त। परगनो। ८. स्वर्ग-पातालादिक लोक। ९. कमर।

चालक-(वि०) चलाने वाला।

चाळक-(ना०) १. देवी। २. आवड़ नाम की देवी। ३. देवी का वाहन। सिंह।

चाळकनेच-दे० चाळकनेची।

चाळकनेची-(ना०) आवड़ देवी।

चाल करणो-(मुहा०) धोखा देना।

चाळकराय-दे० चाळकनेची।

चालचलगत-(ना०) १. चालचलन। आचरण। २. चारित्र्य।

चालचलण-(न०) आचरण। व्यवहार। चरित्र। चालचलन।

चाल चलणो-(मुहा०) धोखा देना।

चालढाल-(ना०) १. चालचलन। २. रंग-ढंग। तौर-तरीका।

चाळणी-(ना०) चलनी। छलनी।

चालणो-दे० चलणो।

चाळणो-(न०) १. चालना। बड़ी चलनी। (क्रि०) छानना। चालना। २. भड़काना। उकसाना। ३. छेड़ना।

चाळनेच-(ना०) आवड़देवी।

चालबाज-(वि०) चालाक। धूर्त।

चालबाजी-(ना०) चालाकी। धूर्तता।

चाळराय-(ना०) आवड़देवी।

चाळा-(न०बहु०व०) १. मजाक करने के लिये किसी के बोलने चालने आदि का किया जाने वाला अनुकरण। २. हाव भाव। नखरा। अंगचेष्टा। ३. छेड़छाड़।

चालाक-(वि०) १. होशियार। २. धूर्त।

चालाकी-(ना०) १. होशियारी। २. धूर्तता।

चाळागरो-(वि०) १. युद्धोत्साही। २. युद्धोन्मुखी। ३. लड़ाई खोर। झगड़ा-खोर। ४. पाखंडी। ढोंगी। ५. वीर।

चालाण-दे० चलाण।

चाली-(ना०) १. चलने का ढंग। २. चाल चलन। आचरण।

चाळी-(वि०) चालीस। (न०) चालीस की संख्या।

चाळीस-(वि०) वीस और वीस। (न०) चालीस की संख्या। '४०.'।

चाळीसमो-*(वि०)* जो क्रम में उनतालीस के बाद आता हो। चालीसवाँ।

चाळीसवों-दे० चाळीसमो।

चाळीसो-*(न०)* १. चालीस पद्यों का ग्रंथ वा काव्य। *यथा*-हनुमान चालीसो। २. चालीसवाँ वर्ष। ३. मुसलमानों में मृतक के पीछे चालीसवें दिन किया जाने वाला खाना।

चालू-*(वि०)* १. वर्तमान। प्रचलित। २. गतिमान। ३. आरम्भ। शुरू।

चालेवो-*(न०)* १. प्रस्थान। गमन। २. चिरप्रस्थान। मृत्यु।

चाळो-*(न०)* १. क्रीड़ा। २. चेष्टा। ३. नखरा। मटका। ४. लक्षण। चिन्ह। ५. कुतूहल। कौतुक। ६. मनोरंजन। दिल बहलाव। ७. रचना। बनाव। उठाव। ८. वृद्धि। ९. वातावरण। प्रवाह। फैलाव। १०. चलन। रिवाज। ११. सिलसिला। १२. दबाव। १३. हरकत। १४. ढोंग। १५. भूत-प्रेत आदि का प्रकोप। १६. छलछद्म। १७. छेड़छाड़। १८. हैरानी। १९. दुख। कष्ट। २०. निकम्मापन की क्रियाएँ। २१. कोप। २२. युद्ध। २३. रोग। २४. रोग का सर्वदेशीय उपद्रव। महामारी। २५. भेद। २६. उपद्रव।

चाव-*(न०)* १. चाह। अभिलाषा। २. उत्साह। उमंग। ३. उत्कंठा। ४. दान। ५. उत्सव। ६. हर्ष। ७. शौक। ८. [illegible]। मजा।

चावणो-*(क्रि०)* चबाना। चावना।

चावना-*(ना०)* चाहना। इच्छा। इंछा।

चावर-*(ना०)* जोते हुये खेत की जमीन को समतल करने के लिये उस पर पाटा फिराने की क्रिया। सावर।

चावळ-*(न०)* १. चावल। तंदुल। २. रत्ती के आठवें भाग का तोल।

चावंडा-दे० चामुंडा।

चावै-दे० चाहीजै। दे० चाहै।

चावो-*(न०)* १. पुत्र। छावो। *(वि०)* १. प्रसिद्ध। प्रख्यात। २. प्रगट।

चास-*(ना०)* १. पृथ्वी। २. ज्योति। प्रकाश। ३. जाँच। तपास। ४. खबर। पता। ५. चाह। इच्छा। ६. कृषक। ७. नीलकंठ पक्षी। ८. हल चलाने से बनने वाली रेखा। **चास**।

चासणी-*(ना०)* १. चाशनी। शीरा। २. परीक्षा करने के लिये गलाया हुआ सोने का टुकड़ा। ३. परीक्षा।

चासणी करणो-*(मुहा०)* १. जाँच करना। २. चासनी बनाना।

चासणो-*(क्रि०)* जलाना। दीपक जलाना।

चासो-*(न०)* १. प्रकाश। २. खेत में हल चलाने से बनी रेखा। ३. कृषक।

चाह-*(ना०)* १. इच्छा। २. जरूरत। **चाहिजवाण**।

चाहड़-*(ना०)* पैरों में पहिनने का एक आभूषण।

चाहणो-*(क्रि०)* १. चाहना। इच्छा करना। २. प्रेम करना।

चाहना-*(ना०)* चाह। इच्छा। **चावना**।

चाहिजवाण-*(ना०)* आवश्यकता। जरूरत।

चाही-*(वि०)* १. सिंचाई के योग्य (जमीन)। जरखेज, उपजाऊ। २. चाही हुई। इच्छित। *(ना०)* सिंचाई योग्य कृषि भूमि।

चाहीजै-*(अव्य०)* १. आवश्यकता है। चाहिये। २. उचित है। उपयुक्त है।

चाहू-*(वि०)* १. चाहने वाला। २. हित चिंतक।

चाहै-*(अव्य०)* १. यदि इच्छा हो। २. जैसी इच्छा हो। जो मर्जी हो।

चाह्यो-*(वि०)* इच्छित। मन चाहा। चाहा हुआ।

चाँच–(ना०) १. चोंच । चंचु । २. चोंच के जैसी नोकदार चीज । ३. वह लंबी लकड़ी जिसमें कुएँ से पानी निकालने की ढेंकली बँधी रहती है । ४. कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र । ढेंकली । ५. बैलगाड़ी के आगे का नोकदार भाग ।

चाँचड़–(न०) १. पिस्सू । २. खेत में खड़ी फसल ।

चाँचदार–(वि०) चोंचवाला ।

चाँचाळी–(ना०) गिद्धनी । (वि०) चोंच वाली ।

चाँचाळो–(वि०) चोंच वाला ।

चाँचियो–(न०) १. चोर । २. उचक्का । ३. डाकू ।

चाँटी–(ना०) १. दौड़ । २. सहायता । ३. वेगार । ४. सेवा । ५. दासी । चेटी ।

चाँडाळ–दे० चंडाळ ।

चाँतरी–(ना०) चबूतरी । चूंतरी ।

चाँतरो–(न०) चबूतरा । चूंतरो ।

चाँद–(न०) १. चन्द्रमा । चंद्र । २. स्त्रियों के सिर का एक आभूषण । ३. मोर पंख के शीर्षस्थ चौड़े भाग के बीच की चंद्रिका । ४. निशाने मारने का लक्ष्य ।

चाँदड़लो–(न०) चांद । चन्द्रमा ।

चाँदणी–(न०) १. चद्रमा का प्रकाश । चाँदनी । ज्योत्स्ना । २. वस्त्रों के ऊपर ओढ़ने का परदानशीन औरतों का एक विशेष वस्त्र । ३. चंदोवा । ४. हाथ से रंगे छपे मोटे कपड़े का एक बिछावन । मोटे कपड़े की दरी । जाजम । ५. छत के ऊपर मेड़ी के आगे का छपरे वाला खुला भाग । ६. बिछावन या खाट पर बिछाई जाने वाली चादर ।

चाँदणीरात–(ना०) चन्द्र के प्रकाश वाली रात ।

चाँदणो–दे० चानणो ।

चाँदणो पख–(न०) शुक्ल पक्ष ।

चाँदमारी–(ना०) १. कपड़े, तख्ते आदि पर बने चंद्र चिन्ह पर गोली मारने का अभ्यास । २. चाँदमारी का मैदान ।

चाँदसूरज–(न०) १. स्त्रियों का एक सिरो-भूषण । २. चन्द्र और सूर्य ।

चाँदी–(ना०) १. रौप्य । रूपो । रजत । २. व्रण । छाला । छाळो । ३. व्रण से उत्पन्न चट्टा । व्रण का सफेद निशान । ४. घाव । जख्म । ५. माल । धन । रुपया-पैसा ।

चाँदी करणो–(मुहा०) अन्याय के विरुद्ध धरना देकर शस्त्र के प्रहार से आपघात करना या खून निकालना । दे० खाळिया करणो ।

चाँदी पड़णो–(मुहा०) घाव पड़जाना ।

चाँदी वरसणो–(मुहा०) खूब आमदनी होना ।

चाँदो–(न०) १. चाँद । २. एक लोक गीत ।

चाँदोड़ी रुपियो–(न०) एक प्राचीन मेवाड़ी सिक्का ।

चाँद्रायण–(न०) चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार कम ज्यादा कौर खाने का एक कठोर मासिक व्रत, तप या अनुष्ठान ।

चाँप–(ना०) १. किसी यंत्र को चलाने या बंद करने की कल । कमान । २. दबाव । ३. ध्यान । खयाल । ४. उतावल । शीघ्रता ।

चाँपण–(ना०) १. किसी समतल वस्तु या वस्तु के समतल भाग को बिलकुल सपाट करने का एक औजार । २. दबाने का औजार या कल । ३. खुशामद ।

चाँपणो–(क्रि०) १. हाथ-पैरों की चंपी करना । २. दावना । दबाना । ३. खुशा-मद करना । राजी करना । ४. अधिकार करना । कब्जा करना । ५. डराना । भय दिखाना ।

चाँपो–(न०) १. गो-समूह । गायों का झुंड । गोहर । २. चंपा का वृक्ष ।

चाँब–दे० थाम, सं० ३.।
चाँवळ–(ना०) चम्बल नदी।
चि०–(अव्य०) १. 'चिरंजीव' का संक्षिप्त रूप।
चिक–(ना०) बाँस की तीलियों का परदा। चिलमन।
चिकटाई–दे० चिकणाई।
चिकटो–दे० चींगटो।
चिकणाई–(ना०) चिकनाई। चिकनापन। स्निग्धता।
चिकणाट–दे० चिकणाई।
चिकणो–दे० चीकणो।
चिकार–(वि०) १. भरपूर। ठसाठस। खूब भरा हुआ।
चिकारो–(ना०) एक तंतु वाद्य।
चिकास–(न०) चिकनाई। स्निग्घता।
चिकिछा–(ना०) चिकित्सा। औषधोपचार। इलाज।
चिकित्सा–दे० चिकिछा।
चिकुर–(न०) सिर के बाल।
चिग–(ना०) बाँस की पतली सीखों को धागों से गूंथकर बनाया हुआ दरवाजे का परदा। चिक।
चिगथ–(न०) मुसलमान।
चिगथो–(न०) मुसलमान।
चिगदणो–(क्रि०) १. चिगदना। पीसना। २. मसलना। कुचलना।
चिगदो–(न०) घाव। जख्म।
चिगनिया–(न०व०व०) बहुत छोटे-छोटे लिये जाने वाले ग्रास।
चिगनिया करणो–(मुहा०) पेट भर जाने पर थाली में बची हुई भोजन सामग्री के बहुत छोटे-छोटे कौर लेना।
चिगाणो–दे० चिगावणो।
चिगाळी–(ना०) किसी की बोली या आकृति की की जाने वाली उपहासजनक नकल। चिढ़। कुट्टी।
चिगावणो–(क्रि०) १. भुलावा देना। फुसलाना। २. ललचाना। लालायित करना। ३. चिढ़ाना। खिजाना। ४. तरसाना।
चिगियाँ–दे० चिगाळी।
चिगी–दे० चिगाळी।
चिट–(ना०) कागज का छोटा टुकड़ा।
चिटक–(ना०) १. नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। **चारोली**। २. आभा। कांति। चटक। ३. उमंग। ४. परत। पपड़ी।
चिटकणी–(ना०) सिटकनी। चिटकनी।
चिटको–दे० चटको।
चिटियो–(न०) छड़ी। **चटियो**।
चिटु आँगळी–(ना०) सबसे छोटी अंगुली। कनिष्ठिका।
चिटुड़ी–(ना०) हाथ (या पाँव) की सबसे छोटी अंगुली। कनिष्ठिका।
चिट्टो–(न०) किसी लंबी वस्तु के शुरू या अंत का भाग। सिरा।
चिठ्ठी–(ना०) पत्र। पत्री। खत।
चिठ्ठीपत्री–(ना०) १. पत्र। चिठ्ठी। २. ग्रामान्तर से आने वाला या ग्रामान्तर को लिखा जाने वाला पत्र-संदेश। ३. पत्र-व्यवहार।
चिड़–(ना०) १. चिढ़। कुढ़न। २. झुंझलाहट। ३. खीज। ४. घृणा। नफरत।
चिड़कली–(ना०) चिड़िया। **चिड़ी**।
चिड़कलो–(न०) नर चिड़िया। चिड़ा। चिड़ो।
चिड़कोली–(ना०) चिड़िया। **चिड़ी**।
चिड़चिड़ो–(वि०) चिड़चिड़े स्वभाव वाला। तुनक मिजाज।
चिड़णो–(क्रि०) १. नाराज होना। २. क्रोध करना। ३. खिजाना। ४. झुंझलाना। कुढ़ना। चिढ़ना।
चिड़पड़ो–(वि०) १. वर्षा की कमी वाला। (वर्ष)। २. थोड़ा-थोड़ा (बरसना)। थोड़ी-थोड़ी (वर्षा)।

चिड़ाणो-दे० चिड़ावणो।

चिड़ावणो-(क्रि०) १. नाराज करना। २. खिजाना। ३. उपहास करना।

चिड़ियाटूंक-(ना०) जोधपुर के किले की पहाड़ी का नाम। (किला बनने के पूर्व इस पहाड़ी पर चिड़ियानाथ नाम के प्रसिद्ध योगी रहते थे। इसलिये पहाड़ी का नाम यह प्रसिद्ध हुआ)।

चिड़ी-(ना०) चिड़िया।

चिड़ीमार-(न०) बहेलिया। पारधी।

चिड़ी मोथियो-(न०) एक प्रकार का घास। श्रीमुस्तक।

चिड़ीलो-(वि०) १. क्रोधी। २. चिड़चिड़े स्वभाव वाला।

चिड़ो-(न०) नर चिड़िया। चिड़कलो।

चिड़ोकणो-(वि०) चिड़चिड़े स्वभाव वाला। चिड़ीलो।।

चिड़ोकली-(ना०) चिड़िया। (वि०) चिढ़ने वाला।

चिड़ोकलो-(वि०) १. चिड़चिड़े स्वभाव वाला। २. चिढ़ने वाला। (न०) नर चिड़िया। चिड़ो।

चिड़ोतरसो-दे० चारोतरसो।

चिणक-(ना०) १. मोच। लचक। चनक। २. अग्निकण। अंगारा। चिनगारी।

चिणग-दे० चिणक।

चिणगट-(ना०) तमाचा। थप्पड़। थाप।

चिणगारी-(ना०) चिनगारी। अग्निकण। चिणग। तळंगियो।

चिणगियो-(न०) रुक रुक कर पिशाब आने का रोग। मूत्रकृच्छ। (वि०) थोड़ा। न्यून।

चिणगो-(वि०) थोड़ा। कम। (स्त्री० चिणगी)।

चिणणो-(क्रि०) चुनना।

चिणाई-(ना०) १. एक गोल और काला विषैला जंतु। २. पैर के तलुवे में इस जंतु के स्पर्श से होने वाला व्रण। ३. चुनने का काम। चुनाई।

चिणायकाँ-(ना०) चाणक्य नीति का लोक रूप जो बाणीकी पाठशालाओं में पढ़ाया जाता है। चाणक्य नीति।

चिणारी-दे० चिणाई।

चिणावणो-दे० चुणावणो।

चिणो-(न०) चना। चनक।

चिणोटियो-(न०) १. पुत्र जन्मोत्सव पर पुत्र की माता को ओढ़ाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का मांगलिक ओढ़ना। २. इस मांगलिक अवसर पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।

चिणोटी-दे० चिरमी।

चित-(न०) १. अंतःकरण। २. चित्त। ३. चेतन स्वरूप। (वि०) सीधा लेटा हुआ।

चितइलोळ-(न०) एक डिंगल-छंद।

चितउर-(न०) चित्तौड़।

चितकबरो-(वि०) रंग-बिरंगा। चितकबरा।

चितचोज-(ना०) १. प्रसन्नता। खुशी। २. मौज।

चितचोजी-(वि०) १. प्रसन्न। खुश। २. मौजी। (ना०) प्रसन्नता।

चितचोर-(वि०) चित्त को चुराने वाला। मनभावना। चित्त को वश में करने वाला।

चित-बिलंद-(वि०) विशाल हृदय। बुलंद चित्त वाला। उदार।

चित भरमियो-(वि०) उन्माद रोग से पीड़ित। मतिभ्रम। चित्तभ्रम। पागल।

चितभंग-(वि०) १. निराश। २. खिन्न। उदास। (न०) १. उन्माद। २. उचाट।

चितमाठो-(वि०) कृपण। कंजूस।

चितरकोट-दे० चित्रकूट।

चितरगढ़-(न०) चित्तौड़गढ़।

चितरणो-(क्रि०) १. चित्रित करना। २. चित्र बनाना। ३. महावरी का

चाँव–दे० चाम, सं० ३.।
चाँवळ–(ना०) चम्बल नदी।
चि०–(अव्य०) १. 'चिरजीव' का संक्षिप्त रूप।
चिक–(ना०) बाँस की तीलियों का परदा। चिलमन।
चिकटाई–दे० चिकणाई।
चिकटो–दे० चोंगटो।
चिकणाई–(ना०) चिकनाई। चिकनापन। स्निग्धता।
चिकणाट–दे० चिकणाई।
चिकणो–दे० चीकणो।
चिकार–(वि०) १. भरपूर। ठसाठस। खूब भरा हुआ।
चिकारो–(ना०) एक तंतु वाद्य।
चिकास–(न०) चिकनाई। स्निग्धता।
चिकिछा–(ना०) चिकित्सा। औषधोपचार। इलाज।
चिकित्सा–दे० चिकिछा।
चिकुर–(न०) सिर के बाल।
चिग–(ना०) बाँस की पतली सीखों को धागों से गूंथकर बनाया हुआ दरवाजे का परदा। चिक।
चिगथ–(न०) मुसलमान।
चिगथो–(न०) मुसलमान।
चिगदणो–(क्रि०) १. चिगदना। पीसना। २. मसलना। कुचलना।
चिगदो–(न०) घाव। जख्म।
चिगनिया–(न०ब०व०) बहुत छोटे-छोटे लिये जाने वाले ग्रास।
चिगनिया करणो–(मुहा०) पेट भर जाने पर थाली में बची हुई भोजन सामग्री के बहुत छोटे-छोटे कौर लेना।
चिगाणो–दे० चिगावणो।
चिगाळी–(ना०) किसी की बोली या आकृति की की जाने वाली उपहासजनक नकल। चिढ़। कुट्टी।
चिगावणो–(क्रि०) १. भुलावा देना। फुसलाना। २. ललचाना। लालायित करना। ३. चिढ़ाना। खिजाना। ४. तरसाना।
चिगियाँ–दे० चिगाळी।
चिगी–दे० चिगाळी।
चिट–(ना०) कागज का छोटा टुकड़ा।
चिटक–(ना०) १. नारियल की गिरी का छोटा टुकड़ा। चारोली। २. आभा। कांति। चटक। ३. उमंग। ४. परत। पपड़ी।
चिटकणी–(ना०) सिटकनी। चिटकनी।
चिटको–दे० चटको।
चिटियो–(न०) छड़ी। **चटियो**।
चिटु आँगळी–(ना०) सबसे छोटी अंगुली। कनिष्ठिका।
चिटुड़ी–(ना०) हाथ (या पाँव) की सबसे छोटी अंगुली। कनिष्ठिका।
चिट्टो–(न०) किसी लंबी वस्तु के शुरू या अंत का भाग। सिरा।
चिठ्टी–(ना०) पत्र। पत्री। खत।
चिठ्टीपत्री–(ना०) १. पत्र। चिठ्टी। २. ग्रामान्तर से आने वाला या ग्रामान्तर को लिखा जाने वाला पत्र-संदेश। ३. पत्र-व्यवहार।
चिड़–(ना०) १. चिढ़। कुढ़न। २. झुंझलाहट। ३. खीज। ४. घृणा। नफरत।
चिड़कली–(ना०) चिड़िया। **चिड़ी**।
चिड़कलो–(न०) नर चिड़िया। चिड़ा। चिड़ो।
चिड़कोली–(ना०) चिड़िया। **चिड़ी**।
चिड़चिड़ो–(वि०) चिड़चिड़े स्वभाव वाला। तुनक मिजाज।
चिड़णो–(क्रि०) १. नाराज होना। २. क्रोध करना। ३. खिजाना। ४. झुंझलाना। कुढ़ना। चिढ़ना।
चिड़पड़ो–(वि०) १. वर्षा की कमी वाला। (वर्ष)। २. थोड़ा-थोड़ा (बरसना)। थोड़ी-थोड़ी (वर्षा)।

चिड़ाणो-दे० चिड़ावणो ।

चिड़ावणो-(क्रि०) १. नाराज करना । २. खिजाना । ३. उपहास करना ।

चिड़ियाटूंक-(ना०) जोधपुर के किले की पहाड़ी का नाम । (किला बनने के पूर्व इस पहाड़ी पर चिड़ियानाथ नाम के प्रसिद्ध योगी रहते थे । इसलिये पहाड़ी का नाम यह प्रसिद्ध हुआ) ।

चिड़ी-(ना०) चिड़िया ।

चिड़ीमार-(न०) बहेलिया । पारधी ।

चिड़ी मोथियो-(न०) एक प्रकार का घास । श्रीमुस्तक ।

चिड़ीलो-(वि०) १. क्रोधी । २. चिड़चिड़े स्वभाव वाला ।

चिड़ो-(न०) नर चिड़िया । चिड़कलो ।

चिड़ोकणो-(वि०) चिड़चिड़े स्वभाव वाला । चिड़ीलो । ।

चिड़ोकली-(ना०) चिड़िया । (वि०) चिढ़ने वाला ।

चिड़ोकलो-(वि०) १. चिड़चिड़े स्वभाव वाला । २. चिढ़ने वाला । (न०) नर चिड़िया । चिड़ो ।

चिड़ोतरसो-दे० चारोतरसो ।

चिणक-(ना०) १. मोच । लचक । चमक । २. अग्निकण । अंगारा । चिनगारी ।

चिणग-दे० चिणक ।

चिणगट-(ना०) तमाचा । थप्पड़ । थाप ।

चिणगारी-(ना०) चिनगारी । अग्निकण । चिणग । तळंगियो ।

चिणगियो-(न०) रुक रुक कर पिशाब आने का रोग । मूत्रकृच्छ । (वि०) थोड़ा । न्यून ।

चिणगो-(वि०) थोड़ा । कम । (स्त्री० चिणगी) ।

चिणणो-(क्रि०) चुनना ।

चिणाई-(ना०) १. एक गोल और काला विषैला जंतु । २. पैर के तलुवे में इस जंतु के स्पर्श से होने वाला व्रण । ३. चुनने का काम । चुनाई ।

चिणायको-(ना०) चाणक्य नीति का लोक रूप जो बाणीको पाठशालाओं में पढ़ाया जाता है । चाणक्य नीति ।

चिणारी-दे० चिणाई ।

चिणावणो-दे० चुणावणो ।

चिणो-(न०) चना । चनक ।

चिणोटियो-(न०) १. पुत्र जन्मोत्सव पर पुत्र की माता को ओढ़ाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का मांगलिक ओढ़ना । २. इस मांगलिक अवसर पर गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

चिणोटी-दे० चिरमी ।

चित-(न०) १. अंतःकरण । २. चित्त । ३. चेतन स्वरूप । (वि०) सीधा लेटा हुआ ।

चितइलोळ-(न०) एक डिंगल-छंद ।

चितउर-(न०) चित्तौड़ ।

चितकबरो-(वि०)रंग-बिरंगा । चितकबरा ।

चितचोज-(ना०) १. प्रसन्नता । खुशी । २. मौज ।

चितचोजी-(वि०) १. प्रसन्न । खुश । २. मौजी । (ना०) प्रसन्नता ।

चितचोर-(वि०) चित्त को चुराने वाला । मनभावना । चित्त को वश में करने वाला ।

चित-बिलंद-(वि०) विशाल हृदय । बुलंद चित्त वाला । उदार ।

चित भरमियो-(वि०) उन्माद रोग से पीड़ित । मतिभ्रम । चित्तभ्रम । पागल ।

चितभंग-(वि०) १. निराश । २. खिन्न । उदास । (न०) १. उन्माद । २. उचाट ।

चितमाठो-(वि०) कृपण । कंजूस ।

चितरकोट-दे० चित्रकूट ।

चितरगढ़-(न०) चित्तौड़गढ़ ।

चितरणो-(क्रि०) १. चित्रित करना । २. चित्र बनाना । ३. नक्काशी करना ।

चितराण-(न०) 'चित्तौड़ का महराना' का संक्षिप्त रूप। चित्तौड़ाधिपति।
चितराम-(न०) १. चित्र। छवि। **चित्राम**। २. आश्चर्य व घबराहट से चित्र जैसी निष्प्राण स्थिति। ३. भीति चित्र।
चितवरा-(ना०) १. देखने का एक प्रकार। चितवन। २. दृष्टि। ३. याद।
चितवन-दे० चितवरा।
चिता-(ना०) श्मशान में शव को जलाने के लिये चुना जाने वाला लकड़ियों का ढेर। **आरोगी। चेह। चह।**
चितानळ-(ना०) चिता की अग्नि।
चितारणी-(ना०) १. विवाह, त्योहार आदि पर स्नेही संबंधियों के यहाँ भेजी जाने वाली पक्वान्नादि की भेंट। **हाँथी**। २. भेंट। उपहार। ३. याददास्त।
चितारणो-(क्रि०) १. याद करना। २. चित्र बनाना।
चितारो-(न०) चित्रकार। **चितेरो**।
चिताळ-(ना०) बड़ा और चिपटा पत्थर।
चितेरो-दे० चितारो।
चित्त-दे० चित।
चित्तोड़-(न०) १. मेवाड़ का इतिहास प्रसिद्ध नगर और किला। २. मेवाड़ की प्राचीन राजधानी। चित्तौड़गढ़।
चित्तोड़गढ़-(न०)चित्तौड़गढ़। दे० चितोड़।
चित्तोड़ी-(न०) मेवाड़ राज्य का एक प्राचीन सिक्का। चित्तौड़ी रुपया। *(वि०)* चित्तौड़ संबंधी।
चित्र-(न०) १. छवि। तसवीर। **चितराम**। **चित्राम**। २. दृश्य।
चित्रकला-(ना०) चित्र बनाने की कला या विद्या।
चित्रकार-(न०) **चितारो**। चित्र बनाने वाला।
चित्रकारी-(ना०) चित्रकार का काम। चित्र-निर्माण। चित्रकला।
चित्रकूट-(न०) १. प्रसिद्ध चित्तौड़ नगर का साहित्यिक और संस्कृत नाम। २. प्रयाग के निकट का एक पर्वत जिस पर वनवास के समय राम, सीता और लक्ष्मण रहे थे। एक तीर्थ स्थान।
चित्रकोट-दे० चित्रकूट।
चित्रगुप्त-(न०) १. प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखने वाले एक यम। २. कायस्थ जाति के आदि पुरुष।
चित्रणो-दे० चितरणो।
चित्राम-(न०) १. चित्र। **चितराम**। २. भीति-चित्र।
चित्रामणी-(ना०) १. चित्रकारी। २. नक्काशी। ३. नक्काशी करने का पारिश्रमिक।
चित्रारो-(न०) चित्रकार। **चितेरो**। **चितारो**।
चिदाकाश-(न०) आकाश के समान निर्लिप्त और व्यापक परब्रह्म।
चिदाणंद-(न०) चेतन और आनंद। चिदानंद। परब्रह्म।
चिदातमा-(न०) चेतन्य स्वरूप परमात्मा। परब्रह्म।
चिदानंद-दे० चिदाणंद।
चिदाभास-(न०) १. जीवात्मा। २. चैतन्य स्वरूप परब्रह्म का प्रतिबिंब जो मनुष्य के अंतःकरण पर पड़ता है। ३. ज्ञान का प्रकाश। ४. ज्ञान।
चिनगारी-(ना०) अग्निकण। स्फुलिंग।
चिनियो-(वि०) थोड़ा। किंचित्।
चिनेक-(अव्य०) १. क्षणभर। २. थोड़ी देर। *(वि०)* १. थोड़ा। किंचित्। २. थोड़ा सा।
चिन्मय-(न०) पूर्ण, विशुद्ध ज्ञानमय ईश्वर।
चिन्ह-(न०) चिह्न। निशान।
चिपकणो-(क्रि०)१. चिपकना। चिमटना। चिपटना। २. लिपटना।

चिपटणो–दे० चिपकणो ।

चिपटी–(वि०) चपटी । दबी हुई । (ना०) १. चुटकी । २. चंगुल । दे० चिवटी ।

चिपटो–(वि०) जिसकी सतह उभरी हुई न हो । चिपटा ।

चिपड़ी–(ना०) शुद्ध की हुई लाख की चिपटी टिकिया या परत ।

चिपड़ो–दे० चपड़ो ।

चिपणो–(क्रि०) चिपकना ।

चिवटी–(ना०) १. मध्यम अंगुली और अंगूठे को चटकाने से उत्पन्न शब्द । २. पाँचों अंगुलियों के अगले पोरों को मिलाने से बनने वाला संपुट । पाँचों अंगुलियों को इक्कठा करने में जितना समा सके वह माप । चुटकी । चुंगल । ३. पाँचों अंगुलियों को इक्कठा करने से बनने वाला संपुट । चुटकी । ४. इस सम्पुट में समा सकने वाला पदार्थ ।

चिमगादड़–दे० चमगादड़ ।

चिमटी–(ना०) १. किसी वस्तु आदि को पकड़ने का दो अंगुलियों का एक संपुट । २. छोटी वस्तु को पकड़ने के लिये चिमटे के जैसा एक छोटा औजार । चिमोटी चिमतड़ी । सवाणी ।

चिमटो–(न०) चिमटा । चींपियो ।

चिमनी–(ना०) १. मिट्टी के तेल से जलने वाला कुप्पी जैसा एक दीपक । २. कारखानों का वह लंबा भूंगल जिसमें होकर धुआं निकलता है । ३. रसोई घर की छत पर बना धुआँकश ।

चिमंतर–(वि०)सत्तर और चार । चौहत्तर । (न०) चौहत्तर की संख्या । ७४

चिरकुटो–दे० चींथरो ।

चिरजीवी–दे० चिरंजीवी ।

चिरड़ियो–(वि०) चिड़चिड़े स्वभाव वाला ।

चिरणाट–(न०) नाश ।

चिरणाटियो–दे० चिरणाट ।

चिरत–(न०) पाखंड । ढोंग । चरित । ढूंग ।

चिरताळी–(वि०) १. धूर्ता । ठगिनी । २. पाखंड करने वाली । चरित करने वाली । दुराचारिणी । व्यभिचारिणी ।

चिरताळो–(वि०) १. अनेक प्रकार के चरित करने वाला । ढूंगी । २. कपटी । छली । ३. पाखंडी । धूर्त । ठग ।

चिरनिद्रा–(ना०) मृत्यु । **मौत** ।

चिरमटी–दे० चिरमी ।

चिरमी–(ना०) गुंजा । घुघची । **चिरमी** ।

चिरमेही–(न०) गदहा । **गधो** ।

चिरळी–(ना०)चिल्लाहट । चीख । चीत्कार ।

चिर शांति–(ना०) १. मृत्यु । २. मोक्ष ।

चिर समाधि–(ना०) मृत्यु । **मौत** । **मिरतू** ।

चिरंजी–(वि०) चिरंजीव । चिरायु । दीर्घायु । (न०) आशीर्वाद का शब्द । (अव्य०) चिरजीव रहो । दीर्घायु हो ।

चिरंजीव–दे० चिरजी ।

चिराक–(न०) चिराग । दीपक । **दीवो** ।

चिराग–दे० चिराक ।

चिराड़–(ना०) १. दरार । शिगाफ । २. चीरो । ३. चिल्लाहट ।

चिराड़ो–(न०) १. शिगाफ । बड़ी दरार । २. चीरो । ३. चिल्लाहट ।

चिरायतो–(न०) एक कड़वी वानस्पतिक औषधि ।

चिरायु–(वि०) बड़ी उमर वाला । (ना०) बड़ी आयु ।

चिराळ–दे० चिराड़ ।

चिरावणो–(क्रि०) १. चिरवाना । चीरने का काम करवाना । २. हाथीदांत, नरेली आदि की चूड़ी खराद पर उतरवाना ।

चिरू–(वि०) 'चिरंजीव' का संक्षिप्त ।

चिरूंजी–(ना०) एक मेवा । चिरोंजी ।

चिळक–दे० चिळको ।

चिळकणो-(क्रि०) चमकना। (न०) १. प्रकाश। चमक। २. प्रतिबिम्ब। प्रतिप्रभा। ग्रक्स (वि०) चमकने वाला।
चिळकी-(ना०) १. चमक। ग्राभा। २. पॉलिश।
चिळको-(न०) १. चमक। २. प्रकाश। ३. प्रतिबिंब।
चिलगोजो-(न०) चीड़ वृक्ष का फल। एक मेवा। नेवज। नौजा। नेजो।
चिलड़ो-दे० चीलड़ो।
चिलम-(ना०) १. तंबाकू पीने का लकड़ी या मिट्टी का बना एक उपकरण। सुलफी। २. हुक्के का वह मिट्टी का पात्र जिसमें तमाकू ग्रौर ग्राग रखी रहती है।
चिलम पीणो-(मुहा०) चिलम में रखी हुई तमाखू के धुएँ को मुँह से खींचना।
चिलमपोस-(न०) चिलम का ढक्कन।
चिलम भरणो-(मुहा०) पीने के लिये चिलम में तंबाकू ग्रौर ग्राग रखना।
चिलमियो-(न०) १. चिलम या हुक्के में तंबाकू भरने, उस पर ग्राग रखने ग्रौर पीने ग्रादि की क्रियाएँ। २. चिलम की नली में रखा जाने वाला कंकड़। चुगल। ३. चिलम मे ग्राग रखने की क्रिया।
चिलो-(न०) १. धनुष की डोरी। चिल्ला। प्रत्यंचा। २. मुसलमानों का चालीस दिनों का एक व्रत। चिल्ला।
चिल्लाणो-(क्रि०) १. चीखना। चिल्लाना। २. जोर-जोर से बोलना।
चिहन-(न०) १. चिन्ह। निशान। २. वृत्तान्त। हाल।
चिहापणो-(न०) पश्चाताप। पछतावो। (क्रि०) पछताना। पछतावा करना। पछतावणो।
चिहापो-(न०) पश्चाताप। पछतावा।
चिहुर-(न०) १. सर के केश। चिकुर। २. केश।
चिहुँए वळाँ-(क्रि०वि०)चारों ग्रोर।
चिहुँवै-(वि०) चारों। चारों ही।
चिंग्रो-(न०) इमली का बीज। कूंको। कूंगो।
चिंगण-दे० चींघण।
चिंघाड़-(ना०) हाथी की बोली। हाथी की चिल्लाहट।
चिंघाड़णो-(क्रि०) हाथी का चिल्लाना। चिंघाड़ना।
चिंत-(ना०) १. चिंता। फिक्र। फिकर। २. याद। ३. विचार।
चिंतक-(वि०)चिंतन या मनन करने वाला।
चिंतण-दे० चिंतन।
चिंतणो-दे० चिंतवणो।
चिंतन-(न०) १. ध्यान। २. विचार। मनन। ३. विवेचना।
चिंतवण-दे० चिंतवन।
चिंतवणो-(क्रि०) १. मनन करना। २. निश्चय करना। ३. याद रखना। ४. चिंता करना। ५. सोचना। चिंतन करना। ६. विचार करना।
चिंतवन-(न०) चिंतन।
चिंतवियोड़ो-(वि०) १. निश्चय किया हुग्रा। २. सोचा हुग्रा। विचारा हुग्रा।
चिंता-(ना०) १. चिंता। फिकर। २. विचार। सोच।
चिंताजनक-(वि०) चिंता उत्पन्न करने वाला।
चिंतामणि-(ना०) ग्रभिलाषाग्रों को पूर्ण करने वाला एक काल्पनिक रत्न।
चिंत्या-दे० चिंता।
चिंदी-दे० चींधी। चींदी।
ची-(प्रत्य०) 'चो' विभक्ति का नारी जाति रूप। छठी विभक्ति। की।
चीक-(न०) स्वर्णकारी में काम ग्राने वाला मेथी दाना ग्रौर सुहागा का उकाला हुग्रा पानी। २. वनस्पति के फल, टहनी ग्रादि

में से निकलने वाला चिकना पानी अथवा दूध । ३. कीचड़ । कीच ।

चीकट–दे० चींगट ।

चीकटो–दे० चींगटो ।

चीकणा क्रम–(न०) अशुभ कर्म । पापकर्म ।

चीकणी सोपारी–(ना०) एक प्रकार की उबली सुपारी ।

चीकणो–(वि०) १. चिकना । २. चिपचिपा । ३. कंजूस ।

चीकणो घड़ो–(न०) जिस पर किसी बात का असर न हो ।

चीकास–दे० चीकट ।

चीकू–(न०) एक वृक्ष और उसका फल ।

चीख–(ना०) चिल्लाहट । चीत्कार ।

चीखणो–(क्रि०) १. चिल्लाना । चीत्कार करना । २. रोना । ३. बकबक करना । जोर से बड़बड़ाना ।

चीखल–(न०) कीचड़ । चीखलो । कादो ।

चीखलो–(न०) कीचड़ । कादो ।

चीगट–दे० चींगट ।

चीगटो–दे० चींगटो ।

चीज–(ना०) १. वस्तु । पदार्थ । २. महत्व की बात । ३. गीत । गायन । ४. आभूषण । गहना ।

चीज वस्तु–(ना०) १. समस्त वस्तुएँ । २. सामान । सामग्री । सर सामान ।

चीटलो–दे० चींटलो ।

चीटो–(वि०) १. चिकना । चिकटा । २. कंजूस । (न०) १. मक्खन तपाने से नीचे बैठने वाला मैल । घृतमंड । किट्ट । कीटो । २. स्निग्ध पदार्थों का मैल । चीटो । कीटो ।

चीठ–(ना०) १. पहाड़ का समतल ढ़लवाँ भाग । चाठ । २. चिलम की नली का कीट । गुल ।

चीठापणो–(न०) १. कंजूसी । कृपणता । २. कड़ाई । कड़ापन । ३. दृढ़ता ।

चीठी–दे० चिट्ठी ।

चीठो–(न०) १. तेल या घी का कीटा । २. कंजूस । कृपण । ३. कड़ा । कठिन । दृढ़ ।

चीड–(ना०) १. काँच का छोटा मनका पोत । २. एक वृक्ष और उसकी लकड़ी ।

चीड़–(न०) ऊंट का मूत्र ।

चीड़णो–(क्रि०) ऊंट का मूतना ।

चीडो–(वि०) १. कंजूस । कृपण । २. लचीला और मजबूत ।

चीण–(ना०) १. मकान की छत छाने की पत्थर की पट्टी । २. पायजामे या घाघरे के सिरे की वह जगह जिसमें नाड़ा डाला जाता है । नेफा । ३. चीन देश ।

चीणाई-चाँदी–दे० चीनाई चाँदी ।

चीणी–(ना०) १. चीनी । खाँड । शक्कर । २. चीनी भाषा । ३. छैनी । टाँकी । (वि०) १. चीन देश संबंधी । २. चीनी । चीन देश का ।

चीणीखाँड–(ना०) खाँड । शक्कर ।

चीणीमाटी–(ना०) एक सफेद चिकनी मिट्टी जिसके बरतन बनते हैं । चीनी मिट्टी ।

चीणीरेत–(ना०) बारीक दानेदार रेती जिसमें मिट्टी नहीं होती है । धोरा री रेत । वेकळू । बालू । रेणुका । रेत ।

चीणोटियो–दे० चिणोटियो ।

चीत–(ना०) १. विचार । २. चिंतन । विवेचन । ३. परामर्श । मंत्रणा । ४. स्मरण । याद । ५. चित्त । मन । ६. चिंता ।

चीतगढ–(न०) चितौड़गढ़ ।

चीतणो–(क्रि०) १. विचार करना । २. निश्चय करना । ३. याद करना । चिंता करना ।

चीतरणो–(क्रि०) १. चित्र बनाना । २. चित्रकारी करना । ३. नक्काशी करना ।

चीतरी–(ना०) छितरे हुए पतले और छोटे बादल। तीतर के पंख जैसे बादल।

चीतरो–(न०) एक हिंसक पशु। चीता।

चीतळ (न०) एक प्रकार का साँप। २. अजगर। ३ एक जाति का हिरण।

चीतवणो–(क्रि०) १. सोचना। विचारना। २. निश्चय करना। ३. इरादा करना। विचार करना। ४. संकल्प करना। किसी को कुछ देने का विचार करना।

चीता–(ना०)१. याद। स्मरण। २. स्मृति।

चीतारणी–(ना०)१. मिठाई पकवान आदि की भेंट। बींदड़ी। संभाळ। २. सौगात। भेंट। ३ याददास्ती।

चीतारणो–(क्रि०) १. सुमिरन करना। रटना। २ याद करना। किसी के प्रति कुछ सोचना। ३. सोचना। विचारना।

चीताळ–(ना०) १. छत को छाने के लिये काम में आने वाली पत्थर की लंबी पट्टी २. चपटा बड़ा पत्थर।

चीतालंकी–(वि०) चीते के समान पतली कमर वाली। सीहलंकी।

चीतो–दे० चीतरो।

चीतोड़ी–दे० चित्तौड़ी।

चीतोड़ो–(न०) बापा रावल का वंशज चित्तोड़ाधिपति। मेवाड़ का राना।

चीत्र–दे० चित्र।

चीत्रणो–दे० चित्रणो।

चीत्रारो–दे० चित्रारो।

चीन–(न०) १. एक देश। (ना०) २. पहचान। ओळखाण।

चीनाई–(वि०) चीन देश का।

चीनाई चाँदी–(ना०) चीन देश की चाँदी। बढ़िया चाँदी।

चीनणो–(क्रि०)१. देखना। २. पहचानना। ओळखणो।

चीनी–(ना०) १. खांड। २. चीनी मिट्टी। ३. चीन देश की भाषा। (वि०) १. चीन देश का। चीन से संबंधित। २. चीनी मिट्टी का बना हुआ।

चीप–(ना०) १. बांस की चिपटी और लंबी पट्टी। २. ढोल, चंग आदि बजाने की लंबी और पतली खपची। ३. चूड़ी पर जड़ने की सोने या चाँदी की लम्बी पत्ती। पाती। ४. घी भरने का चमड़े का कुप्पा। मलसा। कूड़ो। ५. पत्थर का छोटा चिपटा टुकड़ा।

चीपटी–(ना०) १. बांस की लंबी चिपटी पट्टी। २. ज्वार और बाजरी के डंठल।

चीपड़–(न०) आँखों का मैल। गींड।

चीबरी–(ना०) उल्लू की जाति का एक छोटा पक्षी। कोचरी।

चीबो–(न०) १. मुसलमान। २. मुसलमानों का एक भेद।

चीमटो–(न०) चिमटा। चींपियो।

चीमड़ियो–दे० चींभडियो।

चीर–(ना०) १. फांक। टुकड़ा। (न०) १. चीरा। दरार। ३. स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। ४. एक रेशमी वस्त्र। ५. वस्त्र।

चीरड़ो–(न०) १. चिथड़ा। चींथरो। २. दे० चीलड़ो।

चीरणो–(न०) १. चीरना। काटना। फाड़ना। २. भीड़ को आर-पार करना। ३. हाथी दाँत को चूड़ियों के आकार में खरीदना।

चीर-फाड़–(ना०)१. डाक्टर द्वारा की जाने वाली शल्य चिकित्सा। २. चीरना और फाड़ना।

चीरवियो–(वि०) हाथी दांत और नरेली आदि को चीर कर चूड़ियाँ बनाने वाला व्यक्ति। चूड़ीगर।

चीरहरण–(न०)१. श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के वस्त्र चुराने की लीला। २. कौरवों द्वारा द्रौपदी का वस्त्र हरण।

चीराळी–(ना०) १. चीख। चिल्लाहट। २. किसी वस्तु का चीरा हुआ भाग। ३. टुकड़ा। खंड।

चीरी-(ना०) १. छोटी पतली फांक। वस्त्र या फल आदि का काटा हुआ लंबा टुकड़ा। २. चिट्ठी-पत्री। पत्र।

चीरो-(न०) १. चिर जाने का लंबा घाव। २. चीर-फाड़। डाक्टरी शस्त्र क्रिया। ऑपरेशन। ३. पगड़ी। ४. लीरा। लीरो। ५. टुकड़ा। ६. किसी कार्य की सहायता के लिये बहुत आदमियों से थोड़ा थोड़ा मांगकर इकट्ठा किया हुआ धन। ७. रियासती या जागीरी जमाने का एक लगान।

चील--(ना०) १. चील पक्षी। २. बथुए की जाति की एक भाजी। ३. सांप। ४. एक देवी। ५. तँवर क्षत्रियों की देवी।

चीलख-(ना०) १. चील पक्षी। २. एक भाजी।

चीलड़ो-(न०) तवे पर घी में तली हुई आटे या बेसन के घोल की एक प्रकार की पूरी। उलटा। चिलड़ा। चीला। घारलो।

चीलर-(न०) १. थोड़े पानी का छोटा तालाव। नाडो। पोखरा। पोखरी। २. रेजगी। रेजगारी। ३. सूअर का बच्चा।

चीलराज-(न०) शेषनाग।

चीलरो-(न०) १. सूअर का बच्चा। २. दे० चीलड़ो।

चीलो-(न०) बैलगाड़ी के चलने से बनने वाले पहिये का लंबा चिन्ह। गाड़ीवाट। २. रेल की पटरी। ३. रिवाज। चाल। परम्परा। ५. मार्ग।

चीवट-(ना०) १. तत्परता। मुस्तैदी। २. लगन। लीनता। तन्मयता।

चीवर-(न०) वस्त्र।

चीस-(ना०) १. पीड़ा। दर्द। २. कराह।

चीसणो-(क्रि०) पीड़ा से कराहना। चीखना।

चींओ-(न०) इमली का बीज। कूंको। कूंगो।

चींगट-(न०) १. चिकनाई। स्निग्धता। २. घी, तेल आदि चिकने पदार्थ। (वि०) १. चिकना। चीकट। २. तेल, घी आदि लगा हुआ।

चींगटो-(वि०) जिस पर चिकनाई लगी हुई हो। चिकनाई वाला। स्निग्ध। चिकना।

चींगण-दे० चींघण।

चींगास-दे० चंगास।

चींगासणो-दे० चंगासणो।

चींगो-(न०) घोड़ा।

चींघण-(ना०) १. निर्धूम अग्नि का ढेर। चिता की अग्नि में शव को इधर-उधर करने की लंबी लकड़ी। ३. चिता की अग्नि। श्मशान की अग्नि। ४. श्मशान की राख। भस्मी। ५. आग्नेय दिशा।

चींचड़-(न०)जानवरों की चमड़ी से चिपका रहकर खून पीने वाला एक कीड़ा। किलनी। चिचड़ा।

चींचड़ो-दे० चींचड़।

चींचाड़णो-(क्रि०) रुलाना।

चींचाणो-(क्रि०) १. रुलाना। २. रोना। चिल्लाना।

चींटलो-(न०) सांप का बच्चा।

चींटी-(ना०) चिउँटी। कीड़ी।

चींत-(ना०) १. चिंता। फिक्र। २. याद। स्मरण।

चींतणो-(क्रि०) १. चिंता करना। २. विचार करना। ३. याद करना।

चींतवणो-दे० चींतणो।

चींथड़ियो-(वि०) १. चिथड़ों का व्यवसाय करने वाला। २. फटे-पुराने चिथड़े पहिनने वाला। ३. मैला-कुचेला। गंदा। (न०) चिथड़ा।

चींथणो-(क्रि०) १. रौंदना। कुचलना। २. दबाना।

चींथरियो–दे० चींथड़ियो ।
चींथरी–(ना०) १. छोटा चिथड़ा । २. धज्जी ।
चींथरो–(न०) १. मलिन तथा जीर्ण वस्त्र खंड । चिथड़ा । २. धज्जी । ३. गूदड़ ।
चींथीजणो–(क्रि०) रौंदा जाना । कुचला जाना ।
चींदी–(ना०) १. चिथड़े की पतली पट्टी । २. चिंदी । धज्जी । चींधी । ३. छोटा लंबा टुकड़ा ।
चींध–(ना०) १. ध्वजा । पताका । धजा । २. चिथड़ा । ३. वस्त्र की लंबी लीरी ।
चींधड़–(न०) १. अधिक अफीम खाने वाला व्यक्ति । २. बहुत अफीम खाने के कारण सुध बुध रहित और गंदा रहने वाला व्यक्ति । ३. एक राजपूत जाति । ४. चुना हुआ वीर पुरुष । ५. वीराग्रणी योद्धा । ६. कुलीन घर का भिखारी । ७. वह भिखारी जो अपनी जाति के सिवाय दूसरी जाति की भीख नहीं लेता है । जाति का भिखारी । ८. वैश्य जाति का भिखारी । बनिया जाति का मंगता । ९. वरदीधारी सैनिक । (वि०) १. वीर । बहादुर । योद्धा । २. कंजूस । ३. दरिद्री । ४. गंदा ।
चींधणो–(क्रि०) देखना ।
चींधाळो–(वि०) धजावाला । ध्वजधारी ।
चींधी–(ना०) १. वस्त्र या कागज की लंबी पट्टी । धज्जी ।लीरी । २. चिथड़ा ।
चींधी देणो–(मुहा०)पति की ओर से पत्नी का त्याग करना । पति की ओर से पत्नी का संबंध विच्छेद करना । तलाक देना ।
चींप–(ना०)१.घी भरने का ऊंट के चमड़े का बड़ा कुप्पा । मलसा । २. झिरीदार चूड़ी के ऊपर लगाई जाने वाली सोने या चाँदी की पत्ती । ३. ढोल, चंग आदि बजाने की बाँस की पतली खपची ।
चींपटी–दे० चीपटी ।
चींपटो–दे० चींपियो ।
चींपड़–(न०)आँख का मैल । गींड । चीपड़ ।
चींपियो–(न०) चिमटा ।
चींभड़ियो–(न०) चिमटा । ककड़ी ।
चींयो–(न०) इमली का बीज ।
चुअणो–(क्रि०) टपकाना । चूना ।
चुआणो–(क्रि०) चुआना । टपकाना ।
चुआवणो–दे० चुआणो ।
चुकणो–(क्रि०) १. चुकना । समाप्त होना । २. बेबाक होना ।
चुकलियो–(न०) मिट्टी का छोटा घड़ा ।
चुकल्यो–दे० चुकलियो ।
चुकंदर–(न०) लाल रंग का एक कंद ।
चुकाई–(ना०) चुकता करने की क्रिया या भाव ।
चुकाणो–दे० चुकावणो ।
चुकादो–(न०) १. चुकता होने का भाव । चुकाई । २. फैसला ।
चुकारो–दे० चुकादो ।
चुकावणो–(क्रि०) हिसाब चुकता करके पैसे देना । चुकाना । २. निबटाना । ३. भुलाना । भुलावे में डालना । भ्रम में डालना । भूल में डालना । ४. किसी को किसी काम के करने से रोकना । ५. मौका खोआ देना । ६. रुकावट डालना ।
चुख–(न) १. टुकड़ा । खंड । २. रूई का छोटा पहल । फाहा । चूंखो ।
चुग–(न०) पक्षियों को चुगने के लिये डाला जाने वाला नाज । चुग्गा । दाना ।
चुगणो–(क्रि०) १. चुगना । बीनना । २. पक्षियों का चोंच से दाना उठाकर खाना ।
चुगथ–(न०) १. मुगल । २. मुसलमान ।
चुगथाळ–(न०बहु०व०) १. यवन समूह । मुसलमान देश ।
चुगल–(वि०) १. चुगलखोर । निंदक । (न०) १. चिलम के छेद में रखा जाने

वाला गोल कंकड़ । गिट्टक । गिट्टी । २. मुसलमान ।

चुगलखोर–(वि०) चुगली खाने वाला । चुगल ।

चुगळणो–(क्रि०) मुंह में इधर-उधर करते हुए किसी वस्तु को चूसते रहना । चूसना ।

चुगलाळ–(न०बहु०व०) मुसलमान लोग । (वि०) चुगलखोर ।

चुगलियो–दे० चुगल ।

चुगली–(ना०) १. शिकायत । २. पीठ पीछे की जाने वाली शिकायत ।

चुगलीखाणो–(मुहा०) १. शिकायत करना । २. किसी की झूठी बात कहना । ३. अनुपस्थिति में निंदा करना ।

चुगलीखोर– दे० चुगलखोर ।

चुगाणो–(क्रि०) पक्षियों को दाना डालना । चुगाना ।

चुगावणो–दे० चुगाणो ।

चुगी–दे० चुग ।

चुगो–(न०) चिड़ियों का दाना । चुग ।

चुग्गो–दे० चुगो ।

चुटकलो–(न०) १. विनोदपूर्ण छोटी बात । २. विनोदपूर्ण उक्ति । चुटकला । ३. दवा का गुणकारी नुसखा । फकीरी नुसखा ।

चुटकी–(वि०) चुटकी भर । थोड़ा । (ना०) १. अंगूठे और अंगुली को चिटकना । २. चिटकाने का शब्द ।

चुट्टो–(न०) स्त्री के बालों की चोटी । चोटलो ।

चुड़लाळी–(ना०) १. सधवा । सुहागिन । सौभाग्यवती स्त्री । २. पत्नी । (वि०) चूड़ा पहनी हुई । चूड़ेवाली ।

चुड़लो–दे० चूड़ो ।

चुड़ैल–(ना०) १. पिशाचिनी । भूतनी । डाकण । २. क्रूर स्त्री । चुड़ैल । ३. दुष्टा । (वि०) चूड़ा पहनी हुई । चुड़ैल ।

चुणणो–(क्रि०) १. चुनना । २. क्रम से रखना । ३. ईंट या पत्थर को एक के ऊपर एक रखकर दीवाल उठाना । ४. चुगना । बीनना ।

चुणाई–(ना०) १. चुनने का काम । २. चुनने की मजदूरी ।

चुणाणो–दे० चुणावणो ।

चुणाव–(न०) चुनने का काम । चुनाव । २. पसंदगी ।

चुणावणो–(क्रि०) चुनवाना । २. चुगवाना ।

चुनड़ी–दे० चूनड़ी ।

चुनाळ–(न०) मुसलमान ।

चुनियो–दे० चुरणियो ।

चुनोती–(ना०) १. ललकार । २. उत्तेजना । ३. चेतावनी ।

चुप–(वि०) खामोश । मौन । शांत ।

चुपकै–(क्रि०वि०) १. चुपचाप । चुप रहकर । २. धीरे-धीरे । ३. छिपे-छिपे । गुप्त रूप से ।

चुपको–(वि०) शांत । मौन ।

चुपचाप–दे० चुपकै ।

चुपड़णो–दे० चोपड़णो ।

चुपड़ाणो–(क्रि०) किसी वस्तु को घी-तेल आदि स्निग्ध पदार्थ से तर करवाना ।

चुपड़ावणो–दे० चुपड़ाणो ।

चुबकी–(ना०) डुबकी । गोता । चुभकी ।

चुबकी मारणो–(मुहा०) डुबकी लगाना ।

चुबी–दे० चुबकी ।

चुबी मारणो–दे० चुबकी मारणो ।

चुभणो–(क्रि०) १. चुभना । धँसना । २. खटकना । अखरना । ३. दिल में खटकना । व्यथा उत्पन्न करना ।

चुभाणो–(क्रि०) १. चुभाना । घँसाना । २. दिल में खटक उत्पन्न करवाना ।

चुभावणो–दे० चुभाणो ।

चुरड़ो–दे० चुल्लो ।

चुरणियो–(न०) मानव-विष्ठा में उत्पन्न होने वाला एक बारीक कीड़ा । मलकीट । विष्ठा-कीट । चूनियो ।

चुरळो–दे० चुल्लो ।
चुरस–(वि०) १. श्रेष्ठ । २. सुन्दर ।
चुराणो–(क्रि०)चोरी करना । चुराना ।
चुळ–(ना०) १. खुजली । २. कामेच्छा । ३. अवांछनीय काम करने की प्रवृत्ति । ४. इस प्रकार का काम करना जिससे पिटाई होने की नौबत आये ।
चुळणो–(क्रि०) १. शरीर का ढीला पड़ना । शिथिल हो जाना । २. अधिक समय तक पड़े रहने के कारण हलवे, खिचड़ी आदि का बदबू देकर पानी छोड़ देना । ३. हिलना । खिसकना । ४. खुजली चलना । ५.पतन होना । अवनत होना । ६.सन्मार्ग से हटना । कुमार्ग की ओर प्रवृत्त होना । पथभ्रष्ट होना ।
चुळबुळ–(ना०) चंचलता ।
चुळबुळो–(वि०) चंचल ।
चुळवळ–(क्रि० वि०) १. चुल्लू से । २. चुल्लू में रक्त भर कर के । (न०)१.चुल्लू । २. रक्त । खून ।
चुळवो–दे० चुल्लो ।
चुळियोड़ी–(वि०) १. जिसकी जवानी ढल गई हो । २.जिसका शरीर शिथिल हो गया हो (स्त्री) । ३.पथ भ्रष्ट । ४. डावाँडोल ।
चुळियोड़ो–(वि०) १. पथ भ्रष्ट । २. विच्लित । ३. शिथिल ।
चुल्लो–(न०) चुल्लू । चुळवो ।
चुवणो–(क्रि०) १. चुअना । टपकना । रिसना । २. बूंद बूंद गिरना ।
चुसकी–(ना०) १. सुड़क कर पीने की क्रिया । २ घूंट । ३. मद्यपात्र । चुसकी ।
चुस्त–(वि०) १. फुरतीला । २. मजबूत ।
चुहियो–(न०) १. शरीर के किसी पीड़ित भाग को गरम शलाका द्वारा दग्ध करने की क्रिया । डंभन क्रिया । डाम । २. इस प्रकार जलाने से बनने वाला निशान । डाम । ढाडो ।
चुंगल–(न०) पंजा । चंगुल ।
चुंगी–दे० चूंगी ।
चुंघावणो–दे० चूंघावणो ।
चुंबक–(न०) वह पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचती है । (वि०) चुंबन करने वाला ।
चुंबन–(न०) बोसा । वाल्हो ।
चुंहटियो–(न०) चुटकी । चूंटियो । चूंगटियो ।
चूक–(ना०) १. भूल । गलती । त्रुटि । २. दोष । ऐब । ३.कसूर । अपराध । दोष । ४. कपटपूर्ण आयोजन । षड्यंत्र । ५. धोखा । छल । ६. छिप कर मारना । घात । ९. असावधानी । ८. न्यूनता । कमी ।
चूकणो–(क्रि०)१. चूकना । २. भूल जाना । ३. भूल होना । ४. काम को समय पर नहीं कर सकना । अवसर खोना । ४. वंचित रहना । ६. पथ भ्रष्ट होना । ७. निपटना । तै होना । चुकारा होना । ८. कसर रखना । कमी रखना ।
चूको–(न०) १. एक घास । २. एक भाजी । शाक । ३. तंबाकू का पत्ता । जरदो । सूको ।
चूंची–(ना०) स्तन की घुंडी । चूचुक । कुचाग्र । बीटणी ।
चूजो–(न०) मुर्गी का बच्चा । चूजा ।
चूड़–(ना०) १. स्त्री के हाथ का एक गहना । २. कलाई की चूड़ियों के आकार का विधवा के हाथ का एक गहना ।
चूड़ाळी–(वि०) १. चूड़ा पहनी हुई । २. चूड़ा वाली । सौभाग्यवती । सधवा । सुहागण । चुड़लाळी ।
चूड़ाळो–(न०) प्रसिद्ध वीर विजयराव भाटी का विरुद ।
चूड़ी–(ना०) १. स्त्रियों के हाथ में पहिनने का सोने या चाँदी का एक गहना । २. सौभाग्य सूचक कंकण । ३. हाथी दाँत

काँच आदि की चूड़ी । ४. कोई वृत्ताकार पदार्थ । ४. ग्रामोफोन का रेकॉर्ड । ५. किसी कील, पेच या ढकने आदि में कसने के लिये बनी हुई घुमावदार गहरी रेखाएं ।

चूड़ी-उतार-(वि०) एक दूसरे से छोटा । गावदुम । (न०) एक दूसरे से क्रम में छोटा होने का भाव । चूड़ियों की तरह एक का दूसरी से छोटी होने का क्रम । ढाळ-उतार ।

चूड़ीगर-(न०) हाथी दांत की चूड़ियां चीरने और बेचने वाला व्यक्ति । चुड़िहारा । दांती । चीरवियो ।

चूड़ी वधणी-दे० चूड़ी वधरणी ।

चूड़ी वधरणी-(मुहा०) चूड़ी का टूटना (टूटना कहना अशुभ माना जाता है इस-लिये चूड़ी वधणी या चूड़ी वधरणी कहा जाता है ।)

चूड़ो-(न०) १. सौभाग्यवती स्त्रियों के हाथों में पहिनने का हाथी दाँत की चूड़ियों का एक गावदुम सेट । स्त्रियों का सौभाग्य सूचक एक भूषण । २. भंगी ।

चूड़ो फूटणो-(मुहा०) १. पति का मरण होने पर स्त्री के हाथ की सौभाग्यसूचक चूड़ियों का तोड़ा जाना । २. विधवा होना । सुहाग खंडित होना ।

चूड़ो फोड़णो-(मुहा०) पति का मरण होने पर स्त्री के हाथ का सौभाग्य सूचक चूड़ा तोड़ना ।

चूण-(न०) १. आटा । चून । २. खुराक । ३. चर्ण । ४. पक्षी भोजन । चुगो ।

चूत-(ना०) योनि । भग ।

चूतियो-(वि०) बेवकूफ । मूर्ख ।

चून-दे० चूण ।

चूनगर-(न०) १. चूना बनाने वाला या चूने का काम करने वाला व्यक्ति । २. एक जाति ।

चूनड़ियाळ-(ना०) १. चुनरी ओढ़ने वाली सधवा स्त्री । सधवा । सुहागवती । सुहागण । २. पत्नी । ३. देवी । शक्ति । (वि०) १. सौभाग्यवती । २. चुनरी ओढ़ी हुई ।

चूनड़ी-दे० चूंदड़ी ।

चूनड़ी मंगळ-(न०) कन्या की जन्म कुंडली में एक अशुभ योग । (कन्या की जन्म कुंडली में दूसरे, चौथे, आठवें या बारहवें घर में पड़ा हुआ मंगल) ।

चूनाळ-(न०) १. मुसलमान । २. वीर । ३. सिंह ।

चूनी-(ना०) १. माणिक का छोटा दाना । लाल रत्न-कण । लाल । चुन्नी । २. रत्न-कण । बहुत छोटा नग ।

चूनो-(न०) चूना ।

चूनो लगाणो-(मुहा०) १. नीचा दिखाना । २. ठगना । ३. कलंकित करना ।

चूनो लागणो-(मुहा०) १. बदनाम होना । कलंकित होना ।

चूप-(ना०) १. प्रसन्नता । २. उमंग । ३. उत्साह । दे० चूंप ।

चूमणो-(क्रि०) चुम्बन करना । बोसा लेना । व्हालो देणो ।

चूर-(न०) १. चूर्ण । चूर चूर । टुकड़ा । २. ध्वंस । नाश । (वि०) १. बेसुध । बेहोश । २. शिथिल ।

चूरण-(न०) १. चूर्ण । बुकनी । २. औष-धियों का बारीक सफूफ । चूर्ण । ३.चूरा । भूको ।

चूरणो-(क्रि०) १. रोटी को घी-गुड़ आदि में चूर कर चूरमा बनाना । २. बारीक चूरा करना ३. भींचना । दाबना । ४. नाश करना । ५. टुकड़े करना ।

चूरमो-(न०) १. घी, गुड़ या चीनी के साथ रोटी आदि को चूर करके बनाया हुआ भोज्य पदार्थ । मधुरान्न । चूरमा । २. बेसन की एक मिठाई ।

चूंचक-(न०) प्रथम प्रसव के बाद पुत्री को ससुराल भेजते समय दिये जाने वाले वस्त्र, आभूषण आदि। हुलाणो। (ऐसा रिवाज है कि पुत्री का प्रथम जापा प्रायः पीहर में कराया जाता है)।

चूंचाड़ी-(ना०) जलती हुई लकड़ी को गोलाकार घुमा कर चक्र बनाने का भाव या क्रिया।

चूंचाणो-(क्रि०) १. ठोंकना। पीटना। २. रुलाना। ३. मैथुन करना।

चूंची-(ना०) १. आग। २. जलती हुई पतली टहनी। २. स्तन का अग्र भाग। चूचुक। चिटनी। बीटणी।

चूंटणो-(क्रि०) १. अंगुली से तोड़ना (फूल आदि।) २. नोचना। उखाड़ना। ३. समारना। ठीक करना। (साग, पात आदि।) ३. शाक आदि की पत्तियां तोड़ना। चूंटना। ५. चुनना। पसंद करना।

चूंटावणो-(क्रि०) १. चुंटवाना। २. चुना-जाना।

चूंटियो-(न०) १. मक्खन। २. चूंगटियो। चुंहटियो। चुटकी। ३. एक मिठाई।

चूंटियो चूरमो-(न०) वेसन से बनाई जाने वाली एक मिठाई।

चूंटियो भरणो-(मुहा०) १. चुटकी से चमड़ी को पकड़ कर खींचना या ऐंठना। २. चमड़ी को ऐंठ कर दर्द पहुँचाना।

चूंटो-(न०) १. मक्खन का लौंदा। २. किसी लंबी वस्तु का शुरू या अंत का भाग। सिरा। ३. फल, शाक आदि का डंठल।

चूंतरी-(ना०) चबूतरी। चांतरी।

चूंतरो-(न०) चबूतरा। चौंतरा। चाँतरो।

चूंथ-(न०) १. मर्दन। २. लूट। ३. नाश।

चूंथणो-(क्रि०) १. चूंथना। रौंदना। २. लूटना। ३. मर्दन करना। मसळणो।

चूंथीजणो-(क्रि०) १. लूटा जाना। लूंटीजणो। २. मर्दन होना। ३. मर्दन किया जाना। ४. रौंदा जाना।

चूंथो-(न०) १. गड़बड़। अव्यवस्था। २. बिगाड़। ३. झंझट। (वि०) १. मर्दित। चूंथा हुआ। २. अव्यवस्थित। ३. झंझटवाला।

चूंदड़ी-(ना०) स्त्रियों की लाल रंग की तथा वेल-बूटीदार सुंदर और झीनी ओढ़नी। चुनरी।

चूंधळो-(वि०) छोटी और कमजोर आँखों वाला। २. जिसकी दृष्टि मंद हो। चुंधा। चूंधियो। चूंधो।

चूंधियो-दे० चूंधो।

चूंधो-दे० चूंधळो।

चूंप-(ना०) १. स्त्रियों के दांतों का एक गहना। चूंक। २. स्त्रियों के हाथ की चूड़ी की मेख। ३. उत्साह। उमंग। ४. चाव। ५. यत्न। ६. ध्यान। देख रेख। ख्याल। ७. शरीर की सजावट। शौकीनी। ८. निपुणता। कुशलता। ९. शुद्धता। स्वच्छता।

चूंप आळो-दे० चूंपाळो।

चूंप वाळो-दे० चूंपाळो।

चूंप हाळो-दे० चूंपाळो।

चूंपाळो-(वि०) १. चतुर। दक्ष। २. सुघड़। ३. उत्साही। ४. शौकीन।

चे-(अव्य०) संबंध सूचक 'चा' विभक्ति का बहु वचन रूप। के।

चेचक-(ना०) शीतला या माता नामक एक संक्रामक रोग।

चेजारो-(न०) मकान बनाने वाला व्यक्ति। राज। राजगीर। मेमार। कड़ियो।

चेजो-(न०) १. चेजारे का काम। चुनाई। २. दाना। चुग्गा।

चेट-(न०) १. पति। स्वामी। २. दास। सेवक। ३. भाँड़। विदूषक। ४. भड़ुआ।

चेलकाई–(ना०) शिष्यता । चेलापना । सेवकाई ।
चेलकी–दे० चेली ।
चेलको–दे० चेलो ।
चेला-चाँटी–(ना०) दास-दासी ।
चेली–(ना०) १. चेली । शिष्या । २. दासी ।
चेलो–(न०) १. शिष्य । चेला । २. सेवक । दास ।
चेळो–(न०) १. तराजू का पलड़ा । तुलापट । पल्ला । २. पक्ष ।
चेष्टा–(ना०) १. मन का भाव बताने वाली अंगों की गति । भावभंगी । २. परिश्रम । ३. प्रयत्न ।
चेह–(न०) १. चिता । २. चिता की अग्नि । ३. श्मशान । मरघट ।
चेहरो–(न०) १. मुख मंडल । मुख । मुखड़ो । २. मुखौटा । मुखोटो ।
चेहरो-मोहरो–(न०) सूरत-शक्ल । हुलिया ।
चैत–(न०) चैत्र मास । चैतर ।
चैतर–दे० चैत ।
चैतरी–(वि०) चैत्र मास का । चैत्र मास संबंधी ।
चैतरी मेळो–(न०) महवा और खेड़ (मारवाड़ के अधिपति और प्रसिद्ध सिद्ध रावल मल्लिनाथ और उनकी रानी रूपांदे के नाम से तिलवाड़ा और थान गाँव के बीच लूणी नदी के पाट में चैत्र वदी ११ से चैत्र सुदी ११ तक भरा जाने वाला एक भारत-प्रसिद्ध व्यापारिक मेला । चैत्री मेला । मलीनाथजी-रो-मेळो ।
चैत्य–(न०) १. सीमा चिन्ह । सीमा पत्थर । २. देवालय । ३. बौद्ध मंदिर ४. स्मरण-स्तंभ । स्मारक । यादगार ।
चैत्र–(न०) चैत्र मास । चैत । चैतर ।
चैत्री–दे० चैतरी ।
चैन–(न०) १. शांति । २. सुख । आराम । ३. स्वास्थ्य लाभ ।
चैर–(न०) १. खींप नामक एक क्षुप । खींप । खींपड़ो । २. चरका । चीरो ।
चैरको–(न०)१. चीरने का घाव । चरका । चीरो । चीरण । २. मन को चुभने वाली बात ।
चैरणो–(क्रि०) १. चीरना । काटना । २. निंदा करना । ३. कटाक्ष करना । आक्षेप करना ।
चैल–(न०) कपड़ा । वस्त्र ।
चैळ–(ना०) १. चहल । चहल-पहल । आनंदोत्सव ।
चैंचैं–(ना०)चिड़ियों की चहचहाट । कलरव । २. बकवाद ।
चैंठ–(ना०) १. चिपकने का भाव । चिपकाव । चहट । २. प्रयत्न । कोशिश । लगन । ३. मनुहार । आग्रह । अनुरोध । ४. एक उदर रोग ।
चैंठणो–(क्रि०) १. चिपकना । २. गले पड़ना । ३. क्रोधित होकर उत्तर देना या बात करना । चहटणो ।
चो–(प्रत्य०) छठी विभक्ति । संबंध कारक विभक्ति । का । (प्राय: काव्य में प्रयुक्त होने वाली इस विभक्ति के चा,' 'चे' बहुवचन और 'ची' नारी जाति रूप हैं ।)
चोईस–(वि०) बीस और चार । (न०) चौबीस की संख्या, '२४' ।
चोईसो–(न०) १. संवत का चौइसवाँ वर्ष । २. २४०० की संख्या । (वि०) दो हजार चार सौ । चौबीसौ ।
चोओ–दे० चोवो ।
चोकठ–(ना०) चौखट ।
चोकठो–(न०) चौखटो ।
चोकर–दे० थूलो ।
चोख–(न०) १. तपास । २. तलाश । ३. जानकारी । ४. ठाट । तैयारी । ५. ढंग । युक्ति । ६. सलीका । तहजीब । ७. चतुराई ।
चोख करणो–(मुहा०) जांच करना ।

पिशाचनी । *(वि०)* १. खुले केशों वाली । २. चोटीवाली ।

चोटियो–*(न०)* १. राजस्थानी दोहे का एक प्रकार । २. एक डिंगल गीत । ३. मुरट घास की ढेरी ।

चोटी–*(ना०)* १. चोटी । शिखा । २. वेणी । ३. पर्वत-शिखर । ४. नारियल के ऊपर का तंतु-समूह । नारियल की जटा । ५. मोर, मुर्गे आदि पक्षियों के सिर की कलगी ।

चोटी वढियो–*(न०)* वह व्यक्ति जो अपनी चोटी कटवा कर जागीरदार का वशवर्ती और विश्वासु कर मुक्त (लाग-लगान रहित) प्रजाजन बनता था । २. मुसलमान । *(वि०)* चोटी कटा हुआ । चुटिया रहित ।

चोटीवाळो–*(वि०)* जिसके चोटी हो । *(न०)* हिन्दू ।

चोटीवाळो तारो–*(न०)* धूमकेतु । पुच्छल तारा । **पूंछल तारो** ।

चोटी हाथ में होणो–*(मुहा०)* कब्जे में होना ।

चोडोळ–*(न०)* १. हाथी । २. पालकी ।

चोप–*(ना०)* १. सेवा । भक्ति । २. श्रद्धा । ३. चाव । उमंग । ४. इच्छा । *(क्रि०वि०)* श्रद्धा पूर्वक ।

चोपई–दे० चोपाई ।

चोपड़–*(न०)* १. घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थ । २. घी । घृत ।

चोपड़णो–*(क्रि०)* १. चपाती के ऊपर घी फैलाना । चुपड़ना । २. किसी वस्तु के ऊपर घी-तेल आदि स्निग्ध पदार्थ को फैलाना । ३. पोतना । लीपना । चुपड़ना ।

चोपड़ो–*(न०)* १. कुंकुम, चंदन, अक्षत आदि मांगलिक वस्तुएँ रखने का एक पात्र ।

चोपाई–*(ना०)* चार पंक्तियां (चरणों) का एक छंद जिसकी प्रत्येक पंक्ति में १६ मात्राएँ होती है । चौपाई । **चउपई** ।

चोपाळ–*(ना०)* गाँव के लोगों के पंचायत करने को बैठने की खुली जगह ।

चोफकेर–*(अव्य०)* चारों ओर । **चारूंमेर** । **चोतरफ** ।

चोफाड़–*(वि०)* चार भागों में चीरा हुआ ।

चोफाड़ो–दे० चोफाड़ ।

चोफूली–*(ना०)* १. एक आभूषण । २. आक के फूल के अंदर का भाग ।

चोफेर–दे० चोफकेर ।

चोफेरी–*(ना०)* राजपूतों में सुहाग रात को मनाया जाने वाला उत्सव *(अव्य०)* चारों ओर ।

चोव–*(ना०)* १. तंबू या शामियाने के बीच का काष्ठ का बड़ा खंभा । तंबू को खड़ा करने का थंभा । ढोल या नगाड़े को बजाने का डंडा । ३. सोने, चाँदी से मँढ़ा हुआ एक डंड जिसे चोवदार राजा या मठाधीशों के आगे लेकर चलता है । आसा । **आसो** । ४. शाक-सब्जी के पौधे को उखाड़ कर दूसरी जगह लगाने की क्रिया । **रोप** ।

चोवचीणी–*(ना०)* एक काष्ठौषधि । चोवचीनी ।

चोवणो–*(क्रि०)* पौधे को एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना । **रोपणो** । २. डाम देना ।

चोवदार–*(न०)* १. छड़ी दार । **आसावरदार** । २. नकीब । ३. दरबान । द्वारपाल ।

चोभणो–*(क्रि०)* १. रोपना । खोंसना । २. शाक सब्जी के पौधों को उखाड़ कर दूसरी जगह ले जाना । ३. तेल में रुई भिगोकर गरम गरम सेंकना । ४. चुभाना ।

चोर–*(न०)* १. चोरी करने वाला । तस्कर । २. एक प्रकार की नर मक्खी जो मक्खियों की शत्रु होती है । *(वि०)* आंतरिक भावों को छिपाने वाला ।

क्रिया । २. अपहरण ।

चोरी-चकारी-(ना०) चोरी लूट-खसोट आदि ।

चोरी-जारी-(ना०) १. चोरी और व्यभि-चर । २. दुष्कर्म ।

चोळ-(न०) १. लाल रंग का एक वस्त्र । २. लाल रग । ३. मजीठ । ४. आमोद-प्रमोद । केलि । क्रीड़ा । ५. कामक्रीड़ा । ६. रक्त । लहू । (वि०) १. लाल । २. संलग्न । सबद्ध ।

चोलरा-(ना०) परेशानी । हैरानी । तग करना । खोड़ीलाई ।

चोलरा करणो-दे० चोलणो ।

चोलणो-(क्रि०) हैरान करना । सताना । परेशान करना । खोड़ीलाई करणी ।

चोळणो-(क्रि०) १. मसलना । रगड़ना । २. बार बार वही बात कहना । (न०) एक वस्त्र । कुरता । चोळो ।

चोळ-बोळ-(वि०) १. अत्यन्त क्रोधित । २. अत्यन्त लाल । ३. अत्यन्त आनंदित । खूब खुश ।

चोळास-(ना०) ऊंट पर एक साथ की जाने वाली चार जनों की सवारी ।

चोळी-(ना०) चोली । अँगिया । कांचळी ।

चौ-(वि०) समास शब्द में 'चार' अर्थ का सूचक पूर्वांग । चार । यथा—चौकनी, चौमासो इत्यादि ।

चौईस-(वि०) बीस और चार । चौबीस । (न०) चौबीस की सख्या । '२४'

चौईसौ-(न०) १. चौबीसवां संवत् । २. २४०० की सख्या । (वि०) दो हजार-चार सौ ।

चौक-(न०) १. घर क भीतर चौकोनी खुली जगह । २. गली बाजार की बड़ी खुली जगह । ३. चौराहा । चौहट्टा ४. पृष्ठ भाग । पीठ । ५. मैदान ।

चौक-चाँदणी-(ना०) शेखावाटी का गणेश-चौथ (भादौ शु० ४) के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला एक प्रावृटोत्सव ।

चौकठ-(ना०) चार लकड़ियों का एक ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले जड़े रहते हैं । बारसोत । बारोक ।

चौकठो-(न०) चौकोर ढाँचा । चौकोना ढाँचा । चार लकड़ियों का चौकोर ढाँचा । चौकठ ।

चौकड़ा-लगाम-(ना०) घोड़े की एक प्रकार की लगाम ।

चौकड़ी–*(ना०)* १. × ऐसा चिन्ह। २. चार आदमियों की मंडली। ३. चार युगों का समूह या समय। ४. रसोई में बनी हुई मेंड़दार चौकोनी जगह जहाँ बैठ कर भोजन किया जाता है। चौका। ५. हरिण की छलांग।

चौकड़ो–*(न०)* १. लगाम की घोड़े के मुँह के अंदर रहने वाली लोहे की कड़ियाँ या डंडी। २. एक प्रकार की लगाम। ३. कान का एक आभूषण।

चौकनी–*(ना०)* लंबे डंडे वाला एक कृषि उपकरण जिसके आगे सींगों के समान चार नुकीले डंडे लगे रहते हैं। **चौसींगी**।

चौक पूरणो–*(मुहा०)* आँगन में मांगलिक रेखा चित्रों को चित्रित करना। **साथियो (साखियो) बणाणो**।

चौकरणो–दे० चौतीणो।

चौकस–*(ना०)* १. सावधानी। सतर्कता। २. खबर। पता। ३. तलाश। खोज। *(वि०)* सतर्क। सावधान। *(क्रि०वि०)* अवश्य। निश्चय।

चौकसाई–*(ना०)* १. सावधानी। खबरदारी। २. रखवाली। निगरानी। ३. तपास। परीक्षा।

चौकसी–*(न०)* सोने-चाँदी का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। सराफ। २. सराफी धंधे के कारण किसी जाति की पड़ी हुई अटक या अल्ल। दे० चौकसाई।

चौका-बरतन–*(न०)* रसोई बन जाने के बाद बरतन माँज कर चौका लीपने का काम। **संजेरो**।

चौकी–*(ना०)* १. चबूतरी। २. पहरा। ३. चौखूंटी चबूतरी। ४. जकात चौकी। चूंगी चौकी। ५. थाना। ६. तावीज। गंडा। ६. गले में पहिनने का एक आभूषण।

चौकीदार–*(न०)* पहरेदार।

चौकीदारी–*(ना०)* पहरा। रखवाली।

चौकूंट–*(न०)* चारों दिशाएँ।

चौको–*(न०)* १. चार की संख्या। चार '४'। **चौगो**। २. अगले चार दांत। सामने के चार दाँतों का समूह। ३. भोजन बनाने के लिये गोबर मिट्टी से लिपा हुआ घर का एक भाग। ४. रसोईघर में बनाई हुई मेंड़दार चौकोनी जगह जहाँ बैठ कर भोजन किया जाता है। ५. रसोई घर। ६. मरणासन्न व्यक्ति को लिटाने के लिये गोबर से लीप कर तैयार की हुई जगह। ७. चौथा संवत्।

चौखट–दे० चौकठ।

चौखटो–दे० चौकठो।

चौखळो–*(न०)* १. आस-पास के मिलते जुलते सांस्कृतिक संबंधों के कुछ गांवों का समूह। २. आजू-बाजू के गाँवों का समूह। **परगनो**। ३. मृत्यु भोज का एक सीमा-प्रकार जिसमें आजू-बाजू की निश्चित सीमा के गांवों की अपनी जाति वालों को निमंत्रित किया जाता है।

चौखंडो–*(वि०)* १. चौकोना। २. चार मंजिल वाला। चौखंडा। *(न०)* चार खंड या मंजिल वाला मकान। **चौमंजिला मकान**।

चौखूणो–*(वि०)* १. जिसके चारों कोने बराबर हों। सम-चौरस। २. चौकोना। **चौखूंटो**।

चौखूंट–*(ना०)* १. चारों दिशाएँ। २. चारों कोने। *(वि०)* चार कोनों वाला। *(क्रि०वि०)* चारों दिशाओं में।

चौखूंटो–*(वि०)* १. चौकोना। चार कोनों वाला। २. समचौरस। **चौखूणो**।

चौगट–दे० चौकठ।

चौगड़द–*(क्रि०वि०)* चारों ओर।

चौगड़दाई–*(ना०)* चारों ओर का फैलाव।

मुहूर्त ।

चौड़-(न०) विनाश । संहार ।

चौड़ाई-(ना०) लंबाई से भिन्न दिशा । चोड़ाई । अरज ।

चौड़े-(क्रि०वि०) प्रत्यक्ष । दिन दहाड़े । प्रकट रूप में ।

चौड़े चौगान-(अव्य०)१. खुले आम । सर्व-साधारण में । सबके सामने । २.चौगान में ।

चौड़े-धाड़ै-(अव्य०) १. सबके सामने धाड़ा डाल कर । २. सबके सामने । खुले आम । ३. दिन दहाड़े । दिन में ।

चौड़े-धूपट-दे० चौड़-धाड़ै ।

चौड़ो-(वि०) चौड़ा ।

चौडोल-(न०) १. पालकी । २. हाथी ।

चौतरफ-(क्रि०वि०) चारों ओर ।

चौतरी-दे० चांतरी ।

चौतरो-दे० चांतरो ।

चौताळो-(वि०) चार ताल वाला । (न०) १. मृदंग आदि का ताल विशेष । २. संगीत का एक ताल । दे० चौताळो ।

चौतीणो-(न०) वह कुँआं जिस पर चार चरसों द्वारा एक साथ पानी निकाला जाता हो । चौलावा । चौकरणो ।

तीस-(वि०) तीस और चार । (ना०) चौतीस की संख्या । ३४ ।

तीसो-(न०) १. चौतीसवां सम्वत् । २. ३४०० की संख्या । (वि०) तीन हजार

चौदस-दे० चवदस ।

चौदह-दे० चवदै ।

चौदंत-(क्रि०वि०) सन्मुख । आमने-सामने । मुकाबले । (वि०) वह पशु जिसके चार दांत निकल आये हों । चार दांतों वाला ।

चौदंत हुणौ-(मुहा०) १. आमने-सामने होना । २. मुकाबला होना । ३. मिलना । ४. भिड़ना ।

चौधर-(ना०) चौधरी का पद । २. चौधरी का काम । मुखियापन । ३. चौधरी को उसके काम के बदले में मिलने वाला एवजाना । चौधराई ।

चौधरण-(ना०) १. चौधरी की पत्नी । २. जाटनी । जाट स्त्री ।

चौधराई-दे० चौधर ।

चौधरी-(न०) १. एक कृषक जाति । पटेल । पिटल । २. जाट । ३. पंच । ४. किसी जाति या समाज का मुखिया ।

चौधाड़ै-दे० चौड़े धाड़ै ।

चौपगो-(वि०) चार पाँव वाला । (न०) पशु । जानवर । चौपाया ।

चौपट-(न०) ध्वंस । नाश । बरबादी । (वि०) १. नष्ट । भ्रष्ट । बरबाद । २. चार परत वाला । दे० चौपड़ ।

चौपड़-(ना०) १. चौराहा । २. चौसर का खेल । ३. बिसात । चौसर । (वि०) चार परत वाला ।

चौपड़ो-(न०) १. हिसाब-वही। २. भाटों की वंशावलियां लिखने और पढ़ने की वही। ३. कुंकुम चावल आदि मांगलिक वस्तुएँ रखने का एक पात्र।

चौपन-(वि०) पचास और चार। चोवन। (न०) पचास और चार की संख्या। "५४"।

चौपनियो-(न०) १. छोटी वही। वहीनुमा नोट बुक। (वि०) चार पन्नों वाला।

चौपाई-दे० चोपाई।

चौपानियो-दे० चौपनियो।

चौपायो-(न०) पशु। चतुष्पाद। चौपगो।

चौपाळ-दे० चोपाळ।

चौफकेर-दे० चौफेर।

चौफाड़-(ना०) १. चीर कर बनाये हुए चार भाग। २. किसी वस्तु के किये हुए चार भाग। (वि०) चीर कर जिसमें चार भाग दिखाये गये हों। जैसे-अचार वाला नींबू।

चौफाड़ियो-(वि०) चौफाड़ किया हुआ।

चौफाड़ो-दे० चौफाड़ियो।

चौफूली-(ना०) १. चार पत्तियों वाला फूल या और कोई उपकरण। २. एक आभूषण।

चौफेर-(अव्य०) चारों ओर।

चौफेरी-(क्रि०वि०) चारों ओर। (ना०) (कुछ जातियों में) वर-वधु के प्रथम मिलन की रात्रि का नाम।

चौवारै-(अव्य०) १. खुले में। २. खुले आम। सर्वसाधारण के सामने।

चौवारो-(न०) १. चार खिड़कियों वाला झरोखा। २. अटारी। ३. खुली बैठक। ४. मकान की छत पर बना हुआ हवादार कमरा। ५. चार द्वार वाला कमरा।

चौवीस-(वि०) बीस और चार। (न०) चौवीस की संख्या। २४।

चौवो-(न०) व्रजभूमि का चतुर्वेदी ब्राह्मण। चौबा। चौबे।

चौबोलो-(न०) एक मात्रिक छंद।

चौमजलो-(वि०) चार मंजिल वाला। चोखंडो।

चौमठ-(वि०) चारों ओर से बांधी जाने वाली। जो (गठरी) चारों ओर से बांधी जा सके। (ना०) पुराने ढंग का एक संदूक।

चौमाळ-(न०) एक ब्राह्मण जाति। (वि०) चार मंजिल वाला।

चौमासो-(न०) १. वर्षा ऋतु। २. वर्षा ऋतु के चार मास। चतुर्मास।

चौमासो उतरणो-दे० चौमासो ऊठणो।

चौमासो ऊठणो-(मुहा०) चातुर्मास का समाप्त होना। २. साधु संन्यासियों का चौमासे में एक जगह स्थाई रूप से रहने की अवधि का समाप्त होना।

चौमासो करणो-(मुहा०) साधु-संन्यासियों का चौमासे में किसी एक स्थान पर स्थाई रूप से रहना।

चौमासो बैठणो-दे० चौमासो लागणो।

चौमासो लागणो-(मुहा०) चातुर्मास का प्रारंभ होना। आसाढ़ शु० ११ से कातिक शु० ११ तक वर्षा ऋतु के चार मास का प्रारंभ होना।

चौमासो वीतणो-(मुहा०) वर्षा ऋतु का समाप्त होना। दे० चौमासो ऊठणो।

चौमुखो-(वि०) १. चार मुँह वाला। २. चार द्वारा वाला। (क्रि० वि०) चारों ओर।

चौमेर-(क्रि०वि०) चारों ओर। चौफेर।

चौमेळो-(न०) १. आकस्मिक मिलन। २. मिलन।

चौरस-(न०) चतुष्कोण। समकोण। चतुर्भुज आकृति। (वि०) १. समतल। २. चौपहल।

चौरंग-(न०) १. अस्त्र विशेष। २. चतुरंगिनी सेना। ३. युद्ध। ४. चार रंग।

५. चार रंग । (वि०) रंगे हुवे हाथ पाँवों वाला । चौरंगा ।

चौरंगो (वि०) १. रंगे हुवे हाथ पाँवों वाला । चौरंगा । २. चार रंगों वाला ।

चौरागुणो (न०) चौरासी गुना ।

चौरासूं (न०) चौरासी की संख्या । '८४' । (वि०) अस्सी और चार ।

चौरासिया-ठाकर (न०) १. चौरासी गांवों का जागीरदार । २. बड़ा जागीरदार ।

चौरासियो (न०) सदी का चौरासीवां वर्ष ।

चौरासी-(वि०) १. अस्सी और चार । (न०) १. चौरासी की संख्या । '८४' २. चौरासी लाख योनियां । ३. चौरासी गाँवों की जागीरी । ४. चौरासी गांवों का समूह ।

चौरासी सिद्ध-(न०) चौरासी प्रकार के सिद्ध महात्मा ।

चौरिसिया-(न०) ब्राह्मणों की एक अल्ल ।

चौलड़ो (वि०) १. चार लड़ियों वाला । २. चार तहों वाला ।

चौलावो-दे० चौतीणो ।

चौवटियो-(न०) १. चौहट्टे का कर वसूल करने वाला । २. चौहट्टे का पंच । ३. गाँव का पंच । ४. चौहट्टा ।

चौवटो-(न०) १. चौहट्टा । चौराहा । २. बाजार ।

चौवड़ो-(वि०) १. चौहरा । चौगुना । २. चार परत वाला ।

चौविहार-(न०) सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करने का जैन धर्म का एक नियम ।

चौवीस-दे० चौबीस ।

चौवीसो-दे० चौईसो ।

चौसठ-(वि०) साठ और चार । (न०) चौसठ की संख्या । '६४'

चौसठ जोगणी-(ना०) १. योगिनियों के चौसठ प्रकार । २. चौसठ जाति की योगिनियां । ३. चौसठ योगिनियों का समूह ।

चौसठो (न०) सम्वत का चौसठवां वर्ष ।

चौसर-(ना०) १. चतुर्दिक । चारों दिशाएँ । २. चौपड़ । ३. चौपड़ की बिसात । ४. सफेद दाढ़ी मूंछें । (वि०) चार लड़ वाला । (क्रि०वि०) चारों ओर ।

चौसर गाहा-(ना०) एक गद्य छंद ।

चौसरा (न०) १. दाढ़ी-मूंछ के सफेद बाल । वृद्धावस्था के श्वेत बाल । २. आंसू ।

चौसरो-(न०) १. फूलों का हार । २. चार लड़ी का हार । ३. चौलड़ा । ४. चद्दर । ५. आंसू । अश्रुधारा ।

चौसाको-(न०) चार कटोरों वाला साग परोसने का पात्र ।

चौसी-दे० चौसीरी ।

चौसीरी-(ना०) १. चार भाइयों की हिस्सेदारी । २. चार हिस्से । (वि०) १. चार हिस्सों का । २. चार हिस्सेदारों का ।

चौसीरो-दे० चौसीरी ।

चौसींगी-दे० चौकनी ।

चौहटो-(न०) चौहट्टा ।

चौहत्तर-(वि०) सत्तर और चार । (न०) चौहत्तर की संख्या । '७४'

चौहाण-(न०) क्षत्रियों की एक शाखा । चौहान क्षत्री ।

च्यवन ऋषि-(न०) एक प्राचीन ऋषि ।

च्यार-(वि०) चार ।

च्हावणो-(क्रि०) चाहना ।

च्हावना-(ना०) इच्छा । चाहना ।

छ

छ-(न०) संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्ण माला के च वर्ग का तालु स्थानीय दूसरा (व्यंजन) वर्ण।

छ-(वि०) गिनती में पाँच से एक अधिक। छः। (न०) छः की संख्या। '६'

छइ-दे० छै। (वि०) छहों। छही।

छक-(वि०) १. तृप्त। २. आपूर्ण। ३. पूर्ण। भरा हुआ। ४. मस्त। (न०) १. शोभा। २. उत्सव। ३. समारोह। ४. सजावट। तैयारी। ५. ठाट। वैभव। ६. भीड़भाड़। ७. दल। ८. पक्ष। ९. तृप्ति। १०. गर्व। ११. खुमारी। १२. जोश। १३. कवच। १४. भाला। १५. छः का समूह। पटक। (पहाड़ा के अंकों में) यथा-एक छक-छक। बेछक बारे; तीन छक अठारै इत्यादि। (क्रि०वि०) चकित। विस्मित।

छकड़-(न०) १. एक पुराना सिक्का। २. छकड़ा।

छकड़ाळ-(न०) कवच। (वि०) १. वीर। २. जोशीला। ३. कवचधारी। ४. भालाधारी।

छकड़ाळो-(वि०)१. कवचधारी। २. भाला-धारी। ३. वीर। बहादुर।

छकड़ो-(न०)१.एक बैल की गाड़ी। छकड़ा। सग्गड़। २. भार गाड़ी। ३. कवच।

छकणो-(क्रि०) १. तृप्त होना। २. घमंड करना। ३. नशा चढ़ना। ४. बहकना। ५. पूर्ण होना। भर जाना।

छकपूर-(न०) १. गर्व। २. नशा।

छकबंबाळ-(वि०) रस पूर्ण भावों से छका हुआ।

छकाणो-(क्रि०) १. खिला पिला कर तृप्त करना। छकाना। २. मद्य, भाँग आदि पिला कर उन्मत्त बनाना। ३. ठगना। ४. धोखा देना। ५. भुलावे में डालना। भुलाना। ६. अचंभे में डालना। ७. हैरान करना। तंग करना। ८. किसी को व्यंग्य द्वारा मूर्ख बनाना।

छकाय-(न०) जैन मतानुसार (पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजकाय, वायुकाय, वनस्पति-काय और त्रसकाय) छः जाति के जीव।

छकार-(न०) १. 'छ' वर्ण। छछो। २. हरिण। मृग। छौंकियो।

छकारो-(न०) १. हरिण। मृग। २. छौंकियो हिरण।

छकावणो-दे० छकाणो।

छकिआर-(न०) संबल। पाथेय। भातो।

छकिआरी-(ना०) खेत में काम करनेवालों के लिये भाता ले जाने वाली। भतवारी।

छकिआरो-दे० भतवारो।

छकीली-(वि०) छकी हुई। मस्तानी। मदमस्त।

छकीलो-(वि०) छका हुआ। मदमस्त।

छको-दे० छक्को।

छक्को-(न०) १. छः का आँक '६'। २. छः बूटियों वाला ताश का पत्ता। ३. पासे का वह बल जिसमें छः बिंदियाँ हों। ४ छठा वर्ष (वि०सं०का०)।

छग-(न०) बकरा। छाग।

छगड़ी-(ना०) बकरी।

छगड़ो-(न०) १. बकरा। २. छः का अंक।

छगण-'छगण' का विपर्यय। दे० छगण।

छगन-मगन-(न०) १. सुन्दर बच्चों की जोड़ी। २. छोटे छोटे प्यारे बच्चे।

छगळ-(न०) १. बकरा। २. छोटा मशक। चंगेरी। दीवड़ी। छागळ। छागळी।

छगळी देo छागळी ।

छगी (नाo) छः बूटियों वाला ताश का पत्ता ।

छगो–देo छक्को ।

छछूंदर–(नo) चूहे के जैसा एक जंतु ।

छछोरपण–(नo) १. ओछापन । २. बचपन ।

छछोह्–(क्रिoविo) तीव्र गति से । अति शीघ्रता से । (विo) १. फुर्तीवाला । २. तेजस्वी । ३. सुन्दर । (नo) १. फव्वारा । २ जलकण ।

छछोहो–(विo) १. चंचल । २. तेज । ३. वेगवान । शीघ्रगामी । ४. तेजस्वी । ५. प्रचंड । उग्र । ६. ढीला । शिथिल । (नo) १. जलकण । बूंद । २. फव्वारा । ३. दुर्धर्ष योद्धा । (क्रिoविo) १. अत्यन्त तेज गति से । २. अति शीघ्रता से ।

छछ्छो–(नo) 'छ' वर्ण । छकार ।

छज–(नाo) १ झोंपड़े या कच्चे मकान की छाजन । छान । २. ढक्कन । ३. विवेक । ४. बुद्धि । ५. छात । छत ।

छजवाळ–(नo) १. छज्जा । २. छज्जों की पंक्ति । ३. गवाक्ष । झरोखा । गोखो । (विo) १. बुद्धिमान । २. विवेकी ।

छजेड़ी–(नाo) अकेली खड़ी दीवाल की छाजन । (विo) छाई हुई ।

छजेड़ो–(विo) छाया हुआ ।

छज्जो–देo छाजो ।

छटकणो–(क्रिo) १. बंधन से निकल जाना । २. पकड़ी हुई वस्तु का भार या धक्के से छूट जाना । वेग के साथ दूर जाना ।

छटपटणो–(क्रिo) तड़पना । छटपटाना ।

छटपटाणो-(क्रिo) १. तड़फड़ना । छटपटाना । २. तड़फड़ाना ।

छटपटी–(नाo) १. अधीरता । व्यग्रता । २. उतावली ।

छटा–(नाo) १. शोभा । कांति । २. शान । खूबी । ३. चमक । ४. प्रभाव ।

छटादार-(विo) छटा वाला ।

छटाधर–(विo) १. शोभावान । २. प्रभावशाली । ३. वीर । बहादुर ।

छटायत-देo छटाधर ।

छटांक-(नाo) १. सेर के सोलहवें भाग का तोल । २. सेर का सोलहवां भाग ।

छटूंद–(नo) मेवाड़ में कर रूप में लिया जाने वाला कृषि का छठा भाग ।

छटेल-देo छंटेल ।

छट्टी–(नाo) सवा छः का पहाड़ा ।

छठ–(नाo) पक्ष का छठा दिन । छठी तिथि । षष्ठी ।

छठी–(नाo) १. प्रसव के बाद की छठ रात्रि । २. जन्म की छठी रात का उत्सव, जिस रात्रि को विधाता शिशु के भाग्य का निर्माण करता है । ३. छठ तिथि । ४. मृत्यु । ५. युद्ध । (विo) छठवीं । छट्ठी ।

छठो-(विo) छठवां । छठा ।

छड़–(नo) १. भाला । २. छोटी बरछी । ३. भाले का डंडा ।

छड़कणो–(क्रिo) पानी छाँटना ।

छड़काव–(नo) पानी छाँटने की क्रिया ।

छड़छबीलो–(नo) धूप, औषधि आदि में काम आने वाली एक जलीय सुगंधित वनस्पति । छरीला ।

छड़णो–(क्रिo) १. कूटना । ठोंकना । २. भाले से प्रहार करना । ३. ओखली में डाल कर नाज को मूसळ से कूटना । ४. ओखली में कूट कर नाज को साफ करना । ५. छाज में फटक कर नाज को साफ करना ।

छडंग–(विo) अकेला ।

छडाणो–(नo) १. छोड़ना । त्यागना । २. छुड़ाना ।

छडाणो करणो–(मुहाo) छोड़ कर चले जाना । भाग जाना ।

छड़ाळ–(न०)भाला। (वि०) भाले वाला। भालाधारी।
छड़ाळो–दे० छड़ाळ।
छड़ियाळ–दे० छड़ाळ।
छड़ी–(ना०) १. हाथ में रखने की लकड़ी। बेंत। २. देवमंदिर, राज दरबार, महंत और धर्माचार्यों के चोबदार के पास रहने वाला सोने या चांदी से मँढ़ा हुआ एक लम्बा डंड। राजदंड। ३. झंझट। विवाद।
छड़ीभल–दे० छड़ीदार।
छड़ीभाल–दे० छड़ीदार।
छड़ीदार–(न०) छड़ी रखने वाला। छड़ी बरदार। चोबदार।
छड़ी बरदार–दे० छड़ीदार।
छड़ीहथो–दे० छड़ीदार।
छड़ींदो–(वि०) १. अकेला। एकाकी। २. खाली हाथ। सामान या बोझा के बिना। छरीदा। (यात्री)।
छड़ो–(न०) १. पाँव का एक गहना। २. मोतियों का झुमका। (वि०) अकेला।
छडुणो–दे० छंडणो।
छण–दे० क्षण।
छणक–(न०) छन-छन का शब्द। छनक। छनछनाट।
छणको–दे० छणक।
छणग–(न०) उपला। कंडा। छाणो।
छणणो–(क्रि०) छनना।
छणदा–(ना०) रात्रि। रात। क्षणदा।
छणाई–(ना०) १. छानने का काम। २. छानने की मजदूरी।
छणारी–दे० छाणेरी।
छणावट–(ना०) १. तपास। जांच। २. छानने की क्रिया।
छणावणो–(क्रि०) छनवाना।
छणियारो–दे० छाणेरो।
छत–(न०) १. देवी देवता के ऊपर रहने वाला छत्र। २. राज्य। ३. राजा। ४. छात। पाटन। ५. होने का भाव। बचने का भाव। बचत। ६. वृद्धि। ७ बहुतायत। अधिकता। ८. घाव। क्षत। ९. दुख। दर्द।
छतर–(न०) मंदिर में देवता के ऊपर टँगा रहने वाला सोने या चांदी का छत्र।
छतरड़ी–(ना०)१. छोटा छाता। २. छाता।
छतरड़ो–(न०) छाता।
छतरधारी–(न०) छत्रधारी। राजा।
छतरी–(ना०) १. जूझार और राजा की चिता पर एवं साधु-महात्मा की समाधि पर बनाया जाने वाला एक प्रकार का स्मारक भवन। गुमटी। २. छाता। ३. कुकुरमुत्ता।
छतां–(अव्य०) १. फिर भी। तो भी। २. ऐसा होने पर भी। ३. इसके उपरान्त। ४. होते हुये।
छती–(ना०) पृथ्वी।
छतीस–(वि०) तीस और छ:। (न०) छतीस की संख्या। ३६।
छतीस पवन–(न०) चारों वर्ण और उनके अंतर्गत आने वाली समस्त जातियाँ। २. समस्त मानव समाज।
छतीसी–(ना०) छत्तीस छंदों का काव्य।
छतीसो–छत्तीसवाँ सम्वत्।
छतै–(अव्य०) १. होते हुये। होतां थकां। २. रहते हुये। रहतां थकां। ३. मौजूदगी में।
छतो–(वि०) १. प्रत्यक्ष। प्रकट। २. प्रसिद्ध। (अव्य०) १. फिर भी। तो भी। २. होता हुआ। ३. ही।
छत्त–(ना०) दुराग्रह। हठ। दे० छत।
छत्ती–(ना०) छाती।
छत्तीस–दे० छतीस।
छत्तीसो–दे० छतीसो।
छत्र–(न०) १. देव मूर्तियों के ऊपर टँगा रहने वाला सोने या चांदी का बना छाते

जैसा एक छोटा उपकरण। छत्र। २. राज चिन्ह के रूप में राजाओं के ऊपर रखा जाने वाला छाता। ३. राजा। ४. पिता। ४. छाता। छत्री। *(वि०)* १. श्रेष्ठ। २. ऊंचा।

छत्रछाया–*(ना०)* शरण। रक्षा। आसरो।

छत्रधर–*(न०)* राजा।

छत्रधारी–*(न०)* राजा।

छत्रपति–*(न०)* मरहटों का राज्य स्थापित करने वाले वीरवर शिवाजी का विरुद और उनकी उपाधि। २. राजा।

छत्रबंध–*(न०)* राजा।

छत्रभंग–*(न०)* १. ज्योतिष का एक योग जिसमें राजा का नाश होता है। राजा की मृत्यु। २. माता-पिता आदि गुरुजन के मरने का योग। माता-पिता की मृत्यु। ३. पति की मृत्यु। वैधव्य।

छत्राधीस–*(न०)* राजा।

छत्राळ–*(न०)* राजा। छत्रधारी।

छत्राळो–*(न०)* १. राजा। २. जैसलमेर के राजा का विरुद। छात्राळो।

छत्री–*(न०)* १. छाता। २. महात्मा, राजा आदि बड़े पुरुषों के अग्निदाह के स्थान पर बनाई जाने वाली गुमटी। ३. स्मारक। ४. क्षत्री। क्षत्रिय।

छत्रीपणो–*(न०)* क्षत्रियत्व।

छत्रीस–दे० छतीस।

छत्रीसो–दे० छतीसो।

छद–*(न०)* १ पत्ता। पत्र। २. कागज। ३. पांख। ४.आच्छादन। आवरण। ५. कपट। छल। छंद।

छदन–दे० छद।

छदम–दे० छद्म।

छदमस्त–*(वि०)* मतवाला। अलमस्त।

छ दरसण–*(न०)* षड्दर्शन। सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा तथा वेदान्त— ये षट्शास्त्र।

छदाम–*(ना०)* १. पैसे का चौथा भाग। रुपये का २५६ वाँ भाग। २. पैसे के चौथे भाग का सिक्का। (प्राचीन)

छदामभर–*(अव्य०)* कुछ भी नहीं। *(वि०)* बहुत हलका।

छद्म–*(न०)* छल-कपट।

छनाछन–*(न०)* पैसे की अधिकता। धन की रेलमपेल।

छनीछर–*(न०)* शनीश्चर। शनैश्चर। थावर।

छपगो–*(न०)* षट्पद। भौंरा।

छपणो–*(क्रि०)* १. छपना। मुद्रित होना। २. अंकित होना।

छपनियो–दे० छपनियो काळ।

छपनियो काळ–*(न०)* वि० सं० १९५६ का प्रसिद्ध भयंकर दुष्काल।

छपनो–*(न०)* सदी का छप्पनवाँ वर्ष। २. वि०सं० १९५६ का प्रसिद्ध दुष्काल वर्ष।

छपरियो–*(न०)* १. छप्पर। २. झोंपड़ा।

छपरो– *(न०)* छप्पर।

छपा–*(ना०)* रात। क्षपा।

छपाई–*(ना०)*१. छापने का काम। २. छापने का पारिश्रमिक।

छपाको–*(न०)* एक चर्म रोग।

छपाणो–*(क्रि०)* छपवाना। छपावणो।

छपाव–*(न०)* छिपाव। दुराव।

छपावणो–*(क्रि०)* छपवाना। छपाणो।

छप्पन–*(वि०)* १. पचास और छः। २. बहुत। अधिक। अनेक। (५६ देश, ५६ भाषाएँ और ५६ संस्कृत के कोश ग्रंथ, इस मान्यता के आधार पर) जैसे–थारै सिरीसा छप्पन देखिया है। *(न०)* छप्पन की संख्या। '५६'

छप्पनगिर–*(न०)* १. सिवाणा (मारवाड़) के निकट की एक इतिहास प्रसिद्ध पर्वत श्रेणी। छप्पन रा पहाड़। हलदेश्वर रो पहाड़। २. मेवाड़ की एक पर्वत श्रेणी।

छप्पन भोग-(न०) १. ठाकुरजी को चढ़ाई जाने वाली छप्पन प्रकार की भोजन सामग्री। २. दुनियां के समस्त भोग विलास।

छप्पय-(न०) छः चरणों का एक मात्रिक छंद।

छप्पर-(न०) १. झोंपड़ा। २. छान। छाजन।

छप्पर खाट-(न०)वह पलंग जिसमें मच्छर-दानी लगी हो। मसेरीखाट।

छब-(ना०) १. छवि। तसवीर। तसवीर। २. शोभा।

छबकाळो-(वि०) रंग विरंगा।

छबड़ी-(ना०) डलिया। टोकरी। छाब। छाबड़ी।

छबणो-(न०) दरवाजे की चौखट के ऊपर का पत्थर।

छबरां-छबरां-(क्रि० वि०) खूब जोर से (रोना)।

छबलियो-(न०)छोटी टोकरी। छबोलियो। छाबड़ी।

छबी-(ना०) १. तसवीर। छवि। चित्र। २. दृश्य। ३. सौंदर्य। शोभा। ४. रूप।

छबीलो-(वि०)छबीला। सुन्दर। सजीला।

छबोलियो-दे० छबलियो।

छभा-(ना०) १. सभा। २. परिषद्। ३. समिति।

छमक-दे० छमको। दे० छमछम।

छमक-छमक- दे० छमछम।

छमकणो-(क्रि०) छौंकना। बघारना। वघारणो।

छमको-(न०) छौंका। बघार। वघार।

छमच्छर-(न०) सम्वतसर। संवत्।

छमछम-(ना०) नूपुर, पायल, घुंघरू आदि वजने का शब्द।

छमछमाट-(न०) १. 'छमछम' आवाज। २. गर्व। ३. तौर।

छमछमिया-(न०) मंजीरों की जोड़ी। झांझ जोड़ी।

छमछरी-(ना०) १. संवत्सरी। संवत का व्यवहार। २. वार्षिकी व्रत या उत्सव। ३. जैनों का एक व्रतोत्सव। पर्युषण पर्व का अंतिम दिन। ४. मृत्यु दिवस का (वार्षिक) श्राद्ध।

छमंछर-(न०) सम्वत्सर।

छमा-(ना०) क्षमा।

छमासी-(ना०) १. मृत्यु के छः महीने बाद होने वाला श्राद्ध तथा भोजन। छठे मास में होने वाला मृतक का श्राद्ध। (वि०) १. छः मास से संबंधित। छः मास का। २. जो छः महीनों में हो गया है।

छमासी-री-छाँट-(ना०) मृतक का पाण-मासिक श्राद्धिक लोकाचार।

छमाही-दे० छमासी।

छय-(न०) क्षय। नाश। खय। खै।

छर-(न०) १. हाथ। २. भुजा। ३. सिंह का पंजा। हत्थल। ४. प्रहार। ५. भाला।

छरड़-दे० चड़स। (चड़स का विकृत रूप।)

छरा-(ना०) कलंक। लांछन। लंछण। दूसण।

छराळो-(न०) १ वीर पुरुष। २. सिंह। (वि०) १. शस्त्रधारी। २. भालेवाला।

छरी-दे० छुरी।

छरो-(न०) १. हाथ। २. भुजा। ३. सिंह का पंजा। हत्थल। ४. भाला। ५. तलवार। ६. छर्रा। ७. कलंक। लांछन।

छर्रो-(न०) एक प्रकार की बंदूक की गोली। बहुत छोटी गोली।

छळ-(अव्य०) १. लिये। निमित्त। वास्ते। २. युद्ध में। (न०) १. छल। कपट। धोखा। २. कीर्त्ति। ३. प्रतिष्ठा। ४. युद्ध विजय की कीर्त्ति। ५. युद्ध। ६. अवसर। ७. भेद। ८. क्रोध।

छळक–*(ना०)* छलकता हो इस तरह । छलकन ।
छळकणो–*(क्रि०)* १. छलकना । २. उगड़ना । ३. उभरना ।
छळ-कपट–*(न०)* १. धोखा-पट्टी । छल-कपट । २. धोखाधड़ी ।
छळकाणो–*(क्रि०)* छलकाना । उभराना ।
छळकावणो–दे० छळकाणो ।
छळछंद–*(न०)* धूर्त्तता । कपट का व्यवहार ।
छळछंदी–*(वि०)* धूर्त्त । छल कपट करने वाला । कपटी ।
छळछिद्र–दे० छळछंद ।
छळछिद्री–दे० छळछंदी ।
छळ-जाग–*(ना०)* १. युद्ध रूपी यज्ञ । २. युद्ध भूमि ।
छळणो–*(क्रि०)* छलना । धोखा देना । ठगना । ठगणो ।
छळभोम–*(ना०)* १. युद्धभूमि । रणक्षेत्र । २. रणकुशलता ।
छळावो–*(न०)* छल । धोखा ।
छळाँ–*(अव्य०)* लिये । वास्ते ।
छलाँग–*(ना०)* कुदान । उछाल । फलांग ।
छळाँ-नायक–*(न०)* युद्धनायक । सेनापति ।
छळि–*(अव्य०)* संप्रदान विभक्ति । लिये । वास्ते । हेतु ।
छळियो–*(वि०)* १. छली । धोखेबाज । कपटी । २. योद्धा । जोधो ।
छळी–*(वि०)* छल करने वाला । छलिया । कपटी ।
छलीमरदो–*(न०)* ऊंट के पलान का एक उपकरण ।
छलेणी–*(वि०)* १. छलांग मारने वाली । २. छलने वाली । ठगनी ।
छळो–*(न०)* १. घोड़े या गधे का मूत्र । २. वकरा ।
छलो–*(न०)* छल्ला ।
छलोछल–*(वि०)* लबालब । पूरा भरा हुआ ।
छल्लो–*(न०)* १. छल्ला । अंगूठी । २. स्त्रियों की एक ऐसी अंगूठी जो दो अंगुलियों में पहनी जाती है ।
छव–*(न०)* छः की संख्या । '६' *(वि०)* छः। पट ।
छवाई–*(ना०)* १. छाने की मजदूरी । २. छाने का काम । ३. एक शस्त्र ।
छवी–दे० छवीस ।
छवीस–*(वि०)* १. एक सौ बीस । २. छब्बीस ।
छवीसी–*(वि०)* एक सौ बीस ।
छंग–दे० छांग ।
छंगणो–दे० छांगणो ।
छंगारा–दे० चंगास ।
छंछाळ–*(न०)* १. हाथी । २. घोड़ा । ३. सिंह । ४. फव्वारा । ५. वायु का झोंका। *(वि०)* १. पागल । २. मदान्ध ।
छंछेड़णो–*(क्रि०)* १. छेड़ना । २. हिलाना। ३. सताना । ४. लगाना । सुलगाना । ५. चिढ़ाना ।
छंट–*(ना०)* १. बूंद । छाँट । २. दुर्गंध । *(वि०)* छाँटा हुआ । छँटेल । चालाक ।
छंटणी *(ना०)* १. नौकरी से दूर करने के लिये छाँटने का काम । छँटनी । २. छँटाई ।
छंटणो–*(क्रि०)* १. छँट कर अलग होना । साथ छूटना । पृथक होना । २. छँटा जाना । चुना जाना ।
छंटाई–*(ना०)* १. छाँटने की क्रिया । २. छिड़काव ।
छंटाणो–*(क्रि०)* छंटवाना ।
छंटाव–*(ना०)* १. छाँटने की क्रिया । २. अलग होने या करने का कार्य । ३. छिड़काव ।
छंटावणो–दे० छंटाणो ।
छंटेल–*(वि०)* १. छाँटा हुआ । २. बदमाश । ३. धूर्त्त । चालाक ।

छंडणो-(क्रि०) १. छोड़ना । मुक्त करना । २. छूटना । मुक्त होना ।

छंद-(न०) १. अक्षर और मात्राओं की नियमबद्ध गणना के अनुसार संगठित की हुई सार्थ पदों की विराम युक्त पंक्तियों का एक समाहार । कविता-विधान । पद्य । २. छल । कपट । धोखा । ३. अक्षरों की गणना के अनुसार वेदों के वाक्यों का भेद । ४. वेद । छंदस । ५. डिंगल काव्य की एक संज्ञा । ६. स्वेच्छाचार । ७. चाल । ८. रंग-ढंग । ९. युक्ति । १०. एकांत । ११. पत्ता । १२. ढक्कन । १३. अभिप्राय । १४. विष । १५. समूह ।

छंदगारी-दे० छंदागारी ।

छंदगारो-दे० छंदागारो ।

छंदशास्त्र-(न०) छंदों के रूप लक्षण बताने वाला शास्त्र ।

छंदागारी-(वि०) १. छल कपट करने वाली । कुटिला । २. नखरे वाली । नखराली । नखराळ । ३. ऊपर का प्रेम दिखाने वाली । ४. आज्ञाकारिणी । ५. उद्यमी ।

छंदागारो-(वि०) १. नखराबाज । चोंचला-बाज । २. कपटी । धोखाबाज । ३. झूठा । ४. दुराव रखने वाला । ५. उद्यमी ।

छंदो-(न०) १. नखरा । चोंचला । नाज । २. दिखावटी प्रेम । ३. छल । कपट । ४. छिपाव । दुराव । ५. उपकार, सेवा, सहायता आदि ।

छंदोबद्ध-(वि०) जो छंद या पद्य के रूप में हो । पद्यात्मक ।

छंदोभंग-(न०) छंद की लय या गति में त्रुटि । दोषपूर्ण छंद रचना ।

छंवरो-दे० झमरो ।

छा-(भू०क्रि०) 'होणो' क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप । 'छो' का बहुवचन रूप । थे । जैसे-माया छा । (आये थे) ।

छाई-(ना०) राख । छारी । दे० छाईस ।

छाईजणो-(क्रि०) छाया जाना ।

छाईस-(वि०) बीस और छः । (न०) छब्बीस की संख्या । '२६' ।

छाक-(ना०) १. मस्ती । उन्मत्तता । २. नशा । ३. मिजाज । अहंकार । ४. तृप्ति । ५. शराब पीने का प्याला । ६. प्याला भर शराब । ७. रक्त का प्याला जो देवी को अर्पण किया जाता है । ८. शक्ति । ९. खेत में काम करने वाले के लिये पहुंचाया जाने वाला भोजन । भातो । (वि०) १. मस्त । २. भरा हुआ । पूर्ण । छक ।

छाकटाई-(ना०) बदमाशी । लुच्चाई ।

छाकटो-(वि०)बदमाश । लुच्चा । 'छाटको' का वर्ण व्यतिक्रम ।

छाकणो-(क्रि०) १. छक जाना । पूर्ण होना । अघाना । २. मस्त होना । ३. गर्व करना । फूलना ।

छाकियो थको-(अव्य०) १. छका हुआ । नशा लिया हुआ । २. नशे में । ३ नशा लिये हुए की हालत में । ४. नशा लिया हुआ होने पर ।

छाग-(न०) बकरा ।

छागड़-(न०) बकरा ।

छागण-दे० छाणाग ।

छागर-(न०) १. बकरी । २. बकरा ।

छागरथ-(न०) अग्नि ।

छागळ-(न०) बकरा । (ना०) बकरी के बच्चे के चमड़े से बना जल-पात्र । चँगेरी । छोटी मशक । दीवड़ी ।

छागळियो-दे० छागळ ।

छागळी-(ना०) १. बकरी । २. बकरी के बच्चे के चमड़े से बना जल-पात्र । छोटी मशक । दीवड़ी ।

छागळो-दे० छागळ ।

छागी-(ना०) बकरी ।

लुच्चाई । छाटकापणो ।

छाटकापणो-दे० छाटकाई ।

छाटको-*(वि०)* बदमाश । लुच्चा । धूर्त । छाफटो ।

छाटी-*(ना०)* जट का बना हुआ ऊट, बैल आदि पर नाज भर कर ले जाया जाने वाला दो भागों वाला एक बड़ा थैला । जट का दुपल्ला बोरा । गूण । गूणती ।

छाड-*(ना०)* वमन । कै । उलटी ।

छाडणो-*(क्रि०)* १. कै करना । वमन करना । २. छोड़ना । छोड़णो ।

छाण-*(ना०)* १. जांच-परताल । छानबीन । २. निचोड़ । नतीजा । ३. गोबर । ४. कंडा । उपला । ५. कंडों का चूरा । ६. कचरा । करदा ।

छाणग-दे० छागण । छाणाग ।

छाणणो-*(क्रि०)* आटा, पानी आदि को चलनी या कपड़े में से निकालना । छानना ।

छाणत-*(वि०)* १. अप्रिय । अरुचिकर । २. असह्य । *(ना०)* १. छानने से निकला

छाणो-*(ना०)* १. [illegible] । २. [illegible] । *(क्रि०)* १. छा जाना । २. छा देना । ३. ढक देना । ४. ढक जाना । ५. फैल जाना । ६. शोभा पाना । ७. रहना । निवास करना ।

छात-*(न०)* १. छत्र । २. छाता । ३. राजा । ४. रक्षक । ५. मुकुट । *(ना०)* छत । पाटन ।

छातथंभ-*(न०)* छात का थंभा । दे० राजथंभ ।

छातरणो-*(क्रि०)* १. ढूबना । २. फैलना । ३. डुबाना । ४. फैलाना ।

छाती-*(ना०)* १. वक्षस्थल । सीना । उराट २. स्तन । कुच । ३. हृदय । उर । ४. हिम्मत । साहस । हीयो ।

छातीकूटो-*(न०)* १. अधिक परिश्रम और लाभ कम । २. व्यर्थ का परिश्रम । मग्जमारी । ३. लड़ाई-झगड़ा । कलह । ४. गृह-कलह । ५. काम का बोझा ।

छातीछोलो-*(वि०)* दुखदायी । *(न०)* दुख । कष्ट ।

छातीझल्लो–(वि०) हिम्मत वाला। साहसी। छातीवाळो।

छातो–(न०) छाता। छतरी। छतरड़ो।

छात्र–(न०) १. क्षत्री। २. राजा। ३. विद्यार्थी।

छात्राळ–(न०) राजा।

छात्रालय–(न०) छात्रों के रहने का स्थान। बोर्डिंग।

छात्राळो–(न०) १. जैसलमेर के भाटी राजाओं का एक विरुद। २. जैसलमेर का राजा। ३. राजा।

छान–(ना०) छप्पर।

छानी–(ना०) बारीक टुकड़े किये हुये घास अथवा डंठलों का चारा। कुतर। (वि०) गुप्त। छिपी हुई।

छानै–(क्रि०वि०) १. गुप्त रीति से। २. चुपचाप।

छानै-चुपकै–दे० छानै या छानै-मानै।

छानै-छुरकै–दे० छानो-मानो व छानै-मानै।

छानै-मानै–(क्रि०वि०) गुप्त रूप से। चोरी से। छिपकर। छानै।

छानो–(वि०) १. गुप्त। छिपा हुआ। २. चुप। शांत।

छानो-मानो–(क्रि०वि०) १. चुपचाप। २. छिपे-छिपे। चोरी-चोरी। गुप्तरीति से।

छाप–(ना०)१. प्रतिकृति। चित्र। २.ठप्पा। ३. मुहर। ४. प्रभाव। रोब। ५. दाब। दबाव। ६. गीत या कविता में रचनाकार का नाम। आभोग। ७. कवि का उपनाम। ८. कलंक। ९. स्त्रियों की एक अंगूठी। १०.एक प्रकार की अंगूठी। ११. तीर्थ-स्थान में यात्रियों के बाहुमूल पर लगाई जाने वाली शंख चक्र आदि की मुद्रा।

छापखानो–दे० छापाखानो।

छापणो–(क्रि०) १. छापना। अंकित करना। २. छापे की कल से मुद्रित करना। छापना। ३. काँटों की बाड़ बनाने के लिये झड़बेरी की शाखाओं की झुरमुट (पाहियों) को एक पर एक जमाना।

छापर(न०) १. मैदान। २. युद्धभूमि। रणक्षेत्र।

छापाखानो–(न०) वह स्थान जहाँ पुस्तकें अखबार आदि छापने का काम होता है। मुद्रणालय। प्रिंटिंग प्रेस। प्रेस।

छापो–(न०) १. समाचार-पत्र। अखबार। २. छापने की कल। मुद्रण-यंत्र। ३. छाप। ४. मुद्रा। मुहर। ५. साँचा। ठप्पा। ६. कुंकुम से वस्त्र पर लगाया हुआ हाथ का निशान। ७. किसी मुकदमे की सुनवाई की तारीख पर तलब के लिये दरवाजे पर चिपकाया हुआ नोटिस। ८. छापा। अचानक आक्रमण।

छाब–(ना०) १. छबड़ी। डलिया। २. छिछला पात्र।

छाबड़ी–(ना०) टोकरी। छबड़ी। ओडी।

छावळी–दे० छावळी।

छायल–(वि०) १. जो छाया हुआ है। २. प्रभावशाली। ३. सामर्थ्यवान। शक्तिमान। ४. महिमावान। ५. प्रभावित। दबा हुआ। ६. जिस पर छाया हो। छायावाला। ७. ढका हुआ। ८. आक्रमणकारी। ९. आक्रान्त। (ना०) १. एक वस्त्र। ओढ़ना। २. स्त्रियों की एक प्रकार की कुरती।

छाया–(ना०) १. छाँह। छींआ। २. परछाँई। प्रतिबिम्ब। ३. भूत-प्रेतादि का आवेश। ४. किसी चित्र की नकल। प्रतिकृति। ५. आश्रय। ६. असर। ७. आँखों के नीचे आने वाली श्यामता। छारी।

छार–(ना०) १. राख। भस्म। २. धूलि। रज। ३. क्षार। ४. नाश। नष्ट।

पर बैठ कर जलूस के साथ जाने की जाति विशेष की एक प्रथा ।
छिछई-(वि०) असती । कुलटा । छिनाळ ।
छिछळो-(वि०) १. कम गहरा । उथला । छिछला । २. तुच्छ ।
छिछोरापरण-(न०) ओछापन । क्षुद्रता ।
छिछोरो-(वि०) १. ओछा । क्षुद्र । तुच्छ । २. छोटा ।
छिटकणो-(क्रि०) १. छितराना । २. दूर होना । ३. बिछुड़ जाना । साथ छूटना । ४. हाथ से छूट जाना । ५. हाथ से निकल जाना । वश में नहीं रहना ।
छिटकाणो-(क्रि०) दे० छिटकावणो ।
छिटकावणो-(क्रि०) १. छितराना । २. दूर कर देना । ३. साथ छोड़ देना । ४. हाथ से छोड़ देना । ५. वश में नहीं रखना । हाथ से निकाल देना ।
छिटपुट-दे० छुटपुट ।
छिड़कणो-(क्रि०) पानी छांटना । छिड़कना । छांटणो ।
छिड़काई-(ना०) दे० छिड़काव ।
छिड़काव-(न०) पानी छिड़कने का काम । छड़काव ।
छिड़कावणो-(क्रि०) पानी छँटवाना । छिड़कवाना ।
छिड़को-दे० छिड़काव ।
छिड़णो-(क्रि०) आरंभ होना । शुरू होना । (युद्ध, झगड़ा, विवाद) आदि ।
छिण-(ना०) क्षण । खिण ।
छिणगारो-दे० छंदगारो ।
छिणगो-(न०) साफे का सिरा । छोगो ।
छित-(ना०) धरती । पृथ्वी । क्षिति । जमी ।
छितरणो-(क्रि०) बिखरना । फैलना ।
छितरुह-(न०) वृक्ष । क्षितिरुह ।
छिद्र-(न०) १. छेद । सुराख । ठोंडो । २. दोष । ऐब । ३. कलंक ।
छिन-दे० छिण ।
छिनाळ-(वि०) १. कुलटा । छिनाल । २. व्यभिचारिणी ।
छिनाळो-(न०) १. व्यभिचार । २. बदकारी । दुष्कर्म ।
छिन्न-(वि०) कटा हुआ । खंडित ।
छिन्न-भिन्न-(वि०) १. नष्ट-भ्रष्ट । २. तितर-बितर । ३. कटा हुआ ।
छिन्नू-(वि०) नब्बे और छः । (न०) छियानवे की संख्या । ६६ ।
छिपकली-(ना०) गरोली । छिपकली । बिस्तुइया । बिसूंदरी ।
छिपणो-(क्रि०) १. छिपना । २. अदृश्य होना ।
छिपलो-(न०) १. नटने या मुकरने का भाव । नटाई । २. मुँह छिपाने या उपस्थित नहीं होने का भाव । ३. दुराव । छिपाव ।
छिपा-(ना०) रात्रि । क्षपा । रात ।
छिपाणो-दे० छिपावणो ।
छिपाव-(न०) दुराव । छिपाव ।
छिपावणो-(क्रि०) छिपाना । अदृश्य करना । लुकाणो ।
छिब-(ना०) १. शोभा । २. तसवीर । छवि ।
छिबणो-(क्रि०) १. स्पर्श होना । २ छूना ।
छिलको-(न०) फल आदि के ऊपर का आवरण । छिलका । फोतो । फोतरको ।
छिलणो-(क्रि०) १. बहकना । २. ऊपर होकर बहना । उफलना । ३. पूरा भर जाना । उभरना । छिलना । ४. गर्व करना । ५.खरींच लगना । छिल जाना । ६. ऊरफना । ७. उन्मत्त होना ।
छिळ-(न०)१. फव्वारा । फुहारा । २. बूंद । छींटा । ३. फुहार । भींसी । ४. ऊपर उछती हुई तेज धारा ।
छिंदाळ-दे० छिनाळ ।
छिंदाळो-दे० छिनाळो ।

छीजणो-(क्रि०) १. क्षीण होना । मिटना । कम होना । २ दुखी होना । ३. कमजोर होना । अशक्त होना ।

छीजन-(ना०) १. किसी वस्तु के उपयोग में लाने में होने वाली कमी । क्षति । २. कमी का पड़जाना । क्षतिपूर्ति । ३. घाटा । हानि । ४.घटती । घटत । कमी ।

छीड़-(ना०) १. भीड़ का कम होना । भीड़ में कमी । भीड़ की छँटाई । मनुष्य समूह की कमी । २. मेले का बिखराव । ३. ३. 'भीड़' का विपरीतार्थक शब्द । 'भीड़' का उलटा ।

छीण-(वि०) क्षीण । दुर्बल । (ना०) छत को छाने की पत्थर की लंबी पट्टी । चीण ।

छीणी-(ना०) छेनी । टाँकी ।

छीतर-(ना०) १. छोटी पहाड़ी । २. पथरीली भूमि ।

छीतरी-(ना०) १. छोटे छोटे लहरदार बादल ।

छीतरी छाछ-(ना०) अधिक पानी मिली छाछ । बहुत पतली छाछ ।

छीनणो-(क्रि०) बलपूर्वक लेना । छीनना ।

छीनो-(वि०) दुखी । खिन्न ।

छीप-दे० सीप ।

छीपो-दे० छींपो ।

छीरप-(न०) छोटा बच्चा । धावणियो । खीरप ।

छीलण-(ना०) १. छीलने से निकले छोटे पतले छिलके या टुकड़े । छीलन । २. छीलन की क्रिया या भाव ।

छीलणो-(क्रि०) १. छीलना । छिलका या छाल दूर करना । छोलणो । २. काटना । ३. खुरचना ।

छीलर-(न०) १. छिछले पानी की तलैया । खावोचियो । २. रेजगारी । रेजगी ।

छीव-(वि०) मतवाला ।

छीं-(अव्य०) छींकने का शब्द ।

छींआ-दे० छींया ।

छींक-(ना०) वेग सहित नाक से निकलने वाली हवा का एक झटका । छिक्का ।

छींकणी-(ना०) सूंघने की तमाखू । सूंघनी नास । छींकनी । नाहफा ।

छींकणो–(क्रि०) छींक होना । छींकना ।

छींकली–(ना०) छींकलो हरिण की मादा । छींकली । हरिणी ।

छींकलो–(न०) एक जाति का हरिण जो प्राय: छींकता रहता है ।

छींकी–(ना०) ऊँट के मुँह पर बांधी जाने वाली एक जाली ।

छींको–(न०) १. छींका । सिकहर । सीका । २. ऊंट आदि पशुओं के मुँह पर बांधी जाने वाली जाली ।

छींट–(ना०) १. एक प्रकार का रंगा और छपा हुआ कपड़ा । बेल बूंटीदार रंगा हुआ कपड़ा । २. टुकड़ा । ३. बिखराव ।

छींटणो–(क्रि०) १. टट्टी जाना । हँगना । २. पतला दस्त लगना ।

छींपण–(ना०)१. छींपा की स्त्री । २. छीपा जाति की स्त्री ।

छींपो–(न०) १. वस्त्र रंगने व छापने वाली जाति का व्यक्ति । कपड़े पर बेल-बूटा छापने वाला ।

छींया–(ना०) छाया ।

छुआछूत–(ना०) १. अस्पृश्यता । २. अस्पृश्यता का सिद्धान्त या आचरण । ३. अमुक को छुआने न-छुआने का विचार ।

छुछम–(वि०) सूक्ष्म । थोड़ा । सुछम ।

छुआरो–(न०) छुहारा । खारिक । खारक ।

छुट-(वि०) छोटा ।

छुटकारो–(न०) १. किसी कार्य भार से मिलने वाली मुक्ति । २. मुक्ति । रिहाई । ३. अंत । छूटको ।

छुटपुट–(वि०) १. छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटा या फैला हुआ । २. छोटे-छोटे पैमाने पर होने वाला । ३. इक्का-दुक्का ।

छुटभाई–(न०) १. राजा या जागीरदार के वंश का वह अधीनस्थ व्यक्ति जो छोटी जागीरी को लेकर अलग हो गया हो । २. राजा या जागीरदार का वह वंशधर जिसे (आयु में छोटा होने अथवा अयोग्य होने आदि से) राज्य या जागीर की गद्दी नशीनी का परम्परागत अधिकार न मिल सका हो । ३. पद और मान मर्यादा में वंश का छोटा व्यक्ति । ४. छोटा भाई । अनुज ।

छुट्टी–(ना०) १. कार्यालय की ओर से नियत अवकाश दिन । तातील । २. अवकाश । ३. अनुमति । ४. छुटकारा । रिहाई । मुक्ति । ५. चलने या जाने की अनुमति ।

छुड़ाणो–(क्रि०) १. बंधन या उलझन से मुक्त कराना । छुड़वाना । छोड़ावणो । २. दूसरे के अधिकार से अलग करना । ३. किसी प्रवृति या अभ्यास से दूर कराना ।

छुड़वाणो–दे० छुड़ाणो ।

छुद्र–(वि०) १. क्षुद्र । नीच । २. कम । ओछा ।

छुधा–(ना०) क्षुधा । भूख ।

छुपणो–(क्रि०) १. छिपना । लुकना । २. लुप्त होना । छिपणो । लुकणो ।

छुपाणो–(क्रि०) छिपाना । छुपावणो ।

छुपावणो–दे० छुपाणो ।

छुरी–(ना०) चाकू । चक्कू । छरी ।

छुरो–(न०) १. छुरा । बड़ी छुरी । २. उस्तरा । पाछणो ।

छुळकणो–(क्रि०) रुक-रुक कर पिशाब करना । थोड़ा-थोड़ा मूतना ।

छुळकी–(ना०) १. थोड़ा-थोड़ा पिशाब करने की क्रिया । २. ऊंट द्वारा रुक-रुक कर पिशाब करने की क्रिया ।

छुलणो–(क्रि०) चमड़ी या छिलके का अपने अंग से छूट कर अलग होना । छिलना ।

छुवाणो–(क्रि०) छुआना । स्पर्श कराना । अड़ाना ।

छुहारो–(न०) खारक । खुरमा । छुहारा ।

छू-(अव्य) १. मंत्र पढ़ कर फूंक मारने का शब्द । २. गायब ।

छूट-(ना०) १. रिआयत । नरमी । २. कमीशन । ३. ऋण की माफी । ४. कृपा । ५. स्वतन्त्रता । ६. तलाक । ७. अनुमति । ८. रिहाई । छुटकारा । ९. कुशादगी । १०. तंगी, संकोच अथवा मनाई का अभाव ।

छूटक-(वि०) १. अलग-अलग २. फुटकर । खुदरा । ३. थोक-बंद नहीं ।

छूटको-(न०)१. मुक्ति । छुटकारा । रिहाई । २. लंबी बीमारी की तकलीफ का (मृत्यु हो जाने से मिलने वाला) छुटकारा । अंत । छुटकारो ।

छूटछाट-(ना०) १. रिआयत । नरमी । २. कमीशन, दलाली आदि के रूप मे दी जाने वाली माफी ।

छूटणो-(क्रि०) १. छूटना । मुक्त होना । २. हाथ में से किसी वस्तु का गिरना । ३. बंधन दूर होना । गाँठ का खुलना । ४. चिपकी हुई चीज का अलग होना । खुलना । ५. अलग होना । ६. बचना । त्राण पाना । ७. नौकरी से अलग हो जाना । ८. गोली, तीर आदि अस्त्रों का चलना । ९. शेष रहना । १०. इजाजत मिलना । ११. प्रसव होना ।

छूट पल्लो-दे० छूटा-छेड़ा ।

छूटा छेड़ा-(न०) कायदे के अनुसार पति पत्नी का संबंध त्याग । विवाह विच्छेद । तलाक ।

छूटो-(वि०)१. बंधन रहित । मुक्त । खुला । २. अलग । जुदा ।

छूणो-(क्रि०) १. छूना । स्पर्श करना । सटाना । २ स्पर्श होना ।

छूत-(ना०) १. रोग संचारक वस्तु का स्पर्श । छोत । २. संसर्ग । छूने का भाव । (वि०) संसर्ग से उत्पन्न ।

छूआछात-दे० छुआछूत ।

छूतीवाड़ो-(न०) १. अशौच । २. स्पर्श-दोष ।

छूमंतर-(न०) १. जादू । छूमंतर । २. जंत्र मंत्र का प्रयोग । ३. हाथ सफाई से वस्तु को गायब कर देने की क्रिया ।

छू होणो-(मुहा०) गायब होना । अदृश्य होना ।

छूं-(क्रि०) वर्तमान कालिक 'छै' (हिंदी 'है') क्रिया का उत्तम पुरुष एकवचन रूप । हूं । जैसे—म्हूं आयो छूं ।

छूंछ-(ना०) उमंग । उत्साह ।

छूंछो-(न०) फल का तंतु । फल के गूदे का निस्सार भाग । (वि०) १. निःसार । निःसत्व । २. खाली । रिक्त । ३. निर्धन ।

छूंतको-दे० छूंतरको ।

छूंतरको (न०) छिलका । फोतरको । फोतरो ।

छूंतरो-(न०) छिलका । फोतरको । फोतरो । फोती ।

छूंदो-(न०) किसी फल की कतलियाँ बना कर या कुचल कर चीनी की चाशनी में बनाया जाने वाला एक प्रकार का अचार । कचूमर । कचुंबर ।

छेक-(न०) १. चाकू या किसी शस्त्र की धार की रगड़ से बना घाव या दरार । चीरने का घाव । चीरा । चीरो । २. छेद । सुराख । ३.अंत । सीमा । ४.रद्द ।

छेकड़-(अव्य०)अंत में । आखिर में । (न०) दरार । सुराख ।

छेकड़ो-(न०) सुराख । दरार ।

छेकणो-(क्रि०)१. काटना । चीरा लगाना । २. लिखा हुआ ठीक नहीं है ऐसा समझने के लिये उसके ऊपर लकीरें खींचना । लिखे हुए को रद्द करना । ३. सुराख करना । छेदना । ४. छलांग मारना । ५. भागना ।

छेकलो–दे० छेकड़ो ।

छेकाछेक–(ना०) १. लिखे हुए को रद्द समझने के लिए उसके ऊपर खींची हुई लकीरें । काटा-कूटी । २. काटने कूटने का काम ।

छेकानुप्रास–(न०)एक अलंकार (साहित्य) ।

छेकियोड़ो–(वि०) लिखावट में काट-छाँट किया हुआ । लिखावट पर काट-छाँट की हुई । काटा हुआ । रद्द किया हुआ ।

छेको–(क्रि०वि०) शीघ्र । जल्दी । (न०) शीघ्रता । दे० छेक ।

छेकोक्ति–(ना०) साहित्य में एक अलंकार ।

छेटी–दे० छेनी ।

छेटै–(क्रि०वि०)दूर । दूरी पर । फासले से ।

छेटो–(क्रि०वि०) दूर । (न०) दूरी । अन्तर ।

छेड़–(ना०) १. छेड़छाड़ । छेड़ने का काम । २. रगड़ा । चाल । बदमाशी । ३. हँसी । दिल्लगी । मसकरी ।

छेड़खानी–(ना०) छेड़-छाड़ ।

छेड़छाड़–(ना०) किसी को तंग करने या चिढ़ाने की बात या क्रिया ।

छेड़णी–(ना०) दे० छेड़ या छेड़खानी ।

छेड़णो–(क्रि०) १. छेड़ना । तंग करना । २. चिढ़ाना । खिजाना । ३. किसी कार्य,

छेड़ा लेणो–(मुहा०) १. वृद्ध के मरने पर उसकी कीर्त्ति को स्त्रियों द्वारा रोने की राग में गाना । २. वृद्ध सम्बन्धी की मृत्यु पर सम्बन्धियों के द्वारा व्यंग्य या परिहास के रूप में शोक-गीत का गाना । साथा गाना । पल्ला लेणो ।

छेड़ियो–(न०) १. गले का वह आभूषण जिसके किनारों पर पोत (कीड़ों) या मोतियों के गुच्छे लगे हों । २. पोत या छोटे मोतियों का गुच्छा ।

छेड़ै–(क्रि०वि०) १. एक ओर । २. किनारे पर । छोर पर ।

छेड़ो–(न०)१ ओढ़नी या साड़ी का पल्ला । वस्त्र का छोर । २. घूंघट । ३. अंत । पार । समाप्ति । ४. किनारा । अंतिम भाग । ५. सीमा । हद । ६. एक ओर । ७. रुदन का एक प्रकार । ८. मृतक के पीछे स्त्रियों का रुदन । ९. वृद्ध मृतक के पीछे स्त्रियों द्वारा रुदन राग में गाया जाने वाला शोक-गीत ।

छेड़ो वाळणो–(मुहा०) मृतक के पीछे रोना । (स्त्रियों का)

छेणी–दे० छीणी ।

छेतरणा–(ना०) १. कपट । छल । २.

छेद-(न०) १. सुराख । छिद्र । फाको । २. विवर । बिल । ३. नाश । ४. दोष ।

छेदणो-(क्रि०) १. छेदना । छेद करना । २. नाश करना । मारना । ३. काटना । ४. घाव करना ।

छेदो-(न०) १. छल । कपट । २. धोखा ।

छेलछेलो-(वि०) सबसे अंतिम ।

छेलमछेलो-दे० छेलछेलो ।

छेलो-(वि०) अंतिम ।

छेवट-(न०) अंत । आखीर । सेवट । (अव्य०) अंततः । आखिरकार । आखिर में ।

छेवटी-(ना०) १. घोड़े की जीन । २. पलान । काठी । पलाण ।

छेवाड़ो-(न०) १. अंत । २. सीमा । ३. किनारा । छोर ।

छेह-(न०) १. दगा । विश्वासघात । २. अंत । समाप्ति । ३. किनारा । ४. थाह । गहराई । ५. हानि । ६. ओर । तरफ ।

छेहड़ळो-दे० छेहलो ।

छेहड़ै-(अव्य०) १. एक तरफ । २. किनारे पर ।

छेहड़ो-दे० छेड़ो ।

छेहलो (वि०) अंतिम । आखिरी । छेलो ।

छै-(क्रि०) वर्तमान कालिक क्रिया 'हुणो', 'होणो' अथवा 'होवणो' (हिंदी 'होना') का अन्य पुरुष में एक वचन और बहु वचन रूप 'है' तथा 'हैं' । जैसे—राम आयो छै । राम नैं लछमण आया छै ।

छैल-(न०) १. छैला । रंगीला पुरुष । २. पति । प्रीतम । ३. वह जिसका प्रपितामह (परदादा) जीवित हो । भँवर । (वि०) १. प्यारा । २. रंगीला । रसिक । छैला ।

छैलकड़ी-(ना०) कान के बीच में पहनी जाने वाली एक प्रकार की वाली ।

छैलकड़ो-(न०) पाँव में पहनने का सोने या चाँदी का एक प्रकार का कड़ा ।

छैलछबीलो-(वि०) १. शौकीन । रसिक । सजा-धजा ।

छैलण-दे० छैली ।

छैलभँवर-(न०) रसिक पुरुष । रंगीला व्यक्ति ।

छैली-(वि०) १. बनी-ठनी । सजीली । २. शौकीन । ३. नखराली । छैलण ।

छैलो-(वि०) १. बना-ठना । सजीला । शौकीन । २. प्यारा । ३. नखराबाज ।

छो-(भू०क्रि०)सत्तार्थक क्रिया 'हुवणो' होणो और होवणो के उत्तम, मध्यम और अन्य तीनों पुरुषों में संभाव्य (वर्तमान या भूत) काल के दोनों वचनों का रूप । हो । था । जैसे हूं आयो छो । थूं आयो छो । ३. वो आयो छो । (अव्य०)१. भले । अस्तु । भला । खैर । अच्छु । २. कोई बात नहीं । २. वाह । खूब ।

छोकणो-(क्रि०) १. मस्त होना । २. नशे में बेहोश होना । ३. तृप्त होना । छक जाना ।

छोकरड़ी-दे० छोकरी । (तिरस्कार शब्द)

छोकरड़ो-दे० छोकरो । (तिरस्कार शब्द)

छोकर बुद्धि-(वि०) बालक जैसी अल्प बुद्धि वाला । नासमझ । (ना०) १. नासमझी । लड़कपन ।

छोकर मत-दे० छोकर बुद्धि ।

छोकरवाद-(न०) लड़कपन ।

छोकरियो-दे० छोकरड़ो ।

छोकरी-(ना०) १. बच्ची । २. लड़की । कन्या । छोरी । ३. दासी ।

छोकरो-(न०)१. बालक । छोरो । बच्चा । २. पुत्र । ३. संतान ।

छोगाळो-(वि०) १. कलगी वाला । २. पगड़ी या साफे में फुंदने (तुर्रे) वाला । छोगे वाला । ३. शौकीन । रसिक । ४. वीर । बहादुर ।

छोगो–(न०)१. कलगी। २. पगड़ी या साफे में उठा हुआ तुर्रे के समान छोर। ३. साफा के पीछे की ओर लटकने वाला छोर। ४. तुर्रे के समान बना गोशवार। सिरपेच।

छोटक्यो–(वि०) छोटा। नैनो। (न०) छोटा पुत्र। छोटोड़ो।

छोटमन–(वि०) कंजूस।

छोटाई–(ना०) १. छोटापन। लघुता। २. क्षुद्रता। ओछापन। ३. नीचता।

छोटो–(वि०) १. जो अवस्था, कद, विस्तार पद और परिमाण आदि में कम हो। छोटा। नैनो। २. ओछा। क्षुद्र। ३. न्यून। कम। थोड़ा।

छोटो-मोटो–(वि०) १. साधारण। २. छोटा सा। ३. तुच्छ।

छोड–(ना०) १. भ्रूण के स्थान गर्भाशय में उत्पन्न होने वाला मांसपिंड। २. पौधा।

छोड़णो–(क्रि०) १. छोड़ना। मुक्त करना। २. अपराध क्षमा करना। माफ करना। ३. अपने अधिकार या प्रभुत्व को हटा लेना। ४. त्यागना। त्याग करना। ५. पद, कार्य अथवा अधिकार से अलग होना। ६. साथ न देना। पीछे रहने देना। ७. किसी कार्य को भूल वश न करना। भूल जाना। ८. अभियोग से मुक्त करना। ९. बंदूक की गोली या तीर को चलाना। १०. गिराना।

छोड़ाणो–दे० छुड़ाणो।

छोड़ावणो–दे० छुड़ाणो।

छोड़ो–दे० छोडो।

छोण–(न०) बछड़ा।

छोणी–(ना०) पृथ्वी। धरती। क्षोणि।

छोत–(ना०) १. संसर्ग दोष। २. अपवित्र। वस्तु को छूने का दोष। ३. अपवित्रता। ४. अस्पृश्य को छूने का अशौच। ५. अस्पृश्यता। ६. [illegible]

छोतरको–दे० छोती।

छोतरो–(न०) छिलका। फोती। फोतरो।

छोती–(न०) छिलका। फोती।

छोतो–(न०)१. घास। चारा। चार-छोतो। २. फूस। ३. तिनका।

छो-नी–(अव्य०)भले ही। भले। भलां ही।

छोर–(न०)१. किनारा। २. सिरा। नोक। ३. अंतिम सीमा।

छोरा-रोळ–(ना०)१. नासमझी। नादानी। मूर्खता। २. बच्चों का सा खेल।

छोरी–(ना०) १. लड़की। छोकरी। २. पुत्री। बेटी। ३. दासी।

छोरू–(न०) १. संतान। पुत्र, पुत्री आदि। २. पुत्र। ३. छोरा। बालक। ३. सेवक। (वि०) चिरंजीव।

छोरो–(न०)१. लड़का। बच्चा। छोकरो। २. पुत्र। बेटो।

छोल–(न०) १. छिलका। २. छाल। ३. चमड़ी। ४. छीलन। खरोंच। ५. छोडो।

छोळ–(ना०) १. लहर। तरंग। २. तेज लहर। लहर का झपट्टा। ३. प्रवाह का वेग। ४. अतिवेग से बरसने वाली वर्षा। ५. बौछार। ६. उदारता। ७. उमंग। मौज। ८. प्रसन्नता। आनंद। ९. हँसी। ठट्ठा। मजाक।

छोळणो–(क्रि०) १. छीलना। छिलका उतारना। २. खुरचना। ३. खरादना।

छोलदारी–(ना०) छोटा खेमा या तम्बू।

छोला–(न०) चना।

छोह–(न०) १. क्रोध। २. रोष। क्षोभ। ३. उत्साह। ४. जोश। ५. अनुग्रह। दया। ६. स्नेह। प्रेम। ७. वियोग।

छोंकर–(ना०) शमीवृक्ष। खेजड़ी। जांट।

छोंतरो–(न०)छिलका। छोतरो। फोतरो।

छोंती–दे० छोती।

छोडो–(न०) १. वृक्ष की छाल। २. छाल का टुकड़ा। ३. लकड़ी का छोटा टुकड़ा। कुल्हाड़ी या बँसोले से उतारा हुआ (काटा हुआ) लकड़ी का चपटा टुकड़ा।

छोळ–दे० छोळ।

छोळ-चोळ–(वि०) अत्यधिक। (ना०) १. अधिकता। २. मौज-मजा। ३. हँसी-मजाक। ४. प्रसन्न। खुश।

छोळीलो–(वि०) १. मौजी। लहरी। २. हँसोड़। मसखरा।

छ्यागट–दे० छागट।

छ्यागी–दे० छियागी।

ज

ज–संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु है।

ज–(अव्य०) १. जोर, प्रभाव, और निश्चय सूचक एक शब्द। ही। २. काव्य तथा गीतों में एक पाद पूरक अक्षर। (प्रत्य०) किसी शब्द के अंत में संयुक्त होने पर उत्पत्ति अर्थ का वाचक नर जाति प्रत्यय। जैसे—जल + ज = जलज। (सर्व०) १. जिस। २. उस।

जइ–(क्रि०वि०) १. यदा। जब। २. यहाँ। (अव्य०) यदि। जो। अगर।

जइयाँ–(सर्व०) १. जिसको। (क्रि०वि०) जहाँ।

जई–(क्रि०वि०)जब। (ना०) १. जौ। यव। २. छः राई का तौल। ३. लंबे डंडे में लगी लकड़ी की दो नोकों वाली कँटीली झाड़ी या घास आदि उठाने का कृषकों का एक उपकरण। येई। (वि०) जीतने वाला। जयी।

जईमैण–(न०) मयणजई। मदनजई। महादेव।

जक–(ना०)१. चैन। शांति। २. आराम। विश्राम।

जकड़–(ना०) १. बंधन। २. पकड़। ३. कस कर पकड़ने या बाँधने का भाव।

जकड़णो–(क्रि०) १. मजबूती से पकड़ना। २. मजबूती से बाँधना। कस कर बाँधना।

जकड़ी–(ना०) १. गीत, भजन, लावनी या ख्याल आदि के अंतरा के बीच में बदलने वाली राग या लय। २ लावनी। ३. एक छंद। ४. संगीत का एक ताल।

जकड़ीजणो–(क्रि०)१. बंधन में आना। फँस जाना। २ बँध जाना (बातचीत में)। ३. ठंड, चोट आदि लगने से शरीर का अकड़ जाना।

जकण–(सर्व०) जिस। **जिकण। जिके।**

जकणो–(क्रि०) १. नींद में बात करना। व्यर्थ बकना। ३. चौंकना। भौंचक्का होना। ४. चैन पड़ना। आराम मिलना।

जका–(सर्व०)१. स्त्री वाचक एक सर्वनाम। जो। २. सो। ३. वह। ४. उस।

जकात–(ना०) १. चुंगी। आयात कर। महसूल। २. खैरात।

जकात-माफी–(ना०) कर मुक्ति। महसूल माफी।

जकार–(न०) 'ज' वर्ण।

जकाँरै–(सर्व०)जिनके। **जिकाँरै। जिणाँरै।**

जकाँरो–(सर्व०) जिनका। **जिकाँरो। जिणाँरो।** (ना०) जकाँरी।

जकी–दे० जका।

जके-(सर्व०) १. एक बहुवचन संबंध सूचक सर्वनाम । जो । २. वे । ३. उन । ४. जिन ।
जको-(सर्व०) १. जो । २. सो । ३. उस । ४. वह ।
जकोई-(सर्व०) जिसका जिक्र या उल्लेख हुआ हो । पूर्वोक्त । वही । वह ही ।
जको ज-दे० जकोई ।
जको ही-दे० जकोई ।
जक्ख-(न०) यक्ष ।
जक्ष-(न०) यक्ष ।
जख-(न०) यक्ष ।
जख कादम-(न०) १. एक प्रकार का अंग-लेप, जिसका लेप यक्ष अपने अंगों पर करते हैं । यक्ष कर्दम । २. कपूर, कस्तूरी अगर, कंकोल इत्यादि सुगंधित पदार्थो से बनाया जाने वाला एक अंग लेप ।
जखणी-(ना०) यक्षिणी ।
जखणो-(क्रि०)१. व्यर्थ बकना । २. अविक बुखार में असंगत और व्यर्थ बकना ।
जखम-(न०) १. जख्म । घाव । क्षत । २. फोड़ा ।
जखमायल-(वि०) जख्मी । घायल ।
जखमी-(वि०) जख्मी । घायल ।
जखराज-(न०) यक्षराज । कुबेर ।
जखराट-(न०) कुबेर । यक्षराज ।
जखवै-(न०) यक्षपति । कुबेर ।
जखाधीस-(न०) यक्षाधीश । कुबेर ।
जखाँराज-(न०) कुबेर । यक्षराज ।
जखीरो-दे० जखेरो ।
जखेरो-(न०) १. ढेर । राशि । जखीरा । २. कोप ।
जखेस-(न०) १. महादेव । शंकर । यक्षेश । २. कुबेर । यक्षेश ।
जखेसर-दे० जखेस ।
जग-(न०) १. संसार । जगत । २. यज्ञ ।
जगकर्ता-(न०) जगत को रचने वाला । ईश्वर ।
जगचख-(न०) १. सूर्य । जगच्चक्षु ।
जगचावो-(वि०) जग प्रसिद्ध । विश्व-विख्यात ।
जग जणणी-(ना०)जगदंबा । जग जननी ।
जग जणियार-(न०) जगत्पिता ।
जग जाड-(ना०) जगत की जड़ता । अज्ञा-नता ।
जगजामी-(न०) जगत्पिता ।
जगजिवास-(न०) १. जगत का जीवन । २. परमेश्वर । ३. पवन । वायु ।
जगजेठ-(वि०) जगत में बड़ा । (न०) १. प्रख्यात वीर । २. ईश्वर । ३. संसार के बड़ों में से बड़ा ।
जगजेठी-दे० जगजेठ ।
जगजोत-(न०) १. सूर्य । जगज्योति । जगचख । २. ईश्वर ।
जगढाल-(न०) जगत का रक्षक ।
जगण-(न०)१. छंद शास्त्र में दो लघु और इनके बीच में एक गुरु ऐसे तीन अक्षरों का एक गण । २. यज्ञ । ३. अग्नि ।
जगणो-(क्रि०) जागना । जागणो ।
जगत-(न०) संसार । विश्व । दुनिया ।
जगतजेठ-दे० जगजेठ ।
जगतण-(ना०) वेश्या ।
जगतप्राण-(न०) १. पवन । वायु । २. ईश्वर ।
जगतसेठ-(न०) अत्यन्त धनी व दानी व्यक्ति को सरकार की ओर से दी जाने वाली एक उपाधि ।
जगतंवा-दे० जगदंबा ।
जगति-(ना०) द्वारिका नगरी ।
जगती-(ना०) १. संसार । २. पृथ्वी । ३. मंदिर का तल । सतह । आंगन । प्लिथ ।

जगत्र-(न०) १. जगत । संसार । २. जगत्रय । त्रिलोक । ३. यज्ञ । ४. यज्ञमंडप ।
जगदंबा-(ना०) १. जगज्जननी । जगत की माता । २. महामाया । ३. दुर्गा ।
जगदाधार-(न०) ईश्वर ।
जग-दिवलो-(न०) सूर्य ।
जगदीश-(न०) ईश्वर ।
जगदीश्वर-(न०) परमात्मा । परमेश्वर ।
जगदीश्वरी-(ना०) १. महामाया । जगदीश्वरी । २. दुर्गा ।
जगदीस-(न०) जगदीश । ईश्वर ।
जगदीसर-दे० जगदीस ।
जगदीसरी-(ना०) जगदीश्वरी । दुर्गा । महामाया ।
जगदुआळ-(न०) १. जगड्वाल । व्यर्थ का आडम्बर । २. माया । संसार का प्रपंच ।
जगधणी-दे० जगदीस ।
जगन-(न०) १. यज्ञ । २. महाभोज । ब्रह्मभोज । ३. बड़ा काम । कीर्ति काम ।
जगनाथ-(न०) १. जगन्नाथ । परमेश्वर । २. उड़ीसा की जगन्नाथपुरी का श्रीकृष्ण का अपूर्ण दारु-विग्रह । श्री जगन्नाथपुरी की श्रीकृष्ण (सुभद्रा और बलभद्र के साथ) की अर्धपूर्ण (असंपूर्ण) काष्ठमूर्ति । ३. चार दिशाओं के चार धामों में पूर्व दिशा का जगन्नाथ धाम । जगदीशपुरी ।
जगनाथी-(ना०) १. एक वस्त्र । २. एक जलपात्र ।
जगनामो-(न०) १. सत्कर्मों द्वारा संसार में रह जाने वाला अमर नाम । २. जगयश । जगकीर्ति । ३. जगप्रसिद्धि । विश्वख्याति ।
जगनैण-(न०) सूर्य ।
जगन्नाथ-दे० जगनाथ ।
जगपुड़-(न०) १. पृथ्वीतल । जगतीतल । २. पृथ्वी । जमीन ।
जगप्राण-दे० जगतप्राण ।
जगभाळण-(ना०) १. आँख । नेत्र । २. सूर्य ।
जगमग-(न०) प्रकाश । चमक । (वि०) प्रकाशमान । चमकीला ।
जगमगणो-(क्रि०) चमकना । जगमगना ।
जगमगाट-(ना०) चमक । जगमगाहट ।
जगमिण-(न०) जगद्मणि । सूर्य ।
जगमोहन-(न०) १. ईश्वर । २. देवमंदिर में गर्भगृह के सामने का स्थान ।
जगर-(न०) १. कवच । २. अधिकार । वश ।
जगरै आवणो-(मुहा०) घोड़ी का ऋतु में आना । घोड़ी को कामेच्छा होना । जाग में आणो ।
जगरो-(न०) १. शीघ्र जल उठने वाली पतली टहनियों और घास आदि की छोटी राशि । शीत मिटाने के उद्देश्य से जलाने के निमित्त इस प्रकार का इकट्ठा किया हुआ कचरा । तृणपुंज । २. घोड़ी का ऋतु समय । घोड़ी की कामेच्छा । जाग ।
जगवंद-(न०) १. जगवंदनीय । २. परमात्मा ।
जगवंदण-दे० जगवंद ।
जगवासग-(न०) १. जगत को बसाने वाला व पोषण करने वाला ईश्वर । २. जो जगत में व्यापक है वह । ३. जिसके अंदर जगत बसा हुआ है वह । परमात्मा । परब्रह्म ।
जगवै-(न०) जगपति । ईश्वर ।
जगसाखी-(न०) सूर्य । जगत्साक्षी ।
जगहथ-(न०) समस्त जगत को विजय कर अपने हाथ (अधिकार) में करने का काम । जगद्विजय । दिग्विजय ।
जगा-(ना०) १. स्थान । स्थल । जगह । २. खाली स्थान । ३. मकान । ४. नौकरी । ५. पद । ओहदा ।

जगाजोत–(ना०) १. अनेक दीपकों का प्रकाश । जगमगाहट । २. अनेक दीपक । दीपक माल ।

जगाणो–(क्रि०) १. जगाना । नींद छुड़ाना । २. प्रज्वलित करना । ३. सावधान करना ।

जगात–दे० जकात ।

जगाती–(वि०) जकात वसूल करने वाला । (न०) जकात वसूल करने वाला व्यक्ति ।

जगावणो–दे० जगाणो ।

जगीस–(न०) १. युद्ध । २. बड़ा यज्ञ । ३. जगदीश । (ना०) १. इच्छा । अभिलाषा । २. कीर्ति । यश ।

जग्गार -दे० जागर ।

जग्य–(न०) यज्ञ ।

जग्योपवीत–(न०) यज्ञोपवीत । जनेऊ । जनोई ।

जचणो–(क्रि०) १ उचित लगना । हृदय में जमना । जँचना । २. स्वीकार होना । ३. स्थिर होना । कायम होना । ४. फबना । सुंदर लगना । ५. किसी वस्तु का अन्य वस्तु से मेल खाना ।

जचाणो–दे० जचावणो ।

जचावणो–(क्रि०) १. जँचवाना । जाँच करवाना । २. तोल करवाना । ३. परीक्षा करवाना । ४. किसी वस्तु का किसी अन्य वस्तु से मेल बिठवाना । ५. प्रतीति करवाना । ६. यथावत् मनाना ।

जच्चा–(ना०) प्रसूता स्त्री ।

जच्चा राणी–(ना०) १. पुत्र प्रसूता का महिमामय नाम । २. पुत्र प्रसव के समय गाया जाने वाला एक लोकगीत । ३. जच्चा ।

जच्छ–(न०) यक्ष ।

जज–(न०) उच्च या उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश ।

जजण–(न०) १. यजन । यज्ञ । २. यागकरण । ३. पूजन । ४. यज्ञ करने का स्थान ।

जजमान–(न०) १. यज्ञकर्त्ता । २. यज्ञानुष्ठान में दीक्षित । यजमान । ३. व्रती । ४. दक्षिणा (पारिश्रमिक) देकर ब्राह्मण से धार्मिक क्रिया कराने वाला । ५. ब्राह्मण को दान देने वाला ।

जजमानी–(ना०) १. यजमान वृत्ति । पुरोहिती । २. किसी ब्राह्मण की किसी घर, जाति या गाँव की विवाह आदि कार्य सम्पन्न कराने की निश्चित की हुई वृत्ति । विरत ।

जजर–(न०) १. यमराज । २. एक शस्त्र । ३. वज्र । ४ झनकार । (वि०) १. जर्जरित । जीर्ण । २. बुड्ढा । वृद्ध । ३. शिथिल । ४. क्षतविक्षत ।

जजरंग–(न०) १. यमराज । २. सिंह । ३. वज्र ।

जजराग–(न०) १. वज्र । २. वज्राग्नि । ३. यम । काल । ४. सिंह । ५. तोप ।

जजराट–(न०) यमराज ।

जजायळ–(ना०) ऊंट पर कस कर चलाई जाने वाली लंबी बंदूक । शुतुरनाल ।

जजायळची–(न०) जजायळ बंदूक छोड़ने वाला उष्ट्रारोही । शुतुरनाल को चलाने वाला ।

जजियो–(न०) १. 'ज' वर्ण । २. एक कर जो मुसलमानी शासन काल में प्रत्येक हिन्दू से लिया जाता था । जजिया । जेजियो ।

जजेसर–(न०) दे० जखेसर ।

जज्जो–(न०) 'ज' वर्ण । जकार ।

जज्र–(न०) १. यमराज । २. वज्र । ३. तोप ।

जज्रमाथ–(न०) १. यमराज । जम । २. बड़ी तोप ।

जज्राट–(न०) यमराज । जमराज ।

जट–(ना०) १. ऊंट व बकरी के बाल। ऊंट या बकरी के काटे हुए बाल। २. जटा।

जटधर–(न०) महादेव।

जटवाड़–(ना०) १. जाटों का मोहल्ला। जाटों की बस्ती। २. जाट समूह। ३. जाटों की सेना।

जटा–(ना०) १. सिर के बड़े बाल। २. बड़, पीपल आदि वृक्षों की जड़ के समान लटकती हुई शाखाओं के सिरों पर का महीन गुच्छा। ३. नारियल के ऊपर का तंतु-समूह। नारियल के ऊपर जमा हुआ रेशा।

जटाजूट–(न०) १. बहुत बड़ी जटा। २. जटा का बँधा हुआ बहुत बड़ा जूड़ा।

जटाधर–(न०) महादेव। शिव।

जटाधारी–(वि०) सिर पर जटा रखने वाला। (न०) १. योगी। तपस्वी। २. शिव। महादेव।

जटाय–(न०) जटायु।

जटायु–(न०) रामायण में वर्णित एक प्रसिद्ध गिद्ध।

जटाळ–(न०) महादेव।

जटाळो–(न०) १. बड़ी जटा वाला साधु। २. महादेव। (वि०) जटावाला।

जटाशंकरी–(ना०) गंगा। भागीरथी।

जटियो–(न०) चमड़ा साफ करने व रंगने वाली जाति का व्यक्ति।

जटियो-कुंभार–(न०) कुम्हार जाति का व्यक्ति जो जट बुनने का काम करता है।

जटियो-मेघवाळ–(न०) चमड़े को साफ करने या रंगने वाली एक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

जटीधू–(न०) धूर्जटि। महादेव। धूजटी।

जटेत–(वि०) १. युद्ध करने वाला। लड़ाकू। (न०) १. शिव। महादेव। २. सिंह।

[illegible]–(न०) १. पेट। उदर। २. पेट का भीतरी भाग।

जठा–(क्रि०वि०) जिधर। जहाँ।

जठा ताँई–दे० जठालग।

जठा ताणी–दे० जठालग।

जठातीरै–दे० जठापछै।

जठापछै–(क्रि०वि०) जिसके बाद। तत्पश्चात्।

जठामहोर–(क्रि०वि०) १. जिसके पहिले। २. इसके पूर्व।

जठालग–(क्रि०वि०) जहाँ तक।

जठी–(क्रि०वि०) जिधर। जहाँ।

जठै–(क्रि०वि०) जहाँ। जिधर।

जड़–(वि०) १. अचेतन। चेतना रहित। २. मूर्ख। (न०) १. वृक्ष लता आदि का वह भाग जो भूमि में रहता है। जड़। मूल। २. नींव। ३. आधार। आश्रय। ४. कारण। ५. स्रोत।

जड–(न०) नाई। हज्जाम। (संकेत शब्द)।

जड़णो–(क्रि०) १. जड़ाई करना। आभूषणों के खानों या कोठों में रत्न को कुंदन की गोट लगा कर बिठाना। २. मारना। पीटना। ३. दृढ़ करना। ४. ताला लगाना। ५ बंद करना। ६. स्थिर करना। ७. अकड़ना। ८. मिलना। प्राप्त होना। ९. एक वस्तु में दूसरी वस्तु बिठाना। १०. जूते मारना।

जड़त–(ना०) कुंदन की गोट लगा कर किया जाने वाला आभूषणों में रत्नों की जड़ाई का काम। जड़ाई। (वि०) जिसमें जड़ाई हुई हो।

जड़तर–दे० जड़त।

जड़धर–(ना०) कटारी।

जड़वातोड़–(वि०) मुँहतोड़। सचोट।

जड़वो–(न०) मुँह के ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें दाँत लगे रहते हैं। जबड़ा। जवाड़ो।

जड़मूळ–दे० जड़ामूळ।

जड़लग–(न०) १. तलवार। २. कटार।

जड़ाई–(ना०) १. जड़ने का काम। २. जड़ने की मजदूरी। ३. जड़त का काम। जड़त।

जड़ाऊ–(वि०) वह जेवर आदि जिसमें नग (रत्न) जड़े हों। जड़ाव वाला। जड़ा हुआ। जड़तवाला।

जड़ाग–(न०) १. रत्न। मणि। २. आभूषण। ३. पुत्र। ४. घोड़ा। ५. युद्ध। (वि०) १. महाबलशाली वीर। २. श्रेष्ठ।

जड़ाणो–(क्रि०) १. आभूषणों में रत्नों की जड़ाई करवाना। २. खिड़की या किंवाड़ बंद करवाना। ३.ताला लगवाना। ४. प्रहार करने के लिये उकसाना। ५. प्राप्त करवाना। ६. तलाश करवाना। ६. जूते मरवाना या लगवाना। ८.पिटाई करवाना। पिटाना।

जड़ामूळ–(न०) १. मूल का मुख्य साधन। जड़मूल। २.मुख्य मूल। ३.मुख्य आश्रय। ४. समस्त साधन। ५. आदि। शुरू। प्रारंभ। ६. वंश। ७. वंश परम्परा।

जड़ायुज–(न०) घोड़ा।

जड़ाळ–(ना०) कटारी।

जड़ाली–(ना०) कटारी।

जड़ाव–(वि०) रत्न जड़ित। (न०) १. मणि-माणिक्य। २. जड़ाई का काम।

जड़ावणो–दे० जड़ाणो।

जड़ियो–(न०) जड़ाई का काम करने वाला। आभूषणों में रत्नों को जड़ने वाला। २. जड़ाई का काम करने वाली जाति का व्यक्ति। जड़िया।

जड़ी–(ना०) १. जड़ी-बूंटी। वनौषधि। २. औषधि के रूप में काम आने वाली वनस्पति की जड़। ३. बहुत पतली मूली।

जड़ीबूंटी–(ना०) वनौषधि।

जड़ लिया–दे० झड़ूलिया।

जड़ूलियो–दे० झड़ूलियो।

जड़ो–(वि०) १. जड़वत। मूर्ख। २. असभ्य। अशिष्ट। ३. अशिक्षित। ४. बैल, ऊंट आदि वह पशु जिसको सवारी की चाल नहीं सिखाई गई हो। बिना ढंग की चाल वाला। अफेरियो।

जण–(न०) १. व्यक्ति। जन। पुरुष। जणो। २. जन। लोक। ३. भक्त। ४. सज्जन। ५. लोक। समूह। (सर्व०) जिसने। जिस।

जणण–(न०) १. उत्पत्ति। जन्म। २. संतान। ३. प्रसव।

जणणी–(ना०) माता। जननी।

जणणो–(क्रि०) बच्चे को जन्म देना। जनना।

जणनै–दे० जिणनै।

जणसूं–दे० जिणसूं।

जणाणो–दे० जणावणो।

जणा दीठ–(अव्य०)१. प्रति व्यक्ति। व्यक्ति वार।

जणारजण–(न०) जनार्दन। विष्णु।

जणाव–(न०) जानकारी।

जणावणो–(क्रि०) १. जानने को प्रेरित करना। जतलाना। बताना। २. प्रसव कार्य करना। जनमाना। ३. प्रगट करना।

जणां–(क्रि०वि०) जब। जिस समय। जरां। जदै। जद। (न०ब०व०) जन समूह। (अव्य०) जनों ने। लोगों ने।

जणियारी–(ना०) जन्मदातृ। माता।

जणियो–(न०) पुत्र। (क्रि०भू०) जन्म दिया जन्मा।

जणी–(ना०) १. स्त्री। नारी। जनी। व्यक्ति। २. माता। ३. पुत्री। (सर्व०) १. जिस। २. उस। (क्रि०वि०) जब।

जणीकै दीठ–(अव्य०) १. एक व्यक्ति को। २. एक एक व्यक्ति को। प्रत्येक व्यक्ति को। प्रतिव्यक्ति। ३. व्यक्ति की दृष्टि से।

जणीकै वार–दे० जणीकै-दीठ।

जणीको-(सर्व०) १. उस । २. उसका । (न०) पिता । बाप । (अव्य०) एक व्यक्ति । कोई व्यक्ति ।

जणीको-जणीको-(सर्व०) १. जिस-जिस । २. उस-उस । (अव्य०) १. एक एक व्यक्ति । २. प्रत्येक व्यक्ति ।

जणीती-(ना०) माता । जनीता । जनीती ।

जणीतो-(न०) पिता । जनक । बाप ।

जणीरो-(सर्व०) उसका । उणरो ।

जणेता-दे० जणीता ।

जणै-(क्रि०वि०) जब । जिस समय । जद । जरै ।

जणो-(न०) १. व्यक्ति । पुरुष । जन । जण । २. पिता ।

जत-(ना०) १. जन्म । २. ब्रह्मचर्य । ३. प्रतिष्ठा । ४.जती । ५.यति । ६.यतिधर्म । ७.एक मुसलमान जाति । (वि०) जितना ।

जतधार-(न०) हनुमान ।

जतन-(न०) १. रक्षण । २. यत्न । ३. प्रबंध । व्यवस्था । ४. उपाय । ५. नजर न लगने के लिये किया जाने वाला टोटका । ६. लाड़कोड । लाड़चाव । लाड़ करने का उत्साह । ७. प्रमाण । ८. सत्कार । ९. प्रतिष्ठा ।

जतनाँ-(अव्य०) १. लिये । निमित्त । २. सम्हाल करके । ३. लाड़कोड से ।

जतरै-(क्रि०वि०) १. जब तक । २. जितने में ।

जतरो-(वि०) जितना । जितरो । जित्तो ।

जताणो-(क्रि०) १. सूचित करना । चेताना । २ प्रभाव दिखाना । ३. प्रभाव होना । ४. ज्ञात करवाना । बतलाना ।

जताव-(न०) १. जताने का काम । २. प्रभाव । असर । ३. जानकारी ।

जतावणो-दे० जताणो ।

जतावो-दे० जताव ।

जती-(न०) १. यति । २. ब्रह्मचारी । ३. परमपद प्राप्त करने के लिये यत्न करने वाला संन्यासी । ४. श्री पूज-शिष्य जैन साधु ।

जत्थो-दे० जथ्थो ।

जत्र-(क्रि०वि०) जहाँ । जहाँ पर ।

जथा (ना०) १. एक अलंकार । २. डिंगल गीत रचना का एक नियम । (अव्य०) जैसे । यथा । जिस प्रकार कि । उदाहरण स्वरूप । (वि०) जैसा । जिस प्रकार का ।

जथा कारतत्र-(अव्य०) कर्त्तव्य के अनुसार । यथा कर्त्तव्य ।

जथा क्रम-(अव्य०) १. क्रम के अनुसार । यथा क्रम । २. कर्म के अनुसार । यथा कर्म ।

जथा जात-(वि०) मूर्ख । यथा जाति ।

जथा जोग-(अव्य०) १. जैसा जिस योग्य । उपयुक्त । २. जो जिस योग्य । यथा-योग्य ।

जथा तथ-(अव्य०) यथा तथ्य । ज्यों का त्यों ।

जथाबंदी-दे० जथ्थाबंदी ।

जथाबंध-दे० जथ्था बंध ।

जथामती-(अव्य०) यथामति । समझ के अनुसार ।

जथारथ-(वि०) १. यथार्थ । २. ठीक । उचित । योग्य । (अव्य०) जैसा उचित हो ।

जथारीत-(अव्य०) चालू रीति के अनुसार । यथा रीति ।

जथा रुचि-(अव्य०) इच्छानुसार । यथा-रुचि ।

जथावत-(अव्य०) जैसा था वैसा ही । यथावत ।

जथाविध-(अव्य०) विधिपूर्वक । यथाविधि ।

जथाशक्ति-(अव्य०) शक्ति के अनुसार । यथाशक्ति ।

जथा सकती-दे० जथा शक्ति ।

जथा सगत-दे० यथा शक्ति ।

जथास्थान–*(अव्य०)* ठीक स्थान पर। यथा-स्थान।

जथो–*(न०)* १.समूह। झुंड। यूथ। जत्था। २. राशि। ढेर। ३ पक्ष। सहायकों या सवर्गों का दल। ४. साथियों या मित्रों का दल। ५. पूंजी। धन।

जथोचित–*(अव्य०)* जैसा या जितना उचित हो। यथोचित।

जथ्थावंदी–*(ना०)* दलवंदी।

जथ्थावंध–*(अव्य०)* १. छूटक नहीं किंतु बड़ी राशि के रूप में। *(न०)* १. बड़ा जत्था। बड़ी राशि। २. क्रय-विक्रय की थोक वस्तु।

जथ्थो–दे० जथो।

जद–*(क्रि०वि०)* जिस समय। जब। जरां। जरै।

जदन–*(अव्य०)* उस दिन।

जदपि–*(अव्य)* यदि ऐसा है ही। यद्यपि। अगरचे।

जदि–*(अव्य०)* जो। यदि। अगर।

जदी–दे० जद।

जदुकुळ–*(न०)* यदुकुल। यदुवंश।

जदुनंदण–*(न०)* यदुनंदन। श्रीकृष्ण।

जदुराज–*(न०)* यदुराज। श्रीकृष्ण।

जदुवंसी–*(न०)* यदुवंशी।

जदूणो–*(वि०)* उस समय का। जब का। *(क्रि० वि०)* उस समय से। तब से। (स्त्री० जदूणी)

जदे–दे० जद।

जन–*(न०)* एक वचन समास रूप में प्रयुक्त, जैसे—वैष्णवजन। प्रजाजन इत्यादि। दे० जण *(न०)*।

जनक–*(न०)* १. भगवान राम के ससुर विदेह जनक। भगवती सीता के पिता। मिथिलापुरी के महाराज जनक। २.पिता।

जनकजा–*(ना०)* सीता। जानकी।

जनकंपुरी–*(ना०)* महाराज जनक की नगरी।

जनखो–*(न०)* हिजड़ा। जनखा। हींजड़ो।

जनता–*(ना०)* १. प्रजा। २. सर्वसाधारण लोग।

जननी–दे० जणणी।

जनपद–*(न०)* १. भूमि, भूमि पर बसने वाले जन और जन की प्रादेशिक जीवन के रूप में विकसित संस्कृति—प्राचीन काल के इन तीन तत्वों की एक भौगोलिक तथा राजनैतिक इकाई। गणराज्य। २. बस्ती। आबादी।

जनम–*(न०)*१. जन्म। उत्पत्ति। २.जीवन। जिंदगी।

जनम आठम–*(ना०)* जन्माष्टमी। भादों कृ० ८। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी।

जनम कुंडळी–*(ना०)* जन्म समय के ग्रह-योगों की काल गणना के अनुसार बनाया जाने वाला बारह राशियों का कोठा। दे० जन्म कुंडली।

जनम गाँठ–*(ना०)* १. साल गिरह। वर्ष गाँठ। जन्म दिन। २. जन्म दिन का उत्सव। **बरस गांठ**।

जनम घूंटी–*(ना०)* जन्मघुट्टी।

जनमणो–*(क्रि०)* जन्म लेना।

जनम दिन–*(न०)* जन्म तिथि। जन्म दिन। **बरस गांठ**।

जनमपत्री–दे० जन्म पत्री।

जनम भोम–*(ना०)* १. जन्मभूमि। २. मातृभूमि। मातभोम।

जनम-मरण–*(न०)* जन्मना और मरना जन्म-मरण।

जनम हारणो–*(मुहा०)* जन्म को व्यर्थ खोना। जीवन व्यर्थ गँवाना।

जनमाठम–दे० जनम आठम।

जनमारो–दे० जमारो।

जनमांतर–*(न०)* जन्मान्तर। दूसरा जन्म।

जनमोजनम–*(अव्य०)* जन्म-जन्म में। २. प्रति जन्म।

जनाणी (ना०) [illegible] महीना । [illegible] ।

जनमासो–दे० जनीवासो ।

जनम दे० जन्म ।

जनाजो (ना०) मुसलमानों में मुर्दे को कब्र में गाड़ने को ले जाने की अर्थी । मुरदे की अरथी । अरथी । टिकटी । सीढ़ी ।

जनाडी (ना०) बहुत कम मूल्य के एक पुराने सिक्के का नाम ।

जनानखानो-(न०) अंतःपुर । रनिवास । रणवास ।

जनानी ड्योढ़ी (ना०) रनिवास । अंतःपुर । जनानखाना ।

जनानो-(न०) १. पर्दे में रहने वाला स्त्री समुदाय । हरम । अंतःपुर । २ स्त्री । औरत । ३. पत्नी । जोरू । ४. नामर्द । नपुंसक ।

जनाब-(न०) श्रीमान् । महाशय ।

जनारजन-(न०) १. जनार्दन । विष्णु । २. श्रीकृष्ण ।

जनार्दन-(न०) १. विष्णु । २. श्रीकृष्ण ।

जनावर-(न०) १. जानवर । पशु । जिनावर । २. गदहा । ३. जीवधारी । प्राणी । (वि०) मूर्ख ।

जनाँ हंदा-(वि०) जिनका ।

जनि-(अव्य०) नहीं । मत ।

जनेऊ-दे० जनोई ।

जनेत-(ना०) जनेता । (न०) बराती ।

जनेता-(न०) माता । जनित्रि । जनीता । जणीती ।

जनेती-(न०) बराती । जानियो ।

जनेव-(ना०) १. तलवार । २. तलवार का वह प्रहार जो कंधे पर पड़ कर तिरछे बल कमर तक काट करे । जनेऊ की तरह तिरछा प्रहार । जनेवा ।

जनोई-(ना०) १. यज्ञोपवीत । जनेऊ । २. जामे के ऊपर पहनने की एक प्रकार की [illegible] । [illegible] । २. [illegible] की [illegible] ।

जनोईवढ़ (ना०) तलवार का ऐसा प्रहार जो गले को जनेऊ की तरह टेढ़ा काट दे । जनेव । [illegible] । [illegible] ।

जन्नत (ना०) स्वर्ग ।

जन्म दे० जनम ।

जन्मकुंडली-(ना०) जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति की ज्योतिष के अनुसार बनाई हुई सारिणी । दे० जनम कुंडली ।

जन्मपत्री (ना०) वह पत्रिका जिसमें किसी के जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति, दशायें और अंतर्दशायें इत्यादि लिखी हुई रहती है । जन्म के बाद उत्तरोत्तर (भविष्य में) बनने वाले बनावों तथा लाभ-हानि को बताने वाली जन्मकुंडली के आधार से (ज्योतिषी के द्वारा) बनाई हुई पत्रिका । जन्मपत्रिका ।

जन्मभूमि-(ना०) किसी के जन्म या देश का स्थान । जहां जन्म हुआ है वह देश या स्थान । मातृभूमि ।

जन्माष्टमी-दे० जनमआठम ।

जन्मांध-(वि०) जो जन्म से अंधा हो । अखम ।

जप-(न०) किसी नाम या मंत्र का रटना । एक ही नाम को बार बार दोहराते रहने की क्रिया । रटन । जाप ।

जपजाप-दे० जप ।

जपणी-(ना०) १. जपमाला । माला । २. गोमुखी ।

जपणो-(क्रि०)१. जप करना । जपना । २. कहना । ३. बोलना । उच्चारण करना । ४ शांत होना । बकवाद बंद करना ।

जपत-(दे०) जब्त ।

जप-तप-(न०) जप और तप । तपस्या और ईश्वर के नाम का जपन ।

जपती-(ना०) १. जब्ती । २. कुर्की ।

जपमाळा–(ना०) मंत्रजाप गिनने की माला । जप करने या गिनने की माला । नाळा । सुमिरनी । तसबीह । सुमरणी ।
जपियो–(वि०) १. जप करने वाला । (न०) दक्षिणा या पारिश्रमिक लेकर यजमान के कल्याणार्थ किसी मंत्र का जप करने वाला । २. ब्राह्मण ।
जवक–(ना०) प्रहार । चोट । जरक ।
जवर–(वि०) १. जवरदस्त । २. साहसी । ३. पक्का । दृढ़ ।
जवरजस्त–दे० जवरो ।
जवरजस्ती–(ना०) जवरदस्ती । वलात्कार । ज्यादती । (क्रिoवि०) वलपूर्वक । वलात् ।
जवरजंग–दे० जवरो ।
जवरदस्त–दे० जवरो ।
जवरदस्ती–दे० जवरदस्ती ।
जवराई–(ना०)१. जवरदस्ती । २. ज्यादती । ३. वल प्रयोग । ४. अत्याचार ।
जवरायल–(वि०) जवरदस्त । पराक्रमी ।
जवरी–(ना०) १. अनूठापन । विलक्षणता । २. खूवी । ३. ज्यादती । अधिकता । ४. अत्याचार । ५. जवरदस्ती । (वि०) १. वलवती । २. भयावनी । ३. वड़ी । प्रचंडिका । ४. चालाक । ५. जवरदस्त । (क्रि०वि०) जवरदस्ती से ।
जवरेळ–(वि०) जवरदस्त । पराक्रमी ।
जवरो–(वि०) १. जवरदस्त । २. वलवान । ३. होशियार । ४. चालाक । ५. वड़ा । प्रचंड । ६. भयावना । ७. दृढ़ । मजवूत । ८. अच्छा । खूव ।
जवाड़ो–(न०) जवाड़ा । जवड़ा । चौहड़ ।
जवाद–(ना०) कस्तूरी ।
जवादि-जळहर–(न०) १. जलक्रीड़ा का केशर, कस्तूरी आदि से सुरभित जलाशय । २. ऐसे जल से किया जाने वाला स्नान । ३. सुरभित जलागार में की जाने वाली जलक्रीड़ा । स्नानक्रीड़ा ।
जवान–(ना०) १. जीभ । जिह्वा । २. वोली । ३. वचन । प्रतिज्ञा । ४. भाषा ।
जवानी–(वि०) १. कंठस्थ । कंठाग्र । २. मौखिक । ३. जो कहा गया हो पर लिखित न हो ।
जवाव–(न०) १. उत्तर । जवाव । २. मुकावला । सामना । ३. वदला । प्रतिकार ।
जवावदार–(वि०) १. जिम्मेदार । २.जवाव देने वाला ।
जवावदारी–(ना०) जिम्मेदारी । उत्तरदायित्व ।
जवावदावो–(न०) मुदायले की ओर से मुद्दई के अर्जी दावे का अदालत में दिया जाने वाला जवाव ।
जवाव-सवाल–(न०) १. विवाद । २. सवाल और जवाव । प्रश्नोत्तर । ३. काम काज की दी जाने वाली जवानी विगत । जवानी दिया जाने वाला । वृत्तान्त । रिपोर्ट ।
जवावो–(वि०) १. जिसका जवाव मांगा गया हो । २. जिसके जवाव के पैसे भर दिये हों । ३. जवाव में प्राप्त (जवावी हमला आदि) ।
जव्त–(न०)१. कावू । २. नियन्त्रण । (वि०) जव्त किया हुआ ।
जम–(न०) १. यम । यमराज । २. ऊंट । दे० यम ।
जम-उच्छव–(न०) यमद्वितीया का उत्सव ।
जमक–(ना०) एक शब्दालंकार जिसमें एक शब्द उसी रूप और उसी क्रम से अलग-अलग अर्थों के साथ पुनः पुनः आता है । यमक अलंकार ।
जम-कातर–(ना०) १. यम की कैंची । यम का एक शस्त्र । २. मृत्यु ।
जमघट–(न०)जनसमूह । भीड़ । जमावड़ो ।
जमजाळ–(न०) १. यमपाश । २. यमायातना । ३. एक छोटी तोप । (वि०) यमराज के समान जाज्वल्यमान ।
जमडाढ–(ना०) १. तलवार । २. कटार । ३. यमदंष्ट्रा । ४. मृत्यु ।

जगीरण (ना०) १. जागीरी। २. सेवा। ३. अधिकार। कब्जा। दे० जगीयण।

जमों (ना०) किसी पीर देवता के निमित्त भजन कीर्तन करने को किया जाने वाला सामूहिक रात्रि जागरण। रात्रि जागरण के लिये जमा होना। रात्रि-जागरण का समाज।

जय-(ना०) १. जीत। विजय। २. देवता, गुरु या राजा आदि के अभिवादन स्वरूप उनके नाम के साथ किया जाने वाला घोष शब्द। जैसे 'सियावर रामचन्द्र री जय'। ३. परस्पर अभिवादन के समय किसी देवता के नाम के साथ कहा जाने वाला शब्द। जैसे-'जय रामजी री सा'। 'जय माताजी री सा' इत्यादि।

जय गोपालजी री (पद०) एक अभिवादन अव्यय तथा पद।

जय जयकार-दे० जै जै कार।

जय जयवंती-(ना०) एक रागिनी।

जय जंगळधर-(पद०) बीकानेर के राठौड़ राजाओं की उपाधि या विरुद। २. बीकानेर राज्य का मुद्रा लेख।

जयजीव-(न०) 'जय हो' और 'दीर्घायु हो' इस अर्थ का अभिवादन।

जयणा-(ना०) यत्न। सम्हाल। जतन।

जयतखंभ-दे० जैतखंभ।

जयति-(अव्य०) जय हो।

जयपुर-(न०) राजस्थान की राजधानी के शहर का नाम। जयपुर नगर। महाराजा जयसिंह द्वारा बसाया हुआ भारत का सुन्दरतम नगर।

जय मंगळ-(न०) १. राजा के बैठने के हाथी। २. श्रेष्ठ हाथी। ३. एक विशेष घोड़ा।

जय माताजी री-(अव्य०) शक्ति उपासकों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन।

जयमाळ-दे० जैमाळ।

जय रामजी री-दे० जय श्री रामजी री।

जयवारो-दे० जैवारो।

जय श्रीकृष्ण-(पद०) 'जय श्रीकृष्ण' बोल-कर किया जाने वाला अभिवादन।

जय श्री रामजी-री (पद०) हाथ जोड़कर या गले मिलकर किया जाने वाला प्रणाम। भेंट या प्रस्थान का अभिवादन। प्रणति। 'श्री रामजी की जय' उच्चार कर किया जाने वाला अभिवादन।

जय समंद-(न०) मेवाड़ की एक विशाल झील।

जयन्ती-(ना०) १ किसी महापुरुष की जन्म तिथि। २. जन्म दिन को होने वाला उत्सव।

जया-(ना०)१ दुर्गा। २. पार्वती। ३.दूर्वा।

जयानक-(न०) 'पृथ्वीराज विजय' का रचयिता पुष्कर निवासी एक कवि।

जर-(ना०) १. धनमाल। २. सोना। ३. ज्वर। ४. बुढ़ापा। ५. तरल पदार्थ को छानने का अनेक छिद्रों वाला कटोरीनुमा एक पात्र। झरनी। झर।

जरक-(ना०) चोट। आघात। जरब।

जरकणो-(क्रि०) १. भय लाना। डरना। २. चोट लगना। ३. चोट लगाना। ४. पीटना। मारना। ५. गिरना।

जरकसी-(वि०) जिस पर जरी का काम किया हुआ हो। जरी वाला। जरीदार।

जरकाणो-(क्रि०) खूब अधिक पिटाई करना। बहुत अधिक मार मारना।

जरका-बोलो-(वि०) १. कर्कश बोला। कर्कश बोलने वाला। कठोर शब्दों का उच्चार करने वाला। २. मन को अघात पहुँचाने वाले शब्दों द्वारा बात करने की आदत वाला। (ना० जरका-बोली।)

जरकावणो-दे० जरकाणो।

जरकीजणो–(क्रि०) १. गिरना । पड़ना । २. गिरने से हड्डी में दर्द होना । ३. गिरने से हड्डियों का ढीला पड़ कर दर्द करना ।

जरको–(न०) १. धक्का । २. चोट । आघात । जरव । ३.कर्कश वोल । वाणी की चोट । ४. मन को चुभने वाली कर्कश वाणी । ५. धमकी । डांट । (वि०)वीर । वहादुर ।

जरख–(न०)एक हिंसक पशु । लकड़वग्घा । घोरखोदो ।

जरखणी–(ना०) जरख की मादा । (वि०) झगड़ने वाली । झगड़ालू ।

जरख वाहणी-(ना०) डाकिनी । डाकण ।

जरजोजण–दे० जुग्जोण ।

जरझरी–(ना०) जस्ता आदि धातु की वनी सुराही । जस्ते का वना नली वाला एक जल-पात्र ।

जरठ–(वि०) १. वृद्ध । वुड्ढा । २. जीर्ण । पुराना ।

जरड़ो–(वि०) वृद्ध । वुड्ढा ।

जरणा–(ना०)१. क्षमा । २. सहनशीलता । क्रोध को मारने की शक्ति ।

जरणारजन–दे० जनार्दन ।

जरणो–(क्रि०) १. पचना । हजम होना । २. सहन होना । ३. धन का वास्तविक रूप में खर्च होना । सम्पत्ति का सदुपयोग होना ।

जरतार–(वि०) जरी का काम किया हुआ । (न०) जरी के तार । सोने के तार ।

जरतास–(न०) जरी और ताश से वुना कपड़ा । जरवफ्त ।

जरतो–(क्रि०वि०) १. अनुमान सर । २. सव की रुचि अनुसार । (वि०) थोड़ा । कम । नरतो ।

जरद-(वि०) पीला । जर्द । (न०) १. कवच । २. घोड़ा ।

जरदपोम–(वि०) कवचधारी । (न०) कवचधारी योद्धा ।

जरदाळ–(न०) कवच । (वि०)कवचधारी ।

जरदाळू–(न०) एक मेवा । खूवानी । किस्टो ।

जरदाळो-(वि०) कवचधारी ।

जरदेत–(वि०) कवचधारी ।

जरदो–(न०) १. तम्वाकू । जर्दा । २. तम्वाकू का पत्ता या चूरा । ३. चावलों से वना एक व्यंजन । जरदा ।

जरवाफ–दे० जरीवाफ ।

जरवो–(न०) १. जूता । २. भारी वजनी जूती । किसानी जूती ।

१. जरंद–(न०) चावुक । २. मजवूत और भारी जूता । ३ चावुक या जूते की मार । ४. सख्त मार । कड़ी पिटाई ।

जरा–(वि०) थोड़ा । कम । (ना०) १. जरायुज । पिंडज । २. वृद्धत्व । वृद्धा-वस्था । वुढ़ापा ।

जराक–(वि०) थोड़ा सा । जरासा । (न०) १. भय । २. चोट । जरक ।

जरापण–(अव्य०)थोड़ा भी । (न०)वुढ़ापा ।

जरापणो–(न०) वुढ़ापा ।

जरायत–(वि०)वर्षा के पानी से होने वाला (खेती काम)। वागायत से उलटा ।

जरासंध–(न०) मगध देज का राजा । कंस का ससुर ।

जरासीक–दे० जराक ।

जरासो–दे० जराक ।

जराँ–(क्रि०वि०) जव । जरै । जद ।

जरियो–(न०) १. सावन । जरिया । २. मार्ग । तरीका । ३. लगाव । संवंध । जरिया । ४. कारण । हेतु ।

जरी–(न०) १. कारचोवी । कलावत्तू । २. कपड़े में सुनहले तारों का वेलवूंटे आदि का काम ।

जरीक–दे० जराक ।

जळधरण-(न०) बादल । मेघ ।
जळधि-(न०) समुद्र ।
जळनिधि-(न०) समुद्र ।
जळपती-(न०) जलपति । समुद्र ।
जळपंछी-(न०) बतक, हंस आदि । जल पक्षी ।
जळपान-(न०) १. नाश्ता । कलेवा । भारो । सीरावण । २. साधारण हलका भोजन ।
जळपू-(न०) जलपोस । अभ्रक । भोडल ।
जळपोस-दे० जळपू ।
जळप्रलय-(न०) १. अतिवृष्टि । २. बाढ़ । ३. सर्वत्र पानी का फिर जाना । जलाकार । जलप्रलय ।
जळबाला-(ना०) बिजली ।
जळबाँक-(न०) १. कुश्ती का एक दाँव । २. पानी में लड़ने का एक दाँव ।
जळबोळ-दे० जळाबोळ ।
जलम-(न०) जन्म । उत्पत्ति ।
जलमणो-(क्रि०) जन्म लेना । जनमना । जनमणो ।
जळरूह-(न०) कमल ।
जळळ-(ना०) १. क्रोध । २. क्रोधाग्नि । ३. भगदड़ । ४. आतुरता । बेसब्री । ५. जलन । ६. दुःख । ७. युद्ध । ८. भयंकरता । (वि०) १ भयंकर । २, क्रोधी ।
जळवट-(न०) १. जल प्रदेश । समुद्र । 'थलवट' का विपरीतार्थक । २. जलमार्ग । (अव्य०) समुद्री मार्ग द्वारा । जहाज के द्वारा ।
जळवळ-(वि०) जाज्वल्यमान । तेजस्वी ।
जळवा-(ना०) नवप्रसूता का जलाशय पर जल-पूजन को जाने का उत्सव ।
जळवाह-(न०)१. बादल । २. दे० जळवा ।
जळसमाधि-(ना०) जल में डूब कर प्राण त्याग करना ।
जळसुत-(न०) कमल ।
जळसो-(न०) १. जलसा । समारोह । २. उत्सव । ३. बैठक । मीटिंग ।
जळहर-(न०) १. इन्द्र । २. जलधर । बादल । ३. वर्षा । ४. जलाशय ।
जळहरी-(ना०) १. चन्द्रमा के चारों तरफ दिखाई देने वाला गोलाकार चन्द्रमंडल । चंद्रमा का प्रभा मण्डल । २. पापाणार्घ जिसके मध्य में शिवलिंग स्थापित किया जाता है । शिवलिंग वेदी । तीर्थ वेदी । ३. शिवलिंग के ऊपर जलधारा टपकाने वाला पात्र ।
जळबंड--(न०) १. मोती । मुक्ता । २. बुदबुदा ।
जलंद्रीपाव-(न०)जालंद्रपाद । जलंधरनाथ ।
जळंधर-(न०) १. जलोदर रोग । २. प्रसिद्ध योगी जलंधर नाथ । ३. जालंधर नाम का एक असुर । ४. मारवाड़ के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जालोर का एक काव्य प्रयुक्त नाम ।
जळंधरनाथ-(न०)राजा गोपीचद के गुरु । एक प्रसिद्ध सिद्ध योगी ।
जळा-(ना०) १. जल का असीम फैलाव । चारों ओर फैला हुआ पानी । जलाकार । २. सेना । फौज । ३. नाश । विनाश । ४. आफत । आपत्ति । संकट । ५. ज्वाला ।
जळाकार-(न०) जल ही जल । सब तरफ जल ही जल । जल प्रलय । जळा ।
जळाणो-(क्रि०) १. जलाना । प्रज्वलित करना । सुलगाना । २. ईर्ष्या उत्पन्न करना ।
जलाद-(न०)१. जल्लाद । २. क्रूर व्यक्ति ।
जळाधार-(न०) समुद्र ।
जळाधारी-(ना०) शिवलिंग के ऊपर अजस्र धारा प्रवाहित करने के लिये नीचे छिद्र वाला छात में लटकाया जाने वाला ताम्र घट । जळहरी । जळेरी ।

जळापो–(*न०*) ईर्ष्या की जलन । डाह । दाह । वळापो । वळण ।

जळाबोळ–(*न०*) १. सर्वत्र पानी ही पानी । २. जल प्रलय । ३. असंख्य सेना । ४. असीम संताप । ५. बुरा समय । (*वि०*) १. जल में डूबा हुआ । **जलबोड़** । २. संतापावृत । ३. खूब गहरा । ४. विकट । भयंकर । ५. क्रोधपूर्ण । ६. डूबा हुआ । जल प्लावित । ७ रंग से तर बतर । ८. नशे में चूर । ९. संपन्न । १०. अपार ।

जलाल–(*न०*) १. 'जलाल गाहाणी' नाम का एक रसिक, उदार और इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति । २. 'जलाल' और 'जलो' नाम से प्रसिद्ध गीतों का नायक । ३. प्रियतम । (*वि०*) १. रसिक । २. प्रिय । प्यारा । ३. सुन्दर । मनोहर । ४. प्रकाशमान । ५. उदार । ६. जबरदस्त । बलवान ।

जळावणो–दे० जळाणो ।

जळाहळ–(*वि०*) प्रकाशमान । देदीप्यमान । (*न०*) १. अग्नि । २. क्रोध । ३. चमक । प्रकाश ।

जलूस–(*न०*) १. शोभायात्रा २. जनयात्रा ।

जलूसाई–(*ना०*) १. जलूस की तैयारी । २. सजावट । ३. तड़क-भड़क । ४. शान-शौकत । (*वि०*) जलूस संबंधी । जलूस का । जलूसी ।

जलूसात– दे० जलूसाई ।

जलेब–(*ना०*) १. सेवा । टहल । हाजरी । तैनाती । २. पाड़ौस । आसपास । ३. पक्ष । लगाव । तरफदारी । सहानुभूति । (*वि०*) १. सवारी के साथ पैदल चलने वाला । जलेबदार । २. नियुक्त । तैनात ।

जलेबखानो–(*न०*) १. सवारी के इर्द-गिर्द रहने वाले सेवकों का घेरा । २. सेवक गण । ३. जलेबदारों के रहने का स्थान ।

जलेबदार–(*वि०*) १. राजा, गुरुजन आदि की सवारी के समय मातहती में रहने वाला । २. पक्षपाती । ३. सहायक । (*न०*) सेवक । **हाजरियो** ।

जलेबी–(*ना०*) एक मिठाई ।

जळ`री–दे० जळहरी ।

जलो–(*न०*) १. एक लोक गीत । २. एक प्रेम गीत का कथा नायक । ३. 'जलाल गाहणी' नाम के एक रसिक व्यक्ति का लोक गीतों में प्रयुक्त नाम ।

जळो–(*ना०*) जोंक । **जळोख** ।

जळोख–(*ना०*) जोंक ।

जलोसात–दे० जलूसाई ।

जल्दी–दे० जलदी ।

जव–(*न०*) १. जौ । यव । यवान्न । २. अंगुल के छठे या आठवें भाग का माप । ३. एक जौ परिमाण का तौल । ४. अंगुली के उपरि पोर में रेखाओं द्वारा बना यवाकार चिन्ह । यव चिन्ह ।

जवखार–(*न०*) जव का क्षार । यवक्षार ।

जवड़ो–(*वि०*) जैसा । समान । **जैड़ो** । **जिसो** ।

जवन–(*न०*) यवन । मुसलमान ।

जवनाण–(*न०*) यवन समूह । मुसलमानों का दल ।

जवनाणो–(*न०*) १. मुसलमानी व्यवहार । यवन रीति । यवनाचार । २. यवनत्व । यवनपना ।

जवनायण–(*ना०*)१. यवनसमूह । २. यवन सेना । ३. यवन-प्रदेश ।

जवनेस–(*न०*) यवनेश । बादशाह । मुसलमान बादशाह ।

जवमाळ–(*ना०*) १. विवाह के प्रथम पाटोत्सव-मुहूर्त्त और पाणिग्रहण के समय वर और कन्या को पहनाई जाने वाली जव, लौंग, छुहारा, मोती इत्यादि की माला । जौ माला । यवमाला । **जवारो** ।

जवाली। **जवाळी**। ७. जौ के समान सोने के छोटे मनकों की माला। **जवाळी**।
जवरी– दे० जँवरी।
जवलियो–*(न०)* १. एक गहना। २. जव के आकार का सोने का घुंघरू।
जव-हरड़े–*(ना०)* जौहर्रे। यवहरीतिका। छोटी हर्रे। **हीमज**। **हरड़ै**।
जवाई–*(ना०)* १. प्रस्थान। गमन। २. मारवाड़ की एक नदी। *(वि०)* १. जौ के जैसे रंग का। २. जौ जैसे रंग से रंगा हुआ।
जवाकंठी–*(ना०)* एक कंठाभूषण।
जवाखार–*(न०)* जौ के पौधे का क्षार। यवक्षार। **जवखार**।
जवाद–*(न०)* १. ऊँट। २. घोड़ा। ३. कस्तूरी। ४. एक प्रकार का तरल गंध द्रव्य। जुवाद।
जवाधि जळहर–दे० जवादि जळहर।
जवान–*(न०)* १. युवक। तरुण पुरुष। **मोटियार**। २. योद्धा। ३. सैनिक। सिपाही। *(वि०)* युवा। तरुण।
जवानी–*(ना०)* युवावस्था। तरुणाई। **मोटियारपणो**।
जवावदावो–*(न०)* दे० जवावदावो।
जवार–*(ना०)* ज्वार धान्य।
जवारा–*(न०)* मांगलिक पर्व पर गमले में गेहूँ या जौ के उगाये हुये अंकुर। जरई। **जँवारा**।
जवाळी–दे० जवमाळ।
जवेरात–दे० जवाहरात।
जवाहर–*(न०)* हीरा, माणिक, मोती आदि रत्न।
जवाहरात–*(न०)* जवाहर का बहुवचन।
जवाँमर्द–*(वि०)* वहादुर।
जवो–*(न०)* १. पशुओं के चमड़े में लगा रहने वाला एक कीड़ा। २. स्त्रियों की नाक का एक गहना। लौंग।
जस–*(न०)*यश। कीर्त्ति। *(क्रि०वि०)*जैसा।
जसखाटक–*(वि०)*१. कीर्त्तिमान। यशस्वी। २. यश प्राप्त करने वाला।
जसखाटू–दे० जसखाटक।
जसगाथा–*(ना०)* यशगाथा। यश वर्णन।
जसजोड़ो–*(न०)* १. कवि। २. खुशामदी कवि। यश गाने वाला कवि। *(वि०)* यश प्राप्त।
जसढोल–*(न०)* १. विवाह की एक रीति जिसमें सब कार्य सविधि और प्रसन्नता पूर्वक समाप्त हो जाने पर वरात की विदाई के समय दोनों ओर में यशप्राप्ति के उल्लास के ढोल का वजाया जाना। यशवाद्य। २. कीर्त्तिमान। ३. वाहवाही।
जसद–*(ना०)* जस्ता नामक धातु। **जसोद**। **जसत**।
जसधर–*(वि०)* यशधारी। **जसधारी**।
जसनामी–*(वि०)* कीर्त्तिमान। यशधारी।
जसनामो–*(न०)* १. ऐसा कार्य जिसका यश सदा वना रहे। २. पुण्य कार्यों द्वारा प्राप्त की हुई ख्याति। ३. ख्यातनाम। ४. यश नाम। ५. यशस्वी पुरुषों में लिखा जाने वाला नाम। ६. वीरगति पाये हुए यशधारियों में प्रसिद्ध नाम। ७. नामवरी। ख्याति।
जसरथ–*(न०)*श्री राम के पिता। दशरथ।
जसलुद्ध–*(वि०)* यशलुब्ध। यशलोभी।
जसवंत–*(वि०)* यशधारी। यशवंत।
जसवास–*(ना०)*यश-सौरभ।
जसाई–*(ना०)*१. यश वाद्य। २. यशगीत। ३. मांगलिक गीत और वाद्य।
जसी–*(वि०)* यशस्वी।
जसोद–दे० जसद।
जसोदा–*(ना०)*श्रीकृष्ण की माता। यशोदा।
जस्यो–*(वि०)* जैसा। **जिसो**। **जैड़ो**।
जहड़ो–*(वि०)* जैसा। **जैड़ो**। **जिसो**।

जळापो–(न०) ईर्ष्या की जलन। डाह। दाह। **वळापो। वळण।**

जळाबोळ–(न०) १. सर्वत्र पानी ही पानी। २. जल प्रलय। ३. असंख्य सेना। ४. असीम संताप। ५ बुरा समय। (वि०) १. जल में डूबा हुआ। **जलबोड़।** २. संतापावृत। ३. खूब गहरा। ४. विकट। भयंकर। ५. क्रोधपूर्ण। ६. डूबा हुआ। जल प्लावित। ७ रंग से तर बतर। ८. नशे में चूर। ६. संपन्न। १०. अपार।

जलाल–(न०) १. 'जलाल गाहाणी' नाम का एक रसिक, उदार और इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति। २. 'जलाल' और 'जलो' नाम से प्रसिद्ध गीतों का नायक। ३. प्रियतम। (वि०) १. रसिक। २. प्रिय। प्यारा। ३. सुन्दर। मनोहर। ४. प्रकाशमान। ५. उदार। ६. जबरदस्त। बलवान।

जळावणो–दे० जळाणो।

जळाहळ–(वि०) प्रकाशमान। देदीप्यमान। (न०) १. अग्नि। २. क्रोध। ३. चमक। प्रकाश।

जलूस–(न०) १. शोभायात्रा २. जनयात्रा।

जलूसाई–(ना०) १. जलूस की तैयारी। २. सजावट। ३. तड़क-भड़क। ४. शानशौकत। (वि०) जलूस संबंधी। जलूस का। जलूसी।

जलूसात– दे० जलूसाई।

जलेब–(ना०) १. सेवा। टहल। हाजरी। तैनाती। २. पाड़ौस। आसपास। ३. पक्ष। लगाव। तरफदारी। सहानुभूति। (वि०) १. सवारी के साथ पैदल चलने वाला। जलेबदार। २. नियुक्त। तैनात।

जलेबखानो–(न०) १. सवारी के इर्द-गिर्द रहने वाले सेवकों का घेरा। २. सेवक गण। ३. जलेबदारों के रहने का स्थान।

जलेबदार–(वि०) १. राजा, गुरुजन आदि की सवारी के समय मातहती में रहने वाला। २. पक्षपाती। ३. सहायक। (न०) सेवक। **हाजरियो।**

जलेबी–(ना०) एक मिठाई।

जळेरी–दे० जळहरी।

जलो–(न०) १. एक लोक गीत। २. एक प्रेम गीत का कथा नायक। ३. 'जलाल गाहणी' नाम के एक रसिक व्यक्ति का लोक गीतों में प्रयुक्त नाम।

जळो–(ना०) जोंक। **जळोख।**

जळोख–(ना०) जोंक।

जलोसात–दे० जलूसाई।

जल्दी–दे० जलदी।

जव–(न०) १. जौ। यव। यवान्न। २. अंगुल के छठे या आठवें भाग का माप। ३. एक जौ परिमाण का तौल। ४. अगुली के उपरि पोर में रेखाओं द्वारा बना यवाकार चिन्ह। यव चिन्ह।

जवखार–(न०) जव का क्षार। यवक्षार।

जवड़ो–(वि०) जैसा। समान। **जैड़ो। जिसो।**

जवन–(न०) यवन। मुसलमान।

जवनाण–(न०) यवन समूह। मुसलमानों का दल।

जवनाणो–(न०) १. मुसलमानी व्यवहार। यवन रीति। यवनाचार। २. यवनत्व। यवनपना।

जवनायण–(ना०)१. यवनसमूह। २. यवन सेना। ३. यवन-प्रदेश।

जवनेस–(न०) यवनेश। बादशाह। मुसलमान बादशाह।

जवमाळ–(ना०) १. विवाह के प्रथम पाटोत्सव-मुहूर्त्त और पाणिग्रहण के समय वर और कन्या को पहनाई जाने वाली जव, लौंग, छुहारा, मोती इत्यादि की माला। जौ माला। यवमाला। **जवारी।**

जवाली । **जवाळी** । २. जौ के समान सोने के छोटे मनकों की माला । **जवाळी** ।

जवरी– दे० जँवरी ।

जवलियो–*(न०)* १. एक गहना । २. जव के आकार का सोने का घुंघरू ।

जव-हरड़े–*(ना०)* जौहर्रे । यवहरीतिका । छोटी हर्रे । **हीमज** । **हरड़े** ।

जवाई–*(ना०)* १. प्रस्थान । गमन । २. मारवाड़ की एक नदी । *(वि०)* १. जौ के जैसे रंग का । २. जौ जैसे रंग से रंगा हुआ ।

जवाकंठी–*(ना०)* एक कंठाभूषण ।

जवाखार–*(न०)* जौ के पौधे का क्षार । यवक्षार । **जवखार** ।

जवाद–*(न०)* १. ऊँट । २. घोड़ा । ३. कस्तूरी । ४. एक प्रकार का तरल गंध द्रव्य । जुवाद ।

जवाधि जळहर–दे० जवादि जळहर ।

जवान–*(न०)* १. युवक । तरुण पुरुष । **मोटियार** । २. योद्धा । ३. सैनिक । सिपाही । *(वि०)* युवा । तरुण ।

जवानी–*(ना०)* युवावस्था । तरुणाई । **मोटियारपणो** ।

जवावदावो–*(न०)* दे० जवावदावो ।

जवार–*(ना०)* ज्वार धान्य ।

जवारा–*(न०)* मांगलिक पर्व पर गमले में गेहूँ या जौ के उगाये हुये अंकुर । जरई । **जँवारा** ।

जवाळी–दे० जवमाळ ।

जवेरात–दे० जवाहरात ।

जवाहर–*(न०)* हीरा, माणिक, मोती आदि रत्न ।

जवाहरात–*(न०)* जवाहर का बहुवचन ।

जवाँमर्द–*(वि०)* बहादुर ।

जवो–*(न०)* १. पशुओं के चमड़े में लगा रहने वाला एक कीड़ा । २. स्त्रियों की नाक का एक गहना । लौंग ।

जस–*(न०)*यश । कीर्त्ति । *(क्रि०वि०)*जैसा ।

जसखाटक–*(वि०)*१. कीर्त्तिमान । यशस्वी । २. यश प्राप्त करने वाला ।

जसखाटू–दे० जसखाटक ।

जसगाथा–*(ना०)* यशगाथा । यश वर्णन ।

जसजोड़ो–*(न०)* १. कवि । २. खुशामदी कवि । यश गाने वाला कवि । *(वि०)* यश प्राप्त ।

जसढोल–*(न०)* १. विवाह की एक रीति जिसमें सब कार्य सविधि और प्रसन्नता पूर्वक समाप्त हो जाने पर बरात की विदाई के समय दोनों ओर में यशप्राप्ति के उल्लास के ढोल का बजाया जाना । यशवाद्य । २. कीर्त्तिमान । ३. वाहवाही ।

जसद–*(ना०)* जस्ता नामक धातु । **जसोद** । **जसत** ।

जसधर–*(वि०)* यशधारी । **जसधारी** ।

जसनामी–*(वि०)* कीर्त्तिमान । यशधारी ।

जसनामो–*(न०)* १.ऐसा कार्य जिसका यश सदा बना रहे । २. पुण्य कार्यों द्वारा प्राप्त की हुई ख्याति । ३. ख्यातनाम । ४. यश नाम । ५. यशस्वी पुरुषों में लिखा जाने वाला नाम । ६. वीरगति पाये हुए यशधारियों में प्रसिद्ध नाम । ७. नाम-वरी । ख्याति ।

जसरथ–*(न०)*श्री राम के पिता । दशरथ ।

जसलुद्ध–*(वि०)* यशलुब्ध । यशलोभी ।

जसवंत–*(वि०)* यशधारी । यशवंत ।

जसवास–*(ना०)*यश-सौरभ ।

जसाई–*(ना०)*१. यश वाद्य । २. यशगीत । ३. मांगलिक गीत और वाद्य ।

जसी–*(वि०)* यशस्वी ।

जसोद–दे० जसद ।

जसोदा–*(ना०)*श्रीकृष्ण की माता । यशोदा ।

जस्यो–*(वि०)* जैसा । **जिसो** । **जैड़ो** ।

जहड़ो–*(वि०)* जैसा । **जैड़ो** । **जिसो** ।

जहर-(न०) विप । गरल ।

जहरजर-(न०) महादेव ।

जहराळ-(न०) विषधर । सर्प । (वि०) जहरीला । विषाक्त ।

जहरी-(वि०) जहर वाला । विषाक्त । जहरीला ।

जहरीलो-(वि०) १. जहरवाला । जहरी । २. अतिक्रोधी ।

जहवो-दे० जहड़ो ।

जहाज-(न०) बड़ा जलपोत । जहाज ।

जहान-(न०) संसार ।

जहानवी-(ना०) जान्हवी । गंगा ।

जहूर-(न०) १. प्रदर्शन । २. प्रकाश । ३. कांति । (वि०) १. प्रकाशमान । २. विकसित ।

जहेच्छ-(वि०) यथेच्छ । इच्छानुसार ।

जंखेरो-(न०) १. खूब तेज वायु । आँधी । २. आँधी का झोंका । ३. तेज वायु के कारण उड़ कर आया हुआ धूल और कचरा । ४. कूड़ा-कचरा । ५. ढेर । राशि (कचराकी) ।

जंग-(न०) १. युद्ध । लड़ाई । २. मुरचा । काट ।

जंगजूट-(न०) शूरवीर । योद्धा ।

जंगम-(न०) १. घोड़ा । २. एक स्थान पर नहीं टिकने वाला साधु । संन्यासी । ३. चल संपत्ति । मनकूला । जायदाद । (वि०) चलता-फिरता ।

जंगम-पसम-(न०) घोड़े के शरीर की केश राजि ।

जंगळ-(न०) जंगल । वन । अरण्य ।

जंगळजती-(न०) ऊंट ।

जंगळ जाणो-(मुहा०) पाखाने जाना । टट्टी जाना ।

जंगळधरा-(न०) बीकानेर प्रदेश । जांगलू देश ।

जंगळराय-(ना०) १. करणी देवी का एक नाम । २. बीकानेर का राजा ।

जंगळवै-(न०) जांगलू देश का राजा । बीकानेर का राजा ।

जंगळायत-(न०)१. जंगल रक्षा का सरकारी महकमा । २. सरकार द्वारा रक्षित जंगल ।

जंगळियो-(न०) शौच का जलपात्र ।

जंगळी-(वि०) १. जंगल का । जंगल संबंधी । २. जंगल में रहने वाला । ३. बिना लगाये अपने आप उगने वाला । ४. मूर्ख । ५. असभ्य । (न०) घोड़ा ।

जंगळो-(न०) लोहे की छड़ों वाला दरवाजा या खिड़की ।

जंगाल-(न०)१. दो कड़ो वाला बड़ा तसला । २. ताँबे के जंग जैसा एक रंग । ३. ताँबे के जंग का रंग । ताँबे का काट या जंग । ४. तूतिया । जंगार । ५. नगाड़ा । ६. सेना का दाहिना भाग ।

जंगावर-(न०) वीर पुरुष । योद्धा ।

जंगावळ-(ना०) १. युद्ध । २. सेना का घेरा ।

जंगी-(वि०) १. जबरदस्त । २. बड़ा । ३. दीर्घकाय । ४. युद्ध संबंधी । ५. युद्ध से संबंध रखने वाला ।

जंगेव-(वि०) युद्धोत्सुक । (न०) जंग । युद्ध ।

जंघा-(ना०) जाँघ । साथळ । रान ।

जंजर-(न०) ताला । (ना०) एक छोटी तोप । (वि०) पुराना और कमजोर । जर्जर ।

जंजाळ-(न०)१. स्वप्न । २. प्रपंच । माया । ३. उपाधि । आफत । झंझट । ४. दुख । ५ एक प्रकार की तोप ।

जंजाळी-(वि०) प्रपंची । बखेड़ा बाज । जंजालवाला ।

जंजीर-(ना०) १. जंजीर । सांकल । सांकळ । २. लड़ । माला । ३. बेड़ी ।

जंझर-(ना०) जजीर । सांकल ।

जंझेरणो-(क्रि०) झकझोरना ।

जंत-(न०) १. यंत्र । २. जंतु । ३. बैलगाड़ी का एक उपकरण । ४. तंबूरा, सारंगी आदि तार वाद्य । (वि०) जबरदस्त ।
जंतर-दे० जंत्र ।
जंतरड़ी-दे० जंतरी ।
जंतरणो-(क्रि०) १. मारना । २. पीटना । ३. भूत प्रेत आदि को किसी तान्त्रिक यंत्र द्वारा वश में करना ।
जंतरवाण-(वि०) अत्यन्त दृढ़ । बहुत मजबूत । (न०) गाँवई जूता । भारी जूता ।
जंतर-मंतर-(न०) १. जादू टोना । जादू । २. वेधशाला । ३. यंत्र और मंत्र ।
जंतराणो-दे० जंतरणो ।
जंतरावणो-(क्रि०) दे० जंतरणो ।
जंतरी-(ना०) गोपुच्छ की भांति क्रम से छोटे होते हुए सुराखों वाली एक लोह-पट्टी । (इसके उत्तरोत्तर छोटे बने हुए सुराखों में होकर सोना, चाँदी आदि के तार को निकाल कर पतला बनाया जाता है तथा बढाया जाता है) जंती । **जांतरी** । तारकशी । २. पंचांग । पत्रा ।
जंती-दे० जंतरी ।
जंतु-(न०) १. जीव । प्राणी । २. कीड़ा । छोटा जीव । **जीवड़ो** ।
जंतो-(न०) तारकशों और सुनारों का एक औजार जिस से सोना, चाँदी के तार पतले किये जाते हैं । एक के बाद एक क्रम से छोटे बने हुए छेदों वाली एक लोह-पट्टी जिसके छेदों में से तार को खींच कर पतला और लंबा बनाया जाता है । जांता । **जांतरो** । **जांतो** ।
जंत्र-(न०) १. तांत्रिक आकार या कोष्ठ । तांत्रिक आकृति । यंत्र । २. ऐसी आकृति या अक्षरों वाला कागज या पतरा । तावीज । ३. जादू । ४. तोप । ५. बंदूक । ६. बाजा । तारवाद्य । वीणा । ७. कल । यंत्र ।
जंत्र-मंत्र-दे० जंतर-मंतर ।
जंद-(न०) १. पारसियों का धर्म ग्रंथ । २. वह भाषा जिसमें पारसियों का यह धर्म ग्रंथ लिखा हुआ है दे० जिंद ।
जंप-(न०) चैन । शांति । कल । **निरांत** ।
जंपणो-(क्रि०) १. कहना । वर्णन करना । २. जपना । ३. शांत होना । शांतचित । होना । ४. नींद आना ।
जंबु-(न०)१. जामुन । २. जामुन का वृक्ष ।
जंबुक-(न०) १. सियार । गीदड़ । जंबुक । २. जामुन ।
जंबुखंड-(न०) १. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक । जंबु द्वीप । २. भारतवर्ष ।
जंबुदीप-दे० जंबुखंड ।
जंबूर-(ना०)१. एक प्रकार की छोटी तोप । २. तोपगाड़ी । ३. एक औजार । पकड़ । जंबूरा ।
जंबूरी-(ना०) १. किसी वस्तु को मजबूती से पकड़ने, खींचने या मोड़ने का एक औजार । एक प्रकार की बिना चोंच वाली सांड़सी । पकड़ । २. एक शस्त्र ।
जंबूरो-(न०) १ एक औजार । जंबूरा । पकड़ । २. मदारी का मददगार लड़का । ३ ऊंट पर लादी जाने वाली एक तोप ।
जंभ-(न०) १. दाढ़ । २. कटारी ।
जंभियो-(न०)एक प्रकार की टेढ़ी कटारी ।
जँवर-(न०) १. शत्रु की विजय निश्चित हो जाने पर पराजित राजपूतों की स्त्रियों का चिता में जलजाने की मध्यकालीन एक प्रथा । जौहर । मंगलमृत्यु । २. शस्त्र पर दिया जाने वाला लहरदार पानी । शस्त्र की रंगीन और लहरदार आब । ३. रत्न । जवाहिर । ४. अग्नि । ५. कोप । ६. तलवार ।
जँवरी-(न०) १. रत्नों का व्यापारी । जौहरी । २. रत्न परीक्षक । ३. गुणदोष पहचानने वाला । ४. गुणग्राहक ।
जँवाई-दे० जमाई ।

जँवाईराज–*(न०)* १. ससुराल में जमाई के लिये सम्मानसूचक संबोधन । २. जमाई । दामाद । ३. एक लोकगीत ।

जँवारा–दे० जवारा ।

जा–*(प्रत्य०)* किसी शब्द के अंत में प्रयुक्त होने पर उत्पत्ति अर्थ का वाचक नारी जाति प्रत्यय । यथा—आत्म+जा = आत्मजा (पुत्री), गिरि+जा = गिरिजा (पार्वती) इत्यादि । *(ना०)* १. पुत्री । २. जननी । माता । *(सर्व०)* १. जिस । २. उस । *(वि०)* उचित । मुनासिब । *(अव्य०)* १. जाने का आज्ञासूचक ओछा शब्द । २. जाने की आज्ञा । *(क्रि०)* जाने के भाव की आज्ञार्थक क्रिया ।

जाइ–*(वि०)* १. जितना । २. जिस प्रकार का । *(सर्व०)* जिस ।

जाइगा–दे० जायगा ।

जाइंदो–*(वि०)* १. 'लाइंदो' (दत्तक) से उलटा । गोद लाया हुआ नहीं । स्व-कुलोत्पन्न । स्ववंशज । २. उत्पन्न । जाया हुआ । **जायोड़ो** । ३. औरस ।

जाई–*(ना०)* १. पुत्री । बेटी । २. स्त्री ।

जाऊ–*(वि०)* जाने वाला । *(अव्य०)* जाने की तैयारी में ।

जाऊंगी–*(भ०क्रि०)* जाऊंगी ।

जाऊंला–*(भ०क्रि०)* १. जाऊंगा । २. जाऊंगी ।

जाऊंलो–*(भ०क्रि०)* जाऊंगा ।

जाकळ–*(वि०)* वीर ।

जाखोड़ो–*(न०)* १. ऊंट । २. सवारी के लिये सजा हुआ ऊंट ।

जाग–*(न०)* १. एक वेदोक्त कर्म । यज्ञ । याग । २. धर्मयुद्ध । ३. विवाह आदि मांगलिक उत्सव । ४. महाभोज । ५. ब्रह्मभोज । ६. जगते रहने का भाव । जाग्रति । ७. जाग्रतावस्था । ८. स्थान । जगह । ९. घोड़ी की मूत्रेन्द्री । अश्वा-योनि । १०. घोड़ी की संभोगेच्छा । तुरंगी की कामेच्छा । **जगरो** ।

जागण–दे० जागरण ।

जागणो–*(क्रि०)* १. जागना; जगना । नींद को त्यागना । सोकर उठना । २. चेतन होना । सावधान होना । सजग होना । ३. उत्पन्न होना । ४. उत्तेजना होना ।

जागती–*(वि०)* १. जगी हुई । जाग्रत । २. प्रज्वलित ।

जागतीजोत–*(ना०)* १. देवी चमत्कार । २. किसी देवी देवता का प्रत्यक्ष चमत्कार । ३. प्रज्वलित ज्योति ।

जागतो–*(वि०)* १. जगता हुआ । जाग्रत । २. प्रज्वलित ।

जाग में आणो–*(मुहा०)* १. घोड़ी को कामेच्छा होना । २. घोड़ी को गर्भधारण की इच्छा होना । **जगरै आणो** ।

जागर–*(न०)* १. युद्ध । २ कुत्ता ।

जागरण–*(न०)* १. किसी उत्सव पर्व आदि पर सारी रात जागते रह कर किया जाने वाला भजन गायन । रतजगा । २. रात में (नींद नहीं लेकर) जागते रहने का भाव *(ना०)* जागरी की स्त्री ।

जागरी *(न०)* १. वेश्या पुत्र । २. भड़ुवा । ३. जागरी जाति ।

जागवणो–*(क्रि०)* १. उत्पन्न करना । २. सृष्टि उत्पन्न करना । ३. जगाना ।

जागा–*(ना०)* १. जगह । स्थान । २. मकान । घर । ३. मठ । स्थल । अस्थल । ४. ओहदा । पद ।

जागा-जमी–*(ना०)* मकान और जमीन ।

जागा-मींटो–*(न०)* १. अर्द्ध जाग्रतावस्था । अर्द्ध निद्रावस्था । थोड़ी नींद थोड़ी जाग्रतावस्था । २. वह समय या स्थिति जिसमें कोई सो रहा हो और कोई जग रहा हो ।

जागीपो–दे० जाग सं० ६, ७.

जागीर–*(ना०)* सरकार की ओर से (इनाम या स्वत्वाधिकार के रूप में) प्राप्त भूमि या प्रदेश ।

जागीरदार-(न०) जागीर का मालिक। जागीरी प्राप्त व्यक्ति।
जागीरदारी-दे० जागीरी।
जागीरबक्षी-(न०) मध्यकाल में एक राजकीय पद।
जागीरी-(ना०) १ जागीरदार के कब्जे के गाँव-जमीन। जागीर। २. जागीरदार होने का भाव। ३. रईसी। ४. हैसियत। बिसात। सामर्थ्य। (वि०) जागीर से संबंधित। जागीर का।
जागोड़ी-(वि०) १. जगी हुई। २. सचेत।
जागोड़ो-(वि०) १. जगा हुआ। जाग्रत। २. सचेत। सावधान।
जाच-(ना०) १. याचना। २. जाँच। तपास। २. वजन करने का भाव। तौल।
जाचक-(न०) १. याचक। २. भिखारी।
जाचण-(वि०) याचने वाली।
जाचणी-दे० जाच।
जाचणो-(क्रि०) १. जाचना। माँगना। याचना करना। २. जाँचना। तपासना। ३. तौल करना।
जाचिग-दे० जाचक।
जाचू-(वि०) जाचने वाला।
जाचेल-(न०) १. तिल्ली का तेल। तिल्ली के तेल पर बनाया हुआ सिर में डालने का एक सुगंधित तेल।
जाज-(न०)१. मैला रंग। २. मैल। (वि०) १. बदरंग। २. थोड़ा।
जाजम-(ना०) बेलबूटों से छपे हुए मोटे कपड़े की बड़ी दरी। जाजिम।
जाजमाठ-(वि०) १. यथामात्र। मात्रा के अनुसार। मात्रा से अधिक नहीं। २. यथावश्यक। जरूरत मुताबिक। ३. कम। थोड़ा। ४. यत्किंचित। थोड़ासा। कुछ। ५. बहुत कम।
जाजर-(वि०) १. जर्जर। जीर्ण। २. दृढ़। (न०) १. सहनशीलता। २. संहार।
जाजरणो-(क्रि०) १. सहन करना। २. संहार करना। मारना।
जाजरू-(न०) १. शौचागार। २. पाखाना। टट्टी।
जाजळ-(वि०) १ तेजस्वी। २. जबरदस्त।
जाजळामान-(वि०) १. जाज्वल्यमान। तेजस्वी। २. उपद्रवी। उत्पाती। नटखट। ऊधमी। शरारती।
जाजळी-दे० जाजळ या जाजळो।
जाजळो-दे० जाजळामान।
जाजुळ-(वि०) १. जबरदस्त। २. जाज्वल्यमान। ३. क्रोधी। ४. उपद्रवी।
जाजुळमान-दे० जाजळामान।
जाजुळी-दे० जाजुळ।
जाज्वल्यमान-(वि०) तेजपूर्ण। तेजपुंज।
जाझी-(वि०) १. अधिक। खूब। २. दृढ़। ३. तेज।
जाझेरो-(वि०) १. अधिक। बहुत। २. बहुतसा। बहुतसारा।
जाझो-(वि०) १. अधिक। पुष्कल। २. तेज। ३. दृढ़।
जाट-(न०) १. एक जाति। २. जाट जाति का व्यक्ति।
जाटणी-(ना०) जाट जाति की स्त्री।
जाटव-(न०) एक चमार जाति। जाटो-भांभो।
जाटू-(वि०) १. जाट जाति से संबंधित। २. जगली। (ना०)हरियाणा की बोली।
जाटो भाँभी-(न०) १. एक चमार जाति। २. इस जाति का व्यक्ति। जाटव।
जाड-(न०) १. पाप। २. अज्ञानता। मूर्खता। जड़ता। ३. दल। समूह। (वि०) १. अधिक। २. मोटा। जाडो।
जाडउ-दे० जाडो।
जाडाई-(ना०) १. मोटापन। मोटाई। २. स्थूलता।
जाडायत-(वि०) १. जबरदस्त। २. बड़े कुटुम्ब वाला।

जाडायती–*(क्रि०वि०)* जबरदस्ती से ।

जाडाँ–*(वि०)* अधिक । *(क्रि०वि०)*जबरदस्ती से ।

जाडियो–*(न०)* दाढ़ी के बालों को ऊंचा जमाये रखने के लिये उन पर बांधी जाने वाली एक वस्त्र पट्टी । **बकानो** । *(वि०)* १. मोटा । २. घना ।

जाडी–*(वि०)* १. मोटी । **सेंठी** । २. घनी । ३. अत्यधिक । ४. दलदार । *(ना०)*मूंछ को जमाये रखने के लिये उस पर बाँधने की कपड़े की पट्टी । **मूंछपट्टी** । **मूंछी** । **मूंछियो** ।

जाडीकीरत–दे० जाडोजस ।

जाडी जीभ–*(ना०)* १. मृत्यु के समय जीभ का मोटा हो जाना । २. बोला नहीं जाना ।

जाडो–*(वि०)* १. मोटा । २. स्थूल । ३. पुष्ट । **सेंठो** । ४. दलदार । ५. अत्यधिक ६. घना । ७. प्रबल । **जोरावर** ।

जाड़ो–*(न०)* १. शीतकाल । **सियाळो** । २. शीत । जाड़ा । सरदी । ठंड । **सी** । ३. जत्था । समूह । ४. पक्ष ।

जाडो जस–*(न०)* बहुत बड़ी ख्याति । बड़ी प्रशंसा । **जाडी कीरत** ।

जाण–*(ना०)* १. जानकारी । २. पहिचान । ३. समझ । ज्ञान । ४. बुद्धि । अक्ल । *(अव्य०)*१. मानो । जानो । २. जैसे कि ।

जाण-अजाण–*(अव्य०)* १. जानते हुए या अजान में । २. विना इरादे ।

जाणक–*(अव्य०)*मानो । मानो कि । जैसे । मानो । गोया । गोया कि । **जाणो के** । *(वि०)*१. जानने वाला । ज्ञाता । २. बहुश्रुत । **जाणग** ।

जाणकार–*(वि०)* १. जानकारी रखने वाला । जानकार । जानने वाला । **जाणग** । **जाणणारो** । २. समझदार । विज्ञ । ३. चतुर ।

जाणकारी–*(ना०)* जानकारी । विज्ञता । २. परिचय । ३. निपुणता ।

जाणग–*(वि०)* १. जानने वाला । ज्ञाता । **जाणणारो** । २. बहुश्रुत ।

जाणगर–*(वि०)* १. ज्ञाता । जानकार । **जाणग** । २.विशेषज्ञ । ३.समझने वाला ।

जाणणारो–दे० जाणकार ।

जाणणो–*(क्रि०)*१. जानना । २. समझना । ३. पता लगना । ४. ज्ञान प्राप्त करना । ५. पहचानना । ६. खबर रखना । सूचना पाना ।

जाणपण–दे० जाण ।

जाणपणो–दे० जाण ।

जाण-पिछाण–*(ना०)* जान-पहिचान । परिचय ।

जाणभेद्–*(वि०)* भेद जानने वाला । भेदिया । **भेदू** । **भेदियो** ।

जाण-म-जाण–*(अव्य०)*१. जाने-अनजाने । २. जानो या नहीं जानो ।

जाणवीण–*(ना०)*जानकारी । *(वि०)* जानकार ।

जाणाऊ–*(न०)* भेदिया । गुप्तचर । *(वि०)* चतुर । विज्ञ ।

जाणि–*(अव्य०)* मानो । गोया ।

जाणी-आणी–*(ना०)* १. जाना-आना । २. हानि-लाभ ।

जाणीकार–दे० जाणकर ।

जाणीतो–*(वि०)* १. जाना हुआ । पहचाना हुआ । **ओळखाण वाळो** । **ओळखीतो** । २. प्रसिद्ध । मशहूर । **छावो** । ३. जानकार । भिज्ञ । **जाणकर** ।

जाणै–*(अव्य०)* मानो । गोया । जैसे कि । जनों । **जाणि** ।

जाणो–*(क्रि०)* १. जाना । गमन करना । २. अलग होना । ३. अधिकार से निकलना । हाथ से निकलना । ४. बहना । *(अव्य०)* मानो । गोया । जैसे । **जाणि** । **जाणै** ।

जाणो-आणो–*(न०)* १ जानाआना । आवागमन । २. हानि लाभ । *(क्रि०)* जाना और आना ।

जात–*(ना०)* १. जाति । समाज । २. गुण । धर्म आदि की दृष्टि के पदार्थों का विभाग । वर्ग । कोटि । ३. आकृति, प्रकृति आदि की दृष्टि से जीव-जंतुओं का विभाग । ४. किस्म । प्रकार । ५. गुण । ६. किसी कामना से की जाने वाली देव-दर्शन यात्रा । ७. विवाहोपरान्त वर-वधू का देव-पूजार्थ देव स्थानों में जाना । ८. गोत्र । ६. जन्म । १०. पुत्र । *(वि०)* १. जन्मा हुआ । उत्पन्न । २. प्रकट ।

जातक–*(न०)* १. बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ । २. बच्चा ।

जातणी–*(ना०)* स्त्री-यात्री । यात्रिणी ।

जातना–*(ना०)* यातना । कष्ट । पीड़ा ।

जातपाँत–*(ना०)* १. जाति-पाँति । बिरादरी । २. एक पंक्ति में बैठ कर भोजन करने वाली जातियों का मेल ।

जात बारै–दे० जाती बाहर ।

जातरी–दे० जात्री ।

जातरू–*(न०)* बैलगाड़ी के 'माकड़ों' में खड़े किये जाने वाले डंडे । २. तीर्थ यात्री ।

जातरूप–*(न०)* स्वर्ण । सोना ।

जातवान–*(वि०)* १. अच्छी नस्ल का । २. ऊंची खानदान का । कुलीन । ३. असली । खरा । सच्चा । ४. विशुद्ध ।

जातवेद–*(न०)* अग्नि ।

जातसुभाव–*(न०)* १. वंश-परस्परा का स्वभाव । कुल स्वभाव । २. जाति स्वभाव ।

जाताँकरणी–*(मुहा०)* यात्राएँ करना ।

जाताँ-जुगाँ–*(अव्य०)* युगों के बीत जाने पर भी ।

जाताँपाण–*(अव्य०)* जाते ही । पहुँचते ही ।

जाति–*(ना०)* १. कर्मानुसार (अब जन्मानुसार) हिन्दू जाति में किया गया ब्राह्मण क्षत्री आदि के रूप में मानव समाज का विभाग । हिन्दू समाज । जाति । वर्ण । २. देश परम्परा या धर्म की दृष्टि से किया गया मानव समाज का विभाग । यथा—हिन्दू, पारसी, मुसलमान आदि । ३. गुण, धर्म, आकृति आदि की दृष्टि से तथा योनि भेद से पदार्थों अथवा जीव-जंतुओं का बना हुआ विभाग, जैसे मनुष्य, पशु, स्त्री, पुरुष, घोड़ा, साँप आदि ।

जातिधर्म–*(न०)* १. जाति या वर्ण का धर्म । २. जातियों के अलग-अलग कर्त्तव्य ।

जाति-पाँति–*(ना०)* १. एक पंक्ति में भोजन करने वाला समाज । २. बिरादरी ।

जातिभाई–*(न०)* एक ही जाति का होने से माना जाने वाला भाई ।

जातिभेद–*(न०)* जातियों में परस्पर रहने वाला अंतर ।

जातिभ्रष्ट–*(वि०)* जाति से बहिष्कृत ।

जातिमद–*(न०)* जाति का अभिमान ।

जातिवाचक–*(वि०)* जाति के गुण इत्यादि बताने वाला ।

जातिवाचक संज्ञा–*(ना०)* १. जाति की प्रत्येक इकाई या वस्तु की वाचक संज्ञा । *(व्या०)* २. सामान्य नाम ।

जातिवार–*(अव्य०)* प्रत्येक जाति के हिसाब से ।

जाति वैर–*(न०)* १. स्वाभाविक शत्रुता । सहज वैर । २. जातियों में परस्पर वैर-भाव ।

जाति व्यवहार–*(न०)* जातियों में परस्पर भोजन व्यवहार ।

जाति स्वभाव–*(न०)* १. जाति का विशेष गुण या स्वभाव । २. एक अलंकार ।

जातिहीन–*(वि०)* १. जातिच्युत । २. हीन जाति का ।

जाती–दे० जाति ।

जाती बाहर-*(वि०)*जाति से निकाला हुआ। जातिच्युत। जाति बहिष्कृत।

जाती-रा-पग-*(अव्य०)*अधःपतन के चिह्न।

जातीवैर-*(न०)* जाति शत्रुता। सहज वैर। स्वाभाविक शत्रुता। जैसे बिल्ली और चूहे में।

जाती सुभाव-*(न०)* १. जाति स्वभाव। जाति का गुण। २ वंश गुण। कुल का स्वभाव।

जातू-*(न०)* बैलगाड़ी के मांकड़े में खड़ा किया जाने वाला डंडा।

जातो-आतो-*(वि०)* जाता-आता। जाता-आता हुआ।

जात्रा-*(ना०)* १. यात्रा। तीर्थाटन। २. देशाटन। भ्रमण।

जात्राळू-*(वि०)* तीर्थाटन करने वाला। यात्रा करने वाला। यात्री।

जात्री-*(न०)* यात्री।

जादम-दे० जादव।

जादरियो-*(न०)* गेहूं की ऊंबी में से निकाले हुए हरे गेहूं या हरे चने या हरी ज्वार को पीस कर बनाया जाने वाला हलवा।

जादव-*(न०)* १. यादव। २. श्रीकृष्ण। ३. भाटी क्षत्री।

जादवपति-*(न०)* यादवपति श्रीकृष्ण।

जादवराय-*(न०)* श्रीकृष्ण।

जादवेस-*(न०)* श्रीकृष्ण।

जादवो-*(न०)* श्रीकृष्ण।

जादा-*(वि०)* ज्यादा। अधिक। **घणो**।

जादुराय-दे० जादवराय।

जादू-*(न०)* १. इंद्रजाल। २. **टोटको**। टोना। ३. यादव। **जादव**।

जादूगर-*(न०)* जादू करने या जाननेवाला। इंद्रजालिक।

जादूमंतर-*(न०)* जादू का मंत्र। जादूमंत्र।

जान-*(ना०)*१. बरात। जनेत। २. प्राण। ३. शक्ति। ४. जानकारी। ज्ञान। ५. अनुमान। ख्याल।

जानकी-*(ना०)* श्रीराम की पत्नी। सीता।

जानकीनाथ-*(न०)* श्रीराम।

जानणी-*(ना०)* बरातिन। जनेतिन।

जानराय-*(न०)*१. श्रीराम। २. विष्णु।

जानवर-दे० जनावर।

जानियो-*(न०)* जनेती। बराती।

जानी-*(ना०)* बराती। जनेती। **जानियो**। *(वि०)* प्यारा।

जानीवासो-*(न०)* बरातियों के ठहरने का मकान। जनवासा। **डेरो**।

जानेत-दे० जानेती।

जानेतण-*(ना०)* जनेतिन। बरातिन। **जानणी**।

जानेती-*(न०)* बराती। जनेती। **जानियो**। **जानी**।

जान्हवी-*(ना०)* गंगा नदी। जाह्नवी।

जाप-*(न०)* जप।

जापक-*(वि०)* जप करने वाला। **जपियो**।

जापजप-दे० जपजाप।

जापताई-दे० जाबताई।

जापताप-दे० जपतप।

जापतो-दे० जाबतो।

जापान-*(न०)* एक देश।

जापानी-*(ना०)* १. जापान की भाषा। २. जापान का निवासी। *(वि०)* जापान का। जापान संबंधी।

जापायती-*(वि०)* प्रसूता। जच्चा।

जापो-*(न०)* १. सौरी। सूतिकागृह। २. सूति। प्रसव। जन्म।

जाफ-*(ना०)* बेहोशी। मूर्च्छा।

जाफरान-*(ना०)* केशर।

जाफरी-*(ना०)* बरंडे, बारी आदि के आगे लगाई जाने वाली बाँस या लोहे की पट्टियों की बंद जाली।

जाब-*(न०)* जवाब। उत्तर। **जवाब**।

जाबक-*(वि०)* समस्त। सब। *(क्रि०वि०)* सर्वत्र। सब जगह। *(अव्य०)* १. सबका

सब । ऊपर से नीचे तक । आदि से अंत तक । २. सर्वथा । बिलकुल ।

जांव करणो-(मुहा०) १. उत्तर देना । २. प्रश्न करना ।

जावड़ो-(न०) जवाड़ा । जवाड़ो ।

जावताई-(ना०) हिफाजत से रहने की व्यवस्था । दे० जावतो ।

जावतो-(न०) १. पक्का बंदोवस्त । जाब्ता । २. सम्हाल । सावधानी । ३. रक्षा । निगरानी । ४. रक्षा का प्रबंध ।

जाव पूछणो-(मुहा०) उत्तर माँगना ।

जाम-(न०) १. रात । २. क्षण । पलक । ३. प्रहर । ४. पिता । ५. पुत्र । ६. पुत्री । जाया । ७. सौराष्ट्र के नवानगर (जाम नगर) के जाड़ेजा शासक की उपाधि । ८. प्याला । (वि०) १. दाहिना । २. दोनों । ३. रुका हुआ । ४. अटका हुआ । फँसा हुआ ।

जामगरी-दे० जामगी ।

जामगी-(ना०) बंदूक या तोप दागने का पलीता । जामगरी । पलीतो ।

जामण-(ना०) १. माता । जननी । २. संतान । (न०) १. जन्म । २. मेल । मिलान । ३. दूध को जमाने के लिये उसमें डाली जाने वाली छाछ या दही । जामन ।

जामणजाई-(ना०) बहिन । भगिनी ।

जामणजायी-दे० जामणजाई ।

जामणजायो-(न०) भाई ।

जामण-मरण-(न०) जन्म-मरण । जन्मना और मरना ।

जामणी-(ना०) १. दही जमाने का पात्र । आयणी । २. रात । रात्रि । यामिनी ।

जामणो-(क्रि०) १. जमना । स्थिर होना । २. जन्म लेना । ३. होना । ४. फैलना ।

जामदानी-(ना०)१. एक प्रकार का संदूक । २. बुगचा । ३. बुगचा बनाने का कामदार कपड़ा । ४. एक प्रकार का फूल कढ़ा हुआ कपड़ा । ५. चमड़े की थैली ।

जामनेमी-(न०) इंद्र ।

जामफळ-(न०) अमरूद ।

जामळ-(न०) १. जन्म । २. स्त्री-पुरुष । नर-नारी । यामल । ३. जोड़ा । युग्म । यमल । यामल । ४. संग । साथ ।

जामळणो-(क्रि०) १. मिलना । सम्मिलित होना । २. एकमत होना । सहमत होना ।

जामात-(न०) जमाई । दामाद ।

जामा-बरदार-(न०) राजा, बादशाह के चलने के समय उनके भारी जामा को बाजू से पकड़ कर चलने वाला सेवक ।

जामिन-(न०)जमानत देने वाला । जामिन । प्रतिभू ।

जामी-(न०) १. पिता । २. यम नियमों का पालन करने वाला तपस्वी । यमी । ३. योगी ।

जामो-(न०) १. जन्म । उत्पत्ति । २. जीवन । जिंदगी । ३. पुत्र । ४. सहारा । आधार । ५. घाघरे की तरह घेरेदार (अंगरखी के साथ जुड़ा हुआ) पुरुषों के पहनने का वागा । वागो । आँगी ।

जामोत-(न०) जमाई । दामाद ।

जमोपत्त-(वि०) १. आधार प्राप्त । सहारा प्राप्त । २. (जीवन के लिये) आधार प्राप्त करने वाला । ३. जन्मा हुआ । (भू०क्रि०) १. जन्मा । २. जीवन निर्वाह किया ।

जाय-(न०) पुत्र । (ना०) १. पुत्री । २. स्त्री । ३. चमेली । ४. जूही ।

जायकट्यो-(अव्य०) एक गाली ।

जायगा-(ना०) १. जगह । स्थान । २. मकान । घर । ३. जमीन ।

जायदाद-(ना०) संपत्ति । माल-मिलकत ।

जायदाद गैर मनकूला-(ना०) अचल संपत्ति ।

जायदाद मनकूला-*(ना०)* चल संपत्ति ।
जायपीट्यो-*(अव्य०)* एक गाली ।
जायफळ-*(न०)* जायफल ।
जाया-*(ना०)* १. पुत्री । २. स्त्री ।
जायापीट्या-*(अव्य०)* एक गाली ।
जायी-*(ना०)* १. पुत्री । **जाई** । *(वि०)* जन्मी हुई ।
जायो-*(न०)*१. पुत्र । बेटा । *(वि०)* जनमा हुआ । जात ।
जायोड़ी-*(वि०)* जन्मी हुई ।
जायोड़ो-*(वि०)* जन्मा हुआ ।
जायोपीट्यो-*(अव्य०)* एक गाली ।
जार-*(न०)* पराई स्त्री से अनुचित संबंध रखने वाला व्यक्ति । व्यभिचारी ।
जार कर्म-*(न०)* व्यभिचार । **जारी** ।
जारण-*(ना०)* १. अग्नि । २. **वळीतो** । ईंधन । **ईंधणी** । ३. जलाने का भाव या क्रिया ।
जारणी-*(ना०)* १. अन्य पुरुष से अनुचित संबंध रखने वाली स्त्री । दुश्चरित्रा । जारिणी । व्यभिचारिणी । कुलटा । २. ईंधन । ईंधन की लकड़ी । **ईंधणी** ।
जारणो-*(क्रि०)* १. पचाना । हजम करना । २. सहना । ३. जलाना । ४. मारना ।
जारत-*(ना०)* १. यात्रा । २. तीर्थ यात्रा । तीर्थाटन । जियारत । ३. दर्शन । तीर्थ-दर्शन ।
जारात-*(ना०)* जाहिरात । प्रसिद्धि । *(वि०)* प्रसिद्ध । **छावो** ।
जारी-*(ना०)* व्यभिचार । पर स्त्री गमन । २. पर पुरुष गमन । जारकर्म । *(वि०)* प्रचलित । चालू ।
जाळ-*(ना०)* जाल । पीलू वृक्ष । *(न०)* १. फंदा । जाल । २. धोखा । षड्यंत्र । ३. समूह । ४. जाला (मकड़ी का) । ५. माया का बंधन । माया जाल । ६. कर्म बंधन । ७. किसी वस्तु के ऊपर छाई हुई झिल्ली । परत । ८. आँख की पुतली के ऊपर छाने वाली झिल्ली । **जाळो** ।
जाळउर-*(न०)* जालोर नगर ।
जाळण-*(ना०)* १. अग्नि । २. ईंधन । **ईंधणी** । **ईनणी** । **वळीतो** ।
जालम-*(वि०)* जालिम । अत्याचारी । जुल्म करने वाला ।
जाळवण-*(ना०)* १. अग्नि । २. ईंधन । ३.जाल वृक्ष । पीलू वृक्ष । **जाळ** । ४.जाल-वृक्ष की लकड़ी । ५. हिफाजत । निगरानी । **संभाळ** । *(वि०)* जलाने वाला ।
जाळवणी-*(ना०)* १. देखभाल । सम्हाल । २. सुरक्षा । ३. अग्नि । ४. ईंधन ।
जाळवणो-*(क्रि०)* १. सम्हालना । सुरक्षित रखना । देखभाल करना । २. सुरक्षित रहना । सम्हल कर रहना । ३. जलाना ।
जाळसाज-*(वि०)* जालसाजी करने वाला । धोखेबाज । **दगाबाज** ।
जाळसाजी-*(ना०)* धोखाबाजी । **दगा-बाजी** ।
जाळंधर-*(न०)* १. जालोर नगर का एक नाम । २. नाथ सम्प्रदाय के एक सिद्ध योगी । जलंधर नाथ ।
जाळानळ-*(ना०)* १. अग्नि । आग । २. अग्नि की ज्वाला । **झाळ** ।
जालिम-दे० जालम ।
जाळियो-*(न०)* जाल वृक्ष का फल । **पीलू** ।
जाळी-*(वि०)* १. जालसाज । २. बनावटी । जाली । —*(ना०)* १. छिद्रवाली कोई परत । जाली । २. झिल्ली । ३. लट्टू फिराने की डोरी । ४. काटने वाले ऊँट के मुँह पर बाँधने की रस्सी से बनी हुई जालीदार टोपी । ५. एक प्रकार का कवच । ६. छिद्रोंवाला एक कपड़ा । ७. झरोखा । खिड़की । **बारी** ।
जाळीचाँ-*(अव्य०)* धोखे बाजों के । जाली लोगों के ।

जाळीदार-(वि०) जाली वाला।

जाळीसधरा-(ना०) मारवाड़ का जालोर प्रदेश। जालोरी।

जाळो-(न०) १. मकड़ी आदि का जाल। २. आंख का एक रोग। जाला। मोतिया। ३.संगठन। ४. समूह। ५. जमे हुए धुंएँ का जाल समूह।

जाळोर-(न०) मारवाड़ का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। जालोर।

जाळोरी-(न०) १. जालोर के आसपास का वह भाग जिसमें मारवाड़ी भाषा की जालोरी बोली का प्रचलन है। २. जालोर के आस पास का या जालोर जिले का प्रदेश। (वि०) १. जालोर या जालोरी का। २. जालोर से संबंधित।

जाव-(न०) वह खेत जिसमें कुएँ या नहर से सिंचाई की जाती हो। [राजस्थान में (एक फसली) वर्षा द्वारा उत्पन्न फसल की भूमि को खेत कहते हैं और कुएँ या नहर की सिंचाई वाली दो फसली भूमि को जाव कहते हैं] २. अलता। महावर। जावक। ३. मेंहदी।

जावक-(वि०) १. बाहर भेजा हुआ। निर्यात। २. बाहर जाने वाला (माल)। (ना०) १. व्यय। खर्च। २. खर्च में लिखी हुई रकम। उधार। ३. महावर। अलता।

जावणियो-(वि०) जाने वाला। जाणवाळो। जावणवाळो।

जावणो-(क्रि०)१. जाना। प्रस्थान करना। दूर होना। जाणो। २. कम होना। घटना। बीतना। ३. नष्ट होना। ४.नुकसान होना। ५. मरना। ६.गायब होना।

जावरो-(वि०) वृद्ध। बूढ़ा।

जावसी-दे० जावैला।

जावंतरी-(ना०) जावित्री।

जावांला-(भ० क्रि० ब० व०) १. जायेंगे। २. जायेंगी।

जावित्री-(ना०) जायफल के ऊपर का सुगंधिदार छिलका। जावंतरी।

जावेल-(न०) चमेली का तेल।

जावैला-(भ०क्रि०)१. जायेगा। २.जायेगी।

जास-(क्रि०वि०) जिससे। (सर्व०) जिस। (ना०) १. साहस। हिम्मत। २. धीरज। खटाव।

जासती-(वि०) १. अधिक। (ना०) १. ज्यादती। २. अत्याचार। जुल्म। ३. जबरदस्ती। बलात्।

जासाँ-दे० जावांला।

जासी-दे० जावैला।

जासूस-(न०) गुप्तचर। भेदियो।

जासूं-(भ०क्रि०)१. जाऊंगा। २. जाऊंगी।

जास्ती-दे० जासती।

जाहनवी-दे० जाह्नवी।

जाहर-(वि०) लोकज्ञात। प्रकट। जाहिर।

जाहरणवी-दे० जाह्नवी।

जाहरपीर-(न०) १. एक पीर। २. चौहान गोगा। लोक देवता गोगा पीर।

जाहराँ-(वि०) जाहिर। प्रकट। (क्रि०वि०) १. प्रकट रूप से। जाहिरा। २. जब। जिस समय।

जाहरात-दे० जारात।

जाहराँ तेग-(वि०) १. तलवार चलाने में प्रसिद्ध। २. वीर।

जाहिर-दे० जाहर।

जाही-दे० जासी।

जाह्नवी-(ना०) गंगा नदी।

जाँ-(क्रि०वि०) १. जहाँ। २. जब। (सर्व०) १. जिन। २. जिनके। ३. जो। ४. उन।

जाँखळ-(न०) कलेवा। नाश्ता। झोंकळ। सिरावण।

जाँगड़-(न०) १. एक मुसलमान जाति। मुसलमान ढोली। २. यशोगान करने

वाला व्यक्ति । ३. जंग में वीरता की प्रशस्तियाँ गाकर वीरों को प्रोत्साहन देने वाला गायक । ४. ढाली । ५. ढाढ़ी । ६. योद्धा । (वि०) वीर । बहादुर ।

जाँगड़ियो–दे० जांगड़ ।

जाँगड़ो–(न०) डिंगल का एक छंद । दे० जाँगड़ ।

जाँगळ–(न०) राजस्थान में बीकानेर जिले का एक प्रदेश ।

जाँगी–(न०) १. नगारा । २. बड़ा ढाल । ३. रण वाद्य । ४. छोटी हर्रे की एक किस्म । ५. छोटी किस्म की हर्रे ।

जाँगी हरड़े–(ना०) एक प्रकार की छोटी हर्रें । **हीमज** ।

जाँघ–(ना०) जंघा । **साथळ** ।

जाँघियो–(न०) १. तंग मोहरी का घुटनों तक का एक पजामा । कच्छा । जांघिया । २. पजामा ।

जाँच–(ना०) १. देखभाल । निरीक्षण । २. परख । परीक्षा । ३. खोज ।

जाँचणो–(क्रि०) १. जाँचना । नपासना । २. परखना । परीक्षा करना ।

जांझर–(न०) स्त्रियों के पैरों में पहनने का बारीक घूंघरूदार एक गहना । झांझर ।

जाँझरके–(अव्य०) प्रातःकाल में । प्रभात वेला में ।

जांझरको–(न०) प्रातःकाल । प्रभात । उषाकाल ।

जाँझरिया–(न०ब०व०) बच्चे के पाँवों में पहनने की छोटी जांझर जोड़ी ।

जाँट–(ना०) शमीवृक्ष । खेजड़ी ।

जाँतरो–(न०) तार को खींच कर पतला बनाने का एक यंत्र । तार पट्टी ।

जाँदा–(न०ब०व०) १. कष्ट । तकलीफ । २. वियोग । जुदाई । ३. दूरी । भेद । अंतर । ४. लालसा । ५. अभिलाषा । तीव्र इच्छा ।

जाँदा पड़णो–(मुहा०) १. मन की मन में ही रहना । मन की पूरी न होना । २. कष्ट भुगतना । तकलीफ उठाना । ३. वियोग पड़ना । ४. इच्छा पूरी नहीं होना । ५. कमी होना ।

जाँबाज–(वि०) १.आत्मबली । २.जवाँ मर्द ।

जाँबाजी–(ना०) जान की बाजी । आत्म बलिदान । २. जवाँ मर्दी ।

जांबू–(न०) १. सौराष्ट्र का लींबड़ी प्रदेश । २. जंबूफल । जामुन ।

जाँबो–दे० जाँभो ।

जाँभेल–(न०) तारामीरा का तेल । **जांबो तेल** ।

जाँभो–(न०)सरसों की जाति का पर सरसों से अधिक तीखा और कड़ुआ तिलहन । तारामीरा ।

जाँभोजी–(न०) पीपासर (राजस्थान) में जन्मे बिसनोई (जाति) संप्रदाय के प्रवर्तक एक सिद्ध पुरुष ।

जाभो तेल–(न०) तारामीरा का तेल । **जांभेल** ।

जाँवण–(न०) जामन । जावन । **जामण** ।

जाँवळणो–दे० जामळणो ।

जिकण–(सर्व०) 'जिको' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहिले प्राप्त होता है । जिस । (वि०) जिस ।

जिकर–(न०)१. जिक्र । चर्चा । बातचीत । **झिकर** । २. कथन ।

जिका–(सर्व०) वह ।

जिकाँ–((सर्व०ब०व०)१.जिन्हें । २.जिन्होंने । ३. जिन । ४. उन ।

जिकाँरै–(सर्व०ब०व०) जिनके । **जिणाँरै** ।

जिकाँरो–(वि०ब०व०) जिनका ।

जिकी–(सर्व०) वह । (वि०) जो ।

जिके–(सर्व०) १. जिस । २. उस । ३. **जो** ।

जिको–(सर्व०) वह । (वि०) **जो** ।

जिग–(न०) यज्ञ ।

जिगन–(न०) यज्ञ ।
जिगर–(न०) १. कलेजा । २. दिल । मन । ३. साहस । हिम्मत ।
जिगरी–(वि०) प्यारा । प्रिय ।
जिडो–(वि०) जितना । जित्तो । जितरो ।
जिढ–(ना०) जिद्द । हठ ।
जिढी–(वि०) जिद्दी । हठी ।
जिण–(सर्व०) १. जिसने । २. जिस । ३. जिसके ।
जिणगी–(क्रि०वि०) जिस ओर । (वि०) जिसकी ।
जिणथी–(सर्व०) जिस (व्यक्ति) से । जिससे ।
जिणनै–(सर्व०) जिसको ।
जिण परि–(अव्य०) १. जिससे । २. जिस प्रकार । ३. जिस पर । ४. जिसके बाद ।
जिणरी–(सर्व०) जिसकी ।
जिणरो–(सर्व०) जिसका ।
जिणसूं–दे० जिणथी ।
जिणंद–(न०) जिनेन्द्र । तीर्थंकर ।
जिणि–(सर्व०) जिस ।
जिणियारी–(ना०) माता ।
जिणो–दे० जणो ।
जितणो–(वि०) जितना । जितरो ।
जित-तित–(क्रि०वि०) जहाँ तहाँ । जठै तठै ।
जितरै–(क्रि०वि०) १. जब तक । २. जितने में ।
जितरो–(वि०) जितना । जित्तो ।
जितै–(क्रि०वि०) १. जितने में । २. जब तक । जठै तांई ।
जित्ता–(वि०ब०व०) जितने । जितरा ।
जितो–(वि०) जितना । जितरो ।
जित्तो–(वि०) जितना । जितरो ।
जिद–(ना०) हठ । दुराग्रह ।
जिद्दी–(वि०) जिद्दी । हठी । दुराग्रही ।
जिन–(न०) १. विष्णु । २. बुद्ध । ३. सूर्य । ४. तीर्थंकर । ५. मुसलमान भूत ।
जिनगानी–दे० जिंदगानी ।
जिनगी–(ना०) जिंदगी ।
जिनड़ी–दे० जिनगी ।
जिनमत–(न०) जैन धर्म ।
जिनमंदिर–(न०) जैन मंदिर ।
जिनवर–(न०) तीर्थंकर ।
जिनस–(ना०) १. चीज । वस्तु । जिन्स । २. अदद । नग । ३. प्रकार । भाँति । ४. खाका । ढाँचा ।
जिनहाँ–(सर्व०ब०व०) १. जिन्होंने । २. जिनके । ३. जिन ।
जिनहाँ हंदियाँ–(वि०ब०व०) १. जिनका । २. जिनकी ।
जिना–(न०) व्यभिचार ।
जिनाकारी–(ना०) व्यभिचार ।
जिनात–(ना०) सामर्थ्य । हैसियत । ताकत ।
जिनावर–दे० जनावर
जिनाँ–दे० जिनहाँ ।
जिनाँ हंदा–दे० जिनहाँ हंदियाँ ।
जिनाँ हंदियाँ–दे० जिनहाँ हंदियाँ ।
जिभै–(न०) गला काट कर प्राण लेने की क्रिया । जबह । जिबह ।
जिभ्या–(ना०) जिह्वा । जीभ ।
जिम–(क्रि०वि०) १. जिस तरह । जिस प्रकार । (अव्य०) ज्यों । जैसे । जैसे कि । ज्युं । ज्युंकै ।
जिमक्कड़–(वि०) खूब खाने वाला ।
जिम-तिम–(क्रि०वि०) जैसे-तैसे । जिस किसी प्रकार । ज्युं-त्युं ।
जिमावणो–(क्रि०) खिलाना । भोजन कराना । खवावणो ।
जिम्मेवार–(न०) उत्तरदायी ।
जिम्मेवारी–(ना०) उत्तरदायित्व ।
जिय–(न०) जीव ।
जियान–(क्रि०वि०) जिस प्रकार । जैसे । ज्युं ।
जियारत–(ना०)१. तीर्थ यात्रा । २. मुसलमानों की मक्के, मदीने की यात्रा ।

जियारी–दे० जीवारी।

जियाँ–(सर्व०व०व०)१. जिनका। २.जिनकी। ३. जिन्होंने। जिणाँ। (श्रव्य०) जैसे कि।

जियाँकळो–(वि०) १. जिस प्रकार का। जैसा। जैड़ो। जिसो। २. उस प्रकार का। वैसा। अैड़ो। वैड़ो। विसो। २. जितना। जित्तरो जित्तो।

जिरह–(न०) कवच। बख्तर। (ना०) १. ऐसी पूछताछ जो सच्ची बात का पता लगाने के लिये की जाय। २. प्रश्न जो प्रतिपक्षी या उसका वकील बयान की सच्चाई जाँचने के लिये करे। ३ हुज्जत।

जिराफ (न०) लंबी गरदन का एक अफ्रीकी पशु।

जिलै–(ना०) ओप। चमक। जिला।

जिलो–(न०) सूबे का वह भाग जो कलेक्टर के अधीन हो। जिला।

जिल्द–(ना०) १. पुस्तक की एक प्रति। २.पुस्तक का एक भाग। खंड। ३.पुस्तक की रक्षा के लिये ऊपर नीचे चढ़ाई हुई दफ्ती। पूठा।

जिल्दसाज–(न०) पुस्तकों की जिल्दें बाँधने वाला।

जिवड़ो–(न०) जीव। जी। (वि०) १. जैसा। २. जितना।

जिवावणो–दे० जिलाड़णो।

जिसड़ो–दे० जिसो।

जिसन–(न०) १. इंद्र। जिष्णु। २. अर्जुन। जिष्णु। ३. सूर्य। ४. श्रीकृष्ण।

जिसम–(न०) शरीर। जिस्म। डील।

जिसी–(वि०)जैसी। जैड़ी।

जिसो–(वि०) १. जैसा। जैड़ो। २. समान।

जिस्यान–(क्रि०वि०) जिस प्रकार। जैसे। (वि०) जैसा।

जिस्यो–दे० जिसो।

जिश्राँ–(श्रव्य०) जिस तरह। जैसे। ज्युं के।

जिंद–(न०) १. भूत। २. मुसलमान भूत।

जिंदगाणी–(ना०) जिंदगी। जीवन। जिंदगानी। जिनगानी।

जिंदगी–(ना०) १. जीवन। २. जीवन काल। आयु।

जिंदो–(वि०) जीवित। जीवतो।

जी–(श्रव्य०) १. सम्मान सूचक एक शब्द। २. आदर सूचक प्रत्युत्तर का एक शब्द। ३. गुरुजनों के प्रति उच्चारण किया जाने वाला स्वीकृति व समर्थन आदि का सूचक शब्द। ४. पिता, पितामह, मातामह आदि गुरुजनों के लिये सम्मान सूचक शब्द। जी। जीसा। आपजी। ५. व्यक्ति के नाम के अंत में लगने वाला आदर वाचक शब्द। जी। यथा—किसनजी, रामदेवजी, पाबूजी। (न०) १. जीव। प्राण। २. आदर सूचक प्रत्युत्तर। ३. मन। दिल। ४. पिता। जीसा। आपजी। ५. माता।

जीकारो–(न०) १. 'जी' शब्द का बोधक पद। २. किसी के नाम के अंत में लगाया जाने वाला सम्मान सूचक 'जी' शब्द का भाव। जैसे रामचन्द्रजी।

जीखा–(न०) वर्षा की बारीक बूंदें। (ना०) पकाई हुई ईंट को घिस कर बनाया हुआ बारीक चूर्ण या बुरादा।

जीखेस–(न०) १. शिव वाहन। नंदी। २. बैल। वृषभ।

जीजाजी–(न०) बड़ी बहन का पति। बहनोई।

जीजी–(ना०) बड़ी बहिन।

जी-जोड़–(श्रव्य०) जी-जान से। पूरी शक्ति से।

जीण–(ना०) १. एक प्रकार की विशेष बुनावट का मोटा वस्त्र। २. घोड़े की काठी। पलाण। चारजामा। जीन। दे० जीणमाता।

जीणगर-(न०) १. घोड़े की जीन बनाने वाला कारीगर। जीनसाज। जीनगर। २. मोची।

जीणपोस-(न०) जीन के ऊपर डाला जाने वाला कपड़ा। जीनपोश।

जीणमाता-(ना०) शेखावाटी की एक प्रसिद्ध लोकदेवी।

जीणसाळ-(न०) जीनसाल। कवच।

जीत-(ना०) विजय। जय। फतह।

जीतणियो-(वि०) जीतने वाला।

जीतणो-(क्रि०) विजय पाना। जीतना। फतह होना।

जीतब-(न०) १. जीवन। जिंदगी। २. जीवन-स्थिति। ३. जीवन-यात्रा।

जीतबा-(न०) १. जीव। २. जीवात्मा।

जीती-(ना०) १. जीवन साफल्य। सफल जीवन। २. विजय। जीत।

जीप-(ना०) १. जीत। विजय। २. एक जाति की मोटर गाड़ी।

जीपणो-(क्रि०) जीतना। विजयी होना।

जीभ-(ना०) १. जिह्वा। जीभ। रसना। २. वाणी। जबान। ३. कलम की नोक। ३. बूट पहिनने में प्रयुक्त एक लोह की पट्टी।

जीभ जाडी पड़णो-(मुहा०) मृत्यु के समय जीभ का मोटा हो जाना। मरणासन्न होना।

जीभाळ-(न०) राक्षस। (वि०) १. लंबी जीभ वाला। २. बकवादी। जीभोटो।

जीभी-(ना०) जीभ का मैल उतारने का एक उपकरण।

जीभोटा-(न० ब० ब०) व्यर्थ की बातें। बकवाद।

जीभोटो-(वि०) १. व्यर्थ बकने वाला। बकवादी। २. लबार। गप्पी। असभ्य। ३. जबान करने वाला। जबानदराज। वाचाल।

जीमण-(न०) १. भोजन। खाना। आहार। २. परोसा। जेमन। थाळ। कांसो।

जीमणवार-(न०) ज्योनार। भोज।

जीमणियार-(वि०) १. निमंत्रण पर भोजन करने को आये हुए। २. बहुत खाने वाला। दे० जीमणियाळ।

जीमणियाळ-(वि०) बैलगाड़ी में दाहिनी ओर जोता जाने वाला (बैल)।

जीमणी-(वि०) दाहिनी।

जीमणो-(वि०) दाहिनी ओर का। दाहिना। (क्रि०) भोजन करना। जीमना। खाना।

जीमाड़-(वि०) बहुत खाने वाला। खाऊ।

जीमाड़णो-(क्रि०) खिलाना। भोजन कर वाना।

जीमावणो-दे० जीमाड़णो।

जीमूत-(न०) १. बादल। मेघ। २. पर्वत। ३. सूर्य।

जीरण-(वि०) जीर्ण। पुराना। (ना०) ज्वार। जुआर धान्य।

जीरणो-दे० जीरवणो।

जीरवणो-(क्रि०) १. सहन करना। बरदाश्त करना। गम खाना। पचाजाना। २. धीरज रखना। ३. पच जाना। हजम करना।

जीराण-(न०) श्मशान। मसाण।

जीरो-(न०) जीरा। जीरक।

जीरोई-(ना०) दरी।

जीव-(न०) १. प्राण। शरीर का चेतन तत्त्व। जीव। २. प्राणी। जीव। जीवधारी। ३. मन। दिल। जी। ४. प्रेम। ५. मोह। ६. चित्त। ध्यान। ७. खाट की एक बुनाई जिसका मध्य भाग जीव संज्ञक होता है। ८. कीड़ा। कीट।

जीव-ऊकाळो-(न०) १. क्लेश। दुख। २. कुढ़न। ३. मनस्ताप।

जीव-जड़ी-(ना०) १. जीवनमूरि। जीवन की जड़ी। २. जीवन का आधार। ३. प्रेमी। ४. पति।

जीव-जंत-*(न०)* कीड़ा-मकोड़ा। जीव-तंतु।
जीव-जंतु-दे० जीव-जंत।
जीवड़ो-*(न०)* १. जीव। २ आत्मा। ३. जी। मन। ४. कीड़ा-मकोड़ा। छोटा कीड़ा। ५. जंतु। जीव-जंतु।
जीवण-*(न०)* १. जीवन। २. आयुष्य। उम्र। ३. प्राण। जीवन।
जीवणधन-*(न०)* १. ईश्वर। परमात्मा। २. स्वामी। पति। जीवन धन।
जीवणम्रत-*(वि०)* १. जो जीवित ही मृत समान हो। जीवन्मृत। २. जिसका जीवन सार्थक न हो। *(न०)* जीवन और मृत्यु।
जीवण-साथण-*(ना०)* जीवन-संगिनी। पत्नी।
जीवणो-*(क्रि०)* १. जीना। साँस चलना। २. जीवित रहना। ३. जीवन गुजारना।
जीवत औसर-दे० जीवत खरच।
जीवत खरच-*(न०)*जीवित अवस्था में किया जाने वाला अपना ही मृतक भोज। वह मृत्यु-भोज जो अपनी मृत्यु होने के पहले (जीवितावस्था) में स्वय के द्वारा कर लिया जाता है।
जीवतदान-*(न०)* १. मारे जाने या मरने वाले की कीजाने वाली प्राण रक्षा। प्राणदान। जीवनदान। २. जीवित रहने का साधन। ३. वह दान या सहायता जो किसी के जीवन भर का सहारा वन सके।
जीवत-म्रत-*(वि०)* १. (सार्थक) मृत्यु को जीवन सेश्रेष्ठ समझने वाला। २. जीवित ही मृत समान। *(न०)* जीवन और मृत्यु।
जीवतसंभ-*(न०)* १. वीर गति प्राप्त करने पर्यन्त रुद्र रूप से लड़ते रहने वाला वीर योद्धा। २. जीविन (प्राण) रहने तक रुद्र के समान शत्रु संहार करते रहने वाला वीर पुरुष। ३. जीवित ही रुद्र गति को प्राप्त होने वाला वीर योद्धा। *(वि०)* १. विजयी। २. वीर गति प्राप्त।
जीवती-*(वि०)* १. जीवित। २. सजीव।
जीवतेजीव-*(अव्य०)* १. जीवित रहते हुए। जीवतावस्था में। जिंदगी में। २. जिंदगी है जब तक।
जीवतो-*(वि०)*१.जीता। जिंदा। जीवित। २. जीव वाला। सजीव। ३. परिमाण (तौल-नाप आदि) से कुछ अधिक।
जीवतोड़-*(वि०)* अत्यधिक कठिन (परिश्रम) जीतोड़।
जीवन-दे० जीवण
जीवन चरित-*(न०)*१. किसी के जीवन का वृत्तान्त। जीवन-चरित्र। २. वह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन का वृत्तान्त लिखा हुआ हो। ३. एक साहित्यिक विधा।
जीवन चरित्र-दे० जीवन चरित
जीवनी-दे० जीवन चरित
जीवरखो-*(न०)* १. किला। दुर्ग। २. किले में बुर्ज पंक्ति के बीच में उठा हुआ स्थान जिसमें युद्ध का सामान रहता है और योद्धा लोग रहते हैं। ३ शरणागतों को किले में छिपा रखने का स्थान। संरक्षण स्थान। ४. विद्रोही व शत्रु राजा, सरदार आदि को किले में कैद रखने का स्थान। ५. गुफा। ६. घर। ७. चोर, डाकू आक्रमणकारी इत्यदि से बचने के लिए सुरक्षित स्थान। ८. जीवन रक्षा। ९. शरीर।
जीवहिंसा-*(ना०)* १. जान-अनजान में होने वाली प्राणी हिंसा। २. प्राणियों का वध। हत्या।
जीवाजूण-*(ना०)* १. जीवयोनि। २. जीव-जंतु। प्राणीमात्र। मनुष्य, पशु, पक्षी इत्यादि प्राणी।
जीवाड़णो-*(क्रि०)* १. जीवित करना। २. मृत्यु से बचाना। ३. संकट से बचाना।
जीवाणो-दे० जीवाड़णो।

जीवाणी–(न०) १. पानी वाले जीव । सूक्ष्म जल -जीव । २. पानी को छानने पर छन्ने में रह गये जीव । ३. जीवों वाला पानी ।
जीवाणु–(न०) १. जीवयुक्त अणु । २. अणु के समान सूक्ष्म जीव ।। ३. जीवाणी । पानी वाले जीव । ४. जीव वाला पानी ।
जीवात–(ना०) १. सूक्ष्म जंतु या कीड़ों का समूह । २. अनाज में पड़ने वाले जंतु । ३. जीवात्मा । जीव ।
जीवारी–(ना०) १. जीवन का साधन । २. भूख प्यास आदि के (प्राणहरण जैसे) संकट से उद्धार । प्राण जाने की स्थिति का निवारण । भरण–पोषण । निर्वाह । जीविका । ४. जीव । प्राण । ५. जीवन । जिंदगी । ६. आश्रय । ७. परस्पर के संबन्धों की मधुरता ।
जीवावणो–दे० जीवाड़णो ।
जीवाहन–(न०) इन्द्र । जीमूतवाहन ।
जी-सा–(अव्य०) १. पिता या पितामह आदि गुरुजनों के लिये आदर सूचक संबोधन । (न०) पिता ।
जीह–(ना०) जिह्वा । जीभ ।
जीहा–दे० जीह ।
जीं–(वि०) जिस । जिण । –(सर्व०) जिसने । जिणँ ।
जींखा–दे० जीखा ।
जींगण–(न०) जुगनू । खद्योत । आगियो ।
जींजणियाळ -(ना०) जींजणी और बेरी वृक्ष की ओरण (रक्षित वन क्षेत्र) में रहने वाली देवी । २. करणी देवी ।
जींजणियाळी–दे० जींजणियाळ ।
जींजणी–(ना०) एक क्षुप । २. कंटीली झाड़ी ।
जींजा–(न०ब०व०) झाँझ, ताल या मजीरों की जोड़ी ।
जींझणियाळी–दे० जींजणियाळ ।
जींनै–(सर्व०) जिसको ।
जींवणी-कानी–(अव्य०) दाहिनी ओर ।
जींवणी-दिस–(अव्य०) दाहिनी ओर ।
जींवणो-(वि०) दाहिना । जीमणो ।
जींसूं-(सर्व०) जिससे ।
जु–(अव्य०) एक पादपूरक अव्यय । २. एक संयोजक अव्यय । कि । ३. यदि । जो । अगर । –(सर्व०) १. जो । २. वह ।
जुअळ–(न०) युगल । जोड़ा । युग्म ।
जुआजुआ–(वि०) जुदा-जुदा । अलग-अलग । भिन्न-भिन्न ।
जुआ-जुई–(ना०) विवाह के अवसर पर वर-वधू के परस्पर जुआ खेलने की एक प्रथा ।
जुआड़ो–(न०) बैलगाड़ी के आगे लगा रहने वाला एक काष्ठ उपकरण जो बैल-गाड़ी को खींचने के लिए बैलों के कंधों पर रखा जाता है । जुआ । जुआठो ।
जुआर–(ना०) एक बरछट अनाज । ज्वार । जवार ।
जुआरी–(न०) जुआ खेलने वाला । द्यूत-कार । द्यूतविद ।
जुई–(वि०) जुदी । अलग ।
जुओ–(वि०) जुदा । अलग । (न०) जुआ । द्यूत ।
जुखाम–(न०) सरदी से होने वाला एक रोग जिसमें नाक तथा मुँह से कफ निकलता है । जुकाम । श्लेष्म । सळेखम । ठाढ । सरदी ।
जुग–(न०) १. युग । बारह वर्ष का काल । २. जमाना । जुग । काल । ३. शास्त्रा-नुसार काल का एक दीर्घ परिमाण जो सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के नाम से विभाजित है । ४. जोड़ा । युग्म ।
जुग-जमारो–(न०) लंबा समय । वर्षों के वर्ष । (अव्य०) बहुत वर्ष पहले ।
जुगजुगाँ–(अव्य०) अनेक युगों तक ।
जुगजुगी–(ना०) गले का एक आभूषण । धुगधुगी ।

जुगत-(ना०) १. युक्ति । प्रकार । रीति । २. युक्ति । तर्क । दलील । ३. उपाय । तदबीर । ४. करामात । ५. कौशल । निपुणता । ६. व्यवस्था । तैयारी । सजावट । ७.रमणीयता । ८.समानता । मेल ।
जुगती-दे० जुगत ।
जुगतो- (वि०) योग्य ।
जुगनूं-(न०) एक उड़ने वाला चमकीला कीड़ा । खद्योत । जींगण ।आगियो ।
जुगम-(वि०) १. युग्म । जोड़ा । युगल । २. दो ।
जुगराज-(न०) युवराज ।
जुगल-(वि०) १. दो । २. दोनों । (न०) जोड़ा । युगल ।
जुगलकिशोर-(न०)युगलकिशोर। श्रीकृष्ण । २. राधाकृष्ण ।
जुगलजोड़ी-(ना०) १. जोड़ी । जोड़ा । युगल । २. मित्रद्वय । ३. पति-पत्नी । दम्पति ।
जुगळी-(ना०) १. साथ रहने वाले व्यक्ति । २. जोड़ी । ३. मित्रमंडली ।
जुगवर-(न०)युग का श्रेष्ठ पुरुष । युगपुरुष
जुगाड़-(ना०) १. आर्थिक सामर्थ्य । २. हैसियत । सामर्थ्य । ३. व्यवस्था । ४. प्रबन्ध ।
जुगाद-(अव्य) युग का आदि । युगादि । (वि०) प्राचीन । पुराना (क्रि०वि०) प्राचीन समय से । युग के आदि से ।
जुगाळी-दे० ओगाळ ।
जुगोजुग-(अव्य०) युग प्रति युग । युग-युग । प्रतियुग । प्रतियुग में ।
जुज-(न०) १.युद्ध । २.अंग । अश । (वि०) थोड़ा ।
जुजठळ-(न०) युधिष्ठिर । (काव्योक्त नाम)
जजदान-(ना०) १. शृंगार पेटी । २. चित्र पोथी । एल्बम ।
जुरवो-(न०) ऊंट पर कसी जाने वाली एक छोटी तोप ।
जुजवळ-(ना०)खुलेपत्रों के हस्तलिखित ग्रन्थों में लेखन के दाहिने-बांयें दोनों ओर के उपान्त (बोर्डर) की दोहरी लाल लकीरें खींचने की लोहे या पीतल की दोनों ओर (ऊपर-नीचे) दो नोक वाली एक कलम ।
जुजाण-(न०) युद्ध ।
जुजीठळ-दे० जुजठळ ।
जुझ-(न०) युद्ध ।
जुझाऊ-(वि०) १. युद्ध सम्बन्धी । २. युद्ध करने वाला । जूझने वाला । वीर । जूझार ।
जुझार-दे० जूझार ।
जुझ्झ-(न०) युद्ध ।
जुट-(ना०) १. गुट । दल । २. थोक । लाट । ३. दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ । ४. मिलान । ५. दिक्कत । परेशानी । जुठ ।
जुटणो-(क्रि०) १. युद्ध में प्रवर्त होना । २. युद्ध करना । ३. मिलना । ४ जुटना । जुड़ना । संलग्न होना । ५. लगना । चिपटना । ६. किसी काम में सम्मिलित होना । ७. एकत्र होना ।
जुटाणो-(क्रि०)१. सलग्न करना । जोड़ना । २. मिलाना । ३. किसी को किसी काम में लगाना । ४. एकत्रित करना ।
जुटाळ-(न०) सिंह । (वि०) १. वीर । बहादुर । २ जुटाने वाला ।
जुटावणो-दे० जुटाणो ।
जुठ-(ना०) दिक्कत । परेशानी । तकलीफ ।
जुड़णो-(क्रि०) १. कविता का बन पड़ना । २. जुड़ जाना । जुड़ना । ३. युद्ध में शामिल होना । ४. भिड़ना । लड़ना । ५. प्राप्त होना । मिलना । ६. इकट्ठा होना । जमा होना । शामिल होना ।
जुड़वाई-(ना०) १. जोड़ने का काम । २. जोड़ने की मजदूरी ।
जुड़मो-(वि०) जुड़ा हुआ ।
जुड़वों-दे० जुड़मो ।

जुड़ाई–दे० जोड़ाई ।

जुग–(ग्रव्य०) १. ऊंट को विठाने के समय उच्चार किया जाने वाला शब्द । **जुंग** । (न०) ऊंट । **जूंग** ।

जुत–(वि०) युक्त । युत ।

जुतणो–(क्रि०) १. किसी काम में प्रवर्त होना । २. वैल, घोडे ग्रादि का गाड़ी ग्रादि को खींचने के लिए उसमें जुड़ना । ३. काम में साथ देना ।

जुदाई–(ना०) ग्रलग होने का भाव । पृथकता। वियोग । जुदापन। **ग्रळगापणो** । **जुदापणो** ।

जुदो–(वि०) १. ग्रलग । जुदा । २. ग्रतिरिक्त । ग्रलावा । सिवाय । ३. ग्रनोखा ।

जुध–(न०) युद्ध । लड़ाई ।

जुध ग्रघायो–(वि०) १. युद्ध से तृप्त । २. युद्ध में जिसके घाव नहीं लगे हों । ३. जो शक्ति भर लड़ा हो । ३. घावों से पूर्ण । ५. युद्ध से ग्रतृप्त ।

जुध-जूट–(वि०) वह जिसका जीवन युद्धों से ही जुटा रहता है । युद्ध-जुष्ट ।

जुधठळ–(न०) १. युधिष्ठिर । २. युद्धस्थल ।

जुधणो–(क्रि०) युद्ध करना । लड़ना ।

जुधथंभ–(न०) युद्ध में स्तम्भ रूप से खड़ा रह कर लड़ने वाला वीर । युद्ध में पीछे पाँव नहीं देने वाला ग्रडिग वीर ।

जुधथिर–(न०) युधिष्ठिर । (वि०) युद्ध में स्थिर रहने वाला ।

जुधवंध–(न०) १. व्यूह रचना । २. व्यूह । ३. योद्धा ।

जुध मादळ–(न०) १. युद्ध का ढोल । २. युद्ध का हाथी ।

जुध रीझल–(वि०) १. युद्ध रसिक । २. युद्धप्रिय ।

जुधाण–(न०) १. जुध का वहुवचन रूप । ग्रनेक युद्ध । २. जोधपुर नगर का एक काव्यगत नाम ।

जुधाणनाथ–(न०) जोधपुर का राजा । जोधपुर नरेश ।

जुन्हाई–(ना०) १. ज्योत्सना । चाँदनी । २. प्रकाश । रोशनी ।

जुपणो–(क्रि०) १. जुतना । २. प्रज्वलित होना । लगना । **सुलगणो** ।

जुमलै–(न०) १. योग । कुल योग । (वि०) सव । कुल ।

जुमलो–(न०) १. वाक्य । जुमला । २. भीड़ । (वि०) सव । जुमला ।

जुमै–(क्रि०वि०) जिम्मा में । जिम्मेदारी में । देखरेख में । सुपुर्दगी में ।

जुमो–(न०) जवावदारी । जोखमदारी । जिम्मा ।

जुयळ–(वि०) १. ग्रलग। पृथक् । २. दोनों । ३. दो । (न०) १. जोड़ा । युगल । २. दोनों पाँव या हाथ ।

जुर–(ना०) १. कटोरी के ग्राकार की डंडीदार द्रव पदार्थ छानने की चलनी । २. हलका ज्वर । ३. ज्वर । ताप ।

जुरजोजन–(न०) दुर्योधन ।

जुरजोण–(न०) दुर्योधन ।

जुरजोधण–(न०) दुर्योधन ।

जुरड़ो–(न०) १. छेद । विवर । २. कांटों की वाड़ में किया हुग्रा ग्रविध मार्ग । **ऊपरवाड़ो** । **सेरो** । २.वृद्ध पुरुष । **जरड़ो** ।

जुरा–(ना०) जरा । वृद्धावस्था ।

जुरत–(ना०) जरूरत । ग्रावश्यकता । **जोइजवाण** ।

जुररो–दे० जुरो ।

जुरासंध–(न०) कंस का ससुर मगध देश का राजा जरासंध ।

जुरासँधखय–(न०) जरासंध को मारने वाला भीम ।

जुरो–(न०) द्रव पदार्थ छानने या झारने का सुराखों ग्रौर लंवी डंडी वाला लोहे

का एक पात्र। पूरी-पकोड़ा आदि तली जाने वाली वस्तुओं को कड़ाही में से निकालने का लंबी डंडी वाला छिछला चालना। झारो।
जुर्म-(न०) अपराध।
जुळ-(क्रि०वि०) एकत्रित। इकट्ठा।
जुळणो-(क्रि०) १. इकट्ठा होना। २. उत्पन्न होना। ३. होना। ४. मिलना। प्राप्त होना। जुड़णो।
जुल्फ-(ना०) सिर के बालों की कान के आगे निकली हुई लटिया। जुल्फ। कुल्ली।
जुलम-(न०) १. अत्याचार। जुल्म। २. जबरदस्ती। ३. बलात्कार। ४. अन्याय। ५. अपराध।
जुलमी-(वि०) १. जुलम करने वाला। अत्याचारी। २.प्रजापीड़क। ३.अन्यायी। ४.जबरदस्ती करने वाला। ५. अपराधी।
जुलाई-(ना०) ईसवी सन् का सातवाँ महीना।
जुलाब-(न०) १. रेचन। २. दस्त लगाने वाली औषधि।
जुलावो-(न०) जुलाहा। तंतुवाय।
जुव-(वि०) १. दो। २. दोनों।
जुवक-(न०) युवक। युवापुरुष।
जुवती-(ना०) जवान स्त्री। युवती।
जुवराज-(न०) युवराज।
जुवळ-(न०) १. पाँव। पैर। २. युग्म। जोड़ा। (वि०) १. दोनों। २. दो। युगल।
जुवाड़ो-दे० जुआड़ो।
जुवार-दे० जुआर।
जुवारी-(वि०) जुआ खेलने वाळा। जुआरी। द्यूतकार।
जुवो-दे० जुओ।
जुहार-(न०) १. नमस्कार। प्रणाम। २. कार्य सिद्ध हो जाने पर अमुक देवता की की जाने वाली मनौती। ३. जुहार के रूप में देवता को चढ़ाया जाने वाला नैवेद्य।
जुहारड़ा-(न०) नमस्कार अर्थ 'जुहार' सूचक का ब० व० रूप।
जुहारणो-(क्रि०) १. अभिवादन करना। प्रणाम करना। जुहारना। २.देवस्थान में देवता को भेंट पूजा करने को जाना।
जुहारी-(ना०) १. विवाह की एक प्रथा जिसमे पाणिग्रहण विधि समाप्त होने के बाद दूल्हा का पहिले अपने वडीलों को और फिर संबंधियों के यहाँ जुहार (प्रणाम) करने को जाना। २. जुहारी में प्राप्त हुई भेंट। ३. पाणि-ग्रहण के बाद वर-वधू का गठजोड़ सहित गाजे-बाजे के साथ देवस्थानों में जाकर भेंट-पूजा चढ़ाना।
जुंग-(न०) १. ऊंट। २. ऊंट को बिठाते समय बोला जाने वाला एक शब्द। जुंग।
जुंझलाणो-दे० झुंझळावणो।
जुंझलावणी-(ना०) १. अकुलान। ऊब। जुंझलाहट। २. क्रोध।
जुंझळावणो-(क्रि०) १. ऊबना। अकुलाना। जुंझलाना। २. क्रोध करना।
जुंहर-दे० जौहर।
जूओ-(न०) जुआ। द्यूत। (वि०) जुदा। अलग।
जूजवो-(वि०) जुदा जुदा।
जूजुओ दे० जूजवो।
जूझ-(न०) युद्ध। संग्राम।
जूझ-झळ-(ना०)१. युद्धाग्नि। युद्ध ज्वाला। भयंकर सग्राम। २. युद्ध करने की तीव्र इच्छा।
जूझणो-(क्रि०) १. युद्ध करना। २. सिर कट जाने के बाद धड़ से लड़ना।
जूझाऊ-(वि०) १. युद्ध से संबंध रखने वाला। युद्ध संबंधी। युद्ध का। २. युद्ध करने वाला।

जूझार–(न०) १. शूरवीर। २. वह वीर जो सिर कटने पर भी लड़ता रहता है।

जूझारजी–(न०) लोक देवता की भाँति पूजा जाने वाला जूझार वीर। (अव्य०) व्यंग्य, उपालंभ या वाक्युद्ध आदि प्रसंगों में प्रयुक्त असामर्थ्यसूचक एक अव्यय। जैसे–करलीजै थारी बहादरी। देख लियो थनै जूझारजी नै।

जूट–(वि०) १ जुड़ा हुआ। २. दो। (न०) १. जोड़ा। २. सन। पटसन।

जूटणो–(क्रि०) १. युद्ध में प्रवर्त होना। २. युद्ध करना। ३. संलग्न होना। जुड़ना। ४. भिड़ना। टकराना।

जूड़ी–(ना०) १. पूली। जूरी। मुट्ठा। २. तमाकू के पत्तों की जूरी।

जूड़ो–(न०) बालों को माथे पर लपेट कर बनाई हुई गुत्थी। अम्बोड़ो।

जूठो–(वि०) १. चतुर। चालाक। होशियार। २. कपटी। छली। ३. उच्छिष्ट। एंठा। झूठा।

जूण–(ना०) १. योनि। जन्म। २. जीवन। जिंदगी।

जूत–(न०) जूती। पगरखी। पादत्राण। जूता।

जूती–(ना०) पगरखी।

जूतो–(न०) जूता। पगरखो। जोड़ो।

जूथ–(न०) १. समूह। यूथ। २. सेना।

जूथार–(न०) हाथी।

जून–(न०) ईसवी सन् का छठा महीना।

जूनाळी–(ना०) एक तोप। (वि०) जूनी। पुरानी।

जूनी–(वि०) १. पुरानी। प्राचीन। २. जीर्ण। जर्जरित।

जूनो–(वि०) १. पुराना। प्राचीन। २. जर्जरित। जीर्ण।

जूपणो–(क्रि०) १. जुतना। संलग्न होना। २. प्रज्वलित होना। लगना।

जूवटो–(न०) जुआ। द्यूत।

जूसण–(न०) कवच।

जूह–(न०) १. झुंड। यूथ। समूह। २. सेना। ३. युद्ध। ४. हाथी। (वि०) बहुत बड़ा।

जूं–(ना०) १. बालों का एक कीड़ा। जूँ।

जूंअरो–दे० जुआड़ो।

जूंग–(न०) १. ऊंट। २. ऊंट को बिठाने के लिये बोला जाने वाला शब्द। जुग।

जूंगी–(ना०) ऊंटनी। सांयड़।

जूंजळो–(न०) काले रंग का कीड़ा, जो प्रायः विष्टा की गोली बना कर पाँवों से लुढ़काता और उलटा चलता हुआ बरसात में दिखाई देता है। गोगीड़ो। गूकीड़ो।

जूंझणो–दे० जूझणो।

जूंझळ–(ना०) झुंझलाहट। चिढ़।

जूंझळाट–दे० जूंझळ।

जूंझार–दे० जूझार।

जूंझारजी–दे० जूझारजी।

जूंट–(ना०) १. जुड़ी हुई दो चीजें। दो जुड़ी हुई चीजों से बनी एक वस्तु। २. जोड़ी। ३. दो-दो की एक पंक्ति। ४. झुंड।

जूंटो–(न०) १. जोड़ी। जोड़ा। २. हाथ बुनी चद्दर का एक जोड़ा।

जूंठो–दे० जूंबो।

जूंबो–(न०) बाजरी आदि के एक दाने में से निकले हुए अनेक पौधे। एक जड़ में से फूटे हुए नाज के अनेक पौधों का समूह।

जूंसर–दे० जुआड़ो।

जूंसरो–दे० जुआड़ो।

जूंसहरी–दे० जुआड़ो।

जे–(अव्य०) १. यदि। २. जो। (सर्व०) १. जिस। २. जिसने। जिण। ३. जो। ४. वह।

जेई–दे० जेळी।

जेखळ–(न०) नूपुर।

जेज–(ना०) १. देर। विलंब। २. समय। जेम। मोड़ो।

जेजियो–*(न०)* मुसलमानी शासन काल का एक यात्रा कर जो हिंदुओं पर लगता था। जजिया।

जेझ–दे० जेज।

जेट–*(ना०)* १. समूह। २. एक के ऊपर एक इस प्रकार बरतनों आदि की लगी हुई तह। ३. चपातियों की तह। रोटियों की तह। ४. एक ही प्रकार की वस्तुओं का क्रमबद्ध ढेर। ५. राशि। ढेर।

जेठ *(न०)* १. पति का बड़ा भाई। भसुर। २. वैशाख और आषाढ़ के बीच का महीना, ज्येष्ठ मास। विक्रम संवत का तीसरा महीना। *(वि०)* बड़ा। अग्रज।

जेठळ–*(न०)* १. बड़ा भाई। २. जेठ। भसुर। ३. युधिष्ठिर।

जेठवै रा सोरठा–*(न०)* ऊजळी चारणी की ओर से कहा गया जेठवै के प्रति विरहोद्गार-काव्य।

जेठाणी–*(ना०)* पति के बड़े भाई की पत्नी। जेठ की पत्नी। जेठानी।

जेठी–*(वि०)* बड़ी। *(न०)* बड़ा भाई।

जेठीपाथ–दे० जेठी पाराथ।

जेठी-पाराथ–*(न०)* १. भीम। २. युधिष्ठिर।

जेठीबाहु–*(वि०)* आजानु बाहु।

जेठूतरो–*(न०)* जेठ का लड़का। जेठौता।

जेठूती–*(ना०)* जेठ की लड़की।

जेठूतो–दे० जेठूतरो।

जेठो–*(वि०)* बड़ा। *(न०)* बड़ा भाई।

जेण–*(सर्व०)* १. जिस। जिसने। २. जिससे।

जेणि–दे० जेण।

जेतलो–*(वि०)* जितना।

जेती–*(वि०)* जितना।

जेता–*(वि०)* जीतने वाला। विजेता। *(वि०व०व०)* जितने।

ो–*(वि०)* १. जितना। २. जीतने वाला। विजेता।

जेथ–*(क्रि०वि०)* १. जहाँ। जिस जगह। २. वहाँ। उस जगह।

जेथी–*(क्रि०वि०)* १. जिससे। जिस कारण। २. जिसके लिये।

जेदी–*(अव्य०)* जिस दिन। उस दिन।

जेब–*(ना०)* जेब। खीसा। खूंजियो। गूंजियो।

जेम–*(क्रि०वि०)* १. जिस प्रकार। जैसे। यथा। जिणभांत। २. ज्यों। ज्युं।

जेर–*(ना०)* गर्भगत बालक के ऊपर की झिल्ली। जेरी। आंवळ। *(वि०)* १. परास्त। पराजित। २. जिसे बहुत हैरान किया जाये। *(क्रि०वि०)* वश में। अधिकार में। तावे।

जेर करणो–*(मुहा०)* १. पराजित करना। हराना। २. हैरान करना। ३. अधिकार में करना।

जेरणो–*(क्रि०)* १. वश में करना। बंधन में डालना। २. नष्ट करना। ३. परास्त करना।

जेरबंद–*(न०)* १. घोड़े की बाग को तंग के साथ जोड़ने वाला चमड़े का तसमा। २. चमड़े का कोड़ा। चाबुक। ३. रस्सी की भाँति काम में आने वाली चमड़े की लंबी पट्टी। तसमा।

जेर बार–*(वि०)* १. जिसको बहुत हानि उठानी पड़ी हो। हानिग्रस्त। २. जिसे किसी विपत्ति के कारण बहुत सहन करना पड़ा हो। आपत्तिग्रस्त। विपत्तिग्रस्त।

जेरी–दे० जेळी।

जेळ–*(ना०)* १. बंदीगृह। कैद। कैदखाना। २. रोक। रुकावट। ३. बंधन। ४. कैदखाने की सजा। कैद।

जेळखानो–*(न०)* कारागृह। जेलखाना। बंदीगृह।

जेळी–*(न०)* लकड़ी के दो तीक्ष्ण लंबे फल या नोकों वाला कृषकों का एक लंबा

डंडा, जिससे कँटीली झाड़ियाँ हटाई जाती हैं। **बेई। जेरी।**

जेवड़–*(ना०)* रस्सा। रज्जु।

जेवड़ी–*(वि०)* जैसी। *(ना०)* रस्सी। डोरी।

जेवड़ो–*(न०)* डोर। रस्सा। *(वि०)* जैसा। जिस प्रकार का।

जेवर–*(न०)* गहना। आभूषण।

जेवरलो–*(वि०)* १. विरल। थोड़ा। २. कोई-कोई। बहुत में से कोई। *(क्रि०वि०)* कहीं-कहीं।

जेवलो–दे० जेळी।

जेसळ–*(ना०)* जेसल नामक प्रसिद्ध भाटी राजा जिसने वि० सं० १२१२ सावन शु० १२ को जैसलमेर नगर और उसके पास की पहाड़ी पर किले का निर्माण करवाया।

जेसळगिर–*(न०)* जैसलमेर का पहाड़ और उस पर बना हुआ किला। २. जैसलमेर नगर।

जेसळमेर–दे० जैसलमेर।

जेसाण–*(न०)* १. जैसलमेर नगर। २. जैसलमेर राज्य।

जेसाणो–दे० जेसाण।

जेह–*(ना०)* १. किनारा। अंतिम सिरा। किसी वस्तु का अंतिम भाग। २. दीवार की चुनाई में ईंटों की एक ऐसी तह जो दीवाल के औसार से कुछ बाहर निकली हुई होती है। ३. दीवाल के ऊपरी भाग में सामान रखने के लिये लगाया जाने वाला पत्थर। **टांड**। ताक। ४. डोरी। रस्सी। ५. प्रत्यंचा। *(क्रि०वि०)* जैसा। **जैड़ो।**

जेहड़ी–*(वि०)* जैसी। जिस प्रकार की। **जैड़ी। जिसी।**

जेहड़ो–*(वि०)* जैसा। जिस प्रकार का। **जैड़ो। जिसो।**

जेहर–*(ना०)* पैर का एक गहना। पाजेब।

जेहवी–*(वि०)* जैसी। जिस प्रकार की। **जैड़ी।**

जेहवो–*(वि०)* जैसा। जिस प्रकार का। **जैड़ो। जिसो।**

जेहि–*(सर्व०)* जिस। *(क्रि०वि०)* जैसे। ज्यों। **ज्युं।**

जेही–*(वि०)* जैसी। **जैड़ी।**

जेहो–*(वि०)* जैसा। जिस प्रकार का। **जैड़ो। जिसो।**

जै–दे० जय।

जैकार–*(न०)* जय घोष। जयकार। जय-जय कार।

जै गोपालळजी री–दे० जै रामजी री।

जै जैकार–*(अव्य०)* १. जय जयकार। २. जय जय शब्द का उच्चारण। विजय ध्वनि। जयघोष। ३. विजय की प्रसन्नता का घोष।

जैड़ै–*(क्रि०वि०)* १. जब तक। **जठा तांई।** २. तब तक। **जठै तांई।**

जैड़ो–*(वि०)* जैसा। **जिसो।**

जैत–*(ना०)* जीत। विजय। *(वि०)* विजयी।

जैतखंभ–*(न०)* १. विजय स्तम्भ। जय-स्तम्भ। २ विजय प्राप्त करने वालों में प्रमुख वीर। ३. युद्ध विजयी वीर पुरुष।

जैतवादी–*(वि०)* १. सदा विजय प्राप्त करने वाला। २. युद्ध विजयी।

जैतवार–*(वि०)* विजयी। जीतने वाला। *(ना०)* १. भलाई। २. लाभ। ३. लाभ-का काम। जीत का काम। ४. विजयो-त्सव। ५. विजयवेला। ६. विजय।

जैतहथ–*(वि०)* विजयी।

जैताई–*(वि०)* जीतने वाला। विजयी।

जैत्र–*(ना०)* विजय। जीत।

जैत्राई–दे० जैताई।

जैन–*(न०)* १. जैन धर्म। २. जिन का उपासक। ३. जैनधर्म का पालन करने वाला। श्रावक।

जैनी-(न०) जैन मतावलम्बी । श्रावक ।

जैमाळ-(ना०) जयमाला । विजयमाला ।

जै-रामजी-री-(श्रव्य०) १. परस्पर मुलाकात के समय, भुजबाथ लेते समय तथा बिछुड़ते समय उच्चारण किया जानेवाला एवं पत्राचार करते समय लिखा जाने वाला एक अभिवादन पद । २. नमस्कार करने एक वैष्णव उद्‌गार । (इसी अभिप्राय के 'जै-श्रीकृष्ण', 'जै-गोपालजी-री', 'जै-इकलिंगजी-री', 'जै-माताजी-री','राम-राम-सा', जै-रामजी-री-सा' इत्यादि इष्ट पद उच्चारण करने तथा पत्राचार में लिखने की प्रथा भी व्यवहृत है ।)

जैवार-(ना०) १. श्रानंद की वेला । सुसमय । २. विजयोत्सव । विजयानंद । ३. वृद्धि । लाभ ।

जैवारो-(न०) १. लाभ या प्रसन्नता की कोई बात । जयवार । २. किसी वस्तु में वृद्धि । बरकत । ३. बचत । ४. बचत की भावना । ५. कमाई । ६. सफलता । ७. मुनाफा । लाभ । वृद्धि । ८. तथ्य । ९. सार (तत्व) । १०. सुजीवन ।

जैसळ-दे० जेसळ ।

जैसळगिर-दे० जेसळगिर ।

जैसळमेर-दे० जेसळमेर ।

जैसाण-दे० जेसाण ।

जैरो-(वि०) १. जिसका । **जिणरो** । २. जिनका । **जिणांरो** ।

जो-(श्रव्य०) १. यदि । अगर । २. 'तो' के साथ प्रयुक्त होने वाला संशय, शर्त तथा तुलना का सूचक शब्द । (सर्व०) कहे गये सर्वनाम या संज्ञा का एक संबंध वाचक सर्वनाम जिसके संबंध में और कुछ कहने का है ।

जोइजणो-(क्रि०) १. आवश्यक होना । जरूरी होना । २. जरूरत पड़ना । ३. देखा जाना ।

जोइजतो-(वि०) १. चाहिये उतना । जितने की आवश्यकता हो । २. आवश्यक । जरूरी ।

जोइजवाण-(ना०)आवश्यकता । जरूरत ।

जोइजै-(श्रव्य०)१. चाहिये । २. आवश्यकता है । ३. उचित है । उपयुक्त है । ४. देखा जाय । ५. देखिये । देखो । ६. देखना चाहिये ।

जोइसी-(न०) ज्योतिषी ।

जोईसर-(न०) योगेश्वर ।

जो कै-(श्रव्य०) जो कि । यद्यपि । अगरचे ।

जोख-(न०) १ जोखने का बाट । तौल । २. तौल । जोख । वजन । ३. जोखने का काम या भाव । ४. जोखने की रीति । ५. आनंद । मौज । ६. अभिलाषा । ७. दान । ८. वैभव । ऐश्वर्य ।

जोखणी-(ना०) १. तकड़ी । २. जोखने का काम ।

जोखणो-(क्रि०)१. तोलना । वजन करना । २. परीक्षा करना । देखना । ३. आनंद करना । मौज करना ।

जोखता-(ना०) योषिता । स्त्री ।

जोखम-(ना०) १. विपत्ति की आशंका । २. भविष्य में होने वाले नुकसान की दहसत । ३. हानि । जोखम । ४. अनिष्ट । अवांछित । ५. अमंगल । ६. संकट । विपत्ति । ७. साहस । ८. उत्तरदायित्व । जिम्मेदारी । जोखिम । ९. आभूषण, धनमाल आदि । जोखिम । १०. बीमा । आगोप । इन्स्युरेन्स ।

जोखमणो-(क्रि०) १. नाश करना । बरबाद करना । २. चोट लगाना । ३. तोड़ना-फोड़ना । ४. बेकार बनाना । ५. विकृत करना । ६. नाश होना । बरबाद होना । ७. चोट लगना ।

जोखमी-(वि०) जोखमवाली ।

जोखमीजणो–(क्रि०) १. नुकसान पहुँचना। २. चोट लगना। ३. हड्डी टूटना। ४. विकृत होना। ५. मकान, वस्तु आदि का कोई भाग खंडित हो जाना।

जोखाई–(ना०) १. तौलने-जोखने का काम। २. तोलने जोखने की मजदूरी। पारिश्रमिक। ३. मौज। आनंद।

जोखामणी–(ना०) १. तौलने का काम। तुलाई। २. तौलने का पारिश्रमिक।

जोखो–(न०) १. नुकसान। हानि। २. खतरा। जोखम। भय। ३. उत्तरदायित्व। ४ अमानत। ५. धनमाल।

जोग–(न०) १. संयोग। २. फकीरी। ३. योग साधना। ४. ज्योतिष का योग। ५. प्रारब्ध। ६. हीर-रांझा के लोकगीतों की संज्ञा। ७. संबंध। ८. फलित। (वि०) १. योग्य। लायक। २. उचित। (अव्य०) १. की ओर का। के लिये। जैसे—'नाम जोग हुंडी। साह जोग हुंडी चलण का दीजो। २. के प्रति। जैसे—'अमुकचंदजी जोग।

जोग अधीस–(न०) १. महादेव। २. योगेश्वर। योगाधीश।

जोगटो–(न०) १. बनावटी जोगी। पाखंडी योगी। २. योगी के प्रति तुच्छार्थ शब्द।

जोगण–(ना०) १. योगिनी। साधुनी। संन्यासिनी। साधाणी। २. रणचंडी। ३. शक्ति। ४. जोगी की पत्नी। ५. जोगी जाति की स्त्री। ६. ज्वार बाजरी की फसल का एक रोग।

जोगणपीठ–(न०) १. दिल्ली। २. योगिनी पीठ।

जोगणपुर–(न०) दिल्लीनगर। योगिनीपुर।

जोगणपुरो–(न०) बादशाह। (वि०) दिल्ली का निवासी।

जोगणी–(ना०) १. योगिनी। तपस्विनी। २. रण की देवी। रणपिशाचिनी। ३. दुर्गा की एक सहचरी। ४. ज्योतिषानुसार यात्रा प्रकरण में दिशाओं में स्थित रहने वाली योगिनी। ५. वर्षागम से पहले के बादल। ६. मेघ-घटा। ७. ज्वार की फसल का एक रोग।

जोगणी पीठ–दे० जोगण पीठ।

जोगणीपुर–(न०) दिल्ली।

जोगतो–(वि०) १. योग्य। लायक। २. मुनासिब उचित। ठीक। (स्त्री०जोगती)

जोगमाया–(ना०) १. योगमाया। महाशक्ति। २. सृष्टि को उत्पन्न करने वाली ईश्वर की शक्ति। ३. ईश्वर की माया। माया। ४. दुर्गा।

जोगवाई–(ना०) १. योग्यता। लायकी। २. स्थिति। दशा ३. व्यवस्था। प्रबन्ध। ४. सम्पत्ति। धन-माल। ५. सम्पन्नावस्था। ६.सामर्थ्य। ७.मौका। अवसर।

जोग साधना–(ना०) योग की साधना।

जोगाजोग–(न०) अनुकूल और प्रतिकूल संयोग।

जोगाड़–(वि०)योग्य। लायक। दे० जुगाड़।

जोगाणंद–(न०) महादेव। शंकर।

जोगानजोग–(अव्य०) १. संयोगवशात्। योगानुयोग। २. बनने का समय होजाने से। जोग आने पर। ३. अवसर आ जाने पर।

जोगाभ्यास–(न०) योग का अभ्यास।

जोगिणपुर–(न०) दिल्ली नगर।

जोगियो–(न०) १ योगी। २. श्रीकृष्ण।

जोगिंदर–(न०) योगीन्द्र।

जोगी–(न०) १. योग साधना करने वाला। तपस्वी। योगी। २. पूंगी वादक सँपेरा। ३. एक जाति।

जोगीराज–(न०) योगियों में श्रेष्ठ। महायोगी।

जोगीसर–(न०) योगीश्वर। बड़ा योगी।

जोगेसर–दे० जोगीसर।

जोगो–*(वि०)* १. योग्य । लायक । २. उपयुक्त । उचित । ३. अधिकारी ।

जोजन–*(न०)* चार कोस की दूरी । योजन । **जोयण** ।

जोजर–*(वि०)* १. जीर्ण-शीर्ण । २. वृद्ध । **बूढो** ।

जोजरो–*(वि०)* १. टूटा-फूटा । २. दरार पड़ा हुआ । ३. खोखला । ४. खाली । ५. पोला । ६. शिथिल । ढीला । ७. बहुत मार खाया हुआ । ८. धन संपत्ति खोया हुआ । **खूटोलो** ।

जोट–*(ना०)* जोड़ी ।

जोटो–*(न०)* १. एक सी दो चीजों की जोड़ । जोड़ा । युग्म ।

जोड़–*(ना०)* १. योग । जोड़ । २. योगफल । ३. संधिस्थान । ४. जोड़ने की क्रिया । ५. जोड़ा । ६. प्रतियोगिता में समान उतरने वाली दूसरी चीज । ७. स्त्रियों के पैरों का एक गहना । ८. काव्य रचना । ९. बराबरी । समानता । *(वि०)* समान । बराबर ।

जोड–*(न०)* १. वह तराई वाला स्थान जो घास के लिये सुरक्षित हो । घास का रक्षित वन-भाग । २. कच्चा तालाब । जोहड़ ।

जोड़-कळा–*(ना०)* १. काव्य-कला । २. कविता । काव्यरचना ।

जोड़को–*(न०)* १. एक साथ जन्मे हुए दो बालक । २. एक दूसरी के साथ जुड़ी हुई एक जैसी दो वस्तुएँ ।

जोड़ग–*(न०)* १. कवि । २. संग्राहक ।

जोड़णी–*(ना०)* १. शब्द में आये हुए अक्षरों को मात्राओं सहित लिखना या कहना । शब्द लिखने के लिये अक्षरों के जोड़ने की रीति । वर्तनी । जोड़नी । हिज्जे । वर्ण-योजना । २. जोड़ने का काम या रीति । जोड़ाई । ३. जोड़ने की कला ।

जोड़णो–*(क्रि०)* १. बैल, घोड़े आदि को गाड़ी, हल आदि से युक्त करना । जोते से पशुको जुआठे आदि के साथ बांधना । जोतना । जोड़ना । २. वाहन या सवारी तैयार करना । ३. दो वस्तुओं को सी कर, चिपका कर, झालन देकर या अन्य उपाय द्वारा मिला कर एक करना । ४. टूटे हुये पदार्थों को मिला कर एक करना । ५. जुदी वस्तुओं का संबंध करना । ६. इकट्ठा करना । संग्रह करना । ७. संख्याओं का योगफल निकालना । जोड़ लगाना । ८. काव्य रचना करना । ९. पदों की योजना करना ।

जोड़-तोड़–*(ना०)* १. काव्य-रचना । २. पैरोडी रचना । ३. विचारों की घड़-भंजन । ४. तजवीज । प्रबन्ध । ५. सामान जुटाने की हलचल । ६. तैयारी । ७. दांव पेच । छल-कपट ।

जोड़ाई–*(ना०)* १. जोड़ने का काम । २. जोड़ने की उजरत ।

जोड़ाखर–*(न०)* संयुक्ताक्षर । मिलित वर्ण । जोड़ाक्षर ।

जोड़ाजोड–*(अव्य०)* १. बिल्कुल पास । पास-पास । **अड़ोअड़** । २. पाड़ोस में ।

जोड़ाण–*(न०)* १. मिलन । मिलान । २. संधान । सांधा । **सांधो** ।

जोड़ायत–*(ना०)* पत्नी । *(वि०)* बराबरी का ।

जोड़ियाळ–*(वि०)* १. जोड़ी का । बराबरी का । २. समवयस्क । ३. जोड़ी के रूप में साथ रहने वाला । *(न०)* मित्र । साथी ।

जोड़ी–*(ना०)* १. युग्म । जोड़ी । २. जूती का जोड़ा ।

जोड़ीदार–*(वि०)* १. जोड़ का । बराबरी का । २. समवयस्क । *(न०)* मित्र । दोस्त । साथी ।

जोड़ीवाल–*(न०)* १. मित्र । साथी । २. पति । ३. पत्नी । ४. वे जिनकी समान

जोड़ी हो। (वि०) १. भागीदार। २. साथ काम करने वाला।

जोड़ँ-(वि०) सदृश। तुलना। बराबर। (क्रिवि०) १. निकट। नजदीक। २. साथ में (न०)१.तुलना। सादृश्य। समता। २. साथ। संग।

जोडो-(न०) १. छोटा कच्चा तालाब। नाडो। पोखरा। २. बगैर बंधा हुआ कच्चा कुँआ। द्रह दहड़। दँड़।

जोड़ो-(न०)दो एकसी वस्तुएँ। एक आकार-प्रकार के दो पदार्थ। २. नर और मादा का युग्म। ३. स्त्री और पुरुष का युग्म। पति और पत्नी। दंपति। ४. समानता। बराबरी। मुकाबला। ५. दोनों पाँवों के जूते। जूती-जोड़ा। पगरखा। खासड़ा। खाहड़ा। (वि०) वह जो बराबर हो।

जोढ-दे० जोध।

जोणो-(क्रि०) १. देखना। ताकना। २. ढूंढ़ना। तलाश करना। ३.प्रतीक्षा करना। राह देखना।

जोत-(न०)१.वह तसमा जिससे बैलगाड़ी का जूआ बैल की गरदन पर रख कर बांधा जाता है। (ना०) २. परब्रह्म। ज्योति स्वरूप। ३. ज्योति। रोशनी। ४. घी का दीपक जो देवी-देवता के आगे जलाया जाता है। देव-दीपक। देवमंदिर का दीपक। ५.दृष्टि। नजर। ६.दीया। दीपक। ७. दीये की लौ। ८. आँख। नेत्र। ९.प्राण।

जोतख-दे० ज्योतिष।

जोतखी-दे० जोतसी।

जोतणो-(क्रि०) १. बैल, घोड़े आदि को गाड़ी, हल आदि से संलग्न करना। जोतना। २. वाहन या सवारी तैयार करना। ३. काम में लगाना। ४. बेगार में लगाना।

जोतवळ-दे० जोतंवळ।

जोतर-(न०) बैलों को गाड़ी आदि में जोतने के लिये गले में डाली जाने वाली चमड़े की पट्टी। जुआठे से बंधी हुई रस्सी या तसमा जिससे बैल की गरदन को जुआठे से बांधा जाता है। **जोतो। जोत**। २. जुताई। ३. आसामी को जोतने के लिये दी गई भूमि।

जोतरणो-दे० जोतणो।

जोतलिंग-(न०) १. ज्योतिर्लिंग। २. शिव के मुख्य बारह लिंग। द्वादश ज्योतिर्लिंग। शिव।

जोतवंत-(वि०) ज्योतिवाला। (न०) घी। घृत।

जोतवान-(वि०) ज्योतिवाला।

जोतसरूप-(न०) ज्योति स्वरूप। परब्रह्म। परमात्मा।

जोतसिखा-(ना०) १. दीपक। २. ज्योति-शिखा।

जोतसी-(न०) ज्योतिषी।

जोतंवळ-(न०) पानी। जल।

जोताई-(ना०) १. जोतने का काम। २. जोतने की मजदूरी।

जोतिस-(न०) ज्योतिष।

जोतिसरूप-(न०) ज्योतिस्वरूप। परब्रह्म। परमात्मा।

जोती-दे० जोत २ से ८.

जोतीगर-(न०) १. ज्योतिकर। सूर्य। २. चन्द्रमा।

जोध-(न०) १. पुत्र। २. योद्धा। शूरवीर। (वि०) युवा। जवान।

जोध-जड़ाग-(वि०) अत्यधिक जोरावर।

जोध-जवान-(वि०) १. पूर्ण यौवनशाली। पूर्ण युवक। २. मजबूत। दृढ़। कद्दावर। ३. बलशाली। शक्तिशाली।

जोधपुर-(न०) स्वतंत्र भारत के राजस्थान राज्य के अंतर्गत भूतपूर्व मारवाड़ राज्य की राजधानी का नगर। इसे राव जोधा ने वि. सं. १५१५ की जेठ सुदि ११ शनिवार को बसाया था।

जोधहरो-(न०)१. जोधपुर को बसाने वाले राव जोधा का वंशज । २.योद्धा । वीर ।

जोधाण-(न०) जोधपुर शहर का काव्योक्त नाम । जोधपुर ।

जोधाणनाथ-(न०) जोधपुर का राजा ।

जोधाणो-दे० जोधाण ।

जोधार-(न०) १. पुत्र । २. योद्धा । (वि०) जबरदस्त ।

जोधो-(न०) १. वीर पुरुष । योद्धा । २. जोधपुर नगर को बसाने वाले राव जोधा का वंशज ।

जोनक्रपीट-(ना०) आग । अग्नि । वासदेव ।

जोनल-(ना०) ज्वार धान्य ।

जोनी-(ना०) १. योनि । भग । २. योनि । जन्म । ३. जीवन । जिंदगी । ४. प्राणियों की जाति ।

जोप-(ना०) युवावस्था । मोटियार पणो ।

जोपणो-(क्रि०) १. पूर्ण युवावस्था को प्राप्त होना । २. विकास होना । ३. युवावस्था के जोश में आना । ४. शोभा देना । ४. बलवान बनना । दृढ़ होना ।

जोम-(न०) १. शक्ति । बल । २. नशा । मस्ती । ३. उत्साह । उमंग । ४. क्रोध । ५. गर्व । घमंड । ६. आवेश । जोश । ७. बल का गर्व ।

जोमरद-(न०) जवान और बहादुर । जवाँ-मर्द । साहसी । मोटियार ।

जोमंग-(वि०) १. शूरवीर । २. जोशीला । जोमवाळो ।

जोमंड-दे० जोमंग ।

जोय-(ना०) १. स्त्री । २. पत्नी । बैर । लुगाई ।

जोयण-(ना०)१. आँख । नेत्र । २. योजन । जोजन ।

जोयसी-(न०) ज्योतिषी ।

जोर-(न०) १. शक्ति । बल । २. वश । काबू । अधिकार । ३. उन्नति । चढ़ती । ४. प्रबलता । तेजी । ५. वेग । प्रवाह । ६. भरोसा । ७. दबाव । प्रभाव । ८. महनत । श्रम ।

जोर-जबराई-(ना०) १. जबरदस्ती । २. जुल्म ।

जोर-जुलम-(न०) १. अत्याचार । जुल्म । २. बलात्कार ।

जोरदार-(वि०) १. प्रबल । शक्तिशाली । जोर वाला । २. अच्छा । श्रेष्ठ ।

जोराई-(ना०) जबरदस्ती ।

जोराजोरी-(ना०) जबरदस्ती । बलपूर्वक ।

जोरामरदी-दे० जोराजोरी ।

जोरावर-(वि०) १. जोर वाला । शक्तिवान । २. बहादुर । शूर वीर । ३. साहसी । ४. उत्साही ।

जोरावरी-(ना०) १. जबरदस्ती । बलात् । २. बहादुरी । वीरता । शूरता । ३. अत्याचार । ४. उत्साह ।

जोरिंगण-(न०) जुगनू ।

जोरू-(ना०) पत्नी । लुगाई ।

जोवणियो-(वि०) १. देखने वाला । २. तलाश करने वाला । ३. तपास करने वाला । खबर लेने वाला । सम्हालने वाला ।

जोवणो-(क्रि०) १. देखना । २. तलाश करना । खोजना । ३. ध्यान देना । समझना । ४. आजमाना । अनुभव करना । ५. बाट देखना । राह देखना । प्रतीक्षा करना ।

जोवन-(न०) यौवन । तारुण्य । जोबन ।

जोवंती-(ना०) यौवनवती । युवती । (वि०) १. देखने वाली । २. देखती हुई ।

जोवा जोग-(वि०) १. देखने योग्य । २. सुंदर । मनोहर । ३. विचारने लायक ।

जोवाड़णो-(क्रि०)१.दिखाना । दिखलाना । बतलाना । २.ढुंढ़वाना । तलाश करवाना ।

जोवावणो-दे० जोवाड़णो ।

जोश–दे० जोस ।

जोशी–जोसी ।

जोस–(न०) १. जोश । आवेग । २. उत्तेजना । सरगर्मी । ३. उफान । उबाल । ४. उमंग । उत्साह । ५. मनोवेग ।

जोसण–(ना०) जोशी की स्त्री । जोशिन । (न०) १. कवच । जूसण । २. एक आभूषण ।

जोसणियो–(वि०) १. कवचावृत्त । कवचधारी । २. जूसणकर । कवच बनाने वाला । (न०) कवच । जूसण ।

जोसी–(न०) १. ज्योतिषी । जोशी ।

जोसीलो–(वि०) जोश वाला । जोशीला ।

जोसेल-दे० जोसीलो ।

जोहड़–(न०) छोटा और कच्चा तालाब । नाडो । नाडको ।

जोहड़ो–(न०) जोहड़ । कच्चा तालाब । नाडो ।

जो हुकम–(न०)१. जुल्म । धाक । (अव्य०) १. गुरुजनों से बातचीत करते समय स्वीकारोक्ति के रूप में उनके सम्मान हित बोला जाने वाला 'हाँ' अर्थ सूचक एक अव्यय । २. हुक्म के मुताबिक । जो आज्ञा । जैसी आज्ञा दें । हाँ ।

जोंक–(ना०) पानी में रहने वाला एक कीड़ा ।

जौहर–दे० जँवर ।

जौहरी–दे० जँवरी ।

ज्ञ–(न०) 'ज+ञ' का संयुक्ताक्षर । 'ग्य' तथा 'ग्न' का उच्चार वाला संयुक्ताक्षर । वैदिक भाषा में 'ज्न' उच्चारण किया जाता है । (वि०) समास के अंत में 'जानकार' अर्थ को बतलाने वाला ।

ज्ञान–(न०)१.बोध । समझ । २.जानकारी । ३ तत्वज्ञान । ब्रह्मज्ञान । ४. भान । प्रतीति । ५. समझने की वस्तु ।

ज्ञान पांचम–(ना०) कार्तिक शुक्ल पंचमी ।

ज्ञानवान–(वि०) १.ज्ञानी । २. समझदार । बुद्धिमान । ३. विवेकी ।

ज्ञानी–(वि०) ज्ञानवान । जानकार । (न०) आत्मज्ञानी । ब्रह्मज्ञानी ।

ज्याग–(न०) यज्ञ । जाग ।

ज्यादा–(वि०) अधिक । बहुत । घणो ।

ज्यान–(ना०) १. हानि । नुकसान । २. आफत । बला । ३.प्राण । जान । जीव । (अव्य०) जैसे । उसी प्रकार ।

ज्यानै–(सर्व०) जिनको ।

ज्यार–(क्रि०वि०) जब । जिस समय ।

ज्यारै–दे० ज्यार ।

ज्यास–(ना०) १. संतोष । २ धीरज । ढाढ़स । ३.शांति । ४.भरोसा । विश्वास ।

ज्यां–(अव्य०) उदाहरण स्वरूप । जैसे । (सर्व०) १. जिनके । २. जिनको । ३. जिन्होंने । (क्रि०वि०) १. जहाँ । जिस जगह । २. जब तक ।

ज्यांरो–(सर्व०) जिनका ।

ज्यांलग–(क्रि०वि०) १. जब तक । २. जहाँ तक ।

ज्यां सूधी–(क्रि०वि०) जब तक ।

ज्याँह–दे० ज्यां ।

ज्युं–(अव्य०) ज्यों । जैसे । जिस प्रकार ।

ज्योतगी–(न०) ज्योतिषी ।

ज्योति–दे० जोती ।

ज्योतिलिंग–दे० जोतलिंग ।

ज्योतिष–दे० जोतिस ।

ज्योनार–(ना०) १. दावत । २. भोज । जीमणवार ।

ज्वर–(न०) बुखार । ताप । ताव ।

ज्वान–(न०) १. जवान । युवक । २. सिपाही । सैनिक ।

ज्वार–(ना०) १. एक मोटा नाज । जुआर । २. समुद्र का चढ़ाव ।

ज्वार-बाजरी–(ना०) गुजारा । भरण-पोषण । (ला०)

ज्वारी–(न०) जुआरी ।

ज्वाळ–(ना०) १. ज्वाला। २. आफत। संकट।

ज्वाळजंत्र–(न०) १. तोप। २. बंदूक।

ज्वाळनळ–दे० ज्वाळानळ।

ज्वाळा–(ना०) ज्वाला। अग्निशिखा।

ज्वाळा देवी–(ना०) १. एक प्रसिद्ध देवी जिनका स्थान कांगड़ा जिले में है। २. कोहकाफ पर्वत की एक देवी।

ज्वाळानळ–(न०) अग्नि।

ज्वाळामुखी–(वि०) जिसके मुख में से (जिसके अंदर से) अग्नि निकलती है। (न०) १. वह पर्वत जिसके भीतर से अग्नि, धुँआ और पिघला हुआ पत्थर निकलता है। (ना०) १. एक देवी। ज्वालादेवी। २. ज्वालामुखी तीर्थ।

ज्वाँई–(न०) जमाई। दामाद।

झ

झ–(न०) संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला के चवर्ग का चौथा व्यंजन।

झक–(ना०) १. मछली। २. सनक। खब्त। ३. जिद। हठ। (वि०) उज्वल। चमकीला।

झककेतु–(न०) कामदेव। झपकेतु।

झकझक–(ना०) १. व्यर्थ की बकवाद। कहा-सुनी। २. हुज्जत। तकरार।

झक झोरणो–१. जोर से हिलाना। २. झटका मारना।

झक मारणो–(मुहा०) १. व्यर्थ समय नष्ट करना। २. अपनी बरबादी करना। ३. सनकी बातें करना। ४. अव्यवहारी बातें करना। ५. छलकपट की बातें करना। ६. झूठा और व्यर्थ आचरण करना।

झकर–दे० झिकर।

झकळ-झकळ–(अनु०) पानी को थपथपाने का शब्द।

झकळवाणी–(न०) वह द्रव-व्यंजन (साग-सब्जी, तीवन आदि) जिसमें जरुरत से ज्यादा पानी पड़ गया हो।

झकळवाणो–दे० झकळवाणी।

झक वेधक–दे० झकवेधण।

झक-वेधण–(न०) अर्जुन

झकाझक–(वि०) १. साफ और चमकीला। २. ताजा। बढ़िया। सुंदर।

झकाळ–(ना०) व्यर्थ की बातें। बकवाद।

झकाळियो–(वि०) व्यर्थ की बातें करने वाला।

झकाळी–दे० झकाळियो।

झकी–(वि०) १. हठी। जिद्दी। २. व्यर्थ की बातें करने वाला।

झकुंड–(न०) मस्तक। भ्रकुट।

झकोळणो–(क्रि०) १. पानी, तेल आदि किसी तरल पदार्थ में किसी वस्तु को डुबा कर बाहर निकालना। २. पानी को इधर-उधर हिलाना। ३. पानी आदि में किसी वस्तु को बार बार डुबाना-निकालना। ४. धोना। प्रक्षालन करना। ५. डुबाना। ६. नहाना। ७. नहलाना।

झकोळियो–(न०) आवश्यकता से अधिक पानी पड़ गया हो वह साग, तीवन आदि।

झकोळो–(न०) १. स्नान। २. कम पानी का स्नान। ३. प्रक्षालन। ४. डुबकी। ५. पानी का धक्का। ६. साग, तीवन आदि वह वस्तु जिसमें आवश्यकता से अधिक पानी पड़ गया हो।

झकोळो खाणो–*(मुहा०)* १. नहाना। २. जल्दी नहाना। ३. डुबकी लगाना।

झक्की–*(वि०)* १. सिनकी। २. जिद्दी।

झख–*(ना०)* मछली। झष।

झखकेत–दे० झककेतु।

झख मारणो–*(मुहा०)* १. निकम्मा बैठे रहना। व्यर्थ समय नष्ट करना। २. पछताना।

झगझगतो–*(वि०)* १. जलता हुआ। प्रज्वलित। २. प्रकाशमान।

झगझगाट–*(वि०)* १. प्रकाशमान। २. जलता हुआ। *(ना०)* चमक। जगमगाहट।

झगड़णो–*(क्रि०)* १. झगड़ा करना। लड़ना। झगड़ना। २. कलह करना। ३. हठ करना। ४. तकरार करना। विवाद करना।

झगड़ाखोर–*(वि०)* १. झगड़ा करने वाला। झगड़ालू। २. कलह प्रिय।

झगड़ा-झगड़ी–*(अव्य०)* लड़ना ही लड़ना। लड़ने का काम।

झगड़ाळू–दे० झगड़ाखोर।

झगड़ो–*(न०)* १. लड़ाई-झगड़ा। टंटा फसाद। २. युद्ध। ३. हुज्जत। तकरार। ४. वैर। शत्रुता।

झगड़ो-झाँटो–*(न०)* झगड़ा-टंटा। टंटा-फसाद।

झगड़ो-टंटो–दे० झगड़ो-झाँटो।

झगणो–*(क्रि०)* अग्नि का प्रज्वलित होना।

झगमग–*(वि०)* चमाचम। चमकीला।

झगरो–*(न०)* सूखा झाड़-झंखाड़। कंटीली और पतली टहनियों आदि का ढेर। तीली बताने से शीघ्र आग पकड़ले ऐसा कचरा।

झगलो–*(न०)* छोटे बच्चों के पहनने का ढीला कुरता। झगा।

झगाझग–*(वि०)* १. प्रकाशमान। २. प्रज्वलित।

झगामग–*(ना०)* १. अनेक दीपकों का प्रकाश। २. रोशनी। बहुल प्रकाश। ३. चमक। आभा।

झगो–दे० झगलो।

झज्झो–*(न०)* 'झ' अक्षर। झकार।

झट–*(ना०)* १. प्रहार। झटका। २. हठ। जिद। ३. मुकाबला। सामना। *(क्रि०वि०)* शीघ्र। जल्दी। तुरंत।

झटकणो–*(क्रि०)* १. झटकना। फटकना। २. झटका देना। ३. जोर से हिलाना। ४. छीन लेना। ५. डाँटना।

झटकाझटकी–*(ना०)* झटकने का काम।

झटकाणो–दे० झटकावणो।

झटकामण–*(ना०)* १. झटकने की क्रिया। २. झटकने से निकलने वाला कचरा। झटकन। फटकन। ३. झटकने की उजरत।

झटकावणो–*(क्रि०)* १. झटके से मारना। २. झटका देकर किसी वस्तु को काटना। ३. फटकाना। झटकाना।

झटकै–*(क्रि०वि०)* जल्दी। शीघ्र।

झटको–*(न०)* १. तलवार का प्रहार। २. झटका। धक्का। ३. एक ही प्रहार से पशु को काट देने का एक प्रकार। ४. झटके के साथ किया हुआ प्रहार। ५. चुभने वाली बात। ६. अचानक बड़ी हानि। ७. हानि से होने वाला दुख।

झट झेलणियो–*(वि०)* १. प्रहारों को सहन करते हुए लड़ने वाला। २. सामना करने वाला।

झट झेलणो–*(मुहा०)* १. प्रहारों को सहन करना। २. मुकाबला करना। ३. अविश्राम लड़ते रहना।

झट देताणी–*(मुहा०)* बहुत जल्दी। एक दम।

झटपट–*(क्रि०वि०)* तुरत। फौरन।

देना । ५. मंद प्रकाश देना । ६. विजली का चमकना । ७. रह-रह कर प्रकाश फैलना । ८. चमकना ।

झवकारो–दे० झवको ।

झवको–(न०) १. मंद प्रकाश । २. अंधेरे में क्षणिक प्रकाश । ३. आभास । झलक । ४.प्रकाश । ५.प्रकाश की चमक । कौंध ।

झवझव–(ना०)थोड़ा-थोड़ा चमकना । झब-झबाट ।

झवझवाट–दे० झवझव ।

झवझवी–(ना०) स्त्रियों के पहिनने का एक गहना ।

झवरक–(वि०)खूब प्रकाशमान । तेज प्रकाश देने वाला ।

झवरकणो–(क्रि०)१. फहराना । २. दिखना । ३. चमकना । प्रकाश देना ।

झवळकणो–(क्रि०) १. घड़े आदि बरतन के हिलने से उसके अंदर के पानी का हिलना । २. इस प्रकार हिलने से शब्द का होना । ३. उछलना । फुदकना ।

झवूकड़ो–(न०) बिजली की चमक । कौंध ।

झवूकणो–(क्रि०) १. चमकना । प्रका-सना । २.बिजली का चमकना । कौंधना । झबूकना । ३. दिखाई देना ।

झवोळणो–(क्रि०) १. वस्त्रादि को पानी में डुबाना । २.पानी में डुबा कर निकालना । ३. किसी तरल पदार्थ में किसी वस्तु को डुबाकर तरबतर करना ।

झवोळो–(न०) पानी आदि तरल पदार्थों में डुबाने या डूबने की क्रिया । डुबकी । डोब ।

झमक–(ना०)१.एक शब्दालंकार । यमक । २. नाच की एक गति । तीव्र गति का नाच । ३.नखरा । ४.पाजेब या घुघरू का शब्द । झनकार । ५. नखरे की चाल । ठमक । ६.चमक । प्रकाश । ७. बिजली । ८. एक वर्णवृत्त ।

झमझमाट–(न०) १. झमझमाहट । छम-छमाहट । २.हलकी जलन । थोड़ी जलन ।

झमरी–(ना०) लकड़ी की डंडी में घोड़े की पूंछ के बालों का गुच्छा या कपड़े को बांध कर बनाया हुआ मक्खियाँ आदि उड़ाने का एक उपकरण । चमरी ।

झमरो–(न०) पत्तों सहित वृक्ष की पतली टहनी (प्राय: नीमकी) ।

झमाळ–(न०) १. एक डिंगल छंद । २. स्वनाम संज्ञक डिंगल काव्य ।

झमेलो–(न०) १. टंटा । बखेड़ा । झंझट । २. दिक्कत । अड़चन । ३. समझ में नहीं आने जैसी बात । ४. पेचीदा काम ।

झरझरकंथो–(न०) जीर्ण और फटा हुआ वस्त्र । बहुत पुराना वस्त्र ।

झरझरी–(ना०) जस्ते की बनी सुराही ।

झरड़–(ना०) १. कपड़ा फाड़ते समय होने वाली आवाज ।२. खरोंच ।

झरड़को–(न०) १. खरोंच । २. बिलौने के झटके की आवाज । ३. कपड़ा फाड़ते समय होने वाली आवाज ।

झरड़ो–(न०) १. खरोंच । २. एक लोक देवता । बांडो-झरड़ो ।

झरड़ोजी–(न०) एक लोक देवता । बांडो-झरड़ो ।

झरणाटो–(न०) १. सहसा झनझन होने वाला शब्द । झन्नाटा ।

झरणो–(न०)प्रपात । झरना । सोता (क्रि०) झरना । टपकना । श्रवित होना ।

झरमर–(न०) १. वर्षा की फुहार । बूंदा-बूंदी । २. वर्षा की ध्वनि । ३. जर्मन सिलवर नामक धातु ।

झरूखो–दे० झरोखो ।

झरो–(न०)छेदों वाला बड़ा छिछला कलछा जिससे कड़ाही में से तली जाने वाली पूरियाँ, मेवें आदि निकाली जाती हैं ।

झरोखो–*(न०)* १. गवाक्ष। २. गोखड़ो। ३.आरजा। बरामदा। ४. अटारी।

झळ–*(ना०)*१. ज्वाला। २. दाह। जलन। ३. क्रोध। गुस्सा। ४. तीव्र खुजली। ५. ईर्ष्या। ६. उग्र कामना। ७. पूर्व दिशा। ८. अग्नि।

झलक–*(ना०)* १. ढंग। तौर तरीका। २.स्वरूप। बनावट। ३.चमक। आभा। ४. प्रतिबिम्ब।

झळक–*(ना०)* १. झलक। चमक। ओप। २. संकेत। आभास। झलक।

झळकणो–*(क्रि०)* १. चमकाना। प्रकाशित होना। २. छलकना। ३. मंद दिखना। ४. जोश में आना। आवेश में आना। ५. क्रोध करना। ६.आपे में नहीं रहना। धीरज नहीं रख सकना।

झलकी–दे० झालकी।

झळकी–*(ना०)* झलक। मंद चमक।

झलको–*(न०)* घास का एक परिमाण।

झळको–*(न०)* १. चमक। २. प्रतिबिंब। ३. परछांई।

झळजीहा–*(ना०)* अग्नि। वासदे।

झळझळाट–*(न०)* १. चमक। २. गहरा प्रकाश। दृप्ति।

झलणो–*(क्रि०)* १. पकड़ा जाना। पकड़ में आना। २ वश में आना। ३. किसी अंग का अकड़ जाना। ४. प्रारम्भ होना। ५. शोभा देना। मिलना।

झळणो–*(क्रि०)* धातु की टूटी हुई वस्तु में टांके से झालन लगना। टांके से जुड़ना।

झळपट–*(ना०)* १. लम्बी और तेज ज्वाला। २. लूआ के तेज झोंके से किसी अंग पर लगी हुई आंच की जलन।

झळमाळा–*(ना०)* अग्नि। वासदे।

झळ्ळाट–*(न०)* प्रकाश। चमक।

झळ-झूंळां–*(ना०)* खूब गरम लूएं। लू की ज्वालाएं।

झळहळ–*(ना०)* १. अग्नि। २. प्रकाश। *(वि०)* जाज्वल्यमान।

झळहळणो–*(क्रि०)* १. खूब प्रकाश देना। २. चमकना। ३. चमचमाना।

झळा–दे० झळ।

झळाबोळ–*(वि०)* १. अत्यधिक। बहुत। २. जाज्वल्यमान। तेजस्वी। ३. उग्र। तेज। ४. तप्त। तपा हुआ। ५. विपत्ति-ग्रस्त। ६. प्रज्वलित। ज्वालाबोड़। *(न०)* १. संकटापन्न स्थिति। २. अग्नि प्रकोप। ३. विपत्ति। संकट।

झळामळ–*(न०)* बिजली का प्रकाश।

झलावणियो–*(वि०)* पकड़वाने वाला।

झलावणो–*(क्रि०)* पकड़ाना। थमाना।

झळावणो–*(क्रि०)* किसी धातु की वस्तु को टांके से जुड़वाना।

झळिंग–दे० झळींगो।

झळियाँ–*(ना०)* ज्वालाएं।

झळींगो–*(न०)* घास या तेल जैसे पदार्थों में एकाएक प्रज्वलित होने वाली अग्नि की बड़ी ज्वाला।

झलू–दे० झेलू।

झलोझल–*(वि०)* १. मध्यगत। बीच का। मध्य का। २. पूर्ण। बराबर। ठीक। ३. संपूर्ण वैभव युक्त। वैभवशाली।

झल्लरी–*(ना०)* १. एक वाद्य। झालर। २. घुंघरुओं की माला। ३. शोभा के लिये लगायी जाने वाली जालीदार किनारी। झालरी।

झंक–*(ना०)* १. दरार। २. गुंजन। ३. झंकार।

झंकार–*(न०)* १. झनझनाहट। झनकार। २. झींगुर, भौंरे आदि की गुंजन।

झंकारी–*(न०)* भ्रमर। भौंरा। भमरो।

झंखर–*(न०)* १. पुष्प-पत्र विहीन वृक्ष। झड़े हुये पत्तों वाला वृक्ष। झंखाड़। २. [illegible]। *(वि०)* [illegible]। [illegible]।

झंखाड़-(न०) १. वह वृक्ष जिसके पत्ते झड़ गये हों। २. कांटे वाले वृक्ष-पौधों की झाड़ी। ३. शून्य प्रदेश।

झंगर-(न०) १. गहन वन। झाड़ी। २. जंगल। वन।

झंगी-(ना०) झाड़ी। बीहड़।

झंगो-(न०) छाछ।

झंझट-(ना०) बखेड़ा। झमेला। पचड़ा।

झंझेड़णो-(क्रि०)१.हिलाना। झकझोरना। झटका देना। २. हैरान करना।

झंझोड़णो-दे० झंझेड़णो।

झंडाळो-(वि०) १. जिस पर झंडा लगा हो। झंडे वाला। २.जो झंडा लेकर चलता हो। झंडेवाला।

झंडी-(ना०) १. छोटा झंडा। झंडी। २. रेलगाड़ी को चलाने के संकेत की हरी झंडी और रोकने के संकेत की लाल झंडी।

झंडो-(न०) ध्वज। निशान। पताका।

झंपताळ-(न०) एक मात्रिक छंद।

झंपूरियो-(वि०) १. लंबे और घने बालों वाला। २. बिखरे बालों वाला।

झंपो-(न०) पत्तों सहित टहनी। टहनी सहित पत्तों का गुच्छा। झंप।

झंब-दे० झंपो।

झंबाझोळ-(वि०)१. पसीने से तर। २. तर बतर।

झँवरो-दे० झमरो।

झाउड़ो-(न०) दे० झाऊ।

झाऊ-(न०) पत्तों की जगह पतली सींकों वाला एक वृक्ष। पिचुल वृक्ष। झाऊ। झाउड़ो।

झाओलियो-(न०) १. दही जमाने की मिट्टी की कठौत। २. दही से भरी हुई मिट्टी की परात या कठौत।

झाकझमाळ-(ना०) १. सजावट। तैयारी। २. शोभा। ३. शृंगार। ४. उत्सव। ५. प्रकाश।

झाकर-झूकर-(न०) किसी वस्तु का छोटे टुकड़ों या कणों के रूप में बचा भाग।

झाकळ-(ना०) १. ओस। शबनम। २. कुहरा।

झाग-(न०) फेन।

झागड़-झोटो-(वि०) १. बिना शऊर वाला। अशिष्ट। २. मूर्ख। ३. गंदा। ४. लड़ाई करने में मजबूत। ५. पहलवान।

झागड़ू-(वि०)१. मुकदमा बाज। २. झगड़ने वाला। झगड़ालू। ३. कलहप्रिय।

झागूंड-(न०) झाग। फेन।

झागोटा-(न०) फेन समूह। झाग ही झाग।

झाझो-दे० जाझो।

झाट-(ना०) १. प्रहार। २. हवा का जोर का धक्का। ३. युद्ध। ४. छलांग। ५. झपट। ६.भय। ७.बीमारी की अशक्ति। ८. टक्कर। ९. मुकाबला। १०. सर्प के फन का प्रहार। डसना। डसणो।

झाटक-(न०) एक शस्त्र। (ना०) प्रहार। चोट। (वि०) १. प्रहार करने वाला। २. साहसी। ३. योद्धा।

झाटकणो-(क्रि०) १. झटकना। फटकना। २. कपड़े आदि से गर्द को झटकना। ३.झटका देना। ४. सूप से साफ करना। ५. प्रहार करना। तलवार चलाना। ६. डांटना। उलटी-सीधी सुनाना। फटकारना।

झाटको-(न०) १. झटका। प्रहार। २. कपड़े आदि से झटक कर की जाने वाली सफाई।

झाटझड़-(ना०) १. शस्त्रों के प्रहार पर प्रहार। अनवरत प्रहार। २. शस्त्रों के प्रहारों की ध्वनि।

झाट लेणो-(मुहा०) टक्कर लेना। टक्कर झेलना।

झाड़–(न०) १. वृक्ष । पेड़ । २. अनेक बत्तियों वाला छत में लटकाया जाने वाला काच का फानूस । ३.डाँट । डपट ।
झाड़को–(न०) १. वृक्ष । झाड़ । २. क्षुप ।
झाड़-झंखाड़–(न०) १. झाड़ी । २. घनी जंगली झाड़ियों का समूह । बीहड़ वन ।
झाड़णो–(क्रि०)१. झाड़ू देना । बुहारना । २. फटकारना । ३. धूल, गर्द आदि साफ करना । कपड़े आदि से झपट कर सफाई करना । ४. झटकना । ५. मारना । ६. वृक्षों से फलों आदि का गिराना । ७. डाँटना । फटकारना । ८. मंत्र पढ़ते हुये हाथ फेरना और फूंक मारना ।
झाड़पान–(न०) १. वनस्पति । पेड़-पौधे । २. घास-चारा । ३. वृक्ष और पत्ते ।
झाड़साही–(वि०) १. अविश्वस्त । २. वृक्ष के चिन्ह वाला । (न०) भूतपूर्व जयपुर राज्य का सिक्का जो झाड़ (वृक्ष) चिन्हांकित होता था । झाड़शाही ।
झाड़ागर–(न०) मंत्रों द्वारा भूत-प्रेत का आवेश या सर्प, बिच्छू आदि का विष दूर करने वाला । झाड़ा-फूंका करने वाला ।
झाड़ागरी–(ना०) झाड़ागर का काम । झाड़ा फूंका ।
झाड़ा-झपटो–(न०) दे० झाड़ा-फूंको ।
झाड़ा-फूंको–(न०) प्रेत बाधा दूर करने, विष उतारने या किसी बीमारी को दूर करने के निमित्त मंत्रों को बोलते हुये झाड़ने-फूंकने की क्रिया । झाड़ा-फूंका । मंत्रोपचार ।
झाड़ी–(ना०) १. कंटीले वृक्ष, पौधों का समूह । २.पेड़-पौधों का समूह । घने वृक्ष ।
झाड़ू–(न०) बुहारी । झाड़ू ।
झाड़ू देणो–(मुहा०) १. कचरा निकालना ।
झाड़ू लगाणो–दे० झाड़ू देणो ।
झाड़ू वाळो–(न०) भंगी । महत्तर । झाड़ू वाला ।
झाड़ै–(न०) विष्टा । टट्टी । गू ।
झाड़ै जाणो–(मुहा०) टट्टी जाना । पाखाने जाना । हगना ।
झाड़ो–(न०) १. मंत्रोपचार । २. मंत्र पढ़ने और झाड़ने की क्रिया । टौना । २. समूह । झुंड । ३. मल । विष्टा ।
झाड़ो देणो–(मुहा०) १. मंत्र पढ़ कर फूंकना । २. मंत्रोपचार करना ।
झाण–(न०) ध्यान ।
झाप–(ना०)१. झपट । २.छलांग । कुदान ।
झापट–(ना०) १. तमाचा । थप्पड़ । २. झपेटा । प्रेतबाधा ।
झापटणो–(क्रि०) १. कपड़े से झाड़ना । २. डाँटना । फटकारना । ३. मारपीट करना । ४. थप्पड़ मारना ।
झांपटो–(न०) १. जोरों की वर्षा । २. झपट । ३. थोड़े समय की जोर की वर्षा ।
झापड़–दे० झापट ।
झापेटणो–(क्रि०) १. सख्त मार मारना । २. झपटना । फटकारना ।
झाबर–(वि०) घने बालों वाला ।
झांबरियो–दे० झाबर ।
झाबी–(ना०)१. स्त्रियों का एक आभूषण । २. छिछली कटोरी ।
झाबो–(न०) १. ऊंट के चमड़े का बना हुआ चौड़े मुंह का नालीदार तेल पात्र । २. तेल मापने का एक मोटा नाली वाला चर्मपात्र । ३. कीप । चोंगी । ४. खोपड़ी ।
झाम–दे० झामणो ।
झामणो–(न०) चोट आदि के लगने से खून जम कर चमड़ी में पड़ने वाला काला दाग । झाम ।
झामर–(न०) आंख का एक रोग ।
झामर झोळो–(न०) १. विवाह का एक तंत्र । २. जादू ।
झामरी–(ना०) हथेली में या पगथली में उठने वाला व्रण ।
झामरो–दे० झामळो ।

झामळो–*(न०)* आँख का एक रोग। दृष्टि-मांद्य।

झामो–*(न०)* दे० झावो।

झारणो–*(क्रि०)* १. जल आदि को झरने देना। २. थोड़े २ पानी की धार देना। ३. गरम पानी की धार से धोना या सेक करना।

झारा झूरो–दे० खारा खेरो।

झारिया–*(न०)* घोट-छान कर तैयार की हुई पेय-भंग। छनी हुई भांग। पीसी हुई भांग का द्रव रूप। विजयाद्रावण।

झारिया जमावणो–*(मुहा०)* भंग पीना।

झारी–*(ना०)* एक टोंटीदार जलपात्र। झरझरी।

झारो–*(न०)* १. नाश्ता। कलेवा २. ताँबे-पीतल आदि का टोंटीदार एक जलपात्र। ३. पानी आदि झारने की क्रिया। ४. छेदों वाला बड़ा छिछला कलछा जिससे कड़ाही में तली हुई पूरियाँ, सेवें आदि निकाली जाती हैं। ४. सेवें छाँटने का छेदों वाला कलछा। झावा।

झाळंग–*(न०)* १. अग्नि। २. ज्वाला सहित अग्नि। ज्वालाग्नि। ३. अग्नि के समान जाज्वल्यमान। ४. घासफूस के जलने से होने वाली बड़ी ज्वाला।

झाळ–*(ना०)* १. बैलगाड़ी में ऊंचे तक घास कुतर आदि भरने के लिये उसके नीचे बिछाने तथा उसे ढकने का मोटा जट का बुना कपड़ा। २. झाल में जितना घास आदि समा सके या बैलगाड़ी में जितना भरा जा सके उतना परिमाण। ३. बैलगाड़ी में भरा जा सके उतना नाज आदि। ४. स्त्री के कान का एक आभूषण।

झाळ–*(ना०)* १. ज्वाला। २. क्रोध। ३. क्रोध का आवेश। झल्लाहट। ४. झालन। झाळण।

झालकी–*(न०)* १. झाल में जितना घास आदि समा सके या बैलगाड़ी में जितना भरा जा सके उतना परिमाण। २. बैल गाड़ी में (झाल वेष्टित होकर) भरा जा सके उतना नाज, घास आदि। ३. पाला, कड़ब आदि घास से भरी हुई बैलगाड़ी।

झालड़ी–दे० झालकी।

झाळण–*(न०)* १. किसी धातु की वस्तु में टाँके (धातु जोड़ने का साधन) से की गई जुड़ाई। झालन। २. छेद, साँध आदि को टाँके से जोड़ने की क्रिया। ३. जोड़। टाँका।

झालण–*(न०)* १. सूत का बना हुआ मोटा और बड़ा कपड़ा जो बैलगाड़ी में नाज ढोने के लिये बिछाया जाता है तथा छाया करने के लिये बाँधा जाता है। २. घास आदि भरने के लिये घेरे के रूप में लगाया जाने वाला जट का बुना हुआ, लंबा-चौड़ा पाल।

झालणो–*(क्रि०)*१.पकड़ना। ग्रहण करना। २. थामना। ३. सहन करना। ४. उत्तर-दायित्व लेना।

झाळणो–*(क्रि०)* धातु की बनी हुई वस्तु को टाँके से जोड़ना। झालना। झालन लगाना।

झाळ-पूळो–*(वि०)* १. ज्वाला के समान विकराल। २. अत्यन्त क्रोधी।

झाळ-बंबाळ–*(वि०)* १. अग्नि के समान तेजस्वी। २.महाक्रोधी। *(ना०)*क्रोधाग्नि।

झालर–*(ना०)* १. टकोरा। घड़ियाल। घंटा। २. शोभा के लिये कपड़े आदि में लगाई जाने वाली गोट या किनारी। ३. जालीदार किनारी। ४. पत्तों वाला एक शाक। ५. एक जल पात्र। ६. हाथी के कान का एक आभूषण।

झालर वाव–*(न०)* १. चारों ओर सीढ़ियों वाली बावली। चौकोर पैड़ियों वाली वापी या कुआँ। झालरो।

झालरियो-(क्रि०) झल्लरी वाला। (ना०) १. कंठा। हार। झालरो। २. झालर वावी।

झालरी-(ना०) १. किसी वस्तु के किनारे पर शोभावृद्धि के लिये लगाया जाने वाला उपांत। हाशिया। झल्लरी। २. चमड़े के चरस में जोड़ के रूप में लगाया जाने वाला चमड़े का टुकड़ा। ३. एक वाद्य।

झालरो-(न०) १. स्त्रियों के गले में पहिनने का एक आभूषण। कंठा। २. कूग के समान एक जलाशय जिसमें चारों ओर चौकोर पैड़ियाँ बनी होती हैं। झालर-वापी। झालर वाव।

झालावाटी-(ना०) झाला राजपूतों का प्रदेश। २. भूतपूर्व झालावाड़ रियासत।

झालावाड़-(न०) १. राजस्थान का एक नगर। २. भूतपूर्व झालावाड़ राज्य।

झाली राणी-(ना०) १. विवाह का एक लोक गीत। २. विवाह के गीतों की लोक नायिका। ३. झाला क्षत्रीय वंश की राजा की पत्नी।

झाळी-(वि०) क्रोधी। (ना०) ज्वाला।

झालो-(न०) १. संकेत। इशारा। २. हाथ का संकेत। हाथ हिला कर किया हुआ संकेत। ३. झाला क्षत्रिय।

झाळोझाळ-(न०) १. प्रचंड अग्नि प्रकोप। २. अग्नि-ज्वालाओं का विस्तार। ३. विस्तृत रूप से प्रज्वलित अग्नि। ४. उग्र क्रोध। क्रोधाग्नि।

झावो-(न०) १. हाथों-पांवों पर रगड़ कर मैल छुड़ाने का मिट्टी का एक उपकरण। झाँवाँ। २. एक छिछला पात्र।

झावोलियो-दे० झाओलियो।

झांई-(ना०)१. मंद प्रकाश। २. प्रतिबिम्ब। परछाई। ३. झलक। ४. चमड़ी में पड़ने वाला कालापन।

झाँक-(ना०)झांकने की क्रिया या भाव।

झाँकणो-(क्रि०) १. झुककर देखना। २. आड़ में छिपकर कुछ देखना।

झाँकी-(ना०) १. दर्शन। २. अवलोकन। ३. देव मंदिरों में समय समय पर थोड़े समय के लिये कराया जाने वाला दर्शन। ४. व्यवसायी ब्राह्मण या साधुओं द्वारा प्रतिदिन नई नई देव-लीलाओं को मिट्टी से बना कर और शृंगार करके रात्रि के समय दिखायी जाने वाली लीलाओं के दृश्य। ५. झलक। आभास। ६. दृश्य। ७. झाँकने की जगह। बारी। ८. झरोखा।

झाँको-(न०) १. मंददृष्टि। २. मंदप्रकाश। (वि०) १. मंद रंग वाला। २. मंद। धुँधला। तेजहीन। ३. मलिन।

झाँख-(ना०) आँख का एक रोग। दृष्टि-मांद्य।

झाँखर-(ना०) झंखाड़।

झाँखरो-(न०)१.झड़े हुये पत्तों वाला वृक्ष। २. पतझड़।

झाँखाणो-(क्रि०) १. कुम्हलाना। २. दिखाई पड़ना। दिखलाई देना। (वि०) १. कुम्हलाया हुआ। २. उदासीन। म्लान। ३. लज्जित। संकुचित। खिसाँहा। (क्रि०भू०) कुम्हला गया।

झाँखो-दे० झाँको।

झाँग-(ना०)१. ज्वाला। २. दीर्घ ज्वाला। ३. पतली टहनियों व फूस का ढेर।

झाँगर वेड़-(ना०) १. स्त्री और उसके बच्चे। २. फूहड़ स्त्री और उसके मैले कुचेले बच्चे। ३. एक ही व्यक्ति के बहुतेरे बच्चे-बच्चियों का झुंड।

झाँगराँ-(ना०) मरुप्रदेश का वह सजल भाग जहाँ कुँए, वृक्ष, खेती आदि हरियाली और कुछ बस्ती हो। मरुस्थल में

छोटी उपजाऊ भूमि। शाद्वल। नखलिस्तान। मरुद्वीप।
झाँझ–(न०) बड़े मंजीरों की जोड़ी। ताल। करताल।
झाँझर–(ना०) चलने के समय मधुर ध्वनि करने वाला स्त्रियों के पाँवों का एक गहना। पाजेब। पैंजनी।
झाँझरको–दे० जाँझरखो।
झाँझरिया–(न०ब०व०) बच्चे के झांझर। छोटे झांझर।
झाँट–(न०) १. उपस्थ-कच। गुह्येंद्रिय के बाल। घुसो घुहो। (वि०) तुच्छ।
झाँटो–(न०) १. कलह। २. झगड़ा।
झाँटोलियो–(वि०) अत्यन्त तुच्छ। निकम्मा। हलका।
झाँप–(ना०)१. कुदान। छलांग। २. झपट। ३. खोसने की क्रिया या भाव।
झाँप लेणो–(मुहा०) छलांग मारना।
झाँपो–(न०) १. झोंपड़ा। २. घर। ३. झोंपड़े या बाड़े का द्वार। ४. द्वार। दरवाजा। ५. फाटक।
झाँयाँ देणी–(मुहा०) चिढ़कर बोलना। क्रोध में बोलना।
झाँवळा–(न०) आँखों से कम दिखने का एक रोग। यदा-कदा रंग-बिरंगी लहरें दिखने का एक रोग।
झाँस–(ना०) झाड़ी।
झाँसो–(न०) धोखा। झांसा।
झिकर–(ना०) १. जिक्र। कथन। बातचीत। चर्चा। २. व्यर्थ की बातचीत।
झिकाळ–(ना०) व्यर्थ या अधिक बोलने या बातचीत करते रहने का भाव। बकवाद। झकाळ।
झिकाळियो–(वि०) बहुत बोलने वाला। बकवादी। वाचाल।
झिखाळी–दे० झिकाळियो।
झिखणो–(क्रि०) १. चमकाना। २. शोभा देना।
झिझक–(ना०) १. संकोच। हिचक। २. लज्जाजनित संकोच। ३. लज्जा। ४. भय। ५. संकोच।
झिड़कणो–(क्रि०)१. डाँटना। फटकारना। २. तिरस्कारपूर्वक बात करना।
झिड़की–(ना०) डाँट। फटकार।
झिण–(ना०) छाछ। झंगो।
झिरमटियो–(न०) १. बालिकाओं का एक नृत्यमय खेल। २. बालिकाओं का एक लोक गीत।
झिरमिट–दे० झिरमटियो।
झिरी–(न०) १. लकड़ी-पत्थर आदि की बनी हुई किसी सपाट वस्तु के किनारे पर कुरेदी हुई लंबी लकीर। २. दरज। दरार। ३. किनारी। हाशिया। ४. एक रोग। ५. भट्टी।
झिलणो–(क्रि०) १. प्रकाशित होना। २. शोभा देना। फबना। ३. प्रकाश देना। ४. समृद्ध होना। ५. भर जाना। पूर्ण होना। ६. ग्रहण लगना।
झिलम–(ना०) १. कवच के ऊपर गले और कंधों को ढके रहने वाली लोहे की दुहरी कड़ीदार जाली। २. युद्ध के समय गरदन, मुख और कंधो पर बाँधने की लोहे की जाली।
झिलम टोप–(न०) झिलमयुक्त टोप। वह शिरत्राण जिसके नीचे गरदन और कंधों की रक्षा करने वाली जाली लगी रहती है। झिलम और टोप।
झिलमिल–(न०) १. हिलता हुआ प्रकाश। अस्थिर प्रकाश। २. शोभा-यात्रा का एक लवाजमा।
झिल्ली–(ना०) १. अति सूक्ष्म चमड़ा। पतला चमड़ा। २. ऐसी पतली चमड़ी या तह जिसमें होकर दूसरी ओर की वस्तु दिखाई पड़े।

झिगोर-(न०) मोर का शब्द।
झिझोटी-(ना०) राग विशेष।
झी-(न०) घी। घृत।
झीक-(ना०) १. शस्त्रों के प्रहार का शब्द। २. शस्त्र-प्रहार। ३. अविरल शस्त्र प्रहार। ४. खूब जोर की वर्षा। ५. वर्षा की अजस्रता। ६. औसर-मौसर आदि भोज-प्रसंगों पर भोज्य सामग्री की मुक्त-हस्त छूट। ऊपरा-उपरी परोसगारी। रोठ। ७. बिना कंजूसी के उदारतापूर्वक किया जाने वाला खर्च। ८. सलमे-सितारों का काम। ९. कार चोबी। १०. बारीक किनारी।
झीक उडणो-(मुहा०)१. बहुतसी तलवारों का एक साथ प्रहार होना। २. शस्त्र-प्रहारों का शब्द होना। ३. विशेष भोजन आदि अवसरों पर वस्तुओं का छूट से उदारतापूर्वक व्यवहार या खर्च होना।
झीझळियो-(न०) १. सवारी का ऊंट। २. एक लोकगीत। जमाई के सवारी के ऊंट का एक लोकगीत। ३. ऊंट।
झीणो-(वि०) १. बारीक। पतला। महीन। २. तीक्ष्ण। पैना। ३. सुरीला। मधुर स्वर वाला। ४. जो स्थूल न हो। पतला। कृश। (न०) १. ऊंट की एक जाति। २. बहुत तेज चलने वाला ऊंट।
झीणोड़ो-दे० झीणो।
झीणो मोरियो- (न०) एक लोक गीत।
झीरण-(वि०) फटा पुराना। जीर्ण। (न०) फटा पुराना वस्त्र। जीर्ण वस्त्र। चिथड़ा।
झीरा-झीरा-(न०) १. वस्त्र-पत्र आदि के फाड़-चीर कर किये हुये टुकड़े। २. जीर्ण वस्त्रों में बनी अनेक दरारें और फटन।
झीरी-(ना०) १. वस्त्र कागज या चद्दर आदि की लंबी पट्टी। २. वस्त्र, कागज या चद्दर आदि की काट छांट करने से बची हुई लंबी कतरन (पु० झीरो)
झीरोहर-(ना०)१. निछरावल। निछावर। उत्सर्ग। २.झीर-झीर। ३.टुकड़े-टुकड़े।
झील-(ना०) बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय। कुदरती सरोवर। २. एक जंगली क्षुप। ३. वज्रदंती क्षुप।
झीलणो-(क्रि०) स्नान करना। नहाना। संपाड़ो करणो।
झीलावणो-(क्रि०) नहलाना। स्नान कर-वाना। संपड़ावणो।
झींकणो-(क्रि०) १. रोना। २. व्यर्थ में समय बरबाद करना। ३. काम को बिगाड़ना। ४. सुस्ती से काम करना। धीरे धीरे करना। ५. दुखड़ा रोना। रोना रोना। ६. कुढ़ना। खीजना। ७. पश्चाताप करना। ८. तरसना।
झींग-(ना०) छोटी मछली। झींगी।
झींगर-(ना०) १. झींगुर। झिल्ली। तिवरी। २.मछुआ। धीवर। ३. मच्छी।
झींगीं-(ना०) छोटी मछली। झींग।
झींट-(ना०) चौकोर कपड़े के एक ओर के दोनों सिरों को गरदन में बाँधकर और दूसरे दोनों सिरों को हाथ में पकड़ कर बनाया हुआ नाज भरने का झोला।
झींटा-(न०ब०व०) १. बकरे के बाल। २. सिर के लंबे बाल। (ऊनवाची) ३. सिर के बिखरे हुए बाल। लंबे केश (बिना सँवारे हुए)।
झींटिया-(न०) सिर के अव्यवस्थित खुले बाल। बिखरे हुये सिर के लंबे बाल। जटा।
झींटोळियो-(न०)१. लंबे बालों वाला भूत। २. वह जिसके सिर पर लंबे व घने बाल हों। ३. गंदा व्यक्ति। (वि०) नीच। तुच्छ।
झुकणो-(क्रि०) १. झुकना। नवना। नमणो। २. नीचे की ओर प्रवृत होना।

उतार पर होना। ढलना। ३. किसी पदार्थ का किसी ओर मुड़ना। लचकना। ४. प्रणाम करना। ५. हार मानना। ६. बरसना। ७. बनना। निर्माण होना।

भुकाणो–दे० झुकावणो।

भुकाव–(न०)१. झुकने की क्रिया या भाव। झुकाई। २. प्रवृत्ति। बहाव। ३. चाह। इच्छा।

भुकावणो–(क्रि०) १. झुकाना। नवाना। २. मजबूर करना। विवश करना। ३. प्रवृत्त करना। ४. नीचा दिखाना। ५. हराना। ६. बनवाना। निर्माण कराना।

भुरंट–(ना०) १. नख की रगड़ या खरोंच। नखक्षत। २. रगड़। खरोंच।

भुरड़णो–(क्रि०) १.खरोंचना। २.तोड़ना। ३. मार मारना। पिटाई करना। बेंत या लकड़ी से मारना।

भुरणो–(क्रि०) १. बरसना। टपकना। २. रोना। रुदन करना। ३. किसी के वियोग में रोना। ४. दुख या चिंता से क्षीण होना। ५.कलपना। विकल होना।

भुरमट–(न०) १. किसी स्थान को ढका हुआ झाड़ों का समूह। २. झाड़, क्षुप और घास आदि का समूह। अति अधिक घास, पेड़, पौधे आदि का झुंड।

भुरापो–दे० झेरापो।

भुरावो–दे० झेरावो।

भुलाणो–दे० झुलावणो।

भुलावणो–(क्रि०) १. बच्चे को झूले में सुलाकर उसे हिलाना। झुलाना। २. टालते रहना। अटकाये रखना। आजकल करते रहना। ३. भरोसे में रखना। ४. ४. स्नान कराना।

भुंड–(न०) समूह। समुदाय। झुंड। टोला। टोळो।

झूझ–(न०) युद्ध। जुध। कजियो।

झूट–(न०) झूठ। असत्य। मिथ्या। कूड़।

झूटमूट–(क्रि०वि०) बिना किसी वास्तविक आधार के। झूठमूठ। व्यर्थ। यों ही। कूड़साच।

झूटो–(वि०) असत्य। मिथ्या। झूठा। कूड़। २. झूठ बोलने वाला। झूठा। कूड़ो। ३. बनावटी। नकली।

झूड़णो–(क्रि०)१. डंडे से पीटना। ठोंकना। २. जोर की पिटाई करना। ३. झकझोरना। झटकारना। ४. मारना। काटना।

झूमको–(न०)१. एक ही प्रकार की वस्तुओं का गुच्छा। २. फुंदना। ३. एक गहना। ४. स्त्रियों का झुंड। झूलरो।

झूमणो–(क्रि०) १. मस्ती में इधर उधर झूलना। लहराना। २. लिपटना। ३. लटकना। ४. हाथापाई करना। ५. लड़ना। ६. ताकना। ७. झुकना। (न०) कान का एक गहना।

झूमर–(न०) १. स्त्रियों के कानों का एक गहना। झूमरो। २. स्त्रियों का लोकनृत्य। घूमर। ३. एक लोक गीत। ४. छत में लटकाने का अनेक बत्तियों वाला काँच का एक बड़ा फानूस। झाड़फानूस। ५. बड़ा हथौड़ा। झूमरो।

झूमर-देछींट–(ना०) रंगी और छपी हुई घाघरे की छींट का एक प्रकार।

झूमरी–(ना०) कान का छोटा झूमरा। झूमरी।

झूमरो–(न०) १. स्त्रियों के कान का एक गहना। २. बड़ा हथौड़ा।

झूर–(न०) १. कचरा। कूड़ा। २. झाड़न। ३. झाड़ आदि की पतली-सूखी टहनियों का ढेर। ४. एक व्यक्ति के बहुतेरे छोटे मोटे बच्चे बच्चियों का समूह। ५. झुंड। समूह।

झूरणो–दे० झूड़णो। झुरणो।

झूरौ-(न०) १. किसी वस्तु के छोटे छोटे टुकड़ों की राशि। २. झाड़ आदि की पतली-सूखी टहनियों की राशि। ३. कचरा। पूस।

झूल-(ना०) १. हाथी, घोड़े आदि की पीठ पर सुंदरता के लिये डाला जाने वाला वस्त्र विशेष। २. कवच। ३. हाथी या घोड़े का कवच। पाखर। ४. झुंड।

झूळ-(ना०) १. झुंड। समूह। २. सेना। ३. विश्राम के समय सैनिकों के अस्त्र शस्त्रों को अपने अपने वर्ग में खड़ा करके रखने का एक ढंग। ४. काटे हुए नाज के पूलों को सुखाने के लिये पंक्ति बद्ध रखने का एक ढंग।

झूलणा-(न०)स्वनाम संज्ञक डिंगल-काव्य। जैसे--गजसिंघजी रा झूलणा। राव अमरसिंहजी रा झूलणा।

झूलणा-इग्यारस-(ना०) १. भाद्रपद शुक्ल एकादशी। २. देव मंदिर से देवमूर्ति का शोभायात्रा के रूप में जलाशय पर ले जाकर स्नान कराने का इस दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव।

झूलणी-ग्यारस--दे० झूलणा-इग्यारस।

झूलणौ-(क्रि०) १. झूले पर बैठ कर पेंगना। झूलना। २. लटकाना। ३. हिलना। (न०) १. झूलना नामक एक छंद। २. झूलान। हिंडोला।

झूलर-(न०) समूह। झुंड।

झूलरियौ-(न०) १. झुंड। २. माहेरा भरने को आने वालों का समूह। ३. माहेरा का एक लोक-गीत। भात भरने के समय गाया जाने वाला एक लोक-गीत। ४. पलने में झूलने वाला बच्चा। छोटा बच्चा।

झूलरौ-(न०)१. स्त्रियों का झुंड। उत्सवार्थ संगठित स्त्री-समूह। २. झुंड। समूह।

झूलाळ-(न०) हाथी। (वि०) १. झूलने वाला। २. झूलता हुआ। ३. जिसके ऊपर झूल पड़ी हो। ४. कवचधारी।

झूलाळौ-दे० झूलाळ।

झूलौ-(न०) हिंडोला। पलना।

झूस-दे० जूसण।

झूसण-दे० जूसण।

झूसणियौ-(वि०) कवचधारी। (न०) कवच।

झूंगौ-(न०) कुएँ पर बना हुआ वह कुंड जिसमें होकर मोट से निकला हुआ पानी बहता रहता है।

झूंटणौ-(न०) स्त्रियों के कानों का एक गहना। (क्रि०) खोसना। छीनना।

झूंपड़ी-(ना०) छोटा झोंपड़ा। झोंपड़ी।

झूंपड़ौ-(न०) झोंपड़ा।

झूंपी-(ना०) १. जागीरी समय का प्रति घर से लिया जाने वाला एक टैक्स। २. झोंपड़ी।

झूंपी लाग-(ना०) घर या झोंपड़े पर लगने वाला एक कर। गृह कर। हाउस-टैक्स।

झूंपौ-(न०)१. झोंपड़ा। २. ढेर। ३. घास का ढेर।

झूंबक-(न०) एक स्त्री आभूषण। झूमरी।

झूंबणौ-(क्रि०)१. लिपटना। गले लगना। २. लटकना। ३.हाथापाई करना। ४.युद्ध करना। जुबणौ। ५. आवेश में बोलना।

झूंबौ-दे० जूंबो।

झूंसर-(न०) जुआ। जुआठा। जुआड़ो।

झेंडर-(न०) एक लोक गीत।

झेर-(ना०) १. बैठे बैठे ली जाने वाली नींद। बैठे हुये को आने वाली नींद। २. हलकी नींद। ३. तरंग। लहर।

झेरणियौ-(न०) मंथन डंड। मथनी। रई झेरणौ।

झेरणौ-(न०) दही बिलोने की छोटी मथनी। मथनी। रई।(क्रि०)१.गिराना। २.वृक्ष की

टहनी को हिला कर पत्ते फलादि गिराना। खैरणो। ३. बिलोना करना। ४. प्रहार करना। चोट करना।

झैरापो–(न०) १. प्रेमी की वियोग जनित हृदय वेधक स्मृति। २. वियोग जनित रुदन। ३. प्रेमी के वियोग में गाया जाने वाला लोक गीत। झुरापो। ४. वियोग-जनित प्रलाप।

झैलणो–(क्रि०) १. पकड़ना। थामना। हाथ में लेना। झेलना। २. गिरफ्तार करना। पकड़ना। ३. सहारा देना। ४. सहन करना।

झैला–(न०ब०व०) कानों का एक आभूषण।

झैला-झैली–(ना०) १. बच्चों का एक खेल। २. झैलने या पकड़ने की क्रिया। ३. खींचातान। ४. पकड़ा पकड़ी।

झैलावणियो–(वि०) दे० झलावणियो।

झैलावणो–(क्रि०) दे० झलावणो।

झैलू–(वि०) जिम्मेवार। उत्तरदायी।

झैं–(अव्य०) ऊंट को बिठाने के लिये बोला जाने वाला शब्द।

झैंकणो–(क्रि०) ऊंट को बिठाना।

झैंकाणो–दे० झैंकावणो।

झैंकावणो–(क्रि०) ऊंट को बिठलाना।

झैंपणो–(क्रि०) झेंपना।

झोक–(न०) १. शाबासी। वाहवाही। २. ऊंटनी का प्रसव। ३. ऊंटों का बाड़ा। ४. आक्रमण। ५. झुकाव। झुकने का भाव। ६. पिनक। ७. बैठे बैठे आने वाले नींद झपकी। ८. ढंग। तौर। तरीका। ९. सुंदरता। शोभा। १०. चाल-चलन। ११. ऊंट। (अव्य) एक प्रशंसा सूचक शब्द। धन्य। वाह।

झोकणियो–(वि०) १. भट्टी में झोका देने वाला। २. युद्ध में प्रवर्त करने वाला। ३. संकट में डालने वाला।

[illegible]कणी–(ना०) ऊंटनी।

[illegible]कणो–(क्रि०) १. युद्ध में प्रवर्त होना। २. युद्ध में प्रवर्त करना। ३. किसी वस्तु को जलाने के लिये आग में फेंकना। ४. किसी काम में अंधाधुंध खर्च करना। ५. किसी को संकट की स्थिति में ढकेल देना। ६. कठिन काम में लगा देना। ७. धन्यवाद देना। ८. ऊंटनी का प्रसव होना।

झोक देणो–(मुहा०) १. ऊंटनी का प्रसव होना। ऊंटनी का बच्चा देना। २. धन्य-वाद देना। शाबासी देना।

झोकाई–(वि०) १. सेना को युद्ध में झोंकने वाला। २. आक्रमणकारी। ३. वीर। बहादुर। पराक्रमी। ४. लुटेरा। ५. साहसी। हिम्मत वाला। ६. झोका देने वाला।

झोकाऊ–दे० झोकाई।

झोका खाणो–(मुहा०) १. नींद या नशे में (बैठे हुए की) गरदन झुकना। बैठे बैठे नींद लेना। २. इधर उधर हिलना।

झोकाण–(न०) १. व्यवस्था। २. दशा। अवस्था। ३. किसी वस्तु या घर आदि का भला या बुरा रहन-सहन का ढंग। ४. ऐसे रहन-सहन या ढंग का दृश्य। ५. तौर-तरीका। रूप रंग। ६. चाल चलन।

झोका देणो–(मुहा०) अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिये (भड़भूजे या रंगत का काम करने वालों की) भट्टी में डंठल या झुरमुट डालते रहना।

झोकायत–(न०) १. आक्रमणकारी। २. लुटेरा। (वि०) १. वीर। २. साहसी।

झोका लेणो–(मुहा०) बैठे बैठे नींद लेना। बैठे-बैठे झुकझुक कर नींद लेना।

झोको–(न०) १. अधिक ज्वाला प्रज्वलित करने के लिये भट्टी या भाड़ में डाला जाने वाला तृण-समूह। २. तृणसमूह से भट्टी या भाड़ में उत्पन्न होने वाली तेज

ज्वाला। ३. बैठे-बैठे को आने वाली नींद। हलकी नींद। ४. हवा का धक्का। ५. नशे का झोंका। ६. पेंग। पिनक।

झोटिंग-(न०) समस्त शरीर पर बड़े बड़े बालों वाला एक भूत। (वि०) १. बड़े बालों वाला। २. जटाधारी।

झोटी-(ना०) जवान भैंस। ओसर। कलोर।

झोटो-(न०) १. झोंटा। पेंग। हिलोर। २. जवान भैंसा। पाडो।

झोल-(न०) १. सिरों पर से बँधी हुई किसी लंबी चौड़ी वस्तु के बीच वाले भाग में होने वाला झुकाव। २. चारों कोनों से बँधे हुए कपड़े, सायबान आदि के बीच में रहने वाला झुकाव। बँधे हुए कपड़े का वह अंश जो ढीला होने के कारण लटक जाय। ३. ढिलाई। ढीलापन।

झोळ-(न०) १. शोरवा। रसा। झोल। २. मुलम्मा। ३. झुंड। समूह।

झोळणो-(न०) १. यात्रा में साथ रखा जाने वाला एक थैला। २. छोटे बच्चे के लिये बनाया हुआ कपड़े का झूलना। झोळी।

झोळदार-(वि०) १. रसेदार। जिसमें रस हो। २. जिस पर मुलम्मा किया हुआ हो।

झोळियो-(न०) १. दही में पानी के साथ चीनी या नमक-जीरा को मथ कर बनाया हुआ एक पेय। मट्ठा। लस्सी। २. पतला दही। ३. बच्चे को सुलाने के लिये कपड़े की बनाई हुई झोली। ४. ढीली खाट।

झोळी-(ना०) १. झोली। थैली। २. भिक्षान्न डालने की साधु की झोली। ३. बच्चे के सोने की झोली। झोळणो।

झोलो-(न०) १. अत्यन्त उष्ण अथवा शीतल वायु, जिसके चलने से फसल और वृक्ष एक बारगी सूख जाते हैं। २. फसल को हानि करने वाला विपरीत दिशा का पवन। ३. वायु की झपट। ४. आघात। ५. मस्ती। ६. डिगना। हिलना। ७. रति क्रीड़ा। ८. नशे की लहर। ९. एक वात रोग। १०. इशारा। ११. झोंका। १२. संकट। १३. विक्षेप।

झोळो-(न०) १. कपड़े का थैला। २. गिलाफ। खोली। खोळी।

झौड़-(न०) १. वाग्युद्ध। बोलचाल। विवाद। २. माथापच्ची। ३. हठ। जिद। हठवादिता। ४. बखेड़ा। प्रपंच। ५. झगड़ा-टंटा। लड़ाई।

झौड़-झपाड़-(ना०) १. बकवाद। २. बोलचाल। टंटा-फसाद।

झौड़ायत-(वि०) १. झौड़ करने वाला। बकवादी। २. लड़ने वाला।

झौड़ियो-(वि०) झौड़ करने वाला।

झौड़ीली-(वि०) झौड़ करने वाली।

झौड़ीलो-(वि०) झौड़ करने वाला।

ञ

ञ-संस्कृत-परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का दसवां व्यंजन वर्ण। चवर्ग का पांचवां वर्ण। इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है। वाणीकी पाठशाला में इसे 'ननियो खांडो चंदरमा' कहा जाता है।

ट

ट-संस्कृत भाषा परिवार की राजस्थानी वर्णमाला की तीसरी व्यंजन आम्नाय के टवर्ग का मूर्धास्थानीय प्रथम वर्ण।

टक-(ना०) बिना पलक गिराये एक ही ओर देखते रहने का भाव। २. स्थिर दृष्टि। यथा—एक टक देखणो। ३. टकराने का शब्द। दे० टंक सं० ३ से ६।

टकटक-(अव्य०) घड़ी आदि के चलने का शब्द।

टकटकी-(ना०) स्थिर दृष्टि। निर्निमेष दृष्टि।

टकगैत-(वि०) पाँव पीछे नहीं देने वाला वीर। बहादुर। (न०) वीर पुरुष।

टकणो-दे० टिकणो।

टकरणो-(क्रि०) टकराना। टकरा जाना।

टकराणो-(क्रि०) १. टक्कर लगना। जोर से भिड़ना। २. ठोकर लग जाना। ३. सामने से आने वाले का मिलाप होना। अकस्मात रास्ते में मिल जाना। ४. हिसाब या लेन-देन का परस्पर मिलान करना। ५. मारे मारे फिरना।

टकराव-(न०) टकराने या भिड़ने की स्थिति।

टकरावणो-(क्रि०) टकराणो।

टकरीजणो-(क्रि०) १. जोर से भिड़ना। टकराना। २. ठोकर लग जाना। ३. मार्ग में सामने से मिलाप हो जाना। अकस्मात मार्ग में मिल जाना।

टकसाळ-(ना०) सिक्कों के ढलने या मुद्रित होने का स्थान। टकसाल। टकसाल।

टकसाळी-(वि०) १. प्रामाणिक। खरा। २. टकसाल में बना हुआ।

टकसाळी खबर-(ना०) पक्के समाचार। पक्की खबर।

टकसाळी बंध-(वि०) ठीक और पक्का। खरा।

टकसाळी-बात-(ना०) १. पक्की बात। २. सच्ची बात।

टकसाळी-बोली-(ना०) १. शिष्टभाषा। २. व्याकरण-सम्मत भाषा। साहित्य की भाषा। ३. शिष्ट समाज की भाषा। ४. सर्व सम्मत भाषा।

टकसाळी-भाषा-दे० टकसाळी-बोली।

टका-(ना०) धन-सम्पत्ति। रुपया-पैसा।

टकाऊ-दे० टिकाऊ।

टका भर-दे० टके भर।

टकार-(न०) 'ट' वर्ण। टट्टो।

टकाव-दे० टिकाव।

टके भर-(अव्य०) बहुत थोड़ा।

टको-(न०) १. टका। पैसा। २. दो पैसे। ३. दो पैसों का एक सिक्का। अधन्ना। ४. रुपया-पैसा। नाणो। ५. कर। महसूल।

टकोर-(ना०) १. व्यंगपूर्ण बात। व्यंग्य। ताना। २. वक्रोक्ति। ३. आघात। चोट। ४. टकोरे का शब्द। झंकार।

टकोरो-(न०) १. टकोरा। घड़ियाळ। घंटा। झल्लरी। झालर। २. टकोरे की झंकार।

टक्कर-(न०) १. मुकाबला। २. भिड़न्त। ३. धक्का। ४. ठोकर। ५. चोट। प्रहार। ६. हानि। घाटा।

टक्कर खाणो-(मुहा०) मुकाबला होना।

टक्कर लेणो-(मुहा०) मुकाबला करना।

टखणो-(न०) एड़ी के ऊपर की उभरी हुई हड्डी। टखना।

टग-(न०) १. अटकाव। रोक। २. सहारा। ३. हठ। दुराग्रह। जिद। ४. किनारा। ५. पैंड़ी।

टगण-(न०) छः मात्राओं का एक गण (छंद)।

टगमग-टगटग-(ना०)देखने की एक क्रिया।

टगी-(ना०) १. हठ। जिद। दुराग्रह। अड़। २. सहारा। (वि०) हठी। दुराग्रही। अड़ियल।

टच-(न०) १. शुद्धाशुद्ध सोने चांदी का टकसाल द्वारा निकाला हुआ प्रकाशित आंक। २. दे० टचकारो।

टचकारी-दे० टिचकारो।

टचकारो-दे० टिचकारो।

टचली आँगळी-(ना०)सबसे छोटी उंगली।

टचूकड़ो-(वि०) बहुत छोटा।

टटपूंजियो-(वि०) १. जिसके पास थोड़ी पूंजी हो। टुट-पूंजिया। २. गया-बीता। निकम्मा। ३. दीन। गरीब। ४. हीन। तुच्छ। ५. ओछा।

टटोळणो-दे० टंटोळणो।

टट्टी-(ना०) १. विष्टा। शौच। पाखाना। दिसा। २. शौचालय। पाखाना। संडास। ३. चिक। परदा।

टट्टी जाणो-(मुहा०) पाखाना करना। दिसा जाणो।

टट्टू-(न०) १. छोटे कद का घोड़ा। २. हाथ-पांव आदि कर्मेंद्रियां। यथा—मन चालै पण टट्टू नहीं चालै।

टट्टो-(न०) 'ट' अक्षर। टकार।

टड्डो-(न०) स्त्रियों की कोहनी के ऊपर पहनने का एक कड़ा। बाहु में पहिनने का एक गहना। टड़िया।

टणकाई-(ना०) जोरावरी। जबरदस्ती।

टणकाचंदजी-(न०) बलवान व्यक्ति। (व्यंग्य)।

टणकापणो-(न०)१. जोर। शक्ति। बल। २. पौरुष। ३. जबरदस्ती। टणकाई।

टणकार-(ना०) टणटण ध्वनि। टंकार। (वि०) दृढ़। मजबूत।

टणकारबंद-(वि०) दृढ़। मजबूत।

टणकां-री-टग-(न०) बलवानों को भी सहारा देने की सामर्थ्य रखने वाला व्यक्ति। सामर्थ्यवान। (वि०) समर्थ। सबल।

टणको-(वि०) १. जबरदस्त। बलवान। २. बड़ा। विशाल। विस्तृत। (न०) स्त्रियों के पांव का एक गहना। पांव का एक कड़ा।

टणटण-दे० टनटन।

टणटणाट-(न०) बकवाद। वाग्युद्ध। २. बार बार कहते रहना। ३. कलह। टंटा। ४. टनटन शब्द।

टणटणाटो-दे० टणटणाट।

टणटणाणो-(क्रि०) १. टनटन बजना या बजाना। २. घंटा बजना या बजाना ३. बकवाद करते रहना। बोलते रहना।

टणटणावणो-दे० टणटणाणो।

टणणण-(ना०) घंटा बजाने की ध्वनि।

टणमण-टणमण-(ना०) छोटी घंटड़ी के बजने की ध्वनि।

टन-(न०) लगभग साढ़े सत्ताईस मन का एक अंग्रेजी तोल।

टनटन-(अव्य०) १. घड़ी की आवाज। २. टकोरे की आवाज। ३. हर समय बोलते रहना व नुक्स निकालते रहने का भाव।

टप-(न०) १. बूंद या किसी वस्तु के गिरने का शब्द। २. गाड़ी के ऊपर की छत या आच्छादन।

टपकणो-(क्रि०) १. टपकना। चूना। २. मुग्ध होना। ३. झलकना। आभास होना। संकेत होना। ४. अचानक आ पहुँचना।

टपकाणो-दे० टपकावणो।

टपकावणो-(क्रि०) टपकाना।

टपकी-(ना०) १. छोटी बूंद। २. बिंदी टीकी।

टपको-(न०) बूंद। छींटा। छांट।

टपटप-(न०) १. बूंदें गिरने का शब्द। २. टपटप की आवाज।

टपणो-(क्रि०) १. किसी के आसरे रहना। २. तपना। ३. तपस्या करना। ४. ताकते रहना। ५. मौके की राह देखना। ६. कष्ट सहन करना।

टपर-(न०) १. सामान्य सामान। २. झोंपड़ी। ३. बैलगाड़ी पर छाया करने का मोटा कपड़ा।

टपरियो-दे० टपरो।

टपरी-(ना०) १. कच्चा घर। टापरी। २. झोंपड़ी।

टपरो-(न०) १. कच्चा घर। टापरो। २. झोंपड़ा।

टपली-(ना०) १. सिर। माथा। २. खोपड़ी। टिपली। ३. सिर पर दी जाने वाली एक हलकी थप्पड़। ४. कुम्हार के मिट्टी के कच्चे पात्र को घड़ने का एक उपकरण। टिपली। थपलियो।

टपलो-(न०) मिट्टी के कच्चे बरतनों को टीपने का कुम्हार का एक औजार। कुम्हार की हांडी आदि टीपने का एक उपकरण। थापी। थापियो। थवियो।

टपस-दे० टप्पस।

टपाक-(क्रि०वि०) जल्दी। शीघ्र।

टपाटप-दे० टपोटप।

टपाल-(ना०) डाक से आने या भेजी जाने वाली चिट्ठी-पत्री आदि। डाक।

टपालियो-(न०) डाक बांटने वाला। पोस्ट-मैन। डाकियो।

टपाली-दे० टपालियो।

टपूकड़ो-(न०) १. बूंद। छांट। 'टपको' (=बूंद) का विशिष्ट रूप। २. सिंह। (बाल भाषा में)।

टपेत-(वि०) वीर।

टपोटप-(क्रि०वि०) १. टपाटप। टप से। २. एक एक करके। ३. झटपट। जल्दी से।

टपोड़ी-(ना०) आंख की पुतली पर सफेद चिन्ह हो जाने का एक रोग।

टप्पड़-दे० तप्पड़।

टप्पो-(न०) १. गप। गप्प। २. संक्षिप्त विवरण। टब्बो। ३. किसी लेख आदि का सारांश। ४. उद्धृत अंश। ५. एक गायन। ६. गाने की एक तर्ज। ७. व्यर्थ का आना जाना। बेकार फिरना। ८. अंतर। ९. फेरा। चक्कर। १०. छोटी कहानी।

टब-(ना०) नहाने का या नहाने के लिये पानी रखने का एक पात्र।

टबको-दे० टपको।

टबो-दे० टब्बो।

टब्बो-(न०) १. मूल (ग्रंथ की पंक्तियों) के बीच में सूक्ष्म अक्षरों में लिखा जाने वाला शब्दार्थ व संक्षिप्त विवरण। २. पृष्ठ के उपान्त में लिखी हुई टीका या अर्थ। टिप्पण। टप्पो। ३. इस प्रकार लिखे जाने की एक प्राचीन शैली। टब्बा शैली। टबो।

टमकाणो-(क्रि०) १. आंख का झपकाना। आंख का इशारा करना। २. चमकीला। ३. झलकाना। ४. बजाना।

टमकार-दे० टमकारो।

टमकारणो-दे० टमकाणो।

टमकारो-(न०) १. आंख का इशारा। २. २. टकोरा बजने का शब्द।

टमकावणो-दे० टमकाणो।

टमटम-(न०) एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

टमरकटूं-(न०) फाखता के बोलने से उत्पन्न होने वाला शब्द।

टमाटर-(न०) एक शाक-फल। टॉमेटो।

टरकणो-(क्रि०) १. टरकना। खिसकना। २. टलना।

टरकाणो-दे० टरकावणो।

टरकायोड़ो-(भू०का०कृ०) टरकाया हुआ ।
टरकावणो-(क्रि०) बहाना बनाना । टरकाना । टालना ।
टरकियोड़ो-(भू०का०कृ०) टरका हुआ ।
टरटराणो-(क्रि०) मेंढक का बोलना ।
टरड़-(ना०) घमंड । अभिमान ।
टरड़को-(न०) १. नाराजी । २. अधोवायु का शब्द ।
टरड़पंच-दे० अड़बड़ पंच ।
टरणाटो-(न०) १. व्यर्थ बोलते रहना । बकझक । २. किसी वस्तु की बार बार माँग करते रहना । बार बार की जाने वाली माँग ।
टरणो-दे० टिरणो ।
टळटळणो-(क्रि०) १. धूजना । काँपना । २. हिलना ।
टळणो-(क्रि०) १. टलना । दूर होना । २. अन्यथा होना । ३.किसी वस्तु का स्थानान्तर होना । खिसकना । हटना । ४.समय बीतना । ५. पंक्ति व समाज से बहिष्कृत होना । ६. गाय भैंस आदि का दूध देना बंद होना । ७.फिर जाना । मुकरना । ८. बचना । उबरना । ९. अतिक्रमण होना । उल्लंघन होना । १०. स्थगित होना ।
टळतर-(वि०)१. टला हुआ । पंक्ति बाहर । बहिष्कृत । २. बिना काम का । जो छाँट कर अलग कर दिया गया हो । ३. बिना चलन का । खोटा ।
टळवळणो-(क्रि०) १. बीमारी या पीड़ा के कारण सोते हुये इधर उधर होना । २. पीड़ा से तड़फड़ाना । छटपटाना । तड़फड़ना । ३. नींद में करवटें बदलना । ४.लालायित होना । खाने को ललचाना । ५.मक्खी, जूं आदि का बदन पर चलना व रेंगना । ६. धीरे धीरे हिलना । ७. हिलना डुलना ।
टळवळाट-(ना०) १. बीमारी की घबराहट । २. हिलने डुलने व इधर उधर होने की क्रिया । ३. हलन-चलन । रेंगना ।
टळावणो-(क्रि०) १. चुनवाना । २. अलग करवाना । छाँट छाँट कर अलग करवाना । ३. पंक्ति से बाहर करवाना ।
टळियोड़ी-(वि०) १. बहिष्कृत । जाति च्युत । टली हुई । २. ऋतुमती । ३. दूध देना बंद की हुई (गाय, भैंस आदि) । ४. दूरस्थित । ५. खिसकी हुई । हटी हुई । ६. बची हुई ।
टळियोड़ो-(वि०) १. बहिष्कृत । जाति-च्युत । टला हुआ । २. दूरस्थित । ३. खिसका हुआ । हटा हुआ । ४. बचा हुआ ।
टल्लो-(न०) १. धक्का । टक्कर । टिल्लो । टिल्ला । २. आघात । चोट ।
टवकार-दे० टोकार ।
टवणो-(क्रि०) प्रहार करना ।
टवर्ग-(न०) ट, ठ, ड, ढ, ण—राजस्थानी भाषा के इन पाँच व्यंजन वर्णों का वर्ग ।
टसक-(ना०) १. टीस । २. अकड़ । ३. अभिमान ।
टसकणो (क्रि०)१. बसकना। टीस मारना। टसकना । कराहना । २. खिसकना । सरकना ।
टसकाई-दे० टसक ।
टसको-(न०)१. रोने की बसक । २. टीस । कसक। ३. गर्व । ऐंठ । ४. सूखी खांसी ।
टसर-(न०) एक प्रकार का सूत या उससे बुना हुआ कपड़ा ।
टसरियो-(न०) १ अफीम रखने की एक छोटी जेबी डिबिया । डिबियो । २. एक औजार ।
टहकारो-(न०) दुःख या पीड़ा की आवाज । टंकारो ।
टहको-दे० टहकारो ।
टहटहणो-(क्रि०) बात का करना ।

टपटप–(न०) १. बूंदें गिरने का शब्द। २. टपटप की आवाज।

टपणो–(क्रि०) १. किसी के आसरे रहना। २. तपना। ३. तपस्या करना। ४. ताकते रहना। ५. मौके की राह देखना। ६. कष्ट सहन करना।

टपर–(न०) १. सामान्य सामान। २. झोंपड़ी। ३. बैलगाड़ी पर छाया करने का मोटा कपड़ा।

टपरियो–दे० टपरो।

टपरी–(ना०) १. कच्चा घर। टापरी। २. झोंपड़ी।

टपरो–(न०) १. कच्चा घर। टापरो। २. झोंपड़ा।

टपली–(ना०) १. सिर। माथा। २. खोपड़ी। टिपली। ३. सिर पर दी जाने वाली एक हलकी थप्पड़। ४. कुम्हार के मिट्टी के कच्चे पात्र को घड़ने का एक उपकरण। टिपली। थपलियो।

टपलो–(न०) मिट्टी के कच्चे बरतनों को टीपने का कुम्हार का एक औजार। कुम्हार की हांडी आदि टीपने का एक उपकरण। थापी। थापियो। थपियो।

टपस–दे० टप्पस।

टपाक–(क्रि०वि०) जल्दी। शीघ्र।

टपाटप–दे० टपोटप।

टपाल–(ना०) डाक से आने या भेजी जाने वाली चिट्ठी-पत्री आदि। डाक।

टपालियो–(न०) डाक बाँटने वाला। पोस्ट-मैन। डाकियो।

टपाली–दे० टपालियो।

टपूकड़ो–(न०) १. बूंद। छांट। 'टपको' (=बूंद) का विशिष्ट रूप। २. सिंह। (बाल भाषा में)।

टपेत–(वि०) वीर।

टपोटप–(क्रि०वि०) १. टपाटप। टप से। २. एक एक करके। ३. झटपट। जल्दी से।

टपोड़ी–(ना०) आंख की पुतली पर सफेद चिन्ह हो जाने का एक रोग।

टप्पड़–दे० तप्पड़।

टप्पो–(न०) १. गप। गप्प। २. संक्षिप्त विवरण। टब्बो। ३. किसी लेख आदि का सारांश। ४. उद्धृत अंश। ५. एक गायन। ६. गाने की एक तर्ज। ७. व्यर्थ का आना जाना। बेकार फिरना। ८. अंतर। ९. फेरा। चक्कर। १०. छोटी कहानी।

टब–(ना०) नहाने का या नहाने के लिये पानी रखने का एक पात्र।

टबको–दे० टपको।

टबो–दे० टब्बो।

टब्बो–(न०) १. मूल (ग्रंथ की पंक्तियों) के बीच में सूक्ष्म अक्षरों में लिखा जाने वाला शब्दार्थ व संक्षिप्त विवरण। २. पृष्ठ के उपान्त में लिखी हुई टीका या अर्थ। टिप्पण। टप्पो। ३. इस प्रकार लिखे जाने की एक प्राचीन शैली। टब्बा शैली। टबो।

टमकाणो–(क्रि०) १. आंख का झपकाना। आंख का इशारा करना। २. चमकीला। ३. झलकाना। ४. बजाना।

टमकार–दे० टमकारो।

टमकारणो–दे० टमकाणो।

टमकारो–(न०) १. आंख का इशारा। २. २. टकोरा बजने का शब्द।

टमकावणो–दे० टमकाणो।

टमटम–(न०) एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

टमरकटू–(न०) फाखता के बोलने से उत्पन्न होने वाला शब्द।

टमाटर–(न०) एक शाक-फल। टॅमेटो।

टरकणो–(क्रि०) १. टरकना। खिसकना। २. टलना।

टरकाणो–दे० टरकावणो।

टरकायोड़ो–*(भू०का०कृ०)* टरकाया हुआ।

टरकावणो–*(क्रि०)* बहाना बनाना। टरकाना। टालना।

टरकियोड़ो–*(भू०का०कृ०)* टरका हुआ।

टरटराणो–*(क्रि०)* मेंढक का बोलना।

टरड़–*(ना०)* घमंड। अभिमान।

टरड़को–*(न०)* १. नाराजी। २. अधोवायु का शब्द।

टरड़पंच–दे० अड़बड़ पंच।

टरणाटो–*(न०)* १. व्यर्थ बोलते रहना। बकझक। २. किसी वस्तु की बार बार माँग करते रहना। बार बार की जाने वाली माँग।

टरणो–दे० टिरणो।

टळटळणो–*(क्रि०)* १. धूजना। काँपना। २. हिलना।

टळणो–*(क्रि०)* १. टलना। दूर होना। २. अन्यथा होना। ३.किसी वस्तु का स्थानान्तर होना। खिसकना। हटना। ४.समय बीतना। ५. पंक्ति व समाज से बहिष्कृत होना। ६. गाय भैंस आदि का दूध देना बंद होना। ७.फिर जाना। मुकरना। ८. बचना। उबरना। ९. अतिक्रमण होना। उल्लंघन होना। १०. स्थगित होना।

टळतर–*(वि०)*१. टला हुआ। पंक्ति बाहर। बहिष्कृत। २. विना काम का। जो छाँट कर अलग कर दिया गया हो। ३. विना चलन का। खोटा।

टळवळणो–*(क्रि०)* १. बीमारी या पीड़ा के कारण सोते हुये इधर उधर होना। २. पीड़ा से तड़फड़ाना। छटपटाना। तड़फड़ना। ३. नींद में करवटें बदलना। ४.लालायित होना। खाने को ललचाना। ५.मक्खी, जूं आदि का बदन पर चलना व रेंगना। ६. धीरे धीरे हिलना। ७. हिलना डुलना।

टळवळाट–*(ना०)* १. बीमारी की घबराहट। २. हिलने डुलने व इधर उधर होने की क्रिया। ३. हलन-चलन। रेंगना।

टळावणो–*(क्रि०)* १. चुनवाना। २. अलग करवाना। छाँट छाँट कर अलग करवाना। ३. पंक्ति से बाहर करवाना।

टळियोड़ी–*(वि०)* १. बहिष्कृत। जाति च्युत। टली हुई। २. ऋतुमती। ३. दूध देना बंद की हुई (गाय, भैंस आदि)। ४. दूरस्थित। ५. खिसकी हुई। हटी हुई। ६. बची हुई।

टळियोड़ो–*(वि०)* १. बहिष्कृत। जातिच्युत। टला हुआ। २. दूरस्थित। ३. खिसका हुआ। हटा हुआ। ४. बचा हुआ।

टल्लो–*(न०)* १. धक्का। टक्कर। टिल्लो। टिल्ला। २. आघात। चोट।

टवकार–दे० टोकार।

टवणो–*(क्रि०)* प्रहार करना।

टवर्ग–*(न०)* ट, ठ, ड, ढ, ण—राजस्थानी भाषा के इन पाँच व्यंजन वर्णों का वर्ग।

टसक–*(ना०)* १. टीस। २. अकड़। ३. अभिमान।

टसकणो *(क्रि०)*१. वसकना। टीस मारना। टसकना। करहाना। २. खिसकना। सरकना।

टसकाई–दे० टसक।

टसको–*(न०)*१. रोने की वसक। २. टीस। कसक। ३. गर्व। ऐंठ। ४. सूखी खांसी।

टसर–*(न०)* एक प्रकार का सूत या उससे बुना हुआ कपड़ा।

टसरियो–*(न०)* १. अफीम रखने की एक छोटी जेबी डिबिया। हंडियो। २. एक औजार।

टहकारो–*(न०)* दुख या पीड़ा की आवाज। टँकारो।

टहको–दे० टहकारो।

टहटहणो–*(क्रि०)* वाद्य का वजना।

टहरको–(न०) १. नखरा। नाज। २. बनावटी चेष्टा। ३. व्यंगपूर्ण बात। ताना। व्यंग। ४. गर्वपूर्ण बनावटी कोमल चेष्टा। ५. अभिमान। गर्व। ६. नाराजी। नाराजगी। ७. रीस। क्रोध।

टहल–(ना०) १. चाकरी। सेवा। २. भ्रमण। विहार।

टहलणो–(क्रि०) भ्रमण करना। फिरना। घूमना। चहल कदमी करना।

टहल-बंदगी–(ना०) सेवा। चाकरी।

टहलियो–(न०) सेवक। हाजरियो। टहल करने वाला।

टहलुओ–दे० टहलियो।

टहूकणो–(क्रि०) १. मोर या कोयल का बोलना। २ दूरस्थ व्यक्ति को बुलाने के लिये तेज व तीखी आवाज से पुकारना।

टहूको–(न०) १. मोर या कोयल की आवाज। २.केका। ३. दूरस्थ को बुलाने के लिये की जाने वाली लंबी ऊंची आवाज।

टंक–(न०) १. समय। २. बार। दफा। ३. भोजन का समय। ४. एक बार का भोजन। ५.एक बार के भोजन की संज्ञा। ६. विवाह मौसर आदि में दिया जाने वाला एक बार का भोजन। ६. चार माशे का एक तौल।

टंक अढार–दे० अढार टंकी।

टंकण–(न०) १. सुहागा। टंकन। टंकणक्षार। २. चाँदी, ताँबे आदि धातु-खंडों पर यंत्र या ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने का कार्य। ३. टाइप-राईटिंग।

टंकणखार–(न०) सुहागा।

टंकण यंत्र–(न०) एक आधुनिक लेखन-यंत्र। टाइप-राइटर।

टंकसाळ–दे० टकसाळ।

टंकसाळी–दे० टकसाळी।

टंकाई (ना०) १. टाँकने की मजदूरी। २. टाँकने की क्रिया या भाव।

टंकाउळि–दे० टंकावळ।

टंकार–(न०) १. टन-टन (टं-टं) शब्द। २. धनुष की प्रत्यंचा की ध्वनि।

टंकारणो–(क्रि०) १. धनुष की डोरी को खींच कर छोड़ने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि। ३. टं-टं शब्द करना।

टंकारव–(ना०) १. धनुष की प्रत्यंचा की ध्वनि। धनुष की डोरी खींचने से उत्पन्न शब्द। २. टकार। टंकार ध्वनि।

टंकारो–दे० टंकार।

टंकावळ–(वि०)१. बहुत लड़ियों (श्रेणियों) वाला (टणका+अवली) और कीमती। २. चार लड़ियों वाला। (टंक+अवली) (न०)१. बड़ा और बहुमूल्य कंठाभरण। २. एक प्रकार का हार।

टंकावळ हार–(न०)१. चार लड़ी का हार। २. बहुमूल्य कंठाभरण।

टंकी–(ना०)१. पानी, तेल इत्यादि भरने का बरतन या कुंड। कुंडी। २.भारी धनुष।

टंकेत–(वि०) १. टंक वाला। २. चिह्नित। ३. जबरदस्त।

टंकोटंक–(अव्य०) १. नियत समय पर। २. योग्य समय। समय पर। ३. प्रत्येक टंक पर।

टंकोर–(ना०) ध्वनि। आवाज।

टंकोरो–(न०) टकोरा। घंटा। घड़ियाल। झालर।

टंग–दे० टाँग।

टँगड़ी–दे० टाँगड़ी।

टँगणो–(क्रि०) १. टँगना। लटकना। २. टँगा जाना।

टंगावणो–(क्रि०) १. लटकाना। टंगवाना।

टंगियोड़ो–(भू०का०कृ०) टँगा हुआ। लटका हुआ।

टंच–(वि०) १. बढ़िया किस्म का । पक्का । २. कंजूस । ३. तैयार । ४. कसौटी पर जाँचा हुआ । ५. चंट । धूर्त । दे० टच सं० १ ।

टंचणो–दे० टाँचणो ।

टंचावणो–(क्रि०) १. टाँचे लगवाना । २. २. चक्की को टँचवाना । ३. टंच निकलवाना (सोने चाँदी का) ।

टंट–दे० टंटो ।

टंटाखोर–(वि०) झगड़ालू । फसादी । उपद्रवी । टंटाळू ।

टंटाळू–दे० टंटाखोर ।

टंटो–(न०) १. टंटा । झगड़ा । कजियो । तकरार । २. व्यर्थ की झंझट । ३. उत्पात ।

टंटो-झगड़ो–दे० टंटो फिसाद ।

टंटो-फिसाद–(न०) टंटा-फसाद । लड़ाई-झगड़ा ।

टंटोळणो–(क्रि०) टटोलना । खोजना । ढूंढना ।

टंडेरो–(न०) १. घर-गृहस्थी । २. सामान ।

टंडो–दे० टाँडो ।

टाइम–(न०) समय । वक्त ।

टाइम-टेबल–(न०) समय पत्रक । समय सारिणी ।

टाउन हॉल–(न०) नगर का सार्वजनिक सभा इत्यादि करने का मकान ।

टाकर–(ना०)१. घाव । चोट । २. टक्कर । ३. ठोला । ठोसा । ४. चोंच की मार से पड़ने वाला घाव । ठोंग ।

टाकी–(ना०) १. घाव । जख्म । क्षत । २. ककड़ी, मतीरे आदि की कच्चे-पक्के की परीक्षा के लिये उसमें चाकू से काट कर बनाया गया वखोल । डगळी ।

टाचकणो–(क्रि०) १. टकराना । २. दो वस्तुओं का परस्पर टकराना । ३. उछलना । कूदना । ४. किसी वस्तु का टूट कर दूर जा पड़ना । ५. उछलकर आई हुई वस्तु का टकराना या टकराने से चोट लगना । ६. मारा मारा फिरना । इस घर से उस घर को जाना । ७. बेइज्जत करना । ८. डाँटना । फटकारना ।

टाचकियोड़ी–(वि०) १. अनादृता । अमानेतण ।

टाचकियोड़ो–(वि०) १. टकराया हुआ । २. अप्रतिष्ठित ।

टाचको–(न०) १. डाँट । फटकार । २. बेइज्जती । ३. टक्कर । ४. चोट । आघात ।

टाट–(ना०)१. बकरी । २. गंज । खल्वाट । ३. सन की डोरियों का मोटा कपड़ा । ४. खोपड़ी । कपाल । (वि०) १. बकवादी । २. मूर्ख ।

टाटियो–(वि०)टाट वाला । गंजरोग वाला । खल्वाटी ।

टाटी–(ना०) १. बाँस आदि की पट्टियों से बनाई हुई आड़ । पल्ला । टट्टर । टट्टी । २. पतली (मात्र एक ईंट लंबी की) दीवाल ।

टाटू–दे० टाटियो ।

टाटो–(न०) १. गरमियों में ठंडक के लिये लगाया जाने वाला खस आदि का पल्ला । टट्टी । २. बकरियों का झुंड । ३. बकरी ।

टाण–दे० टाँड ।

टाणो–(न०) १. समय । २. अवसर । शुभाशुभ प्रसंग । ३. शुभ प्रसंग । ४. मौका । ५. उत्सव । ६. जीमन । भोज । ७. मृत्यु भोज । ८. माहेरा ।

टाणो-टामचो–(न०) १. विशेष अवसर । खास मौका । वार तहवार । २. शुभ अवसर ।

टाप–(ना०) १. घोड़े के चलने का शब्द । घोड़े के पाँवों का जमीन पर पड़ने का

शब्द । २. घोड़े के पैर का वह भाग जो जमीन पर पड़ता है । सुम । खुर ।

टापटीप-(ना०) १. सजावट । शृंगार । २. शोभा । ३. मरम्मत । दुरुस्ती । ४. व्यवस्था । सुघड़ता । सफाई । ५. बनावट । **टीपटाप** । **सिणगार** ।

टापर-(ना०) १. घोड़े आदि पशुओं को ओढ़ाने का मोटा कपड़ा । **टप्पर** । २. घोड़े की जीन के नीचे रहने वाला कपड़ा ।

टापरियो-(न०) १. झोंपड़ा । २. घर ।

टापरी-दे० टापरो ।

टापरो-(न०)१. घर । २. साधारण कच्चा घर । झोंपड़ा । ३. सिर । माथा ।

टापी-(ना०) झोंपड़ी । **टापरी** । **टपरी** ।

टापू-(न०) चारों ओर पानी (समुद्र) से घिरा हुआ भू भाग । द्वीप ।

टापो-(न०) १. कहीं जाने पर काम सिद्ध न होने का भाव । टांपा । चक्कर । फेरा । खाली हाथ लौटना । २. झोंपड़ा । **टापरो** ।

टाबर-(न०) बालक । बच्चा ।

टाबर-टींगर-दे० टाबर टोळी ।

टाबर-टोळी- (ना०) बाल-बच्चे । बाल समूह । बालकवृंद ।

टाबरदार-(वि०) बाल-बच्चों वाला ।

टाबरपणो-(न०)१. बालक जैसा बरताव । बालक जैसी हरकत । २. बचपन । बाल्यावस्था ।

टाबरियो-दे० टाबर ।

टामक-(न०) १. बड़ा नगारा । २. बड़ा ढोल । (वि०) मूर्ख ।

टामकी-(ना०) १. ढोलक । २. डुगडुगी । ३. आकाश दीप ।

टामचो-(न०) अवसर । मौका । दे० टाणो-टामचो ।

टामण-टूमण-(न०) १. जादू-टोना । २. वशी करण । **कामण** । **कमणटामण** ।

टामंक-दे० टामक ।

टार-(उ०) दे० 'टारड़ी' और 'टारड़ो' ।

टारड़ी-(ना०) १. छोटे कद की दुबली-पतली घोड़ी । **टार** । २. घटिया नसल की घोड़ी ।

टारड़ो-(न०)१. छोटे कद का दुबला-पतला घोड़ा । **टार** । २. घटिया नसल का घोड़ा ।

टाल-(ना०) १. बाल झड़ गये हों वह सिर का भाग । खल्वाट । २. सिर के बालों को दो भागों में करने से बनी रेखा । माँग । ३. लकड़ी, भूसे आदि की दुकान ।

टाळ-(अव्य०) १. बगैर । बिना । रहित । २. अतिरिक्त । सिवाय । ३. निवारण ।

टाळको-(वि०) १. चुना हुआ । चुनिंदा । छँटा हुआ । २. अच्छा । बढ़िया । ३. चुन कर या छाँट कर निकाला हुआ । छँटुआ । ४. बदमाश । छँटैल । धूर्त । **टाळवों** । **टाळमों** ।

टाळणो-(क्रि०)१. अलग करना । टालना । पृथक करना । २. चुनना । छाँटना । ३. अमान्य करना । ४. ग्रहण न करना । छोड़ना । ५. अच्छा ले लेना और खराब को छोड़ देना । ६. जवाबदारी नहीं लेना । बहाना करना । ७. बहिष्कार करना ।**टाळको** ।

टाळमटूळ-(ना०) बहाना । मिस ।

टाळमों-दे० टाळको ।

टाळवों-दे० टाळको ।

टाळाटाळी-दे० टाळाटूळी ।

टाळाटूळी-(ना०) १. बहाना । मिस । २. छाँटने का काम । छँटाई ।

टाळियोड़ो (वि०) १. अलग किया हुआ । बहिष्कृत । २. चुना हुआ । छाँटा हुआ । ३. अमान्य । ४. अग्राह्य ।

टाली-(ना०) १. लकड़ी, भूसा आदि की दुकान । २. बूढ़ी गाय । ३. गिलहरी । (वि०) अर्द्ध । आधा । (सं. भा.)

टाळो–(न०) १. बचाव। किनारा। २. टालमटूल। बहाना। ३. जुदाई। किनारा। ४. निवारण। निवृत्ति।

टाळोकड़–(वि०) समूह या राशि में से छाँटा हुआ।

टाळोकड़ी–(वि०) समूह में से छाँटी हुई।

टाळोकड़ो–दे० टाळोकड़।

टावो टेवो–(न०) विवाहादि विशेष अवसरों पर तैयार कराया जाने वाला सामान तथा उसको तैयार कराने की हलचल।

टाँक–(न०) एक तौल। टंक।

टाँकण–(न०) टंकन। सिक्का। (संकेत शब्द)

टाँकणी–(ना०) १. शिल्पियों का एक औजार। २. पत्थर आदि टाँकने का एक औजार। ३. आलपिन।

टाँकणो–(न०) १. अवसर। समय। २. अवसर विशेष। शुभाशुभ अवसर। ३. पर्व। उत्सव। ४. टाँकने का औजार। (क्रि०) १. नोट करना। लिखना। २. किसी रचना में से नकल करना। ३. पत्थर टाँकना। ४. टाँका मारना। सिलाई करना।

टाँकी–(ना०) १. पानी की टंकी। २. पत्थर घड़ने का औजार। छेनी। टाँकणी। छीणी।

टाँको–(न०) १. सिलाई। सीवन। टेंका। टाँका। २. थिगली। पैवंद। कारी। ३. बखिया। ४. जमीन में बनाया हुआ पानी-घर। जल कुंड। बरसात का पानी भर कर रखने का भुइंहरा। ५. सोने चाँदी आदि के आभूषणों को झालने का एक धातु-मिश्रण। धातु-संधान। झालने का साधन। संधानोत्कर। ६. एक भूमि कर।

टाँग–(ना०) १. प्राणी के चलने फिरने का अंग। २. जांघ से एड़ी तक का भाग। पैर। ३. मेज, कुर्सी आदि का पाया।

टाँगड़–(न०) १. एक टाँग से दौड़ कर पकड़ने का बच्चों का एक खेल। २. एक पाँव से चलना। ३. पाँव।

टाँगड़ी–(ना०) पाँव। टाँग।

टाँगणो–(क्रि०) टाँगना। लटकाना।

टाँगरो–(न०) १. स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे और उनका सामान। २. काफिला और उसका सामान। ३. बाळद। ४. अव्यवस्थित सामान। ५. फालतू सामान। अटाला। ६. सामान का ढेर। ७. फेरी वाले का सामान।

टाँगाटोळी–दे० टींगाटोळी।

टाँच–(ना०) १. चोंच। २. चोंच द्वारा लगा हुआ घाव। ठोंग।

टाँचणो–(क्रि०) १. सिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदरा बनाना। रेहना। टाँकना। टाँचे बनाना। २. खोसना। झपटना। ३. किसी तरह से प्राप्त करना। ४. फुसला करके या धोखे से किसी वस्तु का प्राप्त करना। ५. चोंच मारना।

टाँचावणो–दे० टंचावणो।

टाँचो–(न०) १. झटका। चोट। २. पुनर्लग्न। ३. विधवा का किसी की पत्नी बनना।

टाँट–(ना०) धोती पहनने के समय लगाई जाने वाली पार्श्व ऐंठन। (वि०) दुबला-पतला।

टाँटियो–(न०) १. भिड़। बर्रे। ततैया। २. पैर (ऊनार्थक) (वि०) दुबला-पतला।

टाँटो–(वि०) टेढ़ा। बांको।

टाँड–(ना०) परछत्ती। टाँड़। पछीत। टांस।

टाँडणो–(क्रि०) ताडना। दहाड़ना।

टाँडा-रो-नायक–*(न०)* १. दलपति। २. बालद का स्वामी। मुख्य बनजारा। ३. भात भरने (माहेरे) का एक लोक गीत। ४. भात भरने (माहेरा करने) को आने वाले दल का मुखिया। दुल्हे या दुल्हिन का मामा।

टाँडाळो–*(वि०)* जिसके पास माल लाने या ले जाने के लिए बैलों का समूह हो। टाँडे वाला। **टांडाधारी**।

टाँडो–*(न०)* १. समूह। २. गाँव। ३. बनजारे के बैल, मनुष्यादि का समूह। **पोठ**। **बाळद**। ४. मरे हुए पशुओं का चमड़ा उतारने का स्थान।

टाँपो–*(न०)* १. किसी काम के लिये कहीं जाने पर खाली हाथ लौटना। २. फेरा। चक्कर। **आँटो**। **फेरो**।

टाँस–*(न०)* एक पक्षी। लीलटाँस।

टिकट–दे० टिगट।

टिकड़ी–*(ना०)* टिकिया।

टिकणो–*(क्रि०)* १. सहारे पर रहना। टिकना। २. निभना। ३. रहना। ४. एक स्थल पर ज्यादा समय तक ठहरना। ५. बैठना। ६. जमना।

टिकली–*(ना०)* गोलाकार छोटी चिपटी वस्तु।

टिकलो–*(न०)* गोलाकार चिपटी वस्तु। बड़ी टिकली।

टिकाऊ–*(वि०)* १. स्थाई। कायम। पायेदार। स्थितिमान। २. मजबूत। दृढ़।

टिकाणो–*(क्रि०)* १. टिकने में सहायक होना। २. आधार से खड़ा या स्थित करना। ३. टिकाना। ठहराना।

टिकाव–*(न०)* १. टिकाऊपन। मजबूती। २. विश्राम। पड़ाव। ३. ठहराव। स्थायित्व। ४. धीरज। सब्र।

टिकावणो–दे० टिकाणो।

टिकिया–*(ना०)* १. छोटी किन्तु मोटी रोटी। टिक्कड़। २. चपटी गोलाकार छोटी वस्तु। **टिकड़ी**।

टिक्कड़–*(न०)* मोटी रोटी।

टिक्की–*(ना०)* १. सिफारिश। लागवग। २. सफलता। कामयाबी। ३. तजवीज।

टिगट–*(ना०)* १. विशिष्ट काम, यात्रा, प्रवेश, डाक इत्यादि के लिये खरीदा जाने वाला कागज का बना मूल्य पत्र या अधिकार पत्र। २. डाक, रेल, बस या सिनेमा का टिकट। टिकट। टिकेट।

टिगटघर–*(न०)* टिकट बेचने वा खरीदने आधिकारिक स्थान।

टिगणो–दे० टिकणो।

टिच–*(ना०)* १. वाद विवाद। झगड़ा। बोलचाल। दे० टिचकारो।

टिचकारणो–*(क्रि०)* टिच टिच के अव्यक्त शब्द का उच्चारण करना। टिटकारना।

टिचकारी–दे० टिचकारो।

टिचकारो–*(न०)* १. वधूवर्ग की स्त्रियों का बड़े बूढ़ों से सम्भाषण नहीं करने और घूंघट रखने के कारण उनके प्रति किये जाने वाले संबोधन अथवा उनकी किसी बात के लिये दिये जाने वाले नकारात्मक उत्तर का एक अव्यक्त शब्द। 'टिच' जैसा एक अनुकरण शब्द। २. घास खाने वाले पशुओं को हाँकने का 'टिच-टिच' जैसा एक अव्यक्त शब्द।

टिचन–*(वि०)* १. तैयार। प्रस्तुत। २. जिसमें कोई त्रुटि न हो। दुरुस्त। अच्छा। ठीक। ३. पक्का। खरा।

टिचनबंद–दे० टिचन।

टिटकारणो–दे० टिचकारणो।

टिटकारो–दे० टिचकारो।

टिपकी–दे० टपकी।

टिपको–दे० टपकी।

टिपली–दे० टपली।

टिपलो-(न०) माथा । खोपड़ी ।

टिपस-(ना०) १. युक्ति । उपाय । टिप्पस । २.सिफारिश । टिक्की । ३.अभिप्राय साधने की युक्ति । टिप्पस । ४. नियुक्ति । ५. किसी धंधे का हीला मिल जाना । धंधे में लगने का भाव ।

टिपाणो-दे० टिपावणो ।

टिपावणो-(क्रि०) १. चोट लगाना । प्रहार करना । पीटना । २. घड़ना । ३. लिखना । ४. पिटवाना । प्रहार करवाना । ५. घड़वाना । ६. लिखवाना ।

टिप्पण-(न०) १. गूढ़ वाक्य का विस्तृत अर्थ । २. व्याख्या । ३. टीका । ४. किसी घटना या बात पर किया जानेवाला विचार । आलोचन । ५. स्मरणार्थ लेख । नोंध । नोट । ६. वह छोटा लेख जिसके द्वारा गूढ़ वाक्य का अर्थ बताया जाय ।

टिप्पणी-दे० टिप्पण ।

टिप्पस-(ना०)१. मतलब साधने का उपाय । २. बड़प्पन की बातें करना । टपस ।

टिप्पो-(न०) १. नोंध । नोट । नूंध । २. ताना । आक्षेप । महणो । तानो । ३. सहज धक्का ।

टिक्की-(ना०) बिंदी । टीकी ।

टिमची-(ना०) तिपाई ।

टिमटिमाणो-(क्रि०) १. मंद प्रकाश देना । २. रह-रहकर धीमे-धीमे चमकना ।

टिमरियो-(वि०) छोटा । ठिगना ।

टिरणो-(क्रि०) लटकना ।

टिल्लो-(न०)१. धक्का । टिल्ला । टल्ला । २. चोट । आघात ।

टिंच-दे० टंच ।

टीक-(ना०) स्त्रियों के सिर का एक आभूषण । टीको ।

टीकम-(न०) १. त्रिविक्रम । टीकम । २. श्रीकृष्ण ।

टीकली-कमेड़ी-(ना०) प्रतिष्ठित, बुद्धिमान, चतुर, धनवान, प्रमुख इत्यादि । (व्यंग्यार्थ में)

टीकलो-(वि०)१. टीके वाला । २. तिलकधारी ।

टीका-(ना०) १. अर्थ । २. व्याख्या । ३. पद तथा वाक्य का बोलचाल की सरल भाषा में किया हुआ स्पष्टीकरण । ४. गुण दोष की समालोचना । ५. निंदा ।

टीकाकार-(न०) ग्रंथ की व्याख्या करने वाला ।

टीका-टबका-दे० टीका-टिमका ।

टीका-टिप्पणी-(ना०) गुण दोषों की आलोचना ।

टीका-टिमका-(न०ब०व०)१. तिलकछापा । २. उपरी दिखावा । ढोंग । ३. नखरा ।

टीकायत-(न०) १. पाटवी कुंवर । राज्य का उत्तराधिकारी राजकुमार । टीलायत । २. गुरु या मठाधीश का उत्तराधिकारी शिष्य । पट्ट शिष्य । तिलकायत । ३. बड़ा लड़का । ४. टीके वाला । तिलकधारी । ५. प्रधान मुखिया ।

टीकी-(ना०) बिंदी । बिंदुली ।

टीकी-भळको-दे० टीली-भळको ।

टीको-(न०)१. तिलक । २. राज्य तिलक । ३. सगाई की एक रीति जिसमें कन्या का पिता लड़के को या लड़के के पिता को कुछ धन देता है । ४. राजाओं में सगाई-संबंध करने की एक रीति, जिसमें कन्या का पिता पुरोहित के हाथ किसी अन्य राजा के यहाँ सगाई स्वीकार करने के निमित्त कुंकुम, नारियल और मुद्रा आदि की भेंट भेजता है । ५. स्त्रियों का एक शिरोभूषण । ६. पशु की ललाट में भिन्न रंग के बालों का चिन्ह । ७. संक्रामक रोगों की एक प्रतिरोधात्मक चिकित्सा, जिसमें छेदन-प्रक्रिया द्वारा

औषध विशेष को रक्त में प्रविष्ट किया जाता है। टीका। ७. बारहवें के मृत्यु-भोज की एक रीति जिसमें मृतक के संबंधी उसके यहां उस दिन कुछ रोकड़ या कपड़े देते हैं।

टीखळ–(ना०) १. झंझट। इल्लत। २. मसखरी। मजाक। दिल्लगी। ३. एक व्यक्ति के अनेक बच्चा-बच्ची। बहु-संतान। ४. रूप, स्वभाव, गुण इत्यादि से रहित संतान। ५. रूप, स्वभाव, गुण इत्यादि से रहित संतान (कुटुम्ब के व्यक्ति) के कारण होने वाला मनस्ताप।

टीखलियो–(वि०) टीखळ करने वाला।

टीटोड़ी–(ना०) १. एक पक्षी। टिटहरी। २. गिलहरी। टीलोड़ी।

टीड–दे० टींड।

टीडी-भळको–(न०) स्त्रियों का एक शिरो-भूषण।

टीडीलो-पीडीलो–(न०) एक खेल।

टीण–दे० टीन।

टीन–(न०) १. लोहे की चद्दर। २. चद्दर का डिब्बा।

टीप–(ना०) १. गाने की अलाप। तान। ऊंचा स्वर। २. तार या फूंक वाद्य का एक विशेष स्वर। ३. संक्षिप्त उद्धरण। ४. किसी सार्वजनिक काम के लिये कई व्यक्तियों से इकट्ठा किया जाने वाला रुपया-पैसा। चंदा। उघाया हुआ धन। ५. दीवार की चुनाई में ईंटों की सधि में रह गई खाली जगह में चूने आदि का लेप लगा कर पक्का करना। ६. सूची। फेहरिश्त। ७. वर्षा की ठंडी बूंद या ओला। ८. याददास्त के लिये नोट करना। (वि०) बहुत ठंडा।

टीपटाप–(ना०) १. सँवारने का काम। २. मरम्मत। ३. आडम्बर। बनावट। ४. सजधज। ५. तड़कभड़क। बनाव-सिंगार। सिरणगार। टापटीप।

टीपणी–(ना०) १. किसी सार्वजनिक काम के लिये अनेक व्यक्तियों से इकट्ठा किया जाने वाला धन। चंदा। २. चंदे की सूची।

टीपणो–(न०) पतड़ा। पंचांग। (ज्यो) (क्रि०) १. लिखना। नोट करना। २. टीपना। पीटना। ठोकना। ३. मारना। पीटना।

टीपरियो–(न०) घी यालोड़ी तिलोड़ी में से घी या तेल निकालने की छोटी टीपरी।

टीपरी–(न०) छोटा टीपरा।

टीपरो–(न०) १. ऊंचाई की ओर (खड़ी) लंबी डंडी लगा हुआ द्रव पदार्थ को लेने या मापने का कटोरीनुमा एक पात्र।

टीपाँ–(ना० ब० व०) चूड़ी के ऊपर की पत्तियाँ।

टीपो–(न०) बूंद। छाँट।

टीबो–(न०) मिट्टी या रेती का उभरा हुआ भाग। रेत का टोला। रेती की पहाड़ी। टीबा। धोरो।

टीमटाम–(ना०) १. बनावट। ठाठ बाट। २. शृंगार।

टीलायत–दे० टीकायत।

टीलो–दे० टीको।

टीली-भळको–(न०) स्त्रियों का एक शिरो-भूषण।

टीलो–(ना०) १. तिलक। २. एक आभूषण। ३. टीबा। धोरो।

टीलोड़ी–(ना०) गिलहरी।

टीस–(ना०) रह रह कर उठने वाली पीड़ा। कसक। चसक।

टीसी–(ना०) १. टहनी के ऊपर का कोमल भाग। टहनी का अग्र भाग। २. टहनी। शाखा। ३. नाक का अग्रभाग।

टींगर-(न०)१. बाल-बच्चे। बच्चे-बच्चियाँ। २. एक ही व्यक्ति के अनेक बच्चे-बच्चियाँ। ३. बच्चा।

टींगरियो-(न०) बच्चा। (व्यंग्य में)। टाबर।

टींगाटोळी-(ना०) दो या चार जनों के द्वारा हाथ-पाँव को पकड़ कर बलात् उठाकर ले जाने की क्रिया।

टींच-(ना०) १. वाद-विवाद। २. बोला चाली। वाग्युद्ध। २. लड़ाई। झगड़ा। टिच।

टींचको-दे० टींचियो।

टींचा-टींच-(ना०) दो जनों के परस्पर का वाग्युद्ध। वादविवाद। बोलचाल।

टींचियो-(न०) १. व्यंग्यपूर्ण चुभने वाली बात। ताना। २. चोट। ३. शरीर या किसी पात्र में चोट लगने से बनने वाला चिन्ह। चोट का चिन्ह।

टींट-(ना०) पक्षी की विष्टा। बींट।

टींटोड़ी-दे० टीटोड़ी।

टींड-(न०) टिड्डी। तीड। टीड।

टींडसी-(ना०) टिंढ़सी। टिंडा।

टुकड़ाखोर-दे० टुकड़ेल।

टुकड़ी-(ना०) १. एक मोटा देशी कपड़ा। रेजी। २. दुपट्टा। ३. छोटा दल। टुकड़ी।

टुकड़ेल-(वि०)१. टुकड़े टुकड़े के लिये रोता फिरने वाला। २.माँगने वाला। भिखारी। ३. कंजूस। कृपण। ४. रिश्वत लेने वाला। घूसखोर।

टुकड़ो-(न०) १. टुकड़ा। छिन्न अंश। २. भाग। खंड। ३. रोटी का टूटा हुआ अंश।

टुक्रियाँ-(न०ब०व०) कांचली का वह उभरा हुआ भाग जो कुचों के ऊपर रहता है।

टुक्कड़-(न०) १. मोटी रोटी। २. रोटी का टुकड़ा। ३.टुकड़ा। (वि०) टुकड़ेल।

टुक्कड़खोर-(न०) १. मंगता। भिखारी। २.रिश्वतखोर। (वि०)१.कंजूस। २.नीच।

टुग-टुग-(अव्य०) आँख पलकाये बिना देखते रहने का भाव।

टुचकलो-(न०)१. छोटी कहानी। चुटकला। २. हँसी की बात या कहानी। (वि०) छोटा। तुच्छ। क्षुद्र।

टुच्ची-(वि०) १. छोटी। २. ओछी। ३. ३. धूर्त्ता। ४. दुष्टा।

टुच्चो-(वि०) १. छोटा। क्षुद्र। २. ओछा। छिछोरा। हलका। ३. धूर्त। कपटी। ४. दुष्ट।

टुणटुणाटो-दे० टरणाटो, टणटणाटो।

टुरणो-(क्रि०) चलना। खिसकना। जाना। रवाना होना।

टुवाल-(न०) अंगोछा।

टूक-(न०) टुकड़ा। खंड।

टूटणो-(क्रि०) १. टुकड़े होना। भागणो। २. किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३.अचानक धावा करना। हमला करना। ४. संबंध छूटना। संबंध भंग होना। ५. शरीर में ऐंठन या तनाव के कारण पीड़ा होना। ६.धनमाल समाप्त होजाना। दरिद्र होना। ७. पक्ष की किसी तिथि का न होना। क्षय होना। ८. सिलसिला बंद होजाना। क्रम नहीं रहना।

टूट-फूट-(ना०) किसी वस्तु के नष्ट होने की क्रिया या भाव। ध्वंसन। खंडन।

टूटोड़ो-(भू०का०कृ०) टूटा हुआ। खंडित।

टूटो-फूटो-(वि०) टूटा-फूटा। खंडित।

टूणो-टोना। जादू।

टूम-(ना०)१. बहुमूल्य और बढ़िया गहना। २. कोई विशिष्ट वस्तु। ३. भेंट में दी जाने वाली कोई कीमती व नफीस वस्तु। ४. चुटकला।

टूमण-दे० टूमण टामण ['टामण' का द्विर्भाव, 'टामण टूमण']।

टूमण-टामण-(न०) जादू-टोना। टामण-टूमण।

टूमो-(न०) १. अंगुली की गाँठ। २. अंगुली के बीच की जोड़ का (उभरा हुआ) उपरि भाग।

टूर-(वि०) १. अधिक नशा करने वाला। २. अफीमची। (न०) १. अधिक नशा। २ प्रवास। मुसाफिरी।

टूल-(न०) एक प्रकार का लाल कपड़ा।

टूंक-(ना०) १. वृक्ष, पहाड़ आदि की सबसे ऊंची चोटी। २. शिखर। (वि०) १. थोड़ा। २. ओछा। कम। ३. संक्षिप्त।

टूंकणो-(क्रि०) कम करना।

टूंकाण-(न०) संक्षेप। सार रूप। (क्रि०वि०) थोड़ा में। संक्षेप में।

टूंकाणो-(क्रि०) कम करवाना।

टूंकावणो-दे० टूंकाणो।

टूंकियो-(न०) १. किलकारी। २. ऊंची जगह। चोटी। ३. किसी ऊंचे स्थान या पहाड़ी पर बैठ कर आने जाने वालों की निगाह रखने वाला व्यक्ति। जंगल में नियत किया जाने वाला वह चौकीदार या गुप्तचर जो किसी शत्रु या अवांछनीय व्यक्ति के आने पर सांकेतिक भाषा में दूसरे टूंकिये को (आगे से आगे) सूचना देता रहता है।

टूंको-(वि०) १. कम। थोड़ा। २. ओछा। ३. संक्षिप्त। ४. विस्तार में कम। संकीर्ण। तंग।

टूंकोटच-(वि०) १. कम लंबा। बहुत छोटा। २. संक्षिप्त। (अव्य०) बस। काफी। समाप्त।

टूंगणो-(क्रि०) १. भोजन करने वाले की थाली के भोज्य पदार्थों को खाने की इच्छा से एक टक ताकते रहना। खाने की लालसा से भोज्य-सामग्री के आसपास फिरना तथा ताकना। २.लालायित होना।

टूंच-(ना०) १. चोंच। २. नोक। ३. शिखर।

टूंचको-(न०) १.किसी वस्तु का अग्रभाग। सबसे ऊपर का छोटा पतला हिस्सा। २. पत्ते, फल आदि का वह छोटा डंठल (पतला सिरा या नोक) जो टहनी से जुड़ा रहता है।

टूंचणो-(क्रि०)चोंच मारना। दे० टूंचको।

टूंचो-दे० टूंको।

टूंट-(ना०) चोट या वात रोग से हाथ अथवा अंगुलियों में होने वाला टेढ़ापन।

टूंटियो-(वि०) १. टूंटी हुई अंगुली वाला। जिसके हाथ की अंगुली कम हो। २. टेढ़ी अंगुलियों वाला। (न०) एक प्रकार का बुखार। इनफ्लुएन्जा।

टूंटी-(ना०) नल में से पानी निकालने की टोंटी।

टूंटो-(वि०) कटे हुए या मुड़े हुए हाथ या अंगुली वाला।

टूंट्यो-दे० टूंटियो।

टूंड-(ना०) सूअर का मुँह। थुथना। तुंड।

टूंडाड़-(न०) १. व्यंग्य या क्रोध में मुँह के लिये किया जाने वाला तुच्छार्थक शब्द। २. विगाड़ा हुआ मुँह। नाराजगी की मुखाकृति। ३. क्रोधावेश की मुखाकृति। ४. गुदा। ५. शूकरमुख। ६. सूअर। शूकर।

टूंडाळ-(न०) सूअर। शूकर।

टूंडो-(न०) पेंदा। तल। तूंडो।

टूंप-दे० टूंपियो।

टूंपणो-(क्रि०) गला दबाना। टूंपा देना। टूंपो देणो।

टूंपलो-दे० टूंपियो।

टूंपियो-(न०) गले का एक गहना।

टूंपीजणो-(क्रि०) १. टूंपा लगना। गला घुटना। २. आर्थिक कष्ट भुगतना। तंगी भुगतना।

टूंपो–(न०) १. गला । २. गला दबोचने का काम । गला दबोच जाने की क्रिया । फांसा ।
टूंप्यो–दे० टूंपियो ।
टेक–(ना०) १. प्रतिज्ञा । २. लाज । ३. हठ । दुराग्रह । जिद । ४. मर्यादा । आन । ५. लिहाज । पक्ष । ६. भजन की पहली कड़ी । भजन या पद की स्थायी कड़ी । टेक । टेर । ६. ध्रुव पद । ध्रुपद ।
टेकणो–(क्रि०) १. सहारा लेना । २. प्रवेश कराना । ३. प्रवेश करना । ४. लगाना । छूना । ५. टिकाना । सहारा देना । ६. ठहराना । रखना । थामना ।
टेकरी–(ना०)१. पहाड़ी । २. छोटा टेकरा । छोटा टीबा ।
टेकरो–(न०) बड़ी टेकरी ।
टेकलो–(वि०) १. टेक वाला । हठी । २. पणधारी ।
टेको–(न०) १. सहारा । आधार । टेका । २. आधार की वस्तु । टेकनी । ३. अनुमोदन । ४. जोड़ । सिलाई । टाँका । ५. पैबंद । थिगली । ६. बंधन ।
टेगड़ो–(न०) १. कुत्ता । २. एक वर्णसंकर हिंसक पशु । अधबेगड़ो । बेगड़ो । ३. भेड़िया ।
टेटो–(वि०) कच्चा । अपक्व । (फल आदि)
टेडो–दे० टेढो ।
टेढ–(ना०) १. व्यंग्य । २. गर्व । मिजाज । ३. बाँकापन । टेढ़ापन ।
टेढाई–(ना०) १. बाँकापन । टेढ़ापन । तिरछापन । २. वक्रता । उद्दंडता । ३. मिजाज ।
टेढापण–दे० टेढापणो ।
टेढापणो–दे० टेढ़ाई ।
टेढो–(वि०) १. तिरछा । बाँका । वक्र । २. कठिन । मुश्किल । ३. कुटिल । वक्र ।
टेभो–(न०) १. सूअर का बच्चा । २. अधबेगड़ा । दे० टोभो ।
टेर–(ना०) १. गायन की पहली कड़ी । ध्रुवपद । टेक । २. राग का प्रकार । ३. गाने में ऊँचा स्वर । तान । आलाप । ४. पुकार । प्रार्थना । ५. आवाज ।
टेरणो–(क्रि०) १. टाँगना । लटकाना । २. गाना शुरू करना । ३. तान लगाना । आलापना । ४. पुकारना । आवाज देना ।
टेरिओड़ो–(भू०का०कृ०) टांगा हुआ । लटकाया हुआ ।
टेरो–(न०) १. आँसू, रेंट आदि के बहने का निसान । २. आँसू, लार, रेंट अथवा किसी पात्र में से पानी तेल आदि की मंदगति से होने वाली रिसन या टपकन । रेलो ।
टेव–(ना०) आदत । टेव । बान । स्वभाव ।
टेवकी–(ना०) १. सहारा । आसरा । २. सहारा देने की वस्तु । लकड़ी ।
टेवको–(न०) सहारा ।
टेव टाळणो–(मुहा०) शौचादि से निवृत्त होना ।
टेवटा लेणो–(मुहा०) 'टेव टाळणो' का एक अन्य रूप ।
टेवटियो–दे० टेवटो ।
टेवटो–(न०) स्त्रियों का एक कंठा भूषण । तिमणियो । तेवटो ।
टेवो–(न०)१. जन्मकुंडली के साथ जन्म की तिथि, वार और समयादि का टिप्पण । जन्मपत्र । जन्माक्षर । २. जन्मकुंडली ।
टेसण–(ना०) मुसाफिरों के बैठने-उतरने के लिये रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान । स्टेशन । ठेसण ।
टेसू–(न०) पलाश वृक्ष का फूल । केसूलो ।
टैक्स–(न०) कर । महसूल ।

टैणा–(न०) टीन की नालीदार चद्दर। नालीदार पतरा।
टैम–(ना०) टाइम। समय।
टैमो-टैम–(अव्य०) यथा समय। ठीक समय पर। अविलम्ब।
टैरको–दे० टहरको।
टैल–दे० टहल।
टैलगी–दे० टहल।
टैलणो–दे० टहलणो।
टैल-बंदगी–दे० टहल-बंदगी।
टैलियो–दे० टहलियो।
टैलूओ–दे० टहलियो।
टैल्यो–दे० टहलियो।
टैंकारो–दे० टहकारो।
टैंको–(न०) १. सिलाई। सीवन। टांका। २. थिगली। कारी। पैबंद।
टैंगार–(न०) १. छोटे या दुर्बल की बड़ों के प्रति नाराजगी। २. बच्चे की नाराजगी। ३. नाराजगी। अप्रसन्नता। ४. गर्व। घमंड।
टैंगारियो–(वि०)बात बात में शीघ्र नाराज होने वाला। टैंगारी।
टैंगारी–दे० टैंगारियो।
टैंट–(ना०) १. गर्व। घमंड। २. अकड़।
टैंहको–(न०) १. बीमारी में दर्द या अशक्ति से होने वाला शब्द। २. नखरा।
टोक–(ना०) एतराज। मनाई।
टोकणो–(क्रि०) १. ऐतराज करना। उज्र करना। आपत्ति उठाना। २. मना करना। टोकना। (न०) एक बरतन। हांडा। टोकना।
टोकर–(न०) १. बड़ा घंटा। घंटा। २. घट का लोलक। ३. बड़ा लटकन।
टोकरचंद–(न०) बड़प्पन का गर्व करने वाले व्यक्ति का व्यंग्य पूर्ण नाम।
टोकरियो–(न०) १. (आरती उतारने के समय पुजारी द्वारा बजाई जाने वाली) छोटी घंटी। २. घंटा। ३. घूंघरू। ४. गले के भीतर का लटकन। कौआ। कागलियो।
टोकरी–(ना०) १. घंटी। २. डलिया। ओडी। ३. स्त्रियों के कान का आभूषण।
टोकरो–(न०) बड़ा घंटा। दे० टोकरियो। २. बड़ा घूंघरू। ३. टोकरा। बड़ी टोकरी। झावा। ओडो।
टोकळचंद–दे० टोकरचद।
टोकळो–(न०) बड़ी जूं। (वि०) मूर्ख।
टोकार–(ना०) १. टोकने का भाव। एतराज। २. दृष्टि का बुरा प्रभाव। दृष्टि दोष। नजर। ३. किसी सुन्दर वस्तु की की जाने वाली ऐसी या इतनी प्रशंसा जिससे उस पर उलटा प्रभाव पड़े।
टोकारणो–(क्रि०) १. टोकना। एतराज करना। २. दृष्टि का बुरा प्रभाव डालना। नजर लगाना। ३. किसी सुन्दर वस्तु से आकर्षित होकर इतनी अधिक प्रशंसा करना जिससे उस पर उलटा बुरा प्रभाव पड़े।
टोगड़ियो–(न०)गाय का बछड़ा। टोगड़ो।
टोगड़ी–(ना०) गाय की बछिया।
टोगड़ो–दे० टोगड़ियो।
टोटको–(न०) १. जादू टोना। २. आधि-व्याधि को दूर करने के लिये किया जाने वाला तंत्र-मंत्र प्रयोग। ३. सरल प्रयोग। सादा उपचार। ग्रामीण उपचार। ४. कार्य साधक युक्ति। कीमिया। ५. आसानी से अधिक धन मिले ऐसा इल्म।
टोटल–(न०)१. योग। जोड़। २. सब मदों की जोड़। सरवाळो। (वि०) सब।
टोटायत–(वि०) १. टूटा हुआ। गरीबी में आया हुआ। २. हानि उठाया हुआ। ३. गरीब। निर्धन। ४. दुखी।
टोटी–(ना०) स्त्रियों के कान का एक गहना।

टोटी-झूमर–(न०) स्त्रियों के कान का एक आभूषण जो टोटी और उसके घूंघुरूदार लटकन वाला होता है।

टोटी-झैला–(न०) स्त्रियों के कान और सिर का एक संयुक्त आभूषण।

टोटी-सांकळी–(ना०) स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

टोटो–(न०) १. हानि। घाटा। घाटो। २. न्यूनता। कमी।

टोड–(न०) १. जवान ऊंट। २. जवान ऊंटनी।

टोडड़–(न०) ऊंट का बच्चा।

टोडडी–(ना०) ऊंट का मादा बच्चा।

टोडर–(न०) एक गहना।

टोडरमल–(न०) एक लोक गीत।

टोडरो–(न०) पाँव का एक गहना।

टोडारू–(न०) १. ऊंट और ऊंटनियों आदि का समूह। २. ऊंट जाति। ३. ऊंट।

टोडियो–(न०) ऊंट का बच्चा।

टोडी–(ना०) १. एक रागिनी। २. छोटा टोडा।

टोडो–(न०) पड़छती (टाँड) या छज्जे आदि को ठहराने के लिये दीवाल की चुनाई से बाहर निकला हुआ एक विशेष पत्थर।

टोप–(न०)१. पैंदे में मुँह के समान गोलाई के ऊंचे किनारों वाला एक पात्र। कूंडा। पतीला। बड़ी पतीली। झावा। २. युद्ध के समय पहिनने की लोहे की टोपी। शिरस्त्राण। ३.एक प्रकार की छज्जेवाली बड़ी टोपी।

टोपरो–दे० कोपरो।

टोपस–(न०) स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

टोपसी–दे० टोपाळी।

टोपाळी–(ना०) १. नारियल के गोलाकार गिरी भाग के ऊपर का आधा कठोर आवरण। नारियल की आधी खोपड़ी। २. गिरी भाग के कठोर आवरण का कटोरीनुमा आधा भाग। नारेली। नारियली। टोपसी।

टोपियो–(न०) पतीला। झावा। तसला। कूंडो।

टोपी–(ना०) १. सिर का एक पहनावा। टोपी। २ अनाज के दाने का आवरण। दाने के ऊपर का छिलका। ३. एक टोपीनुमा साधन जिसको बंदूक के लौंग चे ऊपर रख कर बंदूक दागी जाती है। ४. विदेशी शासन। म्लेच्छ शासन।

टोपो–(न०) १. बड़ी टोपी। टोपा। २. बूंद। छांट।

टोभो–(न०) १. ऊंची जगह। २. पहाड़ के किनारे की ऊंचाई। ३. पहाड़ पर की छोटी बस्ती। ४. रक्षा, निरीक्षण आदि के लिये इस ऊंचाई पर बना हुआ स्थान। ५. छोटा तालाव। ६. बड़ा कुँआ।

टोयो–(न०) रहँट या बैलगाड़ी का एक उपकरण।

टोरडो–(न०) १. जवान ऊंट। २. ऊंट का बच्चा। टोडियो।

टोरणो–(क्रि०)१. तलाश करना। ढूंढना। देखना। २. हाँकना। चलाना (पशु को)।

टोरो–(न०) १. डींग। गप्प। २. धक्का। ठोकर। टक्कर।

टोळ–(न०) १. अनघड़ पत्थर। बड़ा पत्थर। २. समूह। ३. मस्करी। ठिठोली। (वि०) मूर्ख।

टोळणो–(क्रि०) १. पशुओं के समूह को हाँकना। २. ढूंढना।

टोळा-टाळ–(वि०) १. समूह व समाज से टला हुआ। २. भ्रष्ट। च्युत। ३ टाला हुआ। निष्कृत।

टोळी–(ना०) १. समुदाय। झुंड। २. संगठन। ३. मंडली। ४. दुर्वृत्त मनुष्यों का संगठित समूह।

टोलो–(न०) १. अंगुली के बीच के जोड़ का मोड़ कर (उसके द्वारा) सिर में मारी जाने वाली चोट। ठोंग। २. उपालंभ। उलाहना। ३. चुभने वाली बात। ताना।

टोळो–(न०) १. समूह। झुंड। २. पशुओं का झुंड।

टोस–(न०) स्त्रियों के कान का एक आभूषण।

टोह–(ना०) १. खोज। पता। २. जानकारी। ३. छिपी बात की जानकारी का प्रयत्न।

ट्रेन–(ना०) रेलगाड़ी।

ठ

ठ–राजस्थानी वर्णमाला के ट वर्ग का मूर्द्ध-स्थानीय दूसरा व्यंजन वर्ण।

ठक–(न०) १. संतोष। तृप्ति। दे० ठिक। २. ठोंकने का शब्द।

ठक-ठक–(ना०) ठोंकने का शब्द।

ठकराई–(ना०) १. ठकुराई। प्रभुत्व। २. बड़ाई। बड़प्पन। रोब। मोटाई। ३. हुकूमत। शासन। (ना०) ठाकुर।

ठकराणी–(ना०) ठाकुर की स्त्री। ठकुराइन। ठकुरानी।

ठकरात–(ना०) १. ठकुरायत। ठकुराई। २. आधिपत्य। प्रभुत्व।

ठकरायत–दे० ठकरात।

ठकराळो–(न०) ठाकुर। जागीरदार।

ठकाणो–दे० ठिकाणो।

ठकार–(न०) 'ठ' अक्षर।

ठकुराई–दे० ठकराई।

ठकुरात–दे० ठकरात।

ठकुरायत–दे० ठकरात।

ठकुराळो–दे० ठकराळो।

ठग–(न०) १. छली। धूर्त। २. धोखा देकर उल्लू बनाने वाला और धन इत्यादि मार लेने वाला। ३. अधिक दाम वसूल करने वाला। ३. नकली और खोटा माल बेचने वाला।

ठगण–(न०) पांच मात्राओं का एक गण (छंद)।

ठगणी–(वि०) १. मोहनी। मोहकारिणी। मोहित करने वाली। २. मायाकारिणी। मायाविनी। मायिनी। ३. ठगने वाली। धोखा देने वाली। (ना०) १. ठग की स्त्री। ठगिनी। २. कुटनी। ३. धूर्तस्त्री। चालाक स्त्री। ४. ठग-विद्या। ५. ठगाई। धूर्तता।

ठगणो–(क्रि०) १. ठगना। छलना। छल करना। २. सौदा बेचने में बेईमानी करना। रद्दी माल देकर बहुत ज्यादा कीमत लेना। ३. स्वार्थ सिद्ध करने के लिये उल्लू बनाना। ४. धोखे से किसी की संपत्ति हथिया लेना।

ठगपणो–(न०) १. ठगने का काम। २. धूर्तता। छल।

ठगबाज–(न०) ठगने वाला। ठग।

ठगबाजी–(ना०) ठगाई। प्रपंच।

ठगविद्या–(ना०) १. ठगने की हिकमत। धोखा देने का हुनर। २. धूर्तता। चालाकी।

ठगइजणो–दे० ठगीजणो।

ठगाई–(ना०) ठगी। धोखे बाजी। ठगने की क्रिया।

ठगाण–(ना०) १. ठगाई। ठगी। २. ठगा जाने का भाव।

ठगाणो–दे० ठगावणो।

ठगारो–(वि०) १. ठगने वाला। २. धोखेबाज। ३. मायावी। छलिया। धूर्त।

ठगावणो–दे० ठगीजणो ।

ठगी–(ना०) दे० ठगाई ।

ठगीजणो–(क्रि०) ठगा जाना । धोखा खाना ।

ठगोकड़ी–दे० ठगोरी ।

ठगोरी–(वि०) ठगने वाली । (ना०) ठगी ।

ठगोरो–दे० ठगारो ।

ठट–(न०) १. अधिक भीड़ । जमाव । ठठ । २. झुंड । ३. बहुत सी वस्तुओं का समूह ।

ठटणो–(क्रि०) १. स्थिर होना । २. इकट्ठा होना । ३. खड़ा होना । ४. डटे रहना । ५. उपस्थित होना ।

ठटोटट–(अव्य०) १. पूर्ण । पूरा भरा हुआ । २. बहुत अधिक ।

ठठकारणो–(क्रि०) १. दुत्कारना । २. धिक्कारना ।

ठठकारियो–(वि०) १. दुत्कारा हुआ । २. अपमानित । तिरस्कृत । ३. लांछित । कलंकित । ठिठकारियो ।

ठठाई–(ना०) १. स्त्रियों का कत्थई रंग का ओढ़ना । २. गर्मी में ओढ़ने की कत्थई रंग की ओढ़नी ।

ठठाणो–(क्रि०)१.धारण करना । पहिनना । (व्यंग में) २. जमाना । स्थिर करना । ३. एकत्रित करना । ४. यथावत् करना । ५. पीटना । मारना । ६. किसी काम को उत्तमता से करना ।

ठठारणो–(क्रि०) ठाठ करना । सजाना । २. धारण करना ।

ठठारी–(ना०) ठठेरे की स्त्री । ठठेरी । कंसारी । कंसारण । ठठेरण ।

ठठारो–(न०) १. ठठेरा । कंसारो । २. युक्ति । बनाव । ३. ठाट-बाठ । सजधज । ४. आडंबर ।

ठठावणो–दे० ठठाणो ।

ठठेरण–दे० ठठारी ।

ठठेरी–दे० ठठारी ।

ठठेरो–दे० ठठारो नं० १ ।

ठठोळी–(ना०) १. ठठोली । हँसी । मस्करी । २. ठट्ठा । खिल्ली ।

ठट्ठा-मस्करी–(ना०) हँसी-मजाक । ठट्ठा-दिल्लगी ।

ठट्ठो–(न०) १. मजाक । हँसी । मसखरी । ठट्ठा । २. 'ठ' अक्षर । ठकार ।

ठणक–दे० ठनक ।

ठणकणो–(क्रि०)१. ठण-ठण शब्द होना । २. झनकार शब्द होना । ३. धीरे धीरे चलना ।

ठणकारो–(न०) ठणक आवाज ।

ठणको–(न०) १. ठनक । नृत्य की ध्वनि । २. चलने का ढंग । ठमक । ठुमक । ३. पाँव की आहट । चलने की आहट । ४. रोब । दबदबा । ५. गर्व ।

ठण ठण–(न०) खाली बरतन की आवाज ।

ठणठण गोपाळ–(न०)१. ठन-ठन गोपाल । साधन हीन मनुष्य । २. बुद्धिहीन मनुष्य । ३. निःसार वस्तु । (वि०)१. साधनहीन । निर्धन । २. बुद्धिहीन । मूर्ख ।

ठणठणपाळ–दे० ठण-ठण-गोपाळ ।

ठणठणाट–(न०) ठणठण शब्द ।

ठणणो–(क्रि०) १. मन में स्थिर होना । जमना । २. तत्परता से आरंभ करना । ३. आरंभ होना । छिड़ना । ठनना । ४. उद्यत होना । तनना ।

ठनक–(ना०) १. नृत्य की एक ध्वनि । २. झांझर की एक ध्वनि । ३. चलने का ढंग । गति । ४. ठनठन शब्द ।

ठप–(वि०) बंद । रुका हुआ । (न०) 'ठप' शब्द ।

ठपकारणो–(क्रि०) १. साँचे में बिठाना । ठबकारणो । २. उलाहना देना ।

ठपको–(न०) १. उलाहना । उपालंभ । ओळभो । २. टक्कर । धक्का । ३. लांछन । कलंक ।

ठप्पो-(*न०*) साँचा । ठप्पा । सांचो ।

ठबकारणो-दे० ठपकारणो ।

ठबको-दे० ठपको ।

ठमक-(*ना०*) १. चलने की चाल । २. चलने की छटा । नजाकत भरी चाल । ३. चलने की ठसक । ठुमक ।

ठमको-(*न०*) १. ठमक ठमक चलने की क्रिया । २. चलते समय होने वाली पाँव की आहट । पदचाप । ३. नखरा । ४. ठमक ।

ठमठोर-(*वि०*)१. समस्त । सभी । संपूर्ण । कुल । (मानव समूह) । २. संपूर्ण भरा हुआ । खूब भरा हुआ । खंभठोर ।

ठमठोरणो-दे० ठंठोरणो ।

ठमणो-(*क्रि०*) ठहरना । रुकना । थमना ।

ठयो-(*अव्य०*) १. अस्तु । अच्छा । खैर । २. कोई बात नहीं । जो हो गया सो ठीक ।

ठरक-(*ना०*) १. दृष्टि दोष । २. टक्कर । धक्का । ३.हानि का आघात । ४.उपेक्षा ।

ठरकावणो-(*क्रि०*) १. डांटना । २. अपमानित करना । ३. धक्का मारना । ४. मार-पीट करना ।

ठरकियोड़ो-दे० ठरकेल ।

ठरकैत-(*वि०*)ठरके वाला । हैसियत वाला ।

ठरकेल-(*वि०*)१. उपेक्षित । २. अपमानित । तिरस्कृत । ३. फटकारा हुआ । ४. ठरकाया हुआ । धक्का मारा हुआ । ५. निर्लज्ज । ६. नालायक ।

ठरको-(*न०*) १. प्रहार । चोट । झटका । २. धक्का । टक्कर । ३. हैसियत । बिसात । सामर्थ्य । ४. गर्व । अभिमान । ५. प्रतिष्ठा ।

ठरड़णो-(*क्रि०*) १. पाँवों को जमीन से रगड़ते चलना । २. खींचना । घींचना । घसीटना । घींचणो । ३. दौड़ाना ।

ठरड़ो-(*न०*) मारवाड़ में पोकरण और उसके आजू-बाजू का प्रदेश ।

ठरणो-(*क्रि०*) १. ठंडा होना । २. सर्दी लगना । ३. ठंड से गाढ़ा या ठोस होना । ४. जलती हुई चीज का ठंडा होना । गरम चीज का ठंडा होना । ५. संतोष होना । शांति होना । ६. क्रोध मिटना । ७. सिझना । ८. मरना ।

ठळियो-(*न०*) बेर की गुठली । २. फल का सख्त बीज । फुळियो ।

ठळोकड़ी-(*ना०*) १. छेड़छाड़ । छेड़खानी । २. व्यंग्य । ताना । ३. मजाक । हँसी ।

ठल्लो-दे० ठालो ।

ठव-(*ना०*) १. ठौड़ । स्थान । २. आहट ।

ठवड़-दे० ठौड़ ।

ठवणी-(*ना०*) पुस्तक को पढ़ते समय उसे रखने का एक उपकरण । रैळ ।

ठवति-(*ना०*) स्तुति । (*वि०*) स्थापित ।

ठवणो-(*क्रि०*) १. रखना । २. स्थापित होना । ३. चलना ।

ठस-(*वि०*) १. ठस । ठोस । ठूंसकर भरा हुआ । जो भीतर से खाली न हो । २. सख्त । ३. जमा हुआ । ४. जो गफ बुना हुआ हो । ५. सुस्त । (*क्रिoवि०*) परिपूर्ण । ठसाठस ।

ठसक-(*ना०*) १. रोब । शान । ठस्सा । २. अभिमान पूर्ण भाव । ३. लटका । ठसक । नखरा । ४. ऐंठ । मरोड़ । अकड़ । ५. धक्का । ६. ठोकर ।

ठसकदार-(*वि०*) १. शानदार । ठस्सादार । २. अभिमानी । ३. नखरे वाला । ४. अक्कड़वाला । अक्कड़ ।

ठसकीलो-दे० ठसकदार ।

ठसको-दे० ठसक ।

ठसणो-(*क्रि०*) १. तरल पदार्थ का ठोस रूप होना । जमना । गाढ़ा होना । २.

हृदय में जमना । मन में बैठ जाना । ३. समझ में आ जाना । ४. ठहरना । रुकना ।

ठसाठस–*(अव्य०)* ठसो ठस । ठूंस-ठूंसकर । *(वि०)* पूरा भरा हुआ ।

ठसाणो–दे० ठसावणो ।

ठसावणो–*(क्रि०)* १. जमाना । ठसाना । गाढ़ा करना । २. मन में बिठवा देना । समझ में बिठा देना । ३. ठहराना ।

ठसो–*(न०)* १. प्रभाव । २. सिक्का । ३. गर्व । ४. साँचा ।

ठसोठस–दे० ठसाठस ।

ठस्सो–दे० ठसो ।

ठहकणो–*(क्रि०)* १. बोलना । शब्द करना । २. घमंड में बात करना । ३. घमंड करना । ४. टक्कर लगना । ५. बजना । ध्वनि होना ।

ठहको–*(न०)* १. शब्द । आवाज । २. मिजाज । घमंड । ३. व्यंग्य । ताना । ४. साधारण धक्का । हलकी टक्कर । ५. ठसका ।

ठहणो–*(क्रि०)* १. बनना । तैयार होना । २. निश्चित होना । तय होना । ३. सज्जित होना । तैयार होना । ४. अच्छा लगना । शोभित होना ।

ठहरणो–*(क्रि०)* १. ठहरना । रुकना । २. खड़े रहना । स्थिर रहना । ३. विश्राम करना । पड़ाव डालना । मुकाम करना । टिकना । ४. स्थाई रखना । ५. साथ देना । काम आना । ६. निश्चित होना । तय होना । ७. बंद होना । रुकना । ८. समाप्त होना ।

ठहराई–*(ना०)* १. ठहराने का काम । २. निश्चय ।

ठहराणो–*(क्रि०)* १. ठहराना । रोकना । २. रुकवाना । ठहराना । ३.खड़ा रखना । स्थिर करना । ४. निश्चित करना । तय करना । ५. टिकाना । विश्राम करना । पड़ाव डलवाना । ६. स्थाई बनाना । पक्का बनाना । ७. बंद करना । रोकना । ८. रुकवाना । समाप्त करवाना ।

ठहराव–*(न०)* १. विश्राम । मुकाम । २. प्रस्ताव । प्रसंग । बात । ३. निश्चय । निर्णय ।

ठहरावणो–दे० ठहराणो ।

ठहाणो–दे० ठहावणो ।

ठहावणो–*(क्रि०)* १.बनाना । तैयार करना । निर्माण करना । २. सहारा देना । ३. व्यवस्थित करना । जमाना । ४. मरम्मत करना । दुरुस्त करना । ५. निश्चय करना । ६. सजाना । तैयार करना । अलंकृत करना । ७. स्थापित करना ।

ठंठ–*(वि०)* १. कड़ा । सख्त । २. सूखा । ३. रीता । खाली । ४. कुछ कम (तोल में) *(न०)* १. ठूंठा । २. अकड़न । ऐंठन ।

ठंठणपाळ–दे० ठणठण गोपाल ।

ठंठाणो–दे० ठंठावणो ।

ठंठारी–दे० ठठारी ।

ठंठारो–*(न०)* ठठेरा ।

ठंठावणो–*(क्रि०)* १. धारण करना । पहनना । (व्यंग में) २. भरने के लिये पात्र को हिलाना । ३. खूब भरना । हिला हिला कर भरना ।

ठंठो–*(वि०)* १. तोल में कुछ कम । तोल में बराबर नहीं । २. तोल में अधिक नहीं । ३. तोल में न ज्यादा न कम ।

ठंठोर–*(वि०)* १. पूर्ण भरा हुआ । २. बरतन को हिला हिला कर खाली जगह भरने का भाव ।

ठंठोरणो–*(क्रि०)* १. हिला हिला कर भरना । २.पूरा भरने के लिये बरतन को हिलाना । ३. हिलाना । ४. पीटना । ठोकना । ५. बरतन घड़ते समय हथोड़े की हलकी चोटें मारना । मठारणो ।

ठंड–*(ना०)* १. ठंड । सर्दी । २. शीतलता । ३. सर्दी ।जुकाम ।

ठाडो ठरियो ।

ठंडो-बासी-दे० ठंडो ठरियो ।

ठा-(न०) १. मालूम । पता । खबर । २. ज्ञान । जानकारी । ठाह ।

ठाण-(ना०) १. जगह । स्थान । २. स्थिर । (वि०) स्थिर रहने वाला ।

ठाउ-(न०) १. जगह । स्थान । ठाम । २. बरतन । पातल । ठान ।

ठाए-दे० ठाहे ।

ठाओ-(न०) स्थान । (क्रि०वि०) ठिकाने-सर । ठिकाने पर । यथास्थान । ठीक जगह पर । ठायो ।

ठाओठा-दे० ठाओठाम ।

ठाओठाम-(क्रि०वि०) यथास्थान । ठीक जगह पर । ठामोठाम ।

ठाक-ठोक-(ना०) १. मारपीट । ठोकना । पीटना । पिटाई । २. बोहनी की गाहकी में किसी गाहक को ठगने की क्रिया । ३. घनिना ।

ठाकुरद्वारो-(न०) विष्णु या विष्णु के अवतार श्रीराम या श्रीकृष्ण का मंदिर । २. वैष्णवों का मंदिर ।

ठागो-(न०) १. ठगाई । छल । २. आडम्बर । ढोंग । दिखावा ।

ठाट-(न०) १. धनमान आदि से सभी प्रकार का सुख । आराम । २. सजावट । शोभा । ३. भीड़ । मजमा । जमघट । ४. शान । शान-शौकत । ठाट । ५. भपका । आडम्बर । ६. ढंग । शैली । ७. समारंभ । ८. धन । माल । ९. अधिकता । बहुतायत । १०. झुंड । ११. सेना ।

ठाटदार-(वि०) १. शानदार । ठाटदार । ठाट वाला । २. शोभावाला । ३. सजावट वाला । ४. आडंबर वाला ।

ठाट-बाट-(न०) १. वैभव । सम्पन्नता । २. सजधज । तड़क भड़क ।

ठाठ–दे० ठाट।

ठाठियो–(न०) १. 'ठाट' का तुच्छता सूचक शब्द। २. कूटे का बनाया हुआ छोटा बरतन। ३. ठाठा-ठाठिया आदि कूटे के बरतन, खिलौने बनाने वाला व्यक्ति।

ठाठी–(ना०) आड़। रोक। विघ्न।

ठाठो–(न०) १. ढांचा। २. कूटे का बनाया हुआ एक बरतन। ३. शरीर। ४. शव। लाश। ५. हड्डियों का ढांचा। पंजर। ६. बाणों को रखने का ऊंट के चमड़े से बना एक थैला। चोंगा। तरकश।

ठाड–(ना०) ठंड। शीत।

ठाडक–(ना०) १. ठंडक। २. शान्ति।

ठाडी–(ना०) १. राख। भस्म। २. सर्दी। जाड़ा। शीत। ३. ठंडी। शीतलता। (वि०) १. सुस्त। २. ठंडी। शीतल। ३. बासी।

ठाडो–(वि०) १. ठंडा। शीतल। २. ताजा नहीं। बासी। ३. मंद। सुस्त। धीमा। (न०) १. व्रण अथवा किसी दर्द के स्थान को गरम शलाका द्वारा दागने की क्रिया। २. दागने का निशान। दाग। डाम। चुहियो। ३. शीतला देवी को भेंट धरने के लिये एक दिन पहिले बनाया हुआ बासी भोजन। ४.(भू०कृ०) खड़ा। स्थिर।

ठाडोगार- दे० ठंडोगार।

ठाडो टीप–(वि०) अत्यन्त ठंडा।

ठाडो ठरियो–दे० ठंडो-ठरियो।

ठाडो-पहोर–(न०) गरमी की मौसम में दिन का वह समय जब सूर्य तपा न हो। अथवा अस्त होने जा रहा हो। प्रातःकाल या ढलते दिन का समय।

ठाडो पेट–(न०) १. बड़ी-बूढ़ी स्त्रियों द्वारा सौभाग्यवती स्त्रियों को दिया जाने वाला पुत्रवती होने का आशीर्वाद। २. स्वास्थ्य की दृष्टि से पेट का ठंडा रहना।

ठाडो-बासी–दे० ठंडो बासी।

ठाडोळ–(ना०) ठंडक। शीतलता।

ठाडोळाई–दे० ठाडोळ।

ठाढ़–दे० ठाड।

ठाढो–दे० ठाडो।

ठाण–(ना०) १. मवेशी को घास डालने का का स्थान। २. मवेशी को बाँधने का स्थान। ३. तबेला। ४. स्थान। जगह। ५.वंश। कुल। ६. घोड़ी की प्रसव दशा। ७. घोड़ी का प्रसव।

ठाणणो–(क्रि०)१. विचार करना। निश्चय करना। २. रचना। रचना करना। ३. किसी काम को करने का दृढ़ निश्चय करना। ४. तत्परता से आरंभ करना।

ठाण देणो–(मुहा०) घोडी का प्रसवना। घोड़ी का बच्चा देना।

ठाणपूर–(वि०) १. अपने पद, कुल और व्यक्तित्व इत्यादि की परम्परागत प्रतिष्ठा को निभाने वाला तथा इनकी कीर्ति को बढ़ाने वाला। वंश वर्धन। २. अपने स्थान पर शोभा देने वाला। ३. उच्च कुल में उत्पन्न। कुलवान। खानदानी। ४. प्रतिष्ठित। ५. रोबदार। ६.अपने पद या स्थान की मान-मर्यादा रखने वाला।

ठाण सिणगार–(वि०) १. एक जगह पड़ा रहने वाला। २. किसी के काम नहीं आने वाला। निकम्मा। निठल्ला।

ठाणा–(न०ब०व०) जैनधर्म के तेरहपंथी या बाईस टोले के साधुओं की संख्या का नाम। संख्या। गिनती।

ठाणांग–(न०) जैन धर्म का स्थानांगसूत्र ग्रंथ।

ठाणियो–(न०) १. तबेले का नौकर। साहणी। २. मवेशी के लिये कुतर, ग्वार, बाजरी आदि का मिश्रण पकाने का स्थान व पात्र। दे० दहळियो। ३. दे० ठाण सं० १ और २।

ठाणो–(न०) जैन साधु। (क्रि०)१. स्थापित करना। २. ठानना। निश्चित करना।

५. मृत्यु ।

ठारणो–*(क्रि०)* १. ठंडा करना । शीतल करना । २. जमाना । ३. समाप्त करना । मारना । ४. बुझाना । शांत करना । शीतल करना ।

ठारी–*(ना०)* १. हलकी ठंड । २. प्रातःकाल की ठंडी । ३. आश्विन-कार्तिक की ठंडी । ४. शबनम । ओस । भाकळ ।

ठाळ–*(ना०)*१ कुदान । छलांग । २. तलाश ।

ठालणो–*(क्रि०)* १. खाली करना । २. गिराना । पटकना । ३. एकत्र करना । ढेर लगाना । ४. ढूंढ़ना । खोजना । ५. छांटना । चुनना । ६ उड़ेलना ।

ठालप–*(ना०)* बेकारी ।

२. प्रामाणिकता । ३. योग्यता । ४. विवेक । ५. बड़प्पन । ६. लुच्चाई । ७. बड़प्पन की डींग ।

ठावकी–*(वि०)* १. रूपवान । सुन्दर । २. अच्छी । ३. व्यवस्थित । ४. चालाक । ५. लुच्ची ।

ठावको–*(वि०)* १: प्रामाणिक । २. योग्य । ३ विश्वासपात्र । ४. विवेकी । ५. सुव्यवस्थित । ६. गभीर । संजीदा । ७. लुच्चा । ८. डींग हांकने वाला । ९. चालाक । १०. खानदानी ।

ठावणो–दे० ठहावणो ।

ठावो–*(न०)* १. निश्चित स्थान । २. यथास्थान । ३. निश्चय । ४. तसल्ली । *(क्रि०)*

१. विश्वसनीय । २. प्रतिष्ठित । ३. प्रसिद्ध । ४. नित्य । शाश्वत । ५. कुविख्यात । बदनाम । ६.लुच्चा । *(क्रिоवि०)* ठिकानेसर । पतेवार ।

ठाह–*(ना०)*१. पता । ठिकाना । २. खबर । खोज । पता । ३. सूचना । खबर । ४. स्थान । जगह । ठा ।

ठाहणो–*(क्रि०)*१. बनाना । संपादन करना । तैयार करना । २. सजाना । ३. जमाना । यथास्थान स्थिर करना । ४. स्थापित करना ।

ठाहर–*(ना०)* जगह । स्थान ।

ठाहियो–दे० ठायो ।

ठाहै–*(अव्य०)* ठिकाने पर ।

ठाहो–दे० ठायो ।

ठाँ–*(ना०)* १. जगह । स्थान । २. ठिकाना । पता । ३ बंदूक छूटने का शब्द ।

ठांठी–*(वि०)* जो ब्याती न हो । बांझ (मादा पशु) ।

ठांठो–दे० ठंठो ।

ठांभणो–दे० ठामणो ।

ठांयचो–दे० ठायो ।

ठाँव–दे० ठाम ।

ठांसण -*(न०)* घुटना । गोडो ।

ठांसणो–दे० ठूंसणो ।

ठांसमो–*(न०)* बुनाई का गाढ़ापन । *(वि०)* १. गाढ़ा बुना हुआ । पास-पास धागों से सघन व ठोस बुना हुआ । घट्ट बुना हुआ । २. दबा-दबा कर भरा हुआ । ठूसा हुआ । डट कर भरा हुआ । ३. डट कर खाया हुआ ।

ठिक–*(न०)* १. भोजन की तृप्ति । २. संतोष । तृप्ति । ३. स्थिरता । ४. यथास्थान । सुस्थान ।

ठिकाणो–*(न०)* १. स्थान । जगह । २. ठिकाना । पता । ३.जागीरी । ४.जागीरदार का घर । ५.घराना । वंश । प्रतिष्ठित घर । जीविका का स्थान । ७. जीविका का ढंग । ८.स्थिति । ९. स्थिरता । १०. निश्चय । ११. व्यवस्था । ढंग ।

ठिठकारणो–दे० ठठकारणो ।

ठिठकारियो–दे० ठठकारियो ।

ठिणगणणो–*(क्रि०)* बच्चों के समान रोना । तुनकना । ठुनकना ।

ठिरड़णो–दे० ठरड़णो ।

ठीक–*(ना०)* १. खबर । पता । सूचना । २. ज्ञान । जान । जानकारी । ३. असंदिग्ध बात । स्थिर बात । ४. स्थिर प्रबंध । पक्का आयोजन । *(वि०)* १. अच्छा । भला । २. शुद्ध । सही । ३. जैसा हो वैसा । यथार्थ । ४. उचित । उपयुक्त । ५. चाहिये जैसा । बराबर । ६. न अच्छा न बुरा । सामान्य । ७. निश्चित । ८. यथा परिणाम । *(अव्य०)* अस्तु । खैर । अच्छा । भले ।

ठीकठाक–*(अव्य०)* व्यवस्थित रीति से रखा या सजाया गया हो ऐसा । ठीकठाक । *(वि०)* १. प्रमाण अथवा तुलना में अच्छा । २. अच्छा । दुरुस्त । ३. व्यवस्थित । ४. साधारण । कामलायक ।

ठीक पड़णो–*(मुहा०)* १. समझ में आना । जान पड़ना । २. पता लगना । मालूम होना ।

ठीकरी–*(ना०)* मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ खंड । ठिकरी ।

ठीकरो–*(न०)* १. मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ टुकड़ा । ठीकरा । २. मिट्टी का बरतन । ३. भिक्षा पात्र । ४. बरतन के लिये न्यूनतासूचक शब्द । बरतन । ५. निकम्मी चीज । *(वि०)* व्यर्थ । निकम्मा ।

ठीकाठीक–*(वि०)* १. साधारण । मामूली । २. जैसा-तैसा । ३. काम चलाऊ । जैसे तैसे निभे वैसा ।

ठीमराई-दे० ठीमरपणो ।

ठीयणो-(क्रि०) १. होना । २. बनना । थियणो ।

ठीया-(न०ब०व०) १. वे दो पत्थर जिन पर पाँव रख कर पाखाना फिरने को उकड़ू (पाँवों को टिका कर) बैठा जाता है । २. अस्थाई तौर से बनाये हुये चूल्हे के तीन पत्थर ।

ठींगणो-(वि०) प्रमाण में कम ऊँचाई । ठिगना । बौना ।

ठींगो-(वि०) १. जबरदस्त । २. ठिगना ।

ठींडो-(न०) सुराख । छेद ।

ठुमरी-(ना०)एक प्रकार का गाना या राग ।

ठुकी-(ना०) बारीक छोटा कांटा । कँटिया । फांस ।

ठुळियो-दे० ठळियो ।

ठुसी-(ना०) स्त्रियों के गले का एक गहना ।

ठूंकलणो-(क्रि०) १. किसी के काम में दोष निकालना । ऐब देखना । २. डाँटना । फटकारना ।

ठेक-दे० ठेको ।

ठेकड़ी-दे० ठेको ।

ठेका देणो-(मुहा०) भाग जाना ।

ठेकी-(ना०) १. हँसी । मजाक । ठठोली । २. ताना । व्यंग । ३. कुदान । चौकड़ी ।

ठेकेदार-(न०) ठीकेदार ।

ठेकेदारी-(ना०) १. ठीकेदार का काम । ठीकेदारी ।

ठेको-(न०) १. छलांग । कूद । २. पलायन । फरार । ३. घोड़ी की एक चाल । ४. ठेका । ठीका । इजारा । ५. तबला या ढोलक बजाने की एक रीति । ताल ।

ठेचरी-(ना०) उपहास । दिल्लगी । निंदा सूचक हास । मखौल । ठेसरी ।

ठेट-(न०) १. शुरू । प्रारंभ । २. अंत । पार । ३. दूर । फासला । ४. लक्ष्य । (क्रि०वि०) फासले पर । अंतर पर । दूर । (अव्य०) १. अंत तक । २. लक्ष्य तक ।

ठेट तक-(अव्य०) १. अंत तक । आखिर

ठेट ताणी–दे० ठेट तक ।
ठेट ताँई–दे० ठेट तक ।
ठेट थी–(अव्य०) शुरु से । ठेठ से । प्रारंभ से ।
ठेट सूं–दे० ठेट थी ।
ठेट सूधो–दे० ठेट तक ।
ठेटा ताणी–दे० ठेट तक ।
ठेटा ताँई–दे० ठेट तक ।
ठेटा लग–दे० ठेट तक ।
ठेठा लगी–दे० ठेट तक ।
ठेटी–(ना०) कान का मैल । ठेंठी । ठेपी ।
ठेठ–दे० ठेट ।
ठेठर–(न०) १. थियेटर । थ्येटर । २. नंगे पाँवों चलते रहने से बन जाने वाला पगथली का मोटा चमड़ा । ३. गोबर मिट्टी आदि से भरा हुआ गंवारू जूता । ४. पुराना और फटा सूखा जूता । ५. परिमाण और आवश्यकता से अधिक भारी वस्तु ।
ठेठी–दे० ठेटी ।
ठेव–दे० ठेस ।
ठेव खाणो–(मुहा०) १. उलझना । छलकना । २. उछलना । ३. उमड़ना । ४. धक्के खाना । ५. भटकना ।
ठेवा देणो–(मुहा०) १. उमड़ना । २. उछलना । । ३. छलकना ।
ठेवो–(न०) १. बढ़ाव । उमड़ । २. उछाळ । उछल । छलकन ।
ठेलणो–(क्रि०) १. भगाना । २. धकेलना । ३. धक्का देना । ४. धक्का देकर आगे बढना । ठेलना । ५. ठोकर मारना । ६. दूर करना । ७. अस्वीकार करना । ८. मरना । ९. उंड़ेलना । ढालना । १०. लौटाना । ११. भाग जाना । १२. चलना । १३. चलाना । १४. छोड़ना ।
ठेलमठेल–(न०) १. ऊपरा ऊपरी धकेलने का काम । २. धक्कम धक्का । धक्का-पेल । (वि०) १. बहुत । अधिक । २. पूर्ण ।
ठेलमों–(वि०)१. खूब अधिक । २. प्रपूरित । ३. भरपेट ।
ठेलो–(न०) १. ठेल कर चलाई जाने वाली गाड़ी । ठेला । २. धक्का ।
ठेळो–(न०) १. चुटकला । २. व्यंग्य ।
ठेस–(ना०)१. मानसिक चोट । २. मजाक । हँसी । ३. चोट । ४. ठोकर । ५. धक्का । टक्कर । ६. हानि ।
ठेसण–(न०) रेलवे स्टेशन । टेसण ।
ठेसरी–(ना०) १. ताना । व्यंग्य । मजाक । दिल्लगी । मखौल । ठेचरी ।
ठेहण–दे० ठेसण ।
ठैं–दे० ठैं ।
ठैरणो–दे० ठहरणो ।
ठैं–(न०) १. गिरने का शब्द । २. बंदूक छूटने की आवाज । ३. श्रान्ति । शिथिलता । ४. मृत्यु ।
ठो–(न०) संख्या । अदद । नग ।
ठोक–(ना०) १. ठोंक । मार । प्रहार । २. उलाहना । ताना । ३. हानि । घाटा ।
ठोकणो–(क्रि०) १. मारना । पीटना । ठोंकना । २. खूंटी । कील आदि गाड़ने, खोंसने के लिये चोटमारना । ३. हड़प करना । ४. गप हांकना । ५. हजम करना । खाजाना । ६. आवेश में कोई निश्चय करना । आवेश की बात करना ।
ठोकर–(न०) १. ठोकर । ठेस । २. पैर से मारी जाने वाली टक्कर । ३. जोर का धक्का । ४. जूते का अगला भाग । ५. घाटा । खोट । हानि ।
ठोकरीजणो–(क्रि०) ठोकर खाना ।
ठोकाक–(वि०) १. अनुचित रूप से लेने वाला । हजम करने वाला । हड़पने वाला । २. हड़पने की इच्छा रखनेवाला ।

डकावणो–*(क्रि०)* कुदवाना । छलाँग भरवाना ।

डकेत–*(न०)* डाकू । लुटेरा ।

डको–*(न०)* एक चर्म वाद्य ।

डकोळी–दे० डंकोळी ।

डखळ-डखळ–*(न०)* मुँह में ऊपर से धार उँड़ेलकर पानी पीने से गले में होने वाला शब्द । २. जल्दी जल्दी पानी पीते समय गले से निकलने वाला शब्द ।

डखोळणो–*(क्रि०)* बँखोरना । गंदला करना ।

डग–*(न०)* १. कदम । फाल । फलाँग । २. पाँव । पैर । ३. एक डग से दूसरे डग की दूरी ।

डगण–*(न०)* काव्य में चार मात्राओं का एक गण ।

डगणो–दे० डिगणो ।

डगवेड़ी–*(ना०)*हाथी को बाँधने की सांकल ।

डगमग–*(वि०)* १. विचलित । निश्चय में ढचुपचु । २. आशंकित । ३. हिलता हुआ । *(ना०)* १. वहम । संशय । २. आशंका । ३. अस्थिरता । चंचलता । ४. अनिश्चितता ।

डगमगणो–*(क्रि०)* १. निश्चय से विचलित होना । डाँवाडोल होना । २. संशय होना । ३. आशंका होना । ४. हिलना । डगमगाना ।

डगमगाट–*(न०)* १. हलन-चलन । डगमगाहट । २. घबराहट । थर्राहट । ३. आशंका । खटका । ४. लड़खड़ाहट ।

डगमगाणो–*(क्रि०)*१. इधर-उधर हिलना । डगमगाना । २. निश्चय से विचलित होना । ३. विचलित करना । ४. आशंकित होना ।

डगर–*(न०)*१. मार्ग । रास्ता । २. पत्थर ।

डगरो–*(न०)* ऊंट ।

डगळ–*(वि०)* निर्जन । शून्य । *(न०)* ढेला । पत्थर ।

डगली–*(ना०)* रुईदार सदरी ।

डगळी–*(ना०)* १. किसी फल में उसका स्वाद रंग आदि विशेषताएँ देखने के लिये लगाई जाने वाली चकती । थिगली । फल की टाँकी । टाकी । २. समझ शक्ति । ३. समझ । बुद्धि ।

डगळी खसणो–*(मुहा०)* १. मान नहीं रहना । २. बिना समझ की बात करना । ३. पागल हो जाना ।

डगलो–*(न०)* १. एक प्रकार का अंगरखा । २. पाँव । कदम । डग ।

डगंबर–दे० डिगंबर ।

डगाणो–दे० डिगाणो ।

डगावणो–दे० डिगावणो ।

डगुमगु–*(वि०)* अस्थिर ।

डचको–*(न०)* मुँह से बाहर निकला हुआ गाढ़े कफ का अंश । बलगम ।

डटण–*(वि०)*१.गड़ा हुआ । २. गाड़ा हुआ दाटा हुआ । *(न०)* गड़े हुये के ऊपर का ढक्कन ।

डटणो–*(क्रि०)* १. खड़े रहना । २. जमकर खड़ा होना । अड़ना । ३. गड़ना । दफन होना । ४. भिड़ना । ५. दत्तचित्त होकर काम में लग जाना ।

डटाणो–दे० डटावणो ।

डटावणो–*(क्रि०)* १. दफनाना । गाड़ना । २. दफवाना । गड़वाना । ३. सटाना । ४. भिड़ाना । दबाना ।

डटियोड़ो–*(वि०)* १. गड़ा हुआ । दफन किया हुआ । २. दबा हुआ । भिड़ा हुआ । ३. डटा हुआ । टिका हुआ ।

डट्टो–*(न०)* १. किवाड़ को बंद होने से रोकने वाला लकड़ी का डट्टा । २. छींट छापने का ठप्पा । भांत । ठप्पो । ३. मुँह या छेद बंद करने वाली वस्तु । काग ।

डड्डो–*(न०)* ट वर्ग का तीसरा वर्ण । डकार । 'ड' वर्ण । इसके दो उच्चारण

डकावणो–(क्रि०) कुदवाना । छलाँग भरवाना ।

डकेत–(न०) डाकू । लुटेरा ।

डको–(न०) एक चर्म वाद्य ।

डकोळी–दे० डंकोळी ।

डखळ-डखळ–(न०) मुँह में ऊपर से धार उँड़ेलकर पानी पीने से गले में होने वाला शब्द । २. जल्दी जल्दी पानी पीते समय गले से निकलने वाला शब्द ।

डंखोळणो–(क्रि०) घँघोरना । गंदला करना ।

डग–(न०) १. कदम । फाल । फलाँग । २. पाँव । पैर । ३. एक डग से दूसरे डग की दूरी ।

डगण–(न०) काव्य में चार मात्राओं का एक गण ।

डगणो–दे० डिगणो ।

डगवेड़ी–(ना०)हाथी को बाँधने की सांकल ।

डगमग–(वि०) १. विचलित । निश्चय में ढचुपचु । २. आशंकित । ३. हिलता हुआ । (ना०) १. वहम । संशय । २. आशंका । ३. अस्थिरता । चंचलता । ४. अनिश्चितता ।

डगमगणो–(क्रि०) १. निश्चय से विचलित होना । डाँवाडोल होना । २. संशय होना । ३. आशंका होना । ४. हिलना । डगमगाना ।

डगमगाट–(न०) १. हलन-चलन । डगमगाहट । २. घबराहट । थर्राहट । ३. आशंका । खटका । ४. लड़खड़ाहट ।

डगमगाणो–(क्रि०)१. इधर-उधर हिलना । डगमगाना । २. निश्चय से विचलित होना । ३. विचलित करना । ४. आशंकित होना ।

डगर–(न०)१. मार्ग । रास्ता । २. पत्थर ।

डगरो–(न०) ऊंट ।

डगळ–(वि०) निर्जन । शून्य । (न०) ढेला । पत्थर ।

डगली–(ना०) रूईदार सदरी ।

डगळी–(ना०) १. किसी फल में उसका स्वाद रंग आदि विशेषताएँ देखने के लिये लगाई जाने वाली चकती । थिगली । फल की टाँकी । टाकी । २. समझ शक्ति । ३. समझ । बुद्धि ।

डगळी खसणो–(मुहा०) १. मान नहीं रहना । २. विना समझ की बात करना । ३. पागल हो जाना ।

डगलो–(न०) १. एक प्रकार का अंगरखा । २. पाँव । कदम । डग ।

डगंबर–दे० डिगंबर ।

डगाणो–दे० डिगाणो ।

डगावणो–दे० डिगावणो ।

डगुमगु–(वि०) अस्थिर ।

डचको–(न०) मुँह से बाहर निकला हुआ गाढ़े कफ का अंश । बलगम ।

डटण–(वि०)१.गड़ा हुआ । २. गाड़ा हुआ दाटा हुआ । (न०) गड़े हुये के ऊपर का ढक्कन ।

डटणो–(क्रि०) १. खड़े रहना । २. जमकर खड़ा होना । अड़ना । ३. गड़ना । दफन होना । ४. भिड़ना । ५. दत्तचित्त होकर काम में लग जाना ।

डटाणो–दे० डटावणो ।

डटावणो–(क्रि०) १. दफनाना । गाड़ना । २. दफवाना । गड़वाना । ३. सटाना । ४. भिड़ाना । दबाना ।

डटियोड़ो–(वि०) १. गड़ा हुआ । दफन किया हुआ । २. दबा हुआ । भिड़ा हुआ । ३. डटा हुआ । टिका हुआ ।

डट्टो–(न०) १. किवाड़ को बंद होने से रोकने वाला लकड़ी का डट्टा । २. छींट छापने का डट्टा । भांत । ठप्पो । ३. मुँह या छेद बंद करने वाली वस्तु । काग ।

डड्डो–(न०) ट वर्ग का तीसरा वर्ण । डकार । 'ट' वर्ग । इसके दो उच्चारण

ओर दो रूप होते हैं। प्रयोग शब्द के प्रथम अक्षर के रूप में नहीं होता। शब्द के अंत में या बीच में होता है।

टढ–(वि०) दृढ़। मजबूत। डिढ।

डपट–(ना०) १. डांट। डपट। भिड़की। २. दौड़। ३ वातावरण में फैली हुई तेज सुगंध। दूर से आने वाली तेज सुगंध। (वि०) १. परिपूर्ण। यथेष्ट। २. बहुत अधिक।

डपटणो–(क्रि०) १. डाँटना। फटकारना। २. तेज दौड़ना। ३. सभी ओर से वस्त्र द्वारा ढक देना।

डफ–(न०) १. एक बाजा। चंग। (वि०) बेसमझ। बेवकूफ।

डफलाणो–दे० डफळावणो।

डफळावणो-(क्रि०) १. घबरा देना। २. झमेले में फँसना। ३. भुलाना। भटाकना। ४. हैरान करना।

डफली–(ना०) १. छोटा डफ। २. खंजरी।

डफळीजणो–(क्रि०) १. घबराना। घबरा जाना। २. भूल जाना। भटक जाना। ३. झमेले में फँसना। ४. हैरान होना।

डफाण–(ना०) १. शेखी। गप्प। डींग। दंभान। २. ढोंग। पाखंड। दंभ।

डफाणो–(क्रि०) १. डाँटना। फटकारना। २. भुला देना। ३. घबराहट में डाल देना। ४. भौंचक्का बना देना।

डफावणो–दे० डफाणो।

डफीड़–दे० डफीड़ो।

डफीड़ो–(न०) चक्कर। आँटा। गोतो।

डफो–दे० डफीड़ो। (न०) १. संकट। २. संताप।

डफोळ–(वि०)ढपोर। मूर्ख। जड़। डोफो।

डफोळसंख–(न०) १. जो कहे बहुत पर करे कुछ भी नहीं। डींग हांकने वाला। गप्पी। ढपोर शंख। २. जड़ मनुष्य। (वि०) जड़। मूर्ख।

डफोळाई–(ना०) मूर्खता।

डफोळियो–दे० डफोळ।

डबको–(न०)१. आकस्मिक भय। आतंक। २. गिराणा। ३. पानी में डूबने या गिरने का शब्द।

डबगर–(न०) १. नगाड़े, ढोल, आदि पर चमड़ा मढ़ने वाली या चमड़े के कुप्पे बनाने वाली जाति। दफगर। २. डबगर जाति का व्यक्ति।

डबडब–(ना०) गड़बड़। पोल। बदइंतजामी। (वि०)डबाडब। डबडब। (आँसू भरे नयन) डबडबाते हुए। डबकौंहाँ।

डबडबाणो–(क्रि०) १. अश्रुपूर्ण होना। आँखों में आँसू आना। २. घबराना।

डबरो–(न०) एक छिछला पात्र।

डबल–(वि०) १. दुगना। दोवड़ो। २. दुहरा।

डबलरोटी–मोटी खमीर उठी रोटी।

डबली दे० डिबी।

डबियो–(न०) डिब्बा।

डबी–दे० डिबी।

डबो–(न०) १. रेलगाड़ी का मुसाफिर बैठने का या माल भरने काडिब्बा। २. धातु का एक ढक्कन दार बरतन। डिब्बा। कटोरदान। ३. बड़ीडिबिया। डिब्बा। ४. बच्चों को होने वाला निमोनिया रोग।

डबोणो–(क्रि०) १. डुबाना। डुबोना। २. नष्ट करना। डुबोना।

डबोळणो–(क्रि०) १. डुबाना। २. पानी में डुबा कर या भिगो कर बाहर निकालना।

डबोवणो दे० डबोणो।

डब्बो–दे० डबो।

डमर–दे० डंबर।

डमरू–(न०) १. एक वाद्य। डमरू। २. घटने में होने वाला एक [illegible] रोग।

डर–(न०)१. भय । खौफ । वोह । भो । २. धमकी । ३. आशंका ।

डरकण–(वि०) १. डरपोक । भीरु । २. कायर । बीकण ।

डरड़ो–(न०) बूढ़ा ऊंट । २. खड्डा । गढ़ा । दरड़ो ।

डरणियो–(वि०) डरने वाला । डरपोक । डरकण । बीकण ।

डरणो–(क्रि०) १. डरना । भय खाना । भयभीत होना । बीहणो । २. आशंका करना । अनिष्ट की संभावना करना ।

डरपण–दे० डरकण ।

डरपणो–दे० डरणो ।

डरपेड़ो–(वि०) डरा हुआ । डरियोड़ो ।

डरपोक–(वि०) कायर । भीरु । डरकण । डरणियो । बीकण ।

डरामणी–(ना०) धमकी । (वि०) १. डर लगे ऐसी । डरावनी । भयाविनी । २. डर उत्पन्न करने वाली । भयाविनी ।

डरामणो–(वि०) डरावना । भयानक ।

डरावणी–दे० डरामणी ।

डरावणो–(क्रि०) डराना । डर दिखाना । (वि०) १. डरावना । भयानक । २. डर से अभिभूत । भयाक्रान्त ।

डरियोड़ो–(वि०) डरा हुआ । भयाक्रान्त । डरपेड़ो ।

ड़रूं-डरूं–(न०)मेंढ़क के बोलने का शब्द । (वि०) घबराया हुआ ।

डरूं-फरूं–(वि०) घबराया हुआ । भयाक्रान्त ।

डळी–(ना०) १. घोड़े की पीठ पर जीन के नीचे रखी जाने वाली ऊन की एक गद्दी । नमदा । अर्कगीर । २. टुकड़ा । ३. छोटा टुकड़ा । ४. किसी वस्तु में से लिया हुआ, तोड़ा हुआ अथवा काटा हुआ छोटा अंश ।

डळो–(न०) किसी वस्तु का अलग किया हुआ कुछ अंश । टुकड़ा । खंड । डला ।

डस–(ना०) ताले के भीतर का वह भाग जिससे ताला बंद होता है । ताले की जीभ । २. किसी लंबी पतली वस्तु का बाहर निकला हुआ भाग । ३. तोलने के समय पकड़ी जाने वाली तराजू की डंडी के बीच के सुराख में डाला हुआ रस्सी का टुकड़ा । तणियो । ४. वैर का बदला लेने का भाव । दंश । ५. डाह । ईर्ष्या । ६. दे० डसी सं. २

डसण–(न०) दांत । दशन ।

डसणी–(वि०) १. डसने वाली । काटने वाली । २. नाश करने वाली । ३. बड़े दांतों वाली । (ना०) १. तलवार । २. कटारी ।

डसणेस–(न०) १. गजानन । गणेश । २. हाथी । ३. गणेशजी का दांत । ४. हाथी का दांत । ५. दांत । दशन ।

डसणो–(क्रि०)१. दांत से काटना । दंशना । २. सांप का काटना ।

डसी–(ना०)१. वस्त्र का छोटा लंबा टुकड़ा । धज्जी । लीरी । चींथी । २. किसी लोक-देवता को कष्ट निवारणार्थ अर्पण की जाने वाली कपड़े की धज्जी ।

डसूको–(न०) रोने की सिसकन । डसूका ।

डहक–(ना०) १. नगाड़े का शब्द । २. प्रसन्नता । खुशी । ३. गर्व । घमंड ।

डहकणो–(क्रि०) १. अंकुरित होना । अँखुआ निकलना । २. डहडहाना । हरा-भरा होना । ३. प्रसन्न होना । ४. प्रफुल्लित होना । खिलना । ५.घमंड करना । ६. घबराना । ७. छला जाना । धोखा खाना । ८. नगाड़ा बजने का शब्द होना । ९. डमरु का बजना ।

डहणो–(क्रि०) १. धारण करना । २. शोभित होना । ३.घबराना । ४. भयभीत होना । ५. रखना । ६. सजना । तैयार करना ।७. दुखी होना ।

डहर-*(न०)* १. छापर। २. समतल मैदान। ३. चारों ओर कुछ ऊंचा उठा हुआ नीची भूमि का मैदान। ४.नीची जमीन वाला। (जिसमें वर्षा का पानी भर जाता हो) खेत। डबरा।

डहरी-*(ना०)* १. डाकिनी। २. दे० डेरी।

डहरू-दे० डैरू।

डहरो-दे० डैरो।

डहोळणो-*(क्रि०)* पानी को गंदला करना।

डहोळो-*(वि०)* गंदला। *(न०)* १. डर। भय। २. खलभली।

डंक-*(न०)* १. मधुमक्खी और भिड़ के पिछले भाग में तथा बिच्छू की पूंछ में लगा रहने वाला एक जहरीला कांटा, जिसको धँसा कर वे जीवों के शरीर में जहर पहुँचाते हैं। डंक। जहरी कांटा। २. डंक का चुभना। दंश। चटको। ३. क्षत। ४. नाज के दाने में घुन लगने से उसमें होने वाला छेद। ५. शत्रुता। वैर। ६. कोई चुभने वाली बात। ६. नगाड़ा। ८. नगाड़ा-ढोल बजाने का डंडा। ६. प्रकृति के अनेक रूप और उनके व्यापार के आधार पर वर्षा विज्ञान के सिद्धान्तों को निश्चित करने वाले एक ज्योतिषी का नाम।

डंक चूड़ी-*(ना०)* स्त्रियों के हाथ की एक प्रकार की चूड़ी।

डंकणो-*(क्रि०)* १. डंक मारना। २. मन में खटकना। चुभना।

डंकदार-*(वि०)* डंक वाला।

डंक मारणो-*(मुहा०)* डंक चुभाना।

डंक लागणो-*(मुहा०)* १. धान्य के दानों में छिद्र होना। नाज में कीड़ा लगना। सुळणो। २. किसी विषैले जंतु का डंक चुभना। ३. मन में खटकना।

डंकी-*(वि०)*१.जिसके डंक हो। डंक वाला। २. डंक चुभाने वाला। *(न०)* डंक वाला कीड़ा।

डंको-*(न०)* १. ढोल नगाड़े की आवाज। २. ढोल नगाड़े बजाने का डंडा। चोब। ३. नगाड़ा। ४. जीत। विजय। ५. जीत का बाजा। विजय वाद्य।

डंको देणो-*(मुहा०)* १. नगाड़ा या ढोल बजाना। २. उत्साह से किसी कार्य को करने के लिये प्रस्थान करना।

डंको बाजणो-*(मुहा०)* १. कीर्त्ति होना। २. प्रसिद्धि होना। ३. रोब जमना। धाक जमना।

डंको होणो-*(मुहा०)* १. नगाड़ा या ढोल बजना। २. सवारी (शोभा यात्रा) निकलना या प्रस्थान करना। ३.विजय होना।

डंकोळी-*(ना०)* ज्वार, बाजरी आदि पौधों का छिलका उतारा हुआ सूखा डंठल। डकोळी।

डंखणो-*(क्रि०)* १. उत्तेजित होना। २. आक्रमण करना। ३.खटकना। खटकणो।

डंगर-दे० डांगर।

डंठळ-*(न०)* १. छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंड-*(न०)* १. दंड। सजा। जुरमाना। २. एक कसरत। ३. डडा। सोटा।

डंड-कमंडळ-*(न०)* १. माल असबाब। सामान। २. संन्यासी का दंड और कमंडल। ३. संन्यासी का सामान।

डंडकारण-*(न०)* दंडकारण्य।

डंडणो-*(क्रि०)* १. दंड करना। जुर्माना करना। दंड लेना। २. बलात् धन वसूल करना। ३. सजा करना। दंड देना।

डंडा-बेड़ी-*(ना०)* डंडे वाली बेड़ी। दंड-निगड़।

डंडाळ-*(न०)* १. नगाड़ा। दुंदुभी। २. भाला। *(वि०)* १. नगाड़ा बजाने वाला।

२. डंडियों से गेहर (खेलने) रमने वाला। ३. रण-रसिक।

डंडाळो–*(वि०)* डंडे वाला। डंडाधारी।

डंडाहड़–*(न०)* १. डंडियों की गेहर। २. डंडा रास। ३. नगाड़ा।

डंडिया-गेहर–*(ना०)* खिड़किया या चूंचदार पाघ में तुर्रा-कलगी, जामा सभी प्रकार के आभूषण और पांवों में घूंघरू आदि राजाशाही वेशभूषा में सज्ज होकर समूह रूप से ढोल नौबत आदि वाद्यों के ताल पर पतली डंडियों (छड़ियों) से खेला जाने वाला एक वासंतिक (होलिकोत्सव) नृत्य। रास। रास नृत्य।

डंडी–*(न०)* १. संन्यासी। २. राजा। ३. यमराज। ४. द्वारपाल। ५. तराजू की आडी लकड़ी। ६.कलछी की लंबा सिरा। ७. छाते की छड़ी। *(वि०)* जिसे दंड मिला हो। दंडित। सजायाफ्ता।

डंडो–*(न०)* डंडा। सोंटा। दे० डांडो।

डंडूळ–*(न०)* वातचक्र। भघूळो।

डंडाको–*(न०)* डंडा। सोंटा।

डंडोत–*(ना०)* दंडवत। उलटा सोकर किया किया जाने वाला प्रणाम। साष्टांग प्रणाम। साष्टांग दंडवत।

डंडोळो–*(न०)* नगाड़ा।

डंफर–*(ना०)* १. आडम्बर। २. धौंस। रोब। ३. तेज हवा।

डंफाण–*(ना०)*१. लंबी चौड़ी बात। शेखी। गप्प। २. दंभ। पाखंड। धूर्तता। ३. झूठा रोब।

डंबर–*(न०)*१. आडंबर। ढोंग। २.प्रकाश। ३. प्रताप। महिमा। ४. ऐश्वर्य। वैभव। ५. बादल। मेघ-घटा। ६ एक प्रकार का बड़ा चदोवा। ७. विस्तार। फैलाव। ८. गुलाल या धूल से आच्छादित वातावरण। ९. आकाश में गर्द छा जाने से बना अंधेरा। १०. भीड़। जमाव। समूह। दल। ११. जोश। उमंग। १२. मरुआ। १३.सुगव। *(वि०)* १. गहरा। घना। खूब। २. अश्रुपूर्ण। ३. आच्छादित। ४. विस्तृत।

डंभ–दे० डाम।

डंभाण–*(ना०)* दंभ। पाखंड।

डंस–*(न०)* १. दंश। दांत। २. डांस। मच्छर। *(ना०)* ईर्ष्या। डाह।

डंसणो–दे० डसणो।

डाइण–*(वि०)* १. वृद्ध। २. वृद्धा। *(ना०)* १.डाकिनी। डायन। २.भूतनी। चुड़ैल। ३. डरावने रूप वाली स्त्री। ४. जादूगर स्त्री।

डाई–*(ना०)* १. खेल में हारने वाले के ऊपर आने वाली पारी। (प्रायः बालकों के खेल में) २. धातु का सिक्का, फूलपत्ती इत्यादि काटने का सांचा।

डाईजणो–*(क्रि०)* १. घोड़ी को कामेच्छा होना। २. घोड़ी को गर्भ धारण की इच्छा होना। घोड़ी का जाग में आना।

डाक–*(ना०)* १. एक पैंड से दूसरे पैंड का अन्तर। डग। कदम। २. छलांग। कुदान। ३.निरंतर आने जाने की क्रिया। नित्य का आवन-जावन। ४. अधिक संख्या में आवन-जावन। ५. प्राचीन समय की ऊंट सवार, घुड़ सवार आदि के द्वारा राज्यों की परस्पर चिट्ठी पत्री या फरमान आदि पहुँचाने की एक व्यवस्था। ६. चिट्ठियों, पारसल आदि के आने-जाने या मिलने-भेजने का एक सरकारी प्रबन्ध। ७. डाकघर के द्वारा भेजी जाने वाली या प्राप्त की जाने वाली चिट्ठियाँ इत्यादि। ८. डाकगाड़ी। ९. कोई चर्म वाद्य। १०. युद्ध वाद्य। ११. वाद्य शब्द। १२.शब्द। ध्वनि। आवाज। १३. उलूक शब्द। उल्लू का बोलना। १४. युद्धस्थल

में अप्सराओं का नाच (कवि कल्पना) १५. भूत-प्रेतों का नाच। १६. भूत-प्रेत या भूतनियों का समूह।

डाक खर्च–*(ना०)* डाक द्वारा भेजी जाने वाली चीजों का खर्च। डाक का खर्च।

डाकखानो–*(न०)* डाकघर। पोस्ट ऑफिस।

डाकगाड़ी–*(ना०)* डाक ले जाने वाली तेज रफ्तार की मुसाफिर रेल गाड़ी। मेल ट्रेन।

डाक घर–दे० डाकखानो।

डाक टिकट–*(ना०)* डाक महसूल के लिये चिट्ठी-पत्री आदि पर लगाया जाने वाला एक प्रकार का कागज का छोटा टुकड़ा। (भिन्न भिन्न मूल्य के कागज के इन टुकड़ों (टिकटों) पर सरकार द्वारा निश्चित चित्रांकन होते हैं।)

डाकण–*(ना०)* १. डाकिनी। चुड़ैल। डाकिन। २. भूत विद्या जानने वाली स्त्री। ३. जिसकी नजर लगे ऐसी स्त्री।

डाकण-स्यारी–दे० डाकण।

डाकणी–दे० डाकण।

डाकणो–*(क्रि०)* १. फाँदना। छलांग भरना। कूदना। २. लांघना।

डाकदर–*(न०)* १. चिकित्सक। वैद्य। डाक्टर। २. साहित्य का पंडित। दे० डाक्टर।

डाक महसूल–*(न०)* डाक द्वारा भेजी जाने वाली वस्तुओं पर लगने वाला खर्च।

डाकर–*(ना०)* १. डाँट। रोब। २. खौफ। डर। ३. दहाड़।

डाकरणो–*(क्रि०)* १. दहाड़ना। २. डाँटना। ३. रोब दिखाना।

डाका पांचम–*(ना०)* फाल्गुन वदी पांचम, जिस दिन वसंतोत्सव के होली पर्व की ढोल-नौबत वाद्यों के साथ डंडियों की गेहर शुरू होती है। डंडियों की गेहर का ढोल पर डाका (डंका) पड़ना शुरू होने वाली पांचम।

डाकियो–*(न०)* १. चिट्ठी-पत्र आदि का घर घर पर जाकर बाँटने वाला। डाक बाँटने वाला। पोस्टमैन। २. डाक ले जाना वाला।

डाकी–*(वि०)* १. जबरदस्त। २. शूरवीर। ३. दुष्ट। ४. सबल। प्रचंड। ५. बहुत खाने वाला। ६. डरावना। भयावना। *(न०)* दैत्य।

डाकू–*(न०)* डाका डालने वाला। डकैत। लुटेरा। *(वि०)* १. जबरदस्त। २. डरावना। भयानक।

डाको–*(न०)* १. ढोल, नगाड़ा आदि बजाने का लकड़ी का डंडा। २. ढोल, नगाड़े पर दी जाने वाली चोट। डंको। ३. धनमाल लूटने के लिये किया जाने वाला धावा। धाड़। लूट। डाका।

डाकोत–दे० थावरियो।

डाकोर–*(न०)* गुजरात में आणंद के पास एक प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ-स्थान। छोटी द्वारका।

डाक्टर–*(न०)* १. एलोपेथी का चिकित्सक। डाकदर। २. किसी विषय से संबंधित शोधपूर्ण महानिबंध पर विश्वविद्यालय से दी जाने वाली पी-एच. डी. अथवा डी. लिट्. आदि की डिगरी। ३. ऐसी डिगरी (पदवी) प्राप्त करने वाला महानिबंध-लेखक। साहित्य-संशोधक पंडित।

डाक्टरणी–*(ना०)* स्त्री-डाक्टर। डाक्टराणी।

डाक्टरी–*(ना०)* १. डाक्टर का काम। २. डाक्टर की पदवी।

डागळ–*(वि०)* बड़ा। चौड़ा। *(न०)* छत। डागळो।

डागळी–*(ना०)* १. छोटी छत। २. बैलगाड़ी के आगे का वह भाग जहाँ बैलों को हांकने वाला बैठता है। ३. दिमाग। समझ शक्ति।

डागळी खसणो–दे० डगळी खसणो।

डागळो–(न०) १. छत। २. बैलगाड़ी का वह बड़ा समतल भाग जिस पर सवारियाँ बैठती हैं या माल लादा जाता है।

डागी–(ना०) ऊंटनी। सांयड़।

डागो–(न०) ऊंट।

डाच–(न०) १. दांत। २. मुँह।

डाचको–(न०) उबकान। मतली।

डाचो–(न०) १. मुँह। २. दांत से काटने की क्रिया। दंशन। ३. दांत से काटा हुआ स्थान। दंश। दंशन। ४. दंतक्षत। **वचको।**

डाचो भरणो–(मुहा०) दांतों से काटना। **वचको भरणो।**

डाट–(न०) १. छेद बंद करने की वस्तु। डट्टा। २. बोतल-शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु। काग। कॉर्क। ३. मेहराब को रोके रखने के लिये खड़ंजे (खड़ी ईंटों) की जुड़ाई। मेहराब की खड़ंजे की चुनाई। (ना०) १. महाविनाश। तबाही। २. धमकी। डांट। फटकार। ३. रोक। ४. बारूद की सुरंग।

डाटणो–(क्रि०) १. धमकाना। डाँटना। २. दाटना। दफनाना। गाड़ना। ३. डराना। ४. छिपाना। ५. अधिकार में रखना। वश में रखना।

डाट-डपट–दे० डाट-फटकार।

डाट-फटकार–(ना०) डाँट-फटकार। डाँट-डपट। डाँट।

डाटी–(ना०) १. धमकी। डाँट। २. भय। डर।

डाटो–दे० डूचो।

डाडर–(ना०)१.छाती। वक्षस्थल। सीना। २. पीठ।

डाडाणो–दे० दादाणो।

डाढ–(ना०) १. दाढ़। २. चौघड़।

डाढणो–दे० डाढणो।

डाढाळ–(न०) सूअर। (ना०) करणी देवी। (वि०) १. बड़े दाढ़-दांतों वाला। २. दाढ़ी वाला।

डाढाळी–(ना०) १. करणी देवी। २. वह स्त्री जिसकी ठोडी पर दाढी निकल आई हो। ३. शूकरी। ४. कटारी। (वि०) १. दाढ़ी वाली। २.वडे दाढ़-दाँतों वाली।

डाढाळो–(न०) १. सूअर। शूकर। २. पुरुष। मर्द। ३. घनी दाढ़ी। (वि०) १. बड़ी दाढ़-दांतों वाला। २. बड़ी दाढ़ी वाला। डढ़ार।

डाढी–(ना०) १. ठुड्डी के बाल। दाढ़ी।

डाढीक–(वि०) गम्भीर। समझदार।

डाढी-खूंटी–(ना०) १. मृतक के बारहवें दिन अशौच-निवृत्ति के निमित्त कराई जाने वाली हजामत। २. अशौच-निवृत्ति के रूप में मृतक के बारहवें दिन कराई जाने वाली हजामत की प्रथा।

डाढो–(वि०) १. अच्छा। २. स्वस्थ। चंगा। ३. खुश। प्रसन्न। ४. वृद्ध। ५. वीर। ६. बुद्धिमान। ७. बहुत। अधिक। (न०) डाढ़ी (व्यंग में)।

डाढो-भलो–(वि०)१. खूब अच्छा। २. खूब खुश। अत्यन्त प्रसन्न।

डाण–(न०) १. कदम। पैंड। २. छलांग। कुदान। ३. हाथी की गरदन से झरने वाला मद। ४. गर्व। ५. युद्ध। ६. राज-देय। चूंगी। कर। ७. दंड। ८. दान। ९. साहस। १०. सेना। ११. समूह। १२. चाल। १३.दांव। दाण। १४.अव-सर। मौका। दाण। १५.पारी। बारी। १६. तीतर। १७. भांति। तरह। प्रकार।

डाणाक–दे० डील-डाणाक।

डाणी–(न०) १. राजदेय प्राप्त करने वाला व्यक्ति। कर वसूल करने वाला व्यक्ति। २. आयात माल पर चुंगी लेने वाला

व्यक्ति । दाणी । ३. बालद (पोठ), बैलगाड़ी आदि में भरकर लाये हुये नाज आदि को तोलने (का धंधा करने) वाला व्यक्ति । तोलावट । ४. नाज बेचने या खरीदने वाले से धरमादे खाते की चुंगी लेने वाला व्यक्ति । ५. कुशल क्षेम। राजी खुशी । *(अव्य०)* अतिथि के आगमन पर परस्पर पूछा जाने वाला कुशल समाचार। आनंद में हो । मजे में हो । राजी खुशी हो—इत्यादि का वाचक शब्द ।

डाफाडोळ–*(वि०)* घबराया हुआ ।

डाफाडोळ होणो–*(मुहा०)* घबराना ।

डाफो–*(न०)* व्यर्थ का आना जाना । चक्कर । आँटा । आँटो ।

डाबड़ी–*(ना०)* डिब्बी । डिबिया । डाबी ।

डाबड़ो–*(न०)* १. कटोरदान । २. टोकरा । छाबड़ा । छबड़ा । ३. डिब्बा । डाबो ।

डाबर–*(वि०)* बड़ा (नयन) *(न०)* छोटा जलाशय । तळैया । पोखरी ।

डाबर नैणी–*(वि०)* १. बड़े नेत्रों वाली । २. सुंदर नेत्रों वाली । सुनयनी ।

डाबळी–दे० डाबड़ी ।

डाबळो–दे० डाबड़ो ।

डाबी–*(ना०)* डिब्बी ।

डाबो–*(न०)* डिब्बा । कटोरदान । डब्बो ।

डाभ–*(ना०)* १. दर्भ । दूर्वा । २. कुश ।

डाभी–*(न०)* एक क्षत्रिय जाति ।

डाम–*(न०)* १. शरीर के रुग्ण भाग को तप्त शलाका से दग्ध किया हुआ स्थान का चिन्ह । दाग । चरको । गुल । ३. लांछन । धब्बा ।

[डा]मणो–*(क्रि०)* १. तपाई हुई धातु शलाका से शरीर पर दाग देना । दागना । गुल देना । चरका देना । २. दंडित करना । ३. कलंकित करना ।

[डा]माडोळ–*(वि०)* विचलित । अस्थिर । डाँवाडोल । २. चकित । ३. भ्रमित । ४. हिलता हुआ ।

डायजो–दे० दायजो ।

डायण–*(ना०)* १. डायन । भूतनी । चुड़ैल । २. डरावनी स्त्री ।

डायरी–*(ना०)* दैनिक कार्य-विवरण लिखने की पुस्तिका । दैनंदिनी ।

डायो–*(वि०)* १. सीधा । भला । भोला-भाला । २ सयाना । समझदार ।

डार–*(न०)* १. पशुओं का झुंड । २. शूकर समूह । ३. पँक्ति । श्रेणी । कतार ।

डारण–*(वि०)* १. दारुण । भयंकर । २. जबरदस्त । ३. चीरने वाला । दारण ।

डारणो–*(वि०)* डराने वाला । डरावना । भयानक ।

डारपत–*(न०)* सूअर ।

डाल–*(ना०)* १. छिछली टोकरी । डलिया । २. कुट्टी नापने की डलिया । कुतर की हुई घास को नापने की ओडी । ३.डलिया भर घास का नाप या परिमाण । ओडी ।

डाळ–*(ना०)* १. डाल । शाखा । डाली । २. स्त्री बाहु । ३. स्त्री-बाहु के उपरि भाग (कोहनी के ऊपर) की चूड़ियों के नीचे की चूड़ी । ४.इस जगह पहिना जाने वाला सोने या चाँदी का एक प्रकार का कड़ा । ५. शस्त्र विशेष । ६. तलवार की नोक ।

डाळकी–*(ना०)* छोटी शाखा । डाळी ।

डालकी–दे० डाल ।

डाळको–*(न०)*वृक्ष की बड़ी शाखा । डाळो ।

डाला-मत्थो–दे० डालामथो ।

डाला-मथो–*(न०)* १. सिंह । २. बड़ा मत्था । *(वि०)* बड़े मस्तक वाला ।

डाळी–*(ना०)* वृक्ष की शाखा । डाल । छोटी शाखा ।

डाली–*(ना०)* १. (कुट्टी) घास नापने की छोटी डलिया । ओडी । २. फल फूल, मेवे और नकदी आदि की वह-सौगात जो

डलिया में सजाकर गुरु, राजा आदि को उनके सम्मानार्थ भेंट की जाती है । भेंट ।

डाळो-(न०) पेड़ की मोटी शाखा । तने की शाखा । डाल ।

डालो-(न०) १. टोकरा । ओडो । २. कुट्टी (घास) नापने का एक बड़ा टोकरा । कुतर नापने का ओडा । ३ डाला-भर कुट्टी कुतर) का नाप । डाला-भर कुट्टी का परिमाण ।

डाव-(ना०)१. दांव । बाजी । २. अवसर । मौका ।

डावड़ी-(ना०) १. पुत्री । २. लड़की । ३. दासी ।

डावड़ो (न०) १. पुत्र । बेटा । २. लड़का । बच्चा ।

डावलियो-(वि०) दाहिने हाथ की बजाय बायें हाथ से अधिक काम लेने की आदत वाला । खावलियो । खावेड़ी ।

डावियाळ-(वि०) १. बैलगाड़ी में बायीं ओर से जुन कर बोझ खींचने में सक्षम । २. जो बांयी ओर जुतने का आदि हो । ३. एक से दूसरा अधिक सक्षम । ४. तुलना में अधिक उपयुक्त । ५. साथ में रह कर काम करने वाला । जो किसी का बायां हाथ हो । सहायक । ६. अपने से अधिक सक्षम और उपयुक्त । ७. हर-दम साथ रहने वाला ।

डावी पाघ-(ना०) राठौड़ क्षत्रियों की पगड़ी । २. राठौड़ क्षत्री । ३ बाएँ पेच की पगड़ो ।

डावो-(वि०) १. बायाँ । वाम । २. बाईं ओर का । ३. विरुद्ध । प्रतिकूल ।

डास-(ना०) १. निराई करने योग्य खेत की घास । २. जड़ों सहित उन्मूलन की जाने वाली खेत की घास । ३. खेत का बिना निराई किया हुआ भाग ।

डाह-(ना०) १. ईर्ष्या । जलन । २. द्वेष।

डाहपण-(ना०) समझदारी ।

डाहळ-(न०) एक वाद्य ।

डाहळी-दे० डाळी ।

डाही-(वि०ना०) १. चतुर । २. सीधी । ३. समझदार । सयानी ।

डाहो-दे० डायो ।

डाह्यो-दे० डायो ।

डाँक-(न०) आभूषण में जड़े जाने वाले नगीने की चमक बढ़ाने के लिये उसके नीचे दिया जाने वाला चमकीला पत्तर ।

डाँखणो-(क्रि०) १. प्रहार करना । शस्त्र उठाना । २. हाथ में शस्त्र उठाये रखना । ३. क्रोधित होना । ४. अचानक आक्रमण करना । ५. एकाएक जा खड़ा होना ।

डाँखळी-(ना०) डाली में से फूटी हुई छोटी डाली । टहनी ।

डाँखळो-(न०) १. शाखा में से निकली हुई पतली डाली । २. तिनका । घोचो । ३. स्त्री के हाथ में पहनी हुई टूटी-फूटी हाथी दाँत की चूड़ी ।

डाँखियो-(वि०) १. भूखा । २. क्रोधित । (क्रि०वि०) १. भूखे मरता हुआ । २. भागता हुआ । (न०) भूखा सिंह ।

डाँग-(ना०) लाठी । बड़ा डंडा ।

डाँगड़ी-दे० डाँग ।

डाँगर-(न०) गाय, भैंस आदि पशु । चोपाया । ढोर । (वि०)नासमझ । बेवकूफ ।

डाँगरजंत्र-(न०) १. एक प्रकार की तोप । २. बाण ।

डाँगरो (वि०)नासमझ । बेवकूफ ।(न०)पशु ।

डाँचो-(न०) ऊंचे पायों वाला बड़ा खाट ।

डाँट-(ना०) १. फटकार । डपट । २. दबाव ।

डाँटणो-(क्रि०) शब्दों की मार देना । झिड़कना । डाँटना । डपटना ।

डाँड-(न०) १. लंबा डंडा । डांड । २. नाव खेने का बल्ला । (वि०) १. डंडे के समान

मंदा । २ बिना मालकके मारा । ३. निठुर । ४. बेशर्म ।

डांडिया रास-(न०) १. छोटे दंड से खेला जाने वाला रास । एक रास नृत्य । २. होलिकोत्सव के दिनों में डंडियों के साथ के साथ खेला जाने वाला एक सामूहिक नृत्य । गेहर । गींदड़ ।

डांडियो-(न०) जीर्ण हुई धोती को बीच में से फाड़ कर उसके दोनों सिरों को जोड़ने के लिए की जाने वाली सिलाई । दो कपड़ों को चौड़ाई की ओर से की गई सिलाई । २. डंडा ।

डांडी-(ना०) १. पगडंडी । २. सीमा । चीला । मर्यादा । ३. पंखी की डंडी । ४. छोटी पतली लकड़ी । ५. लंबा-पतला हत्था या दस्ता ।

डांडो-(न०) १. हत्था । मूठ । दस्ता । हाथो । २. होलिका दहन के एक मास पूर्व (माघी पूनम को) होलिकोत्सव के प्रारंभ हो जाने के रूप में गांव के नियत स्थान पर खड़ा किया जाने वाला (प्राय: खेजड़ी का) एक लंबा टहना, जो होली जलने तक रखा रहता है ।

डाँफर-(ना०) १. खूब तेज ठंडी हवा । शीतकाल की ठंडी आंधी । २. घौंस । रोब ।

डाँभ-दे० डाम ।

डाँभणो-दे० डामणो ।

डाँवाँडोळ-(वि०) १. हिलता-डुलता हुआ । अस्थिर । २. भ्रमित । विचलित । ३. घबराया हुआ । ४. प्रतिकूल ।

डाँस-(न०)१. एक प्रकार का बड़ा मच्छर । २. बड़ा मच्छर ।

डाँसर-दे० डांस ।

डाँह-दे० डाँस ।

डिगणो-(क्रि०) १. डिगना । हिलना । लुढ़कना । २. टलना । खिसकना । ३. किसी बात पर स्थिर नहीं रहना । ४. विचलित होना । पथभ्रष्ट होना । ५. भ्रष्ट होना । च्युत होना ।

डिगमिग-दे० डगमग ।

डिगर-(न०) भाखर ।

डिगरी-(ना०)१. विश्वविद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की पदवी । २. दर्जा । अंश । ३. दीवानी अदालत का दावादार के पक्ष में दिया गया निर्णय । डिग्री ।

डिगरीदार-(वि०)वह जिसके पक्ष में डिग्री हुई हो ।

डिगरो-दे० डिगर ।

डिगंबर-(न०) १. शिव । महादेव । २. एक नागा सम्प्रदाय । ३. नंगा साधु । ४. दिगम्बर सम्प्रदाय का नंगा रहने वाला जैन साधु । क्षपणक । (वि०) वस्त्र रहित । नंगा । विवस्त्र ।

डिगाणो-(क्रि०) १. डिगाना । हटाना । २. खिसकाना । टालना । ३. विचलित करना । पथभ्रष्ट करना । ४. स्थिर नहीं होने देना ।

डिगावणो-दे० डिगाणो ।

डिठोणो-(न०) दृष्टि दोष से बचाने के लिये सुंदर वस्तु पर बनाया जाने वाला अशुभ चिन्ह । २. बालक को नजर से बचाने के लिये उसके मुख पर लगाई जाने वाली काजल की बिंदी ।

डिढ-(वि०) दृढ़ । मजबूत ।

डिढाणो-(क्रि०) १. भूल न जाय, इसलिये दुबारा या बार बार कहना । याद दिलाना । २. दृढ़ करना । मजबूत करना । ३. मन में पक्का निश्चय करना ।

डिढ़ावणो-दे० डिढाणो ।

डिबो-दे० डबो ।

डिबी-(ना०) डिबिया । छोटी डिब्बी ।

डिब्बी-दे० डिबी ।

डिब्बो-दे० डबो ।

डिमडिम–(न०) एक वाद्य ।

डिंगळ–(ना०)१. राजस्थान की मध्ययुगीन साहित्यिक काव्य भाषा। २. चारण भाटों का तथा उनकी शैली का काव्य। ३.अपभ्रंश रूप की राजस्थानी की एक काव्य शैली। ४. ऊँचे स्वर से सुनाया जाने वाला प्रेरक काव्य। जीवन काव्य। [डींगी (=ऊंची, दीर्घ) + गल (=वात, आवाज) । ५. डींगल। वीरवाणी। (वि०) वीर।

डिंगळियो–(वि०) १. डिंगल काव्य की रचना करने वाला। २. डिंगल काव्य को समझने वाला। (न०) १. डिंगल कवि। २. भाट-चारण। ३. वीर पुरुष।

डिंभ–(न०) १. वच्चा। २. युद्ध।

डीकरी–(ना०) १. पुत्री। वेटी। २. लड़की। कन्या।

डीकरो–(न०) १. पुत्र। वेटा। २. लड़का।

डीघी–दे० डींगी १, २, ३.

डीघो–दे० डीगो।

डीठ–(न०) १. दृष्टि। नजर। २. देखने की शक्ति। ३. सूझ। ज्ञान। ४. दृष्टि का बुरा प्रभाव। नजर। (अव्य०) प्रत्येक। हर एक। प्रति।

डीवो–(न०) १. पेट में वायु रुकने का एक रोग। २. पेट में होने वाली वायु की गांठ। ३. कलेजे में होने वाला एक दर्द। ४. मनस्ताप। ५. छाती भर जाना।

डीर–(न०) १. वृक्ष की टहनियाँ, फूल, पत्ते आदि। २. वौर। मंजरी।

डील–(न०) १. शरीर। देह। २. शरीर का विस्तार। कद। ३. कुटुम्बीजन। ४. स्त्री का गुप्तांग। योनि।

डील करणो–(मुहा०)अवयवों का विकसित होना। शरीर का वढ़ना।

डील-डाणाक–दे० डीलाळो।

डीलायती–दे० डीलायतो।

डीलायतो–(वि०) १. वड़े कद वाला। ऊंचा और हृष्ट-पुष्ट। दीर्घकाय। २. वड़े कुटुम्ब वाला।

डीलाळो–(वि०) १. दृढ़ और मोटे शरीर वाला। पुष्ट शरीर वाला। २. व्यक्तित्व वला।

डीलोडील–(न०)१. समस्त अंग। २. अंगोपांग। (अव्य०) १. स्वयं। खुद। २. आपखुद। खुदोखुद। ३. डील के अनुसार। ५. शरीर में वरावर।

डींग–(ना०)१. लंवी-चौड़ी वात। २. गप्प। शेखी। ३. आत्म प्रशंसा।

डींगरो–(न०) गाय, भैंस आदि पशुओं के गले में वांधा जाने वाला एक मोटा और लंवा डंडा जिससे वे भाग न सकें।

डींगाळो–(वि०)१. जो तुलना में ऊंचा हो। मुकावले में डींगा। २. डींगो। ऊंचा। लंवा।

डींगी–(वि०) १. ऊंची। २. लंवी। ३. लंवी-ऊंची। ४. डींग हांकने वाला। गप्पी।

डींगो–(वि०) १. जो कद में ऊंचा हो तथा लंवा हो। २. लवा। ३. ऊंचा।

डींडू–(न०) १. जल सर्प। पानी का सांप। २. विप रहित सांप। डुंडुभ।

डींभू–(न०) भिड़। ततैया। वर्र। भमरी। भौंरी।

डुक–(न०) घूंसा। मुक्का।

डुक्कर–(न०) शूकर। सुअर।

डुखलियो–(न०) विना तना हुआ टूटा-फूटा खाट। जीर्ण खटिया। डुखलो।

डुखलो–दे० डुखलियो।

डुगडुगी–(ना०) एक छोटा वाजा। डुग्गी।

डुग्गी–दे० डुगडुगी।

डुपटी-(ना०) १. कंधे पर रखने की एक चादर। दुपट्टी। २. दुपट्टी। चादर। दोपट्टी वाली चद्दर।

डुपटो–(न०)१. ओढ़ने की चादर। दुपट्टा। २. जरी के काम वाला स्त्रियों का एक

पोलना । २. दो पाट की लंबाई में सिली हुई एक चद्दर ।

डुपट्टी- दे० दुपटी ।

डुपट्टो- दे० दुपटो ।

डुबकी-(ना०) पानी में डूबने की क्रिया । गोता । डुबकी ।

डुबको-दे० डुबकी ।

डुबाण-(न०) १. डूब जाने के जितनी गहराई । गहराई । डुबामण । २. नीचाई । ढलान । नीचाण । ३. किसी समतल वस्तु या भूमि का वह भाग जो अपेक्षाकृत नीचा हो ।

डुबामण-दे० डुबाण ।

डुबोणो-दे० डुबोवणो ।

डुबोवणो-(क्रि०) १. डुबाना । २. हानि पहुँचाना । ३. नष्ट करना ।

डुरगलो-(न०) स्त्रियों के कान का एक गहना । छतरी और घूंघरू वाली टोटी ।

डुळणो-(क्रि०) १. तरसाना । ललचाना । २. तरसना । ललचाना । ३. खाने के लिये ललचाना । खाने के लिये उतावला होना । ४. ढह जाना । गिरना । धँस जाना । ५. नष्ट होना ।

डुळियोड़ो-(वि०)१. ललकित । लालायित । लोलुप । २. भोजन-लोलुप । भोजी । ३. ढहा हुआ । ध्वस्त । पतित । ४. नष्ट । पतित ।

डू-(ना०) बारी । पारी (खेल में) ।

डूच-दे० डूचणो (न०) ।

डूचणो-(न०) बोतल, शीशी आदि के मुँह का ढक्कन । कॉर्क । काग । डूजणो । (क्रि०) १. ऊंचा करना । उठाना । २. बड़े बड़े कौर लेना । ३. ठूंस कर खाना ।

डूचा मारणा-(मुहा०) ऊपरा-ऊपरी बड़े बड़े कौर लेकर खाना ।

डूचो-(न०) १. डाट । अटकाव । २. किसी छेद का बंद करने के लिये चिथड़ों का समाया हुआ कपड़ा या डूचा । ३. कॉर्क । काग । डाट । ४. गले में किसी चीज के अटक जाने से होने वाली घुटन । ५. मनोवृत्तियों के आवेग से छाती में होने वाली घुटन या बेचैनी । ७. बड़ा कौर । गस्सा ।

डूचो मारणो-(मुहा०) १. डूचे के द्वारा छेद या मुंह को बंद करना । २. गले में अटके जितना बड़ा कौर लेना ।

डूज-दे० डूजणो ।

डूजणो-(न०) बोतल, शीशी आदि के मुँह का ढक्कन । कॉर्क । डूचणो ।

डूजो-दे० डूचो ।

डूठ-(वि०) १. दुष्ट । २. जबरदस्त ।

डूबणो-(क्रि०) १. डूबना । गोता खाना । २. नष्ट होना । ३. आफत में पड़ना । ४. सूर्य चन्द्र आदि का अस्त होना । ५. दिवाला निकलना । ६. उधार दिया हुआ प्राप्त नहीं होना । उघराई खोटी होना । ७. लीन होना ।

डूबत-(वि०) १. वसूल नहीं हो सके ऐसी रकम या लेनदारी । डूबने लायक । वसूल नहीं होने लायक । २. डूबता हुआ ।

डूबत खातो-(न०) लेनी रकम नहीं पटने का जमा खर्च ।

डूबोड़ो-(वि०) १. डूबा हुआ । २. विचार मग्न । चिंतित । ३. नष्ट । बरबाद ।

डूम-(न०) १. ढाढ़ी । मिरासी । २. ढोली । ३. डोम ।

डूमण-दे० डूमणी ।

डूमणी-(ना०)१. डूम की पत्नी । ढाढिन । २. डूम जाति की स्त्री । ३. डोमिन । ४. ढोलिन ।

डूमी-(न०) एक जाति का सर्प ।

डूर-(न०) बाजरी ज्वार आदि की बाल के अन्दर दाने के ऊपर का बारीक आवरण । भूसा ।

डूल–(न०) १. धरोहर में रखी हुई वस्तु के मयाद बाहर हो जाने के कारण स्वामित्व का मिट जाना। २. शर्त में रखी हुई वस्तु का हार जाने पर प्रतिपक्षी के कब्जे में जाना। ३. धोखा। भ्रम। ४. संदेह। शक। (वि०) १. डूबा हुआ। गरक। २. नष्ट। तबाह। ३. डोलता हुआ। भ्रमण करता हुआ।

डूसको–(न०) धीरे धीरे रोने का शब्द। सिसकी।

डूंख–(न०) डंठल।

डूंगर–(न०) पहाड़। पर्वत। मगरो। भाखर।

डूंगरपुर–(न०) एक भूतपूर्व रियासत व इस नाम का नगर।

डूंगराळ–(न०) पहाड़ी प्रदेश।

डूंगराँ नरेस–(न०) १. आबू पर्वत। २. डूंगरपुर नरेश।

डूंगरी–(ना०) पहाड़ी। छोटा पर्वत। भाखरी। मगरी।

डूंगियो–(न०) अग्निकण। चिनगारी। तिळंगियो।

डूंगो–(वि०) गहरा। ऊंडा। ऊंडो।

डूंचणो–(क्रि०) काटना। तोड़ना। दे० डूचणो।

डूंज–(ना०) आँधी। वावळ।

डूंटी–(ना०) नाभि। सूंटी।

डूंडको–(न०) नाव। डोंगी।

डूंडी–(ना०)१. डोंडी। मुनादी। घोषणा। २. नगाड़ा या ढोल बजा कर सर्व साधारण को दी जाने वाली राज-आज्ञा। हेलो।

डूंडो–दे० डूंडको।

डूंब–दे० डूम।

डूंबणो–दे० डूमणी।

डेकड़–(न०) एक पक्षी।

डेग–दे० देग।

डेगची–दे० देगची।

डेगड़ी–दे० देगड़ी।

डेगडो–दे० देगडो।

डेडकियो–दे० डेडको।

डेडकी–(ना०) १. छोटा मेंढक। २. मेंढक की मादा।

डेडको–(न०) मेंढक। डेडरियो। डेडरो।

डेडर–दे० डेडको।

डेडरियो–दे० डेडको।

डेडरी–दे० डेडकी।

डेडरो–(न०) मेंढ़क। दादुर।

डेरा-डाँडा–(न०व०व०) १. घर गृहस्थी का सामान। माल असबाब। २. यात्रा का सामान।

डेरा देणा–(मुहा०) पड़ाव डालना।

डेरो–(न०) राज्य के जागीरदार का राजधानी में बना हुआ मकान। ठिकाने की हवेली। ३. अस्थाई निवास। डेरा। ४. पड़ाव। डेरा। ५. जनिवासा। डेरो। ६. तंबू। खेमा। ७. वनमाल। ८. निवास स्थान।

डेरो करणो–(मुहा०) पड़ाव डालना।

डेरोदेणो–(मुहा०) १. कन्या पक्ष की ओर से बरात के ठहरने के लिये मकान की व्यवस्था करना। २. पड़ाव डालना।

डेळी–(ना०)बुद्धि। विवेक। विचार-शक्ति।

डेळी-चुळियोड़ो–दे० डेळी-चूक।

डेळी चूक–(वि०) १. बुद्धि हीन। विवेकहीन। २. खाने पीने की मर्यादा-रहित रुचि रखने वाला। खाऊ। ३. पथभ्रष्ट। ४. वह जिसकी नीयत स्थिर न हो।

डेहली–(ना०) मुख्य द्वार के पास भीतर की शाला। देहली। पौरी। डयोढ़ी।

डैकारणो–(क्रि०) १. ऊंट को बिठाना। झेंकारणो। २. कूदना। ३. बहकाना।

डैकावणो–दे० डैकारणो।

डैण(न०) १. वृद्ध। बुड्ढा। डोकरो। २. भूत। (ना०) १. वृद्धा। बुढ़िया। २. भूतनी। डायन। (वि०) दुखदाई।

हजार, लाख इत्यादि संख्याओं के साथ उनकी आधी संख्या का योग ।

डोढ आनो–(न०) १. ब्रिटिश राज्य के एक रुपये के १६ आने अथवा ६४ पैसों के हिसाब से छः पैसे । २. डेढ आने का चिन्ह । '=)।।'

डोढ करोड़–(वि०) १. एक करोड़ और पचास लाख । (न०) डेढ़ करोड़ की संख्या । '१५००००००'

डोढ़ डायो–(वि०) जरूरत से ज्यादा होशियार या अक्लमंद (व्यंग) । २. लाल बुझक्कड़ । ३. मूर्ख । बेसमझ ।

डोढ़ लाख–(वि०) १. एक लाख पचास हजार । (न०) डेढ लाख की संख्या । '१५००००'

डोढवणो–(क्रि०) १. डेढ़ गुना करना । २. डेढ़ा करना । २.आधा और मिलाना ।

डोढवाड़ कूंतो–(न०) फसल को डेढ़ी अनुमानित कर लिया जाने वाला जागीरदार का छठा भाग ।

डोढ बीसी–(वि०) तीस । बीस का ड्योढ़ा । (न०) डोढबीसी की संख्या ।

डोढ सौ–(वि०) एक सौ पचास । २. एक सौ पचास की संख्या । '१५०'

डोढहथ्थी–दे० डोढ हथ्थी ।

डोढ हथ्थी–(ना०) तलवार । डेढ़ हत्थी ।

डोढा–(न०) डेढ़ का पहाड़ा ।

डोढा करणो–(मुहा०)१. काम बंद करना । २. काम बंद करके सामान, औजार आदि को यथा स्थान रखना । ३. घर या मकान के किवाड़ बंद करना । ४. संध्या समय दुकान बंद करना । ५. डेढ़ गुना करना ।

डोढ़ाळणो–(क्रि०) १. किवाड़ बंद करना । ओढाळणो । २. काम बंद करना ।

डोढ़ी करणी–(मुहा०) दुकान बंद करना (प्रायः संध्या समय में) ।

डोढियो–(न०) १. लगभग एक पैसे की कीमत का पुराना सिक्का । २. पैसा । ढावड़ियो । ३. एक वस्त्र ।

डोढी–(ना०) १. ड्योढ़ी । पौरी । (वि०) १. डेढ़गुनी । २. डेढ़गुनी से अधिक ।

डोढीदार–(न०)ड्योढ़ी पर पहरा देने वाला सिपाही । २. द्वारपाल । ड्योढ़ीदार ।

डोढो–(वि०) १. डेढ़ गुना । ड्योढ़ा । २. डेढ़ गुना अधिक । (न०) ड्योढ़े का पहाड़ा ।

डोढो रावण–दे० दोढो रावण ।

डोफाई–(ना०) मूर्खता ।

डोफी–(वि०ना०) मूर्खा ।

डोफो–(वि०) मूर्ख । ना समझ । डफोळ ।

डोब–(न०)१.कपड़े को(रंगने के समय)रंग के पानी में डुबाने की क्रिया । २ डूबने की क्रिया या भाव । डुबकी । ३. पानी की गहराई का माप या अनुमान ।

डोबरो–(न०) फूटे हुये मिट्टी के पात्र के टकोर मारने से होने वाला शब्द । (वि०) फूटा हुआ ।

डोबी–(ना०) १. भैंस । २. बुड्ढी भैंस । (वि०) १. मूर्खा । मंद बुद्धि वाली । २. आलसी । सुस्त ।

डोबो–(न०) बूढ़ी भैंस । (वि०) मंद बुद्धि वाला । मूर्ख ।

डोम–दे० डूम ।

डोम कागलो–दे० डोड कागलो ।

डोयली–(ना०) छोटा डोयला । डोई ।

डोयलो–(न०) कलछा । काठ का चम्मच । डोआ । डोइलो । डोयो ।

डोयो–दे० डोयलो ।

डोर–(ना०) १. डोरी । रस्सी । २. पतंग की डोरी । ३. लगाम ।

डोरड़ो–(न०) १. विवाह सूत्र । २. मंगल सूत्र । कांकण-डोरड़ो । ३. एक राग । ४. विवाह का एक लोक गीत । ५. रस्सा ।

डोलण हींडो–दे० डोलर हींडो ।

डोलणो–(क्रि०) १. कंपायमान होना । २. हिलना । इधर उधर होना । ३. झूलना । ४. घूमना । फिरना । ५. डगमगाना । विचलित होना । ६. कंपायमान करना । ७ नाश करना । ८. डरना । ९. डराना ।

डोळणो–दे० ढहोळणो ।

डोळदार–(वि०) १. जिसका खाका अच्छा बना हो । २. सुन्दर । सुघड़ ।

डोलर हींडो–(न०) एक प्रकार का चक्कर में घूमने वाला झूला । हिंदोल ।

डोळा उघड़णो–(मुहा०) अक्ल ठिकाने आना । आँख उघड़णी ।

डोळा काढणो–(मुहा०) १. क्रोध या उपेक्षा से देखना । २. क्रोध करना ।

डोली–(ना०) कुँएँ से पानी निकालने की डोल । दोलिका ।

डोळी–(ना०) १ पुण्यार्थ दी हुई भूमि । दान में दी हुई खेती आदि की जमीन । २. एक प्रकार की पालकी । डोना । ३. घायलों को उठा कर ले जाने का अरथी जैसा एक साधन । डोली । स्ट्रेचर ।

डोलो–(न०) १. पाणिग्रहण के लिये कन्या को डोली में बिठाकर दूल्हे के यहाँ पहुँचने की एक विवाह प्रथा । २. कुएँ में से पानी निकालने का एक पात्र । ३. पालकी । पीनस ।

डोळो (न०) १. आँख का कोया । डेला । २. आँख ।

डोळो डूबणो–(मुहा०) १. मन मानना । २. इच्छापूर्त्ति होना ।

डोवटी–(ना०) १. एक प्रकार का मोटा कपड़ा । २. ओढ़ने का एक वस्त्र ।

डोह–(न०) द्रोह । शत्रुता । (ना०) मस्ती ।

डोहणो–(क्रि०) १ विलोड़ित करना । मंथन करना । २. कंपायमान करना । ३. भय उत्पन्न करना । ४. मारना । ५. नाश करना । ६. मैला करना । गंदला करना (पानी को) । डोहळणो ।

डोहळणो–(क्रि०) पानी को गंदला करना ।

डोहळी–(ना०) दान में दी हुई खेत आदि की जमीन । द्विहल्या । दोहळी । डोळी ।

डोहळो–(वि०) गँदला । मैला (पानी)

ड्योढहथी–दे० डोढ़हथी ।

ड्योढी–दे० डोढी ।

ड्योढीदार–दे० डोढीदार ।

ड्योढा–दे० डोढो ।

ढ

ढळती ऊमर–(ना०) बुढ़ापा ।

ढळती छाया–(ना०) १. फिरते दिन । २. दुर्भाग्य के दिन । ३. दुर्भाग्य । ४. सौभाग्य के दिन । ५. सुदिन ।

ढळती छींया–दे० ढळती छाया ।

ढळती रात–(ना०) पिछली रात ।

ढळती वेह–दे० ढळती ऊमर ।

ढलता दिन–(न०) वृद्धावस्था ।

ढळतो दिन–(न०) १. मध्यान्ह के बाद का दिन । दुपहर के बाद का समय । २. दिन का चौथा पहर ।

ढळमो–(न०) १. साँचे में ढला हुआ । २. जो एक ओर नीचा हो । ढलुआं । ढालू ।

ढळाई–(ना०) १. चढ़ाई से उलटा । उतार । नीचाई । ढलाई । २. किसी धातु आदि को गला कर सांचे में ढालने का काम । ३. ढालने की मजदूरी ।

ढळाण–दे० ढळाँख ।

ढळामण–(ना०) ढालने की मजदूरी । ढलाई ।

ढळाव–(न०) उतार । नीचाई । चढ़ाई से उलटा ।

ढळावणो–(क्रि०) १. सांचे में ढलवाना । २. किसी वस्तु को कोई आकार देना । ३. पानी आदि प्रभाही पदार्थ को गिरवा देना । ढुलवाना ।

ढळाँख–(ना०) १. ढाल । ढालू जगह । २. नीचे की ओर । चढ़ाई से उलटा । ढलाई । उतार । ढळाव ।

ढलाँत–दे० ढलाँख ।

ढळो–(न०) १. मिट्टी का ढेला । (वि०) १. मूर्ख । अज्ञ । २. आलसी । सुस्त ।

ढलो करणो–(मुहा०) १, छोड़ना । २. काम करना छोड़ना । ३. हाथ में लिये हुए काम या बात को अधूरा छोड़ना ।

ढल्लीस–(न०) दिल्लीश । दिल्ली का बादशाह ।

ढसड़णो–(क्रि०) जमीन पर रगड़ते हुए खींचना । घसीटना ।

ढहणो–(क्रि०) १. गिरना । पड़ना । २. मरना । नष्ट होना । ३. किसी उभरी, उठी हुई या उठाई हुई वस्तु का गिर जाना । जैसे—दीवाल आदि ।

ढहाणो–(क्रि०) १. गिराना । २. ध्वस्त करना । नाश करना । ३. गिरवाना । ४. ध्वस्त करवाना । नाश करवाना ।

ढहावणो–दे० ढहाणो ।

ढंक–(न०) १. ढक्कन । २. कौआ । ३. ढोल । ढक ।

ढंकणो–(ना०) ढकनी । ढाकणी ।

ढंकणो–(क्रि०) १. ढक जाना । २. ढक देना । ढकना । (न०) ढक्कन । ढाकणो ।

ढंग–(न०) १. तरीका । ढब । रीति । २. चालढ़ाल । वर्ताव । ३. आसार । लक्षण । रंगढंग । ४. प्रकार । तरह । ५. दशा । हाल ।

ढंगढाळो–(न०) १. रहन सहन । बरताव । आचरण । २. बनावट । आकार । ढंग । ३. रंग ढंग । लक्षण । ४. व्यवस्था । प्रबंध । ५. हालत । दशा ।

ढंगसर–(क्रि०वि०) १. अच्छी प्रकार से । सुचारू रूप से । २. तरकीब से । क्रमशः ।

ढंगी–(वि०) १. ढंग वाला । ढंग से रहने वाला । २. कार्य व परिश्रम में प्रथम नहीं आने वाला । पीछे रहने वाला । जिसकी गणना काम करने (की क्षमता वालों) में पश्चाद्वर्ती रहती हो । ३. बिना ढंग वाला ।

ढंचो–(न०) १. साढ़े चार का पहाड़ा । ढाँचा । २. साढ़े चार का आँक । '४॥' (वि०) साढ़े चार ।

ढंढ–(न०) १. पानी का नेस । २. मिट्टी से भरा हुआ पुराना तालाब । ३. ढोर । पशु । ढांढो । (वि०)१. पोला । खोखला । २. ना समझ । मूर्ख ।

ढाणी-(*ना०*) १. मुकाम । २. पांच सात घरों की बस्ती । पांच सात घरों की बस्ती का गांव । ३. खेत में रहने के लिये बनाया हुआ झोंपड़ा । ४. अस्थाई निवास ।

ढाणो-(*न०*) १. मुकाम । २. यात्रा के बीच किया जाने वाला विश्राम । पड़ाव । ३. चरस का पानी खाली करने का थाला । **थाळो । कोठो ।**

ढाणोढाण-(*अव्य०*) पड़ाव दर पड़ाव । प्रत्येक विश्राम स्थान ।

ढाव-(*ना०*) १. रोक । २. मर्यादा । ३. प्रतिबन्ध ।

ढावणियो-(*वि०*) १. रक्षण देने वाला । शरण देने वाला । २. रोकने वाला । ३. निर्वाह करने वाला ।

ढावणो-(*क्रि०*) १. रोकना । २. थामना । पकड़ना । ३. वश में रखना । ४. शरण देना । आश्रय में रखना । ५. सांत्वना देना । आश्वासन देना । ६. निभाना । निर्वाह करना ।

ढावरियो-(*न०*) कूटे से बनाया हुआ एक छोटा पात्र । टोकरी । **ठाठियो ।**

ढावलियो-दे० ढावरियो ।

ढावो-(*न०*) १. कूटे से बनाया हुआ एक बड़ा पात्र । टोकरा । **ठाठो ।** २. मुर्गा-मुर्गियों को बन्द करने का एक टोकरा । ३. मूल्य देकर खाना-पीना प्राप्त करने का स्थान । साक-रोटी की दुकान । बीसी । लॉज । २. झोंपड़ा । **झूंपड़ो ।**

ढामक-(*न०*) १. बड़ा ढोल । २. बड़ा नगाडा । **दामक ।**

ढायो-दे० अड़ियो ।

ढाल-(*ना०*) १. तलवार आदि शस्त्रों के प्रहार को रोकने का एक साधन । फलक । २. युद्ध में हाथी की ललाट पर कसा जाने वाला फलक । हाथी-सिपर । ३. बचाव का साधन । आड़ । ४. माता-पिता गुरुजन आदि । (*वि०*) रक्षक । बचाने वाला ।

ढाळ-(*ना०*) १. वह जगह जो बराबर नीची होती हुई चली गई हो । उतार । चढ़ाई का उलटा । २. ढलवाँ जमीन । ३. आकार । ४. गाने की पद्धति । तर्ज । लय । राग । ५. तरीका । ढब । आचरण । (*अव्य*) प्रकार । भांति ।

ढाळ-उतार-(*वि०*)क्रम से छोटा । गावदुम । गोपुच्छवत् ।

ढाल-उथाळ-(*वि०*)१ शत्रुओं की ढालों को उथलाने वाला । २. वीर ।

ढाळकी-(*ना०*) सोने या चाँदी को गलाकर रेजे में ढालकर बनाई हुई पतली छड़ । कदला । कंदली । गुल्ली । रैवी । **ढाळी ।**

ढाळको-(*न०*) धातु को गलाकर रेजे में ढाली हुई लम्बी मोटी गुल्ली । ढालका । कदला ।

ढालगर-(*न०*) ढालें बनाने वाली जाति का व्यक्ति ।

ढाळणो-(*क्रि०*) १. गलाने से पुनः ठोस बन जाने वाले पदार्थ को गले हुए रूप में आकृति देने के निमित्त साँचे में उँड़ेलना । साँचे में ढालना । २. बिछाना । लगाना । खाट, जाजम आदि बिछाना । ३. गिराना (आंसू) । ४. पात्र में से द्रव पदार्थ को बहाना । ५. घोड़े, ऊट आदि को चरने के लिये जगल में छूटा छोड़ना । ६. मारना ।

ढाळदार-(*वि०*) उतारवाला । ढालवाला । ढलुवाँ ।

ढाळांत-(*ना०*) ढालू जगह । ढलाव । उतार । ढलाई ।

ढाळियो-(*न०*) १. खपरेलों से छाया हुआ ढाल वाली छत का छप्पर । अगढाळियो । इकपलिया । २. एक ओर ढालू छत वाला बरंडा या साल ।

२. रहन सहन । चाल-चलन । ३. यात्रा के बीच में किया जाने वाला विश्राम । विश्रांति । पड़ाव ।

ढाळोढाळ-(क्रि०वि०) १. क्रमानुसार । सिलसिलेवार । २. ढाल-उतार । ३. ढलाई की ओर । ४.क्रम से उतरता हुआ । (वि०) एक के बाद एक-दूसरा । (न०) छोटी मोटी वस्तुओं का क्रम ।

ढावो-दे० ढाहो ।

ढाहणहार-(वि०) गिराने वाला । नाश करने वाला ।

ढाहणो-(क्रि०) १. मारना । नष्ट करना । २ गिराना । ढाहना ।

ढाहो-(न०) १. नदी का ऊंचा किनारा । ढाहा । ढावो । २. किनारा ।

ढांक-(न०) १. ढक्कन । २. कलंक ।

ढाँकण-दे० ढाकण ।

ढाँकणी-दे० ढाकणी ।

ढाँकणो-दे० ढाकणो ।

ढांगी-(वि०) दे० ढाँगो ।

ढाँगो-(वि०) १. छितरी या बिखरी हुई बस्ती वाला (गांव) । घटती आबादी वाला । २. निर्जन । ३. भद्दा । कुरूप । असुंदर । ४. ढंग रहित । (स्त्री० ढाँगी)

ढाँचो-(न०) १. किसी वस्तु को तैयार करने के पूर्व बनाया जाने वाला उसका पूर्व रूप । खाका । डौल । २. पशुओं की पीठ पर कसा जाने वाला भार भरने का ढगलो ।

ढिग-(न०) १. राशि । पुंज । ढेर । ढिगलो । (क्रि०वि०) १. निकट । पास । कने । २. ओर । तरफ ।

ढिगर-(न०) ढेर । राशि । ढगलो ।

ढिगला बंध-दे० ढगला बंध ।

ढिगली-(ना०) छोटा ढेर । ढेरी । ढगली ।

ढिगलो-(न०)१.ढेर । राशि । २. ढटाळो । कचरा ।

ढिगो-(न०) १. टीबा । २. रेत या मिट्टी का ढेर । धूंधो । ३. ढेर । ढिगलो ।

ढिढ्यो-दे० ढिगो ।

ढिलड़ी-(ना०) १. दिल्ली का एक काव्यानुमोदित नाम । २. मयूरी । मोरणी । ढेलड़ी ।

ढिलाई-(ना०) १. ढीला होने का भाव । २.सुस्ती । शिथिलता । ३.विलंब । देरी ।

ढिल्ली-(ना०) दिल्ली शहर ।

ढिल्लीपत-दे० ढिल्लीवै ।

ढिल्लीवै-(न०)१. दिल्लीपति । २.सम्राट । बादशाह ।

ढिल्लीस-दे० ढल्लीस या ढिल्लीवै ।

ढी-(ना०) १. गौ । गाय । २. गाय को पानी पिलाने के समय उच्चार किया जाने वाला एक शब्द । ३. गाय की बछिया । टोगड़ी ।

ढीओ-गाय का बछड़ा । टोगड़ो । दे० 'ढी' सं० २.

ढीक-दे० ढींक ।

ढीकड़–(वि०) अमुक । फलां ।

ढीकड़सिंघ–(न०) १. अमुकसिंह । अमुक व्यक्ति । २. बहादुर आदमी (व्यंग में)

ढीकड़ो–(वि०) अमुक । फलां । ढिमक । फलाणो ।

ढीकली–(ना०) एक प्रकार की तोप । छोटी तोप ।

ढीट–(वि०) धृष्ट । निर्लज्ज । ढीठ । ध्रीट । ढीटो ।

ढीटो–दे० ढीट ।

ढीठ–दे० ढीट ।

ढीम–(न०) व्रण । छाळो ।

ढीमको–(वि०) अमुक । फलां । ढिमका । फलाणो । ढीकड़ो ।

ढीमड़ो–(न०) १. कुंआ । २. कुंएं से पानी निकालने का एक यंत्र । ढेंकली । ३. कुंएं पर लगी ढेंकली वाला खेत । ४. व्रण । गांठ । छाळो ।

ढीमो–(न०) उत्तर गुजरात के प्राचीन एवं प्रसिद्ध वरणीवर (वाराहपुरी) तीर्थ-स्थान का आधुनिक नाम । ढेमो । धरणी-वर ।

ढीमोळी–ढींगोळी ।

ढीरो–(न०) अनेक कंटीली शाखाओं वाली बड़ी टहनी । कांटों वाली टहनी ।

ढील–(ना०)१. छूट । स्वतंत्रता । अवकाश । २. देरी । विलंब । ३. सुस्ती । ४. तनाव का अभाव । ५. उपेक्षा । लापरवाही ।

ढीलढाळो–(न०) हाथी । (वि०) सुस्त । ढीलो ।

ढीलंगो–(वि०) आलसी । सुस्त ।

ढीलाई–दे० ढिलाई ।

ढीलापणो–(न०) ढीलापन । शिथिलता ।

ढीलो–(वि०) १. ढीला । मंद । काहिल । २. सुस्त । ३. पस्तहिम्मत । ४.कमजोर । ५.शान्त । ६.नरम । ७. जो कसा न हो । ८. जो खींचाई में शिथिल हो । ९. जो तंग न हो । १०. जो पहनने में तंग न हो । ११. जो सख्त न हो । ढीला । १२. जो बहुत गाढ़ा न हो ।

ढीलोढस–(वि०) १. बिलकुल ढीला । २. बहुत सुस्त । आळसी ।

ढीलोढाळो–(वि०) सुस्त ।

ढींक–(न०) १. मांसाहारी पक्षी विशेष । २. गिद्ध पक्षी । गीध ।

ढींकरण–दे० ढीकड़ ।

ढींकली–(ना०) १. कुंएं से पानी निकालने का साधन । चोंच । ढीमड़ी । ढेंकली । २. एक छोटी तोप ।

ढींकेल–(न०) रहंट का एक उपकरण ।

ढींग–दे० धींग ।

ढींगोळी–(ना०) १. स्त्रियों का एक व्रत जिसमें ब्राह्ममुहूर्त में नहा धोकर और पूजा करके भोजन कर लिया जाता है और दिन भर उपवास रखा जाता है । धींगोळी ।

ढींच–(न०) १. हाथी । २. एक बड़ा पक्षी ।

ढींचरण–(न०) घुटना । गोडो ।

ढींचाळ–(न०) हाथी ।

ढुई–(ना०)१. बाजरी जुआर के डंठलों आदि का महीन चारा । चारे की कुट्टी । कुतर । २. रीढ़ के नीचे का वह भाग जहाँ कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं । त्रिक । ३. कमर । कड़तू ।

ढुओ–(न०) १. रीढ़ के नीचे का भाग जहां कूल्हे की हड्डियाँ मिलती हैं । पीठ के नीचे का भाग । ढूहो । २. संगठन । ३. दल । झुंड ।

ढुकाणो–दे० ढुकावणो ।

ढुकाव–(न०) १. उपस्थिति । आगमन । २. विश्राम । ३. बरात का आगमन । ४. बरात आगमन का संदेश । ५. बरात की शोभा यात्रा । ६. बरात का स्वागतो-त्सव । सामेळो ।

ढुकावणो-(क्रि०) १. काम में लगाना। २. काम शुरू करवाना। ३. काम पर लगवाना। सम्पन्न करवाना। काम को पार लगाने में सहायता करना। नज-दीक करना। ४. काम चलाना। ५. मन में जँचाना। ६. निकट में लाना। ७. माप के अनुसार कर देना।

ढुगली-दे० ढिगली।

ढुगलो-दे० ढिगलो।

ढुळणो-(क्रि०) १. ऊपर-नीचे या इधर-उधर होना, हिलना। २. चामर आना। (चंवर का)। चंवर का ढोला जाना। ३. मोहित होना। ४. न्योछावर होना। ५. गिरना। फैलना। (पानी का) ६ गिर कर बहना। बरतन में से पानी आदि द्रव पदार्थ का गिरना। ७. प्रस्थान करना। ८. मेहरबानी करना।

ढुही-दे० ढूही।

ढुंगो-ढुगो।

ढुंढ-दे० ढूंढ।

ढुंढराव-(ना०) सिंह। शेर।

ढुंढा-(ना०) हिरण्यकशिपु की बहिन।

ढुंढाड़-दे० ढूंढाड़।

ढुंढाहड़-दे० ढूंढाड़।

ढुंढिराज-(ना०) श्रीगणेश।

ढुंढो दे० ढूंढो।

ढूई-दे० ढूही।

ढूकड़ो-(क्रि०वि०) नजदीक पास। निकट। नेड़ो। कनै। नजीक।

ढूकणो-(क्रि०) १. बनना। सम्पन्न होना। काम होना। २. लगना। प्रवृत होना। ३ पहुँचना। ४. प्रारंभ होना। ५. प्रारंभ करना। ६. संगति करना। साथ करना। ७. साथ होना। ८. जँचना। उचित लगना। ९. निकट आना। संपक में आना। १०. किसी वस्तु का माप के अनुसार [illegible] होना। ११. काम पर लगना।

ढूं-(ना०) पीठ का टेढ़ापन। कूबड़।

ढूंकी-(वि०) कुबड़ी।

ढूंको-(वि०) कुबड़ा।

ढूंद-(ना०) १. बादलों का झुंड। पशु समूह। २. दल। समूह।

ढूंढ-(ना०) समूह। झुंड।

ढूंकड़ी दे० ढूंकी।

ढूंमियो (ना०) [illegible] बाजों का एक [illegible]। [illegible]।

ढूली-(ना०) १. बुढ़िया। २. दिल्ली। ढिल्ली।

ढूलीपत-दे० ढिल्लीपत।

ढूलो-(वि०) १. भयभीत। डरा हुआ। २. डरपोक। ३. नामर्द। नासमझ। ४. आलसी। ५. स्त्रीजित। स्त्रैण। ५. नामर्द। (ना०) ढूली का नर। बुड्ढा।

ढूसरी-दे० ढूसी।

ढूसी-(ना०) जुआर, बाजरी आदि के ठंठलों का महीन चारा। घास की कुट्टी। कुतर। ढूही।

ढूही-दे० ढूसी।

ढूहो-(ना०) १. ऊंची जमीन। २. टीला। ३. चूतड़। नितंब। ४. किसी वस्तु का उठा हुआ भाग।

ढूंग-(ना०) १. ढोंग। दंभ। २. नितंब।

ढूंगरी-(ना०) घास की ढेरी। घास को चुन कर लगाई हुई ढेरी।

ढूंगारणो-दे० धूंगारणो।

ढूंगी-(वि०) १. छद्मवेशी। २. ढोंगी। दंभी।

ढूंगो-(ना०) चूनड़। नितंब। ढेको।

ढूंढ-(ना०) १. प्रथम होलिका दहन के समय (रात को) गाँव के मुखिया और पुरो-हितों द्वारा नवजात शिशु को उसके घर जाकर एक लोक-काव्य द्वारा दिया जाने

वाला आशीर्वचन। २. बच्चे के जन्म के पश्चात् की प्रथम होली पर होलिका-दहन के बाद (धुल हटी के प्रातः) ढुंढा से किये जाने वाले बच्चे के विवाह का उत्सव। ३. तलाश। खोज। निगे। ४. घर। ५. झोंपड़ा।

ढूंढणो-*(क्रि०)* १. तलाश करना। खोजना। निगे करणी। २. होलिका दहन के बाद बच्चे की ढूंढ करना।

ढूंढाड़-*(न०)* १. जयपुर के पास का एक प्रदेश। जयपुर राज्यान्तर्गत एक प्रदेश। २. जयपुर राज्य का नाम।

ढूंढाड़ी-*(ना०)* १. ढूढाड़ प्रदेश की बोली। *(वि०)* १. ढूढाड़ से संबंधित। २. ढूंढाड़ प्रदेश का रहने वाला।

ढूंढिया-*(न०)* होलिका। दहन के पश्चात् नवजात शिशु के घर जाकर ढूंढ कराने वालों का दल।

ढूंढिया-पंथ-*(न०)* जैनधर्म का एक पंथ।

ढूंढियो-*(न०)* १. जैनधर्म के ढूंढ़िया-पंथ का साधु। २. जैनधर्म के ढूंढिया-पंथ का अनुयायी। बाईस टोला जैन संप्रदाय का अनुयायी। ३. घर। ढूंढो।

ढूंढो-*(न०)* १. पुराना घर। २. घर। मकान। ३. खंडहर। ४. कच्चा मकान।

ढूंसो-*(न०)* १. ओढ़ने का मोटे रेशम का एक कपड़ा। धुस्सा। मोटे रेशम की सफेद चादर। धूंसो। २. ऊनी चादर। लोई। लोवड़ी।

ढेको-*(न०)* चूतड़। नितंब। ढूंगो।

ढेटाई-*(ना०)* धृष्टता। ढिठाई। धेटाई।

ढेटी-*(वि०)* १. निर्लज्ज। निलजी। धेटी। २. कुटिला।

ढेटो-*(वि०)* १. धृष्ट। निर्लज्ज। ढीट। धेटो। निलजो। २. कुटिल।

ढेड-*(न०)* १. इस नाम की अंत्यज जाति का मनुष्य। ढेढ़। २. मरे हुये पशुओं का चमड़ा उतारने का काम करने वाली जाति।

ढेडण-*(ना०)* १. ढेढ़ की पत्नी। २. ढेढ़ जाति की स्त्री।

ढेडणी-*दे०* ढेडण।

ढेडवाड़ो-*(न०)* १. ढेढ़ों का मोहल्ला। २. गंदी बस्ती।

ढेढ-*दे०* ढेड।

ढेढण-*दे०* ढेडण।

ढेढणी-*दे०* ढेडणी।

ढेढियो- *(न०)* १. एक रंग। २. ढेढ़।

ढेढी-*(ना०)* १. बिना मजदूरी (पारिश्रमिक) का काम। बेगार। २. ढेढ़ का काम। ३. नित्य प्रपंच। नित्य की झंझट।

ढेपो-*(न०)* १. जमी हुई गाढ़ी वस्तु की मोटी तह या दल। २. गली हुई वस्तु का (ठंडा हो जाने से) जमा हुआ टुकड़ा। थक्का। चक्का। ३ मिट्टी मिला हुआ कंडा। ढेबरा।

ढेबरी-*(ना०)* १. किवाड़ की चूल के नीचे रहने वाली लोहे की ढेबरी जिस पर किवाड़ घूमता है। ऊखळी। २. खूंटी या कील लगाने के लिये दीवाल में लगाया जाने वाला काठ का टुकड़ा। ४. तरबूज, ककड़ी आदि फल में उसकी परीक्षा के लिये बनाया हुआ चकता। डगळी।

ढेबरो-*दे०* सोगरा।

ढेमो-*दे०* ढीमो।

ढेर-*(न०)* राशि। ढिगलो। *(वि०)* बहुत। अधिक। घणो।

ढेरणो-*दे०* ढेरवणो।

ढेरवणो-*(क्रि०)* १. वाहन-पशु को रोकने के लिये उसकी लगाम को खींचना। २. रोकना। ३. ध्यान देना। बात ऊपर विचार करना। ४. कान लगाना। ५. ढेरे (रस्सी बटने के उपकरण) को फिराना।

बादशाह ।

ढेनली-दे० ढेनड़ी ।

ढेलू-दे० ढालू ।

ढेलो-(न०) मिट्टी, पत्थर आदि का टुकड़ा । ढेला ।

ढेवो-दे० ढेबो ।

ढैणो-दे० ढहणो ।

ढैवणो-दे० ढहणो ।

ढैंकणो-(क्रि०) १. गाय आदि पशुओं का रांभना । २. रंभाना ।

ढैंचाळ-(न०) हाथी ।

ढोई (ना०) १. आश्रय । २. सहारा ।

ढोओ-(न०)१. आक्रमण । ढोवो । २.लूट । ३. वजन । भार ।

ढोकळी-(ना०) १. ढोकले का छोटा रूप । २. एक व्यंजन । (वि०) १. मूर्खा । २. स्थूल व कुरूपा (स्त्री) ।

ढोकळो-(न०) भाप से पकाई हुई एक प्रकार की बाटी । बाफलो । (वि०) १. मूर्ख । २. कुरूप । ३. मोटा । जाड़ा ।

ढोणो-दे० ढोवणो ।

ढोर-(न०)गाय, भैंस आदि चौपाया । ढोर । पशु । डंगर । (वि०) १.मूर्ख । २.गँवार ।

ढोर-चराई-(ना०) पशुओं को जंगल में चराने का काम । २. पशुओं को जंगल में चराने का कर ।

ढोर-डांगर-(न०) पशु । मवेशी ।

ढोरों आदि की रेवड़ ।

ढोलणी-(ना०) स्त्रियों के गले का एक गहना ।

ढोळणो-(क्रि०)१. किसी बरतन में से पानी आदि तरल पदार्थ को गिराना । उँडेलना । २. चँवर को ऊपर हिलाना । चँवर डालना । ३. हवा डालना । (पंखे से) । (पंखा) झलना ।

ढोल-रो-ढमको-(न०) १. ढोल बजने का शब्द । २. ढोल पर नाचने का ताल ।

ढोळा-(न०ब०व०) १. खुशामद । चापलूसी । २. झूठी 'हाँ' या स्वीकृति । ३. झूठा आश्वासन । ४. व्यर्थ महमानगिरी ।

ढोळा देणा-(क्रि०) १. हाँ में हाँ मिलाना । झूठी हाँ भरना । २. बिना काम महमान-गिरी करना ।

ढोळा-फोड़ो-(न०) ढोलने-फोड़ने का काम ।

ढोलारव-(न०) ढोल का शब्द ।

ढोळावणो-(क्रि०) ढुलवाना ।

ढोळिया-दे० ढोळा ।

ढोलियो-(न०) पलंग ।

ढोली-(न०) १. ढोल बजाने वाली एक जाति । २. ढोल बजाने वाला ।

ढोळै बैठणो-(मुहा०)१. पशु का खड़े नहीं हो सकने के रोग से ग्रसित होना । २. कमजोर हो जाना । ३. स्थिति का बिगड़ना ।

ढोलो-(न०) नरवर का एक प्रसिद्ध राजकुमार जिसका मालवणी और मारवणी के साथ विवाह हुआ था। २. राजस्थानी लोकगीतों का नायक। ३. ढोला। पति। ४. दूल्हा। ५. मूर्ख व्यक्ति।

ढोळो-(न०) खड़े नहीं हो सकने का पशुओं का एक रोग।

ढोल्यो-दे० ढोलियो।

ढोवणो-(क्रि०) १. चलाना। २ दौड़ाना। ३. युद्ध में झोंकना। ४. बोझा उठाना। ५. बोझा उठा कर ले जाना। उठा कर ले जाना। ६.धारण करना। ७.उठाना। ८. ले जाना। ९. सम्हालना।

ढोवाई-(ना०) १. ढोने का काम। २. ढोने की मजदूरी। ढुलाई।

ढोवो-(न०) १. आक्रमण। २. लूट। ३. भार। वजन।

ढोहणो-(क्रि०) गिराना।

ढोंग-दे० ढूंग।

ढोंगी-दे० ढूंगी।

ण

ण-राजस्थानी में ट वर्गीय मूर्द्धस्थानी अनुनासिक व्यंजन। राजस्थानी वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन वर्ण। इस अक्षर से प्रारंभ होने वाला शब्द भाषा में नहीं है। वाणी की पाठशाला में इसका मनोरंजक नाम 'राणो नाणो हेल ए' (राणे नाण्यो सेल है) पढाया जाता है।

णगण-(न०) दो मात्राओं का एक मात्रिक गण।

त

त-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का सोलहवाँ और तवर्ग का प्रथम दंत्य व्यंजन वर्ण। *(अव्य०)* १. पाद पूर्णार्थ अव्यय। २ तो। तब। उस स्थिति में ३. ही। ४. भी। *(सर्व०)* उस। उण। उ।

तइ-(अव्य०) तब। उस समय। *(सर्व०)* उस। उण।

तइयो-दे० तियो सं० २, ३।

तई-(सर्व०) १. तू। २. तेने। ३. तेरे। ४. उस। *(प्रत्य०)* करण और अपादान कारक की विभक्ति। से।

तई-दे० तवी। *(वि०)* १. आततायी। अत्याचारी। २. दुष्ट। ३. शत्रु। *(क्रि० वि०)* तब। उस समय। *(सर्व०)* उस।

तउ-(अव्य०) १. तो। २. तो भी। *(सर्व०)* तू।

तक-(न०) गुड़, खांड, नाज आदि के भरे हुये थेलों को (भारी वस्तुओं को) तोलने का बड़ा काँटा। तराजू। **भारकांटो**। २. मौका। अवसर। उपयुक्त समय। ३. आचरण। व्यवहार। ४. ताक। तलाश। ५. लक्षण। आसार। ६.प्रकार। तरह। ढंग। *(अव्य०)* किसी वस्तु या काम की सीमा या अवधि सूचित करने वाली एक विभक्ति। पर्यंत।

तगाई-(ना०) १. जवरदस्ती। वलात्। २. नीचता। ३. दुष्टता। नागाई।

तगादो-(न०) १. तकाजा। तगादो। उघराणी। उघाई।

तगार-(वि०) 'तड़ाग' का वर्ण व्यतिक्रम। (तगाड़-तगार)पानी, घी, तेल आदि प्रवाही पदार्थों की निर्मलता का सूचक एक विशेषण। निर्मल। वहुत साफ।

तगारी-(ना०) १. लोहे-पीतल का एक छिछला वरतन। २. चूना या गारा ढोने का तसला।

तगारो-(न०) वड़ी तगारी।

तगो-(वि०) १. जवरदस्त। वलवान। २. दुष्ट। ३. नीच।

तचा-(ना०) त्वचा। चमड़ी।

तछाई-(ना०) १. (सलाई से छील कर के) आभूषण पर नक्काशी का काम। २. जड़ाई के काम में कुंदन को जमा करके उसमें चमक देने के लिये ऊपर से छीलने का काम। ३. कुरेदनी। कटाई।

तछेरी-(ना०) तरह। प्रकार।

तज-(न०) १. पोस्त का दाना। खसखस। २. किसी धातु को रेती (अरगती) के द्वारा घिसने से बने चूर्ण का वारीक दाना। ३. रज से छोटा देना। ४. दारचीनी। ५. दारचीनी की जाति का गरम मसाला। ६. तेजपात।

तजणो-(क्रि०) १. तजना। त्यागना। छोड़ना। २. क्षीण होना। कृश होना। ३. क्षीण करना। पतला करना।

तजवीज-(ना०) १. तजवीज। वंदोवस्त। २. अनुकूलता। सगवड़। जोगवाई।

तजा-दे० तचा।

तजा गरमी (ना०) एक गर्म रोग।

तजियोड़ो-(वि०) १. कृश। दुबला। २. [illegible] हुआ (माल)। [illegible]। ३. जंग लगा हुआ। नष्ट हुआ। [illegible] हुआ। खवीजियोड़ो। ४. त्यागा हुआ।

तट-(न०) १. कूल। किनारा। २. सीमा। हद। (क्रि०वि०) पास। निकट।

तटणी-(ना०) नदी। तटिनी।

तठाथी-(अव्य०) वहाँ से। उठै सूं।

तठा पछै-(अव्य०) जिसके वाद। जिणपछै।

तठा पहला-(अव्य०) १. इससे पूर्व। २. इसके पहले। जिण पहला।

तठै-(क्रि०वि०) वहाँ। उधर। उठै। वठै।

तठी-(क्रि०वि०) वहाँ। उधर।

तड़-(ना०) १. पक्ष। दल। २. समूह। संगठन। गुट। ३. जाति का उपविभाग। ४. वेंत। छड़ी। ५. सामने का पक्ष। मुकावले का दल। शत्रु।

तड़क-(न०) टूटने का शब्द।

तड़कणो-(क्रि०) १. टूटना। २. फटना। ३. जोर का शब्द करना। ४. झुंझलाना। विगड़ना। ५. गुस्से होना।

तड़क-भड़क-(ना०) चमक-दमक।

तड़काउ-(न०) १. प्रातःकाल के समय। सवेरा होने के समय। सवेरे। २ सवेरा। प्रातःकाल। (क्रि०वि०) तड़के में। सवेरे।

तड़कै-(न०) १. आने वाले कल का सवेरा। २. आने वाला कल। (अव्य०) १. सवेरे। २. झटपट। शीघ्र।

तड़को-(न०) १. सवेरा। प्रातःकाल। २. छींटा। बूंद। ३. तेजी। ४. धूप। ५. गरमी। ६. क्रोध। ७. छौंक। वघार। (वि०) थोड़ा।

तड़छ-(न०)१. टुकड़ा। २. टूटने का शब्द। ३. तड़फड़ाट। ४. नाश। ५. मूर्च्छा।

तड़छणो-(क्रि०) १. टुकड़े होना। २. दुखी होना। व्याकुल होना। ३. छटपटाना। तड़फना। ४. काटना। तोड़ना। ५. नाश या संहार करना। ६. मूर्च्छित होना।

तड़जोड़-(ना०) १. [illegible]। व्यवस्था। २. दोनों पक्षों को समझाना। ३. वरावरी।

समानना । ४. किसी बात या काम को यथारूप या यथानुकूल बिठाने का प्रयत्न । ५. समाधान । निवेड़ो ।

तड़तड़ाणो-(क्रि०) १. तेल या घी का खूब गरम होना । २. तेल या घी में तला जाना । ३. कष्ट पहुँचाना ।

तड़फड़णो-(क्रि०)१.तड़फना । छटपटाना । २. कठिन परिश्रम करना । तड़फना ।

तड़फड़ाट-(न०) १. छटपटाट । २. व्यर्थ प्रयत्न । फाँफो । ३. बकवाद ।

तड़फणो-(क्रि०) १. दुख में हाथ पाँव मारना । तड़फड़ाना । छटपटाना । २. कठिन परिश्रम करना । तड़फना । ३. व्यर्थ प्रयत्न करना ।

तड़बो-(न०) १. बासी और विकृत राब आदि । २. पतळा गोबर ।

तड़ंग-(वि०)१.नंगा । २. तन्वंग । ३.लंबी ।

तड़ाक-(न०)१. टूटने का शब्द । (क्रि०वि०) तुरंत । जल्दी ।

तड़ाको-(न०) १. झूठी बात । गप । २. तड़ाक ध्वनि ।

तड़ाग-(ना०) सरोवर । तड़ाग । तालाब ।

तड़ाछ-(ना०) मूर्च्छा । बेहोशी ।

तड़ातड़-(क्रि०वि०) १. झटपट । लगातार । २. तड़-तड़ शब्द सहित ।

तड़ातड़ी-(ना०) १. उतावली । भागदौड़ । धमाचौकड़ी । ३. कहासुनी । ४. मारपीट ।

तड़ापीटो-(न०) मारपीट । मारामारी ।

तड़ामार-(क्रि०वि०) १. शीघ्र । जल्दी । २. अतिशीघ्र । ऊपरा-ऊपरी । ३. तेजी से । जोरों से । (ना०) १. दौड़धूप । २. मारामार । ३. जल्दी ।

तड़ाल-(ना०) बिजली । तड़ित ।

तड़ियाळ-(ना०) बिजली । तड़ित ।

तड़ी-(ना०) १. बेंत । छड़ी । २. पतली शाखा । ३. लकड़ी ।

तड़ो (न०)१. लंबा बांस । २. वृक्ष की कटी हुई लंबी शाखा । ३. लोहपत्र का मोटा टुकड़ा जिस पर रख कर कि[illegible] चीज को गरम किया जाता है ।

तड़मल्ल-(वि०) १. जबरदस्त । दृढ़ । वीर ।

तण-(न०) १. शरीर । तन । २. पुत्र तनय । (प्रत्य०) संबंधकारक विभक्ति का, की, के । (सर्व०) उस । तिण ।

तणई-दे० 'तणो' प्रत्यय अर्थ ।

तणउ-दे० 'तणो' प्रत्यय अर्थ ।

तणकणो-(क्रि०) १. तनना । खिंचना २. ऐंठना । अकड़ना ।

तणकाई-(ना०)१. जोरावरी । जबरदस्ती । टणकाई । २.खिंचाव । खींचने का भाव

तणको-(वि०) १. जोरावर । टणको । २. तना हुआ । खिंचा हुआ । (न०) १ अकड़ । २. अभिमान । ३. हैसियत ।

तणखलो-(न०) तिनका । तृण ।

तणखो-(न०) १. तिनका । तृण । २. नाक में पहिनने की छोटी सिली ।

तणणो-(क्रि०) १. खिंचना । २. ताना जाना । खिंचा जाना । ३. रुष्ट होना । ४. घमंड करना ।

तणमणाट-(ना०)१ अकड़ । ऐंठ । २.गर्व । घमंड । ३. गुस्सा । ४. आवेश । ५. अधैर्य ।

तणय-(न०) पुत्र । तनय ।

तणया-(ना०) पुत्री । तनया ।

तणाव-(न०) १. खिंचाव । २. रचना । बनाव । ३. शत्रुता । दुश्मनी । वैमनस्य । ४ खींचातानी । ५. लड़ाई । टंटा-झगड़ा । ६. ऊंटनी का गर्भ ।

तणावणो-(क्रि०) १. खिंचवाना । तनाना । २. व्यर्थ खर्च में पड़ना ।

तणियो-(न०) तराजू की डंडी के बीच के सराख में डाला [illegible]

जिसको पकड़ कर तोलने के समय तराजू उठाई जाती है। डंस।

तणियोड़ो-(वि०) १. तना हुआ। खिंचा हुआ। २. फैला हुआ। ३. ऐंठा हुआ। अकड़ा हुआ। तणोड़ो।

तणी-(ना०) १. वस्त्रादि सुखाने-टाँगने के लिये बाँधी हुई डोरी। २. विवाहादि मांगलिक अवसरों पर घर के आंगन के ऊपर चारों कोनों में बाँधी जाने वाली मंगल-सूत्र रूप एक रस्सी। तणिया-तोरण। तणियां-तोरण। ४. पुत्री। तनया। (प्रत्य०) संबंध कारक की विभक्ति 'की'। केरी।

तणीजणो-(क्रि०) १. खिंचना। खींचा जाना। २. नदी के वहाव में वह जाना। ३. हठ करना। जिद करना। ४. अभिमान करना। गर्व करना।

तणू-दे० तणो।

तणोड़ो-(वि०) तना हुआ।

तणौ-(न०) तनय। पुत्र। (प्रत्य०) 'के' विभक्ति। षष्टी विभक्ति। (अव्य०) १. के समीप। २. के लिये।

तणो-(प्रत्य०)१. संबंध कारक की विभक्ति। 'का' अर्थवाचक विभक्ति। केरो। (न०) १. पेट का एक अवयव। २. पेडू। ३. पेडू की आँत। ४. पुत्र। तनय।

तत-(सर्व०) १. उस। २. वह। (क्रिवि०) वहाँ। (न०) १. तत्व। २. ब्रह्म।

ततकार-(न०) नाच का एक बोल। (क्रिवि०) शीघ्र। जल्दी।

ततकारणो-(क्रि०) १. दौड़ना। भागना। २. तेज चाल से चलना। ३. बैल आदि को हाँकना। ४. तुरही बजाना। रण-सींगा बजाना। ५. दुतकारना।

ततकाळ-(क्रिवि०) तत्काल। तुरंत। फौरन। झट।

ततकाळै-दे० ततकाळ।

ततखिण-(क्रिवि०) तत्क्षण। तुरंत। तत्काल।

ततव-(न०) १. सार। तत्व। सारांश। सार वस्तु। २. यथार्थता। वास्तविकता। ३. सामर्थ्य। हैसियत।

ततवाऊ-(क्रिवि०) १. शीघ्रता से। (वि०) आवश्यक।

ततवो-(न०) फुरती। शीघ्रता।

तत्काल-दे० ततकाळ।

तत्कालीन-(वि०) उस समय का।

तत्त-(न०)१.तत्व। २. ब्रह्म। (वि०) तप्त।

तत्तो-(न०) 'त' वर्ण। (वि०) १. तप्त। गरम। २. क्रोधित। तातो। ३. तेज। वेगवान।

तत्त्व-(न०) १. तत्त्व। सारांश। सारवस्तु। २. परमात्मा। पारब्रह्म। ३. संसार का मूलकारण। ४. पंचभूत। ५. यथार्थता। (वि०) यथार्थ। वास्तव।

तत्त्वज्ञान-(न०) ब्रह्मज्ञान।

तत्त्वज्ञानी-(न०) तत्त्वज्ञ। ब्रह्मज्ञानी।

तत्त्वमसि-(पद०) वह तू ही है। तू ही तत्त्व (ब्रह्म) है। (यजुर्वेद का एक महावाक्य)

तत्पर-(वि०) तैयार। सज्ज।

तत्र-(क्रिवि०) वहाँ।

तत्सम-(न०) १. संस्कृत का वह शब्द जिसका प्रयोग भाषा में उसी प्रकार हुआ हो। २. अन्य भाषा से आकर अविकृत रूप से स्थित शब्द। (व्या०)

तथ-(ना०) १. तथ्य। सच्चाई। यथार्थता। २. बात। ३. विवाद। ४. तिथि। मिती। ५. अग्नि। ६. कामदेव।

तथा-(अव्य०) और। व। वैसा ही। (ना०) १. धार्मिक कृत्य, किसी काम या बात की बड़ी विधि को संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव के लिये एक सांकेतिक शब्द। संक्षिप्तीकरण।

तथापि-(अव्य०) १. तो भी । तब भी । तो ही । २. यद्यपि । जो ।
तथास्तु-(अव्य०)१.ऐसा ही हो । एवमस्तु । २. और अच्छा ।
तद-(क्रि०वि०) १. तब । उस समय । २. इसके बाद । उसके बाद । तरै ।
तदबीर-(ना०) युक्ति । उपाय । तरकीब ।
तदरो-(क्रि०वि०) १. तबसे। उस समय से । २. तब का ।
तदा-(अव्य०) तब । उस समय । (सर्व०) १. वह । २. उस ।
तदाकार-(वि०) उसके आकार का ।
तदी-(क्रि०वि०) १. उसके बाद । २. उस समय । तब ।
तद्धित-(न०) १. व्याकरण में वह प्रत्यय जो संज्ञा शब्द के अंत में लग कर भाववाचक संज्ञा तथा विशेषण बनाता है । जैसे मित्रता का 'ता' । २. वह शब्द जो इस प्रकार प्रत्यय लगा कर बनाया जाय ।
तद्भव-(न०) भाषा में प्रयुक्त होने वाला संस्कृत का वह शब्द, जिसका रूप विकृत होगया हो । २. दूसरी भाषा से विकृत होकर आया हुआ शब्द ।
तन-(न०) १. शरीर । देह । २. पुत्र । ३. वंशज । ४. गाढ़ा संबंध । ५. सबंधी । रिश्तेदार । गिनायत ।
तनखा-(ना०) तनख्वाह । वेतन । पगार ।
तनढाकरण-(न०) वस्त्र । कपड़ा । गाभो ।
तन तोड़-(वि०) खूब । अधिक । भारी (परिश्रम) ।
तनत्राण-(न०) कवच । बख्तर ।
तन दीवाण-(न०) अंगत मंत्री । निजी मंत्री । प्राइवेट सेक्रेटरी ।
तनपात-(न०) मृत्यु ।
तनमध-(ना०) कमर । कटि ।
तनमन-(न०) १. तन और मन । २. आतुरता । (अव्य०) खूब आतुरता से ।
तन मन धन-(अव्य०) १. सर्वस्व । २. समस्त शक्ति-साधनादि ।
तनमात-(न०) पंच भूतों का मूलस्वरूप । तन्मात्र ।
तनराग-(न०) तनुराग । उबटन । पीठी ।
तनवी-दे० तन्वी ।
तनसार-(न०) १. कामदेव । २. वीर्य । ३. घृत । घी ।
तन सिणगार-(न०) १. पहनने के वस्त्र । २. वस्त्राभूषण ।
तनाजान-(वि०) १. नष्ट । बरबाद । २. अकेला ।
तनाजो-(न०) १. तनाजा । झगड़ा । २. शत्रुता । बैर ।
तनारसी-(न०) धनुष ।
तनाँ-(सर्व०) तुझको । थनै ।
तनु-(न०) पुत्र । बेटा । दीकरो ।
तनुजा-(ना०) १. बेटी । पुत्री । दीकरी । २. यमुना नदी ।
तनू-(न०) १. वह समधी जिसके यहाँ पुत्र पुत्री का वाग्दान या विवाह संबंध हुआ हो । २. नजदीक का रिश्तेदार । ३. अतिप्रिय समधी । ४. कुटुम्बी ।
तनू गिनायत-दे० तनू । सं० १, २, ३ ।
तनै-(सर्व०) तुझको । तुझे । थनै । (न०) तनय । पुत्र ।
तन्मात्र-(वि०) १. मात्र यही । २. शुद्ध । (न०) पंचमहाभूतों का शुद्ध सूक्ष्म रूप ।
तन्वी-(वि०) कोमलांगी । (ना०) पतली सुकुमार स्त्री । तन्वंगी ।
तप-(न०) १. तपस्या । २. कठिन व्रत । ३. ताप । गरमी । ४. अग्नि । ५. ठंड मिटाने के लिये सुलगाई जाने वाली अग्नि। ६. अलाव । कऊ । ७. तेज । प्रताप ।
तपण-(न०)१. सूर्य । २. अग्नि । ३. ताप । गरमी ।

तपणी-(ना०) ठंड में तपने के लिये आग रखने का पात्र। अंगीठी। तापणी।

तपणो-(क्रि०) १. धूप, आंच आदि से गरम होना। २. ठंड मिटाने को अग्नि से गरमी प्राप्त करना। तपना। ३.गरमी लगाना। ग्रीष्म ऋतु की उष्णता का प्रतीत होना। ४. सूर्य का प्रखर होना। ५. तपस्या करना। ६. क्रोध करना। ७. दुखी होना। ८. प्रभुता का आतंक जमना। तपना।

तपत-(ना०) १. ग्रीष्मकाल की गरमी। ताप। उष्म। २. उष्णता। जलन।

तपधारी-(वि०) १. ऐश्वर्यवान। २. तप करने वाला। (न०) तपस्वी।

तपन-(न०) १. सूर्य। २. धूप। ३. गरमी। उष्णता। ४. जलन।

तपसा-(ना०) तपस्या।

तपसी-(न०) तपस्वी।

तपसील-(ना०) विस्तारपूर्वक वर्णन। ब्यौरेवार वर्णन। ब्योरा। तफसील।

तपाणो-दे० तपावणो।

तपावणो-(क्रि०)१. तपाना। गरम करना। २. दुख देना।

तपावस-(ना०) १. तपास। खोज। २. निगरानी। सम्हाल। देखभाल। ३.जाँच-पड़ताल। परीक्षा। ४. सहशयन। घरवास।

तपास-(ना०)१. शोध। खोज। २. परीक्षा। जाँच ३. तहकीकात। तफतीश। ४. निगरानी। देखभाल।

तपासणो-(क्रि०) १. खोजना। ढूंढ़ना। २. जाँच करना। परीक्षा करना। ३. चौकसी करना। निगरानी करना। सम्हाल करना। संभालना।

तपी-(न०) तपस्वी।

तपेली-(ना०) बटुला। बटलोई। पतीली।

तपेलो-(न०) बड़ी पतीली। बटुला।

तपेसरी-(न०) तपस्वी।

तपोधन-(न०) १. जिसका तपस्या ही धन है। २. शिव की पूजा करने वाली एक गृहस्थी संन्यासी जाति जो शिव का निर्माल्य ग्रहण करती है। ३. इस जाति का मनुष्य। ४. शिव का पुजारी।

तपोवळी-(वि०) १. तपस्या का बल रखने वाला। २. ऐश्वर्यवान। वैभव शाली। ३. महंत। ४. राजा।

तपोवन-(न०) तपस्या करने का वन प्रदेश। तपस्या करने के योग्य वन प्रदेश।

तप्पड़-(न०) १. ऊंट पर का भार-बरदारी या सवारी का पलान आदि सामान। २. टाट का बिछावन।

तफतीश-(ना०) १. तलाश। खोज। अनु-संधान।

तफावत-(न०) फर्क। अंतर।

तफावार-(अव्य०) १. विभागानुसार। तफा मुजब। २. परगनावार।

तफै-(न०) १. ताल्लुका। २. आधिपत्य। प्रभुत्व। ३. स्वत्व। (अव्य०) ताल्लुका में। परगने में।

तफो-(न०)१.ताल्लुका। परगना। परगनो। २. विभाग। ३. जत्था। ४. कलंक।

तबक-(न०) १. लोक। २. तल। ३. तह। परत। ४. सोने या चाँदी का वरक। वरक। ५. परात। बड़ा थाल। ६. एक वाद्य। ७. एक व्यंजन। एक खाद्य पदार्थ।

तबड़क-(ना०) कूदते हुये दौड़ने की क्रिया।

तबड़काणो-(क्रि०) १. दौड़ाना। २. लानत देना।

तबर-(ना०) १. कुल्हाड़ी। २. फरसा। परशु।

तबर बंध-(वि०)१.फरसाधारी। २. शस्त्र-धारी।

तबरो-(न०) ऊँचे किनारों का बड़ा तसला।

तबल-(न०)१. बड़ा ढोल। २.बड़ा नगाड़ा। ३ ऊंचे किनारों की बड़ी थाली। थाल। तबरा। ४. कुल्हाड़ी जैसा एक शस्त्र। तबर।

तबलची-(न०) तबला बजाने वाला।

तबलबंध-(वि०) १. सवारी के समय नगाड़े बजवाने का अधिकारी। अपनी सवारी के आगे नगाड़ा बजवाने का अधिकार प्राप्त। ३. ढोल या नगाड़ा बजाने वाला। तबलियो।

तबलो-(न०) ताल देने का चमड़े से मढ़ा एक प्रसिद्ध बाजा। तबला।

तबलियो-(न०) तबलची।

तबाक-दे० तबक।

तबाह-(वि०) बरबाद। नष्ट।

तबियत-(ना०) १. शरीर की रोगारोग स्थिति। २.स्वास्थ्य। ३.मन। जी। चित्त।

तबीड़ो-(न०) डक आदि नुकीली वस्तु के चुभने की क्रिया। २. व्रण में रह रह कर होने वाली पीड़ा।

तबेलो-(न०) घुड़साला। पाएगा।

तम-(न०) १. अंधेरा। २. तमोगुण। ३. क्रोध।

तमक-(ना०) १. क्रोध। रीस। २. जोश। आवेश। ३. उतावल।

तमकणो-(क्रि०) क्रोधित होना। तमकना।

तमजाळ-(न०) १. अज्ञान। २. अंधेरा।

तमणियो-(न०) स्त्रियों के गले का एक आभूषण। तिमणियो।

तमनास-(न०) १ दीपक। २. सूर्य। ३. प्रकाश।

तमन्ना-(ना०) १. लालसा। २. इच्छा।

तमबीज-(न०) पाप।

तमर-(न०)१.गर्व। अभिमान। २. अंधेरा। तिमिर।

तमरार-(न०) सूर्य। तमारि। तिमिरारि।

तमरिपु-(न०) १. सूर्य। २. प्रकाश।

तमस-दे० तामस। (न०) अंधेरा।

तमस्सुक-(न०) १. दस्तावेज। २. ऋण-पत्र। लिखत।

तमंचो-(न०) पिस्तौल।

तमा-(ना०) रात। निशा।

तमाखू-(ना०) तमाकू। तंबाकू।

तमाम-(वि०) १. सब। कुल। (न०) समाप्त। खतम।

तमासो-(न०)१.मनोरंजक दृश्य। तमाशा। २. खेल। ३. नाचगान का खुले मंच का नाटक। ख्याल। ४. भद। फजीहत।

तमास्ती-(सर्व०) तुम। थे।

तमियो-(न०) एक पात्र।

तमी-(ना०) रात।

तमीचर-(न०) १. चंद्र। २. निशाचर।

तमीणो-दे० तुमीणो।

तमोगुण-(न०) प्रकृति के तीन गुणों में से एक। मोह, क्रोधादि को उत्पन्न करने वाला गुण।

तमोगुणी-(वि०) १. क्रोधी। तमोगुण वाला। २. अहंकारी।

तम्मर-(न०) १. गर्व। घमंड। २. आँखों के आगे अंधेरा छाना। चक्कर आना।

तयार-(वि०) १. उद्यत। सन्नद्ध। तत्पर। तैयार। २. प्रस्तुत। ३. जो बन कर बिलकुल ठीक हो गया हो।

तयारी-(ना०) १. तैयारी। तत्परता। २. सजावट। ३. प्रबंध। ४. भोजन की विविध प्रकार की सामग्री। ५. धूमधाम।

तय्यार-दे० तयार।

तर-(ना०) १. ऊंट की पूंछ के बालों को बट कर बनाई हुई बाली (छल्ला) जो मद में आये हुए शरारती ऊंट के नाक में डाल कर उससे मुहरी बांध दी जाती है। २. वृक्ष। तरु। ३. घी में सना हुआ पकवान। ४. लात। ५. बेंत। (वि०) १. भीगा हुआ। २. अधिक गीला। ३. जिसमें अधिक घृत मिला हुआ हो। घी

में सना हुआ (पकवान)। घृतपूर्ण। ४. तृप्तिदायक। ५. मालदार। सम्पन्न। ६. अधिक गहरा (कपड़े आदि का रंग)। ७. ठंडा। शीतल। *(अव्य०)* १. गुण-विक्य प्रगट करने वाला एक प्रत्यय। जैसे—श्रेष्ठतर। निम्नतर आदि। २. प्रायः। अक्सर। यथा—अधिकतर। ज्यादातर आदि। ३. तो। यथा—नहीं तर। ४. शीघ्र।

तरक–*(ना०)* १. तर्क। कल्पना। अनुमान। २. हेतुपूर्ण युक्ति। दलील। तर्क। ३. चमत्कारपूर्ण युक्ति। ४. व्यंग्य। ताना। ५. त्याग। तर्क।

तरकस–*(न०)* तीर रखने का चोंगा। तूणीर। तरगस। भाथो।

तरकारी–*(ना०)* १. शाक सब्जी। साग-भाजी। २. भोजन के लिये पकाये हुए सब्जी के पत्ते, फल, फली आदि।

तरकीब–*(ना०)* युक्ति। तरकीब। उपाय।

तरगस–दे० तरकस।

तरज–*(ना०)* १. रीति। तर्ज। शैली। ढंग। २ बनावट। ३. नखरा। ४. स्वर, ताल और लय युक्त संगीत। राग। ५. गाने का एक ढंग।

तरजमो–*(ना०)* १. तरजुमा। उल्था। अनुवाद। भाषान्तर।

तरझंगर–*(न०)* १. वृक्ष समूह। २. कँटीले वृक्ष। झाड़झंखाड़।

तरड़णो–*(क्रि०)* १ पतला मल निकलना। २. दस्तें लगना। ३. टट्टी फिरना।

तरड़ो–*(न०)* १. पतला मल। २. अधिक तरल पशुमल। गाय भैंस आदि का पतला गोबर। अधिक तरल गोबर।

तरण–*(वि०)* तरुण। युवा। **मोटियार**। *(न०)* तैरने की क्रिया।

तरण तारण–*(न०)* भवसागर से पार करने वाला। ईश्वर। *(वि०)* उद्धार करने वाला।

तरणाणो–*(क्रि०)* १. उभार आना। २. जोश में आना। ३. ऊपर उठना। ४. विकसना।

तरणि–*(न०)* १. तरुणी। युवती। २. नौका। नाव। ३. सूर्य।

तरणापो–*(न०)* तरुणावस्था।

तरणो–*(न०)* १. तिनका। तृण। तिणको। २. चारो। घास। *(क्रि०)* १. तैरना। पैरना। तिरणो। २. पार करना। लाँघना। ३. उद्धार होना।

तरत–दे० तुरत।

तर-तर–*(अव्य०)* १. ज्यों-ज्यों। २. त्यों-त्यों।

तरतीब–*(ना०)* सिलसिला। क्रम।

तरतोज–*(न०)* १. इलाज। चिकित्सा। २. उपाय।

तरदोज–*(न०)* १. खटका। २. अंदेशा। ३. चिन्ता। सोच। ४. धोखा। छल।

तरपण–*(न०)* एक कर्मकांड जिसमें देवों और पितरों को तृप्त करने के लिये जलांजलि दी जाती है। तर्पण।

तरपणी–*(ना०)* १. गंगा नदी। २. जैन साधुओं का एक पात्र।

तरफ–*(ना०)* १. ओर। तरफ। बाजू। २. पक्ष। ३. दिशा। *(अव्य०)* दिशा में। तरफ।

तरफदारी–*(ना०)* १. पक्षपात। २. हिमायत।

तरबंब–*(वि०)* पूर्ण (जल से)। सराबोर।

तरबूज–*(न०)* तरबूज। **मतीरो**। एक फल।

तरबोळ–*(वि०)* सराबोर। तराबोर।

तरभाणी–*(ना०)* सध्या-पूजा आदि धर्म विधि में काम आने वाली तांबे की तासक। ताम्रभांड। **त्रिभाणी**।

तरम–*(ना०)* शोथ। सूजन। **सोजो**।

तरमर-तरमर–*(अव्य०)* आपे से बाहर होने का भाव। क्रोध में बड़बड़ाना। अंटसंट बोलना।

तरमराट (ना०) १ आग में [illegible] होने का भाव। २ नाराज होना। बिगड़ जाना।

तरमराटो दे० तरमराट।

तरमाळो (ना०) [illegible]। [illegible]।

तरमाम—(ना०) १ मनोरंजन। २. [illegible]।

तरमेवो—(ना०)१.गीला मेवा। ताजा मेवा। २. फल।

तरळ—(वि०) १. बहने वाला। द्रव। २. गीला। ३. चंचल। तरल। ४. कोमल।

तरलंग—(ना०) घोड़ा।

तरळो—(वि०)१ चंचल। २.नरम। पतला। ३. गीला। द्रव। ४. हिलता हुआ। (ना०) १. पतला मिश्रण। बहने वाला मिश्रण। २. गाय-भैंस आदि का अधिक तरल गोबर। तरड़ो।

तरवर—(ना०) १. बड़ा वृक्ष। तरुवर। २. वृक्ष। पेड़।

तरवाड़ी—(ना०) १.ब्राह्मणों की एक अटक। एक अल्ल। त्रिवाड़ी। त्रिपाठी।

तरवार—(ना०) तलवार। खड्ग। वाढ़ाळी। रूक।

वारियो—(वि०)१. तलवार रखने वाला। वाढाळो। रूकहथो। २. तलवार चलाने वाला।

वाळो—दे० तिरवाळो।

वेणी—(ना०) १. गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियाँ। त्रिवेणी। २. इन तीनों का जहाँ संगम होता है वह स्थान। त्रिवेणी। प्रयागराज। प्रयाग का त्रिवेणी संगम तीर्थ।

स—(ना०) १. तृषा। प्यास। तिरस।

२. [illegible] को विवश करना।

[illegible] दे० [illegible]।

तरसो- (वि०) तृषित। प्यासा। तृषातुर। तिरसो। तिसायो।

तरस्यो-दे० तरसो।

तरह—(ना०) १. प्रकार। भाँति। २. ढंग। [illegible]। ३. बनावट। ४. चाल। व्यवहार (व्यंग में)।

तरहदार—(वि०) १. चतुर। २. धूर्त। चालाक। ३. नखराबाज। ४. शौकीन।

तरंग—(ना०) १. लहर। २. कल्पना। ३. विचार। ४. मौज। उमंग। ५. पागलपन। ६. नशा। ७. नशे की लहर। ८. ग्रंथ का अध्याय।

तरंगणी—(ना०) नदी। तरंगिणी। (वि०) १. तरंग वाली। मौजी। २. सनक वाली। सनकी।

तरंगाळी—(ना०) १. नदी। तरंगिणी। २. सनक वाली। सनकी। ३. मौजी।

तरंगियो—(वि०)१. अस्थिर विचारों वाला। २. पागल। सनकी। ३. कल्पनाएँ करने वाला। ४.मौजी। तरंगी। ५. बेपरवाह।

तरंगी—दे० तरंगियो।

तरज—(वि०) १. साफ। स्वच्छ। २. सही। सच्चा। (ना०)१. सही और सुंदर काम। २. सुंदर व्यवस्था।

तराछणो—(क्रि०) १. छीलना। छिलका उतारना। २.खुरचना। ३. टेढ़ा काटना।

तराज—(ना०) १. तरह। प्रकार। भाँति। २. ढंग। प्रकार। ३. सामान। बराबर। ४. तराजू। तकड़ी।

तरावट-(न०) १. घी से तरवतर भोजन। स्निग्ध भोजन। २. तृप्तिकारक वस्तु। ३. गीलापन। नमी। ४. शीतलता। (वि०) १. नकदी वाला। रोकड़ धन वाला। २. सम्पन्न।

तरासणो-(क्रि०) १. तराशना। छीलना। २. काटना। चीरना। ३. खुरचना। कुचरना।

तरां-(क्रि०वि०) १. उस समय। तब। २. इस कारण।

तरी-(ना०) १. स्त्री। २. नाव। नौका। ३. गीलापन। नमी। ४. शीतलता। ५. तरावट।

तरीको-(न०) १. रीति। ढंग। तरीका। २. उपाय। युक्ति। तरीका। ३. व्यवहार।

तरुग्रर-(न०) १. वृक्ष। तरुवर। २. आम्रवृक्ष। ३. कल्पवृक्ष।

तरुग्रार-(ना०) तलवार।

तरुण-(वि०) युवा। **मोटियार**।

तरुणाई-(ना०) युवावस्था। **मोटियारपणो**।

तरुणी-(ना०) १. स्त्री। २. युवास्त्री। युवती। **मोट्यारण**।

तरेस-(न०) तरह। भाँति।

तरेसाँ-दे० तरेस।

तरै-(क्रि०वि०) १. उस समय। तब। २. इस कारण। ३. ज्यों। जैसा।

तरोवर-(न०) १. वृक्ष। तरुवर। २. कल्पवृक्ष।

तर्ज-दे० तरज।

तर्पण-दे० तरपण।

तळ-(न०)१. नीचे का भाग। पेंदा। **तळियो**। २. जलाशय के नीचे की भूमि। ३. पैर का तलवा। ४. सात पातालों में से प्रथम। तल। ५. मातहती। अधीनता।

तळक-(ना०) १. तलहटी। २. ऊंट के दौड़ने से होने वाला शब्द। ३. लालसा।

तलक-(क्रि०वि०) तक। पर्यन्त। लग। ताँई। (न०) तिलक।

तळगट-(ना०) द्वार की चौखट का नीचे वाला भाग। चौखट की नीचे की लकड़ी। तलकठ। **ऊमरो**।

तळघर-(न०) तलगृह। तहखाना। **भूंहरो**।

तळछणो-दे० तड़छणो।

तळछियो-(वि०) १. घायल। २. संहार किया हुआ। (क्रि० भू०) संहार कर दिया। मार दिया।

तळण-(ना०) १. हैरानी। परेशानी। २. तलने की क्रिया।

तळणो-(क्रि०) १. तलना। २. हैरान करना। सताना।

तळतळो-(न०) १. कलह। झगड़ा। २. संकट।

तळतळाटो-दे० तळतळो।

तळताळियो-दे० तळतळो।

तलप-(ना०) १. उत्कट इच्छा (व्यसन की) **बायड़**। २. पलंग। ३. शय्या। **सैंज**। ४. स्त्री।

तळपट-(न०) १. आय और व्यय का संक्षिप्त पत्रक। **तारवणी**। २. पोते बाकी। ३. बरबादी।

तळब-(ना०) १. सरकारी बुलावा। तलब। २. बार बार आने वाला बुलावा। ३. माँग। आवश्यकता। ४. उत्कट इच्छा। चाह। ५. तलाश। खोज। ६. शौचादि का वेग। हाजत। तलब।

तळबाणो-(न०) वह खर्चा जो गवाह को बुलाने के लिये अदालत में जमा कराया जाता है। तलबाना।

तळबियो-(न०) १. तकाजा करने वाला व्यक्ति। २. सरकारी रकम वसूल करने वाला नौकर। ३. आसामियों को बुलाकर लाने वाला नौकर।

तरमराट-*(न०)* १. आपे से बाहर होने का भाव । २. नाराज होना । बिगड़ जाना ।

तरमराटो-दे० तरमराट ।

तरमाळो-*(न०)* नगाड़ा । त्रंबाल ।

तरमीम-*(न०)* १. संशोधन । २. हेरफेर ।

तरमेवो-*(न०)*१.गीला मेवा । ताजा मेवा । २. फल ।

तरळ-*(वि०)* १. बहने वाला । द्रव । २. गीला । ३. चंचल । तरल । ४. कोमल ।

तरलंग-*(न०)* घोड़ा ।

तरळो-*(वि०)*१ चंचल । २.तरल । पतला । ३. गीला । द्रव । ४. हिलता हुआ । *(न०)* १. पतला मिश्रण । बहने वाला मिश्रण । २. गाय-भैंस आदि का अधिक तरल गोबर । तरड़ो ।

तरवर-*(न०)* १. बड़ा वृक्ष । तरुवर । २. वृक्ष । पेड़ ।

तरवाड़ी-*(ना०)* १.ब्राह्मणों की एक अटक । एक अल्ल । त्रिवाड़ी । त्रिपाठी ।

तरवार-*(ना०)* तलवार । खड्ग । वाढ़ाळी । रूक ।

तरवारियो-*(वि०)*१. तलवार रखने वाला । वाढाळो । रूकहथो । २. तलवार चलाने वाला ।

तरवाळी-दे० तिरवाळी ।

तरवेणी-*(ना०)* १. गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों नदियाँ । त्रिवेणी । २. इन तीनों का जहाँ संगम होता है वह स्थान । त्रिवेणी । प्रयागराज । प्रयाग का त्रिवेणी संगम तीर्थ ।

तरस-*(ना०)* १. तृषा । प्यास । तिरस । २. दया । रहम । करुणा । अनुकंपा । ३. उत्कट इच्छा । लालसा ।

तरसणो-*(क्रि०)* तरसना । ललचाना ।

तरसंग-*(न०)* पक्षी । तरुसंगी । दे० त्रसींग ।

तरसाणो-*(क्रि०)* १. व्यर्थ ललचाना । [illegible] का [illegible] होना । ३. ललचाने को विवश करना ।

तरसींग-दे० त्रसींग ।

तरसो-*(वि०)* तृषित । प्यासा । तृषातुर । तिरसो । तिसायो ।

तरस्यो-दे० तरसो ।

तरह-*(ना०)* १. प्रकार । भाँति । २. ढंग । स्थिति । ३. बनावट । ४. चाल । व्यवहार (व्यंग में) ।

तरहदार-*(वि०)* १. चतुर । २. धूर्त । चालाक । ३. नखरावाज । ४. शौकीन ।

तरंग-*(ना०)* १. लहर । २. कल्पना । ३. विचार । ४. मौज । उमंग । ५. पागलपन । ६. नशा । ७. नशे की लहर । ८. ग्रंथ का अध्याय ।

तरंगणी-*(ना०)* नदी । तरंगिणी । *(वि०)* १. तरंग वाली । मौजी । २. सनक वाली । सनकी ।

तरंगाळी-*(ना०)* १. नदी । तरंगिणी । २. सनक वाली । सनकी । ३. मौजी ।

तरंगियो-*(वि०)*१. अस्थिर विचारों वाला । २. पागल । सनकी । ३. कल्पनाएँ करने वाला । ४.मौजी। तरंगी । ५. बेपरवाह।

तरंगी-दे० तरगियो ।

तरज-*(वि०)* १. साफ । स्वच्छ । २. सही । सच्चा । *(न०)*१. सही और सुंदर काम । २. सुंदर व्यवस्था ।

तराछणो-*(क्रि०)* १. छीलना । छिलका उतारना । २.खुरचना । ३. टेढ़ा काटना ।

तराज-*(ना०)* १. तरह । प्रकार । भाँति । २. ढंग । प्रकार । ३. सामान । बराबर । ४. तराजू । तकड़ी ।

तराजवो-*(न०)* तराजू । तकड़ी । ताकड़ी ।

तराजू-*(ना०)* तकड़ी । ताकड़ी ।

तराजे-*(वि०)* समान । बराबर । *(न०)* तरह । प्रकार ।

तराणू-*(वि०)* नब्बे और तीन । *(ना०)* ९३ की संख्या ।

तरावट-(न०) १. घी से तरवतर भोजन। स्निग्ध भोजन। २. तृप्तिकारक वस्तु। ३. गीलापन। नमी। ४. शीतलता। (वि०) १. नकदी वाला। रोकड़ धन वाला। २. सम्पन्न।

तरासणो-(क्रि०) १. तराशना। छीलना। २. काटना। चीरना। ३. खुरचना। कुचरना।

तरां-(क्रि०वि०) १. उस समय। तब। २. इस कारण।

तरी-(ना०) १. स्त्री। २. नाव। नौका। ३. गीलापन। नमी। ४. शीतलता। ५. तरावट।

तरीको-(न०) १. रीति। ढंग। तरीका। २. उपाय। युक्ति। तरीका। ३. व्यवहार।

तरुअर-(न०) १. वृक्ष। तरुवर। २. आम्रवृक्ष। ३. कल्पवृक्ष।

तरुआर-(ना०) तलवार।

तरुण-(वि०) युवा। **मोटियार**।

तरुणाई-(ना०) युवावस्था। **मोटियारपणो**।

तरुणी-(ना०) १. स्त्री। २. युवास्त्री। युवती। **मोटयारण**।

तरेस-(न०) तरह। भाँति।

तरेसाँ-दे० तरेस।

तरै-(क्रि०वि०) १. उस समय। तब। २. इस कारण। ३. ज्यों। जैसा।

तरोवर-(न०) १. वृक्ष। तरुवर। २. कल्पवृक्ष।

तर्ज-दे० तरज।

तर्पण-दे० तरपण।

तळ-(न०)१. नीचे का भाग। पेंदा। **तळियो**। २. जलाशय के नीचे की भूमि। ३. पैर का तलवा। ४. सात पातालों में से प्रथम। तल। ५. मातहती। अधीनता।

तळक-(ना०) १. तलहटी। २. ऊंट के दौड़ने से होने वाला शब्द। ३. लालसा।

तलक-(क्रि०वि०) तक। पर्यन्त। लग। नांई। (न०) तिलक।

तळगट-(ना०) द्वार की चौखट का नीचे वाला भाग। चौखट की नीचे की लकड़ी। तलकठ। **ऊमरो**।

तळघर-(न०) तलगृह। तहखाना। **भूंहरो**।

तळछणो-दे० तड़छणो।

तळछियो-(वि०) १. घायल। २. संहार किया हुआ। (क्रि० भू०) संहार कर दिया। मार दिया।

तळण-(ना०) १. हैरानी। परेशानी। २. तलने की क्रिया।

तळणो-(क्रि०) १. तलना। २. हैरान करना। सताना।

तळतळो-(न०) १. कलह। झगड़ा। २. संकट।

तळतळाटो-दे० तळतळो।

तळताळियो-दे० तळतळो।

तलप-(ना०) १. उत्कट इच्छा (व्यसन की) **बायड़**। २. पलंग। ३. शय्या। **सेज**। ४. स्त्री।

तळपट-(न०) १. आय और व्यय का संक्षिप्त पत्रक। **तारवणी**। २. पोते बाकी। ३. बरबादी।

तळब-(ना०) १. सरकारी बुलावा। तलब। २. बार बार आने वाला बुलावा। ३. माँग। आवश्यकता। ४. उत्कट इच्छा। चाह। ५. तलाश। खोज। ६. शौचादि का वेग। हाजत। तलब।

तळबाणो-(न०) वह खर्चा जो गवाह को बुलाने के लिये अदालत में जमा कराया जाता है। तलबाना।

तळबियो-(न०) १. तकाजा करने वाला व्यक्ति। २. सरकारी रकम वसूल करने वाला नौकर। ३. आसामियों को बुलाकर लाने वाला नौकर।

तळींगरा–*(न०)* चूल्हे के धुएँ से बचाने के लिये बरतन के पैंदे में किया जाने वाला मिट्टी का लेप।

तळेटी–*(न०)* तलहटी।

तळै–*(क्रि०वि०)* नीचे। हेठै।

तळो–*(न०)* १. मकान बनाने योग्य जमीन का टुकड़ा। भूभाग। थाळो। २. कुँआँ। कूप। बेरो। ३. छोटा गाँव। ४. किसी वस्तु का तलभाग। पैंदा। तला। ५. जूते के नीचे का चमड़ा। तले का चमड़ा।

तलो-वलो–*(न०)* १. संबंध। रिश्ता। २. व्यवहार। लेन-देन।

तल्लो–*(न०)* मकान का खंड। मंजिल। तल्ला।

तल्लो-वल्लो–दे० तलो-वलो।

तवणो–*(क्रि०)* १. प्रार्थना करना। स्तुति करना। २. कहना।

तवन–*(न०)* १. स्तवन। स्तुति। २. गीत। गायन। पद।

तवर्ग–*(न०)* त, थ, द, ध, न—राजस्थानी भाषा के इन पाँच वर्णों का वर्ग या समाम्नाय।

तवंगर–*(वि०)* धनवान। मालदार। ऐश्वर्य-वान।

तवा–दे० तवै।

तवारीख–*(ना०)* इतिहास।

तवी–*(ना०)* १. मालपूआ और जलेबी बनाने का एक छिछला पात्र। २. छोटा तवा।

तवै–*(न०)* १. तबाह। २. हैरान। परेशान।

तवो–*(न०)* १. चूल्हे पर रख कर रोटी सेंकने का एक गोल छिछला पात्र। तवा। २ कवच का छाती पर का भाग। ३. हाथी के गंडस्थल का ढक्कन। गजढाल।

तसकर–*(न०)* चोर।

तसती–*(ना०)* १. कष्ट। दुख। क्लेश। २. महनत। तसदीह।

तसतूंबो–*(न०)* एक कड़ुआ फल। इंद्रा-यन। तूंहड़ो।

तसदी–दे० तसती।

तसफियो–*(न०)* फैसला। निर्णय।

तसवीर–*(ना०)* चित्र। छवि। तसवीर।

तसलीम–*(ना०)* १. प्रणाम। सलाम। तळसीम। २. किसी की ओर से प्राप्त होने वाली वस्तु को स्वीकार करने के पूर्व दाता को प्रणाम करके स्वीकार करने का भाव। सम्मान सहित स्वीकार।

तसल्ली–*(ना०)* १. धैर्य। विश्वास।

तसियो–*(न०)* १. दुःख। संकट। २. अंत। छेह। ३. त्रास। ४. मग्जपच्ची। माथा-फोड़।

तसीस–*(न०)* हाथ।

तसु–*(न०)* एक माप जो लगभग एक इंच के बराबर होता है। एक पोर से दूसरे पोर तक का माप। तसू। २. पोर। ३. इंच का चौथाई (०।) माप।

तह–*(ना०)* १. चेतना। होश। २. परत। तह। ३. थाह। तल। गहराई। ४. पैंदा। तल।

तहकीकात–*(ना०)* किसी घटना की जाँच। जाँच-पड़ताल।

तहखानो–*(न०)* तलघर। भूमिगृह। भूंहरो। भोंयरो।

तहड़ कूण–*(ना०)* उत्तर और वायव्य दिशा के बीच की दिशा। रीतहड़ि दिशा।

तहताज–*(ना०)* १. पगड़ी। उष्णीष। २. मुकुट।

तहताय–*(न०)* धीरज। आश्वासन।

तहनाळ–*(न०)* १. तलवार के म्यान पर नीचे के भाग में लगाई जाने वाली किसी धातु की कड़ी। म्यान के मूंठ वाले भाग पर लगा हुआ बंधन। २. धूलि। रज।

तहनाळ उडणो–*(मुहा०)* १. स्थिति अच्छी नहीं होना। गरीबी हालत होना। २. फाकाकसी की स्थिति होना।

तह्मल-(ना०) १. विना लांग की धोती । तहमत । लूंगी । २. धीरज ।
तह्री-दे० तारी ।
तह्रीर-(ना०) १. लेख । लिखा हुआ । मजमून । २. लिखावट ।
तह्वार-(न०) १. पर्व दिन । त्यौहार । २. आनंद उत्सव का दिन ।
तह्वारी-(ना०) पर्व के दिन को नेगियों को दिया जाने वाला इनाम, भोजन आदि । दे० तैवारी ।
तहस-नहस-(न०) विनाश ।
तही-(ना०) आयु । उमर । अवस्था । (वि०) समवयस्क । हमउम्र ।
तँई-दे० ताँई ।
तंग-(वि०) १. कसा हुआ । तंग । २. परेशान । हैरान । दिक । ३. तंगदस्त । ४. विस्तार में कम । संकीर्ण । सकड़ा । ५. तना हुआ । अकड़ा हुआ । ६. कम । ७. अभाव वाला । (न०) १. घोड़े की जीन कसने का पट्टा । तंग । २. अंग का वह भाग जहाँ तंग कसा जाता है ।
तंगड़ी-(ना०) १. पाजामा । सुथनी । २. जाँघियो । ३. धोती ।
तंगाई-(ना०) १. तंगी । कमी । अभाव । २. गरीबी । निर्धनता । ३. सँकड़ापन । संकीर्णता । ४. परेशानी ।
तंगास-दे० तंगाई ।
तंगी-दे० तंगाई ।
तंगोटी-(ना०) छोटा तंबू । छोलदारी ।
तंजीब-(ना०) एक महीन कपड़ा ।
तंड-(न०) १. गर्जन । दहाड़ । २. पक्ष । तड़ । ३. तांडव । ४. ओर । तरफ ।
तंडणो-(क्रि०) १. गर्जना । दहाड़ना । २. रंभाना । ताँडना । ३. ताँडव नृत्य करना । ४. नाचना । ५. मंथन करना । मथना ।
तंडल-(न०) १. नाश । संहार । २. छिन्न ंग । (वि०) छिन्नांग ।
तंडव-(न०) १. तांडव नृत्य । २. नाच । ३. दहाड़ । गर्जन ।
तंडीर-(न०) तरकस । तूणीर ।
तंत-(न०) १. शक्ति । बल । २. तत्व । ३. तार । तंत । ४. तंतु । ५. तंतुवाद्य । ६. मौका । अवसर । ७. भेद । रहस्य ।
तंत बाह्रो-(वि०) १. तत्वहीन । तत्व बहिर । २. बिना काम का । अयोग्य । ३. बिना समझ का । अबुद्ध । ४. अशक्त । ५. निस्तेज ।
तंतर-दे० तंत्र ।
तंति-(ना०) तार का बाजा । तंतुवाद्य ।
तंतिसर-(न०) वीणा, सितार आदि तार वाद्यों का स्वर । तंतुस्वर । तंत्री स्वर ।
तंती-(ना०) १. सितार आदि तार वाद्य । ततुवाद्य । २. तंत्री ।
तंतु-(न०) १. लतासूत्र । तांतो । २. लता । वेल । वेल । ३. धागा । डोरो ।
तंतुवाण-दे० तंतुवाय ।
तंतुवाय-(न०) १ जुलाहा । बुनकर । २. मकड़ी ।
तंत्र-(न०) १. झाड़ने-फूंकने का सिद्धान्त । मंत्र-तंत्र । जादू-टोना । २. उपासना संबंधी शास्त्र । ३. निश्चित सिद्धांत । ४. राज्य-प्रबंध । ५. तंतु । तांत । ६. सूत । धागा ।
तंत्री-(ना०) १. तंत्र वाद्य । तार वाद्य । तंत्री । २. तंतु वाद्य का तार । तंत्री । ३. धनुष की डोरी । पनच । ४. रस्सी । डोरी ।
तंदुळ-(न०) १. चावल । २. सिर ।
तंदूर-(न०) मिट्टी का एक प्रकार का बड़ा भट्टीनुमा चूल्हा, जिसमें रोटियां पकाई जाती हैं ।
तंदूरो-(न०) तंबूरा । तानपुरा ।
तंपा-दे० तंवा ।
तंब-(न०) १. वैर । २. अभिमान ।
तंबा-(ना०) गाय । तम्बिका ।

तंवाळ–दे० त्रंवाळ ।
तंवीरण–दे० तंवेरण ।
तंवू–(न०) खेमा । पटगृह । वस्त्रकुटि ।
तंवूरो–दे० तंदूरो ।
तंवेड़ो–(न०) तांवे का घड़ा । तांवेड़ो । ताम्रघट ।
तंवेरण–(न०) हाथी ।
तंवेरव–(न०) हाथी । तंवेरण ।
तंवोळ–(न०) १. नागर वेल का पान । २. विवाह गीत का एक प्रकार । ३. पुष्करणों में गाया जाने वाला विवाह का एक गीत । ४. फेन । झाग ।
तंवोळण–(ना०) तंवोली की स्त्री । तंवोलिन ।
तंवोळी–(न०) पान वेचने वाला । तंवोली ।
तँवर–(न०)१. वह वालक या व्यक्ति जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनों वड़ेरे जीवित हों । भवँर का पुत्र (कँवर का पुत्र भँवर और भँवर का पुत्र तँवर कहलाता है । वाप के जीवित होने पर उसका पुत्र 'कँवर', दादा के जीवित होने पर 'भँवर', और परदादा सहित तीनों के जीवित होने पर 'तँवर' कहलाता है)। २. एक क्षत्री जाति या वंश ।
तँवराटी–(ना०) जयपुर जिले का एक नाम जहाँ पहले तँवरों का शासन था । तोरावटी । तँवरावाटी ।
तँवरावाटी–दे० तँवराटी ।
ता–(सर्व०) १. उस । २. इस ।
ताइ–(अव्य०) विल्कुल । सर्वथा । (सर्व०) १. उस । २. उसका । ३. उसकी । ४. उसके । (व०व०) ५. उन । ६. उनका । ७. उनकी । ८. उनके । ९. वह । (क्रि० वि०) १. इसमें । २. इनसे । ३. उससे । ४. उनसे ।
ताई–(ना०)१. पिता के बड़े भाई की पत्नी । पिता की भाभी । २. शत्रु । ३. आतताई ।
ताईत–(न०) तावीज ।
ताईद–(ना०) समर्थन ।
ताऊ–(न०)पिता का वड़ा भाई । वड़ा वाप । (वि०) १. उग्र प्रकृति वाला । क्रोधी । २. उतावला । ३. तप्त ।
ताऊस–(न०) मोर ।
ताक–(ना०) १. मौके की टोह । अवसर की प्रतीक्षा । २. घात । उपयुक्त अवसर की खोज । ४. ताकने की क्रिया । अवलोकन । ५. निशाना । ६. स्थिर दृष्टि । टकटकी । ७. खोज । तलाश । ८. आला । ताखा ।
ताकड़–(ना०) ताकीद । जल्दी । शीघ्रता ।
ताकड़ियो–(न०) छोटी तकड़ी ।
ताकड़ी–(ना०) तकड़ी । तराजू । (वि०) उतावली ।
ताकड़ो–(वि०) १. उद्धत । २ जोरावर । ३. जल्दवाज । उतावला । ४. तेज । जोशीला । ५. क्रोधपूर्ण ।
ताकणो–(क्रि०)१. घूर कर देखना । स्थिर दृष्टि से देखना । २. छिप कर देखना । ३. तकना । देखना । ताकना । ४. मौका देखना । अवसर की प्रतीक्षा करना ।
ताकत–(ना०)१. शक्ति । वल । तागत । २. सामर्थ्य । हैसियत ।
ताकतवर–(वि०)१. वलवान । शक्तिवान । २. सामर्थ्यवान । हैसियत वाला ।
ताकळो–(न०) तकला । तकुआ । टेकुआ ।
ताकव–(न०) १. चारण । २. चारण कवि ।
ताका–(न०व०व०) इधर-उधर झाँकने का भाव ।
ताका-तकिया–(न०व०व०) १. इधर-ऊधर ताकने-झाँकने का भाव । २. विचार ।
ताकीद–(ना०) १. उतावल । शीघ्रता । २. चेतावनी । धमकी । ३. शीघ्र तैयार करने की आवश्यकता ।
ताकीदी–(न०) दे० ताकीद ।

ताटंक-*(न०)* १. कर्णफूल । २. एक छंद ।

ताटी-दे० टाटी ।

ताड़-*(न०)* १. एक वृक्ष । ताड़ । २. मार । प्रहार । आघात । ३. लताड़ ।

ताड़का-*(ना०)* एक राक्षसी ।

ताड़णो-*(क्रि०)* १. भागना । २. भगा देना । ३. मारना । ४. ताड़ना । ताड़ना देना । डाँटना । धमकाना । लताड़ना । ५. भाँपना । समझ लेना ।

ताड़पत्र-*(न०)* ताड़ वृक्ष का पत्ता ।

ताड़ी-*(ना०)* १. छाते को ताना हुआ रखने के लिये लगाये जाने वाले लोहे के तारों में से एक तार । २. ताड़ वृक्ष का रस ।

ताड़ूकणो-*(क्रि०)* साँड का गर्जना ।

ताढ-दे० ठाड ।

ताढो-दे० ठाडो ।

ताण-*(ना०)* १. खिंचाव । तनाव । २. अनबन । ३. विवाद । ४. अभिमान । घमंड । ५. हठ । ६. एक रोग जिसमें शरीर में तनाव व ऐंठन हो जाती है । नसों का तनाव । ७. मिरगी रोग । ८. पानी के बहाव का जोर । ९. दीवाल में लदाव की चिनाई । १०. कमी । अभाव ।

ताणणो-*(वि०)* १. खींचना । तानना । २. घसीटना । ३. लंबाई में फैलाना । ४. तरफदारी करना । पक्ष लेना ।

ताणी-*(अव्य०)* १. संप्रदान कारक का एक चिन्ह । लिए । वास्ते । २. तक । लग ।

ताणीजणो-*(क्रि०)* १. खींचा जाना । ताना जाना । २. हठ करना ।

ताणो-*(न०)* बुनने के लिये लंबाई के बल फैलाया हुआ सूत । कपड़े की बुनावट में लंबाई की बल के धागे । ताना । 'वाणो' का उलटा । दे० तावणो ।

ताणो-वाणो-*(न०)* १. वस्त्र की बुनावट में लंबाई और चौड़ाई के सूत्र-तंतु । ताना-बाना । २. तजवीज । युक्ति । ३. जंजाल । मायाजाल ।

तात-*(न०)* १. पिता । बाप । २. पति । ३. गुरु । ४. ईश्वर । ५. पूज्य व्यक्ति । ६. प्यार का एक संबोधन ।

तातपरज-*(न०)* तात्पर्य । मतलब । अभिप्राय । मतबळ ।

ताताथई-*(ना०)* नाच का एक बोल । नृत्य का एक ताल ।

ताताळ-*(वि०)* १. उतावला । २. शीघ्रगामी । तेजरफ्तार ।

तातील-*(ना०)* छुट्टी का दिन ।

तातो-*(वि०)* १. वेगवान । तेज । २. तेज रफ्तार । शीघ्रगामी । ३. गरम । उष्ण । ४. उतावला । चंचल । ५. क्रोधी । ६. कठोर स्वभाव का । तेज । ७. जवान ।

तादाद-*(ना०)* संख्या । गिनती ।

तान-*(ना०)* १. संगीत की लय । आलाप । २. स्वर संधान । ३. स्वर । सुर । तान । ४. प्रीति । प्रेम । ५. तैयार । उद्यत । ६. प्रस्तुत । मौजूद । हाजर । ७. मौका । अवसर ।

तानपुरो-*(न०)* एक प्रकार का तार वाद्य ।

तानसेन-*(न०)* संगीताचार्य हरिदास के शिष्य और अकबर की सभा के नौ रत्नों में से एक । विश्वविख्यात गायनाचार्य ।

तानो-*(न०)* १. व्यंग्यपूर्ण चुटीली बात । ताना । २. उपालंभ । ३. अवसर । मौका । ४. संयोग । मिलान । मेल । ५ उपलब्धि प्राप्ति । ६. सम्पन्नता । ऐश्वर्य ।

ताप-*(न०)* १. सूर्य का प्रकाश । २. सूर्य की गरमी । धूप । ३. अग्नि । ४. ज्वाला । ५. भय । आतंक । ६. गरमी । ७. क्रोध । ८. ज्वर । ९. सेंक । १०. कष्ट । ११. अग्नि के द्वारा सोने को शुद्ध करने की एक विधि ।

तापड़-*(न०)* १. ऊंट की लात । २. ऊंट की चाल । ३. मृतक की शोक-बैठक । ४. बिछाने का एक मोटा कपड़ा ।

तापड़णो–(क्रि०) १. ऊंट को तेज भगाना। २. ऊंट का तेज भागना। ३. भगाना। ४. भागना। दौड़ना।

तापड़धिन–(न०)१. ढोलक, मृदंग या तबले पर थापी मारने से उत्पन्न शब्द या बोल। २. ढोलक-तबले पर थापी लगने की क्रिया। ३. गाना-बजाना। रंग-राग। गाने, बजाने और नाचने आदि की धूम-धाम।

तापड़ा-तोड़णो–(मुहा०)१. खुशामद करके हैरान होना। २. किसी से काम बनवाने में असफल होना। असफल होना।

तापड़ियो–(न०)सन का बना मोटा कपड़ा। टाट।

तापड़ो–(न०)१. एक मोटा कपड़ा। २. जुट या सन का बना मोटा कपड़ा। टाट। ३. मृतक की शोक-बैठक।

तापणी–दे० तपणी।

तापणो–(क्रि०) अग्नि या ताप से शरीर गरम करना।

तापती–(ना०) भारत की एक नदी। ताप्ती।

ताप देणो–(मुहा०) १. दुख देना। कष्ट पहुँचाना। २. अग्नि द्वारा सोने को शुद्ध करने की क्रिया का सम्पादन करना।

तापस–(न०) तपस्वी।

तापी–(ना०) १. ताप्ती नदी। २. तपस्वी। ३. जोधपुर की एक प्रसिद्ध सातखंडी और सात पोलों वाली बावली। तापी बावड़ी। (वि०) दुखदायी। कष्टदायी।

तापो–(न०) १. लट्ठे, बाँस और पट्टों के टट्टर के नीचे पीपे या उलटे घड़ों को बाँध कर बनाई हुई नाव। बेड़ा। २. ऊंट की लात।

तावड़ तोब–दे० तावड़ दौड़।

तावड़ दौड़–(ना०) उतावळ। शीघ्रता।

तावा-तीबो(न०) १. छोटे मोटे जेवर। २. कम कीमत के गहने।

ताबीन–(वि०) १. अधीन। मातहत। २. आश्रित। ३. आज्ञाकारी। वशीभूत।

ताबीनदार–(न०)नौकर। (वि०) आधीन। मातहत। ताबेदार।

ताबीन-रो-लोक–(न०) प्रजा। आधीन प्रजा।

ताबीनी–(ना०) १. सेवा। चाकरी। २. हाजरी। ३. आश्रय। सहारा।

ताबूत–(न०) १. ताजिया। २. शव-पेटी। ३. जनाजा।

ताबै–(वि०) १. अधीन। वशवर्ती। २. आज्ञावर्ती। (न०) अधिकार। वश। (अव्य०) लिये। वास्ते।

ताबैदार–(न०)नौकर। (वि०) आज्ञाकारी।

ताबैदारी-(ना०) सेवा। नौकरी।

ताम–(सर्व०) १. उस। २ तुम। आप। (सर्व०व०व०) १. उन। २. उन्हें। (क्रि० वि०)१. उस समय। २. तब। ३. वहाँ। तहाँ। ४. इस कारण। (वि०) १. अधिक। २ सब। (न०) गर्व। घमंड।

तामजाम–(ना०) एक प्रकार की पालकी।

तामड़ी–दे० ताँबड़ी।

तामड़ो–दे० ताँबड़ो।

तामणियो–(न०) छोटी तामणी।

तामणी–(ना०) साग-तरकारी आदि बनाने का मिट्टी की बटलोई जैसा पात्र।

तामस–(ना०) १. तमोगुण। तामस। तमस। २. क्रोध।

तामसी–(वि०) तामस प्रकृति वाला। तमोगुणी।

तामीर-(न०) भवन निर्माण का काम।

तामील–(ना०) १. आज्ञा का पालन। २. सूचना आदि का अभीष्ट स्थान पर पहुंचाया जाना।

ताम्र–(न०) ताँबा।

ताम्रपत्र-(न०) १. वह तांबे का पत्तर जिस पर दान आज्ञा खुदी हुई हो।

ताय-(ना०) १. कष्ट। पीड़ा। २. ताप। संताप। (सर्व०) १. वह। २. उस। ३. उसका। ४ उसने। ५. किस। ६ किसका। (वि०) १. तरह। भाँति। तुल्य। (क्रि०वि०) १. तब। २. लिए। वास्ते। ३. जैसे। ज्यों। ४. वैसे। ५. शीघ्र। जल्दी। ६. बिल्कुल। सर्वथा।

तायक-(न०) १. शत्रु। दुश्मन। २. वीर पुरुष। योद्धा। (वि०) संहार करने वाला। (सर्व०) तेरा। तुम्हारा।

तायजादो-(न०) पुत्र।

तायफो-(न०) १. वेश्या। २. वेश्या और उसकी गाने बजाने वाली मंडली। तायफा।

तायल-(न०) १. शत्रु। दुश्मन। २. आततायी। (वि०) १. क्रोध में तप्त। २. तप्त। तपा हुआ। ३. क्रोधित। उग्र। ४. शक्तिशाली। बलवान। ५. तेज। ६. चंचल।

तायलो-(सर्व०) तेरा। तुम्हारा। (वि०) १. तप्त। २. क्रोधित। तप्त। उग्र।

तायो-(वि०) १. तप्त। गरम। २. उतावला। ३. व्यग्र। परेशान। ४. तपा हुआ। गरम किया हुआ।

तायोड़ो-(वि०) १. गरम किया हुआ। २. तप्त। गरम। ३. संतप्त। दुखी।

तार-(न०) १. धातु को मशीन या जंत्री द्वारा खींच कर बनाया हुआ धागा। तांत। २. लोहे या तांबे आदि का तार, जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजा जाता है। टेलीग्राफ। ३ इस प्रणाली द्वारा वर्ण संकेतों में भेजा गया या आया हुआ समाचार। टेलीग्राम। ४. चांदी। ५. मोती। ६ धागा। तागा। सूत। ७. क्रम। ८. संगीत का एक सप्तक। ९. तारा। १०. नशा। ११. नशे की लहर। १२. नतीजा। १३. पानी में ऊपर हाथ उठाये हुये खड़े आदमी की गहराई। १४. प्रीति। मेल। संबंध। १५. यौवन। १६. चाशनी को जाँचने के समय बनने वाले तंतु। १७. संयोग। (वि०)१. साफ। निर्मल। २. लेश मात्र। थोड़ा सा। थोड़ा भी।

तारक-(न०) १. तारा। नक्षत्र। २. ईश्वर। कर्णधार। ४. तारक मंत्र। ५. आँख। ६. आँख की पुतली। ७. चाँदी। रौप्य। ८. तारकासुर राक्षस। ९. मृतक कर्म कराने वाला। मृतक कर्म का दान लेने वाला। तारकियो। कारटियो। महा ब्राह्मण। १०. घोड़ा। (वि०) १. तारने वाला। पार करने वाला। २. भवसागर से पार करने वाला।

तारक-मंत्र-(न०) श्री राम का षड़ अक्षर मंत्र (ॐ रामायनमः)।

तारकस-(न०) १. तार खींचने वाला। तारकश। २. कोर-गोटे और कलाबत्तू का काम करने वाला।

तारकासुर-(न०) एक असुर का नाम।

तारख-(न०)१. गरुड़। तार्क्ष्य। २. घोड़ा।

तारखी-दे० तारख।

तारघर-(न०) टेलीग्राफ ऑफिस।

तारजंत्र-(न०) सितार, वीणा आदि तारवाद्य।

तारण-(न०) १. नतीजा। परिणाम। २. खोज। जांच। अनुसंधान। ३. भावार्थ। सार। ४. उद्धार। निस्तार। (वि०) तारने वाला। उद्धारक।

तारण-तरण-(न०) उद्धार करने वाला। ईश्वर।

तारणियो-(वि०) तारने वाला।

तारणो-(क्रि०) १. उद्धार करना। २. पानी से बाहर निकालना। डूबते को बचाना। ३. तिराना।

तालावेली–दे० ताला मेली ।

ताला मेली–(ना०) १. तजवीज । तालमेल । २. जल्दबाजी । ३. व्याकुलता ।

तालावर–(वि०) भाग्यशाली ।

ताळी–(न०) १. हथेलियों का परस्पर आघात । करतल ध्वनि । २. कुंजी । कूंची । ३. तल्लीनता । ४. समाधि ।

ताली–(ना०) १. सूची । तालिका । २. कुंजी । कूंची । ताली । ३. खलिहान में साफ करके लगाया हुआ अनाज का ढेर ।

तालीको–(न०) १. जागीर का पट्टा । सनद । २. परम्परानुसार नेगियों को नेग दिये जाने की क्रिया । ३. नेग ।

ताळी लागणी -(मुहा०) १. किसी बात में मन का रंग जाना । रंग लग जाना । २. ध्यान लगना । ३. सफलता मिलना ।

ताळू–दे० ताळवो ।

तालूको–(न०) १. तालुका । तहसील । २. संबंध । ३. जान पहिचान । परिचय ।

ताळो–(न०) ताला । कुलफ ।

ताळोकूंची–(न०) १. ताला और उसकी चाबी । २. पक्का कब्जा ।

ताळो खोलामणी–(मुहा०) आसामी (ऋण-ग्राही) को रुपये कर्ज देते समय ताला खोलने के नाम पर लिया जाने वाला वनिक (बोहरा/ऋणदाता) का लाग । कोथली खोळामणी ।

ताव–(न०) १. बुखार । ज्वर । २. आंच । ३. रोष । क्रोध । ४. अहंकार । ५. अहंकार की झोंक (मूछों पर) ६. दुख । पीड़ा । आफत । ७. आतंक । भय । ८. सोने चांदी आदि धातु की गुल्ली को आंच देने के बाद हथोड़े से ठोंक कर बढ़ाने की क्रिया ।

ताव आवणो–(मुहा०) बुखार होना ।

ताव उतरणो–(मुहा०) बुखार नहीं रहना । बुखार उतर जाना ।

ताव खाणो–(मुहा०) क्रोध करना ।

ताव चढणो–(मुहा०) बुखार हो जाना ।

तावड़ो–(न०) १. सूर्य का प्रकाश । धूप । २. सूर्य की गरमी । सूर्यताप । घाम ।

तावणी–(ना०) १. मक्खन को गरम करके घी बनाने का काम । २. मक्खन बनाने या किसी वस्तु को गरम करने की क्रिया । ३. तावणी का पात्र । वासण । ४. जांच-परताल ।

तावणो–(क्रि०) १. सताना । दुख देना । २. तपाना । गरम करना । ३. घी बनाने के लिये मक्खन को गरम करना । मक्खन को गरम करके उसे घी रूप देना ।

ताव-तप–(न०) १. मौसमी बुखार । २. बीमारी ।

तावदान–(न०) १. द्वार या बारी पर बनाया हुआ आला । रोशन दान । द्वार के ऊपर का ताख, आला या तांड के लिये लगाई जाने वाली पत्थर या लकड़ी की पट्टी । ३. ताख । ताक । आला । ४. बारी । रोशनदान ।

तावळ–(क्रि०वि०) उतावल । जल्दी । शीघ्र ।

तावळी–(वि०ना०) उतावली । उतावळी ।

तावली–(वि०) ज्वर-पीड़िता । बुखार वाली ।

तावळो–(वि०) उतावला । उतावळो ।

तावलो–(वि०) जिसे बुखार चढ़ा हो । ज्वरपीड़ित ।

तावी–(ना०) १. बड़ा तवा । तई । २. छोटा तवा । ३. कवच । ४. शत्रु ।

तास–(ना०) १. मोटे कागज के बावन पत्तों का एक खेल । २. मोटे कागज के चौकोर टुकड़ों पर चार रंग की बूटियों और तसवीरों वाला बावन पत्तों का एक सैट । ३. तासीर । गुण । असर । ४. किसी काम का यथावत तथा यथारूप तन

जाना । (नाo) १. [illegible] । २. [illegible] । (क्रिoविo) प्रकार । तरह ।

तारक-(नाo) तश्तरी । रकाबी । तासळी ।

तारणो-(क्रिo) १. [illegible] । २. कष्ट देना । ३. डरना ।

तासळी-(नाo) १. छोटी थाली । २. तश्तरी । रकाबी । ३. कांसी की छिछली कटोरी । ताहळी । ४. परोसा । पारसा ।

तासळो-(नo) १. भोजन करने की ऊंचे किनारों की थाली । २. कांसी का बड़ा कटोरा । ताहळो ।

तासीर-(नाo) १. किसी वस्तु की गुण-सूचक प्रकृति । २. प्रभाव । असर ।

तासो-(नo) १. एक वाद्य । तासा । २. कमी । अभाव । ताछो । ताछा । ३. अप्राप्ति । कष्ट । तकलीफ ।

ताहरइ-दे० ताहरै ।

ताहरां-(क्रिoविo) तब ।

ताहरै-(क्रिoविo) तदुपरान्त । तब । (सर्वo) तेरे ।

ताहरो-(सर्वo) तेरा ।

ताहळी-दे० तासळी ।

ताहळो-दे० तासळो ।

तां-(सर्वo) उन । (क्रिoविo) तब ।

तांई-(अव्य०) १. तक । पर्यन्त । २. लिये । वास्ते । ३. पास । निकट ।

तांगड़-(नo) १. हाथी को बांधने का मोटा और लंबा रस्सा । २. एक पांव से चलने-दौड़ने का एक खेल ।

तांगी-(नाo) १. लड़खड़ाहट । २. बेहोशी । मूर्च्छा । ३. चक्कर ।

तांगो-(नo) एक घोड़े वाली सवारी गाड़ी । इक्का । एको ।

तांडणो-(क्रिo) १. सांड का शब्द करना । दहाड़ना । २. गर्जन करना । ३. तांडव नृत्य करना ।

तांत (नo) १. [illegible] । २. [illegible] ।

तांतियो-(नo) १. [illegible] । २. [illegible] । ३. [illegible] ।

[illegible]-दे० [illegible] ।

तांत-(नाo) १. तार । २. तंतु । ३. चाम को काटकर बनाई हुई डोरी । ४. [illegible] । ५. धुनाई का एक औजार । (विo) दुर्बल । पतला ।

तांतण (नo) १. धागा । डोरा । २. तार । ३. गले का एक गहना । ४. लंबी बात-चीत । ५. बात की लंबाई ।

तांतणो दे० तांतण ।

तांतरस-(नo) १. सितार, वीणा आदि तंतुवाद्य के बजाने का शौक । २. तंतु-वाद्य बजाने का व्यसन ।

तांतवो-(नo) मगरमच्छ ।

तांतियो-(नo) एक तनु घास ।

तांती-(नाo) १. तंतुवाद्य । २. तार वाद्य । ३. एक पांव में पहनी जाने वाली सोने या चांदी की तार जैसी एक पतली कड़ी । ४. किसी रोग या दोष निवारण के निमित्त किसी देवता की मान्यता का संकल्प करके पांव में पहनी जाने वाली तांत या पतली कड़ी । ५. पशुओं के मेले में या पोठ के पड़ाव डालने पर बैल आदि पशुओं को एक कतार में बांधना । पशुओं का पंक्तिबद्ध बंधन । एक लंबी रस्सी से अनेकों को बांधने की क्रिया । ६. कतार । पंक्ति ।

तांतू-दे० तांतवो ।

तांतो-(नo) १. तंतु । २. डोरा । धागा । ३. आंत की बनाई हुई डोरी । ४. लता बेल । ५. बात का लंबा सिलसिला । ६. बकवास । ७. श्रेणी । पंक्ति । ८. संबंध । रिश्ता । ९. वंश परम्परा । १०. बधण ।

तांँवड़ी–(वि०) १. वह सोना या चाँदी जिसमें तांबा मिला हुआ हो। २. तांबे के जैसे रंग वाला। (ना०) एक ताम्र पात्र।

तांँवड़ो–(न०) स्याह भाइल माणिक। काली भांई वाली चुन्नी। तामड़ा। (वि०) तांबे के जैसे जैसे वर्ण का।

तांँवागळ–(न०) १. बड़ा नगाड़ा। २. बड़ा ढोल। ३. ताम्र निर्मित ढोल या नगाड़ा। त्रंबागळ।

तांँवाड़णो–(क्रि०) गाय का रंभाना। रंभाना। रांभना।

तांँवाड़ो–(न०) गाय के रंभाने की आवाज।

तांँवापत्र–(न०) दान, पुरस्कार या किसी आज्ञा (पद, आधिपत्य, स्वत्व आदि का परवाना) का राज्य द्वारा दिया जाने वाला ताम्र पत्र पर अंकित प्रमाणपत्र। तांबापत्र रो परवाणो।

तांँवियो–(न०) १. तांँबे का तसला। २.तांबे की कलछी। ३. तांबे का पैसा। पइसो। पीसो।

तांँबेड़ो–(न०) तांबे का घड़ा। ताम्र कलश।

तांबेसर–(न०) ताम्र भस्म। तांँबा भसम।

तांँबो–(न०) ताम्र। तांँबा।

तांँ परि–(अव्य०) १. तब। २. इसके बाद। तदुपरान्त। तद। २. इस पर। इस बात पर।

तांँमस–(न०) १. क्रोध। २. चक्कर। ३. बेहोशी। ४. तमोगुण।

तांँ लग (अव्य०) तब तक। उठै तांई। वठै ताणी।

तांँ लगि–दे० तांँ लग।

ताहजो–(सर्व०) १. तुम्हारा। २. तेरा।

तिकड़म–(ना०) १. युक्ति। उपाय। २. चाल। ३. चालबाजी।

तिकड़मबाज–दे० तिकड़मी।

तिकड़मबाजी–(ना०)चालबाजी। चालाकी।

तिकड़मी–(वि०) चालबाजी से अपना काम बनाने वाला। चालबाज। धूर्त। चालबाज।

तिकण–(सर्व०) १. उण। २. वह। वो।

तिकणरो–(सर्व०)१. जिसका। २. उसका। उणरो।

तिकणसूं–(अव्य०)१.उससे। उसके द्वारा। २. इसलिये। तिणसूं।

तिकरि–(अव्य०) १. जिससे। २. के लिये।

तिकंध–(वि०) वीर। शूरवीर।

तिका–(सर्व०) १. वह। २. उस (स्त्री)।

तिकाळ–दे० त्रिकाळ।

तिकां–(सर्व०व०व०) १. उन्होंने। २. उन। ३. वे।

तिकांनूं–(सर्व०व०व०) जिनको। उणांनै। वांनै।

तिकी–(सर्व०ना०) वह।

तिकूण–(न०) तीनों कोण। त्रिकोण। दे० तिकूणो।

तिकूणो–(वि०)तीन कोनों वाला। त्रिकोण। तिखूणो।

तिके–(सर्व०व०व०) १. वे। २. उन।

तिको–(सर्व०) १. वह। २. उस।

तिकोणो–(वि०) जिसमें तीन कोने हों। तिकोना। त्रिकोण।

तिको-तो–(अव्य०) वह तो।

तिको स–दे० तिको।

तिकोस-तो–दे० तिको-तो।

तिखण–दे० तिखड।

तिखणो–दे० तिखंडो।

तिखंड–(न०) १. तीन मंजिल। २. घर की तीसरी मंजिल। तिपड़ो।

तिखंडो–(वि०) तीन मंजिल वाला। तिखंडा।

तिखूणियो–(वि०) तीन कोनों वाला। त्रिकोणाकार।

तिखूणो–दे० तिखूंटो।

तिखूंटो–दे० तिकोणो।

तिगम-(न०) १. धुंए । २. [illegible] ।

तिगार-(वि०) निर्मल । स्वच्छ । (द्रव पदार्थ) ।

तिगारी (ना०) [illegible] छिद्रदार पात्र ।

तिगारो-(न०) बड़ी तिगारी ।

तिगुणो-(वि०) तिगुना ।

तिगूमिगू-१. प्रायः अस्त होने वाला (सूर्य) २. थोड़ा सा (दिन) ।

तिघड़ियो-(न०) १. कलह । झगड़ा । २. तीन घड़ी का समय । (वि०) १ तीन घड़ी में बनने या होने वाला । २. तीन घड़ी का ।

तिजड़-(ना०) १ खड्ग । तलवार । २. कटारी ।

तिजड़हथ-(वि०) खड्गधारी ।

तिजाब-(न०) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल-सार जो ज्वलन शक्ति वाले पानी रूप में होता है । एसिड । अम्ल । तेजाब ।

तिजारो-(न०) १. खसखस । २. अफीम का पौधा । पोस्त । ३. पोस्त (खस-खस और उसका डोडा) को उबाल कर तैयार किया हुआ रस । पोस्त का कसूंबा । ४. तीन बार निकाला हुआ शराब । तिबारा । ५. तीसरे दिन आने वाला बुखार ।

तिजोरी-(ना०) रुपये और मूल्यवान गहने आदि रखने की लोहे की एक मजबूत आलमारी । तिजोरी ।

तिड़ -(ना०) १. क्रोध । २. टूटने की क्रिया या भाव । ३. टूटने का चिन्ह या रेखा । तेड़ । दे० घड़ो ।

तिड़कणो-(क्रि०)१. फटना । दरार पड़ना । २. पक जाने या सूख जाने पर फली आदि का फटना । ३. चूड़ी, घड़े आदि का टूटना । ४. क्रोध में जोर से बोलना या उत्तर देना ।

तिड़णो-(क्रि०)१. टूटना । २. बरतन आदि में टूटने की रेखा बनना ।

तिड़ावणो-(क्रि०) १. [illegible] । २. तुड़वाना । तेड़ावणो ।

तिड़ियोड़ो (वि०) १. टूटा हुआ । फूटा हुआ । २. वह जिसमें दरार पड़ गई हो । चटका हुआ ।

तिण-(सर्व०) उस । (न०) घास । तृण ।

तिणकणो-(क्रि०) क्रुद्ध होना । तुनकना । तजीजणो ।

तिणकलो-(न०) तृण । तिनका । तिणखो ।

तिणखलो-दे० तिणकलो ।

तिणको-दे० तिणखो ।

तिणखो-(न०) १. तृण । २. वृक्ष या घास की सींक । सींक । तिनका । ३. नाक में पहनने की छोटी सिली । फूली । सिळी । लूंग ।

तिणगियो-दे० तिळंगियो ।

तिण मात-(वि०) १. तिनके के समान । बहुत छोटा या हलका । २. तृण मात्र । बहुत थोड़ा । चिनियो सो ।

तिणरो-(सर्व०) उसका ।

तिणसूं-(अव्य०) १. उससे । २. इसलिये ।

तिणंग-दे० तिळंगियो ।

तिणंगियो-दे० तिळंगियो ।

तिणि-(सर्व०)१. उसने । उण । २. उससे । उणसूं । ३. उसको । उणनै । ४. वह । ५. उस । (अव्य०) इस कारण । इससे । इणसूं ।

तिणि कियै-(अव्य०)इसलिये । इस कारण । इण वास्ते ।

तिणै-(सर्व०)१. जिसने । २. उसने । उणै ।

तिणो-(न०) तृण । घास । खड़ ।

तित-(क्रि०वि०) उस जगह । वहाँ । उठ । ओथ । बठै ।

तितर-बितर-(अव्य०) अस्त-व्यस्त । इधर-उधर । (वि०) बिखरा हुआ । अव्यव-स्थित ।

तितरै–(अव्य०) १. इतने ही में। २. तब तक।

तितरो–(वि०) १. इतना। २. जितना। ३. उतना।

तिथ–(ना०) १. तिथि। चाँद्रमास का प्रत्येक दिन। दिनांक। मिती। २. संवत्सरी का दिन। पुण्य दिन। (न०) वृतान्त।

तिथना–(अव्य०) संबंध में सोचना।

तिथंकर–(न०) तीर्थंकर।

तिथि–दे० तिथ।

तिथिए–(क्रि०वि०) वहाँ। तहाँ। उठै। वठै। ओठै।

तिधारी–दे० त्रिधारी।

तिधारो–दे० त्रिधारो।

तिन्हाँ–(सर्व०) १. जिनकी। तिनकी। २. २. जिनको। उनको। ३. जिन्होंने।

तिपड़ो–(न०) घर की तीसरी मंजिल। तिखंड।

तिपाई–(ना०) तीन पायों का बना ऊंचा बाजोट या चौकी।

तिपोळियो–(न०) १. पास-पास में बने तीन बड़े द्वार। २. सिंहद्वार।

तिबारी–(ना०) १. बैठक। २. तीन बारियों वाला स्थान।

तिब्ब–(वि०) अतिशय। तीव्र।

तिब्बत–(न०) हिमालय के उत्तर में एक देश का नाम।

तिब्बर–दे० तीव्र।

तिम–(अव्य०) १. वैसा। वैसे। उस प्रकार। २. जैसा। जैसे। जिस प्रकार। ऊड़ो। वैड़ो। ओड़ो।

तिमची–दे० तिरमची।

तिमणियो–(न०) स्त्रियों के गले का एक गहना। पटियो। तेड़ियो।

तिमर–(न०) तिमिर। अंधेरा। अंधारो।

तिमरहर–(न०) सूर्य। सूरज।

तिमंगळ–(न०) १. बड़ा मत्स्य। तिमिंगिल। २. मगरमच्छ।

तिमंजलो–दे० तिखंडो।

तिमाही–(वि०) त्रिमासिक।

तिमि–दे० तिम।

तिमिर–(न०) अंधेरा। अंधारो।

तिय–(ना०) १. स्त्री। २. पत्नी। लुगाई। (सर्व०) उस। (वि०) तीन।

तियग–(न०) १. बंका वीर। २. तैलंग देश। तैलंगाना। ३. त्रिजग। त्रिजगत्। (वि०) १. टेढ़ा। २. बाँका। तिर्यक।

तिया–(ना०) १. स्त्री। २. पत्नी। त्रिया।

तियार–(सर्व०) उसका।

तियाळै–(सर्व०) १. तेरे। २. उसके। (अव्य०) उस समय।

तियोळा–(सर्व०) १. तेरा। २. उसका।

तियो–(न०) १. तीन का अंक '३'। २. मृतक का तीसरा दिन। ३. तीसरे दिन किया जाने वाला मृतक का क्रिया कर्म। ४. सम्वत् का तीसरा वर्ष। (वि०) १. तीसरा। २. तीन।

तियोतर–(वि०) तिहत्तर। सत्तर और तीन। (न०) तिहत्तर की संख्या। ७३.

तिर–दे० तिरखा।

तिरकाळ–दे० त्रिकाळ।

तिरखा–(ना०) तृषा। प्यास। तिरस। तिर।

तिरखूंटो–दे० तिकोणो या तिखूंटो।

तिरछो–(वि०) टेढ़ा। वक्र। तिरछा।

तिरजात–दे० त्रिजात।

तिरणो–(न०) १. तृण। घास। २. सूखी घास का टुकड़ा। तृण। तिनका। (क्रि०) १. तैरना। पैरना। २. पार जाना। पार होना। ३. उद्धार होना।

तिरप–(ना०) नृत्य का एक ताल। त्रिसम।

तिरपण–(न०) पितरों को तृप्त करने के लिये तिल-जौ मिश्रित जलांजलि। तर्पण।

तिरपत–दे० त्रिपत।

तिरपाठी–दे० त्रिवाड़ी।

तिरभाणी – (ना०) [illegible] पूजा आदि धार्मिक क्रियाओं में काम में आने वाली [illegible] एक तश्तरी । [illegible] ।

तिरप[illegible] – (न०) [illegible] ।

तिरपाळा–दे० [illegible] ।

तिरभाट (वि०) १. सर्वत्र [illegible] । हर जगह बदनाम । [illegible] । २. कुख्यात । बदनाम ।

तिरभेटो–दे० त्रिभेटो ।

तिरमची–(ना०) लकड़ी या लोहे की नली घड़ा आदि रखने की तिपाई ।

तिरलोक–दे० त्रिलोक ।

तिरवाडी–दे० त्रिवाडी ।

तिरवाळी (ना०) १. पानी के ऊपर तैरने वाली घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थों की थिरकन । तिरमिरा । २. चकाचौंध । ३. सिर घूमना । चक्कर । ४. मूर्च्छा ।

तिरवाळो–दे० तिरवाळी ।

तिरवेणी–दे० त्रिवेणी ।

तिरस–(ना०) तृष्णा । प्यास । तिरखा ।

तिरसकार–(न०) १. तिरस्कार । अनादर । २. धिक्कार ।

तिरसाँ मरतो–(वि०) १. प्यास से व्याकुल । २. इच्छावान ।

तिरसो–(वि०) प्यासा । तृषावंत । तिसियो ।

तिरिया–(ना०) १. त्रिया । स्त्री । नारी । २. पत्नी

तिरी–(ना०) तीन बूटी वाला ताश का पत्ता ।

तिल–(न०) १. एक धान्य जिसको पेर कर तेल निकाला जाता है । देव धान्य । तिल । २. शरीर पर तिल जितना काला चिन्ह । काले रंग का छोटा दाग ।

तिलक–(न०) १. केसर, चन्दन आदि से ललाट पर अंकित किया जाने वाला साम्प्रदायिक चिन्ह । टीका । तिलक । २. स्त्रियों के माथे का एक गहना । ३. [illegible] । (वि०) श्रेष्ठ । उत्तम । ४. [illegible] का एक [illegible] ।

तिलका[illegible] (ना०) १. [illegible] । २. वल्लभ-सम्प्रदाय के [illegible] ।

तिलकुटो (न०) कूटे हुए तिल और चीनी मिला हुआ एक खाद्य ।

तिलड़ी (ना०) १. स्त्रियों का एक आभूषण । २. तीन लड़ियों वाला हार ।

तिल-पापड़ो–(वि०) दुर्गी ।

तिल-पापड़ी–(ना०) गुड़ की चैथ या खांड की चासनी में तिलों को पगा कर बनाई हुई पपड़ी । तिलपट्टी । तिलपापड़ी । तिलवट ।

तिलमात–(वि०) १. तिलमात्र । तिलभर । २. अत्यन्त थोड़ा ।

तिलमात्र–दे० तिलमात ।

तिलमिलाणो–(क्रि०) पीड़ा के कारण विकल होना । तिलमिलाना । छटपटाना ।

तिलवट–(न०) नाश । दे० तिलपापड़ी ।

तिलवटी–दे० तिलपापड़ी ।

तिलवटो–(न०) तिल और शक्कर को कूट कर बनाया हुआ एक खाद्य । तिलौटा । सैलाणी ।

तिलवड़ी–(ना०) १. एक प्रकार की मुंगोड़ी जिसमें तिल मिलाये जाते है । २. एक वृक्ष ।

तिल संकरांत–(ना०) तिल खाने और दान करने का मकर सक्रांति पर्व । मकर सक्रान्ति ।

तिल-साकळी–(ना०) एक खस्ता पूरी जो गुड़ के पानी में तिल और आटा गूंध कर बनाई जाती है । साकळी ।

तिळंगियो–(न०) चिनगारी । आगियो ।

तिलंगी– (ना०) तैलगू भाषा ।

तिलंगो–(वि०) तैलंग प्रदेश का ।

तिलिया लाडू–(न०) तिल के लड्डू । तिलवा ।

तिलियो-(वि०) १. तिलों का। २. तिलों से सम्बन्धित।
तिलियो तेल-(न०) तिलों का तेल। मीठा तेल।
तिलेक-(वि०) तिल के जितना। बहुत थोड़ा।
तिलो-(न०) नपुंसकता नष्ट करने वाला तेल। तिल।
तिलोक-दे० त्रिलोक।
तिलोकी-दे० त्रिलोकी।
तिलोचण-(न०) १. एक सोनी भक्त। २. एक वैश्य भक्त। ३. शिव। महादेव। त्रिलोचन।
तिलोटो-दे० तिलकूटो।
तिलोड़-दे० तिलोर।
तिलोड़ी-(न०) नित्य काम में लिया जाने तेल का छोटा पात्र। नित्य प्रयोग का तेल पात्र। दीपक में तेल डालने का एक पात्र। **तेलोड़ी।**
तिलोर-(ना०) एक पक्षी।
तिल्ली-(ना०) १. पेट के भीतर की एक गाँठ। प्लीहा। २. तिल।
तिवाड़ी-(न०) ब्राह्मणों की एक उपजाति। तिवारी। त्रिपाठी।
तिस-(ना०)तृषा। प्यास। **तिरस।** (सर्व०) उस। उण। विण।
तिसटणो-(क्रि०) फलीभूत होना। फलप्रद होना। दे० तिस्ठणो।
तिसड़ी-(वि०) वैसी। तैसी। **वैड़ी।**
तिसड़ै-(क्रि०वि०) १. तब। २. त्योंही।
तिसड़ो-(वि०) वैसा। तैसा। **वैड़ो।**
तिसायो-दे० तिसियो।
तिसळणो-(क्रि०) फिसलना।
तिसाळू-(वि०) तृषावंत। प्यासा।
तिसियो-(वि०) तृषित। प्यासा। **तिरसो।**
तिसो-(वि०) वैसा। वैड़ो। ऊड़ो। **ओड़ो।**
तिस्ठणो-(क्रि०) १. लाभकारी होना। फलीभूत होना। २. भविष्य में शुभकारी होना। ३. स्थिर रहना। टिकना। ठहरना।
तिहत्तर-(वि०) सत्तर और तीन। (न०) तिहत्तर की संख्या। '७३'
तिहाई-(ना०) तृतीयांश। तीसरा भाग। तिहाव।
तिहाण-(न०) ऊंट पर तीन व्यक्तियों की सवारी। तेळा।
तिहाळै-दे० तियाळै।
तिहाळो-(सर्व०) तेरा। थारो।
तिहाव-दे० तिहाई।
तिहावलो-(न०) १. रुपये का तीसरा हिस्सा। २. तीसरा हिस्सा।
तिहाँ-(क्रि०वि०)यहाँ। उठै। वठै। (सर्व०) उनके। उणाँरै।
तिहि-(सर्व०) उसको।
तिहुअण-(न०) त्रिभुवन।
तिहु-(वि०) तीनों।
तिहुं भुवण-(न०) त्रिभुवन।
तिहोतर-दे० तिहत्तर।
तिहोतरो-(न०) तिहत्तरवाँ सम्वत्
तिंयाळी-दे० तियाळीस।
तिंयाळीस-(वि०) चालीस और तीन। (न०) ४३ की संख्या।
तिंयासी-(वि०) अस्सी और तीन। (न०) ८३ की संख्या।
तिंवरी-(ना०) झींगुर।
तिंवार-दे० तैवार। (अव्य०) उस समय।
तिंवारी-दे० तैवारी।
तिंवाळी-(ना०) १. बेहोशी। मूर्च्छा। २. सिर घूमना। चक्कर।
तिंवाळो-(न०) १. बेहोशी का चक्कर। २. बेहोशी। मूर्च्छा।
ती-(ना०) १. स्त्री। २. पत्नी। **तिया।** (वि०) १. तीन। २. तीसरा।

तीक्ष्ण-(वि०)१. तीखा । तेज धार वाला । २. तेज नोक वाला । ३. तीखे स्वाद वाला । ४. प्रखर । तेज । ५. उग्र । प्रचंड ।

तीख-(वि०) १. श्रेष्ठ । उत्तम । ऊपर । २. अग्र । ३. तीखा । तीखो । (ना०) १. श्रेष्ठता । विशेषता । २. अग्रता । ३. प्रतिष्ठा । मान । ४. ऊँचाई । बड़प्पन । ५. तीखापन । तीक्ष्णता । ६. ईर्ष्या ।

तीख-चोख-(ना०)१. श्रेष्ठता । विशेषता । २. जांच । परख । परीक्षा । ३. प्रतिष्ठा । मान ।

तीखट-(वि०) तीक्ष्ण ।

तीखड़ी बोर-(न०)एक प्रकार के लंबे और नोक वाले स्वादिष्ट बेर ।

तीखण-(न०) लोहा । दे० तीक्ष्ण ।

तीखास-(न०) तीखापन । तीखापणो ।

तीखूणो-दे० तिखूणो ।

तीखो-(वि०) १. तीक्ष्ण । तेज नोक या धार वाला । २. चरपरे स्वाद वाला । ३. उग्र । ४. अधिक । ५. अच्छा । चढतो ।

तीखो-आँक-दे० चढतो आँक ।

तीखोली-(ना०)१. पर्वत शृंग । पहाड़ की चोटी । २. वृक्ष की चोटी । वृक्ष की सबसे ऊँची चोटी ।

तीग-(ना०) दृष्टि । नजर ।

तीगणो-(क्रि०) देखना । जोवणो ।

तीछेर-(न०) एक छोटा भाला ।

तीज-(ना०)१. पक्ष का तीसरा दिन । चांद्र मास के दोनों पक्षों का तीसरा दिन । २. श्रावण शुक्ल पक्ष और भादो कृष्ण पक्ष की तृतीया-तिथियों को मनाया जाने वाला महिलाओं के वर्षा कालीन राग-रंग का उत्सव । ३. तीज के लोक गीत ।

तीजण-दे० तीजणी ।

तीजणी-(ना०) चैत्र सुदी ३, श्रावण शु. ३ और भादो कृ. ३ के त्योहारों को मनाने वाली कन्या व सौभाग्यवती स्त्री ।

तीज-तिवार-दे० तीज-तेवार ।

तीज-तेवार-(न०) १. तीज, सावन-भादों की तीजें और हिंदुओं के अन्य त्योहार २. त्योहार ।

तीजवर-(न०) तीसरी बार विवाह करने करने वाला या किया हुआ पुरुष ।

तीजियाण-(वि०) वह (गाय, भैंस आदि) जिसने तीसरा बच्चा दिया हो ।

तीजी-(वि०) तीसरी ।

तीजीताळ-(क्रिoवि०) १. अतिशीघ्र । उसी समय । २. तीसरी ताली बजाते ही ।

तीजीताळी-दे० तीजीताळ ।

तीजो-(वि०) १. तीसरा । तृतीय । २. अन्य । पराया ।

तीजोड़ी-(वि०) तीसरी ।

तीजोड़ो-(वि०) तीसरा ।

तीजो-पोहर-(न०) १. तीसरा पहर । २. सायंकाल के पहले का समय । ढळतो दिन ।

तीट-(ना०) १. संकट । २. कैद । (उ० तोड़ण मामा तीठ, आयो दोसै ऊगलो ।)

तीण-(न०) १. चरस । मोट । २. बैलों द्वारा चरस को खिचवाकर सिंचाई के लिए पानी निकाला जाने वाला कुँआ । ३. बैलों द्वारा चरस खिंचवाया जाकर कुँएँ में से पानी निकालने की क्रिया । ४. पँक्ति । कतार । लैण ।

तीणो-(न०) १. बारीक सुराख । २. छेद । सुराख । ठींडो ।

तीत-(न०) छोटा बच्चा । (वि०) बीता हुआ । अतीत ।

तीतर-(न०) एक पक्षी ।

तीधर-(न०) तीसरी धरती । विदेश । परदेश । (क्रिoवि०) कहीं । किधर भी ।

तीन–*(वि०)* दो और एक। *(न०)* तीन की संख्या। '३'

तीन-पाँच–*(ना०)* १ शेखी। २. मिजाज।

तीन-वीसी–*(वि०)* साठ। उनसठ और एक। पचास और दस।

तीव–*(ना०)* १. एक गहना। २. चूड़ियों की पत्तियों की जोड़ का एक गहना। ३. फटे हुये वस्त्र के दिये जाने वाला टाँका। ४. सिलाई। ५. जोड़। ६. टाँका।

तीवणो–*(क्रि०)* वस्त्र में टाँका लगाना।

तीव्र–*(वि०)* १. बहुत तेज। तीव्र। २. तीक्ष्ण। ३. असह्य। ४. उग्र। ५. जोरदार।

तीव्रबुद्धि–*(वि०)* मेधावी। तेज बुद्धिवाला।

तीमो–*(ना०)* १. स्त्री। औरत। तीवई। २. पत्नी। लुगाई।

तीयो–दे० तियो।

तीर–*(न०)* १. नदी, तालाब आदि का किनारा। २. बाण। शर।

तीरकस–*(न०)* १ मकान या परकोटे की दीवाल में बने वे छेद जिनमें से तीर या बंदूक की गोली चलाई जाती है। २. बाणों का भाथा।

तीरकारी–*(ना०)* १. तीरों का युद्ध। बाण युद्ध।। २. तीर चलाने की क्रिया।

तीरगर–*(न०)* बाण बनाने वाला।

तीरथ–*(न०)* १. तीर्थ। पुण्य स्थान। २. किसी पवित्र नदी (गंगा यमुना आदि) के किनारे बना धर्म-स्थान। ३. दसनामी संन्यासियों का एक नामाभिभेद। ४. संन्यासियों की एक उपाधि।

तीरथ-चड़कूलिया–दे० तीरथ-व्रत।

तीरथराज–*(न०)* प्रयाग। तीर्थराज।

तीरथ-वरतोलिया–दे० तीरथ-व्रत।

तीरथ-व्रत–*(न०)* १. तीर्थ और व्रत। २. तीर्थ यात्रा के धार्मिक नियम-व्रत। ३. तीर्थ यात्रा के समय किये जाने वाले व्रत-उपवास आदि।

तीरवारा–दे० तीरवारी।

तीरवारी–*(ना०व०व०)* १. दुर्ग के परकोटे और बुर्ज में बनी वह छिद्र पंक्ति जिनमें होकर दुर्ग को घेरे हुए शत्रु दल पर तीर अथवा बंदूक की गोलियाँ चलाई जाती हैं। तीरकस। २. तीरों का चलना। तीर चलने की क्रिया।

तीरवा–*(ना०)*बाण छोड़ने पर वह जितना दूर जा सके उतना अन्तर। तीर वाह।

तीरवाह–दे० तीरवा।

तीरंदाज–*(वि०)* १. तीर छोड़ने में कुशल। २. निशाना बाज।

तीरंबाज–दे० तीरंदाज।

तीरे–*(क्रि०वि०)* १. किनारे। २. पास। निकट। ३. बाद। पीछे।

तीर्थ–दे० तीरथ।

तीर्थस्थान–*(न०)* तीर्थयात्रा करने योग्य पवित्र धार्मिक स्थान। यात्राधाम।

तीर्थरूप–*(वि०)* १. पूज्य। २. पवित्र। *(अव्य०)* पिता आदि गुरुजनों के लिये (पत्रादि में) प्रयुक्त किया जाने वाला आदर सूचक शब्द।

तील–*(ना०)* १. अंगिया। कंचुकी। २. एक गहना।

तीवट–*(न०)* वाद्य और संगीत का एक ताल। त्रिवट। त्रिताल।

तीवरण–*(न०)* १. दाल, कढ़ी आदि साग। रसेदार तरकारी। २. व्यंजन। नमकीन भोज्य पदार्थ।

तीस–*(वि०)* बीस और दस। *(न०)* तीस की संख्या। '३०'

तीसमार–दे० तीसमारखाँ।

तीसमारखो–तीसमारखाँ।

तीसमारखाँ–*(वि०)*१. अपने आपको बहादुर समझने वाला। २. शेखी मारने वाला।

तीसरो-(वि०)१.तीसरा । तृतीय । तीजो । २.जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई प्रत्यक्ष संबन्ध न हो । दूर का । ३.अन्य । अप्रत्यक्ष । (न०) १. मृतक का तीसरा दिन । २. मृतक का तीसरे दिन किया जाने वाला क्रिया कर्म ।

तीसूं-(अव्य०) १. इसलिये । २. इससे ।

तीसो-ही-दिन-(वि०) तीस ही दिन । मास के तीस दिन में कभी त्रुटि नहीं । अंतर रहित । निरंतर । लगातार ।

तींड-(न०) टिड्डी । टींड ।

तींरो-(सर्व०) १. जिसका । उसका ।

तु-(सर्व०) १. तेरा । २. मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम । तू (अशिष्ट)

तुअ-(सर्व०) तेरा । तुव ।

तुअर-(न०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल बनती है । अरहर ।

तुआळो-(सर्व०) तेरा । थारो ।

तुइजणो-(क्रि०) गाय, भैंस आदि का गर्भ-पात होना ।

तुक-(ना०) १. कविता, पद या गीत की एक कड़ी । २. पद्य के दोनों चरणों के अंतिम अक्षरों (शब्द) की मात्राओं का परस्पर मेल । ३. दो बातों या कामों का पारस्परिक सामंजस्य । ४ विषय । बात । ५. मतैक्य । ६. मन । विचार । ७. युक्ति । तजवीज । तरकीब ।

तुकबंदी-(ना०) केवल तुक मिलाकर बनाई जाने वाली कविता । काव्यगुण से रहित कविता । तुकबंदी । भद्दी कविता ।

तुकमो-(न०) तमगा । पदक ।

तुकांत-(न०) अन्त्यानुप्रास । काफिया ।

तुक्की-(ना०) तजवीज । व्यवस्था । युक्ति ।

तुक्को-(न०) १. बिना फल का बाण । २. मोठा तीर । ३.बाण । तीर । ४. होना । बसीला । ५.बिना वसीले या बिना विशेष प्रयत्न के काम का बन जाना । ६. लतीफा । चुटकला । ७. मन की तरंग । ८. गप्प ।

तुखम-(न०) १. बीज । तुख्म । २. वीर्य । ३. वंश । कुल ।

तुखम-तासीर-(न०) १. बीज का प्रभाव । २. कुल का प्रभाव । तुख्मे तासीर ।

तुखार-(न०) हिमकण । पाला । तुषार ।

तुग-दे० तुक सं० ६, ७ ।

तुगल-(ना०) कान की बाली । वाळी ।

तुगियाँ-(ना०ब०व०)१. दाढ़ी-मूंछ के बाल । २. दाढ़ी-मूंछ के छितरे हुए (घने नहीं) बाल ।

तुचा-(ना०) त्वचा । चमड़ी । चामड़ी ।

तुच्छ-(वि०) १. थोडा । अल्प । २. निकृष्ट । क्षुद्र । ओछा ।

तुज-दे० तुझ ।

तुजीह-(ना०) १. धनुष की डोरी । प्रत्यंचा । २. धनुष ।

तुझ-(सर्व०) 'तू' का विभक्ति पूर्व का रूप ।

तुड़िताण-(वि०) १. रक्षक । उद्धारक । त्रुटित्राण । २. प्रतापी । तेजस्वी । ३. शक्तिशाली । ४. त्वरित तान । (न०) १. वंगज । २. श्रेष्ठ वीर । जबरदस्त वीर । (क्रि०वि०) शीघ्र । त्वरित । झट ।

तुणको-दे० तिणको ।

तुणणो-(क्रि०) फटे वस्त्र में तुनाई करना । रफू करना ।

तुणाई-(ना०) रफू करने का काम या उसकी उजरत ।

तुणारो-(न०) तुनने का काम करने वाला । रफूगर ।

तुणावणो-(क्रि०) तुणाई करवाना । रफू कर वाना ।

तुनां-(सर्व०) १. तुझे । तेरे को । थनै । २. तेरा । थारो ।

तुपक-(ना०) १. एक प्रकार की तोप । तुफंग । २. छोटी तोप । ३. बंदूक ।

तुवड़छ–(न०) टुकड़ा ।
तुम–(सर्व०) 'तू' का आदरार्थी रूप ।
तुमख–(ना०) रीस । क्रोध ।
तुमत–(ना०) दोषारोपण । तोहमत ।
तुमर–दे० तुंवर ।
तुमार–(न०) अनुमान । अटकळ ।
तुमां–(सर्व०) तुम ।
तुमीणो–(सर्व०) तुम्हारा । थांरो । थाँको ।
तुमुल–(न०) घोर ध्वनि । (वि०) तीव्र । प्रचंड । घोर ।
तुम्मर–दे० तुंवर ।
तुरक–(न०) १. मुसलमान । २. तुर्क ।
तुरकणी–(ना०) १. मुसलमान स्त्री । २. तुर्क स्त्री ।
तुरकाणी–(ना०) १. तुर्कों का राज्य । मुसलमानी सत्ता । २.तुर्क स्त्री। तुरकणी ।
तुरकाणो–(न०) १. मुसलमान संस्कृति । तुर्कों का राज्य ।
तुरकी–(वि०) १. तुर्क देश का । २. तुर्की से संबंधित । (ना०) तुर्की भाषा ।
तुरग–(न०) १. घोड़ा । तुरंग । (वि०) शीघ्रगामी ।
तुरगाळ–(न०) १. अश्वदल । २. घोड़ा ।
तुरगी–(ना०) घोड़ी ।
तुरत–(प्रत्य०) जल्दी । तुरंत । झट ।
तुरत बुद्धि–(न०) प्रत्युत्पन्नमति ।
तुरतरियो–(न०) पकौड़ा । बड़ा ।
तुरप–ताश के खेल में सबसे प्रधान मान लिया जाने वाला रंग । तुरुप ।
तुरपणो–(क्रि०) हाथ की सिलाई करना । तुरपाई करना ।
तुरपाई–(ना०)१.हाथ से की जाने वाली एक प्रकार की सिलाई ।हाथ से की जाने वाली बारीक सिलाई । २. बढ़िया सिलाई ।
तुरम–(न०) एक वाद्य ।
तुररी–(ना०) १. एक फूंक वाद्य । तुरी । २. छोटा तुर्रा ।
तुररो–(न०) १. जरतारी (के असंख्य तार समूह) का गोलाकार एक गुच्छा जो राजा या दूल्हे की पगड़ी में लगाया जाता है । तुर्रा ।
तुरल–(न०) १. वातचक्र । बवंडर । २. आँधी ।
तुरस–(वि०) खट्टा । (ना०) १ खटाई । २. दही ।
तुरसघट–(न०) दधिघट । दही की मटकी ।
तुरसाई–(ना०) १. खटाई । तुर्शी । २. सुस्वाद ।
तुरही–(ना०) फूंक कर बजाने का एक बाजा ।
तुरंग–दे० तुरग ।
तुरंग वदन–(न०) किन्नर ।
तुरंगाण–दे० तुरगाळ ।
तुरंगी–दे० तुरगी ।
तुरंत–दे० तुरत ।
तुराट–(न०ब०व०) १. घोड़े । अश्वसमूह । २. घोड़ा ।
तुरियंद–(न०) घोड़ा । अश्व ।
तुरिया–(वि०) चौथा । चतुर्थ । तुरीय । (ना०) १. अज्ञानता से प्राप्त चेतनता का आधार । २. जीव की एक अवस्था । चौथी अवस्था । तुरीय अवस्था । अंतिम अवस्था । ३. आत्मा या प्राणी की ब्रह्म में लीन अवस्था । ४ वाणी का वह रूप या अवस्था जब वह मुख में आकर उच्चरित होती है । वाणी का मुँह से उच्चरित रूप । वैखरी । ५ घोड़ी । (न०) निर्गुण ब्रह्म । ब्रह्म ।
तुरी–(न०) १. घोड़ा । २. तुरही नामक वाद्य । तुरही । ३. छोटा तुर्रा । ४. जरतारी का तार । जरतार । ५ मोतियों की लड़ियों का फूंदा । ६. फूलों का गुच्छा ।
तुरीय–(ना०)१.वाणी का मुँह से उच्चरित रूप । वैखरी। २.आत्मा या प्राणी की ब्रह्म

तुंडी–*(न०)* १. गणपति । गजानन । २. हाथी । *(ना०)* नाभि । टुंडी । सूंटी ।

तुंदिक–दे० तुंदी ।

तुंदिभ–दे० तुंदी ।

तुंदी–*(वि०)* तोंदवाला ।

तुंवरा–*(ना०)* तूंबे की बेल ।

तुंवर–*(न०)* १. एक वाद्य । २. इकतारा । तंबूरा । ३. किन्नर । ४. गंधर्व । तुंबुरु । ५. देवता ।

तूकारो–दे० तूंकारो ।

तूजी–दे० तुजीह ।

तूझ–*(सर्व०)* १. तेरा । थारो । २. तू ही । थूंहिज ।

तूटक–*(वि०)* १. खंडित । त्रुटित । २. अपूर्ण । अधूरो । ३. पृथक । अलग-अलग । ४. बिछुड़ा हुआ । बिखरा हुआ । अलग होगया हुआ ।

तूटणो–दे० टूटणो ।

तूटफूट–दे० टूटफूट ।

तूठणो–*(क्रि०)* १.प्रसन्न होना । खुश होना । २. तुष्टमान होना । ३. अनुकूल होना ।

तूण–*(न०)* १. तीर रखने का भाता । २. रफू । तुनना ।

तूणणो–*(क्रि०)* रफू करना । तुनना ।

तूणारो–*(न०)* कपड़ों को रफू करने वाला रफूगर ।

तूणीर–*(न०)* तीर रखने का चोंगा । भाता । तरकश । निषंग ।

तू-तड़ाको–*(न०)* १. बोलचाल । वाग्युद्ध । बोलाचाली । चड़भड़ । २. मारामारी । ३. लड़ाई-झगड़ा ।

तूतरियो–*(वि०)* नीच । ओछो । *(न०)* कुत्ता ।

तूती–*(ना०)* १. मुंह से बजाया जाने वाला एक बाजा । २. एक चिड़िया । ३. पानी आदि की पतली धार । तूंती । ४. तू-तू मैं-मैं । झगड़ा ।

तूतू–*(अव्य०)* कुत्ते को बुलाने का उद्गार । *(न०)* कुत्ता (बालभाषा में ।

तू-तू मैं-मैं–*(अव्य०)* १.बोलचाल । वाग्युद्ध । २. मारामारी ।

तूनां–*(सर्व०)* १. तेरे को । २. तेरे से ।

तूप–*(न०)* घी । घृत ।

तूर–*(न०)* १. एक फूंक वाद्य । तुरही । शहनाई । २. एक द्विदल नाज । तूअर । अरहर ।

तूल–*(वि०)* तुल्य । समान । *(ना०)* रूई ।

तूळी–*(ना०)* दियासलाई । तीली ।

तूस–*(न०)* १. इंद्रायण का फल । २. समझ । बुद्धि । ३. प्रसन्नता ।

तूसड़ो–दे० तसतूंबो ।

तूसणो–*(क्रि०)* १. गाय, भैंस आदि का दूध देना बंद कर देना । २. गाय, भैंस आदि का गर्भस्राव होना । ३ प्रसन्न होना । तुइजणो । तूहणो ।

तूहड़ो–दे० तसतूंबो । तूस सं० १ ।

तूहणो–दे० तूसणो ।

तूं–*(सर्व०)* तू ।

तूंकारो–*(न०)* १. किसी को 'तू' कह कर के संबोधन करने का शब्द । 'तू' संबोधन । २. अपमानजनक संबोधन । अशिष्ट संबोधन । ३. 'तू' कह कर के बतलाने का भाव ।

तूंग–*(ना०)* १. मदिरा पात्र । १. अग्नि-कण । आग की चिनगारी ।

तूंगियो–*(न०)* अग्निकण । चिनगारी ।

तूंगो–*(न०)* १. सेना का एक भाग । सेना की एक टुकड़ी । २. यात्रा में साथ वालों का अलग-अलग हो जाने से बनने वाली एक-एक भाग की इकाई ।

तूंडो–दे० टूंडो ।

तूंतड़ी–*(ना०)* मुंह से बजाया जाने वाला एक धीमी आवाज का वाद्य ।

तूं-तणी-(सर्व०) तेरी ।

तूंतणी-(ना०) सूतनलिका । शिश्न । व्यंग्य में) ।

तूं-तणै-(सर्व०) तेरे ।

तूं-तणो-(सर्व०) तेरा ।

तूंतणो-देखो तांतणो ।

तूंती-(ना०) १. मुंह से बजाया जाने वाला एक वाद्य । २. पानी की पतली धार । ३. मूत्रधारा ।

तूं-थी-ज-(अव्य०) तेरे से ही । तेरे द्वारा ही ।

तूंबड़ी-(ना०) तुंबी । कमंडल ।

तूंबी-(ना०) तूंबी बेल का फल । लउग्रा । २. सूखा लउग्रा फल, जिसका साधु लोग जलपात्र बनाते है । तुमड़ी । तुंबिया । कमंडल ।

तूंबो-(न०) १. तूंबा । २. तूंबा फल को खोखला कर के बनाया हुग्रा जल पात्र । ३. लउग्रा या लोका का सूखा फल जो हलका होता है और पानी में तैरने के समय पास रखा जाता है ।

तृण-(न०) १. तिनका । २. घास ।

तृतीय-(वि०) तीसरा ।

तृतीया-(ना०) पक्ष की तीसरी तिथि । तीज ।

तृप्त-(वि०) १. संतुष्ट । २. प्रसन्न ।

तृप्ति-(ना०) १. इच्छा पूर्ति । संतोष । २. प्रसन्नता ।

तृषा-(ना०) १. प्यास । २. इच्छा । ३. लोभ ।

तृषावंत-(वि०) प्यासा ।

तृष्णा-(ना०) १. प्यास । २. लोभ । ३. किसी वस्तु को पाने की तीव्र इच्छा ।

ते-(सर्व०) १. वह । २. वे । ३. उसको । उसे । ४. उसके । ५. जिस । ६. उस । (अव्य०) १ इससे । २. अतः । इसलिये ।

तेईस-(न०) '२३' की संख्या । (वि०) बीस और तीन ।

तेउ-(सर्व०)१. उस । २. उसका । ३. वह ।

तेस-(न०) १. अभिमान । मजाज । २. रीस । क्रोध । ३. रूठना । रूठणा । नाराजी ।

तेगड़-(ना०) तीन जनों साथ । तीन की टोली ।

तेखणो-(क्रि०) १. नाराज होना । २. गुस्सा करना । रीस करणी । ३. देखना । पेखना । देखणो ।

तेखळ-(न०) १. तीन जनों का साथ । तीन की टोली । २. अशुभ समझी जाने वाली तीन वस्तुओं का समूह । ३. घोड़ा ऊँट आदि के पैरों को बांधने की मोटी सांकळ या रस्सी । ४. घोड़ा, ऊँट आदि के तीन पैरों को बांधने की क्रिया या भाव ।

तेखीलो-(वि०) १. जल्दी-जल्दी नाराज हो जाने वाला । रीसटियो । २. साधारण बात के लिये नाराज हो जाने की आदत वाला ।

तेग-(ना०) तलवार ।

तेगाळ-(वि०) खड्गधारी । योद्धा । (ना०) तेग । तलवार ।

तेगियां-तिलक-(न०) १. शूरवीरों में श्रेष्ठ शूरवीर । २. शस्त्र धारण करने वालों में श्रेष्ठ वीर पुरुष ।

तेगी-(वि०)१. तीक्ष्ण धार वाली(तलवार)। २. क्रोधी । ३. तलवारधारी ।

तेगो-(न०)१.तेग । तलवार । २. बाँकापन । टेढ़ापन । ३. भाटी राजपूत । (वि०) १. जोशीला । तेज । उग्र । २. शूरवीर । बहादुर ।

तेघड़-(ना०) पैर का एक गहना ।

तेज-(न०) १. प्रकाश । २. आतंक । ३. प्रभाव । सामर्थ्य । ४. पराक्रम । ५. तीक्ष्णता । ६. वीर्य । ७. स्वर्ण । सोना ।

८ पंच महाभूतों में अग्नि तत्व । तेज । ९. अग्नि । *(वि०)* १. तीक्ष्ण धारवाला । २. द्रुतगामी । ३. महँगा । ४. गरम मिजाज । उग्र । ५. फुरतीला । ६. चपल । चंचल । ७. चमकीला । ८. शीघ्र प्रभाव डालने वाला ।

तेज-अंवार–*(न०)* १. तेजपुंज । २. सूर्य । ३. ईश्वर ।

तेजण–*(ना०)* घोड़ी । अश्वा । अश्विनी । *(वि०)* नखरेवाली । **नखराळी** ।

तेजरो–*(न०)*तीसरे दिन आने वाला बुखार । **तेजरो ताव** ।

तेजळ–दे० तेजण ।

तेजवंत–*(वि०)* तेजस्वी ।

तेजवान–दे० तेजवंत ।

तेजस–*(न०)* १. सूर्य । २. रुद्र । महादेव । ३. वीर्य । *(वि०)* तेजस्वी ।

तेजसी–*(वि०)* तेजस्वी । प्रतिभावान । कांतिवान ।

तेजस्वी–दे० तेजसी ।

तेजागळ–*(वि०)*तेज गति वाला । तेज गति से दौड़ने वाला । *(न०)* घोड़ा ।

तेजाव–दे० तिजाव ।

तेजावी–*(वि०)* १ तेजाव से सम्बन्धित । २. तेजाव द्वारा शोधित (सोना, चाँदी आदि) ।

तेजाळ–*(वि०)* १. तेजवाला । तेजस्वी । २. तेज गति वाला । ३. उग्र । क्रोधी । *(न०)* १. सूर्य । २. घोड़ा ।

तेजी–*(ना०)*१. भावों का बढ़ना । महँगाई । महँगी । मुर्खी । २. शीघ्रता । तीव्रगति । ३. स्फूर्ति । उत्साह । हौसला । ४. उग्रता । ५. क्रोध । ६. गरमी । उष्णता । *(न०)* घोड़ा । अश्व।

तेजो–*(न०)* नागोर जिले के खड़नाळ में हुआ एक प्रसिद्ध जूझार जाट वीर । २. तेजा की सत्यनिष्ठा, परोपकार परायणता और वीरता का एक लोक गीत ।

तेड़–*(ना०)* १. दरार । फटन । फटाव । रा । २. रेखा । ३. भग । योनि । (लक्षणा-व्यंग्य । ४. निमंत्रण । **तेड़ो** ।

तेड़णो–*(क्रि०)* १. बच्चे को कमर पर उठाना । २. बुलाना । निमंत्रण देना । न्योतना ।

तेड़ागर–*(वि०)*१. निमंत्रण देने वाला । २. जिसको निमंत्रण दिया गया है । ३. जो निमंत्रण देने से आया है । निमंत्रित । ४. बालक को कंधे या पीठ पर उठाने वाला ।

तेड़ावणो–*(क्रि०)* १. बुलवाना । निमंत्रित करना । २. कमर में उठावना (बच्चे को) ।

तेड़ियो–*(न०)* स्त्रियों के गले में पहिनने का एक आभूषण । **तिमणियो** । **मूंठ** ।

तेड़ो–*(न०)* निमंत्रण । न्योता । बुलावा । **नैतो** ।

तेण–*(सर्व०)* १. उस । २. उसी । उस ही । ३. उसे । उसको । *(क्रि०वि०)* अतः अत-एव । इसलिये । इससे । **इणसूं** ।

तेणि–दे० तेण ।

तेतलो–*(वि०)* उतना ।

तेता–*(वि०)*उतने । **उतरा** । **उत्ता** । **वतरा** । दे० त्रेता ।

तेतीस–*(वि०)* तीस और तीन । *(न०)*'३३' की संख्या ।

तेते–*(वि०)* उतने । तेता । **उतरा** । **उत्ता** ।

तेतो–*(वि०)* उतना । **उतरो** । **उत्तो** । **वतरो** ।

तेथ–*(क्रि०वि०)* वहां । **उठै** । **वठै** । **ओथ** ।

तेथी–*(क्रि०वि०)* १. जिससे । २. उससे । **ठणसूं** ।

ते दी–*(अव्य०)* उस दिन ।

तेदीह–दे० ते दी ।

तेपन–*(वि०)*पचास और तीन । *(न०)*'५३' की संख्या ।

तेम–*(अव्य०)* १. तैसे । उसी प्रकार ।

तेमड़ाराय-(*ना०*) चारणों की आवड़देवी। आवड़ देवी का एक नाम।

तेयो-(*न०*) मृतक का तीसरा। मृतक के तीसरे दिन की क्रिया। **तीयो। तीसरो।**

तेरस-(*ना०*)पक्ष का तेरहवां दिन। तेरहवीं तिथि। त्रयोदशी।

तेरह-(*वि०*) दस और तीन। (*न०*) तेरह की संख्या। '१३'

तेरह ताळी-(*ना०*)१. एक ही व्यक्ति के द्वारा तेरह मजीरे एक साथ बजाने की कला। २. एक नृत्य।

तेरह पंथ-दे० तेरा पंथ।

तेरह पंथी-दे० तेरापंथी।

तेरह बीसी-(*वि०*) तेरह बार बीस। दोयसो साठ।

तेराक-दे० तेरू।

तेरापंथ-(*न०*) बाईस टोला (स्थानकवासी) जैन सम्प्रदाय से अलग होकर तेरह साधुओं के द्वारा प्रवर्तित एक श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय। **तेरहपंथ।** इसके प्रथम आचार्य भिक्खुगणि थे।

तेरापंथी-(*वि०*) तेरहपंथ संप्रदाय का अनुयायी। **तेरह पंथी।**

तेरायल-(*वि०*) १. वर्णसंकर। दोगला। २. महानालायक। ३. दुराचारी। व्यभिचारी। (*न०*) एक गाली।

तेराळ-(*वि०*) १. कुलटा। व्यभिचारिणी। दुराचारिणी। २. दुराचारी। दे० तेरायल।

तेरी-दे० थारी।

तेरीख-(*ना०*) १. व्याज की दर। २. व्याज गिनने का दिन। व्याज लगाने का दिन। ३. व्याज के दिनों का नाम। ४. तारीख। **मिती।**

तेरू-(*वि०*) तैरने वाला। तिरने वाला। तैराक। कुशल तैराक।

तेरूंडो-(*न०*) १. मकर सक्रान्ति को तेरह कन्याओं को एक ही प्रकार की वस्तु भेंट देकर मनाया जाने वाला स्त्रियों का एक उद्यापन पर्व। २. तेरूंडे में दी जाने वाली वस्तु। ३. तेरूंडे का भोजन।

तेरो-(*सर्व०*) तेरा। **थारो। थाको।**

तेल-(*न०*) १. तिल, सरसों आदि तिलहन को पेल कर निकाला जाने वाला स्निग्ध तरल पदार्थ। वह स्निग्ध पदार्थ जो बीजों में से निकाला जाता है। २. जलाने के काम आने वाला एक खनिज पदार्थ। घास तेल। केरोसीन।

तेल चढणो-(*मुहा०*) विवाह की एक प्रथा जिसमें पाणिग्रहण के कुछ दिन पूर्व वर और कन्या के हलदी मिला तेल चढ़ाया जाता है।

तेल चढियो-(*वि०*) तेल चढा हुआ (वर)।

तेल चढी-(*ना०*) वर या कन्या के तेल चढाने का उत्सव। (*वि०*) तेल चढी हुई (कन्या)।

तेल चढ्यो-दे० तेल चढियो।

तेलड़ी-(*वि०*) १. तीन लड़ियों वाली। २. तीन परतों वाली। (*ना०*) १. दीपक में तेल डालने का तेल पात्र। **तिलोड़ी।** २. स्त्रियों का एक आभूषण।

तेलड़ो-(*वि०*) १. तीन लड़ियों वाला। २. तीन परतों वाला।

तेलण-(*ना०*) १. तेली की स्त्री। २. तेली जाति की स्त्री।

तेल फुलेल-(*न०*) सुगन्धित तेल और इत्र।

तेळा-(*न०ब०व०*) १. ऊँट के ऊपर की जाने वाली तीन जनों की सवारी। २. तीन दिन का उपवास।

तेळायो-(*वि०*) जिस पर तीन जनों की सवारी की गई हो (ऊँट)।

तेळास-(*ना०*) ऊँट के ऊपर एक साथ की जाने वाली तीन जनों की सवारी।

तेलियो–(वि०) १. तेल के रंग का। काले रंग का (ऊँट)। २ तेल वाला। तेल से बना चिकना। ३. तेल में भिगा हुआ। तेल से तर।

तेली–(न०) तेल पेरने और बेचने वाला। घाँची। २. तेली जाति का मनुष्य।

तेलो–(न०) १. त्रिरात्र व्रत। २. तीन दिन का उपवास।

तेलोड़ी–(ना०) वह तेल-पात्र, जिससे दीपक में तेल डाला जाता है। तिलोड़ी।

तेवटियो–(न०) १. स्त्रियों के गले का एक गहना। २. लंबाई में जिसके तीन पट्टियाँ जुडी हुई हों ऐसा ओढ़ने का या धोती की जगह काम में लिया जाने वाला पुरुष का एक वस्त्र।

तेवटो–दे० तेवटियो।

तेवड़–(ना०) १. हैसियत। सामर्थ्य। २. मितव्ययिता। किफायत। ३. तजवीज। व्यवस्था। ४. प्रबंध। बंदोबस्त। ५. तैयारी। ६. तत्परता। ७. सजावट। ८. सार सम्हाल। देखरेख। ९. व्यंजन। १०. तीन परत। त्रिपट। (वि०)१. तीन परत वाला। २. तिगुना।

तेवड़णो–(क्रि०) १. व्यवस्था करना। २. मितव्यता से खर्च करना। ३. फालतू खर्च नहीं करना। ४. सावधानी से गृहस्थी चलाना। ५. इरादा करना। विचार करना। ६ निश्चय करना।

तेवड़ो–(वि०) १. तिगुना। २ तिहरा। तीन परतों वाला।

तेवणो–(क्रि०) कुँएँ में से चरस द्वारा पानी निकालना।

तेवर–(ना०) १. ललाट के तीन बल या सिलवट। त्योरी। २. भ्रूभंग। भृकुटी। तेवरी।

तेवाहण–(न०) १. हाथी, घोड़ा और रथ तीनों वाहन। त्रैवाहन। २. ऊँट। ३. पांगळ से ऊपर की ऊपर का सवारी का ऊँट। ४. चिंता। सोच-फिकर। ५. सोच-विचार।

तेवीस–दे० तेईस।

तेसठ–(वि०) साठ और तीन। (न०) त्रेसठ की संख्या। '६३'

तेह–(न०)१. सौष्ठव। सुडौलपन। सौंदर्य। सुन्दरता। ३. तल। थाह। तह। ४. क्रोध। रोस। ५. घमंड। ६. वर्षा से भूमि के भीतर तक गीला होने का अंगुली परिमाण। वर्षा परिमाण। ७. वर्षा के जल का जमीन में गहरा पहुँचना।

तेहड़ो–(वि०) वैसा।

तेहवो–(वि०) वैसा।

तेही–(वि०)१. तैसो। २. क्रोधी। (क्रि०वि०) उसी प्रकार।

तै–(न०) १. तय। निश्चय। २. निर्णय। फैसला। (वि०) १. पूरा किया हुआ। समाप्त। २. निश्चित। ठहराया हुआ। ३. निबटाया हुआ। निर्णीत।

तैखानो–दे० तहखानो।

तैड़ी–(वि०) वैसी। तैसी।

तैड़ो–(वि०) तैसो। वैसो।

तैनात–(वि०) १. नियुक्त। मुकर्रर। २. तैयार। तत्पर। ३. हाजर।

तैनाती–(ना०) १. हाजरी। २. नियुक्ति।

तैनाळ–दे० तहनाळ।

तै-परार–(न०) गत दो वर्षों के पहिले का वर्ष।

तै-पैलै दिन–(न०) गत चौथा दिन। २. आने वाला चौथा दिन।

तैयार–दे० तयार।

तैयारी–दे० तयारी।

तैयो–(न०) १. मृतक का तीसरा दिन। २. मृतक के तीसरे दिन किया जाने वाला क्रिया-कर्म। तीयो। तीसरो।

तैराई–(ना०) १. तैरने की क्रिया। २.तैरने में सहारा देकर नदी आदि से पार करने की मजूरी।

तैराक-(वि०) १. तैरने वाला। २. तैरने में कुशल। तेरू।

तैरायळ-दे० तेरायल।

तैरी-(ना०) मसालेदार एक बढ़िया घृत पूर्ण खिचड़ी जिसमें बादाम पिस्ता आदि मेवा मिला रहता है। तहरी।

तैरीख-दे० तेरीख। तारीख।

तैवार-(न०) त्योहार। पर्व।

तैवारी-(ना०) वह पदार्थ जो त्योहार के उपलक्ष में पौनियों व नौकरों आदि को दिया जाता है। त्योहार के दिन कारू-नारू जातियों को दिया जाने वाला नेग।

तैस-(ना०) १. क्रोध। गुस्सा। २. आवेश। ३. चक्कर।

तैसूं-(सर्व०) उससे।

तैस्सितोरी-(न०) हिंदू संस्कृति, कला और मारवाड़ी भाषा का एक अनन्य प्रेमी इटालियन विद्वान। इनका पूरा नाम लुइजिपिओ तैस्सितोरी (Luiji Pio Tiesitori)। ३२ वर्ष की अवस्था में बीकानेर में सन् १९१४ में इनकी मृत्यु हुई।

तैं-(सर्व०) मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम। तूने। (अशिष्ट)।

तो-(अव्य०) १. प्रायः 'जो' से शर्तबंध हुए वाक्य में प्रयोग होने वाला अव्यय। तब। उस स्थिति में। २. ही। भी। ३. पीछे। ४.भले। अस्तु। (सर्व०) १.तेरा। २. तुझको।

तोइचो-(न०) १. एक रास नृत्य। २. ढोल का एक ताल जिस पर तोइचो रास-नृत्य नाचा जाता है। **तोइचो-ताल।**

तोइज-(अव्य०) १. तभी तो। २. तब ही। ३. ऐसा होने पर ही। **तो हीज। तो हिज।**

तौक-(न०) कवच। २. लोहे का एक भारी छल्ला, जो पुराने जमाने में अपराधी के गले में सजा के रूप में पहिनाया जाता था। तौक। गंडेरा। २. झुंड।

तो-काज-(अव्य०) तेरे लिये।

तोकणो-(क्रि०) १. शस्त्र उठाना। २. प्रहार करना। ३. पकड़ना। ४. प्रतीक्षा करना। ५. उठाना। सम्हालना।

तोकायत-(वि०) १. शस्त्र उठाने वाला। २. शस्त्र उठाया हुआ। ३. वीर।

तोखणो-(क्रि०) राजी करना। संतुष्ट करना। **संतोखणो।**

तोखार-(न०) घोड़ा। अश्व।

तोग-(न०) १. मुगल साम्राज्य का एक ध्वज जिस पर सुरा गाय के बाल लगे रहते थे। २. एक शस्त्र।

तोगो-(न०) १. गुस्सा। क्रोध। २. हठधर्मी। ३. एक प्रसिद्ध राठौड़ वीर। युवक।

तोछ-(वि०) १. थोड़ा। कम। २. तुच्छ। (ना०) न्यूनता।

तोछड़ाई-(ना०) १. ओछापन। तुच्छता। ओछापणो। २. असभ्यता। गुस्ताखी। बेअदबी।

तोछड़ो-(वि०) १. ओछा बोलने वाला। २. झिड़कने वाला। ३. **ओछो।** हलका। ४. असभ्य। ५. गुस्ताख। ६. न्यून।

तोछो-दे० तोछड़ो।

तो ज-(अव्य०) तबही। **तो ही।**

तोजी-(ना०) १. तजवीज। २. सुराग। पता। टोह।

तोटायत-दे० टोटायत।

तोटी-(ना०) स्त्रियों के कान का एक गहना। **टोटी।**

तोटो-दे० टोटो।

तोड़-(न०) १ तोड़ने की क्रिया या भाव। २. चौपड़ के खेल में प्रतिस्पर्द्धी की गोट जिस घर में पड़ी हुई हो, उसी घर में सहखिलाड़ी की गोट का दाँव लग जाने से, प्रतिस्पर्द्धी क गोट के मर जाने की

क्रिया या भाव। ३. नदी के पानी के तेज बहाव के कारण किनारों की भूमि के टूटने की क्रिया। ४. किसी प्रभाव आदि को नष्ट करने वाला पदार्थ, बात या काम। ५. दही का पानी। ६. निष्कर्ष। सारांश। खुलासा। ७. वार। दफा। ८. फैसला। ९. प्रतिकार। १०. संगीत का एक ताल जो गायन की कड़ी समाप्ति पर बजाया जाता है। ताल-अलंकार। मान-उतार। मान। उतार। (संगीत-ताल)। ११. प्रथम समागम। प्रथम संभोग।

तोड–दे० टोड।

तोड़को–दे० टोड।

तोड़-जोड़–(न०)१. समाधान। घड़ भंजण। २. समझौता। ३. दाँव-पेंच। ४. चाल। ५. युक्ति। ६. परिश्रम।

तोड़ण–(ना०) वायु से पिंडली में होने वाली असहनीय टूटन।

तोड़णो–(क्रि०)१. तोड़ना। खंडित करना। २. अलग करना। उतारना (फूल)। ३. किसी नियम को रद्द करना। ४. नियम का उल्लंघन करना। ५. संबंध विच्छेद करना। ६. बात पर कायम न रहना। ७. सेंध लगाना। ८. खतम करना। मिटाना। ९. किसी के धन को हड़प कर के उसे निर्धन बनाना।

तोड़-फोड़–(न०) १. तोड़ना और फोड़ना। तोड़फोड़। ध्वंसन।

तोडर–(न०) स्त्रियों के पांव का एक गहना। टोडर।

तोड़ाक–दे० तोड़ायत।

तोड़ाण–दे० तोड़ण।

तोड़ाणो–दे० तोड़ावणो।

तोड़ादार बंदूक–(ना०) तोड़ा से दागी जाने वाली बंदूक। पलीते से छोड़ी जाने वाली बंदूक।

तोड़ा-फोड़ी–(ना०) तोड़-फोड़ करने की क्रिया या भाव।

तोड़ायत–(वि०) १. दरिद्री। २. कमी वाला। ३. दिवालिया। ४. व्यापार आदि में हानि से हुआ निर्धन। टूटोड़ो। ५. दुखी। ६. शत्रु। ७. जरूरत वाला।

तोड़ावणो–(क्रि०) तुड़वाना।

तोड़ावाळ–दे० तोड़ायत।

तोड़ावाळो–दे० तोड़ायत।

तोड़ियोड़ो–(भू०कृ०) तोड़ा हुआ।

तोड़ी–(ना०) स्त्रियों के पाँव का एक गहना।

तोड़ो–(न०) १. अभाव। कमी। न्यूनता। २. हानि। नुकसान। घाटो। ३. माँग। जरूरत। ४. एक प्रकार का सिर पेच। ५. जरी के अनेक तारों से बनाई हुई एक डोरी जो चूंचदार और खिड़किया पाघ के ऊपर बाँधी जाती है। ६. पाँव का एक गहना। तोड़ा। साँकळो। लंगर। ७. पलीतेदार बंदूक के बंधी रहने वाली जलती हुई रस्सी। जामगी। पलीता। ८. छोटा तमंचा। ९. हाथी के पाँव मे बंधी रहने वाली सांकल। १०. सुतली, रस्सी आदि का छोटा टुकड़ा। ११. ऊंट। १२. एक हजार रुपये नकद समा जायँ उतने मान की थैली और उसमें भरे हुए एक हजार रुपये। रोकड़े हजार रुपयों की थैली। १३. वीणा आदि तार वाद्यों में बजाया जाने वाला या गाया जाने वाला अलंकार रूप स्वर-समूह। १४. एक नृत्य प्रकार। १५. गायन में राग पलट। १६. जकड़ी (संगीत)।

तोडो–दे० टोडो।

तोत–(न०) १. पाखंड। ढोंग। २. कपट। छल। ३. आडंबर। तड़कभड़क। ४. झूठ। असत्य। ५. समूह। ढेर। (अव्य०) तो। तब।

तोरणियो-(न०) १. विशाखा नक्षत्र। २ एक दिशा। तोरणि। रूपारास।

तोरावाटी-(ना०) जयपुर के पास का एक प्रदेश जहाँ पहले तोमरों का राज्य था। तँवरावटी।

तोरू-(ना०) एक बेल और तरकारी बनाने के काम में आने वाला उसका लंबा फल। तुरई।

तोल-(न०) १. वजन। जोख। तौल। २. तौलने के काम में आने वाला साधन। बाट। ३. महिमा। महत्त्व। ४. प्रतिष्ठा। ५. वातावरण। ६. रहस्य। मर्म। ७. अनुमान। तुमार। ८. वजन। भार। बोझ। ९. समानता। बराबरी। १०. जाँच। परीक्षा। ११. निश्चित धारणा। १२. बाट। बटखरा। १३. ढंग। तरीका। (वि०) समान। बराबर।

तोल-जोख-(न०) १. तौल और मूल्यांकन। २. तौर-तरीका। ढंग।

तोलड़ी-(न०) मिट्टी की हाँडी। हँडिया। हांडी। तामणी।

तोलणो-(क्रि०) १. तौलना। जोखना। वजन करना। जोखणो। २. उठाना। ३. शस्त्र उठाना। ४. तुलना करना। ५. अनुमान लगाना। अंदाजणो।

तोल-तुमार(न०) १. ढंग। २. मन की बात। ३. व्यवस्था। ४. वातावरण। परिस्थिति।

तोला-(न०ब०व०) छोटे मोटे (कम ज्यादा) सभी प्रकार के बटखरे। छोटे-मोटे बाट।

तोलाई-(ना०) १. तोलने का काम। २. तोलने का पारिश्रमिक। तुलाई।

तोला-छपाई-(ना०) १. पुराने बटखरों को यथा समय जांच कराने का सरकारी नियम। २. पुराने (घिस जाने से) बटखरों की जाँच करवा कर यथा परिमाण करा के छाप लगवाने के पारिश्रमिक रूप में लिया जाने वाला सरकारी टैक्स। तोलों की जाँच करवाने का कर।

तोळाट-(वि०) तौलने का काम करने वाला। तोलने वाला।

तोलाण-(न०) तोलने का काम। तोलने की क्रिया। तुलाई।

तोळावट-दे० तुलावट।

तोलावणो-(क्रि०) तोल करवाना। तुलवाना।

तोलै-(अव्य०) तुलना में। समानता में। बराबरी में। (वि०) तुल्य। समान। बराबर।

तोलो-(न०) बाट। तोल।

तोळो-(न०)१. बारह माशा का तौल। एक कलदार रुपया भर वजन। तोला। २. बारह माशा का एक बाट।

तोस-(न०) १. संतोष। सब्र। सबर। २. सत्कार।

तोसक-(न०) रूईदार मोटा गद्दा। तोशक।

तोसणो-(क्रि०) १. संतोष कराना। सब्र कराना। संतोखणो। २. आदर-सत्कार आदि से खुश करना।

तोसदान-(न०) दारू गोली आदि रखने की सिपाहियों की थैली।

तोसाखानो-(न०) अमीरों के वस्त्राभूषण रखने का भंडार।

तो सारू-(क्रि०वि०) १. तेरे लिये। थारै सारू। २. तेरे से। ३. तेरे समान।

तो सूं-(सर्व०) तेरे से। थासूं। थारैसूं।

तोसो-(न०) सबल। भातो।

तोहमत-(ना०) १. झूठा कलंक। २. झूठा अभियोग। असत्य आरोप। आरोप।

तो हिज-(अव्य०) तबही।

तो ही-(अव्य०) १ तो भी। २ फिर भी।

तो हूंत-(सर्व०) तेरे से। थासूं। थारैसूं।

तौक-(ना०) अपराधी के गले में पहनाने की लोहे की भारी हँसली।

तौकीर–दे० तौक ।

तौर–(न०) १. अहंकार । मिजाज । २. मान । प्रतिष्ठा । ३. आतंक । प्रभाव । ४. तेज । ५. ढग । चाल चाल ढाल । ६. प्रकार । भाँति ।

त्याग–(न०) १. संन्यास । २. उत्सर्ग । दान । ३. कुरबानी । आत्मत्याग । ४. विरक्ति । ५. विवाह, मौसर आदि किरियावरों के अवसर पर नेगियों को दिया जाने वाला नेग । ६. नेग में दी जाने वाली वस्तु ।

त्यागणो–(क्रि०) १. छोड़ना । तजना । त्यागना ।

त्याग करणो–(मुहा०) १. छोड़ना । २. दान देना ।

त्याग चुकाणो–(मुहा०) १. नेग चुकाना । याचक जाति को दान देना । २. दान करना ।

त्यागपत्र–(न०) १. इस्तीफा । २. दानपत्र ।

त्यागवीर–(वि०) १. बड़ा दानी । दानवीर । २. त्यागी ।

त्यागियां-तिलक–(न०) दानियों में श्रेष्ठ दानी । दानियों में शिरोमणि । बहुत बड़ा दानी ।

त्यागी–(वि०) १. स्वार्थ अथवा सांसारिक सुखों को छोड़ने वाला । विरक्त । त्यागी । २. दानी । दातार ।

त्यार–(वि०) तय्यार ।

त्यारां–(क्रि०वि०) तब । तरै ।

त्यारी–दे० तयारी ।

त्याव–(न०) तीसरा भाग । तिहाव । तिहाई ।

त्यावली–(ना०) १. रुपये और आनों को लिखने के संकेत रूप में उनके आगे लगाई जाने वाली खड़ी अर्द्ध चंद्राकार रेखा । रुपयों-आनों को दर्शाने वाली रेखा । ')' । २. चौथा भाग ।

त्यावलो–(न०) एक तृतीयांश । तृतीयांश । तीसरा भाग । एक पाण ।

त्यां–(क्रि०वि०) १. वैसे । त्युं । ज्युं । २. वहाँ । उठै । (सर्व०) १. उन । २. उनका । ३. उनके । ४. उनको । ५. उन्होंने । ६. जिनको । तिनको ।

त्यांरी–(सर्व०) उनकी । उणांरी । वांरी ।

त्यांरै–(सर्व०) उनके । उणांरै । वांरै ।

त्यांरो–(सर्व०) उनका । उणांरो । वांरो ।

त्यां लग–(अव्य०) तब तक । जठै तांई ।

त्यां सूं–(सर्व०) उनसे । उणांसूं । वांसूं ।

त्यांह–दे० त्यां ।

त्रइ–(वि०) तीन ।

त्रई–(वि०) १. तीन प्रकार का । २. तीन । (ना०) १. तीन का समाहार । २. त्रिपुटी ।

त्रट–(ना०) १. प्यास । २. लोभ ।

त्रण–(वि०) तीन । (न०) तृण । घास । चारो ।

त्रणकाळ–(न०) जिस वर्ष में घास की पैदावार कम हो । घास के अभाव का वर्ष । घास का दुष्काल ।

त्रणदीठ–(न०) महादेव । शिव । त्रिनेत्र ।

त्रणनैण–(न०) महादेव ।

त्रदस–(वि०) १. तेरह । २. तीस ।

त्रपा–(ना०) शरम । लाज ।

त्रवंक–(वि०) १. तीन बल (टेढ़ापन) वाला । त्रिवंक । त्रिवक्र । २. बलवान । जबरदस्त । (न०) वीरश्रेष्ठ । वीराधिवीर । २. तीनवांक । त्रिवंक । ३. एक डिंगल छंद ।

त्रवंकड़ौ–(न०) डिंगल का एक छंद ।

त्रवाक–(न०) १. ऊँचे किनारों की बड़ी थाली । भोजन करने की ऊँचे किनारों की बड़ी थाली । थाल । २. नगाड़ा । त्रंबाळ । त्रंबक ।

त्रभाग-(न०) भाला। भालो।

त्रभागो-(न०) भाला।

त्रमझड़-(ना०) वर्षा की खूब झड़ी। जोर की वर्षा।

त्रमागळ-दे० त्रंबागळ।

त्रमाट-(न०) नगाड़ा।

त्रमाळ-दे० त्रंबागळ।

त्रय-(वि०) तीन। (न०) तीन का समूह।

त्रयलोचरण-(न०) त्र्यंबक। महादेव।

त्रसकणो-(क्रि०) १. भयभीत होना। डरना।

त्रसकाय-(न०) जैन मतानुसार छः जाति के जीवों में से एक।

त्रसणा-(ना०) १. तृष्णा। त्रिसणा। २. प्यास। तिरस।

त्रसरेणु-(न०) चमकता हुआ वह सूक्ष्म कण जो छेद में से आती हुई धूप में दिखाई देता है।

त्रसळ-दे० त्रिसळ।

त्रसींग-(वि०) जबरदस्त। बहादुर। (न०) सिंह।

त्रस्त-(वि०) १. भयभीत। डरा हुआ। २. सताया हुआ। त्रसित।

त्रह-दे० त्रहक।

त्रहक-(ना०) ढोल, नगाड़ा आदि के बजने की ध्वनि।

त्रहकणो (क्रि०) ढोल, नगाड़ा आदि का बजना।

त्रहणो-(क्रि०) १. नगाड़ा बजना। २. डरना।

त्रहाक-दे० त्रहक।

त्रहुं-(वि०) १. तीनों ही। तीन।

त्रंबक-(न०) १ ढोल। २. नगाड़ा। ३. महादेव। शिव। त्र्यम्बक।

त्रंबका(ना०) १. पार्वती। २. दुर्गा।

त्रंबा-(ना०) १. गाय। २. घोड़ी।

त्रंबागळ-(न०) १. नगाड़ा। २. ढोल। ३. युद्ध वाद्य। युद्ध मर्दल।

त्रंबाट-(न०) नगाड़ा।

त्रंबाळ-(न०)नगाड़ा। (वि०)ताम्र संबंधी।

त्रंबाळवो-(न०) १. ढोल। २. नगाड़ा। ३. ताम्र संबंधी।

त्रंबाळो-(न०) नगाड़ा। (वि०) ताम्रवत्। तांबे का।

त्राक-दे० त्राग।

त्राकड़ी-दे० ताकड़ी।

त्राकळो-दे० ताकळो।

त्राग-(न०) १. धागा। डोरा। तांतण। २. यज्ञोपवीत। जनोई।

त्रागो-(न०)१. धागा। डोरा। २. जनेऊ। यज्ञोपवीत। जनोई। ३. अनशन। ४. धरना। ५. नाराजी।

त्राछटणो-दे० ताछटणो।

त्राछणो-(क्रि०) १. मारना। काटना। २. छीलना।

त्राजवो-दे० त्राजुओ।

त्राजुओ-(न०) तराजू। तकड़ी। ताकड़ी।

त्राजो-दे० त्राजुओ।

त्राट-(न०) १. टाट। खोपड़ी। २. गर्जन। ३. वर्षा की झड़ी। जोर की वर्षा। ४. आक्रमण। ५. शस्त्र का प्रहार। ६. प्रहार पर प्रहार। झड़ी।

त्राटक-(न०)१. हठ योग में बिन्दु पर दृष्टि जमाने की एक यौगिक क्रिया। २. वर्षा की झड़ी। ३. शस्त्रों के प्रहारों की झड़ी।

त्राटकणो-(क्रि०) १. आक्रमण करना। २. अचानक आक्रमण करना। ३. गुस्सा करना। खीजना। ४. बादल का जोर से गरजना। ५. मूसलाधार वर्षा होना। ६. सिंह का आक्रमण के साथ गरजना।

त्राटको-(न०) आक्रमण। २. आ पड़ने वाला अचानक संकट। ३. अत्यन्त दुखदायी शोक समाचार। ४. एक डिंगल छंद।

भर) पागल का जीवन जीने वाला । २. बिलकुल पागल । ३. महामूर्ख । गहलो ।

त्रिकालज्ञ–दे० त्रिकालदर्शी ।

त्रिकालदर्शी–(वि०) १. तीन काल की जानने वाला । त्रिकालज्ञ । २. तीनों कालों को देखने वाला ।

त्रिकाल संध्या–(ना०) १. प्रातः, मध्यान्ह और सायं का समय । २. प्रातः, मध्यान्ह और सायं–इन तीनों समयों में किये जाने वाले संध्या, तर्पण आदि दैनिक धार्मिक कर्मकाण्ड । ३. ठीक संध्या का समय । ऐन संध्या । ४. तीनों संध्याओं का समाप्ति विधान ।

त्रिकुट–दे० त्रिकुट गढ़ ।

त्रिकुटगढ़–(न०) १. लंका । २. लंका का गढ़ । ३. लंका का त्रिकुटाचल पर्वत ।

त्रिकुटाचल–दे० त्रिकुट गढ़ ।

त्रिकुटो–(न०) सोंठ, मिर्च और पीपर का मिश्रित चूर्ण ।

त्रिकुटबंध–(न०) डिंगल का एक छंद ।

त्रिकोण–(न०) तीन कोनों वाली आकृति । तीन कोनों वाली कोई वस्तु । त्रिभुजक्षेत्र ।

त्रिकोणगढ–दे० त्रिकुट गढ़ ।

त्रिकोणियो–(वि०) तीन कोनों वाला । तिकोणियो ।

त्रिखा–(ना०) १. प्यास । तृषा । तिरस । २. तृष्णा ।

त्रिखावंत–(वि०) तृषावान् । प्यासा । तिरसो ।

त्रिखूणियो–दे० तिखूणियो ।

त्रिगुण–(न०) १. सत्व, रज और तम ये तीन गुण । (वि०) तिगुना । तीन गुना । तिगुणो ।

त्रिगुणनाथ–(न०)त्रिगुणपति । परमेश्वर ।

त्रिचख–(न०)महादेव । त्र्यम्बक । त्रिचक्षु ।

त्रिजटा–(ना०)रावण की बहिन का नाम । अशोक बाग में सीता की चौकी करने वाली राक्षसी ।

त्रिजड़–(न०) १. तलवार । खड्ग । २. कटारी । ३. कोई शस्त्र ।

त्रिजड़हथ–(वि०) तलवार धारी । शस्त्र धारी । खडगहथो ।

त्रिजड़ी–(ना०) १. तलवार । तरवार । २. कटारी ।

त्रिजात–(वि०) तीसरी जाति से उत्पन्न । व्यभिचार से उत्पन्न । (न०)जातिसंकर ।

त्रिजात-रो-मूत–(न०) १. वर्णसंकर । २. एक गाली ।

त्रिजामा–(ना०) रात । रात्रि ।

त्रिणकाळ–(न०) वह वर्ष जिसमें घास की उपज कम अथवा बिल्कुल नहीं हुई हो । घास के अभाव वाला वर्ष । तृण दुष्काल ।

त्रिण–(न०)१. तृण । घास । २. तिनका । सींक । (वि०) तीन ।

त्रिणमात्र–दे० तिणमात ।

त्रिणि–दे० त्रिण ।

त्रिणेव–(अव्य०) तीनों ही । तीन ही ।

त्रिणो–(न०)१. तृण । तिनका । २. घास । चारा ।

त्रिण्ह–(न०) तीन की संख्या । (वि०)तीन ।

त्रिताल–(न०)वाद्य का एक ताल। तिताला ।

त्रितीया–(ना०) मास के पक्ष का तीसरा दिन । तृतीया तिथि ।

त्रिदस–(न०)१. देवता । २. त्रिनेत्र । शिव । (वि०) तेरह ।

त्रिदेव–(न०) ब्रह्मा, विष्णु और महादेव ।

त्रिदोष–(न०) वात, पित्त और कफ–शरीर के ये तीन दोष ।

त्रिधा–(अव्य०) १. तीन प्रकार से । २. तीन ओर से । ३. तीन तरफ में ।

त्रिधार–(न०) १. भाला विशेष । २. तिधारा । ३. तीन धाराएँ ।

त्रिधारी–(न०) तीन कोनों वाली रेति । अरगती । तिधारी ।

त्रिधारो–(न०) एक प्रकार का भाला । (वि०) तीन धाराओं वाला ।

त्रिसत-(वि०) तृषित । प्यासा । तिरसो ।
त्रिसळ-(न०)ललाट के तीन सल ।
त्रिसींग-दे० त्रसींग ।
त्रिसूळ-दे० त्रिशूळ ।
त्रिसो-(वि०) प्यासा । तिरसो ।
त्रिहुँ-(वि०)१. तीन । २. तीनों । तीनों ही ।
त्रिहुँभुवरण-(न०) त्रिभुवन ।
त्री-(ना०) स्त्री । (वि०) १. तीन । २. तीन ।
त्रीकम-(न०) १. त्रिविक्रम । २. वामन ।
त्रीज-दे० तीज ।
त्रीजो-(वि०) तीसरा । तृतीय ।
त्रीठ-(न०) बाजा । (ना०)१. पीड़ा । दुख । २. दृष्टि ।
त्रीरण-(वि०) तीन ।
त्रीनैरण-(न०) महादेव । त्रिनैत्र ।
त्रीपंचाद-(ना०)राजस्थानी साहित्य की १६ दिशाओं की पंचाद दिशा का एक पर्याय । पंचादकूरण ।
त्रीस-दे० तीस ।
त्रींगड़ो-(वि०)१. तीनों फलों वाला(बारण)। २. तीन सींगों वाला । ३. जबरदस्त ।
त्रूटरणो-दे० टूटरणो ।
त्रूठरणो-दे० तूठरणो ।
त्रेख-दे० तेख ।
त्रेखड़-दे० तेखड़ ।
त्रेड़ियो-दे० तेड़ियो ।
त्रेता-(वि०) तीसरा । (न०) त्रेतायुग ।
त्रेताजुग-(न०) चार युगों में दूसरा जो १२९६००० वर्षों का माना जाता है । त्रेतायुग ।
त्रेपन-दे० तेपन ।
त्रेवटो-दे० तेवटो ।
त्रेवड़-दे० तेवड़ ।
त्रेवड़ो दे० तेवड़ो ।
त्रेसठ-(वि०) साठ और तीन । (न०) साठ और तीन की संख्या । '६३'
त्रेहू-(न०) १. वर्षा से भूमितल के गीला होने का अंगुली परिमाण । वर्षा का पानी जमीन में गहरा पहुँच जाने का परिमाण । २. वर्षा का पानी जमीन में गहरा पहुँचना । तेहू ।
त्रोट-(ना०) १. शत्रुता । वैर । दुश्मनी । २. मनमुटाव । ३. कमी । न्यूनता । ४. हानि । घाटा ।
त्रोटक-(न०) एक छंद ।
त्रोटी-दे० तोटी या टोटी ।
त्रोटो-(न०)१. कमी । २. हानि । नुकसान । घाटो । टोटो ।
त्रोड़रणो-दे० तोड़रणो ।
त्र्यंबको-(न०) १. 'भूखियो-मळ्ळो' नाम का एक शस्त्र । २. एक प्रकार का भाला । भाला । त्रियंबिका ।
त्वां-(सर्व०) १. तुमको । २. तुम । ३. तेरा ।

थ

झिलमिलेदार जमा कर रखी हुई (प्राय: एक जैसी, वस्तुओं की राशि। (भू०क्रि०) १. हो गई। २. बनी। बन गई। रची।

थक–(न०) १. ढेर। राशि। थग। २. समूह। झुंड। ३. थकान। थकावट।

थकाउ–(अव्य०) १. से। २ थके। ३ होने से। होते। होते हुए। थकां।

थकणो (क्रि०) १. परिश्रम से थकावट होना। क्लान्त होना। थाकणो। २. दुर्बल होना। अशक्त होना। ३. कृश होना। दुबला होना। ४. ऊब जाना।

थका–दे० थकां।

थकाई–दे० थकाण। दे० थकांई।

थकाण–(ना०) थकान। थकावट। श्रान्ति। थाकेलो।

थकाणो–(क्रि०) १. श्रान्त करना। शिथिल करना। थकावणो। २. अधिक परिश्रम करवाना। ३. हैरान करना। ४. हराना।

थकार–(न०) 'थ' अक्षर। थय्यो।

थकाव–दे० थकावट।

थकावट–दे० थकाण।

थकावणो–दे० थकाणो।

थकां–(अव्य०) १. होते हुए। रहते हुए। २. होने पर भी। रहने पर भी। ३. हुए भी। रहे भी। ४. स्थिति में। होकर। ५. से।

थकांई–(अव्य०)१. हुए भी। होते हुए भी। २. रहते हुए भी। ३. से ही। से भी। थकेई।

थकित–(वि०) १. स्थगित। २. चकित। दिग्मूढ़। ३. थका हुआ। थाकोड़ो।

थकियोड़ो–(भू०कृ०) थका हुआ। श्रांत।

थकी–(अव्य०) १. लिये। वास्ते। २. रहती हुई। होती हुई। ३. के कारण। के द्वारा। से (प्रत्य०) १. से। २. में से।

थकीजणो–(क्रि०) १. थकने को मजबूर होना। २. थकना।

थके–दे० थका।

थकेई–दे० थकांई।

थकेड़ो–दे० थकियोड़ो।

थकेल–दे० थकेलो।

थकेलो–दे० थकेड़ो।

थकै–(अव्य०) १. लगाया हुआ। किया हुआ। हुआ। २. होता हुआ। रहता हुआ। ३. होते हुए। रहते हुए। ४. के लिए। ५. के कारण। के द्वारा। ६. समान।

थकोड़ो–दे० थाकोड़ो। (स्त्री० थाकोड़ी)

थकोणो–(क्रि०)१ थका देना। २. हरा देना।

थकोवणो–दे० थकोणो।

थग–(न०) १. ढेर। राशि। ढिगलो। २. थाह। ३. अंत। छेह। पार।

थग आवणो–(मुहा०) पार आना। समाप्त होना।

थग लागणो–(मुहा०) ढेर लगना। ढिगलो होणो।

थघ–दे० थग।

थट–(न०)१. सेना। २. भीड़। ३. राशि। ढेर।

थट जमणो–(मुहा०) खूब भीड़ होना।

थटणो–(क्रि०) १. इकट्ठा होना। भीड़ करना। २. समूह रूप में प्रगट होना। ३. समूह के साथ प्रवेश करना। ४. डटे रहना। डट जाना। ५. शोभित होना। ६. सज्जित होना। ७. खदेड़ना। हटाना।

थट लागणो (मुहा०) १. भीड़ होना। २. ढेर लगना।

थटवै–(न०) सेनापति।

थट्ट–दे० थट।

थट्टो–(न०) राजस्थान के पश्चिम में एक मरुप्रदेश। थट्टा। २. एक नगर। ३. समूह। थाट।

थड़–(न०) १. धड़। २. तना। गोढ।

थड़णो–(क्रि०) १. इकट्ठा होना । २. सामने आकर खड़ा होना । ३. प्रगट होना ।

थड़वड़–(ना०) १. लड़ाई । झगड़ा । खड़बड़ । २. लड़खड़ाहट ।

थड़वड़णो–(क्रि०) १. लड़ना । झगड़ना । खड़वड़ना । २. युद्ध करना । ३. लड़खड़ाट ।

थड़वड़ाट–(ना०) १. लड़ाई । हाथापाई । २. बोल चाल । खड़वड़ाहट । ३. लड़खड़ाना ।

थड़ी–(ना०) १. शिशु का बिना सहारे (पांवों पर) खड़े होने की स्थिति व क्रिया । थइ । २ थप्पी । ढेर । गंज ढग ।

थड़ो–(न०) १· मृतक के दाह स्थान पर उसके स्मरणार्थ बनाया गया देवल । देवळी । छतरी । २. श्मशान । ३. ऊँट के पलान के नीचे लगी रहने वाली गद्दी ।

थण–(न०) १. गाय, भैंस आदि का स्तन । थन । २. स्तन ।

थणकढ–(वि०) १. थन से निकला । तुरंत का । ताजा (दूध)। २. धारोष्ण (दूध) । सेड़कढ ।

थण-चूंघणी–(अव्य०) पाणिग्रहण को जाते समय दूल्हे का और युद्ध में जाते समय वीर का, माता का स्तनपान करने की एक मध्यकालीन प्रथा । (माता अपने दूध की शक्ति और वंश की उज्वलता की स्तनपान करवा कर याद दिलाती है कि वह उसके दूध को लजायेगा नहीं और विजय करके ही लौटेगा)।

थणाणी–(ना०) १. स्तनों वाली । २. स्त्री ।

थणियाळी–(ना०) गाय, भैंस आदि थन वाला मादा पशु । (वि०) स्तनों वाली ।

थणी–(ना०) १. स्त्री । २. स्तनों वाली ।

थत–दे० थित ।

थत वायरो–दे० थत वाहरो ।

थत वाहरो–(वि०) १. अस्थिर स्वभाव वाला । स्थिति-बहिर । मतिहीन । २. अविश्वसनीय । ३. निर्धन ।

थतवाळो–(वि०) सम्पन्न ।

थतहीणो–(वि०) निर्धन ।

थतियो–(क्रिवि०) निरंतर । स्थायी रूप से । रोजीना । थितियो ।

थतै–(अव्य०) होते हुए ।

थतो–(अव्य०) होता हुआ । बनता हुआ ।

थत्ती–(ना०) किसी वस्तु का करीने से लगाया हुआ ढेर । चिन कर रखी हुई नाज आदि से भरे हुए थैलों की राशि ।

थथेड़णो–(क्रि०) मोटा लेप करना ।

थथोबो–(न०) १. दम-दिलासा । तत्तोथैबो । तत्तोथबो । २. झाँसा । झूठा आश्वासन । ३. झूठा भरोसा ।

थथ्थो–(न०) 'थ' वर्ण । थकार ।

थन· दे० थण ।

थनक–(न०) नाचने का शब्द । थनक-थनक ।

थनथन–(अव्य०) नाचने की आवाज ।

थप-उथप–दे० थाप-उथाप ।

थपकणो–(क्रि०) १. शरीर पर हलके हाथ से ठोंकना । धीरे धीरे ठोंकना । २. पुचकारना ।

थपकियो–(न०) कुम्हार का वह थपना जिससे मिट्टी के गीले बरतनों को ठोंक ठोंक कर सँवारता है । थपियो । टपलो ।

थपकी–(ना०) हथेली का हलका आघात । थापी ।

थपणो–(क्रि०) १. स्थापित होना । २. स्थापित करना । ३. निश्चित होना । ४. थपथपाना ।

थपथपियो–(न०) कुम्हार ।

थपथपी–(ना०) थपकी ।

थपाणो–(क्रि०) स्थापित करना ।

थपियो–दे० थपकियो । टपलो ।

थपेड़णो–(क्रि०) १. थपाना । थपथपाना ।

थप्पड़-(ना०) चांटा । तमाचा । झापड़ । थप्पड़ । थाप । थापड़ी ।

थप्पणो-(क्रि०) १.स्थापित करना । थापणो । २. स्थापित होना । थपणो ।

थप्पी-(ना०) १ एक के ऊपर एक रख कर बनाया हुआ गंज । करीने से रखी हुई वस्तुओं का ढेर । व्यवस्थित राशि । २. एक समान वस्तुओं की लगी की हुई श्रेणी । थत्ती ।

थबोळो-(न०) १. पानी का धक्का । जोर की लहर । हिलोरा । हबोळो । हिलोळो । २. लहर । तरंग ।

थम-(न०) १. स्तंभ । खंभा । २. रोक । रुकावट ।

थमणो-(क्रि०) १. ठहरना । २. रुकना । ३. प्रतीक्षा करना ।

थया-(भू०क्रि०) 'थयो' का बहुवचन रूप । हुए । होगये ।

थयो-(भू०क्रि०) 'होणो' अथवा 'होवणो' (हिंदी मे होना) क्रिया का भूतकालिक रूप 'हुम्रो' (हिन्दी में 'हुम्रा' या 'होगया' अर्थसूचक पर्याय ।) हुम्रा । होगया ।

थर-(ना०) मलाई । साढ़ी । बालाई । थरकण । (न०) १. तह । परत । स्तर (कपड़े आदि की) २. दीवार की चिनाई में ईंटों या पत्थर की एक तह । ३. चढ़ती-उतरती (बड़ी-छोटी) चूड़ियों का सैट (जत्था) ४. एक के ऊपर एक की ऊँची चुनाई । थप्पी । ५. मैल आदि की जमी हुई परत । पपड़ी । ६. राशि । ढेर ।

थरक-(न०) १. आश्चर्य । विस्मय । अचरज । २. डर । भय ।

थरकण-(ना०) १. मलाई । साढ़ी । बालाई । थर । २. कंपन । धूजणी ।

थरकणो-(क्रि०) १. थिरकना । २. कांपना । धूजणो ।

थरकमान-(वि०) आश्चर्यान्वित । चकित । थकित ।

थरथर-(ना०) कंपन । धूजणी ।

थरथरणो-(क्रि०) कांपना । थर्राना । धूजना । धूजणो ।

थरथराट-(न०) थरथराहट । कंपन । धूजणी ।

थरथराटी-(ना०) कंपकंपी । कंपन । धूजन । थरथराहट ।

थरथराणो-(क्रि०) १. भय या ठंडी से कांपना । २. कांपना ।

थरपणा-(ना०) स्थापना । थापना ।

थरपणो-(क्रि०) स्थापित करना । स्थापना करना । थापणो ।

थरमो-(न०) एक प्रकार का कपड़ा । थुलमा । थुरमो । थिरमो ।

थरहरणो-(क्रि०) कांपना । धूजना ।

थळ-(न०) १. मरुस्थल । २. स्थान । स्थल । ३. टीबा । धोरो । ४. भूमि ।

थळचट-(वि०) १. थालीभर खाने वाला । बहुत खाने वाला । थाली चट्टू । २. पराया धन हजम करने वाला ।

थळचर-(न०) पृथ्वी पर रहने वाले जीव ।

थळणो-(क्रि०) १. तैयार करना । २. सँवारना । दुरस्त करना । (न०) तैयार किये जारहे आभूषण को सँवारने या सही करने का एक औजार । थलिया ।

थळपति-(न०) राजा ।

थळवट-(न०) १. थल प्रदेश । थळ । थळी । २. स्थलमार्ग । जमीन मार्ग । थळवाट । ३. जमीन ।

थळवाट-दे० थळवट ।

थळियो-(वि०) १. थल प्रदेश का निवासी । २. गँवार । मोथो । (न०) सुनार, ठठेरों का एक औजार । थलना । थळणो ।

थळी-(ना०) १. मारवाड़ का एक भाग । २.राजस्थान का एक प्रदेश । ३.रेगीस्तान । मरुभूमि । थल प्रदेश ।

थळींदेस-(न०) १. राजस्थान का रेगीस्तानी भाग। २. मरुप्रदेश। मारवाड़।

थळेचर-दे० थलचर।

थवणो-(क्रि०) होना।

थह-(ना०) १. गुफा। कंदरा। २. स्थान। जगह। ३. सुरक्षित स्थान। ४. किला। गढ़। ५. गहराई का अंत। थाह।

थहणो-(क्रि०) होना।

थही-दे० थई।

थंड-(न०) १. समूह। २. सेना। ३. ढेर।

थंडणो-(क्रि०) १. भगाना। खदेड़ना। २. ढेर लगाना। ३. भरना। पूरना। ४. इकट्ठा होना।

थंडो-(न०) १. सेना। २. समूह। ३. ठंडा।

थंव-दे० थंभ।

थंभ-(न०) १. स्तम्भ। थंभा। थांभो। थांभलो। २.रोक। रुकावट। ३.तोरण।

थंभण-(न०) स्तम्भन। रुकावट।

थंभणो-(क्रि०) रुकना। ठहरना। रुकणो।

थंभावण-(वि०) स्थिर रखने वाला। थामने वाला।

थंभावणो-(क्रि०)१. रुकवाना। २.रोकना। ३. स्थिर रखवाना। ४. ठहराना।

थंभो-(न०) थंभा। खभा। थांभो। थांभलो।

था-(क्रि०भू०) भूतकाल एक वचन क्रिया 'थो' का बहुवचन रूप। 'होणो' क्रिया का भूतकालिक बहुवचन रूप। थे। (प्रत्य०) अपादान कारक की विभक्ति। से। (सर्व०) तुझ। तेरे।

थाई-(वि०) स्थायी।

थाक-(ना०) १. थकावट। थकान। थाकेलो। २. श्रम।

थाकणा-(न०ब०व०) विवाह आदि मांगलिक अवसरों की निर्विघ्न समाप्ति पर, बरात की विदाई के समय तथा बंदोला-बंदोली की शोभा यात्रा के समय बजाये जाने वाले ढोल के विशेष-विशेष प्रकार।

थाकणो-(क्रि०) १. थकना। क्लान्त होना। २. दुबला होना। ३. अशक्त होना। कमजोर होना। ४. हैरान होना। ५. कम पड़ना।

थाकल-(वि०) १. थका हुआ। २. दुबला। ३. निर्धन।

थाकी-(सर्व०) तेरी। थारी।

थाके-(सर्व०) तेरे।

थाकेड़ो-दे० थाकोड़ो।

थाकेली-दे० थाकोड़ी।

थाकेलो-(न०) थकान। थकावट। श्रान्ति। थाक। (वि०) थका हुआ। श्रान्त। शिथिल। थाकोड़ो।

थाको-(सर्व०) तेरा। थारो। तेरो। (वि०) थका हुआ। थाकोड़ो।

थाकोड़ी-(वि०) १. दुबली। क्षीण। २. थकी हुई। थाकेली।

थाकोड़ो-(वि०) १. थका हुआ। श्रांत। २. क्षीणकाय। दुर्बल। कृश। ३.निर्धन।

थाको-मांदो-(वि०) १. प्रायः बीमार। प्रायः अस्वस्थ रहने वाला। २. बहुत थका हुआ। अधिक श्रान्त। ३. दुबला। कृश। ४. कमजोर। निर्बल। ५. निर्बल स्थिति वाला। निर्धन।

थाग-(न०)१. पानी की गहराई की सीमा। थाह। २. गहराई का तल। ३. अंत। छेह। पार। थाह। ४. किनारा।

थागड़-(न०) १. वाद्य का एक ताल। २. नृत्य की एक गति। ३. वाद्य की थापी के साथ पाँव उठाकर चलने की एक क्रिया। ४. धीमी चाल। मंद गति। ठाट से चलने की एक क्रिया। ५. वाद्य और नृत्य का अनुकरण शब्द। ६. तातायई। तायई।

थागड़ थैंया-(न०) १. नाच और गाना। २. वाद्य का ताल। ३. मौज-मजा। थागड़ धिन्ना।

थागहुदा–दे० थागड़ थैया ।

थागणो–(क्रि०) पार पाना । थाह पाना ।

थाग लेणो–(मुहा०) १. पता लगाना । २. भेद लेना । ३. गहराई तक पहुँचना ।

थागियळ–(वि०) १. जिसका थाह नहीं पाया जा सके । २. जिसका थाह मिल गया हो । (न०) समुद्र ।

थाघ–दे० थाग ।

थाट–(न०) १. समूह । दल । २. सेना । फौज । ३. ठाट । शान । तड़कभड़क । ४. आराम । मजा । आनंद । ५.समृद्धि । ६. रचना । बनावट । ७. उत्सव । समारंभ । ८. अधिकता । पुष्कलता । ९. न्यूनाभाव । १०. बैलगाड़ी के नीचे का भाग । ११. पशु समूह । १२ गायों के ठहरने का स्थान । बाड़ा । बाड़ो । १३. स्वर समुदाय । (संगीत) ।

थाटणो–(क्रि०)१. थट्ट लगाना । २.निर्माण करना । ३. शोभित करना ।

थाटथंभ–(न०) १. सेना-नायक । २. वीर । योद्धा ।

थाट-बाट–दे० ठाट बाट ।

थाटवी–(न०) पाटवी (युवराज) का छोटा भाई । (पाटवी का उलटा या अनुकरण)

थाड–दे० थाढ या ठाढ ।

थाडो–दे० ठाढो ।

थाढ–(ना०) ठंड । शीत । सरदी । ठाड ।

थाढो–दे० ठाढो ।

थाण–दे० ठाण ।

थाणादार–(न०) पुलिस थाने का मुख्य अधिकारी । पुलिस सब-इंसपैक्टर । थानेदार ।

थाणापती–(न०) १. स्थान रक्षक देवता । क्षेत्रपाल । ग्राम-देवता । २. एक ही स्थान पर रहने वाला । ३. सर्प ।

थाणो–(न०) १. पुलिस थाना । २. आल-वाल । थाँवला । ३. मुकाम ।

थाती (ना०) १ संचित धन । पूंजी । २. अमानत । धरोहर । सनामत ।

थान–(न०) १. स्थान । २. निवास । ३. किसी लोक देवता की मूर्ति का स्थान या मंदिर । ४. कपड़े की निश्चित लंबाई का टुकड़ा । थाका । ताको ।

थानक–(न०) १. स्थान । २. देव-स्थान । ३. लोक देवता का चबूतरा । ४. तेरापंथी या बाईसटोला जैन साधुओं के ठहरने-रहने का स्थान ।

थानकवासी–(न०) १. एक जैन सम्प्रदाय । २. थानक में रहने वाला ।

थान-निमठ–(वि०) मूर्ख ।

थानूं–दे० थानै ।

थानै–(सर्व०) तुम्हें । तुमको ।

थाप–दे० १. थप्पड़ । झापट । २. स्थापन करने की क्रिया ।

थाप-उथाप–(वि०)१.किसी को उच्च पद पर स्थापन और वहां से उत्थापन करने की शक्ति वाला । २. स्थापित किये हुए को उखाड़ने वाला । (न०)१. अधिकार । २. निर्णय करने का अधिकारी । ३.निर्णय ।

थाप-उथापण–दे० थाप-उथाप ।

थापट–दे० थप्पड़ ।

थापटणो–(क्रि०) १. थप्पड़ मारना । २. मारना । ३. थपेड़ना ।

थापड़ी–(ना०) गोबर को थपेड़ कर बनाई हुई टिकिया । उपला । थेपड़ी । २.थप्पड़ । चांटा । थाप ।

थापण–(न०) १. स्थापन । २. माल । जायदाद । पूंजी । थाती । ३.घर, जमीन आदि अचल संपत्ति । ४. रहन रखी हुई वस्तु । थाती । धरोहर । गिरवी ।

थापण-उथापण–दे० थाप-उथाप ।

थापणो–(क्रि०) १. स्थापित करना । थापना । कायम करना । २. प्रतिष्ठित करना । ३.उपला थेपना । ४. तै करना ।

निश्चित करना । ५. थपेड़ना । ६. थप्पड़ मारना । प्रहार करना ।

थापन-(न०) स्थापन ।

थापना-(ना०) १. किसी देव मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा करके मंदिर में की जाने वाली स्थापना । २. नवरात्रि के प्रथम दिन दुर्गा पूजा के लिये की जाने वाली घटस्थापना । ३. प्रतिष्ठा महोत्सव । ४. स्थापनादिवस । ५. अधिकार ।

थापनाचारज-(न०) १. स्थापना करने या कराने वाला । २. स्थापनाचार्य ।

थापल-(वि०) १. स्थापित किया हुआ । २ थपेड़ा हुआ ।

थापलणो-(क्रि०) १. थपेड़ना । २. प्यार से थपकी देना । ३. उत्साह बढ़ाना ।

थापी-(ना०) १ ढोलक आदि वाद्यों पर लगाई जाने वाली थापी । २. हिमायत । ३.शह । उत्तेजन । उकसाव । ४.उभार । बढ़ावा । ५. मदद ।

थापो-(न०) १. सिंह, चीते आदि हिंसक पशुओं के अगले दोनों पाँवों के बीच के ऊपर का भाग । वक्षस्थल । २. गीली रोली से लगाया हुआ हथेली का छापा । थापा । ३.ओढ़नी आदि वस्त्रों पर छपाई, जरी तथा कसीदे की कोई गोल बनावट ।

थावो-(न०) १. किसी काम के लिये किसी के पास जाने पर, उसके नहीं बनने की निष्फलता । २. व्यर्थ आने जाने की क्रिया । चक्कर । आँटा । ३. हैरानी । परेशानी ।

थावोखाणो-(मुहा०)१. व्यर्थ आना जाना । २. चक्कर खाना । ३. आँटा खाना ।

थाम-(न०) १. थंभ । स्तंभ । **थांभो** । २. रोक । अवरोध ।

थामणो-(क्रि०) १. रोकना । २. खड़ा करना । ३ पकड़ रखना ।

थाम पूजा-दे० थाँभ पूजा ।

थामली-दे० थाँभली ।

थामलो-दे० थाँभलो ।

थाय-(क्रि०भू०) 'होना' क्रिया का एक रूप । इसके अन्य रूप 'थाया । थाये' 'हुवै' और 'होवे' हैं ।

थाया-(भू०क्रि०) 'थयो' का एक बहुवचन रूप । हुए । **थया** । **हुआ** ।

थारली-(सर्व०) तेरी । **थारी** ।

थारलो-(सर्व०) तेरे वाला । तेरा । **थारो** ।

थारी-(सर्व०) तेरी । **थारी** ।

थारी-म्हारी-(अव्य०) १. तेरी और मेरी का भ्रम । भ्रमजाल । माया-जाल । तेरी-मेरी । २. अधम प्रकार का गाली-गलौच । **मम्मो-चच्चो** ।

थारै-(सर्व०) तेरे ।

थारो-(सर्व०) तेरा ।

थाळ-(न०) १. बड़ी थाली । २. ठाकुरजी के नैवेद्य का थाल । २. ठाकुरजी को थाल रखते समय गाया जाने वाला स्तोत्र-गान ।

थाल-(वि०) १. अनुकूल । सीधा । २. यथावत् । (ना०) १. अनुकूलता । अनुकूल स्थिति । सीधी स्थिति । २. किसी भारी वस्तु को उलटने की क्रिया ।

थाळ-अरोगणो-(मुहा०) भोजन करना । (रईसों के लिये प्रयुक्त) ।

थाल-पड़णो-(मुहा०) १. किसी काम का अपने अनुकूल पार पड़ जाना । काम का बन जाना । २. व्यवस्थित रूप से बनना ।

थाळकियो-(न०) छोटी थाली ।

थाळी-(ना०) १. थाली । २. एक वाद्य । थाली-वाद्य । ३. भोजन । ४. परोसी हुई थाली ।

थाळी बजावणी-(मुहा०) पुत्र जन्म की खुशी में थाली बजाना ।

थावणो-(क्रि०) १. होना। २. बनना।

थावर-(न०) १. शनि। २. शनिवार। ३. पर्वत। पहाड़। (वि०) १. स्थावर। अचल। २ मूर्ख। नासमझ।

थावर वार-(न०) शनिवार।

थावरियो-(न०)१. शनि-कोप निवारण हेतु दान लेने वाली एक ब्राह्मण जाति। २. इस जाति का व्यक्ति। सनीचरियो।

थावस-(न०) १. धीरज। २. स्थिरता। ३. विश्वास। ४. आश्वासन। सान्तवना। दिलासा।

थावसणो-(क्रि०) १. धीरज बँधाना। २. सान्तवना देना। दिलासा देना।

थासूं (सर्व०) तेरे से। तुझ से।

थाह-(ना०) १. नदी, तालाब आदि की गहराई की सीमा। थाह। तल। २. गहराई का पता। ३. छेह। पार। अंत।

थाहणो-(क्रि०) १. स्थित करना। २. रोकना। (वि०) रोकने वाला।

थाहर-(न०)१. स्थान। २. सिंह की गुफा। ३. गढ़। ४. घर। मकान। ५. सीमा।

स्तम्भ पूजा।

थांभली-(ना०) छोटा खंभा। थामली।

थांभलो-(न०) खंभा। स्तम्भ। थांभो।

थांभायत-(न०)वंश का मूल पुरुष। शाखा पुरुष। वडेरो।

थांभो-(न०)(न०)खंभा। स्तंभ। थांभलो। २. सहारा। ३. वंश (वंश वृक्ष या उसकी बड़ी शाखा) का मूल पुरुष। ४. वंश-वेलि। ५. साधु-सम्प्रदाय में वह साधु जिसके नाम से उसकी शिष्य परम्परा पहचानी जाती है।

थाँरी-(सर्व०) तुम्हारी। आपकी। थांकी।

थाँरै-(सर्व०) तुम्हारे। आपके। थांके।

थाँरै सूं-(अव्य०) तुम्हारे से। थांसूं।

थाँरो-(सर्व०) तुम्हारा। आपका। थांको।

थाँ सूं-(अव्य०) तुम्हारे से। थांरैसूं।

थाँहरी-दे० थाँरी।

थाँहरै-दे० थाँरै।

थाँहरो-दे० थाँरो।

थाँ हस्ते-(अव्य०) १. तुमारे द्वारा। २. तुमारी मारफत। ३. तुमारे हाथ से। ४. तुमारे यहाँ। ५. तुमारे अधिकार में।

थाँहाळी–(सर्व०)तुमारी। आपकी। थाँरी।
थाँहाळो–(सर्व०) तुम्हारा। थाँरो।
थिग–दे० थग।
थिगणो–(क्रि०)१. रुकना। २. लड़खड़ाना। डगमगाना।
थित–(ना०) १. धन-माल। २. अचल संपत्ति। ३. पृथ्वी। ४. स्थिरता। ५. पड़ाव। (वि०) १. स्थित। आसीन। टिका हुआ। २. अचल। स्थिर। ३. सदा। नित्य।
थित वाहरो–दे० थत वाहरो।
थितवाळो–दे० थतवाळो।
थितहीणो–दे० थतहीणो।
थिति–(ना०) १. एक ही स्थान में एक ही रूप में बना रहना। स्थिति। अस्तित्व। २. अवस्था। दशा। ३. आकार। स्वरूप। ४. वैभव। ५. मुकाम। ६. निवास।
थितियो–(अव्य०) लगातार। निरंतर। चालू। बराबर। स्थाई तौर से। (वि०) स्थिर। निश्चल।
थियो–दे० थयो।
थिर–(वि०)१.स्थिर। निश्चल। २.स्थायी। (ना०) पृथ्वी। थिरा।
थिरकणो–(क्रि०) १. चलायमान होना। २. नृत्य में पाँवों को तालबद्ध गति देना। थिरकना। ३. नृत्य में अंग सचालन का भाव दिखाना।
थिरकस–(वि०) स्थिर। निश्चल। (ना०) स्थिरता। निश्चलता।
थिरचक–(वि०) स्थिर। अटल। निश्चल।
थिरचर–(न०)भूमि पर रहने वाले प्राणी। भूचर। थळचर।
थिरता–(ना०) १. स्थिरता। निश्चलता। २. धीरता। धीरज। ३. दृढ़ता। ४. संतोष।
थिर थापत–(वि०) १. स्थिर-स्थापित। स्थाई रूप से स्थापित। स्थाई तौर से रहने वाला। (न०) १. स्थायित्व। टिकाव। ठहराव। २. अन्यत्र नहीं होने की स्थिति।
थिरमो–थरमो।
थिरा–(ना०) पृथ्वी। स्थिरा। जमी। धरती।
थिरु–(वि०) स्थिर।
थिहूर–(वि०) स्थिर।
थी–(प्रत्य०)करण तथा अपादान कारक का चिन्ह। से। (भू०क्रि०) १. वर्तमान 'है' क्रिया का नारी जाति भूतकालिक रूप। २. भूतकालिक 'थो' का नारी जाति रूप। हती। हुती। हुंती। छी। ही।
थीणो–(न०) खीच, खिचड़ी, घाट आदि रंधेज। रंधण। (वि०) ठसा हुआ। जमा हुआ।
थुई–(ना०) १. ऊँट की पीठ का उठा हुआ भाग। ऊँट की कूबड़। २. पंचमी तिथि को किया जाने वाला एक जैन व्रत। पंचमी स्तवन।
थुड़–(न०) १. वृक्ष का तना। धड़। गोढ। २. लड़ाई।
थुड़णो–(क्रि०) लड़ना। भिड़ना।
थुड़ी–(ना०) भिड़न्त।
थुनकार–दे० थुयकार।
थुतकारणो–दे० थुयकारणो।
थुतकारो–दे० थुयकारो।
थुनको–दे० थुयकारो।
थुयकार–(न०) 'थू' शब्द।
थुयकारणो–(क्रि०) दृष्टि-दोष के विरुद्ध थूकने का टोना करना। थूक कर कृत्रिम घृणा करना, जिससे किसी सुन्दर वस्तु पर दृष्टि-दोष का प्रभाव न हो।
थुयकारो–(न०) १. दृष्टि-दोष के विरुद्ध थूकने का टोना। थूक कर की जाने वाली

थेगड़–दे० थेगो ।

थेगो–(न०) सहारा । मदद ।

थेघ–(न०) ढेर । राशि । थाग । ढग ।

थेचाकूटो–(न०) १. बिना ढंग की बनी हुई वस्तु । भद्दी वस्तु । २. कुम्हार का एक औजार (वि०) १. निडर । निर्भय । २. निर्लज्ज । ३. धृष्ट । धीठ ।

थेचो–(न०) लोंदा ।

थेट–(न०)१. प्रारंभ । २. अंत । ३. निर्दिष्ट स्थान । उद्दिष्ट स्थान । ४. दूर । फासला । ५. लक्ष्य । (वि०) १. उद्दिष्ट । निर्दिष्ट । २. लक्ष्य । (अव्य०) १. अन्त तक । २. लक्ष्य तक ।

थेट तक–दे० ठेट तक ।

थेट ताणी–दे० थेट ताँई ।

थेट ताँई–(अव्य०) १. अंत तक । २. शुरू से आखिर तक ।

थेट सूं–(अव्य०) शुरू से । प्रारम्भ से ।

थेटा ताणी–दे० थेट ताँई ।

थेटा-ताँई–दे० थेट ताँई ।

थेटालग–(अव्य०)अंत तक । शुरू से आखिर तक ।

थेटालगी–दे० थेटा लग ।

थेटू–(अव्य०)थेट से । आदि से । परंपरागत ।

थेड़–(ना०) खंडहर ।

थेथड़–(ना०) १. मुँह पर की सूजन । २. लेपन । ३. मोटा लेपन । (वि०) १. निकम्मा । २. स्थूल । मोटा । जाडो ।

थेथड़णो–(क्रि०) मोटा लेप करना । गाढ़ा लेप देना ।

थेप–(ना०) मोटा लेपन ।

थेपड़ी–(ना०) थापे गये गोबर का छाना । गोबरी । उपला ।

थेपड़ो–(न०)१. चौड़ा चिपटा टपड़ा जिसके ऊपर लिखा रखा जाता है । थपुआ । खपड़ा । खपरैल । २. मोटे लेपन की उखड़ी हुई परत । सेपड़ो ।

थेपणो–(क्रि०) १. थपथपाना । थपकना । २. गोबर को पाथ कर उपला बनाना । थेपड़ी बनाना ।

थेबो–दे० थेगो ।

थेली–(ना०)१. थैली । बोरी । २. कोथली । कोथळी ।

थेलो–(न०)१. थैला । बोरा । २. कोथला । कोथळो ।

थेहू–दे० थह ।

थैं–(सर्व०) तैंने । तूने ।

थो–(भू०क्रि०) 'होणो' या 'होवणो' क्रिया का भूतकालिक रूप । 'है' का भूतकालिक पुल्लिंग रूप । था । हो ।

थोक–(न०) १. किसी वस्तु की व्यवस्थित राशि । २. माल की बड़ी राशि । इकट्ठी वस्तु । ३. फुटकर या खुदरा का उलटा । ४. सब का सब । एक साथ । ५. किसी वस्तु का इकट्ठा क्रय या विक्रय । ६. इकट्ठा बेचने की वस्तु । ७. ढेर । राशि । ८. झुंड । समूह । ९. उपकार । सहायता । १०. बात । काम । ११.वस्तु-स्थिति । १२. संयोग । संबंध । १३. हर बात में पूर्णता । १४. धनमाल । संपत्ति । १५. परिणाम ।

थोकड़ी–(ना०) १. गड्डी । २. राशि । ३. छोटी राशि ।

थोकड़ो–(न०) १. राशि । ढेर । २. बड़ी राशि । ३. झुंड । समूह ।

थोकबंध–(वि०)१. थोक में । एक साथ सब का सब । जथाबंध । २. खूब । बहुत । पुष्कल ।

थोगणो–(क्रि०) १. मुकाबिला करना । २. मुकाबिला करके [illegible] । [illegible] रोकना । ३. [illegible] ।

थोगळणो–(क्रि०) १. [illegible] । २. [illegible] । ३. [illegible] । [illegible]

घबराना । भय खाना । हड़बड़ाना । उद्विग्न होना ।

थोघणो-(क्रि०) रोकना ।

थोड़ा बोलो-(वि०) थोड़ा बोलने वाला । अल्पभाषी ।

थोडी-दे० ठोडी ।

थोड़ीक-(अव्य०)१. थोड़ी ही । २. बिलकुल थोड़ी ।

थोड़ीक तो-(अव्य०) थोड़ी तो ।

थोड़ीताळ-(अव्य०) १. थोड़ी देर । जरा देर से ।

थोड़ीसीक-दे० थोड़ीक ।

थोड़ो-(वि०) कम । अल्प । थोड़ा । कुछ । जरा । (ना०) थोड़ी ।

थोड़ो-घणो-(वि०) १. थोड़ा ही । २. कम ज्यादा । ३. थोड़ा । कुछ ।

थोड़ैरो-(वि०) थोड़ा सा ।

थोथ-(ना०) १. खोखलापन । पोल । २. वस्ती रहित प्रदेश । निर्जन प्रदेश । (वि०)१. खोखला । पोला । २. निर्जन । वस्ती रहित ।

थोथो-(वि०) १. व्यर्थ । निकम्मा । २. निःसार । ३. खोखला । पोला । ४. शून्य । निर्जन । ५.निर्धन । ६.निकम्मा । ७. खाली । (ना०) थोथी ।

थोपणो-(क्रि०) १. इलजाम लगाना । आरोप लगाना । २. जमाना । रखना । थोपना ।

थोबड़-दे० थोबड़ो ।

थोबड़ो-(न०) १. मुँह । मुख । २. लंबा मुँह । ३. क्रोध से बिगड़ा मुँह । ४. थोबड़ा ।

थोबणो-(क्रि०) रोकना ।

थोभ-(न०) १. रुकावट । अटकाव । २. रुकने का स्थान । ३. सहारा । आश्रय । ४. थंभा । ५. सीमा ।

थोभणो-(क्रि०) १. रुकना । अटकना । २. रोकना । अटकाना ।

थोभावणो-(क्रि०) १. रोकना । २. रुकवाना ।

थोभो-(न०) १. सहारा । २. टेक । सहारे की वस्तु । ३. रुकने की जगह ।

थोर-(न०) थूहर । सेहुँड़ ।

थोरण-(ना०) थोरी जाति की स्त्री ।

थोरणो-(क्रि०) १. देने का आग्रह करना । २. देना । ३. अनुरोध करना । आग्रह करना ।

थोरा करणो-(मुहा०)१. मनुहार करना । २. आग्रह करना । ३. खुशामद करना । किसी बात को मनाने के लिये गरज करना ।

थोरी-(न०) १. एक जाति । २. उस जाति का मनुष्य । ३. शिकारी ।

थोरो-(न०) १. अनुरोध । खुशामद । २. मनुहार । ३. प्रार्थना । ४. आग्रह । जोर ।

थोहर-दे० थोर ।

थ्यावस-दे० थावस ।

द

द-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का १८ वाँ और त वर्ग का तीसरा दंत स्थानीय व्यंजन वर्ण । दद्दो । ददियो ।

द-(वि०) 'देने वाला' अर्थ को सूचित करने वाला एक समासांत उपपद या प्रत्यय । जैसे-सुखद । धनद । (न०) १. देवता । २. पक्षी । ३. साधु ।

द।।:-(अव्य०)'दस्तखत' शब्द का छोटा रूप ।

दइत–(न०) दैत्य ।
दइत निकंदण–(न०) १. दैत्यों का नाश करने वाला । २. ईश्वर ।
दइतां गुरु–(न०) दैत्य गुरु शुक्राचार्य ।
दइतां दम–(न०) १. दैत्यों का दमन करने वाला । २. ईश्वर । भगवान ।
दइतांदम–दे० दइतां-दम ।
दइव–(न०) १. देव । सुर । २. विधाता । ३. दैव । भाग्य ।
दइव-रो-फेर–(अव्य०) १. भाग्य पलटा । २. अकस्मात । दुर्घटना । ३. सुअवसर ।
दइवाण–(न०) १. देव । देवता । २. देव समाज । देवगण । ३. स्वर्ग । ४. देवी का मन्दिर । देव्यायण । ५. भाग्य । दैव । प्रारब्ध । ६. राजा । (वि०) १. दैवी शक्तिवाला । २. देव तुल्य पराक्रमी । ३. शक्तिशाली । बलवान । जबरदस्त । ४. योद्धा । वीर । ५. बहुत बड़ा । महान । ६. होनहार ।
दई–(न०) १. भाग्य । दैव । २. विधाता ।
दई मारयो–(वि०) हतभाग्य । अभागा । (न०) एक गाली ।
दउलत–दे० दौलत ।
दक–(न०) पानी । जल ।
दकार–(न०) 'द' वर्ण । ददियो । दद्दो ।
दकाळ–(ना०)१. सिंह की गर्जन । २. डराने वाली जोर की आवाज । दहाड़ । गर्जन । ३. ललकार । ४. भय । डर । ५. जोश ।
दकाळणो–(क्रि०) १. ललकारना । २. डराना । ३. जोश में बोलना । ४. जोर से बोलना । ५. सिंह का गर्जन करना ।
दक्ष–(न०) एक प्रजापति । सती के पिता । (वि०) निपुण । कुशल ।
दक्षा–(ना०) पृथ्वी । धरती ।
दक्षिण–(ना०) दक्षिण दिशा । (वि०) दाहिना ।
दक्षिणा–(ना०) धार्मिक क्रिया या ब्राह्मण भोज के अंत में ब्राह्मणों को दिया जाने वाला दान । दिखणा ।
दख–(न०) दक्ष प्रजापति ।
दखण–(न०)१. दक्षिण दिशा । २. दक्षिण में स्थित प्रदेश ।
दखणाद–दे० दिखणाद ।
दखणादी–दे० दिखणादी ।
दखणादू–दे० दिखणादू ।
दखणादो–दे० दिखणादो ।
दखणी–दे० दिखणी ।
दखल–(ना०) १. प्रवेश । २. कब्जा । ३. हस्तक्षेप । दस्तंदाजी । रुकावट । दखल ।
दगड़–(न०)१. अनघड़ पत्थर । २. पत्थर । ३. मैदान ।
दगड़ी–(वि०)१. बेडौल(स्त्री)। जाड़ी-मोटी । २. वेशऊर (स्त्री०) । मूर्खा ।
दगड़ो–(वि०)१.मूर्ख । जड़ । २. दगाबाज । धूर्त । ३. जाड़ा-मोटा । बेडौल । ४. वेशऊर । (न०) १. ढेला । २. पत्थर ।
दगध–(ना०) १. जलन । २. मनस्ताप । ३. पीड़ा । दुख । (वि०)१. दग्ध । जला हुआ । २. उजड़ा हुआ । ३. अशुभ ।
दगधाखर–दे० दग्धआखर ।
दगल–(न०) दगा । धोखा । (वि०) दगाबाज ।
दगलखोर–दे० दगलबाज ।
दगलखोरी–दे० दगलबाजी ।
दगलबाज–(वि०) दगाबाज ।
दगलबाजी–(ना०)धोखाबाजी । दगाबाजी ।
दगळी–(ना०)रुई का अंगरखा । डगळी ।
दगाखोर–(वि०) दगाबाज । दगलबाज ।
दगाखोरी–(ना०) दगाबाजी ।
दगाबाज–(वि०) धोखेबाज । छली । दगलबाज ।
दगाबाजी–(ना०) धोखा बाजी ।
दगो–(न०) १. दगा । छल । धोखो । २. विश्वासघात ।

दधसुत–(न०) १. चंद्रमा। दधिसुत। २. मोती। ३. अमृत।

दधि–(न०) १. समुद्र। २. दही।

दधिसुत–दे० दधसुत।

दन–(न०) दान।

दनादन–(अव्य०) १. एक के बाद एक। २. दन-दन करते हुए। ३. तुरंत। झटपट।

दनुज–(न०) राक्षस।

दपट–(वि०) १. बहुत अधिक। पुष्कल। २. तेज।

दपटणौ–(क्रि०) १. सभी ओर से आच्छादित करना। लपेटना। ढक देना। २. डाँटना। धमकाना। ३. दौड़ना। भागना। ४. संहार करना। मारना। ५. पेट भर कर खाना।

दपरजात–(न०) १. चाकर। सेवक। नौकर। २. गुलाम। ३. गोला। गोलो।

दप्प–दे० दर्प।

दप्पण–(न०) दर्पण। आईना।

दफणाणौ–दे० दफणावणौ।

दफणावणौ–(क्रि०) १. जमीन में गाड़ना। दफनाना। दाटणौ। २. मुर्दे को गाड़ना।

दफतर–(न०) १. कार्यालय। ऑफिस। २. हिसाब-किताब तथा विवरण के कागजात।

दफतरी–(वि०) १. दफतर से संबंधित। २. राजकाज से संबंधित। (न०) १. दफतर का कर्मचारी। २. जिल्दसाज।

दब–(न०) १. दबाव। २. जोर। ३. डर। भय।

दबकणौ–(क्रि०) १. छिपना। लुकना। २. डरना। भयखाना। ३. धातु के तार या पत्र आदि को सचे, डाई, प्रड़ी आदि में हथोड़े से ठोंक कर [illegible] करना। ४. हथोड़े से ठोंक कर बढ़ाना।

दबकेल–(वि०) १. मातहत। आधीन। पराधीन। २. दबा हुआ। दबेल। ३. दबने वाला। ४. डरपोक। ५. असमर्थ।

दबकै–(क्रि०वि०) तुरंत। शीघ्र। झट।

दबणी–(ना०) हार। पराजय।

दबणौ–(क्रि०) १. बोझ के नीचे आना। दबना। २. विवश होना। ३ संकोच करना। ४. झुकना। ५. हारना। हार स्वीकार करना। ६. वश न चलना। ७. दुबकना। ८. बीमारी में मरने की स्थिति में आना। ९. स्थिति का कमजोर होना।

दबदबौ–(न०) १. ठाटबाट। भपका। २. रोब। आतंक।

दबवाळ–दे० दबेल।

दबंग–(वि०) १. निर्भय। २. उद्दण्ड। ३. प्रभाव वाला। ४. नहीं दबने वाला। ५. व्यक्तित्व वाला।

दबाक–(ना०) कुदान। छलांग। फदाक। (क्रि०वि०) झट। तुरंत। दबकै।

दबाण–(न०) १. भार। वजन। २. असर। प्रभाव।

दबाणौ–दे० दबावणौ।

दबादब–(क्रि०वि०) झट। तुरंत। शीघ्र।

दबाव–(न०) १. दाबने की क्रिया या भाव। चाँप। २. भार। बोझो। ३. प्रभाव। असर। ४. उत्तरदायित्व।

दबावणौ–(क्रि०) १. दबाना। दाबना। भार के नीचे डालना। २. विवश करना। ३. संकोच में डालना। ४. झुकाना। ५. हराना। पराजित करना। ६. दूसरे का वश न चलने देना। ७. कमजोर बनाना। ८. दूसरे के गुणों का प्रकाश नहीं होने देना। ९. बलपूर्वक अपने अधिकार में लेना या करना। १० दबोचना। ११. ठूंसना। दाबना। १२. उभड़ने नहीं देना। ऊँचा उठने नहीं

देना। १३. किसी बात को उठने या फैलने नहीं देना।

दबियोड़ो-(वि०) १. बोझ के नीचे आया हुआ, दबा हुआ। २. प्रभावित। ३. आतंकित। ४. विवश। ५. पराजित। ६. संकुचित। ७. गड़ा हुआ। ८. उठी हुई या फैली हुई नहीं। ९. छुप किया हुआ। १०. गुप्त। छिपा हुआ।

दबेल-दे० दबकेल।

दब्बू-(वि०) डरपोक।

दम-(न०) १. दम। श्वास। सांस। २. दमा। श्वास रोग। दमे की बीमारी। ३. जीव। प्राणवायु। ४. ताकत। बूता। दम। कुव्वत। शक्ति। ५. टिकाव। स्थिति। ६. दृढ़ता। मजबूती। ७. संयम। निग्रह। ८. क्षण। ९. चिलम, हुक्के आदि के धुएँ का कश। दम। धूम्रपान का सड़ाका।

दमक-(ना०) चमक।

दमकणो-(क्रि०) चमकना। दमकना।

दमगळ-दे० दमंगळ।

दमजोड़ो-(वि०) कंजूस।

दमड़ा-(न०ब०व०) १. रुपया पैसा। २. धन-माल।

दमड़ी-(न०) १. पैसे का चौथा भाग। (कहीं कहीं आठवाँ भाग)

दमण-(वि०) १. दमन करने वाला। नाश करने वाला। (न०) १. बलपूर्वक शांत करने का काम। दमन। २. दमन। निग्रह। ३. नाश।

दमणो-(क्रि०) १. दमन करना। २. रोकना। ३. वश में करना। ४. दबाना।

दमदमो-(न०) १. मकान के ऊपर बनी छोटी कोठरी की छाजन। २. जीने (सीढ़ी) के ऊपर बनी कोठरीनुमा छाजन। ३. किलेबंदी की ओट में बनाई हुई वह छाजन या पाटन जिस पर बैठ कर बंदूकें दागी जाती हैं। ४. मोरचा। ५. एक प्रकार की तोप। ६. धूल से भरी हुई बोरियों अथवा रुई से भरी हुई बरकियों के द्वारा युद्ध मोर्चे की बनी दीवाल ७. आडंबर। ढोंग।

दमदाटी-(ना०) डाँट। डाँट-डपट। धमकी।

दमदार-(वि०) १. दमवाला। २. जीवनी शक्ति वाला। जानदार। ३. दृढ़। मजबूत। ४. तेज। तीव्र। ५. चोखा। अच्छा।

दमबाज-(वि०) १. गांजा-चरस आदि नशीली वस्तुओं की चिलम पीने वाला। इन वस्तुओं का नशा लेने वाला। २. धोखेबाज।

दमंगळ-(न०) १. युद्ध। लड़ाई। २. उत्पात। ३. उपद्रव।

दमाज-(न०) ऊँट।

दमाद-(न०) दामाद। जमाई।

दमाम-(न०) १. रोब। आतंक। दबदबा। २. नगाड़ा।

दमामी-(न०) १. ढोली। २. ढोल या नगाड़ा बजाने वाला।

दमामो-(न०) १. युद्ध का ढोल। २. युद्ध के समय बजाया जाने वाला नगाड़ा। ३. बड़ा ढोल या नगाड़ा।

दमेदो-(न०) १. एक मिठाई। ठोर। २. बड़ा बतासा। ३. तल कर बनाई हुई चीनी में पगी मोटी रोटी।

दया-(ना०) १. अनुकंपा। करुणा। रहम। २. शुभ नजर। ३. कृपा।

दयादृष्टि-(ना०) कृपा या अनुग्रह की दृष्टि। रहम नजर।

दयामणो-(वि०) १. ऐसी स्थिति वाला, जिसको देखने से दया उत्पन्न हो। २. दयनीय। दया के योग्य। दया पात्र।

३ विकुल मुख । ४. गरीब । रंक । ५. दुखी ।

दया-मया–*(ना०)* दया और मोह-ममता ।

दयारास–*(न०)* राजस्थानी साहित्य की सोलह दिशाओं में की एक दिशा का नाम । आठ दिशाओं के अंतरकोण की एक दिशा ।

दयाळ–*(वि०)* १. कृपालु । दयालु । २. करुणार्द्र । रहम दिल ।

दयाळजी–*(न०)* मारवाड़ के प्रसिद्ध निरंजनी संप्रदाय के आदि प्रवर्तक श्री हरिपुरुषजी । (हरिसिंह नाम के एक राजपूत का साधु और सिद्ध पुरुष हो जाने के बाद का एक नाम । इनकी समाधि और गद्दी डीडवाना (मारवाड़) के पास गाढ़ा गाँव में है) ।

दयालु–*(वि०)* करुणार्द्र । रहमदिल । दयालु ।

दयावंत–*(वि०)* दयावाला । दयावान । दयालु ।

दयावान–*(वि०)* दयावंत । दयालु ।

दर–*(न०)* १. चूहे आदि का बिल । २. भाव । ३. कीमत । ४. इज्जत । ५. द्वार । ६. गुफा । ७. दरबार । सभा । ८. हृदय । (अव्य) हरेक । प्रत्येक ।

दरक–*(न०)* ऊंट ।

दरकार–*(ना०)* १. आवश्यकता । २. परवाह । ३. संभाल । ४. इच्छा । चाह ।

दरकूच–*(ना०)* १. समूह यात्रा या सेना के प्रत्येक विश्राम (दर मजल, दर मंजिल) के बाद की जाने वाली रवानगी या कूच । २. आक्रमण के लिए की जाने वाली चढ़ाई । ३. प्रस्थान । रवानगी । कूच ।

दरखत–*(न०)* दरख्त । वृक्ष । पेड़ ।

दरखास्त–*(ना०)* १. दरख्वास्त । प्रार्थना-पत्र । अर्जी । २. प्रार्थना । अर्ज ।

दरगा–*(ना०)* १. ईश्वर का दरबार । २. राजा का दरबार । सभा । ३. पीर की कबर । मजार । दरगाह । मक-बरा ।

दरगाह–दे० दरगा ।

दरगुजर–*(वि०)* १. माफ किया हुआ । २. सहन किया हुआ ।

दरज–*(वि०)* १. बही, चौपड़ा, रजिस्टर आदि में लिखा हुआ (रकम, कलम-आइटम) । २. लिखा हुआ । अंकित । दर्ज । ३. प्रतिलिपि किया हुआ । *(ना०)* फटा हुआ । स्थान । दरका । दरार ।

दरजण–*(ना०)* १. दरजी की स्त्री । दरजिन । *(न०)* १. बारह वस्तुओं का समाहार । डजन । ३. गिनती में बारह का समूह । दरजन । डजन ।

दरजी–*(न०)* दरजी । सूचिक ।

दरजो–*(न०)* १. अधिकार । २. कोटि । ३. कक्षा । श्रेणी । ४. ओहदा । पद ।

दरजोजण–*(न०)* दुर्योधन ।

दरजोण–दे० दरजोजण ।

दरड़–*(न०)* जमीन खोद कर बनाई हुई पतली लंबी जगह जिसमें चूहे आदि जीव जंतु रहते हैं । बिल । दरड़ो । दर ।

दरड़ो–*(न०)* १. खड्डा । गड्ढा । खाडो । बिल । विवर ।

दरद–*(न०)* दुख । पीड़ा । दर्द । पीड़ ।

दरदरो–*(वि०)* जो मोटा पिसा, दला या कूटा हुआ हो । जो बारीक पिसा-कुटा न हो ।

दरदवान–*(वि०)* १. दर्दी । दुखी । २. जरूरतमंद । आवश्यकता वाला ।

दरदी–*(वि०)* १. दर्दी । बीमार । मांदो । २. पीड़ित । दुखी ।

दरप–*(न०)* दर्प । गर्व । घमंड ।

दरपक–*(न०)* कामदेव । मनोज ।

दरपण-(न०) दर्पण। शीशा। आईना। काच।

दरब-(न०) १. धन। द्रव्य। २. माल। सामान।

दरबान-(न०) द्वारपाल।

दरबार-(न०) १. राजसभा। २. राजा।

दरबारी-(वि०) १. दरबार का। दरबार से संबंधित।

दरभ-(ना०) दर्भ। डाभ।

दरमजल (ना०) समूह यात्रा या सेना के अभियान का किया जाने वाला प्रत्येक विश्राम। दरमंजिल। दर पड़ाव। मंजिल दर-मंजिल।

दरमायो-दे० दरमाहो।

दरमाहो-(न०) मासिक वेतन।

दरवाजो-(न०) १. द्वार। दरवाजा। २. किवाड़।

दरवेस-(न०) १. मुसलमान फकीर। दरवेश। २. साधु।

दरस-(न०) १. दर्शन। दर्श।

दरसण-दे० दर्शन।

दरसणी-(न०) १. जो दर्शन करने योग्य हो। साधु पुरुष। २ संन्यासी। ३. दर्पण। ४. एक पक्षी। (वि०) १. वह (हुंडी) जिसका भुगतान तत्काल (जब ले आवे उसी समय) हो जावे। २. दर्शन करने योग्य। दर्शनीय। ३. मनोहर।

दरसणीक-(वि०) १. दर्शन करने योग्य दर्शनीय। २. सुकृति।

दरसणी-हुंडी-(ना०) वह हुंडी जिसके दिखाते ही उसमें लिखे हुए रुपयों का भुगतान करना पड़े। दर्शनी हुंडी।

दरसणो (क्रि०) १. दिखाई देना। २. जानने में आना। ३. विचार में आना। ४. प्रतीत होना।

दरसल-(अव्य०) दरअसल। वास्तव में।

सारणी-दे० दरसावणो।

दरसाव-(ना०) १. दृश्य। २. दिखावा। आविर्भाव। ३. प्रदर्शीकरण।

दरसावणो-(क्रि०) १. बताना। २. दिखाना। दरसाना। ३. समझाना। ४. दिखाई देना। ५. प्रगट होना। ६. प्रगट करना।

दरंग-दे० ढंग।

दराज-(वि०) १. अधिक। बहुत। २. महत्त्वपूर्ण। श्रेष्ठ। ३. दीर्घ। विशाल। लंबा। (ना०) कागज आदि रखने का मेज में लगा खाना। मेज का कोष्टक।

दराड़-(ना०) फटा हुआ स्थान। दरार। दरज।

दरि-(न०) १ दरियाखाना। राजसभा। २. द्वार। दरवाजा। ३. घर।

दरिगह-दे० दरगा।

दरिद्र-(वि०) गरीब। निर्धन।

दरिद्री-(वि०) १. गरीब, निर्धन। २. गंदा। मैला। ३. आलसी। सुस्त।

दरियादासी-(वि०) १. दरियावजी के पंथ का अनुयायी। २. दरियावजी द्वारा प्रवर्तित (पंथ)।

दरियाफ्त-(वि०) मालूम। ज्ञात।

दरियाव-(न०) १. समुद्र। २ बड़ी नदी। ३. बड़ा जलाशय।

दरियावजी-(न०) रैण (मेड़ता-मारवाड़) की रामस्नेही संप्रदाय (दरियापंथ) के एक मुसलमान रामभक्त साधु। दरिया साहब।

दरी-(ना०) १. गुफा। २. तलघर। ३. मोटे सूत से बना हुआ बिछावन। दरी। सतरंजी। फरासी। सेतरूंजी।

दरीखानो-(न०) १. अनेक दरवाजों-बारियों वाला स्थान या बैठक। २. राजसभा का स्थान। ३. जागीरदार का मकान या बैठक। ४. राजसभा। दरबार।

दरीभ्रत–(न०) पर्वत । पहाड़ ।

दरूजो–(न०) दरवाजा । द्वार । **बारणो । मगेरणो ।**

दरोगण–(ना०) १. दरोगा जाति की स्त्री । २. दरोगा की स्त्री । ३. दासी ।

दरोगो–(न०) १. वर्णसंकर क्षत्री । २. दासीपुत्र । ३. एक वर्णसंकर । क्षत्री जाति । ४. एक राज्याधिकारी । दारोगा ।

दरोळ–(न०) १. बाधा । रुकावट । विघ्न । २. विरोध । व्याघात । ३. क्षोभ । अशान्ति । ४. उपद्रव । उत्पात । घबराहट । खलबली ।

दर्प–(न०) १. घमंड । गर्व । २. आतंक । ३. उद्दंडता ।

दर्पण–(न०) आईना । शीशा । दरपण ।

दर्शन–(न०) १. साक्षात्कार । प्रत्यक्ष । २. दर्शन । देखाव । देखने की क्रिया । ३. भक्तिभाव से देखने की क्रिया । दर्शन । ४. दर्शन शास्त्र (षट दर्शन) । ५. नाथ संप्रदाय के संन्यासियों के कानों के कुंडल ।

दळ–(न०) फौज । सेना । २. समूह । ३. जाडाई । मोटाई । ४. घनता । ५. पत्ता । पत्र । ६. फूल की पँखुरी । ७. खड्ग । कोश । **म्यान** । ७. पार्टी । पक्ष । ८. मैल । विकार । ६. नशा ।

दळण–(न०) १. नाश । दलन । २. दरदरा पिसा अन्न । **दळियो** । ३. दाल । ४. दलने की क्रिया ।

दळणी–(ना०) चक्की । घट्टी ।

दळणो–(क्रि०) १. मोटा पीसना । दलना । २. पीसना । ३. नाश करना । ध्वस्त करना ।

दळथंभ–(वि०) १. सेना को रोकने वाला । २. युद्ध में खंभ की तरह खड़ा रह कर लड़ने वाला । ३. शूरवीर । ४. जोधपुर के महाराजा गजसिंह का विरुद या उपाधि ।

दळथंभण–दे० दळथंभ ।

दळद–(न०) दारिद्रय । निर्धनता । **गरीबी** ।

दळदर–(न०) १. दरिद्रता । **गरीबी** । २. आलस, नींद आदि की अधिकता । ३. मैल । ४. गंदगी । (वि०) दरिद्र । दाळदर ।

दळदरी–दे० दरिद्री ।

दळदळ–(न०) दलदल । कीचड़ । **कादो** ।

दळदार–(वि०)१. मोटे दल या परत वाला । **जाडो** । मोटा । २. दल वाला ।

दळ-दीपक–(न०)१. चारणों द्वारा राजाओं को दिया जाने वाला एक विरुद । २.सेना को प्रकाशित करने वाला । सेना को यशस्वी बनाने वाला । ३. सेना में दीपक रूप ।

दळद्र–(न०)१. दारिद्रय । दारिद । **गरीबी** । निर्धनता । २. गंदगी । मलिनता । ३. मैल ।

दळद्री–(वि०) १. दरिद्री । निर्धन । **गरीब** । २. गंदा । गंदला । मैला । ३. आलसी ।

दळपति–(न०) १. सेनापति । २. अगुआ ।

दळ-पाँगळो–(न०) सेना की अतिशयता । अधिकता के कारण पंगु की गति के समान दिखाई देने वाली सेना । २. ऐसी विशाल सेना का स्वामी होने के कारण जयचंद का एक प्रसिद्ध विरुद ।

दळ-बगसी–(न०) १. सेना का एक अधिकारी । २. सेना में वेतन बाँटने वाला अधिकारी । ३. सेना का खजानची ।

दळ-बळ–(न०) १. सेना । २. समूह । ३. ठाट । ४. सैनिक शक्ति ।

दळ बादळ–दे० दळबादळ ।

दळभंजण–(वि०) सेना का अकेला संहार करने वाला । महान योद्धा ।

दळमळणो–(क्रि०) नाश करना ।

दळमोड़-(वि०) शत्रु सेना को पीछे हटाने वाला । वीर ।

दळनाट-दे० दळपति ।

दळ बादळ-(न०) १. सैन्य समूह । बहुत बड़ी सेना । २. बड़ा शामियाना । ३ अनेक कोठरियों वाला सभी साधनों से युक्त विशेष प्रकार से सजाया हुआ बड़ा और ऊँचा शामियाना । ४. बड़ा महल । बड़ा प्रासाद । ५. भित्तादि से शोभित और सज्जित ऊँचा महल । ६ मेघ घटा । ७. एक प्रकार का वस्त्र ।

दळ-सिणगार-(न०) १. सेना का शृंगार । अद्वितीय वीर सेनापति । (वि०) वीर । पराक्रमी ।

दलाल-(न०) १. वह मध्यस्थ व्यक्ति जो शुल्क लेकर के दो व्यापारियों में खरीद फरोख्त (का सौदा) करने कराने में में सहायता दे । सौदा ठीक कराने वाला । बिचवई । ब्रोकर । दलाल । २. शुल्क ले करके व्यापारियों का माल रेल द्वारा भेजने तथा रेल द्वारा आया हुआ माल छुड़ाने का काम करने वाला व्यक्ति । मुक़ादम । मारफतिया ३. कुटना । भडुआ । (वि०) दानशील । उदार ।

दलाली-(ना०) १. दलाल का काम । २. दलाल के काम का पारिश्रमिक ।

दळाँवै-(न०) दलपति । सेनापति ।

दलिद्र-(वि०) दे० दळद्र ।

दळियो-(न०)१. दला हुआ अन्न । दलिया । २. दले हुये अन्न को पका कर बनाया खाद्य पदार्थ । दलिया ।

दळीचो-दे० दुलीचो ।

दलील-(ना०)१. बात के समर्थन या विरोध में दिखाया हुआ कारण । तर्क । २. विवाद । बहस ।

दलेची-(ना०) द्वार के पास का कमरा । दरीची ।

दलेल-(वि०) १. उदार । २. दयालु । ३. दलील । तर्क । बहस ।

दलोल-ढलोल-रा-मगरा-(न०) मेवाड़ की एक पर्वत श्रेणी ।

दव-(न०) १. दावाग्नि । दावानल । २. अग्नि । आग । ३. जंगल । वन । ३. झगड़ा । कलह ।

दवा-(ना०) १. औषधि । दवा । २. इलाज । चिकित्सा ।

दवाई-(ना०) औषधि । दवा ।

दवागीर-(वि०) दुआ देने वाला ।

दवात-(ना०) स्याही रखने का छोटा पात्र । मसिपात्र । मजियामणी ।

दवात-पूजा-(ना०) वाणी और श्रीवृद्धि के लिए दीपावली (और कहीं कहीं होली) पर दवात और कलम की जाने वाली पूजा ।

दवा-दारू-(ना०) १. इलाज । चिकित्सा । २. इलाज की व्यवस्था । ३. औषधि समूह । औषधियाँ ।

दवा-पाणी-दे० दवादारू ।

दवामी-(वि०) स्थाई ।

दवामी काश्तकार-(न०) स्थाई कृषि करने का हक वाला कृषक ।

दवामी पट्टो-(न०) इस्तमरारी पट्टा ।

दवायती-(ना०) १. आज्ञा । इजाजत । २. अनुमति । स्वीकृति । ३. निस्तार । छुटकारा । ४ पंचों द्वारा न्याती भोज करने की आज्ञा ।

दवावेत-(ना०) १. राजस्थानी भाषा की उर्दू (मुसलमानी) प्रभाव वाली अनुप्रासवाली गद्य शैली । २. छोटा इतिहास प्रसंग ।

दवे-(न०) ब्राह्मणों की एक अल्ल । द्विवेदी । दुबे ।

दश-दे० दस ।

दशकंठ–(न०) रावण ।

दशकंध–(न०) रावण ।

दशकंधर–(न०) रावण ।

दशन–(न०) दाँत ।

दशनामी–दे० दसनामी ।

दशनावलि–दे० दसनावळ ।

दशम अवस्था–(ना०) मृत्यु । मौत ।

दशमलव–(न०) गणित में भिन्न का एक भेद जिसमें हर दश पर उसका कोई घात होता है । इकाई के दसवें, सौवें इत्यादि भाग को सूचित करने के लिये संख्या के पहले लगाया जाने वाला बिंदु । २. उक्त पद्धति । ३. उक्त चिह्न युक्त संख्या ।

दशमुख–दे० दसमुख ।

दशरथ–(न०) श्रीराम के पिता ।

दशशीश–दे० दस धू ।

दशहरा–दे० दसरावो ।

दशा–(ना०) १. स्थिति । हालत । २. ग्रहों का भाग्यकाल । दशा । ३. ग्रहों का भोग्यकाल । दशा । ४. बुरी दशा ।

दशानन–(न०) रावण । दसमुख ।

दशांग धूप–(न०) दश सुगंधित । द्रव्यों के मेल से बना धूप ।

दशांश–(न०) दशवां भाग ।

दस–(ना०) १. दस की संख्या '१०' (वि०) पांच और पांच ।

दसकत–दे० दसखत ।

दसकंध–(न०) रावण । दशानन ।

दसकंधर–(न०) रावण । दशकंधर ।

दसको–(न०) १. दस वर्ष का समय । २. दस वर्षों का समूह ।

दसखत–(न०) १. हस्ताक्षर । दस्तखत । सही । २. अक्षर की लिखावट । ३. हाथ की लिखावट । ४. लिखावट । लेख ।

दसग्रीव–(न०) रावण ।

दसण–(न०) दांत । दशन ।

दसणाण–(न०) १. दशानन । रावण । २. दस जनों का समूह । दश जने ।

दस द्वार–(न०) शरीर के दस छेद । यथा:– आँखें २, कान २, नाक २, मुँह १, गुदा १, लिंग १ और ब्रह्मछिद्र (कपाल में)

दसधू–(न०) दशानन । रावण । दसमाथ ।

दसनामी–दे० दसनामी संन्यासी ।

दसनामी संन्यासी–(न०) १. आदि शंकराचार्य के दस शिष्यों द्वारा चलाया गया संन्यासियों का एक संप्रदाय । २. दश प्रकार के संन्यासी यथा – अरण्य, आश्रम, गिरि, तीर्थ, पर्वत, पुरी, भारती, वन, सरस्वती और सागर । ३. आदि शंकराचार्य के दशनामी संप्रदाय का संन्यासी ।

दसनावळ–(ना०) दशनावलि । दंत पँक्ति । दंत ओळ ।

दस वीसी–(वि०) दोय सौ ।

दसम–(ना०) १. चांद्र मास के प्रत्येक पक्ष की दसवीं तिथि । २. पक्ष का दसवाँ दिन । दशमी ।

दसमाथ–(न०) रावण ।

दसमी–(ना०) १. दशम तिथि । २. आटे को दूध में गूंध कर बनाई जाने वाली रोटी ।

दसमुख–(न०) रावण ।

दसमूळ–(न०) औषधि रूप में काम आने वाली दस प्रकार की जड़ें वा उनका समूह ।

दसमो–(वि०) दसवाँ । (न०) १. प्रसव के बाद के दसवें दिन का अशौच कर्म । दशवाँ । दसोठण । २. मृत्यु तिथि से दसवें दिन होने वाला प्रेत कृत्य । दसवाँ ।

दसमो धोवणो–(मुहा०) प्रसूता का दशवें दिन प्रथम स्नान करना और जनना शौच का प्रथम निवृत्ति कर्म करना ।

दसमो सालगराम–(न०) [illegible] के [illegible] [illegible] की एक उपाधि ।

दसरथ–दे० दशरथ ।

दसरथ-तणा–(न०) राम । दशरथ तनय ।

दसरथ रावउत–(न०) १. श्री रामचंद्र । २. पृथ्वीराज राठौड़ के [illegible] श्रीरामचंद्र की स्तुति का दोहा काव्य ।

दसरावो–(न०) आश्विन शुक्ल १० को [illegible] भगवान राम द्वारा रावण के वध का उत्सव । रावण वध का मेला । विजया-दशमी । दशहरा ।

दसरोहो–दे० दसरावो ।

दसवीसी–दे० दसवीसी ।

दस सहरो–(न०) गहलोत क्षत्रियों की एक उपाधि ।

दससिर–(न०) रावण ।

दससीस–(न०) रावण । दसमाथ ।

दसा–दे० दशा । (न०ब०व०) १. उपजाति के लोग । जैसे—दसा ओसवाळ, दसा श्रीमाळी इत्यादि । २. किसी जाति की पेटा जाति । उपजाति । ३. वर्णसंकर । जाति वा वंश ।

दसाणण–(न०) दशानन । रावण । दस-मुख ।

दसानन–दे० दसाणण ।

दसावळ–(क्रिοवि०) दशों दिशाओं में ।

दसादहाड़ो–दे० दहाड़ोजी सं० १

दसा-वीसो–१. किसी वस्तु के गुण, परि-माण आदि का अंतर । २. परस्पर दुगुना अंतर । ३. दस और बीस का अंतर । ४. एक खेल ।

दसासुत–(न०) दीपक । दिशासुत ।

दसी–१. दस वर्ष का समय । २. दस की संज्ञा का ताश का पत्ता ।

दसी-वीसी–(ना०) चढ़ती-पड़ती । उन्नति-अवनति ।

[illegible] (न०) [illegible] ।

दसूं[illegible]–(ना०) १. [illegible] में से दसवें भाग [illegible] लिया जाने वाला कर । दसवांडो । २. [illegible] (गायों) को दिया जाने वाला कर । ३. [illegible] (गायों) की एक उपाधि ।

दसेर[illegible]–(न०) १. मरुप्रदेश । २. मरुप्रदेश का एक भाग जो [illegible] (स्वाळख) नाम से प्रसिद्ध है । नागौर जिला । स्वाळख ।

दसेरी–(ना०) दस सेर का तोल । दससेरी ।

दसेरो–(न०) १. दशहरा । २. दस सेर का तोल ।

दसैं–दे० दसमी ।

दसो–(न०) १. जाति का उपभेद । २. संकर जाति । ३. वर्णसंकर । ४. दसवां वर्ष ।

दसोटण–(न०) १. पुत्र जन्म के बाद दसवें दिन की जाने वाली अशौच शुद्धि । २. पुत्र जन्म के संबंध में किया जाने वाला एक भोजन समारोह ।

दसोतरसो–दे० दाखोतर सो ।

दसोतरी–(ना०) १. प्रति सौ के हिसाब से दस और । २. प्रति सौ के ऊपर दस और देने लेने का रिवाज । ३. मकान या जमीन बेचने पर प्रति सौ रुपयों पर दस रुपये के हिसाब से लिया जाने वाला मारवाड़ राज्य का एक पुराना कर ।

दसोदिस–(अव्य०) १. चारों ओर । सब तरफ । २. दशों दिशाओं में । (ना०) दसों दिशाएँ ।

दस्त–(न०) हाथ । (ना०) १. पतला पाखाना । दस्त । २. बार बार पाखाना लगने का रोग ।

दस्तखत–दे० दसखत ।

दस्तपोशी–(ना०) एक दूसरे से मिलने पर परस्पर हाथ मिलाना ।

दस्तरी–(ना०) कागज की तख्ती ।

दस्तावेज-(न०) १. किसी इकरार या लेन-देन की लिखा पढ़ी के नीचे किये गये दस्तखत वाला कागज। हस्ताक्षरांकित प्रतिज्ञा लेख। लिखत। २. ऋणपत्र। दस्तावेज। तमस्सुक।

दस्तूर-(न०) १. प्रथा। रिवाज। दस्तूर। २. लाग। नेग। दापो। ३. व्यवहार। चलन। धारो। ४. पारसियों का पुरोहित। ५. लूट। कटौती। ६. कर। महसूल। ७. शास्त्रोक्त विधान। विधि।

दस्तूरी-(ना०) १. शु[illegible]। कर। २. नगरपालिका की ओर से लिया जाने वाला कर। ३.हक। ४.नेग। दस्तूरी। दापो। ५. दलाली। (वि०) दस्तूर संबंधी।

दस्तो-(न०) १. हत्था। दस्ता। हाथो। मूंठ। २. चौबीस कागजों की गड्डी। ३.अमूक संख्या की सिपाहियों की टुकड़ी। ४ सेना की छोटी टुकड़ी।

दह-(वि०) दस। (ना०) १. अग्नि। २. ताप। जलन। ३. ज्वाला। ४. पानी से भरा रहने वाला गहरा खड्डा। द्रह।

दहकमल-(न०) रावण।

दहकंध-(न०) रावण। दशकंध।

दहण-(न०) १. दुख। क्लेश। २. जलन। ३. मनस्ताप। चिंता। ४. अग्नि। आग। (वि०) दहन करने वाला। जलाने वाला।

दहणो-(क्रि०) १. जलना। सळगणो। २. दुखी होना। ३. जलाना। सळगाणो। ४. दुखी करना। (वि०) दाहिनो। जीमणो।

दहपट-दे० दहवाट।

दहपटणो-(क्रि०) नाश होना।

दहपाट-दे० दहवाट।

दहपाटणो-(क्रि०) नाश करना।

दहमग-दे० दहवाट।

दहल-(ना०) १. डर। भय। दैळ। २. रोब। धाक।

दहलणो-(क्रि०) १. डरना। भयखाना। भयभीत होना। दैळणो। २. घबराना। ३. काँपना।

दहळियो-(न०) मवेशी के लिये कुतर, बाजरी, ग्वार आदि के मिश्रण को पानी में भिगो कर पकाने का पात्र। सानी पकाने का बड़ा पात्र। हांडा। दैळियो।

दहवट-दे० दहवाट।

दहवाट-(न०) नाश। ध्वस्त।

दहवाटणो-(क्रि०) नाश करना।

दहसत-(ना०) १. भय। डर। २. रोब। धाक। आतंक।

दहाई-(ना०) १. अकों की गिनती करते समय दाहिनी ओर से दूसरा स्थान। २. दस का परिमाण।

दहाड़-(ना०) १. गरज। दहाड़। गर्जन। २. आर्त्त नाद। ३. चिल्लाहट।

दहाड़णो-(क्रि०) १. दहाड़ना। गरजना। २. डराने जैसी आवाज में जोर से बोलना। ३. चिल्ला चिल्ला कर रोना।

दहाड़ो-(न०) १. दिन। २. तिथि। वार। २. समय। जमाना। ३. प्रारब्ध। नसीब। सितारा। ४. अंतिम समय। मृत्यु।

दहाड़ोजी-(न०) १. चैत्र कृष्ण दसमी को किया जाने वाला सौभाग्यवती स्त्रियों का एक व्रत। २. सूर्य पूजा का व्रत ३. सूर्य। दे० दाड़ोजी।

दहियावटी-(ना०) मारवाड़ का एक प्रदेश। दहियों की जागीरी का प्रदेश।

दही-(न०) दधि। दही।

दही देणो-(मुहा०) १. तोरण द्वार पर सास का दूल्हे की ललाट में दही का तिलक करना। २. सास द्वारा दही का तिलक लगा कर तोरण द्वार पर दूल्हे का स्वागत करना। ३ दंपति की जीवन यात्रा, सुख, समृद्धि पूर्ण व्यतीत होने के

मक्खन एवं मांगलिक दही का दूल्हे को तिलक करना ।

दहीतरो-*(न०)* ठोर नाम की एक मिठाई । ठोर ।

दहुं-*(वि०)* दोनों ।

दहेज-दे० दायजो ।

दहोतरी-दे० दसोतरी ।

दंग-*(न०)* १. झगड़ा । लड़ाई । दंगा । २. गृहकलह । ३. डर । भय । ४. अग्निकण । चिनगारी । *(वि०)* स्तब्ध । चकित । दंग ।

दंगळ-*(न०)* १. अखाड़ा । २. मल्लयुद्ध । ३. युद्ध ।

दंगो-*(न०)* १. दंगा । बखेड़ा । हुल्लड़ । २. विप्लव । बलवा । ३. दंगा-फसाद ।

दंगो-फिसाद-*(न०)* दंगा-फसाद । लड़ाई-झगड़ा । हुल्लड़ ।

दड-*(न०)* १. जुरमाना । अर्थ दण्ड । २. सजा । ३. एक व्यायाम । ४. छड़ी । ५. डंडा । ६. ब्रह्मचारी तथा संन्यासी के पास रहने वाला दंड । ७. राजदंड । शासन दंड । ८. अधिकार । शासन । ९. छत्रदंड । १०. हस्ति-सुण्ड । सूंड । ११. चार हाथ का नाप । १२. साठ पळ का समय । एक घड़ी ।

दंडणो-*(क्रि०)* १. दंड करना । जुरमाना करना । २. सजा करना । ३. मारना । पीटना ।

दंडवत-दे० दडोत ।

दंड़ा-वेड़ी-*(ना०)* बीच में डंडे वाली पाँव की वेड़ी ।

दंडाहड़-*(न०)* ढोल के ताल के साथ खेला जाने वाला एक डंडा रास नृत्य ।

दंडी-*(न०)* १. दण्डधारी संन्यासी । २. एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि ।

दंडो-दे० डण्डो ।

दंडोत-दे० डंडोत ।

दंत-*(न०)* दाँत ।

दंत-तगोंगो *(वि०)* निर्लज्जता से दाँत निकालने वाला । ही ही करने वाला । मूर्ख ।

दंत-कथा-*(ना०)* १. जनश्रुति । किम्वदन्ती । २. पुरानी परम्परा से चली आई हुई बात । ३. व्यर्थ की बातचीत । बकवाद । चक-चक । ४. जबानी बातचीत । जबानी जमा खर्च ।

दंतलो-*(न०)* हँसिया । दरांती । दातला ।

दंतार-दे० दंताळ ।

दंताळ-*(न०)* १. गजानन । गणेश । २. हाथी । *(वि०)* होठों से बाहर निकले हुए बड़े दाँतों वाला ।

दंतालय-*(न०)* मुँह । मुख । मूंढो ।

दंताळी-*(ना०)* घास-फूस आदि हटाने या समेटने का कृषक का एक औजार । पांचा । *(वि०)* बडे दाँतों वाळी ।

दंताळो-*(न०)*१. हाथी । २. सिवाने (मारवाड़) के पास की एक ऐतिहासिक पहाड़ी जिसके शिखर समूह दाँतों के समान उठे हुए हैं । *(वि०)* बड़े दाँतों वाला ।

दंतावळ-*(न०)* १. हाथी । २. दंतपंक्ति ।

दंती-*(न०)* १. हाथी । दंती । २. कंघी । *(वि०)* दाँतों वाला ।

दंतूसळ-*(न०)* १. हाथी या सूअर का बाहर निकला हुआ दाँत । २. दे० दाँतोर ।

दंतेरू-*(न०)*सिर में होने वाला एक फोड़ा ।

दंतोर-दे० दाँतोर ।

दंद-*(न०)* १. झगड़ा । कलह । द्वन्द्व । २. उपद्रव । ३. दुविधा ।

दंदी-*(वि०)* झगड़ालू । उपद्रवी । द्वन्द्वी । झगड़ाखोर ।

दंपति-*(न०)* पति-पत्नी का जोड़ा । पति-पत्नी ।

दंपा-*(ना०)* बिजली । सपा । खिवण ।

दंभ–(न०) १. पाखंड । ढोंग । २. गर्व । अभिमान । घमंड ।

दंभी–(वि०) १. दंभवाला । ढोंगी । पाखंडी । २. अभिमानी । घमंडी ।

दंभोळ–(न०) वज्र ।

दंश–दे० दंस ।

दंस–(न०) १. दाँत । दंश । २. बिच्छू, बर्रे आदि का डंक-छेदन । ३. सर्प का डसना । ४. दाँत से काटने या डंक मारने की क्रिया । ५. दाँत से काटने या डंक मारने से होने वाला घाव । दंश । ६. कवच ।

दंसणो–(क्रि०) १ डंक मारना । डसना । (सर्प आदि का)। ३. दाँतों से काटना ।

दंस्टी–(न०) १. डसने वाला । सर्प । २. सूअर । दंष्ट्री ।

दाः–(अव्य०) किसी दस्तावेज के नीचे दस्तखत करने के पूर्व लिखा जाने वाला 'दस्तखत' शब्द का संक्षिप्त रूप ।

दा–(ना०) इच्छा । दाय । (न०) १. दादा । पितामह । २ बार । दफा । मरतबा । ३. दाँव । दाव । (प्रत्य०) षष्ठी का चिन्ह । 'का'

दाई–(ना०) १. धाय । उपमाता । २. बच्चा जनाने वाली स्त्री । दायण । ३. प्रकार । तरह । ४. बार । दफा । दाण । (वि०) समान । बराबर ।

दाकल–(ना०) १. डर । २. धमकी । डाँट । धाकल । ३. ललकार । ४. डराने वाली । जोर की आवाज । दहाड़ । गरजन ।

दाकलणो–(क्रि०) १. धमकाना । डाँटना । २. डराना । ३. ललकारना ।

दाख–(ना०) द्राक्षा । दाख । द्राख ।

दाखणो–(क्रि०) १. कहना । २. ध्यान में लाना । ३. दिखाना । बताना । ४. प्रगट करना । ५. दरियाफत करना । ६. गुण धर्म बताना । असर दिखाना ।

दाखल–(वि०) १. दाखिल । प्रविष्ट । २. शामिल । (न०) प्रवेश ।

दाखलो–(न०) १. उदाहरण । दृष्टांत । २. प्रमाण । ३. विवरण । ४. लिखा जाना । इंदराज । ५. सीख । सबक । ६. अधिकार । सत्व । ७. अनुभव । ८. प्रवेश ।

दाखवणो–दे० दाखणो ।

दाग–(न०) १. मृतक का दाह संस्कार । अग्नि संस्कार । २. जल जाने का चिह्न । ३. पशुओं के अंग पर पहिचान के लिये दग्ध क्रिया से बनाया हुआ निशान । ४. धब्बा । दाग । निशान । ५. दोष । अपराध । ६. कलंक । लांछन ।

दागड़-दोटो-(वि०) दगड़ जैसा बेडौल । बेढंगा । (न०) बच्चों का एक खेल ।

दागड़ियो–(न०) १. चालाकी से लेने खरीदने में ज्यादा और देने-बेचने में कम परिमाण (तोल, माप और नाप आदि) में खरीदने बेचने वाला धूर्त दूकानदार । २. छली । धूर्त । ठग । लुटेरा ।

दागड़ो–(न०) १. लुटेरों का दल । २. समूह । झुंड । ३. लुटेरों का आक्रमण । ४. लूट ।

दागणो–(क्रि०) १. दाग देना । शव का अग्नि संस्कार करना । २. जलाना । ३. डाम देना । गरम शलाका से अंग पर चिन्ह करना । दागना । डामणो । ४. बंदूक, तोप आदि का छोड़ना । ५. कलंकित करना ।

दाग देणो–(मुहा०) १ शव का अग्नि संस्कार करना । मृतक को जलाना । २. तप्त शलाका से पशु को चिन्हित करना ।

दागल–दे० दागी ।

दागळो–दे० डागळो ।

दागी–(वि०) १. दाग या धब्बे वाला । दागल । २. कलंकित । लांछित । दागल । ३. सड़ा हुआ । ४. [illegible] । ५. [illegible] । दोष युक्त ।

दागीजणो (क्रि०) १. दाग लगना । २. दागा जाना । ३. जलना । ४. कलंक उत्पन्न होना ।

दागीणो- दे० दागीना ।

दागीनो-(न०) १. गहना । आभूषण । २. गल्ला । नग । अदद ।

दागो-(न०) १. धब्बा । दाग । २. कलंक । लांछन ।

दाघ-(न०)१. कलंक । लांछन । २. धब्बा । निशान । ३. दोष । ऐब ।

दाजी-(न०) १. दादा । २. बड़ा भाई । ३. बड़ा-बूढ़ा ।

दाझ-(न०) १. जलन । २. संताप । ३. मानसिक कष्ट । ४. शत्रुता । ५. ईर्षा । डाह । द्वेष । ६. क्रोध । चिढ़ । ७. अनुकंपा । चिढ़ ।

दाझणो-(क्रि०) १. जलना । दग्ध होना । २. जलन होना । ३. संताप होना । ४. जलाना । दग्ध करना । ५. अत्यधिक । कष्ट देना । संतप्त करना ।

दाट-(न०) १. रुकावट । रोक । २. समूह । ३. धमकी । फटकार । ४. बोतल, शीशी आदि का काग । डाट । ५. चोट । प्रहार । ६. तबाही । विनाश । ७. बारूद की सुरंग ।

दाटक-(वि०) १. वीर । बलवान । शक्तिवान । २. दृढ़ । मजबूत । ३. धमकाने वाला । फटकारने वाला । ४. रोकने वाला ।

दाटणो-दे० डाटणो ।

दाटी-दे० डाटी ।

दाटो-दे० डाटो ।

दाड़म-(ना०) अनार । दाड़िम ।

दाड़ो-(न०) दिन । दहाड़ो ।

दाड़ोजी-(न०) १. एक लोक देवता । दहाड़ोजी । २. स्त्रियों का एक व्रत । ३. स्त्री-समाज की एक लोक वार्ता, जिसे स्त्रियां दाड़ोजी के व्रत के दिन सुनती है । दे० दहाड़ोजी ।

दाढ़- दे० दाढ़ ।

दाढाळ-(वि०) दाढ़ी वाला । २. बड़ी दाढ़ों वाला । (न०) सूअर ।

दाढाळी दे० दाढाळी ।

दाढाळो-(न०) १. सूअर । शूकर । २. पुरुष । मर्द । ३. धनी दाढ़ी । (वि०) १. दाढ़ी वाला । [illegible] । २. मर्द ।

दाढ़ी-(ना०) दाढ़ी । (वि०) तंदुरस्त । २. [illegible] ।

दाढी खूंटी-दे० दाढी-खूंटी ।

दाढो-दे० दाढो ।

दाढो-मल्लो-दे० दाढो मल्लो ।

दाण-(न०) १. राजदेय । चूंगी । महसूल । मालगुजारी । २. दान । ३. दंड । जुरमाना । जरीबानो । ४. दांव । चाल । ५. चौपड़, सतरंज आदि में खेलने का दांव । वारी । ६. मौका । अवसर । ७. बार । दफा । ८. वारी । पारी । ९. भांति । प्रकार । १०. हाथी का मद । मदजल ।

दाणत-दे० दानत ।

दाणलीला-(ना०) ग्वालिन-गोपियों से दही दूध की चूंगी लेने की की हुई श्रीकृष्ण की लीला ।

दाणलो-दे० दाणव ।

दाणव-(न०)१. दैत्य । दानव । २. यवन । मुसलमान ।

दाणवगुरु-(न०) दानवगुरु । शुक्राचार्य ।

दाणव राह-(ना०)१. मुसलमानों के जैसा रहन-सहन । २. मुसलमानी व्यवहार । ३. दानव राह पर चलने वाला । मुसलमान । ४. दुष्टता । ५. अत्याचार । (वि०) १. दुष्ट । २. आततायी । अत्याचारी ।

दाणवै-(न०) १. दानवपति । २ रावण । ३. कंस । ४. यवन बादशाह ।

दागवै-राव–(न०) १. दानवराज। दानवों का स्वामी। २. बादशाह। यवन बादशाह।

दागवो–दे० दागव।

दाणादार–(वि०) दरदरा। दानेदार। रवादार। कणीदार। कणीवाळो।

दाणी–(न०) १. कर वसूल करने वाला व्यक्ति या कर्मचारी। २. नाज का व्यापारी। ३. नाज तोलने का धंधा करने वाला तोलावट। तोलावटियो। ४. धारण करने वाला या रखने वाला अर्थ को व्यक्त करने वाला एक प्रत्यय। जैसे– पीकदाणी, सुरमादाणी आदि।

दाणो–(न०)१. अनाज। धान्य। २. धान्य कण। दाना। ३. घोड़े को तोवड़े में खिलाई जाने वाली चने की दाल आदि। दाना। ४. माल का दाना। मनका। ५. गठड़ी। बंडल। नग। ६ नग। अदद। ७. नगीना। रत्न कण। ८. समझ। बुद्धि।

दाणो दावणो–(मुहा०)१. विचार जानना। २. किसी के मन की जानने का प्रयत्न करना। ३. खुशामद करना।

दाणो देणो–(मुहा०) घोड़े, बैल आदि को दाना खिलाना।

दाणो-पाणी–(न०) १. प्रारब्ध। नसीब। तकदीर। २. दाना-पानी। अन्न-जल। ३. जीविका। रोजी। ४. संयोगवश किसी स्थान पर रहना और वहाँ का अन्न-जल लेना। रहने का संयोग।

दाणो-पाणी करणो–(मुहा०) पड़ाव पर दाना पानी (भोजन) करना।

दात–(ना०)१. दहेज। २. दान। ३. दाँत। ४. दात्र। हँसिया। (वि०) दाता। देने वाला।

दातड़ियाळ–दे० दाँतड़ियाळ।

दातण–(न०) दातुन। दतौन।

दातण-कुरळो–(न०) १. मुख शुद्धि। २. दातुन और गरारा द्वारा दाँत, जीभ और गला साफ करने की प्रातः क्रिया। ३. दातुन नाश्ता आदि करने की प्रातः क्रिया।

दातण पाणी–(न०)१. दातुन और पानी। २. दातुन और पानी से की जाने वाली हाथ-मुँह की सफाई। ३. मुखशुद्धि। ४. दातुन, नाश्ता आदि करने की क्रिया। ५. कलेवा। नाश्ता।

दातरड़ी–(ना०)१. छोटी हँसिया। गँडासी। २. सूअर का बाहर निकला रहने वाला दाँत।

दातरड़ो–(न०) हँसिया। दात्र। गँडासा।

दातरळो–दे० दातरड़ो।

दातलो–दे० दातरड़ो।

दाता–(वि०) १. देने वाला। २. दानी। उदार। (न०) १ कुटुम्ब का वृद्ध पुरुष। २. पिता। ३. ईश्वर। ४. दानी पुरुष।

दातार–(वि०)१. दानी। २. उदार। (न०) १. ईश्वर। २. दानी पुरुष।

दातारगी–(ना०) दातृत्व। दानशीलता। वदान्यता।

दातार गुर–(वि०)बड़ा दानी। महादानी।

दातारी–दे० दातारगी।

दातावरी–(वि०) देनेवाली। (ना०) दानशीलता। वदान्यता। दातारी।

दात्रड़ियाळ–दे० दाँतड़ियाळ।

दाथरो–(न०) भाप से सिझोने के निमित्त खाद्य वस्तु को बरतन में अधर रखने के लिये की जाने वाली पानी के ऊपर तृण आदि की परत या जाली।

दाद–(ना०) १. फरियाद। अर्ज। २. इन्साफ। न्याय। दाद। ३. किसी के व्यक्तित्व, काम या बात को समझने, मानने या महत्व देने का भाव। ४ धन्यवाद। ५. एक चर्म रोग। दद्रु। दाद।

दाद-फरियाद-(ना०) १. सुनवाई। पुकार। २. शिकायत। फरियाद। ३. न्याय। इन्साफ।

दादर-(न०) १. एक पक्षी। २. मेंढक। दादुर। ३.बादल। ४.पहाड़। ५. जीना। सीढ़ी। ६. एक वाद्य यंत्र।

दादरो-(न०) १. संगीत का एक ताल। २.गाने की एक तर्ज। एक राग। दादरा। ३ सीढ़ी।

दादागुरु-(न०) गुरु का गुरु।

दादाणो-(न०) १. नानाणो (ननिहाल) शब्द के साम्य पर प्रयुक्त किया जाने वाला दादा, पिता तथा दादा के गोत्र का घर। २ खुद का घर। स्वगृह। ३. जिनके घर मे जन्म लिया है वे पिता, दादा आदि कुटुंबीजन। दादा का परिवार। ४. पीहर।

दादाभाई-(न०) बड़ा भाई। दादा।

दादारींगो-(वि०) १. सुस्त। ढीला। २. अकर्मण्य। ३. निर्बुद्धि। बेसमझ।

दादी-(ना०) पिता की माता। पितामही।

दादीजी-(ना०) १. दादी। पितामही (मानार्थक) २. दादी सास।

दादी मा-दे० दादी। (मानार्थक)।

दादी-सा-दे० दादीजी।

दादी-सासू-(ना०) सास की सास। ददिया सास।

दादी सुसरो-(न०) ददिया ससुर।

दादूजी-(न०) दादूपथ के प्रवर्तक दादूदयाल (या दादूजी) नाम के एक संत। इनका निवास स्थान जयपुर जिले के नराणा गाँव में था और वहीं इनका देहान्त हुआ था।

दादूपंथी-(वि०) संत दादूजी के चलाये हुये पथ का अनुयायी।

दादो-(न०) पिता का पिता। पितामह। दादा।

दादोजी-(न०) दादा (मानार्थक)।

दादोसा-दे० दादोजी।

दाध-(ना०) १. द्वेष। २. शत्रुता। ३. जलन।

दाधारींगो-(वि०) १. आलसी। २. बिना ढंग का। ३. पागल। मूर्ख। ४. असभ्य।

दाधीच-(न०) दधीचि ऋषि का वंशज।

दान-(न०) १. श्रद्धापूर्वक धर्मबुद्धि से पुण्यार्थ किसी को दी जाने वाली कोई वस्तु। २. धर्म की दृष्टि से या दयावश किसी को कोई वस्तु बिना मूल्य लिये देने की क्रिया। दान। खैरात। ३. हाथी का मद। ४. खेल में प्राप्त होने वाला दांव। बारी। पारी। (प्रत्य०) किसी संज्ञा शब्द के आगे रखने वाला, धारण करने वाला या जानने वाला अर्थ को सूचित करने वाला प्रत्यय शब्द। उदा. कलमदान। पीकदान।

दानखो-(न०) दीवानखाना। बैठक।

दानगुरु-(न०) १. बड़ा दानी। दानवीर। दानश्वरी।

दानत-(ना०) मनोवृत्ति। मन की अवस्था। मनस्थिति।

दान-दिखणा-(ना०) दान और दक्षिणा। दान की वस्तु। २. दान।

दानधर्म-(न०) दान करने का धर्म।

दानव-(न०) राक्षस। दाणव। राखस।

दानवीर-(न०) बहुत बड़ा दानी। दानेश्वर। दानेसरी।

दानाई-(ना०) १. बुद्धिमानी। २. विवेक। ३. भलमनसाई। ४. प्रामाणिकता। ईमानदारी। ५. बुढ़ापा।

दानापणो-दे० दानाई।

दानी-(वि०) दान देने वाला। दानी। उदार। (प्रत्य०) शब्द के आगे आने वाला प्रत्यय। जैसे पीकदानी।

दानी-मानी-(वि०) दान देकर सम्मान करने वाला। २. वड़ादानी।

दानेसरी–(न०) दानेश्वरी । बड़ादानी । दानवीर ।

दानेस्वर–(न०) दानेश्वर । बड़ादानी । दानवीर ।

दानो–(वि०) १. समझदार । विवेकी । बुद्धिमान । २. वृद्ध । बुड्ढा ।

दाप–(न०) १. दर्प । अभिमान । २. शक्ति । प्रताप । तेज । ३. दबदबा । ४ उत्साह ५. क्रोध ।

दापटणो–दे० दपटणो ।

दापड़–दे० दाफड़ ।

दापो–(न०) १. विवाह आदि उत्सवों में लगने वाला एक कर । २. एक राजकीय कर । ३. नेग । लाग । हक । हक का माँगना ।

दापो छोड़ावणो–(मुहा०) दापा माफ कर-वाना ।

दाफड़–(न०) मच्छर आदि के काटने से चमड़ी में होने वाला चकता । ददोरा ।

दाब–(न०) १. बूरा-चीनी और गाय के ताजे घी का एक योग, जो आँखें आ जाने पर रात को सोते समय खाया जाता है । २. दबाव । ३. आग्रह । ४. अंकुश । धाक । नियंत्रण ।

दाबणो–(क्रि०) १. दबाना । दाबना । ठूंसना । २. दमन करना । अंकुश में रखना । ३. किसी वस्तु को जबरदस्ती छीन कर अपने अधिकार में कर लेना । हड़पना । दबोचना । ४. पगचंपी करना । ५. बोझ के नीचे रखना । ६. पराजित करना ।

दाभ–दे० डाभ ।

दाम–(न०) १. मूल्य । कीमत । २. रुपया-पैसा । ३. एक प्राचीन सिक्का । ४. रुपया का चालीसवां भाग (व्याज फलावट में) । ५. पैसे का पचीसवां भाग ।

दामण–(ना०) १. बिजली । दामिनी । (न०) १. पल्ला । आंचल । दामन । २. पशुओं के पैर बांधने की रस्सी का टुकड़ा । बंधन ।

दामणगीर–दे० दावणगीर ।

दामणी–(ना०) १. एक प्रकार की ओढ़नी । २. विधवा स्त्री की ओढ़नी । ३.बिजली । दामिनी । ४. स्त्रियों के सिर पर का एक गहना । एक शिरोभूषण ।

दामणो–(न०) १. स्त्रियों के हाथ की दो अंगुलियों में पहने का एक छल्ला । दामो । २. गाय, भैंस को दोहने के समय उनके पिछले दोनों पाँवों को बाँधने का रस्सी का एक टुकड़ा । छांद । नोई । ३. ऊंट के पाँव को बाँधने की रस्सी का तोड़ा । तोड़ो । ४. मथानी की रस्सी । नेतरो । नेतो । (वि०) १. दमन करने वाला । नाश करने वाला । २. बंधन में डालने वाला । (क्रि०) १. दमन करना । नाश करना । २. बंधन में डालना । कैद करना ।

दाम-दुपट–(न०) मूल रकम से व्याज की रकम अधिक हो जाने की स्थिति में मूल रकम से दुगुनी रकम कोर्ट द्वारा दिलाये जाने का एक नियम । कर्ज से दुगुना लेना । दून । २. दुगुना दाम । दुगुना रुपया ।

दामन–दे० दामण ।

दामनगीर–दे० दावणगीर ।

दामी-जोड़ो–(वि०) १. धन संचय करने वाला । २. कंजूस ।

दामो-दे० दामणो सं० १

दामोदर–(न०) १. रुपया पैसा (व्यंग में) । २. श्रीकृष्ण ।

दाय–(ना०) १. मर्जी । इच्छा । २. पसंद । अभिरुचि । ३. पैतृक सम्पत्ति का भाग । ४. प्रकार । तरह ।

दायको-(न०) १. दस वर्ष का अंतर। २. दस वर्षों का समाहार। दस वर्ष का समय। दशक।

दायजो-(न०) १. दहेज। २. स्त्रीधन।

दायण-(ना०) दाई।

दायर-(ना०) १. तरह। प्रकार। २ इच्छा। राय। ३ जो निर्णय के लिये न्यायालय के सामने उपस्थित किया गया हो।

दारो-(न०) स्वत्व। हक। दावा। दावो।

दार-(ना०) १. स्त्री। नारी। २. पत्नी। ३. लकड़ी। काष्ट। दारु। ४. शब्द (यौगिक) के अंत में लगने वाला एक प्रत्यय जिसका अर्थ होता है—रखने वाला। जैसे—'पहरादार' मालदार इत्यादि।

दारक-(वि०) १. मारने वाला। २. चीरने वाला। (न०) ऊँट। दरक। दमाज।

दारण-(वि०) १. दारुण। २. चीरने वाला।

दारमदार-(न०) १. कार्य का भार। २. आश्रय।

दारा-(ना०) पत्नी। स्त्री।

दारिगह-दे० दरगाह।

दारिद-(न०) दारिद्रय।

दारियो-(न०) वेश्या का पुत्र। जागरी।

दारी-(ना०) १. पुत्री। २. दासी। ३. वेश्या।

दारू-(न०) १. शराब। मद्य। २. दवा। औषधि। ३. बारूद।

दारूड़ियो-(वि०) शराबी।

दारू-रूंखड़ो-(न०) महुआ वृक्ष।

दाळ-(ना०) १. दला हुआ मूंग, मोठ आदि द्विदल धान्य। २ मूंग मोठ आदि की दाल को पानी में सिझा कर पकाया हुआ तीवन। सिझाई हुई दाल में नमक मिर्च आदि मसाले डाला हुआ सालन। दाल।

दाळचीणी-(ना०) दारचीनी।

दाळद-(न०) १ दारिद्र्य। निर्धनता। गरीबी। २. कचरा। मैला।

दाळदर-(न०) १. कचरा। २. गरीबी। निर्धनता।

दाळदरी-(वि०) १. गरीब। निर्धन। २. मैला-कुचैला।

दाळ-रोटी-(ना०) १. दाल और रोटी। २. निर्वाह। ३. पोषण।

दाळिद्र-(न०) १. दारिद्र्य। निर्धनता। २. कचरा। मैला।

दाळियो-(न०) १. नमक-मिर्च आदि मसाले मिला कर तली हुई दाल की टिकिया। बड़ा। भुजिया। २. चनोठी या काली मिर्च जितनी छोटी चमकदार प्याली (गुरिया) ये गुरियाएँ दुल्हे के तिलक बनाने के काम में भी आती हैं। ३. दाल परोसने का पात्र। ४. दांत।

दाव-(न०) १. मौका। अवसर। दांव। २. सुयोग। ३. युक्ति। ४. चाल। ५. छल। कपट। ६. संकल्प-विकल्प। ७. आक्रमण। ८. बार। समय। मर्तबा। ९. पारी। बारी।

दावटणो-(क्रि०) १. दबाना। २. हराना।

दावण-(न०) १. लहँगा। घाघरा। २. चारपाई के पैताने की रस्सी। दामर। बदामण। ३. आँचल। पल्ला।

दावणगीर-(वि०) १. दामनगीर। वस्त्र पकड़ने वाला। २. दावा करने वाला। पीछे पड़ने वाला। ३. आश्रय में रहने वाला।

दावत-(ना०) भोज। जीमन। जीमण। गोठ।

दावपेच-(न०) १. युक्ति प्रयुक्ति। २. चालाकी।

दावागीर-(न०) १. शत्रु। २. अपना अधिकार जताने वाला। ३. दावा करने वाला।

दाँतागिणी-दे० दंतागणी।

दांती-(ना०) १. अंगीठीनुमा नारियल आदि की कूँडियाँ बनाने वाला व्यक्ति। कुँडेरा। खोरचियो। २. हाथीदांत की चूड़ियों का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति। ३. गाय के थनों में उत्पन्न फुँसियों और गाँठों को निकालने के लिये लकड़ी के दोनों के बीच में बाँधने की क्रिया। ४. किसान का एक औजार।

दांनूर दे० दांतोर।

दांनूसळ (ना०) १ हाथी का दांत। २. ऊपर नीचे के दांतों के परस्पर भिड़ जाने का एक रोग। दांतोर। मुँह और दांत बंद हो जाने का एक रोग।

दांनो-(ना०) बाणी आदि का दान। दाणा।

दाँतोर-(ना०) दांतों का एक रोग जिससे ऊपर नीचे के दांत परस्पर मजबूती से भिड़ जाते हैं।

दाँयर-(ना०) प्रकार। तरह।

दाँवण-(ना०) खाट की बुनन में पायताने की ओर बुनन और उाले में लगी रहने वाली रस्सी। चारपाई के पैताने की रस्सी। वदामण। विदावण।

दाँवणो दे० दामणो।

दिअण-दे० दियण।

दिक-(वि०) हैरान। तंग। (ना०) दिशा। (ना०) क्षय रोग।

दिक्कत-(ना०) १. मुश्किली। कठिनाई। हरकत। २. हैरानी। परेशानी।

दिखण-(ना०) १. दक्षिण दिशा। २. दक्षिण में स्थित देश। दक्खिन। दखन।

दिखणाद (ना०) दक्षिण दिशा। (अव्य०) दक्षिण दिशा में।

दिखणादी (वि०) दक्षिण की ओर का। दक्षिणी। २. दक्षिणी। दक्षिण देश का।

दिखणादू-(वि०) दक्षिण दिशा का। (क्रि०वि०) दक्षिण में।

दिखणादो दे० दिखणादी।

दिखणी (वि०) १. दक्षिण का। दक्षिण सम्बंधी। दक्खिनी। २. दक्षिण देश का निवासी। महाराष्ट्रीय। दक्षिणी। (ना०) दक्षिणी भाषा। मराठी भाषा।

दिखणी-चीर (ना०) एक प्रकार का मूल्य-वान। ओढ़ना। दखिणी चीर।

दिखाऊ-(वि०) १. जो केवल देखने भर का हो। २ बनावटी। ऊपरी। आडंबरी। दिखावटी। ३. कृत्रिम। नकली बनावटी।

दिखाणो-दे० देखावणो।

दिखाव-दे० देखाव।

दिखावट-(ना०) १. देखा जा सके वह। २. बनावट। ३. ढोंग। आडम्बर।

दिखावटी-दे० दिखाऊ।

दिखावड़ो-दे० देखावड़ो।

दिखावणो-दे० देखावणो।

दिखावो-(ना०) १. ऊपरी तड़क भड़क। आडंबर। २. दृश्य। ३. पाखंड।

दिख्या-दे० दीक्षा।

दिग-(ना०) दिशा।

दिगमूढ़-(वि०) दिग्मूढ़। चकित। छक।

दिगंबर-(वि०) १. नंगा। अवस्त्र। (ना०) १. एक जैन संप्रदाय। २. नंगा रहने वाला दिगम्बर का साधु। ३. महादेव। ४. सिद्ध महात्मा।

दावाग्नि–दे० दावानळ ।

दावानळ–(न०) जंगल में लगने वाली अग्नि । २. वन की आग जो बाँस आदि के रगड़ खाने से स्वतः लग जाती है । दव । दावो ।

दावायत–दे० दावागीर ।

दावै–(अव्य०) १. कारण । निमित्त । २. बदले में । प्रतिशोध के लिये । ३. तरह । (अव्य०) (दाय + आवै) १. जैसे पसंद हो । २. जैसा पसंद हो ।

दावो–(न०) १. अधिकार । कब्जा । २. स्वत्व । हक । मालिकी । ३. मुकदमा । अभियोग । दावा । ४. प्रमाण । पुरस्सर कथन । ५. प्रतिशोध । प्रतिकार । ६. गर्वोक्ति । ७ शत्रुता । ८. युद्ध । ९. दृढ़ आत्मविश्वास । १०. अति ठंडी से फसल आदि का जल जाना । शीतदाह । १०. दावानल । दावाग्नि ।

दावोतर सो–दे० दाहोतर सो ।

दावोतरो–दे० दाहोतरो ।

दास–(न०) १. सेवक । दास । २. एक प्रत्यय जो पुरुष नामों के अंत में लगता है । जैसे – रामदास ।

दासपणो–(न०) दासपन । गुलामी । दासता । दासत्व ।

दासरथी–(न०) दशरथ के पुत्र श्रीराम । दाशरथि ।

दासातन–(न०) दासत्व । दासता ।

दासी–(ना०) सेविका । नौकरानी । दासी ।

दासेर–(न०) ऊंट

दासेरक–(न०) ऊंट ।

दासो–(न०) १. द्वार के नीचे का चपटा पत्थर । २. बिल्ली की विष्टा । (जैन.) फूहियो ।

दाह–(ना०) १. जलन । ताप । बळतर । २. मुर्दे का दाह संस्कार । ३. डाह । ईर्ष्या । (वि०) भस्मित । भस्मात् ।

दाहकर्म–दे० दाहक्रिया ।

दाहक्रिया–(ना०) शव का अग्नि संस्कार ।

दाहणो–(वि०) दाहिना । दाँया । (क्रि०) १. जलना । २. संताप होना ।

दाह संस्कार–(न०) शव संस्कार । अंत्येष्टी क्रिया । शव को अग्नि से जलाने का एक धार्मिक संस्कार । अग्नि संस्कार ।

दाहो–(न०) १. जलन । ताप । २. संताप । बळतरा । ३. अति शीत से फसल, वृक्ष आदि का सूखजाना या जलजाना । शीत दाह । (वि०) बिना ठंड लगे आने वाला (ज्वर) ।

दाहोतर सो–(न०) पहाड़े में बोला जाने वाला एक सौ दस (११०) का अंक ।

दाहोतरो–(न०) दसवाँ वर्ष ।

दाहो ताव–(न०) ठंडी नहीं लग कर आने वाला ज्वर । दाह-ज्वर । गरम बुखार ।

दाह्लो–(न०) अधिक शीत के कारण फसल, वृक्ष आदि का सूख जाना या जल जाना । शीतदाह ।

दाँ–(न०) १. दावँ । २. प्रकार । तरह । (अव्य०) १. दें । देवें । दे दें । २. देते हैं ।

दाँई–(ना०) १. वयस्क । २. अवस्था । उम्र । ३. प्रकार । तरह । ४. बार । मरतबा । दफा ।

दाँडिया-रास–दे० डांडिया रास ।

दाँडियो–दे० डांडियो ।

दाँडी–दे० डांडी ।

दाँडो–दे० डांडो ।

दाँत–(न०) १. दंत । दाँत । दशन । २. दांता । ३. हाथीदाँत ।

दाँतड़ियाळ–(न०) १. सुअर । २. हाथी ।

दाँतलो–(वि०) १. बड़े दाँतों वाला । २. जिसके दाँत होठों से बाहर निकले हुए हों ।

दाँत वसन–(न०) होंठ ।

दाँताकसी–(ना०) कलह । झगड़ा । २ बोलचाल । विवाद ।

दांतागिगी–दे० दांतारगी ।

दांती–(न०) १. हाथीदांत आदि की चूड़ियाँ बनाने वाला व्यक्ति । चूड़ीगर । घीरवियो । २. हाथीदांत की चूड़ियों का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति । ३ भाले के घावों से जुड़ाव हुई और शोथों को निकालने के लिये लगी हुई दांतों का भाग से बांधने की क्रिया । ४. किसान का एक औजार ।

दांतूर–दे० दांतोर ।

दांतूसळ–(न०) १ हाथी का दांत । २. ऊपर नीचे के दांतों के परस्पर भिड़ जाने का एक रोग । दांतोर । मुँह और दांत बंद हो जाने का एक रोग ।

दांतो–(न०) आरी आदि का दांत । दांता ।

दाँतोर–(न०) दांतों का एक रोग जिसमें ऊपर नीचे के दांत परस्पर मजबूती से भिड़ जाते हैं ।

दाँयर–(ना०) प्रकार । तरह ।

दाँवग–(ना०) खाट की बुनन में पायताने की ओर बुनन और उनले में लगी रहने वाली रस्सी । चारपाई के पैताने की रस्सी । वदामरण । विदावरण ।

दाँवगो दे० दामणो ।

दिअग–दे० दियरण ।

दिक–(वि०) हैरान । तंग । (ना०) दिशा । (न०) क्षय रोग ।

दिक्कत–(ना०) १. मुश्किली । कठिनाई । हरकत । २. हैरानी । परेशानी ।

दिखरण–(न०) १. दक्षिण दिशा । २.दक्षिण में स्थित देश । दक्खिन । दखन । ३. मारवाड का दक्षिण प्रदेश ।

दिखणारण–(न०) १. दक्षिण दिशा । २. दक्षिण देश । ३. दक्षिणायन । (वि०) १. दक्षिण दिशा का । २. दाहिनी ओर का ।

दिखणाद–(ना०) दक्षिण दिशा । (क्रि०वि०) दक्षिण दिशा में ।

दिखणादी–(वि०) दक्षिण की ओर का । दक्षिणी । २. दखिणी । दक्षिण देश का ।

दिखणादू–(वि०) दक्षिण दिशा का । (क्रि०वि०) दक्षिण में ।

दिखणादो–दे० दिखणादी ।

दिखणी–(वि०) १. दक्षिण का । दक्षिण सम्बन्धी । दक्षिणी । २. दक्षिण देश का निवासी । महाराष्ट्रीय । दक्षिणी । (ना०) दक्षिणी भाषा । मराठी भाषा ।

दिखणी-चीर–(न०) एक प्रकार का मूल्यवान । पोतड़ा । दक्षिणी चीर ।

दिखाऊ–(वि०) १. जो केवल देखने भर का हो । २. बनावटी । ऊपरी । पाखंडी । दिखावटी । ३. कृत्रिम । नकली बनावटी ।

दिखागो–दे० देखावगो ।

दिखाव–दे० देखाव ।

दिखावट–(ना०) १. देखा जा सके वह । २. बनावट । ३. ढोंग । आडम्बर ।

दिखावटी–दे० दिखाऊ ।

दिखावड़ो–दे० देखावड़ो ।

दिखावगो–दे० देखावगो ।

दिखावो–(न०) १. ऊपरी तड़क भड़क । आडंबर । २. दृश्य । ३. पाखंड ।

दिख्या–दे० दीक्षा ।

दिग–(ना०) दिशा ।

दिगमूढ़–(वि०) दिग्मूढ । चकित । छक ।

दिगंबर–(वि०) १. नंगा । अवस्त्र । (न०) १. एक जैन संप्रदाय । २. नंगा रहने वाला दिगम्बर का साधु । ३. महादेव । ४. सिद्ध महात्मा ।

दिग्ध–(वि०) दीर्घ । डीघो ।

दिग्विजय–(ना०) देश देशान्तरों को जीतना । सभी दिशाओं में की जाने वाली विजय । चारों दिशाओं में की जाने वाली जीत ।

प्रेत कर्म कराने वाला और उसका दान लेने वाला ब्राह्मण। महा पात्र। महा ब्राह्मण। कट्टहा। कारटियो।

दिसि–(ना०) १. दिशा। २. ओर। तरफ।

दिसिया–(ना०) १. दिशा। २. ओर। तरफ।

दिह–(न०) १. दिन। २. दिशा।

दिहाड़ी–(अव्य०) १. नित्य प्रति। प्रतिदिन। हर रोज। (ना०) दैनिक पारिश्रमिक। एक दिन का वेतन। दैनगी।

दिहाड़ो–(न०) दिवस। दिन।

दींग–(वि०) चकित। दंग। छक।

दी–(न०) १. दिन। दिवस। २. दशा का ग्रह। (प्रत्य०) संबंध कारक स्त्रीलिंग विभक्ति। की। (क्रि०भू०) दी। दे दी। प्रदान की।

दीकरी–(ना०)१. पुत्री। बेटी। २. कन्या।

दीकरो–(न०) पुत्र। बेटा।

दीक्षा–(ना०) १. गुरु के द्वारा व्रत, नियम, उपदेश व मंत्र आदि लेने की क्रिया। गुरु मुख से मंत्र ग्रहण। २. संन्यास। ३. शास्त्र विधि से लिया हुआ किसी देवता के मंत्र का उपदेश। ४. गुरुमंत्र।

दीखणो–(क्रि०) दिखाई देना।

दीघ–दे० दीर्घ।

दीठ–(ना०) १. नजर। दृष्टि। (अव्य०) १. प्रति। पीछे। प्रत्येक। फी। २. प्रत्येक के हिसाब से। (वि०) बहुतों में से प्रति एक। प्रत्येक। हरेक।

दीठणो–(क्रि०) दिखना। दिखाई देना।

दीठाँ–(अव्य०) देखने से।

दीठी–(ना०) दृष्टि। दीठ। (क्रि०भू०) देखी।

दीठो–(भू०क्रि०) १. दिखाई दिया। २. देखा। (वि०) अनुकृत। देखा हुआ।

दीत–(न०) १. आदित्य। सूर्य। २. चितौड़ के शासक सीसोदियों के पूर्वज वन गर्मा के बाद गोदसीदित्य से भोगादीत तक ५५ पीढ़ीयों की दीत या दीत ब्राह्मणों (आदित्य ब्राह्मणों) की अल्ल या गोत्र। दीत ब्राह्मण। (नैणसी री ख्यात)

दीत ब्राह्मण–दे० दीत सं० २।

दीतवार–(न०) सूरजवार। रविवार।

दीद–(ना०) १. आँख। २. दृष्टि। नजर।

दीदा–(न०)बड़ी बहिन का पति। बहनोई।

दीदार–(न०) १. दर्शन। २. स्वरूप। ३. मुख। ४. कान्ति।

दीदारू–(वि०) १. दीदार वाला। स्वरूपवान। कांतिमान। २. दर्शनीय।

दीदी–(न०) बड़ी बहन। जीजी।

दीध–(भू०क्रि०) दे दिया। दिया। (वि०) दिया हुआ।

दीधाँ–(अव्य०) देने से। देने पर।

दीधो–(भू०क्रि०) दिया। प्रदान किया।

दीधोड़ी–(वि०) दी हुई। प्रदत्त।

दीधोड़ो–(भू०कृ०) दिया हुआ। प्रदत्त।

दीन–(वि०) १. गरीब। २. दुखी। ३. विनीत। (न०) १. धर्म। मजहब। २. मुसलमानी धर्म।

दीनता–(ना०) १. गरीब। २. नम्रता।

दीन दयाळ–(वि०) दीनों पर दया करने वाला। ईश्वर।

दीनदुखी–(न०) गरीब और दुखी।

दीनदुनिया–(ना०) लोक-परलोक।

दीनबंधु–(न०) १. दीनों का सहायक। २. ईश्वर।

दीनानाथ–(न०) १. दीन दुखियों का रक्षक। २. ईश्वर।

दीनार–(न०) १. ढाई रुपयों की कीमत का एक प्राचीन सिक्का। २. मध्ययुगीन एक सुवर्ण मुद्रा। ३. एक तौल।

दीनाँ–(अव्य०) देने से।

दीनो–दे० दीधो।

दीनोड़ो–दे० दीधोड़ो।

दीन्हो–दे० दीधो।

दीप-(न०) १. दीपक । २. द्वीप । टापू ।

दीपक-(न०) १. दीप । दीयो । २. एक अलंकार (साहित्य) । ३. संगीत का एक राग । ४. केसर । ५. अजवायन । (वि०) पाचनशक्ति वर्धक । पाचक ।

दीपकभजा-(ना०) काजल ।

दीपकसुत-(न०) काजल ।

दीपघर-(न०) १. दीवट । २. फानूस ।

दीप-झाड़-(न०) दे० प्रकार जोत ।

दीपणो (क्रि०)१. शोभना । शोभा पाना । २. चमकना । ३. प्रसिद्ध होना । प्रकाशित होना । ४. शोभा देना । फबना ।

दीपतो-(वि०) १. दीप्तिमान । कांतिमान । २. फबता । फवतो । यथाविहित । ३. चमकता हुआ । ४. शोभावाला ।

दीपदान-(ना०) १. दीवट । २. देवता के सामने दीपक जलाकर रखना ।

दीपमाळका-(ना०)दीपमालिका । दीवाली ।

दीपमाळा-(ना०) १. दीपकों की पँक्ति । २. दीवाली । दीपमाला ।

दीपसुत-(न०) काजल ।

दीपावणो-(क्रि०) १. शोभित करना । २. चमकाना । प्रकाशित करना । ३. किसी को प्रसिद्धि में लाना ।

दीपावती-(वि०) १. प्रकाशमान । २. दीपों से प्रकाशमान । ३. द्वीपावली । द्वीपवती । (ना०) पृथ्वी ।

दीपावली-(ना०) १. दीवाली का त्योहार । २. दीपों की पँक्ति ।

दीमक-दे० उदेई ।

दीयाँ-दे० दीवाँ ।

दीयो-(न०) दीपक ।

दीरघ-दे० दीर्घ ।

दीरघाव-(न०)१. दीर्घायु का आशीर्वचन । २. आशीर्वाद । ३. दीर्घायु । (वि०) दीर्घायु वाला ।

दीर्घ-(वि०) १. लंबा । डीघो । २. बड़ा ।

दीर्घ वर्ण-(न०) द्विमात्रिक अक्षर ।(व्या.)

दीव-(न०)१. द्वीप । २. सूर्य । ३. दीपक ।

दीवट-(ना०) दीपाधार । दीप दंड ।

दीवटियो-(न०) १. दीपक जलाने का मिट्टी का कटोरी जैसा एक पात्र । दीप जलाने की मिट्टी की छोटी कुल्हिया । २. मशालची ।

दीवड़ी-(ना०) १. बकरी के चमड़े या मोटे कपड़े का बना जलपात्र । २. पाथेय । भातो ।

दीवा-टाणो-(न०) संध्या समय । समीसांझ । दीपक जलाने का समय ।

दीवाण-(न०) १. दीवान । प्रधानामात्य । २. उदयपुर के महाराणा की एक उपाधि । ३. बिलाड़ा (मारवाड़) नगर की आई माता के मन्दिर का मुखिया । ४. राजसभा । दरबार । ५. बड़ा कमरा । ६. परिच्छेद । अध्याय । प्रकरण । ७. गजल संग्रह की पुस्तक ।

दीवाणखानो-(न०) १. दीवानखाना । वैठक । २. बड़ा कमरा ।

दीवाणगी-(ना०) १. दीवान का पद । २. दीवान का काम ।

दीवाणी-(वि०)१. रुपये-पैसे और जायदाद के इन्साफ से संबंधित । २. पागल । (ना०) १. दीवान का काम । २. दीवानी अदालत । ३. दीवानी अदालत का मुकदमा ।

दीवाणी-अदालत-(ना०) अर्थ संबंधी मुकदमों का न्यायालय ।

दीवाणी कचेड़ी-दे० दीवाणी अदालत ।

दीवाणो- (वि०) दीवाना । पागल । गहलो ।

दीवाधरी-(ना०) दीपक संजोने वाली दासी ।

दीवान-दे० दीवाण ।

दीवार-(ना०) भींत ।

दीवाळी-(ना०)१. दीपमालिका का उत्सव । कार्तिक अमावस्या का पर्व । २. भगवान राम के राज्यतिलकोत्सव का पर्व-दिन ।

दीवाळी-मिलण–*(न०)* एक जागीरी कर जो दीवाली पर लिया जाता था।

दीवा-वेळा–*(ना०)* दीया-बत्ती करने का समय। संध्या समय। साँझ। समीसांझ।

दीवासळी–*(ना०)* दीयासलाई। तीली। तूळी।

दीवी–*(ना०)* १. डंडे में चिथड़े लपेट कर बनाई गई मोटी चिराग। मशाल। २. दीवट। चिरागदान। ३. छोटा दीपदान।

दीवेल–*(न०)*१. दीये में जलाया जाने वाला तेल। २. इरंडी का तेल।

दीवो–*(न०)*१. दीपक। २. वंशज। ३.पुत्र। ४. पौत्र। ५. कुल उन्नायक श्रेष्ठपुरुष।

दीस–*(न०)* दिवस। दिन। *(ना०)* दृष्टि।

दीसणो–*(क्रि०)*१. दूर की वस्तु का दिखाई देने की स्थिति में होना। दिखना। दिखाई देना। २. आँखों में देखने की शक्ति का विद्यमान होना। अंधापा नहीं होना। सूझणो। ३. मालूम होना। ध्यान में आना। सूझना।

दीह–*(न०)* १. दिन। दिवस। २. भाग्य। प्रारब्ध। ३. द्विमात्रिक। ह्रस्व का उलटा। दीर्घ।

दीहणो–दे० दीसणो।

दीहपत–*(न०)* दिवसपति। सूर्य। सूरज।

दीहाड़ो–दे० दिहाड़ो।

दुअठ–*(वि०)* १. दुष्ट। २. दृढ़। मजबूत। ३. (दो बार आठ) सोलह।

दुअसपाह–*(न०)*दो घोड़े रखने के अधिकार वाला सैनिक। दो निजी घोड़ों वाला सैनिक।

दुआ–*(ना०)* १. आशीर्वाद। २. प्रार्थना। विनती।

दुआदस–*(वि०)* द्वादश। बारह।

दुआदसी–दे० द्वादशी।

दुआदसो–*(न०)* १. मृतक का बारहवें दिन होने वाला श्राद्ध। मृतक के बारहवें दिन का क्रिया कर्म। २. मृत्यु के बारहवें दिन किया जाने वाला भोज।

दुआयती–दे० दवायती।

दुआर–*(न०)* द्वार। दरवाजा। बारणो।

दुआरका–दे० द्वारका।

दुआरामती–*(ना०)* द्वारिका। द्वारामती।

दुआळ–*(न०)* १. झंझट। बखेड़ा। २. झगड़ा-टंटा। ३. प्रपंच। ४. छल। धोखा। ५. संकट। दुख। ६. संसार। सृष्टि। ७. यह दुनिया और इसका जंजाल। जगड्वाल। ८. एक से दो होने का भाव।

दुआळो–*(न०)* १. किसी काव्य की दो पँक्तियाँ। दुआला। २. डिंगल गीत-छंद के समुदाय का कोई एक छंद। ३. संपूर्ण गीत छंद का एक भाग। ४. समष्टि गीत का एक छंद। (गीत के छंदों की संख्या निश्चित नहीं है, किन्तु प्रायः चार छंद होते हैं)। ५. पद्यांश।

दुइ-राह–*(ना०)* १. हिन्दू-धर्म और मुसलमान धर्म। २. हिन्दू और मुसलमान। ३. आर्य-अनार्य। ४. धर्म-अधर्म। ५. निवृत्ति और प्रवृत्ति। ६. पुण्य और पाप। ७. आस्तिक और नास्तिक। ८. दो मार्ग। दोनों मार्ग। *(वि०)* अच्छा और बुरा। उत्तम और निकृष्ट।

दुई–*(वि०)* १. दो। २. दोनों। ३. दूसरी। *(ना०)* १. जुदाई का भाव। अपने को दूसरे से अलग समझना। पृथकता। २. अंतर। ३. भेदभाव। ४. दो का भाव। द्वैत। ५. दो बूटी वाला ताश का पत्ता।

दुओ–*(न०)* १. आज्ञा। आदेश। २. मुनादी। ढिंढोरा। घोषणा। ३. सामाजिक-प्रतिबंध। ४. दो की संख्या। ५. साम्य। मिलान। *(वि०)* दूसरा। द्वितीय।

दुकड़ियो-(न०) भोजन परोसने का दोनों हाथों से पकड़ा जाने वाला दो कड़ी वाला पात्र।

दुकड़ा-(न०ब०व०) मशीन व ताल देने को चमड़े से मढ़ी हुई एक प्रसिद्ध नक्कारानुमा वाद्य की जोड़ी। तबला जोड़ी।

दुकर-(वि०) १. दुष्कर। कठिन। मुश्किल। २. दुष्ट। ३. नीच।

दुकान-(ना०) माल बेचने का स्थान। दूकान। हाट।

दुकानदार-(न०) दुकान वाला। दुकान का मालिक।

दुकानदारी-(ना०) दुकान चलाना। दुकान पर माल बेचने का काम। खरीद फरोख्त का धंधा।

दुकाळ-(न०) दुष्काल। अकाल। दुर्भिक्ष।

दुकृत-(न०) १. दुष्कृत्य। कुकृत्य। कुकर्म। २. पाप।

दुख-(न०) कष्ट। दुःख। तकलीफ।

दुखड़ो-(न०) १. दुख का वर्णन। दुख कथा। दुखड़ा। दुख। विपत्ति। ३. दुर्गति। ४. व्यथा।

दुखणियो-दे० दूखणियो।

दुखतर-(ना०) बेटी। पुत्री। दुख्तर।

दुखतरपति-(न०) जमाई। जामाता।

दुखदाई-(वि०) दुख देने वाला। दुखद। दुखदायी।

दुखदायक-दे० दुखदाई।

दुखदायण-(वि०) दुख देने वाली।

दुखाणो-दे० दुखावणो।

दुखारो-(वि०) १. दो क्षारों वाला। २. वह जिसमें चाँदी और ताँबा मिला हो। (सोना) ३. वह जिसमें जसद और ताँबा मिला हो। ४. दो धातुओं की मिलावट वाला। ५. दुखी। ६. दुखदाई।

दुखावणो-(क्रि०) १. दुखाना। दर्द की जगह पर चोट करना। २. सताना। कष्ट पहुंचाना।

दुखावो-(न०) वेदना। पीड़ा। दर्द।

दुखियारो-(वि०) १. दुखियारा। दुखी। दुखिया। २. दुख देने वाला। ३. दुख देने वाली। दुखदाई। (ना०) दुखी स्त्री। दुखिया। दुखियारण।

दुखियारो-(वि०) १. संकटग्रस्त। दुखी। २. दुख देने वाला। दुखदाई। ३. दूसरे के दुख से प्रसन्न होने वाला।

दुखियो-(वि०) १. दुखी। २. दरिद्री।

दुखी-(वि०) १. कष्टी। संतप्त। दुखी। २. व्यथित। ३. रोगी।

दुगणो-(वि०) दोगुना। द्विगुण। दूना। वमणो। बवणो।

दुगदुगी-(ना०) एक आभूषण। धुकधुकी।

दुगम-(वि०) १. दुर्गम। २. वीर। बहादुर। (न०) १. सूअर। २. सिंह।

दुगाणी-(न०) १. एक पुराना सिक्का। २. रुपये का चालीसवां भाग (ब्याज की फलावट में) ब्याज फालने का मान। दुरगाणी। वि०) छोटा। तुच्छ।

दुगाम-दे० दुगम।

दुगाय माता-(ना०) मारवाड़ के ईंदावाटी प्रदेश के दुगाय पर्वत की देवी का नाम।

दुगाह-(वि०) १. जो ग्रहण नहीं किया जा सके। २. जो जीता नहीं जा सके।

दुगुण-दे० दुगुणो।

दुगुणो-(वि०) दूना। दुगुना।

दुघड़ियो-(न०) १. दो-दो घड़ी का मुहुर्त्त विधान। दो दो घड़ियों का वारों के अनुसार निकाला हुआ मुहुर्त्त। (वि०) दो घड़ी का।

दुचित्तो-(वि०) खिन्न। अप्रसन्न। दुमणो।

दुचित-(वि०) १. चितातुर। २. दुखी। ३. खिन्न। अप्रसन्न।

दुचूर-(न०) सिंह।
दुछर-(न०) १. सिंह। २. योद्धा।
दुछरा-(ना०) १. दुधारी तलवार। दुधारा। २. तलवार। खड्ग। ३. कटारी। (न०) सिंह। (वि०) वीर। बहादुर।
दुछराँ राव-(न०) १. शूरवीर। २. नृसिंह।
दुछरो-दे० दुछर।
दुज-(न०) १. ब्राह्मण। द्विज। २. ब्रह्मा। ३. ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य वर्ण के लोग। त्रिवर्ण। द्विज। ४. चंद्रमा। ५. अंडज प्राणी। ६. पक्षी। ७. दाँत।
दुजड़-(ना०) तलवार।
दुजड़झल-(वि०) १. खड्गधारी। २. वीर।
दुजड़-हथो-(वि०) १. खड्गधारी। २. वीर।
दुजड़ी-(ना०) १. कटारी। तलवार।
दुजण-(न०) १. दुर्जन। दुष्टजन। २. शत्रु। (वि०) दुष्ट। नीच।
दुजपंख-(न०) गरुड़।
दुजराज-(न०) १. परशुराम। २. ब्राह्मण।
दुजवर-(न०) १. द्विजवर। ब्राह्मण। २. चार लघु मात्राएँ (छंद)
दुजागरी-(ना०) १. परायापन। अलगाव। २. भेदभाव।
दुजाणी-दे० दुजाळी।
दुजाति-(न०) द्विजाति।
दुजायगी-(ना०) १. दूसरापन २. अलगाव। भिन्नता।
दुजाळी-(वि०) दूध देने वाली (गाय, भैंस) दूधाळी। दूझणी।
दुजिंद-(न०) द्विजेन्द्र।
दुजीभ-दे० दुजीह।
दुजीह-(न०) १. द्विजिह्वा। सर्प। २. कटारी। (वि०) चुगलखोर। २. परस्पर भिड़ंत कराने वाला। ३. झूठा।
दुजीहो-(वि०) १. इधर उधर लगाने वाला। दोनों ओर भिड़ाने वाला। २. चुगलखोर। ३. उपकार के बदले अपकार करने वाला। कृतघ्न। (न०) सर्प। नाग।
दुजोण-(न०) १. दुर्योधन। २ शत्रु। (वि०) दुष्ट।
दुजोयण-(न०) दुर्योधन।
दुझड़-दे० दुजड़।
दुझळ-(वि०) १. क्रोधित। २. वीर। योद्धा।
दुझाळ-(वि०) १. महाक्रोधी। २. जबरदस्त। दुर्धर्ष। ३. वीर।
दुटपी-(वि०) १. दो टप्पों की (बात) अल्प। छोटी। २. दुतरफी।
दुठ-(वि०) १. वीर। २. दुष्ट।
दुड़की-(ना०) घोड़े की एक चाल।
दुड़वड़ी-(ना०) १. एक प्रकार का बाजा। २. दौड़ना। दौड़।
दुड़ियंद-(न०) सूर्य। दिनेन्द्र।
दुड़िंद-(न०) सूर्य।
दुत-दे० दुति।
दुतकारणो-(क्रि०) १. फटकारना। डाँटना। २. धिक्कारना। तिरस्कार करना। ३. तिरस्कार करके दूर हटाना।
दुतरणि-(वि०) दुस्तर। अत्यन्त। कठिन।
दुतरफ-(ना०) १. दोनों ओर। २. दोनों पक्ष।
दुतंग-(न०) जीन में दोनों ओर कसा जाने वाला तंग।
दुति-(ना०) १. शोभा। २. किरण। ३. ज्योति। द्युति। ४. प्रकाश।
दुतिया-(ना०) द्वितीया। दूज। बीज।
दुतिवंत-(वि०) १. प्रकाशमान। २. द्युतिवान। सुंदर।
दुतीय-(वि०) द्वितीय। दूसरा। दूजो। बीजो।

दुतार-दे० दुस्तर ।
दुत्तर-(वि०) दुस्तर ।
दुथणी-(ना०) स्त्री । (वि०) दो स्तनों वाली ।
दुदंत-(न०) द्विरद । हाथी ।
दुधारी-(वि०) दो धार वाली । (ना०) १. दो धार वाली तलवार । २. कटारी ।
दुधारू-(वि०) १ दूध देने वाली (गाय भैंस) २. अधिक दूध देने वाली ।
दुधाळ-दे० दुधारू ।
दुनाळी-(ना०) दो नाल वाली बंदूक ।
दुनां-(वि०) दोनों । (न०) दोनों तरफ ।
दुनिया-(ना०) संसार । जगत ।
दुनियाण-(ना०) दुनिया ।
दुनियादारी-(ना०) दुनिया का व्यवहार ।
दुनी-(ना०) संसार । दुनिया ।
दुपटी-(ना०) १. कंधे पर रखने का वस्त्र । उपरना । दुपट्टी । २. दो पट्टों वाला एक वस्त्र । चादर । (वि०) दुतरफी ।
दुपटो-(न०) दुपट्टा ।
दुपट्टो-(न०) १. दो समान वस्त्रों की लंबाई में सिली हुई चादर या ओढ़ना । २. स्त्रियों का एक जरी वाला ओढ़ना ।
दुपहरी-(ना०)१. दुपहर का समय । दुपहर का भोजन । दुपहरो । दुपारो ।
दुपहरो-दे० दुपारो ।
दुपारो-(न०) दुपहर में किया जाने वाला भोजन । दुपहरा ।
दुफरावणो-(क्रि०) १. रोना । विलाप करना । २. पति के मरने के कुछ महीनों तक विधवा का कोने में बैठ कर प्रातःकाल में रोना ।
दुफसली-(वि०) जिसमें रवि और खरीफ दोनों फसलें होती हों ।
दुबध्या-दे० दुविधा ।
दुबारा-(क्रि०वि०) दूसरी बार ।
दुबारो-(न०) १. एक प्रकार का शराब । २. मदिरा । शराब ।
दुबाहु-(न०) योद्धा । (ना०) १. सेना । २. तलवार । (वि०) १. वीर । बहादुर । शक्तिशाली । २. दुर्धर्ष । ३. दृढ़ ।
दुभाव-(न०) १. भेदभाव । २. भेद ।
दुभावणो-(क्रि०) १. दुखी करना । २. ठेस पहुंचाना । दिल जलाना । ३. भेद-भाव रखना ।
दुभात-(ना०) १. भेदभाव । २. भेद । दुराव ।
दुम-(ना०) पूंछ । पूंछड़ी ।
दुमची-(ना०) जीन का वह बंधन (पट्टी या तसमा) जो घोड़े की दुम के नीचे दबा रहता है ।
दुमणो-(वि०) व्यग्रचित्त । खिन्न । दुमना । दुचित्तो ।
दुमन-(वि०) खिन्न । अप्रसन्न ।
दुमात-(ना०) १ सोतेली माता । विमाता । २.अक्षर के ऊपर की दो मात्राएँ । (वि०) १.दो माताओं वाला । २.दो मात्राओं वाला ।
दुमायो-(वि०) सोतेली माता से उत्पन्न ।
दुमार-(ना०) १. तंगी । परेशानी । २. कमी । अभाव । ३. दो तरफ की मार । एक साथ दो ओर से आने वाला संकट । ४. धर्मसंकट ।
दुमारो-(न०) १. तंगी । परेशानी । २. कमी । अभाव । दुमार ।
दुमाळो-दे० धूमाळो ।
दुमेळ-(न०) १. शत्रुता । वैमनस्य । २. एक डिंगल छंद । (वि०) जो समान न हो । असमान ।
दुय-(वि०) दो ।
दुयण-(न०) १. दुर्जन । दुष्ट । २. शत्रु । **वैरी ।**
दुयंगम-(वि०) वीर । बहादुर ।
दुर-(उप०) निषेध या दूषण सूचक अर्थ वाला एक उपसर्ग । जैसे—दुरभिमान,

दुराचार आदि। (अव्य०) दूर हट। दूर हो। (तिरस्कार पूर्वक)।

दुरकारणो–दे० दुतकारणो।

दुरग–(न०) किला। दुर्ग। गढ।

दुरगत–(ना०) दुर्गति। दुर्दशा।

दुरगतियो–(वि०) १. दुर्गति को प्राप्त होने वाला। २. दुर्गति में रहने वाला। ३. नरक प्राप्त।

दुरगम–(वि०) १. जहाँ जाना कठिन हो। दुर्गम। कठिन। २. जो आसानी से समझ में न आये। जो कठिनता से जाना जा सके। दुर्बोध। दुर्ज्ञेय। दुर्गम।

दुरगाणी–दे० दुगाणी।

दुरगंध–(ना०) दुर्गन्ध। वदबू।

दुरगुण–(न०) १. दोष। ऐब। नुक्स। दुर्गुण। २. शरारत।

दुरजण–(न०) १. दुर्जन। दुष्ट मनुष्य। २. शत्रु। वैरी।

दुरजोण–(न०) दुर्योधन। जरजोजण।

दुरट्ठ–(वि०) दूरस्थित। दूर रहने वाला।

दुरणो–(क्रि०) १. दूर होना। छिपना। २. मिटना। समाप्त होना।

दुरत–(न०) १. विपत्ति। आपद। २. पाप। दुरित। ३. क्रोध। गुस्सा। ४. शत्रु। (वि०) १. पापी। दुरिता। दुष्ट। २. बलवान। जबरदस्त। ३. भीषण। भयावना।

दुरद–(न०) हाथी। द्विरद।

दुरदसा–(ना०) दुर्दशा। बुरी हालत।

दुरदिन–(न०) १. दुर्दिन। २. दुख और कष्ट के दिन। ३. बुरा समय।

दुरबळ–(वि०) १. दुर्बल। निर्बल। २. गरीब। निर्धन।

दुरबुध–(न०) दुष्ट बुद्धि। दुर्बुद्धि। (वि०) खोटी बुद्धिवाला। अज्ञानी। मूर्ख।

दुरबोध–(वि०) जो जल्दी समझ में न आवे। जिसका आशय समझना कठिन हो।

दुरभख–(न०) १. दुर्भिक्ष। अकाल। २. अभक्ष्य। दुर्भक्ष्य।

दुरभाग–(न०) दुर्भाग्य। कमनसीबी। वदकिस्मती।

दुरभागण–(वि०) १. दुर्भाग्यनी। अभागिनी। मंदभाग्यनी। वदकिस्मत वाली। २. विधवा।

दुरभागियो–दे० दुरभागी।

दुरभागी–(वि०) अभागा।

दुरभावना–(ना०) बुरी भावना।

दुरभिख–(न०) दुर्भिक्ष। अकाल। दुकाल। काळ।

दुररे–(अव्य०) १. कुत्ते को भगाने के लिये प्रयुक्त शब्द। २.दूर हट जारे। (तिरस्कार पूर्वक) दूर रह। (न०) १. कुत्ता। २. तिरस्कार।

दुरलभ–(वि०) १. कठिनता से प्राप्त होने वाला। दुर्लभ। २.अनोखा। ३.प्रियतम।

दुरवचन–(न०) गाली। दुर्वचन।

दुरस–(वि०) १. जिसमें कोई त्रुटि न हो। दुरुस्त। उचित। ठीक। सही। २. यथार्थ। ३ स्वस्थ। ४. कड़ुआ। ५. विरस। नीरस। (न०) वैर। शत्रुता।

दुरसोजी आढो–(न०) एक प्रसिद्ध डिंगल के चारण कवि।

दुरस्त–(वि०) ठीक। उचित। यथार्थ। दुरुस्त।

दुरस्ताई–दे० दुरस्ती।

दुरस्ती–(ना०) दुरुस्ती। सुधार।

दुरंग–(न०) १. दुर्ग। किला। २. दो रंग। (वि०) १. दो रंग वाला। २.कुरूप। वदसूरत। ३. खराव।

दुरंगी–(वि०) १. दो रंगों वाली। २. दो प्रकार की। ३. दोनों पक्षों में भाग लेने वाला। कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में। ४ कपटी। छलिया।

दुरंगो-(वि०) १. दो रंगों वाला । २. दो प्रकार का । ३. दोहरी चाल चलने वाला । दोगला । ४. अस्थिर मति वाला । ५. खराब ।

दुरंत-(वि०) १. जिसका अंत दूर हो । विकट । दुर्गम । दुस्तर । २. जिसका अंत दूषित हो । दूषित परिणाम वाला । अशुभ । खोटा । ३ अपमानजनक । ४. बहुत लंबा । दीर्घ । अपार । ५. भीषण । घोर । भयानक । ६. दुष्ट । ७. शत्रु ।

दुराग-दे० दुराजो ।

दुराचरण-(न०) खोटा आचरण ।

दुराचार-(न०) बुरा आचरण । अनीति-युक्त आचार । दुराचार ।

दुराचारण-(वि०) खोटे आचरण वाली ।

दुराचारी-(वि०) खोटे आचरण वाला ।

दुराजो-(न०)१. वैमनस्य । वैर । २. नाराजगी । नाराजी ।

दुराणो-(क्रि०) १. छिपाना । २. छल करना ।

दुराव-(न०) १. भेदभाव । २. छिपाव । ३. छलकपट । ४. दुर्भाव ।

दुरावणो-दे० दुराणो ।

दुराशिष-दे० दुरासीस ।

दुरासा-(ना०)१.झूठी आशा । २.दुराशिष ।

दुरासीस-(ना०) दुराशिष । श्राप । बद-दुआ ।

दुरी-(वि०) १. अशुभ । दुष्ट । २. दुख-दायी । ३. दो । (ना०) १. दो का चिन्ह । २. दो के चिन्ह वाला ताश का पत्ता ।

दुरीस-(न०) दुष्ट राजा ।

दुरुखी-(वि०) १. दोनों ओर की । २. दोनों पक्षों की ।

दुरुस्त-दे० दुरस्त ।

दुरेफ-(न०) भौंरा । द्विरेफ । भमरो ।

दुर्ग-दे० दुरग ।

दुर्गति-दे० दुरगत ।

दुर्गम-दे० दुरगम ।

दुर्गंध-दे० दुरगंध ।

दुर्गा-(ना०) १. पार्वती । २. आदि शक्ति । ३. नौ वर्ष की कन्या ।

दुर्गादास राठौड़-(न०) महान स्वामी, स्वामी भक्त, धर्मवीर और ख्यातनाम एक राठौड़ वीर ।

दुर्गुण-दे० दुरगुण ।

दुर्घटना-(ना०) अशुभ घटना । वारदात । अकस्मात ।

दुर्जन-दे० दुरजण ।

दुर्दशा-दे० दुरदसा ।

दुर्दिन-दे० दुरदिन ।

दुर्बल-दे० दुरबळ ।

दुर्बुद्धि-दे० दुरबुध ।

दुर्भाग्य-दे० दुरभाग ।

दुर्भाव-(न०) १. बुरा भाव । २. तुच्छ विचार ।

दुर्भिक्ष-दे० दुरभिख ।

दुर्वचन-(न०) गाली ।

दुलख-(न०) दुर्लक्ष्य । (वि०) दो लाख ।

दुलखणो-(क्रि०) १. दुर्लक्ष करना । २. उद्देश्यहीन समझना । (वि०) कुलक्षणों वाला । कुलखणो ।

दुलड़ी-(ना०) दो लड़ो वाला स्त्रियों के गले का एक आभूषण । (वि०) दो लड़ों वाली ।

दुलहण-(ना०) दुलहिन । दुल्ही । वधु । बीनणी ।

दुलहो-(न०) दुलहा । वर । बींद ।

दुलाई-(ना०) रजाई ।

दुलार-(न०) लाड़ । प्यार ।

दुलीचो-(न०) गलीचो । कालीन ।

दुव-(वि०) १. दो । २. दूसरा ।

दुवजीह-दे० दुजीह ।

दुवा-(ना०) दुआ । आशिष ।

दुवाई-(ना०) १. दुहाई । घोषणा । २. शपथ । सौगंध । ३. औषधि । दवाई ।

दुवागरा–दे० दुहागरा ।
दुवादस–*(वि०)* द्वादश । बारह ।
दुवादसी–*(ना०)* द्वादशी । बारस ।
दुवार–*(न०)* १. द्वार । दरवाजो । दहजो । मोड़ो । बाररणो । २. घर ।
दुवारका–*(ना०)* द्वारका ।
दुवाळो–दे० दुग्राळो ।
दुविधा–*(ना०)* १. मन का अस्थिर भाव । निश्चय-अनिश्चय में डोलना । २. चिन्ता ।
दुविहार–*(न०)* जैन मतानुसार दो प्रकार के आहार का एक व्रत ।
दुवै–*(वि०)* दोनों ।
दुवो–दे० दुग्रो ।
दुशालो–*(न०)* कीमती दोहरी शाल । ओढ़ने का एक कीमती वस्त्र ।
दुश्मन–*(न०)* शत्रु । वैरी ।
दुष्ट–*(वि०)* दुर्जन । खल । अधम । दुसट ।
दुसकरनी–*(वि०)* बुरा काम करने वाला । दुष्कर्मी । खोटखणो ।
दुसट–दे० दुष्ट ।
दुसटाँ-दळ–*(न०)* १ दुष्टों का दलन करने वाला । दुष्ट दलन । ईश्वर । २. शत्रुओं की सेना । ३. यवनों की सेना ।
दुसमरा–*(न०)* दुश्मन । शत्रु । वैरी । वैरी ।
दुसमराई–*(ना०)* दुश्मनी । शत्रुता । वैर । वैर ।
दुसमरावट–दे० दुसमराई ।
दुसमरी–दे० दुश्मनी ।
दुसमी–*(वि०)* दुश्मन । शत्रु । वैरी ।
दुसरारो–दे० दुसरावरो ।
दुसरावरो–*(क्रि०)* दुसराना । दुहराना । वेहराणो ।
दुसह–*(न०)* शत्रु । *(वि०)* १. सहन नहीं होने योग्य । २. सहन नहीं करने योग्य । असह ।
दुसाको–*(न०)* दो प्रकार के शाक परोसने का एक जुड़वाँ पात्र ।
दुसाखियो–*(वि०)* जहाँ वर्षा और शीत दोनों ऋतुओं की कृषि होती है । जहाँ रबी और खरीफ दोनों फसलें होती हों ।
दुसार–*(ना०)* १. तलवार । २. दुधारी तलवार । ३. दोनों बाजू घाव या सुराख करने का भाव । ४. यह छोर और वह छोर । *(क्रि०वि०)* एक छोर से दूसरे छोर तक । आर पार ।
दुसालो–*(न०)* दुशाला ।
दुसासरा–*(न०)* दुर्योधन का छोटा भाई दुशासन ।
दुसुपन–*(न०)* खोटा स्वप्न ।
दुस्ट–दे० दुष्ट ।
दुस्टी–*(वि०)* १ दुष्ट स्वभाव वाला । २. दुराचारी । ३. दुखदायी ।
दुस्तर–*(वि०)* जो कठिनता से तैरा जाय । दुत्तर ।
दुहरणो–*(क्रि०)* १. दोहन करना । चौपायों के थनों में से दूध निकालना । दुहना । दोहणो । २. दुख देना । दुहवणो ।
दुहवरणो–*(क्रि०)* १. दुख देना । कष्ट पहुँचाना । २. नाराज करना ।
दुहाई–*(ना०)* १. दुहाई । शपथ । दुवाई । २. शासन । हुकूमत । ३. राजाज्ञा । ४. मुनादी । घोषणा ।
दुहाग–*(न०)* १. वैधव्य । विधवापणो । २. पति के द्वारा पत्नी के साथ प्रेमालाप, मान-मिलन आदि स्त्री विषयक व्यवहार की की जाने वाली अवज्ञा । ३. सुहाग-सुख का अभाव । पत्नी के प्रति अपमान वृत्ति । पति की नाराजी । पत्नी के प्रति विमुखता ।
दुहागरा–*(वि०)*१. विधवा । २. [illegible] । तिरस्कृता । ३. वह सधवा जिसके [illegible]

पति की कृपा न हो । तिरस्कृता । (ना०) १. विधवा स्त्री । २. अनादृता स्त्री ।
दुहागपणो-दे० दुहाग ।
दुहिता-(ना०)पुत्री । बेटी ।
दुहितापति-(न०) जामाता । दामाद ।
दुहुँ-(वि०) दोनों । दोहो ।
दुहुँवाँ-(वि०) दोनों । (क्रि०वि०) १. दोनों से । २. दोनों ओर । ३. दोनों में ।
दुहुँवै-(वि०) दोनों । (क्रि०वि०) १. दोनों प्रकार से । २. दोनों ही । ३. दोनों ओर । **दोहो कानी** ।
दुहेलो-(वि०) १. दुखदाई । कष्ट कर । २. दुष्कर । कठिन । ३. दुर्गम ।
दुंद-(न०) १. युद्ध । द्वन्द्व । २. उत्पात । उपद्रव । ३. कलह । झगड़ा । ४. द्वन्द्व युद्ध । ५. कोलाहल । शोर । ६. धुंध । कुहरा । ७. अंधेरा । अंधारो ।
दुंदभ-(न०) बड़ा नगाड़ा । दुंदुभि । **नगारो** ।
दुंदुभि-(न०) १. बड़ा नगाड़ा । २. युद्ध का नगाड़ा ।
दुंबो-(न०) १. मोटी पूंछ वाला मेंढ़ा । २. **टीबो** । टीबा । ३. ढेर । **ढिगलो** ।
दू-(वि०) विधवा । **दुहागण** ।
दूओ-दे० दूवो ।
दूख-(न०) दर्द । पीड़ा ।
दूखण-(न०) १. दोष । अपराध । २. पाप । ३. कलंक । दूषण ।
दूखणखाई-(ना०) एक कीड़ा ।
दूखणियो-(न०)१. फोड़ा । व्रण । **छाळो** । २. गिल्टी ।
दूखणो-(क्रि०) दुखना । दर्द होना । (न०) फोड़ा । फुंसी । **छाळो** । **बीज** ।
दूछर-दे० दुछर ।
दूछराँ-राव-(न०)१. नृसिंह । २. शूरवीर ।
दूज-(ना०) पक्ष का दूसरा दिन । द्वितीया । (वि०) द्वितीय ।
दूजवर-(न०) पत्नी के मर जाने से दूसरी कन्या से विवाह करने वाला पुरुष । दूसरी बार विवाह करने वाला पुरुष ।
दूजागारी-(ना०) १. दुरंगापन । २. अलगाव । भिन्नता ।
दूजाणो-(न०) दूध देने वाला (गाय भैंस)।
दूजियाण-(वि०) दूसरी बार ब्याने वाली या ब्यायी हुई (गाय भैंसादि) ।
दूजो-(वि०) १. अन्य । दूसरा । पराया । बीजो । २. तुलना में आने वाला । बराबरी करने वाला ।
दूजोड़ी-(वि०) दूसरी । **बीजोड़ी** ।
दूजोड़ो-(वि०) दूसरा । अन्य । **बीजोड़ो** ।
दूझणी-(वि०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) ।
दूझणो-(न०) दूध देने वाली (गाय भैंस आदि) । (क्रि०) गाय, भैंस आदि का दूध देना ।
दूझार-(ना०) गाय-भैंस आदि का दूध देने का काल या स्थिति ।
दूझारू-दे० दूझार ।
दूझाळी-(वि०) दूध देने वाली । अधिक दूध देने वाली ।
दूठ-(वि०) १. **जबरदस्त** । बलवान । २. वीर । बहादुर । ३. दुष्ट ।
दूण-(वि०) दुगना । **दुगुणो** ।
दूणागिर-(न०) द्रोणगिरि । द्रोणाचल ।
दूणियो-(न०) १. दूध दोहने का पात्र । २. छोटा जल पात्र । धातु का **छोटा** घड़ा । (वि०) पीड़ित ।
दूणेटो-(वि०) १. दुगना । २. जितना लिया जाय उससे दुगना या उतना ही और मिलाकर वापस देने का भाव ।
दूणो-दे० दुगुणो ।
दूत-(न०)१. संदेश वाहक । दूत । ह**लकारो** । २. **जासूस** ।

दूती-(ना०) १. झगड़ा कराने वाली स्त्री। २. कुलटा। ३. स्त्री संदेशवाहक। दूतिका। ४. कुटनी। कुटणी।

दूथी-(न०) चारण।

दूध-(न०) १. दुग्ध। दूध। २. आक, वड़ आदि वनस्पतियों में से निकलने वाला सफेद रस। वनस्पति का दूध के रंग का निर्यास। दूध। ३. चारों वर्णों में विभाजित कोई जाति। जाति। जात।

दूध-पूत-(न०) १. पुत्र-पौत्रादि की वंश-वेलि। २. गाय-भैंस, धन-धान्य और पुत्र-परिवार। जनधन।

दूधार-दे० दुझार।

दूधारी-(वि०) दूध देने वाली। दूझणी। दे० दूधाहारी।

दूधारू-(न०)गाय भैंस आदि दूध देने वाला चौपाया। (वि०)अधिक दूध देने वाली।

दूधाळू-दे० दूधारू।

दूधाळो-(वि०) १. दूध वाला। २. दूध वेचने वाला। ३. दूध मिलाकर तैयार किया हुआ।

दूधाहारी-(न०) केवल दूध का आहार करने वाला व्यक्ति।

दूधिया-(न०व०व०) लकड़ी के कोयले। (विपरीत नाम)।

दूधिया नशा-१. दे० दूधियाभाँग। २ हलका नशा। हळको नसो।

दूधियाभाँग-(ना०) दूध में औटा कर बनाया हुआ भाँग का पेय।

दूधियो-(वि०) १. दूध जैसे वर्ण वाला। सफेद। २. दूध से मिला या दूध से बना। (न०)१.लकड़ी का कोयला। २.कोयला।

दूधी-(ना०) १. छोटी पत्तियों वाले घास का एक छत्ता जिसमें से दूध के समान सफेद रस निकलता है। २. लौकी। दूधी।

दूधेन्हावो, पुत्रेफळो(अव्य०)एक आशीर्वाद।

दूधेली-(ना०) दूधी नामक वनस्पति (घास) का छत्ता।

दून-दे० दूण।

दूनो-(न०) पत्तों का बना कटोरी जैसा पात्र। दोना।

दूफर-दे० दूफरी।

दूफरणो-दे०दुफरावणो।

दूफराणो-दे० दुफरावणो।

दूफरावणो-दे० दुफरावणो।

दूफरी-(ना०) मृतक के पीछे रोने पीटने की क्रिया। रुदन। विलाप।

दूब-(ना०) दूर्वा। द्रोब।

दूबळाई-(ना०) दुर्बलता। कमजोरी।

दूबळी-(वि०) दुर्बल (ना०)।

दूबळो-(वि०) १. दुर्बल। २. निर्धन।

दू-बैर-(ना०) विधवा स्त्री। दू-लुगाई।

दूभर-(वि०) दुःसाध्य। कठिन। दोहरो।

दूमणो-(वि०) १. नाराज। २. चिंतित। ३. संतप्त। ४. दुर्मनस्क। ५. दुखी। खिन्न।

दूमो-दे० दुंवो।

दूर-(क्रि०वि०) १. अलग। दूर। आघो। २. अंतर। फासळो। ३. रद करना। ४. निकाल देना। दूरी करण। (अव्य०) दूरी पर। अंतर पर।

दूरणो-(न०) गाय भैंस आदि दूध देने वाले पशु।

दूरदरसी-दे० दूरदर्शी।

दूरदर्शी-(वि०) १. दूर दृष्टि वाला। २. दूर की सोचने वाला।

दूरदृष्टि-(ना०) दूर तक जानेवाली नजर।

दूरबीण-(ना०) दूरदर्शक यंत्र। दूरबीन।

दूरंतर-(क्रि०वि०) १. दूर से। २. दूर ही से। ३. दूर पर। आघो।

दूरंतरि-दे० दूरंतर।

दूरंदेश-(वि०) १. दूर की सोचने वाला। २. भावी का विचार करने वाला। दूरंदेश।

दूरा-(क्रि०वि०) दूर । अलग । (अव्य०) दूर की बात । कठिन काम । (वि०) १. अधूरा । २. थोड़ा । कम ।
दूरिट्ठ-(वि०) दूरस्थ । दूर रहने वाला ।
दूरी-(ना०) अंतर । फासला ।
दूळ्यो-(न०) नानचक ।
दूवणो-दे० दूहणो ।
दूवळ-(क्रि०वि०) १. दूसरी ओर । २. दूसरी बार । ३. दोनों ओर ।
दूवो-(न०) १. आज्ञा । २. घोषणा । मुनादी । दुहाई । ३. दोहा छंद । ४. दो की संख्या । ५. ख्याति भोज की घोषणा । ६. किसी को दंडित करने या दंडित को माफ करने आदि की ख्याति घोषणा ।
दूषण-दे० दूसण ।
दूसण-(न०) १. पाप । दूषण । २. अपराध । गुनाह । दोष । ३. दूषण । ऐब । खोट । ४. कलंक ।
दूसरो-(वि०) द्वितीय । दूसरा । बीजो ।
दूह-(वि०) विधवा । दुहागिन ।
दूहणो-(क्रि०) गाय, भैंस आदि के थनों को निचोड़ कर दूध निकालना । दोहना ।
दूहो-(न०) चार चरणों वाला एक छंद । दोग्धक । दोधक । दोहा ।
दूंग-(न०) चिनगारी । डूंगियो । डूंग ।
दूंटी-(ना०) दुंडी । नाभि । सूंटी ।
दूंदाळो-(वि०) तोंद वाला ।
दृग-(न०) आंख । नेत्र ।
दृढ़-(वि०) १. मजबूत । पक्का । दिढ़ । २. टिकाऊ । स्थिर । दिढ़ ।
दृढ़ता-(ना०) १. मजबूती । पक्काई । २. स्थिरता । अटलता । टिकाऊपना । दिढता । ३. टिकाव ।
दृष्टांत (न०) १. उदाहरण । मिसाल । दिस्टांत । २. आभास । ३. स्वप्न । (वि०)आभास रूप में दीख पड़ने वाला अथवा जान पड़ने वाला । आभासीन ।
दृष्टि-(ना०) १. नजर । २. देखने की शक्ति । ३. ध्यान । ४. लक्ष्य ।
दृष्टिकोण-(न०) १. सोचने विचारने और देखने का पहलू । २. विचार धारा । ३. विचार बिन्दु । ४. सिद्धान्त । ५. सोचने का कोई विशिष्ट ढंग ।
दृष्टिपात-(न०) देखना ।
दे-(अव्य०) १. कतिपय स्त्री पुरुषों के नामों के अंत में लगने वाला देवी और देव अर्थ को सूचित करने वाला एक प्रत्यय । देवी और देव शब्दों का संक्षिप्त रूप । यथा-अनरंगदे, दूंडदे, उछरंगदे, ऊमादे, रूपादे इत्यादि स्त्री नाम । कान्हड़दे, गोगादे, रामदे, बीसळदे, इत्यादि पुरुष नाम । २. स्त्री-पुरुषों के नामों के अंत में लगने वाला एक आदर सूचक प्रत्यय शब्द । ३. लोक गीतों का एक अव्यय शब्द । ४. एक पादपूर्णार्थक अव्यय । ५. एक त्वरार्थ संपुट । यथा-सड़ाक दे जातो रयो ।
देई-(ना०) देवी ।
देईवाण-दे० दइवाण ।
देउळ-(न०) देवल । देवस्थान । मंदिर । देवळ ।
देखण जोग-(वि०)देखने योग्य । दर्शनीय ।
देखण जोगो-दे० देखण जोग ।
देखणवाळो-दे० देखणहाळो ।
देखणहाळो-(वि०) देखने वाला । देखणियो । जोवणियो ।
देखणाळो-दे० देखणहाळो ।
देखणियो-(वि०)देखने वाला । जोवणियो ।
देखणो-(क्रि०) १. देखना । जोवणो । २. सोचना । विचारना । ३. तलाश करना । ४. परखना । जांचना । जांचणो । ५. सम्हालना । ६. संशोधन करना । ७. ध्यान देना ।

देखणो-चोखणो-*(मुहा०)* १. तलाश करना। २. जाँचना। जाँचणो।

देखणो-जोखणो-*(मुहा०)* प्रकृति, गुण, धर्म, प्रकार, मूल्य तथा तौल आदि की जाँच करना।

देखताँ-पाण-*(अव्य०)* १. देखते ही। २. देखने के साथ। ३. देखते-देखते। देखते रहने पर भी।

देखती-आँखे-*(अव्य०)* १. जानबूझ कर। २. आँखों के सामने। सम्मुख।

देखभाळ-दे० देख-रेख।

देखरेख-*(ना०)* १. सार-सम्हाल। निगरानी। २. जाँच-पड़ताळ।

देखाई-*(ना०)* १. देखने का काम। २. दिखलाने का काम। ३ दिखलाने का महनताना। ३. तुलना। बराबरी।

देखाऊ-*(वि०)* बनावटी। नकली। दिखावटी। *(अव्य०)* देखने में।

देखाणी-*(अव्य०)* १. देखता हूँ; सोचता हूँ; प्रतीक्षा करता हूँ; देखता हूँ, कैसे कर लेता है। इत्यादि अर्थों का सूचक। २. एक संपुट। जैसे 'आव देखाणी' मार देखाणी इत्यादि।

देखाणो-दे० देखावणो।

देखादेख-दे० देखादेखी।

देखा-देखी-*(ना०)* किसी को करते देख कर करना। अनुकरण। नकल।

देखाळणो-*(क्रि०)* दे० देखावणो।

देखाळो-*(न०)* १. दिखाई देना। दर्शन। २. किसी देवता या प्रेत आदि का आवेश। आवेश-परिचय। ३. प्रभात। प्रातःकाल का समय।

देखाव-*(न०)* १. दिखाने का भाव। २. तड़क-भड़क। आडंबर। बनाव। ३. दृश्य। नजारा। देखावो। ४. सजावट। ५. शान। आकृति। रूप। स्वरूप। ६. प्रदर्शन।

देखावड़ो-*(वि०)* १. देखने जैसा। २. रूपवान। सुन्दर। रूपाळो।

देखावणो-*(क्रि०)* १. दिखाना। २. जाँच करवाना। परखाना। ३. मादा और नर को मैथुन के लिये इकट्ठा करना। जोड़ा लगाना (पशु) ४. अपने प्रभाव का परिचय कराना। ५. जोर बताना। बल का परिचय देना।

देखावो-*(न०)* १. दिखाने के लिये की जाने वाली तैयारी। प्रदर्शन। २. दिखाने के लिये सजाकर रखी हुई दहेज की सामग्री। दहेज प्रदर्शन। २. आडंबर। ढोंग। ३. चमक-दमक। तड़क-भड़क।

देखीजतो-*(वि०)* १. प्रत्यक्ष। स्पष्ट। २. दिखावटी।

देखीतो-*(वि०)* दे० देखीजतो।

देग-*(न०)* खाना पकाने का तांबे या पीतल का बड़ा बर्तन। देगड़ो।

देगची-दे० देगड़ी।

देगचो-दे० देग।

देगड़ी-*(ना०)* देगची। छोटा देग।

देगड़ो-*(न०)* १. पीतल का बना हुआ पानी का घड़ा। २. छोटा देग। हाँडा। देगचो।

देगवट-*(न०)* १. भोजन-प्रकार। २. पाक-क्रिया का मानदंड। ३. हर समय भोजन की तैयारी। ४. भोजन-सत्कार।

देज-*(न०)* दहेज। दात। दायजो।

देठाळो-*(न०)* १. दृष्य। दृष्ट। दिखाव। २. दिखाने का भाव।

देडको-*(न०)* मेंढ़क। डेडको। डेडरियो।

देण-*(वि०)* देने वाला। देवणियो। *(न०)* १. कर्ज। २. देना। दान।

देणदार-*(वि०)* कर्जदार। कर्जवाला। ऋणी। करजायत।

देणदारी-*(ना०)* कर्जदारी। ऋण। करजो।

देण-लेण-*(ना०)* लेन देन का व्यवहार।

देवतरण-(न०) देवत्व ।
देवता-(न०) १. सुर । देव । २. आग । अग्नि । ३. देवत्व । (ना०) देवी ।
देवथान-(न०) देवस्थान । देवालय । देवमंदिर ।
देवदार-(न०) एक जाति का वृक्ष और उसकी लकड़ी । देवदारु ।
देवदीवाळी-(ना०) १. देव मंदिरों में विशेष प्रकार से मनाये जाने वाले दीपोत्सव की कार्तिक पूर्णिमा का दिन । २. कार्तिक पूर्णिमा का पर्व । **काती सुदि पूनम** ।
देवधाम-(न०) १. स्वर्ग । २. मृत्यु ।
देवनदी-(ना०) गंगा नदी । सुरसरी । सुरसरिता ।
देवनागरी-(ना०) १. संस्कृत, राजस्थानी, हिंदी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि । बालबोध लिपि । **बाळबोध** ।
देव-पोढ़णी-दे० देव पोढणी ग्यारस ।
देव-पोढणी ग्यारस-(ना०) १. आषाढ़ शुक्ल एकादशी । देवशयनी एकादशी । २. इस एकादशी का पर्व ।
देवप्रयाग-(न०) हिमालय में एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान ।
देवभख-(न०) १. देवताओं का भोजन । देवभक्ष्य । २. अमृत ।
देवभाखा-(ना०) देवभाषा । संस्कृत भाषा ।
देवभाषा-(ना०) संस्कृत भाषा ।
देवमंदिर-(न०) देवस्थान । देवालय ।
देवयोग-दे० दैवयोग ।
देवर-(न०) पति का छोटा भाई ।
देवराज-(न०) इन्द्र ।
देवराणी-दे० देराणी ।
देवरिख-(न०) देवऋषि । नारद ऋषि ।
देवरो-(न०) देवालय । **देहरो** ।
देवळ-(न०) देवालय । **देवरो** । देवमंदिर ।
देवळी-(ना०) १. स्त्रीमूर्त्ति । वीर सती स्त्री की पुत्तलिका । ३. छोटा देवालय । देवली । ४. स्मारक रूप से बनवाई हुई छत्री ।
देवलोक-(न०) १. देवलोक । स्वर्ग । २. मृत्यु ।
देवलोक जाणो-(मुहा०) मरना ।
देवलोक पधारणो-दे० देवलोक जाणो ।
देवलोक होणो-दे० देवलोक जाणो ।
देववाणी-(ना०) संस्कृत भाषा ।
देवविद्या-(ना०) निरुक्त विद्या । व्युत्पत्ति शास्त्र ।
देवशयनी-(ना०) देवशयनी एकादशी । आषाढ़ शुक्ला एकादशी ।
देवशरण-(न०) १. रामशरण । मृत्यु । मरण । २. भगवान की शरण ।
देवसंजोग-दे० देवजोग ।
देवसंयोग-दे० देवजोग ।
देवस्थान-(न०) देवालय । देवमंदिर । **देवथान** ।
देवहर-रा-मगरा-(न०) मेवाड़ की एक पर्वत श्रेणी ।
देवाचा-दे० देवचो ।
देवाण-(न०) १. देवता । २. देव समूह । ३. ब्रह्मा । ४. देवत्व ।
देवाण विद्या-(ना०) १. सरस्वती । विद्या देवी । २. संस्कृत भाषा । दे० देव विद्या । (वि०) विद्या देने वाली ।
देवातन-(न०) १. देवायतन । देवस्थान । देवमंदिर । २. देवस्वरूप । ३. देवत्व । (वि०) १. जिसके तन में देवी देवता का आवेश होता हो । २. देव्यांशी । ३. देवांश ।
देवाधण-(ना०) गाय ।
देवाधिदेव-(न०) देवताओं के देवता ।
देवायर-(न०) दिवाकर । सूर्य । सूरज ।
देवाळ-(वि०) १. देने वाला । २. दानी ।

देवालय–(न०) देवमंदिर । देवळ ।
देवाळियो–(न०) कर्जा नहीं उतार सकने वाला व्यक्ति। दिवाळिया । नादार व्यक्ति।
देवाळो–(सं०) ऋण नहीं चुकाने की स्थिति व असमर्थता । दिवाला । नादारी ।
देवाँ-अगवाणी–(न०) गणेश ।
देवांगना–(ना०) अप्सरा । अपछरा ।
देवांशी–(वि०) जो देवता के अंश से उत्पन्न हुआ हो ।
देवांसी–दे० देवांशी ।
देवियाण–दे० देव्यायण ।
देवी–(ना०) १. आद्या शक्ति । दुर्गा । २. सरस्वती । ३. लक्ष्मी । ४. स्त्री नामों के अंत में लगने वाला एक गौरव सूचक प्रत्यय शब्द । ५. स्त्री (सम्मान वाचक) ६. एक चिड़िया । शकुन चिड़ी ।
देवेथान–दे० देवथान ।
देवेस–(न०) देवेश । महादेव ।
देव्यायण–(न०) बारहठ ईसरदास कृत देवी की महिमा व स्तुति का एक प्रसिद्ध भक्ति ग्रंथ । **देवियाण** ।
देश–(न०) १. देश । मुल्क । २. राष्ट्र । ३. क्षेत्र । ४. स्थान ।
देशज–(वि०) १. देश में उत्पन्न । २. लोक तथा देश की बोलचाल से उत्पन्न । शिष्ट भाषा की व्युत्पत्ति रहित लोगों की बोल चाल से उत्पन्न (शब्द) ।
देशी–(वि०) १. स्वदेश में उत्पन्न या बना हुआ । देशी । २. देश संबंधी । ३. देश में रहने वाला । (ना०) १. एक रागिनी । २. स्थान विशेष की बोली ।
देस–दे० देश ।
देसज–दे० देशज ।
देस-दीवाण–(न०) १. देश का बड़ा दीवान । २. दीवान का एक ओहदा या प्रकार ।
देसनिकाळो–(न०) निर्वासन का दंड । देश निकाला ।
देसपत–(न०) राजा । देशपति ।
देस-रजपूत–(न०) १. साधारण राजपूत । बिना जागीरी का राजपूत । २. देश में विख्यात राजपूत । ३. देश में रहने वाला राजपूत ।
देसवटो–(न०) देश निकाला । निर्वासन । देश से बाहर निकालने की सजा ।
देसवाळी लोग–(न०) जैसलमेर राज्य की मुसलमान प्रजा जिसको भी जजिया भरना पड़ता था ।
देसाटण–(न०) देशाटन । देशभ्रमण ।
देसावर–(न०) परदेश । देशावर ।
देसावरी–(वि०) परदेश में रहने वाला । परदेशी ।
देसी–दे० देशी ।
देसूंटो–दे० देसवटो ।
देसोटो–दे० देसवटो ।
देसोत–(न०) १. राजा । देशपति । २. जागीरदार ।
देह–(ना०) शरीर । देह । काया ।
देहत्याग–(न०) मृत्यु ।
देहपात–(न०) मरण । मृत्यु ।
देहरखो–(वि०) १. शरीर की ही विशेष चिंता करने वाला । २. अपनी रक्षा करने वाला । ३.स्वार्थी । (न०) कवच ।
देहरो–(न०) देवघर । देवालय ।
देहळियो–(न०) गाय, भैंस के लिये कुट्टी आदि पकाने तथा खिचड़ा आदि राँधने का मिट्टी का बड़ा पात्र ।
देहळी–(ना०) देहली । देहलीज । **ऊमरो** ।
देहात–(न०) गाँव ।
देहाती–(वि०) गाँव का । ग्रामीण । **गामड़ियो** ।
देही–(न०) १. देह । शरीर । २. देह धारण करने वाला । जीवात्मा । देह-धारी जीव ।

देहुरो–(न०) मंदिर । देवळ । देवरो । देहरो ।

दैण–(ना०) १. दुख । संकट । संताप । क्लेश । २. झगड़ा । कलह । ३. दहन । जलन । मनसंताप । ४. चिंता । फिक्र ।

दैणगियो–दे० दैनगियो । (वि०) १. संताप करने वाला । २. दुखदाई । ३. झगड़ालू । कलहकारी ।

दैणगी–(ना०) १. दिनमान का काम या मजदूरी । २. दैनिक पारिश्रमिक पर किया जाने वाला काम । ३. दिनभर के काम का पारिश्रमिक । दैनिक पारिश्रमिक । ४. एक दिन का महनताना । दैनिकी । (वि०) दैनिक ।

दैत–(न०) दैत्य ।

दैतणी–(ना०) १. दैत्य की स्त्री । २. कुरूपा स्त्री । ३. झगड़ालू स्त्री ।

दैनगियो–(न०) दैनिक पारिश्रमिक पर काम करने वाला मजदूर । मजूर ।

दैनगी–दे० दैणगी ।

दैळियो–दे० देहळियो ।

दैवयोग–(न०) संयोग । इत्तिफाक ।

दो–(वि०) एक और एक । (न०) दो की संख्या । '२'

दोइण–दे० दोयण ।

दोई–(वि०) दोनों ।

दोकड़ो–(न०) १. एक पुराना सिक्का । २. रुपये के सौवें भाग का एक सिक्का । ३. रुपये का सौवां भाग । (व्याज फलावट का मान) ४. सौवां भाग । ५. प्रतिशत । ६. व्याज । ७. धन । रोकड़ । पूंजी । पैसा ।

दोकलो–(वि०) जिसके साथ कोई और साथी हो । दुकेला । अकेला नहीं ।

दोकी–(ना०) १. दो चिन्हों वाला ताश का पत्ता । दुरी । दुक्की । २. शौच जाने के लिये दो अंगुलियां उठा कर किया जाने वाला संकेत । वेकी । ३. मल त्याग । शौच । (वि०) दो ।

दोकी जाणो–(मुहा०) मल त्याग करने को जाना । वेकी जाणो ।

दोख–(न०) १. दोष । ऐब । २. देवता की नाराजी । ३. देवता की नाराजी से हुआ कष्ट या रोग । ४. भूत-प्रेत या किसी लोक देवता की नाराजी । ५. किसी लोक देवता का अभिशाप । ६. पीड़ा । ७. द्वेष । ८. रोग । ९. पाप ।

दोखण–(न०) १. पाप । २. दूषण ।

दोखी–(वि०) १. शत्रु । दुश्मन । २. बुरा चाहने वाला । ३. ईर्ष्यालु । ४. द्वेषी । ५. दूसरे के दुख में सुखी और सुख में दुखी होने वाला । ६. दुखियारा । ७. दुखी । ८. दोषी । अपराधी ।

दोखो–(न०) १. बीमारी । रोग । २. प्राकृतिक संकट । ३. दुख । कष्ट । ४. पाप ।

दोगलापणो–(न०) १. दोनों पक्षों से मिला रह कर दोनों में कलह कराने का काम २. दुतरफी बात करने का काम । ३. वर्णसंकर व्यक्ति का काम ।

दोगलो–(न०) १. वर्णसंकर । जारज । २. दोनों पक्षों में मिला रह कर कलह कराने वाला । ३. दुतरफी बात करने वाला ।

दोज–दे० दूज ।

दोजग–(न०) दोजख । नरक ।

दोजगी–(वि०) १. दुखिया । २. ईर्षालु । ३. वह जिसको न तो रात में और न दिन में चैन पड़े । ४. पापी । नारकी । दोजखी ।

दोजीवाती–(ना०) गर्भवती स्त्री ।

दोजीवी–दे० दो जीवाती ।

दोभो–(न०) १. थन । स्तन । (पशु) । २. दूध देने वाला पशु ।

दोट–*(ना०)* १. दौड़ने की क्रिया । दौड़ । २. आक्रमण । ३. आंधी । तूफान । ४. धक्का । टक्कर । ५. नदी व समुद्र में आने वाला अति वेग के साथ पानी का धक्का । जोर की लहर । ६. दड़ी । गेंद ।

दोटी–*(ना०)* १. दड़ी । गेंद । २. एक प्रकार का कपड़ा । दुपट्टी ।

दोटो–*(न०)* १. प्रहार । २. धक्का । ३. पानी का धक्का । ४. दड़ी । गेंद ।

दोठा पुड़ी–दे० डोठा पुड़ी ।

दोठो–दे० डोठो ।

दोढ–दे० डोढ ।

दोढवाड़ कूंतो–दे० डोढवाड़ कूंतो ।

दोढो रावण–*(न०)* १. कुंभकर्ण । २. बड़ा रावण । *(वि०)* महा जबरदस्त ।

दोणकी–दे० दोणी ।

दोणियो–*(न०)* दुहने का पात्र । दोहनी । *(वि०)* । दुहने वाला ।

दोणी–*(ना०)* दोहने का पात्र । दोहनी । दुहनी ।

दो-दो हाथ–*(अव्य०)*१. मल्लयुद्ध । २. बाहु युद्ध । ३.आमने-सामने का युद्ध । ४.लड़ाई । **बाथमबाथ** । ५. सहकार । सहयोग ।

दोधक–*(न०)* १. एक छंद । २ दोहा छंद ।

दोधारो–*(वि०)* दो धार वाला । *(न०)* दुधारी तलवार ।

दोनूं–*(वि०)* दोनों । उभय ।

दोनो–*(न०)* १. लांछन । कलंक । **बजो** । २. अपकीर्ति । **कुजस** ।

दोपट–*(वि०)* दुहरा । दुपट ।

दोपटो–*(वि०)* वस्त्र के दो पट लंबे सीए हुए । *(न०)* दो पट वाला वस्त्र । **दोवटी** ।

दोपारो–*(न०)* दुपहर में किया जाने वाला अल्पाहार । दूसरे पहर का जलपान ।

दोब–*(ना०)* दूर्वा ।

दोभा–*(वि०)* १. वर्णसंकर । २. दो भांति का ।

दोमज–*(न०)* युद्ध ।

दोमळा–*(न०)* एक छंद ।

दोय–*(वि०)* दो । *(न०)* दो की संख्या ।

दोयण–*(न०)* १. शत्रु । दुश्मन । २. खल । दुर्जन ।

दोर–*(ना०)* डोर । दे० दौर ।

दोरप–*(ना०)* १. कठिनता । २. कष्ट । तकलीफ । संकट ।

दोरम–दे० दोरप ।

दोराई–दे० दोरप । ('सोराई' का उलटा) ।

दोरिम–दे० दोरप ।

दोळां–दे० दोळी ।

दोळी–*(वि०)* १. चारों ओर । आजूबाजू । २. पीछे लगना । पीछा ।

दोलू–*(न०)* दांत ।

दोळूं–दे० दोळी ।

दोळै–*(क्रि०वि०)* १. पीछे । आजूबाजू । चारों ओर । ३. पीछे लगा हुआ ।

दोळो–*(अव्य०)* १. चारों ओर । आजू-बाजू । इधर उधर । २. पीछा ।

दोवटी–*(ना०)* १. दो पट्टी वाली मोटी धोती । २. दो पट्टी वाला ओढ़ने का वस्त्र । ३. कंधे पर रखने का वस्त्र । दुपट्टी । **दोटी** । डुपटी ।

दोवड़–*(ना०)* १. दुहरा सिला हुआ ठंड में ओढ़ने का एक वस्त्र । दो पट्टी का वस्त्र । ३. कपड़े की दो तह । दो तह । *(वि०)* दुगुना ।

दोवड़-तेवड़–*(वि०)* दुगुना-तिगुना ।

दोवड़ो–*(वि०)* १. दुहरा । दोहरा । २. डबल । दुगुना । ३. दोनों ओर का ।

दो-वीसी–*(वि०)* चालीस ।

दोष–*(न०)* १. दोष । अपराध । २. भूल । ३. लांछन । ४. पाप । ५. आरोप । ६.

अभियोग । ७. कमी । खराबी । ८. साहित्य के गुणों में कमी । काव्य । दोप ।

दोपारोपण–(न०) किसी के ऊपर दोप मँढने का भाव ।

दोस–दे० दोप ।

दोसण–दे० दूसण ।

दोसदार–(न०) दोस्त । मित्र ।

दोसदारी–(ना०) दोस्ती । मित्रता ।

दोसूती–(वि०) दो सूत का बुना । डवल धागों से बुना हुआ (कपड़ा) । दो सूत वाला ।

दोस्त–(न०) मित्र । साथी ।

दोस्ती–(ना०) मित्रता ।

दोह–दे० दोस ।

दोहग–(न०) १. दुर्भाग्य । २. दुख । कष्ट । ३. संकट ।

दोहणकी–दे० दोहणी ।

दोहणियो–(न०) दुहने का पात्र । दोहनी । (वि०) दुहने वाला ।

दोहणी–(ना०) दूध के दोहने का पात्र । दुग्ध पात्र । दोहनी । दोणी ।

दोहणो–(क्रि०) १. दुहना । दूहणो । २. किसी वस्तु का सार भाग निचोड़ देना ।

दोहराई–(ना०) तकलीफ । कष्ट । दुख । दोराई ।

दोहरी–(वि०) १. दुखिता । २. दुखियारी । दुखी । (ना०) तकलीफ । कष्ट । (क्रि०वि०) १. दुख से । २. कठिनता से । ३. तकलीफ में ।

दोहरो–(न०) १. वे-आराम । तकलीफ । कष्ट । २. एक छंद । दोहा । (वि०) दुखी । (क्रि०वि०) १. कठिनता से । २. तकलीफ में ।

दोहलो–(न०) दोहा छंद । दे० दोहिलो ।

दोहा–दे० दूहो ।

दोहितरी–दे० दोहीती ।

दोहितरो–दे० दोहीतो ।

दोहिलो–(वि०) १. कठिन । दुस्साध्य । २. दुखी । (अव्य०) कठिनता से । दे० दुहेलो ।

दोहीती–(ना०) पुत्री की पुत्री । दोहित्री ।

दोहीतो–(न०) वेटी का वेटा । दोहित्र । दुहता ।

दोहेलो–दे० दुहेलो ।

दौड़–(ना०) १. दौड़ने की क्रिया । दौड़ । २. हमला । आक्रमण । धावा । ३. पहुँच । शक्ति । ४. प्रयत्न । ५. लूट ।

दौड़णो–(क्रि०) १. दौड़ना । भागना । २. पलायन होना । ३. हमला करना । धावा करना । ४. लूटना । डाका डालना । ५. प्रयत्न करना ।

दौड़भाग–(ना०)१. दौड़ा-दौड़ी । २.प्रयत्न । कोशिश ।

दौड़ादौड़ी–(ना०) १. वार वार दौड़ना । २. दौड़धूप । भागदौड़ । ३. जल्दवाजी ।

दौड़ो–(न०) १. चक्कर । फेरा । भ्रमण । दौरा । २. आक्रमण । ३. अधिकारी का अपने अधिकार क्षेत्र में निरीक्षण के लिये जाना । दौरा । ४. समय समय पर होने वाले रोग का आक्रमण । दौरा । रोगावर्तन । ५. डाका ।

दौर–(न०) १. रोव । आतंक । २. प्रभाव । ३. वैभव के दिन । ४. भ्रमण । फेरा ।

दौलत–(ना०) १. दौलत । पूंजी । धन । २. जागीरी । ३. भाग्य । प्रारब्ध ।

दौलतखानो–(न०) घर । निवास स्थान ।

दौलत-छौळ–(वि०) १. जिसके पास दौलत लहरें ले रही हों । अपार धनवान । २. उदार । दातार ।

दौलतधारी–(वि०) धनवान ।

दौलतमंद–(वि०) धनवान ।

दौलतवान–(वि०) धनवान ।

द्यउ–(क्रि०) दियउ । दीजिये । दे ओ । (विनयार्थक)

दोट-*(ना०)* १. दौड़ने की क्रिया। दौड़। २. आक्रमण। ३. आंधी। तूफान। ४. धक्का। टक्कर। ५. नदी व समुद्र में आने वाला अति वेग के साथ पानी का धक्का। जोर की लहर। ६. दड़ी। गेंद।

दोटी-*(ना०)* १. दड़ी। गेंद। २. एक प्रकार का कपड़ा। दुपट्टी।

दोटो-*(न०)* १. प्रहार। २. धक्का। ३. पानी का धक्का। ४. दड़ी। गेंद।

दोठा पुड़ी-दे० डोठा पुड़ी।

दोठो-दे० डोठो।

दोढ-दे० डोढ।

दोढवाड़ कूंतो-दे० डोढवाड़ कूंतो।

दोढो रावण-*(न०)* १. कुंभकर्ण। २. बड़ा रावण। *(वि०)* महा जबरदस्त।

दोणकी-दे० दोणी।

दोणियो-*(न०)* दुहने का पात्र। दोहनी। *(वि०)*। दुहने वाला।

दोणी-*(ना०)* दोहने का पात्र। दोहनी। दुहनी।

दो-दो हाथ-*(अव्य०)*१. मल्लयुद्ध। २. बाहु युद्ध। ३.आमने-सामने का युद्ध। ४.लड़ाई। बाथमबाथ। ५. सहकार। सहयोग।

दोधक-*(न०)* १. एक छंद। २ दोहा छंद।

दोधारो-*(वि०)* दो धार वाला। *(न०)* दुधारी तलवार।

दोनूं-*(वि०)* दोनों। उभय।

दोनो-*(न०)* १. लांछन। कलंक। बजो। २. अपकीर्ति। कुजस।

दोपट-*(वि०)* दुहरा। दुपट।

दोपटो-*(वि०)* वस्त्र के दो पट लंबे सीए हुए। *(न०)* दो पट वाला वस्त्र। दोवटी।

दोपारो-*(न०)* दुपहर में किया जाने वाला अल्पाहार। दूसरे पहर का जलपान।

दोब-*(ना०)* दूर्वा।

दोभा-*(वि०)* १. वर्णसंकर। २. दो भांति का।

दोमज-*(न०)* युद्ध।

दोमळा-*(न०)* एक छंद।

दोय-*(वि०)* दो। *(न०)* दो की संख्या।

दोयण-*(न०)* १. शत्रु। दुश्मन। २. खल। दुर्जन।

दोर-*(ना०)* डोर। दे० दोर।

दोरप-*(ना०)* १. कठिनता। २. कष्ट। तकलीफ। संकट।

दोरम-दे० दोरप।

दोराई-दे० दोरप। ('सोराई' का उलटा)।

दोरिम-दे० दोरप।

दोळां-दे० दोळी।

दोळी-*(वि०)* १. चारों ओर। आजूबाजू। २. पीछे लगना। पीछा।

दोलू-*(न०)* दांत।

दोळूं-दे० दोळी।

दोळै-*(क्रि०वि०)* १. पीछे। आजूबाजू। चारों ओर। ३. पीछे लगा हुआ।

दोळो-*(अव्य०)* १. चारों ओर। आजूबाजू। इधर उधर। २. पीछा।

दोवटी-*(ना०)* १. दो पट्टी वाली मोटी धोती। २. दो पट्टी वाला ओढ़ने का वस्त्र। ३. कंधे पर रखने का वस्त्र। दुपट्टी। दोटी। डुपटी।

दोवड़-*(ना०)* १. दुहरा सिला हुआ ठंड में ओढ़ने का एक वस्त्र। दो पट्टी का वस्त्र। ३. कपड़े की दो तह। दो तह। *(वि०)* दुगुना।

दोवड़-तेवड़-*(वि०)* दुगुना-तिगुना।

दोवड़ो-*(वि०)* १. दुहरा। दोहरा। २. डबल। दुगुना। ३. दोनों ओर का।

दो-वीसी-*(वि०)* चालीस।

दोष-*(न०)* १. दोष। अपराध। २. भूल। ३. लांछन। ४. पाप। ५. आरोप। ६.

अभियोग । ७. कमी । खरावी । ८. साहित्य के गुणों में कमी । काव्य । दोष ।
दोपारोपण-(न०) किसी के ऊपर दोष मँडने का भाव ।
दोस-दे० दोष ।
दोसण-दे० दूसण ।
दोसदार-(न०) दोस्त । मित्र ।
दोसदारी-(ना०) दोस्ती । मित्रता ।
दोसूती-(वि०) दो सूत का बुना । डवल धागों से वुना हुआ (कपड़ा) । दो सूत वाला ।
दोस्त-(न०) मित्र । साथी ।
दोस्ती-(ना०) मित्रता ।
दोह-दे० दोस ।
दोहग-(न०) १. दुर्भाग्य । २. दुख । कष्ट । ३. संकट ।
दोहणकी-दे० दोहणी ।
दोहणियो-(न०) दुहने का पात्र । दोहनी । (वि०) दुहने वाला ।
दोहणी-(ना०) दूध के दोहने का पात्र । दुग्ध पात्र । दोहनी । दोणी ।
दोहणो-(क्रि०) १. दुहना । दूहणो । २. किसी वस्तु का सार भाग निचोड़ देना ।
दोहराई-(ना०) तकलीफ । कष्ट । दुख । दोराई ।
दोहरी-(वि०) १. दुखिता । २. दुखियारी । दुखी । (ना०) तकलीफ । कष्ट । (क्रि०वि०) १. दुख से । २. कठिनता से । ३. तकलीफ में ।
दोहरो-(न०) १. वे-आराम । तकलीफ । कष्ट । २. एक छंद । दोहा । (वि०) दुखी । (क्रि०वि०) १. कठिनता से । २. तकलीफ में ।
दोहलो-(न०) दोहा छंद । दे० दोहिलो ।
दोहा-दे० दूहो ।
दोहितरी-दे० दोहीती ।
दोहितरो-दे० दोहीतो ।
दोहिलो-(वि०) १. कठिन । दुस्साध्य । २. दुखी । (अव्य०) कठिनता से । दे० दुहेलो ।
दोहीती-(ना०) पुत्री की पुत्री । दोहित्री ।
दोहीतो-(न०) वेटी का वेटा । दोहित्र । दुहता ।
दोहेलो-दे० दुहेलो ।
दौड़-(ना०) १. दौड़ने की क्रिया । दौड़ । २. हमला । आक्रमण । धावा । ३. पहुँच । शक्ति । ४. प्रयत्न । ५. लूट ।
दौड़णो-(क्रि०) १. दौड़ना । भागना । २. पलायन होना । ३. हमला करना । धावा करना । ४. लूटना । डाका डालना । ५. प्रयत्न करना ।
दौड़भाग-(ना०)१. दौड़ा-दौड़ी । २.प्रयत्न । कोशिश ।
दौड़ादौड़ी-(ना०) १. वार वार दौड़ना । २. दौड़धूप । भागदौड़ । ३. जल्दवाजी ।
दौड़ो-(न०) १. चक्कर । फेरा । भ्रमण । दौरा । २. आक्रमण । ३. अधिकारी का अपने अधिकार क्षेत्र में निरीक्षण के लिये जाना । दौरा । ४. समय समय पर होने वाले रोग का आक्रमण । दौरा । रोगावर्तन । ५. डाका ।
दौर-(न०) १. रोव । आतंक । २. प्रभाव । ३. वैभव के दिन । ४. भ्रमण । फेरा ।
दौलत-(ना०) १. दौलत । पूंजी । धन । २. जागीरी । ३. भाग्य । प्रारब्ध ।
दौलतखानो-(न०) घर । निवास स्थान ।
दौलत-छौळ-(वि०) १. जिसके पास दौलत लहरें ले रही हों । अपार धनवान । २. उदार । दातार ।
दौलतधारी-(वि०) धनवान ।
दौलतमंद-(वि०) धनवान ।
दौलतवान-(वि०) धनवान ।
द्यउ-(क्रि०) दियउ । दीजिये । दे ओ । (विनयार्थक)

द्याड़ो–*(न०)* दिवस । दिन ।
द्याणी–*(वि०)* दाहिनी । जीमणी ।
द्याणू–*(वि०)* दाहिना । जीमणो ।
द्याणो–*(वि०)* दाहिना । *(न०)* दाहिनी ओर । जीमणी कानी ।
द्यामणो–दे० दयामणो ।
द्युति–*(ना०)* कान्ति । तेज ।
द्युतिवंत–*(वि०)* १. कान्तिमान । सुंदर । २. प्रकाशमान ।
द्योराणी–दे० देराणी ।
द्यो–*(क्रि०)* १. देना । २. दीजिये ।
द्योस–*(न०)* दिवस । दिन ।
द्रग–*(न०)*१. दृग । नेत्र । २. दृष्टि । नजर ।
द्रजीत–*(न०)* इंद्रजीत । मेघनाद ।
द्रजोण–*(न०)* दुर्योधन ।
द्रढ–दे० दिढ ।
द्रढता–*(ना०)* दृढ़ता । मजबूती ।
द्रढाव–दे० दिढाव ।
द्रढेल–*(वि०)* दृढ । दृढ़तावाला ।
द्रप–*(न०)* १. दर्प । गर्व । २. आंतक । रोब । ३. उद्दंडता ।
द्रव–*(न०)* द्रव्य । धन ।
द्रव-उभेळ–दे० दौलत-छोळ ।
द्रब-छौळ–दे० दौलत छोळ ।
द्रम–*(न०)* १. वृक्ष । द्रुम । २. मरुस्थल । मरुप्रदेश । ३. प्रचंड पवन । ४. वायु वेग । ५. एक प्राचीन सिक्का । द्रम्म ।
द्रमंक–*(न०)* १. धमाका । २. गर्जन । ३. ढोलक का शब्द ।
द्रव–*(न०)* १. द्रव्य । २. किसी वस्तु का तरल रूपान्तर । रस । द्रव पदार्थों के तीन रूप—ठोस, द्रव और गैस में से एक । तरल पदार्थ ।
द्रवणो–*(क्रि०)* १. पिघलना । २. झरना । चूना । ३. गद्गद् होना ।
द्रव्य–*(न०)* १. धन । पैसा । नाणो । २. पदार्थ । वस्तु ।
द्रस्टांत–दे० दृष्टान्त ।
द्रह–*(न०)* बहुत गहरे पानी का खड्डा । ह्रद । २. खड्डा । ३. बिना बँधा हुआ कुँआ ।
द्रहवाट–दे० दहवाट ।
द्रंग–*(न०)* १. दुर्ग । किला । २. गाँव । ३. टीबा । धोरो । ४. खड्डा । ५. देश । ६. नगर ।
द्रंगड़ो–दे० द्रंग ।
द्राख–*(ना०)* दाख । द्राक्षा ।
द्रिठ–दे० दीठ ।
द्रिठबंध–*(वि०)* दृष्टिबंध ।
द्रीठ–*(ना०)* १. दृष्टि । नजर । २. आँख । नेत्र ।
द्रुग–*(न०)* किला । दुर्ग । गढ़ ।
द्रुत–*(वि०)* १. तेज । तीव्र । २. शीघ्र ।
द्रुमची–दे० दुमची ।
द्रुंग–*(न०)*१. दुर्ग । किला । गढ । २.गाँव । ३. टीबा । धोरो ।
द्रू–*(न०)* १. पर्वत । भाखर । २. जंगल । ३. लकड़ी । ४. सोना । स्वर्ण ।
द्रेंठ–*(ना०)* १. दृष्टि । नजर । २. आँख ।
द्रेंठि–दे० द्रेंठ ।
द्रोण–*(न०)* १. पर्वत । २. पांडव-कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य । ३. एक माप । ४. दोना । ५. रथ ।
द्रोपता–*(ना०)* द्रौपदी ।
द्रोपाँ–*(ना०)* द्रौपदी ।
द्रोब–*(ना०)* दूब । दूर्वा ।
द्रोह–*(न०)* १. ईर्ष्या । द्वेष । २. बैर । शत्रुता । ३. कपट । दगा । ४. विरोध । ५. बगावत ।
द्रोहणो–*(क्रि०)* १. द्रोह करना । २. विरोध करना । ३. बगावत करना ।
द्रोही–*(वि०)* १. द्रोह करने वाला । २. शत्रु । ३.दगाखोर । कपटी । ४.विरोधी । ५. बगावती ।

द्रौपदी–*(ना०)* राजा द्रुपद की पुत्री । पांडवों की पत्नी ।

द्वंद–*(न०)* १. झगड़ा । द्वन्द्व । २. द्वन्द्व युद्ध । ३. दो का जोड़ा । द्वन्द्व । ४. एक समास । (व्या०) ।

द्वात–*(ना०)* दवात । मसिपात्र । मजिया-सणो ।

द्वादशी–*(ना०)* बारस तिथि । बारस ।

द्वादशो–*(न०)* मृतक का बारहवाँ । बारियो । दुग्रादसो ।

द्वापर–*(न०)* चार युगों में से तीसरा युग ।

द्वार–*(न०)* दरवाजा । बारणो ।

द्वारका–*(न०)* १. द्वारिका नगरी । २. चार प्रधान तीर्थों में से एक । सागर तट पर स्थित सौराष्ट्र का प्रख्यात तीर्थ-क्षेत्र ।

द्वारकाधीश–*(न०)* श्रीकृष्ण ।

द्वारकानाथ–*(न०)* श्रीकृष्ण ।

द्वारपाळ–*(न०)*द्वार पर रहने वाला रक्षक । द्वार पाल । डोढीदार ।

द्वारा–*(ग्रव्य०)* जरिया । मारफत । से ।

द्वार रोकाई–दे० बार रोकाई ।

द्वारो–*(न०)* १. मंदिर । २. साधु-संतों का स्थान । यथा—रामद्वारो ।

द्वाळो–दे० दुग्राळो ।

द्विज–*(वि०)*१.जन्म ग्रौर यज्ञोपवीतधारण—इन दो संस्कारों द्वारा उत्पन्न । दो बार जन्मा हुग्रा । *(न०)* १. ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य । त्रिवर्ण । २. ब्राह्मण । ३. पक्षी । ४. ग्रंडज । ५. दाँत ।

द्विदळ–*(न०)* मूंग, मोठ, चना ग्रादि कठोळ धान्य । द्विदल-धान्य ।

द्विरद–*(न०)* हाथी । दुरद ।

द्विवेदी–*(न०)* ब्राह्मणों की एक ग्रल्ल ।

द्वेष–*(न०)* १. ईर्ष्या । २. वैर । शत्रुता । ३. जलन ।

द्वैरद–*(न०)* हाथी । द्विरद ।

ध

ध–संस्कृत परिवार की राजस्थानी भाषा की वर्णमाला का उन्नीसवां ग्रौर तवर्ग का चौथा व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण स्थान दंतमूल है ।

धइयो–*(न०)* १. विपत्ति । संकट । ग्राफत । २. कष्ट । संताप । ३. टंटा-झगड़ा । कलह ।

धईड़ो–*(न०)* किसी चिंता, विपत्ति ग्रादि की ग्रचानक सूचना । २. ऐसी झूठी सूचना ।

धक–*(ना०)* १. भय, शोक ग्रादि के कारण हृदय की गति तेज होने का शब्द । २. जोश । ३. क्रोध । ४. सहसा । ५. धक्का । *(क्रि०वि)* एक दम । सहसा । ग्रचानक ।

धकचाळ–*(ना०)* १. युद्ध । लड़ाई । २. उपद्रव ।

धकचाळो–दे० धकचाळ ।

धकणो–*(क्रि०)* १. चलना । निर्वाह होना । २. निभाना ।

धकधूणणो–*(क्रि०)* जोर से हिलना । झकझोरना ।

धकपंख–*(न०)* गरुड़ ।

धकलो ग्राँक–दे० चढतो ग्राँक ।

धकाणो–*(क्रि०)* १. निर्वाह करना । चलना । २. निभाना । ३. धक्का मार कर चलना । ४. खदेड़ना । ५. पीछे हटाना । ६. पराजित करना ।

धकार–*(न०)* 'ध' वर्ण । धधो । धद्धो ।

धकावणो–दे० धकाणो ।

धकीजणो-(क्रि०) १. धकाया जाना। धकेला जाना। २. धकना। ३. भिगाना।

धकेलणो-(क्रि०) १. धकेलना। धक्का देना। ठेलना। २. किसी काम या बात को लापरवाही से यों‌ही आगे को ठेलते जाना।

धकेलो-(न०) धक्का। हड़ेलो। हड़सेलो।

धकै-(अव्य०) १. सामने। आगे। समक्ष। २. उपस्थिति में। ३. मुकाबले में। ४. भविष्य मे। ५. अग्रस्थान में। आगे। अगाड़ी। ६. पूर्व। पहिले।

धको-दे० धक्को।

धक्कमधक्का-(न०) १. धक्कमधक्का। धक्काधक्की। २. भीड़।

धक्काधक्को-दे० धक्कमधक्का।

धक्काधूम-(ना०) १. धक्कमधक्का। ठेला-ठेली। २. ऊधम।

धक्कामुक्की-(ना०) धक्का देना और मुक्का मारना। परस्पर धकेलने और मुक्के मारने की क्रिया।

धक्को-(न०) १. धक्का। टक्कर। २. ठोकर। ३. आक्रमण। ४. हानि। घाटा। ५. चक्कर। फेरा। ६. हानि, शोक, दुख आदि का आघात।

धख-(ना०) १. अग्नि। आग। २. क्रोध। ३. जोश।

धखणो-(क्रि०) १. सुलगना। दहकना। २. क्रोधित होना।

धखपंख-(न०) गरुड़। धकपंख।

धखपंखधज-(न०) १. श्री विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

धगड़-(न०) मुसलमान। म्लेच्छ।

धगड़ी-(ना०) कुलटा स्त्री। (वि०) कुलटा।

धगड़ो-(न०) १. जार। लंपट। परस्त्री। लंपट। २. उपपति। ३. मुसलमान

धगन-(ना०) १. अग्नि। २. ज्वाला। ३. जलन। धुखण।

धगरा-(न०) उत्साह। लगन। जोश।

धगार-(न०) १. आकाश। २. जोश। उत्साह।

धचकणो-(क्रि०) १. जमीन के किसी भाग का नीचे धँस जाना। २. धक्का लगना। ३. दलदल में फँसना।

धचकाणो-(क्रि०) १. फँसाना। धँसाना। २. धक्का लगाना।

धचकावणो-दे० धचकाणो।

धचको-(न०) १. झटका। धक्का। टक्कर।

धज-(ना०) १. ध्वजा। धजा। २. नोक। ३. भाला। ४. अग्रभाग। ५. घोड़ा। (वि०) १. अति तीक्ष्ण। २. दृढ़। ३. श्रेष्ठ। ४. जोशीला। ५. अग्रणी।

धजडंड-(न०) १. ध्वजडंड। धजा का डंडा। २. भाला।

धजणी-(न०) १. सेना। फौज। ध्वजिनी। २. घोड़ी।

धजनी-दे० धजणी।

धजपंख-(न०) गरुड़।

धजबंध-(न०) १. राजा। २. घोड़ा। ३. देवालय। (वि०) १. वीर। योद्धा। २. विश्वस्त। ३. धजाधारी। ४. प्रामाणिक। ५. अवक्र। सीधा।

धजबंधी-(ना०) १. पार्वती। दुर्गा। २. घोड़ी। ३. राजा।

धजर-(न०) १. आन। २. मरोड़। ३. गर्व। ४. प्रतिष्ठा। ५. घोड़ा। ६. भाला। ७. तलवार। ८. कटारी। ९. धजा। १०. मंदिर। ११. किला। १२. आकाश। (वि०) १. वीर। २. उच्च-मना। ३. श्रेष्ठ। ४. मनोहर।

धजरंग-(वि०) नोकदार। नुकीला।

धजराज-(न०) १. घोड़ा। २. राजा।

धजराळ–(न०) १. घोड़ा । २. राजा । ३. मंदिर । ४. दुर्ग । (वि०) धजाधारी । धजारो ।

धजरेल–(वि०) १. श्रेष्ठ । २. वीर । ३. खड्गधारी । ४. धजाधारी । (न०) घोड़ा ।

धजवड़–(न०) १. तलवार । २. यश । कीर्ति । ३. मान । प्रतिष्ठा ।

धजवड़हथो–(वि०) १. खड़गधारी । २. वीर । योद्धा ।

धजवर–(न०) १. ध्वजधारियों में श्रेष्ठ । २. राजा । ३. शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ । ४. शस्त्रधारी । दे० धजवड़ ।

धजवी–(वि०) १. शस्त्रधारी । २. धजाधारी । (ना०) घोड़ी ।

धजा–(ना०) ध्वजा । पताका ।

धजाडंड- दे० ध्वजदंड ।

धजाणी–दे० धजणी ।

धजाबंध–(वि०) १. जिसके ऊपर ध्वजा फहरा रही हो । धजावाला । (न०) १. देवालय । मंदिर । २. देवी । ३. देवता ।

धजार–(न०) १. आकाश । २. भाला ।

धजारो–(वि०) १. श्रेष्ठ । २. अग्रणी । ३. मुखिया । ४. धजावाला । ५. भालाधारी ।

धजाळ–(वि०) १. धजाधारी । २. भालाधारी । भाला रखने वाला ।

धजाळी–(ना०) देवी । (वि०) ध्वजावाली ।

धजाळो–दे० धजाळ ।

धज्जी–(ना०) १. कागज, कपड़े आदि की लंबी और पतली पट्टी । २. बदनामी । अपकीर्ति । कुजस ।

धट–(वि०) १. श्वेत । सफेद । २. स्वच्छ । निर्मल ।

धट-चानणी–(वि०) बिना बादलों के निर्मल चंद्र प्रकाशवाली (रात्रि) । (ना०) निर्मल चाँदनी । ज्योत्सना ।

धट-चानणो–(न०) १. तेज प्रकाश । २. श्वेत प्रकाश । ३. चंद्रमा का निर्मल प्रकाश । ज्योत्सना ।

धड़–(न०) १. गले के नीचे का भाग । २. बिना सिर का शरीर । कबंध । ३. शरीर । ४. पेड़ का तना । ५. सेना । ६. झुंड । ७. खंड । भाग ।

धड़क–(ना०) १. धड़कना । हृदय की कंपन । २. डर । भय ।

धड़कण–(ना०) हृदय का स्पन्दन ।

धड़कणो–(क्रि०) १. हृदय का धक-धक करना । धड़कना । २. कांपना । ३. भयभीत होना ।

धड़को–(न०) १. भय । डर । २. दिल की धड़कन । ३. झटका । धड़का । धक्का ।

धड़-खणती–(ना०) तलवार ।

धड़च–(ना०) तलवार । (न०) वस्त्र को फाड़ने का शब्द ।

धड़चणो–(क्रि०) १. चीरना । फाड़ना । २. संहार करना । नाश करना ।

धड़चाळो–(वि०) फटा हुआ ।

धड़चो–(न०) १. टुकड़ा । खंड । २. छिन्न अंश ।

धड़छ–(न०) टुकड़ा ।

धड़धड़ाट–(न०) १. धड़धड़ की ध्वनि । २. हृदय की धड़कन ।

धड़धड़ो–(न०)१. एक प्रकार की खड़िया । जिप्सम । धावड़ो । २. धड़कन ।

धड़वाई-(ना०) १. नाज तोलने का काम । २. नाज तोलने वाले से लिया जाने वाला कर ।

धड़हड़णो–(क्रि०) १. धड़ धड़ करना । २. २. गर्जना । गाजणो । ३. कांपना । ४. युद्ध करना । लड़ना ।

धड़ंग–(वि०) १. नंगा । २. मर्यादा रहित । निर्लज्ज । ३. मुँह फट ।

धड़ाकाबंध-(अव्य०) १. धड़ाका के साथ। २. एक दम। एक झपाटे में।

धड़ाको-(न०)किसी वस्तु के जोर से गिरने या फटने से उत्पन्न शब्द। धड़ाका।

धड़ाधड़-(अव्य०)१. लगातार। बिना रुके। २. एक दूसरे के पीछे। (न०) 'धड़धड़' शब्द।

धड़ावंद-(वि०) सम्पूर्ण। सेग।

धड़ाबंदी-(ना०) दलबंदी।

धड़ाम-(न०) ऊपर से एक बारगी गिरने का शब्द।

धड़ियो-(न०) १. नाज तोलने वाला। फड़ियो। २. पासंग।

धड़ी-(ना०) १. किसी वस्तु का दस सेर का वजन। २. एक बार में दस सेर के बाट से तोला जाना। ३. एक बार में दस सेर तोली हुई वस्तु। (नोट-धड़ी का मान कहीं पांच सेर का भी होता है)। ४. कान का एक आभूषण। ५. एक बार का तोल। एक तोल। एक वजन।

धड़ी करणो-(मुहा०) १. इकट्ठा करना। २. चुनना। ३. तोलना।

धड़ूकणो-(क्रि०)१. साँड़ का जोर से शब्द करना। तांडना। २. सिंह का गरजन करना। दहाड़ना। ३. बादल का गरजना।

धड़ो-(न०) १. समूह। २. ढेर। राशि। ३. कई संख्याओं का योग। जोड़। वह संख्या जो कई संख्याओं को जोड़ने से निकले। का। ४.किसी जाति या दल को दो मतों में बँटा हुआ एक विभाग। पक्ष। तड़। ६. विचार। ७. पसंग। पासंग। ८. ढेला या कंकड़ आदि से दिया हुआ खाली पात्र का वह समान तोल जिसमें किसी वस्तु को डालकर वस्तु का निश्चित तोल करना होता है। पात्र का समतोलन। ९ सेना। १०. भीड़।

धड़ो करणो-(मुहा०) १. इकट्ठा करना। २. चुनना। ३. किसी बरतन में किसी वस्तु को डाल कर तोलने के पहिले खाली बरतन का तोल करना। खाली बरतन का सतुलन करना। ४. विचार बांधना। ५. जोड़ना।

धण-(ना०) १. पत्नी। स्त्री। २. गायों का समूह। धन।

धणियाणी-(ना०) १. पत्नी। २. गृहस्वामिनी। ३. स्वामिनी। मालकिन। ४. देवी। शक्ति।

धणियाप-(न०) १. स्वामित्व। २. अधिकार। ३. कृपा।

धणियापो-दे० धणियाप।

धणियाँ-(सर्व०) आप। दे० धणी। (न०) १, २.

धणी-(सर्व०) आप, तुम और वे के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला आदर सूचक प्रयोग। आप। तुम। (न०) १. पति। खाविंद। स्वामी। २. स्वामी। मालिक। ३. प्रभु। ईश्वर। ४. धनुष। ५. धनुष की डोरी। प्रत्यंचा। (स्त्री० धण और धणियाणी।)

धणी जोग-(वि०) १. खरीददार को ही मिले ऐसी हुंडी। २. वह व्यक्ति जिसके नाम की हुंडी लिखी हुई हो। (न०) हुंडी के रुपये पाने का अधिकारी व्यक्ति। यथा-'हुंडी सिकार नै धणी जोग रुपया दे दीजो।'

धणी-धोरी-(न०)१. स्वामी एवं मुखिया। २. रक्षक। ३. कर्ता-धर्त्ता। ४. वारिस। उत्तराधिकारी। दायद।

धणीवार-(अव्य०)१. प्रति व्यक्ति। २. जो जिसका हकदार या धनी हो।

धणीव्रत-दे० धणियाप।

धत–(ना०) १. जिद पकड़ने की आदत। २. हठ। दुराग्रह। ३. बुरी आदत। कुटेव। (अव्य०) दुत्कारने का उद्‌गार। तुच्छकार का शब्द।

धतूरो–(न०) १. एक विषैला पौधा। धतूरा। २. एक लोक गीत।

धत्त–(अव्य०) १. दुत्कारने का शब्द। २. दुत्कार। डाँट। फटकार। ३. हाथी को वश में करने या चलाने के लिए उच्चारण किया जाने वाला शब्द। धत्त-धत्त।

धत्त-धत्त–(अव्य०) हाथी को बिठाने, चलाने या वश में करने का शब्द।

धत्ती–(वि०) दुराग्रही।

धत्तो–(न०) १. झूठा आश्वासन। धत्ता। जुल। झाँसा। २. धोखा।

धधक–(ना०) १. अग्नि। २. ज्वाला। ३. अग्नि की उग्रज्वाला की भड़कन। अग्नि का सहसा भभक उठना। ४. उग्र क्रोध। क्रोधाग्नि। ५. दुर्गंध। बदबू।

धधकणो–(क्रि०) १. अग्नि की ज्वाला उठना। २. क्रोध करना। ३. बदबू देना।

धध्धो–(न०) 'ध' अक्षर।

धन–(न०) १. द्रव्य। माल। २. संपत्ति। जायदाद। ३. मूलपूंजी। ४. गाय, भैंस आदि। ५. गायों का टोला। ६ धन्य। ७. गणित में जोड़ का (+) चिन्ह। प्लस।

धनक–(न०) १. स्त्रियों का एक रंगीन ओढ़ना। २. धनुप।

धनगैलो–(वि०) अपने धन का अभिमानी। धनमदान्ध। धनांद।

धनतेरस–(ना०)१. कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। २. दीपावली से संबंधित कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी का उत्सव या त्योहार। ३. धन की पूजा का दिन।

धनधान–(न०) १. धन और धान्य। २. समृद्धि।

धनधाम–(न०) रुपया-पैसा और घरबार। समृद्धि। धन और मकान।

धनभिळणो–(मुहा०) गाय, भैंस आदि का गर्भ धारण करना।

धनराज–(न०) कुबेर।

धनरेखा–(ना०)धन बताने वाली हस्तरेखा।

धनवंत–(वि०) धनवान। धनी। मालदार।

धनवंतरी–(न०) देवताओं के वैद्य। धनवन्तरी।

धनवान–(वि०) धनवंत। धनी। अमीर। धनाढ्य।

धनहीन–(वि०) निर्धन। गरीब।

धनंक–(न०) धनुप।

धनंजय–(न०) पांडु पुत्र अर्जुन।

धनंतर-(न०) धन्वन्तरि। (वि०) १. सत्यवक्ता। प्रामाणिक। २. बहुत बड़ा जानकार। ३. बड़ा धनवान। श्रीमंत।

धनंद–(न०) कुबेर।

धनाढ्य–(वि०)धनी। धनवान। मालदार।

धनावंशी–(न०) रामानंदी साधुओं का एक भेद, जो धना भक्त की शिष्य परम्परा में कहा जाता है।

धनासरी–(ना०) एक रागिनी।

धनिक–(वि०) १. ऋणदाता। २. धनी। अमीर। धनवान।

धनिक नाम–(अव्य०) ऋणी की ओर से ऋणदाता को लिखकर दिये जाने वाले ऋण पत्र (दस्तावेज, खत) में ऋणदाता का परिचायक संकेत जो उसके नाम के पहले उसकी हैसियत के रूप में लिखा हुआ रहता है। ऋणपत्र में ऋणदाता (वोहरे) के नाम का परिचय कराने वाला एक पारिभाषिक पद। जैसे–धनिक नाम तिलोकचंद फूलचंदाणी वास जोधपुर आगै आसामी (ऋणी) जाट किरतो वीरमाणी रहवासी गाम वासणी रो

तिण वारे गिरंता रु० १००) मवारै रुपिया सो पूरा लेहणा। रुपिया फिरता री छोकरी धनजी रै ब्याव सारू हाथ उधारा दीना छे। तिण रो ब्याज......।

धनी–(वि०) धनवान। मालदार।

धनुख–दे० धनुष।

धनुभ्रत–दे० धनुषधारी।

धनुष–(न०) १ चाप। धनुष। २. इंद्र-धनुष। ३. चार हाथ का एक माप।

धनुषधारी–(न०) १. श्री रामचंद्र। २. अर्जुन। (वि०) धनुष धारण करने वाला। बाणावळी। कमनैत।

धनुस–दे० धनुष।

धनेस–(न०) कुबेर। धनेश।

धनो भगत–(न०) जाट जाति का एक प्रसिद्ध भक्त। धना भक्त।

धन्न दे० धन्य।

धन्नासेठ–(न०) धनवान सेठ।

धन्नो–(न०) जाट जाति का एक भक्त। धनो भगत। (वि०)धनवाला। धनवान।

धन्य–(अव्य०) धन्य। शाबास। धन। (वि०) १. कृतार्थ। २. प्रशंसनीय। ३. भाग्यशाली। ४. पुण्यात्मा। पुण्यवान।

धन्यवाद–(न०)शाबासी। साधुवाद। वाह-वाह। शुक्रिया।

धन्वदेश–(न०) मारवाड़। मरुदेश।

धनुवंतरी–(न०) १. देवताओं के वैद्य। २. आर्य चिकित्सा शास्त्र के तज्ञ एवं प्रणेता।

धन्वी–(न०) धनुंधर।

धपटणो–(क्रि०)१. खूब खाना या खिलाना। २. अघा जाना। ३. दौड़ना। भागना। ४. खोसना। लूटना। ५. मारना। पीटना।

धपटमो–(वि०) १. अत्यधिक। खूब। २. पूर्ण। धपाऊ। ४. भरपेट। धपाऊ। धापमो।

धपळको–(न०) अग्नि ज्वाला। आग की लपट।

धपाऊ–(वि०) १. अत्यधिक। खूब। काम व्यवसाय आदि। २. भरपेट। धापमो। ३ संतोष कारक।

धपाणो–(क्रि०) १. पेटभर खिलाना। अघाना। तृप्त करना। २. हैरान करना। परेशान करना। ३. संतुष्ट करना। ४. खूब देना।

धपावणो–दे० धपाणों।

धफणो–(क्रि०) हांफना।

धबकणो–(क्रि०)१ धड़कना। २. धब-धब शब्द होना।

धबकारो–(न०)धड़कन। धड़का। धड़को।

धबड़को–(न०) धब-धब का शब्द।

धबसो–(न०) १. दोनों हथेलियों को मिला कर बनाई हुई अंजलि। धोबो। दे० धोबो। २. धबसो में समा जाये उतना पदार्थ। ३. अंजली।

धबाक–(ना०) कुदान। छलांग। फलांग।

धबाको–(न०) १. कूदने का शब्द। २. कुदान। छलांग। फलांग।

धबोड़णो–(क्रि०) १. प्रहार करना। २. मारना। पीटना। ठोकणो।

धबोधब–(अव्य०) १. ऊपरा-ऊपरी। २. झटपट। शीघ्रता से।

धब्बो–(न०) १. दाग। धब्बा। दागो। २. कलंक। लांछन।

धमक–(ना०) १. पाँवों की आहट। २. भारी वस्तु के गिरने की आवाज। ३. तोप बंदूक की आवाज। ४. वेग। जोश।

धमकणो–(क्रि०) १. अचानक आ जाना। वेग से आ पहुँचना। २. धम धम शब्द होना। ३. ढोल आदि का बजना।

धमकाणो–दे० धमकावणो।

धमको–दे० धमाको।

धमकावणो-(क्रि०)१. धमकाना। डराना। २. डाँटना। ३. उपालंभ देना।
धमकी-(ना०)घुड़की। धमकाने की क्रिया। डाँट। फटकार।
धमगजर-दे० धमजगर।
धमगज्र-दे० धमजगर।
धमचक-(न०) १. ऊधम। शरारत। २. उपद्रव। ३. युद्ध। लड़ाई।
धमचाळ-(ना०) १. युद्ध। २. लड़ाई। धमचाळ।
धमजगर-(न०)१.युद्ध। लड़ाई। २. शोर-गुल। ३. उपद्रव। ४. ऊपरा-ऊपरी तोपों के छूटने का शब्द। (वि०) धुएँ से भरा। धुआंधार।
धमजर-दे० धमजगर।
धमण-(ना०) १. लुहार की आरण (भट्टी) को फूंकने का बकरी के चमड़े का बना एक उपकरण धमनी। धौंकनी। भाथी। २. अग्नि। ३. ज्वाला। ४. जलन।
धमणि-(ना०) नाड़ी। नब्ज। नाड़।
धमणी-(ना०) आग में फूंक मारने की नली। भूंगळी।
धमणो-(क्रि०) १. धौंकनी चलाना। धमना। धौंकना। २. आग को फूंकना। ३. मारना। पीटना। ठोकणो।
धमधमो-दे० दमदमो।
धमन-दे० धमण सं० २, ३, ४.
धमरोळ-(ना०) १. अधिकता। बहुतायत। २. ऊधम। उपद्रव। ३. मारा-मारी। ४. संहार। नाश। ५. खेल-कूद।
धमरोळणो-(क्रि०) १. हिलाना। २. प्रहार करना। ३. नाश करना। ४. मारना पीटना।
धमळ-दे० धवळ।
धमस-(ना०) १. धम-धम की ध्वनि। २. पदाघात। ३. मेले या उत्सव की भीड़-भाड़। ४. बहुत भीड़। भारी भीड़। ५. ऊधम। शोरगुल।
धमंको-(न०) १. किसी वस्तु के गिरने का शब्द। धमाका। २. भाले के प्रहार का शब्द।
धमंगळ-दे० दमंगळ।
धमाको-(न०) १. एक प्रकार की छोटी बंदूक। २. बंदूक तोप आदि के दगने का शब्द। ३. किसी भारी वस्तु के गिरने की आवाज।
धमागळ-(न०) १. युद्ध। २. उपद्रव।
धमाधम-(न०) १. 'धम-धम' शब्द। २. ढोल आदि बजने का शब्द। ३. ऊधम। उत्पात।
धमाळ-(ना०)१.होली पर गाई जाने वाली एक राग। धमार। २. डिंगल का एक छंद। ३. उत्पात। शैतानी। ४. उछल-कूद।
धमासो-(न०) एक घास।
धमीड़-(न०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. मार। पिटाई। ३. प्रहार।
धमीड़णो-(क्रि०) १. किसी भारी वस्तु को गिराना। २. मारना। पीटना। ३. प्रहार करना।
धमीड़ा लेणो-(मुहा०)१. छाती कूटना। २. दुखी होना। ३. पछतावा करना।
धमीड़ो-(न०) १. धमाका। दे० धमीड़।
धमेड़ो-दे० धमीड़ो।
धमोड़णो-दे० धमीड़णो।
धमोड़ो-(न०) १. भाले के प्रहार का शब्द। २. धमाका। धमीड़ो।
धमोळी-(ना०) १. सावन-भादौं की तीज तिथियों के अवसर पर स्त्रियों के द्वारा किये जाने वाले उपवास के निमित्त दूज की पिछली रात को स्नान-पूजा करके भोजन करने की प्रथा। २. धमोळी का विशिष्ट भोजन। ३ धमोळी के लिये संबंधियों द्वारा भेजी जाने वाली मिष्ठान

की सोगात । ४ स्त्रियों द्वारा धमोळो भोजन करने की क्रिया ।

धर-*(ना०)* १. पृथ्वी । धरा । २ संसार । ३. पर्वत । *(वि०)* १. धारण करने वाला । २. रक्षक । *(प्रत्य०)* 'धारक' अर्थ को व्यक्त करने वाला एक प्रत्यय । समासान्त शब्द । यथा—गजधर । धरणीधर आदि ।

धर-करवत-*(न०)* कंट ।

धरकार-*(न०)* धिक्कार ।

धरकोट-*(न०)* १. जमीन पर बना हुआ कोट या किला । २. लकड़ी, कंटक, वृक्ष आदि से बनाया हुआ बाड़ा । अहाता ।

धरण-*(ना०)* १. धरणि । पृथ्वी । २. नाभि । टुंडी । ३. नाभि की नस ।

धरणवै-*(न०)* धरणीपति ।

धरणियो-*(वि०)* धरने वाला । रखने वाला । धारण करने वाला ।

धरणी-*(ना०)*१.धरती । जमीन । २.संसार । भूमण्डल ।

धरणीधर-*(न०)* १. शेषनाग । २. पर्वत । ३. विष्णु । ४. कच्छप । ५. मारवाड़ की सीमा पर उत्तर गुजरात के ढेमा गांव में आया हुआ एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ-स्थान । (इसका प्राचीन नाम वाराहपुरी भी कहा जाता है । पैदल द्वारिका की यात्रा करने वाले उत्तर भारत के यात्रियों को धरणीधर की यात्रा भी करना जरूरी समझा जाता था) ।

धरणो-*(क्रि०)* १. रखना । २. पकड़ना । ३. संग्रह करना । ४. छोड़ना । ५. निश्चय करना । मन में विचार करना । ६. स्थिर करना । *(न०)* १. किसी के द्वारा माँग पूरी न होने पर उसके यहाँ अड कर बैठना । तागो । २. अनशन ।

धरती-*(ना०)* १. धरणी । जमीन । २. संसार । ३. राज्य । ४. देश ।

धरत्री-*(ना०)* धरित्री । पृथ्वी ।

धरथंभ-*(न०)* १. वीर । २. राजा ।

धरदीवो-*(न०)* देश का दीपक । मुकुटमणि ।

धरधी-*(ना०)* सीता । जानकी । धरसुता ।

धरधूधळ-*(न०)* रेगिस्तान । थळ ।

धरनी-दे० धरणी ।

धरपत-*(न०)* १. संतोष । तृप्ति । २. आरम्भ । शुरू । ३. धरापति । राजा ।

धरपति-*(न०)* राजा । धरापति ।

धरपाड़-*(वि०)* १. दूसरे की जमीन को खोसने वाला । दूसरों की भूमि या राज्य को छीनने वाला । २. दूसरों की धरती में लूट-खसोट करने वाला । आततायी ।

धरपुड़-*(न०)* पृथ्वीतल ।

धरवण-*(न०)* १. मिट्टी की छत । छत । डागळो । २. ढेर । ३. पिटाई ।

धरवणो-*(क्रि०)* १. धरवण बनाना । २. ठोंकना । पीटना । ३. पटकना । ४. ढेर लगाना ।

धरम-दे० धर्म ।

धरम-करम-दे० धर्म-कर्म ।

धरमकाम-दे० धर्म काम ।

धरम करणो-*(मुहा०)* १. पुण्य का काम करना । २. दान देना ।

धरमखाते-*(अव्य०)* पुण्यार्थ ।

धर मजलाँ धर कूचाँ-*(अव्य०)* राजस्थानी कहानियों में यात्रा (प्राय: सामूहिक कूच) के प्रसंग में बातपोश के द्वारा कहा जाने वाला एक संपुट (कथन) । पड़ाव-दर-पड़ाव ।

धरमजुध-*(न०)* कपट रहित और नियम-पूर्वक किया जाने वाला युद्ध । वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार के नियम का उल्लंघन नहीं हो । धर्मयुद्ध ।

धरमदुआर-दे० धर्म द्वार ।

की सोगात । ४ स्त्रियों द्वारा पगोळी भोजन करने की क्रिया ।

धर-(ना०) १. पृथ्वी । धरा । २ संसार । ३. पर्वत । (वि०) १. धारण करने वाला । २. रक्षक । (प्रत्य०) 'धारक' अर्थ को व्यक्त करने वाला एक प्रत्यय । समासान्त शब्द । यथा—गजधर । धरणीधर आदि ।

धर-करवत-(न०) ऊंट ।

धरकार-(न०) धिक्कार ।

धरकोट-(न०) १. जमीन पर बना हुआ कोट या किला । २. लाकड़ी, कंटक, वृक्ष आदि से बनाया हुआ बाड़ा । अहाता ।

धरण-(ना०) १. धरणि । पृथ्वी । २. नाभि । टुंडी । ३. नाभि की नस ।

धरणवै-(न०) धरणीपति ।

धरणियो-(वि०) धरने वाला । रखने वाला । धारण करने वाला ।

धरणी-(ना०)१.धरती । जमीन । २.संसार । भूमण्डल ।

धरणीधर-(न०) १. शेपनाग । २. पर्वत । ३. विष्णु । ४. कच्छप । ५. मारवाड़ की सीमा पर उत्तर गुजरात के ढेमा गांव में आया हुआ एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ-स्थान । (इसका प्राचीन नाम वाराहपुरी भी कहा जाता है । पैदल द्वारिका की यात्रा करने वाले उत्तर भारत के यात्रियों को धरणीधर की यात्रा भी करना जरूरी समझा जाता था) ।

धरणो-(क्रि०) १. रखना । २. पकड़ना । ३. संग्रह करना । ४. छोड़ना । ५. निश्चय करना । मन में विचार करना । ६. स्थिर करना । (न०) १. किसी के द्वारा माँग पूरी न होने पर उसके यहाँ अड कर बैठना । तागो । २. अनशन ।

धरती-(ना०) १. धरणी । जमीन । २. संसार । ३. राज्य । ४. देश ।

धरत्री-(ना०) धरित्री । पृथ्वी ।

धरथंभ-(न०) १. वीर । २. राजा ।

धरदीवो-(न०) देश का दीपक । मुकुटमणि ।

धरधी-(ना०) सीता । जानकी । धरसुता ।

धरधूवळ-(न०) रेगिस्तान । थळ ।

धरनी-दे० धरणी ।

धरपत-(न०) १. संतोष । तृप्ति । २. आरम्भ । शुरू । ३. धरापति । राजा ।

धरपति-(न०) राजा । धरापति ।

धरपाड़-(वि०) १. दूसरे की जमीन को खोसने वाला । दूसरों की भूमि या राज्य को छीनने वाला । २. दूसरों की धरती में लूट-खसोट करने वाला । आततायी ।

धरपुड़-(न०) पृथ्वीतल ।

धरवण-(न०) १. मिट्टी की छत । छत । डागळो । २. ढेर । ३. पिटाई ।

धरवणो-(क्रि०) १. धरवण बनाना । २. ठोंकना । पीटना । ३. पटकना । ४. ढेर लगाना ।

धरम-दे० धर्म ।

धरम-करम-दे० धर्म-कर्म ।

धरमकाम-दे० धर्म काम ।

धरम करणो-(मुहा०) १. पुण्य का काम करना । २. दान देना ।

धरमखाते-(अव्य०) पुण्यार्थ ।

धर मजलाँ धर कूचाँ-(अव्य०) राजस्थानी कहानियों में यात्रा (प्रायः सामूहिक कूच) के प्रसंग में बातपोश के द्वारा कहा जाने वाला एक संपुट (कथन) । पड़ाव-दर-पड़ाव ।

धरमजुध-(न०) कपट रहित और नियम-पूर्वक किया जाने वाला युद्ध । वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार के नियम का उल्लंघन नहीं हो । धर्मयुद्ध ।

धरमदुआर-दे० धर्म द्वार ।

धरहरणो-(क्रि०) १. धड़धड़ शब्द होना । धड़धड़ाना । २. जोर की वर्षा होना । ३. गर्जन होना । गरजना ।

धरहूंडो-दे० धरसूंडो ।

धरा-(ना०) १. पृथ्वी । २. देश । ३. राज्य । ४. संसार ।

धराऊ-(न०) उत्तर दिशा ।

धराणो-(क्रि०) १. रखवाना । २. थमाना । (न०) १. लेनदार का तकाजा या सख्ती । तलब । २. कर्ज । ऋण । देनदारी ।

धरातळ-(न०) पृथ्वीतल । सपाटो ।

धराधर-(न०) १. शेषनाग । २. पर्वत । ३. कच्छप । ४. विष्णु ।

धराधव-(न०) राजा ।

धराधिनाथ-(न०) राजा ।

धराधिप-(न०) राजा ।

धराधीश-(न०) राजा ।

धरापूर-(वि०) शुरू से आखिर तक । संपूर्ण । पूरा ।

धराभुज-(न०) पृथ्वी को भोगने वाला । राजा ।

धराळ-(न०)जुए की ओर बैलगाड़ी में अधिक भार के कारण होने वाला झुकाव । बैलगाड़ी में आगे की ओर होने वाला झुकाव । 'उलाळ' का उलटा । २. पृथ्वीतल । ३. प्राणी । जीवधारी ।

धराव-(न०) १. गाय, भैंस आदि पशु । २. पशुधन ।

धरावणो-(क्रि०) दे० धराणो ।

धराविधूंसण-(ना०) तलवार । (वि०) १. संसार का नाश करने वाला । २. देश द्रोही । ३. लुटेरा ।

धरावै-(न०) धरापति । राजा ।

धराशायी-(वि०) १. धरती पर सोया या गिरा हुआ । २. युद्ध में मारा गया ।

धरू-(न०) ध्रुव ।

धरूंडो-दे० धरसूंडो ।

धरेस-(न०) राजा । धरेश ।

धरो-(न०) १. पेट भर खाने का भाव । अघाना । तृप्ति । २. संतोष । सब्र ।

धरोड़-(ना०) धरोहर । थाती ।

धर्ता-(वि०) धारण करने वाला ।

धर्म-(न०) १. वेद विहित कर्म । २. लौकिक, सामाजिक और धार्मिक कर्त्तव्य । ३. गुण, लक्षण, कर्त्तव्य, नीति, सदाचार और जन्म मरण एवं ईश्वरादि गूढ़ तत्वों की विचारधाराओं का परम्परागत संप्रदाय । ४. दान-पुण्य । ५. कर्त्तव्य । ६. पंथ । मत । मजहब । ७. नीति । ८. ऋषियों अथवा शास्त्र ग्रंथों द्वारा प्रतिपादित ईश्वर, जीव, जीवन, लोक-परलोक इत्यादि से संबद्ध दर्शन एवं आचार-संहिता ।

धर्मकथा-(ना०) धर्म का बोध कराने वाली कथा । धार्मिक कथा ।

धर्म-कर्म-(न०) १. वह कर्म जिसका करना धर्मग्रंथों में आवश्यक कहा गया हो । २. शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित कर्म विधान । ३. धर्म और कर्म । ४. धार्मिक कृत्य । ५. धर्मपूर्वक की गई प्रतिज्ञा । ६. धर्मयुक्त काम ।

धर्म काम-(न०) पुण्य काम । भलाई का काम ।

धर्म चर्चा-(ना०) धर्म संबंधी बातचीत । धार्मिक चर्चा ।

धर्मद्वार-(न०) १. स्वर्ग । धर्मद्वार । २. सत्संग । ३. शरण । आश्रय ।

धर्मध्वज-दे० धरमधुज ।

धर्मपत्नी-(ना०) शास्त्रविधि से बनी हुई पत्नी । विवाहित पत्नी ।

धर्म पिता-(न०) पालक पिता ।

धर्मपुत्र-(न०) १. युधिष्ठिर । २. गोद लिया हुआ लड़का ।

धर्म भाई-(न०) धर्म की साक्षी से माना हुआ भाई ।

घुसना। २. पैठना। प्रवेश करना। ३. गड़ना। धँसना। भीतर घुसना।

धसमसणो–(क्रि०) १. ऊँचा-नीचा होना। २. डोलना।

धसळ–(ना०) १. युद्ध। २. सेना के चलने की आहट। ३. आक्रमण। ४. रोब। धाक। आतंक। ५. मस्ती। ६. डाँट। धमकी। ७. फूहड़पना। भद्दापना। ८. धक्का।

धसळक–(वि०) १. फूहड़पन। बेशऊरी। २. फूहड़। बेढंगी (चाल)। ३. धीमी। (चाल। गति) ४. फिसलने की क्रिया। ५. आक्रमण।

धसारो–(न०) १. भीड़भाड़। २. धक्का। हमला। भीड़ का धक्का। ३. हुल्ला। शोर। ४. अधिकता।

धंक–(न०) १. क्रोध। २. पराक्रम। ३. इच्छा। ४. निश्चय। ५. धक्का। टक्कर। ६. भय। डर।

धंख–(न०)१. ईर्ष्या। २. द्वेष। ३. शत्रुता। ४. क्रोध।

धंतरजी–(न०)१. बहुत बड़ा विद्वान पुरुष। २. जबरदस्त व्यक्ति। (व्यंग्य में) ३. धन्वन्तरि।

धंध–(न०) १. द्वन्द्व। उपद्रव। २ बिगाड़। नाश। ३. धुंधलापन। ४. अंधकार। ५. कुहरा।

धंधारथी–(वि०) धंधे में लगा रहने वाला। धंधे वाला।

धंधारथू–दे० धंधारथी।

धंधाळो–(वि०) धंधे वाला।

धंधूणणो–(क्रि०) हिलाना। डुलाना। कँपाना। हिलाणो। धंधोळणो।

धंधो–(न०) १ उद्यम। रोजगार। धंधा। काम। २. व्यापार। ३. प्रपंच।

धंधो-रोजगार–(न०) १. धंधा और रोजगार। २. कामकाज।

धंधोळणो–दे० धंधूणणो।

धंस–(न०) १. नाश। ध्वंस। २ युद्ध। ३. सेना।

धंसणो–(क्रि०)१. ध्वंस होना। नष्ट होना। २. ध्वंस करना। नाश करना। ३. गड़ना। भीतर घुसना। चुभना। ४. प्रवेश करना। पैठना।

धंसथळ–(न०)१. ध्वंस स्थल। खंडहर। २. युद्धभूमि। ३. छावनी।

धँसाणो–(क्रि०) १. ध्वंस करना। नष्ट करना। २. प्रवेश करना। पैठाना। ३. गड़ाना। चुभाना।

धँसावणो–दे० धँसाणो।

धा–(ना०) १. माता। जननी। २. बच्चे को दूध पिलाने और उसकी देख-रेख करने वाली स्त्री। धाय। धात्री। ३. सरस्वती। ४. पार्वती। ५. पृथ्वी। (अव्य०) ओर। तरफ। (प्रत्य०) प्रकार। तरह।

धाउकार–(न०) १. मरण। मृत्यु। २. मृत्यु-रुदन। ३. मृत्युसंदेश। पटकी। ४. ध्वंस। नाश।

धाउकार पड़ियो–(मुहा०) 'मृत्यु हो जाय' या 'मृत्यु होगई' इस आशय की अशुभ वाणी या गाली।

धाक–(ना०) १. डर। भय। २. अंकुश। ३. आतंक। रोब। ४. प्रभाव।

धाकल–दे० दाकल।

धाकलणो–(क्रि०) १. डराना। धमकाना। डाँटना। २. धाकल करके ऊंट, बैल आदि को चलाना। हाँकना।

धाका-धीको–(न०) ज्यों-त्यों करके किया जाने वाला गुजारा।

धाको–(न०)१. धाक। डर। २. आक्रमण। ३. गुजारा। निर्वाह।

धागड़ियो–(न०) १. लुटेरा। २. ठग। धूर्त। दे० दागड़ियो सं० १

धागड़ो–(न०) १. समूह। झुंड। २. लूटेरों का समूह।

धा-धा-(अनु०) १. ढोल नगाड़े आदि की ध्वनि । २. मार-पीट ।

धान-(न०) धान्य । अनाज ।

धानंक-(न०) धनुष ।

धानंकधारी-(न०) धनुर्धारी ।

धानंकी-(न०) धनुर्धारी ।

धानंख-(न०) धनुष ।

धानंखी-दे० धानंकी ।

धानंखी फूल-(न०) कामदेव ।

धानंतर-दे० धनंतर ।

धाप-(ना०) तृप्ति । संतोष ।

धापड़-दे० दाफड़ ।

धापणो-(क्रि०) १. भोजन से पेट भर जाना । अघाना । २. मन भर जाना । तृप्त होना ।

धापतो-(वि०) १. सुखी । २. सम्पन्न । ३. तृप्त । ४. अभिमानी ।

धापमो-(वि०) १. जितने से पेट भर जाय । जितना खाया जा सके । २. जितने से संतोष हो जाय । ३. चाहिये जितना । ४. जितना किया जा सके ।

धापियोड़ो-(वि०) १. अघाया हुआ । धापा हुआ । २. संपन्न ।

धापो-(न०) १. तृप्ति । तुष्टि । २. रिश्वत । घूस ।

धावळियाळ-(ना०) करनी देवी ।

धावळियो-(ना०) १. स्त्रियों का ऊनी ओढ़ना । २. ऊनी घावरा ।

धावळो-(न०) १. ऊनी ओढ़ना व घाघरा । २. मोटे वस्त्र का घाघरा । ३. कंबल । (ना० धावळी) ।

धा-भाई-(न०) दूध भाई ।

धाम-(न०) १. तीर्थ स्थान । २. देवालय । देवमंदिर । ३. चारों दिशाओं में स्थापित हिन्दू धर्म के चार बड़े तीर्थ-स्थान । यथा—१. उत्तर में बदरी-केदार । २. पूर्व में जगदीश । ३. दक्षिण में रामेश्वर और ४. पश्चिम में द्वारिका ।

धामण-(न०) १. एक प्रकार की घास । २. एक जाति का सर्प । ३. एक वृक्ष ।

धामधूम-(न०) १. उत्सव । समारोह । २. आनंद-उत्सव की तैयारी । ३. उमंग । उत्साह । ४. शोरगुल । हो हल्ला ।

धामा-दे० धामो नं० २. ३.

धामाजागर-दे० धमजगर ।

धामीणी-(ना०) १. गाय । २. कन्या दान के समय कन्या को दान में दी हुई गाय । ३ प्रथम गौना के समय दहेज के साथ दी जाने वाली गाय ।

धामो-(न०) १. एक पात्र । २. किसी के मन के उपरान्त उसके यहाँ टिके रहना । ३. लंबे समय तक पड़ाव डाले रहना ।

धाय-(ना०) १. माता । २. बच्चे को दूध पिलाने व उसकी देख भाल करने वाली स्त्री । ३. दफा । मरतबा । वार । (वि०) समान । बराबर । (अव्य०) दे० धाये ।

धाये-(अव्य०) ओर । दिशा । तरफ ।

धायो-(वि०) तृप्त ।

धायोड़ो-(वि०) १. स्तनपान किया हुआ । २. तृप्त । ३. मस्त ।

धार-(ना०) १. तलवार आदि शस्त्र का तीक्ष्ण किनारा । २. किसी तरल पदार्थ के बहने या गिरने का क्रम । ३. पानी की धारा । प्रवाह । ४. बाढ़ । ५. किनारा । छोर । ६. रेखा । ७. युद्ध । ८. तलवार । ९. प्रकार । भाँति ।

धारण-(ना०) १. तक (तराजू) के पलड़े में समा सके या तोला जा सके उतना नाज, गुड़, खाँड़, आदि पदार्थ । २. पलड़े मे नाज आदि भर कर तोलने की क्रिया । ३. किसी वस्तु की राशि को अमुक परिमाण (पसेरी, दसेरी आदि

कोई बटखरा) में अनेक बार तोले जाने का क्रम। ४. तराजू का पलड़ा। ५. धारण करने की क्रिया। पकड़। ग्रहण। ६. किसी वस्तु की राशि को तोलने की अनेक इकाइयों में से तकड़ी में एक बार तोलने का क्रम।

धारणा-(ना०) १. कल्पना। अनुमान। २. मनसूबा। ३. निश्चय। ४. स्मरण-शक्ति। ५. स्मृति। ६. मन की एकाग्र वृत्ति। ७. निश्चित विचार। ८. विचार। ९. स्थिति।

धारणो-(क्रि०) १. मानना। समझना। २. धारण करना। ३. इच्छा करना। ४. निश्चय करना। ५. कल्पना करना। ६. अनुमान करना। ७. रखना। स्थिर करना। ठहरना। ८. सौंपना।

धारा-(ना०) १. युद्ध। २. तलवार। ३. खड्गधार। ४. सेना। ५. प्रवाह। धारा। ६. वर्षा। ७. दफा। धारा। नियम।

धारा करवत-(न०) काशी में करौत लेने का कठिन व्रत।

धाराकरोत-दे० धारा करवत।

धारागळ-(वि०) बहुत बड़ा (मकान)।

धारा तीरथ-दे० धारातीर्थ।

धारातीर्थ-(न०) १. युद्ध। संग्राम। २. युद्धभूमि। ३. देश और धर्म के लिये बलिदान होने की पुण्यभूमि। ४. युद्ध-मृत्यु। वीर मृत्यु। वीरगति।

धाराधर-(न०) बादल। मेघ।

धाराधाम-(न०) १. युद्ध में प्राप्त वीर गति। २. धारा तीर्थ।

धाराधिनाथ-(न०) १. युद्ध विजेयन। २. युद्ध विजेता। ३. राजा।

धारानीत-(ना०) द्वारका। द्वारानति।

धाराळ-(न०) १. तलवार। २. कटारी। ३. भाला। (वि०) वीर।

धाराळी-(ना०) १. तलवार। २. कटारी। ३. बरछी।

धाराहर-(न०) १. मेघ। २. वर्षा। ३. तलवार।

धारां-वाह-(न०) १. तलवारों के प्रहार। २. रणभूमि में लगे शस्त्रों के प्रहार।

धारियां-दे० धारचां।

धारियो-(न०) एक शस्त्र।

धारियोड़ो-(वि०) १. विचारा हुआ। २. निश्चय किया हुआ।

धारी-(ना०) १. किनारी। २. रेखा। (प्रत्य०) 'धारण करने वाला' अर्थ में प्रयुक्त होने वाला एक प्रत्यय जो शब्द के अंत में लगता है। जैसे—मेखधारी।

धारीधर-(न०) पर्वत।

धारूजळ-(ना०) तलवार।

धारेचो-(न०) १. विधवा स्त्री का नियम पूर्वक किसी पुरुष को अपना पति मान कर उसके घर में रहने की स्थिति। २. पत्नी की भांति किसी अन्य पुरुष के घर में रहने की क्रिया। ३. पति को छोड़कर अन्य पुरुष के घर में पत्नी रूप से रहना।

धारो-(न०) १. रिवाज। प्रथा। रीति। २. नियम। धारा।

धारोळो-(न०) १. जोर से वर्षा होने का झपाटा। वर्षा वेग। २. बादलों में से धुंध के रूप में पृथ्वी को स्पर्श करती हुई दिखाई देने वाली वर्षा की धारा-वली। धारावली।

धारचां-(अव्य०) धारण करने से। धारण करने पर।

धाव-(न०) १. विचार। २. निश्चय। ३. आक्रमण। हमला। ४. गति। चाल। दौड़-भाग। ५. पशु-चौपाया।

धावड़-(न०) १. आक्रमण। २. धाहुर। पीछा। ३. स्तनपान करने की इच्छा। ४. स्तनपान कराने वाली (स्त्री) का

पति । धाय का पति । ५. स्तनपान कराने वाली धाय । ६. स्तनपान करने वाला बच्चा । (वि०) १. आक्रमण करने वाला । आक्रमणकारी । २. पीछा करने वाला । वाहरू ।

धावड़धाय-(ना०) १. स्तनपान कराने वाली बड़ी धाय । २. बड़ी धाय ।

धावड़ो-(न०) धव वृक्ष । (वि०) धव वृक्ष का । धव से संबंधित ।

धावड़ो-गूंद-(न०) धव वृक्ष का गोंद ।

धावणियो-(वि०)१. स्तनपान करनेवाला । २. भागने वाला । ३. वाहर करने वाला । पीछा करने वाला । (न०) १. स्तनपान करने वाला बच्चा । २. दूत । धावक ।

धावणो-(क्रि०) १. स्तनपान करना । २. दौड़ना । भागना । ३. बहना । ४. ध्यान करना ।

धावना-(ना०) १. भक्ति । ध्यावना । २. सुमिरण । ध्यान ।

धावो-(न०) आक्रमण । चढ़ाई । हमला ।

धासक-(ना०) डर । भय । दहशत ।

धास्ती-(ना०) डर । दहशत । भय ।

धाह-(ना०) चिल्ला कर रोना । धाड़ ।

धाहड़-(न०) १.पुकार । कूक । २. रोना । चिल्लाना ।

धाहड़ी-(ना०) १. चिल्लाकर किया जाने वाला रुदन । क्रंदन । २. शीघ्रता (भागने की) ।

धाहवू-(वि०) १. धावक । २. पीछा करने वाला ।

धाँ-(ना०) १. तरह । प्रकार । २. दे० धाँस ।

धाँग-(ना०) नाज आदि से भरे थैलों का करीने से लगाया हुआ ढेर । राशि । करीने से रखी हुई भरे हुए थैलों की राशि ।

धाँगड़-(वि०) जंगली । अनार्य ।

धांगड़ी-(ना०) १. बैलगाड़ी का एक उपकरण । २. गाड़ी की मजबूती के लिए उसके पीछे लगा रहने वाला डंडा ।

धांधळ-(ना०) १. हड़बड़ी । व्यग्रता । २. अंधेर । मनमानी । ४. रोला । बलवा । फसाद । ५. उत्पात । उपद्रव । ६. जबरदस्ती अपनी गलत बातें आगे रखना । ७. राठौड़ों की एक शाखा ।

धांधळी-दे० धांधळ सं १ से ६

धांधस्त-(न०) ध्वंस ।

धांस-(ना०) १. आभूषणों में लगी रहने वाली कील । २. कील । मेख । ३. खांसी । धांसी । ४. ध्वंश ।

धांसणो-(क्रि०) खांसना ।

धांसी-(ना०) सूखी खांसी ।

धांसो-(न०) भाला ।

धाँह-दे० धांस ।

धिक-(अव्य०) धिक्कार सूचक उद्गार । धिग ।

धिकणो-दे० धकणो ।

धिकाणो-(क्रि०) १. निभाना । चलाना । २ निर्वाह करना ।

धिक्कार-(न०) फटकार । लानत । तिरस्कार । धिक्कार ।

धिक्कारणो-(क्रि०)फटकारना । धिक्कारना ।

धिखणो-(क्रि०) १. कोप करना । २. युद्ध करना । ३. भिड़ना । ४. प्रज्वलित होना । जलना । धुखना ।

धिग-दे० धिक ।

धिन-दे० धन्य ।

धिनवाद-दे० धन्यवाद ।

धिनो-दे० धन्य ।

धिन्नड़-दे० धेनड़ ।

धिया-(ना०) पुत्री । बेटी ।

धियाग-(ना०) १. अग्नि । आग । २. ज्वाला । ३. क्रोधाग्नि । ४. आकाश ।

धियारी-(ना०) पुत्री । बेटी ।

धियो-(न०) पुत्र । वेटा ।

धिरकार-दे० धिक्कार ।

धिरगार-दे० धिक्कार ।

धिराज-(न०) अधिराज । राजा ।

धिरोज-(न०) १. संतोष । सब्र । २. धीरज ।

धिसणा-(ना०) बुद्धि ।

धी-(ना०) १. वेटी । पुत्री । २. बुद्धि । ३. दीपक । ४. मन ।

धीअड़-(ना०) पुत्री । वेटी । डीकरी ।

धीक-(ना०) १. घूंसा मारने की चोट । मुष्टि प्रहार । २. घूंसा मारने की आवाज । ३. घूंसा ।

धीकणो-(क्रि०) मारना । ठोंकना ।

धीज-(ना०) १. विश्वास । २. प्रतिज्ञा । ३. संतोप । ४. धीरज । धैर्य । ५. सच्चे और झूठे की परीक्षा की एक प्राचीन न्याय विधि । ६. बहुत कड़ी परीक्षा । अग्नि, तप्त तेल आदि से अपराधियों की ली जाने वाली प्राचीन काल की परीक्षा-विधि ।

धीजणो-(क्रि०) १. धीरज होना । २. आश्वस्त होना । ३. भरोसा होना । ४. भरोसा करना । ५. भरोसा दिलाना । ६. विश्वास करना ।

धीजो-(न०) १. विश्वास । भरोसा । २. धीरज । धैर्य ।

धीट-(वि०) १. मूर्ख । २. ढीठ । धृष्ट । उदंड । ३. लज्जा रहित । निर्लज्ज । ४. दोप प्रमाणित होने पर भी लज्जित नहीं होने वाला । ५. डींग हाँकने वाला । गप्पी । ६. वीर । ७. हठी । जिद्दी ।

धीटो-दे० धीट ।

धीठ-दे० धीट ।

धीठाई-(ना०) १. मूर्खता । २. धृष्टता । धीठता । निर्लज्जता । ४. जिद । हठ । ५. वीरता ।

धीठो-दे० धीट ।

धीण-(ना०) ऊन या जट का मोटा धागा ।

धीणू-दे० धीणो ।

धीणो-(न०)१. दुधारू गाय, भैंस आदि का घर में होना । घर में गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं के होने की स्थिति । २. किसी व्यक्ति के यहाँ वर्तमान में दूध देने वाले गाय, भैंस आदि की संज्ञा ।

धीणोधापो-(न०) १. दूध, दही और घृत आदि के लिए गाय, भैंस आदि का और अन्न का पूर्ण संग्रह । २. दुधारू गाय भैंस की अधिक संख्या में अवस्थिति ।

धीप-(न०) दामाद । जमाई ।

धीपति-दे० धीप ।

धीब-(ना०) १. प्रहार । २. धीबने की ध्वनि ।

धीबणो-(क्रि०) १. मारना । पीटना । २. पटकना । ३. पछाड़ना । ४. प्रहार करना । ठोकणो ।

धीमर-(न०) धीवर । माछी ।

धीमंत-(वि०) बुद्धिमान ।

धीमाई-(ना०) १. धीमापन । मंदता । २. धैर्य । ३. गम्भीरता ।

धीमास-दे० धीमाई ।

धीमै-(अव्य०) धीमाई से । धीरे से । आहिस्ता । धीरे ।

धीमो-(वि०) १. आलसी । २. शांत प्रकृति का । ३. मंद । शिथिल । ४. धीरे । धीमा । ५. धीरे चलने वाला । (ना० धीमी ।

धीय-(ना०) पुत्री । दीकरी ।

धीयड़-(ना०) पुत्री । वेटी ।

धीयारी-दे० धियारी ।

धीयो-दे० धियो ।

धीर-(वि०) १. स्थिर चित्त । धैर्यवान । २. दृढ़ । ३. गभीर । ४. नम्र । ५.

पीने । धाय का पति । ५. स्तनपान कराने वाली धाय । ६. स्तनपान करने वाला बच्चा । (वि०) १. आक्रमण करने वाला । आक्रमणकारी । २. पीछा करने वाला । वाहरू ।

धावड़धाय-(ना०) १. स्तनपान कराने वाली बड़ी धाय । २. बड़ी धाय ।

धावड़ो-(न०) धव वृक्ष । (वि०) धव वृक्ष का । धव से संबंधित ।

धावड़ो-गूंद-(न०) धव वृक्ष का गोंद ।

धावणियो-(वि०)१. स्तनपान करनेवाला । २. भागने वाला । ३. वाहर करने वाला । पीछा करने वाला । (न०) १. स्तनपान करने वाला बच्चा । २. दूत । धावक ।

धावणो-(क्रि०) १. स्तनपान करना । २. दौड़ना । भागना । ३. बहना । ४. ध्यान करना ।

धावना-(ना०) १. भक्ति । ध्यावना । २. सुमिरण । ध्यान ।

धावो-(न०) आक्रमण । चढ़ाई । हमला ।

धासक-(ना०) डर । भय । दहशत ।

धास्ती-(ना०) डर । दहशत । भय ।

धाह्-(ना०) चिल्ला कर रोना । धाड़ ।

धाहड़-(न०) १. पुकार । फूक । २. रोना । चिल्लाना ।

धाहड़ी-(ना०) १. चिल्लाकर किया जाने वाला रुदन । क्रंदन । २. शीघ्रता (भागने की) ।

धाहवू-(वि०) १. धावक । २. पीछा करने वाला ।

धाँ-(ना०) १. तरह । प्रकार । २. दे० धाँस ।

धाँग-(ना०) नाज आदि से भरे थैलों का करीने से लगाया हुआ ढेर । राशि । करीने से रखी हुई भरे हुए थैलों की राशि ।

धाँगड़-(वि०) जंगली । अनार्य ।

धांगड़ी-(ना०) १. बैलगाड़ी का एक उप करण । २. किवाड़ की मजबूती के लिए उसके पीछे लगा रहने वाला डंडा ।

धांधळ-(ना०) १. हड़बड़ी । व्यग्रता । २. अंधेर । मनमानी । ४. रोला । बलवा । फसाद । ५. उत्पात । उपद्रव । ६. जबरदस्ती अपनी गलत बातें आगे रखना । ७. राठौड़ों की एक शाखा ।

धांधळी-दे० धांधळ सं १ से ६

धांधस्त-(न०) ध्वंस ।

धांस-(ना०) १. आभूषणों में लगी रहने वाली कील । २. कील । मेख । ३. खांसी । धांसी । ४. ध्वंस ।

धाँसणो-(क्रि०) खांसना ।

धाँसी-(ना०) सूखी खाँसी ।

धाँसो-(न०) भाला ।

धाँह्-दे० धांस ।

धिक-(अव्य०) धिक्कार सूचक उद्गार । धिग ।

धिकणो-दे० धकणो ।

धिकाणो-(क्रि०) १. निभाना । चलाना । २ निर्वाह करना ।

धिक्कार-(न०) फटकार । लानत । तिरस्कार । धिक्कार ।

धिक्कारणो-(क्रि०)फटकारना । धिक्कारना ।

धिखणो-(क्रि०) १. कोप करना । २. युद्ध करना । ३. भिड़ना । ४. प्रज्वलित होना । जलना । धुखना ।

धिग-दे० धिक ।

धिन-दे० धन्य ।

धिनवाद-दे० धन्यवाद ।

धिनो-दे० धन्य ।

धिन्नड़-दे० धेनड़ ।

धिया-(ना०) पुत्री । बेटी ।

धियाग-(ना०) १. अग्नि । आग । २. ज्वाला । ३. क्रोधाग्नि । ४. आकाश ।

धियारी-(ना०) पुत्री । बेटी ।

धुखणो-(क्रि०) १. प्रज्वलित होना। धुखना। सिळगणो। २. क्रोध करना। ३. दुखी होना। जलना। ४. मनस्ताप होना। कुढणो।

धुखावणो-(क्रि०) १. अग्नि प्रज्वलित करना। सिळगाणो। २. दुखी करना। कष्ट देना। ३. नाराज करना। ४. क्रोधित करना।

धुगधुगी-दे० धुकधुकी।

धुज-(ना०) १. धजा। पताका। २. घोड़ा। ३. भाला। (वि०) १. अग्रणी। २. श्रेष्ठ।

धुड़णो-(क्रि०) मकान, दीवार आदि का गिरना। ढहना।

धुणणो-दे० धूणणो।

धुताई-(ना०) १. धूर्तता। २. ठगी।

धुतारो-(वि०) १. धूर्त्त। २. ठग।

धुन-(ना०) १. किसी कार्य में बराबर लगे रहने की प्रवृत्ति। लगन। २.चिंतन। ३. गाने का ढंग। ४. भजन की एक लंबे समय तक सतत चलने वाली ध्वनि। ५. मन की तरंग। ६. ध्वनि।

धुनी-(ना०) १. ध्वनि। आवाज। शब्द। २. आवाज की गूंज। ३. धूनी।

धुनीग्रह-(न०) कान। ध्वनिग्रह। श्रवणेन्द्रिय।

धुपणो-(क्रि०)१. धुलना। धुला जाना। २. क्रोध करना। ३. संपत्ति का नष्ट करना या होना। ४. नाश होना। मिटना। ५. बीमारी के कारण रक्त की कमी होना।

धुपीजणो-(क्रि०) १. धोया जाना। २. शरीर में रक्त की कमी होना।

धुपेड़ो-दे० धूपियो।

धुपेल-(न०) सिर में डालने का एक सुगंधीदार मसालों से बनाया हुआ तेल।

धुवणो-(क्रि०) १. युद्ध करना। लड़ना। २. नगाड़े व ढोल का वजना। ३. तोप व बंदूक का छूटना। ४. जलना। ५. मार खाना। ६. जोश में आना।

धुमाड़ो-दे० धुआड़ो।

धुमाळो-दे० धूमाळो।

धुर-(वि०) १. एक। २. प्रथम। ३. अगला। ४. आदि। शुरु। (न०) १. उच्च स्थान। २. धुरा। अक्ष। ३. आरंभ। शुरुआत। ४. बैलगाड़ी का जुआ। ५. कर्जा लेने वाला। ऋणी। आसामी। ६. वोझा। भार। ७. जिम्मेवारी। (क्रि०वि०) १. पहले। २. निकट।

धुरज-(न०) घोड़ा।

धुरधारण-(न०) बैल। बळद।

धुरपेड़-(अव्य०) शुरू से।

धुरवहो-(न०) बैल। बळद।

धुरंधर-(वि०)१. अग्रणी। प्रधान। श्रेष्ठ। धुरीण। २. प्रकाण्ड। ३. जो सबमें बहुत बड़ा, प्रवीण या विद्वता वाला हो। ४. दायित्व निभाने वाला। ५. भार उठाने वाला। भार वाहक।

धुरा-(न०) अंत। (अव्य०) १. ठेठ तक। अंत तक। २. अंत में। तक। (ना०) १. वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से मिलती है। २. पृथ्वी की धुरी। अक्ष। ३. पहियों की धुरी। ४. समाधि।

धुराधर-(वि०) १. अग्रणी। अगुआ। २. प्रधान। (अव्य०) १. जो अग्रणी है। २. अग्रणी भी। ३. अग्रणी सहित।

धुरियो-(न०) १. ऋणी। २. धुरा। ३. बैलगाड़ी का जुआ।

धुरी-(ना०) लोहे का डंडा, जिसके सहारे पहिया घूमा करता है।

धुरेळी-दे० धूरेळी।

धुरो-(न०)१. लोहे का डंडा। २. बैलगाड़ी का जुआ। ३. धुरा।

धुळेटी-दे० धूरेळी।

धूड़गढ़–दे० धूड़कोट।

धूड़धमासो–(न०) १. अव्यवस्था। २. खाने-पीने की अच्छी बुरी सभी वस्तुओं का मेल। ३. खाने-पीने की गड़बड़ी या अव्यवस्था। ४. खाने-पीने में पथ्य-कुपथ्य के विचार का अभाव। ५. कचरा।

धूड़धाणी–(ना०) नाश। बरबादी।

धूड़ीख–(ना०) १. आँधी। २. गर्द।

धूड़ो–(न०) १. धूल। गर्द। २. धूल का ढेर। ३. कचरा।

धूण–(ना०) १. धुन। लगन। २. अस्वीकृति। ३. गरदन। ४. एक परिमाण। (वि०) १. अधिक। २. बढ़िया। श्रेष्ठ।

धूणणो–(क्रि०) १. अस्वीकृति रूप में सिर हिलाना। अस्वीकार करना (सिर हिलाके) २. मना करना। ३. देवता, भूत, प्रेत आदि के आवेश से काँपना। ४. प्रकंपित करना। शरीर को कंपित करना। ५. हिलाना। झकझोरना। ६. मारना। पीटना। ७. युद्ध करना। ८. चक्कर देना। ९. कंपित करना। काँपना। १०. धुनकी से रुई साफ करना। रुई धुनना।

धूणी–(ना०) १. तापने की अग्नि। धूनी। २. साधुओं के तापने का कुंड़। ३. आग में डाले गये सुगंधित पदार्थों का धुँआँ।

धूणो–(न०) बड़ी धूनी।

धूत–(वि०) १. धूर्त्त। २. ठग। ३. चालाक। ४. वीर।

धूतणो–(क्रि०) ठगना।

धूताई–दे० धुताई।

धू-तारण–(न०) ध्रुव का उद्धार करने वाले भगवान विष्णु।

धूतारी–(ना०) धरती। (वि०) ठगिनी।

धूतारो–(वि०) १. धूर्त्त। २. ठग। ३. बेईमान। ४. बदमाश।

धू-तारो–(न०) ध्रुवतारा।

धूती–दे० धुतारी।

धूधर–(न०) देह। शरीर।

धू-धारण–(न०) १. पृथ्वी को धारण करने वाला। २. शेषनाग।

धून–(वि०) १. अधिक। २. बढ़िया। श्रेष्ठ। (ना०) १. धुन। लगन। तरंग। लहर। २. लत। ३. गरदन।

धून-पाँती–(ना०) १. श्रेष्ठ भाग। बढ़िया हिस्सा। २. बँटवारे में आने वाला अच्छा भाग।

धूप–(न०) १. घाम। सूर्य की गरमी। तावड़ो। २. सूर्य का प्रकाश। ३. एक सुगंधित द्रव्य। धूप। ४. देवता के निमित्त किया जाने वाला गुगुल आदि सुगंधित पदार्थों का धुँआँ।

धूपटणो–(क्रि०) १. खोसना। लूटना। २. मारना। पीटना। ३. मौज करना। माल उड़ाना। ४. खुले हाथों खर्च करना। ५. अधिकार करना। आक्रमण करके देश या धरती पर अधिकार करना।

धूपणो–दे० धूपदाणी। (क्रि०) धूप, अगरबत्ती आदि जलाना। धूप करना।

धूपदाणी–(ना०) वह पात्र जिसमें धूप जलाया जाता है। धूपदानी। धूपपात्र। धूपदाणियो। धूपियो।

धूपियो–दे० धूपदाणी।

धूपेरण–(न०) गुग्गुल का पेड़।

धूपेल–(न०) बालों में डालने का सुगंधित तेल।

धूबको–(न०) कूदने की आवाज।

धूबणो–(क्रि०) क्रोध करना।

धूम–(ना०) १. हलचल। हल्ला-गुल्ला। २. ऊधम। शरारत। ३. युद्ध। लड़ाई। ४. समारोह। ५. बड़ी भारी तैयारी। ६. धुँआँ। ७. उपद्रव।

धूमकेतु-(न०) पुच्छल तारा।

धूमधड़ाके-(अव्य०) धूम तैयारी के साथ। धामधूम सूं। धूमधाम से।

धूमधड़ाको-(न०) १. धूमधाम। २. शोर-गुल। होहल्ला।

धूमधाम-(ना०) १. बड़ी भारी तैयारी। बड़ा आयोजन। २. समारोह। ३. शोरगुल। होहल्ला। ४. सजधज। ५. प्रदर्शन। धामधूम।

धूमरक-(वि०) काला। श्याम।

धूमंग-दे० धोमंग।

धूमाळो-(न०) सिर पर बांधा जाने वाला मोटा साफा। बड़ी पगड़ी। धाटो।

धूरजटी-(न०) धूर्जटि। महादेव।

धूरत-(वि०) १. धूर्त। २. छली। ठग। ३. चालबाज।

धूरेळी-(ना०) धुरेंडी। होली के दूसरे दिन का वह उत्सव जिसमें रंग, गुलाल और धूल आदि एक दूसरे के ऊपर उड़ा कर बसंतोत्सव मनाया जाता है।

धूरो-(वि०) अधूरा।

धू-लंका-(ना०) १. उत्तर-दक्षिण दिशा। २. पासों के खेल में एक और दो की संज्ञा। ३. पासों के खेल में स्थान विशेष।

धु-लंकाऊ-(अव्य०) १. उत्तर से दक्षिण दिशा तक। २. उत्तर से दक्षिण दिशा संबंधी। (न०) उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर का जमीन का माप।

धूळेरी-दे० धूरेळी।

धूस-(न०) १. नगाड़ा। धूंसो। २. झुंड। समूह। ३. सेना।

धूसणो-(क्रि०) १. नगाड़ा बजाना। २. ध्वंस करना। नष्ट करना।

धूसर-(न०) तेली। (वि०) धूल के रंग का।

धूसो-दे० धूंसो।

धूंई-(ना०) १. धूनी। २. भूतप्रेत आदि की बाधा के निवारणार्थ मिर्च आदि का किया जाने वाला धुंआं। ३. लाल मिर्च को जला कर किसी बाधा को दूर करने का टोटका।

धूंकळ-(न०) १. ऊधम। शरारत। २. झगड़ा। टंटा। दंगाफसाद। ३. युद्ध। लड़ाई। ४. शोर। गुल। ५. हलचल। दौड़धूप। ६. उपद्रव। उत्पात।

धूंगारणो-(क्रि०) छौंकी-कतरी हुई (बिना उबाली) साग सब्जी को घी का धुंआं देकर संस्कारित करना। काटी हुई सब्जी को घी का धुंआं देना। फुलगारणो। २. बघारना। छौंकना।

धूंध-दे० धुंध।

धूंधळो-(वि०) १. अस्पष्ट। २. धुंएं के रंग का। ३. धुंएं, गर्द आदि से आच्छादित। धूमिल। ४. घने बादलों से छाया हुआ।

धूंधाणो-दे० धूंधावणो।

धूंधाळो-(वि०) १. बड़े पेट वाला। तोंद वाला। २. धूमिल।

धूंधावणो-(क्रि०) १. धमकाना। डराना। २. ठोकना। पीटना। ३. गोल चक्र की तरह फिराना। गोल गोल घुमाना। ४. तेज गति से चलाना। भागना। दौड़ना। ५. तेज भागने से साँस का बंद होना।

धूंधी-(ना०) १. सनक। २. कंपन। धूजणी।

धूंपियो-दे० धूपियो।

धूंबो-(न०) १. ढेर। राशि। २. टीबा। भीटा। धोरो।

धूंस-(न०) १. आतंक। रोब। धौंस। २. डाँट-डपट। घुड़की। ३. डर। भय। ४. ध्वंस। नाश। ५. सेना। ६. भीड़। समूह। ७. उत्सव। ८. नगाड़ा। ९. नगाड़े का शब्द। १०. गर्जन।

धूंसणो–(क्रि०) १. नष्ट करना । ध्वंस करना । २. डराना । धमकाना । ३. नगाड़े का बजना । ४. नगाड़े का वजाना ।

धूंस पड़णो–(मुहा०) १. नगाड़ा वजना । २. भीड़भाड़ होना । ३. उत्सव होना ।

धूंसरी–(ना०) १. खेह । रज । २. धुरी । ३. जुआ । जुआड़ो ।

धूंसाळ–(वि०) १. यशस्वी । २. प्रभावशाली । ३. धौंस दिखाने वाला ।

धूंसो–(न०) १. बड़ा नगाड़ा । २. सुयश । ३. प्रताप । आतंक । ४. सु-राज्य का यशगान । ५. होरी की तर्ज में गाया जाने वाला मारवाड़ देश का एक प्रसिद्ध लोक गीत । ६. चीनी रेशम का एक सफेद दुपट्टा । ७. सर्दियों में ओढ़ने का एक वस्त्र ।

धूंह–दे० धुंध ।

धूंहर–(न०) कुहरा । धुंध ।

धृत–(वि०) धारण किया हुआ ।

धृति–(ना०) १. स्थिरता । २. धैर्य । ३. मन की दृढ़ता ।

धृतराष्ट्र–(न०) कौरवों का पिता ।

धृष्ट–(वि०)१. निर्लज्ज । २. उद्धत । ढीट ।

धृष्टता–(ना०) १. ढिठाई । २.निर्लज्जता । ३. धूर्तता । ढीटपणो ।

धेख–(न०) १. द्वेष । डाह । २. शत्रुता । ३. युद्ध । ४. हठ । जिद्द । ५. विरोध ।

धेखी–(वि०) १. द्वेपी । २. विरोधी । ३. हठी । जिद्दी । (न०) शत्रु । दुश्मन ।

धेग–दे० देग ।

धेजो–(न०) धीजो ।

धेटो–दे० धेठो ।

धेठाई–दे० धीठाई ।

धेठो–(वि०) १. धृष्ट । २. निर्लज्ज । धीट । २. संकोच रहित । (स्त्री० धेठी)

धेन–(ना०) गाय । धेनु ।

धेनड़–(न०) १. प्रसव समय की पुत्र संज्ञा । २. पुत्र । बालक ।

धेनड़ियो–दे० धेनड़ ।

धेनु–(ना०) गाय । गौ ।

धेम–(न०) राशि । ढेर ।

धेली–(ना०) आधे रुपया का सिक्का । अठन्नी ।अधेली ।

धेलो–(न०) आधे पैसे का सिक्का । आधा पैसा । अधेलो ।

धेस–दे० धेख ।

धैड़–(ना०) १. विना बँधा हुआ कुँआँ । कच्चा कुँआँ । दहर । २. पानी से भरा हुआ गहरा खड्डा । ३. खड्डा । गढ्ढा ।

धैड़ो–दे० धैड़ ।

धैधींगर–(न०) १. हाथी । २ सर्प । (वि०) १.प्रचंडकाय । भीमकाय । २. जवरदस्त ।

धैळियो–दे० दहलियो ।

धैळणो–(क्रि०) १. डरना । भयखाना । दहलना । भय से काँपना ।

धोक–(ना०) १. प्रणाम । पा लागन । २. दंडवत । ३. पूजा । ४. एक जंगली वृक्ष ।

धोकणो–(क्रि०) १. प्रणाम करना । साष्टाँग प्रणाम करना । पा लागना । २. किसी देवता, तीर्थ आदि की यात्रा को जाना । ३. ठोकना । पीटना । ४. धातु के लंबे टुकड़े के सिरों पर हथोड़े से चोटें मार कर छोटा करना ।

धोकळ–दे० धूंकल ।

धोको–(न०) १. जाड़ी लकड़ी का टुकड़ा । २. कपड़े धोने की घोटी । ३. डंडा । सोटा । दे० धोखो ।

धोखाधड़ी–(ना०)१. चालबाजी । चालाकी । २. ठगी । ठगाई । ३. धूर्तता ।

धोखावाज–(वि०) धोखेबाज । कपटी । छली ।

धोखो–(न०) १. धोखा । छल । भुलावा । दगा । २. पश्चाताप । ३. क्षोभ । ४.

भ्रान्ति । ५. अज्ञान से होने वाली भूल । ६. हानि । ७. निंदा ।

धोणो-दे० धोवणो ।

धोत-(ना०) १. धोती । २. ओसवालों (जैनियों) में मृतक शोक मिटाने की एक क्रिया, जिसका किसी मांगलिक प्रसंग के पूर्व मंदिर में जाकर सम्पादन किया जाता है ।

धोतड़ी-(ना०) छोटी धोती । पँचियो ।

धोतियो-(न०) धोती ।

धोती-(ना०) एक अधोवस्त्र । धोती । धोतियो ।

धोती जोटो-(न०) धोती जोड़ा ।

धोती जोड़ो-(न०) साथ में बुनी हुई दो धोतियां । धोती जोड़ा ।

धोतीधारी-(न०) १. धोती पहनने वाला । २. हिन्दू (अहिंदू की ओर से व्यंग्य में) ।

धोप-(न०) १. धुलाई । २. धोये जाने की विशिष्टता । ३. धोने में आने वाला ओप या सफाई । ४. तलवार । (वि०) १. श्वेत । २. उजला ।

धोपटणो-दे० धूपटणो ।

धोवण-(ना०) धोबिन । धोबी की स्त्री ।

धोवा देणा-(मुहा०) अंजलियां देना ।

धोवी-(न०) कपड़े धोने का धंधा करने वाला । रजक । धोबी ।

धोवी घाट-(न०) धोबी के कपड़े धोने की जगह ।

धोबो-(न०) १. दोनों हथेलियों को मिला कर बनाई हुई अंजली । २. धोबे में समा सके उतना पदार्थ ।

धोम-(न०) १. सूर्य । २. सूर्य का प्रखर ताप । ३. अग्नि । ४. क्रोध । ५. युद्ध । ६. धुँआं । ७. बड़ा समूह । अपार । भीड़ । ८. ठाट-बाट । ९. तोपों के छूटने की आवाज । (वि०) १.खूब । अत्यधिक । २. बहुत बड़ा । बहुत दूर तक फैला हुआ । ३. जबरदस्त ।

धोमनाग-(वि०) खूब शोभित । (न०) शोभित वेश ।

धोमझळ-(ना०) अग्नि की ज्वाला ।

धोम-मारग-(न०) १. बड़ा मार्ग । २. वह रास्ता जिस पर खूब आना जाना रहता हो । ३. किन्हीं गांवों के बीच का वह मार्ग जिस पर पैदल और सवारियों का अधिकता से आना जाना होता हो ।

धोमंग-(न०) अग्नि । आग ।

धोमानळ-(ना०) अग्नि । आग ।

धोयोड़ो-(वि०) धुला हुआ । धोया हुआ ।

धोरण-(न०) १. रीति । पद्धति । २.नियम ३. पंक्ति । ४. श्रेणी । ५. स्तर ।

धोरावणो-(क्रि०) धुलवाना ।

धोरियो-(न०) १. छोटा टीबा । धोरो । २. बैल । बळद । ३. ऊँची-नीची जमीन में समतल (लेवल में) बनाई हुई पानी की नीक । पाली चढ़ाकर बनाई हुई पानी की नीक ।

धोरी-(वि०) १. मुख्य । प्रधान । मुखिया । २. वीर । योद्धा । ३. बड़ा । प्रशस्त । (न०) १. बैल । २. पुत्र ।

धोरी मोड़ो-(न०) बड़ा द्वार । खास दरवाजा ।

धोरी मोडो-(न०) अगुआ साधु । महंत । (तुच्छकार में)

धोरै-(क्रिoवि०) पास । निकट ।

धोरो-(न०) १. अति सुगंधित वातावरण । २.अतर, धूप आदि की सुगंधि की लहर । ३. बहुत बढ़िया सुगंधि । ४. खान-पान, गायन, अतर-फुलेल की सुगंधि आदि का उल्लासपूर्ण वातावरण । ५. उत्साह और आनंद का वातावरण । ६. कोर-गोटा । गोटा-किनारी । ७. खेत (जाव) की ऊंची-नीची भूमि में मिट्टी की बनाई हुई

समतल पाली जिस पर नाली बना कर क्यारों में पानी पहुँचाया जाता है। पाली पर बनी हुई पानी की नीक। ८. नीक की पाली। ९. खेत की मेंड। १०. टीबा। धोरो। ११. मार्ग।

धोलणो–*(क्रि०)* १. सफेदी करना। २. सफेद करना।

धोळहर–दे० धवळहर।

धोळाई–*(ना०)* १. सफेदी। पुताई। २. चूना पोतने की मजदूरी। सफेदी करने की मजदूरी।

धोळावणो–*(क्रि०)* मकान आदि की सफेदी करवाना।

धोळास–*(न०)* धोलापन। सफेदी।

धोळियो–*(वि०)* धवल। सफेद। *(न०)* बैल।

धोळो–*(वि०)* धवल। सफेद। *(न०)* १. बैल। २. श्वेत प्रदर।

धोळो आवणो–*(मुहा०)* श्वेत प्रदर का रोग होना।

धोळो-धट–*(वि०)* खूब सफेद। एकदम सफेद। धोळोधप।

धोळोधप–दे० धोळोधट।

धोळो पड़णो–१. श्वेत प्रदर का रोग होना। २. सफेद हो जाना। ३. खून कम हो जाना।

धोळोफट–दे० धोळोधट।

धोवण–*(न०)* १. वह पानी जिससे बरतन आदि धोये गये हों। वह पानी जिसमें कोई वस्तु धोई गई हो। २. पानी। ३. धोने की क्रिया या भाव।

धोवणियो–*(वि०)* धोने वाला। *(न०)* कपड़े धोने की धोटी।

धोवणो–*(क्रि०)* पानी से साफ करना। धोना।

धोवती–दे० धोती।

धोवाई–*(ना०)* १. धोने की क्रिया। २. धोने की मजदूरी।

धोवाड़णो–दे० धोवाणो।

धोवाणो–*(क्रि०)* पानी से साफ करवाना। धुलाना। धुलवाना।

धोवादाळ–*(ना०)* पानी में भिगोकर छिलके उतारी हुई दाल। मोगर।

धोवावणो–दे० धोवाणो।

धोंस–*(ना०)* १. धमकी। २. रोब। धौंस।

धोंसो–दे० घूंसो।

धौफ–*(ना०)* १. रोब। आतंक। २. भय। डर।

धौळ–*(वि०)* धवल। सफेद। *(ना०)* १. एक रागिनी। २. गीत। गायन। *(न०)* सिर। मस्तक।

धौल–*(ना०)* थप्पड़। चपत। लप्पड़।

धौळहर–*(न०)* १. मकान। महल। २. राजमहल।

धौळागिर–दे० धवळगिर।

ध्याग–दे० धियाग।

ध्यान–*(न०)* १. चिन्तन। २. लक्ष्य। ३. एकाग्रता। ४. स्मृति। ५. विचार। ख्याल। ६. चिन्तन करने की वृत्ति। ७. चित्त। मन। ८. योग के आठ अंगों में से एक।

ध्यानी–*(वि०)* १. ध्यान करने वाला। २. चिंतनशील।

ध्यावणो–*(क्रि०)* १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। ३. ईश्वर का सुमिरण करना।

ध्रकार–दे० धिक्कार।

ध्रग–दे० धिक।

ध्रगध्रगी–*(ना०)* हृदय की धड़कन।

ध्रम–दे० धर्म।

ध्रमकणो–*(क्रि०)* ढोल का बजना।

ध्रमरत्तो–*(वि०)* धर्मानुरक्त।

ध्रवणो–*(क्रि०)* १. संतुष्ट करना। २. भागना। ३. आँसू बहाना। ४. मारना। पीटना।

ध्रनाक-(ना०) १. शब्द । आवाज । २. गिरने की आवाज ।

ध्रांग-दे० ध्रग ।

ध्राइणो-(क्रि०) तृप्त होना ।

ध्रापणो-दे० धापणो ।

ध्राव-(न०) गाय-भैंस आदि मवेशी । पशु ।

ध्रावणो-(क्रि०) तृप्त होना । धापणो ।

ध्रीबणो-(क्रि०) १. पटकना । २ रगना । ३. जलाना । ४. मारना । पीटना । ५. पछाड़ना ।

ध्रीह-(ना०) नगाड़े का शब्द ।

ध्रुव-(न०)१. उत्तर दिशा का एक निश्चल तारा । २. राजा उत्तानपाद का प्रख्यात विष्णुभक्त पुत्र । ३. पृथ्वी जिस अक्ष पर फिरती है उसके दोनों सिरों में से प्रत्येक यथा—उत्तरी ध्रुव । दक्षिणी ध्रुव । ४ उत्तर दिशा । (वि०) १. स्थिर । निश्चल । अटल । २. निश्चित । ३. प्रथम । पहला ।

ध्रुवणो-(क्रि०) १. बजना । २. लड़ना । ३. युद्ध करना । ४. मारना ।

ध्रुव तारो-(न०) ध्रुव का तारा । उत्तर की दिशा का एक निश्चल तारा ।

ध्रू-(ना०)१ मुंड । मस्तक । २.ध्रुवतारा ।

ध्रूजट-दे० धूर्जटी ।

ध्रूमाळा (ना०) मुंडमाला ।

ध्रेंग-(न०) १. द्वेष । वैर । २. विरोध ।

ध्रोग-(न०) सिर । मस्तक ।

ध्रोब-(ना०) दूर्वा । दूब ।

ध्रोब-आठम-(ना०) १. भादों शुक्ला-अष्टमी । दूर्वा ग्रहणी अष्टमी । दूर्वा-ष्टमी । ध्रुवअष्टमी । (इसी दिन भगवान विष्णु ने अपने भक्त ध्रुव को दर्शन दिये थे, इसलिये यह ध्रुवाष्टमी भी कही जाती है । (मारवाड़ में मेड़ पाटण में ध्रुवनारायण के प्राकट्य का इस दिन बड़ा मेला भरता है । यहां ११ वीं सदी का ध्रुवनारायण का बड़ा मंदिर बना हुआ है, जो अब रणछोड़राय के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है ।)

ध्वज-(न०) झंडा । ध्वजा । (ना०)पताका । धजा ।

ध्वनि-(ना०) १. आवाज । शब्द । २. व्यंजना ।

ध्वनिग्रह-(न०) कान । श्रवणेन्द्रिय ।

ध्वंस-(न०) नाश । बरबाद ।

न

न-संस्कृत परिवार की राजस्थानी वर्णमाला का बीसवाँ और त वर्ग का पाँचवाँ दंत स्थानीय अनुनासिक व्यंजन वर्ण ।

न-(अव्य०) १. नकारात्मक शब्द । निषेध सूचक शब्द २.ना । नहीं । ३.एक उपसर्ग । (वि०) अन्य ।

नई-दे० नै ।

नइड़-दे० नइयड़ ।

नइयड़-(न०) १. नदी के पास वाला देश । नदर । २. नदी तट का उपजाऊ प्रदेश । ३. निकट की सीमा का प्रदेश ।

नई-(ना०) नदी । (वि०) नवीन । नयी ।

नक-(न०) नाक ।

नक-छींकणी-(ना०)१.नसवार । सुंघनी । २. एक घास ।

नकटाई-(ना०) १. निर्लज्ज । बेशर्मी । २. धृष्टता ।

नकटी-(वि०) १. नाककटी । २. निर्लज्ज । ३. दुराचारिणी ।

नकटो-(वि०) १. नाककटा । नकटा । २. निर्लज्ज । बेशर्म । (न०) क्षुद्रता सूचक एक शब्द ।

नकतोड़–(न०) १. मुँहरी डाले जाने वाला ऊंट के नाक का एक छेद। २. ऊंट के नाक में डाली जाने वाली एक वाली। (वि०) नाक को तोड़ने वाली (ऊंट के नाक की तर)

नकद–दे० नगद।

नकदी–दे० नगदी।

नकफूली–(ना०) स्त्री के नाक में पहिनने का एक गहना। नकवेसर।

नकर–(वि०) ठोस।

नकराई–(ना०)१. जिसके ऊपर हुंडी लिखी गई हो उसकी ओर से उसे सिकारने की अस्वीकृति। २. हुंडी की पकती मुद्दत पर रकम नहीं चुका सकने की स्थिति। ३. हुंडी लिखने वाले के पास से लिया जाने वाला अस्वीकृति (नकराई) का खर्चा। ४. नकराई ली जाने का स्थानीय (व्यापारिक) नियम।

नकरामण–दे० नकराई।

नकल–(ना०) १. मूल पर से उतारी हुई दूसरी लिखावट। २. लेख आदि की प्रतिलिपि। कॉपी। ३. अनुकृति। प्रतिरूप। ४. स्वांग। वाणी, वेश आदि का यथावत अनुकरण। ५. हँसी। मजाक।

नकलनवीस–(न०) न्यायालय में दस्तावेजों की प्रतिलिपि करने का काम करने वाला कर्मचारी। लिपिक।

नकलवाज–(वि०) १. नकल करने वाला। २ मसखरा।

नकलवही–(ना०) वह वही जिसमें आवश्यक चिट्ठियों, हुंडियों आदि की नकलें और उधार दी हुई वस्तुओं का विवरण लिखा रहता है।

नकलंक–(वि०) निष्कलंक। कलंक रहित। (न०) कल्कि अवतार।

नकली–(वि०) १. खोटा। असली नहीं। २. वनावटी। कृत्रिम। ३. नकल करके वनाया हुआ।

नकलीड़ो–(न०) मसखरा। जोकर।

नक वढियो–दे० नाक वढियो।

नकवेसर–(ना०) नाक की वाली। छोटी नथ। नकफूली।

नकसी–(ना०)१. नक्शी काम। कोतरणी। नक्काशी। २. चित्रकारी। ३.रंगसाजी। ४. वदनामी। अपकीर्ति। लोकनिंदा। (वि०) जिस पर वेलवूटे वने हों।

नकसीर–(ना०) नाक में से निकलने वाला खून। नकीर। नाकोर।

नकसो–(न०) १. किसी स्थान व प्रदेश का मापसर आलेखन। २. पृथ्वी के किसी भाग या खगोल का चित्र। मानचित्र। ३. रेखाचित्र। आकृति। ४. चालढाल। ५. दशा। ६. सांचा।

नकंट–(वि०) १. निष्कंटक। २. निर्विघ्न। वाधा रहित।

नकाम–दे० निकाम।

नकामो–दे० निकामो।

न का–(अव्य०) नहीं तो।

नकार–(न०) १. नहीं का वोध कराने वाला शब्द। २. अस्वीकृति। ३. 'न' वर्ण।

नकारणो–(क्रि०) १. हुंडी को स्वीकार नहीं करना। २. अस्वीकार करना। नकारना। ३. 'नहीं' कहना। किसी काम या वात को मान्य नहीं रखने का उत्तर देना।

नकारो–(वि०) १. निकम्मा। दे० नाकारो।

नकी–दे० नक्की।

नकीव–(न०)१.राजा या धर्माचार्य की सभा में या उनकी सवारी के आगे उनके विरुद, उपाधि आदि की घोषणा करने वाला व्यक्ति। २. मुनादी सुनाने वाला व्यक्ति। ३ छड़ीदार। ४. कड़खेत।

न कू–(अव्य०) १. कोई नहीं। २. कुछ भी नहीं। ३. नहीं।

नकूचो–(न०) १. अँकुस। अँकोड़ा। २. सांकल अटकाने का कोंढ़ा। कुंडा।

नकेल-*(ना०)* १. ऊंट के नाक को छेद कर डाला जाने वाला लकड़ी का एक उपकरण, जिसमें मोहरी (रस्सी) बंधी रहती है।

नकेवळो-दे० निकेवळो।

नकै-*(क्रि०वि०)* ['कनै' का वर्ण व्यतिक्रम] पास। निकट। नजदीक।

न को-*(अव्य०)*१. कोई नहीं। २. नहीं।

नकोर-*(वि०)* १. अखंडित। २. नया। ३. बिना फलाहार का (उपवास)।

नक्की-*(वि०)* १. खरा। पक्का। दृढ़। २. जिसका निर्णय हो गया हो। निर्णीत। निश्चित। ३. ठीक। ४. नाक से संबंधित।

नक्कीफूंक-*(ना०)* पूंगी आदि मुंह से बजाये जानेवाले फूंक वाद्यों की स्वरगति बंद नहीं होने देने के लिए नाक से श्वास को खींच कर मुंह से जारी रखी जाने वाली श्वासक्रिया।

नक्र-*(न०)* मगरमच्छ।

नक्षत्र-*(न०)*१. तारा। २. कृतिका, रोहणी आदि २७ नक्षत्रों में से प्रत्येक।

नक्षत्रधारी-दे० नखतधारी।

नख-*(न०)* १. नाखून। नख। २. अल्ल। उपगोत्र।

नख आवध-*(न०)*शेर, चीता, बिल्ली, कुत्ता आदि तीक्ष्ण नखों वाला कोई हिंसक जानवर। नखायुध।

नखत-*(न०)* १. नक्षत्र। २. तारा।

नखतमिण-*(न०)* नक्षत्रमणि। सूर्य।

नखतर-*(न०)* नक्षत्र। (अश्विनी, भरणी आदि २७ नक्षत्र)।

नखतरी-*(वि०)* शुभ नक्षत्र में जन्म लेने लेने वाला। भाग्यशाली। नक्षत्रधारी।

नखताळी-*(ना०)* नक्षत्रावलि। नक्षत्रपँक्ति।

नखतेत-*(वि०)* नक्षत्रधारी। भाग्यशाली।

नखतेस-*(न०)* नक्षत्रेश। चंद्रमा।

नखत्र-*(न०)* नक्षत्र।

नखनिवाणो-*(वि०)* बहुत कम गरम। साधारण गरम (पानी)।

नखर-*(न०)* नख। नाखून। दे० निखर।

नखरधर-*(न०)* नख वाले हिंसक पशु। मांसाहारी पशु।

नखरादार-*(वि०)* नखरा वाला।

नखराळी-*(वि०)*१.नखरे वाली। २.शृंगार चेष्टा वाली। शौकीन।

नखराळो-*(वि०)* १. नखरे बाज। नखरा करने वाला। २. शौकीन।

नखरो-*(न०)* १. नखरा। विलास चेष्टा। हावभाव। २. शृंगारिक चेष्टा। ३. बनावटी चेष्टा। ४. बनावटी इनकार।

नखलियो-*(न०)*१. स्त्री के पांव की अंगुली में पहिना जाने वाला एक छल्ला। २. वीणा आदि तार वाद्यों को बजाने के लिए तर्जनी अंगुली में पहिना जाने वाला लोहे के तार का गूंथा हुआ एक छल्ला। मिजराब। ३. सुथार का एक औजार।

नखलो-*(वि०)* [मूल शब्द 'कनलो'। ध्वनि भेद रूप 'खनलो' का मेवाड़ी वर्ण व्यक्तिक्रम] पास। निकट का।

नख-सिख -*(न०)*१. पैर के नाखून से लेकर सिर की शिखा तक के सभी अंग। २. शरीर के सभी अंगों का वर्णन। ३. सभी अंगों की सुन्दरता और उनके शृंगार का वर्णन। *(वि०)* समस्त। सभी।

नखावणो-*(क्रि०)* १. डलवाना। २. फिकवाना। ३. रखवाना। ४. दूर करवाना। बाजू पर रखवाना। ५. अंदर डलवाना।

नखायुध-दे० नख आवध।

नखावध-दे० नख आवध।

नखी-*(न०)* १. नखायुध। २. सिंह। ३. चीता। ४. तीक्ष्ण नखों वाला पशु।

नखीतळाव-*(न०)* आबू पर्वत पर का एक पवित्र रमणीय तालाब।

नखेद–*(वि०)* १. नीच। २. लुच्चा। ३. बदमाश। ४. अशुभ। ५. दूषित। निषिद्ध। *(न०)* निषेध। अभाव। रुकावट।

नखै–*(क्रि०वि०)* [मूल शब्द 'कनै' का ध्वनि भेद रूप 'खनै' का वर्ण व्यतिक्रम] पास। निकट। कनै।

नखोद–*(न०)* १. सत्यानाश। उच्छेद। २. वंशनाश। कुलोच्छेद।

नखोदियो–*(वि०)* १. जिसका वंशोच्छेदन हो गया हो। निर्वंश। २. विनाशकारक। ३. अशुभ। ४. एक गाली।

नखोरियो–*(न०)* नाखून की खरोंच। नख-क्षत।

नग–*(न०)* १. कोई एक वस्तु। अदद। नग। २. एक का परिमाण। इकाई। ३. नगीना। रत्न। ४. मोती। ५. पर्वत। ६. वृक्ष। ७. संतान। ८. कुपुत्र। ९. कुपात्र। १०. हाथी। ११. सर्प। १२. पाँव। पैर। १३. आठ की संख्या का वाचक।

नगटाई–दे० नकटाई।

नगटी–दे० नकटी।

नगटो–दे० नकटो।

नगद–*(वि०)* रोकड़। नकद।

नगदनाणो–*(न०)* रोकड़ी मिलकत। रोकड़े रुपये। तैयार रुपये।

नगद नारायण–*(न०)* १. नकद रकम। २. रुपया।

नगदी–*(ना०)* १. रुपया। २. मालमत्ता। *(वि०)* नकद।

नगपति–*(न०)* १. हिमालय पर्वत। २. सुमेरु पर्वत। ३. कैलाश पर्वत। ४. आबू पर्वत। ५. ऐरावत।

नगर–*(न०)* १. बड़ी वस्ती वाला स्थान। शहर। २. शहर का मुहल्ला।

नगर नायका–*(ना०)* वेश्या। रंडी। पातर। नगर नायिका।

नगरनारी–*(ना०)* वेश्या। रंडी। पातर।

नगरसेठ–*(न०)* १. नगर का प्रधान धनाढ्य सेठ। २. वह जिसे नगर सेठ की उपाधि प्राप्त हो। ३. दातृत्व और उदारता आदि गुणों से समलंकृत व्यक्ति।

नगराज–*(न०)* १. हिमालय पर्वत। २. सुमेरु पर्वत। ३. अर्बुद गिरि। आबू पर्वत। ४. बड़ा पर्वत।

नगरी–*(ना०)* १. नगर। शहर। २. छोटा नगर। *(वि०)* नगर का। शहरी।

नगवै–दे० नगपति।

नगाधिप–*(न०)* १. हिमालय। २. आबू पर्वत।

नगारखानो–*(न०)* १. देवमन्दिर या किले आदि का वह स्थान जहां नियत समय पर नौवत नगाड़ा बजाया जाता है। २. वह स्थान जहां वाद्य सामग्री रखी रहती है।

नगारची–*(न०)* नौवत-नगाड़ा बजाने वाला। ढोली।

नगारावंद–*(वि०)* जिसको अपनी सवारी के आगे नगाड़ा बजाने का अधिकार प्राप्त हो।

नगारी–*(ना०)* १. शहनाई गायन के साथ बजाई जाने वाली नौवत में बड़े नगाड़े के साथ बजाई जाने वाली छोटी नगाड़ी। २. नगारची।

नगारा-निसाण–*(न०)* १. वह नगाड़ा और झंडा जो राजा तथा महन्त की सवारी के आगे रहता है। २. नगाड़ा और झंडा।

नगारो–*(न०)* नगाड़ा। धौंसा। दुंदुभि। धूंसो।

नगाँपत–*(न०)* १. नगपति हिमालय। २. आबू पर्वत।

नगाँवै–दे० नगपति।

नगीनो–*(न०)* १. नगीना। रत्न। २. नागौर नगर का साहित्यिक नाम।

नजीकी-*(वि०)* नजदीकी । पास का । निकटवर्ती । समीपस्थ ।
नजीर-*(न०)* उदाहरण ।
नजोरी-*(वि०)* जिस पर अपना जोर नहीं चले । जिसमें अपनी मजबूरी हो । विवश । *(ना०)* १. विवशता । मजबूरी । २. कमजोरी । असामर्थ्य । ३. अशक्ति ।
नट-*(न०)* १. रस्सी पर चलने या नाचने वाली एक जाति । २.बाजागर । ३.अभिनेता । ४. एक राग ।
नटकळा-*(ना०)*नट की कला अथवा विद्या ।
नटखट-*(वि०)* १. चालाक । धूर्त्त । २. चंचल । ३. शरारती ।
नटणी-*(ना०)* १. नटने का भाव । २. नट की स्त्री । नटी ।
नटणो-*(क्रि०)*१. नटना । इनकार करना । २. कह कर मुकर जाना । नटना ।
नटनागर-*(न०)* श्रीकृष्ण ।
नटबाजी-*(ना०)* १. नट का खेल । २. नट की कला । ३. चालाकी ।
नटराज-*(न०)*१. श्रीकृष्ण । २. महादेव ।
नटवर-*(न०)* श्रीकृष्ण ।
नटवर-नागर-*(न०)* श्रीकृष्ण ।
नटविद्या-दे० नटकळा ।
नटाटूट-*(क्रि०वि०)*नहीं रुक कर । निरंतर ।
नटेसर-*(न०)* शिव । नटेश्वर ।
नठोर-*(वि०)* जो समझाने पर भी नहीं समझे ।
नड़-*(न०)* १. मोटी रस्सी । २. चमड़े की रस्सी । ३. गर्दन । ४. धड़ । कबध । ५. झरना । ६. पर्वतीय माला । ७. विघ्न ।
नड़णो-*(क्रि०)* १. रुकावट होना । रुकना । २. विघ्न करना । ३. प्रतिकूल होना । ४. रुकावट डालना । रोकना । ५. विघ्न डालना ।
नडर-दे० निडर ।
नड़ी-*(ना०)* १. चमड़े की रस्सी । नाड़ी । २. नस । रग ।
नढाळो-*(वि०)* १. अरक्षित । २. ढाल रहित । ३. व्यवस्था रहित । ४. ढंग बिना का ।
नणद-*(ना०)* पति की बहन । ननद ।
नणदल-दे० नणद ।
नणदी-दे० नणद ।
नणदीबाई-दे० नणद ।
नणदोई-*(न०)* ननद का पति । पति का बहनोई ।
नणदोतरी-*(ना०)* ननद की पुत्री । पति की बहिन की बेटी ।
नणदोतरो-*(न०)* ननद का पुत्र । पति की बहिन का बेटा ।
नणदोती-दे० नणदोतरी ।
नणदोतो-दे० नणदोतरो ।
नत-*(अव्य०)* नतो । नहीं तो । *(वि०)* १. झुका हुआ । २. विनीत । ३. उदास । ४. दे० नित ।
नतमाथ-*(वि०)* नत मस्तक ।
नताळ-दे० निराताळ ।
नतांगणि-*(ना०)* स्त्री । नारी । नतांगी । नतांगिनी ।
नतीजो-*(न०)* परिणाम । फल ।
नत्रीठ-*(न०)* १. एक बाजा । २. नगाड़ा । ३. घोड़ा । ४. वीर पुरुष । ५. युद्ध । ६. प्रहार । *(वि०)* १. निडर । निर्भय । २. भयंकर । ३. तेज । *(क्रि०वि०)* जोर से । वेग से ।
नत्रीठणो-*(क्रि०)* १. नगाड़ा बजाना । २. तेज गति से चलना । ३. भागना ।
नत्रीठा वाहण-*(न०)* १. बहुत तेज गति से चलने वाला वाहन । २. अश्वरथ ।
नत्रीठो-*(न०)* १. घोड़ा । २. युद्ध । ३. योद्धा । ४. बाजा । *(वि०)* १. तेज गति से चलने वाला । २. वीर । ३. भयंकर । ४. अपार । ५. निर्भय । ६. अखूट । *(क्रि०वि०)* बेरोक-टोक ।

वाणी-(ना०) आकाशवाणी । नभो-वाणि । देव वाणी ।

भाव-दे० निभाव ।

म-(ना०) १. मास के (कृष्ण और शुक्ल) दोनों पक्षों का नौवां दिन । नौमी । नवमी । २. सील । आर्द्रता ।

नमक-(न०) लवण । लूण ।

नमक-हराम-(वि०) १. सरकश । अधर्मी । २. कृतघ्न ।

नमकहरामी-(वि०) १. कृतघ्न । २. अधर्मी । (न०) १. कृतघ्नता । २. अधर्म ।

नमकहलाल-(वि०)स्वामीनिष्ठ । वफादार ।

नमण-(न०) १. तोलने में कुछ अधिक । २. तराजू में तोलते समय वस्तु की ओर झुकता पलड़ा । ३. झुकाव । ४. नमस्कार । प्रणाम । नमन ।

नमणो-(क्रि०) १. वंदन करना । प्रणाम करना । नमन करना । २. झुकना । नत होना । ३. नम्र होना । ४. हार मानना । ५. नर्म होना । ६. शरण में आना । (वि०) विनीत । नम्र । विनय ।

नमतो-(वि०) १. नीचे की ओर झुकता हुआ । नीचा । झुका हुआ । २. एक ओर का नीचे झुकता हुआ (तराजू का पलड़ा) । ३. नर्म । नरम । ढीला ।

नमदो-(न०) १. एक प्रकार का जमाया हुआ रेशमी या ऊनी कपड़ा । नमदा । २. मखमल का गद्दा ।

नमन-(न०) नमस्कार ।

नमः-(अव्य०) १. नमन हो । २. नमन है । यथा—श्री गणेशायनमः

नमस्कार-(न०)झुक कर किया जाने वाला अभिवादन । प्रणाम ।

नमस्ते-(अव्य०) आपको नमस्कार ।

नमाज-(ना०) इसलामी मजहब के अनुसार की जाने वाली खुदा की बंदगी ।

नमाड़णो-(क्रि०) १. झुकाना । नमाना । २. विनीत बनाना । ३. नीचा दिखाना । ४. मजबूर करना । बाध्य करना । ५. प्रवृत्त करना । ६. झुका या दबा कर अधीन करना ।

नमाणो-दे० नमाड़णो ।

नमावणो-दे० नमाड़णो ।

नमियो-(न०) नौवें दिन का मृतक कर्म ।

नमूनेदार-(वि०) १. उत्तम । २. नखरे बाज ।

नमूनो-(न०) १. बानगी । बानगी । २. खाका । प्रतिरूप । ढाँचा । ३. उपमा । ४. उदाहरण । ५. वह जिसके रूप गुण आदि का अनुकरण किया जाय । आदर्श । नमूना ।

नमो नारायण-(अव्य०)संन्यासी को किया जाने वाला नमस्कार ।

नमोरो-(न०) बादशाह द्वारा आदेशित वह फरमाना (परवाना) जिस पर नौ मुहरें (शाही मुद्रा के ठप्पे) अंकित होते थे । नौमुहरा । नव मोहरा । पक्का फरमान । नव मोहरो ।

नयण-(न०) नयन । आंख ।

नयर-दे० नगर ।

नयो-दे० नवो ।

नर-(न०) १. पुरुष । मनुष्य । मर्द । २. पुरुष जाति का कोई प्राणी या वस्तु । ३. पुरुष जाति वाचक शब्द । पुल्लिंग । (वि०) १. वीर । बहादुर । २. श्रेष्ठ ।

नरक-(न०) १. धर्मशास्त्र के अनुसार वह स्थान जहां मरने के बाद पापियों की आत्मा को अपने कुकर्मों का फल भोगने के लिये जाना पड़ता है । दोजख । २. बहुत गंदा स्थान । ३. विष्ठा । मल । पाखाना ।

नरकवाड़ो-(न०) बहुत गंदा स्थान ।

नरकुट-(न०)नाक । नासिका ।

नरेस-वरम्म-(न०) १.स्वामी के लिए कवच रूप। २. राजा का अंग रक्षक।

नरेहण-(वि०) १. निष्कपट। निश्छल। २. निष्कलंक। निर्दोष। ३. निष्पाप। ४. नहीं हटने वाला। पीछे पाँव नहीं देने वाला। ५. जबरदस्त। (न०) राजा। (अव्य०) राजा से। राजा के द्वारा।

नरेहर-दे० नरेहण।

नळ-(न०) १. पेट की बड़ी आँत। २. पेडू की एक नाड़ी। ३. धातु की एक लंबी नलिका। नल। २. एक वाद्य। ५. सिंह आदि हिंसक पशुओं के आगे के पाँव। ६. उनके आगे के पाँव की लंबी हड्डी। ७. घोड़े के अगले पाँव की लंबी हड्डी। ८. घोड़े का नथुना। ९. निषध देश के राजा का नाम जो दमयंति का पति था। १०. सेतु बाँधने वाला राम की सेना का एक वानर।

नळकी-दे० नळी।

नलज-(वि०) निर्लज्ज। बेशर्म।

नलजियो-(वि०) लज्जित नहीं होने वाला। निर्लज्ज।

नलजो-(वि०) निर्लज्ज। नलज।

नळणी (ना०) नलिनी। कमलिनी।

नळराजा-दे० नळ सं० ९

नळियो-(न०) १. नलिका। छोटा और पतला नल। २. मिट्टी का पका हुआ अर्द्धवृत्ताकार टुकड़ा जो घर की छाजन पर दो थेपड़ों की संधि ढकने के लिये रखा जाता है। नरिया। अर्द्धवृत्ताकार खपड़ा। ३. मूंठ या तिमणिया नामक स्त्रियों के गले में पहनने के गहने का वह भाग जो नलिका के जैसा होता है और जिसमें डोरी डाल कर गले में पहना जाता है।

नळी-(ना०) १. घुटने से नीचे की पाँव की हड्डी। २. कपड़ा बुनने की नली। ३. नलिका। भूंगळी। ४ एक फूंक वाद्य। तुरही।

नळो-(न०) १. सिंह, चीते आदि का अगला पाँव। २. हिंसक पशुओं के अगले पाँव की लंबी हड्डी। ३. घोड़े के अगले पाँव की लंबी हड्डी। ४. नाला। ५. पर्वत।

नव-(वि०) १. नया। २. चार और पाँच। नौ। (न०) नौ की संख्या। '९'

नवकार मंत्र-(न०) जैन धर्मनुयायियों के जपने का एक मंत्र। जैनों का प्रसिद्ध नमस्कार मंत्र।

नवकारसी-दे० नोकारसी।

नवकुळी-(वि०) नौ कुलों वाले (नाग)।

नवकोट-(न०) १. मारवाड़ देश। २. मारवाड़ के प्रसिद्ध नौ किले। ३. एक ऐतिहासिक नगर का नाम।

नवकोटी-(वि०) नौ प्रसिद्ध दुर्गों वाला (मारवाड़ देश)।

नवकोटी मारवाड़-(न०) नौ प्रसिद्ध और बड़े दुर्गों वाला मारवाड़ राज्य।

नवखंड-(न०) पौराणिक भूगोल के अनुसार पृथ्वी के नव खंड। २. समस्त पृथ्वी। ३. जंबूद्वीप के नौ खंड।

नवगढ-(न०) मारवाड़ के प्रसिद्ध नव किले।

नवग्रह-(न०) फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।

नवग्रही-दे० नोघरी।

नवचंडी-(ना०) १. नौ दुर्गा। २. नौ दुर्गाओं का पूजन, होम इत्यादि।

नवजणो-(न०) गाय को दुहते समय उसके पिछले पाँवों को बाँधने की रस्सी। छांद। नोई। पगहा। नोजणो। नूजणो।

नवतर-(न०) जोतने से छोड़ा जाने वाला (बुवाई नहीं किया जाने वाला) खेत का कुछ भाग।

नवलखो–*(वि०)* नौ लाख के मूल्य का। २. बहुमूल्य।

नवल वनी–*(ना०)* नव वधू। नवोढ़ा। २. दुलहिन। **बींनणी**।

नवल वनो–*(न०)* दुलहा। वर। **बींद**। **बींदराजा**।

नवलासी–*(वि०)* १. नया। नवीन। २. मनोहर। सुन्दर। ३. नित्य नवीन क्रीड़ा करने वाला। *(ना०)* १. नव यौवना। २. नर्तक वाला।

नवलायक–*(वि०)* १. नालायक। अयोग्य। २. वदमाश। ३. मूर्ख।

नवलो–*(वि०)* नया। नवल। **नवो**।

नववीसी–दे० नववीसी।

नवसदी मुनसव–*(अव्य०)* एक वादशाही मनसव।

नवसर-हार–*(न०)* नौ लड़ी हार। नौलड़ा हार।

नव सहँसो–*(अव्य०)* १. राठौड़ क्षत्रियों की एक उपाधि। राठौड़ वंश का राजपूत। २. नौ सहस्र गाँवों का अधिपति राव मालदेव। राव मालदेव का विरुद।

नवसादर–*(न०)* नौसादर।

नवसाहसो–दे० नवसहँसो।

नवहथी–*(ना०)* १. सिंहनी। शेरनी। २. २. ऊंटनी। ३. तलवार। *(वि०)* १. नौ हाथ की लंबी। २. वीरांगना।

नवहथो–*(न०)* १. सिंह। शेर। २. ऊंट। *(वि०)* १. नौ हाथ का लंवा। २. वीर। वहादुर।

नवंवर–*(न०)* ईसवी सन् का ग्यारहवाँ महीना। नोवेम्वर।

नवाई–*(ना०)* १. नवीनता। नयापन। २. आश्चर्य। अचरज। *(वि०)* १. अद्भुत। अपूर्व। अनोखा। २. नवीन। नवाई।

नवाजणो–दे० निवाजणो।

नवाजस–दे० निवाजस।

नवाजूना–*(वि०)* नये तथा पुराने जानने योग्य (समाचार)।

नवाजूनी–*(ना०)* उथलपाथल। बहुत बड़ा परिवर्तन।

नवाण–दे० निवाण।

नवाणू–दे० निनाणू।

नवात–*(ना०)* **मिसरी**। मिश्री। **साकर**।

नवादी–दे० नवाई।

नवादू–*(अव्य०)* १. नये सिरे से। फिर से। *(वि०)* १. नया। नवीन। २. दूसरा। और।

नवानी–*(वि०)* नयी। नवीन।

नवायो–दे० निवायो।

नवाँ गढ़–*(न०)* १. नौ कोटि मारवाड़। २. नौ ही गढ़। *(वि०)* नौ प्रसिद्ध गढ़ों वाला।

नवाँ-री-तेरह–*(अव्य०)* सामर्थ्य से करना हो सो। जो कर सकने की ताकत हो सो।

नवार–दे० निवार।

नवि–*(अव्य०)* नहीं।

नवी–*(वि०)* नयी। नवीन। *(ना०)* नव वधू।

नवीजूनी–दे० नवाजूनी।

नवीत–*(क्रि०वि०)* निर्भय।

नवीसंदो–*(न०)* १. आय-व्यय और क्रय-विक्रय आदि का हिसाव लिखने वाला व्यक्ति। मुनीम। २. हिसाव किताव का विशेषज्ञ व्यक्ति। गणितज्ञ। ३. लिखने पढ़ने में माहिर। ४. लिपिक। लेखक।

नवेली–*(ना०)* नव वधू।

नवेसर–*(अव्य०)* १. पुनः। और। २. नये सिरे से। ३. नये ढंग से।

नवेसरू–*(अव्य०)* दे० नवेसर।

नवो–*(वि०)* १. नया। नवीन। २. तुरंत का। ताजा। ३. अपरिचित। न जाना हुआ। ४. अनुभव हीन। ५. कोरा। अछूता। ६. स्थानापन्न। वदला हुआ।

(अव्य०) १ पुन । फिर । २. पुनरपि । फिर से । फिर भी ।

नवो जूनो–*(वि०)* १. नया और पुराना । २. पहिले और पीछे का । ३. सबका सब । ४. जो हो सो ।

नवोड़ी–*(वि०)* १. जो नयी हो । २. अभी तैयार की हुई ।

नवोड़ो–*(वि०)* १. जो नया हो । २. नया । ३. अभी तैयार किया हुआ ।

नवोढा–*(ना०)* १. नव विवाहिता । स्त्री । वधू । २. एक नायिका ।

नवो नकोर–*(वि०)* बिलकुल नया ।

नव्वो–*(न०)* १. नौ का अंक, '९' । २. सौ वर्ष की संवत् गणना में आने वाला नौवाँ वर्ष ।

नशो–दे० नसो ।

नश्तर–दे० नस्तर ।

नश्वर–*(वि०)* नाश होने वाला ।

नष्ट–*(वि०)* १. जिसका नाश होगया हो । २. खराब । नीच । ३. मृत ।

नष्टभ्रष्ट–*(वि०)* सर्वथा नष्ट । बरबाद । पायमाल ।

नस–*(ना०)* १. शरीर की रक्तवाहिनी । नलिका । २. स्नायु । रग । ३. नाड़ी । ४. गरदन । ५. पत्ते का रेशा । ६. नस्य । सूंघनी । ७. मूत्रेन्द्री । लिंगेन्द्री ।

नसकोर–*(ना०)*१. नाक में से खून निकलने वाला रक्त । नकसीर । २. नाक से खून निकलने का रोग । ३. नाक का छेद ।

नसणो–*(क्रि०)* नाश होना ।

नसल–*(ना०)* १. नस्ल । वंश । कुल । २. संतान ।

नसलंब–*(न०)* ऊंट ।

नसलंबड़–*(न०)* ऊंट ।

नसीत–*(ना०)* १. नसीहत । सीख । २. उपदेश ।

नसीब–*(न०)* भाग्य । प्रारब्ध ।

नसीबदार–*(वि०)* दे० नसीबधारी ।

नसीबधारी–*(वि०)* नसीब वाला । भाग्यशाली । नसीबवर ।

नसीहत–दे० नसीत ।

नसै-गोसै–*(वि०)* १. प्रामाणिक रूप से । सत्यता पूर्वक । २. सविवरण और सप्रमाण ।

नसो–*(न०)* १. नशा । कैफ । मद । २. मादक द्रव्य । ३. धन, विद्या, पद का अभिमान ।

नस्तर–*(न०)* १. एक शस्त्र । २. चीरा-फाड़ी करने का डॉक्टर का एक औजार । शस्त्र-चिकित्सा का तेज-चाकू । नश्तर ।

नह–*(अव्य०)* नहीं ।

नहचळ–*(वि०)* निश्चल ।

नहचेण–दे० नहचै ।

नहचै–*(क्रि०वि०)* १. निश्चय ही । अवश्य । २. निःसंदेह । *(न०)* १. निर्णय । २. पक्का विचार ।

नहचो–*(न०)* १. संदेह रहित ज्ञान । निश्चय । २. धीरज । ३. भरोसा । ४. संतोष ।

नहणो–*(क्रि०)*१. नाथना । वश में करना । २. बनाना । ३. रखना । धरना । ४. धारण करना । थामना । ५. ग्रहण करना । लेना । *(न०)* बढ़ई का एक औजार । नहियो ।

नहरणी–*(ना०)* नख काटने का औजार । नहरनी । नखहरणी ।

नहराळ–*(न०)* १. तीक्ष्ण नाखूनों वाला मांसाहारी पशु या पक्षी । २. मांसाहारी पशु पक्षियों के तीक्ष्ण नख । *(वि०)* तीक्ष्ण नाखूनों वाला ।

नहराळो–*(न०)* तीक्ष्ण नखों वाला मांसाहारी पशु या पक्षी ।

नहंग–दे० निहंग ।

नहियो–दे० नहणो ।

नहितर–*(अव्य०)* १. नहीं तो । २. वरना । अन्यथा । ३. अथवा । किम्वा ।

नहि तो–दे०नहितर ।

नहीं-(अव्य०) न । ना । निषेध । नहीं ।
नहींतर-दे० नहितर ।
नहोरियो-दे० नोरियो ।
नहोरो-(न०)१.अनुरोध । निहोरा। आग्रह। २. मनुहार । खुशामद । ३. प्रार्थना । मिन्नत । ४. बाड़ आदि से घिरा हुआ पशुओं को बांधने का स्थान । बाड़ा । ५. दीवाल से घिरा हुआ चौक या खुला मकान जहां बड़े भोज के बनाने और ज्योनार की व्यवस्था होती है ।
नंखावणो-दे० नखावणो ।
नंग-(न०) १. कोई एक वस्तु । अदद । नग । २. एक का परिमाण । इकाई । ३. जवाहरात । रत्न । ४. मोती । ५. संतान । ६. कुपुत्र । ७. कुपात्र । ८. पाँव । (वि०) १. नंगा । विवस्त्र । २. निर्लज्ज । ३. एकाकी ।
नंग-धड़ंग-(वि०) १. नंगा । विवस्त्र । २. मुँहफट । ३. बदमाश । ४. बेशर्म । ५. विधुर । ६. संतान रहित । ७. घर या कुल में एक मात्र । एकाकी ।
नंगळियो-(न०) मिट्टी का छोटा जलपात्र ।
नंगो-(वि०) विवस्त्र । नंगा । नागो ।
नँढकी-(वि०) नन्ही । छोटी । (ना०) १. नवजात कन्या । बच्ची । २. छोटी लड़की ।
नँढको-दे० नँढियो ।
नँढियो-(वि०) नन्हिया । नन्हा । छोटा । (न०) १. बच्चा । शिशु । २. छोटा लड़का ।
नंढो-(वि०) नन्हा । छोटा ।
नंद-(वि०) नौ । ९ । (न०) १. श्रीकृष्ण के पालक पिता । २. एक राग । ३. हर्ष । आनंद । ४. वणिक । बनिया । ५. पुत्र । ६. मगध राजाओं की एक उपाधि । ७. एक निधि ।
नंद कुँवर-(न०) १. श्रीकृष्ण । नंदकुमार श्रीबालकृष्ण । २. छोटे बच्चे के प्यार का नाम । शिशु । बच्चा ।
नंदगिर-(न०) १. जूनागढ़ का प्राचीन नाम । २. गिरनार पर्वत । ३. अर्बुद गिरि । आबू का पर्वत । ४. गिरिराज । गोवर्धन पर्वत ।
नंदण-(न०) पुत्र । नंदन ।
नंदणो-(क्रि०) १. दीपक बुझाना । २. दीपक का गुल होना । बुझना । ३. आनंदित होना । ४. निंदा करना ।
नंदनवन-(न०) नंदन नाम का इन्द्र का उद्यान ।
नंदनंदण-(न०) श्रीकृष्ण ।
नंद-राणी-(ना०) नद की पत्नी । यशोदा ।
नंदा-(ना०) १. दुर्गा । पार्वती । २. प्रतिपदा, छट तथा एकादशी ।
नंदी-(ना०)१. नदी । २. शिव का वाहन । वृषभ । बैल । नांदियो ।
नंबर-(न०)१. संख्या । अंक । २. क्रमांक ।
नंबरी-(वि०) १. नंबर वाला । २. अच्छा । श्रेष्ठ ।
ना-(अव्य०) नहीं । ना । मत । नकार । (प्रत्य०) संबंध सूचक 'नो' विभक्ति का बहुवचन रूप । के । जैसे—आभ ना बादळा ।
नाइक-दे० नायक ।
नाई-(न०)१. हज्जाम । नापित । खवास । २. नाई जाति । (ना०) खेत में हल चलाते समय हल के पास बाँधी जाने वाली बाँस की लँबी नालिका, जिसमें बोने के लिए बीज डाले जाते हैं । (भू०क्रि०) 'न+आई' का एक काव्य रूप ।
नाई वर-(न०) जिसके नाई बंधी रहती है वह हल ।
नाऊं-(अव्य०)'ना+आऊं' का छोटा रूप । नहीं आऊं ।
नाऔलाद-(वि०) निस्संतान ।

नाक-(न०) १. नाक । नासिका । २. इज्जत । आबरू । ३. स्वर्ग । ४. आकाश । ५. प्रतिष्ठा या शोभा की वस्तु ।

नाक कटणो-(मुहा०) बेइज्जत होना ।

नाक काटणो-(मुहा०) बेइज्जत करना ।

नाक वढियो-(वि०) १. नाक कटा । २. नकटा । ३. निर्लज्ज ।

नाक वढणो-दे० नाक कटणो ।

नाक वाढणो-दे० नाक काटणो ।

नाक में सळ घालणा-(मुहा०) १. मना करना । २. घृणा करना । ३. नाराज होना । ४. अनिच्छा प्रगट करना ।

नाकावंधी-(ना०) १. प्रवेश द्वार पर बैठाई गई चौकी । २. नाका पर लगाई जाने वाले प्रवेश वंधी । ३ किसी रास्ते या प्रवेश द्वार में आगे बढ़ने की मनाई ।

नाकाविल-(वि०)अयोग्य । नकामो ।

नाकार-(क्रिoवि०) नहीं, ना । (वि०) १. निकम्मा । विना काम का । २. कृपण । व्यर्थ । बेकाम । (न०) नहीं का उच्चारण ।

नाकारणो-दे० नकारणो ।

नाकारो-(न०) 'न' या 'नहीं' का वोध कराने वाला शब्द । नकार । इनकार । (वि०) निकम्मा । अयोग्य । नकारा । (अव्य०) नहीं ।

नाकी-(ना०) १. अंगरखी-कचुंकी आदि में वटन डालने का नकुआ । २. प्रतिष्ठा । इज्जत ।

नाको-(न०) १. छेद । २. सुई या सुए का छेद । नक्का । नाका । ३. कर वसूल करने की चौकी । ४. गाँव में प्रवेश करते समय लिया जाने वाला कर । चुंगी । राहदारी । नकुआ । ५. छेह । अंत । ६. गली या वाजार का मोड़ या प्रवेश द्वार । नुक्कड़ । ७. किनारा । ८. प्रमुख स्थान ।

नाकोर-दे० नसकोर ।

नाखणो-दे० नांखणो ।

नाखत-(न०) नक्षत्र । तारा । ग्रह ।

नाखत्र-दे० नखत्र ।

नाखप-(वि०) अनावश्यक ।

नाखित-दे० नाखत ।

नाखून-(न०) नख ।

नाग-(न०) १. सर्प । २. हाथी । ३. एक प्राचीन जाति । ४. पर्वत । ५. सीसा नाम की एक धातु । ६. देवों की एक जाति । ७. आठ का संख्यासूचक शब्द ।

नाग कन्या-(ना०) नाग जाति की कन्या ।

नागकेसर-(ना०) १. एक वनस्पति । २. कवावचीनी । शीतलचीनी ।

नागछोर-दे० अफीम ।

नागछोळ-दे० नागछोर ।

नाग-भाग-(न०) अफीम ।

नागड़ी-(वि०)१. वदमाश । २. धूर्त्त(स्त्री)।

नागड़ो-(वि०) १. वदमाश । धूर्त्त । २. नंगा ।

नागण-(न०) नागिन ।

नागणी-दे० नागण ।

नागणेचो-(ना०) राठौड़ों की कुल देवी ।

नागदमण-(न०) १. श्रीकृष्ण द्वारा किया जाने वाला काली नाग का दमन । २. कवि सांया भूला के एक काव्य ग्रन्थ का नाम ।

नागदहो-(न०) १. मेवाड़ में एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान । २. नागदहा गाँव के नाम पर मेवाड़ के राणाओं की एक उपाधि ।

नागपहाड़-(न०) अजमेर के निकट आडावाला (अरावली) का एक भाग जिसमें से लूणी नदी निकलती है ।

नागपांचम-(ना०) १. नाग पूजा की भादी वदी पंचमी । नागपंचमी । २. नाग पूजा का एक त्योहार ।

नागफणी (ना०) १. एक वनस्पति । २. एक आभूषण ।

नागफीण–(न०) अफीम ।

नागफैण–दे० नागफीण ।

नागम–(ना०) छुट्टी । अवकाश । नागा । (वि०) अनजान । अज्ञान । बेखबर ।

नागर–(न०) १. नागर जाति । २. नागर जाति का व्यक्ति । ३. ब्राह्मणों की एक शाखा । ४. श्रीकृष्ण । ५. सोंठ । (वि०) १. नागर संबंधी । २. नागर जाति का । सभ्य । चतुर ।

नागर अपभ्रंश–(ना०) अपभ्रंश भाषा का एक प्रकार ।

नागरमोथो–(ना०) एक वनस्पति । नागरमुस्ता ।

नागरवेल–(ना०) १. पान वेलि । तांबूललता । २. तांबूल ।

नागराज–(न०) शेष नाग ।

नागरी–(ना०) १. भारत की वह प्रमुख लिपि जिसमें संस्कृत, मराठी, राजस्थानी व हिन्दी लिखी जाती हैं । देव नागरी लिपि । २. नगर में रहने वाली स्त्री । ३. विद्वान स्त्री । ४. चतुर स्त्री ।

नागरीदास–(न०) भक्त कवि किशनगढ़ नरेश सांवत सिंह का काव्य नाम ।

नागलोक–(न०) पाताल ।

नागा–(ना०) १. छुट्टी । तातील । नागम । २. अनुपस्थिति । ३. अंतर । बीच । ४. नंगे रहने वाले साधु । ५. वैरागी साधुओं की एक शाखा । ६. एक जाति जो आसाम में रहती है ।

नागाई–(ना०) १. बदमाशी । लुच्चाई । २. धूर्त्तता । ३. निर्लज्जता । ४. हठीला पन । हठ । जिद ।

नागाणो–(न०) १.नागौर शहर । २. नागा समूह । ३. हाथियों का झुंड । (वि०)१. नग्न । नंगा । २. निर्लज्ज ।

नागाणराय–दे० नागणेची ।

नागाणो–(न०)१.नागौर नगर । २. नागौर नगर का साहित्यिक तथा लोकभाषी नाम ।

नागी–(वि०) १. वस्त्र हीना । आवरण हीन । नंगी । २. निर्लज्जा । ३. झगड़ालू । ४. कुलटा ।

नागीराँड–(ना०) १. एक गाली (स्त्री को)। २. छिनाल स्त्री ।

नागो–(वि०) १ विवस्त्र । २. नंगा । निर्लज्ज । नलजो । २. झगड़ालू । (न०) वैरागी साधु ।

नागो-तड़ंग–(वि०) बिलकुल नंगा । वस्त्रहीन । साव नागो ।

नागोतूत–(वि०) बेशर्म । बिल्कुल बेशर्म ।

नागोबूच–(वि०)१.नीच और दुष्ट । २.बदमाश । ३.निर्लज्ज । ४. जिसके परिवार में कोई नहीं हो । कुटुम्बहीन ।

नागोभूंगो–(वि०) १. बिल्कुल नंगा । २. बेइज्जत । ३. निर्धन ।

नागोर–(न०) मारवाड़ का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर ।

नागोरण–(ना०) राजस्थान के बीकानेर, शेखावाटी आदि उत्तर पूर्व के प्रदेशों में दक्षिण पश्चिम में नागौर की ओर से चलने वाली वर्षा अवरोधक वायु ।(वि०) १. नागोर संबंधी । २. नागौर की (ना०) ।

नागोरी–(वि०) १. नागौर प्रदेश की नस्ल का (प्रसिद्ध बैल) । २. नागौर के नाम से प्रसिद्ध (कारीगरी में प्रसिद्ध मुसलमानी लुहार) । ३. नागोर का रहने वाला । नागौर निवासी । ४. नागौर संबंधी । (ना०) १. नागौर के आसपास का का प्रदेश । २. हथकड़ी-बेड़ी (नागौर में बनने के कारण) ।

नागोरी-गहणो–(न०) हथकड़ी-बेड़ी ।

नागो-लुच्चो–दे० नागो-बूच ।

नाच-(ना0) १. नाचने की क्रिया या भाव। नृत्य। २. नाचने का ढंग। ३. [illegible]।

नाचकूद-(ना0) १. उछलकूद। २. [illegible]। ३. नाच-गाना।

नाचणी-(ना0) १. नाचने वाली। नृत्य करने वाली। २. नाच करने वाली दासी। नर्तकी। ३. वेश्या। पातुर। ४. विवाहादि में गाये जाने वाले मांगलिक गीतों [illegible] की एक नायिका।

नाचणियो-(न0) नाचने वाला। नर्तक।

नाचणो-(क्रि0) १. नृत्य करना। नाचना। २. गोलाई में घूमना। चक्कर फिरना। गोल गोल फिरना। ३. क्रोध या भय से ऊपर-नीचा होना।

नाचरणो-(क्रि0)[न + आचरणो] आचरण नहीं करना।

नाचीज-(वि0) १. तुच्छ। २. निकम्मा। निकामो।

नाचेत-(वि0) बेहोश। अचेत।

नाछूटकै-(अव्य0) विवशता से। लाचारी से।

नाज-(न0) १. अनाज। अन्न। २. नखरा ३. घमंड।

नाजर-दे0 नाजिर।

नाजरपाट-(न0) एक प्रकार का कपड़ा।

नाजायज-(वि0) १. अवैध। २. अनुचित।

नाजिम-(न0) एक सरकारी प्रबंधकर्ता।

नाजिर-(न0) १. पुरुष भेष में रहनेवाला हिजड़ा। खोजा। २. निरीक्षक। ३. हाकिम। ४. अंतःपुर का खोजा कार्यकर्ता।

नाजुक-(वि0) १. अशक्त। कमजोर। २. २. निकृष्ट। खराब। ३. सूक्ष्म। पतला। ४. कोमल। सुकुमार। ५. तनिक आघात से फूट जाने वाला। ६. अवनत। पतित। ७. [illegible]। ८. [illegible]।

नाजू-(ना0) १. [illegible]। २. [illegible]। ३. [illegible]। ४. [illegible] की एक नायिका।

नाजोगो-(वि0) १. [illegible]। [illegible]। २. [illegible]।

नाजोगी-दे0 [illegible]।

नाजोगो-(वि0) १. [illegible]। [illegible]। २. [illegible]। ३. [illegible]।

नाट-(न0) १. नृत्य। २. नखरा। ढोंग। ३. [illegible]। ४. [illegible] का निकालने पर [illegible] रहने वाला उसका बचा भाग। फोग। ५. [illegible]। ६. इनकार।

नाटक-(न0) १. रंगशाला में किया जाने वाला [illegible] घटनाओं का प्रदर्शन। २. दृश्य काव्य। ३. ढोंग।

नाटणो-(क्रि0) १. नटना। इनकार करना। २. कहकर मुकर जाना। ३. नृत्य करना।

नाट थाट-(न0) १. नृत्य का थाट। नृत्योत्सव। २. ठाट का अभाव। ३. संकट।

नाट वाळ-(वि0) कपूत।

नाटसाल-(वि0) १. जबरदस्त। शक्तिशाली। २. वीर। योद्धा। ३. खटकने वाला।

नाटारंभ-(न0) १. नृत्य। २. नृत्य नाटक।

नाटी-(वि0) १. जबरदस्त। शक्तिशाली। २. ठिगनी। ठींगणी।

नाटो-(वि0) १. जबरदस्त। २. ठिगना। ठींगणो। ठींगो।

नाठ-(ना0) भाग-दौड़।

नाठणो-(क्रि0) १. भागना। भाग जाना। २. दौड़ना।

नाड-(न0) १. छोटी नाडी। छोटा जलाशय। नाडको। २. पानी का खड्डा।

नाड़-(ना0) १. नस। २. नाड़ी। नब्ज। ३. गरदन।

नाथद्वारो-(न०) मेवाड़ में वल्लभ सम्प्रदाय के श्रीनाथजी का प्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ स्थान। नाथद्वारा। श्रीनाथ द्वारा।

नाथपूत-(न०) कामदेव।

नाथवाळो-(वि०) पराधीन। (न०) ऊंट, बैल आदि जानवर।

नाथी-रो-वाड़ो-(अव्य०) १. सबके लिये खुला स्थान। बेरोक-टोक आने-जाने की जगह। २. व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा।

नाद-(न०) १. अव्यक्त शब्द। २. अनहद शब्द। ३. ध्वनि। शब्द। ४. शहनाई, नफीरी आदि का ध्वनि-संगीत। ५. संगीत। ६. हरिण के सींग का एक वाद्य। सींग। सींगड़ी। ७. भारी शब्द। ८. घोर शब्द। गर्जन। ९. गर्व। अभिमान।

नादम-(वि०) १. निकम्मा। बेदम। २. अशक्त।

नादरणो-(क्रि०) [न+आदरणो] १. प्रयत्न नहीं करना। २. आदर नहीं करना। ३. स्वीकार नहीं करना।

नादान-(वि०) १. नासमझ। मूर्ख। २. छोटी ऊमर का।

नादारी-(ना०) १. ऋणमोचनाशक्ति। दिवालियापना। २.दिवाला। ३.गरीबी। ४. कायरता।

नादिरशाह-(न०) एक जुल्मी बादशाह।

नादिरशाही-(ना०) १. जुल्मी राज्य कारोबार। २. भारी अंधेर या अत्याचार। ३. निरंकुश शासन।

नादेत-(वि०) १. सर्वसाधारण द्वारा प्रशंसित। २. कीर्तिमान। यशस्वी।

नानक-(न०) सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक महात्मा।

नानक पंथ-(न०) गुरू नानक द्वारा स्थापित पंथ।

नानकपंथी-(न०) गुरु नानक के मत का अनुयायी।

नानकशाही-(न०) १. नानकशाह का शिष्य। २. मँगता। (वि०) झगड़ाखोर।

नानड़ियो-(न०) छोटा बच्चा। (वि०) छोटा।

नानड़ी-(ना०) छोटी बच्ची। (वि०) छोटी।

नानम-दे० नैनम।

नानाणो-(न०) ननिहाल।

नाना-सुसरो-(न०) पति के लिये पत्नी का और पत्नी के लिये पति का नाना। ननियाससुर। नानीसुसरो।

नानी-(ना०) माता की माता। मातामही। नानी।

नानी सासरो-(न०) पति या पत्नी के लिये एक दूसरे का ननिहाल।

नानी-सासू-(ना०) पति या पत्नी की नानी सास।

नानी-सुसरो-दे० नाना-सुसरो।

नानेरो-दे० नानाणो।

नानो-(न०) बाप का ससुर। माता का पिता। मामा का बाप। मातामह।

नान्हड़ियो-(वि०) छोटा। नन्हा। (न०) छोटा बच्चा।

नान्हो-दे० नैनो।

नाप-(न०) लम्बाई-चौड़ाई का परिमाण।

नापट-(न०) नाई। हज्जाम। (तुच्छता सूचक)।

नापटियो-दे० नापट।

नापणो-(क्रि०) किसी स्थान या वस्तु की लबाई-चौड़ाई निश्चित करना। नापना। २. (न+आपणो) नहीं देना।

नापो-दे० नाप।

नाफवतो-(वि०) अशोभनीय।

नाफिकरो-(वि०) किसी प्रकार की बिना चिंता वाला। चिंता नहीं करने वाला। बेफिकर।

नाफो-(न०) कस्तूरी से भरी हुई एक गाँठ जो हिमालय के कस्तूरी-मृग की नाभि में उत्पन्न होती है।

नाबालिग-(वि०) जो वयस्क न हो। अव-यस्क।

नाबालिगी-(ना०) १. वयस्क न होने की अवस्था। २. राज्य की वह अवस्था जिसमें उत्तराधिकारी अवयस्क होने से उसका शासन प्रभु-राज्य चलाता है।

नाबूद-(वि०) १. नष्ट। ध्वस्त। २. समूल उच्छेद। निर्मूल।

नाभ-दे० नाभि।

नाभल-(वि०) अच्छा नहीं। बुरा। खराब।

नाभादास-(न०) भक्तमाल आदि ग्रंथों के रचयिता एक प्रसिद्ध रामभक्त कवि।

नाभि-(ना०) १. नाभि। धुन्नी। ढोंडी। हूँडी। २. मध्य भाग। नाह। ३. केन्द्र भाग। (वि०) १. मध्य। २. केन्द्र।

नाभी-दे० नाभि।

नामोम-(क्रि०) अनजान। बेमालूम।

नाम-(न०) १. नाम। संज्ञा। २. धाक। ३. ख्याति। प्रसिद्धि। ४. स्मृति। यादगार। ५. कीर्ति। यश। ६. अर्थ। माने। मतलब। (अव्य०) १. अर्थात्। यथा—वीर नाम भाई। तळो नाम कूओ।

नामगो-(न०) नाम। ख्याति।

नामजाद-(वि०) १. ख्याति प्राप्त। नामी। प्रसिद्ध। २. अपने नाम से प्रसिद्ध। मशहूर।

नामजादिक-दे० नामजाद।

नामजादो-दे० नामजाद।

नामजोग-(वि०) जिसका नाम लिखा गया हो उसी को मिले (हुंडी के रुपये)। शाह-जोग।

नाम-ठाम-(न०) पता-ठिकाना। सरनामो।

नामणो-(क्रि०) १. नमाना। २. झुकाना। ३. प्रवाहित करना। ४. पानी को धार के रूप में गिराना। पानी डालना। ५. तरल पदार्थ का उँडेलना। ६. नमना। झुकना। ७. वंदन करना।

नामदार-(वि०) प्रसिद्ध। नामी।

नामधारी-(वि०) १. नाम के अनुसार गुण कर्मों से रहित। केवल नाम वाला। २. ढोंगी। पाखंडी।

नामना-(ना०) १. नाम। २. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. कीर्ति। यश। नामवरी।

नाम-निसाण-(न०) निशान। चिन्ह। नाम-निशान।

नाम-मात्र-(अव्य०) १. मात्र नाम के लिये। २. कहने भर का। (वि०) बहुत थोड़ा। अत्यल्प।

नाम-माळा-(ना०) १. नामों का कोश। नामों की तालिका। २. पर्यायवाची शब्दकोश।

नामरजी-(ना०) अनिच्छा।

नामरद-(वि०) १. नामर्द। नपुंसक। २. डरपोक।

नामरदी-(ना०) १. नपुंसकता। २. कायरता।

नामराशि-(न०) एक ही नाम के दो या दो से अधिक व्यक्ति। (वि०) १. एक नाम वाले। २. एक राशि के नाम वाले।

नाम लेवो-(न०) उत्तराधिकारी। (वि०) १.याद करने वाला। २.नाम लेने वाला।

नामवर-(वि०) प्रसिद्ध।

नामवरी-(ना०) १. ख्याति। प्रसिद्धि। २. कीर्त्ति।

नामसाद-(वि०) विख्यात।

नामशेष-(वि०) १. मरा हुआ। मृत। २. नष्ट। ध्वस्त।

नामंजूर-(वि०) १. अस्वीकृत। नामंजूर। २. अमान्य।

नायाणो–दे० नागाणो ।

नायो–(अव्य०) न+आयो (न=नहीं+आयो=आया) का छोटा रूप । नहीं आया । (न०) १. बढ़ई का औजार । २. बैलगाड़ी के पहिये के बीच में रहने वाला छेद युक्त एक लोहे का उपकरण जिसमें धुरी रहा करती है । पहिये की नाभि ।

नार–(ना०) नारी । स्त्री ।

नारकियो–दे० नारो ।

नारकी–(ना०) नरक । (वि०) १. नरक का । २. नरक भोगी ।

नारको–दे० नारो ।

नारगी–दे० नारकी ।

नारद–(न०) १. एक प्रसिद्ध देवर्षि । २. चुगलखोर । ३. झगड़ा लगाने वाला ।

नारदो–(न०) १. शौचालय । मलमूत्र करने का स्थान । २. गंदे पानी का नाला ।

नारस–(वि०) नीरस ।

नारंग–(न०) १. खून । रक्त । २. तलवार । ३. नारंगी ।

नारंगफळ–(न०) १. कुच । स्तन । २. नारंगी ।

नारंगी–(ना०) नारंगी । संतरा ।

नाराच–(न०) १. तलवार । २. बाण । ३. एक छंद ।

नाराज–(ना०) १. तलवार । नाराच । २. बाण । नाराच । ३. भाला । (वि०) अप्रसन्न । रुष्ट । नाखुश ।

नाराजगी–दे० नाराजी ।

नाराजी–(ना०) अप्रसन्नता । नाखुशी ।

नाराट–(न०) तीर । बाण ।

नाराण–दे० नारायण ।

नारायण–(न०) १. शेषशायी विष्णु भगवान । २. ईश्वर ।

नारायणी–(ना०) १. लक्ष्मी । २. श्रीकृष्ण की सेना ।

नारियण–दे० नारायण ।

नारियळ–(न०) नारियल ।

नारी–(ना०) स्त्री । नारी । महिला ।

नारी जाति–(ना०) १. स्त्री जाति । २. स्त्रीलिंग (व्याकरण) ।

नारू–(न०) १. नाई, धोबी, बारी, बढ़ई आदि नौ जातियों के समूह का नाम । पौनी । २. विवाह आदि अवसरों पर नेग लेने वाला । पौनी । ३. एक रोग जिसमें घाव में से सूत जैसा लंबा सफेद कीड़ा निकलता है । । नहरुआ । **बाळो** ।

नारेळ–दे० नाळेर ।

नारेळी–दे० नाळेरी ।

नारो–(न०) १. जवान और मजबूत बैल । २.छोटे कद का जवान बैल । **नारकियो** ।

नाळ–(ना०) १. तोप । २. बंदूक । ३. बंदूक की नली । नाल । ४. पगडंडी । ५. दो पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग । घाटी । ६. मार्ग । ७. गली । ८. जंगली चींटियों के आने जाने का मार्ग । ९. **परनाल** । पनाला । १०. जीना । सीढ़ी । ११. कमल की डंडी । १२. रस्सी जैसी वह नली जो गर्भस्थ शिशु की नाभि से और गर्भाशय से जुड़ी रहती है । १३. **आँवळ** । जेरी । १४. भग । योनि । १५. छत की खपरेलों की संधि पर लगाया जाने वाला नरिया । १६. जूते के एड़ी के नीचे या घोड़े के खुर के नीचे जड़ा जाने वाला अर्द्धचंद्राकार लोह खंड । १७. आग में फूंक देने की नली । १८. पशुओं को औषधि देने की एक नलिका । ढरका । १९. नाग । २०. लोक व्यवहार । २१. जाति व्यवहार । २२. वंश परम्परा । २३. समूह । २४. पखावज जैसी एक ढोलक । (वि०) पुराना ।

नाळ-पलाण [illegible] ।

नाळ[illegible]-(वि०) पुराना ।

नाळ-कटाई-(ना०) १. नवजात शिशु की नाभि में लगी हुई नाल के काटने की क्रिया। २. नाळ काटने का नेग या उपहार।

नाळकी-(ना०) १. एक प्रकार की पुरानी छोटी पालकी। (वि०) पुरानी। [illegible]।

नाळको-(वि०) पुराना।

नाळचो-(न०) टीन में से तेल निकालने की एक विशेष नलिका।

नाळछेद-(न०)डिंगल-काव्य में जथाओं का निर्वाह नहीं होने का एक दोष।

नाळणो-(क्रि०) १. देखना। निहारना। २. खोजना। तलाश करना।

नाळनिहाव-(न०) तोप या बंदूक के छूटने का शब्द।

नाळबंद-(वि०) १. नाल बांधने वाला। अश्वपादुकाकार। २. नाल बंधा हुआ। (न०) अश्ववैद्य।

नाळबंदी-(ना०) नाल बांधने का काम। (न०) एक कर।

नाळ भाखर-(न०) मेवाड़ का एक पर्वत।

नाळभ्रष्ट-(वि०) १. मांस, मदिरा सेवन करने के कारण जाति से बहिष्कृत। जाति च्युत। २. आचार, नीति और धर्म से गिरा हुआ। धर्म मार्ग से च्युत। ३. पतित। अधम।

नालंदा-(न०) १. बिहार का एक प्राचीन नगर। २. बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र। ३. एक प्रसिद्ध विद्यापीठ, जो पटना से ३० कोस दक्षिण में था।

नालायक-(वि०) १. अयोग्य। २. मूर्ख।

नाळिकेर-(न०) नारियल। नारिकेल।

नालिश-(ना०) १. फरियाद। २. शिकायत। ३. अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध न्यायालय में फरियाद करना। मुकदमा।

नाळी-(ना०) १. [illegible]। २. [illegible]। ३. [illegible] [illegible]। ४. [illegible]। ५. नाली। मोरी।

नाळेर-(न०) [illegible] १. नारियल। गोला। २. [illegible] का एक प्रथा [illegible] किसी लड़के के साथ सगाई करने [illegible] सगाई के निमित्त [illegible] नारियल, कुंकुम और मुद्रा [illegible] पुरोहित के हाथ भेजता है।

नाळेरियो-(न०) १. नारियल। २. नारियल की टोपसी का बना हुआ टुकड़ा (वि०) १. नारियल का। २. नारियल जैसा। ३. नारियल का बना हुआ।

नाळेरी-(ना०) १. नारियल की खोपड़ी २. नारियल की कटोरीनुमा आधी खोपड़ी। ३. नारियल की खोपड़ी का बना हुआ टुकड़ा। (वि०) १. नारियल का। २. नारियल का बना हुआ।

नाळेरी-पूनम-(ना०) सावन की पूनम का रक्षाबंधन पर्व। रक्षाबंधन का दिन राखड़ी पूनम। श्रावणी।

नाळो-(न०) १. बरसात आदि का पानी बहने का नाला। जलमार्ग। २. रस्सी की जैसी एक नलिका जो गर्भस्थ शिशु की नाभि से और गर्भाशय से जुड़ी रहती है। नाळ। ३. मृत्युरोदन। क्रंदन।

नाव-(ना०) नौका। किश्ती। पोत।

नावड़-(ना०) १. नापसंदी। २. अनिच्छा अरुचि। ३. दौड़। पहुँच ४. शक्ति पहुंच।

नावड़णो-(क्रि०) १. आगे जाने वाले को पहुँचना। पहुँचना। पकड़ना। पूगणो २. पूरा करना। सम्पन्न करना। ३ मुकाबला करना। ४. मन नहीं लगना ५. नहीं पहुँच सकना। नहीं पूगना। ६ नहीं आना। ७. समझ नहीं सकना।

नावड़ियो–*(न०)* नाव चलाने वाला । केवट ।

नावणियो–*(वि०)* १. न+आवणियो । (न=नहीं+आवणियो=आने वाला) का छोटा रूप । नहीं आने वाला । २. नहीं पहुँच सकने वाला ।

नावण–दे० नायण ।

नावणो–*(अव्य०)*१. न+आवणो (=नहीं आना का छोटा रूप) नहीं आना । २. नहीं पहुँचना ।

नावसी–*(भू०कृ०)*१. 'न+आवसी' (=नहीं आयेगा) का छोटा रूप । २. बेवसी ।

नावाकब–*(वि०)* अजान । अपरिचित । नावाकिफ ।

नावारस–*(वि०)* नावारिस । लावारिस ।

नावियो–*(क्रि०भू०का०)* नहीं आया ।

नाविक–*(न०)* नाव चलाने वाला । मल्लाह । नावड़ियो ।

नावी–*(न०)* नाई । नापित ।

नावेड़ो–*(न०)* नाखून और हाथ की अंगुली के बीच में होने वाला व्रण ।

नाश–*(न०)* १. संहार । ध्वंश । २. विगाड़ ।

नाशवान–*(वि०)* नाश होने वाला । नश्वर ।

नास–*(ना०)* १. नस्य । सूंघनी । नसवार । छींकणी । २. नाक । नासिका । ३. नाश । संहार । ४. नाक का छेद । नसकोर ।

नासका–दे० नास १ व २

नासणो–*(क्रि०)* १. नाश होना । २. नाश करना । ३. भाग जाना ।

नासत–दे० नास्ति ।

नासतो–दे० नास्ति ।

नासफरिम–*(न०)* १. शत्रु का नाश नहीं हो सकना । शक्तिशाली होने पर भी शत्रु का नाश नहीं किये जा सकने की निराशाजनक स्थिति । २. आज्ञा भंग । *(अव्य०)* रिपु का सफाया नहीं होने पर *(वि०)* वह जिसकी आज्ञा भग हो ।

नास-भाग–*(ना०)* १. भाग-दौड़ । भगदड़ । २. घबराहट । हलचल । ३. त्वरा ।

ना-समझ–*(वि०)* १. जिसे समझ न हो । निर्बुद्धि । अबूझ । नासमझ । २. बेवकूफ ।

नासमझी–*(ना०)* मूर्खता । बेवकूफी । अबूझपणो ।

नासवान–दे० नाशवान ।

नासा–*(ना०)* नाक । नासिका ।

नासिका–दे० नासका ।

नासूर–*(न०)* १. नाक और गले का एक रोग । २. गहरा और छोटा घाव जिससे बराबर मवाद निकलता रहता है । नाड़ीव्रण ।

नास्ति–*(अव्य०)* अविद्यमानता । अभाव । नहीं ।

नास्तिक–*(वि०)* ईश्वर, परलोक और कर्म-फल आदि नहीं मानने वाला ।

नास्ती–दे० नास्ति ।

नास्तो–*(न०)* कलेवा । नाश्ता । झारो ।

नाह–*(न०)* १. पति । वर । २. नाथ । ईश्वर । ३. राजा । *(अव्य०)* नहीं ।

नाहक–*(अव्य०)* १. विना हक । नाहक । अन्याय से । २. अकारण । नाहक । व्यर्थ । निष्प्रयोजन ।

नाहका–*(ना०)* सूंघने की महीन तंवाकू । तपकीर । छींकणी । सूंघणी ।

नाहण–*(ना०)* नहान । स्नान ।

नाह दुनियाण–*(न०)* १. राजा । २. ईश्वर ।

नाहर–*(न०)* शेर । सिंह ।

नाहरी–*(ना०)* सिंहनी । शेरनी । सिंही । नाहर की मादा । सिंघणी ।

नाहा-दौड़–*(ना०)*१. भाग-दौड़ । २.त्वरा । शीघ्रता । नास-भाग ।

प्रचलित होना । ६. सिद्धि होना । हल होना । ७ प्रकाशित होना । ८. अपने को बचा जाना । ६. बिकना । खपना । १०. रोकड़ (नकद) अथवा माल की लेन देन का हिसाब होने पर रुपये किसी के जिम्मे ठहराना । ११. उधार बाकी रहना । १२. अपने उद्गम से प्रादुर्भूत होना । १३. पार होना ।

निकळंक–*(वि०)*ष्कंलक । २.निर्दोष । ३. निष्पाप । *(ना०)* १. विष्णु का कल्कि अवतार । कल्कि भगवान । २. निकंलक देव । ३. परब्रह्म ।

निकळाणो–*(क्रि०)* निकलवाना ।

निकळावणो–दे० निकळाणो ।

निकसणो–दे० निकळणो ।

निकसारो–*(न०)* १. निकलने की क्रिया या भाव । निकाल । निकास । २. निगर्मन । ३. छेद । ४. द्वार । दरवाजा । ५. मार्ग । रास्ता ।

निकंट–दे० नकंट ।

निकाम–*(वि०)* १. निकम्मा । २. व्यर्थ । बेकार । ३. जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो । निष्काम ।

निकामो–*(वि०)* १. निकम्मा । बेकार । २. खराब । ३. अन-उपयोगी । *(अव्य०)* अकारण । व्यर्थ । नाहक ।

निका–*(ना०)* १. इस्लामी शादी । २. मुसलमान का विवाह ।

निकारो–*(वि०)* निकम्मा ।

निकाळ–*(वि०)* १. निकलने की क्रिया या भाव । २. निकलने का मार्ग । निकास । निष्कासन । ३.गमन । ४.उपाय । युक्ति । ५. बचाव का उपाय । ६. परिणाम । फल । निचोड़ । ७. फैसला । निवटारा । निवेड़ा । ८. बिकरी । ९. वंश का मूल ।

निकाळणो–*(क्रि०)* १. जाने देना । निकालना । हटाना । २.अंदर से बाहर लाना । ३. दूसरी वस्तु में मिली हुई वस्तु को अलग करना । ४. नौकरी से हटाना । ५ बेचना । खपाना । ६. हल करना । सिद्ध करना । ७. रकम जिम्मे ठहरना । ८. निभाना । ९. पार करना । १०. प्रकाशित करना । ११. प्रचलित करना । १२. बाकी निकालना ।

निकाळो–*(न०)* एक मयादी बुखार । आंत्रिक ज्वर ।

निकास–*(न०)* १. निकाल । निष्कासन । २. माल का किसी दूसरी जगह में चालान या बिकरी । बाहर की खरीददारी । ३. वंश का मूल स्रोत । ४. माल बाहर भेजने पर लगने वाला कर ।

निकासी–*(ना०)* १. निकलने या निकालने की क्रिया या भाव । निस्सरण । २.किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने पर लगने वाला कर । ३. किसी वस्तु को बाहर भेजने का आज्ञापत्र । निकालने की आज्ञा । परवाना । ४.यात्रा के निमित्त प्रस्थान । ५. पाणिग्रहणार्थ कन्या के घर जाने वाली वर की सवारी के साथ प्रस्थान करने वाली बारात की शोभा यात्रा । वर की शोभा यात्रा । वर की शोभा-यात्रा का निकलना ।

निकिरियावरो–*(वि०)* जिसके घर में किरियावर (क्रियावर) का काम न हुआ हो । उदारता व यश के कामों से रहित ।

निकुटणो–*(क्रि०)* १. पत्थर तराशना । पत्थर पर खुदाई करना । २. पाषाण की मूर्त्ति तैयार करना । ३. निर्माण करना । घड़ना ।

निकुटी–*(न०)*१. शिला-शिल्पी । संगतराश । सिलावट । २. पाषाण की मूर्त्ति बनाने वाला । मूर्त्तिकार । *(भू०क्रि०)* निर्माण की । बनाई । तराशा । तराशा दिया ।

निकूल–*(न०)* पास । समीप । निकट ।

का (कोई काम)।

निखग–दे० निगग।

निखरणो(क्रि०) १. साफ होना। निर्मल होना। २. नितरना। नितरणो।

निखरी–दे० निखरो स० ४।

निखरो–(वि०) १. साफ। स्वच्छ। २. सुंदर। ३. जो खरा न हो। खोटा। खराब। ४. घी में तली हुई भोजन सामग्री। सखरो का उलटा।

निखाद–(न०) १. एक जाति। निषाद। २. भील। ३. संगीत में सबसे ऊँचा स्वर। 'नी' स्वर। निषाद।

निखार–(वि०) १. क्षार रहित। २. स्वच्छ। निर्मल। ३. बिना मिलावट का। (न०) निर्मलता। स्वच्छता।

निखारणो–(क्रि०) १. धोना। साफ करना। निर्मल करना। २. और स्वच्छ बनाना। मठारणो।

देना। ५. बिताना। ६. निर्गमन करना। निकलना। ७. बीतना। गुजरना। ८. दूर करना। ९. टालना।

निगमागम–(न०) १ वेद-शास्त्र। २. वेद आदि शास्त्र।

निगरभर–(वि०) १. बहुत अधिक। २. सघन। पूर्णतृप्त। ४. निमग्न। तन्मय। ५. पूरा भरा हुआ।

निगराणी–(ना०) निरीक्षण। देखरेख। सम्हाल।

निगळणो–(क्रि०) मुँह में रखकर पेट में उतारना। लीलना। निगलना। **गिटणो**।

निगाळ–(न०) निगलने की क्रिया।

निगाळी–(ना०) १. वंशसूची। २. निगलने की क्रिया। ३. गला। ४. नली। ५. हुक्के की नली। नैं।

निगुणी–(वि०) १. जिसमें कोई गुण न हो। मूर्ख। २. उपकार वृत्ति से रहित।

निगुणो (वि०) १. जो उपकार को न माने। कृतघ्न। २. जिसमें कोई गुण न हो। मूर्ख।

निगुरो–(वि०) १. विना गुरु का। जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। अदीक्षित। २. जो उपकार को न माने। कृतघ्न। ३. उपकार के बदले अपकार करने वाला। ४. निर्लज्ज।

निगेम–(वि०) १. निष्पाप। २. निष्कलंक। ३. शांत। धीर। (न०) निगम। वेद।

निगै–(ना०) १. दृष्टि। नजर। २. सम्हाल। देखरेख। ३. सावधानी। ४. सुधि। खबर। ५. खोज। तलाश। ६. परख। पहचान। जाँच।

निगैदास्ती–(ना०) देखरेख। सम्हाल। निगरानी।

निगोट–(वि०) १. ठोस। २. दृढ़। ३. विना फलाहार का (उपवास)। निराहार।

निगोटव्रत–(न०) पानी, फल आदि पिये खाये बिना किया जाने वाला उपवास। विना फलाहार का उपवास।

निगोड़ो–(वि०) १ अभागा। २. दुष्ट।

निघंटु–(न०) यास्क रचित वैदिक शब्दों का संग्रह। वैदिक कोश।

निघात–(वि०) १. युद्ध में जिसके प्रहार नहीं लगा हो। जिसके घाव नहीं लगे हों। २. जो घात से बच गया है। ३. अधिक। बहुत। ४. विशेष। ५. भयानक। ६. जबरदस्त। (न०) १. प्रहार चोट। २. भेद। रहस्य। (क्रि०वि०) शीघ्रता से।

निघोट–दे० निगोट।

निचलो–(वि०) नीचे का।

निचाई–(ना०) १. नीचे होने का भाव। नीचापन। २. नीच होने का भाव। नीचपन।

निचिंत–दे० नचित।

निचिंताई–(ना०) निश्चिंतता।

निचिंतो–(वि०) दे० नचित।

निचीतो–दे० नचित।

निचोड़–(न०) १. कथन का सारांश। खुलासा। २. तत्व। सार। ३. निष्कर्ष। परिणाम। ४. वह अंश जो निचोड़ने से निकले।

निचोड़णो–दे० निचोवणो।

निचोणो–दे० निचोवणो।

निचोर–(अव्य०) गौर वर्ण का विशेपण शब्द। यथा—गोरो निचोर।

निचोवणो–(क्रि०) १. निचोड़ना। निचोना। २. सार निकालना। ३. शोपण करना। ४. धन हरण करना।

निछटणो–दे० नीछटणो।

निछरावल–(ना०) १. न्योछावर की हुई वस्तु। नेग। २. न्योछावर।

निछावर–(ना०) १. न्योछावर। वारफेर। २. नेग। ३. उत्सर्ग। ४. इनाम।

निज–(सर्व०) खुद। स्वयं। (वि०) खुद का। अपना।

निजमंदिर–(न०) देवमदिर का वह मध्य गृह जिसमें देवमूर्ति प्रतिष्ठापित की हुई रहती है।

निजर–दे० नजर।

निजळ–(वि०) जल रहित। निर्जल।

निजारो–(ना०) १. आँख का इशारा। २. दृश्य। झाँकी। नजारा। ३. नजर।

निजी–(वि०) १. अपना। खुद का। २. व्यक्तिगत। प्राइवेट।

निजू–दे० निजी।

निजोखमो–(वि०) १. जिसमें किसी प्रकार की जोखिम न हो। आपत्ति रहित। २. हानि रहित।

निजोज–(न०) चाकर। सेवक।

निधि-(ना०) १. कुवेर के नौ प्रकार के रत्न। २. निधि। खजाना। भंडार। ३. नौ का संख्यासूचक शब्द।

निधुवन-(न०) १. रति। मैथुन। २. हंसी ठट्ठा। ३. कंपन।

निश्रसणो-दे० नीवसणो।

निनाण-दे० नैदाण।

निनाणू-(वि०) नव्वे और नौ। सौ में एक कम। (न०) ६६ की संख्या।

निनाद-(न०)१.शब्द। ध्वनि। २.गुंजार।

निनामी-(वि०) विना नाम की।

निनामो-(वि०) विना नाम का। गुमनाम। ननामो।

निपगो-दे० नपगो।

निपज-(ना०) उपज। पैदास। उत्पादन।

निपजणो-(क्रि०) १. उत्पन्न होना। उपजना। पैदा होना। २. परिणाम आना। ३. परिपक्व होना। ४. उन्नति करना। वढ़ना।

निपजाणो-दे० निपजावणो।

निपजावणो-(क्रि०) १. उत्पन्न करना। २. पकाना। परिपक्व करना। ३. वनाना।

निपट-(वि०) १. वेशर्म। निफट। २. वहुत। अधिक। (अव्य०) विल्कुल। सर्वथा। निपट। सरासर।

निपटणो-(क्रि०) १. शौचादि क्रिया से निवृत्त होना। निपटना। २. निवृत्त होना। निपटना। ३. समाप्त होना। वीत जाना। ४. निर्णीत होना। तय होना।

निपटाणो-दे० निपटावणो।

निपटारो-(न०) १. झगड़े का फैसला। २. पूरा होना।

निपटावणो-(क्रि०) १. झगड़े का फैसला करवाना। झगड़ा मिटाना। २. समाप्त करना। विताना।

निपतो-(वि०) विना पते का।

निपाड़णो-(क्रि०)१. निभाना। २. उठना। ३. उत्पन्न करना।

निपाणियो-(वि०) १. जहाँ पानी का अभाव हो। २. अशक्त। कमजोर। ३. नपुंसक।

निपात-(न०) १. वह शब्द जिसके वनने के नियम का पता न हो। नियम विरुद्ध वनावट वाला शब्द (व्याकरण) २. अनियमित रूप। ३. विनाश। मृत्यु। ४.अधःपतन। (वि०) विना पत्तों वाला।

निपापो-(वि०) पाप रहित। निप्पाप।

निपावट-(वि०) १. खराव। गंदा। भद्दा। २. निकम्मा। अनुपयोगी। ३. मंद। सुस्त। शिथिल। ४. अयोग्य। ५.सारा। (अव्य०) विल्कुल। निपट। कतई। पूरा-पूरा।

निपावणो-(क्रि०) १. उत्पन्न करना। २. वनाना। तैयार करना। ३. लिपवाना।

निपुण-(वि०) १. प्रवीण। दक्ष। २. अनुभवी। ३. योग्य।

निपूतो-(वि०) निपूता। निःसंतान। ना औलाद।

निपोंचियो-(वि०) असमर्थ। शक्तिहीन। परिश्रम करने की शक्ति से हीन।

निव-(न०) लिखने के लिये होल्डर (लेखनी) में डाली जाने वाली लोहे या पीतल की वनी चोंच।

निवटणो-दे० निपटणो।

निवटाणो-दे० निपटावणो।

निवटारो-दे० निपटारो।

निवटावणो-दे० निपटावणो।

निवळ-(वि०) निर्वल। अशक्त।

निवळाई-(ना०) अशक्ति। दुर्वलता। निर्वलता। नवळाई।

निवळो-(वि०) निर्वल। अशक्त।

निवहणो-दे० निभणो।

निबंध-(न०) १. प्रबंध । लेख । २. किसी विषय का सविस्तार विवेचन । ३. सहारा । आधार । ४. बंधन । ५. रोक । रोकथाम ।

निबंधणो-(क्रि०) १. निर्माण करना । २. एकत्रित करना । बांधना । दे० निमंधणो ।

निबापो-(वि०) जिसका पिता जीवित न हो ।

निबाहणो-दे० निभाणो ।

निबीह-(वि०) निर्भीक । निडर ।

निंबोळी-दे० नींबोळी ।

निभणो-(क्रि०) १. निभना । २. टिके रहना । ३. निर्वाह होना । ४. पोसाना ।

निभवो-(वि०) १. निर्भय । २. निभाव वाला । ३. क्षमता वाला ।

निभाउ-(वि०) १. निभाने वाला । २. क्षमाशील । ३. सहनशील । ४. निभ सके जैसा । ५. निभाने वाला । ६. काम चलाऊ ।

निभागो-(वि०) अभागा । निर्भागी ।

निभाणो-दे० निभावणो ।

निभाव-(न०) १. मेल-मिलाप । बनाव । २. मेल मिलाप की स्थिति । अनबन रहित स्थिति । ३. आधार । टिकाव । ४. भरण-पोषण । निर्वाह । गुजारा । ५. स्थिति और संबंध आदि बनाये रखने का काम ।

निभावणो-(क्रि०) १. निवाहना । निभाना । २. जैसे-तैसे निर्वाह करना । ३. ज्यों का त्यों बनाये रखना । चला लेना । निभा लेना । ४. किसी परम्परा को चलाये जाना । ५. पालन करना । पूरा करना । ६. पालन करना । पोषण करना ।

निर्भे-(वि०) १. निर्भय । निडर । २. निवाह । निर्वाह ।

निभ्रंत-(वि०) निर्भ्रान्त । भ्रांत रहित । भ्रम रहित ।

निमख-(न०) १. निमेष । पलक । आंख का झपकना । २. क्षण । पल । निमेष ।

निमटणो-दे० निपटणो ।

निमटाणो-दे० निपटाणो ।

निमत-दे० निमित्त ।

निमधणो-(क्रि०) १. रचना । बनाना । २. मन में धारण करना । मन में विचार लाना । ३. बाँधना । ४. इकट्ठा करना ।

निमंत्रण-(न०) १. किसी को अपने यहाँ बुलाने का अनुरोध । २. भोजन के लिये बुलावा । तेड़ो । नैतो । नूंतो । नोतो ।

निमंध-(न०) १. नियुक्त । मुकर्रर । २. निश्चय । ३. प्रबन्ध । ४. शर्त । ५. संबंध । ६. निर्माण । (वि०) १. निर्मित । २. बनावटी ।

निमंधणो-(क्रि०) १. मुकर्रर करना । नियत करना । २. नियुक्त करना । ३. शर्त करना । ४. बाँधना । ५. निश्चय करना । ६. प्रबंध करना । ७. संबंध स्थापित करना । ८. निर्माण करना । ९. उत्पन्न करना । १०. एकत्रित करना । संकलित करना ।

निमंसी-(वि०) मांस रहित । जैसे, घोड़ां री निमंसी नळी ।

निमाइत-(वि०) १. जिसके माता-पिता जीवित न हों । माता-पिता रहित । २. निर्माण करने वाला । निर्माण किया हुआ । ४. नियुक्त करने वाला । ५. नियुक्त किया हुआ ।

निमाड़ो-दे० नीवाड़ा ।

निमाणो-(वि०) १. निर्माल्य । अशक्त । २. निर्दय । क्रूर । ३. अपमानित । ४. निर्मित । (क्रि०) निर्माण कराना ।

निमायो-(वि०) मातृ हीन ।

निमिख–दे० निमख ।
निमित्त–(न०) १. कारण । हेतु । २. उद्देश । अभिप्राय । ३. बहाना । मिस ।
निमूळ–(वि०) मूल रहित । निर्मूल ।
निमूंछियो–(वि०) १. बिना मूंछ का । २. निर्बल । ३. स्त्रैण ।
निमेख–दे० निमख ।
निय–दे० निज ।
नियत–(वि०) १. नक्की । निश्चित । २. स्थापित । ३. मन का इरादा । आशय । नीयत । ४. उद्देश्य ।
नियम–(न०) १. धर्म, विधि आदि के द्वारा निश्चित आचरण के निश्चित सिद्धान्त । २. कानून । विधि । ३. रीति । चाल । ४. परम्परा । ५. नियंत्रण ।
नियमसर–(अव्य०) नियम के अनुसार ।
नियंता–(न०) ईश्वर । (वि०) नियंत्रण या नियमन करने वाला ।
नियंत्रण–(न०) १. नियमों में बांध कर रखना । २. शासन बंधन । ३. प्रतिबंध । कंट्रोल ।
नियाणी–दे० निहाणी ।
नियामत–दे० निआमत ।
नियारियो–(न०) सुनार, जड़िया या जौहरी की दुकान के नियार (कचरे) में से छांट कर माल निकालने वाला । नियारिया । न्यारियो ।
नियारो–(न०) सुनार, जड़िया या जौहरी की दुकान का कचरा या झाड़न । नियार । न्यारो । वरड़ो । (क्रि०वि०) न्यारा । अलग ।
नियोग–(न०) १. किसी स्त्री के पति द्वारा संतान न होने पर देवर या किसी उच्च कुल के वीर या विद्वान के साथ केवल संतान प्राप्ति के लिये किया जाने वाला शास्त्रोक्त विधि के अनुसार संबंध । २. आज्ञा । आदेश । ३. प्रयोग । उपयोग ।
निर–(अव्य०) 'रहित', 'बिना', 'बाहर' अर्थ बताने वाला एक उपसर्ग ।
निरकार–(वि०) १. बिना काम का । २. बेकाम । व्यर्थ । दे० निराकार ।
निरकुळ–(वि०) कुल रहित । अकुलीन ।
निरख–(न०) भाव । दर । मूल्य । मोल ।
निरखणो–(क्रि०) १. देखना । निरखना । निहारना । २. सूक्ष्मतापूर्वक देखना । निरीक्षण करना ।
निरगात–(न०) निराकार । परमात्मा ।
निरगुण–दे० निर्गुण ।
निरगुणी–(वि०) १. कृतघ्नी । २. गुण रहित । ३. अनाड़ी ।
निरजर–दे० निर्जर ।
निरजळ–दे० निर्जल ।
निरजळा-इग्यारस–(ना०) वह एकादशी या उसका उपवास जिसमें पानी भी नहीं पिया जाता । जेठ मास की सुदी एकादशी ।
निरजोर–(वि०) निर्बल ।
निरणी–(वि०) भूखी । निरन्ना ।
निरणो–(वि०) दिन उगने के बाद से कुछ भी नहीं खाया हुआ । निराहार । निरन्न । भूखा ।
निरत–दे० नृत । (वि०) १. लीन । मग्न । आसक्त । २. काम में लगा हुआ ।
निरतकर–(न०) नर्तक ।
निरतगार–(न०) नर्तक ।
निरतणो–(क्रि०) नाचना । नाचणो ।
निरति–(ना०) १. सुधि । खबर । पता । २. सम्हाल । ३. एक निष्ठा । ४. एक निष्ठ भक्ति । ५. प्रीति । अनुराग । ६. नैऋत्य कोण ।
निरतो–(वि०) १. कम । थोड़ा । २. आवश्यकतानुसार । ३. अनुरक्त । लीन । लगा हुआ । निरत । ४. खाली । ५. व्यर्थ । निरत ।

निरदई–दे० निर्दय।

निरदळण–(न०) नाश। निर्दलन। (वि०) नाश करने वाला।

निरदळणो–(क्रि०) नाश करना।

निरदावो–(न०) १. अभियोग को निरस्त करना। निरस्त अभियोग। २. जिस पर दावा किया गया हो, उस पर अपना किसी भी प्रकार का स्वत्व शेष नहीं रहने का लिखित पत्र। दावा उठाने का दस्तावेज। स्वत्व को छोड़ने का हस्तलेख। ३. नाएतराजी। ४. किसी प्रकार के स्वत्व से मुक्त रहना। हक नहीं लगाने या जमाने का भाव। ५. माया या प्रपंच से अलग रहना।

निरदुंद–(वि०) १. रागद्वेष, मानापमान इत्यादि द्वन्द्वों से रहित। निर्द्वंद्व। २. उपद्रव रहित। ३. जिसका विरोध करने वाला कोई न हो। (न०) शिव। महादेव।

निरदोख–(वि०) १. निर्दोष। बेगुनाह। २. बेऐब। दुर्गुण रहित।

निरदोस–दे० निरदोख।

निरदोसी दे० निरदोस।

निरधण–(वि०) १. पत्नी रहित। विधुर। २. निर्धन। गरीब।

निरधन–(वि०) गरीब। निर्धन।

निरधनियो–दे० निरधन।

निरधार–(न०)निर्धार। निश्चय। (अव्य०) निश्चय पूर्वक।

निरधारणो–(क्रि०)निर्णय करना। निश्चय करना। तय करना।

निरधुंध–(वि०) १. जो रागद्वेष, मानापमान, हर्ष शोक आदि से रहित हो। निर्द्वंद्व। २. स्वच्छ। निर्मल। ३. अविकारी।

निरनुनासिक–(वि०) जिसका उच्चारण नाक से हो। (व्या०)

निरपख–(वि०) निष्पक्ष।

निरपराध–(वि०)अपराध रहित। निर्दोष। बेकसूर।

निरपराधी–(वि०) अपराध रहित। बेकसूर।

निरफळ–(वि०) निष्फल। व्यर्थ। निफल।

निरबळ–दे० निर्बल।

निरबंध–(वि०) निर्बन्ध। बन्धन रहित। छूटा। आजाद।

निरबीज–(वि०) १. बीज रहित। वीर्यहीन। २. निर्वंश।

निरबुध्धी–(वि०) निर्बुद्धि। मूर्ख।

निरभख–(वि०) भूखा।

निरभय–दे० निर्भय।

निरभर–दे० निर्भर।

निरभागी (वि०) निर्भाग्य। अभागा।

निरभीक–दे० निर्भीक।

निरभेळ–(वि०)बिना मिलावट का। शुद्ध। खालिस।

निरभै–दे० निरभय।

निरमणो–(क्रि०) १. निर्माण करना। बनाना। रचना करना।। २. किसी योनि में जन्म देना। उत्पन्न करना।

निरमळ–दे० निर्मल।

निरमळो–(वि०)१. शुद्ध अंतःकरण वाला। साफ दिलवाला। २. सीधा। सज्जन। ३. निर्मल। स्वच्छ। ४. शुद्ध। पवित्र।

निरमाण–दे० निर्माण।

निरमायल–(वि०) १. नामर्द। नपुंसक। २. अशक्त। कमजोर। ३. कायर। डरपोक। ४. निस्सत्व। ५. स्त्री के अधीन रहने वाला स्त्रैण। (न०) शिवार्पण वस्तु। निर्माल्य।

निरमाळ–(न०) १. निर्माल्य। देवार्पित वस्तु। २. शिवार्पण वस्तु। (वि०) १. बेजान। २. निस्सत्व। ३. अशक्त। कमजोर। ४. कायर। डरपोक। ५. स्त्रैण।

निरमाळियो-दे० निरमायळ ।

निरमळ-दे० निर्मूल ।

निरमोही-दे० निर्मोही ।

निरर्थक-(वि०) १. व्यर्थ । फजूल । २. जिससे कोई कार्य सिद्ध न हो ।

निरलज-दे० निर्लज्ज ।

निरळंग-(वि०) १. अंग रहित । २. अलग्न । ३. निर्लिप्त । ४. अलग । जुदा ।

निरवंस-दे० निर्वंश ।

निरवाण-(न०)चौहान वंश की एक शाखा । दे० निर्वाण ।

निरवाळो-(वि०) १. संतान की शिक्षा, विवाहादि से निवृत्त । २. सांसारिक प्रपंचों से दूर । ३. उत्तरदायित्वों से निवृत्त । निकेवळो ।

निरवाह--दे० निर्वाह ।

निरवाहणो-(क्रि०) १. निर्वाह करना । निर्वाहना । २. परम्परानुसार बरतना । ३. निभाना । पालन करना ।

निरविकार-दे० निर्विकार ।

निरस-(वि०)१.बिना रस का । नीरस । २. स्वाद रहित । ३. सारहीन । ४. रूखा-सूखा । ५. रागहीन । ६. गरीब । दीन ।

निरंकार-(न०) १. निराकार । परमात्मा । २. आकाश ।

निरंकुश-(वि०) अंकुश रहित । कोई अंकुश न माने । स्वेच्छाचारी ।

निरंग-(वि०) १. अंग रहित । २. रंग रहित । ३. बदरंग ।

निरंजण-(न०) १. ब्रह्म । २. शिव । निरंजन । (वि०)१. निष्कलंक । २. निर्मल । ३ तेजोमय । ४. अंजन रहित ।

निरंजणी-(न०) १. मारवाड़ में डीडवाना नगर के पास गाढ़ा गाँव में संत हरिदास जी (हरिपुरुष जी) द्वारा प्रवर्तित एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय । २. इस नाम के अनेकों सम्प्रदायों में से एक । ३. निरंजनी सम्प्रदाय का शिष्य । (वि०) १. निरंजनी सम्प्रदाय संबंधी । २. निरंजनी सम्प्रदाय को मानने वाला ।

निरंतर-(क्रि०वि०) १. सदा । लगातार । (वि०) १. अंतर रहित । २. स्थायी ।

निराऊध-(वि०)आयुध रहित । निरायुध । निरस्त्र ।

निराकार-(वि०)बिना आकार का । (न०) १. परमात्मा । ब्रह्म । २. आकाश ।

निराट-(वि०) १. बहुत । प्रचुर । विपुल । २. मात्र । (अव्य०) १. बहुत ही । प्रचुर प्रमाण में । २. बिल्कुल । बिल्कुल ही । ३. सर्वथा । सभी प्रकार । समूंधो ।

निराताळ-दे० निरीताळ ।

निरादर-(न०) आदर रहित । अपमान ।

निराधार-(वि०) १. आधार रहित । अवलंब रहित । २. बेबुनियाद । निर्मूल । ३. निराश्रय । असहाय ।

निरालंब-(वि०)आलंब रहित । निराधार ।

निराळो-(वि०)१. एकान्त । २. विलक्षण । अजीब । ३. अनुपम । ४. अद्वितीय । ५. अलग । जुदा । (न०) एकान्त स्थान ।

निराश-दे० निरास ।

निराशा-दे० निरासा ।

निरास-(वि०) निराश । ना उम्मेद । हताश ।

निरासा-(ना०) निराशा । नाउम्मेदी ।

निरांत-(ना०) १. अवकाश । फुरसत । २. आराम । चैन । सुख । ३. शान्ति । सलामती । ४. तृप्ति । संतोष ।

निरांते-(अव्य०) १. अवकाश से । फुरसत से । फुरसत में । २. बिना उतावली के । दौड़-धूप किये बिना । ३. चैन से । आराम से । सुख से । निरांत सूं ।

निरी-(वि०) बहुत । अधिक । घणो ।

निरीक्षक-(न०) निरीक्षण करने वाला ।

निरीक्षण-(न०) अवलोकन । मुआइना ।

निरीताळ–*(वि०)* १. अधिक । बहुत । *(ना०)* १. दीर्घकाल । देर । विलम्ब । *(अव्य०)* अधिक समय तक । बहुत देर तक ।

निरीह–*(वि०)* १. उदासीन । २. इच्छा रहित ।

निरुत्तर–*(वि०)* १. जो कोई जवाब न दे सके । २. जिसके पास कोई उत्तर न हो। ३. जिसकी जबान बंद हो गई हो ।

निरुपम–*(वि०)* उपमा रहित ।

निरू खो–दे० निभाड़ो ।

निरेणी–*(ना०)*नख काटने का एक औजार । नहरनी ।

निरो–*(वि०)*१. अधिक । बहुत । २. निपट । बिल्कुल ।

निरोग–*(वि०)* रोग रहित । स्वस्थ । नीरोग ।

निरोगो–दे० निरोग ।

निरोध–*(न०)* अवरोध । रोक ।

निरोह–*(न०)* निरोध । अवरोध ।

निरोहर–दे० नीरोवर ।

निर्गु ण–*(न०)* १. सत्व रज और तम इन तीन गुणों से परे । परमात्मा । निर्गु ण । *(वि०)* १. जो तीन गुणों से परे हो । २. जिसमें कोई गुण न हो ।

निर्जन–*(वि०)* १. निर्जन । जन शून्य । २. एकान्त । ३. सुनसान ।

निर्जर–*(न०)* १. देवता । निर्जर । *(वि०)* जो कभी वृद्ध या पुराना न हो ।

निर्जल–*(वि०)* निर्जल । विना पानी का । (प्रदेश)।

निर्जला एकादशी–दे० निरजळा-इग्यारस ।

निर्जीव–*(वि०)* १. विना जीव का । निर्जीव । प्राण रहित । २. निर्बल । ३. निकम्मा ।

निर्णय–*(न०)* १. फैसला । २. निश्चय ।

निर्णीत–*(वि०)*जिसका निर्णय हो चुका हो ।

निर्दय–*(वि०)* १. दया रहित । बेरहम । क्रूर ।

निर्दोष–*(वि०)* दोष रहित । निरपराध ।

निर्द्वंद–दे० निरदु द ।

निर्द्वंद्व–दे० निरदु द ।

निर्बल–*(व०)* बल रहित । दुर्बल ।

निर्बलता–*(ना०)* बलहीनता । कमजोरी ।

निर्बीज–*(वि०)* १. जिसमें बीज न हो । बिना बीज वाला । निर्बीज । २ निर्वंश । निःसंतान । ३. नपु सक । वीर्यहीन ।

निर्बु द्धि–*(वि०)* बुद्धि रहित । मूर्ख ।

निर्भय–*(वि०)* निडर ।

निर्भर–*(वि०)* अवलंबित ।

निर्भीक–*(वि०)* निडर । निर्भय ।

निर्मळ–*(वि०)* १. निर्मल । मल रहित । स्वच्छ । २. शुद्ध । पवित्र ।

निर्माण–*(न०)*१. बनाने का काम । रचना । २. वह वस्तु जो बनकर तैयार हुई हो । ३. रूप । आकार ।

निर्मू ल–*(वि०)* १. विना जड़ का । २. निर्वंश । ३. आधार रहित ।

निर्मोही–*(वि०)* १ मोह रहित । २. ममता रहित । ३. निष्ठुर ।

निर्लज्ज–*(वि०)* १. लाज रहित । बेशर्म । २. अविवेकी ।

निर्लेप–*(वि०)*जो राग द्वेष आदि से विरक्त हो । निर्लिप्त ।

निर्लोभी–*(वि०)* लोभ रहित । संतोषी ।

निर्वंश–*(वि०)* जिसका वंश न चला हो । जिसके वंश मे कोई न रहा हो । २. संतान रहित । निस्संतान ।

निर्वाण–*(न०)* १. मोक्ष । निर्वाण । २. छुटकारा । ३. शांति । ४. निवृत्ति । ५. मृत्यु । ६ परमात्मा । ७. एक सम्प्रदाय । *(वि०)* १. निष्कलंक । २. शून्य । ३. शांत । ४. निश्चल । ५. अवश्य ।

निर्वाह-(न०)१. किसी परम्परा का चलता रहना । निर्वाह । २. निभाव । गुजारा । पालन । ३. आश्रय । ४. पूरा किया जाना ।

निर्विकार-(वि०) १. विकार रहित । २. उदासीन । (न०) परब्रह्म ।

निर्विघ्न-(वि०) विघ्न रहित ।

निर्वृत्ति-(वि०) त्यागी । विरागी । (न०) १. शांति । आनंद । २. मोक्ष । ३. निष्पत्ति । समाप्ति । अंत । ४. छुटकारा । निवृत्ति ।

निलज-(वि०) निर्लज्ज । बेशरम ।

निलजता-(ना०) निर्लज्जता । बेशर्मी ।

निलजो-दे० निलज ।

निलज्ज-दे० निर्लज्ज ।

निलवट-(ना०) ललाट । लिलवट ।

निलाट-(ना०) ललाट । भाल ।

निलाड़-(ना०) ललाट । भाल ।

निलै-(ना०) ललाट । भाल ।

निवड़-(वि०) १. अधिक । बहुत । २. घनिष्ट । ३ दृढ़ । मजबूत । ४. वीर । (क्रि०वि०) तुरंत । शीघ्र ।

निवड़णो-(क्रि०) १. निवृत्त होना । छुटकारा पाना । करने को शेष न रहना । २. समाप्त होना । बीत जाना । ३. फैसला होना । निर्णीत होना । तै होना । ४. शौच क्रिया से निवृत्त होना । ५. सिद्ध होना । तैयार होना । ६. पूर्ण विकसित होना । प्रौढ़ होना । ७. भला या बुरा सिद्ध होना ।

निवणो-(क्रि०) १. नमना । झुकना । २. झुककर प्रणाम करना । नमस्कार करना ।

निवतो-(न०) न्योता । निमंत्रण ।

निवराई-(ना०) फुरसत । अवकाश । खाली समय ।

निवरास-दे० निवराई ।

निवरो-(वि०) १. बिना काम काज का । निकम्मा । खाली । बेकाम । २. जिसके पास काम नहीं हो । ३. जो काम से निबट गया हो । फारिग । निवृत्त । ४. क्वारा । ५. विधुर ।

निवसन-(न०) १. स्त्री का अधोवस्त्र । २. घर । (वि०) वस्त्र रहित ।

निवाज-(ना०) १. मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना । नमाज । नवाज । २. कृपा । अनुग्रह । (वि०) कृपा करने वाला ।

निवाजणो-(क्रि०) १. भेंट करना । भेंट देना । २. सिरोपाव, इनाम, पद, खिलअत आदि देकर संतुष्ट करना । ३. कृपा करना । ४. अभिवादन करना । ५. प्रसन्न होना । खुश होना । ६. तुष्टमान होना । ७. इनाम देना ।

निवाजस-(ना०) १. कृपा । रहम । मिहरबानी । नवाजिश । २. पुरस्कार । इनाम । ३. ताजीम ।

निवाण-(न०) १. नदी, तालाब, कुँआँ आदि जलाशय । २. नहाने का स्थान । ३. जलक्रीड़ा का स्थान । ४. मानसरोवर ।

निवाणभर-(न०) मेघ । बादल ।

निवायो-(वि०) थोड़ा गरम । गुनगुना ।

निवार-(ना०)खाट बुनने की पट्टी । नेवार ।

निवारणो-(क्रि०)१. हटाना । दूर करना । निवारना । २. छोड़ना । ३. रोकना । वरजणो ।

निवाळो-(न०) कौर । ग्रास । कवो ।

निवास-(न०) १. घर । स्थान । आश्रय । २. रहना । रिहाइश । ३. गरमी । उष्णता ।

निवासी- (वि०) निवास करने वाला । रहने वाला ।

निवियासी-(वि०) अस्सी और नौ । (न०) ८९ की संख्या ।

निवृत्त-(वि०) १. जिसने काम से अवकाश पा लिया हो । २. छूटा हुआ । विरक्त । खाली ।

निवृत्ति-(ना०) १. छुटकारा । २. मुक्ति । मोक्ष ।

निवेड़णो-(क्रि०) १. निबटना । निवेड़ना । फैसला करना । २. परस्पर समझा बुझा कर टंटा-झगड़ा मिटाना । ३. समाप्त करना । निबटाना ।

निवेड़ो-(न०) १. निवेड़ा । फैसला । २. सुलझाव । निबटारा । ३. समाप्ति । अंजाम । ४. काम की समाप्ति । ५. निर्णय । निराकरण ।

निवेद-(न०) देवता को अर्पित वस्तु । नैवेद्य ।

निवेदक-(वि०) निवेदन करने वाला ।

निवेदन-(न०) १. नम्रतापूर्वक किया जाने वाला कथन । प्रार्थना । २. वर्णन । ३. अर्पण । भेंट ।

निवेस-(न०) १. निवास । २. घर । मकान ।

निशा-(ना०) रात ।

निशाकर-(न०) चंद्रमा ।

निशाचर-(न०) १. राक्षस । २. चोर । ३. भूत । पिशाच । ४. उल्लू । घूघू । ५. चमगादड़ । वागळ । ६. शृगाल । सियाल । ७. सर्प ।

निशान-(न०) १ चिन्ह । २. ध्वजा ।

निशाना-(न०) लक्ष्य । निसाणो ।

निशानाथ-(न०) चंद्रमा ।

निश्चय-(न०)१. दृढ़ संकल्प । २ निर्णय । जाँच । फैसला । ३. विश्वास । यकीन ।

निश्चल-(वि०) स्थिर । अटल ।

निश्चिंत-(वि०) चिंता रहित । वेफिक्र ।

निषिद्ध-(वि०) १. वर्जित । २. दूषित ।

निषेध-(न०) १. शास्त्र विहित मनाई । 'विधि' का उलटा । २. मना । अवरोध ।

निष्कपट-(वि०) १. छल कपट से रहित । २. शुद्ध हृदय वाला ।

निष्कलंक-(वि०) १. कलंक रहित । २. निर्दोष ।

निष्ठा-(ना०) १. गुरुजनों या धर्म के प्रति श्रद्धा भक्ति । २. विश्वास । निश्चय ।

निष्ठावान-(वि०) निष्ठा रखने वाला ।

निष्पक्ष-(वि०) पक्ष रहित । तटस्थ ।

निष्पाप-(वि०) पाप रहित ।

निष्प्राण-(वि०) १. मृत । मरा हुआ । २. मरियल । मुड़दल ।

निष्फळ-(वि०) जिसका कोई फल न हो । निष्परिणाम । व्यर्थ ।

निस-(ना०) निशा । रात । निशि ।

निसकपट-दे० निष्कपट ।

निसकलंक-दे० निष्कलंक ।

निसकारो-(न०) निश्वास ।

निसचर-दे० निशाचर ।

निसढ्ढो-दे० निसरड़ो ।

निसतरणो-(क्रि०) निसतरना । निस्तार पाना । छुटकारा पाना ।

निसतार-(न०) निस्तार । छुटकारा । उद्धार ।

निसदिन-(न०) रातदिन । निशिवासर । (क्रि०वि०) १. रात दिन । आठों प्रहर । २. हमेशा । सर्वदा ।

निसनैण-(न०) चंद्रमा । निशानयन ।

निसपत-(ना०) १. निसबत । सम्बन्ध । २. रिश्वत । घूंस । उत्कोच । ३. भरोसा । ४. तुलना । बराबरी । ५. अपेक्षा । ६. परवाह । चिंता । ७. निशापति । चंद्रमा । (अव्य०) १. संबंध में । बारे में । २. के मार्फत । के जरिये ।

निसफळ-दे० निष्फल ।

निसबत-दे० निसपत ।

निसमंडण-(न०) चंद्रमा ।

निसरड़ो-(वि०) १. जिद्दी । हठी । २. बेशर्म । निर्लज्ज । ३. अनाज्ञाकारी । ४. ढीट । धृष्ट ।

निसरणी-(ना०) १. सीढ़ी । निसैनी । २. ढाँचा ।

निसरणो-(क्रि०) १. बाहर होना। निसरना। निकलना। २. चले जाना। पार करना। (न०) बड़ी निसेनी।
निसरमो-(वि०) निर्लज्ज। बेशर्म।
निसवादो-दे० नँवादो।
निसवासर-(क्रि०वि०) रातदिन। हमेशा। नित्य। निशिवासर। सदा।
निसंक-(वि०) निःशंक। निडर। निर्भय।
निसंग-(वि०) संग रहित।
निसंडो-दे० निसरड़ो।
निसाचर-दे० निशाचर।
निसाट-(न०) १. मुसलमान। २. राक्षस।
निसाण-(न०) १. निशान। चिन्ह। २. झंडा। पताका। ३. हाथी, घोड़े या ऊँट पर बजने वाला नगाड़ा। ४. हस्ताक्षर की जगह लगाई जाने वाली अंगूठे की छाप। ५. यादगार। स्मारक। ६. लक्ष्य। निशाना।
निसाणी-(ना०) यादगारी के लिये दी हुई वस्तु। स्मृति चिन्ह। निशानी।
निसाणो-दे० निशाना।
निसानाथ-(न०) चन्द्रमा। निशानाथ।
निसाफ-(न०) इन्साफ।
निसार-(न०) पश्चिम देशों के देश वासी। पाश्चात्य लोग। (वि०) १. पश्चिमी। पाश्चात्य। २.सार रहित। दे० निकास।
निसासो-(न०) १. निःश्वास। लंबी साँस। २. दुखपूर्ण लंबी सांस।
निसाँ-(वि०) खरा। पक्का। (न०) १. जाँच। तपास। २. आवभगत।
निसाँ खातर-दे० निसाँखातरी।
निसाँखातरी-(ना०)१.भरोसा। विश्वास। २. पूर्ण विश्वास। पक्का भरोसा।
निसियर-(न०) १. निशाकर। चन्द्रमा। २. निशाचर।
निसीथणी-(ना०) रात। निशा।
निसेणी-(ना०) निसेनी। जीना। सीढ़ी। सोपान। **निसरणी।**
निस्तै-दे० निश्चय।
निस्पाप-दे० निष्पाप।
निस्फ-(वि०) दो बराबर भागों में से एक। आधा।
निस्फळ-दे० निष्फळ।
निहकाम-(वि०) १. कामना रहित। निष्काम। २. काम रहित। बेकार। **निकामो।**
निहकामो-दे० निहकाम।
निहकुण-(न०) शब्द। आवाज।
निहखरणो-(क्रि०) पीछे दौड़ना। पीछे भागना।
निहचळ-(वि०) निश्चल। अचल।
निहचै-दे० निश्चय।
निहटणो-(क्रि०) १. नष्ट करना। २. खत्म होना। ३. रुक जाना। ४. अड़ जाना।
निहस-(ना०) १. निर्घोष। आवाज। २. चोट।
निहसणो-(क्रि०)१. जूझना। युद्ध करना। २. शक्तिमान होना। ३. गर्जना। ४. बाजा बजाना। ५. आहत होना। ६. वीर गति को प्राप्त होना। ७. बाजा बजना। ८. प्रहार करना। ६. मारना। काटना।
निहंग-(न०) १. घोड़ा। २. तरकस। ३. आकाश। ४. निःसंग। ५. ब्रह्मचारी। ६. क्वारा। ७. विधुर। (वि०) १. अकेला। एकाकी। २. निर्लज्ज। बेशर्म।
निहंगपुर-(न०) स्वर्ग।
निहंग साधु-(न०)वह साधु जो विवाह नहीं करता (घर बारी साधु के मुकाबिले)। विवाह संबंध न करने वाला साधु।
निहाई-(ना०) १. अहरण। २. प्रहार। चोट। ३. ध्वनि।

निहाणी-(ना०) १. बढ़ई का एक औजार। रुखानी। निहानी। २. नाखून। काटने का औजार। निहानी। नखहरणी।

निहार-(न०) १. परिणाम। नतीजा। निकाल। २ दृष्टि। ३. निकलने का मार्ग या द्वार। ४. मलमूत्रादि की उत्सर्ग क्रिया।

निहारणो-(क्रि०) १. देखना। २. गैर से देखना। ३. विचार करना।

निहाळणो-दे० निहारणो १, २, ३। ४. कृपा पूर्वक देखना। देखने की कृपा करना।

निहाव-(न०) १. तोप छूटने का शब्द। २. नगाड़े या ढोल के बजने का शब्द। ३. निहाई पर पड़ने वाले घन या हथोड़े के घाव का शब्द। ४. अहरण। निहाई। ५. तोप। ६. घाव। चोट। प्रहार। ७. आकाश।

निंगळणो-दे० नींगळणो।

निंदक-(वि०) निंदा करने वाला।

निंदणो-(क्रि०) निंदा करना। वगोवणो।

निंदरा-(ना०) १. निंदा। बुराई। २. निद्रा। नींद।

निंदरोही-(ना०) निर्जन जंगल। रोही।

निंदवणो-(क्रि०) निंदा करना। वगोवणो। निंदणो।

निंदा-(ना०) १. दोष वर्णन। २. किसी में ऐसा दोष बताना जो वास्तव में न हो। ३. किसी की कल्पित या वास्तविक बुराई या दोष का वर्णन। ४. बदनामी। अपकीर्ति। वगोवणी।

निंदास्तुती-(ना०) १. निंदा के रूप में की जाने वाली स्तुति। व्याजस्तुति। २. बारहठ ईसरदास का इस प्रकार की गई ईश्वर-स्तुति का एक ग्रंथ। 'गुण निंदा-स्तुति।' ३. निंदा और स्तुति।

निंबार्काचार्य-(न०) द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक व निम्बार्क संप्रदाय के आदि आचार्य।

निंबोळी-दे० नींबोळी।

नी-(अव्य०) १. निश्चय। जैसे 'हूँ आयो हो नी ?' २. अनुरोध जैसे 'लावैनी', 'देवैनी', करै नी,। ३. नहीं। (न०) निषाद स्वर का नाम (संगीत)। (प्रत्य०) षष्ठी विभक्ति का एक नारी जाति चिन्ह। 'की'। (व्या०)।

नीक-(ना०) नाली। मोरी। नाळी। (वि०) अच्छा।

नीकड़ै-(क्रि०वि०) १. सम्मुख। आगे। २. निकट।

नीको-वि०) अच्छा।

नीगम-दे० निगम।

नीगमणो-दे० निगमणो।

नीगरड़ो-(वि०) अदीक्षित। निगुरा।

निघरियो-(वि०) गृहविहीन।

नीच-(वि०) १. अधम। निकृष्ट। २. खल। दुष्ट। खोटा। ३. निम्न श्रेणी का।

नीच-ऊँच-(वि०) १. अच्छा-बुरा। २.उन्नत-अवनत। ३. खोटा-खरा। ४. सुख-दुख।

नीचकुटी-(वि०) नीच कुल में उत्पन्न।

नीचता-(ना०) क्षुद्रता। नीचपना।

नीचधूणियो-(वि०) १. धिक्कारने से लज्जा के मारे नीचे देखने वाला। २. नीचे देखते हुए चलने वाला। ३. नीची दृष्टि रखकर बात करने वाला। गरदन को नीची झुका कर (सामने नहीं देखकर) बात करने वाला। ४. बेशर्म। निर्लज्ज। निलजो। ५. निकृष्ट। अधम। नीचा-जोगो।

नीचाई-(ना०) नीचा या हलुवा होने का भाव। हलुवांपन।

नीचा-जोया–(न०) १. किसी कुकृत्य-जन्य कलंक के कारण समाज के सम्मुख लज्जित बने रहने की या दबा हुआ रहने की स्थिति । २. दुष्कर्म द्वारा उत्पन्न लज्जा के कारण कुल का नीचा देखने की स्थिति में होना । ३. शर्म से नीचा देखने का संयोग । ४. लज्जित होना पड़े ऐसी स्थिति ।

नीचाण–(ना०) १. जमीन का नीचे का भाग । ढलुआँ भाग । नीची जगह । ढलुआँपन । २. निचाई । नीचांत ।

नीचांत–दे० नीचाण ।

नीचे–(क्रि०वि०) निम्न तल की ओर । अधो भाग में । हेठै ।

नीचे-ऊपर–(अव्य०) अव्यवस्थित । अस्त-व्यस्त ।

नीचो–(वि०) १. जिसके आसपास का तल ऊंचा हो । जो गहराई पर हो । जहाँ गहराई हो । २. ऊंचाई में सामान्य की अपेक्षा कम । जो ऊंचाई पर न हो । ३. झुका हुआ । नत । ४. कम ऊंचाई वाला ५. खोटा । बुरा । ६. जो गुण, जाति, पद में उतरता हुआ हो ।

नीचो-जोयो–दे० नीच-धूणियो ।

नीछटणो–(क्रि०) १. प्रहार करना । मारना । २. मार मारना । पीटना । ३. निकलना । ४. फेंकना ।

नीछी– (न०) इनकार । अस्वीकार ।

नीझर–(न०) झरना । सोता । निर्झर ।

नीझरण–(न०) झरना । निर्झर । सोता झरणो । (ना०) १. वर्षा की झड़ी । २. वर्षा की ध्वनि ।

नीझरणी–(ना०) १. निर्झरणी । नदी । २. छोटा सोता । झरना ।

नीठ–(अव्य०) कठिनाई से । मुश्किल से किसी तरह । नीठां ।

नीठणो–(क्रि०) १. समाप्त होना । खतम होना । खूटणो । २. समाप्त करना । खतम करना । खुटावणो । ३. धीरज रखना । ४. आजमाना । जाँचना । परखणो ।

नीठानीठ–(क्रि०वि०) बहुत मुश्किल से । जैसे-तैसे करके ।

नीठाँ–दे० नीठ ।

नीठाँ-सी–(क्रि०वि०) बहुत मुश्किल से ।

नीड़–(वि०) कठिन । (न०) १. चिड़ियों का घोंसला । माळो । २. रहने का स्थान । निवास स्थान । ३. नदी के किनारे का प्रदेश । नइयड़ । (क्रि०वि०) निकट । पास ।

नीत–दे० नीति ।

नीतर–(अव्य०) नहीं तो ।

नीतरणो–दे० नितरणो ।

नीति–(ना०) १. लोक व्यवहार का ढंग । २. धर्मानुसार आचरण । ३. सदाचार । ४. लोकाचार की वह पद्धति जिससे अपना हित होने के साथ साथ सभी का हित हो । ५. समाज की भलाई के लिये निश्चित आचार-व्यवहार । नीति । नय । ६. व्यवहार का तरीका जिससे अपनी भलाई हो पर दूसरों को तकलीफ न हो । ७. सदाचार पूर्ण व्यवहार । नीति । ८. न्याय व्यवहार । ९. मंशा । इरादा ।

नीतिभ्रष्ट–(वि०) १. नीति से विचलित । २. अनैतिक । ३. दुराचारी ।

नीतिरीति–(ना०) १. चालचलन । वर्तन । चालचळगत । २. सदाचार ।

नीतिहीन–(वि०) नीतिभ्रष्ट ।

नीतोताई–(वि०) १. उच्छृंखल । २. नखराली ।

नीधणियो–(वि०) १. जिसका कोई मालिक न हो । २. लावारिस (वस्तु) ।

नीवसणो–(क्रि०) १. नगाड़े का बजना । २. नगाड़े का बजाना ।

नीध्रस–दे० नीधस ।

नीध्रसणो–दे० नीवसणो ।

नीपज–दे० निपज ।

नीपजणो–दे० निपजणो ।

नीपण–(न०) १. चारण । २. याचक । ३. गारा । कीचड़ । ४. लीपने की वस्तु । ५. लीपने का काम ।

नीपणो–(क्रि०) १. गोबर, मिट्टी आदि से किसी जगह को लेपना । लीपना । २. पोतना ।

नीपणो-गूंपणो–(क्रि०) लीपना-पोतना । लीप-पोत कर स्वच्छ करना ।

नीम–(ना०) १. नींव । २. आधार । **पायो** । ३. आधी दूरी । (न०) नीम वृक्ष । निंब । **नीमड़ो** । (वि०) आधा ।

नीमगिलोय–(ना०) नीम वृक्ष के ऊपर फैलने से गिलोय लता का नाम ।

नीमजणो–(क्रि०) १. निमज्जना । स्नान करना । नहाना । २. उज्ज्वल होना । ३. पवित्र होना । ४. गोता लगाना । डुबकी मारना । ५. दो टुकड़ों में कट जाना । ६. जन्म लेना । उत्पन्न होना । ७. ठानना । आरंभ करना ।

नीमजर–(ना०) नीम की मंजरी । निंब-मंजरी ।

नीमड़ो–(न०) नीम वृक्ष ।

नीमण–(वि०) जो भीतर से खाली या पोला न हो । ठोस ।

नीमणियाइत–(वि०) १. नियुक्त करने वाला । मुकर्रर करने वाला । २. जन्म देने वाला । उत्पन्न करने वाला ।

नीमणो–(क्रि०) १. नियुक्त करना । मुकर्रर करना । २. निश्चित करना । ३. निश्चय करना । विचार करना । ४. जन्म लेना । उत्पन्न होना । ५. निर्माण करना । बनाना ।

नीमवण–(न०)१. जन्म । उत्पत्ति । (वि०) उत्पन्न करने वाला । रचने वाला ।

नीम हकीम–(न०) ऊंट वैद्य ।

नीमाड़ो–दे० नीवाड़ो ।

नीमी–(ना०) १. रुपया-पैसा । २. माल-मत्ता । धन । ३. जायदाद । (वि०) आधी ।

नीमे–(अव्य०) आधे हिस्से से (हुंडी) । जैसे—हुंडी रु० १०००) अखरै रुपिया हजार री, नीमे रुपिया पांच सौ रा दूणा पूरा साहजोग दीजो ।

नीमोनीम–(अव्य०)१. आधोआध । २. आधे का आधा ।

नीयत–(ना०) १. मनोवृत्ति । आंतरिक भावना । २. आशय । ३. मंशा । इच्छा । मन का इरादा । ४. उद्देश्य ।

नीर–(न०) १. पानी । जल । २. कांति । आभा । ३. शोभा ।

नीरकी–(ना०) मद्य । शराब ।

नीरखीर–(न०) १. पानी और दूध । २. सारग्राही वृत्ति । (वि०) सारग्राह्य ।

नीरज–(न०) १. कमल । २. मोती ।

नीरण–(न०) १. घास-चारा । २. पशुओं को घास-चारा डालने का काम । **नीरणै रो काम** ।

नीरणी–(ना०) १. गाय, भैंस आदि घर के पशुओं को नियत समय पर डाला जाने वाला घास-चारा । २. ढोरों का डाले जाने वाला घास ।

नीरणो–(क्रि०) घर के गाय, भैंस आदि पशुओं को नियत समय पर घास-चारा डालना । ढोरों को घास डालना ।

नीरद–(न०) बादल ।

नीरध–(न०) समुद्र । नीरधि ।

नीरस–(वि०) रस रहित । निरस ।

नीराजणो–(क्रि०) आरती उतारना ।

नीराजन–(ना०) आरती ।

नीरासय–(न०) १. नीराशय । जलाशय । २. तालाव ।

नीरो–(न०) १. नीरी हुई घास का नहीं खाया जाने वाला शेष भाग । नीरा । कचरा । २. घास । चारा । ३. नीरणी करने का काम ।

नीरोवर–(न०) समुद्र ।

नीरोहर–(न०) समुद्र ।

नील–(ना०) १. काई । लील । २. ग्रास-मानी रंग । ३.गुळी । लाल बुरश । नील का रंग । ४. एक पौधा । ५. सौ ग्ररव की संख्या । ६. शरीर पर चोट लगने से पड़ने वाला नीला निशान । लील ।

नीलक–दे० नीलंक ।

नीलकंठ–(न०)१. महादेव । शिव । २. एक चिड़िया जिसके डैने ग्रौर कंठ नीले होते हैं ।

नीलगर–(न०) १. नील के पौधे से रंग बनाने वाला व्यक्ति । २. रंगरेज ।

नीलटाँच–(न०) एक पक्षी ।

नीलम–(न०) नीले रंग का एक रत्न । नीलमणि ।

नीलंक–(न०) एक प्रकार का जरी के काम वाला वस्त्र ।

नीलंग–(न०) हंस । दे० नीलंक ।

नीलंवर–(न०) १. नीला वस्त्र । नीलांवर । हरा कपड़ा । २. ग्राकाश । नीलाकाश । ३. वलराम ।

नीलाणी–(वि०) १. हरे रंग की । हरित । २. हरियाळी से ग्राच्छादित । ३. प्रफु-ल्लित । प्रसन्न । (क्रि०भू०) १. हरियाली से ग्राच्छादित होगई । हरी होगई । नीली होगई । २. प्रसन्न होगई ।

नीलाणीजणी–(क्रि०) १. हरियाली से छा जाना । २ हरित होना । ३.प्रसन्न होना ।

नीलाणो–(क्रि०)१ हरियाली से छा जाना । २. हरा होना । ३. प्रसन्न होना ।

नीलाम–(न०) बोली बोल कर माल बेचने का एक ढंग । लीलाम ।

नीली–(वि०) १. हरी । हरे रंग की । सब्ज । २.ग्राकाशी रंग की । ३ गीली । ग्रार्द्र । ४. सब्ज । रसवाली । हरेरी । (ना०) १. सफेद रग की घोड़ी । २.सफेद रंग की घोड़ी का नाम ।

नीलो–(वि०) १. हरा । हरे रंग का । हरित । सब्ज । २. ग्राकाशी रंग का । ३. सब्ज । रसवाला । जो सूखा न हो । हरेरा । तरोताजा । ४. ग्रार्द्र । गीला । (न०) १. सफेद रंग का घोड़ा । २. सफेद रंग के घोड़े का नाम । ३. हरा घास । चारा । घासपात ।

नीलो खड़–(न०) हरा घास ।

नीली थोथो–(न०) तूतिया । लीलो थोथो ।

नीलोफर–(न०) १. नीलकमल । २. बोर्डर की चित्रकारी ।

नीव–दे० नींव ।

नीवड़णो–(क्रि०) १. निपटना । निवृत्त होना । २. समाप्त होना । ३. तैयार होना । ४. पूर्ण विकसित होना । प्रौढ़ होना । ५. ग्रनुभवी होना । ६. तै होना । निर्णीत होना । ७. पहुँचना । ८. बुरा या भला सिद्ध होना ।

नीवत–दे० नीयत ।

नीवाड़ो–(न०) कुम्हार का (ग्राग लगा कर कच्चे) बरतन पकाने का स्थान या भट्टा । ग्रावाँ ।

नीवी–(ना०) १. स्त्री का ग्रधोवस्त्र । २. नारा । इजारबंद । नाड़ो ।

नीसरणी(ना०) निसेनी ।

नीसरणो–दे० निसरणो ।

नीसाण–दे० निसाण ।

नीसाणी–(ना०) १. राजस्थानी काव्य का एक मात्रिक छंद । डिंगल का एक छंद । २. स्मारक । ३. निशानी । चिन्ह ।

(ना०) 'नीसाणी' संज्ञक राजस्थानी काव्य ग्रन्थ। जैसे–'नीसाणी विवेक वार्ता री।'

नीसासो–(न०) निस्स्वास। लँबी साँस। निश्वास।

नींगळणो–(क्रि०) १. अधिक पुराना होने तथा चिकनाई आदि लगने से मिट्टी के पात्र की वह स्थिति होना कि वह चुए नहीं। २. अधिक समय तक पानी भरा भरा रहने से मिट्टी के घड़े का पक्का हो जाना। ३. रोग आदि संकटों से मुक्त होना। ४. कुशलता प्राप्त करना। कुशल होना। ५. चालाक होना। धूर्तता सीखना। ६. निगलना। गिटना। ७. परिपक्व होना। ८. प्रौढ़ होना। ९. निपुण होना। १०. अनुभवी होना।

नींगारणो–(न०) १. कपड़े का वह टुकड़ा जिससे चक्की की वाटी में से आटे को झाड़ पोंछ कर साफ किया जाता है। २. फटा हुआ पुराने कपड़े का टुकड़ा। (क्रि०) चक्की की वाटी में लगे चून को कपड़े से पोंछ कर साफ करना।

नीं-तर–दे० नहितर। नीतर।

नीं-तो–दे० नहीं तो।

नींद–(ना०) निद्रा। ऊँघ।

नींदर–(ना०) निद्रा।

नींदाण–दे० नैदाण।

नींदामण–दे० नैदाण।

नींदामणी–दे० नैदाण।

नींदाळ–(वि०) निद्रालु।

नींदाळवो–(वि०) निद्रालु।

नींदाळु‌वो–(वि०) अधिक सोने वाला। उनींदा।

नींदाळु–(वि०) निद्रालु। निद्राशील।

नींब–(न०) नीम वृक्ष।

नींबड़ो–(न०) नीम।

नींबावत–(न०) निबार्काचार्य का अनुयायी साधु।

नींबू–(न०) एक प्रसिद्ध खट्टा फल। निम्बू। नीबू।

नींबोळी–(ना०) १. नीम वृक्ष का फल। निबौरी। नीमकोड़ी। २. स्त्री के गले का एक गहना। मूंट। तिमनिया। तिमणियो।

नींव–(ना०) बुनियाद। नींव। आधार। जड़। रांग।

नींवाड़ो–दे० नीवाड़ो।

नुकती–दे० नुगती।

नुकतो–दे० नुगतो।

नुकरो–(न०) १. छोटा टुकड़ा। २. अफीम का टुकड़ा। ३. सफेद रंग का घोड़ा। ४. घोड़े का सफेद रंग। ५. चाँदी।

नुकळ–(न०) अफीम आदि नशीले पदार्थों के खाने के बाद मुँह का स्वाद सुधारने के लिए सुपारी, मिश्री, खारक आदि का टुकड़ा। नुकरो।

नुकल–दे० नकल। दे० नुकळ।

नुकस–(न०) त्रुटि। कसर। नुक्स।

नुकसाण–(ना०) १. नुकसान। हानि। २. बिगाड़। दोष। ३. हानि। घाटा। क्षति। ४. ध्वंस। नाश।

नुकसाणी–(ना०) १. नुकसान। हानि। २. नुकसान की पूर्त्ति। हरजाना।

नुगणो–(वि०) १. निर्गुणी। मूर्ख। २ उपकार को नहीं मानने वाला। कृतघ्न। निगुणो।

नुगती–(ना०) एक मिठाई। मीठी बुंदिया। नुकती।

नुगतो–(न०) १. अवसर। मौका। २. नैमित्तिक कार्य। ३. नैमित्तिक भोज। ४. मृत्युभोज। नुकता। ५. सिफर। बिंदी। सुन। ६. सिन्धी, उर्दू, फारसी भाषाओं में हरूफ या लफ्ज के नीचे-ऊपर संज्ञा के रूप में रखा जाने वाला बिन्दु। ७. पर्व या उत्सव आदि का विशिष्ट दिन।

नुगरो–दे० निगुरो ।

नुगसाण–दे० नुकसाण ।

नुती–(ना०)स्तुति । प्रशंसा ।

नुमाइश–(ना०) प्रदर्शनी ।

नुसखो–(न०) १. औषध विधान । उपचार पत्र । नुसखा । २. इलाज । उपाय । ३. टोटका ।

नुंएली–(वि०) १. नवेली । युवती । २. नयी ।

नुंओ–दे० नवो ।

नुंवो–दे० नवो ।

नूखाणी–(ना०) १. यवनों का नाश करने वाली । यवन भक्षिणी । चंडी । शक्ति । २. दुष्टों का मर्दन करने वाली ।

नूजणो–दे० नवजणो ।

नूतो–दे० नूंतो ।

नूनता–(ना०) १. न्यूनता । कमी । २. वेसमझी । ३. ओछापन ।

नूनी–(ना०) वच्चे की मूत्रेन्द्री ।

नूप–(वि०) अनूप । अनुपम ।

नूपुर–(न०) पैरों में पहनने का एक गहना । पैंजनी । २. नेवर । नेवरी ।

नूर–(न०) १. तेज । प्रकाश । ज्योति । आभा । २. शोभा । कांति । ३. शौर्य । ४. नेत्र । ज्योति । ५. वाहन-भाड़ा । ६. ईश्वर ।

नूं–(प्रत्य०) कर्म और सम्प्रदान कारक की विभक्ति । 'को' । जैसे—थांनूं (तुमको), मोनूं (मुझको), राजानूं (राजा को) । (अव्य०) १. में । अंदर । २. लिये । के लिये ।

नूंजणो–दे० नवजणो ।

नूंतणो–(क्रि०) निमन्त्रण देना । निमंत्रित करना ।

नूंतो–(न०) १. निमन्त्रण । भोजन करने को दिया जाने वाला निमंत्रण । न्योता । नैतो । नैतरो । दे० नैत ।

नूंध–(ना०) १. नोंध । नोट । टिप्पणी । २. विवरण । प्रतिलिपि ।

नूंधणो–(क्रि०) १. नोंधना । दर्ज करना । २. नोट लिखना । ३. विवरण लिखना ।

नूंध वही–(ना०) दी हुई या वेची हुई वस्तुओं को लिखने की वही ।

नृत्य–(न०) नाच ।

नृप–(न०) राजा । नरपति ।

नृशंसता–(ना०) क्रूरता । निर्दयता ।

नृसिंह चतुर्दशी–(ना०) वैशाख शु. १४, जिस दिन भगवान ने नृसिंह अवतार लेकर हिरण्यकशिपु को मारा था ।

नेउर–दे० नूपुर ।

नेऊ–(वि०)निव्वे । (ना०)निव्वे की संख्या । ९०.

नेक–(वि०) १. अच्छा । भला । २. मनोहर । मनोरम । रमणीय । ३. प्रामाणिक । सच्चा । ४. धार्मिक । ५. नीतिमान । ६. सज्जन । शिष्ट । ७. थोड़ा । जरासा । किंचित ।

नेकनाम–(वि०) प्रतिष्ठित ।

नेकनामी–(ना०) १. नामवरी । सुयश । सुकीर्त्ति । सुख्याति । २. ईमानदारी ।

नेकी–(ना०)१. ईमानदारी । प्रामाणिकता । २. धार्मिकता । ३. उपकार । भलाई । ४. उत्तम व्यवहार । ५. सज्जनता । शिष्टता । ६. (राजा महाराजा के आने पर) दुहाई पुकारना । स्तुति वचन ।

नेकीवंध–(वि०) ईमानदार । (ना०) ईमानदारी ।

नेखम–(न०)१. सीमा चिन्ह । सेढो । २. निश्चय । (वि०) १. दृढ । मजबूत । २. पक्का । ३. स्थायी ।

नेग–(न०) १. विवाहादि अवसरों पर आश्रितों को दिया जाने वाला पुरस्कार । पौनियों को दी जाने वाली लाग । वख्शिश । दस्तूर । वंधारण । २. इस प्रकार देने की प्रथा ।

नेगदार-(न०) नेग पाने का अधिकारी । व्यक्ति । नेगी । पौनी ।

नेगी-(न०) १. त्यौहार के दिन नेग (भेट) लेने वाला व्यक्ति । पौनी । २. नेग पाने या लेने का अधिकारी । पौनी । नेगी ।

नेचो-(न०) १. हुक्के की नली । मेर । २. निगाली ।

नेजाळ-(न०) १. भाला बरदार । नेजा-बरदार । २. भाले वाला ।

नेजो-(न०) १. भाला । २. पताका । ३. चिलगोजा । नोजा । नेवजा ।

नेट-(अव्य०) १. अंत तक । २. अंत में । ३. नहीं तो । (वि०) नष्ट । (न०) १. निश्चय । २. समाप्ति । ३. भेद । रहस्य ।

नेटणो-(क्रि०) १. खतम होना । समाप्त होना । २. मर जाना । ३.खतम करना । समाप्त करना । ४. मारना ।

नेठ-(वि०) १. नष्ट । २. मृत । (क्रि०वि०) कठिनता से । मुश्किल से ।

नेठणो-(क्रि०) १. आजमाना । २. धीरज रखना । ३. खतम करना । समाप्त करना । ४. खतम होना । समाप्त करना । ५. मना करना । रोकना । ६. मुलतवी रखना ।

नेठाव-(न०)१. धैर्य । धीरज । २. खटाव । सहन शीलता । ३. समाप्ति । अंत । ४. विश्राम । रहना । ५. निवास ।

नेठो-दे० नेठाव ।

नेड़-दे० नड़यड़ ।

नेड़ो-(क्रि०वि०) समीप । पास । नजीक । (वि०) संबंध वाला ।

नेढ-(वि०) १. मूर्ख । २. हठी । (ना०) १. मूर्खता । २. हठ । ३ निर्लज्जता ।

नेडो-(वि०) निर्लज्ज । निसड्डो ।

नेत-(न०)१. मंगलसूत्र । २. कंकण डोरा । ३. विरुद । ४. व्यवस्था । ५. निश्चय । संकल्प । ६. मथानी की डोरी । ७. बेंत । ८. भाला । ९. पघड़ी । १०. नेत्र । ११. झंडा । ध्वज । (वि०) सीधा ।

नेतर-(ना०) बेंत । छड़ी । (न०)१. नेत्र । आँख । २. मूर्ति के लगाई जाने वाली कृत्रिम आँख । ३. शाखा ।

नेतरो-(न०) बिलौना बिलौने की रस्सी । मथानी की रस्सी । नेती ।

नेता-(न०) आगेवान । अग्रणी ।

नेताजी-(न०) महान् क्रान्तिकारी, वीर और अद्वितीय देशभक्त स्वनाम धन्य स्व० श्री सुभाषचन्द्र बोस का सम्माननीय नाम तथा विरुद ।

नेति-(अव्य०) १. संस्कृत भाषा का एक पद जिसका ईश्वर की महिमा के रूप में प्रयोग किया जाता है । वह परब्रह्म जिसका अंत नहीं है । नेति । २. जिसकी इति नहीं । ३. हठयोग का एक भेद । नेती ।

नेतो-(न०) बिलौने की रस्सी । नेतरो ।

नेत्र-(न०)१. आँख । नेत्र । २. मथानी की रस्सी । ३. दो का संख्यासूचक शब्द । ४. छड़ी । ५. शाखा ।

नेत्रो-दे० नेतरो ।

नेपज-दे० नेपै ।

नेपत-दे० नेपै ।

नेपाल-(न०) एक राष्ट्र ।

नेपाळो-(न०) जमालगोटा ।

नेपै-(ना०) १. खेती की निपज । उपज । पैदाइश ।

नेफो-(न०) पायजामे, लहँगे आदि का वह ऊपरी भाग जिसमें नाड़ा (नारा) डाला जाता है । नेफा ।

नेम-(न०) १. नियम । २. प्रतिज्ञा । ३. रीति । रिवाज । ४. धार्मिक क्रियाओं का पालन ।

नेमणो-(क्रि०) नक्की करना । निश्चय करना ।

नेमत–दे० निग्रामत ।
नेमधरम–(न०) १. पूजा-पाठ ग्रादि धार्मिक कृत्य । २. वे कृत्य जो धर्म से संबंध रखते हैं ।
नेमियो–(वि०)१. नियम से पूजा पाठ करने वाला । २. नियम का पालन करने वाला । नियम से पालन करने वाला । नियमी । नेमी ।
नेर–(न०) १. कतिपय नगरों के नाम के ग्रंत में लगने वाला प्रत्यय । जैसे— बीकानेर, चंपानेर, जोवनेर ग्रादि । २. नगर का ग्रपभ्रंश रूप । ३. नगर ।
नेव–(न०) १. छपरे की छाजन का थेपड़ा । खपरेल । २. नरिया । ३. छपरे की किनारी जिसमें होकर बरसात का पानी नीचे टपकता है । छप्पर के छोर के खपरे। ग्रोलती । ग्रोरी । ४. ग्रोलती में से गिरने वाला पानी ।
नेवगी–दे० नेगी ।
नेवज–(न०) देवता को ग्रर्पण किया जाने वाला मधुरान्न । नैवेद्य । भोग । प्रसाद ।
नेव झरणो–(मुहा०) १. त्रुटि होना । २. दोष या ग्रवगुण होना । ३. छपरे से पानी टपकना । ग्रोलती में से पानी गिरना ।
नेवर–(न०) १. स्त्री के पाँवों का एक गहना । नेवरी । २. पाजेब । नुपुर । नेपुर । ३. कोतल घोड़े के एक पाँव में पहिनाया जाने वाला एक जेवर । नेवर ।
नेवरी–(न०) १. स्त्री के पाँवों का एक गहना । नेवरी । २. पाजेब । नूपुर ।
नेवाण–(न०) जैसलमेर जिले का एक प्रदेश । दे० निवाण ।
नेस–(न०)१. दान में दी हुई भूमि या गाँव । २. घर । मकान । ३.प्रदेश । ४. किसानों तथा ग्वालों का जंगल में बनाया हुआ झोंपड़ों वाला छोटा गाँव । ढाणी । ५. जंगल में बनाया हुग्रा ग्रस्थाई निवास । ढाणी । ६. ऊँट के ग्रायु सूचक खास खास दाँत । ७. तालाब भर जाने पर पानी के निकाल के लिये बनाया हुग्रा मार्ग । नेसटो । ८.ग्रसुर । राक्षस ।
नेसटो–(न०) तालाब भर जाने पर पानी के निकाल के लिये बनाया हुग्रा मार्ग । नेस । ओटो ।
नेसावर–(वि०) १. वह जिसके नेस के दाँत ग्रा गये हों (ऊँट) । २. पक्का । खरा ।
नेह–(न०)१. स्नेह । प्रेम । २. तेल । स्नेह ।
नेहड़ी–(ना०) मथानी को सीधी खड़ी रखने का बिलौने का एक उपकरण ।
नेहड़ो–(न०) स्नेह । नेह ।
नेहडो–दे० नेहढो ।
नेहढो–दे० निसरड़ो ।
नेहप्रिय–(न०) दीपक । दीबो ।
नेह भीनो–(वि०) स्नेहसिक्त ।
नेहालंदी–(ना०) प्रेमिका । (वि०) स्नेह लुब्धा ।
नेही–(वि०) प्रेमी । स्नेही । (न०) मित्र । सखा ।
नै–(प्रत्य०) १. कर्म कारक की विभक्ति । 'को' । जैसे—राम नै ग्रावण दो ग्रर्थात 'राम को ग्राने दो ।' २. क्रिया(मूलधातु) के ग्रंत में लग कर 'करके', 'कर', 'के' ग्रर्थों को प्रकट करने वाला एक प्रत्यय, जैसे—'रोटी खायनै ग्राऊं हूं' ग्रर्थात 'रोटी खाकर(खा करके या खा के)ग्राता हूं' । ३. एक संयोजक ग्रव्यय । वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने का काम करता है । ग्रौर । व । ऐसे ही । जैसे—'राम नै केशव रोटी खाय रया है' ग्रर्थात राम ग्रौर केशव रोटी खा रहे हैं । ४. दिशा सूचक शब्द के साथ लग कर 'ग्रोर', 'तरफ' ग्रर्थ को व्यक्त करने वाला एक ग्रव्यय । जैसे—'ग्रठीनै', 'कठीनै'

इत्यादि। (ना०) १. हुक्के की नली। २. नदी। (अव्य०) १. किन्तु। लेकिन। २. क्योंकि। ३. केवल।

नैचो-(न०) हुक्के की वह नली जिस पर चिलम रखी जाती है। नेचो।

नैठो-दे० नेठो।

नैड़ापणो-(न०) निकटता।

नैड़ापो- दे० नैड़ापणो।

नैड़ो-दे० नेड़ो।

नैण-(न०) नेत्र। नयन।

नैणसुख-(ना०) एक सूती कपड़ा।

नैत-(ना०) १ विवाहादि में सगे सम्बन्धी आदिकों की ओर से दी जाने वाली नकद भेंट। २. नैत देने की प्रथा। दे० नूंतो।

नैतणो-(क्रि०) १. भोजन के लिए न्योता देना। निमन्त्रण देना। २. विवाह के भात (भोजन-समारोह) में बरात को निमंत्रण रूप में गीत गाती हुई कन्यापक्ष की स्त्रियों का बरातियों के तिलक करने को जाना। कुंकुम, अक्षत, नारियल आदि मांगलिक वस्तुओं और गीतों द्वारा अभिमंत्रित करके भात में भोजन करने का निमत्रण देना।

नैतरणो-दे० नैतणो।

नैतियार-(न०) निमंत्रित व्यक्ति। (वि०) निमंत्रित।

नैतो-(न०)निमंत्रण। भोजन का निमंत्रण। न्योता। नूंतो।

नैदण-दे० नैदाण।

नैदाण-(न०) १. खेत में नाज उग आने पर उसके आस पास के घास की की जाने वाली कटाई। २. खेत की शुद्धि। निराने का काम।

नैदावणी-दे० नैदाण।

नैनप-(ना०) १. आर्थिक दृष्टि से कमजोर स्थिति। अर्थाभाव। २. वह अवयस्क परिवार जिसमें बुजुर्ग नहीं हो। कुटुम्ब में बड़े आदमी का न होना। ४. खोट। कमी। क्षति। ३. अवयस्कता। नाबालिगी। ५ अवनति।

नैनपण-(ना०)१. बचपन। छोटापन। २.नाबालिगी।

नैनम-दे० नैनप।

नैनो-(वि०) १. छोटा। २. महत्व रहित। ३. तुच्छ। क्षुद्र। (न०)बच्चा। बालक।

नैनो-सूनो-(वि०) साधारण। मामूली। नाचीज। छोटा सा।

नैयो-(न०) खाती का एक औजार।

नैरणी-(ना०) नाखून काटने का एक औजार। नखबरणी।

नैराई-(ना०) १. ढिलाई। सुस्ती। २. देरी। समय। ढील। ३. धीरज।

नैरांत-दे० निरांत।

नैरित-(ना०) पश्चिम-दक्षिण के बीच की दिशा। नैऋत्य दिशा।

नैरो-(न०) १. श्मसान। मसान। २. श्मशान तक शव के साथ जाने की क्रिया। शव का अग्नि संस्कार करने को जाना। लोकाचार। (वि०) न्यारा। अलग।

नैवादो-(वि०)१. स्वाद रहित। नि:स्वादु। अस्वादिष्ट। २. बिगड़े हुये स्वाद का। ३. बासी।

नैवेद्य-(न०) देवता को अर्पण किया जाने वाला मधुरान्न। भोग।

नैहड़ो-दे० निसरड़ो।

नैहढो-दे० निसरड़ो।

नैंढो-दे० निसरड़ो।

नोक-(ना०) १. नोक। अनी। अणी। सिरा। २. अग्रभाग। ३. सूक्ष्म अग्रभाग।

नोकर-(न०) सेवक। नौकर।

नोकरणी-(ना०) नौकरानी।

नोकराणी-दे० नोकरणी।

नोकरियात-(वि०) नौकरी करने वाला।

नोकरी-(ना०) सेवा। नौकरी। चाकरी।

नोकार-(न०) जैन धर्मानुयायियों के जपने का एक मंत्र। नवकार।

नोकारसी-(ना०)१. मात्र जैनों को कराया जाने वाला भोजन समारंभ। नोकारशी। २. एक व्रत (जैन)।

नोख-(ना०) १. बात। २. अच्छी बात। चीज। ३. आश्चर्य। (वि०) १. अद्वितीय। अनोखा। २. सुन्दर। ३. नया।

नोखाई-(ना०) १. अनोखापन। विलक्षणता। विशेषता। २. नवीनता। ३. सुन्दरता।

नोखी-(वि०)१. अद्भुत। नयी। २. जुदी। अलग।

नोखीलो-(वि०) १. अनोखा। अद्भुत। २. सुन्दर।

नोखो-(वि०) १. अनोखा। अद्भुत। २. नया। ३. जुदा। अलग। ४. दूर।

नोघरी-(ना०) १. पहुँचे का एक गहना। २. नौ कोठों में नौ ग्रहों के नौ रत्नोंवाला पहुंचे में पहना जाने वाला एक गहना। नवगृही। नवग्रही।

नोछावर-दे० निछावर।

नोज-(अव्य०) १. नहीं। नहीं ज। २. कभी नहीं। ३. क्यों। किसलिए। ४. न हो। ५. यों न हो कि। ऐसा न हो कहीं। नौज।

नोजणो-(क्रि०) नोइनी। नोई। छांद। नवजणो।

नोजा-(न०) चिलगोजा। नेजा। नेवजा।

नोट-(न०) १. राज्य सरकार की ओर से प्रवर्तित वह कागज जिस पर राज्यचिन्ह और रुपयों की संख्या छपी रहती है और जो उतने रुपयों के रूप में चलता है। कागज का सिक्का। २. याददाश्ती। ध्यान रखने के लिये लिखी जाने वाली संक्षिप्त पंक्तियाँ। सार लेख। सार भाव। ३. टिप्पणी।

नोपत-दे० नोबत।

नोबत-(ना०)१.देवमंदिरों या राज्यप्रासादों आदि में शहनाई के साथ बजाया जाने वाला एक मंगलसूचक बाजा। नौबत। २. बड़ा नगाड़ा। ३. दशा। स्थिति। ४. संयोग। ५. बारी। पारी।

नोबतखानो-(न०) १. मंदिर, प्रासाद आदि का वह स्थान जहां नौबत बजाई जाती है। २.मंदिर, राज्यप्रासाद आदि में नौबत ढोल आदि वाद्य रखे जाने का स्थान।

नोबती-(न०) नौबत बजाने वाला।

नोरता-(न०) १. नवरात्र काल। नवरात्रि के दिन। २. चैत्र सुदी और आसोज सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमें नवदुर्गा का विशेष अनुष्ठान किया जाता है। ३. दुर्गापूजा का विशिष्ट उत्सव। ४. नवरात्रि के दिनों में किये जाने वाले व्रत-उपवास।

नोरियो-(न०) १. हिंस्र पशु का नख। २. हिंस्र पशु के नख की लगी हुई रगड़। ३. नख की घर्षण। ४. नाखून। नख।

नोरो-दे० नोहरो।

नोळ-(न०) ऊँट के भाग नहीं सकने के लिये अगले दोनों पांवों में बाँधी जाने वाली लोहे की एक सांकल। ऊँट, भैंस आदि के पाँवों में बांधने का सांकल जैसा एक उपकरण।

नोलखो-(वि०)नौ लाख रुपयों के मूल्य का।

नोळियो-(न०) नेवला।

नोळी-(ना०) करधनी की तरह कमर में बाँधने की कपड़े की लंबी थैली जिसमें रुपये भरे रहते हैं। वसनी।

नोहराळ-(न०व०व०) सिंह, रींछ, चीता, बिल्ली, कुत्ता आदि तीखे नखों वाले हिंसक पशु।

नोहरो-(न०) १. अनुरोध । निहोरा । २. मनुहार । ३. खुशामद । ४. गाय, भैंस आदि बांधने का वाड़ा । बड़े भोज आदि की सामग्री तैयार करने का चारों ओर दीवाल से घिरा हुआ मैदान । वाड़ा ।

नौका-(ना०) नाव । डूंडो ।

नौकार-दे० नोकार ।

नौड़ियो-(न०) खींप या सिणिये के तृणों को वल देकर वनाई हुई रस्सी ।

नौड़ी-(ना०) दे० नौड़ियो ।

नौरंग-(न०) १. औरंगजेब । २. नवरंग पुष्प ।

नौरंगजेब-(न०) औरंगजेब वादशाह ।

नौरो-दे० नोहरो ।

नौरोजो-दे० नवरोजो ।

नौळ-दे० नोळ ।

नौलखो-दे० नवलखो ।

नौलासी-(ना०) छड़ी । दे० नवलासी ।

नौळियो-(न०) नेवला । नकुल ।

नौसादर-दे० नवसादर ।

न्याउ-(अव्य०)न्याय परक । न्याय संबंधी । (न०) न्याय ।

न्यात-(ना०)१. एक वर्ग या जाति का लोक समूह । न्याति । जाति । बिरादरी । २. न्याति भोज ।

न्यात-गंगा-(ना०) गंगा के समान पवित्र करने का महत्व रखने वाला न्याति समूह ।

न्यात-जात-(ना०) १. अपनी न्याति और दूसरी जाति । न्याति और पर न्याति । २. जात-पांत ।

न्यात वारे-(वि०)न्याति में से वाहर किया हुआ । न्याति-वहिष्कृत ।

न्याय-(न०)१. इंसाफ । न्याय । २. फैसला । निर्णय । (क्रि०वि०) निश्चय ही ।

न्यायकारी-(वि०) न्यायकर्ता ।

न्यायाधीश-(न०) न्याय विभाग का वह अधिकारी जो मुकदमों का निर्णय करता है ।

न्यायालय-(न०) अदालत । कचहरी ।

न्यायी-(वि०) १. न्याय करने वाला । २. न्याय पर चलने वाला । ३. न्याय से संबंधित ।

न्यार-(न०) १. मृतक की अरथी के साथ श्मशान तक जाने की क्रिया । न्यारो । लोकाचार ।

न्यारणी-(ना०) १. गाय भैंस आदि को नीरा जाने वाला घास-चारा । २. न्यारिया की स्त्री ।

न्यारहाळो-दे० न्याराळो ।

न्याराळो-(वि०) १. न्यार के लिये जाने वाला । न्यारे जाने वाला । २. न्यारे गया हुआ ।

न्यारियो-दे० नियारियो ।

न्यारी-(क्रि०वि०) अलग । जुदी । (ना०) न्यारिये की पत्नी । नियारी ।

न्यारो-(क्रि०वि०) १. अलग । जुदा । (न०) नियार । नियारो । बरड़ो । दे० न्यार ।

न्याल-दे० निहाल ।

न्याळ-(ना०) शिकार के समय मनाई जाने वाली मांस की दावत । २. आखेट-गोष्ठी । आखेट-भोज ।

न्याव-दे० न्याय ।

न्यावटो-दे० न्याय ।

न्याव-पताव-(न०) १. न्याय-निर्णय । २. पंचायत निर्णय । ३. पंच निर्णय । ४. न्याय । ५. न्याय करने का काम ।

न्यांई-(ना०) तरह । प्रकार ।

न्योछावर-दे० निछावर ।

न्योळ-मुखी-दे० न्योळ-मुंही ।

न्योळ-मुंही-(ना०) ऊंटनी की एक जाति । (वि०) लंबे मुंह वाली ।

न्रत्य-दे० नृत्य ।

न्रधोम–*(वि०)* १. धूम व मल रहित । २. प्रकाशवान् । उज्वल । ३. निर्धूम ।

न्रप–*(न०)* नृप । राजा ।

न्रपाळ–*(न०)* नरपाल । राजा ।

न्रित–*(न०)* नृत्य । नाच ।

न्रिप–दे० न्रप ।

न्रिपाळ–दे० नृपाळ ।

न्रिभै–*(वि०)* निर्भय । निडर ।

न्रिभैमन–*(न०)* १. उदार । २. निडर । वीर ।

न्रिमळ–*(वि०)* निर्मल । उज्वल ।

न्ह्याल–*(न०)* मनोरथ सिद्धि । निहाल ।

न्हवड़ावणो–*(क्रि०)* नहलाना । स्नान करवाना ।

न्हवाड़णो–*(क्रि०)* न्हवावणो ।

न्हवाणो–दे० न्हवड़ावणो ।

न्हवावणो–*(क्रि०)* नहलाना । स्नान करवाना ।

न्हाठणो–*(क्रि०)* भागना । भाग जाना । नाठणो ।

न्हाठ-भाग–दे० न्हास भाग ।

न्हाणो–*(क्रि०)* १. नहाना । स्नान करना । २. भागना ।

न्हाळणो–*(क्रि०)* देखना । निहारना । न्याळणो ।

न्हावण–*(न०)* स्नान ।

न्हावणो–दे० न्हाणो ।

न्हासणो–*(क्रि०)* भागना ।

न्हासभाग–*(ना०)* भगदड़ । भागदौड़ ।

न्होरियो–दे० नोरियो ।

न्होरो–दे० नहोरो । नोहरो ।